

❧ कर्णपर्व का सूचीपत्र ❧

Index to Karāa Parv

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter Contents	Page
१	कर्ण का सेना पति होना	६२०७	1. Karan made commander	6207
२	धृतराष्ट्र वनजय	१०	2. Dhritrashtra and Sanjaya	10
३	तथा	११	3 Do Do	11
४	धृतराष्ट्र का विलाप	१६	4. Dhritrashtra's grief	16
५	संजय वचन	१९	5. Sanjaya's talk	19
६	तथा	२६	6. Do	26
७	तथा	३१	7. Do	31
८	तथा	३५	8. Do	35
९	धृतराष्ट्र का विलाप	३९	9. Dhritrashtra's grief	39
१०	कर्ण का सेना पति होना	५०	10. Karan's installation	50
११	सेना व्यूह की रचना	५७	11. Formation of army	57
१२	क्षेम धूर्त यव	६३	12. Kshemdhurti slain	63
१३	विन्द्या नुविन्द्य यव	६९	13. Vind and Anuvind slain	69
१४	चित्र यव	७३	14. Chitra slain	73
१५	अश्वत्थामा का युद्ध	७८	15. Ashwathama fights	78
१६	अश्वत्थामा व अर्जुन	८३	16. Ashwathama and Arjun	83
१७	अश्वत्थामा की पराजय	९०	17. Ashwathama defeated	90
१८	दण्डधार घघ	९५	18. Dandadhar slain	95
१९	संकुल युद्ध	९९	19. General fighting	99
२०	पाण्ड्य वध	६३०७	20. Pandya slain	6307
२१	संकुल युद्ध	१४	21. General fighting	14
२२	तथा	१९	22. Do Do	19
२३	शहदेव दुरासन युद्ध	२३	23. Shadhev and Dashasan	23
२४	कर्ण का पराक्रम	२६	24. Karan's bravery	26
२५	सुगतीन सौधल युद्ध	३५	25. Sugati and Suval	35
२६	शिक्षन्दी व कृत्तवर्मा	४८	26. Shikhandi and Kirtvarma	41
२७	अर्जुन की विजय	४९	27. Arjun's victory	45
२८	संकुल युद्ध	५०	28. General fighting	50
२९	तथा	५६	29. Do Do	56
३०	प्रथम दिन का युद्ध	६०	30. First day's fighting	60
३१	कर्ण व दुर्योधन	६७	31. Karan and Duryodhan	67
३२	शल्य सारथी	७६	32. Shalya as driver	76
३३	त्रिपुर का आष्वयान	८४	33. History of Tripur	84
३४	तथा	९१	34. Do Do	91
३५	शल्य सारथी	६४१०	35. Shalya as driver	6410
३६	त्रिपुर का आष्वयान	१६	36. History of Tripur	16



महाभारत.

सन् १९०९ का

शल्यपर्व व गदापर्व

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृतमूल

॥ हिन्दी और अंग्रेजी अनुवादसहित ॥

THE MAHABHARAT

SHALYA PARV

The Sanskrit text of Mahārshi Vyās
with complete English and Hindi translation.

जिमको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबादने

"तन्त्रप्रकाशक प्रेसमें" छपवाकर प्रकाशितकिया

Published by

Ram Krishn & Co. of Moradabad

पुस्तक मिलनेका पता -
रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद;

To be had of the publishers
Ram Krishn & Co.
Moradabad.

महाभारत.



शल्यपर्व

नारायण नमस्कृत्य नरञ्चैव नरोत्तमम् ॥
देवीं सरस्वतीञ्चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

जनमेजय उवाच । एव निपातिते कर्णे समरे स्वयसाविना । अल्पावशिष्टाः कुरव
किमकुर्वन्त वै द्विज ॥ २ ॥ उदीर्यमाणञ्च यत्नं दृष्ट्वा राजा सुयोधन । पाण्डवै
प्राप्तकालञ्च किमप्रापद्यत कौरव ॥ ३ ॥ एतदिच्छाम्यह औतु तदावद्य द्विजोत्तम ।
नहि सृप्यामि पूर्वेषा भृषवनश्चरित महत् ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत कर्णे हते
राजन् प्राप्तं राष्ट्रं सुयोधन । अश शोकार्णव मंग्नो निराश सर्वतोऽभवत् ॥ ४ ॥
हा कर्ण हा कर्ण इति शोचमान पुन पुन । क्लृप्त्वा स्वशिविर प्रायाद्धतदोर्षनेप

श्रीनारायणजीको नरोत्तम नरको और सरस्वतीदेवीको नमस्कारकरके जयनाम
इतिहासको वर्णन करते हैं जनमेजय बोला कि हे ब्राह्मण इसप्रकार अर्जुनके हाथ
मे पृष्ठमे कर्णके गिरानेपर थोड़ेसे वचेहुये कौरवों ने क्याकिया । १ । कौरव
दुर्योधनने अपनी सेनाको साहस रहित देखकर समयके अनुसार पाण्डवों
के साथ कौनसा बर्षम किया । २ । हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ मैं यह सुनना चाहताहू
आप इसको वर्णन कीजिये क्योंकि मैं अपने माचीन दृष्टके चरित्रों के सुनने
मे तृप्त नहीं होताहूँ । ३ । वैशम्पायन बोले हराजा फिर कर्णके मरनेपर धृतराष्ट्र
का पुत्र दुर्योधन बड़े शोक समुद्रमें डूबकर सब प्रकार से दु खीहुआ । ४ । हाय
कर्ण हाय कर्ण इसप्रकार बारम्बार शोचना मरनेसे वचेहुये शेरराजाओं समेत बड़े
दुःखसे अपने दरकोआया । ५ । मृतपुत्र कर्णके मरनेका स्मरणकरते और शास्त्र

HALEYA PARV CHAPTER I

Having bowed down to Narayan, Nai the best of males, and the
goddess of learning, an account of the great war is given. Jana mejaya
said, 'What did the rest of the Kauravas do at the fall of Karan?
What did Duryodhan do when he saw his own army lose heart? I
wish to hear all this, best of Brahmins, for I am not yet satisfied with
hearing the exploits of my forefathers.' Vaishampayan, said "At
the death of Karan, Duryodhan was plunged in the ocean of grief.
Crying out 'Alas Karan alas Karan!' in the excess of grief, he went
away to his camp with the rest of the warriors 5. Remembering Karan's

मह ॥ ५ ॥ स समादवास्थमानोपि हेतुभिः शास्त्रनिमित्तैः । राजानि
 स्रुतपुत्रवध स्मरन् ॥ ६ ॥ स दैव्यं बलवन्मया भवितव्यं च पाणिषः । समासे निज
 कृपा पुनरुद्वाप निययो ॥ ७ ॥ शस्यं सेनापतिं कृपा विधिपद्मपुङ्गवः । राज
 निययो राजन् हतशैवेन्द्रैः मह ॥ ८ ॥ ततः सुतुमुलं युञ्ज कृत्वा च बलेनयो । अत्र
 पद्मरतधेष्ठ देवासुररणो पमम् ॥ ९ ॥ ततः शक्यो महाराज कृपा कर्तव्यमाह्वे ।
 हतसैन्याय मर्ष्याह्वे धर्मराजं पतितः ॥ १० ॥ ततो दुर्योधनो राजा हतवन्पु र्ना
 तिरात् । अत्रत्यं हृद् घोरे त्रिषुञ्जान्नात् ॥ ११ ॥ तथापराह्वे तस्यान्
 परिवायं मदारये । हृद्गाराह्वे वीणे भीमसेनं पतितः ॥ १२ ॥ तद्विदन् हते मर्ष्याह्वे
 हतशिष्टास्त्रयो रथा संरम्भादिशि राजेन्द्र जग्नः पाञ्चाल सैनिकात् ॥ १३ ॥ तत
 पूर्वान्द्रुसमये शिविरं वृत्तं सञ्जयः । प्रविधेश पुरं वीणो दुःकशोकसमन्वितः ॥ १४ ॥

निधिग हेतुमति राजाओं के समझानेपर भी दुर्योधनने सुखको नहीं पाया १६ वह
 राजा देवइच्छा को बलवान मानकर युद्धके निमित्त निश्चय करके फिर युद्धकरने
 के लिये निकला । ७ । हे राजा वह राजाओं में धेष्ठ दुर्योधन निधिपूर्वक रूप
 को सेनापति करके मरनेसे बचेहुये शेरराजाओं गमेत युद्धके लिये चला । ८ । हे
 भरतर्षभ इसके अनन्तर कौन्धीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध देवासुर युद्धके समान
 महाकाठिनहुआ । ९ । हे महाराज तब राजा शक्य युद्धमें सेनाका नाश करके
 अपनी सेनाके मरजानेके पीछे मर्ष्याह्वन के समय धर्मराज के हाथमें मारागया
 । १० । इसके पीछे राजा दुर्योधन उन लोगोंको जिनके कि बान्धव मारिगये हुए
 भूमिमें हटाकर शत्रुओं के भयसे बड़े गम्भीर तद्भागमें प्रवेश करगया । ११ । इसके
 पीछे उसदिनके नीचरे महरमें महारथियों से घेरकर हृदसे गुलाकर बड़े वेग पूर्वक
 भीमसेनके हाथमें मिरायागया । १२ । हे राजेन्द्र उम बड़े धनुषचारीके मरनेपर शेष
 बचेहुये महारथियों ने रात्रिके समय पाञ्चाल देशी सेनाके लोगोंको मारा । १३ ।
 उसक पीछे दुःख और शोकसे संयुक्त समय मान काल के समय अपने डरेने
 चलकर महादुःखित विच होकर पुरमें आया । १४ । वह मृत संजयपुरमें प्रवेश

death Duryodhan was not consoled in spite of the exertions of the
 kings. Knowing Fate to be all 'powerful, he came out again to fight.
 Having installed Shalya as the commander of his armies, he came out
 with the rest of the warriors to fight. The two armies then fought
 like gods and asurs. Having slain a large number of warriors, Shalya
 was slain by Yudhishtir at midday. 10. Then taking with him
 the kinsmen of the slain warriors, Duryodhan entered a deep lake for
 the fear of foes. In the third part of the day he was challenged to
 fight by Bhim and other warriors, and forced to come out of water, he
 was slain by Bhim. The rest of the Kauravas slew the Panchal warriors
 at night. Then Sanjaya much grieved and dejected, came out of his
 tent in the morning and entered the city very unhappy. He entered

प्रविवेच्य पुं सुजायुच्छित्त्य पुं वितः । वर्षमानस्ततां राजः प्रविवेश निवेशानम् ॥ १५ ॥
 शरोद स नरव्याघ्र हा राज्ञिति दुःखित । अहो यत विनिद्यास्मो निघर्तेन महामनः
 ॥१६॥ अहो सुबलवान् कालो गतिश्च विपमा तथा । शक्रतुल्यबलः सर्वे यत्राध्वयन्त
 पाण्डवैः ॥ १७ ॥ इष्ट्वै धनु पुरो राजन् जनः सयः सु सन्त्रयम् । फलेशन महता
 युक्तं सर्वतो राजसत्तम । प्रशरोद मुशोद्धिगो हा राज्ञिति मस्वरम् ॥ १८ ॥
 आकुमारं नरव्याघ्र तत् पुर वै मर्गम्यत । आत्तनादै नतश्चक्रे धत्वा विनिहत नृपम्
 ॥ १९ ॥ चाकतश्चाप्यपद्याम तत्र स्त्रीपुर्यालया । नष्टचित्ता नियोगस्तान्, शोकेन
 मृशपीडितम् ॥ २० ॥ तथा स विद्वलः सूतः प्रविश्य नृपतिक्षयम् । इदं नृपतिभेष्टं
 प्रहाय कक्षुपमीद्वरम् ॥ २१ ॥ इष्ट्वा चासीनमनघ समन्तात् परिवारितम् । स्तुषाञ्जि
 भैरतभेष्टं गान्धार्या विदुरेण च तथाभ्येष्टं सुदुग्धिश्च क्षातिमिश्च हितै सदा ॥ २२ ॥
 तमेव चाप्ये ध्यायन्ते कर्णस्ये निघन प्रति । रुदन्नेवाद्यधीक्षान्ये राजान् जनमेजय

करके महाकलेशितमन अपनी भुजाओंको ऊपर करके कांपना हुआ फिर राजम-
 न्दिर में आया । १५ । हे नरोत्तम वह अत्यन्त दुःखी हाय राजा हाय राजा यह
 कहताहुआ रोदन करनेलगा बड़े कष्टकी बात है कि हम, महात्मा मरनेसे नाश हो
 गये । १६ । आश्चर्य है कि काल बढ़ा बली है इनीमकार उनकी गतिभी टेंडी है
 जिन स्थान पर कि इष्ट्रक समान महापराक्रमी सब शूरवीर पाण्डवों के हाथ से
 मारेगये । १७ । हे राजाओंमें श्रेष्ठ जनमेजय वह सब मनुष्यों के ममूद नगरमें
 संजयको देखतेही सब सरोओरको बड़े दुःखोंसे संपुक्तहूये हे नरोत्तमकुमार बालकों
 तक अत्यन्त व्याकुल, यह सबनगर चारोंओरसे हायरामा हायरामा इस प्रकार ऊंचे
 स्वरो से पुकारता रोदन करनेलगा इसकेपीछे राजाको मराहुआ सुनकर सयने
 महापीडाके शब्दकरके १९। उन समय वहां इमने उन स्त्री पुरुषों को भी दौड़ता
 हुआ देखा जोकि नाशमान वित्त उन्मत्त ओर शोक से महापीडामान थे । २० ।
 इसप्रकार महाव्याकुल मन उम मूतने राजमन्दिर में प्रवेश करके राजाओं में
 श्रेष्ठ ज्ञानरूपी नेत्र रखनेवाले निष्पाप चारोंओर का पुत्र बन्धुओं ममने गान्धारी
 विदुर और भग्न इष्टमित्र और जातबाळों से घिरेहुये कर्णक मरनेके विषय
 में उती प्रयोजन को ध्यानकरते बैठेहुये महाराज धृतराष्ट्र का देखा हे जनमेजय

the city with upraised arms and trembling body and came to the royal
 palace. 15. He went out crying, "Alas king! We are undone and
 have lost you." The people were much grieved at the sight of S njaya
 and the young and old began to weep crying, "Alas king," They
 were much grieved to hear of the king's death. Men and women were
 seen running in all directions with grief and dismay. Having entered
 the royal palace in very dejected spirits, he saw the king surrounded
 by sons, kinsmen, Gandhari, Vidur and other friends, talking about

॥ २३ ॥ नातिहृष्टमनाः सुतो चाप्पस्तिग्दघया गिरा । सञ्जदोहं नरव्याघ्र नमस्ते भर
 पंम ॥ २४ ॥ मद्राधिपो हतः शल्यः शकुनिः सौवल्स्तथा । उलूकः पुरुषव्याघ्र
 कैतव्यो हृदविग्रहः ॥ २५ ॥ शंससका हताः सर्वे काम्बोजाश्च शकै सह । म्लेच्छाश्च
 पार्थनीयाश्च यवनाश्च निपतिताः ॥ २६ ॥ प्राच्या हता महाराज दक्षिणांश्याश्च
 सर्वदाः । उदीच्या निहताः सर्वे प्रसीच्याश्च नराधिप ॥ २७ ॥ राजानो राजपुत्राश्च
 सर्वशो निहता मृत । दुर्योधनो हतो राजा यथोक्तं पाण्डवेन ह ॥ २८ ॥ अजसकथो
 महाराज शंते पांडुप रुषितः । धृष्टद्युम्नो हतो राजन् शिखण्डी चापराजितः ॥ २९ ॥
 उत्तमौजा युधामन्युस्तथा राजन् प्रमद्वकः । पाञ्चालाश्च नरव्याघ्राधिपयश्च निह
 दिताः ॥ ३० ॥ तत्र पुत्रा हताः सर्वे द्रौपदेवाश्च भारत । कर्णपुत्रो हतः शूरो वृषसेनो
 महाबलः ॥ ३१ ॥ नरादिनिहताः सर्वे गजाश्च धिमिसूदिताः । रथिनश्च नरव्याघ्र

वह दुःखी वित्त मूत अश्रुपातों से युक्त गद्गद वाणी से रातोहुआ राजा घृत
 राष्ट्र से यह वचन बोला कि हे नरोत्तम मैं संजय हूं हे भरतर्षभ तुमको नमस्कार है
 । २४ । मद्रदेशका राजा शल्य मारागया उसी प्रकार साँवलका पुत्र शकुनी मारा
 गया हे पुरुषोत्तम हृद पराक्रमी कैतव्य उलूक और शकुनी समेत सब काम्बोज
 देशी और संमत्तक मारेगये और म्लेच्छ पहाड़ी और यवन मारेगये । २५ ।
 हे महाराज राजा धृतराष्ट्र सब पूर्वीय दक्षिणीय उत्तरीय और पाश्चिमीय राजा
 लोग मारेगये । २७ । इनके सिवाय सब राजा और राजकुमार मारे गये
 और राजा दुर्योधन भी उसी प्रकारमे मारागया जैसे किपांडव भीमसेन ने
 मभयं प्रतिज्ञा करीया । २८ । हे महाराज वह दूरी जयामे घूलमें पड़ा सोनाटे
 धृष्टद्युम्न और अपराजित शिखण्डी भी मारागया । २९ । इसी प्रकार नरोत्तम उत्तमौजा,
 युधामन्यु, प्रमद्वक नाम क्षत्री पांचालदेशी और नैदरीदेशी मारेगये । ३० । हे भर
 तर्षभ आपके सब पुत्र और द्रौपदी के सब बेटे मारेगये और कर्णका पुत्र वहा
 शूरी वृषसेन मारागये । ३१ । सब मनुष्य मारेगये शयी नाशहुये रथसवार

Karan. With tears in his eyes and voice choked with grief, he said
 to Dhritrashtra, 'I am Sanjaya, sire, and bow at your feet. 24 'Shalya
 the king of Madra is slain and so is Shakuni the son of Sival.' The
 Kambojas and Sinsaptks, with Kaitavya, Uluk, Shakuni, mlechas, hill
 men and Yavans, are slain. The warriors of the East, South, North
 and West are also no more. The other kings and princes too are dead
 and Bhim has fulfilled his promise by slaying Duryodhan in the
 manner mentioned by him in the court. He lies in dust with his
 thigh broken. Dhristadyumna and invincible Sikkhandi are also
 slain. 29. All your sons and those of Draupadi, are slain, with
 Virshasen the brave son of Karan. All the men, elephants, cars and
 horses were destroyed in battle. A few only of the tents, are the

ह्याश्च पतिता युधि ॥३२॥ किञ्चिच्छेषञ्च शिविरं तावकानां कृत प्रभो । पाण्डवानां कुरूणाञ्च समासाद्य परस्परम् ॥ ३३ ॥ प्रायः स्त्रीशेषमवउजगत् कालेन मोहितम् । सप्त पाण्डवतः शेषा धार्तराष्ट्रास्तथा त्रय ॥ ३४ ॥ ते शेषं ज्ञातर पञ्च वासुदेवाद्य सात्यकि । कृपश्च कृतवर्माञ्च द्रौणिश्च जयताम्बर ॥ ३५ ॥ तवाप्येने महाराज रथिनो नृपसत्तम । अक्षौहिनीणां सर्वासां समेतानां जनेश्वर ॥ ३६ ॥ एते शेषा महाराज सर्वेभ्ये निघ्नमंगताः कालेन निहत जगद्भ भरतवभ । दुर्व्योघनं चैव पुरेन कृतं न धीरे च भौरत ॥ ३७ ॥ वैशम्पायन उवाच । एतच्छत्रो वच कूरं धृतराष्ट्रो जनेश्वरः । निपपात महाराजं गतसत्थो महतिलो ॥ ३८ ॥ तस्मिन्निपतिते भूमौ विदुरोपि महाधृशः । निपपात महाराजं राजव्यसनकर्षितः ॥ ३९ ॥ गान्धारी च नृपश्रेष्ठः सर्वाश्च कुदंघोषितः । पतिता सहस्रा सुमी ध्रुव्या कूरं वचः स्मृताः ॥ ४० ॥ नि सप्त पतिते भौर घोडे युद्धे गिरपडे ॥ ३२ ॥ हे समर्थपरस्पर सम्मुख होकरआपके, बेटे पांडवोंके और कौरवोंके कुछ डरे बाकी रहे । ३३ । यह संसार बहुधा कालसे मोहित ब्रिषोंका शेष रखनेवाला हुआ पांडवोंकी ओर से सात और आपकी ओर के तीन शेष रहगये हैं । ३४ । अर्थात् वह पाँचों भाई वासुदेवजी और सात्यकी, और आपकी और बिजयी लोगों में श्रेष्ठ कृपाचार्य कृतवर्मा और अश्वत्थामा शेषरहे हैं । ३५ । हे राजाओंमें श्रेष्ठ महाराजा धृतराष्ट्र इकट्ठी होनेवाली आपकी सब अक्षौहिणियों में आप के यह तीनरथी जीवत रहे हैं । ३६ । हे भरतर्षभ महाराज धृतराष्ट्र यही केवल बचे हैं और सब नाशहोगये हे भरतवंशी निश्चयकरके शत्रुता पूर्वक दुर्घोषितको भागे करके सब जगत कालसे मारागया । ३७ । वैशम्पायन बोले हे मद्राज वह राजा धृतराष्ट्र इन कठिन और महादुःखदायी वचनको सुनकर अनेक होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । ३८ । उस धृतराष्ट्र के पृथ्वीपर गिरनेपर शोक और दुःखसे पीड़ामान बड़े यशमान विदुरजीभी गिरपड़े ३९ हेराजेन्द्र गान्धारी आदि सब कौरवों की स्त्रियाँ भी उन कठोर वचनोंको सुनकर अकस्मात् पृथ्वीपर गिरपड़ी । ४० । तब राजपण्डल निरर्थक वचनों से युक्त अचेत होकर पृथ्वीपर ऐसे गिर

remnants of the war between your sons and the Pandavas. Women only remain, with the exception of seven on their side and three of yours. The five Pandav brothers, with Vasudev and Satyak, on the side of the Pandavas, and Kripacharya, Kritvarma and Ashwathama remain from among your warriors. 35. Out of all your assembled akshauhinis three warriors remain, the rest are destroyed. Duryodhan's enmity has caused the destruction of the world." On hearing this Dhritrashtra fell down senseless. Vidur too, afflicted with grief and sorrow, became insensible. Gandhari and other Kaurav women lost their senses. The entire royal family lay on earth like a picture

भूमौ तदासीद्राजमण्डलम् । प्रलापयुक्त महति विघ्न-यस्त पदे यथा ॥ ४१ ॥
 कृच्छ्रेण तु ततो राज्ञा धृतराष्ट्रो महीपतिः । शनैरल्पमत प्राणान् पुत्रव्यसनकथित
 ॥ ४२ ॥ जघ्न्वा तु स नृप सन्ना वेपमान सुदुःखित । उद्वेगय च दिश सर्वा
 क्षत्तार वाक्यमब्रवीत् ॥ ४३ ॥ विदुर क्षत्तर्महामाह, त्व गतिर्भरतर्षभ । ममानाघस्य
 सुभ्रूया पृथेर्दैनस्य सर्वदा ॥ ४४ ॥ एवमुक्त्वा ततो भूयो विन्महो निपपात ह । त
 तथा पतित हृद्भ्रूया बान्धवा यस्य केचन ॥ ४५ ॥ शीतले सित्विचुस्तायेविष्यकुर्व्वजने
 रपि सु तु दीर्घेण कालेन प्रत्याभवस्तो महीपति ॥ ४६ ॥ तृष्णी द्वायी महीपाल पुत्र
 व्यसनकथित । निश्वसन्न जिह्वाग द्य कुर्यात्ततो विद्याभ्यसेत् ॥ ४७ ॥ सञ्जयोप्यह
 दत्तत्र हृद्भ्रूया राजानमातुःम् तथा सर्वा स्त्रिय-धैव मा-धारी च यशस्विनी ॥ ४८ ॥
 ततो दीर्घेण कालेन विदुः वाक्यवत्प्रवीत् । धृतराष्ट्रो नरध्रेष्ठ मुह्यमानो मुहुर्मुहु
 ॥ ४९ ॥ गच्छन्तु योषित सर्वा मा-धारी च यशस्विनी । तथेमे सुहृद सर्वे भ्रूयते
 मे मनोभ्रूयम् ॥ ५० ॥ एवमुत्तस्तत क्षत्ता ता स्त्रियो भरतर्षभ । विसर्जयामास
 शनैर्वेपमान पुन पुन ॥ ५१ ॥ निश्चक्रमुत्तत सर्वास्ता स्त्रियो भरतर्षभ । सुहृदश्च

पड़ा जैसे कि बड़े बख्तर खिचा हुआ चित्र होता है । ४१। उसके पीछे पुत्रके दुःख
 से राजा धृतराष्ट्र ने बड़े दुःख पूर्वक धीरे धीरे माणोंको प्राप्त किया । ४२। फिर
 वह राजा क्षत्तमताको पाकर कम्पता हुआ महादुःखी सब दिशाओं को देखकर
 विदुरजीसे यह वचन बोला । ४३। हे बुद्धिमान बड़े ज्ञानी भरतर्षभ विदुरजी मुझ
 सब पुत्रों से विहीन और अनाथ के तुम्हीं गतिहो । ४४। इस प्रकार कहकर फिर
 भ्रूय होकर गिरपड़ा इस रीति से पड़ेहुये उस धृतराष्ट्रको देखकर । ४५। उस
 के बान्धवने उसको शीतल जलोंसे सींचा और वपजनोंसे हवाभी की फिर वह
 राजा बहुत देरके पीछे चैतन्यहुआ । ४६। हे राजा मदके मे दाखेहुये सर्पकी
 समान श्वासलेन और पुत्रके शोकसे पीडामान और मौन उस राजाने ध्यानकिया
 । ४७। फिर वहाँ राजाको दुःखी देखकर सजपभी रोया बसीप्रकार यशस्वती
 गान्धारी और सब अन्य स्त्रियाँ भी रोदन करनेलगीं । ४८। इस के पीछे बार
 बार मोहित राजा धृतराष्ट्र बहुत देरके पीछे विदुरजी से वह वचन बोला । ४९।
 कि सब स्त्रियाँ और यशवान गान्धारी और मेरे सब सुहृद जनसोग यहाँ से चले
 जायँ मेराचित्त अस्पन्त मूर्च्छित होताहै । ५०। हे भरतर्षभ इसके पीछे उसके उस

painted on a canvass, Prince Dhritrashtra gradually regained consciousness. With trembling body, feeling in all directions, he said to Vidur 'Wise Vidur, being deprived of sons and help, I have only you for refuge.' Having said this the king again became insensible. His kinsmen sprinkled him over with cold water and fanned him long before he regained consciousness. 46. Hissing like a serpent pent up in a jar the king meditated silently over the grief of his son's death. Sanjaya

ततः सर्वे दृष्ट्वा राजानमातुरम् ॥ ५१ ॥ ततो नरपतिः मन्तु लब्धसंज्ञ परन्तपः ।
 कृत संज्ञस्यो दीनो रोदमाने भृशानुरम् ॥ ५२ ॥ प्राञ्जलि निस्वसन्तश्च तं नरेन्द्रं
 मुहुर्मुहुः । सम्प्रदास्यत क्षत्ता बधस्ता मधुराणह ॥ ५३ ॥

इति शरयपर्वणि शरयवधपर्वणि धृतराष्ट्रः प्रमोहे प्रथमे अध्यायः २ ॥

वैशम्पायन उवाच । त्रिपुरास्य नारीषु धृतराष्ट्रोऽम्बिकासुतः । विललाप महा
 राज दुःखाद्बुद्धतरं गतः ॥१॥ सधृगमिष निदरस्य करोध्रग्वन् पुनः पुनः । शिबिन्स्य
 च महाराज ततो वचनमब्रवीत् ॥ २ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । अहो धन महद्दुःखं यद्दह

वचनको सुनकर विदुरजीने उन वारम्बार कम्पायमान स्त्रियोंको यह धीरजम
 विदाकिया । ५१ । तब तब स्त्रियाँ उस स्थान से निकल गई । और तब मुहुद
 डोगभी राजाको देखकर चलेगये । ५२ । इसके पीछे संजयने उस राजाको नवेतता
 बुक महादुःखी और रोदन करनेवाला देखा उस वारम्बार भास लेनेशाने महा
 रामको विदुरजीने हाथ जोड़कर मधुरवाणी से विश्वास कराया ॥ ५३ ॥

अध्याय २ ॥

वैशम्पायन बोले हे महाराज तब स्त्रियों के विदाकर देने पर आम्बिका के पुत्र
 धृतराष्ट्रने विलाप किया और महादुःखको पाया । १ । हे महाराज वारम्बार अपने
 हाथोंको केंपाते उस धृतराष्ट्रने उष्य श्वासाओंको लेकर और बहुत चिन्ता क
 हीके यह वचन कहा । २ । हे सुत यह महादुःख और दुःखका स्थान है जो मैं

wept to see king in that state. Gandhari and other women too, wept
 over his grief, Then Dhritrashtra said to Vidur, " Let all the women
 and Gandhari depart from here. Leave me alone, for I am fainting
 with grief. " At this Vidur Consoled the women and sent them away.
 The women and kinamen left the king alone. Seeing the king shed
 tears in great distress, Vidur respectfully consoled him " 54.

CHAPTER II

Vaishampayan said, " At the departure of the women, Dhritrashtra
 wept for grief. With trembling hands and deep sighs, he said in
 great distress, "It grieves me much to hear that the Pandavas are all-

पाण्डवाग्रजे । क्षेमिणश्चाद्यप्याश्वे व त्वत्तः सूत भ्रूणोमि वै ॥ ३ ॥ वज्रमारमय नून
 हृदयं सुहृदं मम । वज्रकुवा निहतान् पुत्रान् दीव्यते न सहस्रवी ॥ ४ ॥ क्षिप्रतयित्वा
 वपस्तेषां बालक्रीणाञ्च सञ्जय । अद्य भ्रूया हतान् पुत्रान् भृशं मे दीव्यते मनः ॥ ५ ॥
 अश्वत्थाद्यदि तेषाम्पु न मे रूपानदर्शनम् । पुत्रस्नेह कृता प्रीतिर्निरपमंतेषु पारिता
 ॥ ६ ॥ बालभाव मतिक्रान्तान् यौवनस्थाय तानहम् । मध्यमासोक्तया भ्रुत्वा हृष्ट
 भासे तदामघ ॥ ७ ॥ तानद्य निहतान् भ्रुत्वा हृतेभ्यर्थांन् हतौजसः । न कमे वै
 कञ्चिच्छान्तिं पुत्राधिमिर भिष्णुतः ॥ ८ ॥ परेहि पुत्र राजेन्द्र ममानायश्च स्वाग्रतम
 त्वयाहीनो महदाहो कामु यास्वाम्यहं गतिम् ॥ ९ ॥ कथं रं पृथिवीपालां स्वयकर्त्ता
 तान स्वपापयन् । शेषे विनिहतो भ्रूयै प्राकृतः कुटुबो यथा ॥ १० ॥ गतिं भूत्वा
 महागज शानिनां सुहृदं तथा । मन्त्रं वृक्षश्च मां वीर विहाय केशामिगच्छसि ॥ ११

तुम्हें पाण्डवोंको कुशल पूर्वक अविनाशी सुनताहूँ । १ । निश्चय करके मेरा हृदय
 वज्रके समान कठोरहै जो पुत्रोंको मराहुआ सुनकर हजारों टुकड़े नहींहोताहै । २ ।
 हे संजय उन्होंकी बालक्रीड़ा और अवस्थाको शोचकर और अब बेटोंको मृतक
 सुनकर मेराचित्त अत्यन्त फटता है । ३ । जो अन्धेपने से मुझको उनके रूपका
 दर्शन नहीं होताथा परन्तु पुत्रतासे उत्पन्नहई प्रीति मदेव उनपर नियन्त्री । ४ ।
 हे निष्पाप मैं उनको बाल्यावस्थाके स्मृतीत करनेवाले और तक्षण सुनकर अत्यन्त
 प्रसन्न होताथा । ५ । अब उन पुत्रोंके दुःख समुद्र में डूबाहुआ मैं उन बड़े तेज
 शिव्योंको ऐश्वर्य से रहित और मराहुआ सुनकर कहीं शान्ती को नहीं पाता
 हूँ । ६ । हे राजेन्द्र पुत्र अब मुझ अनाय के सम्मुख आवो, ७ हे महाबाहु मैं तुम्ह
 से गदितहोकर किसगणिको पाऊंगा । ८ हे तात तुम, किसमकार मिलेहुये राजाओं
 को छोड़कर प्राकृत नीच मन्त्री रखनेवाले, राजाके समान मृतकहोकर पृथ्वीपर
 सोतेहो । ९ । हे महाराज वीर तुम जातवाले और सुहृदजनोंके गति होकरमुझ
 अन्धे और वृक्षको त्यागकर कहाँ जाओगे । १० । हे राजा तेरी वह कृपाप्रीति और

safe and sound Surely my heart is very hard for it does not split
 into a thousand parts on hearing the news of the death of my sons.
 My mind is in great distress to hear of the death of my sons, when
 I remember their playful boyhood. 5. I loved them much, though I
 could not see them on account of blindness. I felt much joy when I
 heard that they had passed their boyhood and turned youths. On
 hearing of the death of those glorious ones I am plunged in the ocean
 of grief and can find no peace in my mind. Come to me my princely
 son. To what state shall I be reduced without you? Why do you
 sleep in death like a king having foolish ministers, when you had
 so many good warriors to protect you? 10 Being the refuge of your
 friends and clan, where are you going, leaving me old and blind?

सा कृपा सा च ते प्रीतिः सा च राजत् सुमनिता । कथं विनिहतः पायैः संयुगेभ्यपर-
जितः ॥ १२ ॥ को बु मांमुषिते काले तात तातेति वक्ष्यति । महाराजेति सततं
लोकनाथेति चालकृत् ॥ १३ ॥ परिस्पृश्य च मां कण्ठे स्नेहेकाकिलमनाचन । मनु
शाश्वति कौरव्य तत् साद्य वदमेव च ॥ १४ ॥ ननु नामहिमश्रेयं वचनं तव पुत्रक ।
अयेसौ मम पृथ्वीयं वया पायस्य नो तथा ॥ १५ ॥ भगदत्तः कृपः शल्यः आवनयोश्च
जयद्रथः । भरिधवाः शल्यश्च सोमदत्तोश्च बाहिलकः ॥ १६ ॥ अश्वत्थामा च भीष्मश्च
मागधश्च महाबलः । वृहद्रथश्च काशीशः शकुनिश्चापि सीवलः ॥ १७ ॥ म्लेच्छाश्च
वहुसाहस्राः शकाश्च यवनैसह । सुदक्षिणश्च काम्बोजश्चिगर्तवियपितलया ॥ १८ ॥
भीष्मः पितामहश्च भारद्वाजोश्च गोतमः श्रुतायुश्चाच्युतायुश्च शतायुश्च धीप्यवान्
॥ १९ ॥ जलसन्धोऽथाप्यशुगी राक्षसश्चाप्यलायुषः । अलम्बुषो महाबाहुः सुबाहुश्च
महारथः ॥ २० ॥ एते खान्यं च बहवो राजानो राजसत्तम । मयं मुच्यताः सर्वे प्राणां

शिष्टाचार्या युद्धो मे अजेय होकर तुम पाण्डवों के हाथ से कैसे मारे गये । १२ ।
समयपर उठनवाला होकर मुझको बारम्बार कौनकहेगा कि हे तात हे महाराज
और हे लोकनाथ । १३ । मोति से आदनेत्र होकर तुम कण्ठ से मिलकर मुझसे
शिवाकरो हे कौरव उस शुभवचन को मुझसे कहा । १४ । हे पुत्र निश्चय करके
पने तरे इस वचन को सुना कि यह बहुत पृथ्वी जैसा भरी है वैसे कुन्तिके पुत्रकी
नहीं है । १५ । भगदत्त, कृपाचार्य, शल्य, अवन्तिदेशका राजा, जयद्रथ, शल्य सोम
दत्त बाहलीक । १६ । अश्वत्थामा, कृतवर्मा, महाबली मागधका राजा, वृहद्रथः काशी
का राजा सुबलका पुत्र राजाशकुनी । १७ । बहुत से हजारों म्लेच्छ यवन । समेत
शक, सुदक्षिण, काम्बोज, राजा त्रिमस । १८ । भीष्मपितामह, भारद्वाज, द्रोणा
चार्य, गोतम कृपाचार्य पराक्रमी श्रुतायु, अच्युतायु, शतायु । १९ । जल
सन्ध, आप्यशुगी, अलायुष राक्षस महाबाहु अलम्बुष, महारथी सुबाहु । २० । हे

In spite of your mercy, love, good manners and invincibility, how were you slain by the Pandavas? Rising betimes, who will call me father and Mahara; Shedding tears of affection and embracing me, you often said, "What are your orders?" Address me in the same sweet words once more. "I have often heard you say, "The kingdom does not belong to the son of Kunti as it does to me. 15 Bhagdatta, Kripacharya, Shalya, the princes of Avanti, Jayadrath, Shala, Somdatta, Bahlik, Ashwatthama, the brave king of Magadh, Brahadval, the king of Kashi, Shakuni the son of Suval, thousands of mlechas, Yavans and Shaks, Sudakshmi, Kamboj, the king of Trigart, Bhisim the grandfather, Drona, Kripacharya, brave Sarutayu, Achyutayu, Shatayu, Jalasandhi, Aishyashringi, Alayudh the rakshas, brave, Alambush, Savatia and other great kings are ready to lay down their

स्युद्धा महारणे ॥ २१ ॥ येषामध्ये स्थितो युद्धे भ्रातृभिः पारवारितः । शोचन्निष्ठा
 म्यह पाथान् पाण्डवालाश्चैव सर्वशः ॥ २२ ॥ कर्णोऽपि नृपसार्जुन द्रौपदीर्वाञ्छ सयुगे ।
 सात्यकिं कुन्तिभोजश्च राक्षसश्च घटोत्कचम् ॥ २३ ॥ एको ज्येष्ठो महाराज समर्थः
 सन्निवारणः । समरे पाण्डवेषानां संकुञ्जोऽप्यभिधातव्यम् ॥ २४ ॥ किं पुनः कथिता
 वीरा कृतवैराश्च पाण्डवैः । अथ वा सर्वे एषैरे पाण्डवस्यानुपायिभिः । योऽस्त्वन्ते
 सह राजेन्द्र हनिष्यन्ति च नाम्मुच २१ ॥ कर्णलोको मया सार्जुन निहनिष्यति पाण्डवान्
 । २६ ॥ एता नृपतयो वीरा स्यास्यन्ति मम शास्त्रिणः । यश्च तेषां प्रजेतान्ते वासुदेवो
 महाबलः मम सन्महाते राजन्निजि मम ब्रह्माक्ष ॥ २७ ॥ तस्याह वदत इत
 नृपयो मम सन्निधौ । शक्तितोऽनुपस्थामि निहतान् पाण्डवाम्मुच ॥ २८ ॥ तेषां
 मध्ये स्थिता यत्र हन्यन्ते मम पुत्रजा । वयायश्छमाणाः समरे किमश्नन्नागवेचत
 ॥ २९ ॥ सोऽप्यश्नन्निहतो यत्र लोकनाथ प्रतापवान् । शिखण्डिनः समासाद्य मुनेन्द्र इव

राजर्षि यह सब राजा और अन्य बहुतसे राजा सब बड़े युद्धमें माखों को त्याग
 करके मेरे निमित्त तैयार हैं । २१ । इन्हींके मध्य में नियत और भाइयोंसे संयुक्त
 मैं युद्ध में सब पाण्डव और पाण्डवालों से युद्ध करूंगा । २२ । हे राजाओं में अह
 मैं युद्धमें चन्देरी देशी राजा द्रौपदीके पुत्र सात्यकि कुन्तभोज और घटोत्कच
 राक्षस के साथ युद्ध करूंगा हे महाराज मैं क्रोधयुक्त अकेलाभी युद्ध में सम्मुख
 दौड़नेवाले इन पाण्डवोंके हटाने में समर्थ हूँ । २४ । फिर पाण्डवों के साथ अनुता
 करनेव ले, सब वीरलोग साथ होकर क्यों न समर्थ होंगे हे राजेन्द्र अबवा यह सब
 सबलोग पाण्डवोंके आगे पाँछवासे सब शूरवीरोंसे लड़ेंगे और उनको युद्ध में
 मारेंगे । २५ । अकेला कर्णभी मेरे साथ होकर पाण्डवोंको मारेगा
 इसकपीछे राजा लोग मेरी आज्ञामें नियतहोंगे और जो इन्हीं का स्वामी और
 रक्षक वासुदेव है हे राजा वह इन्हींको नहीं धरणकरेगा बसने युद्धमें यह प्रतिज्ञा
 करली है । २७ । हे मृत मैंने बहुधा अपने सम्मुख कहहुवे उसने बचनको मुनाक
 युद्ध में शक्तिसे पाण्डवों को मृतक देखताहूँ । २८ । इन्हींके मध्यमें युद्ध के उपाय

lives for my sake Surrounded by them and my brothers, I shall
 fight with the Pandavas and Panohala I shall fight with the warriors
 of Chander: the sons of Draupadi, Satyaki, Kuntbhoy and
 Ghatotkch. I can alone withatan l all the Pandavas coming together,
 why's all I q not able to do it when assisted by so many
 warriors? These men will fight with the followers of the Pandavas
 and will slay them in battle 5. Karan alone can slay the Pandavas.
 Then the kings will obey me Vasudev the leader the Pandavas
 will not bear arms as he has promised to do so" I myself heard
 often from him that the shakti would cause the death of the Pando-
 vas. Most of my sons were slain by Bhims. What could be the

अभ्युक्तम् ॥ ३० ॥ प्रोज्ज्वल्य ब्राह्मणो यत्र सर्वशास्त्रास्त्रपरम् । निहत पाण्डवै मन्थे
 किमन्वजागधेयम् ॥ ३१ ॥ धृतिभवा हतो यत्र; सामदत्तश्च । अयुगे । प्राहृलीकश्च
 महाराज किमन्वजागधेयतः ॥ ३२ ॥ भगदत्तो हतो यत्र गजयुद्धविदारकः । जयद्र
 थश्च निहतः किमन्वजागधेयम् ॥ ३३ ॥ सुदक्षिणी हतो यत्र जलमन्थश्च पौरवः ।
 युतायुधचायुतायुध किमन्वजागधेयतः ॥ ३४ ॥ महाबलस्त्रया पाण्ड्यः सर्वः शक्यपती
 चर - । निहतः पाण्डवैः संख्ये किमन्वजागधेयतः ॥ ३५ ॥ वृहद्व्यो हतो
 यत्र मागधश्च महाबलः । उग्रायुधश्च विभ्राण्ट प्रतिमान धनुष्मताम् ॥ ३६ ॥
 जायन्तो निहतौ यत्र वैगसेश्च तराधिपः । सशतकाश्च पटवः किमन्वजागधेयतः
 ॥ ३७ ॥ अलम्बुरजया राजा राक्षसभाष्यलायुधः । आर्षथुङ्गिश्च निहतः किमन्व
 जागधेयतः ॥ ३८ ॥ नारायणा हतो यत्र गोपाला मुञ्जदुर्मदा म्लच्छाश्च बहुसाहस्रा
 किमन्वजागधेयतः ॥ ३९ ॥ शकुनिः, सर्वलो यत्र कैतव्यश्च महाबलः । निहतः सख्यो

करनेराके येरे पुत्र उसदायुके पुत्र भीमभेनके हायसे बहुवा युद्धम अधिकतर परतेई
 इसमें प्रारब्धके सिवाय दूसरी बात क्याई । २९ । जिस स्थानपर लोकनाथ प्रताप
 बान धीष्णमी शिखण्डीको सम्मुख पाकर ऐसे मारेगये जैसे कि शृगालोको पाकर
 महाबुगेन्द्र सिंह माराजाता है । ३० । जिस स्थानपर सब अस्त्र शस्त्रोंमें कुशक
 शोनाचार्य ब्राह्मण पाण्डवों के हायसे मारेगये । तो प्रारब्धसे दूसरी कौन बात है
 । ३१ । इसयुद्धमें धृतिभवा सोपदत्त और महाराज वाह्लीक मारेगये और हाथियों
 के युद्धमें कुशल भगदत्त मारागया और जयद्रथ मारागया इसमें प्रारब्धके सिवाय
 कौनसी बात है । ३२ । सुदक्षिण पौरव जनसन्ध मारागया वहां प्रारब्ध से दूसरी
 बात क्या है कि श्रुतायु और अच्युतायु मारेगये । ३४ । और उमीप्रकार सषत्रा
 धारियोंमें ब्रेष्ठ महाबली पाण्ड्य युद्धमें पाण्डवोंके हायसे मारागया वहां प्रारब्ध
 से दूसरी बात क्याई । ३५ । जिस स्थानपर महाबली वृहद्वल, मागध, और धनुष
 धारियों का ध्वजारूप पराक्रमी उग्रायुध दोनों अबन्तिदेश के राजा और राजा
 भिगर्ष, मारेगये और बहुत से संसतक मारेगये वहां प्रारब्ध से दूसरी बात क्या है
 । ३७ । उमीप्रकार राजा अलम्बुष और अलाष्य राक्षस और आर्षथुगमी मार

cause of this other than Fate? None but Fate caused the death of
 glorious Bhishm who was slain by Srikhandi and others as a lion by
 jackals 30. It was the working of fate that caused the death of
 Dronacharya, Bhurishrava, Somdatta, Prince Vahlik, Bhagdatta
 who was clever in elephant war, Jayadrath, Sudakshin, Paurav,
 Jalasandh, Shrutayu, Achyutayu and Pandya. 35 It was on account
 of Fate that Vrihadval, Ugrayudh, the two princes of Avanti
 and the kings of Tigrat were slain. Many Sansapataks were slain as
 well as Alamvush, Alayndh, Arshyashring, the Gopal and Narayan
 warriors and thousands of mlechas. All this was done by Fate. Who

धीर किमन्वज्जागधेयत ॥ ४० ॥ यत्र शूरा महात्मानः सर्वशस्त्रास्त्रपारगाः । बहवो
 निहता मृत महेन्द्रसमधिकमाः ॥ ४१ ॥ नानादेशस्त्रमावृत्ताः क्षत्रिणां यत्र सत्रय
 निहता समरे सर्वे किमन्वज्जागधेयत ॥ ४२ ॥ पुत्राश्च मे विनिहतो
 पौत्राश्चैव महाबला । वयस्या स्रातरथैश्च किमन्वज्जागधेयत ॥ ४३ ॥
 भागधेयसमायुक्तो ध्रुवमुपघते नर । यस्तुभाग्यसमायुक्त स शुभं प्राप्नु
 यात्पर ॥ ४४ ॥ अहं विमुक्त स्थैर्योऽयिः पुत्रैश्च वेद मन्त्रयः । कथमद्य
 मधिप्यामि वृद्ध शत्रुवशं गत ॥ ४५ ॥ मान्यद्वय पर मन्त्रे वनवा
 साहते प्रभो । सोऽहं वन गमिष्यामि निर्धन्नुर्जातिसन्तये ॥ ४६ ॥ न हि मन्वज्ज
 वेधेयो वनाय गमनाहते । इमामवस्थां प्राप्तस्य लूनपक्षस्य सञ्जय ॥ ४७ ॥ दुःख्यो
 धनो इतो यत्र शत्रुस्य निहतो युधि । पुत्रास्तनो विभ्रास्तश्च विकर्णश्च महाबल
 ॥ ४८ ॥ कथं हि श्रीमन्नेनस्य भोऽयं शब्दं मुच्यते । एकं समरे वनं हतं पुत्रशतं

गयो चहां प्रारब्धसे दूमरी बात क्याहै । ३८ । जिस स्थानमें युद्ध दुर्मद गोपाल
 और नारायण नाम शूरवीर मारेगये और हजारों म्लेच्छ मारेगये वहां प्रारब्ध से
 दूमरी बात क्याहै । ३९ । जिस स्थानपर सौवलका पुत्र महाबली धीर शकुनी
 केतव्य सेना समेत मारागयावहां प्रारब्धसे दूमरीबात क्याहै । ४० । हे मृत संजय
 जिस स्थानपर शूरमहात्मा और सब अस्त्र शस्त्रों में कुशल महाइन्द्र के समान परा-
 क्रमो नानापकार के देशोंके स्वामी बहुत से क्षत्री युद्धमें मारेगये वहां प्रारब्ध से
 दूमरी बात क्याहै । ४१ । भरे महाबली पुत्र और पौत्र समान बनस्वाके वहां
 मारेगये वहां दूसरीबात क्याहै । ४२ । निश्चय करकेमनुष्य प्रारब्धकों साधेकर
 उत्पन्न होनाहै जो प्रारब्धवानहै वह सुखकोपाताहै । ४३ । हे संजय अपनेप्रारब्ध
 और पुत्रों से रहित शत्रुओं की आधीनता में वर्तमान दृष्ट में भय कैतरहंगा । ४४ ।
 हे समर्थ वीर वनवास के सिवाय दूसरी बात भ्रष्ट नहीं मानताहूं तो पुत्रों और
 अपनेजातके लोगोंसे रहित मैं जातवापों के नाशहोन पर वनको जाऊंगा । ४५ ।
 वनमें जानेके सिवाय कोई दूसरीबात भरेकल्याणकी नहीं है संजय जोकि मैंपरकैच
 पक्षीके समान इस दशाका पानेवालाहू । ४६ । जिस युद्धमें दुःखोधन, शत्रुयः
 महाबली दुःशासन, शल और महाबली विकर्ण मारागया तब मैं भीमसेन

els, except Fate, could cause the death of Shakuni and Kaitavya and
 their armies? 40. Was it not Fate that caused the death of so
 many warriors powerful like Indra; with my sons; grandsons and their
 companions? Man's destiny comes with his birth and the fortunate
 only are happy Being old and deprived of sons by Fate, how shall
 I be able to live oppressed by foes? 45. I see no course better than
 living in forests after this great destruction of sons and kinsmen.
 No life other than that of forests, can do me good, when I am like a
 wingless bird. How shall I bear the harsh words of Bhishm who has

मम ॥ ५१ ॥ अस्मिन्मरणस्तस्य दुःखोऽघनपञ्चमः । पु. अशोकानि सन्तसो न
 शोभे पश्या गिरः ॥ ५० ॥ वैशम्पायन उवाच । एष स शोकसन्तसः पार्थिवो हत
 बान्धवः ॥ सुहृन्सुमुखायानः पुत्राधिभिरभिप्लुतः ॥ ५१ ॥ विद्वेष सुखिर काल
 घृतराष्ट्रोऽभिवकासुत । दीर्घमुष्णञ्च निभ्रस्य किन्तवित्वा परामधम् ॥ ५२ ॥ शोकन
 महताविष्ट सप्तसो भरतर्षभ । पुनर्गावहगणिं सूत पथ्यपृच्छद्यथात्मम ॥ ५३ ॥ हत
 राष्ट्र उवाच । भीष्मद्रोणौ हतौ श्रुत्वा सूतपुत्रञ्च पातितम् । सेनापतिं प्रणेतांरं किम
 कुर्वन्ति भ्रातृकाः ॥ ५४ ॥ यं यं सेनाप्रणेतांरं युधि कुर्वन्ति भ्रातृकाः ।
 अखिरेभ्यः कालेन तं तं निघ्नन्ति पाण्डवाः ॥ ५५ ॥ एवमेव हतो भीष्म
 पश्यतां च किराटिनाः । एवमेव हतो द्रोणः सर्वेषामिव पश्यताम् ॥ ५६ ॥ एव
 मेव हतः कर्णः सूतपुत्रः प्रतापवान् । सरावकानां सर्वेषां पश्यतां च किराटिना ॥ ५७ ॥

के कठोर शब्दों की कैसे सुनूँगा भिम बकेले ने युद्धमें मेरे ली पुत्रोंको मारा
 ॥ ५१ ॥ दुःखोघन के मरेसे दुःखी और शोकसे भयंकर संतप्त होकर मैं उस वारम्बार
 चार्चीलाप करनेवाले भीमसेनके कठोर शब्दोंकी नहीं सुनूँगा ॥ ५० ॥ वैशम्पा-
 यन बोले कि जिसके बान्धव मारेगये वह राजा इसमकार शोक से तपा हुआ
 वारम्बार अचेत पुत्रोंके शोकमें डूबेहुये ॥ ५१ ॥ अश्विकाके पुत्र भरतर्षभ 'वेदेशोक
 से पूर्ण दुःखी, घृतराष्ट्रने चड़ी दरतक विलापकर 'कम्बी श्वासा लेकर अपनी परा-
 न्वब को शोककरके फिर गावहगण के पुत्र सूत संजयसे मूल्यपृच्छात पूछा ॥ ५२ ॥
 पुनराष्ट्र बोलेकिः मेरेपुत्रोंने भीष्म द्रोणाचार्यको मृतक और सेनाके स्वामी कर्णको
 गिरायाहुआ सुनकर किसको सेनापति किया ॥ ५४ ॥ मेरेपुत्रोंने जिस जिसको
 स्वामी और सेनापति बनाया पाण्डवोंने योंहीही समयमें उस उस को मारा ॥ ५५ ॥
 युद्धके मस्तक पर चर्चमान भीष्मजी, तुम्हारे देखतेहुये मारेगये इसीप्रकार द्रोणाचार्य
 भी, सबके देखते मारेगये ॥ ५६ ॥ ऐतेही राजाओं समेत तुम सबके देखते मृतकों
 पुत्र प्रतापवान् कर्ण अर्जुन के हाथसे मारागया ॥ ५७ ॥ मुझको पथमही महात्मा
 विदुरजीने समझाया था कि यह सबसृष्टी दुःखोघनसे अपराधसे नाशकी पावेगी

slain: Duryodhan, Shalya, Dushasna, Shal and Vikarna Full of sorrow
 and grief for the death of Duryodhan, I shall not be able to hear the
 words of Bhishm." 50. Vaishampayan continued that Dhritrashtra,
 full of sorrow and grief for the death of Duryodhan and heaving
 deep sighs on account of his defeat, asked the Sat 'to give'
 all the account in detail, saying, " Whom did my sons mistal as
 commander of their armies after the death of Bhishm, Drona and
 Karan? All the commanders of our army were slain by the
 Pandavas one after another 55." Bhishm and Dronacharya were
 slain by the Pandavas in your presence Karan too, was slain by
 Arjun before your very eyes. Vidur had predicted the destruction

पुत्रमनाहमुक्ता य विदुरेण महारथना । दुर्योधनापराधेन प्रज्जेयं विमशिव्यति ॥ ५८ ॥
 कश्चिन्न सम्यक् पश्यन्ति मूढाः । सम्यगवक्ष्ये च । तद्विदं मम शूद्रम् तथा मृतं वक्ष्ये
 तत् ॥ ५९ ॥ यद्वर्धते स धर्मोत्सा विदुरः । सर्वधर्मवित् । तत्तया समनुमास वचनं
 सत्यमोरितम् ॥ ६० ॥ देवोपहतचित्तोऽयं यमया न कृत पुरा । जनयश्च फलं तस्य ब्रूहि
 गाधलण्डे पुत्रः ॥ ६१ ॥ को वै मुख्यमनीकानामासीत् । कर्म निपातितं । अर्जुनं
 वासुदेवम्, को वा प्रत्युद्ययो रथी, ॥ ६२ ॥ केरक्षत्र दक्षिणद्वारं मद्राजस्य संयुते ।
 वामद्वारं योद्धुकामस्य को वा, धीरस्य पृष्ठत ॥ ६३ ॥ कथञ्च वः ज्ञेयतानामद्राजो
 महाबलः । निहतः पाण्डवैः सख्ये पुत्रो वा मम सञ्जय ॥ ६४ ॥ ब्रूहि । सर्वं वधात्सर्वं
 भारतानां महाक्षयम् । यथा च निहतः सख्ये पुत्रो दुर्योधनो मम ॥ ६५ ॥ पांचालाव
 वधा सर्वं निहता, सपदानुगा । धृष्टद्युम्न शिखण्डी च द्रौपद्याः, पञ्च । चात्मजाः
 ॥ ६५ ॥ पाण्डवाश्च यथा युक्त्वास्तथोमौहृत्वात्स्यते युधि । कृपश्च द्रुपदश्च ॥

। ५८ । पर-कोई अज्ञानी, बहुत विचारकर-अच्छीरिहितपर ध्यान नहीं करते, वह
 कृपा विचार मुझ, अज्ञानीकाही है वह वचन बैसाहीहुआ । ५९ । सब धर्मों के
 जाननेवाले, उन विदुरजी ने जो जो कहाया वह सत्य कहाहुआ वचन उसीप्रकारसे
 प्रत्यक्षहुआ । ६० । पूर्वसमय में देवसे इतचित्त मैंने जो उनके वचनोंकी नहींकिया
 उसी, अन्याय का यह फल वर्तमानहुआ है संजय अब फिर कहे । ६१ । कर्म
 के गिरानेपर सेनाओंका मुख्य कौनहुआ और कौन रथी अर्जुन और वासुदेवजी
 के सम्मुखगया, ६२ । युद्धमें युद्धाकाशी शत्रुके दाहिनेचक्र को किसने रक्षित
 किया और किसने उस धीरके वामचक्रकी रक्षाकी और किसने पीछे से रक्षाकरी
 । ६३ । हे संजय तुमलोगों के-एकत्र-स्थित होनेपर-महाबली शत्रु और मेरापुत्र
 युद्धमें कैसे पाण्डवों के हाथमें-मारागया । ६४ । भरतवंशियोंके उससब बड़े नाश
 को मुख्यतः से कहा-जिसप्रकार युद्धमें मेरापुत्र दुर्योधन मारागया ॥ ६५ ॥ और
 मैंने सब पांचाल धृष्टद्युम्न शिखण्डी, अपने पीछे चकनेवालों समेत और द्रौपदी के
 पांचोपुत्र मारेगये ६५ । और जैसे कि सब, पाण्डव दोनों पादव कृपाचार्य कृतवर्मा

of the warriors by the fault of Duryodhan I made a mistake because I gave no heed to his words which have proved true. Vidur, who knows all about dharma, had spoken true. 60. This is the result of my not giving ear to his words. Pray tell me, Sanjaya, how it happened. Who was the next leader after Karan, to face Arjun and Vasudev in battle. Who protected the right wheel, the left wheel and rear of Shalya? How were Shalya and Duryodhan slain by the Pandavas in spite of all our warriors? Describe the great destructive battle in which my son was slain. How were the Panchala, Dhruvshydjumn and Shikhandi, with their followers and the sons of Draupadi slain. How did all the Pandavas, with the Yadavas, Kripacharya,

भारद्वाजस्य आत्मजः ॥ ६७ ॥ यद्यथा यादृशं चैव युद्धं वृत्रमभूत्ततः । अखिलं श्रोतुं
विच्छामि कुशलो ह्यसि सञ्जय ॥ ५८ ॥

इति शतपथपर्वणि शल्प वरपर्वणि धृतराष्ट्र उवाच ॥ अथेति त्रयोविध्यायः २ ॥

सञ्जय उवाच । भूषु राजप्रवर्हितो यथा वृत्तो जन्मक्षयः । कुर्णो पाण्डवाणां च
सभासाध परस्परम् ॥ १ ॥ निहतो मृतपुत्रे तु पाण्डवेन महात्मना । विदुषुषु च
सैन्येषु समानीतषु चासहृत् ॥ २ ॥ घोरं मनुष्यदेहाना माञ्जो गजवरक्षये, यस्तत्
कर्म हते पार्थः-सिंहनादमथाकरोत् । तदा तेषु सत्तम्राजन् प्राविशत् सुमङ्गयम्
॥ ३ ॥ न सन्धातुं मनीकानि न खेयाथ पराक्रमे । आत्माद्दुग्धहेते कर्णे तर्था यौवस्य
कस्माचित् ॥ ४ ॥ यजिजो नाविभग्नाधामगाधे धिग्गुधा इव । अपरे पारमिच्छन्तो
और भरद्वाजका पौत्र अश्वत्यामा यह सप्त शूद्रमे वचे ॥ ६७ ॥ इसके पीछे जिस प्रकार
बो जैसा युद्ध हुआ उस सबको सुना चाहता हूँ हे संजय तुम वर्णन करने में बड़े
कुशल हो ॥ ६८ ॥

अध्याय ३ ।

संजय बोले कि हे राजा सावधान होकर सुनो जैसे कि युद्धभूमि में मृतपुत्रों
के शरीरोंका अत्यन्त घोर नाश वा राजाओं की हानि होजाने और कर्णके मरनेपर
पाण्डवों ने सिंहनाद किये तब आपके पुत्रों में बड़ा भारी भय उत्पन्न हुआ । १ ।
कर्णके मरनेपर आपके किसी शूरवीरकी भी सेनाओंकी चढ़ाई और शीघ्र पराक्रम
करने के साहस की बुद्धी नहीं हुई । ४ । जैसे कि नौका रतित अथाह जल में
नौकाके टूटनेपर व्यापारी लोग अपार जलके पार देनेकी इच्छा रखनेवाले होते हैं
उसी प्रकार अश्विनके हाथसे सेनापाति कर्णके मरनेपर आपके लोग रक्षाके चाहनेवाले

Kritvarma and Ashwathama escape destruction? Pray tell me, Sanjaya, in full detail, how it all happened." 68.

CHAPTER III

Sanjaya said, "Hear it carefully, king, how at the death of Karan and other warriors the Pandavas roared and the Kauravas fled for fear. None of your great warriors intended to face the Pandavas (at the death of Karan. Your men sought protection after the death of Karan, as merchants wish for land when their ship is wrecked in the midst

द्वे द्वीपे किराटिना ॥ ५ ॥ सूतपुत्रे दत्ते राजन् वितस्ताः शरविक्षताः ॥ अनाथा
 नाथ निष्कन्तो युगाःसिंहदिना इव । भगधृक्का इव वृषाः शार्ङ्गदंष्ट्रा इवाङ्गाः
 ॥ ६ ॥ प्रत्यपायाम सायान्हे निर्विजता सन्वसाधिना । हतप्रवीण विध्वस्ता निहृता
 निवृत्तैः शरैः सूतपुत्रे दत्ते राजन् पुत्राप्ते प्राद्वधन् भियात् ॥ ७ ॥ विष्णुकर्षकाः
 सर्वे काण्डिशोका विघ्नतसः अन्योऽन्यमभि निघ्नन्ते पीक्षमाणामपादिता ॥ ८ ॥
 मामेव तूर्णं धीमत्सुमामेव च वृकादरः । अग्नियातीति सन्धानाः पेतुमंमृश्र भरत
 ॥ ९ ॥ हृषानन्ये रथानन्ये गत्रानन्ये महागथाः । आदह्य जयसम्पन्नान् पादात्प्राद्वध
 न्नमपात् ॥ १० ॥ कुञ्जरेः सुन्दता भग्ना सादिनक्ष महारथः । पदातिसंघाश्चाश्वीभिः
 पलायद्भिर्मुंशं हताः ॥ ११ ॥ व्यालतस्कर संकीर्ण सार्यहीना यथा द्वे ।
 तथा त्वदीया निदहे सूतपुत्रे तदामघन् ॥ १२ ॥ हतारोहास्तथा नागादि

द्वे ५। हेराजा सूतपुत्रके मरनेपर भयभीत शस्त्रोंसे घायल आपके अनाथ लोग नाथके
 ऐभवाहेनव लेह्य जैके सिंहासे पीड़ामान हाथीदृष्टीशाखावानवैल और दूटोडाइवाल
 सर्प रत्नाको चातेहैं सार्यक लके समय अर्जुनसे पराजित मृतकधीरवाले, तीक्ष्ण
 वाणोंसे घायल होकर लोग हटभागे । ७ । हे राजा-कर्णके मरतेही यंत्र वा कवचों
 से रहित अचेत भयभीत और परस्परमें मर्दन करनेवाले और भयसेव्याकुल होकर
 देखनेवाले आपकेपुत्र महाभयातुर होकरभागे । ८ । और यहीनश्चय जानकर कि
 अर्जुन और भीम हमारेही सम्मुख आतेहैं यह मानते हुये महा व्याकुलतासे मिरकर
 मृतक प्रायहोगये । ९ । किसी महारथीने घोड़ोंपर किसीने हाथियों पर किसी ने
 रथोंपर चढ़कर बड़े वेगसे भयभीत होकर अपने पदातिथों को त्यागकिया । १० ।
 हाथियोंसे रथ महारथियों से अश्व सवार और भयसे व्याकुल भागेवाले घोड़ों से
 पदातियों के समूह मरेगये । ११ । जैसे कि सर्प और चोरोंसे मरेहुये वनमें अपने
 भेगके लोगोंसे पृथक्होकर मनुष्योंकी जोदशाहोतीहै हेराजा उसीप्रकार कर्णके मरनेपर
 आपक शूरवीरों कोभी वहीदशाहुई । १२ । अथवा जैसेकि मृतक सवारवाले हाथी

of waters, 5. Terrified at the death of Karan and wounded by weapons
 your men wished for a protector like elephants attacked by a lion, oxen
 with broken horns or serpents with broken teeth. Wounded and
 defeated by Arjun's arrows, your men retreated by the evening.
 Deprived of arms and armour, foolishly charging one another and
 terrified, your sons fled in terror. Believing that Arjun and Bhim
 were everywhere encountering them, they were nearly dead, They
 rode their horses, elephants and cars and fled in terror, leaving their
 foot. 10. Cars, horses and men were destroyed by the flying war-
 riors Your men were in confusion like those who are separated from
 their companions in a forest full of thieves and serpents. At the death
 of Karan, they were like riderless elephants or like men with broken

अहंलात्तथामरा । सर्वं पार्थमय लोकमपश्यन् वै भगवानुगः ॥ १३ ॥ तान् प्रेक्ष्य
 द्रवन्तं सर्वान् भीमसेनमयाहितान् । दुर्योधनोऽथ स्व सूत हाहा कुशेदमप्रवात् १५ ॥
 नातिक्रमिष्यते पार्थो धनुष्पाणिप्रघासिधतम् । जघने घत्तमानं मां शूनाद्भवान् प्रबोद्धय
 ॥ १६ ॥ समरे युध्यमाने हि कौश्लेयो मां न लशाय गोःसहृदभ्यतिक्राग्त बलामिष
 महाशैव ॥ १७ ॥ अघासुत सगाविन्द मानिनश्च वृकोदरम् । निहृय शिष्टान् शत्रून्
 कर्मभ्यान्वयमानुयाम् ॥ १८ ॥ तच्छुश्रा कुरुजस्य शूराय्यसदश यथ । सूतो ह्येव
 परिच्छन्नाऽऽनैरदघातचोदयत् ॥ १९ ॥ गज्जादघरथहानाश्च पादाताश्चैव मारिषः ।
 पशुश्चविशति साहस्य प्राद्रघश्छनकैरिव ॥ २० ॥ तान् भीमसेन सकुशो धृष्टद्युम्नश्च
 पार्थतः । बलेन चतुरङ्गनं परिक्षिप्याहनच्छरेः ॥ २१ ॥ प्रत्ययुध्यन्त त सर्वे भीमसेन
 और दृष्टेहाथवाले मनुष्य होते हैं इसी प्रकार आपके सबमनुष्य संसार भरकाही अर्जुन
 रूप देखतेहुये भयमे पीड़ामानहुये । १३ । भीमसेनके भयसे पांडित होकर भागता
 हुआ सबको देखकर और उनहजारों शूरांकोभी भागते देखकर दुर्योधन ने बड़ा
 हाहाकार करके फिर अपने सारथीसे यह वचन कहा । १५ । कि अर्जुन सबसेना
 के मारने को मुक्त धनुषगारी के होतेहुये नहीं आसक्ता है इसमे अपने घोडोंको
 रोको । १६ । मैं निस्मन्देह उस युद्धकरनेवाले अर्जुन को अवश्य मारुंगा
 वह मुझको ऐसे उल्लस्यन नहीं करसक्ता है जैसे कि महासमुद्र अपनी मर्यादा
 नहीं उल्लस्यन करसक्ता है । १७ । अब मैं श्रीकृष्णजी समेत अर्जुन को बा बड़ा
 अहंकारी भीमसेनको और इसी प्रकार सब वाकी बचेहुये शत्रुओं को मारकर
 कर्म के शूल से उदार हुंगा । १८ । सारथीने कौरवों के राजा दुर्योधन के उस
 बचनका, जो कि शूर और भेष्ट लोगोंके कहने के समान था सुनकर सुवर्ण के
 सामानों से आच्छादित घोडों को बड़े धीरेपने से चलायमान किया । १९ । हेभेष्ट
 फिर शयघोडे और हाथियों से रहित आपके पच्चीस हजार पदाती युद्धके नामिक्त
 नियतहुये । २० । फिर अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन और धृष्टद्युम्न ने चतुरंगिणी
 सेना समेत उन पदातियोंको घेरकर मारा । २१ । वहसब भीमसेन और धृष्टद्युम्न

arms they thought that they saw Arjun everywhere and were
 confused with terror. Seeing them running away for fear of Bhim,
 Duryodhan said to the driver, "Arjun cannot destroy the whole army
 as long as I am alive, Check your horses so that I may slay him.
 He cannot withstand me as the ocean can not pass over the coast.
 Having slain Shri Krishna with Arjun and the rest of the enemies,
 together with Bhim, I shall satisfy the debt of Karan " Hearing the
 warlike language of Duryodhan, the driver gently drove the gold
 decked horses. Destitute of horses and elephants, twenty five thousands
 of your warriors stood by him. 20 Then Bhim and Dhrishtadyumna,
 much enraged, surrounded them with their armies and slew them.

सपापेनम् । पाथेपार्यतयोश्चान्ये जगृहस्तत्र नामना ॥ २२ ॥ अक्रुध्वत् रणे भीमस्यै
 मृधे पथ्युपस्थितै । सोमर्ताय्ये रथाचूर्णे गदापाणिरयुध्यत ॥ २३ ॥ न तावत्पश्ये
 भूमिष्ठान्वीर्यपशो वृकादरः । योधयामास कौन्तेयो भुजवर्त्ये समाभ्रतः ॥ २४ ॥
 जातवपपरिच्छिन्नो मगृह्य महर्षो गदाम् । व्यवधोत्तावकात् सर्वान्दण्डपाणिनिवास्तकः
 ॥ २५ ॥ पदान्गोतिदीरव्धास्यक्तजीवितवाग्धवाः । भीममङ्गवद्भवत्संगे पतन्ना
 उरग्नये यथा ॥ २६ ॥ आसाद्य भीमसेनं ते संरव्धा युद्धदुर्मदाः । विनेशुः सव्यका
 द्भूत्वा भूतप्रामा इवास्तकम् ॥ २७ ॥ श्येनपद्मपञ्चरङ्गीमः स्वभेगत मग्धा-तथा । पञ्च
 विशतिभ्राह्मणास्तावकानामपोद्यत् ॥ २८ ॥ इवा तत् पृथगालोक भीमः स्वव्यव
 क्रमः । धृष्टद्युम्नं पुरस्कृत्य पुनस्तस्थौ महाबलः ॥ २९ ॥ माद्रीपुत्री तु शकुनिं पाम्प
 क सम्मुख होकर युद्ध करनेबोग और किसी ५ ने पाण्डव और धृष्टद्युम्न के
 नामोंको लेकर पुकारा ॥ २२ ॥ तबउने सम्मुख भाषेहुये पदातियों से युद्ध में
 भीमसेन क्रोधरूप हुये और बड़ी शीघ्रता से अपने रथसे उतर हाथमें गदा लेकर
 युद्ध करने लगा ॥ २३ ॥ अपने भुजबल में दृढरूप धर्मको चाहनेवाले रथमें तब
 कुन्तीकेपुत्र भीमसेन ने रथपर चढ़कर उन पदातियों से युद्ध नहीं किया ॥ २४ ॥
 में दण्डधारी सम्राज के समान भीमसेन ने सुवर्ण से भाँडित अपनी गदाको हाथमें
 लेकर पदाती होकर आपके सब पदातियों को मारा ॥ २५ ॥ फिर वह सब पदाती
 भी अपने प्यारे जीवनको त्याग करके युद्धमें भीमसेनके सम्मुख ऐसे गये जैसेकि
 अग्नि में पतेग जाते हैं ॥ २६ ॥ वह सबलोग युद्धमें क्रोधयुक्त युद्धदुर्मद भीमसेन
 को पाकर अकस्मात् ऐसे नाशहोगये जैसे कि जीवोंके समूह मृत्युको देखकर
 नाशहोजाते हैं ॥ २७ ॥ फिर राजकी समान गदा हाथमें लिये धूमनेवाले भीमसेनने
 आपके पच्चीस हजार पदातियोंको मारा ॥ २८ ॥ फिर वह महापराक्रमी अतुलबलभी
 मसेन उस पदातियों की सेनाको मारकर धृष्टद्युम्नको अने करके वहाँपर निवस
 हुआ ॥ २९ ॥ महारथी नकुल महर्षे और सात्वकी शकुनाके सम्मुख हुये और
 वड़े गम्भीर निश्च होकर दुर्योधनकी सेनाको मारते हुये बड़ी शीघ्रता से सम्मुख

They faced Bhim and Dhrishtadyumna in battle and challenged them to fight. Bhim was enraged at this and coming down from his car, he fought them with his mace. Firm on his duty and relying on the strenght of his arms, he did not like to slay them from his car. Like Yam the wieldor of staff, Bhim, taking his golden mace in his hand, slew your foot soldiers. Not caring for their life; they faced Bhim as insects fall into fire. 26. They were destroyed by Bhim as if they had faced Death himself. Roaming like a hawk, mace in hand, Bhim slew twenty five thousands of your foot. Having slain the foot soldiers, Bhim stood by Dhrishtadyumna. Nakul, Sshader and Satyaki faced Shaluni and slew the army of Duryojhan with chooful

किञ्च महारथ । अवेनाऽप्यतन् दृष्ट्वा हस्तुकामा महारथा ॥ ३० ॥ तद्व्याभवा
रान् सुषड्भस्ते निहस्य शितं शरं । तमश्वघापस्तपरितालत्र युद्धमभून्महत ॥ ३१ ॥
ततो धनत्रयो राजन् रथानीकमगाहन । विभ्रुत विपुलोक्षेषु गाण्डीव विक्षिपमश्वत
॥ ३२ ॥ कृष्णसारधिमयान्तं दृष्ट्वा द्रवतहय रथम् । अर्जुनश्चापि योजारं रथदीया
म्राड्बभूव भयात् ॥ ३३ ॥ विप्रहीनरथाश्वाश्च शरैश्च परिवारिता । पञ्चविंशतिका
हस्ता पार्थमर्कडन् पदातय ॥ ३४ ॥ हतथा तत् पुष्पातीक पर्वजालानां महारथ
॥ ३५ ॥ भीमसेने पुनस्तद्वत् नक्षिरात् प्रत्यपद्यत ॥ ३६ ॥ पारावतस्यर्णोऽथ कौविदार
वत्पञ्चजम् । घृष्टयुम्न रणे दृष्ट्वा रथदीया प्राद्रवन् भयात् ॥ ३७ ॥ गान्धारपतिश्च
शोभाश्वमनुसृत्य यशस्विनी । नक्षिरात् प्रत्यदश्येता माद्रीपुत्रो सस्तात्यकी ॥ ३८ ॥ चेकि
तान शिखण्डा च द्रौपदेयाश्च मारिव । हतथा रथदीय पुनश्चत्सिन्य शोभनघाचमन्

दौड़े । ३० । अर्थात् वह अपने तीक्ष्ण बाणोंसे बहुतसे सवारों को मारकर शीघ्रता
से उसके सम्मुख दौड़े और बड़ा युद्ध हुआ । ३१ । हे मनु फिर अर्जुन ने
भी आपकी रथगाली सेनासे सम्मुख जाकर तीनों लाकों में प्रसिद्ध अपवेगांडीव
धनुष को टंकारा । ३२ । आपके युद्धकर्त्ता शूरवीर उस रथ को जिस में कि
श्रीकृष्णजी सारथी और इवेत घोड़ों से युक्त था देखकर और युद्ध करनेवाले
अर्जुनकोभी देखकर भागे । ३३ । रथोंसे रहित और बाणों से पीड़ामान पच्चीस
हजार पदातियों ने कालको पाया । ३४ । पांचालोंका महारथी अत्यन्त साहसी
पुष्पोत्तम श्रीमान् घृष्टयुम्न उनको मारकर । ३५ । थोड़ेही कालमें भीमसेन की
आंखे करके दिखाई दिया । ३६ । तब आपके शूरवीर उस कपोत वर्ण घोड़े और
कौविदाररूपी ध्वजाधारी घृष्टयुम्न को युद्धमें देखकर भयभीत होकर भागे । ३७ ।
और यशस्वी नकुल और सहदेवउस शीघ्र अश्वोंके चलानेवाले गान्धारपतिकों
स्वरण करके सात्याक समेत थोड़ेही देरमें दृष्टिपडे । ३८ । हेअच्छ इसी प्रकार
चेकितान शिखण्डी और द्रौपदी के पुत्रोंन आपकी बड़ी सेनाको मारकर बड़े
शत्रुओंको बनाया । ३९ । फिर वह आपके शूरवीरों को मुख मोड़कर भागतेहुये

minds They slew numero is heromen and fought a hard fight Ar
jun too, entered the field of battle and twanged his Gandiv bow 32
Seeing the car driven by Sir, Krishna and drawn by white horses, your
warriors fled away from Arjun. D'stitude of cars and wou ded by
arrows, the twenty five thousands of foot soldiers met their death.
Having slain them, the brave leader of the Panchala, Dhrishtadyumn
was accompanied by Bhim Your warriors fled at the sight of
Dhrishtadyumn the possessor of pigeon-cloured horses and kob dar
standard. Nakal and Sahadev, with Satyaki, hastened to face Sha-
kual. S milarly, Chekitan, Shikhandi and the sons of Draupadi blew
their conchs after slaying your warriors. Seeing your son turn face,

॥१॥ ३९ ॥ ते सर्वास्तावकान् प्रेक्ष्य द्रवतो वै परामुखान् । अश्रयधावन्त निरपतो
 वृषान् जिरवां वृषा इव ॥ ४० ॥ सेनादेशं तं दृष्ट्वा नव पुत्रस्य पाण्डवः । व्यव-
 रिक्तं कथ्यतां चोत्क्रोध घलवान्नुप । ४१ ॥ तत एनं शौरै राजन् सहसा समवाकि-
 रत् ॥ ४२ ॥ रजसा खोद्वतेनाय न स्म किञ्चन ददपते ॥ ४३ ॥ अग्न्यकारिणो लोके
 रजाम्बुने महीतके । दिशः सर्वा महाराज तावकाः प्राद्वधन् मयात् ॥ ४४ ॥ अश्रयमानेषु
 सैन्येषु कुरुराजा विशाम्पनिः । परेषामात्मनश्चैव समन्तात् समुपाद्रवत् ॥ ४५ ॥ तदा-
 दुर्योधन सर्वाभिरुहावाय पाण्डवान् । युद्धाय भरतश्रेष्ठो देवानिव पुत्रवलि ॥ ४६ ॥
 त एनमभिगमन्तं सहिताः समुपाद्रवन् । नानाराज्यधुजः क्रुद्धा भरसंयन्तो मुहुर्मुहुः
 ॥ ४७ ॥ दुर्योधनोऽप्य सम्प्राग्तप्तानग्निं व्यवमच्छतैः । तत्रा वधीस्तनः क्रुद्धः शक-
 शोतसहस्रशः ॥ ४८ ॥ तत्राद्भुतमपश्याम तव पुत्रस्य पौरुषम् । यदेक-सहितान्मशांश्च
 रणे युद्धत पाण्डवान् ॥ ४९ ॥ दुर्योधन स्पर्कसैन्य मपश्यन्नृश विलतम् । ५० ॥ ततो

देवकर ऐसे मम्भुस आकर वर्त्तमान हुये जैसे कि बैलोंको विजय करके क्रोधयुक्त
 बैल वर्त्तमान होते हैं । ४० । हेराजा इसक पीछे महा पराक्रमी पाण्डव अर्जुन भावकी
 बाकी बची हुई सेनाको देखकर क्रोधयुक्त हुआ । ४१ । बाणों की वर्षा करके
 उससेना को ठकदिया फिर अश्रकार होजाने पर कुछ दिखाई नहीं दिया । ४२ ।
 हमहागज लोकके इन तेज होने और पृथ्वी को धूलयुक्त हानेपर आपके सब
 शूरवीर भयभीत होकर भागे । ४३ । हे राजा सेनाके छिन्न भिन्न होनेपर आपका
 पुत्रदुर्योधन सम्मुखभानेवाले शत्रुओंकी ओरकोदीहा । ४४ । इसकेपीछे दुर्योधन
 ने सब पाण्डवोंको युद्धके लिये ऐसे बुलाया जैसे कि हे भरतर्षभ पूर्व समय में
 हे ना बलिने देवताओंको बुलाया था । ४५ । नाना प्रकार के शस्त्रोंसे युक्त क्रोध
 युक्त बारम्बार घुड़की दंत और गर्जना करतेहुये एक साथही उसके सम्मुखगये
 । ४६ । इसकेपीछे वहाँ भयसे अव्याकुल चित्त क्रोधयुक्त दुर्योधनने अपने निरुप
 बाणों से हजारों सेनाके लोगों को मारा । ४७ । उस स्थानपर हमने आपके पुत्र
 की अपूर्व शिराओंकी देखा कि अकेलाही उनसब इकट्ठे होनेवाले पाण्डवों से

they stood like bulls after conquering other bulls. 40 Seeing the rest
 of your army before him, brave Arjun was enraged. He covered the
 whole army with the shower of arrows. Nothing was to be seen in
 the dark. At the slaughter of their people, who the field was envelop-
 ed in dust, your warriors turned back. 44 At the dispersion of the
 army, your son Duryodhan rushed against the foe. He challenged
 the Pandavas to fight as Bali had done the gods. They came on
 together, daunting and roaring in anger, Intrepid in danger, Duryo-
 dhan slew thousands of warriors with his sharp arrows. We saw
 there the wonderful prowess of your son who alone fought with many

ब्रह्माप्य राजेन्द्र कृतसुद्धिं स्वनात्मज । हर्षयन्निव तान् योधानिद्ब्रुवन्नमस्रवीत् ॥ ५१ ॥ न त देश प्रपश्यामि पृथिव्यां पशंतेषु च । यत्र याताम वा ह्यस्यु पाण्डवा किं स्थनेन व ॥ ५२ ॥ स्वल्पपञ्चापि बलं तेषां कृष्णो च मृशविज्ञो । यदि सर्वत्र तिष्ठ मो प्रयो नो विजयो भवेत् ॥ ५३ ॥ विप्रपातांस्तु वां भिन्नान् पाण्डवा कृतकिं स्थितान् । अनुसृत्य हतिस्थितिं श्रेयो न समरे घघ ॥ ५४ ॥ सुख आश्रामिको मृत्यु क्षुधधर्मेण युष्यत । ततो बु ख न जानीते प्रेत्यश्वात्तन्वमहनुने ५५ ॥ शृण्वन्तु क्षत्रिया सर्वे यावन्ता वै समागता । द्विदशो भीमसेनस्य क्रुद्धस्य वशमेव्यथ ॥ ५६ ॥ विताम हैराचरित न धर्मं हातुमर्हथ ॥ ५७ ॥ न च कर्मास्ति पापीय क्षत्रियस्य पलायनात् ॥ ५८ ॥ न युद्धवर्मांकुट्यान् हि पश्या स्वर्गस्य कौरवा । सुखिणेनाग्जितात्लाकात् युद्धकरन लगा । ५९ ॥ इसके पीछे उस महात्माने अपनी सेनाको अत्यन्त दुखी देखा हे राजा उससमय आपका युद्धिमानपुत्र उन दुखी शूबीरों को खडा करके उनको प्रसन्न करता हुआ यह बचन बोला । ५१ । किमें उसदेशको नहीं देखताहूं जहांपर तुम भयमे पीडित होकर जाओ और वहां पाण्डवों के हाथमे बचने पाओ तुमको भुगने से क्यालाभहै । ५२ । उनकी सेना बहुतकमरह गई है और श्रीकृष्ण अर्जुन अत्यन्त घायलहै यदि तुम सबठहरो तोमेरी पूरीविजय है । ५३ । जो तुम भागोगे या पृथक्दागे तो पांडवभोग अपराधी जानकर तुमनांगों को पीछाकरके मारेंगे इस्से हमारा और तुम्ह रा युद्धमेंही मरने श्रेष्ठहै । ५४ । क्षत्री धर्मसे युद्धमें नहनेवालों की मृत्युकाहोना सुखरूप है क्योंकि मरने के दुःखों की नहीं भागताहै शीघ्रही मरकर अग्निनाशी गतिको पाताहै । ५५ । तुमजिने क्षत्री अवइकट्टे हुयेहो सब चित्तगगाकर सुनो देखो भागनेसे एकतो क्रोधरूप ह्मपदेशत्र भीमसेनके आधीनहागे दूतरे इन संमार में अपकीर्त्तिपाकर स्वर्ग वासी न होगे इमहंतुसे तुम लोगोंको अपने पूर्वजोंके कियेहुके धर्मका त्यागना उचित नहीं है । ५७ । भागने से अधिक और कोई पापरूप क्षत्रीका धर्मनहीं है हे कौरव लोगो युद्धमे बढकर

warriors of the Pandavas 50 Seeing his warriors in great distress he said to them, "I see no place where you can hide yourself and be safe from the Pandavas. What is the use of your running away? Their army is exceedingly reduced in number and Krishna and Arjun are badly wounded. I can yet win a complete victory, if you stand firmly. They will chase you, if you run away or disperse. It is therefore better to die fighting. A kshatriya falling down in battle, does not feel the pangs of death and soon attains to an indestructible state 50. Hear me attentively all the warriors here assembled. If you run away from battle you will fall a prey to Bhishm and shall forego heaven. There is no greater sin for a kshatriya than his running away from battle and no duty is more preferable to him than fighting. You

सद्यो बोध समीक्षते ॥ ५९ ॥ तस्य तद्वचनं राजः पूरयित्वा महारथाः । पुनरेवाप्य
 अर्चयत् क्षत्रिया, पाण्डवान् प्रति । पराजयमभ्युपगतः कृताञ्जिताश्च विक्रमे ॥ ६० ॥
 तत् प्रवृत्ते युद्धे पनरेव सुदारुणम् । तावकानो-परेवाच- देवासुररथोपमम् । बुधि
 धिरयुरोगाश्च सर्वैर्मन्येन पाण्डवान् । अन्यथायन्महाराज पुत्रो दुष्टयोधनस्तव ॥ ६१ ॥

इति शाल्यपर्वणि शाल्यवधपर्वणि, कौरव विल्यापे तृतीयोऽध्यायः ३ ॥

सञ्जय उवाच । पतिताग्रधनीर्दांश्च रथांश्चापि महारथानाम् । रणे विनिहताम्
 दृष्ट्वा नागान् पत्नींश्च मारिष ॥ १ ॥ आयोधनञ्चातिघारं रुद्रस्याकीडुसाक्षिणम्

क्षत्रियोंका कोई उत्तमधर्म नहीं है हे शूरीरा जो मरभीजाओगे! तं
 थोड़ेही दिनोंमें शौम्यलोकों को भोगोगे । ५९ । [महारथी क्षत्रि
 उस राजादुर्योधनके वचन, की प्रशंसा करके फिर भी पराजयको ।
 सहनेवाले पराक्रममें प्रवृत्ताचित्तहोकर पाण्डवोंके सम्मुख वर्तमानहुये । ६०
 उसके पीछे फिरभी आपके युद्धकर्त्ता और दूररे प्रति पत्नी लोभों का ब्र
 भय कारी देवासुरों के युद्ध के समान युद्ध जारीहुआ हे महाराज आपका वे
 दुष्टयोधन सब सेना समेत उन पाण्डवों के सम्मुख दौड़ा जिनका कि अग्रवर्ष
 बुधिधिर या ६१ ।।

अध्याय ४ ॥

हे भरतवंशी गिरेहुये रथों के नीचे और महात्माओं के रथोंको और युद्ध
 मरेहुये हाथी और पतियों को देखकर । १ । और रुद्रजी के विहार क्रीड़ास्वानं

will gain heaven in case of death. They praised Duryodhan's words
 and again attacked the Pandavas. The battle was again very dreadful
 like that between the gods and asurs. Your son, Duryodhan rushed
 against the Pandavas who were led by Yudhishtir." 61.

CHAPTER IV

Being the cars of the great warriors, elephants and foot soldiers des-
 troyed in battle, the with field of battle like the pleasure-ground to
 Indra, thousands of kings fallen in disgrace by Arjun's prowess, seen
 also your son defeated and dejected, your armies dispersed and crying

अप्रत्याप्तिं गतानान्तु राज्ञां शतसहस्रशः ॥ २ ॥ विमुखे तत्र पुत्रे तु शोकीपहचतर्तासि
 भृशोद्विग्नेषु सैन्येषु सृष्ट्वा पाथस्य विक्रमम् ॥ ३ ॥ ध्यायमानेषु सैन्येषु दुःखं प्राप्तेषु
 आरतः । बलानां मध्यमानानां श्रुत्वा नितदमुत्तमम् ॥ ४ ॥ अभिज्ञानं नरेन्द्राणां विकृतं
 मक्षयसंयुगे । कृपाविष्टं कृपोगाजन्मभयं शीलसमाहितम् ॥ ५ ॥ अग्रधीत् तत्र नेजस्वी
 सोऽस्मिन्स्य जनाधिपम् । दुर्योधनं मन्वुवशाद्वचनं घञ्चनक्षमम् ॥ ६ ॥ दुर्योधनं
 निबोधेद् यत्वा वक्ष्यामि भारत । ध्रुत्वा कुरुमहाराज यदि ते रोचतेऽनघ ॥ ७ ॥
 न युद्धमार्माच्छ्रेयान् वै पन्था राजेन्द्र विद्यते । यः स माश्रित्य युष्मन्ते क्षत्रिया क्षत्रि
 यवन्तः ॥ ८ ॥ पुत्रो भ्राता पिता चैव स्वस्त्रीयो मातुलस्तथा । सम्बन्धिवान्धवाश्चैव
 षोष्या वै क्षत्रजीविनाः ॥ ९ ॥ घघे चैव परो धर्मस्तथाधर्मं पलायने । तस्मात्पथारं
 समपन्ना जीविकां जितार्थिनः ॥ १० ॥ तत्र तथा प्रति वक्ष्यामि किञ्चिदेव हि न वक्ष्य
 हते भीष्मे च द्रोणे च कर्णे चैव महारथे ॥ ११ ॥ जयद्रथे च निहते तव भ्रातृषु

समान बड़ी भयानक युद्धमूमिको वा अपकारि पानेवाले सैकड़ों हजारों राजाओं
 को । २ । और अर्जुनके पराक्रम को देखकर आपके बेटेके मुख फेरने शोक से
 घायल चित्तहोने सेनाओंके अत्यन्त व्याकुलहोने । ३ । सेनाके दुःखीध्यान करते
 वाले होनेपर मथी हुई सेनाओं के कठिनशब्दकी सुनकर । ४ । और युद्धमें राजाओं
 की पहिचानों क चिह्नों को दृष्टाहुआ देखकर और प्रायु और शीलस्वभाव
 से युक्त कृपासे पूर्ण वह तेजस्वी वार्त्तालापमें कुशल गुरु कृपाचार्यजी । ५ । राजा
 के पास जाकर बड़े क्रोधयुक्त होकर उस दुर्योधनसे बोले । ६ । कि हे भरतर्षभजो
 मैं तुमसे कहता हूँ उसको समझो हे महाराज उसको सुनकर जो तुमको अच्छा
 लगे उसको करना । ७ । हे राजेन्द्र निश्चय करके धर्मयुद्ध से अधिक कोईकर्याण
 करनेवाला मार्ग नहीं है हे क्षत्रियों में श्रेष्ठ उत्तम क्षत्रियलोग भी उसी मार्ग में
 नियत होकर लड़ते हैं । ८ । बेटा भाई पिता भानजा, मामा नातेदार भाई वन्धु
 साथ लड़नेके योग्य है । ९ । मग्ने में श्रेष्ठ धर्म है और भागना महाअधर्म है
 सी हेतुसे जीवनकी इच्छा रखनेवाले क्षत्रियोंने भयकारी घोर जीविकाको प्राप्त
 कया है । १० । वहाँ मैं तुमसे कुछ हित करनेवाला वचन कहता हूँ कि भीष्म
 शिखाचार्य महारथी कर्ण । ११ । जयद्रथ आपके बड़तसे भाई और आपके बेटे

in distress and the standards of kings broken down aged Kripacharya, full
 of mercy, glory, good manners, power of speech and anger, said to
 Duryodhan. " Hear me attentively, king, and then do as you like
 urely nothing can be better than a just war for just warriors Sons,
 brothers, fathers, sister's sons uncles, and kinsmen may be fought with
 it is the duty of a kshatriya to die fighting, while there can be no sin
 greater than running away from battle. It is therefore that kshatriyas
 have adopted this mode of living 10 I shall now give you some
 salutary advice Whom should we make our leader when Bhishma,

चानघ । लक्ष्मणे तत्र पुत्रे च किं शेष पर्युपास्यते ॥ १२ ॥ येषुमां समासज्य राज्ये
 मतिमकुर्महि । ते सन्वज्य तनूर्यता शूरा ब्रह्मविदां गतिम् ॥ १३ ॥ वष त्विह
 विनाभूता गुणवर्जिमहारथे वृषण धर्तयिष्याम पातयित्वा नृपाम् बहून् ॥ १४ ॥
 सर्वैरपि च जायन्ति वीर्यं सुनि पराजित । कृष्णनेत्रो महाबाहु वैशैरपि दुरासद् ॥ १५ ॥
 इन्द्रकायुं च वज्राभ मिन्द्रकेतुं मिथोऽच्छतम् । धानरं धेतुमालाद्य सप्तस्रवाण् इह
 चभूः ॥ १६ ॥ सिंहादेन भीमस्य पाञ्चजन्यं स्वननम् । गाण्डीवस्य निर्वाणो
 सहस्रवर्णिन मनासिन ॥ १७ ॥ धरन्तीव महाविद्युमुष्णन्ती नयनप्रभाम् । धला
 मिव चाविद्ध गाण्डीव समहृद्यत ॥ १८ ॥ जाम्बूनदं विचित्रञ्च घ्नयमानं महर्षदं
 हृद्यते दिशुः सर्वोसु विद्युदन्नवनेष्विव ॥ १९ ॥ दधेताश्च वेगसम्पन्ना शशिकाशर
 मप्रभा । पियन्त इव ज्वाकाणा रये युक्ताश्च धाजित ॥ २० ॥ लक्ष्मणान् च कृष्णे

लक्ष्मण के मरनेपर किम शेष वचेहुय प्रधान की वर्तमानता करें । १२ । हमजि
 के ऊपर भार रखकर राज्य में अराम प्रवन्ध जारी करतेथे उन शूरवीरोंने शरी
 वो त्याग करके ब्रह्मज्ञानियों की गतिपोंको पाया । १३ । हम उन प्रसंसनी
 महारथियों के बिना बहून से राजार्थों को गिरनेपर दु खी है । १४ । श्रीकृष्णव
 प्रधान रखनेवाला महाबाहु अर्जुन देवताओंसे भी उससे सम्मुखता के योग
 और सब जीवधारियों से अजय है । १५ । इन्द्रधनुष और वज्ररूप इन्द्रध्वजा
 समान ऊंची धानर राजा को पाकर वह बड़ी सेना कम्पायमान हुई । १६ । भीमसे
 के सिनाद पांचजन्य शंखका शब्द और गाण्डीव धनुषके शब्दों से हमारे चि
 व्याकुल होते है । १७ । चक्षुके मकाशको चुराता घूमता और बड़ी विजलीकेसम
 आलातचक्रके समान घूमता गाण्डीव धनुष दिखाई पडा । १८ । सुवर्णजा
 धनुष बड़ा दिशाओं में चलायमान ऐसे दिखाईपडा जैसे कि बादलों में विज
 दिखाई देतीहै । १९ । श्वेतचन्द्रमा के समान मकाशमान अपनी तीव्रतासे यु
 घोड़े आकाशको पानकरते रथमें संयुक्त हैं । २० । जैसे कि वायुसेयुक्त बादलहों

Drona, bravo Karan, Jayadrath, with many of your brothers at
 your son Lakshman, are slain Our great statemen are slain in batt
 Without those great warriors, we have had to suffer the loss of mar
 kings. Led by Shri Krishna, Arjun is a worthy match for gods a
 invincible by all other beings. 15. The armies disperse at the sig
 of his bow and ape-banner like the bow and banner of Indra. O
 hearts tremble with the sounds of Blum's roar, the blasts of Pan
 Janya conch and the twang of Gandiv bow, which dazzles the sig
 with its circular movement and speed and brightness like that
 lightning The gold-docked bow was seen in all directions like lightn
 in the midst of clouds White like the moon, his horses seem
 touch the sky with their speed 20. Shri Kaishn drives the gr

वायुनेव शलाहकाः । जाम्बूनदधिविचित्राङ्गा हृषन्ते सार्जुनं रणे ॥ २१ ॥ तावकं तद्भले
 राजभर्जुनोऽस्त्रविदाम्बरः । महर्न शिभिरे कश्चं ददाहाग्निरिवोत्थितः ॥ २२ ॥ ग्राहमान
 मनवानि महन्द्रशदशमम् । घनञ्जयमपश्याम चतुर्दंष्ट्रमिव द्विपम् ॥ २३ ॥ बिक्षो
 यन्ते सेनान्ते आसयन्तश्च पाण्डवान् । घनञ्जयमपश्याम नलिनीमिव कुञ्जरम्
 । २४ ॥ आसयन्ते तथा योधान् घनुषोषिण पाण्डवम् । भूय एवमपश्याम सिंहं मृग
 गणानिवा ॥ २५ ॥ मधेलोकमहेष्वासौ वृषभौ सर्वशन्विनाम् । जामुककधत्रौ कृष्णौ लोक
 मध्ये ध्यराजताम् ॥ २६ ॥ अथ सप्तदशाहानि घर्षमानस्य भारत । संग्रामस्यातिघो
 रस्य षड्यतांवाभितो युधि ॥ २७ ॥ वायनेव विघ्नानि तथानिकानि सर्वश । शरदं
 मोदजालानि ध्यशोष्यन्त समन्ततः ॥ २८ ॥ तां नावामिव पर्यन्तां घातभ्रान्तां महा
 र्णवे । तव सेनां महाराज सध्यसाची व्यकम्पयत् ॥ २९ ॥ क्व नृते सूत पत्रो

उसीप्रकार श्रीकृष्णजीकी सवारीसे युक्त सुवर्णजटित अङ्गुली घोड़े पुद्गलमें अर्जुनको
 लेखने हैं । २१ । हे राजा अर्जुन में श्रेष्ठ अर्जुन ने युद्धभूमिमें वस आपकी
 सेनाको ऐसे भस्मकरादिया जैसे कि उठाहुआ अग्नि बड़े घने शुकवनेभी भस्म
 करदेता है । २२ । हमने चारदांत रखेवाले हाथीके समान सेनाओंके मँफानेवाले
 महाइन्द्रके समान महाशमान अर्जुनको देखा । २३ । जैसे कि कमळ के वनको
 हाथी छिन्नभिन्न करदेता है उसीप्रकार आपकी सेनाके छिन्नभिन्न करने वाले
 और राजाओं को भयभीत करनेवाले अर्जुन को देखो । २४ । और जैसे कि
 सिंह मृगोंके समूहोंको भयभीत करता है उसीप्रकार धनुषके शब्द से डरानेवाले
 अर्जुन को फिर देखा । २५ । मव लोकके बड़े धनुषधारियों में श्रेष्ठ
 कवचधारी श्रीकृष्ण और अर्जुनलोकमें शोभायमानहुये । २६ । हे भरतवंशी अब
 पुद्गलमें चारोंओरके मरनेवालों के महाघोरपुद्गलों के सत्रहदिन व्यतीतहुये । २७ ।
 आपकी सब सेना चारोंओरमें ऐसे पृथक् २ हो गई जैसे कि वायुसे शरदंशतुके
 बादलोंके समूह पृथक् २ होजते हैं । २८ । हे महाराज अर्जुन आपकी सेनाको
 ऐसे अत्यन्त कम्पापमान किया जैसे कि समुद्रमें वायुसे घूमेवाली और चारोंओर
 में दूबनेवाली नौका हाती है तैरा सेनापाति कर्ण कर्णगया और पीछे चखनेवालों

decked hoists of Arjun as the wind does the clouds, Arjun the
 best of warriors destroyed your army as fire does a dry forest. We
 saw Arjun crush your army like the four tusked elephant of Indra.
 He trampled down your army and terrified the warriors as an
 elephant crushes a forest of lotus. He terrified your warriors with
 the twang of his bow as a lion does a herd of deer. 25. Shri Krishna
 and Arjun the best of warriors looked glorious in the field. The war
 has been raging for the last seventeen days and your armies are
 dispersed like the clouds by wind. Arjun shook your warriors as a
 storm at sea does a boat. Where is Karan the commander of your

भूत क्व नु द्रोणः सहायुगः । अहं क्व च क्व चारमा ते हाहिक्यश्च तथा क्व नु
 दुःशासनश्च भ्राता ते भ्रातृभिः सहितः क्व नु ॥ ३० ॥ बाणगोचरसंप्राप्तं प्रेक्ष्य के-
 लपद्रथम् । सम्बन्धिनस्तथा भ्रातृन् सहायान्मातुलान् रथा ॥ ३१ ॥ सर्वान् विक्रम-
 मितयो लोकञ्चाक्रम्य भूर्जानि । जयद्रथो हनो राजा किन्तुशंभुपास्तहं ॥ ३२ ॥ क-
 वेह स पुमानस्ति यो विजेष्यतिः पण्डथम् ॥ ३३ ॥ तस्य चास्त्राणे दिव्यानि वि-
 धानि महात्मनः । गाण्डीवस्य च निर्घोषो घोर्यानि हाते हि नः ॥ ३४ ॥ नष्टचन्द्र-
 यथा रात्रिः । सेनेयं हतनायका । नागभग्नद्रुमा शुष्का नदीषाकुलतांगता ॥ ३५ ॥
 श्वजिन्यां हतनेत्रायां यथेष्टं श्वेतवाहनः । चरिष्यति महाबाहुः कभेगिरिव संज्वलन्
 ॥ ३६ ॥ सात्यकेश्व चो वेगोः भूमिसेनस्य चोभयोः । दारयेत् गिरिन् सर्वांश्च शो-
 येत च सागरान् ॥ ३७ ॥ उवाच वाक्यं यद्भीमः सभामध्ये विशम्भते । कृतञ्च

समेत द्रोणाचार्य कहांगये में कहां और तेरा शरीर कहां कृतवर्मा कहां और
 भाईयों समेत तेरा भाई दृशमान कहां है ३०। बाणोंके लक्ष्योंमें वर्तमान जयद्रथके
 देखकर उसीप्रकार नाते रिश्तेदार भाई साथी और मामा आदिकों को देख
 कर किसकी वर्तमानता करें । ३१ । सब के देखते पराक्रम करके सब लोकके
 मस्तकपर उलंघन करके राजा जयद्रथ को मारा फिर और कौन से शेष बचेहुये क
 वर्तमानता करें । ३२ । यहां ऐसा कौनसा मनुष्य है जो पांडव अर्जुनको विजय क
 सक्ता है उसमहात्माके अस्त्र बड़े दिव्य और नानाप्रकार के हैं और गांडी-
 वनुष का शब्द हमारे बल पराक्रमों को हरता है । ३४ । जैसे कि चन्द्रमासे राह
 रात्रि अशोभित होती है उसप्रकारकी यह सेना है जिसका कि प्रधान मारागय
 और जैसे हाथीसे तोड़ेहुये वृक्षवाली नदी होती है उसीप्रकारसे इस सेनाने भी
 महाभ्याकुलता को पाया । ३५ । जिसका कि प्रधान मारागय है उस सेनामें मह
 बाहु अर्जुन स्वेच्छाचारी होकर ऐसे घूमेगा जैसे कि मूख वनमें उबसित अग्नि
 घूमती है । ३६ । सात्यकि और भीमसेन इन दोनोंका जो वेग है वह सब पर्वतोंके
 तोड़कर समुद्रों कोभी शुष्ककरसक्ता है । ३७ । हे राजा भीमसेनने सभके मध्ये

armies ? Where are Drona and his followers ? Where are you and I, Kritvarma and Dushasan; with your other brothers ? 30. Having looked at the death of Jayadrath and other kinsmen, whom shall we rely upon. Who is here to conquer Arjun. He has powerful weapons and the sound of Gandiv bow deprives us of prowess. By the fall of its commander the army looks ominous like a moonless night or like a river whose trees are broken down by an elephant 35. At the fall of the commander of the army, Arjun will roam like fire in a dry forest. The prowess of Satyaki and Bhim can break through the mountains and soak the ocean dry. Bhim has fulfilled all the vows he made in court, and will do so again. Protected by the

सकलं तेन भूयश्च व कारिष्यति ॥३८॥ प्रमुखस्थे तदा कर्णे बलं पाण्डवरक्षितम् । दुरा
सद् तथा गुप्तं इह गाण्डीवधन्वना ॥ ३९ ॥ युष्माभिस्तानि क्षीर्णानि दान्यस्ताधूनि
साधुयु । अकारणकृतान्येष तेषां वः फलमागतम् ॥४०॥ आत्मनोर्थं त्वया लोको यततः
सर्वं आहृतः । स ते संशयितस्तात आत्मा च भरतर्षभ ॥ ४१ ॥ रक्ष दुष्योधनात्माना
मात्मा सर्वस्य भाजनम् । भिन्नं हि भाजनं तात विशो गच्छति तद्गतम् ॥ ४२ ॥ हीय
मानेन वै सन्धिः पर्येष्टव्यः समेन च । विग्रहो वर्द्धमानेन नीतिरेषा बृहस्पतेः ॥ ४३ ॥
ते वयं पाण्डुपुत्रेभ्यो हीनश्च बलशक्तितः । तद्वन्न पाण्डवैः साञ्छे सन्धिं मन्ये क्षमं
प्रज्ञो ॥ ४४ ॥ न जानीते हि यः श्रेयः श्रेयश्चैवामन्यते । स क्षिप्रं स्रष्ट्यते राज्यान्न च
भेद्योनुबिन्दति ॥ ४५ ॥ प्रणिपरय हि राजानं राज्यं यदि लभेमहि । श्रेयः क्वाप्तुं तु
नीद्वेषेन राजन् गन्तुं परामवम् ॥ ४६ ॥ वैचित्रिप्रदीप्यन्वनात् कृपाशीलो युधिष्ठिरः ।

जो जो बचन कहेथे वहसब सत्य किये और आगे भी करेगा । ३८ । तबकर्ण के
सम्मुख नियत होनेपर गांडीवधनुषधारी संपन्नकृत और रक्षित वह पाण्डवीय सेना
कठिनता से सम्मुखता के योग्य और रक्षितहुई तुमने भी वहकर्म किये जो कि
साधुओं के मध्यमें नीचकर्म गिनेजाते हैं और वहसब कर्म तुमने निर्हेतुक किये
इसी से उनका फल तुमको प्राप्तहुमा है । ४० । हे भरतर्षभ तुमने उपायों से
सब पृथ्वी को विजय किया हे तात वह सब पृथ्वी और तेरा शरीर सन्देहों में
प्रवृत्त है । ४१ । हे दुष्योधन आत्माकी रक्षाकर आत्माही सबका पात्र है हे तात
पात्रके क्षयित होनेपर उसमें की सब वस्तु इधर उधर दशोंदिशाओं में वहजाती
है । ४२ । विनाश पानेवाले दुर्बल मनुष्य को सन्धि करलेना योग्य है और बद्धि
पुक्त को युद्ध करना योग्य है यह बृहस्पतिजी की नीति है । ४३ । हे समर्थ सो
हम अपने बळपराक्रमसे पाण्डवोंसे न्यून हैं सो यहाँ अब पाण्डवोंसे सन्धिकरनाही
में उचित मानताहूँ । ४४ । जो कल्याणको नहीं जानताहै और कल्याणक अपमान
करताहै वह शीघ्रही राज्यसे तीक्ष्ण और रहित होकर कल्याण को नहीं पाताहै
। ४५ । जो हम राजाको झुककर राज्यको पावे तो हमारा कल्याणहोय हे राजा
अज्ञानतासे परामय पानेके योग्यनहीं है । ४६ । दयावान राजा युधिष्ठिर राजा

bearer of Gandiv, the Pandav army was able to cope with Kauran. You committed many sinful deeds by your selfishness and are now reaping the fruit of your doings 40. The land so cunningly conquered by you and your body itself are in danger. Save yourself, Duryodhan, because self is the vessel which contains all and at the breaking of it things run away in all directions. A weak person should try to secure peace, though a strong man may engage in fighting. This is the opinion of Vrihaspati. We should make peace with the Pandavas, because we are inferior to them in prowess. He who does not think of his own good, loses his kingdom and all. 45. Our good

विनियुज्जीत राज्ये त्वां गोविन्द्यचनेन च ॥ ४७ ॥ यद्ब्रूयाहि हृषीकेश राजानपरा
जितम् । अर्जुनं भामिसेनञ्च सर्वं कुशुरसंशयम् ॥ ४८ ॥ नतिक्रामप्यते कृष्णो वचनं
कौरवस्य ह । धृतराष्ट्रस्य मन्येहं नापि कृष्णस्य पाण्डवः ॥ ४९ ॥ एतत् क्षेममहं
मन्ये तव पाप्येन विप्रहम् । न त्वां प्रथामि कार्पण्यात् न प्राणपरिरक्षणात् । पथं
राजन् प्रथामि त्वां तत्परासुः स्मरिष्यसि ॥ ५० ॥ इति वृद्धो विलप्येनत् कृपः शार
द्रतो वच । दीर्घमुष्णश्च निदधस्य शुशोच च मुमोह च ॥ ५१ ॥

इति शल्यपर्वणिं शल्यवधपर्वणि कृपाचार्य्यापये चतुर्थोऽध्यायः ४ ॥

धृतराष्ट्र और गोविन्दजीके वचनोंसेतुमकोराज्यसे संयुक्तकरेगा । ४७ । इन्द्रियोंके
स्वामी श्रीकृष्णजी भजेपराजा युधिष्ठिरसे और अर्जुन भीमसेन सेभीजो कुछकहेंगे
वह सब उनके कहनेको निस्सन्देह करेगे । ४८ । श्रीकृष्णजी कौरव धृतराष्ट्रके
वचनको उल्लंघन नहीं करेगे और पाण्डव भी श्रीकृष्णजी के वचनको उल्लंघननहीं
करेगा यह मैं निश्चय मानताहूँ । ४९ । मैं पाण्डवोंके साथ तेरी सन्धिको शुभ
कल्याणकारी मानता हूँ शत्रुताको नहीं मानता हूँ मैं अशूरता और प्राणों कीरक्षा
के अर्थ तुम्हसे नहीं कहता हूँ मैं केवल तेरे कल्याण के अर्थ उपकारी वचन
कहताहूँ नहीं तो तू धृद्धभूमिमें पड़ाहुआ होकर मेरे वचनों को स्मरण करेगा इस
प्रकार वह वृद्ध शारद्रत कृपाचार्य्यजी यह विलाप करके लम्बी और उष्णभासाओं
को छोड़कर महाअचेत होगये ५१ ॥

lies in bowing to the king. We should not suffer defeat by our own
folly. Merciful Yudhishtir will do as he is told by Dhritrashtra and
Govind and will give you your kingdom. Yudhishtir, Bhim and
Arjun will do without hesitation, what they are told to do by Govind.
Shri Krishna will not refuse the request of Dhritrashtra. Your peace
with the Pandavas will be good for you. It is not that I ascribe
cowardice or fear to you, but I believe that your good lies in peace.
You will remember my words, if you donot mind them, when you
will be lying on the field of battle. Having said this, old Kripa-
charya, heaving deep sighs, became senseless" 51.

मन्त्रय उवाच। एषमुक्तता राजा गौतमेन यशस्विना। निश्चय दीर्घमुष्णञ्च
 हृष्णीमासोद्विशाम्पने ॥ १ ॥ ततो मुहूर्त्तं स ध्यात्वा घासंराष्ट्रो महामना । कृप
 शारद्वत वाक्शामित्युवाच परन्तपः । २ ॥ यत् किञ्चित् सुहृदा वाच्यं तत् सर्वं
 ध्यायितो ह्यहम् । कृतञ्च भवता सर्वं प्राणासन्त्यज्य युष्यता ॥ ३ ॥ गाहमात्रम
 नीकानि युध्यमान महारथैः । पाण्डवैरतितंजोभिलोकस्वामनुदृष्टवान् ॥ ४ ॥ सुहृद्
 यदिद् वाक्यं भवता ध्यायितो ह्यहम् । न मा प्रीणाति तत् सर्वं मुमूर्षोरिव मेयज्जम्
 ॥ ५ ॥ हेतुकारणं युक्तं हितं धन्वन्मुत्तमम् । उच्यमानं महावाहो न मे विप्राप्रघ
 रोचते ॥ ६ ॥ राज्यादिनिष्ठसांस्मामिः कथं सोऽस्मासु विदधसेत् । अक्षयतेन नृपति
 क्षितोऽस्मामिर्महाघलः । स कथं मम वाक्यानि श्रद्धयाद्भ्य एव तु ॥ ७ ॥ तथा दौत्येन
 समाप्तं कृष्ण पार्यहिते रतः । विप्रलम्भो ह्यपि केशस्तच्छ कर्माविचारितम् । स च मे

अध्याय ५ ॥

संजय बोले कि राजा यशवान् गौतम कृपाचार्य के ऐसे वचनोंको सुनकर
 राजादुर्योधनभी लम्बी और उष्णशालाओंको लेकर मौनहोगया । १ । वह
 शत्रुओं का तपानेवाला महासाहसी दुर्योधन एक मुहूर्त्त ध्यान करके शारद्वत
 कृपाचार्य से यह वचनबोला । २ । कि जो कुछ शुभचिन्तकों को कहना योग्यहै
 वह सबवातें मैंने सुनीहैं उन सबकहनेवाले शुभचिन्तकोंने भी प्राणोंको त्यागकर
 आपकेसाथ युद्धकिया । ३ । महातेजस्वी महारथी पाण्डवोंकेसाथ लड़नेवाले और
 सेनाओं के मैदानवाले तुमको सपनेकोंने देखा । ४ । मुझको जो आप शुभ-
 चिन्तकोंने ऐसे वचन सुनाये हैं यहसब आपलोगों के वचन मुझे ऐसेप्रसन्नता नहीं
 करते हैं जैसे कि मरने के इच्छावानको आपभी प्रसन्न नहींकरती । ५ । हे ब्राह्मणों
 में श्रेष्ठ महाबाहु, सहेतुक हितकारी वचनों से मुझको प्रसन्नता नहीं प्राप्त
 होती है वह बड़ाघनाढ्य राजापुष्टिर पाशों के छूतमें हमसे पराजित हुआ है
 और राज्यसे भी रहित कियोगया है वह हमारे ऊपर कैसे विश्वासकरेगा । ७ ।
 अर्थात् वह हमारे वचनों पर कैसे श्रद्धाकरेगा इसीप्रकार दूत होकर आनेवाले
 और पाण्डवों की वृद्धि में भीति करनेवाले शत्रुओं के स्वामी श्रीकृष्णजीमी । ८ ।

CHAPTER V

Sanjaya said, " Having heard the words of Kripacharya, Duryo-
 dhan heaved deep sighs and became silent. He thought for a while
 and then said, "I have heard your salutary advice. My well wishers
 have fought and died. All the people have seen you fighting with
 the Pandavas. Your advice does not please me like medicine to a
 sick man 5, I am not pleased with your advice, because Yudhishtir
 was deprived of his wealth and kingdom in gambling and will not
 trust me. Sri Krishna too, who came to me as an ambassador of
 peace was deceived by us. He is not likely to put his trust in

वचनं व्रतान् कथमेवाभिपद्यते ॥ ९ ॥ विललाप हि यत् कृष्णा सन्नामभ्ये समेयुषी
 न सन्-र्षयते कृष्णो न राज्यहरणं तथा ॥ १० ॥ एकप्राणाशुभौ कृष्णावश्वोन्वयप्रतिस्
 हतौ । पुरा यच्छ्रुतमेवासीदद्य पद्यामि तत् प्रभो ॥ ११ ॥ स्वस्त्रीयश्च हतं भूत्वा
 दुःखं स्वर्षितं केशवः । कृतागसो धयन्तस्य स मदर्थं कथं क्षमेत् ॥ १२ ॥ अभि
 मन्योर्विनाशेन शर्म लभतेर्जनः । स कथं मद्भित्ते यत्नं पकरिष्यति याचितः ॥ १३ ॥
 मध्यमः पाण्डवश्चकृष्णो भीमसेनो महाबलः । प्रतिज्ञातश्च तेनोग्र स भज्येत न संम
 मेत् ॥ १४ ॥ उतौ तौ यद्धनिस्त्रिशशुभौ चापस्त्रकङ्कटौ । कृतधैराशुभौ धीरो यमावपि
 यमोपमौ ॥ १५ ॥ धृष्टद्युम्न शिखण्डी च कृतधैरी मया सह । तौ कथं मद्भित्तं बलं
 प्रकुर्वतां द्विजोत्तम ॥ १६ ॥ दुःशासनेन यत् कृष्णा एकवज्रा रजस्वला । परि
 विलप्ता सन्नामभ्ये सर्वलोकस्य पद्यतः ॥ १७ ॥ तथा विषसनां दीनां स्मरन्वद्यथापि

ठगेगये उसकर्मको आपने नहीं विचरा है ब्राह्मण वह किसप्रकार से मेरे वचनों
 का अंगीकार करेगा । ९ । जो द्रौपदाने सभाके मध्यमें विलापिकिया है उसको और
 उसप्रकारके राज्यहरणको श्रीकृष्णजी कभी नहीं सहेंगे । १० । भीकृष्ण और
 अर्जुन दोनों एकप्राण और मित्रहैं ऐसा पूर्वसमय में हमने सुना है हेमभु अब मैं उस
 को देखता हूँ । ११ । केशवजी अपने भानजेको मृतक सुनकर दुःखसे सोते हैं हम
 उसके अपराधी हैं वह हमारे निमित्त ऐसा कैसे करेगा और अर्जुनभी अभिमन्यु
 के नाशमान होनेसे भानन्दको नहीं पाता है वह प्रार्थना करनेसे भी मेरी दृष्टि
 में कैसे उपाय करेगा । १२ । मञ्जला पाण्डव महाबली भीमसेन बड़ा तीव्र है उस
 ने उग्र प्रतिज्ञा करी है वह अवश्य शत्रुता करेगा कभी शांतीको नहीं पायेगा । १४ ।
 वह नकुल और सहदेव दोनों वीर खड्ग और कवचधारी दोनों शत्रुता करने
 वाले और अश्विनीकुमारोंके समान हैं । १५ । और धृष्टद्युम्न वा शिखण्डी मेरेसाथ
 शत्रुता करनेवाले हैं हे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ वह दोनों मेरी दृष्टिमें कैसे उपाय करसके
 हैं । १६ । दुःशासनेन सबलोकोंके देखतेहुये एकवज्र रखनेवाली रजस्वला द्रौपदी
 को जो सभाके मध्यमें दुःखीकिया । १७ । उसवातको अवतक वह पाण्डव स्मरण करके

me. Sri Krishna will not forgive the wrongs done to Draupadi 10. Sri Krishna and Arjun are one soul and two bodies. I have heard it from old men and seen it myself. He is much grieved at Abhimanyu's death. Having suffered wrong from us, he may not do any thing for us. Arjun too, is displeased with us on account of Abhimanyu's death. Bravo Bhim is infuriated. He has vowed to destroy us and will not act otherwise. Both the warriors, Nakul and Sahadev, armed with sword and armour, are like Ashwini kumars in prowess and have bitter enmity with us. 15. Dhrishtadyumn and Shikhandi are my enemies and I can expect no good from them. 16. In the presence of all courtiers, Dushasan insulted Drupadi who was only covered with

पाण्डवा । न निवारयितुं शक्याः सप्रामाण्यं पाण्डवा । १८ । यदा च द्रौपदी कृष्णा
 मद्दिनाशाय दुःखिता । उग्रतप तप कृष्णा भर्तृणामथनिन्दय । स्थण्डिलं नि यदा
 शेते यावद्देहस्य यातनम् ॥ १९ ॥ निक्षिप्य मानं द्रौपद्यै च घासुदयस्त्रहादरा । कृष्णाया
 प्रेष्यध्वज्ज्वाला शुश्रूषा कुरुत सदा ॥ २० ॥ इति सर्वं समुग्रं न निर्वाति कथञ्चन
 ॥ २१ ॥ अभिमन्योर्धिनाशेन सन्वय स कथं मया ॥ २२ ॥ कथञ्च नाम भुक्त्वेमा
 पृथिवीं सागराम्बराम् । पाण्डवाणां प्रसन्नं देन भास्वो राज्यमकण्ठकम् । २३ ॥ उपर्यु
 परि वै राजा त्वलि वा भास्वरो यथा । युधिष्ठिरं कथं पश्चादनुयास्यामि दासवत्
 ॥ २४ ॥ कथं भुङ्क्ते वा स्वर्गभोगान् दत्त्वा दयाश्च पुष्कलान् कृष्णं धर्तयिष्यामि
 कृष्णे सह जीविकां ॥ २५ ॥ नाभ्यसूयामि ते वाक्पमुक्तं स्निग्धं हितं त्वया । न तु
 दुःखरो पातहो बहूः शत्रुमोके तपानेवाले पाण्डव युद्धमे हटानेके योग्यं नहि
 है । १८ । जब द्रौपदीका दुःख दिशागवाथा तर उसपहद स्त्री कृष्णा द्रौपदीनेमे
 नाश और अपने सुहृदोंके प्रयोजनकी सिद्धीके निमित्त बड़े तपकीकियाहै
 और तबतक सदैव पृथ्वीपर शयन करती है जबतक कि शत्रुताका अन्तर्गो ॥ १९ ॥
 वासुदेवजीकी सगीबहिन अपनी प्रधानता और अहंकारको त्यागकर और
 द्रौपदी सदैव दासीरूपहोकर सेवाकरती है यहसब अच्छीरीतिमे क्रोधमें भरेहुये
 हैं किसप्रकारसे भी झालीको नहीं पासक्ते । २० । अभिमन्युके नाश होनेसे किस
 प्रकार वह युधिष्ठिर मेरेसाथ सन्धिकरने को योग्यहोगा और प्रकट है कि इस
 सागराम्बरा पृथ्वीको भोगकर । २१ । फिर किसप्रकारसे पाण्डवोंको कृपापाकर
 इसको भोगूगा और मैं किसरीतिसे राज्यको करूंगा निश्चय करके सूर्यकेसमानसब
 राजाओं के ऊपर प्रकाशमान हाकर फिर कैसे मैं दासके समान होकर
 युधिष्ठिरके पीछे चलूंगा । २४ । अपने आप बड़े बड़े भोगोंको भोगकर और देनेके
 योग्य अनेकदानोंको देकर किसप्रकार से नीचोंकेसाथ नीच जीविकामे अपना
 निर्वाहकरूंगा । २५ । मैं आपके वचनोंकी निन्दानहीं करताहूँ आपने मधुर स्वच्छ और
 मिषकारी वचन कहे हैं मैं किसी दशार्पे भी समयके अनुसार सन्धिको भेष्ट नहीं

a sing's cloth. The Pandavas still remember those wrongs and will not desist from fighting. Draupadi performed a severe asceticism for our destruction on account of the wrongs we had done her. She will sleep on earth as long as her enemies exist. Vasudev's sister serves Draupadi like a maidservant without any touch of pride and both are much displeased with us. 21. Yudhishtir will not make peace with us, for we have slain Abhimanyu. Having ruled over this wide world, I would not be a king by the favour of the Pandavas. Having shone like the Sun, I would never like to follow Yudhishtir. Having lived a life of ease and given donations, I would not pass my life like ordinary men. 25. I do not blame you for your words which were sweet and salutary but I do not think peace advisable. I like to fight and not to

सन्धिग्रहं मग्ने प्राप्तकाल कथञ्चन ॥ २६ ॥ सुनीतमनुपश्यामि सुयुद्धेन परत्प ।
 नायं क्लीवाग्निं कल मयोद्वेगं काल एव न ॥ २७ ॥ इष्टं मे बहुभिर्घोर्हृत्ता विप्रैः
 दक्षिणा । प्राप्तः कामाः श्रुता वेदाः शूणा माघत च स्थितम् ॥ २८ ॥ भूम्या मे सुमृ
 तास्तात दीनश्चाशुद्वृत्तो जनः । नोत्सहेद्य द्विजधष्ट पाण्डवान् वक्तुमीदृशम् ॥ २९ ॥
 जितानि परराष्ट्राणि स्वराष्ट्रमनुमालितम् । भुक्ताश्च विविश भोगास्त्रिर्वाः
 सेवितामया । पितृणा कृतमानृप्यं क्षत्रधर्मस्य शोभयोः ॥ ३० ॥ न युद्धं सुखम्
 स्त्रीह कुनो राज्यं कुनो यश । इह कीर्तिविधातव्या सा च युद्धेन मान्यथा ॥ ३१ ॥ युद्धे
 यत् क्षत्रियस्यापि निधनं तद्दिग्दहितम् । अधर्मः सु । हानेव यच्छुष्वाभरतं युद्धे ॥ ३२ ॥
 अरण्ये यो विमुञ्चेत् संभ्रामे वा तनुं नर । ऋतुनाहुत्य महतो महिमानं स गच्छति
 ॥ ३३ ॥ कृपयं विलयनात्तो जरयामिपरिप्लुत । स्रियतं वृद्धतां मध्ये ज्ञातीनां म स

मानताहं । २६ । शत्रुओंके उपानेवाले में युद्ध में अच्छी नीतिको देखाहूँ
 यह समय युद्ध करनकाहं नपुंमकथनने का नहीं है । २७ । मैंने बहुतेसे यज्ञोंसे पूजन
 क्रिये और ब्राह्मणों का दक्षिणा दी सब अभीष्टों को प्राप्त किया वेदों
 को श्रवण क्रिया शत्रुओंके मस्तकपर नियतहुआ और दासोंका पोषण करके
 मैंने दुखी लोगोंकोभी दुःखोंसे छुटाया हे ब्राह्मणोंमें भेष्ट में पाएब से ऐसा
 कहनेको उत्साह नहीं करताहूँ । २९ । दूसरों के देशोंको विजयकिया अपने देशका
 पोषणकिया नानाप्रकार के भोगभोग और मैंने धर्म अर्थ काम इनतीनों वर्गों
 का भी सेवनकिया क्षत्रीधर्म और पितृलोग इनदोनोंके श्रेष्ठोंसे भी अकृणता
 प्राप्तकरी । ३० । इसलोक में सुख अविभाशनिर्ही है राज्य और यशकहाँ है यहाँ
 केवल कीर्तिही प्राप्त करनेके योग्यहै परन्तु वह कीर्ति युद्धसे प्राप्तहोती है दूसरे
 प्रकारसे नहीं होतीहै । ३१ । घरमें जो क्षत्रीकी मृत्यु है वहभी निन्दाके भाग्यमें
 घरमें शय्यापर भरना महा अधर्म है । ३२ । जो मनुष्य धनमें अथवा युद्ध में
 शरीर को त्यागकरता है वह यशोंके फलोंको पाकर वही वृद्धताको पाताहै । ३३ ।
 दृढावस्थामें युक्त रोगीमनुष्य दुःखकी बातोंको करता और रोताहुआ रुदनकरने
 वाले जातवालों में जो मरता है वह पुरुषनहीं है । ३४ । हे अभी नानाप्रकारके

sit idle like a eunuch. I have performed sacrifices and given donations
 I have satisfied my desires, heard the Vedas, crushed enemies, main-
 tained servants and relieved the needy. I have no mind to beg the
 Pandavas for peace. I have conquered kings, ruled my kingdom, lived
 in luxury and satisfied the debts of warriors and pitris. 30. Happiness
 is not stationary in this world, how can kingdom and fame be? Fame
 is worth acquiring in the world and the only way of acquiring it is by
 war. To die in his house is not good for a warrior. He who dies
 fighting or in a forest reaps the merit of performing sacrifice. One
 who dies of sickness or of old age, wept over by kinmen, is not a man

पूहयः ॥ ३४ ॥ त्यक्त्वा तु धिविधान् भोगान् प्राप्तानां परमांगतिम् । अपीदानीं सुयु
 ज्ञेन गच्छेत् शकलोकताम् ॥ ३५ ॥ शूराणामार्यवृत्तानां सशानेऽनियत्तिनाम् ।
 धीमतां सत्यसन्धानां सर्वेषां क्रतुयाजिनाम् । शस्त्रावभृथपूमानां धुंथं धासस्त्रिपिष्टेणे
 ॥ ३६ ॥ मुदा नूनं प्रपद्यन्ति युद्धे ह्यप्सरमाङ्गणाः । पश्यन्ति नूनं पितरः पूजितान्
 सुरससदि । अप्सरोभिः परिभृतान् मोदमानास्त्रिपिष्टेप । ३८ ॥ पश्यान्ममरीयांतं शूरे
 श्चाप्यनिर्वृत्तान्मे । अपि सैः संगतं मार्गं धयमध्यारुहेमहि ॥ ३९ ॥ पितामहेन वृद्धेन
 तथाचार्येण धीमता । जयद्रथेन कर्णेन तथा दुःशासनेन च ॥ ४० ॥ घटमाना मद्
 र्येस्मिन् हताः शूरा नराधिगः । शैरेने लोहिताकांगाः पृथिव्यां शरविक्षताः ॥ ४१ ॥
 उत्तमास्त्रविद् शूरा यथोक्तक्रतुयाजिनः । त्यक्त्वा प्राणाद् यथान्योन्यगिष्ठसद्यश्च
 धीष्ठिताः ॥ ४२ ॥ सैस्त्वथ रचितः पन्था दुर्गयो हि सुखं भवेत् । सम्पतद्भिर्महावेगे
 यांस्पद्भिरिह स्रज्जतिम् ॥ ४३ ॥ ये मर्त्ये हताः शूरास्तेषां कृतमनुस्मरन् । ऋणं तत्

भोगोंको त्यागकर के शुभयुद्धसे परपगति पानेवाले पुरुषों के लोकों को और
 सदैव इन्द्रकेहीपास रहूंगा निश्चयकरके शूरवीर भेषु चलन युद्धमें सुख नफेरने
 वाले बुद्धिमान सत्यसंकल्प सत्रयज्ञों के करनेवाले और शस्त्ररूपी यज्ञ स्नान से
 पवित्र पुरुषोंका विवास स्वर्ग में है निश्चय बात है कि युद्धमें अप्सराओं के
 सपूह आनन्दपूर्वक देखने है । ३७ । और यह भी निश्चय है कि पितृभोग उन
 देवताओंकी सभामें पूजित अप्सराओं से क्या उनस्वर्गमें आनन्द करनेवालों को
 देखने हैं देवताओं से चलायाहुआ मार्ग दूरों से अधिककर्म करनेवाले उनशूरो
 मेभी प्राप्त कियागया है हम उसमार्गमें चढ़नाचाहते हैं । ३९ । वृद्धभीष्मपितामह
 उनीमकार वृद्ध बुद्धिमान द्राणाचार्य जयद्रथ कर्ण और दुःशासनभी वह मार्ग
 प्राप्तकिया । ४० । इस मेरे प्रयोजन के लिय उपाय करनेवाले शूरवीर राजालोग
 मारेगये वह सबलोग रुधिरमें लिस्रवाणों से विदीर्णभंग पृथ्वीपर सोवे हैं । ४१ ।
 उत्तम अस्त्रोंके ज्ञाता महाशूर वेदोक्त रीतिमे यज्ञकरनेवाले न्याय के अनुसार
 युद्धमें प्राणोंको त्यागकरके इन्द्रभवनमें नियत हैं । ४२ । चढ़ाई करनेवाले बड़े
 बेगवान् और इमलोक में मद्गतिको पानेवाले उनलोगों से यह दुष्प्राप्य मार्ग
 रचागया है जो कि फिर कठिनतासे प्राप्तहोगा । ४३ । जो शूर मेरे निर्मित मारेगये

I shall leave all the worldly enjoyments to remain for ever in the
 region of Indra where the brave and holy go. The groups of apsaras
 are looking this way from heaven. The way of the godly is trodden
 by the brave, and I wish to go the way which old Bhishun, Drona-
 charya, Jayadrath, Karan and Dushasan have gone. 40. The heroes
 who have died for me are lying on earth in bleeding bodies. The good
 warriors having lost their lives have gone to the region of Indra. This
 difficult way is trodden only by the brave. I remember the deeds

प्रतिमुञ्चानो न राज्ये मन आदधे ॥४३॥ पातयित्वा पयस्याश्च भ्रातृनप पितामहात् ।
 जीयति यदि रक्षेय लोको मा महयदभुवम् ॥ ४५ ॥ कीदृश तद्भवेद्राज्यं मम हीनस्य
 धन्वुभिः । सखिभिश्च सुहृद्भिश्च प्रणिप यस्व पाण्डवन् ॥ ४६ ॥ साहमेतादृशं कृथा
 जगतोस्य परामपम् । सुयुद्धेन तत स्वर्गं प्राप्स्यापि त नद-यथा ॥ ४७ ॥ एव दुर्यो
 धनेनोक्ता सर्वे सम्पूज्य तद्युव । साधु साधिवति राजान क्षत्रिया स्वभाषिरे ॥ ४८ ॥
 पराजयमशाञ्चन्त दृतचित्ताश्च विक्रमे । सर्वे विनिश्चिता योद्धुमुदग्रमनसोभवन् ॥ ४९ ॥
 ततो वाहान् समादयास्य सव युष्माभिर्मान्दन । ऊने द्वियोजने गन्वा
 प्रत्यतिष्ठन्त कौरवाः ॥ ५० ॥ आकाशे विद्वेमे पुण्य प्रस्ये हिमवत शुभे । अरुणा सर
 स्वती प्राप्य पप सस्नुश्च त जलम् । तप पुत्रवृत्तोःसाहा पर्यवसन्त ते तत
 ॥५१॥ पर्यवस्थाप्य चात्मानम-योन्वित पुनस्तदा । सर्वे राजन्-यवसन्त क्षत्रिया
 कालचादिता ॥ ५२ ॥ इति शक्यवचनपर्वणि दुर्योधन वाक्ये पचमोऽध्यायः ५ ॥

उत्तके कर्मको स्मरण करता और उनके ऋणोंसे अश्रुण होने के निमित्त राज्यमें
 अपना निपतनहीं करता हू । ४४ । समान अवस्थाबलि भाई और पिता पितामहा
 दिकों को गिराकर जो अपने जीवनकी रक्षाकरूंगा तो निदवपकरके सब संसार
 मेरी निन्दाकरेगा । ४५ । पाण्डवको भुक्कर मित्रं भुभचिन्तक और वाग्धर्षों से
 रहित युष्म राजाका वह राज्य कैसा होगा । ४६ । सो मैं इमप्रकार से इम संसार के
 नाशको करके उत्तम युद्ध के द्वारास्वर्गको पऊंगा वह निपरीत नहीं है । ४७ ।
 इसप्रकार से उस के वचनोंको सुनकर उसकी प्रशंसा करके सब उन्नी लोग
 राजासे यह वचन बोले कि धन्य है धन्य है । ४८ । वह सब पराजयके न क्षेपने
 वाले पराक्रम करने व महत्तचित्त युद्धकरने में निश्चय करके बड़े साहसीहुये । ४९ ।
 इमके पीछे युद्धको स्वीकार करनेवाले सब कौरवों ने मवारियों की निश्वास
 देकर कुछ कम दो योजन पर जाकर नियत हो । ५० । चारोंओरसे मकाशमन्
 वृत्तोंसे रहित पवित्र हिमाचल पर्वतके सुन्दर भूम शिखरपर अरुणवर्णा सरस्वती
 को पाकर उस में स्नान किया और उसके जलको भी पानकिया । ५१ । तब
 फिर आपके पुत्रके द्वारा साहस रखनेवाले वह सब शुरीर परस्पर चित्तकी स्थिर
 करके बहासि लीटे अर्थात् हेराजा कालकी मेरुपासे सबजत्री लौटआये । ५२ ॥

of the who have died for my sake and wish no longer to rule the
 land without relieving myself of their debts All the world will blame
 me, if I shall rule the land after the fall of my kinsmen. 45. How can
 I bow down to the Pandav for the sake of kingdom Having caused
 destruction of the world, I shall die fighting " Having heard these
 words the warriors proud and Desirous of fighting, their courage
 became doubly strong The Kauravas stood at a distance of two miles
 on their respective cars 50. They bathed in the red waters of the
 Saraswati and drank of its waters Then they returned to fight by
 the instigation of Time " 52.

सञ्जय उवाच । अथ हेमवते प्रस्ये स्थिता युद्धाभिनन्दिन । सर्व एव महाराज
 घोषालेव समागता ॥ १ ॥ शल्यश्च चित्रसेनश्च शकुनिश्च महारथ । अश्वत्थामा
 कृपाचार्यश्च कृतवर्माश्च सारथवत ॥ २ ॥ सुपेणोरिष्टसेनश्च धृतरसेनश्च धीर्यवान् । जयत
 सेनश्च राजानस्ये रात्रमुपितास्तस ॥ ३ ॥ रणे कर्णे हते धीरे चासिता जितकाशिमि ।
 नालम्बश्च शर्म ते पुत्रा द्विषमभ्युत्थिते गिरिभ ॥ ४ ॥ तेऽश्ववन् सहितास्तत्र राजान शल्य
 सन्निधौ । कृतवर्मा रणे राजान् सम्पूज्य विधियत्तदा ॥ ५ ॥ कृत्वा सेनापणेतार
 परीरथ्य बांधुमहंसि । येनाभिगुता संग्रामे जयेमासुहृदो वयम् ॥ ६ ॥ ततो दुर्योधन
 स्थित्वा रथे रथवरोत्तमम् । सर्वयुद्धाधिधानहमन्तकप्रोतम् युधि ॥ ७ ॥ स्वङ्ग प्रच्छन्नाशि
 रस कम्रुमीर्षं प्रियञ्चन्द्रम् । श्याकोपपद्मपत्राक्ष श्यामास्य मेरुनीरवम् ॥ ८ ॥ स्थाणोर्ध्वरथ्य
 सहश इक्ष्णुनेत्रगतिरथ्ये । पुष्टशिश्टायतगुञ्ज सुधिल्लीर्णयनोरसम् ॥ ९ ॥ जवे यत्

अध्याय ६ ।

सञ्जय बोले हे महाराज इसके पीछे उत्त हिमालयके मस्थपर युद्धको उत्तम
 माननेवाले सब सूरवीर इकट्ठे हुये । १ । महारथी शल्य, चित्रसेन, शकुनि, अश्व
 त्थामा, कृपाचार्य, यादव कृतवर्मा, । २ । पराक्रमी सुपेण, अरिष्टसेन, धृतरसेन और
 जयत्सेन नाम यह सब राजा लोग रात्रि में निचासी हुये इसके पीछे । ३ । युद्धमें
 भीरुकर्ण के मारेजानेपर विजयभे शोभा पानेवाले पाण्डवों से भयभीत आपके
 पुत्रों ने बिना द्विषाचल पर्वतके मानन्दको नहीं पाया । ४ । हे राजा तब वहाँ
 युद्ध में उपाय करनेवाले बहलोग एक साथही शल्यके सम्मुख विधिपूर्वक प्रशंसा
 करतेहुये राजासे यह बचनबोले । ५ । कि आप अभी अपना सेनापति नियतकरके
 शत्रुओंसे लड़ने के योग्यहो और ऐसा सेनापति करिये जिससे कि हमलोग
 युद्धमें रलितहोकर शत्रुओंको विजयकरें । ६ । तमतो दुर्योधन उत्तम रथमें नियत
 होकर अश्वरथामार्जा से बोला कि जो युद्धों में सबप्रकारके युद्धों के चमत्कारों
 के जाननेवाल युद्धमें काळके समान । ७ । उत्तम अगोंसे गुप्त शिरवाला कपुग्रीव
 भियमापी प्रसन्नचित्त कमलके समान नेत्र श्यामके समान मुख रखनेवाला मेरु
 पर्वतके समान गौरवता रखनेवाला । ८ । स्कन्ध गति और शब्दसे नन्दीगणके
 समान हृष्टपुष्ट शिश्ट आयत मुजावाला और बहुत बड़ेसघन वस्त्रस्थलवाला । ९ ।

CHAPTER VI

Sanjaya said, " The warriors assembled at the foot of the Himalayas. Brave Shalya, Chitraesen, Shakuni, Ashwathama, Kripacharya, Kritvarma, Sushen, Dhritsen and Jayatsen, rested for the night. After the death of Karan Your sons terrified of the Pandavas, were all at ease. Then praising Shalya in the midst of the assembled warriors, they said. 5 " You are fit to be the leader of the armies to conquer our foes." Then Duryodhan said to Ashwathama the

व सभ्रशमरुणानुजवातयोः । आदिरयस्यार्चिष्या तुल्यं युध्या चोशनसा समम् ॥ १० ॥ कान्तिरूपमुद्भेदवर्धेभिश्वम्द्रमसा समम् । काञ्चनोरपलसंघाते सदृशं श्लिष्टसंघिकम् ॥ ११ ॥ सवृत्तोरुक्तटीजघ मुगाद स्वंगुलीनयाम् । स्मृत्वा स्मृत्वैव गु गुणा-धाम्ना यन्नाहिनिसमितम् ॥ १२ ॥ सर्वलक्षणसम्पन्नं, निपुणं-भुतिसागरम् । जतार नरसारीणामजेयं शत्रुभिर्वलात् ११३ ॥ दशांग यश्चतुष्पादमिष्वस्त्रं चेदत्स्वतः । सांगाद्य चतुरां वदान् सम्पगालयानपञ्चमान् ॥ १४ ॥ आराध्य ५५५५५५ यत्तावत्ते कर्ममहातपाः । अयोनिजायामुत्पन्ना द्रोणेनायोजितेन यः ॥ १५ ॥ तमप्रतिभेकमार्ण रूपेणामदृशं मुचि । पारय सर्वं विद्यानां गुणार्णवमनिन्दितम् ॥ १६ ॥ तमभ्येत्यात्म जरतुभ्यमदव्यामानमप्रधीत् । य पुरस्कृत्य साहिता युधि जेष्याम पाण्डवात् ॥ १७ ॥

तीव्रता और बलमें वायु और गरुडके सनान तेजमें सूर्यके समान और बुद्धि में शुकजी के समान । १० । कान्तिरूप; और मुल इनगीनों ऐश्वर्यों से चन्द्रमाके सदृश मुनहरी कमल समूहों के समान सच्छ अंगके जोड़ । ११ । गोल टांग कमर और जंघावाला सुन्दरचरण उंगली और नख रखनेवाला है ईश्वर ने बारम्बार गुणों को स्मरण करके उपायसे उत्पन्न किया है । १२ । और अन्य सब लक्षणों से युक्त वह सावधान वेदोंका समुद्र और बेगीमें शत्रुओंका विजय करनेवाला बल पराक्रमके द्वारा शत्रुओंसे अजेयहै । १३ । जो दशअंग और चारचरण रखनेवाले बाण और अश्वोंको मूलसमेत जानता है और अंगों समेत चारोंवेद जिन में पाँचवा इतिहासहै उनसबको अच्छीरीतित पढा । १४ । वह बड़ा तेजस्वी उपायके द्वारा उग्रतपोंसे शिवजीको आराधनकरके धोनेसे जन्म न लेनेवाले द्रोणाचार्य से उसलीमें उत्पन्न हुआ जो कि धोनेसे उत्पन्न नहीं है । १५ । आपका पुत्र उस अनपम कर्म और स्वयं पृथ्वीपर अनादृश्य सबविद्याओंमें पूर्ण गुणोंके समुद्र शत्रुओं के विजय करनेवाले । १६ । अश्वरथामाप्ताने पाम जाकर वही शीघ्रतासे उनग धोना कि हम साधहेकर जिनको अग्रगामीकरके पाँडवोंको विजयकरें । १७ ।

skilful warrior like Death in the field of battle, of great arms, valour and breast, like Garuda in strength and prowess, glorious like the Sun and like Shukra i. wisdom, 10 Like the moon in the splendour of face, with limbs like lotus flowers, round legs, waists and thighs, with Janbou, feet, fingers and nails, he has been created by God with all the good qualities. Possessed of all lucky marks, he is clever, and learned in the Vedas, that conquerer of foes by his matchless prowess is invincible by enemies. He knows the pros and cons of all weapons and has studied the four Vedas with History. Born from the glorious ascetic and worshippor of Shiva, without a woman, Dronacharya gave birth to Ashwathama in a woman who was born of no woman 15. Your son went to Ashwathama the conquerer of foes and said, "Son

द्रुपुत्रोऽथ सर्वेषामस्माकं परमा गतिः । सर्वास्तस्मान्निधोगात्ते कोऽस्तु सेनापतिर्मम
 ॥ १८ ॥ द्रोणिदवाच्च । अयं कुलेन पर्य्येण तेजसा यशसा धिया । सर्वगुणैः ममुदितः
 शल्यो नोऽस्तु चमूपतिः ॥ १९ ॥ भागिन्यतस्त्रिजांस्त्वपत्वा कृतस्त्रोस्मानुपागतः । महा
 सेनो महाबाहुर्महासेन इवापरः ॥ २० ॥ एते सेनापतिं कृत्वा नृपतिं नृपसत्तम । शक्यः
 प्राप्तुं अयोस्त्राभिर्देवैः स्फुटमिवाजितम् ॥ २१ ॥ तथोक्ते द्रोणपुत्रेण सर्वे एव नरा
 धिवाः । परिवार्य्य स्थिताः शल्यं जयशब्दांश्च चक्रिरे । युद्धाय च मतिञ्चक्रुराथे
 शूच परं ययुः ॥ २२ ॥ ततो दुर्योधनः शल्यं भूमौ स्थित्वा रथे स्थितम् । उवाच
 प्राञ्जलिर्भूत्वा द्रोणमोष्मसमं रणे ॥ २३ ॥ अयं सः कालः अप्राप्तो मित्राणां मित्र
 वाम्बल । यत्र मित्रममित्रम्वा परीक्षन्ते युवा जनाः ॥ २४ ॥ स भवानस्तु नः शूरः

उमको आप बनाइये आप गुरूजीके पुत्रहैं इस हेतुसे आपकी आज्ञासे उसका
 निर्णय होना चाहिये कि मेरा सेनापति कौन होय । १८ । अश्वत्थामा जी बोले
 कि कुछ तेज बड़ यश लक्ष्मी और सब गुणों से पूर्ण यह शल्य हमारा सेना
 पति होय । १९ । उषकास्का ज्ञाता बड़ी सेनाका स्वामी महाबाहु दूमरे स्वामि
 कार्तिरुके समान यह शल्य अपने निजभानवों को त्यागकरके हमारेपास आया
 । २० । हे उत्तम राजा खोगो ; इस शल्य राजाको अपना सेनापति बनाकर हम
 लोगएसे शत्रुओंके विजय करनेको योग्यहोंगे जैसे इंद्रकि रामिकर्तिकजी का
 सेनापति बनके देवताओंको विजय प्राप्तहुई । २१ । अश्वत्थामा के इसप्रकार के
 बचनोंको सुनकर सब महाशयी राजा शल्यको घेरकर चारोंओरको खडेहुये और
 विजयके शब्दोंको किया । २२ । युद्ध में सबने बुद्धिकी और उत्तम निवामस्थान
 को प्राप्त किया इसके पीछे दुर्योधन उस रथसवार युद्ध में द्रोणाचार्य और
 भीष्मके समान शल्यको हाथ जोड़कर बोला । २३ । हे मित्रोंके प्यारे अब
 मित्रोंका वह समय वर्तमान हुआहै जिसमें कि युद्धिमान लोग अपने मित्र और
 शत्रुओंकी परीक्षा लेने हैं । २४ । हे शूर अरुप हमारी सेनाके सुखर सेनापति
 होजिये । २५ । जिस्मेंकि हमलोग युद्धकरनेवाले पाँदवोंको सम्मुख पाकर विजय

of Acharya, pray let me know whom I should make the leader of my
 armies." Ashwathama said, "Let this Shalya endued with glory, fame,
 strength and all the good qualities, be the leader of our armies. This
 lord of great armies like a second Kartik, has left his sister's sons to
 come to us out of gratitude. 20, With Shalya to lead us, we shall
 conquer our enemies as the army of gods was victorious under the
 leadership of Kartik." On hearing Ashwathama's words, all the war-
 riors stood round Shalya. They sent forth cries of victory and were
 ready to fight. Then with clasped hands Duryodhan said to Shalya,
 "Dear friend, it is now time for us to test our friends and foes. Be

प्रलेता वाहिनीमुखे । रणञ्च याते भवति पाण्डवाः मन्दचेतसः ॥ २५ ॥ अविष्यन्मि
सहामान्या पाञ्चालाश्च निरुद्यमाः । शल्य उवाच । यस्त मां मन्वसे राजन कुर्वीत
करोमि तत् । त्वत् प्रियार्थं हि मे सर्वं प्राणा राज्यं धनानि च ॥ २७ ॥ दुर्योधन
उवाच । सेनापत्येन वरये त्वमाहं मानुलानुलम् । सोस्मान् पाहि युष्मांश्चेष्ट कर्तुं
देवानवाहये ॥ २८ ॥ अभिपिच्यन्व राजेन्द्र देवोनामिष पाषाणि । जहि शत्रुन् रणे
धीर महेंद्रो दानवाविष ॥ २९ ॥

इतिश्री शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि दुर्योधनवास्ये षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

करें आपके युद्ध करने पर निवुंड़ी पांडव अपने मंत्री और पांचालों समेत उपासोंसे
रहितहोंगे ॥ २५ ॥ शल्यबोला कि हे राजा जोतुम मुझको मानतेहो हेकौश्वरामैं इसको
करुणा कर्षोंकि मेरे तन धन प्राण और राज्य सब तेरेही हितके निमित्तहैं । २७ ॥
दुर्योधनबोला हे मामाजी मैं आप श्रेष्ठ पुरुषको सेनापति बनाना चाहताहूं त्से
आप युद्धमें हमारी ऐसी रक्षाकरो जैसे कि स्वामिकार्तिकजीने युद्धमें देवता
ओंकी रक्षाकरी थी । २८ ॥ हे राजेन्द्र ऐसे अभिपिक्तहोनामो जैसे कि देवताओं
के सेनापति अभिनरूप शिबजीके पुत्र स्वामिकार्तिकजीने अभिषेचनपायाथा और
शत्रुओंको ऐसे मारो जैसे कि महाइन्द्र दानवों को मारताहै ॥ २९ ॥

a leader to our armies 25 We shall win the Pandavas under your
leadership The foolish Pandavas and their allies the Panchals will
be powerless against you." Shalya said, ' I shall do what you say,
Prince for I have dedicated my life and property to you.' Duryodhan
said, ' I wish to instal you as the commander of my armies and you
will protect us as Kartik did the army of gods We shall anoint you
to be our leader as the gods did Kartik Slay the foes as Indra slays
the daavaas ' 29

सञ्जय उवाच । एतच्छुत्वा बभौ राज्ञो मद्राजः प्रतापवान् । दुर्योधनं तदा
 राजन् वाक्यमेतदुवाच ह ॥ १ ॥ दुर्योधन महाबाहो शृणु वाक्यविदाम्बर । यचितो
 मयसे कृष्णो रथस्थो रथिनाम्बरो ॥ २ ॥ न मे तुल्यास्तुमावेतौः बाहुवीर्यं वयञ्चन
 उद्यतां पृथिवीं सर्वां समुरासुरमानवाम् । योधयेयं रणमन्त्रे संकुञ्च- किमुपाण्डवान्
 ॥ ३ ॥ विजये च रणे पार्यान् सोमकाश्च समागतान् । अहं सेनाप्रणेता ते भविष्यामि
 न संशयः । ४ ॥ तच्च द्रुपदं विधायामि न तरिष्यन्ति य पर । इति सत्यं प्रथम्येष
 दुर्योधन न संशयः ॥ ५ ॥ एवमुक्तस्ततो राजा मद्राधिपतिमज्ञता । अश्रुविञ्चन
 सेनाया मध्ये मारुतसत्तम । विधिना शास्त्रदृष्टेन दृष्टरूपो विशाम्पते ॥ ७ ॥ अने
 चिके ततस्तस्मिन् सिंहनादो महानभूत् । तप संशयेष्ववाचन्त घादित्राणि च भरत
 दृष्टाश्चासलनो योषां मद्राश्च महारथा । तुन्दुबुध्नौ राजानं शल्यमाहवशोभिनम्

अध्याय ७ ॥

संजय बोले कि हे राजा तब प्रतापवान् राजा मद्रने राजादुर्योधन के वचन
 को सुनकर इस वचनको कहा । १ । हे महाबाहु राजादुर्योधन इस वचनको सुनो
 जिन इनरथ सवार श्रीकृष्ण और अर्जुनको तू रथियों में श्रेष्ठ मानता है । २ । यह
 दोनों श्रुत्रवसोंमें किसी प्रकार से भी मेरे समान नहीं हैं क्रोधयुक्त हांकर मैं युद्ध
 के मुखपर देवता असुर और मनुष्यों समेत युद्धमें सन्नद्ध होकर सब पृथ्वीके
 मनुष्यों से युद्ध करसक्ता हूँ फिर पाण्डवों से कैसे नहीं लड़सक्ता । ३ । युद्धमें
 सम्मुख आनेवाले पाण्डव और सोमकोंको विजय करूंगा मैं निस्तन्देह तेरा सेना
 पति हूंगा । ४ और ऐसे व्यूहको रचूंगा जिनको कि प्रतेपदीलोग नहीं तरसके
 हेदुर्योधन यह मैं निस्तन्देह सत्य सत्यही कहता हूँ । ५ । इसके अनन्तर इसप्रकार
 कहेहुये राजाने शीघ्रही मद्रके राजाको सेनामें आभियेक करायो हे भरतर्षभ राजा
 इतराष्ट्र उसप्रसन्नरूप दुर्योधन ने शास्त्रोक्त विधि के अनुसार ऐसाकिया । ७ ।
 इसके पीछे उस के आभियेक करनेपर वड़े सिंहनाद हुये और आपकी सेना में
 बाधेवने । ८ । इसके अनन्तर मद्रदेशी महारथी शूरवीर लोग बहुत प्रसन्नहुये और

CHAPTER VII

Sanjaya said, "On hearing the words of Duryodhan, glorious-
 king of Madra, said, "Hear me, valiant Duryodhan: Shri Krishna and
 Arjun whom you call the best of warriors, are not my equals in the
 strength of arms. I can withstand gods, asurs and men, when I am
 engaged in the field of battle. I shall conquer the Pandavas and
 Somaka and shall be the leader of your armies. I shall form a phalanx
 impregnable by the enemies. You may rely on my word" 5. At
 this Shalya was made commander of the armies, with proper ceremonies.
 Your warriors roared loud roars and beat musical instruments. The

॥ ९ ॥ अथ राजंश्चिरंजीव जहि शत्रून् समागतान् । तद्य चाहुवलं प्राप्य धार्तराष्ट्र
महाबला ॥ १० ॥ निघिला पृथिवीं सर्वा प्रशासन्तु इतिदिषः । त्व हि शक्तो रवे
जेतुं समुत्सुरमानवान् । मर्त्यधर्मोन् इह तु किम् सोमकसृञ्जया ॥ ११ ॥ एष सन्तु
यमानस्तु मद्राणामत्रिपो वली । इरे प्राप तदा वीरो दुरापमहतात्मनि ॥ १२ ॥ शल्य
उवाच । अद्य चाहं रणे सर्वान् पाञ्चालान् सह पाण्डवैः । निहनिष्यामि चा-राज
स्वर्गं वास्यामि वा इतः ॥ १३ ॥ अद्य पश्यन्तु मां लोका विचरन्तमर्भातवत् । अद्य
पाण्डुमुता । सर्वं वासुदेवः ससात्यकिः ॥ १४ ॥ पाञ्चालाश्चेदयश्चैव, द्रौपदीबाह
सर्वश । धृष्टद्युम्न शिखण्डी च सर्वे चापि प्रमदका ॥ १५ ॥ विक्रम मम पश्यन्तु
धनुर्गण महाबलम् । लाघवश्चस्त्रवीर्यञ्च भुजयोश्च धलं युधि ॥ १६ ॥ अद्य पश्यन्तु
म पार्था सिद्धाश्च पद्म चारणे । याददा मे बल वाहवोः सम्पदक्षेत्रु या च मे ॥ १७ ॥

युद्धको शोभा देनेवाले राजाशल्य की प्रशंसाकी । ९ । कि हे राजा तेरी विजय
होय और तूम सम्पूर्ण अनेवाले शत्रुओं को मारो और महाबली धनुर्गण
पुत्र आपके धनुर्गण को पाकर । १० । शत्रुओं से रहित होकर इस पृथ्वीपर राज्य
करो निश्चयकरके तूम युद्ध में देवना अशुर और मनुष्यों के विजय करने को
समर्थहो फिर यहां मरण धर्मवाले सोमक और सृञ्जयलोग क्या पदार्थ हैं ॥ ११ ॥
इसप्रकारसे प्रशंसित होनेपर मद्रदेशका स्वामी राजाशल्य बहुत प्रसन्नाहुआ । १२ ।
शल्य बोला कि हेराजा अजय युद्धमें सब पांचालोंको पाण्डवों समेत माहंगा अथवा
मरकर स्वर्गको जाऊंगा । १३ । अजलोग निययके समान मुझ धूमनेवाले को देखें
अजमर पाण्डव सात्याकि समेत वासुदेवजी । १४ । पांचालदेशी, चन्देरी देशी, द्रौ
पदी के पुत्र, धृष्टद्युम्न, शिखण्डी और सब प्रमदकभी । १५ । मेरे पराक्रमके
और धनुर्गणवदे पञ्चकोगे और युद्धमें मेरे धनुर्गणकी हस्तलापरता और अस्त्रबल
को देखो ॥ १६ ॥ अजमर पाण्डव सिद्ध चारणों समेत मेरी भुजाओं में जैतावन ।
और जैसे कि अश्वों में मेरी विज्ञता है वसको देखें । १७ । अब पाण्डवों के

people of Madra were very glad and praised Shalya, saying, "May you gain victory over the enemies! May the sons of Dhritrashtra get themselves rid of their enemies and rule the land! Surely you can conquer gods, asura and men. The Somaks and Srinjayas are no match for you! Shalya the king of Madra was much pleased at this and said, "I shall slay all the Panchals and Pandavas or shall die fighting. People will see me roaming fearlessly. The Pandavas, with Satyaki and Vasudev, the Panchala the Chanderis, the sons of Draupadi, Dhritadyumna, Shikhandi, and the Prabhakaraks will see the strength of my arms and my dexterity in using weapons. Let the Pandavas see my prowess and law me in the field of battle. I shall surpass Drona, Bhishm and Karan in prowess and shall destroy the army of the

अथ मे विक्रमं हृष्ट्वा पाण्डवानां महारथाः । प्रतीकारपरा भूत्वा चेष्टनां विधिधा-
क्रियाः ॥ १८ ॥ अथ सैन्यानि पाण्डूनां द्वापयिष्ये समन्ततः । द्रोणभीष्मावति विभो
स्मृत्प्रशङ्कं संयुगे । विचरिष्ये रणे युध्यन् प्रियार्थं तव कौरव ॥ १९ ॥ सञ्जय
उवाच । अभिषिक्तं तदा शल्ये तव सैन्येषु मानदः । न कर्णव्यसनं केचित् मेनिरे भर-
तर्षभ ॥ २० ॥ हृष्टाः सुमनसश्चैव धनुस्तत्र सैनिकाः । मेनिरे निहतात् पार्थान् मद्र-
राज वशगतात् ॥ २१ ॥ प्रहर्षं प्राप्य सेना तु तावकी भरतर्षभ । तां रात्रिं मुखिनी
मुसा सुस्थचिन्ता च सामवत् ॥ २२ ॥ सैन्यस्य तव तं शब्दं श्रुत्वा राजा युधिष्ठिरः ।
बाष्ण्यममन्त्रीद्वारक्यं सर्वं क्षत्रस्य श्रवणनः ॥ २३ ॥ मद्रराज कृपः शल्यो धार्तराष्ट्रेण
माधव । सेनापतिर्गोहृष्टवासः सर्वसैन्येषु पूजित ॥ २४ ॥ एतज्ज्ञात्वा यथा भूत् कुरु-
याद्यथ यत् क्षमम् । सेवाश्रेता च गोसा च विद्यत्यय ददनन्तरम् ॥ २५ ॥ तमप्रवर्णन-
द्वाराज वासुदेवो जनाधिपम् । आर्त्तायनिमहं जाने यथातत्त्वेन भारत ॥ २६ ॥ गीर्ष्यं

महारथी मेरे पराक्रम को देखकर और सम्मुलता में सहायक होकर नानाप्रकार के
कर्मकरो । १८ । हे समर्थ कौरव अब मैं युद्धमें द्रोणाचार्य भीष्म और कर्णको
वह्मघनकर पाण्डवों की सेनाओं की नारोंओरसे भगाऊंगा और तेरे हितके लिये
युद्धभूमि में लड़ताहुआ घूमंगा । १९ । संजय बोले कि हेवडाई देनेवाले भरतर्षभ
उमसमय शल्यके सेनापति होनेपर आपकी सेनामें किसीनेभी कर्णके दुःखको नहीं
माना । २० । और सेनाकेलोग बहुत प्रसन्न चित्तहुये और पाण्डवों को राजामद्र-
के आर्षान माना । २१ । हे भरतर्षभ फिर आपकी सेना बड़ी प्रसन्नताको पाकर
उसरात्रिमें सुखसे सोनेवाली होकर चित्तसे सावधानहुई । २२ । राजा युधिष्ठिर
सेनाके सब शब्दको सुनकर सब सत्रियोंके समक्षमें श्रीकृष्णजी से यह बचनवाला
। २३ । हे माधवजी दुर्योधन ने बड़े धनुषधारी सब सेनामें पूजित मद्रके राजा
शल्यको अपना सेनापति कियाहे । २४ । हे माधवजी यह जैसा हुआहे उसको
जानकर जो उचितज्ञोय उसको करिये आप हमारेस्वामी ओर रसक हैं इससे जैसा
जानिये वैसा बड़ी शीघ्रतासे करना योग्यहे । २५ । हे महाराज यह सुनकर वासु-
देवजी राजा युधिष्ठिर से बोले कि हे भरतर्षभ मैं शल्यको मुहंघतां समेत जानता

Pandavas. Fighting in your cause, I shall roam in the field of battle." Sanjaya continued, "None of your warriors missed Karan, when Shalya was installed as the commander of your armies. 20 The people of the army were much pleased and thought that Shalya would conquer the Pandavas. Your warriors slept composedly during that night. Hearing loud shouts of the Kauravas, Yudhishtir said to Vasudev in the presence of his warriors, "Duryodhan has made mighty Shalya the commander of his armies. Do what you deem needful, Madhav, for you are our lord and protector." 25. To this Vasudev replied, "I know the prowess of Shalya well. He is a

चाँध महतेजा महारामा च विशेषत । कृतीच चित्रयोधी च संयुक्तो क्षात्रवेन च ॥ २० ॥ यादृग्भीष्मो यथा द्रोणो पादप्रकर्षश्च संयुगे । तादृशश्चित्रिशो वा मद्रावो मतो मम ॥ २१ ॥ युध्यमानस्य तस्याञ्जी चिन्तयन्निव भारत । योद्धारं नाधिगच्छति तुल्यकर्म जनाधिप ॥ २२ ॥ शिखण्ड्यञ्जुनभीमानां सारवतस्य च भारत । धृष्टद्युम्नस्य च तथा बलेनाध्यधिकं रणे ॥ २३ ॥ मद्रराजो महाराज सिंहद्विद्विक्रमः । त्वरितस्य रथोः काले कालः कुडः प्रजापिवय ॥ २४ ॥ तस्याप्य न प्रपद्यामि प्रतियोद्धारमाद्ये त्वामृते पुरुषव्याघ्र शार्ङ्गसमधिक्राम् ॥ २५ ॥ सदेवलोके कृतस्नेहिमन्नाम्भस्ववः पुमान् मध्वन् मद्रराजं रणे दुःखं यो हन्यात् कुर्यान्वना ॥ २६ ॥ अहन्वहनि युध्यते क्षोभं च लं तव तस्माज्जहि रणे शल्यं मध्वानिव शम्बरम् ॥ २७ ॥ अजेयश्चाप्यसौ बंदि प्रोत्तराष्ट्रेण सारवतः । तथैव धिजयो नूनं हते मद्रस्यैर युधि ॥ २८ ॥ तस्मिन् हते हतं हू ॥ २९ ॥ वह अधिकतम पराक्रमी महात्मा वडातेजस्वी अभ्यस्त अपूर्व युद्धकर्मी और हस्तलावणा से संयुक्त है । २७ । युद्ध में जैसे कि भीष्म द्रोणाचार्य और कर्णसे मेरे मत से राजामद्रभी उनके समान अथवा उनसे भी अधिक है । २८ । हे भरतवंशी राजा युधिष्ठिर मैं शोचता हुआ भी उस युद्धभूमि में सहने वाले शूरवीर शल्यके समान किसीको भी उससे सहने के योग्य नहीं पाता । २९ । हे भरतवंशी वह शल्य यलमें इन शिखण्डी अञ्जुन भीमसेन सारवकी और धृष्टद्युम्न से भी अधिक है । ३० । हे महाराज सिंह और हाथी के समान पराक्रमी निर्भय राजामद्र समय पर ऐसा घमेगा जैसे कि क्रोधयुक्त काल संसारकी सृष्टि में घुपता है । ३१ । हे पुरुषोत्तम अब मैं युद्धमें तुझ शार्ङ्गके समान पराक्रमी के विषय उसकी सम्पुलता करनेवाला नहीं देखगाहूँ । ३२ । हे कौरवन्न्दन देवताओं समेत इस सम्पूर्ण सृष्टिमें तुझसे अधिक दूसरा पुरुष नहीं है जोकि युद्ध में क्रोधयुक्त हुये राजामद्र को मार । ३३ । इस हेतुसे युद्धभूमि में प्रतिदिन युद्ध करनेवाले और अपनी सेनाके विनाशिकरनेवाले इसशल्यको युद्धमें ऐसेपारो जैने कि इन्द्रने शम्बरको माराथा । ३४ । यह वीर अजेय और दुर्वाचन से शंका के साथ प्रतिष्ठा पानेवाला है युद्ध में इस राजामद्रके मरनेपर तेरीही विजय है । ३५ ।

हूँ । २६ । वह अधिकतम पराक्रमी महात्मा वडातेजस्वी अभ्यस्त अपूर्व युद्धकर्मी और हस्तलावणा से संयुक्त है । २७ । युद्ध में जैसे कि भीष्म द्रोणाचार्य और कर्णसे मेरे मत से राजामद्रभी उनके समान अथवा उनसे भी अधिक है । २८ । हे भरतवंशी राजा युधिष्ठिर मैं शोचता हुआ भी उस युद्धभूमि में सहने वाले शूरवीर शल्यके समान किसीको भी उससे सहने के योग्य नहीं पाता । २९ । हे भरतवंशी वह शल्य यलमें इन शिखण्डी अञ्जुन भीमसेन सारवकी और धृष्टद्युम्न से भी अधिक है । ३० । हे महाराज सिंह और हाथी के समान पराक्रमी निर्भय राजामद्र समय पर ऐसा घमेगा जैसे कि क्रोधयुक्त काल संसारकी सृष्टि में घुपता है । ३१ । हे पुरुषोत्तम अब मैं युद्धमें तुझ शार्ङ्गके समान पराक्रमी के विषय उसकी सम्पुलता करनेवाला नहीं देखगाहूँ । ३२ । हे कौरवन्न्दन देवताओं समेत इस सम्पूर्ण सृष्टिमें तुझसे अधिक दूसरा पुरुष नहीं है जोकि युद्ध में क्रोधयुक्त हुये राजामद्र को मार । ३३ । इस हेतुसे युद्धभूमि में प्रतिदिन युद्ध करनेवाले और अपनी सेनाके विनाशिकरनेवाले इसशल्यको युद्धमें ऐसेपारो जैने कि इन्द्रने शम्बरको माराथा । ३४ । यह वीर अजेय और दुर्वाचन से शंका के साथ प्रतिष्ठा पानेवाला है युद्ध में इस राजामद्रके मरनेपर तेरीही विजय है । ३५ ।

matchless warrior and has wonderful dexterity of hand. He is equal or even superior to Bhishm, Drona and Karan in prowess. I think there is no warrior of your army capable of being a match to him. He is superior to Shikhandi, Arjun, Bhim, Satyaki and Dhrishtadyumna. 30. Fiercely brave like a lion or an elephant, he will roar like Death in the hell of battle. None in the world of gods and men can slay the king of Madra, with the exception of you. You must slay Bhishma the destroyer of your armies as Indra had slain Shugriva. That invincible warrior is much respected by Duryodhan. The victory is yours, if you can slay him, 35. All the army of Darya-

सर्वे भ्रातराप्सुस्त्वलं महत् । एतत् धृत्वा महाराज वचनं मम सांप्रतम् । प्रत्युधाहि
रणे पापं मद्राजं महारथम् ॥ ३६ ॥ जहि धेनं महाघ्नो वासवो नमुचिं यथा ॥ ३७ ॥
न वैवात्र दया कार्या मानुषीयं ममेति धै । क्षत्रधर्मं पुरस्कृत्य जहि मद्रजनेश्वरम्
॥ ३८ ॥ भीष्मद्रोणाण्यं तैर्वा कर्णपातालसम्मथम् । मा निमज्जश्च सगणाः शत्रु
मासाद्य गोपदम् ॥ ३९ ॥ यच्छ ते तपसो धीर्यैश्चक्षुः क्षात्रवलं तव । तद्दर्शय रणे
सर्वे जहि धेनं महारथम् ॥ ४० ॥ एतायुक्त्वा घृत्नं केशवः परवीरहा । जगाम
शिबिरं सायं पूज्ययानोध पाण्डवैः ॥ ४१ ॥ केशवे तु तदा यति धर्मराजो युधिष्ठिरः ।
विसृज्य सर्वान् भ्रातृंश्च पाञ्चालानथ सोमकान् । सुप्राप रजनीं तान्तु विशद्वय इव
कुञ्जरः ॥ ४२ ॥ ते च सर्वे महेशासाः पाञ्चालाः पाण्डवास्तथा । कर्णस्य निघने
हृष्टाः सुपुपुर्त्ता निशान्तदा ॥ ४३ ॥ गतज्वरं मवेष्वासे तीर्णपारं महारथम् । बभूव

हे पाण्डव उस के मरनेपर दुर्योधन की सब वही सेना मृतकरूप है हे महाराज
अब तुम मेरे इस वचनको सुनकर युद्ध में महारथी शल्य के सम्मुखजावो । ३६ ।
हे महाबाहु इसको ऐसा मारो जैसे कि इन्द्रने नमुचिको माराया । ३७ । इस पर
अपना मामा जानकर दया न करना चाहिये तुम क्षत्री धर्मको आगे कर के
राजामद्र को मारो । ३८ । कर्ण रूप पाताल से उत्पन्न होनेवाले भीष्म और
द्रोणाचार्य रूपी समुद्र को तरकर सेना समूह सपेत इस गोपदके समान स्रोतरूपी
शत्रुको पाकर इस में मतडूवो । ३९ । अपने तपके बलको और क्षत्रीपनेके
बलको दिखलाओ और इस महारथी को मारो । ४० । इस के पीछे पाण्डवोंसे
पूजित शत्रुओं के धीरोंके मारनेवाले केशवजी इस वचनको कहकर सायंकाल के
समय अपने डेरेको गये । ४१ । फिर केशवजी के चलेजाने पर धर्मराज युधिष्ठिर
सब भाई पांचाल और सेनाके लोगोंको विदा कर के बिना घायल हार्यके समान
उस रात्रिमें सोया । ४२ । और कर्णके मरनेसे बड़े प्रसन्नचित्त वह सब पाण्डव
और पांचाल भी आनन्दसे सोये । ४३ । हे श्रेष्ठ सूपुत्र के मरनेपर पाण्डवों की

dhan will be lifeless at his death. Acting upon my advice, you should face Shalya and slay him as Indra had done Namuchi. 37. Do not spare him because he is your uncle. Think of your duty as a warrior and slay him. Having crossed the Ocean, with Karan as its bed and Bhishm and Drona as its billows, you need not drown yourself in the shallow water of Shalya. Show the strength of your asceticism and ksha tryahood and slay him." 40. Having said this, Vasudev the destroyer of foes, went to his tent at the close of the day. At the departure of Keshav, Yudhishtir dismissed his brothers and other warriors for the night and himself slept soundly like an unwounded elephant. The Pandavas and the Panchals too, reposed

पाण्डवेषानां सैन्यं प्रमुदितं निशि । सूतपुत्रस्य निघने जयं कृत्वा च मारिष ॥४४॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शल्यसेनापत्याभिषेके सप्तमोऽध्यायः ॥ ७ ॥

सञ्जय उवाच । व्यतीतायां रजन्यान्तु राजा दुर्योधनस्तदा । अग्रवीत्तावकांश्च
सर्वान् सप्रहृष्टानां महारथाः ॥ १ ॥ राक्षस्तु मतमात्राय समनह्यत सा चमूः । अयोज
त्रयास्तूर्णं पश्यन्घावस्तथापर ॥ २ ॥ अकल्प्यन्त च मातङ्गाः समनह्यन्त पत्नयः ।
वदित्राणाञ्च निन्दः प्रादुरासीद्विशाम्पते ॥ ३ ॥ योधनार्थं हि सैन्यानां योधानां
चाप्युदीर्यताम् ॥ ४ ॥ ततो बलानि सर्वाणि समाविष्टानि भारत । सप्रहृष्टन्येव दृष्ट
शुर्मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ५ ॥ शल्यं सेनापतिं कृत्वा मद्राजं महारथाः । विभक्त्यं
सेनावाले जो कि वड़े धनुषधारी और पारहोनेवाले होकर महारथी थे विजय को
पाकर तापसे रहित अत्यन्त प्रसन्न हुये । ४५ ।

अध्याय ८ ॥

संजय बोले कि फिर रात्रिके व्यतीत होनेपर दुर्योधन आपके सब शूरेवीरोंसे
बोला हे महारथियो सन्नद्ध होकर अलंकृत हो जावो तब रात्रा के विचार को
जानकर वह सेना अलंकृत हुई और शीघ्रही रथोंका जोड़ कर उसीप्रकार से
शूरेवीर लोग चारोंओरसे दौड़े । २ । हाथी अलंकृत होकर पतियां सन्नद्ध हुई
घातोंके शब्द प्रकटहुये । ३ । हे भरतवंशी इसके पछि युद्धके निमित्त शूरेवीर
सेनाके छोगोंकी वार्त्तालाप करतेहुये शेषवचीहुई सबसेना मृत्युको लौटाकर दृष्टपट्टी
५ महारथी लोग मद्रके राजाशल्यको सेनापति करके और सबसेनाको विभागकरके

in sweet sleep at the death of Karan. The fever of the Pandav warriors abated and they felt joyful at the death of Karan.”;

CHAPTER VIII

Sanjaya said, "At the end of the night, Duryodhan thus addressed his warriors, "Prepare for battle, brave men." The army was made ready at the king's word and mounted their cars. The elephants and foot soldiers prepared themselves with the beat of musical instruments. The warriors, careless of life returned to fight. 5. With Shalya to lead, the armies were divided into various parts and became

षलं सर्वमनीकेषु व्यवस्थिताः ॥ ६ ॥ ततः सर्वे समागम्य पुत्रेण तव सैनिकाः । कृपश्च
 कृतवर्मा च द्रोणिं शल्योप सौवलं ॥ ७ ॥ मध्ये च पाण्डवाः शेषाः समयं चक्रिरे
 तदा । न न एकेन योद्धव्यं कथञ्चिदपि पाण्डवैः ॥ ८ ॥ यो ह्येकः पाण्डवैर्बुध्बेद्यो वा
 युध्यन्तमुत्सृजत । स-पञ्चभिर्मवेद्युक्तः पातकैश्चोपपातकैः अन्योन्यं परिरक्षद्भिर्षो
 षव्यं स्मद्भिन्नैश्च न ॥ १२ ॥ एवं ते समयं कृत्वा सर्वे तत्र महारथाः । मद्रराजं पुरस्कृत्य
 तूष्णमश्वद्रवम् परात् ॥ १० ॥ तपैव पाण्डवाः सर्वे व्यह्य सैन्यं महारणे । अभ्ययुः
 कारवाघ्राजम् योत्स्यमानाः समन्ततः ॥ ११ ॥ तद्वलं भरतश्रेष्ठं क्षुब्धान्बलमस्वनम्
 समुद्धृताण्यकारमुद्धृतपकुञ्जरम् ॥ १२ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । द्रोणस्य भीष्मस्य
 च वै राघवस्य मया धृतम् । पातनं शंस मे भूयः शल्यस्याथ सुतस्य मे ॥ १३ ॥
 कथं रणे हतः शल्यो धर्मराजेन सञ्जय । भीमसेनेन बलिना पुत्रो बुध्बोधना मम

अनेकनाम भागोंसे युक्तहुये । ६ । और वह सेनाभी आकर नियतहुई इस के पीछे
 कृपाचार्य कृतवर्मा अश्वत्यामा शल्य शकुनि और अन्य अन्य शेष बचेहुये राजाओं
 ने अपनी अपनी सब सेनाओं समेत इकट्ठे होकर आपके पुत्रसे मिलकर यह सलाह
 करी । ७ । कि किमीदशमें भी एक मनुष्यको पाण्डवों के साथ युद्ध नकरना
 चाहिये । ८ । जो अकेला पाण्डवों के साथ युद्ध करे अथवा जो अकेले लड़ने
 जाने को - त्याग करे वह पातक और उपपातकनाम पांच पापोंसे
 संयुक्तहोय परस्पर रक्षाकर्मेवाले और साथ रहनेवाले हम लोगों को लड़ना चाहिये
 । ९ । वहाँ वहसब महारथी इसमकारसे नियमकरके और राजापद्रको आगे
 करके शीघ्रही शत्रुओंके सम्मुख गये । १० । हे राजा इसीमकार सब पाण्डवभी
 अपनी सब सेनाओंको अलंकृत करके वड़े युद्धमें युद्धाभिलाषी होकर चारोंआर से
 कौरवों के सम्मुखगये । ११ । हे भरतर्षभ वह सेना जिसमें रथ और हाथी चढ़ाई
 करनेवाले थे व्याकुल सयुद्ध के समान शब्दापमान उठेहुये समुद्र के रूपहुई । १२ ।
 धृतराष्ट्र बोले कि मैंने द्रोणचार्य भीष्म और कर्णका गिराना घना फिर अश्व
 क्षम शल्य और मेरे पुत्रका गिराना मुझसे कहो । १३ । हे संजय युद्ध में शल्य

ready for action. Then Kripacharya, Kritvarma Ashwathama, Shalya
 Shakuni and other warrior kings, with their attendants proposed to
 your son that none of their warriors should fight singly with the
 Pandavas and that he who broke this rule was to be left to his own
 fate as a sinful wretch, without receiving any aid from his allies.
 Having come to this resolution, the warriors soon faced the enemy.
 The Pandavas too arrayed their armies and rushed to the field of
 battle. The army of elephants and cars, made a noise like that of
 the ocean in a storm." Dhritrashtra said, "I have heard of the fall of
 Drona, Bhishm and Karan. Pray tell me of the death of Shalya and

॥१४॥ मञ्जय उवाच । क्षयं भिक्षुर्विवेदानां तथा नागाश्चलक्षयम् । शृणु राजद्रुसिधरो
 भूषा संप्रामं शसतो मम ॥ १५ ॥ आशा चकषती राजन पुत्राणान्ते मघसदा । हते
 द्रोणे च भीष्मे च सूतपुत्रे च पातिते । शल्यः पार्थापुत्रे सर्वात्रिहनिष्यति शरिष
 ॥ १६ ॥ तगाशा हृदये कृत्वा समाश्वस्ये च भारत । मद्रराजश्च समरे समाश्रित
 यहारयम् । नाथघ्नत तदांगानसमन्यत सुतस्तव ॥ १८ ॥ यदा कर्णे हते पार्थाः सिंह
 नाद प्रचक्रिरे । तदा राजन् धार्तराष्ट्रानाविवेश महद्भयम् ॥ १९ ॥ तान् समाश्वस्य
 तु तदा मद्रराजः प्रतारयान् । व्यूहं व्यूहं महाराज सर्वतोमद्रमृद्धिमत् ॥ २० ॥ प्रभु
 धयी रणे पार्थान्मद्रराजः प्रतापवान् । विघ्नन्वन् कामुके चित्रं वेगघ्नलक्ष्मणम् ॥ २१ ॥
 रथप्रवरमास्थाय लेम्बयाश्च यहारयः । तस्य सीता महाराज रथस्थाशोमयद्रयम्
 ॥ २२ ॥ स तेन सम्भृतो धीरो रथेनामित्रकर्षणः । तस्यौ शूरो महाराज पुत्राणान्ते

किसंप्रकारसे धर्मराजके हाथसे मारा गया और भीमने मेरे पुत्रको कैसे मारा १४
 संजय बोले: कि हे राजा उस युद्ध में जो घोड़े हाथी आदिके शरीरों के नाश हुये
 उनको सावधान होकर सुनो । १५ । भीष्म द्रोणाचार्य आर कर्णके गिराने पर
 आपके पुत्रोंको वही प्रथम आशा हुई थी कि शल्य युद्धमें सब पाण्डवों को मारेगा
 । १६ । हे श्रेष्ठ भरतर्षभ उस आशाको हृदयमें धरकर वड़े विश्वास युक्त होकर
 । १७ । और युद्धमें महारथी राजामद्रके आश्रित होकर आपके पुत्रने अपने को
 सनाय माना । १८ । हे राजा जब कर्णके मरनेपर पाण्डवोंने सिंहनाद किये तब
 धृतराष्ट्रके पुत्रोंको महाभय उत्पन्न हुआ । १९ । हे महाराज उस समय प्रतापवान्
 राजामद्र उनको विश्वास युक्त करके और सब सामान से अलंकृत सर्वतोमद्रनाम
 व्यूहको रचकर । २० प्रतापवान् महारथी शल्य अत्यन्त उत्तम सिन्धुदेशी घोड़ों
 के उत्तम रथपर सवार होकर रत्नों से जडित बड़ेभार के सहनेवाले महावेगवान्
 धनुषको चलायमान करता हुआ पाण्डवों के सम्मुख गया हे महाराज वहाँ जाकर
 उसके नियत रथके सारथीने उस रथ समेत सिन्धुदेशी घोड़ोंको शोभायमान किया

my son. How was Shalya slain by Yudhishtbir ?" Sanjaya said,
 "Hear of the great destruction of horses and elephants, 15. At the
 fall of Bhishm, Drona and Karan, your sons had a strong hope that
 Shalya would slay the Pandavas. With this hope in their minds and
 relying on the promise of Shalya, your son thought himself well-
 protected. The Kauravas were much afraid, when the Pandavas
 roared at the fall of Karan. The king of Madra consoled them and
 formed the armies into an array known as the best of all. 20.
 Mighty Shalya mounted his good car, drawn by the horses of Sindhu
 breed, and moving his huge bow decked with precious stones, he faced
 the Pandavas. His driver drove his car drawn by the horses of

भवप्रणत् ॥ २३ ॥ प्रयाज मद्रराजोभूमुक्त्वा द्यूहस्य दक्षिण । मद्रके सहितो धीरः ।
 कर्णपुत्रैश्च युज्यते ॥ २४ ॥ सन्येभूत् कृतयर्मा च त्रिगर्त्त परिवारितः । गीतमो
 दक्षिणे पार्श्वे, शकैश्च जयने सह ॥ २५ ॥ अश्वत्थामा पृष्ठतोभूत् काम्बोज परिवारितः ।
 युद्धोन्नतोभवत्मध्ये रक्षितः कुरुपुत्रवै ॥ २६ ॥ हयागीकेन महता सौबल्यवापि
 संभृतः । प्रययौ सर्वसैन्येन कैतव्यश्च महारथः । २७ ॥ पाण्डवाश्च, महेश्वासा व्यूह
 सैन्यमनिन्दताः । त्रिधा भूधा महाराज तत्र सैन्यमुपाद्रवन् ॥ २८ ॥ धृष्टद्युम्न शिखण्डी
 च सात्यकिश्च महारथः । शल्यस्य बाहिर्नो दुर्गममिदुद्गुणाद्वये ॥ २९ ॥ ततो युधि
 ष्ठिरो राजा स्वनातनिकेन सम्भृतः । शल्यमेवाभिदुद्राव जिघासुर्भरतर्षभ ॥ ३० ॥

। २२ । हे राजा शत्रुओंको पीड़ा देनेवाला शूरवीर उस स्थपर तवार वह राजा
 शल्य आप के पुत्रों के भयको दूरकरताहुआ युद्धभूमिमें नियतहुआ । २३ । उस
 युद्धमें कवचधारी शक्योंमें युक्त वह राजा शल्य मद्रदेशी वीरों और कठिनतासे
 विजय होनेवाले कर्णके पुत्रोंसमेत व्यूहका मुखहुआ । २४ । त्रिगर्त्तदेशियों से
 वेदित कृतवर्मा वाम भागपर नियतहुआ और शक और यवनों समेत कृपाचार्य
 दक्षिण भागपर नियतहुये । २५ । और काम्बोज देशियोंको साथलेकर अश्वत्थामा
 पीछे की ओर हुये उत्तमकौरवोंसे रक्षित दुर्योधन मध्यमें नियतहुआ । २६ ।
 और घोड़ोंकी बड़ी सेनासे युक्त महारथी शकुनी और कैतव्य सब सेना समेत
 चले । २७ । तब वह बड़े धनुषधारी निर्दोष पाण्डव सेना को अलंकृत और
 तीनभाग करके आपकी सेना के सम्मुख दौड़े । २८ । महारथी धृष्टद्युम्न शिखण्डी
 और सात्यकी यह सब बड़ी शीघ्रता से शल्यकी सेना के सम्मुख दौड़े । २९ । हे
 भरतर्षभ अपनी सेना से युक्त मारनेका अभिलाषी राजा युधिष्ठिर शल्यके सम्मुख
 दौड़ा । ३० । और शत्रुओंका मारनेवाला अर्जुन वेगयुक्त होकर बड़े धनुष
 धारी कृतवर्मा और संसर्कों के समूहोंके सम्मुखगया । ३१ । हे राजेन्द्र युद्धमें

Sindhu breed and stationed it in the field of battle Shalya the
 destroyer of foes, mounted on that car, dispelled the fear of your sons
 as he stationed himself in the field. With the sons of Karan by his
 side, the invincible warrior king of Madra stood at the entrance of the
 array Kritvarma, with the people of Trigart, stood on his left and
 Kripacharya with the Shakas and Yavans stood on the right 25
 Ashwathama with the warriors of Gandhara stood on the rear and
 Duryodhan, guarded by the Kauravas, stood in the middle Shakuni
 and Kaitavya were followed by a large number of cavalry The
 (Pandavas, dividing their armies into three parts, rushed against your
 army Brave Dhrishtadyumna, Shikhandi and Satyaki hastened to
 face Shalya's army, and Yudhishtira, with his army, desirous, of
 slaying faced Shalya. 30 Arjun, the destroyer of foes in his fury

हादिश्यस्तु महेश्वासमञ्जेन, शशुपाहा । संशप्तकगणांश्चैव वेगितोत्रिप्रदुदुवे ॥ ३१ ॥
 भीमसेनो वै सामकाश्च महारथा । अभ्यवर्त्तन्त राजेन्द्र जिघांसन्तः पराङ्मुखि ॥ ३२ ॥
 माद्रीपुत्री तु शकुनिमुलूकञ्च महारथम् । ससैन्य सहसैनौ तु उपतस्थे तुराहवे ॥ ३३ ॥
 तथैवायुतशो योधास्तावका, पाण्डवाग्रणे । अभ्यवर्त्तन्त संक्रुद्धा विविधायुधपाणयः ॥ ३४ ॥
 धृतराष्ट्र उवाच । इते भीष्मे महेश्वासे द्रोणे कर्णे महा रथे । कृष्णवल्पावशिष्टेषु पाण्डवेषु संयुगे ॥ ३५ ॥
 सुसंरक्षेषु पाण्डवेषु पराक्रान्तेषु सञ्जय मामकानां परेशाञ्च किं शिष्टमभवद्गलम् ॥ ३६ ॥
 सञ्जय उवाच । यथा धेयं परे राजन् युद्धायसमवस्थिता । पावञ्चासीद्वलं शिष्टं संग्रामे तन्निधोर्धमे ॥ ३६ ॥
 एकं दश सहस्राणि रथानां भरतर्षभ । दश दन्तिसहस्राणि सप्त चैव शतानि च ॥ ३८ ॥
 पूर्णे शतसहस्रे ऽे हयानां भरतर्षभ । नरकोट्यस्तथा तिस्रो बलमेतत्तथाभवत् ॥ ३९ ॥

शकुनिके मारन के इच्छावान महारथी सामकनाम क्षत्री और भीमसेन कृपाचार्य के सम्मुख गये । ३१ । और सेनासमेत वह नकुल और सहदेव युद्धमें उन सेनासमेत नियत होनेवाले महारथी शकुनि और उलूकके सम्मुख नियत हुये । ३२ । इसी प्रकार नानाप्रकारके शस्त्र हाथ में रखनेवाले अत्यन्त क्रोधयुक्त हजारों चापके शूरवीर युद्ध में पाण्डवोंके सम्मुख हुये । ३३ । धृतराष्ट्र बोले कि युद्ध में महारथी महाधनुषधारी भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के मरने और कौरवीय पाण्डवीय सेनाके छोड़े लौगों के शेषरहनेपर । ३४ । और पाण्डवोंके अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर बढ़ाई करनेपर हमारे मित्र और दूसरोंकी सेना कितनी बाकीरही । ३५ । संजय बोले कि हेराजा जैसे प्रकारसे हम और हमारे प्रतिपक्षी युद्धके निमित्त सम्मुख नियत हुये और युद्धसे जितनी सेना बाकीरही उसको मुझसे सुनिये । ३६ । हे भरतर्षभ रथोंकी संख्या ग्यारह हजार हाथियोंकी दशहजार सायणों १-३८ । घोड़ोंकी, पूर्ण संख्या द्वादश हजार यह आपकी सेना बारहकोटि पदातियोंसमेत शेषरही और रथोंकी संख्या छः हजार हाथी छः हजार घोड़े दशहजार और दो करोड़ पदाती

faced Kritvarma and the Sanspitaks Bhimsen with the army of Samsak faced Kripacharya. Nakul and Sahadev, with their armies, faced Shakuni and Uluk. Thousands of your armed warriors faced the Pandavas. Dhritrashtra said, "At the fall of Bhishm, Drona and karan, when a small portion of the armies of the Kauravas and Pandavas remained and the Pandavas attacked us in fury, the armies of both sides must have been wonderfully reduced Pray tell me how many were left." 36. Sanjaya said, "Hear how the Kauravas and Pandavas opposed one another and what portion of the armies was left: the number of cars was eleven thousands, elephants were ten thousands and seven hundreds in number, horses were two thousands and there were twenty millions of foot forming

रधानां षट् सहस्राणि षट् सहस्राश्च कुञ्जरा दश चाभ्यसहस्राणि पात्ति कोटी च
 भारत ॥ ४० ॥ एतद्वलं पाण्डवा नामवच्छेदमाहवे । एत एव समाजमु युञ्जाथ
 भरतपुत्र ॥ ४१ ॥ एवं विमज्ज्य राजेन्द्र मद्रराजमते स्थिता. पाण्डवान् प्रत्युत्तियाम
 जययुक्ता. प्रमन्यथ ॥ ४२ ॥ तथैव पाण्डवाः शूरा समरे जितकाशिनः । उपयाता
 मास्वासा. पाण्डवालाश्च यशश्चिन ॥ ४३ ॥ एव मेव महाराज परस्परवधैषिण ।
 उपयाता मरध्यान्ना पूर्वा सन्ध्यां प्रति प्रभो ॥ ४४ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धे घोररूपे भया
 नकम् । तावकानां परेषाञ्च निम्नतामितरेतरम् ॥ ४५ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि व्यूहनिर्माणे अष्टमोऽध्यायः ८ ॥

यह पाण्डवोंकी सेना बाकीरही हे भरतवंशी यह सब मिलकर युद्ध के निमित्त आये
 ४१। हेराजेन्द्र इसप्रकार राजापद्रके मनमें निषत विजयके लोभी क्रोधयुक्त हमलोग
 सेनाको विभाग करके पाण्डवों के सम्मुख गये । ४२ । इसीप्रकार विजयसे शोभा
 पानेवाले शूरपांडव और यशवान् नरोत्तम पांचाल सम्मुखआये । ४३ । हेमह महा
 राज इसप्रकार परस्पर विजयाभिलाषी नरोत्तमलोग प्रातःकालकी संध्याकेसमय
 सम्मुखहुये । ४४।इसके पीछे परस्पर मारनेवाले पांडव और आपकेपुत्रोंका युद्ध महा
 वाररूप होकर भयानक जारीहुमा ४५ ॥

part of your army. The Pandav army consisted of six thousands of
 elephants, as many cars, ten thousand horse and twenty millions foot,
 Thus the king of Madia divided our army desirous of gaining victory
 over the Pandavas. The Pandavas and Panchals too, attacked us to
 gain victory. Thus the battle between the Pandavas and your sons
 was very terrible” 45



सञ्जय उवाच । ततः प्रवृत्ते युद्धे कुरूणां भयवद्जनम् । सञ्जयैः सह राजेन्द्र
घोरं देवासुरोपमम् ॥ १ ॥ तदा रथगजौघाश्च साधिनश्च बृहस्पतिः । धार्जुनश्च परा
क्रान्ताः समाजग्मुः परस्परम् ॥ २ ॥ नागानां भीमरूपानां द्रुपतां तिस्रस्तो महान् ।
अभूवत् यथा काले जलदानां नभस्तल ॥ ३ ॥ नागरक्षयाहताः कौचाद्विरथा रथिनो
भवन् । अद्रुचन्त रणे वीरा द्रोण्यमाणा मदोरकटे ॥ ४ ॥ ह्यौघान् पादरक्षींश्च रथि
नस्तत्र शिखिताः । शरैः सम्प्रेषयामासुः परलाकाय भारत ॥ ५ ॥ सांदिनः शिक्षितो
गजन् परिवार्य महारथान् । विचरन्तो रणेऽप्यध्वजन् प्राञ्चशक्तृष्टमिलया ॥ ६ ॥
घनिनः पुरुषाः केचित् परिवार्य महारथान् । एकं यदथ आसाद्य प्रेषयेयुर्मक्षयम्
॥ ७ ॥ नागा रथघराभ्यान्प्ये परिवार्य महारथाः । सान्तरायुधिने जघ्नुर्देवमाणे मह
रथम् ॥ ८ ॥ तथा च रथिनं कुड्मं विकिरन्तं शरान् बहून् । नागा जघ्नुर्महाराज परि

— अध्याय ९ ॥

हे राजा फिर कौरवोंका युद्ध जो मृजियोंके साथ जारीहुआ वह घोरभयका
बढ़ानेवाला देवासुर युद्धके समानथा चढ़ाई करनेवाले हजारां मनुष्य और रथ
घोड़ोंके समूह अश्वसवार और घोड़े परस्पर में पिड़े । १ । भयानकरूप हाथियोंके
भागने के ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि समयपर आकाश में बादलों के शब्द होते
हैं । ३ । हाथियों से घायल कितनेही रथसवार रथों समेत गिरपड़े और युद्ध में
मतवाले हाथियों से भगायेहुये वीरभागे । ४ । हे भरतवेशी वहाँ शिक्षित वाले
रथसवारों ने घोड़ोंके समूहों को और चरणरक्षकों को बाणोंसे परलांक में भेजा
। ५ । और इसीप्रकार युद्ध में घूमनेवाले शिक्षक अश्वसवारों ने महारथियों को
प्रास शक्ति और दुधारे खड्गोंसे मारा और कितनेही धनुषधारी मनुष्यों ने महा
रथियों को घेरकर बहुतोंने एकको पाकर यमलोक में भेजा । ७ । और रथियोंमें
अप्ट दूसरे महारथियों ने हाथीको घेरकर मारा हे महाराज इसी प्रकार मौके से
सड़नेवाले महारथी को । ८ । और बहुत बाणोंसे लड़नेवाले क्रोधयुक्त रथीको

CHAPTER IX

The Kauravas fought with the Sunjays a dreadful battle like that of the gods and danavas. Thousands of men, cars and horses met together. The dreadful elephants made a tremendous noise like that of thunder. Many car-warriors fell down wounded by elephants or ran away in terror. The well-trained car-warriors sent horses and guards to the region of Yam with their arrows. 5. The trained horsemen too, slew great warriors with javelins and swords. The armies surrounded great warriors and many of them put single warriors to death. Some good car-warriors surrounded and killed elephants. Similarly, elephants surrounded and slew the good fighting men. The riders of elephants and cars met and slew the riders of elephants and

बायें स्वमन्तत ॥ ९ ॥ नागो नागमगिदुर्य रथी च राधिन रथी । शक्तितोमर नाराचि
 निज्जन्तुनन भौरन ॥ १० ॥ पादातानवमृन्दन्तो रथधारणशजिन । रणमध्ये व्यह
 इवन्त कुर्वन्तो महदाकुलम् ॥ ११ ॥ हयाव पर्वघावन्त चामरै अपशोभिता । हस्त
 विम्वल . प्रस्थे पिघन्त इव मेदिनीम् ॥ १२ ॥ तंघान्तु घाजिनां भूमिं खुरैश्चित्रा वि
 शाङ्गते । अशोभत यथा नारी करजे क्षतघिक्षता ॥ १३ ॥ घाजिनां खुरशब्देन रथ
 नमिस्थनेन च । पत्नीनाञ्छावि शब्देन भागानां घृहितेन च ॥ १४ ॥ वादित्राणाञ्च
 घोषेण शङ्खानां निवृत्तेन च । अमघन्नादिता भूमिनिर्घातेरिव भारत ॥ १५ ॥ धनुषां
 कृजमानानां निस्त्रिशानाञ्च दीप्यताम् । कवचाना प्रभाभिर्च्च न प्रान्नायत् किञ्चन
 ॥ १६ ॥ बहवो बाहवश्छिन्ना नागराजकरोपमा । उल्लेष्ट्यते विचेष्ट्यते वेगं
 कुर्वन्ति दारुणम् ॥ १७ ॥ शिरसाञ्च महाराज पतती बसुधानले । ज्यतानामिव

हाथियोंने चारों ओर से घेरकर मारा ॥ हे भरतवंशी हाथीने हाथीको सम्मुख होकर माग
 और रथीने रथीको शक्ति तोमर और नाराचों से मारा । १० । रथ हाथी और
 घोड़े पदातियोंको मर्दनकरते वड़ी व्याकुलताको उत्पन्नकरते युद्धमें दिखाईपड़े
 । ११ । और चापरासे शोभायमान घोड़े मानों पृथ्वीको पानकरते चारों ओर को
 ऐसे दौड़े जैसे कि हिमालयके शिखरपर हंस दौड़ते हैं । १२ । हे राजा उन घोड़ों
 के खुरोंसे चिन्हित पृथ्वी ऐसे शोभायमान हुई जैसे कि स्त्री हाथों के नखोंसे
 बिंदीखी होती है । १३ । घोड़ों के खुरोंके शब्द रथनेमियोंके शब्द पत्तियोंके शब्द
 हाथियों की बिग्याड़ बाजोंके शब्द और शंखोंके शब्दों से पृथ्वी ऐसी
 शब्दायमान हुई हे भरतवंशी जैसे कि परस्पर अघात करनेवाली हवाओंके
 पृथ्वी पर गिरने से उत्पन्न होनेवाले शब्द होते हैं । १४ । उस समय शब्द करने
 वाले धनुष प्रकाशित खड्ग और शरीर के कवचोंके प्रकाशों से कुछ नहीं
 जानागया । १५ । गजराज की सूंडके समान दूरी ; हुई बहुतसी धुजा ; व्याकुल
 और अधिक चेष्टा करती हुई भयानक वेगोंको करती थी ॥ १७ ॥ हे महाराज पृथ्वी

cars respectively with their javelins, tomars and darts.' 10 Cars,
 elephants and horses crushed the foot soldiers and caused consternation
 among them. Horses, decked with chamars, ran in all directions
 like swans over hills, as if they would drink the earth. The ground
 marked with the horses, hoofs looked like a woman scratched by finger
 nails. Filled with the noise of hoofs, wheels, cries, grunts and conchs,
 the field rang as if with a storm of wind. 13. Loud sounding bows,
 bright swords and shining armours were to be seen everywhere. Arms
 like the trunks of elephants made various movements at their fall.
 The heads of the warriors fell down with a crash like that of the
 falling palm-tree fruits. The ground covered with blood-stained heads
 looked glorious as if strewn over with lotus flowers of golden hue.

तालैश्च फलानां श्रूयते स्वनः ॥ १८ ॥ शिरोभिः पतितैर्मांति यच्चिराद्रैवसुम्धरा ।
 सपत्नीयानभिः काले नक्षिणैरिष भारत ॥ १९ ॥ उद्वृत्तनपनेत्सेस्तु गतसत्त्वं : सुषिञ्जतेः
 व्यस्राजत - मही राजन् पुण्डरीकरिवावृता ॥ २० ॥ बाहुभिश्चन्दना - विषैः
 सफेयैर्महापतैः । पतितैर्मांति यस्मिन्ना यथा शक्रध्वजै र्ब्रथा ॥ २१ ॥ ऊरुभिश्च
 नरैश्चाणां पित्तकृत्सैर्महाद्यै । हस्ति हस्तोपमै रन्यैः संवृत्तं तद्रणार्जुनम् ॥ २२ ॥
 कवचघणतसङ्कीर्णं छत्रचामर सङ्कुलम् । सेनाधनं तच्छु शुभे धनं पुष्पाचितं यथा
 ॥ २३ ॥ तत्र योधा महाराजं विचरन्तो ह्यमीतवत् । इदृश्यन्ते यच्चिरात्काङ्क्षाः पुष्पिता
 इव किंशुकाः ॥ २४ ॥ मातङ्गा धात्वहध्वगत शरतोमर पीडिताः । पतन्तस्तत्र वज्रैश्च
 छिन्नाभ्रसदृशा रणे ॥ २५ ॥ गजानीकं महाराजं धव्यमानं ; महारत्मभिः । इयदीर्यत
 विशाः सर्वाः पातनुशा घना इव ॥ २६ ॥ ते गजा मेघसङ्कुशाः पेतुर्यां समस्ततः ।

पर गिरतेहुये शिरो के : ऐसे शब्द सुनेगये जैसे कि ताल के दलोंसे गिरतेहुये
 फलों के शब्द होते हैं । १८ । रुधिर से लिप्त प्रदेहुये शिरोसे पृथ्वी ऐसे प्रकाश
 मान हुई जैसे कि समुपपर सुनहरी कमलों से शोभित होती है । १९ । हे राजा
 फलैहुये नेत्र निर्जीव और अत्यन्त घायल उन नरोंसे युक्तहोकर वह पृथ्वीऐसे
 शोभायमानहुई जैसे कि कमलोंसे शोभित होती है । २० । चन्दनसालिष्ठ बहुमूल्य
 रत्नमयी केंयूर रत्नवाली पड़ीहुई भुजाओंसे पृथ्वीऐसे प्रकाशयुक्तहुई जैसे
 कि इन्द्रकी ध्वजाओंसे । २१ । बड़े युद्धमें काटीहुई महाराजाओंकी जंघाओंसे
 होजाती है और हाथीकी मूंडके समान दूसरी जंघाओंसे वह युद्धभूमि व्याप्त
 होगई । २२ । सेनाओं घोंडोंसे अच्छादित छत्र चामरों से व्याकुल वह सेनारूप
 वन ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि फूलोंसे चिताहुआ वन होताहै । २३ । हेमहाराज
 वहाँ निर्भयके समान घूमनवाले शूवीर रुधिरसे लिप्त अंग ऐसे दिखाई प्रदे
 जैसे कि मंफुल्लित किंशुकके दृत्त होते हैं । २४ । वाण और तोपों से पीड़ितानरुधि
 भी जहाँ तहाँ दूँदुये बादलोंके समान गिरतेहुये दृष्टपेड़ । २५ । और महात्माओं
 के हाथड़े घायलहुई वह हाथियों की सेना सब दिशाओंमें ऐसे छिन्न भिन्न
 होगई जैसेकि वायुमें छिन्न भिन्न बादल होते हैं । २६ । अर्थात् वह बादलके स्वरूप

The lifeless bodies, with open eyes, made the ground look like a forest of lotus. 20; Decked with sandal paste and valuable ornaments, the arms lay down on earth like Indra's banners. The thighs of the warriors lay like the trunks of elephants. With horses, umbrellas and chāmārs, the battle field looked like a forest in bloom. Warriors, with bleeding bodies, roaming there, looked like Kinshuk trees in bloom. Elephants wounded by arrows and tomars fell down like clouds. 25. The army of elephants, wounded by the arrows of the warriors, dispersed like clouds by the wind. The cloud-like

हयानां सादिभिः साह्यं पतितानां
 शततः ॥ २८ ॥ सज्जते रणभूमौ तु
 वृत्तास्थिशकंरा ॥ २९ ॥ भुजङ्गकाधनुः
 छत्रहस्तां गदाहुपा ॥ ३० ॥ कवचोष्णी
 बस्यम्पका पताकादीचिरदुमा । चक्रवक्रावलीजुष्टा त्रिवेणुवण्डकाध्वरा ॥ ३१ ॥ शरणां
 हृद्यजन्ता भोङ्गणा भयधञ्जनी । प्रावृत्तं नदी रोद्रा कुटसुञ्जयसंकुला ॥ ३२ ॥ तां
 नदीं पितृलोकं पृथ्वन्तीमतिमैरवाम् । सं रघोहननीमिस्ते शूराः परिघवाहवः ॥ ३३ ॥
 भक्तमाने तथा युद्धे निर्मर्याद् विशांपते । अतुरक्रतये घोरं पूर्वं देवासुरोपते ॥ ३४ ॥
 व्याकाशान् वाग्धवाश्वाग्धे तत्र तत्र परत्तपा । क्रोशद्विवाग्धवाश्वाग्धे
 जयाकां निषवाशिरे ॥ ३५ ॥ निर्मर्यादितथा युद्धे पक्षमाने मयांनके ।

हाथी चारोंओर से ऐसे गिरपड़े हे समर्थ जैसे कि मलयकाल में बज्रसे दूटे
 हुये पहाड़ गिरते हैं । २७। सवारों समेत पृथ्वीपर पड़ेहुये घोड़ोंके समूह जहाँ तहाँ
 पर्वत के समान दिखाईदिये । २८। फिर युद्धभूमिमेंपरलोककी ओर को बहनेवाली
 नदी उत्पन्न हुई जिस में रुधिर जल रथ भवों ध्वजा वृक्ष हाड़ कंकड़ भुजा
 नुक धनुष किरने हाथी पर्वत घोड़े पापाण वसा कीच छत्र हस्त और गदा
 उड़पथी । ३० । वह नदी कवच और पगड़ियोंसे पूर्ण और पताकारूपी सुन्दरदृश
 रखनेवाली रथके पहिये रूप चक्रवाली से पूर्ण त्रिद्वेणुरूप दण्डके से समुक्त शूरा
 की मत्स्रता उत्पन्न करनेवाली और भयभीतों के भगोंकी बढ़ानेवाली कौरव
 और कृत्रियों से व्याकुल महारुद्र नदी जारी हुई । ३२ । परिघरूप भुजारखनेवाले
 वह शूरलोग पितृलोक के निर्मित बहनेवाली उक्त बड़ी भयानक नदी को सवारी
 रूप नौकाओंके द्वारा तर । ३३ । हेराजा इसप्रकार उस अमर्यादारूप युद्धके जारी
 होने पर जो कि पूर्वसमय में होनेवाले देवासुर युद्धके समान था और घोर
 तचुरगिणी सेनाके नाशवान होनेपर जहाँ तहाँ अन्य वाग्धव प्रकारे पुकारनेवाले
 उन वाग्धवों के कारण से भयसे पीडावान् दूसरे शूरवीर नियत हुये । ३५ । इस

elephants fell down here and there like hills struck down by vajra
 The horses with their riders lay down here and there like hills, Then
 a river of blood flowed down, leading to the next world, having blood
 for water, cars for eddies, banners for trees, bones for pebbles, arms for
 fish, bows for waterfalls, elephants for hills, horses for stones, fat for
 mire, umbrellas for cranes and maces for boats. 30. It was full of
 armours, turbans, banners and wheels and other parts of cars, causing
 terror to the timid and joy to the brave, and was full of the Kauavyas
 and Srinjayas. With their club-like arms, the warriors crossed that
 dreadful river by means of their cars. When the battle was raging
 furiously, like that between gods and asurs, without rule, the war-

अर्जुनो भीमसेनश्च मोहयाञ्छ्वभतु परान् ॥ ३६ ॥ सा व्यथमाना महती
सेना तव जनाधिप । अमुष्णस्तत्र तत्रैव योषिन्मदघशादिव ॥ ३७ ॥ मोहयित्वा च तां
सेनां भीमसेनघनञ्जयी । धूमतुर्घारिजां तत्र सिंहानादाश्च नेदतु ॥ ३८ ॥ श्रुत्वेव तु
महाशब्दं धृष्टद्युम्न शिखण्डिनौ । घर्मराज पुरस्कृत्य मद्राजमभिदुतौ ॥ ३९ ॥ तत्रा
श्चर्यमपस्पृशाम घोररूप विशाम्पते । शब्देन स ताः शूरा यद्युष्पन्त आगच्छ
॥ ४० ॥ माद्रापुत्रौ तु रमसौ कृतास्त्री युद्धदुर्मदी । अभ्यवातां त्वरायुक्तौ जिगी
वन्तौ बलं तव ॥ ४१ ॥ ततो न्यवसंत बल तावक भरतर्षभ । शरैः प्रणुज बभूवा पाण्डवे
विजितकाशिमि ॥ ४२ ॥ व्यथमाना चम् सा तु पुत्राणां प्रेक्षतां तव । भेजे दिशो महाराज
प्रणुज्राहट धन्विभिः ॥ ४३ ॥ हाहाकारो महान् जने घोघानां तव भारत । तिष्ठतिष्ठति
चाप्या सीद्राघितानां महारमनाम् । क्षत्रियाणां तदाभ्योन्यसयुगे जयमिच्छताम् ॥ ४४ ॥

प्रकार उस अमर्याद भयानक युद्धके वर्षमान होनेपर अर्जुन और भीमसेन ने
शत्रुओंको अचेत किया । ३६ । तब हेराजा वह आपकी बड़ी सेना महाघायल
होकर जहां तहां ऐसी अचेत हुई जैसे कि नशेकी दशा में स्त्री अचेत होजाती है
। ३७ । वहां भीमसेन और अर्जुन ने उस सेनाको अचेत करके शत्रुओंको बजाकर
सिंहादों को किया । ३८ । फिर बड़े शब्दको सुनतेही धृष्टद्युम्न और शिखण्डी
धर्मराजको आगेकरके राजामद्रके सम्मुख गये । ३९ । हे राजा तब वहां हमने
एक भयानक रूप आश्चर्यको देखा जो शब्द से भिटेहुये शूरभागी होकर युद्ध
करनेलगे । ४० । फिर वेगवान् अस्त्र युद्धदुर्मद शीघ्रता से युक्त आपकी सेनाके
विजय करने के अभिलाषी नकुल और सहदेव सम्मुख गये । ४१ । हे भरतर्षभ
इसके पीछे वह आपकी सेना लौटी जो कि विजय से शोभित पांडवों के बाणों
से अत्यन्त घायलथी । ४२ । फिर उस घायल सेनाने आपके पुत्रों के देखतेहुये
दिशाओं को सेवन किया वह सब सेना वारणोंकी वर्षासे अत्यन्त संयुक्तथी । ४३ । हे
राजा तब आपके शूरवीरों का बड़ा हाहाकार उत्पन्न हुआ और युद्धमें परस्पर
विजयाभिलाषी महात्मा पांडवों समेत क्षत्रियों के तिष्ठरशब्दहुये । ४४ । इसकेपीछे

were called out for help to their kinsmen and friends and stood there
in terror, 35. In that battle without rule, Arjun and Bhim made
the enemies lose their senses Your great army, O king, became
insensible with wounds like a drunken woman Having made your
warriors insensible, Bhim and Arjun blew their conchs and roared loud
roars. On hearing their sounds, Shikhandi and Dhrishtadyumna, led
by Yudhishtira, faced Shalya. The latter dispersed them to the
amazement of all, 40 Then brave Nakul and Sahadev, desirous of
fighting, faced Shalya. Your army, wounded by the arrows of the
Pandavas, turned back and dispersed in all directions in the presence
of your son Then there were cries of dismay among the warriors,

माद्रक्ष्मणेव भग्नान्ते वापडवैस्तव संज्ञिकाः । रथकृत्वा युद्धे प्रिधान् पुत्रान् स्रातृनय
 पित्तमहान् । मानुक्कान् भागिनेयांश्च तथा पशुवन्निवाणवान् ॥ ४५ ॥ हयान् द्विपां
 स्त्वरथस्तो बोधा अशुः सद्सूशः । भारमत्राणहृत्तोस्तास्तावका भरतर्षभ ॥ ४६ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुल्युद्धे नवमोऽध्यायः ९ ॥

सञ्जय उवाच । तत् प्रभवं वलं दृष्ट्वा मद्राजः प्रतापवान् उवाच सारथि
 त्त्वं बोद्धाह्वान् मनोजयान् ८२ ॥ एष तिष्ठति वै राजा पाण्डुपुत्रो युधिष्ठिरः ।
 छत्रेण श्रियमाणेन पाण्डवेण विराजता ॥ २ ॥ अत्र प्रापथ मां क्षिप्रं पश्य मे सारथे
 पाण्डवोंके हाथ पराजित आपकी सेनाकेलोग युद्धमें अपने त्वरेपुत्र भाई और पिता
 बाबाओंको त्याग करके । ४५ । पाँडे हाथियोंको शीघ्र बलानेवाले शूरवीर मामा
 मानने आदि नातेदारोंको छोड़कर चारोंभारसे चलदिये अर्थात् हे भरतर्षभ
 आपके शूरवीर अपनी रक्षामें उस्ताह करनेवाले हुये । ४६ ॥

अध्याय १० ॥

सञ्जय बोले कि प्रतापवान् राजामद्र उस पराजितहुई सेनाको देखकरअपने
 सारथीसे बोना कि मनके समान इन शीघ्रगामी घोड़ों का शीघ्रता से बलायमान
 करो यह पाण्डुका पुत्र राजा युधिष्ठिर इतै शोभायमान छत्र को धारण किये
 शोभायमान होकर नियत है । २ । हे सारथी वहाँ जल्दीसे मुझको पहुँचा कर
 मेरे बलको देख अब युद्ध में पाण्डव लोग मेरे भागे नियत होनेको समर्थ नहीं

while the Pandav warriors cried out 'Stay, stay' Your warriors, de-
 feated by the Pandavas, ran away, leaving their sons, brothers, fathers
 and grandfathers behind them 45 They ran away in their swift
 cars, leaving uncles, sisters' sons and other kinsmen and thinking of
 their own safety alone." 46.

CHAPTER X.

Sanjaya said, "Seeing the army defeated, Shalya said to
 the driver, "Drive the horses fast. Yonder stands Yudhishtir
 under his white umbrella. Take me there at once and see my
 strength. The Pandavas will not be able to stand before me"

धलम् । न समर्था हि मे पाथां स्थातुमद्य पुरो युधि । ३ ॥ एवमुक्तस्तत प्रायान्मद्र
राजस् । सारथिः । यत्र राजा सत्यसन्धो धर्मराजो युधिष्ठिरः ॥ ४ ॥ अपतस्तस्य
सहसा पाण्डवानां महद्वलम् । दधारको रण शल्यो धेलोद्धतमिवाभयम् ॥ ५ ॥
पाण्डवानां बलौघस्तु शल्यमासाद्य मारिष । ध्यतिष्ठन् तदा युद्धे सिन्धानेन इवाश
लम् ॥ ६ ॥ मद्राजस्तु समरे दृष्ट्वा युद्धाय विधितम् । कुरवः सन्वयन्तस्त मृत्यु
कुरवा निवर्त्तनम् ॥ ७ ॥ तपु राजशिशुस्यु ध्यदानीकेषु भागश । प्रावर्त्तत महारौद्र-
क्षमाम शोणितोद्य ॥ ८ ॥ समाच्छिन्नप्रसेनस्तु नकुलो युद्धदुर्मद । ती परस्पर
मासाद्य चित्रकर्भुकधारिणौ । मेघाश्रिय ययोद्भृत्तं दक्षिणोत्तरधरिणौ ॥ ९ ॥ शर
सौधे सिंघचतुस्तौ परस्परगाह्ये । नास्तरं तत्र पश्यामि पाण्डवस्थेतरस्र वा ॥ १० ॥ शर
उभौ कृतास्त्रौ बलिनौ रथचर्याविशारदौ । परस्परध्वे यस्तौ छिद्रान्धेवैजतपरौ

हैं । १ । इस प्रकार के वचन को सुनकर वह राजा मद्रका सारथी वहांहीकोचना
जहां कि मत्स्यसंकल्प धर्मराज राजा युधिष्ठिर था । ४ । और वह पांडवों की
सेना भी अकस्मात्, चढ़ाई - करनेवाली - हुई और अकेले शल्यनेही युद्ध में उन
सबको ऐसे रोक। जैसे, कि उठेदुये समुद्रको मर्यादा रोकती है । ५ । हे भेष्य तव
पाण्डवोंकी सेनाका समूह शल्यका पाकर युद्धमें ऐसे नियत हुआ जैसे कि पर्वत
को पाकर समुद्रका बग नियत होताहै । ६ । फिर युद्धके निमित्त युद्धभूमि में नियत
राजामद्रको देखकर मृत्युको पीछे करके सब कौरव लौटे । ७ । हेराजा वह भागकी
हुई लोग उन अलंकृत सेनाओं के लौटने पर रुधिररूप जल रखनेवाला महा
रौद्र युद्ध आरम्भ हुआ । ८ । युद्धमें दुर्मद नकुल ने चित्रसेनको सम्मुख पाया उन
दोनों अपूर्व धनुषधारियोंने परस्पर सम्मुख होकर । ९ । युद्धमें बाणरूपी जलोंसे
परस्पर ऐसे सींचा जैसे कि दक्षिण और उत्तरसे उठेदुये वर्षाकरनेवाले दो बादल
होतेहैं । १० वहां हमने पाण्डवों के अथवा अन्य लोगोंके अन्तरको नहीं देखा । ११
वह दोनों अलङ्कृत बलवान रथचर्या में सावधान परस्पर मारने में उपाय करने
वाले छिद्रोंके अन्वेषण में मरुत्तत्र । १२ । हे महाराज फिर चित्रसेन ने पीत

On hearing this, the driver drove the car to the place where Yudhis-
thir was. The Pandav army attacked Shalya, but he checked it as
the coast checks the rising ocean. 5 The Pandav army resist d
Shalya as a hill resists the ocean. Then seeing the king of Madra
stand firmly in the field of battle, the Kaurav warriors came back
without fear of life. The divisions of the Pandav the army met the
returning warriors and produced a river of blood. Nakul was attacked
by Chitrasen and the two warriors showered arrows over each other
like rain. 10. The Kauravas and the Pandavas were mixed together.
The two shilful warriors, clever in driving cars, looked for each other's
defects. - Chitrasen cut down Nakul's bow, near the handle, with a

॥ १२ ॥ चित्रसेनस्तु भङ्गलेन पितेन निशतेन च । नकुलस्य महाराज मुष्टिदोच्छ्रितं
 नङ्गत् ॥ तथैव छिन्नघ्नान् रुक्मपुत्रं जिलाशितैः । त्रिभिः शरैश्चन्द्रानो ललाटं वै
 समापेयत् ॥ १४ ॥ हयाञ्चांस्य शीरीक्षणे प्रथमा मास मृग्यवः । तथा ध्वज सारथिश्च
 त्रिभिस्त्रिभिरपातयत् ॥ १५ ॥ स शत्रुभ्रमनिमुक्तैर्लालस्यैस्त्रिभिः शरैः । नकुले
 शुश्रुमे राजस्त्रिभूग इव पथेत् ॥ १६ ॥ स छिन्नघ्नो वा विरथ खड्गमादाय चर्म च ।
 रथादवातरङ्गीर शैलाग्निदिव केशरी । पश्यामापाततत्तस्य शरवृष्टिं समासृजत्
 ॥ १७ ॥ नकुलोऽप्यग्रसत्ता वै चर्मणा लघुविक्रमः । चित्रसेन रथ प्राप्य चित्रयोधी
 जितभ्रमः ॥ १८ ॥ आरुरोह महाबाहु सर्वसैन्यस्य पश्यत् ॥ १९ ॥ स कुण्डलसमुकट सुनस
 स्वायतेक्षणम् । चित्रसेतशिर कापादापहरत् पाण्डव । अपपात रथापस्थे दिवाकर
 समग्रम् ॥ २० ॥ चित्रसेन विशस्तन्तु हृष्ट्या तत्र महारथाः । साधुवाद्सर्गाञ्चकु

वर्णं तीक्ष्णधार भङ्गसे नकुलके षडधनुषको भूटके स्थानपर काटा । ११ । फिर भयसे
 उम्पन्न व्याकुलतासे रहित ने इसदृष्टे धनुषवाले को सुनहरी पुंख और तेजधार तीन
 बाणों से ललाटपर घायल किया । १४ । और उसके घोड़ों को भी अपने तीक्ष्ण
 बाणों से कालवशकिया इस प्रकार ध्वजा और सारथीकोभी तीन तीन बाणों
 से गिराया । १५ । हेराजा वह नकुल शत्रुकी भुजासे छूटेहुये ललाटपर नियत तीनबाणों
 से तनि शिरवरवाले पर्वत के समान शोभायमानहुआ । १६ । वह दृष्टे धनुष रथसे
 विहिन होकर वीर नकुल दान तलवारको लेकर रथ से ऐसे उतरा जैसे कि
 पर्वत के शिखर से केसरी सिंह उतरता है । १७ । तब उसने उम पदाती आनेवाले
 के ऊपर बाणों की वर्षाकरी उस तेज पराक्रमी नकुलने भी बल के द्वारा उस
 बाणवृष्टि को निष्फल किया फिर अपूर्व शूरवीर धकावकी जीतनेवाला महाबाहु
 नकुल चित्रसेन के रथको पाकर सब सेना के देखतेहुये उसपर चढ़ा । १८ ।
 बहानाकर उस नकुल ने सुन्दरमुख बह नत्र कुण्डल और मुकुटधारी चित्र
 सेनके शिरको उसके शरीरसे जुदाकिया वह सूर्य के समान मङ्गतेजसी रथके
 बंधने के स्थानपर गिरपडा । २० । फिर वहां महारथियों ने मोरहुये चित्रसेन को

sharp arrow of yellow colour, and wounded him on the forehead with
 three sharp arrows fitted with gold feathers, He slow his horses and
 cut down the banner and driver with three arrows each 15. Wound
 ed by three arrows standing on his forehead Nakul looked like a
 three peaked mountain Deprived of his bow and car, Nakul came
 down from the car, with shield and sword, as a lion comes down from
 a hill. Then he showered arrows over Nakul and the latter made
 them useless by his skill Then Nakul approached the car of Chitra
 sen and mounted it 18 He cut off Chitrason's head, adorned
 with beautiful face, large eyes ear rings and diadem and the latter's
 body fell down from his seat in the car 20 The brave warriors, seeing

निहनादाश्च पुष्पलात् ॥ २१ ॥ विशहनं भ्रान्त इच्छा कर्णपुत्रौ महारथौ । सुपेण
सत्यसेनश्च मुष्कन्तौ निशिताच्छरान् ॥ २२ ॥ तनोऽयथाधतां तूर्णं पाण्डवं रथिना
म्वरो । जिघांसन्तौ यथा नागं व्यघ्री राजन् महावने । २३ ॥ तावज्जवर्षता तीक्ष्णै
द्वारप्येन महारथम् । शरोघान् सम्यगस्यन्तौ जीमूनों सलिल यथा ॥ २४ ॥ स शरै
सवनो विद्व प्रहृष्ट इव पाण्डव । अन्वत् कर्णमुक्ताशय रथमाकृष्ट वीरवान्
आतिष्ठत् रणे वीरः कुड्बइव इवात्मक ॥ २५ ॥ तस्य तां भ्रातृगौ राजन् शार्ङ्ग शक्यत
पर्वभिः । रथ विशकृत्कीर्तुं सभाऽधो विशाम्पने ॥ २६ ॥ तत्र प्रहृष्ट नकुलश्चतुर्भि
श्चतुगे रणे । अघान निशिरस्तोऽप्यै सत्यसेनस्य यात्रिन ॥ २७ ॥ तत्
सन्धाय नाराच रुक्मपुत्र शिलाशितम् । अनुश्लिच्छेद् राजेन्द्र सत्यसेनस्य पाण्डव
॥ २८ ॥ अथान्व रथमास्थाय धनुरादाय चापाम् । सत्यसेन सुवर्णश्च पाण्डवं पर्व
षाघताम् ॥ २९ ॥ अविश्वत्सावसंभ्रान्तो माद्रिपुत्र प्रतापवान् । ज्ञाभ्यां ज्ञाभ्यां भ्रा

देखकर धन्य धन्य शब्दोंसे प्रशंसा करी और बड़े सिंहनोंदोंको किया। २१। कर्णके
पुत्र महारथी सुपेण और सत्यसेन मरेहुये अपने भाई को देखकर नाना प्रकार के
बाणोंको छोड़ते । २२। शीघ्रही रथियोंमें भेष्ट पाण्डव नकुलको मारने के अभि-
लाषीहोकर ऐसे सम्मुख दौड़े जैसे कि महावनमें शार्ङ्ग के मारने के आघिलाषी
दोष्यात्र दौड़ते हैं । २३। वह दोनों बाण समूहोंको अच्छीरिति से छोड़के इस
महारथी के ऊपर ऐसे वर्षा करनेवाले हुये जैसे किदो बादल जलकी वर्षा करतेहैं
। २४। सशरोंके जणोंने धयज और अत्यन्त प्रमत्त पराक्रमी नकुल दूसरे धनुष
लेकर और रथपर चढ़कर क्रोधयुक्त कालके समान युद्ध में नियत हुआ । २५।
हे राजा उनदोनों भाइयोंने टट पर्व वाले बाणों से उसके रथको खण्ड २ करना
प्रारम्भ किया । २६। उसके पीछे नकुलने हँसकर अपने तीक्ष्णधार चारबाणों से
सत्यसेनके चारों घोड़ोंको मारा । २७। फिर सुनहरी पुंख तीक्ष्ण धार नाराचको
धनुष पर चढ़ाकर सत्यसेन के धनुषको भी काटा । २८। इसके पीछे दूसरे रथमें
सवारहोकर दूसरे धनुष को लेकर सत्यसेन और सुवर्ण नकुल के सम्मुख दौड़े
। २९। हे महाराज भयजनित व्याकुलता से रहित प्रतापवान् नकुल ने युद्ध के

Chitrasen dead, applauded Nakul and roared like lions. Karan's sons, Sushen and Satyasen, seeing their brother Chitrasen dead, rushed on to slay Nakul like two lions rushing against an elephant. They showered on him their arrows like rain. Wounded by arrows, brave Nakul took up another bow and stood with it in the field of battle like Death in rage. 25 The two brothers began to break through his car. Then Nakul, with a smile, slew the four horses of Satyasen with four arrows, and with another sharp arrow cut his bow. Mounting another car, Satyasen and Sushen rushed against Nakul, Free

राज सारथीं दण्डयामि । ३० ॥ सुपेणस्तु तत कुलः पाण्डवस्य महद्युः । विच्छेद
 प्रहसन् युद्धे सुपेण महारथ ॥ ३१ ॥ अयान्प्रचतुरादाय नकुलः क्रोधमूर्च्छितः ।
 सुपेजं परक्रामिर्बिभ्रत् ध्वजमेकेन विच्छिद्ये ॥ ३२ ॥ सत्यसेनस्य च धनुर्हस्तावापञ्च
 मारिष । विच्छेद तरसा सुपे तत खड्गकुण्डलाज्जनाः ॥ ३३ ॥ अयान्प्रचतुरादाय
 अशुभं मारसाजतम् । शरैः संछाद्यामास, समस्तात् पाण्डुनन्दनम् ॥ ३४ ॥ कश्चि
 कायवे तु ताव वाष्पात् मकुलः परवीरहा । सत्यसेनं सुपेणञ्च द्वाभ्यां द्वाभ्यामविष्यत
 ॥ ३५ ॥ शवेनं प्रत्यविध्वेषां पृथक् कृष्यमजिह्वयोः । सारथिञ्चास्य राजेन्द्र शितैर्विधि
 भन्तु शरैः ॥ ३६ ॥ सत्यसेनी रथेशान्तु मकुलस्य धनुस्तथा पृथक् माराभ्यां विच्छेद
 कृतहस्तः प्रतापवान् ॥ ३७ ॥ स रथेतिरथासिद्धप्रयशानि पराशुभत् । स्वर्णदण्डामकुण्डामा
 श्लेषातां पुनिमेलाय ॥ ३८ ॥ ललितहामामिष विभो नामकन्यां महाविषाम् । समु
 च्चरत् च विच्छेप सत्यसेनस्य संगुणे ॥ ३९ ॥ सा तस्य हृदयं संख्ये धिमेद् शतधा

धनुषपर दो २ बाणोंसे उन दोनों को छेदा । ३० । इसके पीछे क्रोधयुक्त महारथी
 इसने सुपेणने अपने दूरमसे नकुलके वड़े धनुषको काटा । ३१ । तब पीछे
 क्रोधसे मूर्च्छित नकुलने दूसरे धनुषको लेकर पाँच बाणोंसे सुपेणको छेदा एक
 बाणसे ध्वजाको काटा ॥ ३२ ॥ और वड़े वेगसे युद्धमें सत्यसेन के धनुष और
 इसबाणको भी काटा इसहेतुसेमोर्गेने बड़ाउच्चशब्दकिया । ३३ ॥ इसकेपीछे शत्रु
 के मारनेवाले मारके साधनेवाले दूसरे धनुष को लेकर बाणों की वर्षासे उसने
 पाण्डु नन्दन नकुलको सब ओरसे आच्छादित करदिया । ३४ । शत्रुओंके मारने
 वाले नकुलने उन बाणोंको इटाकर सत्यसेन और सुपेणको दो २ बाणोंसे छेदा
 । ३५ ॥ हे राजा उन दोनों ने भी अपने खुदे २ बाणों से उसको छेदा और उसके
 सारथीकी शिष्टप्रथाओंसे घायलकिया । ३६ ॥ फिर इस्तलायवी प्रतापवान् सत्यसेन
 ने नकुलके धनुष और रथके ईशादण्ड को पृथक् २ बाणोंसे काटा । ३७ । उस रथ
 पर निर्यत शरिणों ने मुनहरीदण्ड खरच्छधार तैलसे मनीहुई वही निर्मल रथ
 शक्ति जो कि ओंठीकी चाटनेवाली वड़ी नवपैलीनागकन्या के समान थी उसको
 उठाकर युद्धमें सत्यसेनके ऊपर छोड़ा । ३९ ॥ हे राजा उस शक्तिने युद्धमें सत्यसेन
 के हृदय के सीत्खड करदिये तबवह अचेत और निर्जीवहोकर रथसे पृथ्वीपर गिर

from anxiety of fear, Nakul pierced them with two arrows, 30. Then
 Sushen, with a smile, cut Nakul's bow. Insensible with anger, Nakul
 took up another bow and pierced Sushien with five arrows. He cut also
 Satyaseen's banner, handguard and bow. The people cried in dismay.
 He took up another hard bow and covered Nakul with arrows. Nakul
 checked their arrows and pierced them with two. They too, pierced him
 and his driver with their sharp arrows, 36, Satyaseen cut down the bow
 and yoke of Nakul. Nakul hurled at Satyaseen a sharp, clean and well-
 oiled spear like a poisonous snake. The spear broke Satyaseen's heart into

नृप । स पपात रथाङ्गि गतसत्त्वात्पचेतनः ॥ ४० ॥ भ्रातरं निहतं दृष्ट्वा सुपेणः

गन्तु ततः क्रुद्धः पाण्डवं विशिखालाम् । सुतसामञ्च विशत्या धातुवाप्यस्य प
यत् ॥ ४५ ॥ ततः क्रुद्धो महाराज नकुलः परधीर्हा । शरैस्तस्य दिशः सर्वाद्युद्धया
मास वेगवान् ॥ ४६ ॥ ततो गृहीत्वा तीक्ष्णामद्भ्युत्तं सुतेजनम् । स वेगयुक्तं विश्वप
कर्णपुत्रस्य संयुगे ॥ ४७ ॥ तस्य तेन शिरः कायाञ्चहारं नृपसत्ताम् । पर्यतां सैव
सुप्य नां तदद्भुतमिवाभवत् ॥ ४८ ॥ स हतः पापतदाजपकुलन महात्मना । नदीवेगा
दिवाङ्मल्लीरजः पादपौ महान् ॥ ४९ ॥ कर्णपुत्रवधे दृष्ट्वा नकुलस्य च विक्रमम् ।

पडा । ४० । क्रोधसे मूर्च्छमान सुपेण अपने इस भाईको भी मारा हुआ देखकर
तीक्ष्णबाणों से पदाती नकुलपरवर्षा करने लगा । ४१ । फिर युद्धमें पिताको चाहता
हुआ सुतसोम उसके पास गया इसके पीछे भरतर्षभ नकुल सुतसोम के रथपर सवार
होकर । ४२ । ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि पर्वत पर निपत केसरी सिंह होता
है उमने दूसरे धनुषको लेकर सुपेणसे अच्छा युद्धकिया । ४३ । उन दोनों ने
महारथियों ने परस्पर सम्मुख होकर बाणों की वर्षा से परस्पर मारने में उपाय
किये । ४४ । इसके पीछे क्राधयुक्त सुपेण ने पाण्डवको और सुतसोम को तीन
तान बाणों से उसकी छाती और भुजाओं पर घायल किया । ४५ । इसके पी
शत्रुहन्ता क्रोधयुक्त वेगवान् नकुलने बाणोंसे उसकी दिशाओंको दकदिया । ४६ ।
उसके पीछे तीक्ष्ण नोक सुन्दर बतवाले वेगवान् अद्भुत नाम नाणको लेकर
युद्धमें कर्णके पुत्रपर फेंका । ४७ । हेराजाओंमें अष्ट सब सेनाके लोगोंके देखते उम पाण्डवसे
उम के शिरको काटहाला यह आश्चर्यपसा हुआ । ४८ । फिर उस महात्मा नकुल के
हाथसे मारा हुआ वह धीरे ऐसे गिरपड़ा जैसे कि बड़ा भारी नदीके तटका वृक्ष
नदीके वेगसे गिर पड़ता है । ४९ । हे भरतर्षभ आपकी सेना कर्णके पुत्रके मरण

a hundred parts and he fell down senseless from his car. 40. Enraged
Sushen showered arrows over Nakul. Sut-om went to his father
Nakul and took him upon his car. Mounting his son's car, Nakul
looked glorious like a lion standing on a hill. He took up another
bow and fought with Sushen. Both the warriors tried to slay each
other with their arrows. Then Sushen wounded Nakul and his son
with three arrows each on the arms and breast. 45. Nakul covered
him with arrows and discharged at him a crescent shaped arrow and
with it cut off his head to the amazement of all. Struck by Nakul's
arrows, Sushen fell down like a riverside tree uprooted by the force of

प्रदुःख भयान्त सेना तावकी मरतपम ॥ ५० ॥ तावत् सेना महाराज, मद्रराजः प्रताप
 वाव । कपालयुद्धे शूरः सेनापतिरिन्दम ॥ ५१ ॥ अभीलस्यौ महाराज व्यथस्याप्य
 च वाहिनीम् । सिहनाद् भुजा हृत्या धनुः शब्दञ्च दारुणम् ॥ ५२ ॥ तावकाः स्वतरे
 राजन् रक्षिता हृदयभवा । प्रत्यद्युररातींस्ते समस्तादिगतमथथा ॥ ५३ ॥ मद्रराज
 महिषासे परिचार्य्य समन्ततः । स्थिता राजन् महात्मानो घोडुकामाः समन्ततः ॥ ५४ ॥
 सात्यकिर्भीमसेनश्च माद्रीपुत्री च पाण्डवी । युधिष्ठिरं पुरस्कृत्य द्विभिषभमिन्दम
 ॥ ५५ ॥ परिचार्य्य रणे धीराः सिहनाद् प्रचक्रिरे । घाणशब्दरवाभ्योप्रात ह्येवाह
 विविधा मुहुः ॥ ५६ ॥ तत्रैव तावकाः सर्वे मद्रधिपतिमञ्जसा । परिचार्य्य सुखरंघ्रा
 पुनयुद्धमराचयन् ॥ ५७ ॥ ततः प्रवृत्ते युद्धे भीरुणा मपवर्द्धम । तावकानां परेवाह
 मृत्य कृत्वा निषर्त्तम ॥ ५८ ॥ यथा देवासुरं युद्धं पूर्वमासीद्विशास्पते । अभीतानां

को और नकुलके पराक्रमको देखकर भयभीतहोकर भागी । ५० । उस समय
 शत्रुओंके विजय करनेवाले प्रतापवान् शूरसेनापति, राजामद्रने युद्धमें उस सेनाको
 रक्षित किया । ५१ । और आप उस सेनाको नियत करके धनुषके भवानक शब्द
 और बड़े सिहनादको करके निर्भय होकर नियत हुआ । ५२ । हे राजा युद्धमें हरे
 धनुषधारी से रक्षित और पीड़ासे रहित वह संवलोग शत्रुओं के सम्मुख गये । ५३ ।
 और युद्धाभिलाषी बड़े माहसी शूवीर वंस बड़े धनुषधारी राजाको चारोंओरसे
 मध्यवर्ती करके उसके चारोंओर नियत हुये । ५४ । सात्यकि पाण्डव भीमसेन
 नकुल और सहदेव इतं सबवीरोंने लज्जावान शत्रुओं के विजय करनेवाले युधि
 स्थिको अगि करके । ५५ । और चारोंओरसे अपना मध्यवर्ती करके सिहानादकिये
 और वाग्म्वार वाणोंके द्र शब्द और नानाप्रकार के सिहनादों को किया । ५६ ।
 इसीप्रकार धीर्यन्त क्रोधयुक्त आपके शूवीरों ने बड़े वेगसे राजा मद्र को अपना
 मध्यवर्ती करके फिर युद्ध करना स्वीकार किया । ५७ । इसके अनन्तर मृत्यु
 को पीछे करके आपके शूवीर और प्रतिपक्षियों के वह युद्ध जारीहुये जोकि
 भयभीतों के भयके वंदानेवाले थे । ५८ । हे राजा जैसे कि पूर्व समयमें देवासुर

water. Seeing the death of Karan's sons and Nakul's prowess, your
 army dispersed in terror. 50 Glorious Shalya, the destroyer of foes
 and commander of armies, protected the armies. Having comforted
 the warriors, he stood making a dreadful noise with his bow, uttering
 lionlike roars. Protected by him the warriors opposed the enemy. They
 came round the great archer prince and protected him on all sides
 Satyaki, Bhishm, Nakul, Sahadev and others, led by Yudhishtir and
 desirous of conquering, roared like lions all round their leader. They
 twanged their bows and roared. 51. In the same manner, your
 warriors came round the king of Madra and again prepared to fight
 Your warriors, fearless of their lives, and the Pandavas fought a

तथा राजन् यगराभ्युदयः ॥ ५९ ॥ ततः कपिश्वशो राजन् इत्या संहातकावणे
 अभ्यधावत तां सेनां कौरवीं पाण्डुनन्दन ॥ ६० ॥ तथैव पाण्डवाः सर्वे घृष्टघृष्टपुरा
 ममाः अभ्यधावन्त तां सेनां विशुजन्तः शिताह्विताम् ॥ ६१ ॥ पाण्डवैरककोर्णोर्ण
 सम्मोहः समजायत । न च जहुरनीकानि दिशो वा विदिशालधत् ॥ ६२ ॥ जापूषं
 माणा निशितैः शरैः पाण्डवस्योदितैः । इतप्रवीरा विद्वन्ना कीर्ष्यमाना समन्तत
 ॥ ६३ ॥ कौरव्यवधय जम्ः पाण्डुपुत्रैर्महारथैः । तथैव पाण्डवी सेनाः शरै राजन् सर्व
 ततः । रणेहन्वत पुत्रैले शतशोच सहस्रशः ॥ ६४ ॥ ते सेने भ्रशसन्ततं बध्यमाने
 पत्स्परम् । व्याकुले समपथेतां वर्षासु क्षरिताविष ॥ ६५ ॥ आबिधेय ततस्तीर्णं ताव
 कार्ता महत्प्रयत्नः । पाण्डवानाञ्च राजेन्द्र तथामृते महाहवे ॥ ६६ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलपृष्ठे दशमोऽध्यायः १० ॥

ताम संग्राम हुआ था उसी प्रकार इन निर्भय लोगों के युद्ध पराजके देखके
 वहांनेवाले हुए । ५९ । हे राजा इसके पीछे वानर ध्वजाभारी पाण्डुनन्दन अर्जुन
 युद्ध में संसप्तको को मारकर उस कौरवीय सेनाके सम्मुख गया । ६० । उसीप्रकार
 सब पाण्डव जिनमें अग्रगामी घृष्टघृष्टनया तीक्ष्णधर्मोंको को छोड़तेहुं उस सेनाके
 सम्मुखगये । ६१ । पाण्डवोंसे बिरहूये उन लोगोंका ऐसा बड़ा मोह उत्पन्न हुआ
 कि सब सेना ने दिशा और विदिशाओं को नहीं पहिचाना । ६२ । पाण्डवों से
 बलापमान तीक्ष्णधार बाणोंसे पूर्ण बहुत मृतक शूरोबासी पराजित चारोंओर
 से घलापमान । ६३ । वह कौरवीयसेना महारथी पाण्डवों के हाथ से मारीगई हे
 रामा इभीप्रकार आपके पुत्रों के बाणों से पाण्डवोंकी भी हजारों सेना युद्ध में
 चारोंओर से मारीगई । ६४ । वह दोनों सेना अत्यन्त पीड़ित और व्यथित
 होकर ऐसी व्याकुल हुई जैसे कि वर्षाऋतुमें दो नदियां व्याकुल होती हैं । ६५ ।
 हे राजेन्द्र इसके पीछे उस प्रकारके बड़े युद्धमें आपके पुत्र और पाण्डवों में क्या
 भय उत्पन्न हुआ ६६ ॥

battle which caused terror to the timid. Their fighting, like that of
 gods and asurs, swelled the population of the region of Yata. Ape-
 bannored Arjun, having slain the Sansaptake, opposed the Kaurava
 army. 60. The Pandavas, led by Dhrishtadyutan, come on discharg-
 ing their arrows. Surrounded by the Pandavas, your warriors were
 confused and could not distinguish the directions. The Kaurava army
 was destroyed by the arrows of the Pandavas, and the latter were
 slain by the arms of your son. Much wounded and distressed, the
 armies were agitated like two rivers, causing fear among your sons
 and the Pandavas." 66.

सञ्जय उवाच । तस्मिन् विलाले ते संधे घट्टः । नि परस्परम् । द्रुपदाण्य यंधेपु
 नितदसु च दान्तपु ॥ १ ॥ कूजतां रतमताश्चैव पदारानां महाहव । विद्वन्तु म्हा
 राज ह्येषु घडुषा तदा ॥ २ ॥ प्रशये दारुणे जाते सहारे स्वधेद्विनाम । नानाशस्त्रस
 माबाधे व्यतिपिक्तगद्यत्रिपे ॥ ३ ॥ हर्षणे यु क्त्वां षण्डानां भीरुणां भयवर्द्धने । गाहमा
 नेषु योधेषु परस्परवर्धेषु ॥ ४ ॥ प्र । ण्दाने म्हा घोरि वत्तमाने दुरोदरे । संग्रामे
 घोररूपे तु यमराष्ट्रविवर्द्धने । ५ । पाण्डवा स्तावकं सैन्यं व्यघ्नन्त शितः शोः । तथैव
 तावका योधा जघ्नुः पाण्डवसैनिकात् ॥ ६ । तारंम तथा वत्तमाने युद्धे मीरुभयाधह
 पूर्वाह्ने चैव संग्रामे भास्कारो दयन् प्रति ॥ ७ । लब्धलक्ष्याः परे राजसक्षिताश्च
 महाभयना । अयोध यं सत्य वलं मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ८ । घलिभिः पांडव हंत
 कंचलक्ष्यैः प्रहारिभिः । कौरव्यसोदत् पृतना मूषीच ग्नि समाकुला ॥ ९ ॥ ता हृष्ट्वा

अध्याय ११ ।

संजय बोले कि उससमय परस्पर युद्ध करनेवाली वह दानों सेना शूरवीरों
 के भागने हाथिया के धिंघाड़ेन पुकारने गर्जन पदातिपोंके भागने बहुत प्रकार
 से घोड़ोंके भागने सब जीवोंके भयकारी बड़े नाशके वत्तमान होने । ४ । और
 युद्ध में मतवाले पुरुषों के मसन्न करनेवाले भयभीतोंके भय बढ़ानेवाले रथ और
 हाथियों से युक्त नानाप्रकार के भिड़ने परस्पर मारनेके अभिलाषी शूरवीरों के
 सेना में मवेश करने और बड़े घोर जीव नाशरूपी द्रुतके होनेपर पाण्डवोंने यम
 राजके देशके बढ़ानेवाले घोररूप युद्ध में तीक्ष्ण वाणों से आपकी सेना को छिन्न
 भिन्न करदिया उसीप्रकार आपके वीरोंनेभी पांडवोंकी सेनाके लोगों को मारा । ६ ।
 भयभीतों के भयके उत्पन्न करनेवाले उस युद्धके जारीहोने पर मृत्योदय के पीछे
 दिनके प्रथमभाग के वत्तमान होनेपर महात्मा से रक्षित लक्ष्यभेदन करनेवाले
 प्रतिपक्षी मृत्युको पीछे करके आपकी सेना से युद्ध करनेलगे । ८ । उन बलवान
 अहंकारी लक्ष्यभेदी और महार करनेवाले पाण्डवों से कौरवीयसेना ऐसे पीडामान
 हुई जैसे कि अग्निसे व्याकुल मृगी । ९ । और जैसे कि निर्बल गौ कीच में फँसी

CHAPTER XI

Sanjaya said, " Both the armies came together. There was a great noise of the warriors running away: the shrieks of elephants, the cries of foot soldiers, the stampede of horses and the dreadful destruction pleasing to the brave and terrifying the timid. The armies of elephants and horses met in battle; destruction of life was dreadful and the Pandavas routed your army with their arrows. Your warriors too, destroyed the Pandav army. 6. When the battle, terrifying to the timid, was going on in the first part of the day, the archers of the opposite party fought with your army. The powerful archers of the Pandavas wounded your warriors and terrified them like deer in a burning forest. Seeing them

सोदती सेनां पदे गाभिव दुर्वलाम् । जङ्जिह्वीषुस्तदा शल्यः प्रायात् पाण्डुचमू श्रित
 ॥ १० ॥ मद्राजस्तु संकुब्धा गृहीत्वा धनदत्तमम् । शश्वेद्रथत् संग्रामं पांडवानातता
 पिनः ॥ ११ ॥ पाण्डवापि महाराज समरे जितकाशिनः । मद्रराजं समासाद्य विष्वसु
 निशितैः शरीः ॥ १२ ॥ तत श शोक्सीदधर्मद्रराजो महाधलः । अर्हयाभास ता सेनां
 धर्मराजस्य पश्यतः ॥ १३ ॥ प्रादुरासंभृतो राजन्ननिमित्तान्यनेकशः । चञ्चाल शर्द्ध
 कुर्याणा मही चापि सपर्वता ॥ १४ ॥ सदण्डशूलदीताग्रा दीर्यमाणाः समन्तत ।
 उल्का भूमिं दिवः पंतुराहत्य रविमण्डलम् ॥ १५ ॥ मृगाश्च महिषाश्चापि पक्षिणश्च
 विशांभते । अरसंभ्यं तदा चक्रुः सेनां ते बहुशो नृप ॥ १६ ॥ भृगुसूनुधरापुत्रौ शशि
 जेन समन्वितौ । चरणं पाण्डु पुत्राणां पुरस्तात् सर्वभुजाम् ॥ १७ ॥ शस्त्राश्रेष्वभ
 वज्ज्वाला नेत्राण्याहत्य घर्षणी । शिरः स्खलित्य भृशं कालालकाश्च केतुषु ॥ १८ ॥

पीडित होती है तब उम प्रकार से पीड़ावान् सेनाको देखकर उनके छुटाने का
 अभिलाषी राजा-शल्य पाण्डवीय सेनाके सम्मुख गया । १० । अर्थात् अत्यन्त
 क्रोधयुक्त राजामद्र उत्तम धनुषको लेकर युद्धमें मारनेका अभिलाषी होकर, पांडवों
 के सम्मुख गया । ११ । हे महाराज युद्धमें विजयी शोभायमान पांडवोंने भी राजा
 मद्रको पाकर तीक्ष्णधारवाले बाणोंमें घायल किया । १२ । इनके पीछे बड़े
 पराक्रमी राजा मद्रने सैकड़ों बाणों से उस सेनाको धर्मराजके देखतेहुये पीड़ावान्
 किया । १३ । हेराजा इस के अनन्तर बहुतमे प्रभुभ लक्ष्यों के दिग्द मकंदहुये
 और पर्वतों समेत शब्द करनेवाली पृथ्वी भी कम्पायमान हुई । १४ । चारोंओर
 से फटनेवाली दण्ड और शूल रखनेवाली प्रकाशित उल्का सूर्यमण्डल को भेद
 कर स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरी । १५ । हेराजा बहुधा मृग भैंसे और पक्षियोंने भी
 आपकी सेनाको दक्षिण किया । १६ । शुक और मंगल बुधसे संयुक्तहुये यह
 शक्रुन पांडवों के पीछे और अन्य सब राजाओंके आगेहुये और नेत्रोंको घायन
 करके वरसनेवाली ज्वाला शस्त्रों की नोकोंपर प्रकटहुई और बाक उल्क ध्वजा
 और शिरोंपर बैठगये । १८ । उमकेपीछे सेनाके समूहों में घूमनेवालोंका महाउग्र

like a week cow stuck in mud the king of Madra, desirous of rescuing
 his men, faced the Pandavas -10. He opposed them with his bow. The
 Pandav warriors too, wounded him. Glorious king of Madra wound-
 ed the Pandav warriors in the presence of Yudhishtir. There were
 many bad omens and the earth with her mountains shook. Bright
 meteors fell down on earth from the sky. 15. Dear, buffaloes and birds
 circled round your army. Shukra approached the planets Mangal
 and Budh. These omens appeared behind the Pandavas and before
 other kings. The fire sparks, dazzling the eye, appeared at the points
 of the weapons, crows and owls sat over the banners. Then there was
 a severe battle between the two armies. The Kauravas with their

ततस्तद्युद्धमत्युग्रमभघत् संघचारणाम् ॥ १९ ॥ तत सर्वाण्यनीकानि सन्निपत्य
 जनाधिप । अश्वयु कारवा राजन् पाण्डवानामनीकिनीम् ॥ २० ॥ शल्यस्तु शरवर्षेण
 वर्षयन्निघ सहस्रहृक् । अश्वयर्षवर्दीनात्मा कुन्तीपुत्र युधिष्ठिरम् ॥ २१ ॥ भीमसेन
 शैश्यापि रुक्मपुत्रे शिलाशिते । द्रौपदेयास्तथा सर्वान् मद्रौपुत्रौ च पाण्डवौ २२ ॥
 धृष्टद्युम्नश्च शैनेय शिशुगण्डिनमथापि च । एकैक दशभिर्वाणैर्विध्याथ च महाबल
 ॥ २३ ॥ तनोऽसृजद्वाणत्रयै धर्मान्ते मघवानिच ॥ २४ ॥ तत प्रभद्रका राजन् सोम
 काश्च सहस्रश । पतिता पात्यमानाश्च दृश्यन्ते शल्यस्त्रायवै ॥ २५ ॥ भ्रमराणामिव
 व्रता शलमानामिव व्रता । हादिन्य इव मेघेभ्य शल्यस्य न्यपतन् शरा ॥ २६ ॥
 द्विरदास्तुरगाश्चार्त्ता पत्तये रघिनस्तथा । शल्यस्य वाणैर्न्यपतन् ध्यभ्रमन् ध्यनन्द
 स्तथा ॥ २७ ॥ आग्निष्ट इव मन्थुना मद्रेशां पीडयेण च । प्राच्छाद्यदरीन् सरये काल
 सुष्टश्चात्फ । विनर्द्मानो मद्रेशो मेघहार्दो महाबल ॥ २८ ॥ सा वध्यमाना शल्येन

युद्धहुआ । १९ । इसमें पीछे कौरव सत्र सेनाओंपर चढ़ाई करनेवाले हीकर पांडवों
 की सेनाके सम्मुख गये । २० । फिर प्रसन्नचित्त शल्य वाणोंकी वर्षाकरता कुन्ती
 केपुत्र युधिष्ठिरपर वर्षा करने लगा । २१ । बड़े पराक्रमी ने सुनहरी पुंखवाले
 और तीक्ष्णधारवाले दश २ वाणों से भीमसेन और सब द्रुपदके पुत्रों समेत नकुल
 सहदेव धृष्टद्युम्न सान्याके और शिशुगर्दी को भी घायल किया । २३ । इसके
 पीछे ऐसी वाणोंकी वर्षाकरी जैसे कि वर्षा ऋतु में इन्द्र करता है । २४ । हेराज
 इसके पीछे हजारों भोमक और प्रभद्रक न म सुश्री शल्यके वाणों से गिरतेहुये
 ऐसे दिखाईपड़े जैसे कि भौरोंके झुंड और टीढ़ियों के समूह दीखते हैं और जैसे
 कि बादलों से विजली गिरती है उसी प्रकार शल्यके वाण गिरे । २५ । हाथी
 घोड़े पति रथी यह सब पीडामान शल्यके वाणों से महाव्याकुल घूमते और शब्दों
 को करते गिरपड़े । २७ । राजामद्र क्रोध और शूरता में पूर्ण होकर कालसृष्टि में
 अन्तके समान गर्जने वादळ के समान शब्दायमान बड़े बलवान राजा मद्रने युद्धमें
 सत्रुओं को अच्छीरीतिसे आच्छादितकिया शल्यके हाथमे घायल पाण्डवीय सेना

armies opposed the Pandavas 20 Then Shalya showered his arrows
 over Yudhishtir He wounded Bhism, the sons of D upādi,
 Nakul Sahadev, Dhishhtadyunn, Satyaki and Shikhandi with his
 gold-tipped arrows Then thousands of Somaks and Prabhudraks
 were seen falling down by Shalya's arrows like flights of locusts or
 lightning Elephants, horses foot and car warriors fell down shriek
 ing, wounded by Shalya's arrows. The brave King of Madra,
 coming like thunder covered the foes with his arrows. Wounded
 by Shalya, the Pandav army ran to Yudhishtir. Then brave
 Shalya, having destroyed your army with his arrows, wounded

पाण्डवानामनीकनी । अजातशत्रु कौन्तेय मध्यधावशुधिष्ठिरम् ॥ ३९ ॥ तां समर्थ
 ततः शल्यं लघुदस्त्रं शितैः शरैः । शल्यपेण महता युधिष्ठिरमपीडयत् ॥ ३० ॥ समाप
 तः पश्यन्तैः कुन्ती राजा युधिष्ठिरः । अत्रारयच्छरैर्निक्षेपैस्त द्विभिमिवाकुशैः ॥ ३१ ॥
 तस्य शल्यं शरघोरमुमोचासीद्विषोपमम् । स निर्मिथं महात्मानो वेगेन व्यपतच्छ
 गाम् ॥ ३२ ॥ ततो वृकोदरः कुम्भं शल्यं विन्वाद्य सप्तभिः । पञ्चभिः सहदेवस्तु
 नकुलो दशभिः शरैः ॥ ३३ ॥ द्रौपदेयाश्च शत्रुघ्नश्च शूरमात्तां दानि शरैः । अव्यवर्षन्म
 हाथेन मघा इव महीधरम् ॥ ३४ ॥ ततो दृष्ट्वा तु घमानं शल्यं पार्थेन समन्ततः । कृत
 वर्मा ह्यथैव सकृन्नापभ्यधावताम् ॥ ३५ ॥ उलूकश्च महावीर्यं शकृन्निध्यापि सौवल् ॥
 सम्यमानस्तु शङ्कैरभ्यथामा महारथः । तथ पुत्राश्च कार्त्तव्येन जुगुपु शल्यमाहव
 ॥ ३६ ॥ भीमसेन त्रिभिविंधवा कृतवर्मा शिलीमुखे । धाणवपेण महता कुम्भरूपमवार

कुन्तीके पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिर की ओर दौड़ी । ३९ । इससे पीछे वडे
 पराक्रमी शल्य ने तीक्ष्णबाणों से उस सेनाको युद्धमें मर्दन करके वही बाणों की
 वर्षा से युधिष्ठिर को पीड़ामान किया । ३० । क्रोधयुक्त राजा युधिष्ठिरने पति और
 घोड़ों समेत उस आतङ्ग्ये शल्यको तीक्ष्णबाणों से ऐसे रोका जैसे कि अकुशो से
 मतवाले हाथीको रोकते हैं । ३१ । शल्यने विपैले सर्पके ममान घोरवाण उसके
 ऊपर छोड़ा वह बाण महात्मा युधिष्ठिरको छेदकर बड़ी तीव्रता से पृथ्वीपर गिरा
 । ३२ । इसके पीछे क्रोधयुक्त भीमसेन ने शल्यको सात बाणों से घायल किया
 सहदेव ने पाँचसे और नकुलन दशबाणोंसे घायल किया । ३३ । और द्रौपदीके
 पुत्र उस शत्रुओं के मारनवाले शल्य पर बाणों की ऐसी वर्षा करनेलगे जैसे कि
 बादल पर्वत पर करते हैं । ३४ । इस के पीछे चारोंओर को पाँडवों के हाथसे
 पीड़ामान् शल्यको देखकर अत्यन्त क्रोधयुक्त कृतवर्मा और कृपाचार्य्य सम्मुख
 दौड़े । ३५ । और बड़ा पराक्रमी उलूक और सौवल्का पुत्र शकुनी यह सब
 सम्मुखगये । फिर युद्धमें महावली अश्वत्थामा और आपके सब पुत्रोंने धरिरेपने से
 मिलकर शल्यकी रक्षाकरी । ३६ । कृतवर्मा ने शिली मुख नाम तीनबाणों से

Yudhishtir 30 Yudhishtir, checked the advance of Shalya
 as an elephant is checked with goads Shalya discharged at
 him an arrow like a poisonous serpent, which pierced him and fell
 down on the ground Bhum then wounded Shalya with seven arrows.
 Sahadev and Nakul wounded him with five and ten arrows respectively.
 The sons of Draupadi showered their arrows on Shalya like rain Se-
 ing Shalya wounded by the Pandavas from all sides Kritvarma and
 Kripacharya rushed to help him. BraveUluk and Shakuni the son of

वसिष्ठः ॥ ३७ ॥ धृष्टद्युम्नं कृपः क्रुद्धो घाणवर्षरताडयत् । द्रौपदेयांश्च शकुनिर्यमी च
 द्रौमिरप्रययात् ॥ ३८ ॥ दुर्योधनो युधिष्ठिर आहवे केशवार्जुनौ । समप्रययात्प्रतेजाः
 क्षीरसाध्वानहोली ॥ ३९ ॥ बभूवः द्रुपदशतान्यासेश्वदीपानां परैः सह । घोररूपाणि
 खिन्नानि तत्र तत्र विशांसपते ॥ ४० ॥ ऋष्यवर्षणान् जघानाम्भान् भीमो भीमस्य सन्पुगे ।
 सोऽन्तीर्ष्व रथोपस्थात्ताडयः पाण्डुनन्दनः । कालो दण्डमिषोद्यम्य गदापाणिरयुधत
 ॥ ४१ ॥ प्रमुक्तं सहदेवस्य जघानाम्भान् मद्राट् । ततः शल्यस्य तनयं सहदेवोऽसि
 नावघात् ॥ ४२ ॥ गौतमः पुनराचार्यो धृष्टद्युम्नमयोधयत् । असम्मूर्च्छन्तमसम्मूर्च्छान्तौ
 यत्नवान् यत्नवत्तरम् ॥ ४३ ॥ द्रौपदेयास्तथा धीरानेकैकं दशभिः दारैः । अविध्यदा
 चार्यैस्तुतं मतिक्लृप्तः रमथश्च ॥ ४४ ॥ पुनश्च भीमसेनाय जघानाश्वास्तथाहवे ।
 सोऽन्तीर्ष्व रथाजूर्णं हतादयः पाण्डुनन्दनः ॥ ४५ ॥ कालो दण्डमिषोद्यम्य गदां क्रुद्धो
 भीमसेन को छेदकर नदी बाणों की दृष्टिसे उस क्रोधरूपको रोका । ३७ ।
 इसके पीछे क्रोधयुक्तने बाणोंकी वर्षासे धृष्टद्युम्न को पीड़ामान किया शकुनी
 द्रौपदीके पुत्रोंके भीर अश्वत्थामा नकुल और सहदेव के सम्मुख गया । ३८ ।
 बुद्ध कर्त्ताओं में श्रेष्ठ यदा तेजस्वी पराक्रमी दुर्योधन युद्धमें अर्जुन और केशव
 जीके सम्मुख गया और बाणों सेभी घायल किया । ३९ । हे राजा इसप्रकार
 जहां तहां आपके गुरुवीरों के सैकड़ों दण्डयुद्ध शत्रुओं के साथ महा घोररूप और
 अपूर्वहुये । ४० । भोजवंशी कृतवर्मा ने युद्धमें भीमसेनके रीछ वर्षा घड़ों को
 मारा मृतक घोड़ेवाले उस पाण्डुनन्दन भीमसेनने रथकी बैठकसे उतरकर काल
 दंडके समान हाथमें गदाको लेकर युद्धकिया । ४१ । [राजाभद्र ने सहदेवके
 सम्मुख उन घोड़ोंको मारा फिर सहदेवने शल्यके पुत्रको खड्गसे मारा । ४२ ।
 और कृशाचार्य धृष्टद्युम्न से युद्ध करनेलगे भयजनित व्याकुलता से रहित उपाय
 करनेवाले आचार्यके पुत्र गुह्यजी उस भ्रांती से रहित उपाय करनेवाले धृष्टद्युम्न
 से अच्छेप्रकार से छड़ न्यून क्रोधयुक्त अश्वत्थामाने भन्द मुसकान के साथ
 द्रौपदी के प्रत्येक शूरवीर पुत्र की दश दश बाणों से घायल किया । ४४ । इसके
 पीछे भीमसेन के घोड़ों की मारा मृतक घोड़ेवाले वहे पराक्रमी उस पाण्डुनन्दन

Suval faced the Pandavas. Then Ashwathama and your sons guard
 ed Shalya Kripyarma pierced Bhim with three arrows and then
 checked him with many more. He wounded Dhrishtadyumn too
 Shakuni opposed the sons of Kunti and Ashwathama opposed Nakul
 and Sahadev. Glorious Duryodhan faced Arjun and Keshav and
 wounded them with arrows. Thus your warriors fought many duels
 with the Pandavas. 40. Kripvarma slew Bhim's horses. Bhim got
 down from his car and fought with his mace which was like the staff
 of Yam. The king of Madra then slew Sahadeva's horses and the
 latter slew Shalya's son with his sword. Kripacharya fought with
 Dhrishtadyumn. The two great warriors fought well. Then Ashwa

महाबल । पोषणामास तुंगात् रथञ्च वृत्तवर्मण । कृन्वर्णां त्वय्यत्तुत्य रथास्तस्माद्
 गक्रमत् ॥ ४६ ॥ शल्योपि राजन् सकृद्धो निघ्नन् सोमकपाण्डवान् । पुनरेव शिंत
 र्धोर्ण्युधोघोष्ठरमपीडयत् ॥ ४७ ॥ तस्य भीमो रणे क्रद्ध सद्दृष्टदशनच्छद् । विनाशा
 यामिस-घाय गदात्मादत्तवार्थ्यवान् ॥ ४८ ॥ यमदण्डप्रशिकाशा कालरात्रिमिबोधनाम् ।
 गजवाजिमनुष्याणां प्राणान्तकरणोमति ॥ ४९ ॥ हेमपट्टपरिक्षिप्तामुक्त्वा प्रवृत्तिला
 मिष । शैश्यां व्यालीमिषात्पुत्रा वज्ररुष्यामयोमयीम् ॥ ५० ॥ चन्दनागुरुपङ्कजात्ता प्रम
 दासीपिडनामिष । वसामेदोन्नदिग्धाङ्गीं जिह्वा वैषस्वतीमिष ॥ ५१ ॥ पटुघण्टारथ
 घर्नीं घासतीमशनीमिष । निर्मुकासीविपाकारा पृष्ठां गजप्रद्वैरपि ॥ ५२ ॥ त्रासनी
 रिपुसैन्यानां मसौ यपरिपर्वणीम् । मनुष्यलोके विख्याता गिरिधृङ्गविदारणीम् ॥ ५३ ॥

भीममेनेने शीघ्रही रथसे उतरकर कालदराड के समान गदा को उठाकर कृत
 वर्मा के रथ और घोड़ों को चूर्ण किया कृतवर्माभी उस रथ से कूदकर हटगया
 । ४६ । हेराजा फिर सोमक और पाटवों को मारते अत्यन्त क्रोधयुक्त, शल्यने
 भी निक्षण नाणों से युधिष्ठिर को फिर पीडामान किया । ४७ । क्रोधयुक्त
 दांतोंको पीसकर पराक्रमी भिमसेने ने युद्धमे उसके नाश के निमित्त अशकाश
 देखकर गदाको लिया । ४८ । जो कि यमराजके दण्डरूप कालरात्रि के समान
 ऊनी हाथी घोंडे और मनुष्यों के प्राणों को नाश करनेवाला सुघर्ष के वृत्तोंसे
 मदीहुई उल्लित उल्लाके समान शैश्यामें रहनेवाली सर्पिणी के समान घड़ी उग्र
 वक्र समान । ५० । लोहमयी चन्दन और अमरसे लिप्त स्वेच्छाचारी तरुण स्त्रीके
 समान वसा रत्रिसे लिप्त अङ्ग वेवस्वती देवी की जिह्वाके समान । ५१ ॥
 मैकडों सुंदर घस्यों के समान शब्दापमान इन्द्र वज्र के समान कांचरी से
 लुटे बिपथर सर्पकी समान हाथीके मदीं से सम्बन्ध रखनेवाली । ५२ । शत्रुओं
 की सेनाभाङ्गा भयभीत करनेवाली अपनी सेनाओंकी प्रसन्न करनेवाली तिलोकी
 में विख्यात पर्वतके शिखरोंकी तोडनेवालीथी । ५३ । जैसे कि कृत्वा

tham wounded Darpudis sons with ten arrows each and then
 slew Bhim's horse. Bhim the son of Pandu got down from his car
 and with his mace smothered the car and horses of Ashtwathama. Krit-
 vana jumped down from his car. 46 Then slaying the Soma and
 Pandava, enraged Shakuni again wounded Yudhishthira with his arrows.
 Brave Bhim gnashing his teeth in anger took up his mace like the
 staff of Yama the night of Death slayer of elephants horses and men,
 covered with gold cloth bright like a spark of fire, made of Shakyas
 dreadful like a snake or viper, made of iron, decked with sandal paste,
 and his tip with like a young woman like the tongue of Varaswati,
 stained in blood and fat ringing with beautiful bells, like vajra or like
 a snake freed from its skin and dispeller of the madness of elephants.

यथा कैलासमवने महेश्वरसखं घंटी । आहूययामास कौन्तेयः । स्तुक्कुडमलकाधिगम् ।
 ५४ । यथा माया मयान् हतान् सुगहून् गन्धमादने । जघान् गुलकान् कुलोमन्द
 रार्थं महाबलः । धार्यमाणोपि बहुभिर्द्रौगधाः प्रियप्रस्थितः ॥ ५५ ॥ तां वज्रगणि
 रत्नाद्द्वामघ्रास्त्रि वज्रगौरवाम् । समुदम्य महाबाहुः शल्यमध्यद्रवद्रणे ॥ ५६ ॥ गदया
 युद्धकुशलस्तया दारुणनादया । पीथयामास शल्यस्य स्वतुरोश्चान्महाजयान् ॥ ५७ ॥ ततः
 शल्यो रणे कुञ्जः पीने वक्षसि तोमरम् । निचखान नन्द धीरो मर्म मित्त्वस्य सोऽप्य
 गात् ॥ ५८ ॥ वृकोदरं त्वसम्भ्रान्तमिवोद्धृत्य तोमरम् । घन्तारं यद्रराजस्य निर्विमेदं ततो
 हृदि ॥ ५९ ॥ स निघ्नमर्मा रुधिरं वमन् बिभ्रस्तमानसः । पपातामिमुखो दानो मद्रा
 वृजस्त्वेषांक्रमत् ॥ ६० ॥ हतप्रतिकृतं दृष्ट्वा शल्यो विस्मितमानसः । गदामाथित्व धारात्मा

भीमसेन ने कैलाश भवन में शिवजीके मित्र अत्यन्त क्रोधयुक्त कुवेरजी क
 बुलाया ॥ ५४ ॥ और मन्दिरके लिये मायारूप अर्हंकारी बहुत से गुलकों को गंध
 मादन पर्वतपर मारा बहुत से रुकेहुये और द्रौपदी के हितमें नियत होकर भीमसेन
 ने ऐसा पराक्रम किया ॥ ५५ ॥ वह महाबाहु वज्रगणि और रत्नोंसे जड़ित अष्ट
 कोण रखनेवाली वज्रके समान महाभारी उसगदाको उठाकर युद्ध में शल्य के
 सम्मुख गया ॥ ५६ ॥ उस युद्ध कुशल ने इस भयकारी शब्दवाली गदासे शल्य
 के चित्तके समान शीघ्रगामी चारों घोंड़ोंको मारा ॥ ५७ ॥ इसके पीछे युद्धमें क्रोध
 युक्त गन्तेहुये धीर शल्यने तोमरको भीमसेनकी बड़ी छातीपर मारा वह उसके
 कंबुज को काटकर गिरपड़ा ॥ ५८ ॥ फिर भयजनित वाकलता रहित भीम
 सेनने उसी तोमरको उठाकर राजा मद्र के सारथीको छातीपर छेदा वह दृष्टे
 कंबुज चित्तमें भयभीत रुधिर को वमन करता ॥ ५९ ॥ महादंशही होकर समस्त
 मेंही गिरपड़ा और राजा मद्र रटगया आश्चर्य चित्त धैर्यमती बुद्धिवाले राजाशल्य
 ने ॥ ६० ॥ कर्म के बदले कर्म को देखकर गदाको लेकर शत्रुको देखा उसके

52. It was the terror of foes, giver of joy to friends, of world wide fame
 breaker of mountain peaks, with which mighty Bhim challenged Kuber
 the friend of Shiv and killed many Guhyaks at Gandhmadan for the
 sake of the flowers to please D.aupadi, and with which he did many
 deeds of prowess although he was opposed by many. 55. Such was
 the heavy octagonal mace studded with precious jewels and hard as
 vajra, which Bhim used to oppose Shalya. With it he slew the four
 horses of Shalya, swift like the mind. Enraged Shalya, with a roar,
 struck a tomor at the breast of Bhim. It cut through Bhim's armour
 and fell down on the ground. Without any anxiety or fear, Bhim
 took up the same tomor and pierced with it the breast of Shalya's
 driver who fell down dead, vomiting blood. The king of Madra, see

प्रत्यभिन्नमयैक्षत ॥ ६१ ॥ ततः सुमनसः पार्या भीमसेननपूजयन् । तद्दृष्ट्वा कर्म
सभामे घोरमकिलकर्मणः ॥ ६२ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यपर्वपरिणि संकलयुद्धे एकादशोऽध्यायः ११ ॥

सञ्जय उवाच । पतिं प्रेक्ष्य घन्तारं शल्यः । सर्वायसीं गदाम् । भावाय तरसा
राजंस्तस्यै गिरिरियाध्वजः ॥ १ ॥ तं दीप्तमिव कालाग्निं पाशद्वस्तमिवात्तकम् । स
भृङ्गमिध कैलासं सवस्त्रमिध घासधम् ॥ २ ॥ सशूलमिध दृष्ट्यंशं वने मत्समिध द्विपमा
जवेनाश्वपतङ्गीमः प्रगृह्य महतीं गदाम् ॥ ३ ॥ ततः शङ्खप्रणादश्च नृत्वाणाञ्च सह
स्रगः । सिंहनादाश्च सञ्जज्ञे शूराणां हर्षवर्जिनः ॥ ४ ॥ प्रेक्षतः सर्वतस्यै हि धौंजा
धौघमहाद्विधौ । तावकाश्च परे श्वेष साधुसाधित्यपूजयन् ॥ ५ ॥ न हि मद्राविपादश्वो
पीठे पसन्नचित्त पांडवोने युद्धमें असाधारण कर्मवाले भीमसेनके तसकर्मको देखकर
उसकी प्रशंसा करी ६२ ।

अध्याय १२ ॥

संजय बोले कि हे राजा तब शल्य सारथीको गिरादृष्ट्वा देखकर केवल लोह
मयी गदाको तीव्रतासे लेकर पर्वतके समान निश्चय होकर नियत हुआ । १ । भीम
सेन तीव्रतासे घड़ी गदाको लेकर उसप्रकाशित कालाग्निके समान पाशधारी
यमराज शिवरधारी कैलास के समान गजधारी इन्द्रके शूलधारी रुद्रके और
बनेके मतवाले हाथीके समान शल्य के सम्मुख दृष्टा । २ । उसके पीछे शंखादि
हजारों बाजोंके कठिन शब्द और शूरोंकी प्रसन्नताके बढ़ानेवाले सिंहनाद उत्पन्न
हुये । ४ । सब ओरसे उस रणभूमिके वृद्धे हाथीरूप भीमसेन और शल्यको देखकर
मापके और पांडवोंके शूरोंने धन्य धन्य शब्दकिया । ५ । युद्ध में शल्य और

ing that fair reply to his blow, opposed with his mace. The Pandavas
applauded the matchless prowess of Bhim. 62.

CHAPTER XII

Sanjaya said, " Seeing his driver fallen down, Shalya at once took
up his iron mace and stood like a hill. Bhim too, came down upon
Shalya, glorious like the fire of Svalaya, Yam, Kailas, Indra, Rudra
or elephant. Then there were heard sounds of thousands of musical
instruments and lion-roars, giving joy to the warriors. The Pandavas

रामाहा यदुनन्दनात् । खोदुमुत्सहने वेगं भीमसेनस्य संयुगं ॥ ६ ॥ तथा मद्राक्षिप
 स्वापि गदावेगं महात्मनः । सोढुमुत्सहते नाम्यो घोघो युधि वृकादरात् । ७ ॥ तौ
 वृथाविष नर्हन्तौ मण्डलानि विचेरतु । आवल्लिगतपदो धीरो मद्रराजवृकोदरो ॥ ८ ॥
 मण्डलावर्त्तमार्गेषु गदाविहरणेषु च । निर्विशयमभूच्छ्रुतयोः पुरुषसिंहयोः ॥ ९ ॥ तत
 हेममथैः शुभ्रैर्बभूव भयवर्द्धिनी । अग्निज्वालैरिवावद्धा पट्टे शल्यस्य सा गदा ॥ १० ॥
 तथैव चरती मार्गान् मण्डलेषु महात्मनः । त्रिद्युद्भ्रमप्रतीकाशा भीमस्य शुशुभे गदा
 ॥ ११ ॥ ताडिता मद्रराजेन भीमस्य गदया गदा । दह्यमाने रथे राजन् ससृञ्ज पाव
 कार्किञ्चेष ॥ १२ ॥ तथा भीमेन, शल्यस्य ताडिता गदया गदा । अकारवर्षे मुमुञ्चे
 तदद्भुतमिधामत् ॥ १३ ॥ दन्तैरिव महानागौ शृङ्गरिव, महर्षभौ । तैर्भ्रिव
 तद्दाम्बोन्व गदाप्राप्त्या निजघ्नतु ॥ १४ ॥ तौ गदानिर्हनेर्गोत्रैः क्षणेन रुधिरोक्षितौ ।

यदुनन्दन बलदेवजीके सिवाय दूसरा मनुष्य भीमसेन के वेगके सहन को समर्थ
 नहीं होसकता है । ६। उसी प्रकार युद्धमें भीमसेनके सिवाय दूसरा शूरवीर महात्मा
 शल्यकी गदाके वेगके सहने को उत्साह नहीं करसकता है । ७। वह चेष्टा करनेवाले
 वृथामकेतुल्य गर्जनेवाले गदाधारी शल्य और भीमसेन मण्डलोंको घूमे । ८।
 मंडल घूमने के मार्ग और गदाके प्रहारों में उनदोनों पुरुषोंसमों का युद्ध समान
 हुआ । ९। शल्यकी घुनाई हुई बड़ी गदा तथापेहुये सुवर्णकी बनीहुई प्रज्वलित अग्नि
 के समान उज्ज्वल बह्नोंसे भयकी वदानेवाली हुई । १०। इसीप्रकार मण्डलों
 में मार्गोंके घूमनेवाले महात्मा भीमसेन की गदा बिजली बादल से समान शोभा
 यमान हुई । ११। हे राजा राजामद्रकी गदासे घायल । आकाश में चलनेवाले
 के समान भीमसेनकी गदाने अग्निकी ज्वालाओं को छोड़ा । १२। इसी प्रकार
 भीमसेनकी गदा से घायल शल्यकी गदा अंगारों की वर्षा करनेवाली हुई वह
 प्राश्चर्यमा हुआ । १३। जैसे दोबड़े हाथी दांतों से और बड़े बैल सर्गोंसे प्रहार
 करै, उसीप्रकार उनदोनोंनेभी परस्पर गदाओं से प्रहार किया फिर बहदोनों क्षण
 मात्रमेंही रुधिरमे लिप्तशरीर गदा से घायल अंग ऐसे देखने के योग्यहुये जैसे

and Kauravae cheered Bhim and Shalya who stood in the field of battle like elephants. 5. None except Shalya and Baliev the Yadav could withstand the velocity of Bhim; similarly, none except Bhim could have the courage to bear the blows of Shalya's mace. Shalya and Bhim, with their maces, moved in circles like two bulls. Both the warriors were equal in their movement and the use of the mace. The mace hurled by Shalya, decked with burnished gold and covered with cloth bright as fire, was the terror of foes. 10. Similarly, the mace of Bhim, who moved in circles, flashed like lightning in the midst of clouds. Bhim's mace struck by that of Shalya in the air, shed sparks of fire. Similarly Shalya's mace dropped fire as it struck Bhim's

प्रेक्षणीयतरावास्तां पुष्पिताविव, किमुकी । ११॥ गदया मद्राजिन सव्यदक्षिणमाहतः ।
भीमसेनो महाबाहुर्न च चालाचलोपमः । १६ ॥ तथा भीमगदाधर्मैस्त्वारूपमानो मुहु
मुहुः । शल्यो न विन्यये राजन् दक्षिणेव महागिरिः ॥ १७ ॥ हाश्रुवे दिक्षु सर्वांसु
तयोः पुरुषसिद्धयोः । गदानिपातसंहारो धञ्जयोरिव निस्वनः ॥ १८ ॥ निवृत्य तु महा
धीर्यो सपुच्छिगरायुधौ । पुनरन्तरमागस्थौ मण्डलानि विचेरतुः ॥ १९ ॥ तथा
श्वेत्पद्मव्यष्टौ सज्जिपातोमघत्तयोः । उद्यम्य सौहृद्वण्डाश्यामतिमानुषकर्मणो ॥ २० ॥
प्रापयन्तौ तदान्योर्ग्वं मण्डलानि विचेरतुः । क्रिपाविशेषं कृतिनौ दर्शयामासतुल्यवा
। २१ ॥ मघोद्यम्य गदे घोरं सधृश्राविव पर्यतौ । ताषाजघनतुरग्योर्ग्वं यया भूमिष्वेके
चलौ ॥ २२ ॥ तौ परस्परवेगाच्च गदाश्यां भूशविक्षतौ । युगपत् पेततुर्धौ तावुभविष्व
श्वजाविव ॥ २३ ॥ उभयोः सेनधोर्धौ तासां हाहाकृतोऽभवत् । भृशं मर्मण्यमिहता

किं किं युक्के दो वृत्त होते हैं । १५ । शल्यकी गदा से वाम और दक्षिणभोर
से घायल वह पर्वतके समान भीमसेन कंपासमान नहीं हुआ । १६ । उसी प्रकार
भीमसेनकी त्रैगुण्युक्त गदा से पारम्वार घायल शल्यभी ऐसे पीड़ामान नहीं हुआ
जैसे कि हाथी से घायल पर्वत पीड़ामान नहीं होता । १७ । उनदोनों पुरुषोत्तमों
की गदाओंके आघातित शब्द जो कि वज्र के शब्द की समानये दर्शों दिशाओं
में सुनेगये । १८ । गदा ऊँची करनेवाले बड़े पराक्रमी वह दोनों सौठकर फिर
सांगोंमें नियत होकर मण्डलों को घुमे । १९ । इसके पीछे आठचरण पास
जकर और गदाओंको उठाकर वृद्धिसे बाहर कर्म करनेवाले उन दोनों की चढ़ा
इयां लोहके दंडोंसे हुई । २० । तब वह दोनों बड़े कुशल महा अम्पासी विजय
के चाहनेवाले दोनों मण्डलों को घुमे उससमय दोनों ने अपने अपने मुख्य
कर्मों को दिखाया । २१ । इसके पीछे उन दोनों ने शिखरधारी पर्वतोंके समान
घोर गदाओंको उठाकर परस्पर में ऐसे घायल किया जैसे कि भूकम्प में दो
पर्वत परस्पर घायल करते हैं । २२ । वह दोनों धीरे परस्पर क्रोधयुक्त गदाओं
से अत्यन्त घायल इन्द्रध्वजा के समान एक साथ ही गिरपड़े । २३ । तब दोनों

inace and the people were amazed. They fought with their maces as
two elephants fight with their tusks or as two bulls fight with their
horns. With their bodies wounded by mace blows, they looked like
Kinshuk trees in bloom. 15: Wounded by Shalya's maces from the
right and left, Bhim remained motionless like a hill. Similarly, Shalya
too, wounded by Bhim's mace remained unshaken like a hill struck by
an elephant. The sounds of the blows of their bows were heard in all
directions. With upraised mace, the two warriors moved in circles.
Then moving eight paces forward, the two wonder-working warriors
fought with iron clubs. 20. Then they moved in circles, wishing to
gain victory and showing their skill. Then they raised their maces like

शुभावासां सुविह्वला ॥ २४ ॥ ततः स्वरथमारोप्य मद्राणामुत्तमं वली । अपोवाहः
 कृपःशब्धे नृणमायोधनाद्य ॥२५॥ क्षीरवद्विह्वलवानु निमगत् पनरिथितः । भीम
 सेनो गदापाणिः समाह्वयत् मद्रपम् । २६ ॥ ततस्तु तापका शूरा नामागस्त्रममा
 युताः । नानाबावित्रशब्धेन पाण्डुसेनायोधयत् ॥ २७ ॥ भुजायुधित्य शस्त्रेष्व शब्धेन
 महता ततः । अश्वद्रव्यमहाराज दुग्धोत्तपुरोगमा ॥ २८ ॥ तदनाकमभिप्रक्ष्य सतो
 पाण्डु नन्वनाः । प्रययुः सिंहनाथेन दुग्धोत्तपुरोगमान् ॥ २९ ॥ तेषामापततां नृण
 पुत्रसो भरतवम । प्राप्तेन चिकितानं वै विव गच्छ हृदये मृशम् ॥३०॥ सं पपत् रथोपस्ते
 तत्र पुत्रेण ताडितः रुभिराद्यपरिक्लेशः प्रचिद्य विपलं तमा ३१ ॥ चिकितानं हृं हृद्घा
 पाण्डुशानां महारायाः । अस्तकृद्भव्यं तत शरदयोणि भागशः । ३२ ॥ तापकानामनी

सेनाओंके वीर लोग हाहाकार करनेलगे मर्द स्थलों में अत्यन्त घायल दोनों
 अचेत होगये । २४ । इसके पीछे पराक्रमी कृपाचार्य राजाभद्रका अपने रथपर
 बैठाकर युद्धभूमि से दूर लेगये । २५ । भीमसेन नशकरनेथाले के समान एक
 विपिप मेंही अवैततामे सचेत होकर उठा और गदा हाथमें लेकर राजाभद्रको
 बलाया । २६ । इसके पीछे नानाप्रकारके शस्त्रों मे संयुक्त आपके शूरवीरों ने
 नानाबाजों समेत पाण्डवी सेनामे युद्ध किया । २७ । हे महाराज इसके अनन्तर
 वह सब शूरवीर जिनका अग्रवर्ती दुग्धोत्तनाया दोनों भुजा और शस्त्रों को ऊंचा
 करके बड़े शब्दों समेत सम्मुख गये । २८ । फिर वह पाण्डुनन्देन उससेना को
 सम्मुख देखकर सिंहनादों समेत दुग्धोत्तनादिकके सम्मुखगये । २९ । हे भरतवर्म
 आपके पुत्रने शीघ्रही उनआति हुओंके मध्यमें चिकितानकी प्रास से हृदयपर कठिन
 घायलकिया । ३० । आपके पुत्रसे घायल रुधिरसे लिप्त वह चिकितान बड़ी
 अचेतताको पाकर रथके बैठनेके स्थानपर गिरपड़ा । ३१ । पाण्डुओंके महारीयोंने
 चिकितानको घायल और अचेत देखकर वारीरमे शरोंकी वर्षाको बरसाया । ३२ ।

hill tops and wounded each other like two hills falling over each other
 in an earthquake. Wounded by each other's missiles, they fell down
 simultaneously like Indra's banners. The warriors of both armies
 cried in dismay. Wounded in the vital parts, they became insensible
 Then Kripacharya took up Shalya on his car and removed him far
 from the field. 25. Like an intoxicated man, Bhim came to his senses
 in a moment and challenged the king of Madra to receive the blows
 of his mace. Your warriors, with the beat of musical instruments,
 fought bravely with the Pandav army. The warriors, led by Dur-
 yodhan, went to fight with upraised arms. The sons of Panda
 opposed the Kaurav warriors. Your son wounded Chekitan on the
 breast. 30. Wounded by Duryodhan, Chekitan, with bleeding body
 fainted on his car. The Pandav warriors seeing Chokitan insensible,

केपु पाण्डवा जितकाशिन । व्यचरन्त महाराज प्रेक्षणीयाः सम्पततः ॥ ३३ ॥ कृतवर्मा च सौवलय महाबलः । अयोधयन् धर्मराजं मद्राजपुत्रस्कृताः ॥ ३४ ॥ भिस्साहस्रा रथा राजस्त्वथ पुत्रेण चण्डिताः । अयोधयन्त विजयं द्रौणिपुत्रपुरस्कृताः ॥ ३५ ॥ विजये धृतसङ्कला समभित्यक्त जीविताः । प्राविशन् स्तावकाः राजन् हंसा इव महत् सरः ॥ ३६ ॥ ततो युद्धमभूद्घोरं परस्पर वधैषिणाम् । अन्योन्यवधस्तं युक्तं मन्योन्यप्रीति वद्धतम् ॥ ३८ ॥ तस्मिन् प्रवृत्ते संग्रामे राजन् धीरवरक्षये । अनिलनेरित घोरमुत्तस्यौ पार्थिव रजः ॥ ३९ ॥ श्रवणाश्रमधेयानां पाण्डवानाञ्च कौसनात् । परस्पर विजानीमो ये चायुध्यन्भीतवत् ॥ ४० ॥ तद्रज पुद्वष्याप्र शोणितेन प्रशामितम् । दिशश्च विमला राजेस्तास्मिन् स्तमसिशां प्र ते ॥ ४१ ॥ तथा प्रवृत्ते संग्रामे भनिरूपे मथानके । तावकानां पर्यान्व नातीत् कश्चित् परामुख ॥ ४२ ॥ ब्रह्मलोकं रा मृत्युं मार्धवन्तो जयं युधि । सुयुद्धेन पराक्रान्ता नगः स्वर्ग

हे महाराज विजय से शोभायमान और चारों ओर से दर्शनीय पाण्डव लोग आपकी सेनामें घुसने लगे । ३३ । वड़े पराक्रमी कृपाचार्य, कृतवर्मा और शकुनी ने जिनमें अग्रवर्ती राजामद्रथा उन सबने धर्मराज से युद्ध किया । ३४ । हे राजा आपके पुत्रकी प्रेरणामें इन तीन हजार रथियोंने जिनके अग्रवर्ती अश्वत्थामा थे अर्जुनसे युद्धकिया । ३५ । विजयमें संकल्प करनेवाले और युद्धमें जीवन को त्यागनेवाले आपके शूरवीरों ने सेनामें ऐसे प्रवेश किया जैसे कि हंस वड़े शरो वरमें प्रवेश करते हैं । ३६ । इसके पीछे परस्पर मारनेके अभिलाषी उन वीरों का महाघोर युद्ध हुआ जोकि परस्पर मारने की अभिमापासे युक्त और अन्योन्य प्रीति बढ़ानेवाला था । ३८ । हे भेठ राजा वीरोंके नाशकारी उस युद्धके जारी होनेपर हवासे उठाई हुई घोर धूल पृथ्वी से उठी । ३९ । पाण्डवों के कहने और नामोंके सुननेसे हमने परस्परमें उनको जाना जोतिर्भयके समान युद्ध करते थे । ४० । हे पुरुषोत्तम वप पूल हाथमें शान्त हो गई उस अंधरेके दूर होनेपर साफ ९ दिशा विदित हुई । ४१ । इस प्रकार भयभीतों के भय के बढ़ानेवाले घोर युद्धके वर्तमान होनेपर आपके और प्रतिपक्षियों के शूरवीरोंमें से किसिने मुझको नहीं छोड़ा । ४२ ।

showered their arrows and roamed victoriously in the midst of your army. Glorious Kripacharya, Kritvarma and Shakuni, led by Shalya, fought with Yudhishtir. Urged by your son, throo thousand warriors led by Ashwathama, fought with Arjun. 35. Your warriors careless of their lives entered the field of battle as swans enter a lake. Then desirous of slaying one another, they fought very hard to please their friends. A severe storm of dust arose from that destructive battle. We could distinguish the Pandavas and our warriors by calling their name. 40. Then the dust subsided, the darkness disappeared and the directions became clear. When the battle, terrifying to the timid,

ममोत्सव ॥ ४३ ॥ मञ्जुपिण्डविमोक्षार्थं मित्रकार्यैर्विनिश्चिताः । स्वर्गोत्सुकमनसो
 बोवा युयुधिरे तदा ॥ ४४ ॥ नानारूपाणि शस्त्राणि विसृजन्तो महारथा । अन्वोन्व
 मभिगच्छन्त प्रहृष्ट परस्परम् ॥ ४५ ॥ हत विध्यते गृह्णीत प्रहरथ्य निकृन्तत ।
 इति स्म बाध धयने तव तेपाञ्च धै रणे ॥ ४६ ॥ ततो शरयो महाराज धर्मराजे
 युधिष्ठिरम् । विन्वाद्य निशितैर्वाणैर्हन्तुकामो महारथम् ॥ ४७ ॥ तस्य पाथो महा
 राज नाराचान् धै चतुर्दश । मर्माण्युदिश्य मर्मज्ञा निचखान् हसन्निव ॥ ४८ ॥ आवाच्ये
 पाण्डव वाणैर्हन्तुकामो महायशा । विन्वाद्य समरे कुञ्जो बहुभि कडुपत्रिभि ॥ ४९ ॥
 अथ स्यो महाराज शरेणानतर्षणा । युधिष्ठिर समाजघ्ने सर्वसैन्यस्य पश्यत
 ॥ ५० ॥ धर्मराजोपि सकुटो मद्रराज महायशा । विन्वाद्य निशितैर्वाणै कडुवर्हि
 णवाजिते ॥ ५१ ॥ चन्द्रसेनञ्च सप्तत्या सूतञ्च नवामि शरै । दुमसेतञ्चतु पद्भवा
 युद्धभूमिं शुभयुद्धसे विजय के अभिलाषी और स्वर्गके चाहनेवाले लोग ब्रह्मलोक
 के आमिलाषी होकर चढ़ाई करनेवाले हुये । ४३ । तव स्वामीके कार्य्य में
 निश्चय करनेवाले और स्वर्गमें प्रवृत्तचित्त शूरीर स्वामीके अशोदकके विमोक्षार्थ
 युद्ध करनेलगे । ४४ । महारथी लोग नानाप्रकार के शस्त्रोंको छोड़तेपरस्पर
 सम्मुख गर्जतेहुये युद्ध में प्रवृत्तहुये और महार करनेलगे । ४५ । उससमय आप
 की और उनकी सेनामें भारो छेदो पकड़ो महारकरो यहीशब्द सुनेगये । ४६ ।
 हेमहाराज इसके पीछे मारने के अभिलाषी शरयन महारथी धर्मराज युधिष्ठिरको
 तजधार बाणों से घायलकिया । ४७ । फिर मर्मके ज्ञाता हंसतेहुये युधिष्ठिरने
 धर्मो को लक्ष्यकरके चौदह नाराचोंकोमारा । ४८ । फिर युद्धमें क्रोधयुक्त राजा
 मद्रने कंकपत्तवाले बहुतमे बाणोंसे युधिष्ठिको ढककर घायलकिया। ४९ । हेमहाराज
 फिर सबसेनाके देखते टेदे पर्ववाले बाणोंसेभी युधिष्ठिरको घायलकिया । ५० ।
 क्रोधयुक्त बड़ेयशवान धर्मराजनेभी तीक्ष्णधार कंकभौर मोरपक्षसे जटित बाणोंसे
 राजामद्रको घायलकिया । ५१ । इसको घायलकरके महारथीने चन्द्रसेनको सत्तर

was thus raging, none of the warriors of both sides turned face. De-
 siring of fighting and going to heaven, the warriors attacked one an-
 other. Intent on going to heaven through fighting, they tried to make
 amends for the food which they got from their masters. They
 encountered one another with loud roars and discharged their weapons.
 Pierce, seize and slay were the words heard from both armies. 46
 Shalya intent on slaying Yudhishtir, wounded him with sharp arrows.
 Yudhishtir, with a smile, wounded him with fourteen darts on the
 vital parts. The enraged king of Madra hid and wounded his adver-
 sary with his arrows. He again wounded Yudhishtir with point-d
 darts, 50 Yudhishtir was enraged at this and wounded the king
 of Madra with arrows fitted with Kank and peacock feathers. Then

निजघान महारथ ॥ ५२ ॥ चक्ररक्ष हने शक्य पाण्डवेन महात्मना । निजघान ततो
 राजश्रद्धीन्द्र धै पञ्चविंशति ॥ ५३ ॥ सात्यकि पञ्चविंशत्वा भीमसेनञ्च शशभि ।
 माद्रीपुत्रौ शतेनानी विव्याध निशितैः शरैः ॥ ५४ ॥ एवं विचरतस्तस्य सप्रामे गीर्द्धि
 सत्तम । सव्ययच्छितान् पार्थः शरानाशाविशोपमान् ॥ ५५ ॥ ध्वजाप्रश्वास्य समरे
 कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । प्रमुखे वर्त्तमानस्य भङ्गेनापाहरदथात् ॥ ५६ ॥ पाण्डुपुत्रेण वै
 तस्य केतु छिन्न महाहवे । निपतन्तमश्याम गिरिभृगमिवाहृतम् ॥ ५७ ॥ ध्वज निप
 तित एष्ट्वा पाण्डवञ्च व्यवस्थितम् । संक्रुद्धो गद्गराजोभूच्छरवर्षे मुमोच ह ॥ ५८ ॥
 शक्य सायकवर्षेण पञ्जेन्य इव वृष्टिमान् । अभ्यवर्षदेमेवाम्ना क्षत्रियान् क्षत्रियवर्षम्
 ॥ ५९ ॥ सात्यकि भीमसेनञ्च माद्रीपुत्रौ च पाण्डवौ । एकैक पञ्चमिषिष्वा युधि
 ष्ठिरमपीडयत् ॥ ६० ॥ ततो धाणमय जाल धितत पाण्डवोरासि । अपश्वाम महाराज

वाणसे सारथीको नौवाणसे और द्रुपमेनको चौंसठ वाणोंसे घायल किया । ५२।
 हे राजा महात्मा पांडव के हाथ से चक्र के रक्षक के मरने पर शक्यने पञ्चीस
 चन्द्री देशियों को मारा । ५३। रणभूमि में पञ्चीस वाणसे सात्यकिको साठ
 वाणसे भीमसेनको और सौ वाणोंसे नकुल और सहदेवको घायल किया ५४। क्षत्रि
 योंके नाश करनेवाले पाण्डवने पिप्ले सर्पकी समान वाणों को उस इसप्रकार घूमने
 वाटके ऊपर फेंके । ५५। कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने इस सम्मुख वर्त्तमानकी ध्वजाको
 रथके युद्ध द्वारा जुदा किया । ५६। हंसतेहुये पाण्डवेन इसप्रकार से उसकी ध्वजा
 को काटा और हमने पर्वतके दूटे शिखरके समान उसको गिरतेहुये देखा । ५७।
 मद्रका राजा गिरीधुईध्वजाको और सम्मुख वर्त्तमान युधिष्ठिरको देखकर अत्यन्त
 क्रोधयुक्त होकर वाणोंकी वर्षा करने लगा । ५८। क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ बड़ा साहसी शक्य
 वर्षा करनेवाले बादलों क समान वाणों की वर्षासे क्षत्रियों पर वर्षा करनेलगा
 । ५९। और भीम सात्यकि, भीमसेन, युधिष्ठिर, नकुल और सहदेव इनकोपांच
 वाणों से छेत्कर युधिष्ठिर को पीड़ामान किया । ६०। इसके पीछे युधिष्ठिर की

the brave warrior wounded Chandasrn with seventy darts, his coach
 man with nine and Drumsen with sixty four. At the fall of his wheel
 guards by the great Pandav, Shalya slew twenty five Chandari war-
 riors. Then he wounded Satyaki with twenty five arrows, Bhim with
 seven and Nakul and Sahadev with a hundred The Pandavas discharged
 at him arrows like poisonous snakes, Yudhishtir cut down his adver-
 sary's standard from his car. We saw the standard, cut down by the
 Pandav, falling like a mountain peak. Seeing his standard fallen and
 Yudhishtir before him, Shalya showered on him his arrows. Brave
 Shalya the best of warriors sent forth on warriors a flight of arrows
 like rain. Having wounded Satyaki, Bhim, Yudhishtir, Nakul and
 Sahadev, he wounded Yudhishtir again. We saw his arrows piercing

मेघजालमिषोद्धतम् ॥६१॥ तस्य शरयो रणे कुञ्जो घाणे सन्नपर्वणि । दिश प्रच्छा
दयामास प्रदिशश्च महारथ ॥ ६२ ॥ तता युधिष्ठिरो राजा घाणजालेन पीडितः ।
धनुष ह्यविकान्तो जम्भो वृत्रहणा येया ॥ ६३ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यययपर्वणि शल्ययुधिष्ठिरयुद्धेद्वादशोऽध्यायः १२ ॥

सञ्जय उवाच । पीडिते घमंराजेतु यद्राजेन मारिष । सात्यकिमीमसेतश्च
माद्रीपुत्री च पाण्डवौ । परिचार्य्ये रथे शरपीडयामासुराहवे ॥ १ ॥ तमेकं बहुभि
र्हृत्वा पीडयमान महारथे । साधुवादी महान् जल सिद्धाध्यासन् प्रहर्षिता । साध्य्यं
मित्यभाषन् मुनयश्चापि स्वगता ॥ ३ ॥ भीमसेनो रणे शर्यं शल्यभून् पराक्रमे ।

छातीपर वठेहुये मेघ जालकी समान फलेहुये वाण जालों को देखा । ६१ । युद्धमें
क्रोधयुक्त महारथी शल्यने गुप्तप्रन्थीजाले वाणोंसे उसकी दिशा और विदिशाओं
को दकदिया । ६२ । इसके पीछे वाणजालोंसे पीडामान राजा युधिष्ठिर पराक्रम
से ऐसे रहित होगया जैसे कि इन्द्रके हाथसे जम्भामुर हुआथा । ६३ ।

अथाय ११ ॥

सञ्जय बोले हे भेष्य राजामद्रकोदायमे धर्मराजके पीडामानहोनेपर सात्यकि
भीमसेन और माद्रीकेपुत्रोंने रथोंसे शल्यको घेरकर युद्धमें पीडामान किया । १ ।
बहुतसे महारथियों के हाथसे उस अकेले को पीडामान देखकर । २ । बड़ा धन्य-
वाद का शब्द उत्पन्नहुआ और सिद्धलोग बहुत प्रसन्नहुये और मिलहुये मुनियों
ने भी आश्चर्य माना । ३ । भीमसेन ने पराक्रम में भात रूप शल्यको युद्धमें

through Yudhishtira's breast like clouds. Bhava Shalya hid him with
arrows in all directions. Wounded by arrows, Yudhishtira lost heart
like Jambh wounded by Indra. 63

CHAPTER XII

Sanjaya said 'Yudhishtira being wounded by Shalya Bhima, Satyaki and the sons of Madra surrounded the latter with their cars and wounded him in battle. People applauded and cheered, and he was pleased and the assembled munis were amazed. Bhima pierced valiant Shalya with one arrow and then wounded him with seven more. Satyaki wounded him with a hundred arrows for the sake of

एकेन विध्वा-बाणेन पुनर्विध्वाद्य सप्तभिः ॥४॥ सात्यकिश्च शतेनेन धर्मपुत्रपरिस्रया ।
 मद्देवमयाकीर्यं सिंहनादमथानवत् ॥ ५ ॥ नकुल पञ्चभिश्चैनं सहदेवश्च सप्तभिः ।
 विध्वा त-तु ततस्तूर्णं पुनर्विध्वाद्य सप्तभिः ॥ ६ ॥ स तु शूरो, रणे यत्तः पीडितस्तेनैव
 हारथैः । विदुष्य कामुकं घोरं वेगधनुारसाधनम् ॥ ७ ॥ सात्यकिं पञ्चविंशत्या
 शल्यो विध्वाद्य मारिष । भीमसेनं त्रिशप्ततया नकुलं सप्तशिलया ॥ ८ ॥ ततः सुवि
 शिखञ्चाप सहदेवस्य धनिषनः । छित्त्वा भलेन कर्मरे विध्वाधेन
 त्रिसप्तभिः ॥ ९ ॥ सहदेवस्तु समरे मानुलं मूरिषञ्चमम् । सञ्जमन्यञ्चतुः कृत्वा
 पञ्चभिः समताडयत् शरैराशीविषाकारैर्ज्वलज्वलनसभिभिः ॥ १० ॥ सारथिञ्चास्य समरे
 शरैर्णानतपर्वणा । विध्वाद्य भृशसंकुञ्जस्तञ्च भूयस्त्रिभिः शरैः ॥ ११ ॥ भीमसेनस्तु
 सप्तत्या सात्यकिर्नवभिः शरैः । धर्मराजस्तथा पञ्चा गात्रे शल्य समाधेयत् ॥ १२ ॥ ततः
 शल्यो महाराज निर्विद्वल्लर्महारथैः । सुखाय रुधिरं गात्रैर्गैरिकं पर्वतो-यथा ॥ १३ ॥

एकबाण से घायलकरके फिर सातबाणोंसे छेदा फिर सात्यकी-धर्मपुत्रको इच्छासे
 सौबाणों से राजामद्रको दककर सिंहनादको गर्जा । ५ ॥ नकुल ने पाँचबाण
 से घोर सहदेव ने सात बाणोंसे उसको छेदकर फिर शीघ्र ही उनको पाँचबाणों
 से छेदा । ६ । फिर उन महाराथियोंसे पीड़ामान युद्धमें उपाय करनेवाले शूरशल्य
 ने वेगके नाशक और भारकेधारण करनेवाले घोरधनुष को खिंचकर । ७ ।
 सात्यकी को पञ्चीसबाण से-भीमसेन को त्रिदश-बाणसे और नकुलको
 सातबाणसे घायल किया । ८ । इसके पीछे शल्यने धनुषधारी सहदेव के धनुष को
 विशिख नाम वणनभत भरभे काटकर उसको इक्षीत बाणसे छेदा । ९ । इसके
 पीछे सहदेवने दूमेरे धनुषको तैयार करके बड़े जेजवी मामको उन पाँच बाणों
 से घायल किया जो कि विषपैने सर्पके समान और प्रज्वलित अग्निके समान थे
 फिर अन्गन क्रोधपुक्तने टूटे पर्ववाले बाणसे उस के सारथीको अन्गन्तछेदा और
 उसको भी तीनबाणों से घायल किया । ११ । भीमसेन ने सत्तर बाणसे सात्यकि
 ने नौबाणोंसे और धर्मराजने साठ बाणोंसे शल्यको अङ्गोपर घायल किया । १२ ।
 हे महाराज फिर उन महाराथियों के हाथसे घायल हुये शल्यने अपने अङ्गोंसे रुधिर

Yudhishtir and roared a loud roar. 5. Nakul wounded him with
 five and Sahadev with fourteen. Wounded by those brave warriors,
 valiant Satya drew his hard bow and wounded Satyaki with
 twenty five arrows, Bhim with seventythree and Nakul with seven.
 Then he cut down the bow and arrows of Sahadev and wounded him
 with twenty one darts. Sahadev took up another bow and wounded
 his uncle with five arrows, poisonous like serpents and bright like fire.
 And, in his rage he pierced him with three arrows and his driver with
 one. Bhim wounded him with seventy arrows, Satyaki wounded him
 with nine and Yudhishtir with sixty. Wounded by their arrows,

तोष स्वीकृत महेश्यासान् पञ्चमि प्रोचन शर विन्दु... मारणा गजत...
 मिषामप्रत ॥ १४ ॥ ततापरण भद्रत धापुत्रस्य तारण...
 लज्य, क हि महाशय ॥ १५ ॥ अनायकतरादाय १५ पुत्रा मह...
 साहसुत भवजरथ शरय प्राच्छ द्यद्वर ॥ १६ ॥ स शायपान सुखर
 धर्मपुत्रस्य सायके । युधिष्ठिरमया विष्वदशामिनिशिनं शो ॥ १७ ॥ सात्यकि
 सात्यकिभु तत सुद्धी धर्मपुत्रे शगाहिने । मद्राणासधिप शर शगधै समयां त
 ॥ १८ ॥ स सायके प्राचच्छ शुरपेण महद्वगु । कीममेतमुवास्ताथ त्रिभुक्तिरि
 तादयत् ॥ १९ ॥ तस्य सुद्धा मदाज्ञाज सात्याक मर्यापत्रम । मोमर प्रेषयामास
 सपदण्ड मदाधनम् ॥ २० ॥ मीमससुथ तार च उवलन मिष पन्नगम् । नद्वल
 सुमेर शक्ति स्वहृदया गदा शुभाम् ॥ २१ ॥ धर्मराज शनम्रीन्तु निधाम शय्यमात्रो
 तानाशुद्रु एवाशु पन्वाना धं सुजयताज शायामास समर शम्भनया

को पत्रे गिराया जै कि पञ्चव धाद्राको गिाणा शत उभने पांच २ वाणा
 से उन सय वड़े धनुषारियोको वेगने उडा गद, आश्चर्याना हुआ १५, हे श्रेष्ठ
 फिर उममनस्यो वुडेमें दूने । बलन धर्मपुत्रके धनुषकाकाग ॥ १८ ॥ फिर धर्मपु
 त्रको दूने धनुषको लेकर जल्पना व डे नाथी, जग आम् न्यके, नाथ दक
 दिशा १५ धनुषके गायकोस डकदने उम दलय, तजधार दशवाणा । युधिष्ठिरको
 उडा, १७ । फिर, नाया मे धर्मपुत्रके पीडित, दानेपर, जै, युद्ध सात्यकिने मद्र
 देशियों के गजाको बाण कपूड मे उडा । १८ । उपन भा, शुरपेण सात्यकि
 के वडे धनुषको काटा आर उा भीमहा १९ । को नीस २ त शयन पीडित किया
 १९ । हे महागज स यज्ञाकी सायक सात्यकिने, सुद्धी दण्डवाने बहुपुत्र
 त्रैमको उभपर, चलाया । २० । क धर्मपुत्रने जलित सपके ममात्र नागचको
 चकला युक्तिका और सहदेव ने शुभगदाको उडाया । २१ । युद्ध शत्रुके मारने
 के शायपुत्रके धर्मराजने शनम्री की चलाया, पाचोंके हाथमे छोट्टेड्य और आत
 २२ । शय्यो सात्यकि क चुनाये

शायपत Shikha Pur 151 am intan drops e lou ed water To
 for wonds of a, he p ared all thov var ors with five a rows each
 and with ony arrow, he cut down Yudhishtir's bow 15 Yudh at
 thr tool up ano h bow an l covered Shalya's lance and car with
 his arrows Then Satyaki covered the lion of M dra and vordol
 Bhim and othe s with three arrows each Satyaki of true pi w se
 d charged at him a tomar 20 Then Bhim discharge l a dart s r ng
 like a serpent, Nakul d charg d a sora and Sahadev h rled a mace
 De ous of hv r Shalya Yudhishtir d charged a shataghn S one
 the five of a ar ol n the five end coming to var is
 him Shalya c cc it all He ut Satyakis tome with a d r t

स मद्रराट् ॥ २२ ॥ सात्यकिमद्वितं शल्यो मल्लिश्चच्छेद् तोमरम् । भीमेन प्रहितं चापि
 भरं कनकभूषणम् । द्विधा चिच्छेद् हनहस्तः प्रतापवान् ॥ २४ ॥ नकुलप्रेषितां शक्ति
 हेमदण्डां भयापहाम् । गदाश्च सहद्वयेन शरोघ्ने समघातयत् ॥ २५ ॥ शराश्याश्च
 शतशो तां गह्वच्छिच्छेद् भारत । पश्यतां पाण्डुपुत्राणां सिंहनादं ननात् च । नामृष
 सन्तु शैनेयः शश्रेर्धिजयमाहवे ॥ २६ ॥ अथाप्यस्त्रजुरादाश्च सात्यकिः क्रोधमूर्च्छितः ।
 द्वाश्यां मद्दे श्वरं विधवा सारथिश्च त्रिभिः शरैः ॥ २७ ॥ ततः शल्यो महाराज सर्वो
 स्तान् दशभिः शरैः । विधवाप सुभृशं क्रुद्धस्तोभ्रेतिव महाद्विषान् ॥ २८ ॥ ते वाश्ये
 नाणाः समरे मद्रराजेन भारत । न श्रेकुः प्रमुञ्चे स्थातुं तस्य शत्रु निस्सूनाः ॥ २९ ॥
 ततो युव्योधनो राजा हृष्टश्च शल्यस्य विक्रमम् । निहतान् पाण्डवान् भेने पाबालान् च
 सृष्टजवान् ॥ ३० ॥ ततो राजगमहाबाहुभीमसेनः पतापवान् । सनयश्च मनपा प्राणान्
 मद्राधिपमयोधवत् ॥ ३१ ॥ नकुलः सहदेवश्च सात्यकिश्च महाबलः । परिवार्यं तदा

हुये तोमरको भङ्गमे काटा हस्तलाघवी प्रतापवान् शल्यने भीमसेन के चलाये हुये
 सुवर्ण से अञ्जकृत वाणको भी युद्धमें दो खण्ड किया । २४ । और नकुलकी
 चलाई हुई महाभय कारी शक्तिको और सहदेवकी फेंकी हुई गदाकां वाणों के
 समूहों से काटा । २५ । हे भरतवंशी दो वाणों ने राजाकी उस शतघ्नीको काटा और
 सब पांडवों के देखते सिंहनादोंसे गर्जा सात्यकिने युद्धमें शत्रुकी विजयको नहीं
 सहा । २६ । तब क्रोधसे मूर्च्छमान सात्यकिने दूसरे धनुषको लेकर दोवाणसे
 शल्यको घायल करके तीन वाणसे सारथीको घायल किया । २७ । इसके पीछे
 क्रोधभरे शल्यने उन सब को दशवाणों से ऐसा कठिन घायल किया जैसे कि
 भंक्रुओं से बड़े हाथियों को करते हैं । २८ । वह शत्रुओं के मारनेवाले महारथी
 युद्धमें राजा मद्र से रोके हुये होकर उसके सम्मुख नियत होनेको समर्थ नहीं हुये
 । २९ । इसके पीछे राजादुष्योधन ने शल्यके पराक्रमको देखकर पाण्डव पांचाल
 और खंजियोंको मृतकृष्ण बना । ३० । हे राजा फिर प्रतापवान महाबाहु भीम
 सेनने चिच से जीवनको त्याग करके राजा मद्रसे युद्धकिया । ३१ । और बड़े

He dexterously cut Bhim's arrow into two and cut down Nakul's
 dreadful spear and Sahadeva's mace with his arrows 25. He cut down
 Yudhishtir's shataghni with two arrows and roared loud roars in the
 presence of all the Pandavas. Satyaki could not bear this and in
 excessive rage, wounded him with two arrows and the driver with
 three. Then Shalya wounded them all with ten arrows as elephants
 are wounded by goads. Those great warriors checked by the king of
 Madra, could oppose him no longer. Seeing Shalya's prowess, Dur-
 yodhan thought that the Pandavas, Panchala and Srinjayayana will be
 no more. 30. Then glorious Bhim, fearless of life, fought with the
 king of Maura Brave Nakul, Sahdev and Satyaki, surrounded Shalya

शल्यं समन्ताद्दशकिंश्चरैः ॥ ३२ ॥ स अतुमिमहंस्वांस पाण्डवानां महारथः । वृत्त
 स्नान् खेधयामास मद्वराजः प्रतापवान् ॥ ३३ ॥ तस्य धर्ममुतो राजन् धुरप्रण ३ ॥
 इव अकरस्र जघानाशु मद्वराजस्य पार्थिवः ॥ ३४ ॥ तास्मिस्तु निहत शूर अकरस्र
 महारथः । मद्वराजोपिबलधाम् सैनिकांस्त्रकिंश्चरैः ॥ ३५ ॥ ममाच्छत्रांलतस्नांस्तु
 राजन् वीर्य स सैनिकान् । चिन्तयामास समो धर्मराजा युधिष्ठिरः ॥ ३६ ॥ कथं
 नूनं मयेत् भवत्य तस्माथववचो मवत् । न हि कुञ्जो रण राजा भवपथ वने तम ॥ ३७ ॥
 ततः सरथनांगाद्वाः पाण्डवाः पाण्डुपुंज । मद्वर समोभेद् पीडयन्तः स्वतम्नतः
 ॥ ३८ ॥ नानाशस्त्रांघवहुली शश्वृष्टि सर्मात्थनाम । व्यधमत् समरं राजा महासाणाव
 माकृतः ॥ ३९ ॥ ततः कनकपुष्पां तां शश्वृष्टिं पियङ्गनाम् । शरशुष्टिमपद्याम शल
 मानामिमायातिम् ॥ ४० ॥ ते शरा मद्वजेन श्रेयिता रणमुञ्जंति । सम्पतन्त स्म

पराक्रमो नकुल सहदेव और सात्याक ने शल्यको घेरकर चारों ओरको बाणों
 से आच्छादित करा दिया । ३२ । फिर पांडवों के बड़े धनुषधारी महाराथियों से
 घिरेहुये उस प्रतापवान राजामद्र ने सबसे युद्ध किया । ३३ । हे राजा तब धर्मपुत्र
 युधिष्ठिरने बड़े युद्ध में अपने धुरप्रणे उस राजामद्रके चक्र रत्नरुको सीधता से
 मारा । ३४ । फिर उस शूर यशरथो अकरस्रके मारेजानेपर बड़े बलवान राजा
 मद्रने बाणोंसे सेनाके सब लोगोंका ढक दिया । ३५ । इसके पीछे धर्मराज युधिष्ठिरने
 युद्धमें बाणों से ढकेहुये उन सेनाके लोगों को देखकर चिन्ताकरी कि माधवजीका
 वह वचन कैसे निश्चय करके सत्यहोय कि हे पांडवोंके बड़ेभाई युद्धमें क्रोधयुक्त
 राजाशल्य मेरी सेनाका नाश नहीं करेगा । ३६ । इसके अनन्तर चारों ओरसे
 पीड़ित करते पांडवों ने रथ हाथी और घोड़ों समेत जाकर राजा मद्रको प्राप्त
 किया । ३८ । राजाने नानाप्रकार के शस्त्रों समेत उठीई बाणशुष्टिको युद्धमें ऐसे
 छिन्नभिन्न किया जैसे कि वायु बड़े बड़े बादलों को अलग करदेता है । ३९ ।
 इसके पीछे अल्पजानत आकाशमें वत्तमान मुनहरीं पुंजो के बाणशुष्टिको शल
 माओं के समूहों के समान देखा युद्धके मुखपर राजामद्रके चलायेहुये वह बाण

from all sides and wounded them with their arrows Surrounded by
 the great Pandav warriors glorious Madra opposed them all. Yudhisht
 thir slew his wheel guard. At his death Shalya covered all the
 warriors with arrows. Seeing them so covered with arrows, he feared
 that the prediction of Madhav to the effect that Shalya would not be
 able to destroy the Pandav army, was not going to be correct. Then
 wounding and slaying from all sides, the Pandavas opposed Shalya
 with their elephants, cars and horses. The king dispersed the shower
 of their weapons as the wind does the clouds. The darts of Shalya
 were to be seen like locusts in the air or like flights of birds 40. The
 gold-tipped arrows of Shalya beautified the sky, covering the warriors

मन्त्राय उवाच । अर्जुनो द्रौणिना विद्यो युद्धे बहुनिराशुभः तस्य चानुधरै
 शूरैस्त्रिगर्तानां महारथैः ॥ १ ॥ द्रौणिं । धव्याद्य समरे त्रिमिरेव शिलीमुखी । तथैत
 रत्नमहेष्वासान् द्वाष्ट्यां द्वाष्ट्यां घनञ्जय ॥ २ ॥ मूषण्वैद्य महाबाहुः शरधर्वैरवाकि
 रत् । शरकण्टकितानि तु तावका भरनर्षम । न जहुः समरे पथे पथ्यमानाः शितैः
 शरैः ॥ ३ ॥ तेजुने शरधर्वेण द्रौणपुत्रपुरोगमा । अयोधयन्त समरे परिघार्य्य महार
 थम् ॥ ४ ॥ तैस्तु क्षिताः शरा राजन् कार्तस्वर्गविभूषिता । अर्जुनस्य रथोपस्थं पुर
 यामानु रञ्जसा ॥ ५ ॥ तथा कृष्णो महेश्वासाधुपशौ संधवन्विमाम् । शरैर्घोक्षयधितु
 भाङ्गी प्रहृष्टा युद्धतुर्मथा ॥ ६ ॥ कूबरो रथचक्राणि द्रवा योक्त्राणि वा विभो । युग
 लैवानुकर्षञ्च शरभूतमभूत्तदा ॥ ७ ॥ नैतादृशं दृष्टपूर्वं राजन्नेवापि च धुनम् । यादृशं
 तत्र पाप्यस्य तावकाः स्रवच्चक्रिरे ॥ ८ ॥ स रथ सर्वतो भाति चित्रपुंखे क्षिते शरे ।

अध्याय १४ ॥

उज्ज्वल बोले कि युद्ध में अश्वत्थामा और उसके भागे पीछेवने त्रिगर्त
 देशियोंके शूर महारथियोंके बाणोंसे छिड़ेहुये अर्जुनने । १ । युद्धमें तीन शिली
 मुखःवर्णोंसे अश्वत्थामाको घेरल किया उसी प्रकार अन्य शूरवीरोंकोभी अर्जुन
 ने दोदो बाणों से छेदा । २ । हे महाराज फिर बाणों की वर्षा से आच्छादित
 करदियां हे भरनर्षम बाणों से विदीर्ण उन आपके शूरवीरोंने जोकि तेमवाणों से
 पीड़ापान ये अर्जुनको पाकर त्याग नहीं किया । ३ । वह शरार्थी जिनके अग्र
 वर्त्ता अश्वत्थामाजो ये उर्दने रथोंके समूहों में अर्जुनको घेरकर युद्धकिया । ४ ।
 हे राजा उनके छोड़ेहुये सुवर्णले गलेकृत बाणोंने वेगसे अर्जुन के रथके बैठने के
 स्थानको भरदिया । ५ । उत्तीमकार सवे धनुषधारियों में अग्र बने धनुषधारी
 श्रीकृष्ण और अर्जुनको बाणोंने प्रपेक अग्र देखकर युद्धमें दुर्भेद शूरवीर
 प्रसन्न हुये । ६ । हे मर्मथ तब कूबर रथचक्र, रथ, योक्त्र, युग, अनुकर्ष यह सब रथके
 अग्र बाणरूप होगये । ७ । हेराजा पूर्वसमयमें वहां आपके शूरवीरों ने जैसीदशा
 अर्जुनकी करी वैसी दशा पूर्वसमय में न देखीगई न सुनीगई । ८ । वह रथ पुंख
 पुंख तीक्ष्णबाणों से सब ओरको ऐसा दिखई दताया जैसे कि पृथ्वीपर सैकड़ों

CHAPTER XIV

Banjaya said, "Pierced by the arrows of Ashwathama and the
 warriors of Trigart, Arjun wounded the former with three arrows and
 the rest with two arrows each. He covered, both with his arrows
 Wounded by them your warriors opposed Arjun well. Led by Ashwa
 thama, they surrounded Arjun with their cars and filled Arjun's car
 with their arrows. 5. Seeing Arjun and Krishna wounded with darts, the
 brave warriors were pleased. Arrows were on all parts of the car. Arjun
 was never before seen or heard to be in such a plight. His car looked
 like a celestial car shining with the rays of metal. There were

उल्काशने संप्रसिद्धमानमिष भूतते ॥ ९ ॥ ततोऽर्जुनो महाराज शरैः सन्नतार्धमि
 वधाकिरत्वा पृतना मेघो वृष्ट्या यथाचलम् ॥ १० ॥ ते वध्यमानाः समये पार्थनामा
 ह्विते शयः । पार्थभूममन्वन्त प्रेक्षमाणास्तथाविधाम् ॥ ११ ॥ ततोऽद्भुतशरज्ज्वालो धनुः
 शब्दानिलो महान् । सेनेन्वत ददादांशु तावकं पार्थपायकम् ॥ १२ ॥ चक्राणां पतनं
 चापि युगानाञ्च धरातले । तूष्णीराणां पताकानां ध्वजानाञ्च रथैः सह ॥ १३ ॥ ईसा
 नामनुकर्षणा त्रिवेणुनाञ्च भारत । गजानामथ योक्त्राणां प्रतोदानोच सर्वशः ॥ १४ ॥
 शिरसा पतताञ्चैव कुण्डलोष्णीपधारिणाम् । भुजानाञ्च महाराज जघानाञ्च सह
 स्रशः ॥ १५ ॥ छत्राणाञ्चवज्रैः सार्द्धं मुकुटानाञ्च राशयः । समहृश्यन्त पार्थस्य रथ
 मार्गेषु भारत ॥ १६ ॥ ततः क्रुद्धस्य पार्थस्य रथमार्गं विशाम्येत् । भगम्यवपा पृथिवी
 मांसशोणितकईमा ॥ १७ ॥ वभूव भरतश्रेष्ठ रुद्रस्याक्रोडनं यथा । भीरुणा चासन्न
 तनी शूराणां हृष्यद्धनी ॥ १८ ॥ इत्वा तु समरं पार्थः सहस्रे द्वे परन्तपः । रथानां

उल्काशोसे प्रकाशमान विमान होता है । ९ । हे महाराज फिर अर्जुनने गुप्तग्रन्थी
 वाले बाणोंसे उसकी सेनाको ऐसा ढकदिया जेन वादल अपनी धरपसे पर्वत
 को ढक देता है । १० । छद्ममें उन बाणोंसे जिनपर कि अर्जुनका नाम चिन्हितथा
 पायक और उसप्रकारके अर्जुनको देखतेहुये उनलोगोंने लोकको अर्जुनरूप
 माना । ११ । उस अर्जुनरूपी अग्नि ने जिसकी क्रोधरूपी ज्वालासे उत्पन्न होने
 वाले बाण हन और धनुषके बड़े शब्दमें उस अग्निने शीघ्रही सेनारूपी ईधन
 को भस्मकिया । १२ । हे भरतवंशी महाराहु धृतराष्ट्र अर्जुनके रथमार्गों में पृथ्वी
 पर गिरते चक्र रथ युग तूष्णीर और रथोंसमेत पत का ध्वजा । १३ । ईसा, अनुकर्ष
 त्रिवेणु, भल, योक्तर और सधप्रकारके चातुक । १४ । कुण्डल और वेष्टनधारी गिरहुये
 शिर सहस्रोभुजा और जघा । १५ । वज्रनोंसमेत स्रज और मुकुटोंकेडेर चारोंओर दिखाई
 पड़े । १६ । हे राजा इसके पीले क्रोधयुक्त अर्जुनके रथमार्ग में पृथ्वी दुर्गम्य और
 मांस रुधिरकी कीच रखनेवाली हांगई । १७ । हे भरतर्षभ वह रणभूमिमें रुद्रजीके
 क्रीडास्थान के समान भयभीतों का भय बढ़ानेवाली और शूरवीरोंकी प्रसन्नता
 बढ़ानेवाली हुई । १८ । फिर शत्रुओंका तप्तकरनेवाला अर्जुन युद्धमें कवच

rained his arrows over your army. 10 Wounded by the arrows
 embossed with Arjun's name, they thought that all the world was full
 of Arjuns. Arising from the fire of Arjun's wrath, the arrows like
 a storm of wind, burnt your army as fire does dry wood. Car wheels,
 yokes, quivers, standards, whips, ear-rings, with thousands of well-
 decked arms, fans, umbrellas and heaps of diadems were to be seen all
 over the path traced by Arjun's car! 16 The ground became impregn-
 able with flesh and blood. It was like the pleasure ground of Rudra
 dreadful to the timid and pleasing to the brave. Having slain two
 thousand car-warriors, Arjun shone like smokeless fire. He looked

सवक्रयानां विधूमोऽग्निरिव उवलन् ॥ १८ ॥ यथा हि भगवानग्निर्जगद्गन्धा चराचरम् । विधूमो हृदयते राज्ञस्तथा पाथो महारथ- ॥ २० ॥ द्रौणिस्तु समरे हृष्ट्वा पांडवस्य पराक्रमम् । रथेनातिपताकेन पाण्डुर्ध्वं प्रत्यवारयत् ॥ २१ ॥ तासुमौ पुरंध्वयाग्नां श्वेताश्वौ रथिनाम्भरौ । समीयतुस्तथा नृणं परस्परबधैषिणो ॥ २२ ॥ तयोरासीश्वहा राज बाणवर्षे स्वदाहनम् । जाम्बवयोर्षया वृष्टिस्तपान्ते भूस्तर्षम ॥ २३ ॥ अयोन्वस्य जिहो तो तु शरैः सप्रतपर्थभिः । ततस्तुमुधेभ्योन्यं शृङ्गाभ्यां वृषमाश्रिव ॥ २४ ॥ तयोर्बुद्धं महाराज विदं सममिग्राभवत् । अश्वानां सङ्गपक्षेभ्य घोरस्तत्राभवत् पुन ॥ २५ ॥ ततोऽर्जुनं द्वादशमी रथमपुंक्षेः सुतेजने । वासुदेवञ्च दशमिद्रौर्णिर्विध्याथ मारत ॥ २६ ॥ उत प्रहस्य घोभत्सुर्व्याक्षिपद्गाण्डिवं धनुः । मानयित्वा मुहूर्त्तं तु शुक्रपुत्रं महाहये ॥ २७ ॥ दशश्वसूनरथञ्चक्र सव्यसाची महारथः । मृदुपूर्वं ततश्चैन त्रिभिर्विधवाभ सायकैः ॥ २८ ॥ हताश्व तु रथे तिष्ठन् द्रोणपुत्रस्तदा स्वयन् । सुषल पाण्डु

धारी दोहजार रथियोंको मारकर निर्धूम अग्निके समान प्रकाशमान हुआ । १९ । हे राजा जैसे कि मलयकाल में भगवान् अग्नि सब जड़ पौधे त्योंको भस्मरूपके निर्धूम दिखाई देते हैं वसीप्रकार कुन्तीका पुत्र अर्जुन दिखाई पड़ा । २० । फिर अश्वत्थामाने युद्धमें अर्जुनके पराक्रमको देखकर बड़ी पताकावाले रथसमेत अर्जुनको गोका । २१ । तब परस्पर मारने के अभिलाषी धनुषधारियों में श्रेष्ठ बट दोनों पुरुप्रोत्तम परस्पर सम्मुख हुये । २२ । हेमहाराज उन दोनोंकी बाणवृष्टि ऐसीबड़ी भयकारी हुई जैने कि वर्षाऋतुमें वर्षा करनेवाले दोषादलोंकी होतीही । २३ । तब परस्पर ईर्ष्या करनेवाले उन दोनोंने गुप्तग्रन्थीवाले बाणोंसे ऐसे परस्पर घायल किया जैसे कि सींगोंसे दोनोंपरस्पर घायल करते हैं । २४ । हे महाराज उन दोनोंका युद्ध देरतक सीधाहुआ इसके पीछे बड़ा शस्त्रोंका घोरभयदृग्हुआ । २५ । तब अश्वत्थामा ने मुनहरी पुंख और सुन्दरबेववाले बारह बाणों से अर्जुनको और दश बाणोंसे वासुदेवकीको घायल किया । २६ । इसके पीछे अर्जुनने वृत्त हँसकर गाण्डीव धनुष को टंकारा और उस बड़े युद्धमें एक मुहूर्त्त गुस्का पुत्र मानेकर । २७ । महारथी अर्जुनने घोड़े सारथी और ध्वजसे रहित किया इसके पीछे बड़ी मृदुतासे तीनशायकौंभी उसको घायल किया । २८ । तब मृतक घोड़े

like the fire of praya which destroys all 20. Seeing Arjun's prowess, Ashwathama checked him with his car. The two warriors then opposed each other and showered arrows like rain. They wounded each other as two bulls do with their horns. Their battle was terrible and there was a great collection of weapons. 25 Then Ashwathama wounded Arjun with twelve and Vasudev with ten arrows. Then Arjun twanged the gandiv bow with a smile and deprived the preceptor's son of horses, driver and banner and unflinchingly hit him with three arrows. Ashwathama smiling, sent forth a club at Arjun, who, seeing

पुत्राय चक्षुष परिघोषमम् ॥ २९ ॥ तमपानन्ते सङ्घ्ना हेमपट्टविभूषितम् । विदुषेद
 ससधा धीर पाथं शत्रुनिघर्षणः ॥ ३० ॥ स छिन्नं मूपलं दृष्ट्वा द्रौणिः परमकीपन ।
 प्राग्दे परिर्घोर नगेन्द्रशिखरोपमम् । विच्छेप चैव पाथोप द्रौणिर्गुहाविशारद ॥ ३१ ॥
 तमन्तकामय क्रुद्धं परिघं प्रेक्ष्य पाण्डवः । अर्जुनस्वरितो जल्ले पञ्चभिः सायकोत्तमैः
 ॥ ३२ ॥ स छिन्नः पतितो भूमौ पाथोपनिर्महामुधे । दारयन् पृथिवीन्द्राणां मनासीष
 य भारत ॥ ३३ ॥ ततोपरिर्घोर्गोर्द्रौणिं विध्याद्य पाण्डवः । सोतिविद्धो प्रलवता
 पाथेन कुमपावद्य ॥ न संभ्राण्तस्तदा द्रौणिः पौरुषे स्वे व्यवस्त्रितः ॥ ३४ ॥ सुप्रयत्न
 ततो राजन् भारद्वाजो महारथः । अवाकिरत्तरसायैः अथ क्षुरस्य पश्यतः ॥ ३५ ॥
 तत्रस्तु क्षुरघो छात्रौ पांचालानां महारथः । रथेन मेघशोभेण द्रौणिनेवाश्रयणापन
 ॥ ३६ ॥ विकर्षन् वै चतु भेदं सर्वमारसहं हृदम् । उदलताशीनिर्घान्ते दारिधेनतया
 किरन् ॥ ३७ ॥ क्षुरस्य घोरस्य संकुद्रमापतन्तं महारथम् । कुक्रोध समरे द्रौणिरुद्यम
 वाले रथपर निघत मन्दमुसकान करते अश्वत्थामा ने परिघके सभल मूकलकी
 अर्जुन के ऊपर फेंका । २९ । शत्रुओं के मारनेवाले धीर अर्जुनने उस शत्रुमयी
 वस्त्रसे अलंकृत अकस्मात् आतेहुये मूपलको सातखण्डकिये । ३० । वड़े मोक्षमुक्त
 अश्वत्थामा ने मूपलको टूटाकुआ देखकर हिमालय के शिखरकीहिमान महाघोर
 करिषको हायमेंलिया सुद्धमें सावधान अश्वत्थामाने उसको अर्जुन के ऊपर फेंका
 । ३१ । पण्डुनन्दन अर्जुनने उस काचरूप क्रोधभरी हुई परिघको देखकर शीघ्र
 ही पांच वस्त्र बाणोंके सहस्र करिया । ३२ हे भारतस्य वड़े सुद्धमें अर्जुनके बाणों
 से टूटीहुई यह परिघ पृथ्वीके बराबर घों के चिन्नोंको विदीर्ण करतीहुई । पृथ्वी
 परही गिरपड़ी । ३३ । उसके पीछे अर्जुनने अन्य सैनिकोंसे अश्वत्थामाको
 घायल किया सब वरुधान अर्जुन के हाथमें अत्यन्त -घायल वह वड़े पराक्रमी
 अश्वत्थामाकी अपनी वीरतायें नियतहुः । ३४ इसके पीछे महारथी भारद्वाज अश्व
 रथामाने घुरघनाम द्रौणीके सब क्षत्रियोंके डेपनेबाणोंके ममूरीते डकादिया । ३५
 इनके अनन्तर पांचालोंकी महारथी क्षुरय रथभूसेमें बादल के समान क्षुब्ध
 यान रथकी सवारिमें अश्वत्थामाके दम्भुन रथमें दुषा । ३६ सब धारके सहस्र
 घांटे वस्त्र दृढ धनुषको लैचने हुये उनमें अर्जुन रथर रथ के सामान बाणों

the gold decked rib coming to ands him, cut it into seven parts 30
 Seeing it thus broken into pieces, he took up a huge parigh and
 hurled it at Arjun. But the latter cut this also into two. 'Cut down
 by Arjun's arrows the parigh fell down on earth, rending the heart of
 the warriors Arjun hit Ashwatthama again with three arrows, the
 latter stood in his glory on receiving the rounds. He covered Surath
 by his arrows 35. Then Surath, the Panchal warrior, faced Ashwatth
 ma on his car and covered him with arrows like fire or serpent. Seeing
 him advance in his rage, Ashwatthama was enraged like a serpent

हत इषोरगः ॥ ३८ ॥ विशिखीं भृकुटीं कृत्वा युक्कणीपरिसलिहन् । संवीक्ष्य सुगंधं
 रोषाद्भुज्यामघमृज्य च । सुगंधं तीक्ष्णं नाराचं यमदण्डपमं युधि ॥ ३९ ॥ स तस्य
 हृदयं भिरवा प्रविधेशातिवेगितः । शक्राशनिरिवोत्सृष्टे विदार्य भरणं तलम ॥ ४० ॥
 ततः स पतितो भूमौ नाराचेन समाहतः । घञ्जेन तथा श्रुणुं पर्वतस्य भिदारितम् ॥ ४१ ॥
 तमिस्तु निहतं धीरं द्रोणपुत्रः प्रतापवान् । आरुहो रथं तूष्णं तमेष रथिनां
 घरः ॥ ४२ ॥ ततः सज्जो महाराजं द्रौणिराहवदुर्मादः । भर्जुनः योधयामास संशप्तक
 वृत्तो रणे ॥ ४३ ॥ तद्युद्धं सुमहत्त्वासीदेकस्य बहुभिः सह । मध्याह्नगतं सूर्यं यमः
 राभ्रविषर्जनम् ॥ ४४ ॥ तत्राश्रय्यमपत्याम दृष्ट्वा तेषां प्रक्रमम् । यदेको युगपत्तौ
 रान् समयोघयदर्जुनः ॥ ४५ ॥ विमर्दस्तु महानासीदज्ञेनस्य परिः सह । शतक्रतोर्यथा
 पूर्वं महत्या दैत्यसेनया ॥ ४६ ॥ इति शल्यवधंपर्वणि संकुलेषुद्धे त्वनुदेशोऽध्याय १ ॥
 उसको टकादिया । ३० । आतेहुये महारथी सुरथको क्रोधयुक्त देखकर अश्वत्थामा
 ने दगडसे घायल सर्पके समान युद्धमें क्रोधकिया । ३८ । शीटोंको चाटते
 अश्वत्थामाने भृकुटीको तीन शिलावली करके बड़े क्रोधसे उसवीर सुरथको
 देखकर धनुषकी मृत्युचोकी चढ़ाकर यमदण्डके समान प्रकाशित तीक्ष्ण नाराच
 को छोड़ा । ३९ । इन्द्रयज्ञके समान छोड़ाहुआ वह नागाच उसके हृदयको तोड़
 पृथ्वीको चीरकर बड़े वेगसे प्रवेश करगया । ४० । इसके पीछे नाराचसे विदीर्ण
 यह वीर पृथ्वीपर पड़े गिरपड़ा जेन कि वृजसे फटनेवाले पहाड़का शिखर गिरता
 है । ४१ । उस वीरके मरनेपर रथियोंमें अल्ल प्रतापवान अश्वत्थामा शीघ्रही उसी
 रथपर सवारहुये । ४२ । हे महाराज फिर युद्धदुर्मद महाअल्लहृत युद्धमें संसप्तको
 ममेत अश्वत्थामाने फिर भर्जुनसे युद्धकिया । ४३ । वहां मध्याह्नवर्ती सूर्यके
 वर्षमान होनेपर एकका बहुतोंके साथ बर बढ़ा युद्धहुआ जोकि यमराजके
 देशका बढ़ानेवाला था । ४४ । वहां दगड उठोके प्रक्रमको देखकर बढ़ा
 आश्रय किया जो अकेला अर्जुन एक साथ होनेवाले बहुतसे वीरोंसे लड़ा । ४५ ।
 एक का बहुतोंके साथ ऐसी बढ़ा युद्धहुआ जेसे कि पूर्वसमयमें इन्द्रका युद्ध
 दैत्योंकी बड़ी सेनाके साथ हुआया ४६ ॥

wounded by a stick. Surath advanced towards him. Ashwathama discharged at him an arrow like a venomous snake. The arrows having pierced through his breast entered the ground with great force. 30 Wounded by that arrow he fell down like a crag detached from a hill. Having slain him, Ashwathama soon mounted his car, and followed by the Sansaptake, he fought with Arjun. The battle was severe at noon and increased the population of the region of Yam. We were amazed to see the prowess of Arjun who alone fought with many and his battle was like that of Indra with gods in the days of old. 46

सञ्जय उवाच । दुर्योधना महाराज धृष्टद्युम्नश्च पार्थिव । सक्तु समहृद्यै शर
शाफसमाकुलम् ॥ १ ॥ तयोरासीमहागज शरधारा सङ्घरा । अम्बु दान यथा
काले जलधारा सम-तत ॥ २ ॥ राजातु पार्थिव विभूवा शरे पञ्चभिराशुगे । द्रोण
ह ताम्बुप्रपु पुनर्विधवाव जसमि । ३ ॥ धृष्टद्युम्नस्तु समरे बलवान् दृढविक्रम ।
सत्तरया विशिखाना धै दुर्योधनवगीडयत् । ४ ॥ पीडित प्रेक्ष्य राजान मोदर्या भर
तर्षभ । महत्या सनया सार्धे परिपद्य स्व पार्थिवम् ॥ ५ ॥ स नै परिहृत शूर सर्वतो
तिर्षैर्भृशम् । व्यचरत् समरं राजन् दर्शयन्नल्लाघवम् ॥ ६ ॥ शिखण्डी कृन्धर्माणि
गौतमश्च महारथम् । प्रभद्रकै समायुक्तौ योयवाभास घमिनी ॥ ७ ॥ तत्रापि सुम
हृद्यै घोरक । विशाम्पते । प्रणान् सन्त्यज्यवा युद्ध प्राणघ्नताभि देवमे ॥ ८ ॥ शक्य
स्तुशरवर्षाणि विमुञ्चन् सर्वतो दिशम् । पाण्डवान् पीडयामास ससायकिकृकांशुरान्

अध्याय १५ ॥

संजय बोले हे महाराज दुर्योधन और धृष्टद्युम्न ने भी बड़ा युद्धकिया वह
युद्धभी बाण और शक्तियों से व्याप्तमा । १ । हे महाराज उन दोनोंकी बाणधारा
एमे प्रकटहुई जैसे कि समयपर चारों ओर से बादलों की जलधारा होतीहै । २ ।
फिर राजा दुर्योधन ने शीघ्रगामी पाँचबाणोंमे धृष्टद्युम्नको घायलकरके उग्रबाण
रत्ननेवाले द्रोणाचार्य के मारनेवाले धृष्टद्युम्न को सातबाणोंस छेदा । ३ । फिर
बलवान् दृढ पराक्रमी धृष्टद्युम्न ने युद्धमें दुर्योधन को सत्तर विशिखोंसे पीडामान
किया । ४ । हे भरतर्षभ तब उसके सगे भाइयोंने राजाको पीडामान देखकर बड़ी
सेनासमेत घेरलिया । ५ । उससमय सबओरको उन अतिरथियों से घिराहुआ वह
शूर युद्धमें अस्त्रोंकी तीव्रता दिसाता हुआ अच्छेप्रकार से भ्रमण करनलगा । ६ ।
प्रभद्रकनाम क्षत्रियों से सयुक्त शिखण्डी ने धनुषधारी महारथी कृपाचार्य और
कृन्धर्मासे युद्धकिया । ७ । हे राजामाणोंके घृतरूपी युद्धमें प्राणों के त्यागनेवाले
उनलोगोंका घोररूप महायुद्धहुआ । ८ । फिर दिशाओं में बाणवृष्टिको करतेहुये

CHAPTER XV

Sanjaya said, "Duryodhan and Dhrishtadyumn fought well with arrows and spears. They showered their darts like rain. Duryodhan wounded Dhrishtadyumn, the slayer of Drona with five arrows and again hit him with seven more. The latter wounded the former with seventy. Duryodhan's own brothers seeing him so afflicted, surrounded him with their cars. Surrounded by those great warriors that brave warrior showed his skill in the use of weapons. Sikkhandi followed by the Prabhadraks, fought with Krispacharya and Kritvarma. Engaged in the game of life and death, they fought a dreadful fight. Showering his arrows, Shalya wounded Sityaki and Bhima the great warriors of the Pandavas. Similarly, Nakul and Sahadev, full of

॥ ९ ॥ तथोभौ च यमौयुखे यमतुल्यपराक्रमौ । बांधवामास राजेन्द्र धैर्येण ज बलेन
 च ॥ १० ॥ शल्यसायकनुजानां पाण्डवानां महामुखे । त्रातारं नाशयदकुन्तु कंचिन्नत्र
 महारथाः ॥ ११ ॥ ततस्तु नकुलः शूरे धर्मराजे प्रपीडित । अमिदुद्राध धेगेन मातुलं
 माद्रीनन्दनः ॥ १२ ॥ आच्छाद्य समरे शल्यं नकुलः परधीरहा । विस्थाप्य चैनं दशभिः
 स्वयमासस्तनात्तरं ॥ १३ ॥ सर्वपाशाभैर्बाणे कर्मापरिमार्जितैः । स्वर्णपुंखैः शिला
 धैरिभिरुर्ध्वप्रचोदितैः ॥ १४ ॥ शल्यस्तु पीडितस्तेन स्वस्त्रायणेन महात्मना । नकुलं
 पादयामास परिमिर्जतपर्यङ्किः ॥ १५ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा भीमसेनीऽथ सात्यकिः ।
 सहदेवश्च माद्रथो मद्रराजमुपाद्रवन् ॥ १६ ॥ तान् यथाशु परयाणाप्रयस्वनेः ।
 त्रिशाश्च विविशश्चैव कश्यपानांश्च मेदिनीम् । प्रतिजग्राहसमरे सेनापतिः (मित्रजित्) ॥ १७ ॥
 युधिष्ठिरं त्रिभिर्विधा भीमसेनश्च सप्तभिः । सात्यकिश्च शतनाजौ सहदेवश्चिभिः
 शरैः ॥ १८ ॥ ततस्तु सशरश्चापं नकुलस्य महात्मनः । मद्रेश्वरः क्षुरप्रेण तदा चिच्छेद्

अल्पने पांडवोंको सात्यकि और भीमसेन समेत पीड़ितकिया । ९ । हे राजेन्द्र इसी
 प्रकार अश्विनीकुमारोंके समान पराक्रमी उनदोनों नकुल और सहदेवसे भी बख
 पराक्रम और अश्वोंकी सामर्थ्यके द्वारा युद्धकिया । १० । उसवहे युद्धमें किसी
 महारथाने शल्यके शायकोंसे घायल पांडवोंके रत्नकको नहींपाया । ११ । उसके
 पीछे माद्रीनन्दन शूर नकुल धर्मराजके अत्यन्त पीड़ामान होनेपर तीव्रतासे मामाजी
 के सम्मुखगया । १२ । शत्रुओं के मारनेवाले कन्दमुसकान करते नकुल ने युद्धमें
 इस शल्यको दककर उन वहे उग्र दशबाणोंसे छातापर घायलकिया । १३ । जोकि
 लोहमयी कारीगरके हाथमें साफ सुनहरीं पुंख तेजप्रहार धनुस्वरूपी यंत्रसे भेरणा किये
 हुयेये । १४ । फिर उस महात्मा भानजेके हाथमें पीड़ामान शल्यने टेढ़ेपर्ववाले
 बाणोंसे नकुलको पीड़ामान किया । १५ । इसके पीछे राजायुधिष्ठिर भीमसेन
 सात्यकि माद्रीनन्दन सहदेव यह सब राजमद्रके सम्मुखगये । १६ । दिशाओंको
 रथों के शस्त्रों से पूर्ण करते और पृथ्वीको कंपते शीघ्र आतेहुये उन वीरों को
 । १७ । युद्धमें शत्रु विजयी सेनापति शल्यने शैका तीनबाणसे युधिष्ठिरको पांचसे
 भीमसेनको सात्यकि को सौबाणोंसे और सहदेवको तिनबाणोंसे छेदा । १८ । हेभेष्ट

pro prowess like the Ashvini-kumars, fought a good fight. 10. The
 Pandav warriors, wounded by Shalya's arrows, could find no protector.
 Seeing Yudhishtir much afflicted, Nakul the son of Madri opposed
 his uncle. He wounded Shalya on the breast, with ten arrows
 made entirely of iron, well cleaned, sharp pointed and shot from
 the machinery of his bow. Wounded by his nephew, Shalya wounded
 him with his darts 15. Then Yudhishtir, Bhim, Satyaki and
 Sahadev opposed Shalya. Filling the directions with the sounds
 of their car wheels and shaking the earth, those great warriors were
 checked by Shalya, who wounded Yudhishtir with [three arrows,

मारिष । तदशीरितं शिलिन्नं धनुः शल्यस्य सायकैः ॥ २० ॥ अथाश्वदनुवादाय माद्री
पुत्रो महायय । मद्राजराये नृणं पूर्यामास पत्रिमि ॥ २१ ॥ युधिष्ठिरस्तु मद्रेशः स
वैश्वस्य मारिष । दशभिर्दशमिर्वाणैश्चरस्येनमविष्यताम् ॥ २२ ॥ भूमिसेनस्तु तं चक्षुष्या
सात्यकिर्नममि शरैः । मद्राजमभिद्रक्ष्य जघनतु कद्रुपत्रिमि ॥ २३ ॥ मद्राजस्तत
क्रुद्धः सात्यकिं मममि शरैः । विव्याघ्रभूयः सप्तस्था शरणा नतंपर्बजाम् ॥ २४ ॥
अथाश्वसशरश्चापमुष्टौ चिच्छद् मारिष । हयाश्च चतुरः संख्ये प्रेषयामास मृत्युभे
॥ २५ ॥ विरथे सात्यकिं कृत्वा मद्राजो महायय । विशिखोमां शतेनेनमाजघान सम
स्तत माद्रीपुत्रौ च संरथौ मञ्जु पाद्मवप । युधिष्ठिरश्च कैरव्य विव्याघ्र
दशमि शरैः ॥ २७ ॥ तत्राद्भुतमपदयाम मद्राजस्य पौरुषम् । यदेन सहिताः पार्या
तामंघर्तन्त सयुगे ॥ २८ ॥ अथान्य रथमास्थाय सात्यकिः सत्यविक्रम । पीडिताम्

फिर भी राजामद्रने महीत्मा नकुलके धनुषबाण को क्षुरमेसकाटा तब शल्य
के शायको से कटाटुआ वह धनुष गिरपडा । २० । इसके पीछे महारथी नकुलने
दूबरे धनुषको लेकर शीघ्रही राजामद्रके रथको बाणोंमे भरदिया । २१ । हे भेष्ट
फिर युधिष्ठिर और सहदेवने दश २ बाणोंमे इस मद्रके राजाको छाती पर घायल
किया । २२ । और भीमसेनने राजामद्रके सम्मुख जाकर कंकपसयुक्त साठबाणोंसे
और सात्यकी ने दश बाणों से उसको घायल किया । २३ । इसके पीछे कौधयुक्त
राजामद्र ने सात्यकी को टेढ़े पथवाले नौ और सत्तरबाणों से बायलकिया । २४ ।
इसके अनन्तर इसके धनुषको भी बाण समेत मूठके स्थानपर काटकर चारोंघाटों
का भी कालके बंधकिया । २५ । महारथी राजामद्र ने सात्यकि को विरथ देख
कर सौ विशिखोंमे उसको चारों ओर मे घायल किया । २६ । हे कौरव फिरकौब
से पूर्णने माद्रीके दोनोंपुत्र भीमसेन और युधिष्ठिरको दशरबाणोंसे घायल किया
। २७ । वही हमने राजामद्रके अपूर्व पराक्रमका देखा कि सर्व पांडव मिलकर
भी उसके साथ युद्धमे सम्मुख नहीं हुये । २८ । इसके पीछे बलवान् सत्य पराक्रमी

Bhim with a hundred and Sahadev with three He cut down Nakul's
bow with a dart 20 He took up another bow and filled Shalya's
car with arrows. Yudhishtir and Sahadev wounded him with ten
arrows each on the breast. Bhim and Satyaki wounded him with seven
and ten arrows respectively Shalya, much enraged, wounded Satyaki
with seventy nine arrows and having cut his bow, slew his horses
too, 25 The brave king of Madra, seeing Satyaki deprived of the use
of his car, wounded him from all sides He wounded the two sons of
Madra, with Bhim and Yudhishtir, each with ten arrows. Then we
saw the matchless prowess of the king of Madra whom all the
Pandavas together could not oppose. Brave Satyaki mounted another
car and seeing the Pandavas afflicted by Shalya, faced the latter.

पाण्डवान् दृष्ट्वा मद्राजप्रवशङ्कवान् । अभिदुष्टाश्च वेगेन मद्राणामधिपं पत्नी ॥ २९ ॥
 आपन्नं रथे नश्य शल्य ममितिशोभन । प्रत्यक्षयो रथेन उभतो मत्तमिवाङ्घ्रिपं
 ॥ ३० ॥ स मन्त्रिवातस्तुमुलौ बभूवाम्भुवद्वयं । सात्यकेश्वर शूरस्य मद्राणामधिपस्य
 च । बाहशो धै पुग हृत्त । शम्भरामराजयो ॥ ३२ ॥ सात्यकि प्रेक्ष्य समरे मद्रराजं
 व्यवस्थितम् । विव्याध दशभिर्वाणैस्त्रिष्ट निष्ठेति चाग्रधीत् ॥ ३३ ॥ मद्रराजस्तु सुभृत्
 विद्वलेन महारथना । सात्यकिं प्रतिविव्याध चित्रपुत्रे शिनेः संरे ॥ ३४ ॥ तत पाप्या
 मदेववासा संरथतामिच्छन् नृपम् । अर्धपद्मप्रथमं तुर्जे मानुस वचकाक्षया ॥ ३५ ॥ तत
 आसीत् परामर्हस्तुमुल शोणितोदक । शरणां युध्यमानानां विद्वानामिव नर्हताम्
 ॥ ३६ ॥ तेषामासीन्महाराज व्यतिक्रम परस्परम् । सिद्धानामभिप्रेक्षुना कूजतामिव
 सयुगे ॥ ३७ ॥ तथा धाणसहस्रौघैरार्कीणां वसुधामवत् । अन्तरीक्षञ्च सहसा धाण
 सूनमभूत्तदा ॥ ३८ ॥ शराचकार बहुधा कृत तत्र ममन्तत अञ्जनापेव सञ्जये

सात्यकि दूरे रथार निपन होकर राजामद्रके आधीन और पीड़ामान पांडवों
 को देखकर तीव्रता से शल्यके सम्मुख गया । २९ । युद्धका शोभा देनेवाला शल्य
 रथकी सवारोंसे उस आनेहुये रथीके सम्मुख ऐसे गया जैसे कि मतवाला हाथी
 मनवाले हाथी के सम्मुख होनाहै । ३० । शूर सात्यकि का और राजामद्रका वह
 युद्ध ऐसा कठिन हुआ । ३१ । जैसा कि पूर्व समयमें सम्बर और देवराजका युद्ध
 हुआ था । ३२ । सात्यकि ने युद्धमें सम्मुख बध्मपान राजामद्रको देखकर दशवाणों
 से घायल करके तिष्ठशब्दकिया । ३३ । फिर उस महात्माके हाथमें कठिनघायल
 राजामद्रने अपूर्व सुखवाले तीक्ष्ण वाणों से सात्यकिको घायल किया । ३४ ।
 इसके पीछे बड़े धनुषधारी पांडव सृञ्जय और यादव रथोंकी सवारोंमें मामाके
 मारने की इच्छाओं से शीघ्र सम्मुखगये । ३५ । उसके पीछे सिंहके समान गर्जने
 वाले शूरवीरोंका महाकठिन युद्ध रुधिररूपी जल रत्ननेवाला जारी हुआ । ३६ ।
 हे महाराज युद्धमें मांसके अभिजापी सिंहोंके समान गर्जनेवाले उन वीरों की
 परस्पर चढ़ाई बहुत अच्छी हुई । ३७ । उन्हों के वाणों से हजारों समूहों में पृथ्वी
 आच्छादित होगई और अन्नरिसंधी अरुस्मात् वाणरूप होगया । ३८ । वहाँवारों

Shalya opposed him as one evil elephant does another. 30. The battle between Satyaki and Shalya was hard like that of Shamvar and Inira in the days of old. Seeing Shalya before him, Satyaki wounded him with ten arrows and said "Stay, stay." Hard pressed by him, Shalya wounded Satyaki with sharp arrows. The great Pandav archer, with the Srinjayas and Yudavas, came in their cars to oppose Shalya. 35 Then the warriors fought hard with lionlike roars. Like lions, greedy for flesh, they attacked one another. The ground was covered with their arrows. The clouds of arrows made the air dark as if overcast with clouds. The gold

श्रीमुंकेर्गहात्मनि । ३९ ॥ तत्र राजञ्छरेमुंकेर्निमुंकेरिव पन्नगे । स्वर्णपुत्रे प्रकाशाद्भि
 व्यरोचन्त दिशस्तदा ॥ ४० ॥ तन्नाद्रुत परञ्चक्रे शल्य शत्रुनिर्घर्षण । युदेक समरे
 शूरो योषधामास धै वहून् ॥ ४१ ॥ मद्रराजमुजोत्सृष्टे कङ्कर्षादिणवीजिते । सपताद्भि
 शरैर्घोररवाकीर्यन्त मेदिनी ॥ ४२ ॥ तत्र शल्यरथ राजन् विचरन्त महादधे । अपद्याम
 यथा पूर्वं शकस्यासुरसक्षये ॥ ४३ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि संकुलयुद्धेपञ्चदशो अध्यायः ॥ १५ ॥

सञ्जय उवाच । तत सैन्यास्तद्य धिमो मद्रराजपुरस्कृताः । पुनरभ्यद्रवन् पार्थान्
 वेगेन महता रणे ॥ १ ॥ पीडितास्तावका सर्वे प्रधावन्तो रणोत्कटाः । क्षणेनैव पार्थाले बहु
 भोरते अनेक प्रकारके बाणोंका अन्धकार करनेपर महात्माओंके छोड़े हुये बाणोंसे
 बादलों से कीसी छाया उत्पन्न होगई । ३९ । हे राजा बहा सुनहरी पुंखशाले प्रकाश
 मान कांचली से छुटे सपोंके समान छोड़े हुये बाणों से दिशा शोभायमान हुई । ४० ।
 शत्रुओं के मारनेवाले शल्यने वड़ा अपूर्व कर्मकिया जो अकेलेही शूवीर ने युद्धमें
 बहुतोंक साथ लड़ाईकरी । ४१ । राजामद्रकी भुजासे छोड़े हुये कंक और मोरके
 पोंसे जटित गिरते हुये घोरबाणोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई । ४२ । वहां वडे युद्ध
 में शल्यके घृमे हुये रथको ऐसे प्रकारका देखा जैसे कि पूर्व समयमें असुरोंके नाश
 में इन्द्र का रथ हुआथा ४३ ॥

अध्याय २६ ॥

संजय बोले कि हे समर्थ इसकपीछे आपकी सेनाके लोग जिनका अग्रवर्ती
 राजामद्रथा वही तीव्रता से फिर पांडवोंके सम्मुख गये । १ । युद्धमें मरवाले और

decked arrows, bright like serpents freed from skins, beautified the
 land everywhere 40. Shalya the destroyer of foes did deeds of
 wonder Alone he fought with many and covered the earth with
 arrows fitted with vulture and peacock quills We saw Shalya's car
 rooning in the field of battle like that of Indra at the time of his
 destroying the asurs " 43.

CHAPTER XVI

Sanjaya said, " Then the warriors of your army, headed by the
 King of Madra, again opposed the Pandavas and dispersed them with

रात्रिं समलोडयन् ॥ १ ॥ ते वक्ष्यमाना कुन्ति वापट्टवा नावतस्त्रिधरे निवार्यमाणान्
भीमन पश्यतो कृष्णपार्थयो ॥ ३ ॥ ततो धनञ्जय कुञ्ज हृष सह पदानुगे । अवाकि
रुद्धगौघेण हतधर्माणमेव च ॥ ४ ॥ शकुनि सहदेवश्च ससैन्ये समवारयत् । नकुल
पाद्वैत स्थिव्य मद्रराजमवैक्षत ॥ ५ ॥ द्रौपदेयान् नरेन्द्राश्च भूविष्टान् समवारयन् ।
द्रौणपुत्रञ्च पाञ्चाल्य शिखण्डी समवारयत् ॥ ६ ॥ भीमसेनस्तु राजान गदापाणि
रधारयत् । शरयन्तु सह सैन्येन कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिर ॥ ७ ॥ तत समभवद्युद्ध ससक्त
तत्र तत्र ह । तावकानां परेषाञ्च समामेधनिवासिनाम् ॥ ८ ॥ तत्र पश्यामहे कर्म
शल्यस्यातिमद्दशे । यदक सर्पसैन्यानि पाण्डवनामयुध्यत ॥ ९ ॥ व्यद्रश्यन्त तदा
शल्यो युधिष्ठिरसमीपत । रण चन्द्रमसोऽप्यासे शनैश्चर इव ब्रह्म ॥ १० ॥ पीडयित्वा
तु राजान ररराशीविशोपमे । अश्वघावत् पुनर्भीम शरवर्षरवाकिरत् ॥ ११ ॥ तस्य

पीडयमान दौड़ते हुये आप के उन सब शूरवीरोंने आधिक्यता से क्षणभरमें ही
पाँडवोंको छिन्न भिन्न करीदिया । २ । कौरवोंसेपायल बह पाँडव श्रीकृष्ण और
अर्जुनके देखते भीमेनसे रोकेंहुयेभी युद्ध में नियत नहीं । ३ । उसके पीछे क्रोध
युक्त अर्जुनने कृपाचार्य और कृतवर्मा को उनके साथियों समेत बाण समूहोंसे
ढक दिया । ४ । सहदेव ने शकुनी को उसकी सेना समेत हटायानकुलने एक भागमें
नियत होकर राजापट्टको देखा । ५ । और द्रौपदीके पुत्रोंने भी बहुतसे राजाओंको
रोका पांचालदेशी शिखण्डीने अश्वत्थामाको रोका । ६ । और गदाधारी भीमसेन
ने राम्रादुर्योधनको रोका कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरने सेनासमेत शल्यको रोका । ७ ।
इसके पीछे युद्धसे न लौटनेवाले आपके शूरवीर और मतिपत्तियों के शूरवीरों
का युद्ध नहीं तदा बहुतकठिन हुआ । ८ । वहाँ हमने युद्धमें शल्यके बहुत बड़े
कर्मको देखा जोकि अकेलेनेही पाँडवों की सब सेनाओं से युद्ध किया । ९ । तब
शल्य उस युद्धमें युधिष्ठिरके समक्ष में ऐसा दिखाई पडा जैसे कि चन्द्रमा का
सम्मुख बनीचर नक्षत्र दिखाईदेता है । १० । फिर विपले सर्पकी समान बाणोंसेर जा
की पीडयमान करके भीमेनके सम्मुख दौडा और बाणों की वर्षा से ढकदिया

the flights of their arrows Wounded by the Kauravas, the Pandavas
could not stay in spite of the exertions of Bhim and fled away in the
presence of Krishna and Arjun. Then Arjun hid Krishna,
Kritavarma and their followers with arrows. Sahadev checked Shakuni
and his army and Nakul opposed Shalya. 5 The sons of Draupadi
checked many kings, and Shikhandi checked Ashwathama. Bhim the
truce bearer checked Duryodhan and Yudhishtir checked Shalya
and his army. Then your warriors fought hard with the Pandavas.
Then we saw Shalya's prowess. He alone fought against many he
was seen opposing Yudhishtir as Saturn does the moon. 10 Having
wounded the king with his darts like venomous serpents he rushed

तरलाघ्न एष्यथा तथैव च वृत्तास्त्रनाम । अपूजयन्तनीकानि परेषां तावकानि च ॥१२॥
 पीडयमानास्तु शल्येन पाण्डवा भुद्रपिक्षता । प्राद्रव-त रणे हिरवा शंशमानं युधिष्ठिरे
 ॥ १३ ॥ धर्ममानेऽप्यनीकेषु मद्रराजेन पाण्डव । अमर्षवशात्पापनां धर्मराजो युधिष्ठिरः
 ॥ १४ ॥ तत्र पीडयमानाय मद्रराजमपीडयत् । जघो धारतु वधो वेति हृष्टबुद्धिर्
 द्वारथः । १५ ॥ समाह्वयामवेति सर्वान् सानुन् कृष्णश्च माधवम् । भीमो द्रोणश्च
 कर्णश्च ये चान्ये पृथिवीक्षितः ॥ १६ ॥ कौरवाथे पराक्रान्ताः स्वशामे हि घन गताः
 यथाभागं यथोत्साहं भवन्त हृतपीडया ॥ १७ ॥ भागोऽयश्छिष्ट एकोऽयं मम शल्यो
 महारथः । सोऽहमद्य युधा जेतुमाशसे मद्रकेऽध्वर्यु । तत्र यस्मानस मह्य तत्र सर्वे निग
 दामि यः ॥ १८ ॥ अक्ररत्नाधिभी शरी मम माद्रवतीसुतो । अजेयो वासवेनापि समरे
 धीरसंमती ॥ १९ ॥ साध्विमौ मातुल युद्ध क्षत्रधर्मपुररुहती । मद्ययप्रति युच्यतां
 मानाहौ सत्यतद्गते ॥२०॥ माम्मा शल्यो रणे इन्ता तं वाह मद्रमस्तु य । इति सत्या

। ११ । आपकी और दूसरों की सेनाओं ने उतसकी हस्तनाचवता और अक्षयताकी
 प्रशंसा करी । १२ । फिर शल्यके हाथसे पीडापान् अत्यन्त घायल पांडव युधि
 ष्ठिरको पुकारतेहुये युद्धको छोड़भागे । १३ । राजामद्रके हाथसे सेनाओंके घायल
 होनेपर धर्मराज पाण्डव युधिष्ठिर क्रोधके वशीभूत हुये । १४ । इसके पीछे विजय
 होय व पराजयहोय यह निश्चय करनेवाले युधिष्ठिरने वीरता में निपत होकर
 राजामद्रको पीडापान किया । १५ । सबभांडे और माधव श्रीकृष्णजी को बुलाकर
 बोला कि भीष्म, द्रोणाचार्य, कर्ण आदिक जो अन्य राजालोग थे । १६ । कौरवों
 के निमित्त उपाय करनेवाले उन लोगों ने युद्धमें नाशको पाया आपलोगे भाग
 और उतसाहके समान पराक्रम करनेवाले । १७ । यह महारथी अकेला शल्य मेरा
 भाग वेपै सौ में अय युद्धके द्वारा राजामद्रको विजय करने की आशा करता
 हूँ अब जो मेरे चित्तकी इच्छा है वह सब आपसे कहवा हूँ । १८ । माद्रिके पुत्र और
 नकुल और सहदेव मेरे चक्रके रक्षकहोय जोकि युद्धमें इन्द्रसेभी भयपडो कर वीरों
 के प्रगणित है । १९ । अच्छा है यय युद्ध में सत्रीधर्म को आगेकरनेवाले प्रति-

against Bhishm and wounded him with his arrows. The warriors of both sides praised his dexterity of hand Exceedingly wounded by Shalya's arrows, they ran away calling Yudhishtir for help. Yudhishtir was enraged to see his army wounded by Shalya. Standing firmly for victory or defeat, Yudhishtir wounded Shalya 15 He gathered his brothers and Shri Krishna and said, "Bhishm, Drona, Karan and others have died fighting for the Kautavas. You have slain them all Shalya alone remains as my share and I mean to conquer him I therefore say to you what passes in my mind. Let Nakul and Sahadev invincible by India, guard my wheels and let them fight with their uncle Shalya" like good kshatriyas 20. Either Shalya will slay

मिमो वाणी लोकवीर निवोचत् ॥ २१ ॥ योत्स्येहं मातुलेनाथ क्षप्रधर्मेण पाधिषा
 स्वय समभिसन्धाय विजयाधेतस्य च ॥ २२ ॥ तस्य मेघविधिं रथ सधोपकरणानि
 च । संयुज्यन्तु रथे क्षिप्र शस्त्रवद्रथयोजका ॥ २३ ॥ दशिनयो दक्षिण चक्र धृष्टद्युम्न
 सथोत्तरम् । पृष्ठगोपो भवत्त्वय मम पार्थो घनजयः ॥ २४ ॥ पुर सरो ममाघास्तु
 भीमः शस्त्रभृतावर । पथमभ्यविक्रुः शल्यशङ्खधिव्यामि मदाभृवे ॥ २५ ॥ एवमुक्त्वा
 सथा चक्रुः सर्वे मन्त्र प्रियविण ॥ २६ ॥ तव प्रहरे, सैन्याना पुनर्गर्हात् तदा मृध ।
 पांचालानां सोमकानां मत्स्यानाञ्च विद्रोयत ॥ २७ ॥ प्रणिवां तां तदारजा, हत्वा
 समन्ययात् । ततः शपाञ्च भेरिञ्च शतशश्चैव पुष्कलान् । अवात्प्रयन्त पाञ्चालां
 सिहनादाञ्च नेदिरे ॥ २८ ॥ तेषप्रघावत् शरच्छया मद्रराजन्तरदिग्ग । महता हर्षजे
 नाय नादेन कुरुपुङ्गवा ॥ २९ ॥ हृद्देन गजघण्टातां शङ्खानां निगदेग च । सूर्यशब्देन

एकै योग्य संरयसकल्प नकुल और सहदेव भेरे निमित्त मामा से युद्ध करें । २० ।
 शल्य युद्धमें मुझको 'मारैगा अथवा मैं उसको मारूंगा तुम्हारा कल्याणहोय
 हे लोहवीर राजालोगो तुम भेरे इग मत्य मत्य वचनको जानो । २१ । मैं त्प्री
 धर्म से मामाके साथ लड़ूंगा मैं विजय व पराजय को निश्चय करके लड़ूंगा । २२ ।
 अब भेरे सब शस्त्र और सामानों को रथ जोड़नेव ले मनुष्य बहुत शीघ्रता से
 शस्त्रके अनुसार रथपर रखें । २३ । सात्यकि दक्षिणी चक्रणी और धृष्टद्युम्न
 उत्तरचक्र की रक्षाकरें अब भेरे पृष्ठका रक्तक पांडव अर्जुन होय । २४ । और अग्र
 वर्त्तिशस्त्रधारियों में श्रेष्ठ बलवान् भीममेन होय इसप्रकार शल्य से युद्ध में अधिक
 हुंगा । २५ । इस प्रकार के वचन सुनकर राजाके हित चाहनेवाले सब लोगोंने
 उसीप्रकार किया । २६ । इसके पीछे सेना में बड़ी प्रसन्नता उत्पन्नहुई विशेष करके
 पांचाल सोमक और मत्स्यदेशी लोगोंकी प्रसन्नता बहुत प्रकटहुई । २७ । तब
 राजायुधिष्ठिर प्रतिज्ञाको करके शल्यके सम्मुखगया उसकेपीछे पांचालोंने सैकड़ों
 शंख और उत्तम भेरियोंको घनाया और सिहनादोंको किया । २८ । और क्रोधयुक्त
 होकर उस राजामद्र के सम्मुख दौड़े फिर श्रेष्ठ कौरव प्रसन्नतासे उत्पन्न बड़े

me or I shall slay him' I shall fight with my uncle like a brave
 man for victory or defeat. Let them put all the requisites on my
 car. Let Satyaki protect my right wheel and Dhrishtadyumn the
 left one 'Let Arjun protect my back and Bhim the fore runner'
 of my warriors lead the way. Thus I shall become superior to
 Shalya. " 25. Having heard this, all the well wisers of the king did
 as they were told to do. The people of the army, specially the
 Panchals, Somaks and Matsyae, were much pleased. Having formed
 this resolution, Yudhishtir faced Shalya and the Panchals sounded
 conchs and drums and roared lionlike roars. They attacked the
 king of Madra in anger. The Kauravas ringing the earth with

महता नादयस्तथ मेदिनीम् ३० ॥ तान प्रत्यगृह्णात् पुत्रसे इ प्रगजस्य पीडयन्वान् ।
 महामेषानिव बहून् शलाघस्तोक्ष्यासुमी ॥ ३१ ॥ शरयस्तु समरन्लार्थं धर्मराजमीन्द्र
 मम् । यद्यथ शरघर्षेण घर्षेण मयवाभिच ॥ ३२ ॥ तथैव पुत्रराजोपि प्रगृह्य क्षत्रे चतु ।
 द्रोणोपक्षान् विधिधान् पश्याथाना महामना । ३३ ॥ वयस्य शरघर्षाण वित्र लघु च
 सुष्ठु च । न चास्य धियर वधिददत्तं चरतो रणे ॥ ३४ ॥ तासुभौ विविधेषाणस्तत
 क्षात परस्परम् । शार्दूलाघामिप्रप्रेषु पराक्रान्तविवाहये ॥ ३५ ॥ भीमस्तु तत्र पुत्रेण
 रणशोण्डेन समत । पाञ्चास्य सारथकिशौच मार्यापुत्रौ च पाण्डवौ । शकुनिप्रमुखात्
 बीरान् प्रत्यगृह्णन् समन्तत । ३६ ॥ तदास्तीक्ष्णमुलं युद्धं पुनरेव जयैषिणाम् । तावक नो
 परेषांश्च राज्ञश्च कुमंग्रिणे तत्र ॥ ३७ ॥ दुर्योधनस्तु भीमस्य शरणान् गन्तवान् । विच्छे

शब्दबाले हाथियों के घंटे और शलों के शब्द और तुरी बानेके गदे शब्द से
 पृथ्वीको शब्दायमान करते सम्मुख हुये । ३० ॥ उमममय आपके पुत्र और पराक्रमी राजा
 मद्रने उन सब पांडवोंको ऐसे रोका जैसे कि भद्राचल और उद्यों चर पर्वत
 बहुतमे वड़े वदलों को रोकते हैं । ३१ । फिर युद्धमें प्रशंसनीय शर-घर्षोंकी
 वर्षा से शत्रुओं के विजय करनेवाले धर्मराजपर वर्षा करनेलगा जैसे कि जल
 की वर्षा इन्द्र बरसाता है । ३२ । उसीप्रकार वदे स हसी कौरवराजेनेभीद्रोणाचार्य
 की नानाशिक्षाओं को दिखाने वाणों की वर्षा को बरसाया । ३३ । वह वास
 ब्रह्मि अपूर्व तीक्ष्ण और मनोहरथी और युद्ध में घुमतेहुये उसक छिद्रको किसी
 ने नहींदिखा । ३४ ॥ उन दोनोंने नानाप्रकार के वाणोंसे परस्पर ऐसे घावल किया
 जैसे कि मांसके अभिलाषी युद्धमें पराक्रम करनेवाले दो शार्दूल होतेहैं । ३५ । फिर
 भीमसेन उस युद्धमें कुशल आपके पुत्रमे लड़ा घृष्टघुम्न, सारथकि पांडव नकुल
 और सहदेवने शकुनी आदिक वीरोंको चारोंओर से रोका । ३६ । हे राजा
 आपकी कुमन्त्रता होनेपर विनशाभिलाषी आपके पुत्र और मतिपत्तियों का
 फिर युद्ध जारीहुआ । ३७ । दुर्योधन ने ट्रे पर्यगले वाणों भीमसेनकी उत्सवना

elephant bells, conchs and trumpets, faced them, 30 Then your son and
 Shalya checked the Pandavas as high hills check clouds. Brave
 Shalya showered his arrows over Yudhishtir the destroyer of foes.
 The Kaurav prince gave proof of the superior training which he had
 received from Drona and showered arrows. That shower of arrows was
 matchless, sharp and interesting. None could see any defect in him,
 while he was roaming in the field of battle. They wounded one
 another with arrows like two lions greedy for flesh. Then Bhim
 fought with your son and Dhrishtadyumna, Sityaki, Nakul, and
 Sahadev checked your warriors. There was a very dreadful battle
 between the two parties on account of your evil policy. Duryodhan
 cut down the gold decked standard of Bhim bright like the Sun. The

वादिदय संप्रामे स्वर्जं हेमविभूषितम् ॥ ३८ ॥ स किङ्कि गोकजालेन महता चाक्षर्योग
पपात रुचिरः मंस्य भीमसनस्य माम् ॥ ३९ ॥ पुनश्चापि धनुश्चित्रं गजराजकरोप
मम् । शुरेण सिन्धारेण प्रथकसं नराधिप ॥ ४० ॥ स छिन्नन्वा तेजस्वी रथशक्त्या मु
तव धिमेवोऽसि विप्रस्य सरथोपस्थ आविशत् ॥ ४१ ॥ तस्मिन् मोहमनुप्राप्ते पुनरेव वृको
ध्वरः । यन्पुरस्य शिरः कायात् क्षुण्णोऽहस्तदा ॥ ४२ ॥ हतसूता ह्यंशुस्य रथमा
दाय मात्न । व्यग्रवन्त दिशो राजन हाहाकारस्ततोभयत् ॥ ४३ ॥ तमभ्यधात्
प्राणार्थं शीघ्रपुत्रो महारथः । कृत्वा कृतवर्गाच्च पुत्रं तव परीततः ॥ ४४ ॥ तस्मिन्
विलुण्ठिते सैन्ये शलाघ्नस्य पदानुगाः । गाभीषड्वयन्वा विस्फाट्य धनुस्नानहन्तउरैः
॥ ४५ ॥ युधिष्ठिरस्तु मद्रेशमभ्यधाय दमर्षिनाः स्य संचोदयन्नश्वान् वृत्तघर्णात्मनोजवान्
॥ ४६ ॥ तत्राद्भुतमपदयाग कुन्तीपुत्रे युधिष्ठिरे । पुत्र मूढा मृदुर्दान्तोऽसत्तदा दान

को जोकि मूर्खके समान प्रकाशमान और सुवर्णसे अलंकृतथी काटा । ३८ । हेवडाह
देनेवाले भीमसनकी वह धजा जोकि क्षुद्रवृंदिहाओं के बड़ेजालते सुन्दर दर्शन
और चित्त रोचक थी युद्धभूमि में गिरपड़ी । ३९ । फिर राजाने उसके उस धनुषके
जो कि रथोंसे जटित और गजराजकी मूँहके समान था तीक्ष्णभारवाले शुरप्रसे
काटा । ४० । उसटूटे धनुषवाले तेजस्वी पराक्रमीने रथशक्तिमें आपकेपुत्रकोछाती
पर छेदा तब वह रथके बैठने के स्थानपर गिरपडा । ४१ । तब उसके भयेतहोनेपर
भीमसेनेने हुरससे उसके सारथीके शिरकोकाटा । ४२ । हे भरतवंशीराजा धृत
राष्ट्र तब उसके बड़े घोड़े जिाका कि सारथी मारागया रथको लेकर दिशाओं
को भागे उस हेतुमें बड़ा हाहाकार हुआ । ४३ । वरा धनुषान् भंडवस्यामा कृपा
चार्य, कृतवर्मा, आपकेपुत्रके चाहनेवाले यहसब रक्षाके निमित्त उसकी औरकी
दौड़े ४४ । उस सेनाके चलायमान होनेपर उसके पीछे भागेवाले लोग भयभीत
हुये तब माण्डवीय धनुषधारीने धनुषको टंकारकर उनको बाणोंसेमारा । ४५ । फिर
क्रोधवृत्त युधिष्ठिर चित्तके समान शीघ्रगामी अपने श्वेतवर्ण के घोड़ेको चलाय
मान करता राजामद्रके सम्मुख दौड़ा । ४६ । वहाँ हमने कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिर में

standard of Bhim, fitted with small bells and pleasing to the eye, fell
down on the ground. The king cut also his gem bodecked bow, like
the trunk of an elephant, with his sharp edged arrow. 40. Bhim
pierced your son's breast with a spear and he fell down on his seat
in the car. Then Bhim cut down the head of his driver with an
arrow. The driverless horses ran away with the car and there were
cries of dismay raised from all the warriors. Mighty Ashwathama
Kripacharya, Kritvarma and his other well-wishers ran on to help him.
During that hubbub his followers were confused and the wielder of
Gandiv hit them with his arrows. Then Yudhishtir in his car
drawn by white horses, swift like the mind, attacked the king of

नोभयत् ॥ ४७ ॥ त्रिवृताक्षस्तु कौन्तेये पेषानश्च मन्थुयाच्चिच्छेत् योधाभिषेकं
 भद्रैश्च शतसहस्रशः ॥ ४८ ॥ या या प्रत्युद्ययोः सेना तां ता ज्येष्ठ सः पाण्डव । शरै
 रपातयद्वाज्रं गिरिन्यज्ञैरिवोत्तमैः ॥ ४९ ॥ साश्वमूतध्वजस्थान् गयिनः पानयन्
 पट्टन् । आक्रीडदेको घलजान् पयनस्तोयदानिव ॥ ५० ॥ साश्वारोहाश्च तुरगान् पत्नी
 श्वैश्च सहस्रशः । व्यपाथयत् संप्राप्ते क्रुद्धो रुद्रः पशूनि च ॥ ५१ ॥ शूम्यापाथोघनः कृत्वा
 शरवर्षे समन्वत । अश्वद्रवत मद्रेश तिष्ठ शल्येति चाग्रधीत् ॥ ५२ ॥ तस्य तच्छ
 रितं दृष्ट्वा संप्राप्ते भीमकर्मणः । धिप्रसुस्तावका सर्वे शल्यश्वेन समभ्यात् ॥ ५३ ॥
 तस्मात्तु सुसहस्रैः प्रभाष्य सल्लिङ्गश्रुत्वा । समाहूय तदाऽप्योर्ध्वमर्त्सुर्ग्रीः समीपयन्
 ॥ ५४ ॥ शल्यस्तु शरैरेण युर्विष्टरवाफिरत् । मद्रराजश्च कौन्तेय शश्वरैरवाफि

अपूर्व चमत्कार को देखा कि जो प्रथम मृदु और जिन्दगी होकर फिर कठिन
 हुआ । ४७ । फिर फैलेनेत्र क्रोधसे कम्पायमान कुन्तीकेपुत्र युधिष्ठिरने तीक्ष्णधार
 भलों से लाखों शूरीशोंको मारा । ४८ । हे राजा वह बड़ा पाण्डव जिस सेनाके
 सम्मुख गया उस सेनाको बाणोंसे ऐसा गिराया जैसे कि उत्तम वज्रों से पर्वतों
 को गिराते है । ४९ । अकेला पराक्रमीघोडे सारथी धजा और रथममेत बहुते
 रथ सवारों को गिराता ऐसा क्रीडा करने वाला हुमा जैसे वायु बादलोंको गिराकर
 क्रीडा करनेवाला होता है । ५० । उसने युद्धमें अश्ववार घोडे और पतियों को
 ऐसे हजारों प्रकारसे नाशकिया जैन कि क्रोधरूप रुद्रनी पशुओंका नाश करते
 हैं । ५१ । चारोंओर बाणोंकी वर्षामे रणभूमिको निर्जन करके राजा मद्रके सम्मुख
 जाकर तिष्ठरश्वों को किया । ५२ । आपते सब शूशीर उमभयकारी कर्मकत्त
 युधिष्ठिरके उत्कर्म्मको युद्धमें देखकर भयभीतहुये फिर शल्य उसके सम्मुख गया
 । ५३ । तब वहदोनों अत्यन्त क्रोधयुक्त शस्त्रोंको वजाकर परस्पर बुलाते, और
 घुडकतेहुये सम्मुखहुये । ५४ । तब शल्यने बाणोंकी वर्षासे युधिष्ठिरको पीड़ामान
 किया और कुन्तीकेपुत्रने भी बाणों की दृष्टियोंसे राजाशल्यको ठहादिया । ५५ ।

Mudra Then we saw the wonderful prowess of Yudhishtir who,
 mild in the beginning was hard at last. Then with eyes dilated in
 anger, he killed thousands of warriors with his arrows. He slew the
 warriors with his arrows, in whatever direction he went, as moun
 tains fall down by vajra. Making horses, drivers, bannors and
 cars fall down with his arrows, he dispersed them as the wind does
 the clouds 50 He destroyed the horse and foot in thousands of
 ways as Rudra destroys animals. Annihilating the people of the
 army, he faced the king of Mudra and said to him, 'Saty, saty'.
 Seeing the prowess and the dreadful deeds, the warriors were terrified.
 Shalya again opposed him. They attacked and challenged each
 other with the blasts of conchs and wounded each other with their

रत् ॥ ५५ ॥ व्यदृश्येतां तदा राज्ञः कङ्कपत्रिभिर्गहने उद्भिन्नवर्धिते शरीरे मद्राजः
 युधिष्ठिरो ॥ ५६ ॥ पुष्पितापिय रेजात्रेवने शालमालिनिशुकौ । दीप्यमानौ महात्मानौ
 नेदुतुर्गुह्यदुर्मर्कौ ॥ ५७ ॥ दृष्ट्वा सर्षाणि सैन्यानि नाध्यवस्यस्ततोऽजायम् । ह्रवा
 मद्राधिपं पापौ भोक्ष्यसेय घनुन्धराम् । शल्यो वा पाण्डवं ह्रवा दद्याद्दुर्व्योचनाय
 माम् ॥ ५९ ॥ इतीय निश्चयो नाभूद्योधानां तत्र भारत । प्रदक्षिणमभूत् सर्वं घर्मरा
 जस्य युष्यत ॥ ६० ॥ ततः शरशतं शल्यो मुनोजापयं युधिष्ठिरे । घनुन्ध्रास्य शिता
 भ्रेण धाम्नेन निरकृन्तत ॥ ६१ ॥ सेन्यत् कामुकतादाय शल्यं मारयतेस्त्रिभिः । अवि
 श्यत् कामुकञ्चास्य हुरेण निरकृन्तत ॥ ६२ ॥ अघास्य निजघानाश्वात्तुरो नतप
 चाभिः । द्वाश्यामतिश्रितामाश्यामुमौ च पार्ष्णिगसारथी ॥ ६३ ॥ ततोऽस्य दीप्यमानेन
 पीतेन विशितेन च । प्रमुखे वस्त्रमानस्य भङ्गेनापाद्गदघजम् । ततः प्रमग्नं तत् सन्धं
 द्यौर्व्योधानमरिन्धम् ॥ ६४ ॥ ततो मद्राधिपं द्वौणिरश्यघावच्छयाकृतम् । आरोग्य स्वर
 तव शल्य और युधिष्ठिर दोनों कीर वाखोंसे चिनेहुये रुधिरसे पूर्ण शरीर दिखाई
 पड़े । ५६ । बल्ले प्रकृष्टित शालवनी और किंशुतनाम वृक्षांके समान दोनों
 शोभायमानहुये उन प्रकाशमान प्राणोंके घा से दुर्भेद दोनों पक्ष देखकर सब
 सेनाके लोगोंने विजय को नहीं निश्चय किया अर्थात् यह तङ्कल्प विकल्प करने
 लगे कि अब न जानिये पाण्डव शल्यको मारकर पृथ्वीको भोगेगा व पाण्डव
 को मारकर शल्य इस पृथ्वी को भोगेगा, अथवा शल्य पाण्डवको मारकर इस
 सब पृथ्वीको धनके अर्थदेगा । ५९ । हे भरतर्षभ वहाँ शस्त्रीरोंको यह निश्चय
 नहीं हुआ युद्ध करनेवाले घर्मराज ने सब सङ्कनादिक दाहिनेहुये । ६० । इसके
 पीछे शल्यने सौ बाणोंको युधिष्ठिरपर छोड़ा और उसके धनुषको तीक्ष्णधार
 वाले चुरसेकाटा । ६१ । उसने दूसरे धनुषको लेकर शल्यको सानसौ बाणोंसेछेदा
 और चुरसेही उसके धनुषकोकाटा । ६२ । फिर टेढ़ेपर्ववाले बाणोंसे उसके चारोंपोंडों
 को मारा और तीक्ष्ण दोबाखों से दोनों आगे पीछे बाखों समेत सारथी कुपे
 मारा । ६३ । फिर प्रकाशित पीतवर्ण तीक्ष्णधार बाण से और भङ्गसे उसकी
 ध्वजा को काटा हे शत्रुओं के विजय करनेवाले इसके अनन्तर यह दुर्व्योधान

arrows. 55. The bodies of both Shalya and Yudhishtir were pierced all through with arrows and looked like Kins'uk or Shalmali trees in bloom. None of the warriors could draw conclusion of victory from their battle, i. e. they did not know whether Shalya would slay Yudhishtir or the latter would slay the former. Good omens appeared to the right of Yudhishtir during the battle. 60. Then Shalya discharged a hundred arrows at Yudhishtir and cut his bow with a dart. He took up another bow and wounded Shalya with three hundred arrows, cutting his bow with an arrow and breaking his standard with another. At this Duryodhan's army dispersed. A-hwa-

यञ्चैतं शररताप्य प्रयुज्यते ॥ ६६ ॥ मुहुर्त्तमिष श्री गत्या नर्दमाने युधिष्ठिरे । स्थित्वा
ततो मद्रूपनिरस्यं स्वस्त्रानमाधित ॥ ६७ ॥ त्रिधिवत्, कालिवत् दिव्य महाम्युनिना
दितम् । सञ्जयप्रोपकर ॥ द्रिपता लोमहर्षणम् ॥ ६८ ॥

इति शन्यपर्वणि शरपवधपंचाणि शल्ययुधिष्ठिरयोश्चैव पौडशो अध्यायः १३ ॥

सञ्जय उवाच । अथाप्यन्नुरादाय चलवधेग उत्तरम् । युधिष्ठिरं मद्रूपनिर्विधा
सिंह इवानदत् ॥ १ ॥ ततः स शरवर्षेण पञ्जस्य इव वृष्टिमान् । अश्ववर्षेणैवैवैधार्मा
क्षत्रियात् क्षत्रियवर्षमः ॥ २ ॥ सारयाकिं दशभिर्विधम् अभिरतेनं त्रिभिस्तथा । सहस्रैश्च
त्रिभिश्चैव युधिष्ठिरमपोडयत् ॥ ३ ॥ तस्मान्महामहेश्वरान् सादयत् सारथकुञ्ज

वी सेना छिन्न भिन्न होगई । ६५ । उसके पीछे आदपत्थामाजी उस दशापाले
शल्यकी ओर दौड़े और उसको अपने रथपर बैठाकर क्षीघ्रता से चलदिये । ६६ ।
बहदौनों एक मुहुर्त्त चलकर युधिष्ठिरके गर्जने पर निपतहुये तब राजा शल्य
उम दूसरे रथपर सवार हुआ । ६७ । जोकि त्रिधिवे अनुसार अश्वकुत षष्ठे बादल
के समान शब्दायमान वड़े बड़े अस्त्र शस्त्र यन्त्रोंसे पूर्ण और अश्वों के रोताओं
का खडा करने वाला था ६८ ॥

अध्याय १३ ।

मजय बोले कि इनके अनंतर पराक्रमी राजाशल्य वड़े वेगवान दूसरे धनुष
का लेकर युधिष्ठिरको छेदताहुआ सिंहके समान गर्जा । १ । फिर बड़ा माहती
क्षत्रियोंमें श्रेष्ठ शल्य वर्षाके बादलों के समान धारोंकी वर्षा से क्षत्रियोंके ऊपर
वर्षा करने लगा । २ । सास्वकि को दशवाण से भीमसेन को तीनवाणसे सहदेवको
भी तीनवाण से छेदकर उसने युधिष्ठिरको पीड़ामान किया । ३ । विशिस्तनाम धारों

athama rushed towards Shalya and took him on his car They
approach Yudhishtir for a time and then Shalya mounted another
car, properly furnished, rumbling like thunder, full of arms and
weapons and terrifying the foe. " 68.

CHAPTER XVII

Sanjaya said : Then Shalya took up another hand and strong
bow and reared a lion's roar after wounding Yudhishtir. Then
he showered arrows like rain over the kshatriyas. He wounded

रथ । अर्धबाणस विशलेच्छताभिरिव कुञ्जरान् ॥ ४ ॥ कुञ्जरान् कुञ्जरारोहाम
 भ्रानदधनपायिनः । रथांश्च रथिभिः शाले जघान रथिनाम्बर ॥ ५ ॥ पाण्डुविच्छेद
 च तथा सायुधान् वतनानि च । चकार वै महीं यो वै स्तीर्णो धेर्दी कुशैरिव ॥ ६ ॥ तथा
 समरिसंगेन प्रसृतं मृत्युमिषान्तकम् । परिवृष्टुर्भूतं तुष्टा पाण्डुपाञ्चालसोमना
 ॥ ७ ॥ स भीमसेनश्च शिशुश्च नत्ता माद्रुपाश्च पुत्री, पुत्रपत्नीरा । समागतं भीमवलेन
 राजा पर्याप्तमन्योऽयमथाहवयन्त ॥ ८ ॥ ततस्तु दूरा, समरे नरेन्द्र महेदवरं प्राण
 वृत्ताम्परिच्छम् । सायार्थ्यं धेनं समरे नृधीरं जघ्नुः शैरः पश्चिमिहप्रवेगैः ॥ ९ ॥ संर
 द्विजे मीमंसेनेन राजा माद्रोऽसुताभ्यामथ माजयेत् । मद्राधिपं पश्चिभरप्रपंगस्तना
 तरे धर्मसुते भिजम्भे ॥ १० ॥ ततो रणे तावकानां रथीघाः सवीर्य मद्राधिपति शरा

मे उन बड़े पनुपुत्रियोंकी घोड़े रथ और कुवरों समेत ऐसा पीड़ामान किया
 जैसे कि उल्कामों से हाथियों को पीड़ित करते हैं । ४। उस रथियोंमें भेष्टनेहाथी
 हाथीके तयार घोड़े वे डोंके सवार और रथोंको रथ सवारों समेत मारा । ५। और
 शीततासे शस्त्रों और अज्जाओं समेत ध्वजाओंको काटा और पृथ्वीको, गुरवीरों
 से ऐसा आच्छादित करा दिया जैसे कि यज्ञही वेदीको कुशामों से आच्छादित
 करते हैं । ६। अत्युन्न कोषयुक्त पाण्डव पांचाल और सोमकोंने उसमकार कालके
 समान शत्रुओं की सेनाके मारनेवाले शल्यको चारोंओर से घेर लिया । ७। इसके
 पीछे पुत्रोत्तम मकुल सहदेव सात्यकि और भीमसेनने भयकारी बलवाले राजा
 युधिष्ठिरसे भिड़ेदुये समर्थ शल्यको परस्पर बुलाया । ८। इसके पीछे गुरोंने उन
 गुरवीरोंमें भेष्ट नरवीर महाराज शल्यको पाकर और युद्धमें उसको घेरकर बड़े
 वेगवान् वाणोंसे पागल किया । ९। भीमसेन, मकुल, सहदेव और सात्यकिसे भच्छे
 मकार रक्षित धर्मयुत्र युधिष्ठिर ने बड़े वेगवान् वाणों से राजामद्रको छातीपर
 बाणछ किया । १०। इसके पीछे अरुणी अलंछत बड़े उत्तम आपके रथियों के
 समूहोंने युद्धमें राजामद्रका वाणोंसे पीड़ामान देकर दुर्घोषनके मने शल्यको

Satyaki with ten arrows; Bhim and Sahadev with three each and
 Yudhishtir with many. He hit them and their horses, cars and
 yokes as elephants are attacked by sparks of fire. He cut down the
 elephants, cars and horses with their riders 5. He dexterously cut
 down the standards and filled the earth with the bodies of warriors as
 altars are spread over with Kusha grass. The Pandavas, Panchals
 and Somaks, much enraged, surrounded Shalya; the destroyer of foes.
 Then Nakul, Satyaki, Sahadev and Bhim challenged Shalya who was
 engaged in fighting with Yudhishtir. Surrounding brave Shalya in
 the field of battle, they wounded him with sharp arrows. Protected
 by Bhim, Nakul, Sahadev and Satyaki, Yudhishtir wounded
 Shalya on the breast 10. Your great warriors seeing king Shalya

संम । नराः सर्वे परिघ्न्युः सुसज्जा दुर्योधनस्यानुमते समन्तान् ॥ ११ ॥ ततो द्रुप
मद्रजनाधिपान् राजे युधिष्ठिरं समिरन्धर्वावधत् । सद्यपि पाथो नवमि पृथक्कैर्वि
व्याघ्र राजरतुमुते महात्मा ॥ १२ ॥ आकण्ठपूर्णाघतसंप्रयुक्तः शरैस्तथा सद्यति तैल
घोतेः । अन्योन्यमाच्छाद्यतां महारथौ मद्राधिपश्चापि युधिष्ठिरश्च ॥ १३ ॥ ततस्तु
नर्ण समरे महारथौ परस्परस्यान्तरमोक्षमाणौ । शरैर्मुंश विध्वस्तुर्मुंशमौ महा
घैलौ शत्रुभिरप्यधुष्यौ ॥ १४ ॥ तयार्जनुज्यातलानिस्वनेन महान् महेन्द्रवज्राग्रितुल्य
निरुचनः । परस्परं घाणगणैर्महात्मनोः प्रवर्षतोर्मद्रपण्डुवीरयोः ॥ १५ ॥ तौ वीरद्व
व्यांशिशुभ्रकाशां महाघनेष्वागिपयुद्धिनाविव । पिपाणनौ नागधराविद्योत्कटौ तत
क्षतुः संपुगजातवर्षौ ॥ १६ ॥ ततस्तु मद्राधिपतिमहात्मा युधिष्ठिरं भीमबलं प्रसह्य ।
विध्वयाघ वीरं हृदयेतिवेग शरेण सूर्योग्निममपमेण ॥ १७ ॥ ततोऽति विद्योय युधि
ष्ठिरस्त्वदा सुसंपुक्तेन शरेण राजन् । जघान मद्राधिपानि महारमा मुदञ्च लेभे

आगे से मध्यवर्ती किया । ११ । इसके पीछे राजामद्रने युद्धमें युधिष्ठिरको शीघ्रता
पूर्वक सातबाणों से घायल किया हे महाराज महात्मा युधिष्ठिरने भी समुल युद्ध
में पृथक्नाम नौ बाणों से उसको घायल किया । १२ । तब युद्धमें दोनों महारथी
युधिष्ठिर और शल्पने कानतक खिंचकर छोड़ेहुये तैलसे साफ किये हुये बाणोंसे
परस्पर टकदिया । १३ । फिर परस्पर अवकाश देंदेनेराले शत्रुओं से निर्भय बड़े
बलवान् महारथी राजाओं में श्रेष्ठ दोनोंने शीघ्रता बाणोंसे घटिन घायल किया
। १४ । परस्पर बाण समूहों समेत धनुष खिंचनेराले महात्मा राजाशल्प और युधिष्ठिर
की प्रत्यंघाके ऐसे बड़े शब्दहुये जो कि महाइन्द्रके वज्रके समान शब्दावधान थे
। १५ । वह दोनों महावन में मांसाभिलाषी व्यक्तियों के बच्चों के समान घमनेराले
हुये और युद्धमें अशुद्धीर दोनोंने बड़े इन्ती हाथियों के समान परस्पर घायल
किया । १६ । उसके पीछे महात्मा राजामद्रने भयानक पराक्रम वाले राजा युधिष्ठिर
को रोककर सूर्योग्निके समान प्रकाशित बाणोंसेउत्तवड़े वेगवान् वीरको हृदयपर
घायल किया । १७ । हे राजा इसके पीछे अत्यंत घायल युधिष्ठिरने भी अच्छे
प्रकार चलाये हुये बाण से राजामद्र को घायल किया और बहुत आनन्द को

thus surrounded by the enemies, came round him by Duryodhan's order. Shalya wounded Yudhishtir with seven arrows and the latter pierced the former with nine darts. Both the warriors covered each other with well aimed arrows and wounded each other. The sounds of their bowstrings were like those of the vajra of Indra. 15. They roamed like young lions in search of flesh and wounded each other like two large-tusked elephants. Having checked Yudhishtir, the king of Madra wounded him on the breast with arrows bright like the Sun or fire. Yudhishtir wounded Shalya with a well-aimed arrow and rejoiced at his success. Shalya with eyes red

शुभ्रवः क्रुद्धाम् ॥ १८ ॥ ततो मुहुस्तादिभ्यः पार्थिवेन्द्रो लक्ष्मणा सन्नाक्रोपसंरक्तनेत्रः ।
 शतेन पार्थिवरतिजघान सहस्रेणप्रपतिमपभायः ॥ १९ ॥ त्वरन्ततो धर्मसुतो महात्मा
 शल्यस्य क्रुद्धो नवभिः पृथक्कैः । मिस्था हास्नापनीयञ्च धर्मजघान पद्भिस्त्वारतः
 पृथक्कैः ॥ २० ॥ ततस्तु मद्राधिपतिः प्रहृष्टा धनुर्धेकृष्य प्रपृत्रन् पृथक्कान् । द्वाभ्यां
 क्षुराभ्याञ्च तथैव गत्तश्चच्छेद् चापं क्रुद्धुक्कवस्य ॥ २१ ॥ तत्र ततोऽन्यत्र समर
 प्रभृत्त राज्ञो धनुर्घोरतरं महात्मा । शल्यं हि पार्थिव्याघ शरैः समन्तात् यया महेन्द्रो
 भेषुर्ध्वं शिंताप्रः ॥ २२ ॥ ततस्तु शरैर्नो नवभिः पृथक्कैर्भूमस्य राक्षस्य सुधिष्ठिरस्य ।
 निहृत्य रौक्मे पृथुवर्मणी तथोर्विदारजामास भुञ्जी महारमा ॥ २३ ॥ ततोऽपरेण ज्वल
 नाकतजसा क्षीण ॥ क्षो धनुर्कन्दमाघ । कृपश्च तस्यैव जघान सन् पद्भिः शरः सोभि
 म्बलं पपात ॥ २४ ॥ मद्राधिपत्यापि युधिष्ठिरस्य धीश्चतुर्मिर्निजघान पाहान् । वाहाश्च
 हरवो ध्वकारान् ॥ हारिमा योवक्ष्य घतोऽसुरस्यं गतः ॥ २५ ॥ तथाहने राजनि भीमसंरा

पोषी । १८ । इस पछे इन्द्रके समान प्रभाव वाले क्रोधसे रक्त नेत्र महाराज शल्य
 ने एक सुदृतीही भेषधतता को पाकर सौ बाण से शीघ्रही पाण्डव को घायल
 किया । १९ । तब शीघ्रता करते धर्मपुत्र महात्मा ने क्रोधयुक्त होकर पृथक्कनाम
 नौबाणों से शल्यको छाती और मुखके कंधव को छेदकर दूसरे छापृथक्कों से
 भी घायल किया । २० । इसके पछे वड़े प्रसन्न राजाभद्रो धनुषको खिंचकर
 पृथक्कोंको छोड़ा और कौरवोंमें श्रेष्ठ राजायुधिष्ठिरके धनुष दोबाणोंसे काटा । २१ ।
 इससेकार युद्ध में महात्मा राजायुधिष्ठिर ने भी वड़े घोर दूसरे नवीन धनुषको
 लेकर तीक्ष्णतोक वाले बाणों से शल्यको चारों ओर से ऐसे घायल किया जैसे
 कि महाइन्द्र ने नहुषिक अनुरको घायल किया था । २२ । तब महात्मा शल्य ने
 नौपृथक्कोंसे भीमनेत्र और राजा युधिष्ठिरके सुन्दर स्वर्णपयी कवचोंको काटकर
 इन दोनों की भुजाओंको घायल किया । २३ । इसके पछे सूर्याग्नि के समान
 प्रकाशित हुए से राजा के धनुष को तोड़ा और कृपाचार्य ने छः बाणों से उसके
 सारथीको मारा तब वड़ सारथी सम्मुख गिरपड़ा । २४ । राजाभद्र ने

in anger coming soon to consciousness wounded the Pandav with a
 hundred arrows. Yudhishtir in his rage wounded Shalya with nine
 arrows and pierced his armour with six more. 20. Then cheerfully
 shooting arrows, he cut down Yudhishtir's bow with two darts.
 Yudhishtir took up another new bow and wounded Shalya with
 sharp pointed arrows as Indra had done Namuchi. Shalya pierced
 through the gold armours of Yudhishtir and Bhim and wounded
 them on the joints. 23. Then he cut down the king's bow with a
 bright dart. Kripacharya slew his driver and made him fall down
 from the car. The king of Madra slew the four horses of Yudhishtir
 and destroyed the warriors of Yudhishtir. 25. At this Bhim

मद्राधिपस्याशु तनो महात्मा । तिरथा धनुषद्वन्द्वता शरेण द्वाश्यामविधत् सुभूश
 नरन्द्रम् ॥ २६ ॥ अथापरणस्य जहार पन्तु कायात्तिर स-महनीयमध्यात् । जघान
 चाश्वश्वर स शीघ्र ततो भृश कुपितो भीमसेन ॥ २७ ॥ तमप्रणो सर्वधनुर्धरा
 णामकञ्चरन्त स गेति गम् । भीम शनेन द्यकिरकृटराणा माद्रिपुत्र सहदश्वस्यैषा
 ते सायकैर्मोहित वीक्ष्य शशय भीम शरैः स्व चकर्त्त व्रमं । २८ ॥ स भीमसेनेन
 निकृत्तवर्मा मद्राधिपञ्चमं सहस्रनारम् ॥ २९ ॥ प्रवृत्त खड्गञ्च यथामहात्मा प्रस्कण्य
 कुम्भीसुतमश्वधावत् । तिरथा रवेशां नकुलस्य सोध युधिष्ठिर भीमधलोऽश्वधावत्
 ॥ ३० ॥ तञ्चापि राजानमर्धात् पतन् क्रुद्ध ययवान्तकमापत-तम् । धृष्टद्युम्नो द्रौप
 द्या शिखण्डी शिनञ्च नत्ता सहसा परायु । ३१ ॥ अथास्य चर्मप्रतिमं व्यकृन्तञ्चो
 मोमहात्मा दशभिः पृवरैः । खड्गञ्च महतन चकर्त्त मुष्टौ नदन् प्रहृष्टवत् सैव
 मध्ये ॥ ३२ ॥ तत् कम सीमस्य बर्माक्षय हृष्टास्ते पाण्डवार्ता प्रधरा रथीघा. नादं प्रच
 भी चारोंभोरसे युधिष्ठिरक च रथेदों का मारकर उत्र अर्धराजके, शूरधीरोंका
 वडा विनाश किया । २५ । राजा के उस दशावाळा करनेपर महात्मा भीमसेन
 ने सीमसे तीव्रपापीवाणों राज मद्रके धनुष होकाटार दा वाणोंने राजा को कठिन
 घायल किया । २६ । फिर उपाय पूर्वक दूसरे वाणोंने उसके सारथी के शिर
 को देह से जुदा किया और महाक्रोधित होकर उस व सुपुत्र ने शीघ्र ही चारों
 घोड़ों को भी मारा । २७ । और सब धनुषधारियों में भेष्ट उत्र भीमसेनने, युद्धमें
 भकेले घमनेवाले बड़े बेगवान को सौवाणों से घायल किया इसीप्रकार माद्रीके
 पुत्र सहदेवने भी भीमसेन के चापकों से शल्पको मोहित देखकर वाणों से उस
 के कवचको काटा । २८ । भीमसेन और सहदेवके हाथने दूटे कवचवाला महात्मा
 राजामद्र इनार नत्तत्र रखनेवाली दाल । २९ । और खड्गका लेकर रथसे ऊदके
 कुम्भीके पुत्रके सम्मुख दौडा फिर बहभयकारी पराक्रमवाला गजुलके रथके ईशादंड
 को काटकर युधिष्ठिर के सम्मुख दौडा । ३० । तदनन्तर धृष्टद्युम्न द्रौपदीके पुत्र
 शिखण्डी और सात्यकी भी अकस्मात् उस क्रोधयुक्त उछलते और कालके समान
 आनेहुये राजा शल्पके सम्मुखहुये । ३१ । तत्र अत्यन्त प्रसन्न और गर्भते महान्वा

cut down Simlya's bow and wounded him with two arrows. He cut down the head of his driver and in his rage slew his four horses. Bhim the best of archers wounded him with a hundred arrows. In the same manner, Sahadev the son of Madri, seeing Shalya wounded by the arrows of Shalya, pierced through his armour with two arrows. With his armour pierced by Sahadev, Shalya took up his many mowed shield and sword and jumping down from his car, rushed against him. He cut down the yoke of Nakul's car and rushed at Yudhishtira. 30 Then Dhrishtadyumna, the sons of Draupadi, and Sa'yaki too, faced king Simlya who was coming like Dault

बुधंशुभुरभयस्तः । शंखाद्य दधुः शशिसन्निकाशान् । ३३ ॥ तेनाथ शब्देन विभी
 चनेन तवामिमुंश्च वलमप्रहृष्टम् । स्वदाभिसुनं कथिरोक्षिताङ्गं विसहकल्पञ्च तथा
 विषण्णम् ॥ ३४ ॥ स मद्राज सहस्रायकाणां भीमाग्रं । पाण्डवोऽधमुख्यै युधिष्ठि
 रस्याभिसुंश्च जवेन सिद्धो यथा मृगवेतो प्रयानः । ३५ ॥ स धर्मराजो निहताश्चसूत
 क्रोधेन द्वाभ्युत्थलनप्रकाशः । दृष्ट्वा तु मद्राधिपतिं स्म तूर्णं समश्यघातमर्षिघलेन
 ॥ ३६ ॥ गोविन्दघातये रथितं विचित्र्य दधे मीनं शल्यविनाशनाथ । स धर्मराजोभि
 हताश्चसूते रथे तिष्ठन् शक्तिमवाभिकांक्षन् ॥ ३७ ॥ तच्चापि शल्यस्य तिशम्य कर्म
 तन्वात्मनोभागमवावशिष्टम् । स्मृत्या नमः शल्यवधेयतात्मा यथोक्तमेवावरजस्य
 चक्रे ॥ ३८ ॥ स धर्मराजा मणि ह्रमदण्डां जप्राह शक्तिं कनककाशाम् । नेत्रे च
 भीमसेन ने दश पूरको से उसकी अनुपम ढालको काटा और आपकी सेना में
 गर्जेतुहुये उसने खड्गको भी पकड़ने की मूठपर काटा । ३३ । उन पाण्डवों के
 अत्यन्त उत्थम और प्रसन्नीचत रथ समूहों ने भीमसेन के उस कर्मको देखकर बड़े
 आश्चर्यित होकर शब्दकि ये और घन्ट्रमाके समान प्रकाशित शब्दों की वजाया
 । ३४ । फिर उन भयकारी शब्दसे आपकी अजेय सेनाके समूह व्याकुल कैंधिर
 से लिप्त शरीर और अचेत होकर नाशमान हुये । ३५ । भीमसेन जिनका अग्रवर्ती
 था उन पाण्डवों के श्रेष्ठ शूरवीरों से घायल वह राजामद्र अकस्मात् तीव्रता से
 युधिष्ठिरके सम्मुख ऐने गया जो कि मृगके पकड़ने को निह जाता है । ३६ ।
 मृतक घोड़े और सारथीवाले क्रोधमे उज्वलित रूप अग्निके समान प्रकशित
 उस धर्मराजने बलसे सम्मुख दौड़नेवाले अपने शत्रु शल्यको देखकर । ३७ ।
 श्रीमद्भी गोविन्दभी के वचनको विचारकर शल्यके मारनेका विचार किया मृतक
 घोड़े और सारथीवाले रथपर नियम उम धर्मराजने शक्तिको चाहा । ३८ । उस
 स्थानपर भी महात्मा युधिष्ठिरने महात्मा शल्यके कर्मको देखकर और शेष बचे
 हुये अपनेही भागको विचार करके शल्यके मारने में ऐसे वित्त किया जैसे कि
 श्रीकृष्णजी ने कहाया । ३८ । उस धर्मराज ने मणि और सुवर्ण से जड़ित दण्ड

Bhim, with a cheerful roar, cut his shield and a ord. The Pan
 davas wondered at Bhim's prowess and blew their white conchs.
 Your warriors were perplexed on hearing that noise and fainted
 with the loss of blood. Wounded by the Pandavas led by Bhim,
 Shalya hastened to face Yudhishtir as a lion faces deer
 35 Glorious Yudhishtir in rage, seeing his adversary advance
 to rans him, remembered the words of Govind and thought of
 slaying Shalya. He took up a spear on his car. Seeing Shalya,
 before him and remembering that it was his own duty to slay him,
 Yudhishtir thought of slaying him according to the prediction of
 Krishn He took up a jewelled spear and opening his eyes wide

दीपे सहसा विवृत्य मद्राधिप क्रुद्धमना निरक्षत ॥ ३९ ॥ निरीक्षितो वै नरदेव राजा
 पूनात्मना निर्हतकल्मसेण । जभूष यद्गुस्मसा-मद्राजस्तद्वज्रं । मे प्रतिभोति राजन्
 ॥ ४० ॥ ततस्तु शक्तिं रुचिरोद्भ्रष्टा मणिरजालाज्जलिना प्रदांताम् । 'चिक्षी' वै गत
 सुभृश महात्मा मद्राधिपाय प्रथर क्रुद्धगाम् ॥ ४१ ॥ दासामथैता महतो बलेन सवि
 स्फुलिङ्गा सहसा पतन्तीम् । प्रैक्षन्त सर्वे कुरव समेता द्विवो युगादो महतीमिषी
 काम् ॥ ४२ ॥ ता कालरात्रीभिव पाशहस्तां धमस्य धात्रीभिव चाग्ररूपाम् ॥ स ब्रह्म
 दण्डप्रतिग्राममोर्षा ससर्ज्ज यत्तो युधि धर्मराज ॥ ४३ ॥ ग धस्त्रगप्रयासनुपानभोज
 नैरभ्यर्चिता पाण्डुसुते प्रयत्नात् । समरक्षणाग्निप्रातमां उवलन्तीं 'दृष्ट्वा' मधयवाङ्गिर
 सीमिवोप्राम् ॥ ४४ ॥ इशानहेतो प्रतिनिर्मिता-ता त्वष्ट्रा रिपूणामसुदेहभक्ष्याम् ।
 भूष्यन्तरीक्षन्तु जलाशयानि प्रसह्य भूतानि निहन्तुर्भाशाम् ॥ ४५ ॥ घण्टापत्राक्रमिषि
 षज्जमाजं बद्धयैस्त्रिषा तपनीयदण्डाम् । स्वप्ता प्रयत्नाभिप्रमेत् क्लृप्ता मह्यद्विषेभन्त

पुक्त सुवर्ण के समान प्रकाशित शक्ती को लिया और -अकस्मात् प्रकाशवाच
 नेत्रोंको खोलकर क्रोध से पूर्ण चित्रने राजामद्रको देखा । ३९ । उस पवित्रात्म
 और पापोंसे रहित नरदेव राजा युधिष्ठिरसे देखाहुआ यह शल्य अत्यन्त प्रस्म
 नहीं हुआ हे राजा यही मुझको बड़ा आश्चर्य होताहै । ४० । इसके पीछे कौरवों
 में अत्यन्त भ्रष्ट महात्मा युधिष्ठिरने उस सुन्दर उग्रदेवकी, मणियों से जड़ित
 अग्निरूप अत्यन्त प्रकाशित शक्तिको बड़े वेगसे राजामद्रके ऊपरफेंका । ४१ । उस
 के पीछे सब इकट्ठेहुये कौरवों ने उस प्रकाशित और स्फुलिंग, संयुक्त अकस्मात्
 बड़े वेगसे गिरनीहुई शक्तिको ऐसे देखा जैसे कि मलयकाल के समय आकाशमें
 बड़ी उल्काओं को देखते हैं । ४२ । पाशपारी कालरात्रिके समान उपमाराजकी उग्र
 रूप धात्री के समान महददण्डकी मूरत वस सफल शक्तिकी बुद्धमें उपाय करने
 वाले धर्मराजेने छाँड़ा । ४३ । जो कि पाठवोंकी ओरसे बड़े उपाय पूर्वक सुगंध
 माला, आसन, भोजन और पानसे पूजित सम्बत्तकनाम अग्निके स्वरूप उन्नित
 रूप अथर्वागिरसी नाम उग्रकृत्वाके समान । ४४ । शिवजी के लिये त्वष्टा देवताकी
 बनाईहुई शत्रुओंके प्राण और शरीरों की भक्षण करनेवाली और इत्करके पृथ्वी

in 1959, looked at the king of Maira. It is a wonder that Shalya was not burnt down by the angry gaze of Yudhishtir, 40. Then Yudhishtir hurled at Shalya the bright spear studded with jewels. The kauravas saw the spear falling like a meteor. Yudhishtir discharged it like the staff of Yam. It was kept carefully by the Pandavas amid sweet scents and garlands and was worshipped by them. It was made by Twashta for Satv and was the destroyer of the lives and bodies of foes as well as capable of slaying aquatic animals. Fitted with bells, banners and garlands, decked with jewels, fitted with a golden staff and made with great application by Twashta it

करीममोक्षाम ॥४६॥ घल्मयत्नादधिकृष्टवेगां मन्त्रैश्च योरैरभिमन्त्र्य यत्नात् । स्वस्त्य-
 मर्गेण म तं वरेण वन्वात् मन्त्राधिपतेस्तदानीम् ॥ ४७ ॥ इतोऽपि पापैर्यभिगज्जमानो
 राराधकापान्तकरं धयेयुम् । प्रसार्यै वाहुं सुदृढं मृपाणि क्राधेन नृपयत्नैव धर्मराजः
 ॥४८॥ त्रांस्यंशपर्यां प्रहितां वृक्षात्किं युधिष्ठिरैणाप्रतिवार्य्यंश्याम् । प्रतिग्रहायाभिन
 मेहं शालवः स्वयंपूनाप्रगतिराजयधारात् ॥ ४९ ॥ सा तस्म मर्माणि विद्वार्य्य शुभ्र
 मुरा विशालाश्च तथैव भिच्छा । विवेश मां तोयनिवाप्रसक्ता यशो विशाले नृपतेषु
 हन्ती ॥ ५० ॥ मासाक्षिकर्णास्थविनिःस्नेतम प्रस्यन्दत्त च प्रणस्यन्मधेन । संसिकगाश्रो
 कधिरैण सौऽध्वत कौऽध्वो यथा स्कन्दहतो महाद्विः ॥ ५१ ॥ प्रसार्यै वाहुं च
 रथाङ्गतो मां स छिन्नवर्मा कुदवग्नेत् । महेंद्रराज्ञाप्रनिमो महारामा वज्राहतं धृष्ट
 निषाञ्जलस्य ॥ ५२ ॥ वाहुं प्रसार्य्यभिमुखो धर्मराजस्यं मन्त्राद् । ततो निपणितः

अन्तरिक्ष आदिकों के रहनेवाले और जलमें रहनेवाले जीवोंके मारने में समर्थ
 । ४६ । घंटा, पताका और बाण यज्ञकी माला रखनेवाली वैदूर्य से जटित स्वर्ण
 मयी दण्डवारी बड़ेनिपम और उपायके द्वारा त्रष्टा देवताकी यतार्हई ब्राह्मणों
 से क्षत्रुता करनेवालों की नाश करनेवाली सफल । ४७ । घल और बड़े उपाय से
 उस वेगवान् शक्तिको घोर मन्त्रों से संयुक्त करके उमराजा मन्त्रके मारनेके निमित्त
 उज्ज्व रीति से छोड़ा । ४८ । जैसे कि, शिवजीने अन्धकके नाश करनेवाले बाणको
 छोड़ाथा उसीप्रकार क्रोधसे नाचतेहुये और हे पापी माराहै इस प्रकार गर्जतेहुये
 युधिष्ठिरने बहुत दृढ़ सुन्दर हाथवाली सुजाको फैलाकर छोड़ा । ४९ । युधिष्ठिरकी
 सब सामर्थ्यसे छोड़ीहुई अपूर्व पराक्रम और घृताकी धारामे अच्छेप्रकार से, हीभी
 हुई अग्निके सहाय उस सुन्दर शक्तिको पकडने के निमित्त सम्पुल गर्ता । ५० ।
 वह शक्ति उसके सब मर्शस्वभों समेत उज्वळ और बड़ी छतीको फटकर
 राधाके बड़े यज्ञको विरुधात करती हुई पृथ्वी और जलमें प्रवेश करगई । ५१ ।
 तब वप शल्य नाक आंस कान और मुखमें निकलनेवाली चेष्टा करनेवाले घाव
 से स्वप्न होनेवाले हरिसे अच्छ प्रकार निम्नाङ्गशेकर जैसे कि स्वामिकार्तिक
 लोके हाथमे घायल कौचनाम षड्हा पर्वत हुआथा । ५२ । उसीप्रकार वह महारामा

was the destroyer of the enemies of Brahmans, 46 Yudhishtir
 hurled it with great force and read over it mantras to slay Shalya.
 'Dancing in anger like Shiv at the time of discharging arrow to slay
 Andhak,' and crying out, "I have slain three," Yudhishtir dis-
 charged it from his outstretched hand Hurlled with great force,
 like fire fed by libations, the spear came upon Shalya, who advanced
 to seize it with a rear. But it broke through his breast and entered
 the ground with great force, 50 Moving his limbs and dropping
 down blood from his body, Shalya was wounded as Kraunch was by
 Kartik. Wounded in the vital parts by Yudhishtir's spear,

सुमाधिन्द्रध्वज इवोच्छ्रितः ॥ ५३ ॥ स तथा भिन्नसर्वाङ्गो रश्मिरेण समुक्षित-
 प्रयुद्धत इव श्रुता मूया स नरपञ्चवः ॥ ५४ ॥ चिरमुक्ता घसुमती प्रियां कान्तामिष
 प्रभु । तत्रैरयैः समास्त्रिष्य प्रमुत्त इव सांभवत् ॥ ५५ ॥ चर्ये घमांमना युद्धे
 निहतो धर्मसूनुना । सम्यग्धुत इव स्विष्ट प्राशान्ताऽग्निरिवाध्वरे ॥ ५६ ॥ शपथा
 विभिन्नहृदयं विप्रयुक्तायुधध्वजम् । प्रशान्तमति प्रदेशं लक्ष्मीर्नैव इवमुद्धत ॥ ५७ ॥
 ततो युधिष्ठिरश्चापमुदायेन्द्रधनुः प्रमद । व्यधत् द्विषतः संख्ये सगरादिव पथ-
 गान् । देहांध्र निशितैर्मदले रिपूणां नाशयत् क्षणात् ॥ ५९ ॥ ततः पार्थिव धार्मिणो
 वृत्ता सैनिकास्तव । निमीलिताक्षाः क्षिप्रवन्तो भूशमन्योन्वयमर्दिताः । स्वन्दन्तो रुचिरं
 वेदैर्विशस्त्रायुधजीविताः ॥ ६० ॥ ततः शलेऽनपतिते मद्राजानुजो युधा । आतुः सर्वे

इन्द्रके गजराजकी मूरत और युधिष्ठिरकी शक्ति से टूटे परमथलवाला शर्य
 भुजाओं को पत्थरकर रथसे पृथ्वीपर ऐसे गिरा जैसे कि वज्रसे ताड़ित पर्वतका
 शिखर होता है । ५२ । इसके पीछे मद्रका राजा धर्मराज के सम्मुख भुजाओं को
 पथरकर इन्द्रकी ध्वजा के समान ऊंचा पृथ्वी पर गिरपड़ा । ५३ । इसप्रकार
 सब अंगोंसे घायल रुचिरसे भराहुआ वह नरोत्तम शर्य मीतिमें सम्मुख जानवाले
 के समान पृथ्वी पर गिरपड़ा । ५४ । वह प्रभु पृथ्वीको अपनी प्यारी स्त्रीके समान
 बहुत काल तक भोगकर गिरताहुआ शोभायमान । ५५ । सब अंगोंसे प्यारी स्त्रीके
 साथ छातीपर मिनक शयन करनेवाले के समान धर्मरामा धर्मयुत्र के हाथ से
 धर्मरूपी युद्धमें मरनेपर इसप्रकार शान्त हुआ । इसप्रकार यज्ञमें अच्छे प्रकार
 होमि हुई स्विष्टनाम अग्नि देवता होते हैं । ५६ । शक्ति से फटा हृदय टूटे शर्य
 और ध्वजावाले मृतक राजा मद्रको इस दशार्मेभी शोभा ने नही छोड़ा । ५७ । इत-
 के पीछे युधिष्ठिरने इन्द्रधनुषके समान प्रकाशवान धनुषको लेकर युद्धमें शत्रुओं
 को ऐसे छिन्न विन्न किया जैसे गड़ड़ तपोंको करना है और तेज सर भयनों से
 शत्रुओं के शरीरोंको एकक्षणपरमेंही नाश करदिया । ५९ । इसके पीछे पाण्डवोंके
 बाण मूर्तसे दकेदूये बंदनेन आपकी सेनाके लोग शत्रुओं को चलाते परस्पर कठिन

Shalya fell down on earth like a mountain peak struck down by
 vajra. He fell down with outstretched hands like Indra's banners.
 With all the parts of his body dropping blood, Shalya fell down as
 if going forward to meet a friend. He fell down on earth as if it were
 over his beloved wife. 66. With all the parts of the body touching
 the ground like the body of a beloved woman, he found rest by the
 hands of Yudhishtir like god Swashti over the fire with libations.
 With his breast, arms and banner broken, Shalya looked glorious even
 in death. Taking up his strong bow and powerful arrows, Yudhishtir
 began to destroy the enemies. 59. Covered with arrows, with eyes
 shut, your warriors were severely wounded with weapons, and shedding

मैत्रेयुः शरीरं पाण्डवमभ्यधात् ॥ ६१ ॥ भिक्ष्याद्य च नरभेष्टो नाराजिर्धूमिस्त्वग्र
 हनस्थापविनि भ्रातृश्च कौर्ण्युद्धदुर्मद ॥ ६२ ॥ तं पिब्याघाशुगैः पशुभिर्धैर्महाजस्त्र
 शिवं धाम्भुक्तव्यास्य चिच्छेदं सुराश्यां भ्रजभेद्यत् ॥ ६३ ॥ तत्रास्य दीप्यमानं सुरदे
 शितेन च । प्रमुखे वर्तमानस्य महसेनापाहरच्छिर ॥ ६४ ॥ सकुण्डलं तद्दृश प
 न्नां शिरो रथात् । पुण्यक्षर्यामय प्राण्य पतन्ते स्वर्गवासिनम् ॥ ६५ ॥ तस्यापकृत्तश
 क्त्वं शरीरे पतितं रथात् । रुधिरैणावभिक्षां हृष्ट्वा सैम्यमभ्यन ॥ ६६ ॥ धिञ्च
 प्रकथये तस्मिन् हते मद्रुपातुजे । हाहाकारं विकुर्वाणा कुण्डो दिप्रदुष्टु ॥ ६७ ॥
 शल्यातुजं एतं हृष्ट्वा तांकास्त्यकजीविताः । विभ्रेषु पाण्डवमघात्रजो ध्वस्तास्तथा
 भृशम् ॥ ६८ ॥ तांस्तथा भ्यनन्तलात् कौरवान् भरतपंभ । शिनेनेता किरन् बाणैरभ्य
 वेपैत सात्पत्नि ॥ ६९ ॥ तमांशान् महेशासमप्रसह्य दुरासदम् । दाहिक्यस्त्ररितो

मार्हेनहुये और शरीरों से रौंनों को छोड़ते शस्त्र और जीवन से जुड़ेहुये । ६० ।
 इस के पीछे शस्त्र के गिरनेपर राजामद्रक छाटा तरुण अरस्था वाला सब गुणों
 में भाई के समान रथी पाण्डव युधिष्ठिर के सम्मुख गया । ६१ । और क्षीप्रता
 करनेवाले नरोत्तम ने बहुत नाराचों से घायन किया वह युद्ध में दुर्मद मृतक
 भाईका बदला लेनेका अभिलाषी हुआ । ६२ । फिर क्षीप्रता करनेवाले धर्मराजने
 छा बाणोंसे उसको घायल किया बाणोंसे ही उस के धनुष ध्वजा को काटकर
 महाशमान अत्यन्तदृष्ट और तीक्ष्ण मन्त्रोंसे उस सम्मुख वर्तमानके शिर को काटा
 । ६४ । तब वह कुण्डलारी शिर रथसे गिरताहुआ पेटा दिखाई पडा जैसे कि
 शुभकर्म फलके नाशको पाकर स्वर्गसे न्यून मनुष्य होताहै । ६५ । फिर शिरसे रहित
 उसका शरीर रथसे गिरपडा रुधिरसे लिप्त शरीरको देखकर सेना छिन्न विघ्न
 होगई । ६६ । उस अपूर्व कर्तव्यपारी शस्त्रके छोटे भाईके मानेपर हाहाकर करनेवाले
 कौरव भागे । ६७ । तब शल्यके छोटेभाई को मराहुआ देखकर आपके शूरवीर
 जीवनके त्यागनेवाले धृष्टो अत्यन्त लिप्त शरीर पाण्डव युधिष्ठिरके भयसे भयभीत
 होगये । ६८ । हे भरतपंभ शिनीका पौत्र सात्पत्की बाणोंसे दहता उसमकार
 छिन्नाभेन्न होनेवाले कौरवोंके सम्मुख वर्तमानहुआ । ६९ । तब क्षीप्रता कनेवाले

blood from their bodies, were deprived of weapons and lives. Then at
 the fall of Shalya, his younger brother, a young man and a good
 warrior as his brother, faced Yudhishtir and wounded him with
 many arrows. He tried hard to avenge his brother's death. Yudh
 ishtir wounded him with six arrows and then cut his bow and
 beautiful head, with one arrow each. The head, dicked with
 earrings, falling down from the car looked like one falling
 down from heaven at the expnation of merits. 65. His
 headless body fell down from the car and the armies disoised at
 the sight of it. At the death of Shalya's younger brother, the
 'hauravas fled with cries. Covered with blood and dust your war

राजद्रव्यमृदनादमीतवत् ॥ ७० ॥ ता समेतो ब्रह्महत्यानां वापनेयावपगाजितौ ।
 हार्दिक्यः सात्याकश्च सिंहा विव प्रवात्करो ॥ ७१ ॥ इधुमिर्विजलाभासैश्चाद्यन्तौ
 परस्परम् । अर्धिर्वाभिरय सूर्यस्य दिवाकरसमभौ ॥ ७२ ॥ चापमार्गवलोत्तमश्च
 मार्गणान् वृष्णिंसिद्धयोः । आकाशे समपश्याम पतद्भानिव शीघ्रगान् ॥ ७३ ॥ सात्याके
 दशमिर्विधा ह्यर्थाशस्य विभिः शरैः । चापमेकन विक्रुन्द हार्दिक्यो नतपर्वणा
 ॥ ७४ ॥ तानि कृत्स्नं धनुःश्रेष्ठ मयास्य शिनिपुङ्गवः । अश्वशूरात् वेगेन बगवत्परमाद्भु
 वम् ॥ ७५ ॥ तदाश्व धनुः श्रेष्ठ धरिष्ठः सर्वघणिताम् । हार्दिक्यं दशमिर्वाणिः प्रत्य
 विधयत् स्तनान्तरं ॥ ७६ ॥ ततो रय युगशास्त्रं छित्त्वा मल्लै सुसंघते । अश्वोस्व
 स्यावधोत्सूर्णमुग्रौ पार्श्वेणसारथी ॥ ७७ ॥ ततस्तं विरयं दध्नुः कृपः शारद्वनः प्रभौ ।
 अपोवाह तत्र क्षिप्रं रथमारोह्य घोर्यवान् ॥ ७८ ॥ मद्राजं हन राजत्र विरये कृप

कृतवर्माने निर्जयके समान उरु धेनुधारी सङ्घन के अयोग्य कठिनतासे सम्मुख
 उसके कर्नेरुपोग्य सनेहृषे, सात्यकीको रोका ६७० । वह दोनों महात्म, बड़े ब्रह्म
 सिंहाके शपाग वरुडे मारोके यद्द कृतवर्मा और सात्यकी सम्मुख हुए । ७१ ।
 सूर्यके समान जेनस्त्री वरु दानां शुद्ध प्रकाशवान् वालोंमें परस्पर ऐसे टकने
 बोलहुए जैस कि सूर्य की किरणों से टकरातहैं । ७२ । हमने उन दोनों उत्तम
 बादरोंके धनुष माग और पञ्च उडुपे आकाश में घुलवान वालों के शीघ्र
 गामी पत्तियों के समान देखा । ७३ । कृतवर्मा ने दशबाण में सात्यकीको और
 तीन बाणोंसे उसके घोड़ोंको मारकरके देडे पर्वणाल द्वैक बाणसे उसके धनुष
 को काटा सात्यकी ने उन दूँदुपे उत्तम धनुषको टाँकर तबिगा से
 दूसरे दृढ़ धनुषको लिया । ७४ साय धनुषारियोंमें श्रेष्ठसात्यकीने उसधनुषको लेकर
 दश बाणों से कृतवर्मा को छाती पर किया । ७५ । इसके पीछे रथपुम
 और ईशादण्डको अपने श्रेष्ठ चत्वार्य हुये भड्डने काटकर शीघ्रही उसके घोड़े
 सारथी और पीछे चनेनेवाले का मारा । ७६ । हे प्रमु तव पराक्रमी शारद्वत कृपा
 शर्ये उसको विरय देवकर शीघ्रता से अपने रथपर चढ़ाकर दूर ल्याये । ७८ ।

riors fled away afraid of Yudhishtir. Satyaki the grandson of Bhmi,
 faced the dispersing Kauravas and covered them with arrows. 70.
 Kritvarma opposed valiant Satyaki who was coming on fearlessly.
 The two Yadavas, Kritvarma and Satyaki, invincible and of lion's
 prowess, covered each other with arrows like the rays of the Sun.
 We saw their arrows flying like birds. Kritvarma wounded Satyaki
 with ten arrows and his horses with three and cut his bow with one
 more. Satyaki dropped the broken bow and took up another. 73.
 Satyaki the best of archers wounded Kritvarma with ten arrows on
 the breast and cutting down the parts of his car, slew the driver,
 horses and followers. Seeing him deprived of car, Kripacharya took
 him far away from the field of battle. At the fall of the king of

मंजि । दुर्योधनवत् सर्वे पुनरुत्थीत् परामुग्रम् ॥ ७० ॥ ततपरे नाम्बुधुयश्च सभ्य
 च रजसावृते । वलन्तु हतमूयिष्ठं तत्तदासीत् परामुग्रम् ॥ ८० ॥ ततो मुहुर्त्तानेऽप
 यन् रजो श्रीमं समुत्थितम् । विविधैः शोणितस्त्राः प्रशान्तं पुरुषंभ ॥ ८१ ॥ ततो
 दुर्योधनो दृष्ट्वा ममं स्वलप्रमितकात् । जयेनापतत पार्थानिकः सर्वानघा रयत् ॥ ८२ ॥
 पाण्डवान् सरथान् दृष्ट्वा घृष्टुन्मन् पार्थिवं जानतं व दुराधर्षं शीशंगैरवाकि
 रत् ॥ ८३ ॥ ते परे नाश्रयन्तं मर्यां मृत्युमियागतम् । अघाघं रयमास्थाय हार्दि
 क्योपि श्यवन्त ॥ ८४ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा स्वर्गानां महारथः । अर्जुनीनजघा
 नाश्चान् पत्रिभिः कृतधर्मणः । विवधाध गौतमश्चापि यद्विभिर्मत्सै सुतेजनैः ॥ ८५ ॥
 अश्वत्थामा ततो राजा हताश्वं विरधीकृतम् । तमपोवाह हार्दिकं स्वर्धेन युधिष्ठी
 रात् ॥ ८६ ॥ ततः शारत्तनोऽष्टाभिः प्रत्यविध्वद्युधिष्ठिरम् । विवधाध चाश्वानिशिते

हे राजा राजा मद्रके परत और कृतवर्माके निरथ होनेपर दुर्योधन की सब सेना
 फिर मुख फेरनेवाली हुई । ७२ । इससेपुने और धूले सेनाके दृक्जनिपर दूसरे
 पक्षवाले नहीं जानगये तब यह बहुत मारी हुई सेना मुलोंको फेर गई । ८० । हे
 ब्रह्मरोचन इसके पीछे उनलोगोंने एक मुहुर्त्तमेंही उठी हुई पृथ्वीकी धूलको नाना
 प्रकार के रुधिरों के बहनेसे छिड़का हुआ देखा । ८१ । उससमय दुर्योधनने सम्मुख
 से अपनी सेनाको छिन्न भिन्न देखकर तीव्रतासे आनेवाले सब पादों को अकेलेने
 ही रोका । ८२ । रथ सवार पांडवों को घृष्टुन्मको और अजेय सात्यकि
 को ताड़नवाणों से रोका । ८३ । उससमय शत्रुलोग उसकेसम्मुख ऐसे नहीं हुयेजैसे
 कि मरण धर्मवाले जीव आयेहुये कालके सम्मुख नहीं यत्तमान होते हैं इसके
 पीछे कृतवर्मा भी दूसरे रथपर सवार होकर लौटा । ८४ । तब शीघ्रता करनेवाले
 महारथी राजा युधिष्ठिर ने चारवाणों से कृतवर्मा के घोड़ोंको मारकर कृपाचार्यको
 भी सुन्दर वेतवाले छः मत्स्यो से घायल किया । ८५ । इसके पीछे अश्वत्थामा
 भी राजा के आघातसे घोड़े और रथसे विहीन कृतवर्मा को अपने रथ के द्वारा
 युधिष्ठिरके सम्मुख से हटालेगा । ८६ । इसके पीछे कृपाचार्य नेभी छःवाणों

Madra and destruction of Kritvarma's car, Duryodhan's army turned
 back. Covered with dust, the army, whose warriors had been slain
 in large numbers, turned back. 80. Then the dust subsided by the
 sprinkling of blood. Seeing his army dispersed, Duryodhan alone
 checked all the Pandavas 82. He checked the Pandavas, Dhrish-
 tadyumn and invincible Satyaki. The foes could not face him as
 mortals cannot oppose Death. Kritvarma too, mounted another car
 and turned back. Then Yudhishtir slew Kritvarma's horses with four
 darts and wounded Kripacharya with six more. 85 Ashwatthama took
 him on his car and removed him away from the presence of Yudhishtir.
 Then Kripacharya too, wounded Yudhishtir with six arrows

सयाष्टाभिः शिलीमुखैः ॥ ८० ॥ एवमेतन्महाराज युद्धशेषमवसंत । तत्र दुर्मित्रो
राजन् सप्तपुत्रस्य मात्स्य ॥ ८८ ॥ तदिष्यन्महेश्यासवदे विशस्ते संप्राममर्षो कुरुपुंगव
पार्थाः समेताः पशमग्रहृष्टाः शशान् प्रदध्मुर्हनमीक्ष्य शल्यम् ॥ ८९ ॥ युधिष्ठिरश्च
प्रशशंसुराजो पुरा सुग वृत्रघ्ने यथेन्द्रम् । चक्रुश्चानाविधधायशब्दान् तितादयन्तो
धनुर्षा समस्तात् ॥ ९० ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि शल्यवधे सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

सञ्जय उवाच । शलो तु निहते राजत्र मद्रराजपदानुगाः । एषाः सप्तशता बीग
निर्घुमहतो बलात् ॥ १ ॥ दुर्घोघनस्तु द्विरद्माराह्याचलसन्निभम् । उब्रेण त्रियमा
से युधिष्ठिर को घायल किया और उसी प्रकारतेनधार आठ शिलीमुखनाम
बाणों से घोड़ोंको भी घायल किया । ८७ । हे भरतवंशी महाराज राजा धृतराष्ट्र
पत्रमपेत आपकी कुमन्त्रतासे यह शेष लोगोंका युद्ध वर्तमान हुआ । ८८ । युद्ध
में भेड़ और बक हाथसे उस धनुषधारियोंमें श्रेष्ठ शल्यके मारे जाने पर अत्यन्त प्रसन्न
चित्त पाण्डव लोगोंने इकट्ठे होकर शलोंको बजाया । ८९ । और युद्धभूमि में
युधिष्ठिरकी ऐसी प्रशंसा करी जैसे कि पूर्वसमय में वृत्रामुरके मारने पर देवताओं
ने इन्द्रकी प्रशंसा करीथी फिर उनलोगोंने चारोंओरसे पृथ्वी को शब्दायमान
करके नानाप्रकार बाजोंको बजाया ९० ॥

अध्याय १८ ।

संजय बोले हे राजा शल्यके मरनेपर उस राजामद्रके आगे पीछे चलने
वाले सातसौ महारथी वीर बड़ी सेनाको साथ लेकर बाहर निकले । १ । फिर शिर

and his horses with eight. The great destruction of the remainder
of your forces was caused by your evil policy and that of your son.
At the death of Shalya by the great archer, the Pandavas blew
their conchs and praised Yudhishtir as the gods had eulogised Indra
at the death of Vritrasar. They sounded many musical instruments
and filled the earth with their sounds." 90.

CHAPTER XVIII

Sanjaya said, "At the death of Madra seven hundred of his
followers came out to fight, mounting a huge elephant, with umbrellas

जेन भीष्ममानस्य चामरेः । न गन्तव्यं न गन्तव्यमिति मद्रान्धारयत् ॥ २ ॥ दुर्योध-
नेन ते वीराः चर्यमानाः पुनः पुनः युधिष्ठिरं जिघांसन्तः पाण्डुनां प्राविशन् बलम्
॥ ३ ॥ ते तु शूरा महाराज कृतचिन्ताः सुयोधने । धनुः शब्दं महत् कृत्वा सहायुष्यन्त-
पाण्डवैः ॥ ४ ॥ ध्रुत्वा च निहतं शल्पं धर्मपुत्रश्च पीडितम् । मद्रराजप्रियासक्तैर्मद्र-
कानां महारथैः ॥ ५ ॥ आजगाम ततः पार्थो गाण्डीव विशिषन् धनुः । परयत्प्रघोषेण
दिशः सर्वा महारथः ॥ ६ ॥ ततोऽर्जुनश्च भीमश्च मद्रि पुत्रौ च पाण्डवौ । सात्यकिश्च
नरोत्थामो द्रौपदेवाश्च सर्वशः ॥ ७ ॥ धृष्टद्युम्नः शिखण्डो च पाण्डवालाः सहस्रोमकैः
युधिष्ठिरं परीक्षन्तः समन्तात् पर्यवहन् ॥ ८ ॥ ते समन्तात् परिहृता पाण्डवाः
पुरुषवन्ध्याः । क्षीमयन्ति स्म तां सेनां मकराः सागरं यथा । वृक्षानिव द्वावाताः कश्य-
पन्ति स्म तावकान् ॥ ९ ॥ पुरोवातेन गंगेव क्षोड्यमाणा महानदी । व्यक्षोभत तदा

पर धारण किये छत्रों से और चामरोंसे युक्त दुर्योधनने पर्वताकार हाथीपर चढ़कर
मद्र देशियोंको निषेध किया कि तुमको न जाना चाहिये न जाना चाहिये । २ ।
दुर्योधन से बारम्बार रोकहूये वह वीर युधिष्ठिर के मारनेके अभिलाषी होकर
पाण्डवों की सेनामें पहुँचे । ३ । हे महाराज फिर लड़नेमें प्रवृत्त चित्त वह शूरवीर
धनुषों के बड़े शब्दोंको करके पाण्डवों से युद्ध करनेलगे । ४ । शल्पको मृतक और
धर्मपुत्र युधिष्ठिरको राजामद्रके हितकारी मद्रदेशी महारथियों से पीड़ामान सुन
कर । ५ । अर्जुन अपने गाण्डीव धनुषको टंकारताभाया वह महारथी अर्जुन सब
दिशाओं को शब्दों से पूर्णकरता युद्धमें आपहुँचा । ६ । उसकेपीछे पाण्डव अर्जुनभीम
सेन नकुल सहदेव नरोत्तम सात्यकी द्रौपदी के सब पुत्र । ७ । धृष्टद्युम्न शिखण्डी
और सोमकोंसमेंत सब पांचाल इन सब युधिष्ठिर के चाहनेवाले लोगोंने राजा
युधिष्ठिरको मध्यवर्ती किया । ८ । चारोंओरसे घिरहूये उन पुरुषोत्तम पाण्डवोंने
उस सब सेनाको ऐसे छिन्न भिन्न किया जैसे कि समुद्रको मगर छिन्न भिन्नकरताहै
और आप के पुत्रोंको ऐसे कंपायमान किया जैसे कि बृह्दोंको बड़ी भीव वायु
कंपायमान करतीहै । ९ । हेराभा तब पाण्डवी सेना भी फिर ऐसे उथल पुथल हुई

and charmers, Duryodhan asked the Madra warriors not to go. Though
checked by Duryodhan, those warriors, desirous of slaying Yudhishtir,
entered the army. Intent on dying, they fought with the
Pandavas amid the hard sounds of bows. Hearing that Shalya was
dead and that his followers were afflicting Yudhishtir, Arjun came
on, twanging his Gandav bow and filling the directions with its
sounds. 6. Then the Pandavas, Arjun, Bhim, Nakul and Sahadev
Satyaki the best of men, all the sons of Draupadi, the Panchals with
Dhrishtadyumna, Saikhandi and the Somaks and other well wishers
came round Yudhishtir. They dispersed your army as a crocodile
agitates the ocean and shook your army as the wind shakes large

राजन् पाण्डुना ध्यजिनी पुन ॥ १० ॥ प्रस्कन्ध सेना महता महारथा महारथा ।
 बहवश्चक्रुस्तत्र कथं स राजा युधिष्ठिरः ॥ ११ ॥ भ्रातर पाण्डवा शूरा हृदयने नह
 केचन । पाण्डवाला या महावीर्या शिखण्डी च महारथ धृष्टद्युम्नो ध शैतयो द्रौप
 देया महारथा ॥ १२ ॥ पथ तान् घादिन शूरान् द्रौपदेया महारथा । अश्वघ्नान्
 युध्यमानांश्च मद्राजपदानुगाञ्च ॥ १३ ॥ रथैर्धिमथिता केचित् केचिच्छिष्टैर्महाध्वजैः ।
 प्रत्यहृद्यन्त समरे तावका निहता शरैः ॥ १४ ॥ आलोक्य पाण्डवान् युद्धे योजा
 धीरान् सहस्रशः । धार्थमाणा ययुर्वीरास्तत्र पुत्रेण भरत ॥ १५ ॥ दुर्योधनस्तु ताव
 धीरान् धारयामास सान्त्वयन् । न खास्य शासन काश्चित्तत्र चक्रे महारथ ॥ १६ ॥
 नता गान्धारराजस्य पुत्र शकुनिरब्रवीत् । दुर्योधन महाराज बचन बचनज्ञमः
 ॥ १७ ॥ किञ्च न प्रेक्षमाणाना मद्राणा हन्यत यत्नम् । न युक्तमेतत् समरे स्वधि

जेने सम्पुलकी वायु से गंगानदी व्याकुल होती है । १० । महात्मा महाग्नी, लोग
 बड़ी सेनामें प्रवेश करके जहां तहां पुकारे कि यह राजा युधिष्ठिर कहाँ है । ११ ।
 भ्रातर उसके बड़े शूरवीर भाई कहाँ हैं वहाँ कोई दिववाई नहीं देते हैं धृष्टद्युम्न सात्यकि
 की द्रौपदीके सब पुत्र बड़े पराक्रमी पाण्डाल आर महारथी शिखण्डी कहाँ हैं । १२ ।
 इस प्रकार बार्तालाप करनेवाले उन शूरोंको द्रौपदी के महारथी पुत्रोंने और युयु
 धानने घायल किया । १३ । राजामद्र के पीछे चलनेवाले कितनेही तोबाणों मारित
 और कितनेही दूरी हुई बड़ी ध्वजाओं से बिनाश हुये युद्धमें आप के शूर
 वीर शत्रुओं के हाथमें मरे हुये दिववाई पड़े । १४ । हे भरतवंशी यह लोग युद्धमें पांडवों
 को और चारोंओर से शूरवीरोंको देखकर आपके पुत्र से रुके हुये हाकर बड़ी
 तावता पूर्वक गये १५ । और क्रोधके दूर करने के लिये दुर्योधनने मधुर बचन
 कहकर उन वीरोंको रोका तब वहाँ किसी महारथी ने उसकी आज्ञा को नहीं
 किया । १६ । इसके पीछे गांधार देशके राजाका पुत्र वार्तालाप में कुशज शकुनि
 दुर्योधन से बोला । १७ । कि हे भरतवंशी यह क्या बात है कि जो हमारे देखते हुये
 मद्रदेशियों की सेना मारी जाती है युद्धमें तेरे नियत होनेपर यह बात उचिन

treas. Your army was agitated like the river Ganges in a storm of
 wind. 10. The brave warriors cried out, 'Where is Yudhishtir? Where
 are his brave brothers? None is seen here Where are Dhrish
 tadyumu, Satyaki, the sons of Draupadi the brave Panchals and val ant
 Shikhandi? Thus crying they were wounded by the sons of Draupadi
 and Yuyudhan The followers of Duryo, wounded by arrows and their
 banners broken, met their death Your warriors were destroyed by
 the enemies Seeing the Pandav warriors all round them and
 checked by your son, they faced the enemy in battle 15. Duryo
 dhan tried to pacify their anger by sweet words but they would not

निकृति भारत ॥ १८ ॥ सहितैर्मामयोद्धयमित्येवं समयः कृत । अथ 'वस्मात् परा
 नेव अतो सर्वयत्ने युय ॥ १९ ॥ दुर्व्योधन उवाच । वार्यमाणा मया पूर्व मैते चक्रु
 र्बन्धो मम । एतेहि सिंहना सयं प्ररुक्रुः पाण्डुवाहिनीम् ॥ २० ॥ शकुनि उवाच । न
 अकुं शासनं बीरा म्ने कुर्वन्त्यपिना । शलं क्रोशु तथैतेषां, नायं काल उपेक्षितुम्
 ॥ २१ ॥ काम सर्वत्र संभूय सवाजिरथकुञ्जरा । परिभ्रातुं महेश्वरान् मद्रराजपत्न्या
 युगात् ॥ २२ । अन्वोन्वं परिदक्षामो यत्नन महता नृप । एवं सर्वेनुसम्बिध्य प्रययु
 र्बन्ध सैनिकाः ॥ २३ ॥ एवमुक्ततो राजा घलेन महता युगं । प्रययौ सिंहनादिन कम्प
 वक्षिष मेदिनाम् ॥ २४ ॥ इत विध्यत गृह्णीत प्रहरन्धं निकृन्तत । इत्यासीत्सुमुल-
 शम्भुस्य सैन्यस्य भारत । २५ ॥ पाण्डवास्तु रणे दृष्ट्वा मद्रराजपदानुगात् । सहि
 तानपवचसन्त गुल्ममास्थाय मध्यमम् ॥ २६ ॥ ते मुहुर्चाद्रमे घोषा हस्ताहस्ति विशां

और योग्य नहीं है । १८ । इन के माथ होकर भी युद्ध करना चाहिये क्योंकि
 तुमने नियम किया है हे राजा फिर किस हेतुमे मरनेवाले दूसरे मनुष्योंको समाकरता है
 १९। दुर्वोधन बोला कि प्रथम मेरे रोकेने परभी मेरे वचन को नहीं किया यह
 सब पांडवी सेना में प्रवेश करके मारेगी । २०. शकुनि ने कहा कि युद्धमें क्रोध
 बुद्धि धार स्वामीकी आज्ञाको नहीं करते हैं क्रोधको दूर करिये यह समय उन
 लोगों के स्वागतेका नहीं है । २१. घोड़े रथ और हाथियों समेत हम सब निश्चय
 करके राजामद्र के पीछे चलनेवाले बड़े धनुषधारियों की रक्षाके लिये चलें । २२।
 हेराज्ञा बड़े उपायों मे परस्पर रत्नाकर ऐसा विचार कर वह सब वडांगरे जहापर
 कि वह मेनाके भोगधे । २३ । हमकेपाछे बड़ी सेना समेत राजादुर्वोधन पृथ्वीको
 सिंहनादों से कैपाताहृमा चला दिया । २४ । हे भरतवंशी फिर आपकी सेनाका
 वह कठिन शब्द हुआ कि मारो छेदो पकड़ो मदारकरो शिरों को काटो । २५ ।
 फिर पाण्डव राजामद्रके पाछे चलनेवानाको एक माथ देखकर 'मध्यवर्ती' गुल्मनाम
 सेनाके भाग में नियत होकर सम्मुख वर्तमान हुये । २६ । हे राजा राजामद्र के

hear him. Then wise Shakuni said to Duryodhan, "Why are the
 arms of Madra being destroyed in our presence? It should not be
 in your presence. You should assist them in fighting. Why do
 you look on their destruction?" Duryodhan said, "They did not
 hear me and ordered the Pandav army to meet their destruction." 20.
 Shakuni said, "Enraged warriors in battle are apt to disobey their
 superiors. You must not be angry and leave them in the lurch. Let us
 follow the friends of Shalya and assist them with our cars, horses and
 elephants. Let us protect them well." Having come to this resolu-
 tion, they all went there where those warriors were. Duryodhan
 went on shaking the earth with his lionine roars. The cries of your
 warriors were, "Slay, pierce, seize-charge and behead!" 25. The

पते । निहता प्रत्यहृद्यन्त मद्रराजपदानुगाः ॥ २७ ॥ ततो न. सम्प्रयातानां हतमंत्र-
स्तरस्विन । हृष्टा किलकिलाशब्दमकुर्वन् सहिताः परे ॥ २८ ॥ अथे स्थिताश्चि-
कण्डानि समहृद्यन्त सर्वशः । पपात महती खोल्का मध्ये चादिर्यमण्डलात् ॥ २९ ॥
रथैर्मग्नैर्युगाक्षैश्च निहतैश्च महारथैः । अश्वैर्निपतितैश्चैव संलभामूढमुन्धरा ॥ ३० ॥
घातापमानैस्तुरगैर्युगासकैस्ततस्तत । अहृद्यन्त महाराज योधास्तत्र रणाजिरे ॥ ३१ ॥
अग्नचक्राप्रथान् केचिदश्वस्तुरगा रणे । रथासु केचिदादाय दिशो दश विवस्रमु-
॥ ३२ ॥ तत्र तत्र व्यहृद्यन्त ये कत्रे किलप्या स्म चाजित्र । रथिनः पतमानश्च व्यह-
ृद्यन्त नृगोत्तम । गगनात् प्रच्युता सिद्धाः पुण्यानामिव संक्षये ॥ ३३ ॥ निहतेषु च
शरेषु मद्रराजानुगेषु च ॥ ३४ ॥ अश्वानापततश्चैव हृत्वा पाथी महारथाः । अश्वयु-
क्तैश्च घेनेन अपगृह्णा प्रहारिण ॥ ३६ ॥ वाणशब्दरवान् कृत्वा विभिन्न शब्दनि-

पीछे चलनेवाले वह वीर युद्ध में एक मुहूर्त भरमेंही मरेहुये दिखाई पड़े । २७ ॥
इसकेपीछे हमारे जानेपर मद्रदेशियोंके मारनेवाले बंगवान प्रसन्नचित्त प्रातिपत्तियों
ने एक साथही किलकिला शब्दकिया । २८ । सब ओर से उठे हुये धड़
दिखाई पड़े और सूर्यमण्डल के मध्यसे बड़ी उल्का पात हुई । २९ । दूरेथ युगपत्
मृतक महारथी और पड़ेहुये हाथियों से पृथ्वी आच्छादित होगई । ३० । ३ महा-
रथ वहाँ युद्धभूमि में शूरवीर वायु के समान शीघ्रगामी और जहाँ तहाँ युगांस
चिपटे हुये वाड़ों समेत दिखाई दिये । ३१ । युद्धमें कितनेही घाटे दूरे पहियों
वाले रथोंको लवले और कितनेही ओघरथोंको लेकर दशों दिशाओं को भामे
। ३२ । जहाँ तहाँ योत्तरों से चिपटे हुये घोड़े दृष्टिपड़े हे राजाओं में श्रेष्ठ
कहीं गिरते हुये रथी ऐसे दृष्टिगोचर हुये जैसे कि शुभकर्म फलों के समाप्त होने
पर आकाश स गिरेहुये सिद्ध दिखाई देते है । ३३ । राजामद्रके पीछे चलनेवाले
शूरवीरोंके मरनेपर । ३४ । विजय के लोभी प्रहार करनेवाले महारथी पाँच
हमजोगों को आताहुआ देखकर तीव्रता से सम्मुख वर्त्तमान हुये । ३५ । शत्रुओं
के शब्दों से संयुक्त वाणोंका शब्द करते हम लोगोंको पाकर लक्ष्यभेदन करनेवाले

Pandavas seeing the followers of the king of Madra together, formed themselves into an array and faced them. The Madras were found defeated in an instant, and at our approach the Pandav warriors raised cheerful cries. The heads of the bodies rose everywhere and meteors were detached from the Sun's orb. The ground was covered with broken cars, dead warriors and fallen elephants. 30 The warriors were seen clinging to the yokes of cars or to the swift horses. Horses dragged the cars with broken wheels and took away their warriors in all directions. Horses clung to yokes and the falling warriors were seen like sidhas falling down from heaven at the expiry of their merits. At the fall of the followers of Madra, the Pandavas

स्वने । अस्मास्तु पुनरासाद्य लघ्वलक्ष्याः प्रहारिणः । शरासनानि घुम्बानां सिंहना
दानं प्रसक्तुः ॥ ३६ ॥ ततो हतमभिप्रेक्ष्य मद्रराजघले महत् । मद्रराजस्य समरे
दृष्ट्वा नारं निपातितम् । दुर्योधनघले सर्वे पुनरासीत् परामुक्षम् ॥ ३७ ॥ घण्ट्यमाने
महाराज पाण्डुवैजित्कोशिमिः । दिशो भेजेऽथ सम्प्राप्तं प्राप्तं हृदयाम्बुभिः ॥ ३८ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि दुर्योधनसैन्यापघाने अष्टादशोऽध्यायः १८ ।

सम्राज्य उवाच । पतिते युधि दुर्योधे मद्रराजेमहारथे । तावकालघ पुत्राश्च प्रायसो
विमुक्ता मध्व ॥ १ ॥ धनिजो नाविमन्नाया यथागाधेणवल्के । अपारे पारमिच्छन्तो
हतेशरे महारमना ॥ मद्रराजे महाराज वित्रलाः शरविक्षताः । मनाया नायमिच्छन्तो

प्रहार करनेवाले और घनुपके चलायमान करनेवालों ने - सिंहादोंको किया । ३६ ।
उसके पीछे राजामद्रकी बड़ी सेनाको मराडुभा देखकर और पुत्र
शूरीर राजामद्र को पुत्र भूमि में गिरा हुआ देख कर दुर्योधन की, सब सेना
फिर मुख फेरनेवाली हुई । ३७ । हे महाराज विजय से शोभायमान दृढ़ मनुष्यधारी
पांडवोंसे घायल भयसे व्याकुल भयभीत सेनाने दिशाओंको सेवन किया ३८ ।

अध्याय १९ ॥

१९ । सैन्यबोले कि युद्धमें अजेय महारथी राजामद्रके मरनेपर आपके पुत्र और
युद्धकर्त्ता लोग बहुधा मुख फेरनेवाले हुये । १ । जैसे कि भयाह और विना नौका
वाले समुद्रमें नौकाके दृष्टनेपर व्यापारी लोग पारपानेके अभिलाषी होते हैं - वैसे
desirous of victory opposed us for a long time. Mixing the sounds
of bowstring with those of conchs, they attacked us with leonine
roars, 36. Seeing the great army of Madra destroyed and their king
fallen down, all the army of Duryodhan turned back. Wounded
by the victorious Pandavas and terrified, we ran away in all
directions. 38.

CHAPTER XIX

Sanjaya said, "At the fall of invincible Shalya, your sons and
warriors turned back. Like traders anxious to cross the ocean at
the wreck of their boat, your warriors desired for protection at the

मृगाः सिद्धाहिता इव ॥ १ ॥ धृया यथा मग्नशृंगा शोभन्ता गजा इव । मध्यान्हे प्रत्यपायाम् निर्दिजता जातशङ्कुणा । ४ ॥ न मन्धातु मनीकानि न च राजन् पराक्रमे । आसीद्वुद्धिहेते शल्ये तत्र योत्रस्य कर्त्वीयत् ५ ॥ श्रीधमे द्रोणे च निहते सूतपुत्रे च भारते । यद्वुःखं तत्र योवानां भयव्वासीद्विधा पते । तद्भयं स च नः शौका भय एवाश्रययत्तत ॥ ६ ॥ निराशास्तु अथे तस्मिन् हते शल्ये महारथे ॥ ७ ॥ हतप्रवीणा विध्वस्ता निहन्ताश्च शिरः । मद्रराजे हते राजन् योघाहेत प्राद्रवन् भवात् ॥ ८ ॥ अश्वानन्ये गजानन्ये रथानन्ये महारथाः । आदक अवलम्पभाः पदाताः प्राद्रवन् भवात् ॥ ९ ॥ हिलाहन्त्राश्च मातंगा गिरिकृपा प्रहारिणः सभा प्रचन हते शल्ये अकुशांगुष्ठचोदिताः ॥ १० ॥ से रणाङ्गरतथेष्ट तावकाः प्राद्रवन् विशाः । आबन्तश्चाप्यहश्यन्त द्रवसमादाः रागहताः ॥ ११ ॥ तान् प्रमथान् दुताश्च

प्रकार महारथा युधिष्ठिरके हाथसे शूर शल्य के मारे जानेपर अपारमों पारके चांइने वाले हुये । १ । हे महाराज वह भयभीत वाणोंमे घायल घनाथ होकर इस प्रकार नार्यों के चारनेवाले हुये जिस प्रकार सिंहसे पीड़ामान् मृग । २ । दूटे सींगवाले बैल और दूटे दाँतोंवाले हाँथी होतेहैं उसीप्रकार अजात शत्रु युधिष्ठिरसे विजय किये हुये हमलोग भी मग्नशृङ्गके समय दृष्टमाये । ४ । हे राजा शल्यके मरनेपर आपके किसी शूरवीर का साहस सेनां इकट्ठी करने और पराक्रम करने में नहीं हुआ । ५ । हे भरतवंशी भीष्म द्रोणाचार्य और कर्ण के मरनेपर आपके शूर लोगोंको जो दुख और भय हुआ था हे राजा वही अब हुआ हमारा वह भय और शोक फिर वर्त्तमान हुआ । ६ । महारथी शल्यके मरनेपर उस विजयमें भनाशाहुई । ७ । हे राजा राजापद्रुके मरनेपर वह शूरवीर जो कि तीक्ष्णवाणोंसे घायल पराजित हुये और जिनके बड़ेवीर मारेगये थे सब भयभीत होकर भागे । ८ । कोई महारथी घोड़ों पर कोई रथोंपर कोई हाथियोंपर सवारहोकर भागे । और पदातीही तीक्ष्णसे भगे । ९ । शल्यके मरनेपर पर्वतकेरूप महार करनेवाले दोहजार हाथी अकुल और अगुठे से चपायमान होकर भागे । १० । हे भरतवंश वह आपके शूरवीर सुदके दिशाओं को भगे और वाणोंसे घायल बचासलेने और दोड़तेहुये दिशाई पड़े । ११ । विजय

death of Shalya. Terrified and wounded, they missed a protector like deer attacked by a lion. Like oxen with broken horns or like elephants with broken tusks, we were deserted and routed by Yudhishtir at midday. None of your warriors could have the heart to show his prowess after the death of Shalya 5 They were in the same danger and fear as they were at the death of Bhishm, Drona and Karan. We were hopeless of victory at the death of Shalya. The wounded and defeated warriors, whose chiefs were dead, fled in fear. They fled with the horses, elephants or cars or on foot. Two thousands of elephants, urged by leads and tone, fled away. 10

दृष्ट्वा हतोत्साहान् पराजितान् । अथ द्रुपदम पाञ्चालाः पाण्डवाश्च जयैषिण ॥१२॥
 पाण्डवोऽपि सिंहनादश्च पुष्कलः । शरणागतं द्रुपदं द्रुपदं । समपद्यत
 ॥ १३ ॥ दृष्ट्वा तु कौरव संघं भवत्रस्तं प्रविदतम् । मन्योभ्यं समजापत्त पाञ्चालाः
 पाण्डवैः सह ॥ १४ ॥ अथ राजा सत्यभृतिर्जितामित्रो युधिष्ठिरः । अथ दुर्योधनो
 दीनो दीप्तवा नृपतिभिया । १५ ॥ अथ धृष्टा इत पुत्र धृतराष्ट्रो जनेश्वरः । विद्वलः
 पतितो मूर्खो किञ्चिदपि प्रतिपद्यताम् ॥ १६ ॥ अथ जानातु कौन्तेयं समर्थं सर्वघोषि
 नाम् । अघातमानम्तु दुर्मेघा गर्हयिष्यति पापकृत ॥ १७ ॥ अथ क्षत्रपुत्रः सत्यं स्मरतां
 सुवतो हितम् । अथ प्रभृति पार्थीश्च प्रेष्यभूत् उपाश्वरत् । विजानातु नृपो दुःख यत्
 प्रातः पाण्डुनन्दनैः ॥ १८ ॥ अथ कृष्णस्य महात्म्यं जानातु स महीपतिः । अघातुं न च
 दुर्घोषं घोरं जानातु संयुगे । अस्त्राणाञ्च वलं सर्वं बाहुषोश्च बलमाहवे ॥ २० ॥ अथ
 के अभिभाषी पांचाल घोर पांडव उन अमाहती पराजित छिन्न भिन्न घोर भागे
 हुआंको देखकर पीछे दौड़े । १२ । शूरवीरों के वाणोंके उत्तम शब्द सिंहनाद
 और शस्त्रोंके शब्द महाभयकारी प्रकट हुये । १३ । पाण्डवों समेत पांचाल लोग
 उन कौरवीय सेनाके लोगोंको भय भीत और भागेहुये देखकर परस्पर में यह
 बचन बोले । १४ । कि अब मरचे धैर्यवाला राजा युधिष्ठिरको मृतक शत्रुओंवासीः
 अब दुर्योधन प्रकाशवान् राजलक्ष्मी से रहितहुआ । १५ । अब राजा धृतराष्ट्रपुत्रको
 मराहुआ घुनकर पृथ्वी पर पड़ाहुआ अचेत होकर रोगग्रस्त होगा । १६ । अब
 अर्जुन को सब धनुषधारियों में श्रेष्ठ और समर्थ जानो अब वह पापकर्मी दुर्घुदी
 अपनीही निन्दा करेगा । १७ । अब हितकारी वचनके कहनेवाले विदुरजी के
 वचनों को स्मरणकरेगा अब से लेकर नौकरके समान युधिष्ठिरकी उपासन
 करता राजा धृतराष्ट्र उसदुःखको जानेगा जो पांडवोंने पायाथा । १८ । अब राजा
 भीकृष्णकेभी महात्म्यको जानेगा अब युद्धमें अर्जुन के धनुषके घोर शब्द
 को और लड़ाईमें दोनोंभुजा और अस्त्रों के सब बलको जानेगा । २० । जैसे कि

Your warriors ran away from the field of battle, wounded and
 sighing. The Panchals and Pandavas, desirous of victory, checked
 the routed Kauravas. There were dreadful sounds from the lionlike
 roars, conchs and bows of the warriors. The Panchals and the Pand
 avas, seeing the Kauravas terror-stricken and flying, said among
 themselves, "Yudhishtir of true prowess is now without enemies and
 Duryodhan has lost his wealth. 15. Prince Dhritrashtra will now
 be beset with faintness and disease on hearing of the death of his
 sons. He will know that Arjun is the best of archers and will
 blame his own evil policy. He will now remember the salutary
 advice of Vidur and will consider it derogatory to his dignity to
 attend on Yudhishtir like a servant. He will know the greatness

प्राप्यति भीमस्य बलं धारं महारामः । हत-दुर्योधने युद्धे शक्येणवा मरे वले ॥ २१ ॥
 यत्-कृते भीमसैन्येन दुःशासनवधे तदा नाम्यः कर्त्तासि लोकेस्मिन्मृत भीम महा-
 बलम् ॥ २२ ॥ जानीतामथ ज्येष्ठस्य पाण्डवस्य पराक्रमम् । मद्रराजं वते अत्वा देवो
 रपि दुर्गासदम् ॥ २३ ॥ अथ ज्ञास्यति संप्रामे माद्रौपुत्री च पाण्डवो । निहते सोऽप्ये-
 शूरे गान्धारिणे च सर्वशः ॥ २४ ॥ कथं तेषां जयो स स्याद्येषां योश्च । सत्यजयः ।
 सायिकि भीमसेनश्च धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः ॥ २५ ॥ द्रौपदीतनयाः पञ्च माद्रौपुत्री च
 पाण्डवो । शिखण्डो च महेश्वसो राजा चैव युधिष्ठिरः ॥ २६ ॥ येनाञ्च जगता
 नाथो नाथः कृष्णो जनाईनः । कथं तेषां जयो न स्याद्येषां धर्मो न्ययश्च यः ॥ २७ ॥
 भीमो द्रोणश्च कर्णश्च मद्रराजानमेव च । अथान्यान्पृथगान् सर्वान् शतशोऽपि सह
 अयः ॥ २८ ॥ केष्व शक्यो रणे जेतुं सैन्यं पार्षत युधिष्ठिरात् । यस्य नाथो हवींकेवः

इन्द्रके हाथसे बलिनाम समुद्र पारंगया वसीपकार युद्धमें अथ मद्रराजके मरने पर
 महात्मा भीमसेन के धार पराक्रमको जानेगा ॥ २१ ॥ जिस भीमसेनने दुःशासनके
 मरने में जो कर्म-क्रिया उस कर्मका महात्मा भीमसेन के सिवाय दूसरा कौन
 मनष्य करसक्ता है ॥ २२ ॥ देवताओं से भी अनेय राजामद्र को मृतक सुन
 कर बड़े पांडव के पराक्रमको भी जानेगा ॥ २३ ॥ अथ शूरवीर शकुनि और सब
 गान्धार देशियों के मरनेपर युद्धमें पांडव नकुल और सहदेवको भी जानेगा
 ॥ २४ ॥ उन लोगोंकी विजय कैसे नहीं होसक्ती जिन्हों के शूरवीर अतुन सात्याक
 भीमसेन धृष्टद्युम्न ॥ २५ ॥ द्रौपदी के पांचों पुत्र पांडव नकुल सहदेव महाभयुष
 धारी शिखण्डी और राजा युधिष्ठिर ॥ २६ ॥ और सब जगत्के स्वामी दुष्टसंहारी
 श्रीकृष्णजी जिन्होंके नाथ हैं और धर्म जिन्होंका आश्रम स्थान है उन्हीं की
 विजय कैसे नहीं होसक्ती ॥ २७ ॥ भीष्म द्रोणाचार्य कर्ण राजामद्र और अन्य
 सैकड़ों हजारों राजाओंको युद्धमें विजय करनेको पाण्डव युधिष्ठिर के सिवाय कौन
 समर्थ है सदेव धर्म और यशके भंडार इन्द्रियोंके स्वामी श्रीकृष्णजी जिसके

of Shri Krishna as well as Arjun's strength of arms in the field of
 battle - 20. - He will know the prowess of Bhim on hearing the death
 of Sahya like Bali slain by Indra: Who else can do a deed such
 as was done by Bhim in slaying Dushaan? Hearing the death of
 the king of Madra, invincible by Indra, he will know the prowess of
 the eldest Pandav. He will know of the prowess of Nakul and
 Sahadev when he will hear of the death of Shakuni and the Pan-
 chals. Why should they not win who have Arjun, Satyaki, Bhim,
 Dhrishtadyumn, the five sons of Draupadi, Nakul and Sahadev, the
 great archer Shikhandi and prince Yudhishtir for their warriors? 20
 They are sure to win who have Shri Krishna the destroyer of the
 wicked for their protector and Dharm for their refuge. Bhishm,

सखा चर्मयशोनिधिः ॥ २९ ॥ इत्येवं वदमानान्ते हर्षेण प्रहता युताः । प्रणुप्राणाश्च
 कान् पुत्रे सूत्रयथा पृष्ठतान्चयुः ॥ ३० ॥ धनुर्धनुषो रथानां क्रमश्च वलन धीर्यं
 धान् । माश्रोपुत्रो च शकुनि सात्यकिश्च महारथः ॥ ३१ ॥ तान् प्रक्षय द्रुपतः स्वर्षान्
 श्रीमत्सैनमयादिनाम् । दुर्योधनसज्जदा स्तममवीक्षिसमभिव ॥ ३२ ॥ मामतिक्रमते
 पापो भृशुप्राणिरवस्थितः । जघन सधेसेन्यानां ममाश्चान् प्रतिपाद्य ॥ ३३ ॥ जघने
 वसमानं हि कौन्तेयो मां धनुश्चयः । नारसहत व्यतिक्रान्तुं बलामिष महोदधिः
 ॥ ३४ ॥ पश्य सैन्यं महत् स्त पाण्डवैः समिदतम् । सियरेण समुद्रं पश्यस्वेन
 समन्ततः ॥ ३५ ॥ सिहनादाश्च वीर्याः शृणु धीरान्महामयान् । तस्माद्यादि शतैः स्त
 जघनं परिपालयन् ॥ ३६ ॥ मयि स्थिते च समरे युध्यमाने च पाण्डवम् । पुनरावृत्तं
 तस्मै मामकं बलमोज्ज्वला ॥ ३७ ॥ तच्छ्रुत्वा तत्र पुंशः । शूराण्यसदृशं बलः । सार

स्वामी है । २९ । इस प्रकार वार्तालाप करते वड़े आनन्द से युक्त अन्तःकरण
 से अत्यन्त मफुल्लित बह लोग आपके भागहूये शूराओं के पीछे चले । ३० ।
 पराक्रमी अर्जुन रथकी सेना के सम्मुख वक्षपान हुआ और महारथी सात्यकि
 नकुल और सहदेव यह तीनों सकुनिके सम्मुख हुए । ३१ । तब दुर्योधन उन सबकी
 भीषेन के भयसे पीदापान और भागता हुआ देखकर आश्चर्य करता हुआ
 अपने सारथीसे बोला । ३२ । कि धनुष शायमे लिये सम्मुख नियत अर्जुन मुझको
 उलंघन करता है सब सेनाओं के मध्य में मेरे घोड़ोंको पहुँचाया । ३३ । कुन्तीका
 पुत्र अर्जुन मुझ सेनाके मध्य में वक्षपान इसके उलंघन करनेको ऐसे उत्साह
 नहीं करेगा जैसे कि महासमुद्र मयादा को नहीं उलंघन करसका है । ३४ । इसमें
 पाँडवों से पराजितहूँ सेनाको देखो और चारोंआरसे इससेनाकी उठी हुई धूल
 का देखा । ३५ । और वड़े भयकारी धीरे सिहनादको सुनो इससेतुम इससेना
 के मध्यको रक्षा करताहुआ धीरे-२ चल ३वा सेनामें मेरे नियतहोने और पाँडवों
 के रोकनेपर शीघ्रही मेरी सेना तीव्रतासे फिर लाटेगी । ३७ । सारथीने आपके पुत्रके

Droua, Karan, Shalya and thousands of other kings could not be
 conquered except by Yudhishtbir who has Shri Krishn for his master."
 Thus talking, your warriors followed them, 30. Valiant Arjun led the
 army, Satyaki, Nakul and Sahadev opposed 'Shakuni' Seeing them
 distressed and flying, Duryodhan, much amazed, said to his
 charioteer, "Arjun with his bow is overstepping me. Drive my horses
 in the midst of the armies and Arjun will not be able to overstep me as
 the ocean cannot pass over the coast. Look at the army defeated by the
 Pandavas and the dust rising from them. Hear the sharp lionine roars.
 Drive the horses, slowly in the midst of the army. My army will
 again return to duty on seeing my car in the midst of the army."
 Hearing the brave words of your son, the driver drove the horses decked

विदेगसंछन्नान् शनैरदधानचोदयत् ॥ ३८ ॥ गजाद्वयदीर्घहीनार्यकारमानः पदानवः ।
 एकविंशतिसाहस्रा संयुगायावनेरिधरे ॥ ३९ ॥ नानादेशसंभृता नानानगराभिर्निः ।
 व्यवस्थितास्तदा योधाः प्रार्थयन्तो महद्यथाः ॥ ४० ॥ तेषामापनतां तत्र संहृष्टानां
 परस्परम् समर्हः सुमहान् यत्र घोररूपो भयानकः ॥ ४१ ॥ भीमसेनस्तदा राज्ञे
 धृष्टद्युम्नश्च पार्षतः । बलेन चतुर्द्वेजं नानादेश्यान्वाटयत् ॥ ४२ ॥ भीममेवाप्यबलं
 रणेने तु पदातयः । प्रद्वेडास्फोटसंहृष्टा धीरलोकं विपासवः ॥ ४३ ॥ आस्ताद्य भीम
 सेनन्तु संरुवा युद्धदुर्भदाः । चात्तद्वदा विनदुर्हि नान्यद्व्याकथयन् कथाम् ॥ ४४ ॥
 परिचार्ये रणे भीमे निजद्वुस्ते समन्ततः । सः वध्यमानः समरे पदाविगमसंहतः
 न च बाल ततः स्वानाम्भेनाक इव पर्वतः ॥ ४५ ॥ ते तु क्रुद्धा महाराजः पाण्डवानां
 उसशूर और श्रेष्ठ पुरुषों के योग्य वचनको सुनकर सुवर्णके समानसे दकेदुबे
 पीड़ोंको धीरेपनेसे चलायमान किया । ३८ । हाथी घोड़े और रथियोंसे रहित देह
 की प्रीतिकों त्यागनेवाले इक्कीस हजार पदाती युद्ध करने को नियतहुये । ३९ ।
 तब नाना देशोंमें उत्पन्न होनेवाले अपूर्व नगरोंमें रहनेवाले शूरवीर बड़े बलको
 चाहते नियतहुये । ४० । वहाँ उन प्रसन्नचित्त भानेवालोंका वह परस्परबड़ा युद्ध
 उत्पन्नहुआ जो कि घोररूप और भयानक था । ४१ । हेराजां तब भीमसेन और
 धृष्टद्युम्न ने चतुरंगिणी सेनासमेत उन नानादेश निवासियों को रोका । ४२ । फिर
 सिंहाद और भुजदंडों के शब्दों समेत अत्यन्त प्रसन्न वीर लोकोंके जानेके
 अभिलाषी अन्य पदाती भीमसेन के सम्मुख वत्तमान हुये । ४३ । क्रोधयुक्त युद्ध
 दुर्भद धृतराष्ट्र क पुत्र भीमसेनको प्राकर गर्जना करनेलगे और दूपरी कथाको
 नहीं कहा । ४४ । उन सबने युद्धमें भीमसेन को घेरकर चारोंओर से घाबल किया
 इसके पीछे युद्धमें पदाती समूहोंसे गिराहुआ और घाबल वह भीमसेन अपने
 निपट स्थानसे ऐसे चलायमान नहींहुआ जैसे कि मैनाक पर्वत जैसेल होता है
 । ४५ । हे महाराज फिर पाण्डवोंके महारथी क्रोधयुक्तहुये और मारनेमें प्रवृत्त

with gold te ppings. Destitute of elephants and horses and carel as
 of their lives, twenty one thousands of warriors stayed for battle.
 The warriors of different countries were engaged in fighting 40.
 The fighting was dreadful to the extreme Bhimsen and Dhrista-
 tadyumn checked those warriors of different countries 42.
 42. Then with leolino roars and the beating of armor, the cheerful
 warriors desirous of going to the region of heroes, opp ssd Bhim on foot.
 The enraged sons of Dhritrashtra roared at the sight of Bhim and did
 nothing else. Surrounding Bhim in the field of battle they wound-
 ed him from all aides. Sarrounded by the foot soldiers and wound-
 ed by meh, Bhim did not move from his place hke a hill. 45.
 Then the Pandav warriors were enraged and checked other warriors.

महाशयम् । निग्रहोऽनुं प्रवृत्तिं योर्वाञ्छ न्यायवारवन् ॥ ४६ ॥ अक्रुध्यन् रणे भीमसे
 रणेः पश्यन्गदित्यैः । सोऽवतीर्य रवाञ्छं पदाति समुपस्थितः । जितरूपमतिष्ठत्त
 प्रवृत्त मदीनां गदाम् ॥ ४८ ॥ अवधीत्तावकान् बाघान् वृषजगणिरिवात्मकः । रथाश्च
 द्विपदीनांस्तु तान् भीमो गदया बला ॥ ४९ ॥ एकविंशतिसाहस्रान् पदानानवपोषयत्
 हरवा तत् पुरुषानीकं भीम सतयपगक्रम ॥ ५० ॥ घृष्टयुग्मं पुरस्तरथ नाचिरात् प्रथ
 हरथन पादाता निहना भूमौ शिथिरं रुचिरांश्रिता । समन्ता इव वातेन कर्णिकाराः
 सुपुष्पिताः ॥ ५१ ॥ नानापुष्पञ्जरोपेता नानाकुण्डलचारिणः । नानाजात्या इतास्तत्र
 नानादंशकमागताः ॥ ५२ ॥ पताकाध्वजसंलभ पदातीनां महद्वलम् । निकृष्टं विवधौ
 रीद्री धारकं भयानकम् ॥ ५३ ॥ युधिष्ठिरगुणास्तु सहस्रेभ्यः महारथाः । अन्वधावन्
 महात्मानं पुत्रं दृष्योचनं तत्र ॥ ५४ ॥ ते सर्वे तावकान् दृष्ट्वा महेष्वासाः पराङ्मुखान् ।
 नाशयन्संस्त ते पुत्र बन्धव मकरालबध ॥ ५५ ॥ तद्भुक्तमपश्याम तत्र पुत्रस्य पीडयम् ।

होकर अन्व २ शूरवीरों कां रोका । ४६ । तत्र भीमसेन युद्ध में उनचारों ओरको
 नियत पदानियोंके कारणसे क्रोधयुक्त हुआ और शीघ्रही रथसे उतर सुवर्णसे मदी
 हुई बड़ी गदाको लेकर आपसी पदानी होकर नियतहुआ । ४८ । और दृष्टधारी
 कालकेसमान होकर आपके शूरवीरोंतमें रथ घोंडेमेरहित पदानियों को मारा
 । ४९ । अर्थात् उस युद्धमें इकीस हजार पदानियोंको मारकर रुधिरसिक्त शरीरसे
 घोभाषमान हुआ । ५० । और घोंडेही समयमें घृष्टयुग्मको आगेकरके दृष्टिगोचर
 हुआ और वह सब पदानी सुतक रुधिरसे लिप्तहोकर पृथ्वीपर शयन करगये जैसे
 कि पुष्पित कर्णकारके वृक्ष हवासे टूटकर गिरेहोंयें उसी प्रकार नानाप्रकार के
 शस्त्रोंसे संयुक्त नानाप्रकारक कुण्डल रखनेवाले नानाजाति के बहुत प्रकार के
 देशों से आनेवाले शूरवीर धारणसे । ५२ । पताका और ध्वजाओं से ढकीहुई
 पदानियों की बड़ी सेनाके संग लड़ेहुये महाघोर रूप और भयानक होकर
 घोभाषमानहुये । ५३ । और सब सेनाके लाग और महारथी जिनके अग्रवर्ती
 युधिष्ठिरसे वह सब आपके पुत्र महात्मा दुर्योधनके सम्मुख दौड़े । ५४ । उन सबनेबड़े
 अनुषधारी और मुख फिरेहुये आपके शूरवीरोंको देखकर आप के पुत्र कां
 ऐसे उल्लंघन नहीं किया जैसे कि समुद्रको मर्यादा नहीं उल्लंघन करसक्ती । ५५ ।

Then Bhim was enraged on account of the attack and soon coming
 down from his car, he stood on foot with his mace Like Death, with
 his staff, he slew the foot soldiers who had no cars and ho ses. He
 slew the twenty one thousands of warriors and looked glorious with
 his blood stained body. 50. In a short time he was seen with
 Dhristadyumn and foot soldiers lay on earth with bleeding holes
 like Kinshuk trees in bloom struck down by the wind. Decked
 with ear-rings the warriors of various countries lay dead there The
 foot soldiers, with their standards and banners looked dreadful as

यदेकं सहिताः-पार्या न शकुरतिवसितुम् ॥ ५६ ॥ मातितुरापथात्तु कृतवर्द्धं पञ्चा
यने । बुध्योघतः स्वकं सैन्यमब्रवीत्प्रसाविक्षतम् ॥ ५७ ॥ न ते देशं प्रपश्यामि पृथिव्यां
पर्वतेषु वा । यत्र यातास्य घो हन्युः पाण्डवाः किं सूतेन व । ५८ ॥ अत्राश्वं वल्लभं
तेषां कृष्णो च भृशविक्षतौ । यदि सर्वेऽत्र तिष्ठामो ध्रुवं नो विज्जघो भवेत् ॥ ५९ ॥
विप्रयातांस्तु घो मिघ्रात् पाण्डवा कृतकित्विषा । अतुख्यं वृनिष्यन्ति श्रेयो नः
समरे स्थितम् ॥ ६० ॥ श्रुणुष्वं क्षत्रियाः सुखं याघन्तोत्र समागताः । यदा शूरश्च
भीरुश्च मारयन्तकः-सदा । को तु मूढो न युध्पेत पुरुषः क्षत्रियध्रुवः ॥ ६१ ॥ अयो
नो भीमसेनस्य कुदस्य प्रमुखेस्थितम् । सुखसांग्रामिको मृत्युः क्षत्रधर्मण युध्यताम्
॥ ६३ ॥ जित्वेह सुखमाप्नोति हतः प्रत्य महाफलम् । न युद्धधर्मोच्छेयान् वै पन्थाः

वहाँ हमने आपके पुत्रकी उस अपूर्व वीरता को देखा जो सब पाण्डव उस जेकेके
को युद्धमें उल्लंघन करनेको समर्थ नहीं हुये । ५६ । बहुतदूर न जानेवाले अंगनमें
भृशविक्षत भ्रत्यंत घायल अपनी सेनासे यह वचन कहा ॥ ५७ ॥ कि मैं पृथ्वी और
पर्वतोंमें भी उस देशको नहीं देखता हूँ जहाँपर जानेवाले तुम लोगों को
पाण्डव नहीं मारें भगनेसे क्या प्रयोजन है । ५८ । उहाँकी सेनाथोड़ी है और
श्रीकृष्ण समेत अर्जुन अत्यन्त घायल है जो हम सब यहाँ नियतहोजायें तो
अवश्य हमारी विजयहोय । ५९ । अनहित करनेवाले पाण्डव भागेहुये और
छिन्नभिन्न होनेवाले तुमलोगों को पीछे करके मारेंगे इससे युद्धमेंही हमारा भरना
श्रेष्ठ है । ६० । जितने क्षत्री यहाँ इकट्ठे हैं वह सब सुनो जब कि काल
सदृश शूर और भयभीतोंकोभी मारता है तो कौन अज्ञान पुरुष असल सश्रीहोकर
युद्ध नहीं करे । ६१ । श्लोघयुक्त भीमसेनके सम्मुख हमारा कल्याण निश्चत है
क्षत्रीधर्म से लड़नेवालों का युद्धमेंहीभरना सुखदायी है । ६३ । मनुष्य को धर्म
भी कभी भरना है क्षत्रीधर्मसे लड़नेवाले की मृत्यु सुनाने है यहाँ विजय करके
सुखको पाता है और मराहुआ परलोकमें बड़े फलको पाता है । ई कीरव निश्चय

they lay on the ground. The army led by Yudhisht'bir, rushed
against Daryodhan. Seeing your warriors turn back, they could
not overstep him as the Ocean can not pass over its boundary. Then
we saw the wonderful bravery of your son whom all the Pandavas
together could not overstep. 66 Then he said to his wounded
warriors who intended flight, "I donot see a place on hills or plains
where you can be safe from the Pandavas. What will you gain by
flight? Their army is small and Shri Krishna and Arjun are wounded.
We are sure to win if we withstand them. The Pandav warriors
will chase you in your flight. It is therefore good to die fighting.
Let all the assembled warriors hear me. Death overtakes the brave and
the coward, seeing this, who among warriors is foolish enough to

स्वर्गोऽयं-कारवाः । अत्रिदंश्व ताव लोकात् हता युजे ह्यवाप्स्यथ ॥ ६५ ॥ भ्रुवा तु
 वषट् प्रजायित्वा च पाथिवाः । पुनर्योग्यवचन्त पाण्डवानाततायिनः ॥ ६६ ॥
 ताम्रापतं च सर्वानु व्युढानीकाः प्रहारिणः । प्रयुक्तदा पाया जयगृहाः प्रमथ्यवः
 ॥ ६७ ॥ धर्मज्ञयो रथनाजाघ्न्यवचन्त धीर्यवान् । विधुन त्रियु लोकेषु गाण्डीव
 व्यक्षिपन्वतः ॥ ६८ ॥ माद्राप्रुत्रो तु शकुनि सात्वकिश्च महाबलः । जघेनाश्रयतम्
 वीरा यतो च तायकं बलम् ॥ ६९ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यपथपर्वणि संकुलयुद्धे ऊनविंशोऽध्यायः १९ ॥

करके स्वर्गका मार्ग धर्मयुद्धसे उत्तम कोई नहीं है युद्ध में मरनेवाला योद्धेही समयमें
 मत्ता होनेवाले लोकोंको भोगता है । ६५ । राजालोग उसके वचनको सुनकर
 और बड़ी मशक्ता करके शस्त्रोंको धारण करके फिर पाण्डवों के सम्मुख आकर
 वचनानुसरे । ६६ । अलंकृत सेना समेत शस्त्रधारी विजय के आकांक्षी और
 को प्रयुक्त वह पाण्डव शीघ्रही उन आनेवालों के सम्मुखगये । ६७ । पराक्रमी
 अर्जुन रथकी सवारी से युद्धभूमि में यत्नेमान हुआ और तानिलोकमें विरुधात
 गांडीव धनुषको ठंकारा वृद्ध पराक्रमी सात्यकि नकुल और सहदेव यह तानिबीर
 तीव्रता से उस और शकुनी के सम्मुखगये जिधरको कि आपकी सेनाथी ६९ ॥

not to fight. Our good... to die in
 battle is good for war Why
 should we not die fight... are happy if we gain victory and
 attain heaven in case of death. The easiest way to heaven lies
 direct
 Pand-
 his car
 "I have Saatyaki, Nakul and Sahadev oppose
 Shakuni and his army." 69.



सञ्जय उवाच । सन्नियुक्ते बलीषे तु शाहवो म्हेच्छगजाधिपः । जयन्वाचत
 संक्रुतः पाण्डूनां सुमहद्वलम् ॥ १ ॥ आस्थाय सुमहानागं प्रसिद्धं चर्षतोत्तमम् । इत
 भैरावणप्रथमगिष्यगणमर्हन्म ॥ २ ॥ वोसौ महान् अद्रकुले प्रभूतः सुर्षोत्तमो चार्त्त
 गच्छेण निरयम् । सुहृत्पितः शास्त्रीधनिश्रयधैः सहोपवास्य कर्मरेषु राजन् । तमा
 स्थितो राजवरो बभूव पयोदयस्थः सविता तथास्ते ॥ ३ ॥ स तेन भागवतवरेण राज
 अशुघयी पाण्डुसुतान् समन्तात् । शितैः पृथक्पैर्षिददाद चापि महेश्वरजप्रतिधैः
 सुघोरैः ॥ ४ ॥ ततः शरान् वै स्रजतो महारणे बोजांश्च राजभगतो वमाय । नाकर्षा
 तरं ददशु स्त्रे परे वा यथा पुरा वज्रधरस्य वैरावा । वैरावणस्यस्य चाभिधिमर्ह वैत्वा
 पुरा वासवस्येष राजन् ॥ ५ ॥ ते पाण्डवाः सामकसृञ्जयाश्च तमेकनागं ददशुः समे
 तात् । सहस्रशो वै विचरन्तमेकं यथा महेश्वरस्य गजे समीते ॥ ६ ॥ संव्राज्यमाणन्तु

अध्याय १० ॥

संजय बोले कि सेना के समूहके छोटनेपर म्हेलों के समूहों का राजा महा
 क्रोधयुक्त शाल्व पाण्डवों की बड़ी सेना के सम्मुख गया । १ । मतवाले चर्षना
 कार अंशुकारी ऐरावत के समान शत्रुओं के समूहों के मर्दन करनेवाले बड़े हाथी
 पर सवार । २ । जो भद्रनाम बड़े कुलमें उत्पन्न सदैव दुर्योधन से पूजितवा
 शास्त्र के निश्चय धारणनेवाले मनुष्यों से अलंकृत हाथी युद्धमें जिसकी सदैव सवारी
 था हेरामा बह राजाओं में श्रेष्ठ हाथीपर निषत होकर उस प्रकारका विदित
 होताथा जैसे कि प्रातःकाल के समय उदयाचल पर निषत सूर्य होताहै । ३ । उस
 अत्यन्त उत्तम हाथीकी सवारी से उन इकट्ठे होनेवाले पाण्डवों के सम्मुख गया
 और उसने बड़े तेजवान् वेगवान् इन्द्र वज्रके समान व महायोर पृथकों से पाण्डवों
 को पापनकिपा । ४ । इसके पीछे बड़े बुद्धिमें बाणोंको छोड़नेवाले और
 शूरीरोंको यमनोकमें पड़वाने वाले इस राजाका छिद्र अपने और दूसरे शूरीरों
 ने भी ऐसे नहीं देखा जैसे कि पूर्वसमयमें ऐरावत हाथीपर सवार सेनाके मर्दन
 करनेवाले वज्रधारी इन्द्रके छिद्रोंको दृष्टताओं ने और असुरों ने नहीं देखाथा । ५ ।
 उन पाण्डव सोमक और मृत्तियों में चारों ओर को हजारों प्रकार से घुसनेवाले

CHAPTER, 10

Sanjaya said, " At the return of the armies, the king of mlechas
 Bhalwa much enraged, faced the Pandav army. He was mounted on
 a mad elephant huge ana hill or Airavat, of Bhadra family, kept
 long by Duryodhan for the purposes of war. Mounted on that ele-
 phant, the king looked glorious like the morning Sun and faced the
 Pandavas. He wounded them with his vajra like arrows. Fighting
 there none could make out any weakness in him as none could
 find out the defects of Indra while mounted on Aravat in the
 war of gods and asura. The Pandavas Borsaka and San jaya saw

बलं परेषां परीतकल्पं विवर्धे समन्तात् । नैवावतस्थ समः भूगो भगदिमुद्यमानस्तु
 परस्परं तदा ॥ ७ ॥ ततः प्रमग्ना सहसा महाबलः सा पण्डवो जेतुं नराधिपेन । विदुः
 स्यतसुः सहसा प्रभावितः गजैश्च वेगं तमपारयन्ती ॥ ८ ॥ दृष्ट्वा च तं वेगवती
 प्रमग्ना सर्वैः स्वदीया युधि योधमुखयाः । सम्पूजयन्तश्च नराधिपेन शोभायुः प्रवृत्तः
 शयित्तिकाशान् ॥ ९ ॥ श्रुत्वा तितादस्वधकारवाणां ह्यपदिमुक्तं सह शूलशब्दः ।
 सनापतिः पाण्डवस्युज्जयानां पांचालपुत्रो ममपय कोपान् ॥ १० ॥ ततस्तु न वे द्विरथ
 महात्मा प्रस्युद्यथो स्वरमाणो जवाय । अस्मा यथा शक्रसमागमे ये सागन्धर्वे गण
 मिन्द्रवाद्यम् ॥ ११ ॥ तमापतन्तं सहसा च दृष्ट्वा पांचालगजं युधि राजसिंहः । त
 वे द्विपं प्रस्ययामास नृजं चघाय राजन् द्वपदारमजस्य ॥ १२ ॥ स न द्विपं महासाध्याय
 तन्तमधिप्यग्निपतिमः पुत्रकैः । कर्मारधानेतिशो जेजुं द्विनौगचमुद्यत्त्रिमदय

उमः भकृज्ज हाथीको सम्मुख एव देवा जेतुं किं मह इन्द्रके हाथीको देवाथा ६ ।
 तत्र प्रतिपत्तियों की सेना चारों ओरसे भागी हुई और मरणप्राय दिनाई पड़ी और
 युद्ध में परस्पर अत्यन्त मर्दन पाये हुये भयसे नियत नहीं हुये ७ । फिर पांडवों
 की वह बड़ी सेना उस राजा के हाथसे भकृस्मात् चारों ओरको दौड़ी ८ । आपके सपे उत्तम
 शूरीरों ने युद्धमें उस वेगवान् सेनाको पगजित हुई देखकर उस राजाकी प्रशंसा
 करी और चद्रणे श्वेत शखोंको वजाया ९ । पांडव और सृजिन्यों के
 सेनापति धृष्टद्युम्नने कौरवोंकी वह शखों के द्वाराकी हुई गजना सुनकर सहन नहीं
 किया १० । इसके पीछे शीघ्रता करनेवाजा महात्मा धृष्टद्युम्न विजयके निमित्त
 उस हाथीके सम्मुख एतगया जेतीक इन्द्रके सम्मुख जूभनाम आसुर इन्द्रकी सवारी
 के गजराज एरावत के सम्मुख गयाथा ११ । उत्तराजाओंमें अष्टने उस भकृस्मात्
 प्रतिदुये धृष्टद्युम्नको देखकर शीघ्रतासे अपने उस हाथीको दुपदके पुत्र धृष्टद्युम्नके
 मानके निमित्त चलायमान किया १२ । उस धृष्टद्युम्नने अग्निके रूप कारीगर
 के हाथसे सफा किये हुये तेजधार प्रकाशित और बड़े वेगवान् उत्तम पुत्रके नाम

the elephant moving in all directions like a hawk, &c. That the army
 of the foes was to be seen dead or flying in all directions and could not
 stay for fear. The Pandav army was defeated by that king and ran
 away in all directions. Seeing the Pandav army routed your warriors
 praised the king and blew white conchs. Dhrishtadyumna the
 commander of the Pandav forces, could not bear to hear the blasts
 of their conchs. 10. To gain victory, Dhrishtadyumna attacked the ele-
 phant as Jamsh had opposed Airavat the elephant of Indra; The king
 seeing Dhrishtadyumna advance towards himself urged his elephant
 at him. Dhrishtadyumna wounded the elephant coming towards him
 with three well-cleaned arrows. He again wounded the elephant with

वेगः ॥ १३ ॥ ततो परान् पञ्च शतान् महारथा नारायणमुखात् विससज्ज कुम्भे । च
 तेषु विश्वः परमद्विगो रगे तथा परापृथ्य भ्रमं प्रमुदधे ॥ १४ ॥ तं नागराजं सहसा
 प्रणुज्ज विद्राड्यः । पञ्च निगृह्य शाल्वः । तोत्राकुशैः प्रेषयामास तं पाञ्चालराजस्य
 रथं प्रविश्य ॥ १५ ॥ दृष्ट्वा शतं सहस्रा तु नागं घृष्टघ्नः स्वरथाच्छिमेव । गर्वा
 प्रगृह्याशु कथेन घोरं भूमिं प्रपन्नो भयविह्वलाङ्गः ॥ १६ ॥ स तं रथं हेमविसृषि
 ताङ्गं सादर्थं समूतं सहसा विसृष्ट ॥ उद्विष्टप्य हस्तेन महाद्विपोऽथ । विषोषयामास
 पशुम्वरातल ॥ १७ ॥ पाञ्चालराजस्य सुतं स्म दृष्ट्वा तदाहितं नागवरेण तेन ।
 तमन्वधावत् सहसा जनेन भीमः शिलण्डो च शिनेश्च मत्ता ॥ १८ ॥ शरीरं वेगं
 सहसा निगृह्य तयामनो ह्यागततो गजस्य । स संगृहीतो रथिमगोजो वै चञ्चल
 तैर्बाह्यैर्माण्ड्य संख्ये ॥ १९ ॥ ततः पुरस्कान् प्रववर्ष राजा सृज्यो यथा रश्मिजालाद
 तीतवाणां से वस अकस्मात् आनेह्ये हाथी को घायल किया । १३ । इसके पीछे
 उभी महात्माने अन्य पाँच नारायों को उस हाथी के कुम्भपर छोड़ा तब वह उस
 हाथी युद्ध में उन वाणों से अत्यन्त घायल और घूमकर तीव्रता से भागा । १४ ।
 फिर शाल्व ने अकस्मात् भागे हुये और चलायमान उस गजराज को लौटाकर
 घृष्टघ्नके रथको जतलाकर शीघ्र चाबुक और अंकुशों के द्वारा भेजा । १५ ।
 फिर अकस्मात् आतेहुये उस हाथीको देखकर भयसे व्याकुल शरीर वीर घृष्टघ्न
 शीघ्रही अपनी गदाको रथमें लेकर तीव्रता पूर्वक वृथ्वी पर बसमान हुआ । १६ ।
 उस वड़े गर्जतेहुय हाथी ने उस घुबर्ष से अलंकृत रथका छोड़े और सारथी समेत
 अकस्मात् सृष्ट से उठाकर पृथ्वीपर पूर्ण कराडाला । १७ । तब उस उत्तम हाथी
 से पीडापान राजा द्रुपद के पुत्रको देखकर भीमपेन सात्याके और शिलण्डो यह
 तीनों अकस्मात् वड़ी बेजी से उसकी ओर दौड़े । १८ । और अकस्मात् उस
 आनेवाले हाथी के वेगकी रीका वह हाथी उन रथियों से युद्ध में घरा और
 रुकाहुआ कम्पायमान हुआ । १९ । इसके पीछे राजा शाल्व पृथकों की चारोंओर

five arrows on the forehead and made him turn face. Shalwa brought
 back the elephant and urged him with whips and goads at the ear
 of Dhrishtadyumna. 15. Seeing that elephant advance towards him,
 Dhrishtadyumna jumped down from his car with his mace. The
 elephant, crushed into pieces the car, driver and horses by dashing
 it to the ground with his trunk. Seeing Dhrishtadyumna troubled by
 the elephant, Bhim, Satyaki and Shikhaudi rushed towards him and
 checked the elephant. Surrounded by them, the elephant tremble.
 They showered upon them his arrows like the rays of the Sun. 19.
 Seeing that deed of Shalwa, the Pañchala, Mat-ya and S injaya
 checked the elephant from all sides. Drupad's son advanced & shot

समन्तात् तैराशुगैर्विधमाया रथोगा प्रभुदुबुलत्र ततस्त सर्वे ॥२०॥ तत् कर्म शास्त्रस्य
 समीक्ष्य सर्वे पाञ्चालमत्स्या नृप सुञ्जयाश्च । हाहाकारैर्नादयन्त स्म युद्धे विप्रं समं
 ताशुर्बर्नराप्रयाः ॥२१॥ पाञ्चालराजस्त्वरितवतु शूरो गदां प्रयुञ्जाच्चलभृङ्गनुदयात् ।
 ससम्भ्रमं भारत शत्रुघाती जघेन धीरोऽनुससार नागम् । २२ ॥ ततस्तु नागं धरणी
 धराभं मर्दं क्वच्यन्तं जलदमकाशम् । गदां समासाद्य मृशं जघान पाञ्चालराजस्य सुत
 पत्न्युत्थी ॥२३॥ स भिन्नकुम्भः सहसा त्रिनद्य मुखात् प्रभूतं क्षतज विमुञ्चयत् । पपात
 नागो धरणीधराभः क्षीतप्रकम्पे खलितो यथाद्रि ॥२४॥ निपात्यमाने तु तदा गजेश्वरे
 हाहाकृते तव पुत्रस्य श्रेष्ठे । स शास्त्रराजस्य शिनिप्रवीरो जहात् मज्जन शिर क्षितेन
 ॥ २५॥ कृत्वापमात्रो युधि सारवतेन पपातै भूमी सह नागराजा । यद्यदिशुङ्ग सारसा
 प्रभूतं वजेण देवाधिपज्योदितेन ॥ २६ ॥

इति शतपथब्रह्मशास्त्रे शतपथपर्वणि शास्त्रबन्धे त्रिंशोऽध्यायः २० ॥

से ऐसी वर्षा करने लगा जैसे कि किरणों के जालको सूर्य भरसाता है उन
 शीघ्रगामी बाणों से घायल रथों के समूह एक सापही जहाँ तहाँ भागे । २० ।
 हे राजा नरोंमें उत्तम और हाहाकारों से शब्द करनेवाले सब पाञ्चाल मत्स्य और
 मृञ्जय देशियों ने शास्त्र के उस कर्मको देखकर उस हाथी को चारोंओरसे रोका
 । २१ । हे भरतवशी वह शत्रुओं का मारनेवाला, शूरवीर मृपदका पुत्र शीघ्रही
 भ्रान्ती से रहित पर्वतके शिखरकी समान गदाको लेकर त्रिविधासे हाथी की
 ओर चला । २२ । फिर छुष्टपुम्नने उस गदाको लेकर उस पर्वतकार, बोदल के
 समान मद्साइनेवाले हाथीको बहुत घायलकिया । २३ । वह पर्वततम हाथी
 दृष्टाकुंभ, भ्रकस्मात् गर्जकर मुखसे बहुत रुधिर को रोड़ता ऐसे गिरपड़ा जैसे कि
 भूकम्प, हानेसे पर्वत गिरता है । २४ । तब गजराज के गिराने और आपके पुत्रकी
 सेना के हाहाकार करनेपर उन शिनियों में बड़े धीरे सात्यक ने राजा शास्त्र
 के शिरको भस्मसे काटा । २५ । युद्धमें यादव के हाथसे कटाशिर वह राजा
 गजराज समेत पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि देवराज के चलायमान वज्र से
 दृष्टा पर्वत का बड़ा शिखर होताहै । २६ ।

it with his mace and wounded the huge beast. Wounded and vomiting
 blood from its mouth, the elephant fell down like a hill by an
 earthquake. At the fall of the elephant, when your warriors were
 crying out with grief, Satyaki beheaded Shalya with a sharp arrow.
 With his head cut off by the Yadava, the king and his elephant fell
 down like a hill struck by the vajra of India. 26

सञ्जय उवाच । तस्मिन्स्तु निहते शरं शाल्वे समितिशोभने । तत्राभ्युद्वलं धेनु
 ज्ञतेनेव महादुमः ॥ १॥ तत् प्रभङ्गे पले हृष्ट्वा कृतवर्मा महारथः । क्षीराक्षमरे शूरः
 शत्रुसैन्यं महाबलः ॥ २॥ सन्निवृत्तास्तु ते धीरा हृष्ट्वा सारथतमाहवे । शैलोपमं स्थितं
 राजन् कीर्यमाणं शरैर्युधि । ततः प्रवृत्ते युद्धं कुरुणा पाण्डवे । सह निवृत्तानां महान्
 राज्ञ मृत्युं कृत्वा निवर्त्तनम् ॥ ४ ॥ तत्राभ्युद्वं महायुद्धं सारथतस्य परैः सह । यदेको
 धारयामास पाण्डुसेनां दुरासदम् ॥ ५ ॥ तेषामन्योन्यसङ्घर्षं कृते क्रमेण दुष्करे ।
 सिंहनादं प्रहृष्टानां दिवस्पृक् सुमहानमत् ॥ ६ ॥ तेन शब्देन विभ्रलाः पाण्डवाः मरत
 र्त्तः । शिनेर्त्तः महाबाहुयवपथन सारथकिः ॥ ७ ॥ स समासाद्य शत्रूनां क्षेमकीर्तिं
 महाबलम् । सप्तमिर्त्तिशिनैर्वाशिरयद्यमसादतम् ॥ ८ ॥ तमापास्तं महाबाहुं प्रक्षिप्यते
 शिनाडुरान् । जवेनाप्यपतञ्जीमान् हाहिकयः शितिपुङ्गवम् ॥ ९ ॥ तौ सिंहाविष

अध्याय २१ ॥

संजय बोले कि उस युद्ध के शोभा देनेवाले शूरशास्त्रक मरमेपर भापी
 सेना शत्रितासे ऐसी पृथक्-२ हुई जैसे कि वायुसे बड़े दृष्ट पृथक् होजाते है । १ ।
 बड़े बलवान शूरवीर महारथी कृतवर्मा ने उस सेना को पृथक् हुआ देखकर
 युद्धमें ही रोकना २ हेराजा वधवीर उस पर्वत के समान युद्धमें नियत वाणों से उके
 हुये पादवको युद्ध में देखकर लौटे ३। इसके अनन्तर मृत्युको पीछे कर लौटनेवाले
 कौरवों का युद्ध पंडवोंके साथ जारी हुआ । ४ । वहां पादव का युद्ध प्रतिपक्षियों
 के साथ अपूर्व हुआ जो अकेलेही कठिनतासे रोकने के योग्य पांडवसिंहाके
 रोकने ५ । परस्पर शुभचिन्तक लोगोंके उस कठिन कर्म करनेपर अत्यन्ततासे
 उनलोगों के सिंहनाद आकाश अथवा स्वर्ग के भी स्पर्श करनेवाले हुये । ६ ।
 हे भरतर्षभ उस शब्दको सुनकर पांचालदशी भयभीत हुये फिर शिनी का पौत्र
 महाबाहु सारथिकः उसक सम्मुख बलमान हुआ । ७ । उसने बड़े पराक्रमी राजा
 क्षेमकीर्ति को पाकर तेज धारवाले सातवाणों से धमलोक में पहुँचाया । ८ ।
 तब बुद्धिमान कृतवर्मा से उस तेजवाणों के फेकनेवाले आतेहुये महाबाहु सारथिक
 के सम्मुख दौड़ा । ९ । अत्यन्त उत्तम शस्त्रों के धारण करनेवाले रथियों से अल

CHAPTER XXI

Sanjaya said, "At the fall of valiant Shalwa your warriors dispersed like trees in a storm of wind. Brave Kritvarma checked the dispersion, for seeing the Yadav firm like a hill under the rain of arrows, they came back to fight. Then the Kauravas fought fearlessly with the Pandavas. The Yadav fought a wonderful battle with the Gosa, for alone he checked the great Pandav army. 5. The lionine roars of his friends touched the sky. The Panchala were terrified with their cries and Satyaki the grandson of shini opposed him. Finding Prince Kshemkirti before him, he slew him with arrows

नद्वैरो ज्ञानिनां विदितान्वरी । अमोघ्यमि गनेनां ताप्रवर्तयारिणो ॥१०॥ पाण्डवो ।
 सद्यो चालेयोवाश्यावे नृपौत्तम । प्रशुका, समपद्यन्तु तयोर्धरे समागमे ॥११॥ नारा
 केवास्यमैत्र कृपयश्चक्रमदारयो । अभिगन्तुस्तुर्येभ्यः प्रशुशान्ध कुञ्जरी ॥ १२ ॥
 अरुणो विविधानामार्गो हार्दिक्यशिनियुगौ । सुधुर्द्वैयतामैतौ बाणवृष्ट्या परस्परम्
 ॥ १३ ॥ आपवेगबलोद्धतानामार्गान् धृष्णिस्त्रिहयोः शुकामो समपद्याम पतंगानिष
 शीघ्रगान् ॥ १४ ॥ तमेकं सारयकर्माणमासाद्य हृदिश्रामज्ज । अविध्यभित्तितर्धानिचतु
 श्चिह्नतुगो हवान् ॥ १५ ॥ स दीर्घगह्नु संदुखस्तोत्राद्भित्त, इत्य द्विषः । अष्टमिः कृतव
 र्माणमविरपत् परमेधुभिः । १६ ॥ ततः पूर्णावनीत्खटवः कृतवमा धिल्लाशितैः । सारयाकि
 त्रिमिराहरय चतुरैकेन चिच्छिदे ॥ १७ ॥ निकृष्टं तद्धनु श्रेष्ठ मपास्व शिनिपुङ्गवः ।
 अम्यदावत् वेगेन शैलेयः सजरे धनुः ॥ १८ ॥ तदादाय धनु' धेठं धरिष्ठ, सर्वधर्मि
 धनुषधारी सिद्धों के समान बर्जनेवाले दोनों सम्मुख दौड़े । १० । इन दोनों के
 घोर संग्राम में पाण्डव आदिक उत्तम २ राजानों और पाण्डवों समेत
 अन्य अन्य धुरधीर देखनेवाले हुये । ११ । अत्यंत प्रसन्न हाथीके समान उस
 पृष्णी और अन्यक कुलके महारथियों ने नाराच और वरसदन्तनाम बाणों से
 परस्पर घायल किया । १२ । नानामकारके मार्गोंको घुमनेवाले वह दोनों कृतवर्मा
 और सात्यकि परस्परकी बाणवृष्टी से बारम्बार गुप्तहोगये । १३ । हमने उन वृष्णियों
 में श्रेष्ठोंके धनुषोंकी शक्ति और बलमें ऊंचे फेंके हुये बाणोंको आकाश में
 शीघ्रगामी पक्षियों के समान देखा । १४ । हार्दिक्यके पुन कृतवर्माने उस अकेले
 सत्यकर्माको पाकर तेजधार चारबाणोंसे उसके चारोंबाँकों घायल किया । १५ ।
 उस लम्बी मुजावाले भरपन्त क्रोधयुक्त चायुक से पीड़ितमान हाथी के समतुल्य
 ने आठ उत्तम बाणोंमें कृतवर्मा को घायल किया । १६ । उसके पीछे कृतवर्माने
 अश्लेषकार खंचकर तेजधार तिन बाणोंसे सात्यकि को घायल करके एकबाण
 से धनुषको काटा । १७ । फिर शिनियों में श्रेष्ठ सात्यकि ने उस दृष्टे धनुषकोहाल
 कर बड़ेवेगसे बाणसमेत दूसरे धनुषको हाथमें लिया । १८ । इन धनुषधारियों में

arrows. Then wise kritvarma rushed against Satyaki who was dis-
 charging his arrows fast. The two great archers opposed each other
 roaring like lions 10. The Pandavas, the Panchals and other kings
 looked on them as they fought. The two heroes of Vrishni and
 Andhak families wounded each other with their sharp arrows. Mov-
 ing in different directions, they covered each other with the showers
 of their arrows. We saw the flights of their arrows in the air like
 the flights of their arrows in the air like the flights of birds, Krit-
 varma wounded the four horses of Satyaki with four arrows. 15.
 Enraged like an elephant pierced with goads, he wounded Kritvarma
 with eight arrows. Having wounded Satyaki with three arrows

नाम । आरोग्य के महावीर्यो महाबुद्धिर्महाबल ॥ १९ ॥ अमृत्युमाणा धनुषद्वन्द्वं
 कृतवर्मणा । कुपितोतिरथ शीघ्र कृतवमाणमप्यथात् ॥ २० ॥ ततस्तु निशितैर्बाणैर्
 शमि शिनिपुङ्गव । जघान स्तम्भान्भ्राञ्ज्य ध्वजञ्च कृतवर्मण ॥ २१ ॥ ततो राजन्
 महेश्वास कृतवर्मा महारथः । इताभ्यसूनं संप्रहय रथेद्देहमपरिष्कृतम् ॥ २२ ॥ रथेन
 महताविष्टः शूलमुद्यम्य मारिष । विक्षेप सुजघेतेन जिघांसु शिनिपुङ्गवम् ॥ २३ ॥
 तच्छूल सास्वतो ह्यजौ निर्भिद्य निशितै शरैः । श्णितं पातयामास मोहयन्निव गाध
 वम् । ततोऽपरेण भल्लेन वृष्टेन समताडयत् ॥ २४ ॥ स युद्धे युयुधानेन इताश्चो हत
 सारथि । कृतवर्मा कृतात्त्रेण धरणीमन्यपद्यत ॥ २५ ॥ तस्मिन् सारथकिना घोर द्वैर्ये
 विरथो कृते । समपद्यत सर्वेषां सैन्यानां सुमहद्भयम् ॥ २६ ॥ पुत्रस्य तव चात्यर्थ
 विषादः समपद्यत । इतस्ते इताश्चे तु विरथे कृतवर्मणि ॥ २७ ॥ इताश्चैव समा

भेष्ट बड़ा पराक्रमी बुद्धिमान बलवान और कृतवर्मा के हाथसे धनुषके तोड़ने
 को न सहनेवाला क्रोधयुक्त अतिरथी सात्यकि उस उत्तम लिये दुह्ये धनुष को
 चढ़ा कर शीघ्रही कृतवर्मा के सम्मुख गया । २० । वहाँ जाकर सात्यकि ने
 अत्यन्त तेजधर दशबाणों से कृतवर्मा के ध्वजासमेत सारथी और घोड़ों को
 मारा । २१ । इसके पीछे बड़े धनुषधारी महारथी बड़े क्रोधयुक्त सात्यिके मारने
 के इच्छावान कृतवर्मा ने सुवर्णके समानवाले रथको मृतक घोड़े सारथीवाला
 देखकर शूलको उठाकर अपनी भुजाके वेगसे फेंका । २१ । युद्धभूमि में माधव
 को मोहित करत चादव कृतवर्मा के फेंकेहुये उस शूलको सात्यकि ने तेजधार
 बाणों से काटकर चूर्ण करके गिराया इसके पीछे दूसरे भल्ल से उसको कठिन
 घायल किया । २४ । उस धुध युद्धमें बड़े अस्त्रधर सात्यिके के हाथसे मृतकघोड़े और
 सारथीवाले कृतवर्मा ने पृथ्वीको प्राप्त किया । २५ । उस द्वैरय युद्धमें सात्यिके हाथ
 से घोर कृतवर्मा के विरथ करने पर सब सेनाओं को बड़ाभय वर्धमान हुआ
 । २६ । और आपका पुत्रभी महाव्याकुल हुआ हे राजा मृत सारथी के मरने
 और कृतवर्मा के विरथ होनेपर उस शत्रुओं के विजयी को मृतक सारथी और

Kritvarma cut his bow with one arrow Satyaki The best of Bhims
 dropped the broken bow and at once took up another... Not bearing
 the backage of his bow by Kritvarma, Satyaki opposed him with
 the drawn bow. 20. With ten arrows he cut and killed Kritvarma's
 standard, driver and horses Desirous of slaying brave Satyaki, and
 so his gold and destitute of horses and driver, Kritvarma
 hurled at his adversary a spear with great force Seeing the spear
 coming towards him Satyaki cut it into pieces with his sharp arrow
 and wounded his adversary with another With his horses and driver
 slain by Satyaki, Kritvarma come down on the ground. 25. There
 was a great consternation among the armies, when Kritvarma was

संशय इतन्मत्तमरिन्दमम् । अशुभवाचत कृपात्ताञ्जद जिघांसु शिनिपुङ्गवम् ॥ २८ ॥
 तस्मारोप्य रथोपहृये मिथता सर्वघञ्चिनाम् । अपोवाहः महाबाहुस्तुजमामोघनाह्वयिः
 ॥ २९ ॥ शैमेयाविधिते राजन् विरथे कृतवर्माणि । दुर्योधनबल सर्वे पुनरासीत परां
 मुह्यम् ॥ ३० ॥ तत्र परे नावमुपपन्न सैन्ये तु रजस्ताहने । नावकाः प्रदुता राजन्
 दुर्योधनमूत्रे नृपम् ॥ ३१ ॥ दुर्योधनस्तु संप्रेक्ष्य मर्न स्वबलमग्निकात् । ज्वेताभ्य
 पतन्तुर्ण सर्वाश्वैकोऽपवारयत् ॥ ३२ ॥ पाण्डुश्च सर्वाश्च संकुञ्चो घृष्टयुग्मश्च पापं
 तम् । शिखण्डिन द्रौपदेयान् पाण्डालानाञ्च मे गगा ॥ ३३ ॥ कैकेयाद् सोमकाश्चैव
 पाण्डालोश्चैव मणिय । असम्भ्रमं दुराधर्षं शिरै शस्त्रैरताडयत् ॥ ३४ ॥ अतिघृष्टदाहवै
 यस्तात् पुत्रस्तथ महाबलः । यथा पक्षे महानग्निर्मन्त्रपूतः प्रकाशवान् । तथा दुर्यो

घाईवाला देवकर सात्यकि के मारनेके अभिलाषी कृपाचार्य सम्मुख दाहे । २८ ।
 और सब धनुषधारियों के देखते हुये उस महाबाहु को रथके, बैठने के स्थान में
 बैठाकर शीघ्रही युद्धभूमि से दूरलेगये । २९ । हे राजा सात्यकिके नियतहोने और
 कृतवर्मा के विरथ होनेपर दुर्योधनकी सब सेना फिर मुलोंको फेर गई । ३० । सेना
 की धूल से ढकेहुये प्रति पक्षियों ने उसको नहीं जाना हे राजा उस समय सिवाय
 राजा दुर्योधनके और सब आपके शृंग्धीरभागे । ३१ । फिर दुर्योधनने सम्मुख से
 अपनी सेना को देखकर तीव्रता से शीघ्रही सम्मुख आकर भङ्गलेनेही सबको
 रोंका । ३२ । और अत्यन्त क्रोधयुक्त ने सब पाण्डव घृष्टयुग्म द्रौपदी के पुत्र
 पाण्डालोंकी सेनाओं के समूह केकय सोमक और मृञ्जियों को तीक्ष्णबाणों से
 रोका । ३४ । आपका पुत्र बड़ा बलवान सावधान और अजेय युद्ध में भ्रान्ती से
 रहित होकर नियत हुआ राजा दुर्योधन सब ओरसे तपाता हुआ युद्धमें उस
 प्रकार नियत हुआ जैसे कि यज्ञ में मन्त्रसेपवित्र बड़ा अग्नि होता है । ३५ ।
 और प्रतिपत्नीलोग युद्धमें उसके सम्मुख ऐसे नहीं वर्तमान हुये जैसे कि मरु के

deprived of his car by Satyaki Your son too was in great distress .
 Seeing Kritvarma deprived of car, driver and horses, Kripacharya
 rushed on to slay Satyak. He took Kritvarma upon his car in the
 presence of all the warriors and took him far away from the field of
 battle, Duryodhan's army again turned face on seeing Satyaki's
 prowess in depriving Kritvarma of his car. 30. He was covered with
 the dust raised by the army. All the Kaurav warriors ran away
 with the exception of Duryodhan Seeing his army routed, Duryo-
 dhan alone checked the Pandav army, including Dhrishtadyumna, the
 sons of Draupadi and the Panchal, Kaikeya, Somak and Brunjaya
 warriors, with his sharp arrows. Your son, powerful, careful and
 invincible, stood resolutely there. He stood in his glory like fire
 unperturbed over by the libations of sacrifice the enemies could not

धर्मो राजा सधामे सधताऽमृतम् ॥ ३४ ॥ त परे नाम्बपद्यत मर्यां सूर्युगिवाहवे ।
अथान्ये रथमास्थाय हार्दिक्य समपद्यत ॥ ३६ ॥

इति शल्यपर्वणि शैल्युत्थपर्वणि मंजुत्रयुद्धे वृकाशिशोष्याय २१ ॥

सञ्जय उवाच । पुत्रस्तु ते महाराज रथस्यो रथिनाम्बर । कुठलाहा वनो युद्धे
यथा रुद्र प्रतापवान् ॥ १ ॥ तस्य धाणलहृद्यैस्तु मण्डलां क्षयवग्मही । पराञ्च शिविचे
बाणैर्धाराभिरिव पर्वतान् ॥ २ ॥ न च सोऽस्ति युगात् कश्चित् पाण्डवानां
महाहृद्ये । ह्यो गजो रथो धर्षि योस्य धाणैरविद्यत ॥ ३ ॥ च यं हि समरे योषं
पश्यामि विशाम्पसे । अतु व्रणैश्चितोभूद्धे पुत्रेण तव भारत ॥ ४ ॥ यथा सैन्येन
रथसा समुद्भूतेन धादिनी । प्रत्यहृद्यत सद्यश्चा तथा धाणैर्महारमन ॥ ५ ॥ धाणसू
आगे मत्पेलाके क रंढनेराले नर्ही वत्तमान होते इसके पीछे कुतवर्मा दूसरे रथपर
सवार होकर युद्धभूमि में आया ३६ ॥

अध्याय २२ ॥

संजय बोले है महाराज, रथियों में धेड़ रथमें मवार आपका पुत्र युद्धमें
उत्साहवाला ऐसे शोभायमान हुआ जैसे कि प्रतापवान् रुद्र जी निश्चत होकर
शोभित होते हैं । १ । उनके हजारों धाणोंसे पृथ्वी आच्छादित होगई उसने शत्रुओं
को धाणोंसे ऐसे सींचा जैसे कि धाराओं से बादल पहाड़ों को सींचता है । २ ।
पाण्डवों के सेनासागर में ऐसा कोई मनुष्य घोड़ा हाथी और रथ नहीं था जो
कि उसके धाणों से विदीर्ण न हुआ हो । ३ । हे भारतवर्षी राजापुत्राष्ट्र हमने जिस
जिन शूरवीरको युद्धमें देखा वह वह आपके बेटे के धाणों से सिंदाहुआ था । ४ ।
जिसप्रकार सेनाकी उठीहुई धूलसे सेना ढकीहुई दिखाईपड़ी उसीप्रकार महात्माके
withstand him no mortals cannot opp sa Death Kritvarma mounted
another car and came into the field of battle " 36

CHAPTER LXII

Sanjaya said ' Your son the best of car warriors, mounted on his
car, doing prowess in battle, looked glorious like Rudra The earth
was covered with thousands of his arrows which he showered like
rain over the enemies No horse, elephant or car of the Pandavas
remained untouched by his arrows All the warriors, that we saw
there, were wounded by the arrows of your son. The whole army

तामपद्यमानं पृथिवीं पृथिवीपते । दुर्योधनेन प्रकृतां क्षिप्रहलेन चम्बिना ॥ ६ ॥ तेषु
 योषसहस्रेषु तावकेषु परेषु च । एको दुर्योधनभासीत् सं पुमानिति मे मतिः ॥ ७ ॥
 तत्रःश्रममपद्यमानं तव पुत्रस्य विक्रमम् । यदेनं संहिता पायां मान्धवसंश्रुतं भारत
 ॥ ८ ॥ युधिष्ठिरं शतेनाश्रीं विद्याधरं भरतर्षभ । भीमसेनञ्च सप्तत्या सहदेवञ्च
 क्षतभिः । ९ । नकुलञ्च चतुः पश्या धृष्टद्युम्नञ्च पञ्चभिः । सप्तभिर्द्रौपदीञ्च
 त्रिभिर्विद्याधरं सात्यकिम् । अनुश्लिच्छेत् मल्लेन सहदेवस्य मरिचि ॥ १० ॥ तदपास्य
 धनुश्छिन्नं माद्रीपुत्रः प्रतापवान् । मथ्यपावत् राजानं प्रगृह्यान्महश्नुः । ततो
 दुर्योधनं शरैश्च विद्याधरं दशभिः शरैः ॥ ११ ॥ नकुलस्तु ततो, वरितो राजानं नवभिः
 शरैः । घोररूपेर्महेष्वासां विद्याधरं च ननादर्धं ॥ १२ ॥ सात्यकिश्चापि राजानं शरेणान
 नपथेना । द्रौपदीयस्त्रिसप्तत्या चर्मराजञ्च पञ्चभिः । मशीत्या भीमसेनञ्च शरै राजा

दुर्योधनके बाणोंसे भी टही हुई थी । ६ । हे राजा इतनाघवी धनुषधारी दुर्योधन
 के हाथसे बाणरूप की हुई पृथ्वी को हमने देखा । ७ । आपके और प्रतिपक्षियोंके
 हजारों शूरवीरोंके मध्य में वह अकेला दुर्योधनही पुरुषसिंह हुआ यह मेरा मत है
 । ८ । हे भरतवंशी वहाँ हमने आपके पुत्र के इस अपूर्व पराक्रमको देखा जो सब
 मिलकरभी पांडव लोग उसके सम्मुख वर्तमान नहीं हुये । ९ । हे भरतर्षभ उसने
 युद्धभूमि में युधिष्ठिरको सौवाणसे भीमसेनको सप्तरवाणसे सहदेवको सातवाण से
 १० । नकुलको चौंसठ बाणसे धृष्टद्युम्नको पांचबाणसे द्रौपदीके पुत्रोंको सातसे और
 सात्यकि को तीनवाण से घायल किया हे भ्रष्ट उसने मल्लसे सहदेवके धनुष को
 काटा । १० । तब प्रतापवान माद्रीका पुत्र बस दूरे धनुषको डालकर दूसरे धनुष
 को लेकर राजाके सम्मुख दौड़ा और दशबाणों से दुर्योधन को घायल किया
 । ११ । इसके पीछे वीर नकुल घोररूप वटे नीवाणों से राजाको घायल करके वही
 धाने से गर्जा । १२ । सात्यकिने भी डेढ़े परिवाले एकवाणमे द्रौपदीके पुत्रों
 सहस्र बाणों से घर्म राजने पांच बाणमे और भीमसेनने अस्सी बाणों से राजा

was covered by Duryodhan's arrows as with the storm of dust 5. We saw the earth all arrows with the dexterity of Duryodhan. Among your warriors and those of the enemies, Duryodhan was the only lion-hearted man in my opinion. We saw the wonderful prowess of Duryodhan, for all the Pandavas together could not withstand him. He wounded Yudhishtir with a hundred arrows, Bhim with seventy, Sahadev with seven, Nakul with sixty four Dhrishtadyumn with five, the sons of Draupidi with seven and Satyaki with three. He cut Sahadeva's bow with a dart 10. The glorious son of Madri laid aside the broken bow and taking up another, rushed against the king. He wounded the king with ten arrows. Brave Nakul wounded him with nine sharp arrows and roared a loud roar

महादेवत् ॥ १३ ॥ समन्तात् कीर्यमाणस्तु पाणनघेर्महाराजसिः । न च्छवात् मह
 राज सर्वस्यस्य पश्यत ॥ १५ ॥ लाघव सौष्टवश्चापि धीर्यश्चैव महात्मन् । अति
 सर्वाणि भूतानि ददन्तु सर्वमानवाः ॥ १६ ॥ धार्तराष्ट्र दि राजेन्द्र यात्रा तु स्वल्प
 मन्तरम् । अपश्यमाना राजान पर्यघसन्त दशिना ॥ १६ ॥ तेषामप्यतता घोस्तुमुल
 समजायत् । क्षुब्धस्य हि समुद्रस्य प्रावृट्काले यथा स्थन । १७ ॥ समासाद्य रणे तो
 तु राजानमपगजितम् । प्रयुध्युर्महेश्वासा, पाण्डवानात्तापिनः ॥ १८ ॥ भीमसेन, रणे
 सुहृद् द्रोणपुत्रो न्यधारयत् ॥ १९ ॥ ततो घाणेर्महाराज प्रमुक्तः । सर्वतो दिशम् । अश्व
 यन्तु रणे वीरान दिश प्रदिशस्तथा ॥ २० ॥ तावु भीमस्कर्माणानुषोः । भारतः दुःषट्
 गौररूपमयुधेता वृत्प्रतिकृतविर्णा । शालयन्तो जगत् सर्वे, ज्प्राक्ष्य कठिनरवर्चः ॥ २१ ॥
 शकुनिस्त्वरणे, धीरो युधिष्ठिरमताडयत् । तस्याश्वाध्वतुरो हत्वा सुबलस्य सुतो बली

को पीडामान किया । १३ । चारोंओर महात्मार्यों के बाणोंकी वर्षा से दकाहुआ
 दयांधन सब सेनाके देखतेहुये कम्पायमान नहीं हुआ । १४ । सब मनुष्योंने महात्मा
 की, हस्तलाघवता सौष्टवता और बलको भी सब जीवधारियों से अधिक देख
 । १५ । हे राजेन्द्र थोड़े अन्तरको न देखनेवाले कमचधारी, आपके सुप्रसिद्ध
 राजा के चारोंओर आकर वर्तमानहुये । १६ । उन चढ़ाई करनेवालेके ऐसे घोर शब्द
 उत्पन्न हुये । जैसे कि वर्षाक्षतु में वेगमें आनेवाले समुद्रके शब्दहोते है । १७ । फिर
 वह बड़े धनुषधारी युद्धमें अजय राजाको पाकर शत्रुधारी-पांडवोंके सम्मुख गये
 । १८ । अश्वत्थामाने काययुक्त भीमसेनको युद्धमें रोका । १९ । हे महाराज इसकेपछे
 सब दिशाओं से छोड़ेहुये बाणों के कारण से वीरोंने दिशा विदिक्रमओंको नहीं
 जाना । २० । उन दोनों निहयकर्म कठिनतासे सहने के योग्य अश्वोंके कठटके
 वालोंने घोररूप युद्ध किया जो कि प्रत्यचाके आघात से, कठिन चर्म, रस्तेनके
 और सब दिशाओंको भयसे पूर्ण करनेवाले थे । २१ । इसके अनन्तर, वीरशकुनी
 ने युद्धमें युधिष्ठिरको घायलकिया युद्धमें सब सेनाओंको कम्पायमान करत उस

Satyaki too, wounded him, with one arrow, the sons of Draupadi
 wounded him with three each and Yudhishtir and Bhish
 did the same with five and eighty arrows respectively. Cover
 ed with arrows from all sides, Duryodhan did not shake in the
 midst of warriors. His dexterity was above all, 15. The
 warriors surrounded him on all sides. The sounds of their encounter
 were like those of the Ocean in a storm. The great archers, with the
 invincible prince opposed the Pandavas. Ashwathama checked Bhish
 in battle. The warriors could see nothing, but arrows in all directions.
 20. The two cruel warriors fought hard and filled the directions with
 the sounds of their bowstrings, and caused fear. Then brave Shakuni
 wounded Yudhishtir and having slain the four horses, shook

मदिम्बकार बलवान् सर्वमेत्यानि कल्पयन् ॥२२॥ एतस्मिन्नन्तरे वीर राजानमपराजितम्
 अपोवाह रथेनाजा सहदेव प्रतापवार ॥ २३ ॥ अथाश्व रथमारथाथ
 धर्मराजा युधिष्ठिर । शकुनि नवाभिषेवा पुनापिष्ठाथ पञ्चमि । ननाद च महातीर्द
 प्रीर संघीर्षनाम् ॥ २४ ॥ तदुत्तममवलिचित्र धारकाश्च मौरिरे प्रसूकयोतिजना सिद्ध
 वीरनेसवितम् ॥ २५ ॥ उल्लुक्स्तु मेरुपीस नकुल युद्धे इन्द्रमोक्षेऽद्वैतमेवत्या । शीतवै
 संवत्सते ॥ २६ ॥ अथैव नकुल वीर सौपलस्य सुत रणे । शारवधिणे मेहेना मगतात् वयै
 वारयत् ॥ २७ ॥ तौ तत्र समरे वीरि कुलवृत्ता महारथी । योषयन्मापद्येता परस्पर
 कृतान्तौ ॥ २८ ॥ तथैव कृतधर्मो तु शैनेय शोधतापनम् । योषयन् शुकुभे । राजन् धले
 शकं इवाहवे ॥ २९ ॥ दुर्योधनी धनुषिलर्या दृष्टिचमस्ये मधुगे । ध्येने छिन्नघञ्चने
 विधाध निशिते शूरे ॥ ३० ॥ धृष्टद्युम्नोऽपि समरे प्रगृहा परमायुधम् । गजान योव
 योमास पश्यता संघनिर्घनाम् ॥ ३१ ॥ तयोयुद्धे मदन्वासीते सप्रामे भरतर्षभ । प्रामे
 जयोपेया सक्तं मसुदीर्षमेह स्तनो ॥ ३२ ॥ गौतमस्तु रणे क्रुद्धो द्रौपदेयान् महाव

सुबलके पुत्रमे उमके चारो घोडोको मारकर कठोर शब्दकिया २३ । इसी
 अनंतरमे प्रतापवामे सहदेव युद्धमे अनेयवौर राजाको रथके द्वारा ढालेगया । २४ ।
 इसके पीछे धर्माज युधिष्ठिरने दूसरे रथपर सवार होकर मीवाणों से शकुनीको
 घोबस करके फिर पंचवाणसे घोवल किया और संर धनुषे धारियों मे चतयत
 श्रेष्ठ बडे शब्दसे गजा । २५ । हे श्रेष्ठ वह युद्ध अपूर्व भयंकारी रूप देखनेव ली
 की प्रसन्नता लक्ष्य करनेवाला और सिद्धचारणों से सशित हुआ । २६ । फिरवडा
 साहसी उल्लुक् चारोओरसे वाणोंकी छुट्टियों समेत उम चडे धनुषधारी युद्धदुर्मद
 नकुलके सम्मुखगया । २७ । उसीमकार शूरवीर नकुलने युद्धमे शकुनीके पुत्रका
 वाणोंकी वर्षा के द्वारा चारोओरसे रोका । २८ । उसयुद्ध मे वह दानोवीर कुलीन
 महारथी परस्पर अपराध करनेवाले लडतेहुये दिग्बाई पडे । २९ । उसीमकार शत्रुओं
 को तपानेवाला सात्त्विके कृतवर्मासे लडताहुआ ऐसा शोभायमान हुआ हे राजा
 जैसे कि युद्ध मे बलिसे लडता हुआ इन्द्र शोभित हुआ था । ३० । इसके पीछे
 दुर्योधनने युद्ध मे धृष्टद्युम्न के धनुषको काटकर इस दूटे धनुषवाले को तीक्ष्ण
 धारवाणोंसे घोवल किया । ३१ । तब धृष्टद्युम्न भी युद्धमे उत्तम शस्त्रको लेकरसब
 धनुषधारियों के देखते राजा से युद्ध करेनेलगा । ३२ । हे भरतर्षभ इसकेपीछे युद्ध
 भीम मे ऐसा बडाधारी युद्धहुआ जैसे मद झाडनेवाले दो मतवाले हाथियोंका
 युद्ध हाताडे । ३३ । इसके पीछे युद्धमे क्रोधयुक्त वीर कृपाचार्यने बडे बलवान

the armies with his harsh roars. In the meantime, glorious Sahadev
 took Yudhishtira on his car and removed him far away from the
 scene of action. Then Yudhishtira mounted another car and wound
 ed Shakuni with nine and five arrows respect vely, and roared a
 loud roar. The battle was dreadful and pleasant to look at and was
 witnessed by Sdbas and Charan. Then brave Uluk, showering
 arrows, faced valiant Nakul. Nakul who was the son of Shakuni
 with the shower of his arrows. 27 The two noble warriors were
 seen fighting with great skill. Satyaki, fighting with Bristardas,

कात् । विध्याश्च बहुभि शूरेः शूरे सन्ततपर्वाभिः ॥ ३३ ॥ तस्य तेरभवयुद्धमिन्द्रियै
रिध देहित । घोररूपम सगधार्यं निर्मर्यादमतीव च ॥ ३४ ॥ ते च तं पीडयामाशुरि
न्द्रियणीय वालिशम । स च तान् प्रपिसयच्छुभ् प्रत्ययोपयवाहवे ॥ ३५ ॥ पश्चिपस
सूयुद्ध तस्य तैः सह शरत । उत्थायोत्थाय च यथा बृहिनमिन्द्रियैर्बिभो- ॥ ३६ ॥ अत्र
शेष नरे सार्धं दन्तिनो दग्धितमिस्तथा । हया ह्ये समस्तुक्ता रथिनो रार्थिकस्तथा ।
शकुलध्वामधजूयो घोररूप विशामपते ॥ ३७ ॥ इहाऽपि जामिद घोरमिद रौद्रमिति
प्रभो । युधान्यासनमहाराज घोरानि च बहूनि च ॥ ३९ ॥ ते समासाद्य समरे परस्पर
मरिन्दमा । विध्याचक्षैश्च जघ्नुश्च समासाद्य महाहवे ॥ ४० ॥ तेषां शूलसमुद्भूतं रज
सामिमहद्वयत । घातेनैवोद्धत राजन् घाथञ्जिष्ठाश्चसादिभिः ॥ ४१ ॥ रथनीमसमुद्भूत

द्रोपदीके पुत्रोंको गुप्त ग्रन्थीवाले बहुत बाणोंसे घायल किया। ३३। इनका उनके साथे ऐसा
युद्ध हुआ जैसे कि शरीरवालेका युद्ध इन्द्रियोंके साथ हाताई घोररूप बन्धुओंका
अयोग्य और बेमर्यादा युद्ध वर्तमान हुआ। ३४। परन्तु उनको ऐसा पीडादान
नहीं किया जैसे कि इन्द्रियां, बालकों पीडित नहीं करतीं क्रोधयुक्त होकर उन्होंने
युद्ध में उनके साथ युद्ध किया। ३५। हे भरतवंशी इस प्रकार उनका उनों के
साथ ऐसा, अपूर्व युद्ध हुआ जैसे कि शरीरवालेका युद्ध उठठकर इन्द्रियों से होता
है। ३६। मनुष्य मनुष्योंके साथ हाथी हाथियोंके साथ घोड़े घोड़ोंके साथ और
रथी रथियोंके साथ भिद्यग्ये इस रीतिसे वह युद्ध महाघोररूप और सकुल हुआ। ३७।
हे प्रभु महाराज यह अपूर्व है घोर है रुद्र है इस प्रकारके बहुत घोर युद्ध हुये। ३९।
उन शत्रुओं के विजय करनेवालों ने युद्धमें परस्पर एकएक को पाकर घायल
किया और मारा। ४०। हराजा तब उन्हीं के शूलों से प्रकट होनेवाली बड़ी धूल
दिखाई पड़ी और बहुतसे भस्वसवारोंकी हवासे ऊंची उठी। ४१। रथकी नीचियोंसे और

looked glorious like Indra fighting with Bah. Then Dhryodhan
cut Dhrishtadyun na's bow and wounded him with sharp arrows 30
Dhrishtadyun too, fought hard with the king There was a severe
struggle between them like that of two mad elephants Kripacharya
wounded the sons of Draupadi with sharp arrows. Their battle was
like that between body and limb: The fighting was without rule,
but he could not distress them as the organs of senses cannot over-
power a child They fought hard with him 35 Their battle was
wonderful like that between body and organs Men met with men,
elephants with elephants, horses with horses and cars with cars. The
battle then became dreadful and general Those destroyers of foes
wounded and slew one another 40. There was a great storm of dust
with movements of horsmen, cars and elephants, hiding the Sun The
Sun's orb covered with that dust, became dark and the warriors

निष्वासेऽपि इतिनाम् । रजः सन्ध्याभ्रकणिलं विवाहकपद्ये यदी ॥ ४२ ॥ रजसा
 तेन सपुके आचक्रे निष्वाकृते । सखाहितामवर्ज्जिमस्ते च शूरा महारथा ॥ ४३ ॥
 बुद्ध्याश्चिन्तय संवृत्तं शीरजस्कं समन्तत । शीरशोणितसिकापी भूमौ भरतसत्तम ॥ ४४ ॥
 उपाशाऽप्यसत्तलीत्रं तद्भ्रजो घोरदर्शनम् । ततोऽपश्य महाराज ब्रह्मयुद्धानि भारत
 ॥ ४५ ॥ यथा प्राण वधाभेदं मन्थान्हे वै सुदाहणम् । चर्मणा तत्र राजेन्द्र स्वहृदयस्तो
 उज्वला मया ॥ ४६ ॥ शान्द सुतुमुल सन्धे शरणा पततामभूत् । महाबलुवनरयेव
 दृष्टमानस्य खर्वत ॥ ४७ ॥

इति शाल्यपर्वणि शाल्यवधपर्वणि संकुलबुद्धे द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥

संजय उवाच । वर्त्तमाने तथा युद्धे घोररूपे भयानके । जगज्यत बलं तत्र तत्र
 पुत्रस्य पाण्डवे ॥ १ ॥ तांस्तु यत्नेन महता सन्निधाय्य महारथान् । पुत्राले बोधना
 हाथिषो की आसाञ्जो से उठनेवाली सायंकालकी सी अरुणतासे युक्त सूर्य के
 मार्गमें गई । ४२ । उस धूलसे ढकाहुआ सूर्य प्रकाश से रहितहुआ तब पृथ्वी और
 वह महारथी शूर टकगये । ४३ । हे भरतर्षभ फिर एक मुहूर्त्तमेंही चारोंओर से सब
 स्वच्छ होगया क्योंकि शीरोंके रुधिरसे आर्द्र पृथ्वीपर । ४४ । वह घोरदर्शन कठिन
 भूल भाताहोगई हे भरतवंशी महाराज फिर इन्दनाम युद्धोंको देता । ४५ । मध्याह्न
 के समय बल पराक्रमके समान बढ़ा भयकारी वह युद्धहुआ हे राजेन्द्र तब वहाँ
 कषणोंके स्वच्छप्रकाश दिखाई पड़े । ४६ । और युद्धमें गिरनेवाले बाणोंके ऐसेकठोर
 शब्दहुये जैसे कि पर्वतपर जलतेहुये बासोंके बढ़े बनोंके शब्दहोते हैं ॥ ४७ ॥

अध्याय २३ ।

संजय बोले कि इसप्रकार वहाँ घोररूप भयकारी आपके बेटोंकायुद्ध पाण्डवों
 के साथ वर्त्तमान होनेपर सेना छिन्न भिन्नहुई । १ । फिर आपके पुत्रने बड़े उपायों

became invisible. Then the dust storm cleared and subsided with
 the blood shed and duels were fought. There was a severe struggle
 at midday and the armours shone bright. There were hard sounds
 of the fall of arrows like those of the forest of bamboos burning
 on a hill. ' 47

CHAPTER XXIII

Banjaya said " When your sons were fighting a dreadful battle

भासुः पाण्डवानामतीर्कितान् ॥ २ ॥ निवृत्ताः सह सा-योधास्तं व पुत्रप्रियेविज् । तत्रैव
 वृत्तेषु तेष्वेव युद्धमासीत् सुदाहणम् ॥ ३ ॥ तावकानां परेषां च देवासुररणोपमम् ।
 परेषां तव सैन्ये सा नासीत् कश्चिद् परासुखम् ॥ ४ ॥ अने भानत युध्वन्ते सन्नानि
 परस्परम् । तेषां क्षयो महानासीत् युध्यतामितरेतरम् ॥ ५ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा
 क्रोधेन महता युतः । जिगीषमाणः प्रथमे चात्ताष्ट्यात् सजाजकान् ॥ ६ ॥ त्रिभिः
 शारङ्गै विपद्ना रुक्मपुत्रैः शिलाशिपैः । स्वभूमिर्निजवानश्चात्रागवैः कृतवर्मणः ॥ ७ ॥
 अश्वत्थामा च हर्दिकपमपोवाह यशस्विनम् । अथ शारङ्गतीक्ष्णैः प्रत्येयविधिषु
 ष्टिमम् ॥ ८ ॥ ततो दुर्योधनो राजा रथान् सप्त शतान्नयेन । प्रथमयत्र राजा वै धर्मपुत्रो
 युधिष्ठिरः ॥ ९ ॥ ते रथा रथिभिर्युक्ता मन्मथतरहसः । अश्वद्वन्द्वन्त संप्रामे कौन्ते
 यस्य रथे प्रति ॥ १० ॥ ते समन्तात् महाराज परिचाट्य युधिष्ठिरम् । अदृश्यं सायकै

से उन महारथियों को रोककर पांडवोंकी सेनासे युद्धकिया । २ । आपके पुत्रको
 निजप चाहनेवाले शूरवीर अक्रमात् लौटे और उन्हीं के लौटनेपर । ३ । आपके
 शूरवीर और दूसरोंके शूरवीरों का युद्ध देवासुर संग्रामके समान बड़ा भयानक
 हुआ दूसरो में और आपकी सेनामें किसीने भी मुत्तको नहीं घोड़ा । ४ । ध्यान
 और नमिके द्वारा परस्पर लड़नेके तब उन परस्पर युद्ध करनेवाले वीरका बड़ा
 त्रिनाश हुआ । ५ । इसके पीछे बड़े क्रोधमे युद्धमें राजाओं समेत धृतराष्ट्रक पुत्रों
 के विजय करने के अबिलापी राजायुधिष्ठिरने । ६ । सुन्दर पुत्र तीक्ष्णधार तीन
 बाणसे कृपाचार्यको यापलकरके चार नाराचोंसे कृतवर्माके घोड़ोंको मारा । ७ ।
 अश्वत्थामाभी उस यशमान कृतवर्माको युद्धभूमि से दूरलेगये इसकेपीछे कृपा
 चार्यने आठबाणों से युधिष्ठिरको घायल किया । ८ । तब राजा दुर्योधनने सातसौ
 रथियों को युद्ध में उस स्थानपर भेजा जहाँपर कि वह धर्मपुत्र राजायुधिष्ठिर
 था । ९ । शीघ्र वायुके समान शीघ्रगामी वह रथ रथियों समेत युद्धमें युधिष्ठिर
 रथको आरगये । १० । हे महाराज उन सब रथियोंने चारोंओर से युधिष्ठिरको

with the Pandavas, their army was routed. Your son again rallied
 the army with great exertion and fought with the Pandavas. Your
 son's well-wishers came back all of a sudden and then the battle was
 dreadful like that, between the gods and asure. The warriors on both
 sides fought unflinchingly. They fought by guess, calling out their
 names, and there was a great destruction of warriors on both sides
 Yudhishtir desirous of gaining victory over your son, much enrag-
 ed, wounded Kripacharya and slew Kritvarma's horses with four
 darts. Ashwathama took Kritvarma far away from the field of
 battle. Then Kripscharya wounded Yudhishtir with eight arrows.
 Duryodhan sent seven hundred car-warriors to attack Yudhishtir
 and they rushed against him with the speed of the wind. 10. T. Bay

अथैतन्निदिशामः ॥ ११ ॥ ते ह्यथा धर्मराजानं शौर्यैवस्तथाएतम् । नामुपगत
 कुर्वन्महाः सिन्धुविह्वलमुत्तरा रथा ॥ १२ ॥ रथैरप्रवेज्यं दुक्तं विष्णिर्नाज लेलेधनः ।
 अथैतन्निदिशामः कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ १३ ॥ ततः प्रयत्ने रथैः संग्रामः शाण्डिनो
 वकः । पाण्डवाम्बुं कुरुणाप्यथ धर्मराजैर्विषयज्ञेन ॥ १४ ॥ रथान् सप्त शतान् हरिणा वृत्त
 वासातलमिनाम् । पाण्डवाः सप्त पाण्डवाः एतरेवाप्यपारयन् ॥ १५ ॥ तत्रैव युद्धं मह
 व्वासीत्तत्र पुत्रस्य पाण्डवैः । न च मत्साहसं दृष्टे मेघ चापि परिभ्रुतम् ॥ १६ ॥ धर्म
 माने तथा युद्धे निर्मथ्याद्, समग्रतः । अथमानेषु पाण्डेयु ताश्चकेरिपतरेषु च ॥ १७ ॥
 निनदस्तु च योषेयु शक्यपर्वेयश्च पुरितैः । उग्रयुद्धे सिन्धुनादंश गजिजनेन च धिघ्ननाम् ॥
 १८ ॥ अतिप्रयुद्धे युद्धे च छिद्यमानेषु मर्मसु । धावमानेषु पाण्डेषु जययुद्धेषु माण्डि
 ॥ १९ ॥ संहारे सर्वतो जातेः युधिष्ठो शोकमग्नेये । वदन्तीनामुत्समस्तीनां स्त्रीमन्त्रि
 ञ्करणे तदा ॥ २० ॥ निर्मथ्याद् ततो युद्धे च संमानं सुश्रावण । प्रादुरासनं विनाशाव

धरकर शायकोसे ऐसा गुप्तकरादिया जैसे कि युधको घादल गुप्तकर देते हैं । १ उना
 अत्यन्त क्रोधयुद्ध शिखरुडी आदिक रथियों ने कारवां से उस प्रकार विरुद्ध
 युधिष्ठिरको देखकर सहन नहीं किया । २ । उत्तम घोडासे युक्त क्षुद्रघंटिकाओं
 से भ्रमं हते रथों की सवारोंसे आपहुंचे और कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिको चारोंओर
 से रसित करनेवाले हुये । ३ । इसके पीछे पांडव और कौरवोंका वह युद्धजारी
 हुआ जोकि रुद्ररूपरुधिररूपी जलसे युक्त धर्मराजके देशको बढ़ानेवालाया । ४ ।
 पांचालोंसमन पांडवों ने सातसौ रथियोंको मारकर कौरवोंके युद्धकर्त्ताओंको
 रोकता । ५ । वहाँसे और आपके पुत्रके ऐसा बड़ा युद्धहुआ जसा न देखाया
 न सुनाया । ६ । इसप्रकार चारोंओरोंको वेमथ्याद् युद्धके जारीहोने पर और
 आपके और दूसरोंके शूरवीरों के मरनेपर । ७ । और उत्तम शंखा के बजने
 उत्तम सिन्हाद हमें धनुषधारियोंके गर्जनाके साथ शूरवीरोंके गजनेपर । ८ । बड़े
 युद्धमें मर्मस्थलोंके घायल होने और विजयाभिलाषी शूरवीरोंके दोहनेपर । ९ ।
 सबओर से पृथ्वीपर शोकके उत्पन्न करनेवाले नाशके उत्पन्न होने और बहुत उत्तम
 कुलाङ्गनाओंके मांग मिटाने । १० । बड़ेभयानक और अमर्याद युद्धके वर्त्तमान

surrounded Yudhishtir from all sides and hid him with arrows and
 the clouds hide the sun. Shikhandr and others could not bear to see
 Yudhishtir thus surrounded by the Kauravas and came to his help
 with their cars and protected him. The Pandavas and Kauravas
 then fought a dreadful battle that augmented the population of
 Yaw's abode. The Panchals and Pandavas slew the seven hundred
 car-warriors and checked the Kauravas. 16. A battle like that of
 your sons and the Pandavas was unseen and unheard of before.
 When the battle thus raged without any rule and the warriors on
 both sides were being slain, conchs were blown the warriors roared

तदोत्पाताः सुदाहनाः ॥ २१ ॥ अचाल शब्दं कुर्वाणा सपर्वतवनामही । सद्गन्धाः
 सौन्दर्या राजन् वीर्यमाणाः समस्ततः । उल्का गेतुर्दिवो भूमावाहृत्य रविमण्ड
 लम् । २२ ॥ विश्वव्रजाताः प्रापुरासन् नीचेः शर्करवर्णिज । अश्रूणि मुमुक्षुर्नागा वेवधु
 आनकृद्दम ॥ २३ ॥ एतान् घोराननादृत्य समुपातान् सुदाहणान् । पुनर्पुञ्जाप
 लसमन्त्रव क्षत्रियाल्लक्ष्युरव्यथा । रमणीये कुक्षेत्रे पृथ्वे स्वर्गे विधासवः । २४ ॥ ततो
 गांधारराजस्य पुत्रः शकुनिर्ग्रथति । युध्यध्वमप्रतो यावत् पृथतो हग्नि पाण्डवान्
 ॥ २५ ॥ ततो न सत्रयातानां मद्रयोधास्तरस्विनः । इष्टा किलिकिलाशब्दमकुर्वन्तपरे
 तथा ॥ २६ ॥ अस्मास्तु पुनरासाव लक्ष्यलक्ष्या दुरासदाः । शरासनानि युष्मन्तः
 शरवर्षावाकिन् ॥ २७ ॥ ततो हतं परै राजन मद्रराजघलं तदा ॥ दुष्योन्नमवलं

हैनपर नाशके घातन करनेवाले महाभयानक उत्पात मकड़दुये । २१ । पर्वत
 और वनोंके समेत शब्द करनेवाली पृथ्वी कम्पायमान हुई और हे राजा दबड़
 ग्वालार्थी समेत चारोंओरकी फनीहुई उल्का । २२ । सूर्यमण्डलको घायल करके
 स्वर्गसे पृथ्वीपर गिरी । २३ । और कदुर पत्थर धरसानेवाली वायुमकड़हुई हाथियों
 ने आर्मंडाले और कठिन कम्पन उत्पन्न हुआ । २४ । इन बड़े भयानक और
 घोर उररातों को अनादर करके पीडासे रहित स्वर्गके अभिलाषी सभी लोग बुद्ध
 करनेका मत्ताकरके मूक कुक्षेत्रमें निपतहुये । २५ । इनके पीछे गांधार देश
 के राजाका पुत्र शकुनी यह बोला कि तुम तवतक आगेसे बुद्धकरो जबतक कि
 मैं पीछे की ओरमें पांडवों को माऊं । २६ । इसके पीछे चढ़ाई करनेवाले इन
 सौनोंके मध्य में वेगवान ममभनिष्ठ मद्रदेशी और अम्ब भूरवारों ने किलकिला
 शब्द किया । २७ । लक्ष्यके बात करनेवाले कठिनता से सम्मुलताके योग्य और
 धनुषोंकी चल यमान करनेवाले उन पांडवों ने हमको फिर पाकर बाणों की वर्षा

and wounded one another in the vital parts. The warriors ran on for victory and had omens causing fear and grief, making many noble women to become widows, appeared during that dreadful battle. 21. The earth, with her forests and mountains, shook and meteors fell down from the Sun. A wind storm blew, bringing pieces of stone with it. Elephants shed tears and there was a severe earthquake. Disregarding these dreadful calamities, the warriors, desirous of entering paradise, stood resolutely to fight. Then Bhakuni, the son of the king of Gandhar, said, "You many keep the Pandavas engaged and I shall attack them from rear." 25. Then the warriors of Madra among us made a tremendous noise. The Pandava archers again hit us hard with their arrows and seeing the Madra

द्रुपदा पुनरासीत् पाण्डुसम ॥ २८ ॥ मा धारराजस्तु पुनर्पाप्यमाह तता वली निव
 च्छ्वमममममम युष्मव किं सृतन च ॥ २९ ॥ अनिक दशसाहस्रमश्वानां भरतर्षभ ।
 आसीद्वाधारराजस्य विमल प्रासयोधिनाम् ॥ ३० ॥ घलन तेन विक्रम्य वसमाने अश्व
 स्ये । पृष्ठत पाण्डवानीकमश्वत्थनिशितं शरी ॥ ३१ ॥ तद्वज्रपिच घतिन शिष्यमाणं
 समन्ततः । ममजयत महाराज पाण्डूना सुमङ्गलम् ॥ ३२ ॥ ततो युधिष्ठिर प्रत्य
 म्बन इवधक्कमभित्कात् । अम्यचोदयदश्वम सहदेव महावलम् ॥ ३३ ॥ असां सुवल
 पुत्रो नो जघनं पीड्य दीशिनः । सना निमृद्रयत्यथ पश्य पाण्डव कुर्मतिम् ॥ ३४ ॥
 गच्छ त्व द्रौपदे श्व शत्रुनि सौवल अहि । रयानीकमह भक्ष्ये पाण्डवालसहितो नृप
 ॥ ३५ ॥ गच्छन्तु कुञ्जरा सथं व जिनश्च सह त्वया । पादाताश्च तिसाहस्रा शत्रुनि
 तैर्वीतो जहि ॥ ३६ ॥ ततो गत्वा सप्तशताभ्यापपाणि भरावृता । पञ्च चादयमहर्माणि
 से आच्छ दिन किया है राजा फिर राजामद्रवी सेना शत्रुओं के हाथ में मारी
 गई उसको देखकर दुर्योधन की सेना फिर मुँखफेर चली । २८ । तब गान्धार
 के राजा पराक्रमी शकुनी ने यह वचनकहा कि हे धर्म के न जानेने वाले वीर
 लोगों कौटो युद्ध करो तुमहो भागने से क्या प्रयोजन है । २९ । हे भरतर्षभ
 राजा गान्धार के शर्वीर जोकि घड़े २ प्रासोंसे रहनेवाले थे उन्हीं की घोड़ों
 वाली दशहजार सेना थी । ३० । मनुष्योंके नाश वर्त्तमान होनेपर इस सेनासभे
 पराक्रम करके तेजघार वाणों से पाण्डवी सेनाको पीछेकी ओरसे मारा । ३१ । हे
 महाराज जैसे कि वायु से हटायाहुआ व दल चारोंओरसे फटजाता है उसीप्रकार
 पाण्डवोंकी वह बड़ी सेना छिन्नभिन्नहुई । ३२ । उसके पीछे साँवधान युधिष्ठिरने
 अपनी सेनाको सम्मुखसे छिन्न भिन्न देखकर घड़े पराक्रमी सहदेवको भेरणाकरी
 । ३३ । कि यह सुवलका पुत्र हमारी जघन सेनाको पीढामान करके नियतहै और
 सेनाको मार रहा है हेपाण्डव तुम इस दुर्बुद्धी को देखो । ३४ । तुम द्रौपदके पुत्रों
 समेव आओ और इस शकुनीको मारो हे निष्पाप मैं धृष्टद्युम्नको साथ लेकर
 रथकी सेनाका नाशकरूंगा । ३५ । सब हाथी घोड़े और तीन हजार पदाती
 तरे साथजायें उन सब सेनाओं से युक्त होकर तुम शकुनीकी मारो । ३६ । इसके पीछे

warriors again slaughtered, Duryodhan's army turned back 'Then
 Shakuni the pince of Gandhar said, 'Come back warriors fight
 again. What will you gain by flight? The army of Gandhar,
 armed with prases, ten thousand strong, attacked the army of the
 Pandavas from behind 31 The Pandav army then dispersed like
 a cloud by the storm of wind Then wise Yudhishtir, seeing his
 army disperse, said to Sahadev, 'Shakunis destroying our army,
 look to him, Pandya Take the sons of Draupadi with you and
 slay Shakuni, I with Dhrishtadyumni shall destroy the car warriors
 Let all the horsemen elephants add three thousand foot go with

सहदेवश्च धीमर्थावान् ॥ ३७ ॥ पादाताश्च त्रिमाह्वना द्रौपदेयाश्च सर्वशः । रणे ह्यथ
 प्रवृत्तं तु शकुनिं युद्धदुर्मदम् ॥ ३८ ॥ ततस्तु सौधलो राजश्रयतिक्रम्य पाण्डवान् ।
 जघान पृष्ठतः सर्वा जघमृक्ष-प्रतापवान् ॥ ३९ ॥ अश्वारोहास्तु सरस्वजाः पाण्डवानां
 तरङ्गिणाम् । प्रायिषान् सौधलानां कमश्रयतिक्रम्य तातवान् ॥ ४० ॥ ते तत्र सावित्रं
 शूराः सौधलस्य महद्वलम् । गजमथो च गिघ्रन्तः शरवर्षमवाकिम् ॥ ४१ ॥ तदुद्यतं
 गदाप्रासमहापुरुषसेवितम् । प्रावर्त्तत महद्युधे राजन् दुर्मन्त्रित तव ॥ ४२ ॥ उपारमन्तं
 ज्याशब्दाः प्रेक्षिका रथिनो भवन् । महि स्वेषां परेषां वा यिशयः प्रव्यहृद्यत ॥ ४३ ॥
 शूरवाह्विसृष्टानां शक्तानां भरथम् । ज्योतिषामिष सम्पातमपश्यन् कुरुपाण्डवः
 ॥ ४४ ॥ ऋष्टिभिर्मिमलामिश्च तत्र तत्र विशाम्यते । सम्पातन्तीभिराकाशमोक्षतं बहुव
 शोभत ॥ ४५ ॥ प्रासानां पततां राजन् रूपमासीत् समन्ततः । शूलमानामिवाकाशे
 धनुषधारियो मे युक्त सातसौ हाथी और पांच हजार घोड़े पराक्रमी सहदेव । ३७ ।
 तीन हजार पदाती और द्रौपदी के पुत्र यह सब मिल र उस युद्धदुर्मद- शकुनी
 के सम्मुख गये । ३८ । हे राजा इनक अनन्तर शकुनी को उल्लंघन करके
 विजयामिषापी प्रतापवान् सहदेव ने पीछे की ओरसे मारा । ३९ । फिर बेगवान्
 पाण्डवों के क्रोधयुक्त अश्वसवार उनरथियोंको उल्लंघनकर शकुनीकी सेनामें पहुँचे
 । ४० । वहाँ युद्धमें नियत उन अश्वसवारों ने शकुनीकी बड़ी सेनाको बाणों
 की वर्षा से ढकदिया । ४१ । हे राजा आपकी-कुमन्त्रतासे वह युद्ध जारी हुआ
 जोकि गदा और प्रास उठानेवाले महारमाओं से सेवितया जिसमें धनुषों की
 प्रत्यञ्चाओंके शब्द बन्दहोगये रथी कुतूहल दर्शाहुये, आर अपने और दूसरोंकी
 मुख्यताभी दृष्टि न पड़ी । ४२ । हे भरतवंशियों में श्रेष्ठ उनकोरव और पाण्डवोंकी
 अजाओं से छोटी हुई शक्तियों का गिरना नक्षत्रों के आकाश से पतन होनेके
 समान हुआ । ४३ । हे राजा, जहाँ तहाँ गिरहुये निर्पल दुधारा खड्गों से संयुक्त
 आकाश बहुत शोभायमान हुआ । ४४ । हे भरतवंश राजा धृतराष्ट्र तब चारों ओर-

you. Slay Shakuni's army with their help. 36. Then the archers with
 seven hundred elephants, five thousand horses valiant Sahadev, with three
 thousand foot and the sons of Draupidi, all went together to oppose
 Shakuni. Shakuni was attacked by Sahadeva's army from the rear. Then
 Pandav warriors dispersed the car-warriors and faced Shakuni's forces.
 The horsemen covered Shakuni's army with arrows. 41. There was
 a terrible battle fought with prases and maces of the warriors, and all
 this was the result of your evil policy. Then the sounds of the bow-
 strings ceased; the car warriors were in great distress, and the two
 sides were not distinguished. The fall of their spears was like that
 of the fall of stars from the sky. Doubt-edged swords were seen
 falling down from air. 45. The prases falling down from all sides

तत्रा भ्रमसक्तम् ॥ ४६ ॥ रुधिरोल्लिप्तसर्वाङ्गा विप्रावद्वर्णिवन्तुभिः । हथाः परिपतन्ति
 सम शतशोऽप्य सहस्रशः । अन्योऽप्ये सन्निविष्टाश्च समासाद्य परस्परम् ॥ ४७ ॥
 आबिभ्रताः सा दृश्यन्ते वमन्तो रुधिरं मुखैः । ततोऽमवस्यतो घोरं सैन्ये तु रजसा
 कृते ॥ ४८ ॥ तानप्राक्रमतोऽद्राक्षं तस्मादेवादाग्निमान् । भदवान् राजन्मनुष्याश्च तमसा
 संवृते स्मृति ॥ ४९ ॥ सूयो निपतितश्चान्ये वमन्तो रुधिरं बहु । केशाकेशसमालम्बाना न
 ककुक्षेष्टितुं नराः ॥ ५० ॥ अयोन्यमद्वपृष्टेभ्यो विकल्पन्तो महाबलाः । मल्ला इव
 समासाद्य निजघ्नन् रितरेतरम् । भद्रवैश्च द्रव्यकृपन्तः प्रहवोत्र गतासुवः ॥ ५१ ॥ सूयो
 निपतितश्चान्ये बहवो विजयेषिणः । तत्र तत्र व्यदृश्यन्त पुरुषाः शूरमानिनः ॥ ५२ ॥
 एकोक्षितेदिक्षुप्रभुजेरपकृष्टसिरोरुहैः । स्मदृश्यत महा कौर्णो शतशोप्य सहस्रशः
 ॥ ५३ ॥ दूरं न शक्यं तत्रासाद्गन्तुमद्वेन कनचित् । हस्त्यद्वयशोऽहतेरद्वेरावृते बभू
 वातले ॥ ५४ ॥ रुधिगोक्षितसर्वाङ्गासर्वाङ्गैरुद्रायुधैः । नानाप्रहरणैर्धरैः परस्परवधे

से गिरते हुये मासों से रूप ऐसेहुये जैसे कि आकाश में शलभाके समूहों के रूप
 होते हैं रुधिर से लिप्त सम्पूर्ण शरीर और बाणों से घायल हजारों घोड़े चारों
 ओर से गिर परस्पर सम्मुख होकर चूण होगये ॥ ४७ ॥ मुखोंसे रुधिरकी वमनकरत
 घायल दृष्टिपट शत्रुओं के विजय करने पर फिर सनाकी धूलसे संयुक्त होनेपर
 घोर अन्धकार हुआ । ४८ ॥ तब अन्धकार से दृक्जानेपर उन घोड़ों और मनुष्यों
 को उस स्थानसे हटाहुआ देखा ॥ ४९ ॥ कितनेही रुधिरकी वमन करतेहुये पृथ्वीपर गिर
 पड़े । ५० ॥ घोड़ोंकी पीठ से परस्पर खेचनेवाले बाणों में चिपटे हुये मनुष्य
 बाणोंकी चेष्टा करनेको समर्थ नहीं हुये मल्लों के समान मिलकर परस्पर में मारा
 और बहुत से निर्जीव मनुष्य घोड़ों से दूरदूरतक खिंचेगये । ५१ ॥ बहुत से
 विजयाभिलाषी अपने को शूर माननेवाले मनुष्य जहाँ तहाँ पृथ्वीपर पड़ेहुये
 दिखाईपड़े । ५२ ॥ रुधिरसे लिप्त दंष्ट्रुज केशासे रदित हजारों मनुष्यों से आच्छा
 दित पृथ्वी दिखाईपड़ी । ५३ ॥ सवारों सपेत घृतक घोड़ों से पृथ्वी के आच्छादित
 होनेपर घोड़ोंकी सवारोंसे दूरजाना असंभव होगया । ५४ ॥ रुधिरसे लिप्तमवशरीर

looked like flights of locusts. Thousands of horses, wounded by
 arrows, fell down everywhere and were dashed to pieces. Vomiting
 blood, and wounded, they fell down everywhere and again the warriors
 were covered with dust. Horses and men met in darkness and fell
 down shedding blood. Pinned to the backs of horses, the warriors
 were unable to move. They slew one another like wrestlers, while
 many deadbodies were dragged by horses. Many brave warriors
 lay dead on earth. The earth was covered with dead bodies
 broken limbs and headless heads. There was no room for horses to
 pass over the dead bodies of men and horses. 54. The wounded
 and bleeding warriors, fighting hard, and using various weapons,

विनि सुसन्निहृष्टे सप्राप्ते इतभूमिपुंसिनिक ॥ ५५ ॥ स मुहूर्त्तं ततो युद्धा सौव
 लायं विशास्यते । पटसाहस्रैर्हयै शिष्टैरपायाच्छुनित्तत ॥ ५६ ॥ तथैव पाण्डवा
 नीक रुधिरण समुक्षितम् । सटसाहस्रैर्हयै शिष्टैरपायाच्छुनित्तत ॥ ५७ ॥ अथवा
 रोहास्तु पाण्डुनाममुत्र रुधिरश्रिया सुसन्निविष्टा सप्राप्ते भूमिष्ठे त्यक्तैर्जीविता
 ॥ ५८ ॥ नेह शक्यं । रथैरेन्दु कुत एव महागजं । रथानेव रथा यानु कुञ्जरा कुञ्जे
 रानपि ॥ ५९ ॥ प्रतिघातां, हि शकुनि स्वगनीकर्मधारिण । न पुन सौबलो राजा
 युद्धमभ्यागमिष्यति ॥ ६० ॥ ततस्तु द्रोपदश्च ने च मत्ता महाद्वि ॥ प्रथयुर्वत्र
 पांचालयो घृष्टद्युम्नो महागथ ॥ ६१ ॥ सहदो गेपि श्रीरथो रजामेधे समुत्थिते । एककी
 प्रथयो तत्र यत्र राजा धुधिष्ठिर ॥ ६२ ॥ ततस्तद् प्रयतिषु शकुनि सौबला पुन
 पाद्वतो भगवन्तं क्रुद्धो घृष्टद्युम्नस्य वाहिनीम् । ६३ ॥ तत पुनःतुमुल युद्धं स्वकमा
 नमवसंत । तावकाना परेवाच्च परस्परवधैषिणम् । ६४ ॥ ते ह्य-बो-ऽप्येवमवैक्षत

शस्त्र धनुषादि के उठानेवाले नानाप्रकार के मार करनेवाले घातुरूप परस्पर
 मारने के अभिलाषी युद्धमें सेनाके मनुष्योंके समीपवर्ती जिनके कि बहुतसे मनुष्य
 मारिगये उन लोगोंसमेत युद्ध में एक मुहूर्त्त भर लड़कर वह शकुनी शेष बचेहुये
 छःहजार घोडों समेत हट गया । ६६। उमीप्रकार रुधिर से लिये रथकी संचारीवाली
 पाण्डवीयसेनाभी शेष बचेहुये छ हजार घोडों समेत हट गई । ६७। बहुत समीपी युद्धमें
 जीवन के त्यागनेवाले रुधिरसे भरे पाण्डवीय अभ्यन्वार बाने । ६८। कि यहीं जब कि
 हाथियोंसे लड़ना असंभव है तो बड़े हाथियोंसे लड़ना कैसे संभवहोगा रथ रथोंके
 और हाथी हाथियोंकेही सम्मुखजायें । ६९। वह सम्मुख होनेवाला शकुनी सेना में
 निपटहै राजाशकुनी फिर युद्धको प्राप्त नहीं करेगा । ७०। इसके पीछे द्रौपदीके पुत्र
 और मतवाले बड़े हाथी वहाँ गये जहाँ कि पांचालदेशी महारथी घृष्टद्युम्न
 था । ६१। घृष्टके उद्वेग उठेपर क्रौर्य सदैव भी अहेना वहांगया जहाँपर राजा
 युधिष्ठिरथे । ६२। इसके पीछे उनको चढ़ाई होने पर क्रौर्यक शकुनी ने अपने पक्ष
 में नियत हुई घृष्टद्युम्न की सेनाको मारा । ६३। फिर मार्गोंको त्यागकर परस्पर
 मारने के अभिलाषी आपके और प्रतिपत्तियों के शूवीरोंका वह कठिन युद्ध

approached the army of Shakuni, who leaving some of his warriors
 dead, removed the remainder which was six thousand in number. 56.
 The Pandav warriors stayed with the remaining six thousand hors.
 At the slaughter of their warriors the Pandav horsemen said, 'It
 is impossible for us to engage with large elephants. Let our warriors
 and elephants face the elephants. You lie stand Shakuni let him
 fight no more. Then the sons of Draupadi accompanied by mad
 elephants went to the place where Dhrishtadyuma was. Sahadev too,
 crossed the storm of dust and approached Yudhishtir. Then
 Shakuni destroyed the army of Dhrishtadyumn. The battle was
 very and destructive on both sides and thousands of warriors

तस्मिन् वीरसमागमे । योधा गन्धतत्राजन् शतशोऽथ सहस्रज ॥ ६५ ॥ अस्मिन्
 सिद्धयमानानां शिरसां लोकसुख्ये । प्रातुरासीन्महाशय्दस्तालां पततामिव ॥ ६६ ॥
 विमुक्तानां शरिराणां मिथानां पतता सुधि । सानुधानाञ्च चाहनामूर्कुणाञ्च विशा
 पत । आसीन्चटैष्यशब्द सुमहाल्लोमहर्षण ॥ ६७ ॥ निपततो निशिते शस्त्रेभ्योऽथ
 श्चात्र पितृनपि । योधा परिपतन्ति स्म यथामिपकृते खगा ॥ ६८ ॥ सन्धोऽस्य प्रति
 सरजा समासोऽथ परस्परम् । अह पूर्वमह पूर्वमिति स्यत्तन् सहस्रम् ॥ ६९ ॥ सघा
 तेनासनस्रष्टैरध्वारोहैगतासुभि । हता परिपतन्ति स्म शतशोऽथ सहस्रम् ॥ ७० ॥
 बहुगता प्रतिपिष्टानामश्वानां शीघ्रचारिणाम् । सनताञ्च सनुष्याथा संजघानां
 विशामपते ॥ ७१ ॥ शकृष्टिप्रासशब्दस्तु तुमुल समजापत । अस्मिन्तां परममोणि
 रात्र्य् बुध्मन्त्रिते तथ ॥ ७२ ॥ अमभिर्मृता सरथा श्रान्तवाहा पिपांसिता । विश्व
 ताश्च शित शस्त्रैर्यवर्षन्त तावका ॥ ७३ ॥ मत्ता रुधिरगन्धेन घटवोत्रे विवित ॥

वर्तमान हुआ हे राजा उस वीरोंकी सम्मुखता में उन्होंने परस्पर देखा सैकड़ों
 हजारों शूरवीर चारोंओर से दौड़े । ६५ । समार के नाश में खड्गोंसे कटनेवाले
 शिरोंके ऐसे बड़े शब्द प्रकटहुये जैसे कि गिरते हुये तालफलों के शब्द होते हैं
 । ६६ । हे राजा कवचोंसे रहित टूटेअग पृथ्वीपर गिरतेहुये शरीर शस्त्रधारी भुजा
 और अघाओं के चरचटानाम शब्द बड़े कठोर और रोमाँचे सहें करनवाले उत्पन्न
 हुये । ६७ । तीक्ष्णधार शस्त्रों से भाई पिता और पुत्रों को मारते शूरवीर चारों
 ओरसे ऐसे दौड़े जैसे कि मांस के निमित्त पत्नी विटा परस्पर क्रीडयुक्त एक दूसरे
 को पाकर प्रथम में प्रथम भै इसप्रकार से कहकर हजारोंने प्रहार किये । ६८ ।
 और कठिन प्रहारों से निर्जीव आमनोंसे च्युत अश्वसवारों के कारण से हजारों
 घोड वीरोंओरको दौड़े । ७० । हे राजा फटवते मर्दन युक्त सौत्रगाभी घोडों के
 और अलकृत गर्जनेवाले मनुष्यों के और शक्ति प्राप्त और बुधारे खड्गोंके
 कठोर शब्द वर्तमान हुये हे राजा आपके कुविचार में शत्रुके मर्मस्थलों के काटने
 वाले पुरुषोंके बड़े शब्दहुय । ७२ । परिश्रम से दवाये क्रोधयुक्त प्यासे थकीसवारी
 बाने ओर तेजशर्णों से अत्यन्त घायल आपके शूरवीर सम्मुख वर्तमान हुये
 । ७३ । वहां रुधिर की गन्ध से मतवाले और अचेत बहुत मनुष्यों ने समीप

attacked one another. 65 The sounds of the falling heads were like the fall of palm fruits. The sounds of the fall of headless bodies and limbs were also dreadful. Slaying fathers, brothers and sons with sharp weapons they rushed against one another like ravenous birds. They vied with one another in the attack and thousands of the orderless horses were to be seen rushing hither and thither. 70 The noise from the fall of swift horses, the roars of warriors and of the fall of weapons was dreadful. The cries of the warriors, cutting the vital parts of the enemies, was tremendous. Your warriors, tired,

जन्तु परान् स्वकीयैश्च प्राप्तान् प्राप्तानन्तरान् ॥ ७५ ॥ यद्यथा गतप्राणाः सन्निवृत्ता
जयवृद्धिनः । भूमौ चाश्रयपतप्राजन् शरवृष्टिरिराहता ॥ ७५ ॥ वृकगृहभृगालानां
तुमुले मोदनेहनि । आसीद्वलक्षयो धोरस्तथ पुत्रस्य पश्यतः ॥ ७६ ॥ नराश्वकावस
छन्ना भूमिरासीद्विशाम्पते । रुधिरोदकचित्रा च भीरूणां भयवर्द्धिनोः ७७ ॥ अस्तिजः
पट्टिशैः शूलैस्तक्षमाणाः पुन पुनः । तावकाः पाण्डु वयोश्च नाश्ववर्त्तन्त मागत ॥ ७८ ॥
प्रहरन्तो यथाशक्ति यावत् प्राणस्य धारणम् । योधाः परिपतन्ति स्म यमन्तो रुधिर
प्रणैः ॥ ७९ ॥ शिशो गृहीत्वा केशेषु कषण्णश्च व्यहरयत् । उद्यम्य च शितं खड्गं रुधिरैश्च
परिप्लुतम् ॥ ८० ॥ अघोतियतेषु बहुषु कषण्णेषु जताचिप । तथा रुधिराग्धेन योधान्
कदमलमाविशत् ॥ ८१ ॥ मन्दी भूते तत दाष्ट्ये पाण्डवानां महद्वलन । अल्पावशिष्टे
अनेवाले शत्रुषां समेत अपनेही शूरीरोंको मारा । ७४ । और विजयभिलाषीपरे
हुये बहुत से सत्री वारणों की वर्षा से घायल होकर पृथ्वीपर गिरपड़े । ७५ । भेड़िये
गिद्ध और शृगालोंकी प्रसन्नता बढ़ानेवाला आप के पुत्र के देखतेहुये सेना का घोर
नाश हुआ । ७६ । हे राजा पृथ्वी मनुष्य और घोड़ों के शरीरों से दकगई रुधिर
रूप जल रसनेवाली महाअपूर्व भयभीतोंका भयवढ़ानेवाली होगई । ७७ । हे भरत
वंशी खड्ग पट्टिश और शूलों से वारम्बार घायन पांडव और आपके शूरीर
मर्ही लंटे । ७८ । जवनक शरीर में प्राण शेष रहे तवतक सामर्थ्य के अनुसार
बुद्ध करतरहे शत्रुओंसे रुधिरको डालतेहुये शूरीर चारोंधोर को दौड़े । ८१ ॥ और बड़
अर्थात रुंड शिरको वानोंसे पकड़कर रुधिरसे भरेहुये तीक्ष्ण खड्गको उठाकर
दिख ई दिया । ८० । हे राजा इसके पीछे बहुत बंदोंके बढनेपर उसमकारके
रुधिरकी गंध से शूरीर मूर्च्छित होनेलगे । ८१ उसके पीछे शब्दके, न्यून होने
पर शकुनी योड़े शेष बचेहुये घोड़ों समेत पांचाल देशियोंकी बड़ीसेनाके सम्मुख

enraged and thirsty, with tired beasts and wounded by sharp weapons
stood ready to fight. Maddened with the scent of blood and
insensible, many people slew their own warriors. Desirous of victory
many warriors, wounded by arrows, lay dead on earth. 77 Increasing
the joy of wolves, vultures and jackals, the destruction of your
warriors was great in the presence of your son. The earth was
covered with the corpses of men and beasts. With the overflow of
of blood the ground was dreadful to look at. Wounded again and
again by weapons the warriors of both sides did not give way and
fought on as long as life endured. Dropping blood from their bodies,
the warriors rushed in all directions. A headless trunk was seen seizing
a head by the hair in one hand and a sword in the other 80. Then
many headless bodies rose up and the stench from blood made the
warriors lose their senses. When the noise, lessened, Shakuni with
a small remnant of his army opposed the large army of the Panchala.

इतुरागच्छन्वसंत सौबलः ॥ ८२ ॥ ततोऽप्यघावस्तवारताः पाण्डवा जयमृच्छिनः । पदा
 तवश्च नागाश्च सादिनश्चोद्यतायथाः ॥ ८३ ॥ कोष्ठकीकृत्य चाप्येन परिक्षिप्य च
 सर्वशः । शस्त्रनानाविधैर्जघ्नुर्धनुर्धनुष्वपारं तित्तिर्षभ ॥ ८४ ॥ स्वदीपास्तांस्तु संप्रेक्ष्य स
 बलं सममिदृशान् । साहसपक्षिद्विपद्यां पाण्डवानमिदुद्बु ॥ ८५ ॥ केचित् पदातय
 पङ्क्तिर्मुष्टिभिश्च परस्परम् । निजधनुः समरे शूराः क्षीणशर्यास्ततोऽपतन् ॥ ८६ ॥
 रथेषु रथिनः पेतुर्द्विपथ्यो हस्तिसादिनः । निमानेभ्य इव भ्रष्टाः सिद्धाः पुण्यक्षये
 यथा ॥ ८७ ॥ एवमन्योन्यमोमस्ता योधा जघ्नुर्महामृषे । पितृन् भ्रातृन् धयस्याश्च पत्रा
 कृषि तथापरं ॥ ८८ ॥ एवमासीदमर्याद युद्ध भरतसत्तमः । प्रासासिवाणकालिले
 वर्त्तमाने सुदारुणे ॥ ८९ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वाणि संकुलपुद्गे त्रयोविंशोऽध्यायः २३ ॥

वर्त्तमान हुआ । ८२ । इसके पीछे विजयाभिनापी पांडव शीघ्र ही सम्मुख दौड़े
 सब उठानेवाले युद्धके अन्तर्पर पहुँचने के इच्छवान् पदाती हाथी और अश्व
 सवारों ने उसको चारों ओर में सब प्रकार से घेरकर नाना प्रकार के शस्त्रों से घायल
 किया । ८४ । फिर आपके रथ छोड़े पचि और हाथी सजभोरसे चढ़ाई करनेवाले
 सब पांडवों को देखकर सम्मुख पहुँचे । ८५ । और शस्त्रों से कितनेही शूरवीर
 पदातियोंने युद्ध में बरणयात और मुष्टिकाओं से परस्पर घायल किया और करके
 फिर गिरपड़े । ८६ । रथी रथपर से और हाथीके सवार हाथी परसे ऐसे गिरपड़े
 जैसे कि पुरण फलके लीणहोंनेसे विमानपर चड़े हुये सिद्ध स्वर्गसे गितेहैं । ८७ इस
 प्रकार महादुःखित शूरवीरोंने परस्पर महार किये और इसी प्रकार अन्य लोगोंने
 पिता माई समान वयवाले और पुत्रों कोभी मारा हे भरतर्षभ इस प्रकार मांसखंड्य
 और बाणोंसे युक्त बड़ा भयानक युद्ध वर्त्तमान होनेपर बड़ीही बेमर्यादाहुई ८९ ॥

The Pandavas desirous of victory rushed on and surrounded him with their elephants and horseman to make an end of him. They wounded him with their weapons. The horse and foot of the Pandavas, seeing him thus surrounded, attacked him on all sides. 85. The foot wounded one another with their fists and kicks and fell down fighting. Warriors fell down from their cars and elephants as sidhas fall down from celestial cars at the expiration of their merits. The warriors attacked one another and slew even their fathers, brothers, sons and friends. Thus they fought with different sorts of weapons and observed no rules. 89.

सञ्जय उवाच । तस्मिन् शब्दे मृदो, जाने पाण्डवैर्निहते, घने । अश्वैः सप्तशते,
 शिशैरुपवर्त्तत सोधलः ॥ १ ॥ स या वा घाहिर्ना तूर्णमत्रादि एवम् सुधि, मुख्य
 मिति संदष्टः पुन पुनरस्त्वमाः ॥ २ ॥ अपृच्छत् क्षत्रियांस्तत्र पशु न राजा महारथ ।
 शकुनेस्तु वचः श्रुत्वा न ऊजुर्मरतर्षम । असौ तिष्ठति कौरव्यो रणमध्ये महारथ
 ॥ ३ ॥ यत्रैतत् सुमदृच्छत्रं पूर्णवर्द्धसप्तप्रमम् । यत्रैव सननुत्राणा रथास्तिष्ठन्ति,
 वंशिताः ॥ ४ ॥ यत्रैव शब्दस्तुमुलः पर्यन्थनिनक्षेपतः । तत्र गच्छ दुर्गं राजस्तनो
 प्रक्षयित कारवम् ॥ ५ ॥ परमुक्तस्य तैः शूरे शकुनि, सोवलस्तदा । प्रययोः तत्र यत्रासौ
 पुत्रस्तथ वराधिप । सर्वतः संदृतो वीरैः समरेष्वनिवर्त्तिनिः ॥ ६ ॥ ततो दुर्व्योधने
 दृष्ट्वा रथानीक वयस्स्थितम् । स रथास्तावकान् सर्वान् हवैष्यत् शकुनिस्ततः ॥ ७ ॥
 दुर्व्योधनमिदं धारयं हृष्टकृतो विद्याम्पते । कृतकार्यैर्विद्ययात्मानं मन्यमानोत्रवीम्बुपम्
 ॥ ८ ॥ जहि राजप्रधानीकमशवाः सर्वे जिता मया । नात्पश्यता जीवितं संख्ये शक्यो

अध्याय २४ ॥

सञ्जय बोले कि उसशब्दके मृदुहाने और पांडवोंके हाथमें सेनाके भारेजाने
 पर शकुनी शेष बचेहुये सातसौघोड़ों समेत हड़गया । १ । युद्ध में शीघ्रताकरता
 हुआ वह शकुनी, सेनाके पास शीघ्र, पहुँचकर यह, बारम्बार बचन बोला कि, हे
 अत्यन्त प्रमत्तचित्त और शत्रुओं के विजय करनेवाले तुम युद्ध करो । २ । और
 वहाँ सत्र क्षत्रियोंसे पूछा कि वह दुर्व्योधन कहां है हे भरतर्षभ तब वह क्षत्रीलोग
 शकुनीके बचनको सुनकर बोले- ३ । कि वह महारथी कौरव युद्धमें वहाँ वर्त्तमान
 है जहाँ वह पूर्णचन्द्रमार्गके समान उसका छत्र दिखाई देताहै जहाँ पर कि यह
 कवचधारी शस्त्रालिपे रथीलोग नियत है । ४ और वहाँ जहाँपर यह बादलकेसमान
 उत्तम घोरशब्द वर्त्तमानहै हे राजा तुम वहाँ शीघ्रजाओ जाकर तुम उस कौरव
 राजको देखोगे । ५ । उन शूरोंके ऐसे बचन सुनकर वह शकुनी वहाँगया हे राजा
 वहाँपर वह आपका पुत्र युद्धमें सुखान- मोहनेवाले वीरों से चारोंओर को रक्षित
 था । ६ । वहाँ रथकी सेना समेत दुर्व्योधनको नियत देखकर आपके सब रथियोंको

CHAPTER XXIV

Sanjaya said, " When the noise subsided and the army was being destroyed by the Pandavas, Shakuni retreated with seven hundred horse. He came near the warriors and said to them again and again, " Fight cheerfully, my warriors." He then enquired of the whereabouts of Duryodhan and they said, " He is yonder where you see the moon like umbrella and the warriors are standing with bright armours. He is there where you hear a sound like that of thunder. Go there at once and you will see the Kaurav prince " Having heard the words of those warriors, Shakuni went to the place where

जेतुं युधिष्ठिर ॥ १५ ॥ इते तस्मिन्प्रधाने के पाण्डुपुत्राभिर्गतिरे । गजनिनाम् हनिष्याम-
 पशार्ताश्चतुर्गणधरा ॥ १६ ॥ शृणुष्व तु वचन तस्य तावका जययुद्धिनः । जवेनाश्वद्र-
 वन् हृषी पाण्डुवीर्यामनीकिनीम् । १७ ॥ सर्वे विधूततूणीरा प्रसूहीत शरसन्ना ।
 शरासनानि ध्रुवाना सिंहनाद् प्रचक्रिरे ॥ १८ ॥ ततो ज्यातर्लानघोष पुनरासीहि
 शाश्वते । प्रादुरासात्तराणाञ्च विमुक्ताना सुदायण ॥ १९ ॥ ताम् समीपगतान्
 हनुवा जवेनोद्यतकामुं हान् । उवाच द्रवकीपुत्र कुन्तीपुत्रो धनञ्जय ॥ २० ॥ खोद-
 यास्वामसन्नात् प्रविशत वज्राणाम् । अश्वमघ गमिष्यामि शशुर्णा निशितै शः
 ॥ २१ ॥ अद्यावश दिनाप्यय युद्धस्यास्य जनार्दन । वसन्मानस्य महतः समासाद्य
 परस्परम् ॥ २२ ॥ अनन्तकल्पा व्यजिज्ञो भूत्वा ह्यत्र महारतनाम् । क्षयमघ गता युसे

वसन्न करता । ७ । प्रसन्नचित्त अपने को कृतकृत्य मानता शकुनी राजा दुर्योधन
 से यह वचन बोला हे राजा अब तू पर रथकी सेनाको मारां मैं, सब घोड़े विजय
 द्विपे युद्धमें जीवनको त्यागन करके युधिष्ठिर विजय करने के योग्य नहीं है
 । ८ । पाण्डवों से रजित उस रथकी सेनाके मरनेपर इन हाथी पशुवर्ती आदि सब
 को मारोगे विजयाभिलाषी प्रसन्नचित्त आपके पुत्र उसके वचन को सुनकर तीव्रता
 से पाण्डवों की सेना के सम्मुख दौड़े । ९ । सब तूणीर बाधे धनुषों को चलाय
 मान करते धनुषत्रोटियों ने सिंहनाद किये । १० । हे राजा इसके पीछे मत्स्यञ्चा
 और तलों समेत अच्छे प्रकार से छोड़द्वये बाणों के फिर महाभयकारी शब्द मकड़
 हुये । ११ । कुन्तीका पुत्र अर्जुन वन सम्मुख वर्तमान तबितासे धनुष उठानेवालोंको
 देखकर श्रीकृष्णजी से यह वचन बोला । १२ । कि आप भ्रान्तिसे रहित होकर
 घोड़ों को चलायमान करो और सेनारूपी समूह में प्रवेश करिये अब मैं तेजघार
 बाणों से शत्रुओं के नाश को करूंगा । १३ । हे जनार्दनजी परस्पर सम्मुख
 होतेहुये इस महाभारी युद्ध को होतेहुये अब अद्यावद दिन हुये । १४ । इन

Duryodhan was surrounded and guarded by unflinching warriors.
 Seeing the prince there, and pleasing the warriors, Shakuni said to
 Duryodhan, "Slay the army of car warriors, I have conquered the
 horses. You cannot conquer Yudhishthir without risking your own
 life. At the destruction of the car-warriors protected by the Pandavas,
 we shall slay the elephants, foot and others." Your sons, desirous
 of victory, cheerfully rushed against the army of the Pandavas,
 furnished with quivers and moving their bows, the archers raised
 lionine roars. Then the sounds from bowstrings, beating of plums
 and arrows were again tremendous. Arjun seeing them equipped
 with bows, coming towards him, said to Krishna, "Drive the horses
 carefully and enter the ocean of the army I shall destroy the enemies
 with my sharp arrows." The war has been raging for eight days,

पश्य देवं यथाविद्यम् । १७ ॥ समुद्रगदोच्चं बलं धार्तराष्ट्रस्य माधव । अस्मान्ना
 नाय मन्जाते गोपशोपममच्युत ॥ १८ ॥ हते भीष्मे तु सन्ध्याच्छिवं स्थवि
 माधव । न च तत्कृतवान् मूढो धार्तराष्ट्र सुबालिशः ॥ १९ ॥ उक्तं भीष्मणेन यद्वाक्यं तद्दि
 पथ्यञ्च माधव । तच्छापि नासौ कृतवान् धीतनुजिः सुयोधन ॥ २० ॥ तस्मिन्सु
 निहते भीष्मे प्रच्युते पृथिवीतले । न जानं कारणं किन्तु येन युद्धमधत्त ॥ २१ ॥
 मूढान्तु सर्वथा मन्थे धार्तराष्ट्रान् सुबालिशान् । पतिते शान्तिना पुत्रयेकायुः संपु
 पुनः ॥ २२ ॥ अनन्तरञ्च निहते द्रोणे ब्रह्मविदांश्वरे । राधेय च विवर्णे च नैवाशोभ्यत
 वैशसम् ॥ २३ ॥ अर्जुनवशिष्टं सैन्यस्मिन् सूतपुत्रचपानितोऽसपुत्रश्च नरोत्तमं नैवाशोभ्यत
 वैशसम् ॥ २४ ॥ श्रुतायुषि हते शूर जलमन्व च पौरवे । श्रुतायुषे न श्रुतौ नैवा
 महात्माओं की असंख्य सेना ने अब युद्ध में नाशको पाया देव को देखिय
 कि कैसा है । १७ ॥ हे भविनाशी माधवजी समुद्रकी समान दूर्योधन की सेना
 हसको उपकार, गोपद के समान देखने में आई हे माधवजी भीष्मके मरने
 पर जो यह सन्धि करलता तो यहां के सब लोगोंकी कुशल होजाती परन्तु अज्ञान
 निर्वुद्धि दुर्योधन ने उसको नहीं माना । १९ ॥ हे माधवजी भीष्मजी ने भी
 जो बड़ा हितकारी शुभदायक वचन कथा इस निर्वुद्धि दुर्योधन ने उम
 को भी नहीं किया २० । कठिन युद्ध में उन भीष्मजी के पृथ्वीपर गिरनेपर मैं
 नहीं जानताहूँ कि कौनसा कारण है जिससे कि युद्ध जारी हुआ । २१ । मैं सब
 प्रकारसे धृतराष्ट्रके पुत्रोंको अज्ञान और निर्वुद्धि मानताहूँ कि जिन्होंने भीष्मजी
 के भी गिरनेपर युद्ध किया । २२ । इसके अनन्तर ब्रह्मज्ञानियों में श्रेष्ठ द्रोणा
 चार्य कर्ण और विकर्णके मरनेपर भी विनाशिन शान्तिको नहीं पाया । २३ । इस
 सेना के छोड़े बाकी रहने और नरोत्तम कर्णके पुत्र समेत गिरानेपर नार्जुन शान्ति
 को नहीं पाया । २४ । धीर श्रुतायुष पौरव जन्मसिन्धु और राजा श्रुतायुषके मरने

O Janardan, and the numerous army of these great warriors has been
 destroyed. Look at the working of Destiny, Immortal Mathav, the
 Ocean like army of Duryodhan coming towards us looks like a small
 pond. All the warriors would be safe, if Duryodhan had made peace at
 the fall of Bhishm, but the fool paid no heed Foolish Duryodhan gave
 no ear to the salutary advice of Bhishm 20 I donot know why
 the battle was allowed to continue at the fall of Bhishm. I know
 that the sons of Dhritashtia are quite foolish as they continued the
 war at the fall of Bhishm. The battle was not discontinued at the
 fall of Droha, Karan and Vikarn It did not cease even when only
 a small portion of the army was left at the fall of Karan and his son.
 The hostilities did not cease at the fall of Shrutayush, Paurav,
 Jambudh and Shrutayudh 25 It did not stop at the fall of

शाभ्यत वैशसम् ॥ २४ ॥ मूर्ध्निवासि शल्ये च शल्ये चैव जनार्दन ! भावम्येषु च
 वीर्यु नैवाशाभ्यत वैशसम् ॥ २६ ॥ जयद्रथे च निहते राक्षसे च वाप्यलायुधे । वाहली-
 कैसोमदत्ते च नैवाशाभ्यत वैशसम् ॥ २७ ॥ भगदत्तं हते शूरे काम्बोजे च सुदक्षिणे ।
 पुःशाखने च निहते नैवाशाभ्य वैशसम् ॥ २८ ॥ दृष्ट्वा च निहतात् शूरात् पृथक्मां
 डलिकान्मुपात् । वलिनश्च रणे कृष्ण नैवाशाभ्यत वैशसम् ॥ २९ ॥ अक्षौहिणीं हतां
 दृष्ट्वा भीमसेनैः संयुगे । मोहाद्वा यदि वा लोमानैवाशाभ्यत वैशसम् ॥ ३० ॥ को
 नुराजाकुलजातः कौरवेषु विशेषतः । निरर्थकं महद्भैरं कुर्यादप्यः सुयोधनात् ॥ ३१ ॥ गुण-
 तोऽप्यधिकं त्वावा बलतः । शौर्यतोऽपि वा ॥ अमूढः को नु युष्येतः जानन् प्राक्षो हितो
 हितम् ॥ ३२ ॥ यत्र तस्य मनो ह्यासीत्त्वयोक्तस्य हितस्य च ॥ प्रशमे पाण्डवैः स्वार्थे
 सोम्यस्य धृष्ट्यात् कथम् ॥ ३३ ॥ येन शास्तनवो भीष्मो द्रोणो विदुर एव च । प्रत्या-
 परं भीः नाशहोना वन्दं नर्ही दुष्मा ॥ ३४ ॥ हेजनाहनजी-भूरिश्रवा शल्यः शल्यः और-
 दानो अवन्ति देशके वीर । राजालोको के भी मरनेपर नाशहोना वन्दं नर्ही दुष्मा
 ॥ ३५ ॥ जयद्रथं भलायुधं राक्षसं वाहलीकं सोमदत्तं शूरां भगदत्तं काम्बोजं सुद-
 क्षिणं औरं दुश्शासनं के पानेपरं भी यह संत्रियोंका नाश वन्दं नर्ही दुष्मा ॥ ३६ ॥
 हे कृष्णजी पृथक् मण्डलवाले शूरीयं पराक्रमी राजाओं को युद्धमें मरा हुआ देख
 कर भी नाशवन्द नर्ही हुआ ॥ ३७ ॥ भीमसेन के हाथसे अक्षौहिणी के प्रधान
 लोगों को मृतक देखकर मोह और लोभमें नाश वन्द नर्ही हुआ ॥ ३८ ॥ राजाओं
 के पाने मुखकर कौरवों के मरनेमें उत्पन्न होकर दुर्बोधके शिराय कौनपुरुष
 निरर्थक बड़ी शत्रुता को करेगा ॥ ३९ ॥ गुण बल और शूरता से भी अधिक
 जानकर हानि लाभको जानता हुआ कौनसा बुद्धिमान मनुष्य युद्ध करेगा ॥ ४० ॥
 जो तुम्हारे भी महत्कारी बचनको करने से उस दुर्बोधका चित पाण्डवों के
 साथ सन्धि करने में नर्ही हुआ वह फिर दूसरेके बचनको कैसे मनुसक्त हो ॥ ४१ ॥

Bhurishrava, Shalya, Shalwa and the two warriors of Avanti. It did not cease at the fall of Jayadrath, Alayudh the rakshas, Vahlik, Somdatta, brave Bhagdatta, Camboj, Sudakshin and Dashasin. The destruction of the warriors did not cease at the fall of so many kings. He was foolish enough not to stop fight when Bhim had destroyed an akshauhini of good warriors. 30. Born is the family of kings and specially of Kaurav kings, no man, except Duryodhan would contract such a great enmity for nothing. What wise man knowing his enemy to be superior to him in good qualities and strength, would contract enmity? How could Duryodhan listen to other men, when he was foolish enough to disregard your advice to make peace with the Pandavas? What remedy was left to him, who flatly refused to the advice of Bhishm, Drona and Vidur! What

ख्याताः शमस्याय किमु तस्याय भयजम् ॥३४॥ मोक्षार्थं विना वृद्धः प्रत्यावृत्तो
 जनार्दन । तथा माता हितं वाक्यं भावमाणा हितैषिणी । प्रत्यावृत्ता ह्यस्तकृत्स्न
 कस्माद्रोचयेद्वचः ॥ ३५ ॥ कुलान्तकरणो व्यक्तं जात एव जनार्दन । तथास्य दृष्टते
 चष्टा नीतिश्चैव विशाम्पतेः । नैव दास्यति नो राज्यमिति मे मतिरेष्युत ॥ ३६ ॥
 उक्तोऽहं बहुशस्त्रात् विदुरेण महात्मना । न जीवनं दास्ये न भागं धार्तराष्ट्रः कथञ्चन
 ॥ ३७ ॥ यावत् प्राणान्धारयति घृतराष्ट्रेऽपि मानव । तस्माद्युष्मासु पापाणां प्रचरि
 त्यति पातकम् ॥ ३८ ॥ न च शक्योऽप्यथा जतुमूत्रे युजेन माधव । इत्यत्रोक्तं सदा मां
 हि विदुरः सत्यदर्शनः ॥ ३९ ॥ तत् सर्वमथ जानामि न्यवसायं युगामन । यत्क
 वचनं तेन विदुरेण महात्मना ॥ ४० ॥ यो हि श्रुत्वा वचः पश्यं जामदग्न्याघयातघमा
 धनामग्नयत् पुत्रुर्द्धिर्धुवं नाशमुखे स्थितः ॥४१॥ उक्तं हि बहुभिः सिद्धैर्जातमात्रे सुधो

सन्धि के विषय में भीष्म द्रोणाचार्य और विदुरजी को भा जिसने उत्तर दिया
 अब उसका कौनसा, इस ज है । ३४ । हे जनार्दनजी जिसने अपनी अज्ञानता से
 हितकारी बचनों के कहनेवाले शृद्धापिता और माताओं को भी वारम्बार अनादर
 करके उत्तर दिया वह कैसे दूसरे के बचनों को अंगीकार कर सकता है । ३५ । हे मधु
 सूदन जी प्रकट है कि यह कुलका नाश करनेवाला, उत्पन्न हुआ है विशाम्पते
 उसी प्रकार इसकी चेष्टा और नीति देखी जाती है कि यह हमको राज्य नहीं
 देगा हे आविनाशो मेरा यह मत है । ३६ । हे बड़ाई देनेवाले भाई मुझसे बहुधा
 महात्मा विदुरने कहा था कि दुर्योधन कभी अपने जीते जी राज्यका भाग नहीं
 देगा । ३७ । दुर्योधन जब तक जीवता है तब तक हम निरपराधियों के साथ पापकर्म
 करेगा । ३८ । हे माधवजी वह बिना युद्धकिये और किसी प्रकार से भी विजय करनेके
 योग्य नहीं है न्याय के देखनेवाले विदुरजाने सदैव मुझसे यही कहा कि । ३९ । सो
 अब उसदुरात्माके सब निषयको आगे जा वचन, उसमहात्मा विदुरजी ने कहा है
 उसको जानूंगा । ४० । जिस दुर्धुद्धिने परशुरामजी के सत्य और परिणाम में हित
 कारी बचनोंको सुनकर अपमान किया इससे निश्चय ज्ञात होता है कि वह नाश
 के सम्मुख नियत हुआ है । ४१ । दुर्योधन के उत्पन्न होनेपर बहुत सिद्धसौगों

other man's advice would he hear who foolishly disregarded the
 advice of his parents? 35. It is clear, O Madhusudan that
 Duryodhan was born to destroy his own family. It was therefore
 that he tried to deprive us of our Kingdom. Vidur had often told
 me that Duryodhan would not give us our property during his life
 time. He will continue his hostilities towards us, without any fault
 of ours, as long as he lives. He cannot be conquered without fight-
 ing. Wise Vidur has often told me thus I shall now see his
 revolution and the prediction of Vidur. 40. From his disregarding
 the salutary advice of Parashuram, I believe that Duryodhan is bent on

चने । इमं प्राप्य दुरात्मानं क्षयं यत्र गमिष्यति ॥ ४२ ॥ तदिदं वचनं कृषीं विरुक्तं वै
 जनादनं । इमं चात्रा हि राजानो दुर्योधनकृतेभृशम् । सोऽथ सर्वप्रणे योवाञ्छिन्ननि
 ष्यामि माधव ॥ ४३ ॥ क्षत्रियेषु हनन्वच शत्रुये च शिविरे कृत । वधाय चात्मनोस्मानि
 सयुग रोषारिष्यति ॥ ४४ ॥ तद्वन्तं हि भवेत्तैरनुमानेन माधव । एव पश्चात्त्रि चाभ्येय
 विस्तवन् प्रहया इवया ॥ ४५ ॥ विद्वरस्य च वाक्येन चष्टया च दुरात्मने । न याहि
 आरत्ने वार वावदग्निं शिते शरे दुर्योधन दुरात्मानं यादिनोऽप्यास्य सयुगे ॥ ४६ ॥
 क्षमयथ कारिष्यामि धर्मराजस्य माधव । हर्षितदुर्बल सैभ्यं घातराष्ट्रस्य पश्यतः
 ॥ ४७ ॥ सञ्जय उच्यते । अभापुहस्ता दाशाहस्तधोक्तं सध्यसाक्षितम् । तद्बलाघमांश्च
 आभासमात् । प्रविशत्रेण ॥ ४८ ॥ शरसनवनं चार शक्तिरूपकसदृशम् । गदापरिष
 पन्थात् स्थनागमहृद्गमम् ॥ ४९ ॥ इयपत्तिलताकोणं गाहमाना महायशः । इयरोक्ष

वे कहाया कि इस दुरात्मा दुर्योधनको प्राप्त होकर बहुत से क्षत्रियों के कुलनाश
 होजायेगे । ४२ । हे जनादनजी उम्होंका वारम्बार कहाहुआ यहवचन अब सरप
 होरहा है कि दुर्योधन के कारण से बहुतसे अमरुय राजाओं का नाश होमया
 ला है माधवजा अरु मैं युद्ध में सब शूरवीरों को मारुगा । ४३ । क्षत्रियों के शांति
 करने और डरो के जल्दामे खालीहाने पर अपने परणके लिये यह दुर्योधन
 हमारे साथ युद्ध करने का अंगीकार करेगा । ४४ । हे जनादनजी अनुमानसेबादत
 होता है कि शत्रुताका अन्तु वही हागा है श्रीकृष्णजा मे अपनी बुद्धि से घोषणा
 किदुर्योधन के वचन और इस दुरात्माके कर्म से ऐसाही देखताहूँ है वार इस हेतु
 से आप उम सेना में चला जबतक युद्धमें तेजवाणां से इस दुरात्मा दुर्वाचनको
 अन्तु इसको सेनाको मारुगा । ४५ । हे गरुडध्वजजा अब मे दुर्योधन के दस्तत
 इसु निवस सेनाको मारु । धर्मराज का कुशलताका कर्गा । ४७ । सञ्जय
 बोले कि अन्तुन क इस प्रकार वचन का सुमकर हाथमें रस्ती पकड़नेवाले श्री
 कृष्णजा ने निर्भयतासे उससेनामे प्रवेशाकया । ४८ । वड़े साहसी गोविन्दजी वही
 पताकावाके स्थका सवारामे उस सेनाको मर्राते ह्ये पूमने लगे जां कि माध
 वइमआर बाणा से मयानक शक्तिरूपी काँटा से पूण गदा और परिघमूरतें मार्ग
 destroying himself. Many siddhas predicted at the birth of Duryo-
 han that he would cause the destruction of many warrior families.
 Those manifold predictions are now coming out true, for so many
 kshatriyas have been destroyed on his account, I shall now slay all
 the warriors, O Madhav. At the destruction of all his warriors when
 all the tents are empty Duryodhan will come before us to die and I
 suppose that the hostilities will then end. Thus I think, the prediction
 of Vidur will come out to be true and that will be the end of that ill
 natured fool. Take me therefore in the midst of the army, so that I may
 slay Duryodhan's army. I shall set the mind of Yudhishtira at ease.

सत्र गोविन्दो रथेनातिपताकिना ॥५०॥ ते हयाः पाण्डवा राजन् वहन्तोऽर्जुनमाहवे ।
 दिक्षु सर्वांश्चक्षुःस्यन्त दाशार्हण प्रचोदिता ॥ ५१ ॥ ततः प्रायाद्रथेनाजो सख्यसाची
 परन्तपः । किरञ्जतरशातीक्ष्णान् वारिचारा इवाम्बुदः प्रादुरासीन्महाशब्दः शगणां
 नतपथेनाम् ॥ ५२ ॥ इयुमिदृशद्यमानानां समरे सख्यसाचिना । असज्जन्तस्त्रुषुषु
 शरौघाः प्राप्ततत्र सुवि ॥ ५३ ॥ इन्द्राशनिसमरुपर्शा गाण्डीघप्रपिता शराः । मराणां
 गान् सगाहृत्य ह्यांश्चापि विशाम्पते । अपतन्त रणे घाणाः पतङ्गा इव घोषिण ॥५४॥
 आसीत् सर्वमवच्छन्नं गाण्डीघप्रपितैः शरैः । न प्रात्रायन्त समरे दिशो वा विदिशोपि
 वा ॥ ५५ ॥ सर्वमामोञ्जगत पूर्णं प्रार्थनामाङ्कितैः शरैः । एकमपुंसैल्लथोनेः कर्मरप
 रिमाङ्कितैः ॥ ५६ ॥ ते दह्यमानाः पार्थेन पावकेनेव कुञ्जराः । समासीदन्त कौरव्या

रखनेवाला रथ हाथी रूप बड़े हतवाला घोड़े और पत्तिरूपी लताओं से संयुक्त
 सेनारूपी वनधों ॥ ५० ॥ हे राजा युद्ध में श्रीकृष्णजी से चलायेमान बड़े श्वेत
 घोड़े अर्जुनको सवार कियेहुये सब दिशाओं में दिखाई पड़े । ५१ । इसके पीछे
 शत्रुओंको तपानेवाला अर्जुन सैकड़ों बाणजालों को फैलाता रथकी सवारीसे
 युद्ध में ऐसे आया जैसे कि जंझकी धाराओं को बरसाता बादल आता है युद्ध में
 अर्जुन के बाणों से ढके हुये शूरीर और टेढ़े पूर्ववाले बाणों के बड़े शब्द
 प्रकटहुये । ५२ । गांडीव धनुषसे चलाये हुये इन्द्रवज्रकी समानं स्पशवाले कवचों
 पर लगतेहुये बाण समूह पृथ्वीपर अच्छे गिरे । ५३ । हे राजा वह बाणहाथी और
 घोड़ों को मारकर पत्तियों के समान युद्धभूमि में गिरपड़े । ५४ । गांडीव धनुषके
 चलायेहुये बाणोंसे सब पृथ्वी ऐसी ढकगई कि युद्ध में दिशा और विदिशा भी
 नहीं जानीगई । ५५ । अर्जुनके नामों से अंकित सुनहरी पुल तेलसे साफ किये
 हुये और कारीगरके मजि हुये बाणों से सब जगत पूरा होगया । ५६ । अग्निके
 समान अर्जुनसे भस्म होनेवाले तेज बाणोंसे घायल उन घोररूप हाथियों ने

after slaying this weakened army 47. Sanjaya said, "Having heard Arjun's words Shree Krishn fearlesly entered the army. Entering the army with his huge binhered car, brave Govind roaned in the midst of the warriors armed with prases, swords, arrows, maces and clubs and full of cars, elephants, foot and horse. 50. Driven by San Krishn, the white horse, carrying Arjun, looked in all directions. Then Arjun the destroyer of foes came on into the field of battle, showering arrows from his car like a cloud pouring forth rain covered with Arjun's arrows, the warfibrs made a tremendous noise with their arrows. Discharged from the Gandiv bow, the vajra like arrows pierced the armours of the warriors and fell down on earth. Slayung elephants and horses they fell down in the field of battle like birds. The field of battle was covered with arrows dis-

वधमान

वाघान् च

सुधापः । भारद्वाजं शुष्कलतावितानं भृशं समृद्धो ज्वलनः प्रतापी ॥ ५९ ॥ एवं स नारा
चगणप्रतापी शराच्चिररुच्छायच्चतिगमतेजाः । द्वादश सर्वा तव पुत्रसेनाममृष्यमाणा
स्तरसा तरस्या ॥ ६० ॥ तस्यैव प्राणहयाः समुक्ता नासज्जन वै धर्मसु-रुक्मपुत्राः
न स वितोय प्रमुमाच वाणं नरे इयं वा । परमार्द्धिषे वा । ६१ ॥ अनकरुपाकृतीमिहि
वाणमहारथानाकमनुप्रविश्य । स एव एकस्तव पुत्रसेनां जघान-देत्यानिथ
वक्ष्यामिः ॥ ६२ ॥

इति शल्य पर्वणि शल्य वधपर्वणि अर्जुनपराक्रमे चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥

अर्जुनको त्याग नहीं किया । ५७ । सूर्य के समान प्रकाशमान तेजस्वी धनुषवाणों
धारी अर्जुन ने युद्ध में लड़नेवालों को ऐसे-भस्म किया जैसे कि ज्वलित रूप
अग्नि सूखे वनको भस्म करता है । ५८ । जैसे कि वनके समीप वनवासियोंसे
छोड़ा हुआ कालामार्ग भयवा वड़े शब्द रखनेवाली वृद्धि युक्त प्रतापी अग्नि उस
सूखे वनको भस्मकरे जोकि बहुतसे वृत्तों से पूर्ण होकर सूक्ष्म लताओं से अच्छा
दित होया । ५९ । इसी प्रकार नाराचों से संतप्त करनेवाले वाणरूप छोटी बड़ी
ज्वाला रखनेवाले वड़े तेजस्वी वेगवान् अशान्तचित्त अर्जुन ने आपके पुत्रकी
सब सेनाको नाशकरा दिया । ६० । अच्छे प्रकारसे छोड़ेहुये सुनहरी पुत्र जीवनके
हरनेवाले उसके वाण कथकोंको भेदकर पाहोगये उसने मनुष्य घोड़े और वित्तम
हापीपर भी एतके सिवाय दूसरे वाणको नहीं मारा । ६१ । उस अकेले ने महा
रथियोंकी सेनामें प्रवेश करके बहुत प्रकारके रूपवाले वाणों से आपके पुत्रकी
सेनाको ऐसे मारा जैसे कि दैत्य लोगोंकी वनधारी इन्द्र मारता है ६२ ॥

charged from the Gandiv bow and the directions became invisible. 55. The field was full of well rubbed and oiled arrows marked with Arjun's name. Burning as if it were with fire by the sharp arrow, the elephants did not leave Arjun. Glorious like the Sun, the great archer Arjun, consumed the warriors as fire burns a dry forest. The field of battle was like the black path left by foresters after burning a forest full of trees and creepers. Thus Arjun destroyed your warriors with his arrows. 60. The arrows well discharged and destructive of life pierced through the armours. He had no second arrows to destroy men, horses and elephants. Having entered the army alone, he destroyed your son's warriors with his arrows as Indra the wielder of vajra destroys the Daityas. 62.

सञ्जये उवाच । अस्यतां यतमानानां शिराणामनिघनिनाम् । सङ्कल्पमकरोन्मोक्षं
गाण्डीवेन घनञ्जयः ॥ १ ॥ इन्द्रोऽग्निं समस्पर्शानं विपश्चान्महीजसा । विस्त्रुजन् दृश्यते
वाणान् धारां शुक्लिभवाम्बुदः ॥ २ ॥ तत्र सैन्यं भरतश्रेष्ठ वध्वमानं क्रिपोदिना । स्व
उद्राव समामासव पुत्रस्य पश्यतः ॥ ३ ॥ विद्वन् भ्रातृन् परित्यज्य वयस्वानपि चापरे ।
इतधुच्यारथा केचिच्छतसूतास्तथापरे । मन्दिशायुगन्धकाक्षाः केचिदासन्न विशाम्पते
॥ ४ ॥ मन्दिपां सायकाः क्षीणास्तथास्यै शीपीडिताः । यज्ञता युगपत् केचित् आद्रवन्
भयपीडिताः ॥ ५ ॥ केचित् सुघातुपादाश्च हतभयिष्ठवाहनाः । निष्कण्ठ्युः विद्वान्मये
सहायानपरे तु ॥ ६ ॥ वांघवोऽक्षं नरदंयाधिः भ्रातृन् सम्पन्धिनस्तथा । सुदुः कोऽपि
वुस्त्रुज्य तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ७ ॥ बहवोऽत्र भूषां विद्या सुस्रमाना महारथाः । नि

अध्याय. २६ ॥

संभव वाले कि अर्जुनने गाण्डीव धनुषके द्वारा उमि धनुषधारी उपाय करने
वाले और मुख न मोहनेवाले हारवोरों के संकल्पों को निष्फल कर दिया । १ । वह
इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले असह्य महा प्रकाशित वाणों को छोड़ता जैसे दिखाई
देताथा जैसे कि जलधाराओं को छोड़ता वादल दिखाई पड़ता है । २ । ये भरतसैन्य
अर्जुन के हाथसे घायल वहसेना आपके पुत्रके देखतेहुये सुदसे भागी । ३ ।
कितनेही भाई पिता और समान अवस्था वालों को भी छोड़कर भागे कोई मृतक
घोड़ेवाले और कोई मृतक सारथीवाले एव दिखाई पड़े हे रामा कितने ही रथ टूटे
ईसादपट सुग और चक्रवाले हुये । ४ । और दूसरोंके सायकों ने नष्टताको वाया
बहूतरे वाणोंसे पीड़ावानहुये कितनेही विना घायलहुये ही भयसे पीडित होकर
भागे । ५ । और जिनके बहुत भाई बन्धुमारोग्ये ऐसे बहुतसे मनुष्य पुत्र भाई आदि
को लेकर भागे कोई पिताको कोई साथी बान्धव नातेदार और भाइयों को पुकारे
। ६ । और हे राजा कितनेही जहां तहां सामान को छोड़कर भागे फिर वहां
बहुतसे महारथी कठिन घायल और अचेतहोकर अर्जुन के वाणोंसे घायल और

CHAPTER XXVI

Sanjaya said, " With arrows discharged from the Gaudiv bow he made the resolutions of the unflinching warriors futile. Discharging vajra like arrows which were unbearable and bright, he looked like a cloud sending forth rain. Wounded by his arrows, the warriors fled in the presence of your son. Many fled away leaving their fathers brothers, and friends. Some lost their horses and others lost their drivers and had the parts of their cars broken. Others were deprived of arrows and were themselves wounded, while some fled in terror without receiving wounds. 5. Those whose kinsmen were slain, fled away with the rest of their relations. Some called for their fathers; others, their companions and kinsmen. Some fled

॥ ८ ॥ तानभ्ये रथमारोप्य दशवास्याय मुहूर्त्तं
 मे । विधाताश्च विद्वानाश्च पुत्रयुद्धाय जग्मिरे ॥ ९ ॥ तानपास्य गता केचित् पुन
 व युयुं सत्रं । कुर्वन्ते सत्तव पुत्रस्य तासन युद्धदुर्भवा ॥ १० ॥ पानीयमपरे पीत्वा
 पर्यादशस्त्रिये च धोहनम् । धर्माणि च समारोप्य कश्चित् भरतसत्तम ॥ ११ ॥ समा
 श्वासयांषो भ्रातृन् निक्षिप्ये शिथिलेऽपि च । पुत्रानभ्ये पितृन्भ्ये पुनर्युद्धमारोचयन्
 ॥ १२ ॥ सञ्जेषित्वा रथान् बेनिन्त यथामुष्यं विशाम्पते । क्षाण्डेय पाण्डवानीकं पु
 त्रयुद्धमरोचयन् ॥ १३ ॥ ते शूरा किद्रुणीजाले समाच्छन्ना धर्मासिरे । त्रैलोक्येषु
 जयं युद्धा तथा देतेपदानवा ॥ १४ ॥ आगम्य सहसा केचिद्रथैः स्वर्णविभूषितैः ।
 पाण्डवानामनीकेषु घृष्टयुग्मोऽपि चाञ्चाल्य शिखण्डी

श्रीम लो दिव ई पडे । ८ वहुतेत उनको रथपर सवार करके एक मुहूर्त्त विश्वास
 करके युद्धायतो रहित अछेपकार तत्तकरके फिर युद्धके निमित्त भेजे गये
 । ९ । कितने युद्धामिलापी लोग उन को छोडकर आप के पुत्रकी आज्ञा को
 मानकर फिर युद्धमें गये । १० । वहुतेत युद्धदुर्भद जलको पीकर सवारीको आराम
 देकर और कितोई कवचोको बदलकर युद्धमें गये । ११ । हे भरतर्षभ कितनेही
 जयते भाइयो को डरेमें छोड विधासदेकर चछदिये कितने पुत्रोको कित्तीके
 पिनाओ को डरेमें छोडकर युद्धकोही स्वीकारकिया । १२। और कितनेही शूरोको ने
 हतम रथोका अलङ्कृतकरके पाण्डवसेनामें प्रवेशकरके फिर युद्धको स्वीकार किया
 । १३। वह शूर कुद्रुणीकाओके जालोसे युक्त ऐस शोभायमान हुये जैसे कि तीनो
 लोकोको विजय में प्रवृत्त रूप और दानव दोते हैं । १४ । कितन ही शरीरोने
 सुवर्ण से अलङ्कृत रथोकी सवारी से पाण्डवोकी सेनामें आकर घृष्टयुग्म से युद्ध
 किया । १५। पाञ्चालदेशी घृष्टयुग्म मदारथी शिखण्डी और नकुल के पुत्र शत्रु

away leaving their goals. Many warriors wounded and insensible,
 were seen grasping with the wounds of Arjuna's arrows. Some were
 lifted on cars and again sent to fight after a few moments of respite.
 Some desirous of fighting left them and went to battle by the order
 of your son. Some went to fight after drinking water, giving rest
 to their beasts and changing their armours. Some left their brothers
 in their tents and went to battle after consoling them. Some left
 their sons and fathers in the tents and went to fight. Some prepared
 their cars and entered the Pandav army for the sake of fighting.
 These brave warriors, with small bells, looked glorious like Daityas
 and Dhanwas desirous of victory over the three worlds. Some
 warriors, mounted on gold decked cars, entered the Pandav army
 and fought with Dushtheadyma 15 Dhrishtadyumna of Panchal

सञ्जये उवाच । अस्यतां यतमानानां शूराणामनिघटिनाम् । सङ्करपमकरोग्मोर्ष
गाण्डीव घनञ्जय ॥१॥ इन्द्रोऽशिसमस्पर्धानविषह्या-महोजसो । विस्त्रिजन् इदयते
वाणान् धारा सुभ्रिवास्वुद ॥ २ ॥ तत्र सैन्य भरतश्रेष्ठ घड्यमान किरोदिना । सप्र
बुद्धाव सेमामासव पुत्रस्य पश्यतः ॥३॥ पितृन् भ्रातृन् परित्यज्य वयस्थानपि चापरे ।
इतधुद्वारया केचिश्चतस्रतास्तथापरे । मनेशायुगचक्राक्षा केचिदासव विशाम्पते
॥ ४ ॥ अन्येषां सायका क्षीणास्तथाप्ये शीपीडिता । दक्षता युगपत् केचित् श्रावणव
भयपीडिता ॥ ५ ॥ केचित् पुत्रानुपादाष इतभूयिष्ठवाहनाः । निष्कृशुः पितृमये
सहावानपरे पुत्र ॥ ६ ॥ वांघवाश्च नरव्याघ्रः भ्रातृन् सम्घनिस्तथा । बुद्धुः केचि
बुत्सुषेय तत्र तत्र विशाम्पते ॥ ७ ॥ ब्रह्मघोऽत्र भूष विशा सुह्यमाना महारथाः । निह

अध्याय २६ ॥

संजय बोले कि अर्जुनने गाण्डीव धनुषके द्वारा वेग धनुषधारी उपाय करने
वाले और मुख न मोड़नेवाले शूरवीरों के संकल्पों को निष्फल करदिया ? । वह
इन्द्रवज्रके समान स्पर्शवाले असख महा मकाशित धारों को छोड़ता जैसे दिखाई
देताथा जैसे कि जलधाराओं को छोड़ता वादल दिखाई पड़ता है । २ । वेभरतसम
अर्जुन के हाथसे घायल वहसेना आपके पुत्रके देखतेहुये मुझसे भागी । ३ ।
कितनेही भाई पिता और समान अवस्था वालों को भी छोडकरभागे कोई मृतक
घोड़ेवाले और कोईमृतक सारथीवाले १४ दिखाई पड़े हे रामा कितने ही रथ टूटे
ईकादण्ड धुम और चक्रगले हुये । ४ । और दूसरोंकेसायकों ने जलताके धापा
बहुतेरे वाणोंसे पीड़ावानहुये कितनेही विना घायलहुये ही यषसे पीडित होकर
भागे । ५ । और जिनके बहुत भाई वन्धुमारोग्यै ऐसे बहुतेरे मनुष्य पुत्र भाई आदि
को लेकरभागे कोई पिताको कोई साथी बान्धव नातेदार और भाइयों को पुकारे
। ६ । और हे राजा कितनेही जहा तहां सामान को छोडकर भागे फिर वहां
बहुतेरे महारथी कठिन घायल और अचेतहोकर अर्जुन के वाणोंसे घायल और

CHAPTER XXVI

Sanjaya said, ' With arrows discharged from the Gaudiv bow he made the resolutions of the unflinching warriors futile. Discharging vajra like arrows which were unbearable and bright, he looked like a cloud sending forth rain. Wounded by his arrows, the warriors fled in the presence of your son. Many fled away leaving their fathers brothers, and friends. Some lost their horses and others lost their drivers and had the parts of their cars broken. Others were deprived of arrows and were themselves wounded, while some fled in terror without receiving wounds. 5 Those whose kinsmen were slain, fled away with the rest of their relations. Some called for their fathers, others their companions and kinsmen. Some fled

मन्तु स्म दृश्यन्ते पार्थवाणाहता नराः ॥ ८ ॥ तानन्ये रथमारोप्य ब्रह्मास्याय मुहूर्त्तं
 कर्म । विधाताञ्च वितुष्णाञ्च पुनर्पुङ्गव्यं जग्मिरे ॥ ९ ॥ तानपारस्यं गतां केचित् पुन
 र्वा युयुत्सवः । कुर्वन्तस्तेषु पुत्रस्य शांसनं युद्धदुर्भवाः ॥ १० ॥ पानीयमपरे पीत्वा
 पर्यादर्शस्यं च धातुत्रयं । धर्माणि च समारोप्य केचित् भरतसत्तम ॥ ११ ॥ समा
 श्वासां पौ भ्रान्तान् निक्षिप्यैशशिष्येऽपि च । पुत्रानन्ये वितुष्ण्ये पुनर्पुङ्गवोऽप्यनु
 ॥ १२ ॥ मञ्जुपितृवो रथान् केशिन्तु यथामुख्यं विशाम्पते । काण्डुरस्य पाण्डवानीकं पुन
 युद्धमारोच्यन् ॥ १३ ॥ ते शूराः किङ्कुमीजलिः समाच्छभ्रा धर्मासिरे । त्रैलोक्येषु
 जये युक्ता तथा देवदानवाः ॥ १४ ॥ यागस्य सहसा केचिद्रथैः स्वर्णविभूषितैः ।
 पाण्डवानां गतीकेषु घृष्टघृष्टमनशोचयन् ॥ १५ ॥ घृष्टघृष्टमोऽपि चास्त्रालयः शिखण्डी

श्यामले दिव्ये पदे । बहुतेस उनको रथपर सवार करके एक मुहूर्त्त विश्वांस
 करके युद्धमें रहित अच्छे प्रकार वृत्तकरके फिर युद्धके निमित्त भेजे गये
 । ९ । कितने युद्धामिलायी लोग उनको छोड़कर आय के पुत्रकी आज्ञा को
 मानकर फिर युद्धमें गये । १० । बहुतेस युद्धदुर्भद जनको पीकर सवारीको आराम
 देकर और कितनेही कवचको बदलकर युद्धमें गये । ११ । हे भरतपते कितनेही
 अपने शिष्योंको डरेमें छोड़ विधासदेकर चलदिये किसीने पुत्रको किसीके
 पिताको डरेमें छोड़कर युद्धकाही स्वीकारकिया । १२ और कितनेही शस्त्रीको ने
 उत्तम रथको अलङ्कनकरके पाण्डवीपुत्रनाम भवेसकरके फिर युद्धको स्वीकार किया
 । १३ । वह शर तुम्हाराटकाअके जालोस युक्त ऐस शोभावमान हूये जैसे कि तीनो
 लोकको विजय में प्रवृत्त देख्य और दानव होते है । १४ । कितने ही शस्त्रीकोने
 स्वर्ण से अलंकृत रथोंकी सवारी से पाण्डवोंकी सेनामें आकर घृष्टघृष्टमन से युद्ध
 किया । १५ । पांचालदेशी घृष्टघृष्टमने मगधकी शिखण्डी और नकुल के पुत्र शन्त

away leaving their goods. Many warriors, wounded and insensible,
 were seen gasping with the wounds of Arjun's arrows. Some were
 lifted on cars and again sent to fight after a few moments of respite.
 Some, desirous of fighting left them and went to battle by the order
 of your son. Some went to fight after drinking water, giving rest
 to their beasts and changing their armours. Some left their brothers
 in their tents and went to battle after consoling them. Some left
 their sons and fathers in the tents and went to fight. Some prepared
 their cars and entered the Pandav army for the sake of fighting.
 Those brave warriors, with small bells, looked glorious like Duryas
 and Dussas desirous of victory over the three worlds. Some
 warriors, mounted on gold decked cars, entered the Pandav army
 and fought with Dhrishtadyumna 15 Dhrishtadyumna of Panchal

च महारथः । नाकुलिर्ध्वं शतानीकां रथानीकमधीधेयम् ॥ १६ ॥ पाञ्चाल्यस्तु ततः
 क्रुद्धः सैन्येन महता वृतः । अश्वघातम् सुसंरम्भास्त्रावकान् हर्षमुद्यतः ॥ १७ ॥ ततः
 शशापतस्तस्य तव पुत्रो जगधिपः । वाणसंघाननेकां वै प्रेषयामास भारत ॥ १८ ॥
 धृष्टद्युम्नस्ततो राजैस्तव पुत्रेण चन्विना । नाराचैर्बहुभिः क्षिप्रं बाह्वोःकंसि चार्चितः
 ॥ १९ ॥ सोऽतिविह्वो महोपासस्तोप्रादित इव क्षिपः । नश्यादवांशुसुरो बाणैः प्रेषया
 मास मूरधवे । सारथेभ्यस्तस्य भल्लेन शिरः कापादपाहस्तम् ॥ २० ॥ ततो दुष्योधनो
 राजा पुष्टमारुह्य वाजिनः । अंषाक्रामद्धतरथो नातिदूरमरिन्दम ॥ २१ ॥ हर्षवा तु वृत
 विक्रान्ते स्वमनीक महाबलः । तव पुत्रो महाराज प्रथमो यत्र सीबलः ॥ २२ ॥
 ततो रथेषुभ्रमेणु त्रिसाहस्रा महोद्विषाः । पाण्डवाप्रथिनः पञ्चसमन्तात् पथ्यंवारयद्
 ॥ २३ ॥ ते वृता समरे पञ्च गजानीकेन भारत । अशोभत भरव्य इ प्रहाय्यासा घने

नीकने रथकी सेनासे युद्धकिया । १६ । इसके पीछे क्रीधयुक्त औरवडी सेनासे युक्त
 मारनेको सन्नद्ध धृष्टद्युम्न आपकेपुत्रों के सम्मुखगया । १७ । फिर उस धृष्टद्युम्नके
 आनेपर आपकेपुत्र राजा दुर्योधनने बाणोंके बहुतेस समूहोंको चलाया । १८ ।
 इसके अनन्तर आपके धनुषधारी पुत्र से घायलहुये धृष्टद्युम्न ने शीघ्रकर्म
 गरके हाथसे मंजुहुये नाराच अर्द्धनाराच और बत्सदन्व नाथ बाणों से दोनों युक्त
 और छातीपर घायल किया । १९ । चातुकेत पीडित हार्थिके समान शत्रुन्तं प्रपुन
 उसबड़े धनुषधारीने बाणों से उसके चारोंघोड़ोंको मारडाला और उसके सारथी
 के शिरको भी भल्लकेद्वारा धड़से अलग किया । २० । फिर शशुत्रिनयो राजा
 दुर्योधन रथ टूटनेसे घोड़ेकीही पीठपर चढ़कर थोड़ीहीदूर हटगया । २१ ।
 महाराज फिर आपका बडा बलवान् पुत्र सेनाको पराक्रमसे डिनदेसकर वहाँगया
 जहाँपरकि शकुनीया । २२ । तदनन्तर रथोंके टूटनेपर तीनहजार
 बड़े हाथियोंने पाँचों महारथी पाँचवों को चारोंओर से घेरलिया । २३ । हे

'valiant & ukhandi and Nakul's son Shatanik opposed the car-warriors,
 Engaged Dhrishtadyumn, desirous of slaying and accompanied by a
 large army, opposed your sons. Your son Duryodhan discharged
 many arrows at Dhrishtadyumn Wounded by your valiant son,
 Dhrishtadyumn wounded him in return on the arms and breast, with
 well cleaned arrows. Like a wounded elephant, that great warrior
 slew his four horses and behead d the driver. 20 Prince Duryodhan
 the conqueror of foes, being deprived of his car, retreated on horse
 back. Then your valiant son, seeing the army lose heart, went to
 Shakuni At the breaking down of cars three thousand elephants
 surrounded the five warriors on all sides. Surrounded by the army
 of elephants, the five heroes looked glorious like stars surrounded by
 clouds. Then the good marksman, Arjun, whose white horses were

रिच ॥ २४ ॥ ततोऽर्जुनो महाराज लब्धलक्षो महासुज । विनिर्ययो रथेनैव श्वेताश्व-
 कृष्णसागधि ॥ २५ ॥ तैः समस्तात् परिभूतः कुञ्जरैः पर्वतोपमौ । नाराचैर्विमलैस्तो
 र्भृगंजानिकमपोषयत् ॥ २६ ॥ तत्रैकबाणनिहतमपश्याम मद्रागञ्जाद् । पतिताम् पात्य
 मानाश्च निमिषं च सव्यसाधिता ॥ २७ ॥ भीमसेनस्तु तान दृष्ट्वा नागाभ्रसगजोपम-
 करेण वृष्टा महती गदामध्वद्रवल्ली । अयाप्सुरथ रथात्पूर्णे द्रव्यपोषिरियास्तकः ॥ २८ ॥
 तमुच्यतगद् दृष्ट्वा पाण्डवानां महार्थम् । विभ्रमुस्तापका सैभ्यां शोकमुत्र प्रमुमुक्षु ।
 आशिशेच चर्षे चर्षे गदाहस्ते वृकोदरे ॥ २९ ॥ गदया भीमसेनत म्निनकुम्भाज
 श्वलाम् धावमानावपश्याम कुञ्जराद् पर्वतोपमाद् ॥ ३० ॥ प्रधात्य कुम्भजाले तु
 भीमसेनगदाहताः । पेतुरास्तद्वशं कृत्या छिन्नपक्षादवाप्रयः ॥ ३१ ॥ तान् मित्रकुम्भान्
 सुबहुद् द्रवमाणानिःश्वतः । पतमानास्तु सप्रक्ष्य विभ्रयुस्तथ सैनिकाः ॥ ३२ ॥ युधि
 भरतवंशो युद्धे हाथियों की सेनासे घिरेहुये बड़े पाँचों नरोत्तम ऐसे
 शोभायमान हुये जैसे कि बादलों से घिरेहुये ग्रहहोते हैं । २४ । इसके पीछे
 श्वेत घोड़े और श्रीकृष्णको सारथी रखनेवाला लक्ष्यभेदी महाबाहु अर्जुनरथ की
 कुन्जारी से बाहर निकला । २५ । चारोंओर पर्वताकार हाथियों से घिरेहुये उस
 अर्जुनने निमिष और ताक्षण नाराचों से हाथियों की सेनाका नाशकिया । २६ ।
 महापर्वतमने अर्जुन के एकहा बाणसे बड़े हाथियों को घायल मृतक और गिरता
 हुआ देखा । २७ । फिर मतवाले हाथीके समान पराक्रमी भीमसेन उन हाथियों
 को देखकर गदाको हाथसेलिये हाथियों के सम्मुख गया इसके पीछे दण्ड हाथ से
 रखनेवाले कालक समान शोघरयस कूदकर गदा उठानेवाले उसपाँदियों के
 महारथको देखकर आपकी सेनाके लोग भयभीत हुये और विष्टामुत्र को भी
 गिरायो भीमसेन के गदा हाथ से लेने से सब सेना व्याकुल हुई । २९ । हमने
 भीमसेन की गदा से उन पर्वताकार मदम्हाइनेवाले हाथियों को टूटकुम्भ और
 देहताहुआ देखा । ३० । फिर भीमसेनको गदा से घायल बड़ेहाथी भागे और
 टूटपसाले पर्वतोंके समान शब्द करते पृथ्वीपर गिरपड़े । ३१ । आपकी सेनाकेलोग
 उनहुटे कुम्भ इधर उधर से भागे और गिरते हुये बहुतसे हाथियों को देखकर भय

driven by Buri Krishna, came out in his car and destroyed the huge elephants with his sharp arrows. Then we saw huge elephants wounded, dead and fallen with single arrows of Arjun. Then Bhim-
 sen full of prowess like a mad elephant, seeing those elephants, opposed them with his mace. Seeing the Pandav bearing his mace like the staff of Yam, your warriors were much terrified. All the army was distressed when Bhim took up his mace. Wounded by Bhim's mace, the elephants fled and fell down screaming like winged mountains. 31. Your warriors were terrified to see those elephants wounded and falling down. Enraged Yudhishtir, Nakul and

छिरोपि शक्रुद्धो माद्रीपुत्रो च पाण्डवो । गार्भपुत्रे शितैर्वाणैर्जैस्त्रुर्वं गजयोधिनः ॥ ३३ ॥ घृष्टद्युम्नस्तु समर पराजित्य नराधिपम् । अपक्रान्ते तव सुते हयपुष्टु समाधिने । इष्ट्वा च पाण्डवान् सर्वान् कुजरे परिवारितान् ॥ ३४ ॥ घृष्टद्युम्ना महागज सह सर्वे प्रभद्रके । पुत्र गञ्जालराजस्य जिघातु कुजरात् प्रयः ॥ ३५ ॥ अहृष्ट्वा तु रथानिके दुष्यं धनमरिन्दमम् । अश्वत्थामा कृपाश्रेयः कुतस्मा च सारिवत् । अहृच्छन् क्षत्रियास्तत्र फव तु दुष्यं धनोगतः । ३६ ॥ अश्वत्थामा राजानवृत्तमाने जनक्षय । मवाना निहत तश्च तव पुत्र महारथा । विषण्वदना मुखा गव्यं पृच्छन्त त स्तनम् ॥ ३७ ॥ आइ केचिद्धते मृते प्रयातो यत्र सौवल ॥ ३८ ॥ अपरं त्वमुत्र नत्र क्षत्रिया भूनाश्रुता । दुष्यं धनेन किं क्षार्यं द्रव्यध्व यदि जीवति । युध्वध्व सहिता सर्वे किं वा राजा करिष्यात ॥ ३९ ॥ ते क्षत्रिया क्षतेर्गोत्रैर्हनभूयैष्ठवाक्षवा । शरे सर्पाद्यैर्मानाश्च नातिव्यक्तमिवाश्रुत् ॥ ४० ॥ इदं सर्वं घले हन्मो घेनाश्रुत् कश्चि

भीतदुष्ये । ३२ । क्रोधयुक्त युधिष्ठिर और पांडव नेकुल सहदेवमें भी शूरपंथ से जटिन तीक्ष्ण वाणों से लोगोंकी चमलोकमें पहुंचाया । ३३ । घृष्टद्युम्न युद्धमें राजाको पराजित करके और अश्वकी सेवारी से आपके पुत्रके हृदयाने पर पाण्डवोंको हाथियों से घिरा हुआ देखकर सबप्रभद्रको समेत हाथियों के मारने का अभिनापाहोकर चलदिया । ३४ । और शत्रुविजयी दुष्यं धन की रथोंकी सैन्यमें न देखकर उन अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कुतवर्माने क्षत्रियों से पूछा कि दुष्यं धन कहाँगया । ३५ । अर्थात् मनुष्यों की नाश वर्तमान होनेपर वह आपके पुत्र महारथी राजाको न देखते और मृतकहोना मानते उनधारों ने मुझको रूपांतर करके मृतम आपके पुत्रको पूछा । अकितनेही लोगोंने तो यह कहा कि मारथीके मरनेपर यह वही गया है जहापर कि राजा शकुनी है । तब अत्यन्त घायल दूमेर क्षत्रीवाले कि दुष्यं धन से आपकी क्या काम है देखो जो जीवता है तत्र मिलकर युद्धरों राजा तुम्हारा क्याकरेगा । ४० । जिनकी बहुतसी सवारियां मारी गईं वृक्षत्री घायल अग वाणोंसे पीड़ित बड़े धीरपनेसे रहनाले । ४० ।

Shadev, too, slew the warriors with their arrows fitted with vulture feathers. Having vanquished the king, who retreated on horseback, Dhrishtadyumna saw the Pandvas surrounded by elephants and went on with the Palshaks to slay them. 35. Not seeing Duryodhan the destroyer of loss in the midst of warriors Ashvathama, Kripacharya and Kritvarma asked them of his whereabouts. They thought that his son was dead and with altered appearance asked about him. They were told that he had gone to Shakuni. Others much wounded said "What have you to do with Duryodhan who is living. You must fight to other, what have you to do with the king?" The kshatriyas much wounded and deprived of their horse, and gently, 'Let us slay the army with which we are surrounded

वाग्निः । एते सर्वे गजान् हत्वा उपायान्ति स्म पाण्डयाः ॥ ४१ ॥ श्रुत्वा तु वचनं
 तेषामहवत्यामा महाबलः । मित्रा पाञ्चालराजस्य तदनीकं दुर्योधनम् ॥ ४२ ॥ कृपश्च
 कृतवर्मा च प्रययुश्च सावलः । रथानिकं परियज्य शूराः सुदृढघन्विनः ॥ ४३ ॥ तत
 स्तेषु प्रयातेषु धृष्टद्युम्नपरस्कृताः । आयुः पाण्डया राजन् विनिश्चिन्ततः स्म नाशकांश्च
 ॥ ४४ ॥ हृष्ट्या तु तानापततः संहृष्टान् महारथान् । पराक्रान्तिस्तथा चौराक्षराशो
 जीवितः तथा । विषण्मुल्लभायुष्मभवत्तावकं बलम् ॥ ४५ ॥ पारत्तानवलान् हृष्ट्या
 तानहं परिवारितान् । राजन् वदेन द्रुपद्भ्यो त्यक्त्या जीवितमात्मनः ॥ ४६ ॥ अस्मिन्ना
 पञ्चमोऽयुष्यं पाञ्चालस्य बलनह । तस्मिन् देशे व्यवस्थाप्य यत्र शौरदतः स्थित
 ॥ ४७ ॥ संप्रमुखा वयं पथ किरीटिशरपाण्डिताः । धृष्टद्युम्नं सहानिकं तत्र नोभूद्रणा
 महति । जितास्तेन वयं सर्वे व्यपयाम रणात्ततः ॥ ४८ ॥ अथापस्य सात्वाकिं तमुपा

कि इम ईस सब सेनाको मारे जिससे कि चारोभोरकी घिरेहुये है यह सब पांडव
 हाथियोंको मारकर सम्मुखभाये । ४१ । फिर उन्हों के बचनको सुनकर बड़े
 पराक्रमी अश्वत्थामा कृपानार्य कृतवर्मा यह तीनो कठिनता से सम्मुखनी कि योय
 राजा पांचाल की सेनाको चीरकर बहागये जहाँपर कि शकुनी था अर्थात् यह
 दृढ धनुषधारी शूर रथोंकी सेनाको त्याग करके बहागये है राजा इनके चके
 जानिएर धृष्टद्युम्न को अग्रवर्ती रखनेवाले पांडव आपके शरवीरों को मारतेहुये
 बहा आपहुचे । ४४ । तत्र उन अत्यन्त प्रसन्न आतेहुये महाराथियों को देखकर
 और उत्सप्रकार पराक्रम करनेवाले वीरोंको जानकर आपकी सेना जावन स
 निराश होकर अत्यन्त विषण्मुखवाली हागई । ४५ । है राजा मैं उन नाश
 बान सेनाओं का और चारोभोर से घिरेहुआ का देखकर अपने जीवन का
 त्यागकरके दा अग रखनेवाली सेनासमत । ४६ । उसस्थानपर गया जहाँपर कि
 कृपाचार्य वत्समानथ बहा नियतहोकर अपने शरीरसे पांचवें राजा पांचालकी
 सेना से युद्ध करनेलगा । ४७ । अर्जुनके वाणों से पीड़ामान हमपांचों पीड़ितहुये
 बहा धृष्टद्युम्न से हमारा मझरौद्र और घोरयुद्धहुआ हम सब उससे पराजय होकर

The Pandavas having slain elephants are coming towards us, 41. Kripacharya Ashwathama and Kithvarma rushed through the army of Panhal and went to the place where Shakuni was. At their departure, the Pandavas led by Dhrishadyumna came on slaying your warriors. Seeing these powerful warriors coming towards them in fury, your warriors with altered appearance became hopeless of life and fighting with the Prince. 44. Then I saw Satyaki coming towards us, 45. Then I saw Satyaki coming towards us, 46. Then I saw Satyaki coming towards us, 47. Then I saw Satyaki coming towards us, 48. Then I saw Satyaki coming towards us.

यान्ने महाधम । रथैश्चतुः शतैर्घोरैः माञ्चाङ्गद्वयदाइवे ॥ ४९ ॥ धृष्टद्युम्नावहं
मुक्त कथञ्चिच्छ्रान्तवाहनात् । पतितो माधवाग्रीकं दुःशतीनुरकं यथा । तत्र युद्धं
मभूत्पथेन मुहूर्त्तमतिदारुणम् ॥ ५० ॥ सात्यकिस्तु महाबाहुर्मम इत्वा गरिष्ठलेदम् ।
जीवप्राह्मण्यदनामां मूर्च्छितं पतितं भुवि ॥ ५१ ॥ ततो मुहूर्त्तान्निव तत्रजानीकमवप्यत ।
गदया भीमसेनेन नाराचैरर्जुनेन च ॥ ५२ ॥ प्रतिपिष्टैर्महानागैः सपन्तात् पर्वतोपमे ।
नानिप्रसिद्धेव मति पाण्डवानामत्रायन ॥ ५३ ॥ रथमार्गोस्ताञ्चके भीमसेनो महा
बल । पाण्डवाना महाराज व्यपाकर्षन् महागजान् ॥ ५४ ॥ अश्वत्थामा कृपश्चैव
कृन्वर्मा च सात्त्वतः । अपदपन्नो रथानीक दुःशोधनमरिन्दमम् । राजानं मृगयामा

बहासे इटभाये । ४८ । इसके पीछे मैंने सम्मुख आनेवाले सात्यकि को देखा
बदधीर चारसौ रथियों समेत मेरे सम्मुख दांडा । ४९ । और मैं कुछ थकी सवारी
वाले धृष्टद्युम्न से झूटा और कृतवर्माकी सेनाकी ओर ऐसे दौड़ा जैसे पापी नरक
को जाता है वहांपर एकमुहूर्त्त तक घोरयुद्धरुआ । ५० । फिरमहाबाहु सात्यकिने
मेरे घोड़े आदिको मारकर मुक्त भूचत और पृथ्वीपर गिरेहुये को जीवता पकड़
किया । ५१ । इसके एक मुहूर्त्तमेंहीं भीमसेन की गदा और अर्जुन के नाराचोंसे
वह हाथियों की सेना नाशवानुहुई । ५२ । चारोंओरसे पर्वतोंके समान चूर्णशरीर
वाले बड़े हाथियों से पांडवों का मार्ग अविदितसा होगया । ५३ । हे महाराज
इसके पीछे हाथियों को हटाते बड़े पराक्रमी भीमसेनने पांडवों के रथमार्गको साफ
किया । ५४ । अश्वत्थामा, कृपाचार्य यादव कृतवर्मा रथकी सेनामें उन शत्रु
विजयी दुःशोधनको न देखनेवाले इनमत्र लोगोंने आपके पुत्र महारथी राजा
दुःशोधनको निषेध और खोजकिया । ५५ । और धृष्टद्युम्न को छोड़कर बहागंधे

He rushed against me with four hundred warriors and I left Dhrishtadyumna (whose beasts were tired, I ran towards the army of Kritvarma like a sinful man falling into hell. There a broadful battle was fought for some time 50 Then Satyaki slew my horse. I fell down senseless on the ground and he seized me alive. Then the warriors of our army were destroyed by the arrows of Arjun and by Bhim's mace. The path of the Pandavas was obstructed by the bodies of elephants. Then Bhim dragged aside the elephants and cleared the way for the cars of the Pandavas. Ashwathama, Kripacharya and Kritvarma the Yadav, not seeing Duryodhan in the midst of the warriors, ran on in search of him. They left Dhrishtadyumna and went to the place where Shakuni was. They were much

सुस्तम् पुत्रं महारथम् ॥ ५५ ॥ परित्यज्य च पाण्डुपुत्रेण प्रयाता धत्र सोमलः । राज्ञो
दृशानसन्निधाना वर्त्तमाने जनक्षये ॥ ५६ ॥

इति शाल्यपर्वेऽथ शाल्यवधपर्वणि संकुलपुत्रे पञ्चविंशोऽध्यायः २५ ।

इत्यत्र उवाच । गजानीके हते तस्मिन् पाण्डुपुत्रेण मारते । धर्ममाने भीमसेन
भीमसेन संयुगे ॥ १ ॥ अस्तस्य तथा दृष्ट्वा भीमसेनमस्त्रिमम् । दृष्ट्वा हस्ते यथा
कुक्ष्यगतं प्राणहारिणम् ॥ २ ॥ स्मृत्य समरे राजन् हनशेषाः सुतास्तथ । जहृथ
माने कीरिष्ये पुत्रे दुःखोचने तथ । लोदराः सहिता भूत्वा भीमसेनमुपाद्रवन् ॥ ३ ॥
दुर्मर्षणः श्रुतात्तच्च जने मूर्खिलो रविः । जयत्सेनः सुजातश्च तथा दुर्विषहोऽरिहा
॥ ४ ॥ दुर्विमोक्षनामा च दुःप्रवर्त्तयैव च । धृतरथा च महाबाहुः सर्वं युद्धविशारदाः
जहा परं किं शकुनीया महत्तव मनुष्यो का नाशहोने पर और राजाको न दखने
से व्याकुल हुये ॥ ५६ ॥

अध्याय २६ ॥

सनय बोले कि पाण्डव अर्जुन के हाथसे उस रथकी सेनाके मारने और युद्ध
में भीमसेन के हाथसे सेनाके नाशहोनेपर । १ । और क्रोधयुक्त प्राणों के हरनेवाले
बंडधारी कालके समान घमते शत्रुविजयी भीमसेनको देखकर । २ । मरनेसे शेष
बचेहुये आपकेपुत्र युद्ध में, इकट्ठे होकर अपने बड़ेभाई कीरव दुर्योधन के
दिसाई न देनेपर सब सगेभाई इकट्ठे होकर भीमसेन के सम्मुख गये । ३ । दुर्म-
र्षण, श्रुतान्त, जपत्र, मूर्खिल, रवि जयत्सेन, सुजात, शत्रुहन्ता-दुर्वश, दुर्वि-

distressed to see their army destroyed and at not finding the king there." 56.

CHAPTER XXXVI

Sanjaya said, "At the destruction of the car-warriors by Ar-
jun and Bhim and at the sight of Bhim roaming with his mace like
the staff of Yaw, your remaining sons, coming together and not
seeing Duryodhan among them, opposed Bhim in a body. Durnishan
Shrutant, Jayatra, Bhuribal, Ravi, Jayatsen, Sujat, Durvash the
destroyer of foes, Durvimochan, Duspradhara and bravo Shrutarva,

॥ ५ ॥ इत्येव सहिता भूत्वा तत्र पुत्रा लमन्तवः । भीमसेनममिदुष्य कुरुषुः । सर्वतो दिशम् ॥ ६ ॥ ततो भीमो महाराजं स्वरथं पुनरास्थितम् । सुमोच निशितां च वाणान् पुत्राणां तव मर्मसु ॥ ७ ॥ ते फीर्यमाणा भीमो पुत्रान्स्व महारथे । भीमसेनमपाकर्षत् प्रघणादिषु कुञ्जरम् ॥ ८ ॥ नत क्रुद्धो रणे गीम शिरो दुर्मर्षणस्य ह । क्षुरमेण प्रमथ्य शू पातयामास भाले । ततोऽप्येण मलेने सर्वाघरणभेदिना । श्रुत्वा तसंबंधीर्जी मस्तव पुत्र महारथम् १० ॥ जयस्तेन ततो विद्धः नाराचैन हसन्निव । पातयामास कौरव्य रथोपस्थादिन्दम । स पपात रथाद्राजसू ममो तूर्णं ममार च ॥ ११ ॥ श्रुत्वा च ततो भीम क्रुद्धो निष्पाद्य ते सुत । शनेन गृध्रवाजानां शरणां नृत्तपर्वणाम् ॥ १२ ॥ ततः क्रुद्धो रणे भीमो क्षैत्र भूरिवल रविम् । श्रीनवास्त्रिसिरानेच्छीकृष्याग्निप्रतिमैः शरैः ॥ १३ ॥ ते हत्वा न्यतनू सूमा रन्दनेभ्यो महारथाः । वसन्ते पुष्परावला निकृष्टा इव

मोचन, दुष्पर्वर्ष महाबाहु श्रुतर्वा युद्ध में कुशल इन सब आपके पुत्रों ने साथ ही कर चारों ओर से भीमसेन के सम्मुख जाकर सब दिशाओं से रोका । ६ । हे महाराज तब तो भीमसेन फिर अपने रथपर सवारहुये और आपके पुत्रों के मर्म स्थलोंपर तेजघारवाले वाणोंको मारा । ७ । वड़ेयुद्ध में भीमसेनके हाथसे घायल बन आपके पुत्रोंने भीमसेनको ऐसे घेरलिया जैसे कि नक्षेत्रान से हाथी को घेरलेते हैं । ८ । तदनन्तर क्रोधयुक्त भीमसेन ने दुर्मर्षण के शिर को क्षुरम से काटकर शीघ्र ही पृथ्वीपर गिराया फिर भीमसेन ने सब कवचों के काटनेवाले दूमेरे भ्रूलसे आपके पुत्र महारथी श्रुतान्तक्रोमाग । १० । फिर हँसतेहुये शत्रु विजयोने जयस्तेनको नाराच से घायल करके उस कौरवको भी रथके स्थानसे गिराया हे राजा वह शीघ्र ही रथसे गिरतेही मरगया । ११ । इसकेपीछे आपके पुत्र क्रोधयुक्त श्रुतर्वांने गृध्रपक्षसे जटित टेढ़े पर्ववाले सीवाणों से भीमसेन को घायल किया । १२ । इसके पीछे युद्धमें क्रोधयुक्त भीमसेन ने विष अग्निके समान तीनवाणों से जयत्र भूरिवल और रवि इन तीनोंको घायल किया । १३ । वह सुतक

all these, clever in fighting, checked Bhim from all sides. 6- Then Bhim again mounted his car and hit your sons on the vital parts. Wounded by Bhim's arrow your sons surrounded him like an elephant. Then Bhim cut Durnarshan's head with a sharp arrow, and with another armour piercing dart, he slew Shrutant. 10 That destroyer of foes, with a smile, wounded Jayatsna with an arrow and made him fall down from his car. He soon fell down dead from his car. Then your son Shrutarwa, much enraged, wounded Bhim with a hundred sharp arrows. Enraged Bhim wounded Jayatsna, Bhurisval, and Ravi with three arrows like poison or fire, and they fell down from their cars like blooming kinshuk trees felled in spring. Then Bhim the destroyer of foes wounded and slew Duryodhana.

किंशुका ॥ १४ ॥ ततोपरो जे नरानेन परानपः दुर्विभोचनमाहस्य प्रथयामान
 मृत्यवे ॥ १५ ॥ स हत प्रापतश्चो स्वरथाद्रधिनाम्पर । गिरेस्तु कटजो जग्ना माह
 तेनेव वात्प ॥ १६ ॥ दुष्प्रघर्षं ततश्चैव सुजानश्च सुतो तत्र । एकैः न्यवधीत् सक्ये
 द्वाभ्यां द्वाभ्याश्चसमुज्ज । तो शिलीमुखविश्राद्रौ पतत् रथसत्तमा । १७ ॥ नत पतन्त
 मपरमिबीस्य सुनतधामवलेन प्रतिविश्याद्य भीमा दुर्विषह रणे । सपपात हतो वाहात्
 पश्यतो सर्वधौग्विनाम ॥ १८ ॥ दृष्ट्वा तु निहतात् श्रान्तं बहूनेकेन संयुग । अमथव
 शमापन्न श्रुत्वा भीममश्रुवात् ॥ १९ ॥ विक्षिपन् सुमहच्छाप कांसस्वरविपिनम् ।
 चिञ्चन्न सापकांश्च विषाग्निं प्रतिमान् चहूत् । २० ॥ स तु राजन् धनुर्दिशत्पा
 पाण्डरथ महाभृशे । अपैन छिन्नवन्वान बिशत्या समधाकिरत् ॥ २१ ॥ ततोऽ यञ्जन्
 रादाय भीमसेनो महारथ अथाकिरत् । सुन तिष्ठ तिष्ठति चाबधीत् ॥ २२ ॥ महदा

महाराथीरथोने ऐमे गिरपडे जैसे कि वसन्तऋतु में कटहुये प्राप्यत किशुक क वृक्ष
 गिरते हैं । १४ । इसके पीछे शत्रुसंतःपी भीमसेन ने दूसरे मल्लनाम नाराच से
 दुर्विभोचन को घायल करके मृत्युके वशकिया । १५ । वह महाराथी मृतक होकर
 रथसे ऐसे गिरपडा जैसे कि पर्वनपर उत्पन्न होनेवाला वायु से दृढाहुआ वृक्ष
 गिरताई । १६ । इसके पीछे सेनाके मुत्तपर दुष्प्रघर्ष और सुजातनाम आपके पुत्रोंको
 युद्धमें दोर बाणसे मारा वह उत्तमरथी शिलीमुख बाण से घायल शरीर होकर
 पृथ्वीपर गिरपड़े । १७ । इसके पीछे भीमसेन ने युद्धभूम में गिरते हुये आपके
 पुत्रको देखकर दुर्विभोचनो भी भयसे युद्धभोगिराया वह मराहुआ सब धनुष
 शरिणों के दैवने रथसे गिरपडा । १८ । युद्धमें एक के हाथमे मरेहुये बहुत भाइयों
 को देखकर क्रोधमें मराहुआ श्रुतर्वा भीमसेनके सम्मुख गया । १९ । सुवर्णसे
 अलङ्कृत बड़े धनुषको टकारता विष अग्निके समान बहुत बाणों को छोड़ता हुआ
 गया । २० । हे राजा इसने उम बड़े युद्धमें भीमसेन के धनुषको काटकर इसदूटे
 धनुषवाले को बीस बाणसे घायल किया । २१ । इसके पीछे महाराथी भीमसेनने दूसरे
 धनुषको लेकर आपके पुत्रको घायल करके तिष्ठरथचन कहा । २२ । उत दोनों

mochan with another dart. 15 That warrior fell down dead from
 his car like a tree struck down by the wind from a hill Then he
 slew your sons Dashpradhharsh and Sujat and those good warriors
 fell down wounded on earth Seeing them fall down, Bhim slew
 Durvishah, who fell down from his car in the presence of archers
 Seeing many brothers slain by one, Shrutarva opposed Bhim in a
 rage Twanging his huge bow and discharging numerous arrows
 like poison or fire he went before him. 20 He cut Bhim's bow and
 wounded him with twenty arrows. Valiant Bhim took up an the bow
 and wounded your son with a cry of 'stay, stay.' The battle between
 them was like that of Jambh and Indra There they covered the sky

सोतय युद्धं चित्ररूपं भुयानकम् । यादश्च समरं पूर्वं जग्मवान्मवयुर्धिमो ॥ २३ ॥
 तयोश्चतस्र शरैर्मृक्तयर्मदण्डनिभैः शितैः । सुभाच्युष्मा धरा सर्वा खड्ग स्रष्टा विश
 स्तथा ॥ २४ ॥ ततः श्रुतवां सकुड्रो घनुरादाय स यकः । भीमसेनं रण राजन् बाहवो
 कुरासि चापयत् ॥ २५ ॥ सांतिरिद्धोमहाराज तव पुत्रेण धिक्विता । भीमः संचुक्षुमे
 क्षुब्धः पर्वणीव महोदधिः ॥ २६ ॥ ततो भीमो रुषाविष्टः पुत्रस्य तव मारिव । सारथि
 चतुरश्चाश्वात्तं वाणनिष्ठे यमक्षयम् ॥ २७ ॥ निरयं तं समालक्ष्य विशिखैर्लोमवारिभः
 अयाकिरदमेयाभ्या दशयन् पाणिलाघवम् ॥ २८ ॥ श्रुतवां विरथो राजभ्रातृदे खड्गख
 मणो । अथ स्याददत्त खड्ग शतचन्द्रश्च भरवृमत् । शूरप्रेण शिरः कायात् पातया
 मास पाण्डवः ॥ २९ ॥ छिन्नोचमाद्भस्य ततः क्षुभ्रेण महात्मनः । पपात कायः स रथा
 द्रसमनुनादयन् । ३० ॥ तस्मिन् निपतिते धीरे तावकाभयमोहिता । नश्यद्भवत्

का महा अपूर्व और भयकारी युद्ध ऐसा शोभायमान हुआ जैसा कि पूर्वसंयोग
में जम् और इन्द्रका युद्ध शोभित हुआ था । २३ । वहाँ उन दोनों के यमराज
के दण्डके समान तेजवाणों से सब पृथ्वी आकाश और दिशा विदिशा ढंक
गई । २४ । हे राजा इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त श्रुतवर्नि घनुपको लेकर युद्धमें
शायको से भीमसेनको दोनों भुजाओं समेत छातीपर घायल किया । २५ । हे महा
राज आपके धनुषवारी पुत्रके हाथमें अत्यन्त घायल होकर क्रोधयुक्त वह भीमसेन
ऐसे बेगमें प्रातहोगया जैसे कि पर्वकाल में समुद्र बेगवान् होता है । २६ ।
हे श्रेष्ठ इसके पीछे क्रोधसे पूर्ण भीमसेन ने वाणों से आपके पुत्रके सारथी और
चारोंघोड़ों को यमलोक में पहुँचाया । २७ । हस्तलाघव को दिखाने हुये बड़े
साहसी भीमसेनने उसको विरग्यदेखकर विशिखों से ढकदिया । २८ । हे राजा रथसे उठित
श्रुतवर्नि खड्ग और ढालकोलिपों फिर खड्ग और सौ चन्द्रमार् रत्ननेवाली मका
शित ढालके धारण करनेवाले इस श्रुतवर्कके शिरको भी भीमसेनने शूरमकेद्वारा
शरीरसे जुदाकरादिया । २९ । तब उसका शरीरभी पृथ्वी को शब्दीयमान करता
रथसे गिरपड़ा । ३० । उसवीरके गिरनेपर भयसे अचेत युद्धके अभिलाषी आप

and directions with their darts like the staff of Yam. Then Saratary &
much enraged wounded Bhim on both arms and breast. 25. Exc-ed
ingly wounded by your son; Bhim became furious like the sea at
full moon. They slow your son's horses and driver and covered him
with his sharp arrows. Deprived of car, Shrutarva took shield and
sword, but Bhim cut his head also with an arrow and it fell down on
earth with a crash. 30. At the fall of that warrior, your soldiers
insensible with fear and desirous of fighting, faced Blum. He checked
the army, advancing like the ocean and armed with arm+ and armour
and they surrounded him on all sides. Then Blum, surrounded by
them, wounded them with his sharp arrows as Indra does asurs. Then

संप्राप्ते भीमसेन युयुत्सवः ॥ ३१ ॥ तानापतत एवाशु हतशपाह्वलार्णवान् । दशत
 प्रतिजग्राह भीमसेन प्रतापवान् । ते तु तं वै समासाद्य परिधनुः समन्ततः ॥ ३२ ॥
 ततस्तु संबृतो भीमस्त्वावकानि शित शरः । पीडयामास तान् सवान् महस्त्राक्ष इवासु
 रान् ॥ ३३ ॥ ततः पञ्च शतान् हत्वा संवृक्यात् महारथान् । जघान कुञ्जरानिकं
 पुनः सप्तशतं युधि ॥ ३४ ॥ हत्वा दशसहस्राणि पत्नीतां परमेधुभिः । घात्रिनाञ्च
 शताव्यष्टौ पाण्डव स विराजते ॥ ३५ ॥ भीमसेनस्तु कौन्तेयो हत्वा युद्धे सुतांस्तव ।
 मेने कृतायमात्मानं ह्यसफलं जन्म स्व पशो ॥ ३६ ॥ ते तथा युध्यमानं वै त्वनिघ्नन्तश्च
 तावकान् । श्क्षितुं नोरसहन्त स्म तव सैन्यानि मारिष्य ॥ ३७ ॥ विद्राव्य तु कुरु
 सबांस्तान्श्च हत्वा पदानुगात् । दोष्यां शब्दं ततश्च के आसयानो महाद्विषान् ॥ ३८ ॥
 दत्तभयिष्ठयोधानुदव सेना विशास्यते । किञ्चिच्च उपा महाराज कृपणा समपच्य ॥ ३९ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यवधपर्वणि दुर्मर्षणादिवधे पट्विंशोऽध्यायः २६ ॥

के शूरवीर लोग युद्धमें भीमसेनके सम्मुखगये । ३१ । मरनेसे शेषवचिहुई समुद्र के
 समान शीघ्र आनेवाली सेनाकेकवच शस्त्रधारी शूरवीरोंको प्रतापवान भीमसेन
 ने शीघ्रही रोका उन्होंनेभी उसको पाकर चारोंओरसे घेर लिया । ३२ । इसके
 पीछे विरहूय भीमसेनने आपके उन सवशूरवीरों को तीक्ष्णधारवाल बाणों से ऐसे
 पीडामान किया जैसे कि अमुराको इन्द्र पीडावान करता है । ३३ । इसके पीछे
 युद्धमें पांचसौ कवचधारी महारथियों को मारकर फिर सातसौ हाथियोंकी सेना
 को मारा । ३४ । वह श्रेष्ठ भीमसेन बाणोंसे दशहजार पत्नीयां और आठसौ घोडों
 को मारकर शोभायमान हुआ । ३५ । हे प्रभु कुन्तीके पुत्र भीमसेनने आपके पुत्रों
 को मारकर अपने को अभीष्ट प्राप्त करनेवाला और सफलजन्मवाला माना । ३६ ।
 हे श्रेष्ठ आपकी सेनाके लोगोंने उसप्रकार युद्ध करनेवाले और आपके शराके
 मारनेवाले उस भीमसेनके देखनेको उत्साह नहीं किया । ३७ । फिर सव कार्योंको
 भंगकर और उन पीछे चलनेवालोंको मारकर वड़े हाथियों के डरानेवासेने बड़े
 भुजाओं से शब्द किया । ३८ । हेमहाराज राजा धृतराष्ट्र फिर आपकी सेना जिस
 के कि बहुतसे शूरवीर मारेगये वह कुद्वेष और दुखी भ्रूकर चर्त्तमानहुये । ३९ ।

slaying five hundred warriors in battle, he put seven hundred
 elephants to death Having slain ten thousand foot and eight
 hundred horse, he looked glorious 35 Having slain your sons, Bhim,
 thought that the desire of his heart was accomplished. Your warriors
 durst not oppose him the slayer of your sons. Having routed the
 Kauravas and slain their followers, Bhim the terror of elephants made
 a noise with the beating of his arms Then O king, your army, of
 which great warriors were slain and few only remained, stood dejected
 and distressed." 36

सञ्जय उवाच । दुर्योधनो महाराज सुदर्शश्चापि ते सुतः । इतश्चापौ तथा संख्ये
वाजिमध्ये व्यवस्थितौ ॥ १ ॥ ततो दुर्योधने दृष्ट्वा धाजिमध्ये दंडवस्थितम् । उवाच
देवकीपुत्र कुन्तीपुत्रं घनमश्रयम् ॥ २ ॥ शत्रवो इतस्त्रयिष्ठा प्रातयः परिपालिताः ।
गृहीत्वा सञ्जयस्त्वाप्तौ निवृत्त शितिपुङ्गवः ॥ ३ ॥ परिश्रान्तश्च नकुल सहदेवश्च
भारत । योद्धयित्वा रणे पापान् धार्तराष्ट्रान् महाभाग ॥ ४ ॥ दुर्योधनममित्यजय
त्रय ए । व्यवस्थिता । कृपश्च कृत्वा च द्रौणिश्चैव महारथः ॥ ५ ॥ असौ तिष्ठति
पांश्चाक्षयः धिया परमया युतः । दुर्योधनवत् हत्वा सह सर्वे प्रमद्वके ॥ ६ ॥ असौ
दुर्योधनं पार्थ वाजिमध्ये व्यवस्थित । छत्रेण ध्रियमणैः प्रेक्षमाणो मुहुर्भुङ्क्ते ॥ ७ ॥
प्रतिव्यूहं वर्तते सर्वे रणमध्ये व्यवस्थित । एते हत्वा शिनेर्वाणे कृत्वा कृतयो भविष्यति
॥ ८ ॥ गर्जनीकं हतं दृष्ट्वा रवाञ्च प्राप्तमरिन्दमम् । यावन् विद्रंश्येते तावज्जाहि

अध्याय २० ॥

संजय बोले हे महाराज तब मनेसे शेषवेषुये आपके पुत्र दुर्योधन और
सुदर्श युद्धमें घोड़ों के मध्यवर्ती होकर वर्तमानहूये । १। इसके पीछे देवकीनन्दन
भीष्मपुत्री घोड़ोंके मध्य में दुर्योधन को देखकर कुन्तीके पुत्र अर्जुन से बोले । २।
कि शत्रु बहुत नाशयुक्तहूये और जातबाले हटायेगये ; और यह सारथिक सञ्जय
कोपकड़कर लौटाये । भरतवंशी नकुल और सहदेव धृतराष्ट्रकपायी पुत्रों और उनके
सब साथियोंसे छड़तेरथकगये । ३। और कृपाचार्य कृतवर्मा और महारथी अश्व
त्यामा यह तीनों दुर्योधन को त्यागकरके नियतहूये । ४। वही शोभासे युक्त यह
पृष्टुधुम्न दुर्योधनकी सेनाको मारकर सबप्रमदकों समेत नियत है । ५। हे राजा
शिरपर धारण कियेहुये छत्र समेत बारम्बार देखता हुआ यह दुर्योधन घोड़ों के
मध्यवर्ती । ६। सब सेनाको असेकृत करके युद्ध भूमिमें उपस्थित होकर नियत है
इसको तीक्ष्ण बाणों से मारकर कृतकृत्य होजायगा । ७। रथकी सेनाको युक्त
और तुझ शत्रुविजयी को वर्तमान देखकर जबतक यह लोग नहींभागें तबतक इस

CHAPTER XXVII,

Sanjaya said, "Then your remaining sons Duryodhan and Sudarshan, with their horsemen, stood in the field of battle. Then Shri Krishna the son of Devaki, seeing Duryodhan in the midst of horsemen, said to Arjun, "Many enemies are destroyed and put to flight. Satyaki has brought Sanjaya a captive. Nakul and Sahadev are tired of fighting with the sons of Dhritrashtra and their followers and Kripacharya, Kritvarma and Ashwathama have left Duryodhan. Having destroyed Duryodhan's army, Dhrishtadyumna stands with the Prabhedaks. 6 Under the shade of an umbrella Duryodhan stands among horsemen throwing sidelong glances. Slay him with your sharp arrows to accomplish your purpose. Slay them before they run away at your sight and the

सुयोधनश्च ॥ ९ ॥ यानु कश्चिन् पाउचाल्ये क्षिप्रमागम्यतामिति । परिभ्रान्तबलस्तात
 नैव मुक्येत किलिबधो ॥ १० ॥ तव हत्वा बलं सर्वं संग्रामे धृतराष्ट्रजः । जितान् पांडु
 सुतांश्च मत्वा रूपं धारयते महत् ॥ ११ ॥ निहतं श्वघ्नं ले मत्वा पीडितश्चापि पांडवैः ।
 ध्रुवमेभ्यति संग्रामे वधायै धारमनो नृपः । एवमुक्ताः फाल्गुनस्तु कृष्णं वचनमब्रवीत् ॥
 १२ ॥ धृतराष्ट्रमुक्ताः सर्वे हता भीमेन मानद । पावेताथास्थितोकृष्ण तापय म मधि
 ष्यतः ॥ १३ ॥ हतो मांसो हतो द्रोण कर्णो वृक्षर्त्तनो हतः । मद्रराजो हतः शक्यो हतः
 कृष्ण कवचप्रथः ॥ १४ ॥ हयाः पञ्चशता शिष्टाः शकुने सौवल्स्य च । रथानाञ्च शते
 शिष्टे द्वे एव तु कर्नाईन । दग्निनाश्च शते मांसं त्रिसाइह्याः पदातयः ॥ १५ ॥
 अश्वरथानां कृपाश्चैव त्रिगुणाधिपतिस्तथा । उलूकः शकुनिश्चैव कृतवर्मा च सारथवः
 ॥ १६ ॥ पतङ्गलमभूच्छेषं घातांग्णस्य माघव । मोक्षो न नूनं कालादि विद्यते सुवि

दुर्घोर्धनकी मारे १२ । कोई धृष्टद्युम्न के पास जाकर उसको जल्दीसे लंबे जयदत्त
 वह नहीं आवेगा तबतक यह थकी हुई सेनावाला पापी नहीं छूटेगा १० । धृतराष्ट्र
 का पुत्र युद्धमें आपकी सघसेवाको मारकर पांडवोंको विजय किया हुआ मानकर
 बड़े रूपको धारण करता है ११ । वह राजा पांडवोंके हाथसे अपनी सेनाको
 मरा हुआ और पीड़ावान् देखकर युद्धमें अपने मरनेके लिये अवश्य वर्त्तमान होगा
 यह वचन सुनकर अर्जुन ने श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा । १२ । किं धृत्
 राष्ट्रके सब पुत्र भीमसेनही के हाथमे मारेगये हैं हे श्रीकृष्णजी जो यह दोनों
 नियत हैं वह अब नहीं रहेंगे अर्थात् मारेजायेंगे १३ । भीष्मजी मारेगये, द्रोणाचार्य
 मारेगये और इसीप्रकार कुंडल कवचका दान करनेवाला कर्णभी मारा गया, राजा
 शल्य और जयद्रथ मारा गया हे श्रीकृष्णजी सौवल्के पुत्र शकुनी के सभी पाँचसौ
 घोड़े श्व रहगये हैं हे जनार्दनजी उसके सौ रथ कुछ ऊपर सौ हाथी और तीन
 हजार पदाती शेष रहे हैं । १५ । अश्वत्थामा कृपाचार्य राजा त्रिगुणउलूक
 शकुनी और यादव कृतवर्मा । १६ । हे माघव इतनी दुर्योधन की सेना बाकी है

destruction of their army. Some one must be sent for Dhrishtadyumna,
 for Duryodhan, whose army is tired, will not be slain without his
 help. 10. Duryodhan expects to conquer him by slaying your
 army; but seeing all his army destroyed he will be prepared to fight."
 At this Arjuni said to Krishna, "All the sons of Dhritraashtra have
 been destroyed by Bhim and those two who remain out of the whole
 lot will meet their death in the same manner. Bhishm, Drona and
 Karan have already been slain as well as Shalya and Jayadrath.
 Five hundred horsemen remain with Shakuni. He has more than a
 hundred cars, as many elephants, with three thousand foot. 15.
 Ashwathama, Kripacharya, the king of Trigart, Uluk, Shakuni and
 Kriyadana the Yadav are the remnants of Duryodhan's warriors.

कस्यचित् ॥ १७ ॥ तथा विनिहतैः सैन्ये पश्य दुर्योधने स्थितम् । अद्याहनि महाराजो
 इतामित्रो भविष्यति । न हि मे मोक्षयते कश्चित् परेषामिति चिन्तये ॥ १८ ॥ यत्त्वद्य
 समटं कृष्णं न हास्यन्ति रणोत्कटाः । तान् वै सर्वान् हनिष्यामि यद्यपि स्युरमानुषाः
 ॥ १९ ॥ अद्य युद्धे सुक्ष्मकृश्या दीर्घं रात्रः प्रजागरम् । अपनश्यामि गान्धारं पातयिष्या
 शितैः शरैः ॥ २० ॥ निकृश्यामि दुराचारो यानि रत्नानि सोमलः । समापामहर्घत
 पुनस्तान्याहराम्यहम् ॥ २१ ॥ अद्य ता अपि घत्स्यन्ति सर्वा नामपुरास्त्रियः । श्रुत्वा
 पत्नीञ्च पुत्राञ्च पाण्डवेनिहतान् युधि ॥ २२ ॥ समाप्तमद्य वै कर्म सर्वं कृष्णं भविष्यति
 अद्य दुर्योधनो दीप्तो भियं प्राणोश्च त्वक्षयति ॥ २३ ॥ नापयानि भयात् कृष्णं सप्रा
 माद्य चन्मम । निहतं विद्धि घाष्णेय घात्तराष्ट्रे सुघालिशम् ॥ २४ ॥ मम हितदशकं
 वै घाजिघृन्दमरिन्दम- सोढुं ज्वातलनिर्घोषं दाहि यावन्निहन्म्यहम् ॥ २५ ॥ एवमु

निश्चयकरके पृथ्वीपर कालसे किसीको यचना नहीं है । १७ । इसीप्रकार सेनाके
 परनेपर दुर्योधन को नियत देखो महाराज युधिष्ठिर आजके दिन मृतक शत्रु
 वालाहोगा शत्रुओं में मेरे हाथसे कोई नहीं बचकर जाता है यह विचारकर हे
 श्रीकृष्णजी आजके दिन जो यह पदोत्कट लोग युद्ध त्याग नहीं करगे तो
 निश्चय करके चाहै इन में मनुष्यों के विशेष देवता आदिक भी होंगे तभी इन
 सबको मारुंगा । १९ । अब युद्धमें अत्यन्त क्रोधयुक्त होकर मैं तेजवाप्राप्ति शकुनी
 को मारकर राजा युधिष्ठिर के बड़े जागरण को दूर करुंगा । २० । निश्चय करके
 दुराचारी शकुनी के छलसे निज रत्नोंको सभामें छूतके मध्य में लिखा है मैं फिर
 उनको लूंगा । २१ । अब हास्तिनापुरकी सब बियांभी युद्धमें पांडवों के हाथ से
 मारे हुये अपने पति और पुत्रों को जानेंगी । २२ । हे श्रीकृष्णजी अबही निश्चय
 करके सबकार्य पूराहोगा अब दुर्योधन अपनी मकाशित लक्ष्मी सपेत प्राणों
 को भी त्याग करेगा । २३ । जबकि वह भयभीतताके कारण मेरे युद्ध से नहीं
 हटता है हे श्रीकृष्णजी वडे मझानी दुर्योधन को आप मृतकही जानो । २४ । हे
 शत्रुओं के विजय करनेवाले यह घोड़ों के समूह मेरी प्रत्यञ्चा और तलके शब्दों
 के सहने को असमर्थ है आप चलिये मैं जवतक इन्हींको मारूं । २५ । हे राजा

Surely none can escape Death on earth. Duryodhan is standing in spite
 of the great loss. Prince Yudhishtir is sure to be without an enemy
 to day. None of the enemies shall escape from me. If these warriors
 do not leave the field of battle to day, they shall be slain even if they
 have gods among them. I shall now slay Shakuni with my sharp
 arrows and dispel the nightmare of Yudhishtir. 20 I shall take
 back from Shakuni, the jewels which he took away from Yudhishtir
 in gambling. The women of Hastinapur will hear of the death of
 their husbands and sons. Surely, all our work will be accomplished
 to day. Duryodhan will lose his brilliant gold with his life. If he

कस्तु दायाह पाण्डवन मनभिवना । अचोद्गुह्यपात्राजन् दुष्योधनवल प्रातः ॥ २६ ॥
 तदनीकमभिप्रेक्ष्य त्रय सज्जा महारथा । भीमसेनोऽर्जुनश्चैव सहदेवश्च मारिषः ।
 प्रययुः सिंहादाने दुर्योधनजिघासया । २७ ॥ तान् प्रेक्ष्य सहितान् सर्वान् जघेनोप
 तफामुर्कान् । सोपावलोभ्यद्रवयुसे पाण्डवानाततायिन ॥ २८ ॥ सुदर्शनस्तथ सुता
 भीमसन ममभ्यदात् । सुशर्मा शकुनिश्चैव युयुचाते किरिटिना । सहदेव तव सुता
 ह्ययपृष्ठगतोऽपयात् ॥ २९ ॥ ततो हि यत्नत क्षिप्र तव पुत्रो जनाधिप । प्रासेनं सह
 वस्य शिरसि प्राहस्तुशाम् ॥ ३० ॥ सोपाविशद्रयोपस्थ तव पुत्रेण ताडित । रुधिरप्लु
 तसर्वाद् आसाविष इव इवसत् ॥ ३१ ॥ प्रतिलभ्य तत सहा सहदेवो विशम्पत ।
 दुर्योधन शरणीक्षणे सुदृढ समवाकिरत् ॥ ३२ ॥ पायोपि युधि विक्रम्य कृतीपुत्रो
 वह साहनी अर्जुन के इमपकार वचनो को सुनकर श्रीकृष्णजी ने घोड़े को
 दुर्योधन की सेनामें चनायमान किया २८ हे भेट्ट उस मेनाको देखकर तीनों
 कारव और शस्त्र धारण करनेवाले महारथी भीमसेन अर्जुन और सहदेव सिंहा
 नादाँ समा दुर्योधन के मारनेको इच्छासे चले ॥ २७ ॥ शकुनी तावता पूर्वक
 सब साथ मिलेहुये उन धनुषों के उठानेवालोंको देखकर युद्धमें मारनेका अभि
 लाषी होकर घोड़ों के सम्मुख गया ॥ २८ ॥ आपका पुत्र सुदर्शन भीमसेन
 के सम्मुख गया सुशर्मा और शकुनी अर्जुन के साथ युद्ध करनेलगा घोड़े
 की पीठपर सवार आपका पुत्र दुर्योधन सहदेव के सम्मुख गया ॥ २९ ॥ हेराजा फिर
 आपके पुत्रने शिघ्रही उपाय पूवक माससे सहदेव के शिरपर कठिन महार किया
 ॥ ३० ॥ आपके पुत्रसे घायल वह सहदेव रथके धैर्यके स्थानपर रुधिरसे लिप्त
 शरीर और त्रिपेते सर्पकी समान झासलेता गिरपडा ॥ ३१ ॥ हे राजा घोड़े देर
 पीछे सहदेवने सचेतताको पाकर वडे क्रोधयुक्त ने तेजवाणों से दुर्योधनको घायल
 किया ॥ ३२ ॥ कृतीके पुत्र अर्जुनने भी युद्धमें पराक्रम करके शूरों के शिरों को

does not run away with fear from my presence he is sure to lose his
 life. 'The horse man can not bear the sounds of my bowstring. Let
 us go and slay them' 25 Having heard the words of brave Arjun,
 Sri Krishna drove his horses into the army of Duryodhan. Seeing that
 army, the three warriors, Bhim, Arjun and Sahadev, equipped with
 arms and armour, went on to slay Duryodhan. Seeing the advance
 of those warriors Shakuni opposed them. Your son Sudarshan
 opposed Bhim and Arjun fought with Susharma and Shakuni. Duryo
 dhan, on his seback, opposed Sahadev and hit him hard on the head
 30 Wounded and bleeding with your son's blow Sahadev sat on
 his cat and fell down sighing like a venomous serpent. He regained
 consciousness in a short time and wounded Duryodhan with sharp
 arrows. Arjun showed his prowess by cutting off the heads of the

यन्त्रयः । शूराणामवपृष्टद्वेष्यः शिर्षासि निचकसीह ॥ ३३ ॥ तदनीकं तदा पाथो ब्रह्म
 मद्रुभिः शरैः । पातयित्वा हयान् सतींस्त्रिगर्तानां रथान् पथो ॥ ३४ ॥ ततस्ते कश्चित्ता
 भूत्वा त्रिगर्तानां महारथाः । अर्जुनं वासुदेवश्च शरैर्धरवाकिरत् ॥ ३५ ॥ सत्यकर्मा
 पामासिष्य क्षुरप्रेण महायशाः । ततोऽस्य स्यन्दनस्यशां चिच्छिदे पावहुनन्दनः ॥ ३६ ॥
 शिलाशितेन च विमो क्षुरप्रेण महायशाः । शिरश्चिच्छेद प्रहसंस्ततः कान्तनभूषणम्
 ॥ ३७ ॥ सत्येषुमथ चाक्ष योधनां भिषतां ततः । यथा सिंहो घने राजन् मृगं परिक्रुम्
 क्षतः । ३८ ॥ तं निहत्य ततः पार्थः सुशर्माणं त्रिमिः शरैः । विट्वा तानहनत् सर्वा
 प्रथान्कमविभूषितान् ॥ ३९ ॥ ततः प्रायास्वरत् पाथो दीर्घकालं सुसंभृतम् । मुञ्चन्
 क्रोधविषं तीक्ष्णं प्रस्थलाधिपतिं प्रति ॥ ४० ॥ तमर्जुनः पृथक्कानां शतेन भरतर्षभ !
 प्रवित्वा ततो धाद्दानइतस्तस्य चन्विनः ॥ ४१ ॥ ततः शरं समाधाय यमदण्डोपमं

घोड़ोंकी पीठपर काटकर उससेनाको तीक्ष्णधारवाले बाणोंसे छिन्नभिन्न किया इस
 प्रकार से वह सब घोड़ोंको गिराकर त्रिगर्तदेशी रथियों के सम्मुख गया । ३४ ।
 तब उन त्रिगर्तदेशियों के रथियों ने इकट्ठे होकर अर्जुन और वासुदेवजी का
 बाणों की वर्षाओं से ढक दिया । ३५ । फिर बड़े यशस्वीने क्षत्रपसे सत्यकर्माको
 गिराकर उसके रथके ईशाको तेजधार क्षुरपसे काटा । ३६ । और अकस्मात्सही
 घुबर्ण के कुण्डलोंसे अलंकृत शिरको भी काटा तब वह आपके शूस्तीरों के देखते
 हुये युद्धमें गिरपड़ा । ३७ । हे राजा जिसप्रकार बनें भूत्वा सिद्धमगको, पारनादे
 उसी प्रकार अर्जुनने उसको मारकर तीनबाणों से मुशर्मा को घायल करके । ३८
 सुवर्ण के भूषणों से अलंकृत उन सब रथियों को मारा । ३९ । इसके पीछे बहुत
 कालसे इकट्ठे कियेहुये क्रोधके विषको छोड़ना अर्जुन उसमस्थलके राजाके सम्मुख
 दौड़ा । ४० । हे भरतर्षभ अर्जुनने उसको सौ पृथक्कोंसे घायन करके उत्पन्नपुषपारी के
 घोड़ोंको मारा । ४१ । इसके पीछे हँसतेहुये अर्जुनने यमराज के दण्ड के समान
 बाणको बढ़ाकर मुशर्माको लक्ष्य बनाकर शीघ्रतासे छोड़ा उस क्रोधवृक्षपुषपारी

car-warriors and routing your army with his sharp arrows. Having slain the horsemen, he opposed the warriors of Trigart. They covered Arjun and Vasudev with the shower of their arrows. 35. Then he slew Satyakarma with a sharp arrow and cut down the parts of his car. His head adorned with ear-rings soon fell down in the presence of your warriors. Having slain him as a hungry lion does a deer, Arjun wounded Susharma with three arrows and slew the warriors decked with gold ornaments. Dropping the poison of his long pent up anger, Arjun opposed the king of Prasthal and having wounded him with a hundred arrows, slew his horses too 40. Then Arjun with a smile, having put to his bow a sharp arrow, discharged it at Susharma. The arrow discharged by that enraged warrior, pierced

परम् । स्वशर्मणे समुद्दिश्य विश्रेपाशु हसन्निव ॥ ४२ ॥ स्वशरः प्रेषितस्तेन क्रोध
 दासते भविष्यात् सुशर्मणे सर्गलोप्य पिभेव हृदयं रणे ॥ ४३ ॥ स गतासुमहाराज
 योर्वीरैः परीतोऽसौ । नन्दयन् पाण्डवान् सर्वान् व्यथयेन्नोपि तावकान् ॥ ४४ ॥ सुशर्मणं
 रणे हत्वा पुत्रानस्य महाराजम् । सप्त चाष्टौ च त्रिंशच्च शायकैरनियतं क्षयम् ॥ ४५ ॥
 ततोऽथ निशिर्वाणैः सर्वान् हत्वा पदानुगात् । अभयपद्मार्तरां सेनां हतशेषा महा
 रथ ॥ ४६ ॥ भीमस्तु समरे क्रुद्धः पुत्रैः तथेऽनाधिपे । सुदर्शनमहृदयन्तं शरैश्चक्रे
 हसन्निव ॥ ४७ ॥ ततोऽस्य प्रहसन् क्रुद्धः शिः कायादपाहरत् । क्षुरप्रेण सुतांशुणेन स
 हत प्रापतद्भवि ॥ ४८ ॥ तस्मिन्स्तु निःशते घोरं ततस्तस्य पदानुगा । परिवन्तु रणे भीमं
 किरातो विशिखाच्छितान् ४९ ॥ ततस्तु निशितैर्वाणैस्तदनाकं हृकोदरः । इन्द्राशानिसम
 स्वर्षाः समन्तात् पृथग्वाकिरन्तः । ततः क्षणात्तु तान् भीमो न्यहनद्भरतपुत्रम् ॥ ५० ॥
 तेषु तच्छिष्यमानेषु सेनाधिपज्ञा महाबलाः भीमसेनं समासाद्य ततो युध्वन्तं
 मारुत ॥ ५१ ॥ तांस्तु सर्वान् शरैः राज्ञवाकिरन्त पाण्डवः । तथ

के छोड़ेहुये बाणने सुशर्मको युद्धमें हृदयपर छेदा ॥ ४३ ॥ हे महाराज फिर वह
 निर्जीव होकर सब पाण्डवों को मसन्न करता और उनके पुत्रोंको पीड़ा देता
 हुआ पृथ्वीपर गिरपड़ा ॥ ४४ ॥ सुशर्मा को युद्धमें मारकर उस के पैनालीस महा
 रथी पुत्रों का शायकों से यमलोक में पहुँचाया ॥ ४५ ॥ इसके अनन्तर इसके सब
 अनुगामियों को तेजशर बाणों से मारकर वह महारथी मरने से शेष
 बची हुई भरतवंशियों की सेनाके मम्मूल गया ॥ ४६ ॥ और युद्धमें क्रोधयुक्त हमतेहुये
 भीमसेन ने सुदर्शन को बाणों से मृत करदिया ॥ ४७ ॥ फिर क्रोधभरे हँसतेहुये ने
 इसके शिरको भी शरीरसे जुदा किया तब वह अत्यन्त तेज क्षुरमसे मृतक होकर
 पृथ्वीपर गिरपड़ा ॥ ४८ ॥ उस घोरके मरनेपर विशिख नाम बाणोंको फैलाते उस
 के पीछे चलनेवालों ने भीमसेन को घेरलिया ॥ ४९ ॥ इसके पीछे भीमसेनने इन्द्र
 वज्रके समान स्पर्श तेजशरवाले बाणों से आपकी सेनाको सबओरसे घायल
 किया हे भरतर्षभ भीमसेन एक क्षणमेंही उस सेनाको मारा ॥ ५० ॥ उनके
 मरनेपर बड़े पराक्रमी सेनाके प्रधानों ने भीमसेन को पाकर युद्धकिया ॥ ५१ ॥ तब

Smiling on the breast and the latter fell down dead, killing the
 Pandavas and grieving your sons. Having slain Susharma, he
 slew forty five of his sons with his sharp arrows 45. Then he slew
 all his followers, and opposed the rest of the Kaurava army. Bhimsen,
 smiling in anger, hid Sadarshan with his arrows and severed his
 head from the body 47. He cut down his head with a smile
 and the dead body fell down on earth. At the death of that war-
 rior, his followers surrounded Bhim and hid him with their sharp
 arrows. Then Bhim wounded them with his sharp-edged arrows and
 slew them in an instant. 50 The chiefs of the army then fought with
 him at the fall of their soldiers, but Bhim slew them also. Similarly

तावका राजन् पाण्डवेयान् महारथान् । शरवर्षेण महता-समन्तात् पर्व्वथा
 यन् ॥ ४१ ॥ इषाकुलं तदभूत् सर्वं पाण्डवानां परे सह । तावकानाञ्च समरे पाण्डव
 वेयुंसुसताम् ॥ ५३ ॥ तत्र शीघ्रगता येनः परस्परसमाहताः । उभयोः सैनयो राजान्
 संशोचन्तः हतं वाप्ववान् ॥ ५४ ॥

इति शान्यपर्वणि शल्यबधपर्वणि संकुलयुद्धे सप्तविंशोऽध्यायः २७ ॥

सञ्जय ब्रुवाण् । तस्मिन् प्रवृत्तं संग्रामे नाशाजिगजक्षये । शकुनिः सीवल्लो राजेव
 सहदेवः समङ्गवान् ॥ १ ॥ ततोऽस्यापतत्स्वर्णं सहदेवः प्रतापवान् । शरीरान् प्रेषया
 मास पतङ्गानि च शीघ्रगान् । उलूकश्च रणे भीमं विव्याध दशभिः शरैः ॥ २ ॥ शकु

भीमसेनने उन सबकोभी तेजवाणों से घायल किया हे राजा इसीप्रकार आपके
 शूरवीरों ने महारथी पांडवों को बड़ी बाणों की वर्षा से चारोंओरकी राका ५२।
 पांडवों का और आपके शूरवीरों का वह युद्ध महाव्याकुल करनेवाला हुआ
 उस समय वहाँ अपने वान्धवों को शोचते परस्पर घायल दोनों सेनाओं के शूर
 वीर सड़ाई करनेवाले हुये ५४ ॥

अध्याय २८ ॥

सञ्जय बोले हेराजा ममुष्य-हाथी और घोड़ोंके नाशकारी उस युद्धके जारी
 होनेपर सीवल्लका पुत्र शकुनी सहदेव के सम्मुखगया । १ । इसके पीछे उस प्रताप
 वान सहदेवने शीघ्रही उठ आतेहुये के ऊपर पतंगों के समान शीघ्रगामी बाणों
 के समूहों को चलाया फिर उलूकने दशबाणोंसे युद्ध में भीमसेन को घायल
 किया । २ । हे राजा-फिर शकुनी ने तीनबाणों से घायल करके नब्बे शायकों

your warriors hid the Pandav army with their arrows, and the
 struggle was severe. Grieved for your kinamen, the warriors of both
 sides attacked one another." 54.

CHAPTER XXVIII

Sanjaya said, "At the commencement of the battle which was
 dest. uctive of elephants, horses and men, Shakuni opposed Sahadav.
 Glorious Sahadav. showered over him arrows like a flight of locusts.
 Then Uluk wounded Bhim with ten arrows. Then he wounded Saha-
 dov with three arrows and covered him with ninety more. The warriors

निष्कृ महाराज भीम विप्रा भिमि शरे । सायकातां तवत्या वै सहदेवमवाकिण्ण
 ॥ ३ ॥ ते शूरा समरे राजन् ममासाद्य परस्परम् । निष्कृमिनिदिनेवाणं कुरुर्वाहेण
 भवतिष्ठे । स्वर्भपुके, दिलाद्योतेराकर्जात् महिते शरे ॥ ४ ॥ तेषां प्रापुजात्सुष्टा शर
 सुष्टिर्विस्तार्यते । आकृताद्यदिशः सर्वा धारा इध पयोमुख ॥ ५ ॥ तत कुरुो रणे
 भीमः सहदेवश्च धीर्यवात् । खेरतु कवन संख्ये कुर्वन्तो सुमहाघटौ ॥ ६ ॥ ताभ्यां
 कुरुक्षेत्रेऽस्मिन् तद्वल तत्र भारत । अन्यकारमिवाकाशममवसत्र तत्र ह ॥ ७ ॥ अन्ये
 विपरिधावाद्भि शरेष्वस्मैर्विशाम्भते । तत्र तत्र कृतो मार्गो विकर्षेद्भिर्हान्द घृह्ण ८ ॥
 निष्कृतां इवामान्त्सु सहदेवयोर्बिमि । स्वर्भमिनिदिनेष्व प्रासैदिशुर्ब्रह्म मरिच ९ ।
 भवितिष्ठे शक्तिभिश्चैत्र तोमरेष्व समस्तत । सद्यथा पृथिवी जने कुमुभे शबला इव
 ॥ १० ॥ शोभासुच महाराज समासाद्य परस्परम् । व्यखरन्त रणे कुरुः विनिष्कृत
 वरस्परम् ॥ ११ ॥ उड्कुसनर्बने गोवात् सन्धुष्टोडुष्टेभुञ्जे । सन्धुष्टोडुष्टेभुञ्जे पथ
 विष्कृत्सकसजिमे ॥ १२ ॥ भुञ्जेऽस्मिन्महाराज नागगणकरांभे साङ्गदे सतनुर्ब्रह्म

से सहदेवको टकादिया । १ । हे राजेन्द्र उन शूरोने युद्धमें सम्पुल होकर उन कक
 और बोरबत्तों से जटित तीक्ष्णबाणोंसे घायल किया जो कि सुनहरी युद्ध शिला
 में स्वच्छ हुये कानतक लेंचकर छोड़ेय ४। उहों के धनुष और भुजासे छोडीहुई
 बाणबाणोंने मव दिशाओंको ऐसे टकादिया जैसे कि जलकी धाराओं से बादल
 टकरेताये ५। इसके पीछे युद्ध में क्रोधयुक्त भीमसेन और पराक्रमी सहदेव दोनों
 महाबली युद्धमें प्रलय ो करनेहुये भ्रमण करनेयगे ६ हे भारतवंशी तब घायकी
 यह जेना उन्हों के बाणों से टकाई जहां तहां आकाश अन्यकाररूप हुआ । ७ ।
 और बाणोंसे टकेहुये धारोंओर दौडते और बहुत मृदकोंको लेंचते हुये घोटते
 जहांतहां मार्ग संयुक्तहुमा । ८ । हे अष्ट अन्यसधारोंके साथ मृतक बोगों के सवू
 दूटे कषप प्राप्त सह्य शक्ति और तोमरों से पृथ्वी धारोंओर में ऐसी घृष्ट
 विदित हुई जैसे कि पुष्पोंसे शबल गुह्राते हैं ९ ॥ हे महाराज वहां गुरवीर परस्पर
 सम्पुलहोकर युद्धमें क्रोधयुक्त परस्पर मारते अच्छेमकार से भ्रमण करनेलगे ११।
 कोषमें केले नेत्र दोनों शोष्ठोंके काटनेवाले कुण्डलपारी कमनकी किमरक के
 समान् कुत्तों से पृथ्वी टकाई १२। हेसमर्थ महाराज गजराजकी सूडकी समान बाण

wounded one another with arrows fitted with vulture and peacock feathers and whetted on stone The shower of arrows discharged from their bows covered all directions as clouds pour forth rain. 5 Then Bhishm, much enraged, and valiant Sahadey making a havoc, roamed there and your army was hit with their arrows. The sky was dark and the way was obstructed by bones dragging the dead. The ground was covered with all sorts of weapons as woods are by flowers. 10 The warriors roamed hither and thither, slaying one another with arrows. With eyes dilated in anger and with lotus like faces the heads covered the ground. The broken arms, like the trunks of

कवचैरतिथे विश्रुतेनृत्यभिचापरैर्युधि । क्रव्यादगण

॥ १५ ॥ अल्पावशिष्टे सैन्ये तु कौरवैरान् महारिव

यमसादनाम् ॥ १५ ॥ एतस्मिन्तन्तरे शरः सोपलेखः

प्रतापवान् । प्रासेन सहदेवस्य शिरशि प्रोहरद्भ्रशम् । स विह्वली महागज रथोपस्थ

उपाविशत् ॥ १६ ॥ सहदेव तथा दृष्ट्वा भीमसेनः प्रतापवान् । सर्वसैन्यानि सङ्क्रुवा

धारयामास भात ॥ १७ ॥ निर्विभेद च नाराचैः शनशाथ सहस्रशः । विनिभ्रिजान्क

रोच्चेष सिहनादपरिन्दमः ॥ १८ ॥ तेन शब्देन विभ्रसाः सर्वे सहयवारणाः । प्राद्व

घ्नन् सहसा भिता शकुनेश्च पदानुगाः ॥ १९ ॥ प्रमग्ना नय तान् दृष्ट्वा राजा दुःशो

धनो ब्रवीत् । नित्यसधमधमेना युध्यथ्ये किं सृतेन वः ॥ २० ॥ इह कौत समावाच

प्रेत लोकात् समश्नुते । प्राणान् जडाति यो धीरो युधि पृथग्दंशयन् ॥ २१ ॥ इव

बन्द कवच सङ्ग और फरसा धारण करनेवाली - दृष्टीभुज । १११. और - युद्ध में

दृष्टव्य है और नृत्य करते अन्य रूढ़ों से पृथ्वी महाघोर और मांसाहारी जीवाके

समूहों से पूर्ण होगई । ११४ । फिर थोड़ीसेना शप रहनेपर पांडवोंने अत्यन्त

प्रमत्तहोकर बड़े युद्धमें कौरवों को यमलोकमें पहुँचाया । ११५ । हेराज्ञा उसीअन्तर

में प्रतापवान् सकुनीने प्राप्त से सहदेवके शिरपर कठिन प्रहार किया हे महाराज

उस भारी प्रहारसे वह सहदेव व्याकुल होकर रथके बैठने के स्थानपरही बैठगया

। ११६ । इसके पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त प्रतापवान् भीमसेनने सहदेवको देखकर सब

सेनाओं को रोका । ११७ और हजारों शूरवीरों को नाराचों से लड़ा फिर उस

शत्रुविजयीने उनको छेदकर सिहनाट किया । ११८ । उस शब्दमें सकुनीके स्वहायी

घाटे और हाथियों समेत पृथ्वीपर गिरपड़े अर भयभीत होकर अकम्पान भाग

। ११९ । फिर राजा दुःशोचने ने उन लड़ने भिन्न सेनाओंसे कहा हे धर्म के न

जाननेवाले शूरवीरों लोटो युद्धकरा युद्धसभागन में तुम्हारा क्या प्रयोजन है । २०।

जो वीर युद्ध में पीठको न दिखाताहुआ सम्मुख होकर अपने प्राणों को त्याग

करताहै वह इसलोक में शुभकीर्तिकी पांकर मरनेके पीछे शुभवाकों को भागना है

। २१ ॥

elephants, decked with ornaments and bearing weapons, together with other parts of the body moving in various directions and carnivorous birds were seen here and there over the ground. When a small part of the army was left, the Pandavas, well pleased, sent the Kauravas to the region of Yam. 15. In the mean time glorious Shakuni hit Sahadev hard on the head and the latter sat down on his seat in the car. Then Bhishma, much enraged at the wounds of Sahadev, checked the army and pierced thousands of warriors with arrows. Then that conqueror of foes pierced him with a roar. The elephants and horsemen fell down on earth with that roar and fled away in terror. Then Prince Duryodhan addressed the routed army saying: 'Come back warriors and fight! What will you gain by running

मुक्तास्तु ते राजा, सौवलयस्य पदानुगाः पाण्डवानाभ्यवर्त्तन् मृत्युं कृत्वा निवर्त्तन्म
 ॥२३॥ द्रवद्भिन्न राजेन्द्र कृतः शब्दोतिदारुणः । शुभ्रसागरसङ्काशः क्षामितः सर्वतो
 भिवत् ॥ २३ ॥ सांख्यपतंतो दृष्ट्वा सौवलयस्य पदानुगाः । मृत्युयुयुर्पहाराज पांडवा
 विजयेस्थिताः ॥ २४ ॥ प्रत्याभास्यं च दुर्धयः सहदेवो- विशाम्पते । शकुनिं दशभि
 र्बिभ्रत्वा ह्यर्थाभ्यास्य त्रिभिः शरैः । धनुश्चिच्छेद च शरैः सौवलयस्य हसन्निव ॥ २५ ॥
 अथान्यन्नुरादार्यं शकुनिर्युद्धतुर्मदः । विध्वाघः नकुलं पष्ट्या भीमसेनञ्च सप्तभिः
 ॥ २६ ॥ उलूकोपि महाराज भीमं विध्वाघः सप्तभिः ॥ सहदेवञ्च सप्तत्या पीप्सन्
 पितरं रणे ॥ २७ ॥ तं भीमसेनः समरे विध्वाघ निशितैः शरैः । शकुनिञ्च चतुः पष्ट्या
 यावत्सांश्च त्रिभिस्त्रिभिः ॥ २८ ॥ ते हंग्यमाना भीमेन माराचैस्तेलपायितैः । सहदेवं रणे
 क्रुद्धाद्भ्रातृपुत्रं शरदृष्टिभिः । पर्वतं पारिघाराभि सचियुत इवाञ्जुदाः ॥ २९ ॥ ततो

॥ २१ ॥ राजाके इसमंशर कहनेपर शकुनी के बहू साथी मृत्युको पीछे करके
 पाण्डवों के सम्मुख वर्त्तमान हुए ॥ २२ ॥ हे राजा वहां भागने दोड़नेवाले वीरोंने
 बड़े भयकारी शब्द किये वैसेना वेगपुक्त सागरके समान सर्व ओरसे व्याकुल
 होगई ॥ २३ ॥ हे महाराज इसके पीछे विजयके निमित्त सन्नद्ध पाण्डव शकुनीके
 धन साधियोंको आगे देखकर समुख गये ॥ २४ ॥ फिर अजेय सहदेवने विश्राम
 लेकर दशवाणोंसे शकुनीको घायल करके तीनवाणोंसे उसके पांडोंको घायल
 किया औरहंसतेहुये नेवाणोंमें शकुनीके अनुपको काटा ॥ २५ ॥ इसके पीछे युद्धमें
 दुर्मद शकुनीने दूसरे अनुपको लेकर साठवाणसे नकुलको और सातवाण से
 भीमसेनको घायल किया ॥ २६ ॥ हे राजा जङ्गमें पितरके चाहनेवाले उलूकने
 भी साठवाणसे भीमसेनको और सत्तरवाणसे सहदेवको घायल किया ॥ २७ ॥
 भीमसेनने उसको नौवाणसे शकुनीको चौंसठवाणसे और इधर उधरके पक्षवर्ती
 शूरवीरोंकी तीनर वाणोंसे घायल किया भीमसेनके तीक्ष्णनाराचोंसे घायल
 और क्रोधयुक्त उन शूरवीरोंने युद्ध में वाणोंकी वर्षासे सहदेवको ऐसे टुक
 दिया जैसे कि भिजली रखनेवाले बादल जड़की घाराओंसे पहाड़को टुक देते

away ! 20. A warrior who does not turn back in battle and dies fighting, gets fame in this world and good regions in the next. Thus addressed by the king, Shakuni's elephants came back. The warriors returned with a great uproar and filled the field of battle with a sound like that of the swelling surges. The Pandavas desirous of victory, seeing Shakuni's companions there, opposed them. Invincible Sahadev smiling wounded Shakuni with ten arrows and his horses with four. 25. Shakuni taking up another bow, wounded Nakul with sixty arrows and Sahadev with seven. Uluk the son of Shakuni wounded Bhim with seven arrows and Sahadev with seventy. Bhim wounded him with nine arrows, Shakuni with sixty four and their followers

क्यापत्तनः शूः सहदेव प्रतापवान् । उलूकश्च महाराज बल्लेनीपाहरकिष्ठरः ॥ ३० ॥
 स जगाम रथाङ्गुलिं सहदेवेन पातितः । कथिराप्नुमसर्वाङ्गो जन्वन् पाण्डवान् युधि
 ॥ ३१ ॥ पुत्रस्तु निहतं दृष्ट्वा शकुनिलज्जमारुतः । साभ्रकपटो विनिघ्नस्व कस्तुरीकण्ठं
 मनुस्मरन् ॥ ३२ ॥ शि-तीयत्वा मुहुर्हस्तं च वास्पृज्येऽस्रः श्वसन् । सहदेवं समासाद्य
 त्रिभिर्विभ्याद्य सायकैः ॥ ३३ ॥ तानपास्य शराम्मुक्ताद् शरक्षयं प्रतापवान् सहदेवो
 महाराज धनुश्चिच्छेद् संयुगे ३४ ॥ छिन्ने धनुषि राजेन्द्र शकुनिः सौबलसदा । प्रयुक्त
 निपुलं सङ्ग सहदेवाय प्राहिणोत् ३५ ॥ तमापन्नं सहसा घोररूपं विशाम्पते । द्विधा
 शिच्छेद् रुमरे सौबलस्य हस्तसिद्धे । ३६ ॥ अस्ति दृष्ट्वा, द्विधा छिद्य प्रयुक्त महती
 गदाय । प्राहिणोत् सहदेवाय सा मोघा न्यपतस्तुवि ॥ ३७ ॥ तत शार्ङ्गं महाघोरां काक
 रात्रिभिवोद्यताम् । प्रेषयामास संक्रुद्ध पाण्डवं पति सौबल ॥ ३८ ॥ तामापयन्ती
 है । २९ । हे महाराज इसके पीछे प्रतापवान् शूर सहदेव ने इस सङ्गमुक्त दौड़ने
 उलूकके शिरको बल्लेनीकाटा । ३० । वह कथिरसे लिप्तशरीर सहदेवका गिराया
 हुआ युद्धमें पाण्डवोंको प्रसन्न करता हुआ रथमें पृथ्वीपर गिरा । ३१ । हे भरतवंशी
 तब शकुनी अपने पुत्रको मराहुआ देखकर त्रिवुरांको वचन को स्मरण, करता
 आसुओं से पूर्णकण्ठ, बड़े आसलेकर एक मुहुर्घतक चिन्ता करने लगा - फिर
 अभ्रपूरित नेत्रवाले उस शकुनी ने सहदेवको पाकर तीन शायकों से घायल
 किया । ३२ । हे महाराज प्रतापवान् सहदेव ने अपने वाण मसूहों से उन छोड़े
 हुये बाणों को इटाकर युद्ध में धनुष को काटा । ३३ । हे राजेन्द्र धनुष के टूटनेपर
 सौबलके पुत्र शकुनी ने बड़े सङ्गको लेकर सहदेव के ऊपर चलाया । ३४ ।
 तब इसते हुये सहदेव ने उस अकस्मात् आतेहुये शकुनी के घोररूप सङ्ग को
 सङ्घ स्वपद करादिया । ३५ । सङ्ग को खिड़क देकर बड़ी गदा को लेकर
 सहदेवके ऊपर फेंका वह गदा भी निष्फल होकर पृथ्वीपर गिरपड़ी । ३६ । इसके
 पीछे अत्यन्त क्रोधयुक्त शकुनी ने महाघोर कालगाम्बि के समान उठाई हुई घोर
 शक्तिको सहदेवपर चलाया । ३७ । इसतेहुये सहदेवने अपने स्वर्ण भूषित बाणोंसे

with three arrows each. Wounded by the sharp arrows of Bhim, the
 enraged warriors covered him with arrows like rain of clouds. Then
 Sahadev cut down Uluk's head with a dart. 30. Slain by Sahadev he
 fell down from the car, pleasing the Pandavas. Seeing his son dead,
 Shakuni with eyes full of tears and sighing, meditated for some time and
 then wounded Sahadev with three arrows. Glorious Sahadev checked
 his arrows with his own and cut his bow. Having dropped his broken
 bow, Shakuni took up his large sword and hurled it at Sahadev
 Then Sahadev, with a smile, cut his dreadful sword into pieces. 36.
 When his sword was cut off, he hurled a mace at Sahadev, but that
 too, fell down without doing its work. Then Shakuni, much enraged

सहाय्येन काश्यपस्येन । तत्रास्त्रिंशत्समसहदेवो वसन्निव ॥ ३९ ॥ आ
 पयात् त्रिधा त्रिधा भयो कनकमयणा । शूरेयमात्रा वया दीप्ता गगनाद्दे शमद्भवा
 ॥ ४० ॥ शक्तिं विनिहतां दृष्ट्वा सौबल्यञ्च मघादितम् । युद्धुन्नायका सर्वे मये जाने
 ससौवका ॥ ४१ ॥ अयोत्कृष्ट महत्त्वासीत् पाण्डवैर्जितकाशाभिः । धातंगगनास्त
 सर्वे प्रावशो विमुखाभवन् ॥ ४२ ॥ त न वै विमानसो दृष्ट्वा माद्रीपुत्रं प्रतापवान् ।
 शूरेयेकसाहसैर्वा रयामात्र मयुगे ॥ ४३ ॥ ततो गांधारकैर्गुप्तं पुष्टैरद्वैजंयैः पूतम् ।
 आससाद् रणे यान्त सन्देवोद्य सौबलम् ॥ ४४ ॥ स्वमशमवतिष्ठन्त संसृज्य शकुनि
 द्युम् । रयेन काश्यपान्नेन सहदेव समभ्यात् ॥ ४५ ॥ भविष्य बलवत् कृत्वा व्यासि
 पत्रं सुमहद्वनम् । स सौबल्यमभिदूय गांधर्वैश्च शिलाशितः । भृशमभ्यहनत् कुञ्जस्यो
 शूरेय महाश्रिगम् ॥ ४६ ॥ उवाच चैनं मेधावी निगूढस्मारयन्निव । इन्द्रधर्मं स्थितो
 सूत्या युष्मत्सव पुत्रो जव ॥ ४७ ॥ पत्तरादृष्यसे मूढः प्लहनक्षैः सभातले । फलमद्य
 उस आतीर्ह्यै शक्तिको युद्धं तीर्णं स्वहृत् करदिये ॥ ४९ ॥ वह सुवर्णं मे अलकृत
 तीर्णं स्थानसे दूरीर्ह्यै शक्तिं पृथ्वीपर ऐमे गिरपरी जैसे किं प्रकाशित गिरने
 बाली विजली आकाश से गिरती है । ४० । शक्तिको दूरी और शकुनीको पीढ़ों
 बान देखकर भय उत्पन्न होनेपर शकुनी समेत आपके सब शूरवीर भागे । ४१ ।
 इसके पीछे विजय से शोभापमान पांडवोंकी ओरका बड़ा शब्द हुआ तब आपके
 सब शूरवीर मुक्त फेरगये । ४२ । माद्रीके पुत्र प्रतापवान् ने उनको उदास बिना
 देखकर युद्धमें हजारों बाणों से रोका । ४३ । फिर सहदेवने हृष्टपुष्ट गांधार देशी
 पीढ़ोंसे रहित विजय में मनुष्यचित्त युद्धमें वर्तमान होनेवाले शकुनी को सम्मुख
 पाया । ४४ हे राजा सहदेव उस सम्मुख नियत होनेवाले शकुनीको अपना माग
 स्वरणकरके सुवर्ण के अङ्गवाले रथकी सवारीसे सम्मुखगया । ४५ । और बड़े बल
 बान हटं अनुपको चदाकर टकारा उस क्रोधयुक्त ने शकुनीके सम्मुख जाकर
 पृथ्वपत्रयुक्त सौक्ष्मबाणों से ऐसे कठिन पायस किया जैसे कि चातुर्कों से बड़े
 शायीको घायल करते हैं । ४६ । वह बुद्धिमान उसको रोककर स्मरण कराता
 हुआ बोला कि त्रिभयधर्म में निवृत्त और शूरता करके युद्धको ४७ हे अज्ञानी

hurled a dreadful spear at him but the latter, with a smile, cut it
 down into three and its three parts fell down on earth like the bright
 lightning. Seeing his spear broken and Shakuni wounded, your
 warriors fled with him. The Pandavas raised cries of victory and
 your warriors turned their faces. The son of Madri, seeing them
 dejected, checked them with thousands of arrows. 43. Then he found
 Shakuni, with the powerful horses of Gandhar, before him, and think
 ing him to be his own portion, he opposed him with his car and twang-
 ed his bow. He wounded Shakuni hard with his arrows as e'o-
 phants are wounded with gads 46. He then addressed him as

प्रद्वेष्यं कामणस्तस्य दुर्मते । ४८ ॥ निहतस्त दुरत्मानातेऽ मानवेहसत्रे गुणं बुद्ध्यां
 धनं कुलाद्वा शिष्टस्य चास्व मानुष । ४९ ॥ अथ ते निहनिष्यामि धुरेणां मणित
 शिरः । वृक्षात् फलीमवागिञ्ज लघुदेन प्रमाथिता ॥ ५० ॥ एवमुक्त्यो महाराज सहदेवो
 महाबल । सक्रदान्शाईलो वेगेनाभिजगाम ह ॥ ५१ ॥ अभिगम्य तु दुर्धरे सह
 देवो युधापति । विह्वल बलरत्नवाप क्रोधेन प्रदहन्निव । ५२ ॥ शकुनिं दशभिधिया
 चतुर्भिश्चास्य योजित । छत्र ध्वज धनुश्च स्य त्रिरया सिंह उवाचतत् । ५३ ॥ छिन्न
 ध्वजधनुश्च सद्देवत सौवले । वृ ॥ विह्वल महाभिः सर्वमर्मसु सायक ॥ ५४ ॥
 ततो मयो महाराज सहदेव प्रयापवान् शकुनिं प्रययामास शरवृष्टिं दुरासदाम
 ॥ ५५ ॥ ततस्तु कुट्ट सुबलस्य पुत्रो माद्रीपुत्र सद्देव विमर्द । मोलेन जाम्बूनकम
 वणेन जिघांसुत्कामिपवान् शीघ्रम् ॥ ५६ ॥ मात्र सुनस्तस्य सप्रथमं तं प्राप्तं सुवृत्तो

जब मर्मापे पाशोंके घृत्त में जा तुम प्रसन्नहुये थे हे दुर्बुद्धि अब उस दुष्टकर्म के
 फल ही देखो । ४८ ॥ वह सब दुःखात्मा तो मरेगये, जो पूर्व में हमको हँसते भवइस
 दुर्धनके कुलके भस्म करनेवाले अग्निरूप तुम्हीं, समाये; मामाजी, शेरदेही । ४९ ॥
 अब क्षरमे काँटेहुये, तेरे शिरको- ऐन, जुदाकरगा जैसे कि, प्रहार करनेवाली-
 लाठी से वृक्षका फल तोड़ो है, ५० ॥ हे महा राज अत्यन्त क्रोधयुक्त बड़े पराक्रमी
 नराचम सहदेवने हमप्रकार कहकर बड़े वेगसे उसको घायल किया । ५१ ॥ बड़े,
 अनेय शूवीरों के प्रान क्रोधसे जलते हुये सहदेवने, बलवान्, धनुषको खेंचकर
 । ५४ ॥ दशबाणोंमें शकुनीको और चारबाणने उसके घोड़ोंको घायल करके, उसके
 छत्र ध्वजा धनुषको काटकर सिंहेके समान गर्जनाकी । ५३ ॥ अर्थात् वह शकुनी
 सहदेवके हाथसे छूटे धनुष, ध्वजा और छत्रवाला - किया गया और बहुत शायकों
 से सब मर्मस्थलोंपर अत्यन्त घायल हुआ । ५४ ॥ हे महाराज इसके पीछे प्रयापवान्
 सहदेवने कठिनता से सहनेके योग्य बाणों की वर्षा को फिर शकुनीके ऊपर
 किया । ५५ ॥ तबतो अत्यन्त क्रोधयुक्त और युद्धमें सुवर्ण से जटित प्राप्तके द्वारा
 माद्रीनन्दन सहदेवके मारने की इच्छासे शीघ्रही, भकेला शकुनी उसके पास

f flows ' Fight like a kshatrya and you will see the result of your
 exultation at the game of dice in the court Those wicked men who
 laughed at us are slain, You are the only destroyer of family uncle,
 I shall now sever your head from your body like a fruit from a
 tree " 50 Having said this Sahadev again wounded him hard
 with his arrows Burning with the excess of anger, Sahadev wound
 ed Shakuni with ten arrows and his horses with four, and having cut
 down his bow, he roared a le nine, r r r Shakuni's banner and
 umbrella were severed and he was wounded on the vital parts; Th u
 gl itous Sahadev again showered arrows over him 53. Then Shal uni

सुसुप्तो रणाग्रे । मल्लैस्त्रिभिर्युगपत् सञ्च । स न व चाग्ने स्तरस्रजिमभये । ५७ ॥
 तस्याशुकारी सुसमाहितेन सुवर्णैः खनं दृढ यत्नत । मल्लेने सर्वावशानातिगेन शिर-
 शरीरात् प्रममाथ भूय ॥ ५८ ॥ शरेण कात्तस्त्रविभूषितेन दिवाशरानेन सुसंशितेन
 ह्योत्तमोद्गीर्णायुवि पाण्डवेन पर्याभमो सुमल्लभ्ये पुत्रः ॥ ५९ ॥ स तच्छिरां धगवता
 शरेण सुवर्णपुञ्जैः शिलाशिनेन । प्रायेरेव क्लृपितः पाण्डुपुत्रा यत्तत् कुङ्कामनपस्य
 मूलम् ॥ ६० ॥ ह्योत्तमोद्गीर्णशिरानि समीक्ष्य भूमौ शरानि कौशलेन्द्रोत्तमः । योचास्व
 दीपा मयनष्टसत्त्वा दिश मज्जन्तुः प्रगृहीतशस्त्राः ॥ ६१ ॥ यिमहता शूष्मुख विसंभ्रा
 गोष्ठीर्घर्षावर्षेण सम इतोश्च । मीयाहिता मंगरीयाद्वेपनागा पद्मातयश्चैव स चास्त्रैराभ्या
 ॥ ६२ ॥ ततो रथच्छिद्रुनि पीतधिरैवा मुद्विग्नैर्वा गारत पाण्डवैर्वा । शंखैश्च प्रद्व
 सितैः प्रहृष्टैः सकृशवा स्त्रिभिरनु हर्षयन्तु ॥ ६३ ॥ तस्मात्तिसरे प्रतिपुत्रपत्नी
 गया । ५६ । शिरःमाद्रीके पुत्रेन एकनाथ तीनभङ्गमे उसके उठाये हुये प्राप्त और
 सुन्दरगोत्र भुजाओंकी युद्धके मूलपर काटा और बड़े-बड़े-युद्धभूमि में उच्चस्वर
 से गजनाकरी । ५७ । फिर शीर्षिका करनेवाले सद्देवते सुनहरी-पुंल दृढ-शिलापिं
 धियेहुये सब कवच आदिसे पार होनेवाले श्रेष्ठीनि से चलायेहुये मल्लसे उसके
 शिरको शरीर से जुदाकिया । ५८ । सुवर्णसे मल्लकन सूर्य के समान प्रकाश
 मान अच्छे प्रकार चलायेहुये सादेवके हाथसे युद्धमें कटाहुआ शिर पृथीपर
 गिरपड़ा । ५९ । उस क्रोधयुक्त पांडवों ने सुनहरी पुंल, तेजधार, वेगवानि बाणसे
 उसके उस कटेहुये शिरको बहुत दूरफेंका जोकि कौरवों के अन्धायिका मूलया ६०
 आपके शरबार वस दृष्ट और पृथीपर पड़ेहुये रुधिरसे, लिप्तशरीर-शकुनी को
 देखकर भयसे पराक्रमहीन होकर दिशाओं को भागे । ६१-। शुष्कमुख अश्वेत
 और गौर्वाण धनुषके शब्दसे विदीर्ण भयसे पीड़ित दृष्ट और पाण्डव रथ छोड़े
 और हाथी बाल पदांगी होकर दुर्योधन समेत भागे । ६२-। हे भरतवंशी इसके
 अनन्तर रथसे शकुनी को गिराकर मत्तभ्रतायुक्त अत्यन्त हर्षित अन्त करण
 और केशवजी समेत सनाके लोगों को मत्तभ्रतानेवाके पाण्डवों ने युद्ध

approached Sahadev to slay him 'in his rage with a pras' But Sahadev cut with three arrows, his upraised arms and the pras and roared with a loud roar, Then he severed his head from his body with a very sharp arrow capable of piercing through all armours Cut asunder by Sahadeva's sharp arrow, Shakuni's head fell down on earth, The enraged Pandava's hurled his head at a great distance as he was the root of all evil 60, Your warriors seeing the blood shed of Shakuni fled away in all directions. The foot soldiers, with parched mouths, insensible, terrified with the sounds of Gandiv bow, with broken ears and wounded hearts, ran away with Duryodhan Having removed Shakuni's body from the car, the cheerful warriors of

इष्टाः सुघाणाः सहदेवमाजी । दिष्ट्या हतो नैकृतिको पुरात्मा सहायमजो वीर
रणे स्वयति ॥ ६४ ॥

इति शल्यपर्वणि शल्यपथपर्वणि शकुनलकवधे अष्टाविंशोऽध्यायः २८ ॥

सञ्जय उवाच । ततः क्रुद्धा महाराज सोमलक्ष्य पदानुगाः । त्यक्त्वा जीवितमा
कण्ठे पाण्डवान् पथ्यं चाभ्यनू ॥ १ ॥ ताननुनः प्रत्यग्रहणात् सहदेवजये धृतः । श्रीम
सेनस्य तेजस्वी क्रुद्धामाविपद्शनः ॥ २ ॥ शक्ययष्टिमासहस्रानां सहदेव जिघांसताम् ।
अङ्कुरमकरान्मोघे गाण्डीवेन घनञ्जयः ॥ ३ ॥ संगृहीतायुधान् बाहून् पाषाणामाज
शलाको वजाया । ६४ । तत्र सद्यः प्रमन्न लोर्गानि युद्धे उत सहदेवकी
पुत्रं पूर्वकं प्रमसाकरी हे वीर यह छली और दुरात्मा शकुनी मारम्भसेही पुत्र
समेत तेरेहाथ से मारागया ६४ ॥

अध्याय २९ ॥

सञ्जय बोले हे महाराज इसके पीछे शकुनी के क्रोधयुक्त साथियों ने जीवन का
त्यागकरके पांडवों की चारोंभरसे रोका । १ । सहदेवकी विजयमें प्रत्यग्रहण
अनुन और क्रोधयुक्त विषले सर्प के समान दिखाई देभाला तेजस्वी भिमसेन
इन दोनों ने उन सब शकुनी के साथियों को रोका । २ । अनुन ने गाण्डीव धनुष
के द्वारा शक्ति दुपारे लड़ग और प्राप्त हाथमें रखनेवाले सहदेवके मारनेके अभि
लाषी उन लोर्गोंका सकंठ निष्फलकिया । ३ और भल्लों से उन सम्मुख दांडने

the Pandavas pleased Keshav and others with the blasts of their
conchs. They praised Sahadev, saying, "It is by good luck that you
have slain deceitful and ill-natured. Shakuni and his son." 64.

CHAPTER XXIX

Sanjaya said, "Then the enraged companions of Shakuni, leaving all
care for life, checked the Pandavas from all sides. Trying to secure
victory to Sahadev, Arjun and Bhim checked Shakuni's followers.
With his Gandiv bow, Arjun made futile the attempts of the
warriors desirous of slaying Sahadev with their weapons, and cut their
heads with his darts. They fell dead on the ground and were on

घातनाम । अल्लेखिच्छेदे धीमत्सु, शिरांस्यपि हयानपि । ४ ॥ ते हवाः प्रथमपद्म
 वसुधा विगतासवः । श्वरतां लोकवीर्याणां प्रहताः सव्यस्त्राभिना ॥ ५ ॥ ततो दुर्घो
 धनो राजा हृष्टः श्वघ्नसंक्षयम् । इतशेषान् समानीयः कुञ्जप्रथशतान् विभो ॥ ६ ॥
 कुञ्जरांश्च हयांश्चर पादानांश्च परत्तपः । उवाच संहितान् सर्वान् घातन् राजा हृष्टः वज्रः
 ॥ ७ ॥ समासाद्य रणे सर्वान् पाण्डवान् समुद्भृजान् । पाण्डवात्पञ्चापिः सखलं हस्वा
 शीघ्रं निवर्तत ॥ ८ ॥ तस्य ते शिरसा कृष्टा घ्वत्तं युद्धदुर्मदाः । प्रायुधयु रणं पार्थो
 लब्ध पुत्रस्य शासनात् ॥ ९ ॥ तानभ्यापततः शीघ्रं इतशेषान्महारणं । शरैराशीवि
 याकारैः पाण्डवाः समवाकिरन् ॥ १० ॥ तस्मै च मरतश्चेष्ट मुहुर्जन महारामभिः । जैर्
 स्यन् रणे प्राप्य ज्ञातारं नाशय विन्दत । प्रतिष्ठमानन्तु मयात्नावातिष्ठति इति तम् ॥ ११ ॥
 अश्वैर्विपरिचावाद्भिः सैभ्येनः रजसाहृतैः । न प्राक्पापन्त समरं दिशश्च प्रविशन्तया
 ॥ १२ ॥ ततस्तु पाण्डवानां कानिःस्तस्य बहवो जनाः । अश्वघ्नन् तावकान् युद्धं मुहु

बाले शूचीरोंके शस्त्रधारी भुजाओं समेत शिरोको भी काटा) ४ । तत्र बहू मृतक
 निर्जाण होकर पृथ्वी पर गिरपड़े । उभ लोकवीर घूमनेवाले अर्जुनके हाथसे सब
 मारेगये । ५- । इसके पीछे शत्रुओंका तपानेवाला क्रोधयुक्त अपना पुत्र राजा
 दुर्योधन अपनी सेनाका नाश देखकर मरने से शेष बचेहुये बहुत से रथ हाथी
 घोड़े और पदातिपोंके समूहों को इकट्ठाकरके उनमें यह वचन बोला : ७ । कि
 युद्धमें पाकर मित्र समूहों समेत पांडवोंको और सेना समेत घृष्टघुम्न को भी
 मारकर शीघ्र लौटो । ८ । युद्धमें दुर्मद बहू सब वीर उसके वचनको शिरसे अंगी
 कार करके पांडवोंके सम्मुख गये । ९ । पांडवोंने बड़े युद्धमें विपैले सर्प की
 समान बाणोंसे मरने से शेष बचेहुये सम्मुख आनेवालोंको घायल किया । १० ।
 हे भरतर्षभ एक मुहूर्त्तमेंही बहू सब सेना युद्धको पाकर महात्माओंके हाथसे
 मारी गई और किसी अपने रखरुको नहीं पाया बहू शस्त्रधारी सेना भयभीत
 होकर नियत नहीं होतीथी । ११ । चारोंधोरको दौड़नेवाले घोड़ोंकी धूलसे व्याप्त
 दिशां और विदिशा नहीं जानी गई । १२ । इसके पीछे पांडवीय सेनामें बहुत मनुष्यों
 ने निकल कर युद्धमें एक मुहूर्त्तमेंही आपकी सेनाके लोगोंको मारा हे भरत

and all slain by Arjuni's arrows. 5 Then your enraged son, destroyer
 of foes, seeing the destruction of his warriors, rallied the elephant
 men, horse and foot, and said, "Slay the Pandavas and their allies
 including Dhrishtadyumna. The warriors, obeying Duryodhan faced
 the Pandavas. The Pandavas wounded them with their darts like
 venomous serpents. 10. All that army was destroyed by them in an
 instant. Destitute of protectors they ran away for fear. Envelop-
 ed with the dust raised by elephants the directions were not
 visible. Then many persons coming out of the Pandav army, slay
 your army and annihilated it. The olven akshauhinis collected by

संदिग्ध भारत । ततो निःशेषमभयत् तत् सम्यं तव भारत ॥ १३ ॥ अज्ञो हि स्वः समे
 तास्तु तव पुत्रस्य भारत । एकदिशं ह्यथ युद्धं ताः प्रभो पाण्डुसुभ्यः ॥ १४ ॥ तेषु
 राजसहस्रेषु तावकेषु महत्तमेषु । एकां दुर्योधनो राजप्रदृश्यन् भृशं क्षतः ॥ १५ ॥
 ततो वीक्ष्य दिशः सर्वा दृष्ट्वा शन्याश्च मोदिताम् । निहतं सर्वयोधैश्च पाण्डवान्
 वीक्ष्य सियुगं ॥ १६ ॥ मुदितान् सौमिन्द्राय नन्दयित्वा नानु समन्ततः । बाणशरैः राक्षिभ्य
 भृशं तेषां महात्तमनाम् ॥ १७ ॥ दुर्योधनो महाराज कश्चलनाभिसङ्घः । अपयानि
 मृतञ्चक्रु निहिनचलवाहिन ॥ १८ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । निहतं मागके संख नि शेष
 शिबिरं ह्यो । पाण्डुशर्मा चले सन् किन्तु शेषमभ तदा । एतन्म पृच्छन्तो ब्राह्म कुशाळा
 ह्यास सञ्जय ॥ १९ ॥ यच्च दुर्योधनो मन्दः कृतवास्तनया मम । चलक्ष्य तदा
 दृष्ट्वा स एकः पुण्यवीपतिः ॥ २० ॥ मञ्जय उवाच । रयानो हि सहस्र तु सत नाम
 शतानि च । पञ्च चाद्वयसहस्रानि पत्नीनाञ्च शतशताः ॥ २१ ॥ एतच्छेषमभूद्राज
 पाण्डवानां महदलम् । परिगृह्य ह्यसुगमे पृष्टुस्तोऽप्यवशिष्यतः ॥ २२ ॥ एककी मर
 वंशी तदे आपकी बह मना समाप्तो गणई । २३ ॥ हे प्रभु आपकी पुत्र की
 इकट्टो होनेवाली बह ग्यारह अक्षोहणी युद्धमें पाण्डव और मृञ्जयो के हाथसे
 मारी गई । २४ ॥ हे राजा आपके उन हजारों महत्पौराजाओं में में केवल एकला
 राजा दुर्गोधन घटियन्नाचायक भिद्वर्त्ताई पदा । २५ ॥ इसके लोछे तव दिशाओं को
 दिखकर और सब शूरवीरों में रहित पृथ्वी को और युद्धमें ममजना सर्वक
 अभीष्ट प्राप्त करनेवाले चारोंओरमें गजनेवाले पाण्डवों को देखकर और उन महा
 स्याओं के शर्णा के शब्दों को सुनेकर । २६ ॥ दुर्योधन मूच्छा से पूर्ण हुआ
 फिर सेना और मवारियों से रहित ने हठ नाने में निश्च किया । २८ ॥ धृतराष्ट्रवाले
 हे मृत मरी सनाके मने और डराके खाली करनेपर पाण्डवों की सेना में क्व
 क्या क्षयरहा २९ । और उसममय मरेपुत्र अजाति दुर्योधनने सेना के नाश
 को देखकर अकलनही जो किया उमकोभी कहा । ३० ॥ सजय वाले कि दो हजार
 सातसा हाथी पांच हजार घोडे और दश हजार प्रदातो । ३१ । यह बड़ी सेना
 पाण्डवोंकी बाकी थी गजमको कि पृष्टुधम्म युद्धमें अलङ्कृत करके प्रनियथा । ३२ । हे

your son were thus slain by the Pandavas and Sriajnyas. Prince
 wounded and alive out of the whole lot
 in all directions and finding the field
 vacant of all warriors and the Pandavas exulting in joy and
 twanging their bows, Duryodhan, with a fainting heart intended to
 retreat. Dhrishadyumna said, "How many warriors remained with the
 Pandavas when all my army was destroyed and the tents were
 empty? Tell me what it was that my unfortunate son Duryodhan
 did then." Sanjaya said, "Two thousand and seven hundred ele-
 phants, five thousand horse and ten thousand foot were the rem-
 nants of the Pandav army led by Dhrishadyumna. Prince Duryodhan

तत्रैव नमो बुद्धिर्जनो नृपः । नीपद्वयं समरे कश्चित् महार्थं । रथिनाम्बरः ॥ २३ ॥
 महामानो पराश्रित स्वयत्सव्यः । नक्षत्रं । तथा हृष्टवां महाराजं । एकः सः पृथिवी
 पानः । इति स्वयमुत्सृज्य प्रामुखः प्राद्रुषद्रणात् ॥ २४ ॥ मदीमादाप तेजस्यो पदानिः
 प्रस्थितो हृदम् ॥ २५ ॥ नातिवृर ततो मदीया पदभ्यामिधः प्रराविपः । सम्मारः चवन
 अशुद्धमशालस्य घीमनः ॥ २६ ॥ इदं नते महामात्रा विदुरो हृष्टवात्-पुरा । मीहहंश
 समसंयाक क्षात्रयाणाञ्च सद्युगे ॥ २७ ॥ एवं विचिन्तयान्स्तु प्रविविक्षहृदे ततः । बुः
 समततहृदयो हृष्टवा राजा बलक्षयम् ॥ २८ ॥ पाण्डवोपि महाराज घृष्टधूमनरागेनाः
 अक्षयधोवन्त सन्दीप्तय राजन् बलं प्रात ॥ २९ ॥ शक्त्याद्येयासहस्त्रानां बलानामभि
 गज्जताम् । स हृष्टमकरान्माधि गाण्डायेन घनञ्जयः ॥ ३० ॥ तत्र हृत्वा निराश्रयण
 सामात्यान् सिद्धं च धुभिः । रथे इयतेहयं निघृन्तजुनां बहुराभत ॥ ३१ ॥ सुबलस्य इत
 भारतम् इत्तु पाण्डु राथयो म श्रुत् अरुल राजा दृग्गधननं युद्धम किता साथोका
 नही दृष्टा ॥ ३१ ॥ इ महाराज उम अकन राजाने उपपकार गेजितदुय शत्रुआका प्रार
 अपनो सनाके नाशको देखकर आपकापत्र दयं धन अपने मृतक घोडेका छाडकर युद्धस
 पूर्वकीअरे भागा ॥ ३१ ॥ भार बडी तेजसो अपनी गदाका लेकर हृदकाचला । फरपदल
 हो थाहोदर जाकर उसने धूमके अभ्यासो महायुद्धमान विदुर जाके वचनकाभ्याण
 किया । ३६ । कि निश्चय करके पत्रममय म बड ज्ञाना विदुरजान युद्धम हपनागा
 क और अन्य सब क्षात्रयो क नाशका जनलिंग था ॥ ३७ ॥ हराजा वैद वयाशन
 इसकार अधिक विचिन्तकरता हृदम प्रवेश करजाने का आपलोपो सनाके नाश
 को देखकर शोक से महादःखो हुआ । २८ । इ महाराज राजाघृत्तगण इमक पाण्ड
 वइ व्रत पाण्डव जनका अग्रवती घृष्टधूमन थी अत्यन्त काषयुक्त हाकर आपका
 सनाके सम्मुख दे ॥ २९ ॥ अतुन-न गाण्डोव धनपक द्वारा उन मम्मव गजन
 नाले शक्ति दधारा खड्ग और मामो को हाथ में रखनवाले शरवरो को सङ्कल्प
 निष्कक किया । ३० । उन सबकी मन्त्री और वान्धवों समेत तक्षण धारवान
 भाषासे मारकर श्वेत घोडेवाल रथ पर अजुन बहुत शार्भायमान हुआ । ३१ ।

found himself alone without a comrade. Seeing the great
 destruction of the army and the enemies roaring loud, your
 son Duryodhan left his horses and went on foot towards the
 East. He went towards a lake armed with his mace. Going for
 ward for some time, he remembered the words of wise Vidur. 26.
 He then said to himself, "Surely wise Vidur knows of the great
 destruction of our armies." Thus thinking, Duryodhan, intent on
 entering the lake, was very sorrowful at the loss of his army. Then
 all the Pandavas led by Dhrishtadyumna, much enraged, rushed
 against your army. With his Gandiv bow Arjun made false the
 intentions of the warriors armed with various weapons. 30. Having

पुत्रे स्वधाजिरथकुहरे । महाबलमिष उग्निममवत्तावर्कं वलम् ॥ ३२ ॥ अनकशतसाहसो
 वले दुर्योधनस्य ह । नाग्यो महारथो राजन् जीवमानो व्यवहस्य ॥ ३३ ॥ द्रौणपुत्रा
 इने धीरात्तथैव कृतवर्मण । कृपाच्च गौतमाद्राजन् पार्थिवोच्च तत्तात्मजात् ॥ ३४ ॥
 धृष्टद्युम्नस्तु मां हृष्ट्या हसन् सातथकिमप्रधीत् । किमेतेन गृहीतेन नामेनायोऽस्तिजो
 वता ॥ ३५ ॥ धृष्टद्युम्नवच श्रुत्वा शिनेर्नता महारथ । उद्यम्य निशानं सङ्ग इन्तु
 मामुद्यतलदा ॥ ३६ ॥ तमागम्य महाप्राक् कृष्णो द्वैपायनोऽप्रधीत् । मुकुरतां मन्त्रवो
 जीवन्न हन्तव्य कथञ्चन ॥ ३७ ॥ द्वैपायनवचः श्रुत्वा शिनेर्नता कृताऽजलि । तनो
 मामप्रवीणमृश्रवा स्वस्ति सञ्जय साधय ॥ ३८ ॥ अनुज्ञातस्त्वह तेन न्यस्तवमा निरा
 युच । प्रातिष्ठ येन नगरं सायाग्रे रुधिरोक्षित ॥ ३९ ॥ क्रोशामात्रमपाकान्तं नदा
 पाणिमथस्थितम् पतं दुर्योधनः राजप्रपद्य । मृशविक्षतम् पाणिमथस्थितम् ॥ ४० ॥

पोंडे हाथी और रथोंसमेत सौबलके पुत्र शकुनीके मग्नेपर आपकी सेना टूट्ठूये
 महाबल की समान होगई । ३२ । वीर अश्वत्थामा कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य और
 आपके पुत्र राजा दुर्योधन के मित्राय दूपरा जीवता हुआ कोई महारथी देखने में
 नहीं आया । ३४ । फिर धृष्टद्युम्न मुझको देखकर हँसताहुआ सात्यकीसे बोला
 कि इसके पकड़ने से क्या प्रयोजन है और जीवतहुये से भी कुछभी प्रयोजन
 सिद्धनहीं है । ३५ । तब महारथी सात्यकी धृष्टद्युम्नके वचनको सुनकर
 और तेनघार खड्गको उठाकर मेरे मारने को वृथुक्त हुआ । ३६ । तब बड़ेज्ञानी
 व्यामजीने आकर उससे कहा कि मञ्जय को जीवता छोडा इस को कभी न
 मारना चाहियो । ३७ । अर्ज्यासजीके वचनको सुनकर हाथमोडके सात्यकी मुझको छाड़कर
 मुझसे यह वचन बोला । ३८ कि हे सञ्जय तुम कल्याण का सोचने करो तब
 मैं उसकी आज्ञापाकर कवच और शस्त्रोंको त्यागकर रुधिरसे भराहुआ सोंबकाल
 के समय जिरर नगरेयो उभरकी औरको चलादिया एककोस दृष्टमाने बाके गदा
 हाथमेंलिपे नियत अत्यन्त घायल शरीर मेंने राजा दुर्योधन को देखा । ४० । हे

slain them with their kinsmen and followers, Arjun looked glorious
 on his car drawn by white horses. At the fall of Shikuni and his
 elephants and cars, your army looked like a forest of broken trees.
 No warrior of your army was living except Ashwathama, Kritvarma,
 Kripacharya and your son Duryodhan. Looking at me, Dhrishtadyu-
 mna said to Satyaki with a smile, 'It is useless to keep him alive
 as a captive.' On hearing the words of Dhrishtadyuma, Satyaki
 was ready to slay me with his sharp sword. Then wise Vyasa
 interceded and told him to set me free alive. With joined palms,
 Satyaki released me, saying, 'You are free Sanjaya.' At this, I
 left arms and armour and with bleeding body took the way to
 the city. After walking a mile, I saw Duryodhan in his blood stained
 body holding his mace in his hand. 40 With eyes full of tears he

सः तु मायभ्रूणीक्षो न शुकनोत्पमिषीक्षितुम् । उपमेक्षतः मां दृष्ट्वा तदा
 क्षीणमवस्थितम् ॥ ४१ ॥ तच्छाहमपि शोचन्तं दृष्ट्वैका किनमाहवे ।
 मुहूर्त्तं माशक्तं वक्तुं किञ्चिद्दुःखपरिप्लुतः ॥ ४२ ॥ ततोऽस्मै तदहं सर्वमुक्तवान्
 ब्रह्मं तदा । हेपायनप्रसादाच्च जीवतो मोक्षमात्मनः ॥ ४३ ॥ मुहूर्त्तमिव स्व-
 प्रतिकल्पय च चेतनाम् । भ्रान्तश्च सर्वसैन्यानि समप्लुतत मां ततः ॥ ४४ ॥ तस्मै तद्
 हमा वक्षे सर्वं प्रत्यदर्शिवान् भ्रान्तश्च निहतान् सर्वान् सैन्यञ्च विनिपातितम् ॥ ४५ ॥
 त्रयः किल स्याः क्षिप्रस्तावकानां नराधिप । इति प्रस्थानकाले मां कृष्णद्वैपायनोऽत्र
 वीत् ॥ ४६ ॥ स दीर्घमिव निश्चस्य विप्रेक्ष्य च पुनः पुनः । असी मां पाणिना स्पृष्ट्वा
 पुत्रले पर्येभाषत ॥ ४७ ॥ त्वद्ग्यो मेह संग्रामे कश्चिज्जीवति सञ्जय । द्वितीयं न हि
 पश्यामि समहायाश्च पाण्डवाः ॥ ४८ ॥ श्याः सञ्जय राजानं प्रहाचक्षुषमीश्वरम् ।

राजा उससमय बह अश्रुओं से पूर्णनेत्र मेरी ओर देखनेको समर्थ नहीं हुआ
 इसकारण दुःखी नियत मुझको देखकर ठहरा रहा । ४१ । और मैंभी युद्ध में शोच
 करनेवाले उस अकेलेको - देखकर बड़े दुःखमें संयुक्त होकर एक मुहूर्त्त भर भी
 शक्तिपाप करने की समर्थ नहीं हुआ । ४२ । इस के अनन्तर मैंने अपने सब
 पकड़े जानेका वृत्तान्त उससे कहा और व्यासजीकी कृपासे अपने जीवते हुए
 कुटुम्बान की वर्णनकिया । ४३ । इसके पीछे उसने एक मुहूर्त्त ध्यानकरके सचेतता
 की पाकर भाइयोंमेंसे सब सेनाके लोगों को मुझमें पूछा । ४४ । तब अपने नेत्र
 से देखनेवाले मैंने सब वृत्तान्त उससे कहा सब भाइयों का मरना और सेनाका
 नाशहोना वर्णन किया । ४५ । हे राजा निश्चयकरके आपके तीनरथी वाकी है यह
 वृत्तान्त चक्रतेसमय व्यासजीने मुझसे कहा है । ४६ । तब लम्बीश्वासा लेकर और
 बारम्बार शोचकर उस आप के पुत्रने मुझको हाथसे स्पर्शकरके यह वचन कहा
 । ४७ । कि हे सञ्जय इन युद्धमें तरे सिवाय अब कोई जीवता नहीं है यहाँकिसी
 दूसरे को नहीं देखताहूँ और पांडव सहायतावाले हैं । ४८ । हे सञ्जय अब तुम
 उस ज्ञानरथी नेत्र रखनेवाले महाराज घृतराष्ट्र से कहना कि आपको पुत्र दुर्गोचन

was hardly able to look at me and waited for my arrival. Seeing
 him alone and in great distress, I remained tongue-tied for a while,
 and then I told him of my capture and release by the intercession
 of Vyas. He regained consciousness after some time and enquired
 about his brothers and warriors. I told him of the destruction of
 all of them as I had seen. 45. I told him that I was informed by
 Vyas that his three warriors had escaped destruction. Then with
 deep sighs and grief, having touched me with his hand, your son
 said, "I see, Sanjaya that none except you is alive. I see none on
 my side, while the Pandavas have friends. Inform my father that
 his son has entered the lake. Destitute of friends, sons and brothers

दुर्योधनस्तथ सुतः प्रविष्टो हृदयित्युत ॥ ४९ ॥ सुहृद्भिः स्ताहशीर्हीनः पुत्रैश्च तुभिरेष
 च । पापद्वेषेण हृते राज्ञे क्रीं नु जीवित भादशः ॥ ५० ॥ धार्मिकीयाः सर्वाग्निं मास्त्रं
 मुक्तं गृह्णादयान् । अग्निंस्तोयहृदे सुते जीवन्तः प्रशेषिततम् ॥ ५१ ॥ अथ वसुधैव कुटुम्बकम्
 राजा प्रविशत् हृदे नृपः । अस्तम्भयत् तोयञ्च मायया मनुजाधिप ॥ ५२ ॥ तस्मिन्
 हृदे प्रविष्टे तु श्रीमथात् अग्निवादान् । अपश्यं संहितानेकरुतं देशे समुपेयुवः ॥ ५३ ॥
 कृपं शां हृतं वीरं द्रौणिश्च रथिनां वरम् । भोजेञ्च कृतघर्माणं सहिंश्च शरविश्व
 तान् ॥ ५४ ॥ ते सर्वे मामभिप्रेक्ष्य तृणमभ्यागच्छेद्यन् । उपयायेचमान्शुद्धिदृष्ट्यां
 जीवति सञ्जय ॥ ५५ ॥ अपृच्छंश्च ते सर्वे पुत्रं तव सन प्रियम् । कश्चिद्दुर्योधनो
 राजा स नो जीवति सञ्जय ॥ ५६ ॥ आश्रयासंवातह तेष्वस्तदा कुशलिनः नृपम् ।
 तच्चैव सर्वमावद्य यन्मां दुर्योधनोऽवधीत् । हृदयं वादसाचक्षं यं प्रविष्टो नराधिपः
 ॥ ५७ ॥ अश्वत्थामा तु तद्राजाभिरस्य वचनं मम । तं हृदं विपुलं प्रेक्ष्य करुणं पृच्छ
 हृदं प्रवेशः करगया ॥ ४९ ॥ उसप्रकारके भिन्नं पुत्रः और भाईयो स रक्षितहृमा
 पांडवों से राजपहरण होनेपर मुझना कौतु मंनूपः जीवनां रंइसका है ईस सब
 वृत्तांतको और बड़े हृदमें से छुटाहुआ इसा हृदके जलमें गुप्त अंत्यन्तः पायल
 जीवना हुआ मुझको कहेना ॥ ५१ ॥ हे महाराज ऐसा कहकर वह उस
 बड़े हृदमें प्रवेश करगया वहां हृदमें जाकर राजाने अपनी माया से जलको नियत
 किया ॥ ५२ ॥ हृदमें उसके प्रवेश करजानेपर मुझ अकेलेने उस स्थानपर आने
 के अभिलषी थी सवारीवाले तीन रथियोंको देखा ॥ ५३ ॥ अर्थात् सारहत कृपा
 चर्य रथियोंमें श्रेष्ठ वीर अश्वत्थामा भोजवंशी कृतवर्मा इनतीनों को बाणों से
 घायल साथ २ अग्निवालोंको देखा ॥ ५४ ॥ उन सबने मुझको देखकर शीघ्रही घोड़ोंको
 चलायमान किया और समीप आकर मुझसे बोले कि हे सञ्जय तू मारव्य से
 जीवता है ॥ ५५ ॥ पहकहकर सबने आपके पुत्र राजाको मुझसे पूछा कि हेसञ्जय
 वह हमारा राजादयोधन जीवता है तब मैंने उसराजाकी कुशलताकही और वह
 सब बातेंभी उनसे कही जो दुर्योधनने मुझसे कही थीं और उस हृदको भी बताया
 जिममें कि राजा प्रवेश किये हुयेथे ॥ ५७ ॥ हे राजा अश्वत्थामा ने उस भेरे

and deprived of kingdom by the Pandavas, what person like me
 you wish for life. 50. Tell him that I have entered the lake much
 wounded yet alive." Having said this he entered the lake and stopped
 the motion of water by his own skill. When he had entered water, I
 saw three warriors coming that way with tired beasts. I saw
 Kripacharya, Ashwathama and Krtarma wounded with arrows and
 coming together. They moved their horses fast at the sight of
 me and coming close to me they said, "It is by good luck that you
 are alive. O Sanjaya" 55 Having said this, they enquired of me
 about your son, saying, "Is our Duryodhan alive?" Then I told
 them he was alive and repeated before them the words of Duryodhan

वेवयत् ॥ ५८ ॥ अहो धिक् न स जानति जीवितास्मान्नाधिपः । पश्यतां हि वयं
तेन सह योचयितुं परान् ॥ ५९ ॥ त त्तु तत्र चिर कालं विलप्य च महारथाः । प्राद्र

॥ त त्तु गी रथमारोप्य कृपस्वमुपरि

॥ ६१ ॥ तत्र गुल्माः हरित्रलाः सवः

। तत्र संक्षयम् ॥ ६२ ॥ ततो वृथा महा

प्रययुनेगरं प्रति ॥ ६३ ॥ तत्र विक्राश

शब्दः श्रुत्वा तद्वलसंक्षयम् ॥ ६४ ॥

ततस्तु यां पता राजन् क्रन्दन्त्या व मुहुमुहुः कुर्यथ इव शब्देन नादयन्त्या महातलम्

॥ ६५ ॥ आजन्तुः करजेद्यापि पाणिभिश्च शिराभ्युत् । लुलुब्धुश्च तदा कशान् क्राशं

न्यस्तत्र तत्र इ ॥ ६६ ॥ हाहाकारविनाशिन्यां विनाशना उशीलिव । क्राशन्त्यस्तत्र

कुरुदुः क्रन्दमाना विशम्पते ॥ ६७ ॥ ततो वृथं वनामारवाः साश्रुकण्ठा मशातुर्गा

वषन को सुनकर उस बड़े हृद को देखकर दया से विलप किया ॥ ५८ ॥ कि अहो

धिक्कार है कि व राजा हमको जीवित नही जानता है उसके साथहाकर हमलोग

शत्रुओं से युद्ध करनेको समय है ॥ ५९ ॥ वह रथियों में श्रेष्ठ महारथी वहाँ बहुत

देरतक विलपकरके और युद्धमें पीड़ियोंको देखकर भागे पीड़ों मेंसे बचहुय वह

तीनारथी कृपाचार्य के अच्छे अलकुर रथपर मुझको बठाकर सेनाके निवास

स्थान में आये ॥ ६१ ॥ वहाँ सूर्यके अस्त होनेपर भयभीत होकर सब गुल्म अधीत

युत आपके पुत्रों को नाश सुनकर पुकारि ॥ ६२ ॥ हे महाराज इसके पीछे स्त्रियोंके

रत्नक वृद्ध मनुष्य रानी आदि को लेकर नगरको चले ॥ ६३ ॥ वहाँ उस सेनाके

नाशको सुनकर पुकारती और रानीहुई सब स्त्रियों के बड़े शब्द मकटहुये ॥ ६४ ॥

हे राजा वारम्बार शब्द करनेवाले उन स्त्रियोंने कुरी पक्षिके समान अपने आँच

शब्दोंसे पृथीको शब्द यमान किया ॥ ६५ ॥ तब जहाँ पुकारती हुई स्त्रियोंने

उंगलियों और हाथोंसे अपने रेशियोंको पीटा और शिरोंके बालोंको उखाड़ा ॥ ६६ ॥

हे राजा वहाँ हाहाकार करके शब्द करनेवाली और छाती पीटनेवाली शोजती

पुकारती स्त्रियां रोदन करनेलगीं ॥ ६७ ॥ इसके पीछे दुर्पाँधनके अमात्य जोकि

I pointed to the lake which the king had entered. Hearing my words and looking at the lake, Ashwathama wept for grief, saying, 'It is a pity that the king thinks us dead.' Accompanied by him, we can fight the foes." Those warriors wept long and I then fled away out of the sight of the Pandavas. 60. Taking me on their excellent ear, they came to the camp, where at the close of the day all the trees were bewailing the fate of your sons. Then the old guards of women accompanied the queen and other women to the city and the women of the city cried out with grief on hearing the news. They screamed like Kurri birds and filled the earth with their moans. 65.

राजदारानुपादाय प्रययुर्नगरं प्रति । क्षेत्रव्यासकहस्ताश्च दाराध्वजा विशासते । ६० ॥
 शयनीयानि शुभ्राणि स्वर्णवस्त्राण्यग्निश्च । समादाय ध्ययुस्तूर्णं नगरं जनरक्षणः
 ॥ ६१ ॥ अहदपूर्वा या नाट्यां मास्क णापि वेदमसु । दहगुप्ता मदाराज जना याप्ती
 पुरं प्रति ॥ ७१ ॥ ताः स्त्रियो मरतश्च सौकुमार्यसत्तन्विताः । प्रययुर्नगरं तूर्णं हतस्व
 जनवाञ्छवाः ॥ ७२ ॥ अ गोपाला विपालेश्यो द्रवन्ती नगरं प्रति । ययुर्मनुष्याः
 संभ्रान्ता मीमंसेनपार्दिताः ॥ ७३ ॥ अपि त्रिषां भयं तीव्रं पापेश्योभूत् सुदारुणम् ।
 प्रेक्षमाणान्दृश्यान्पुत्रमभावन्नगरं प्रति । ७४ ॥ तस्मिन्सत्त्वा वर्तमाने विप्रस भग
 दाक्षेण युयुत्सुः शोकसंमदः प्राप्तकालमभितयत् ॥ ७५ ॥ जितो दुष्टोपधनः लक्ष्ये
 पाण्डवैर्मामविक्रमेः । एकादशाक्षमवसां भ्रातरश्चास्य सुदिताः ॥ ७६ ॥ हताश्च कुरुवः
 सर्वे मीमंश्रीशूरः सराः । अहमेको विमुक्तस्तु भाग्ययोगादरच्छया ॥ ७७ ॥ विदुतामि

मांसुओं से गद्गद कण्ठ और अत्यन्त दुःखी थे रानी आदि को लेकर नगरको
 चलादिये हे राजा हाथमें बेतलिये रसक लोग और दाराध्वज बहुमूल्य के उज्ज्वल
 शपनोंको लेकर शीघ्रगते नगरको गये । ६१ । हे महाराज जो स्त्रियां महलों में
 से मथप कभी सूट्य से भी नहीं देखीगईयां उन स्त्रियों को पुरमें जातेहुये लोगोंने
 देखा । ७१ । हे भरतर्षभ वह कोमल शरीरवाली स्त्रियां जिनके स्वजनशापण पारे
 गये शीघरी नगरको चलीं । ७२ । और गोपाल विपाल आदिक सब नगरकी
 और हीहे भीषतेन के भयमे पीडित और भ्रान्ती से युक्त मनुष्य चने । ७३ ।
 उन्होंको भी बड़ा असह्य और कठिनभय उत्पन्नहुआ तब पास्पर देखतेहुये नगर
 की ओर हीडे । ७४ । इसप्रकार उस अत्यन्त भयानक भगोडके वर्तमान पीनेपर
 अथेन बुधसूने समयके अनुवार बिन्ताकरी ७५ कि युद्ध में भयानक पराक्रमवाले
 पाण्डवोंने ग्यारह अत्तीठिखी सेनाके स्वामी दुष्टोपधनको विजयाकेया उतके भाई
 पारेगये और बहसव कौरवलोग जिनकेकिमग्रवर्षी भीष्मऔर द्रोणाचार्यये बहभी
 पारेगये में अकेला भारव्य और ईश्वरकी इच्छासे बचाहं । ७७ । सब डरे आदि

The weeping women beat their heads and tore their hair. They
 beat their breasts and wept. The attendants of Duryodhan
 with tears in their eyes and voice choked with grief came to the city
 with the queen. The guards with staves in their hands, and
 doorkeepers with clean and precious beds went in haste to the
 city. The women who were not to be seen even by the Sun in
 their palaces were seen entering the city by the people. 71. The
 delicate women whose kinsmen were slain, came to the city in haste.
 The cowherds too, came back and lost their senses by the fear of
 Bhim. They ran in terror towards the city looking at each other.
 During that general flight, Yuyutu thought in his mind, "The
 Pandavas of dreadful prowess have conquered Duryodhan the owner

च सर्वाणि शिविराणि समन्ततः । इतस्ततः पलायन्ते इतनाथा हतौजसः ॥७८॥ अह
 पृष्ठां दुःखासां भयव्याकुललोचनाः । हरिणा इव विप्रस्ताः प्रेक्ष्यमाणा विशो वश
 ॥७९॥ युयुत्सोऽनस्य सचिवायेकेचिद्वशोविताः । राजदारानुपादाय व्यधावन्नरं प्रति
 ॥ ८० ॥ प्रातःकालमहं मन्ये प्रवेशं तैः सह प्रभो । युधिष्ठिरमनुवाप्य धामुदेवं तथैव
 च । एतदर्थं महाबाहुकर्मयोः सन्न्यवेदयत् ॥ ८१ ॥ तस्य प्रीतो मधुव्राजा निरथं कुरु
 णवेदिता । परिष्वज्य महाबाहुर्वेदयापुत्रं व्यसञ्जयत् ॥ ८२ ॥ ततः स्वरथमास्थाव
 हुतमभ्यान्वादेयत् । सम्वाहयित्वांश्चापि राजदारान् पुरं प्रति ॥ ८३ ॥ तैश्चैव सहितः
 क्षिप्रमस्तं गच्छति भास्करे । प्रविष्टो हस्तिनपुरं वाष्पकण्ठो भ्रूलोचनः ॥ ८४ ॥ अथ
 दयत महाप्राज्ञं विदुरं सोमलोचनम् । रातः समीपनिष्क्रान्तं शोकोपहतचेतनम् ॥ ८५ ॥
 तमब्रवीत् सतपसूतिः प्रणतन्त्रप्रतः स्थितम् । अस्मिन् कुरुक्षेत्रे वृत्ते दिष्ट्या त्वं पुत्र
 ऋषिसि ॥ ८६ ॥ विना राक्षः प्रवेशाद् किमस्ति त्वमिहागतः एतस्मै कारणं सर्वं विल

के लोग चारों ओर से भगे जिनके स्वामी मारे गये वह कान्ति शोभासे रहित
 अपूर्वरूप दुःखसे पीड़ापान भयसे व्याकुल चन्द्र इधर उधरसे ऐसे भागते हैं कि
 जैसे कि सिंहसे भयभीत शृगः दशोदिशाओं को देखते हुये भागते हैं । ८९ ।
 युयुत्सनके प्रधान और सलाहकार जो कुछ बाकी रहे वह राजकी स्त्रियोंको लेकर
 नगरकी ओर दौड़े । ८० । हे प्रभु मैं उनके साथ नगरमें पहुंच जानाही समयके
 अनुसार उचित जानताहूँ महाबाहु युयुत्सुने युधिष्ठिर और भीमसेनको जतलाकर
 इस प्रयोजनकी प्रकटोकिया । ८१ । सदैव दयावान् राजा युधिष्ठिर बसपर प्रसन्न
 हुआ तब महाबाहु ने मिलकर उस युयुत्सुको विदा किया उसके पीछे उसने रथपर
 सवार होकर शीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया और भागती हुई राजस्त्रियोंको
 पुरमें ले गया । ८३ । मृत्यु के अस्तहानेपर आसुओंसे पूर्णनेत्र और गहदकण्ठ
 युयुत्सु उन सबको साथलिये, शीघ्रही हस्तिनापुरमें पहुंचा । ८४ । और आग्नेत्र
 शोकसे व्याकुलचित्त वडेव्रानी राजाको और समीपसे निकले हुये विदुरजी को
 देखा । ८५ । वह सच्चे धैर्यवाक्ये विदुरजी उस नन्नीधुर आगे नियत होनेवाले
 युयुत्सुसे बोले हे पुत्र इस कौरवों के नाश होनेमें तुम भास्वसे जगिते हो । ८६ ।

of eleven akshaubhinia. His brothers too are slain as well as the
 Kauravas who had Bhishm and Dronacharya for their leaders. Fate
 has kept me alive. 77. The people ran away from the tents. They
 whose relations were slain, in battle ran away like deer terrified of a
 lion. The rest of the advisers of Duryodhan went away towards
 the city with women. 80. To reach with them in the city was
 the best course in my opinion. Brave Yuyutsu begged leave of
 Yudhishtir and Bhim. Yudhishtir, who was ever kind hearted,
 allowed Yuyutsu to go away. Yuyutsu mounted his car and soon
 brought the women to the city. With eyes full of tears at sunset,
 and voice choked with grief, Yuyutsu soon brought them to Hastina-
 pur. Vidur saw him much distressed and said, "You alone

रेण निवेदय ॥ ८७ ॥ युयुत्सुश्चासन्नितहतेऽशकुनी तात सहातिसुतधान्यधेः इतश्चैव
 परिचारो राजा दुःशोचनस्ततः । स्वैकं ज्ञाहयमुत्सृज्य प्रांमुक्ष्य प्राश्नयन्त्यात् ॥ ८८ ॥
 अपक्रान्ते तु नृपतेः स्फुरन्त्याया रनिघशतात् ॥ मयेऽप्याकुलितं सर्वं प्राद्वक्ष्यमगरं प्रति ॥ ८९ ॥

। धाहनेपुःस्तमारोप्य स्त्रयप्यक्षाः प्राप्रचन्
 नहकेशवमः । मखिःटीः हस्तिनेपुरं रक्षन्
 लोकात् प्रघातवतात् ॥ ९१ ॥ एतत् श्रुत्वा तु वचनं वैश्यापुत्रेण भाप्रितम् । प्राप्तेका
 लमितिः हारवा विदुरः सर्वं धर्मवित् ॥ प्रपूजयद्भेयात्मा, युयुत्सुः स्वाकृपकोविदम् ॥ ९२ ॥
 प्राप्तकालमिव सर्वं मुवंतो भरतक्षये ॥ मघ-रथमिह विश्रान्तः श्वोमिगन्ता युधिष्ठिरम्
 ॥ ९३ ॥ एतावदुक्त्वा वचनं विदुरः सर्वं धर्मवित् । युयुत्सुः समनुशाप्य प्रविशदा नृपक्ष-
 यम् युयुत्सु रपिता रात्रिस्वपृहेन्यवत्सदा ॥ ९४ ॥ तिह्रदप्रवेशपर्वणि एकोर्नात्रशोष्यायः

राजाके पहुँचने विना तू यहाँ ययाः आया है इस सब कारणका व्यतिः समता मुखसे
 कही ॥ ८७ ॥ युयुत्सुः लोल
 शेषा वचेहुये परिवारकाः
 भयसे
 पूर्वकी ओर भागगया ॥ ८८ ॥ सेनाके निरास स्थानके लोग राजाके दूर चले
 जानेपर भयसे व्यकुल होकर सब नगरको भागे ॥ ८९ ॥ इसके पीछे प्रधान
 अधिकारी और नौकर बाकर लोग राजा दुःशोचन समेत सब भाइयोंकी शिष्टियोंकी
 सवारियों पर बैठकर सेनासे भागे ॥ ९० ॥ उसके पीछे मैं केशवजी समेत राजा
 युधिष्ठिर से पूछकर दौड़तेहुये मनुष्यों की रक्षा करनाहुआ हस्तिनापुरमें आया
 ॥ ९१ ॥ युयुत्सु के कहेंहुये इस वचनकी सुनकर सर्वधर्मज्ञ बड़े बुद्धिवान विदुरजी
 ने युयुत्सु की प्रशंसाकरी और यह वचन ॥ ९२ ॥ कि यह सब समय के
 अनुसार है अब तू यहाँ रहकर प्राप्तकाल युधिष्ठिरके पासजायगा ॥ ९३ ॥ आशुभरे
 विदुरजीने इतनी बात कहकर और युयुत्सु से पूछकर राजमहलमें प्रवेश किया
 युयुत्सु भी उस रात्रिको अपने घर में रहा ॥ ९४ ॥

have escaped from general destruction of the Kurava. Why have
 you left the king behind? Pray tell me all that has happened."
 Yuyutsu said, "At the fall of Shakuni and his followers, Duryodhan
 left the rest of the warriors and ran away for fear. The people
 left behind, ran towards the city in consternation. The principal
 servants brought the women of Duryodhan and his brothers to the
 city." 90. "I asked permission of Keshava and Yudhishtira and have
 come with the returning men, protecting them in the way." At this
 Vidura praised the humane action of Yuyutsu and said, "It was pro-
 per what you did. Rest here for the night and return to Yudhishtira
 early in the morning." Having talked with Yuyutsu, Vidura returned
 to the palace with tears in his eyes, while Yuyutsu remained there,
 for the night. 94.

धृतराष्ट्र उवाच । हतेषु सर्वमन्येषु पाण्डुपुत्रे रणाजिरे । भ्रम सैन्यावशिष्टान्
 किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ हृतरमां वृषध्वं द्रोणपुत्रश्च वीर्यवान् । दुर्योधनश्च
 मन्वांसो राजा विमकरोत्तदा ॥ २ ॥ मञ्जय उवाच । सप्रवत्सु दारेषु क्षत्रियाणां
 महारथनाम् । विदुते शिविर दूष्ये भृशोद्विग्नास्त्रयो रथा ॥ ३ ॥ निशम्य पाण्डुपुत्राणां
 तत्रा विजयिनां ध्वनम् । विदुत शिविर इष्ट्वा सायाहने राजगृहिन । स्थान नारो
 ध्यन्नेत्र ततल्लो हृदमक्षयु ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरोपि धर्मात्मा भ्रातृभि सहितोरणे । हृष्ट
 पर्यन्वर्द्राजन् दुर्योधनवधस्तथा ॥ ५ ॥ मार्गमाणास्तु सकुडालव पत्र जयैषिण ।
 यन्ततोऽप्येपमाणास्तु वैषापदयन् जनाधिपम् ॥ ६ ॥ स हि तीक्ष्ण धेनेन गदापाणिर
 पाकृमत् । त हृद् प्राविशच्छापि विष्टयाप स्वमायया ॥ ७ ॥ यश तु पाण्डवाः

॥ गदापर्व ॥

अध्याय ३० ॥

धृतराष्ट्र बोले हे संजय युद्धभूमि में, पाण्डवों के हाथसे मत्र सेनाके मरनेपर
 मेरी उन शत्रुचीहृद् सेनाओंने कौनसाकर्म किया । १ । उससमय पराक्रमी
 कृपाचार्य, अश्वत्थामा और निवृद्धि राजा दुर्योधन ने क्या किया । २ ।
 संजय बोले कि प्रहात्मा क्षत्रियों की स्त्रियों के शीघ्र चलेजाने भागजाने और डेरों
 के खालों होनेपर विजयके अभिलाषी अत्यंत व्याकुल तनोरथियों ने । ३ । विजय
 करनेवाले पाण्डवोंके शब्दोंको, सुनकर और सायकालके समय डेरोंको भागाहुआ
 देखकर वहां निवामको स्वीकार नहीं किया और वहां से चलकर फिर वह
 हृदकेही समीपगये । ४ । धर्मात्मा युधिष्ठिर भी भाइयोंसमेत युद्धमें मत्तन्वित्त
 दुर्षोषन के मारने की इच्छा ने चारोंओर को भ्रमण करनेलगा । ५ । हे राजा
 फिर शत्रुर्न क्रोधयुक्त आपके पुत्रके विजयकरनेके अभिलाषी पाण्डव उसके राजको
 करनेलगे विचार पूर्वक उपायसे दृढ़नेवालोंने राजाको नहीं देखा । ६ । वह घडे
 वेगमेत गदाहाथमें लेकर दूर चलगया और अपनी मायासे जलको रोककर उस

CHAPTER XXX

GADA PARV

Dhritrashtra said, "What did the rest of the warriors, who had escaped destruction from the Pandavas do? What did valiant Kritvarma, Kripacharya, Ashwathama and foolish Duryodhan do?" Sanjaya said, "When the women of the warriors had vacated the tents, the three warriors anxious for victory, did not like to stay there to hear the victorious cries of the Pandavas and to see their own camp deserted. They went again near the tank. Yudhishtir the just and his brothers roamed here and there in search of Duryodhan. 5. Then desirous of conquering your sons, the Pandavas went out in

सर्वे सुपरिश्रान्त वाहना- ततः स्वशिविरं प्राप्य ध्वतिष्ठन्तः । स सैनिका
 ॥ ८ ॥ ततः कृपश्च द्रौणिश्च कृतधर्मा च सारथतः । सन्निविष्टेषु प्रयातेषु प्रया
 तास्तं हृदं शनैः ॥ ९ ॥ ते तं हृदं समासाद्य यत्र शेते जनाधिपः । अश्रयमावन्तं हृदं च
 राजानं सुप्तमभसि ॥ १० ॥ राजन्नुत्तिष्ठ! युध्यस्व सद्दास्माभिर्युधिष्ठिरम् । जित्वा
 वा पृथिवीं भुङ्क्ष्व हतो वा स्वर्गमाप्नुहि ॥ ११ ॥ तेषामपि बलं सर्वं इतं दुर्योधनं
 स्वया । प्रतिधिञ्जीश्च भूयिष्ठ ये शिष्टास्तत्र सैनिकाः ॥ १२ ॥ न ते वेगं विपदिदुं शक्या
 स्तव विशाम्पते । अस्माभिरभिगुप्तस्य तस्मादुत्तिष्ठ भारत ॥ १३ ॥ दुर्योधन उवाच ।
 दिष्ट्या पश्यामि धो मुक्तानीहशात् पुरुषक्षयात् । पाण्डुकौरवसम्मर्द्दाञ्जीवमानाश्च
 र्षभान् ॥ १४ ॥ विजेयामो धयं सर्वं विधाता विगतबलमाः । मघन्तश्च परिभ्रान्ता
 घयञ्च मसन्निहताः । उदीर्णञ्च बलं तेषां तेन युद्धं न रोषये ॥ १५ ॥ न स्वेतदद्भुतं
 हृदमे प्रवेश करगया ७ । जब सब पांडव बहुतथकी सवारीवाले हुये जब डरे को
 पाकर अपनी सेनाके लोगोंसमेत डेरमें नियतहुये । इसके पीछे कृपाचार्य, अश्वत्थामा
 पाण्डवोंके डेरमें प्रवेशकरने पर बड़ी सावधानी और अलज्जतासे उसहृदके
 १०/पासगये उन्होंने उस हृदको जहाँपर कि राजा सोताथा पाकर। १०। जनमें सोने
 वाने अजेय राजादुर्योधनसे कहा कि हे राजा उठो हमारेसाथ होकर युधिष्ठिरसे युद्धकरो
 ११। और उसको विजयकरके पृथ्वीकोभौंगो अथवा मृतकहोकर स्वर्गको पावो हे दुर्योधन
 तुमनेभी उन्हींकी सब सेनामारी । १२ । और वहाँजो सेनाकेलोग वांकीहैं उनको
 अत्यन्त घायल किया हे राजा यह आपके वेग सहनेको समर्थ नहीं है । १३ ।
 जबकि तुम हमसे राक्षितहोकर लड़ोगे हे भरतवंशी इस कारण से आप उठो
 तब दुर्योधन बोला कि मारज्जसे इसप्रकारके पाण्डव और कौरवों के मनुष्यों
 के नाश होनेपर युद्धमे वचे । १४ । और जीवतेहुये हम नरोत्तमों को देखताहूँ
 विश्राम करनेवाले और पक्षावटसे रहित हमलोग सब मिलकर विजयकरेंगे
 आप धकेहुये हैं और हम अत्यन्त घायल हैं और उन्हींकी सेना बड़ीहै इतनेतुसे
 युद्धको स्वीकार नहीं करताहूँ । १५ । हे धीरलोगो यह अपूर्वबात नहीं है जो

search of him, but they could not find him. He had gone away far, armed with his mace, and entered the lake after stopping the motion of water with his skill. The Pandavas much tired, returned to their camp. Kripacharya and Ashwathama approached the lake unsoon by the Pandavas. Finding Duryodhan within water, they said to him, " Rise up, king, and come with us to the field of battle. 11. ' Conquer him to rule over the earth or to gain heaven after death You too have destroyed a great portion of their army. The rest of their army is much wounded and can no longer withstand your velocity, if you will lead us to fight. Then be up and doing. " Duryodhan said, " It is by good luck that I see you safe after the great destruct.

वीरा यद्वो महद्भिर्द मनः । अस्मान् च परा भक्तिर्न तु कालः पराक्रमः ॥ १६ ॥ विश्वा
 म्यैका निशामद्य' भवद्भिः सहितो रणे । प्रतिघोस्वाम्यहं शत्रून् श्वो न मे शत्रु
 संशयः ॥ १७ ॥ सञ्जय उवाच । एवमुक्तो ब्रवीद्भीष्मो राजानं युद्धदुर्मदम् । उत्सिष्ठ
 राजन् मद्रन्ते विज्रयामो रणे परान् ॥ १८ ॥ दृष्ट्वापूषेन दानेन सत्येन च कथेन
 च । शपे राजन् यथा ह्यद्य निहन्तिपामि सोमकान् ॥ १९ ॥ मा'स्म यत्कृतां प्रीतिं प्राप्नुयां
 सञ्जनोचिताम् । यदीमां रज्रनो' ध्रुष्टां न निहन्मि पराक्रमे ॥ २० ॥ नाहत्वा सर्वं
 पाञ्चाळान् विमोक्ष्य क्वचनं विमो । इति सत्यं ब्रवीम्येतत्समे ध्रुणु जनार्धिप ॥ २१ ॥
 तेषु सम्भाषमाणेषु द्वाधास्तं देशमागयुः । मांसमारपरिश्रान्ताः पानीपार्थ बहवोऽपि
 ॥ २२ ॥ ते हि नित्यं महाराज भीमसेनस्य दुग्धकाः । मांसमारानुपाजर्हन्मकवा पर
 मथा विमो ॥ २३ ॥ ते तत्राधिष्ठितास्तेषां सर्वे तद्वचनं रहः । दुष्यो'धनवचनैश्च शुभ्रुः

मुद्गरा चित्त वडा उत्साहयुक्त है और हममें बड़ी सामर्थ्य है परन्तु पराक्रम का
 समय नहीं है । १६ । अब मैं एक रात्रि विश्राम करके आप लोगोंके साथ प्राप्त
 काल के समय युद्धमें शत्रुओं से लड़ूंगा इसमें मुझको संशय नहीं है । १७ । संजयबोले
 कि इस प्रकार दुष्यो'धक वचनोंको सुनकर अवतरणप्राप्ती उस युद्धदुर्मद राजासेबोले
 हे राजा उठो । १८ । हे राजेन्द्र अब
 मैं यज्ञ वा वावडी आदिक सुकर्म दान सत्तता और विजयकी शपथ खाताहूँकि
 मैं सोमकों को पाहूंगा । १९ । मैं यज्ञ करनेवाले सज्जनों के योग्य फलोंकाको
 नहीं पाऊँ जो इस रात्रिके व्यतीत होनेपर युद्धमें शत्रुओंकोनहींपाऊँ । २० । इसपर
 सब पाँचानोंको बिनागारेहुये क्वचको नहीं उताहूंगा यह तुमसे सत्य २ कह
 बाहूँ हे राजा उसको मुझने सुनो । २१ । उन्हीं की वार्तालाप करनेकी दशा में
 मांसके भार से थकेहुये अधिक लोग से उस स्थानपर आये । २२ । हे समर्थ
 महाराज वह अधिक सदैव बड़ी भक्तिपूर्वक मांसों के भारोंको भीमसेन के पास
 लातेथे । २३ । परस्पर भिनेहुये और वहाँपर वर्तमान होनेवाले इन अधिकोंने एकान

ion of the Kauravas and Pandava. You can win them no doubt. We are yet much tired and wounded and they have still many warriors in their army. I therefore am not prepared to fight. It is no wonder that you still desire to fight; but though we have power, I think it is no time to show our prowess. 17. Having rested one night, I shall go with you to fight with the foes." Sanjaya said, "Having heard the words of Duryodhan, Ashwathama again said, "Rise up, king, we shall yet win. I swear by my good deeds that I shall destroy the Simris, 20 May I not get the fruit of my good deeds, if I do not slay the foes at Simris. I shall never put off my arm sur without slaying them." While they were thus talking together some butchers passed that way. They always supplied meat

सङ्गता मिथ ॥ २४ ॥ त्रेपि सर्वे महेश्वाना अयुदाथित कीरव । नियन्व परमश्च
 क्रेस्तदा वै पुत्रकाक्षिणः ॥ २५ ॥ तौस्तथासमुदाह्वयाय कौरवाणा महारथान् । अयु
 दमतसञ्चैव राजान स्थितमम्भसि ॥ २६ ॥ तेषां ध्रुवा च संवादे रौद्रश्च सलिले
 सतः । व्याघ्राश्रयजान् राजेन्द्र सलिलस्थि सुयोचनम् ॥ २७ ॥ ते पर्व पाण्डुपुत्रेण
 पृष्टा ह्यासन् सुतं तव । यदृच्छोपगतोक्तत्र रोजानं परिमार्गता ॥ २८ ॥ ततस्तं पाण्डु
 पुत्रस्त्वै स्मृत्या तद्भाषितं तदा । अयोऽभ्यमनुषम्राजन् मृगव्याधाः शनैरिदम् ॥ २९ ॥
 दुर्योधनं ह्वापयामो धनं दास्यति पाण्डव । सुश्रवणगिह न ह्वातौ रुदे दुर्योधनो
 नृपः ॥ ३० ॥ तस्माद्भ्रूतामहे सर्वे पत्रं राजा युधिष्ठिर । भाष्यातु सलिले सुतं
 दुर्योधनमप्रणमम् ॥ ३१ ॥ घृतराष्ट्रात्मजं तस्मै भीमसेनाय धीमते । शयानं सलिलं
 सर्वं कथयामो धनमुते ॥ ३२ ॥ स नो दास्यति सुमीतो धनानि षडङ्गान्युत । किं ना
 तमं उन्होके सव वचनं और दुर्योधनके वचनोको सुना । २४ । तव कौरवके युद्ध
 से अनिच्छावान् हानिपरं उन्सव युद्धाभिलाषी वदे धनुषधारियोनि भी युद्धक
 निमित्त बड़ा हठकिपा । २५ । हे राजेन्द्र उन् वधिको ने कौरवों के उन महारथियों
 को उसप्रकार देखकर और युद्धसे अनिच्छावान् हृदमें नियत राजाको जाजकर
 । २६ । उन्होकी और जल में वत्तमान राजाकी वात्तालाप को सुनकर जनमे
 निषते दुर्योधनको जाना । २७ । देवकी इच्छा से समीप में उन वधिको
 से राजा के खोज करनेवाले पाण्डवों ने पूछा आपके पुत्रको । २८ । हे राजा
 तव वह मृगोंके मारनेवाले पाण्डवों के वचनको स्मरण करके धारपने से परस्परम
 पह वाले । २९ । कि जो हम दुर्योधन को बतादेंगे तो पाण्डव हम को धन दंग
 राजा दुर्योधन इस जल में गुप्त है इस हेतुसे हम सब उम जलमें सोनवाले कोधुपुके
 दुर्योधन के प्रकट करने को वहापर चले जहाँ पर कि राजा युधिष्ठिर है । ३० ।
 हम सब इस जल में सोनवाले धृतराष्ट्र के पुत्रको उस बुद्धिमान धनवान् भीमसेन
 से वर्णन करें । ३१ । इस बातको सुनकर अत्यन्त प्रसन्नचित्त वह भीमसेन हम

to Bhishm. They heard their conversation by chance, while they were
 instigating Duryodhan to fight 25 Seeing the Kaurava warriors there
 talking with Duryodhan who was then unwilling to fight they knew
 the latter, to be hidden in the tank. 27 The butchers had been ques
 tioned by the Pandavas about your son They remembered those
 words and sad gently with one another, "The Pandavas will give us
 immense wealth on our giving them an information about Duryodhan,
 who is lying here hidden in the tank. Let us go away to inform
 Yudhishtir 31 We shall inform wise and wealthy Bhim of the
 whereabouts of Duryodhan and he will give us immense wealth
 Why should we trouble ourselves about getting more flesh " Hav
 ing thus consulted t other, they went with loads of flesh to the camp

भीमसेन शुष्केण परिकल्पितेन शोषिणा ॥ ३३ ॥ एष मुक्तरथा तु ते व्याधा. संमहदा घना
 धिनः । मासमारानुपादाय प्रद्युः शिघिरं प्रति ॥ ३४ ॥ पाण्डवापि महाराज लब्ध
 कस्याः प्रहारिणः । अपश्यमानां समरे दुर्योधन उपस्थिततम ॥ ३५ ॥ निकृतेस्तस्य
 पापस्य ते पारं गमनेत्सवः । चारान् क्षेपययामासुः समन्तात्तद्गजाजिरे ॥ ३६ ॥ अगम्ब
 तु तत. सर्वे मष्ट दुर्योधनं नृपम् स्थवेक्ष्यन्त सहिता घर्मराजस्य सैनिका । ३७ ॥
 तेषां तद्वचनं श्रुत्वा चाराणां भरतर्षभ । चिन्तामयागमर्त्ताग्ना निशङ्क्यास च पाण्डव
 ॥ ३८ ॥ अपस्थितानां नाना पाण्डूनां भरतर्षमातस्माद्देशाद्वाफ्रम्य स्वरिता लुब्धकाविभो
 ॥ ३९ ॥ नाजगमु शिघ्रं दृष्ट्वा दृष्टा दुर्योधनं नृपम् चार्थ्यमाणाः प्रविष्टाश्च भीमसेनस्य
 पश्यतः ॥ ४० ॥ ते तु पाण्डवमासाद्य भीमसेनं महाबलम् । तस्मै तद् सर्वमाचष्ट्युर्ष
 दृष्टं वृक्षं वे भुनम् । ४१ ॥ ततो वृकोदरो राजन् दृष्ट्वा तेषां घनं बहु । घर्मराजाय
 तद् सर्वमाचक्ष पश्यतः ॥ ४२ ॥ असौ दुर्योधनो राजन् विहातो मम लुब्धके । सत्सव

को बहुत घन देगा हम को हम सूत्रे और आघात से उत्पन्न कठिन मांस से क्या
 लाभ है । ३३ । तब अत्यन्त प्रसन्नचित्त घनके अभिलाषी वह अधिक इस प्रकार
 कहकर और मांस के बोझों को लेकर डेरों में गये । ३४ । हे महाराज लक्ष्मणो
 मात महारकर्त्ता युद्ध में निपत दुर्योधनको न देखनेवाले । ३५ । और उत्पापीके,
 छत्रके अन्तर्गत घनके अभिलाषी उन पाण्डवों ने भी उस युद्धभूमिमें चारोंओर
 दूतों को भेजा । ३६ । उसके पीछे घर्मराजकी सब सेना के लोगों ने एकसाथ
 आकर दुर्योधन का गुप्तहोना बर्णनाकेया हे भरतर्षिषों में श्रेष्ठ राजा ने दूतों के
 उस बचनको सुनकर कठिन चिन्ता को पाया और बारम्बार श्वासीलपा । ३८ ।
 हे भरतर्षभ समर्थ धृतरष्ट्र इसके पीछे शीघ्रता करनेवाले वह अधिक उस स्थानसे
 चलकर दुःखीचित्त निपत होनेवाले पाण्डवों के डेरों को आये और राजा दुर्योधन
 को देखकर प्रसन्नचित्त और रोकेहुये भी भीमसेन के देखतेहुये प्रवेश करगये
 । ४० । वहाँ उन्होंने ने बड़े बलवान पाण्डव भीमसेनको पाकर वह सब वचान्तमो
 वहाँ सुनाया भीमसेन से कहा । ४१ । हे राजा इसकेपीछे शत्रु के तपानेवाले
 भीमसेनने उन्हींको बहुतसा घन देकर वह सब वचान्त घर्मराज से कहा कि
 । ४२ । हे राजा उस दुर्योधनका पता अधिकों के कहेन से मुझको विदितहुआ है

The good Pandav marksmen, not being able to find out Duryodhan and desirous of making an end of his enmity, sent their spies in search of him. 36. The warriors informed Yudhishtir that they could not find Duryodhan and the king was very anxious to hear that news. He sighed again and again. In the meantime, the butchers came to the Pandav camp and full of joy at finding out the whereabouts of Duryodhan, they entered the camp, paying no heed to the watchmen's resistance. 40. Then they saw brave Bhim and told him what they had heard, Bhim gave them a rich reward in return and led to

सलिले येने यस्पायं परितस्स्यते ॥४३॥ एतच्चो भीमसेनस्य प्रियं दुःखा विशामपते ।
 अजातशत्रु कीर्त्तयेो हृष्टोऽभूत् सह सोदरे ॥ ४४ ॥ तच्च धुरवा मदेष्वाकं प्रविष्टं
 सलिलं हृदम् । क्षिप्रमेव ततोऽगच्छत् पुरस्कृत्य जनादेनम् ॥ ४५ ॥ ततः किलिकला
 शब्दं प्रादुर्गसीद्विशामपते । पाण्डवानां प्रहृष्टानां पाञ्चालानाञ्च सर्वशो ॥ ४६ ॥
 सिंहनशालतक्षुश्च खेडास्य भद्रतर्पणम् । ह्यरिता क्षत्रिया राजन् अर्जुनोपायनं हृदम्
 ॥ ४७ ॥ ज्ञानं पापी चार्त्तराष्ट्रो हृष्टोऽप्यसहृदये । प्राक्षोशन् सोमकालत्र हृष्टरूपा
 समन्ततः ॥ ४८ ॥ तेवामाशु प्रयाताना रथाना तत्र धेगिनाम् । वसूच तुमुलु शम्भो
 दिवापृक् पृथिवीपते ॥ ४९ ॥ दुर्व्योधन परित्सन्तस्तत्र तत्र युधिष्ठिरम् । अन्वयुःश्च
 रितास्ते वै राजान धान्तवाहनाः ॥ ५० ॥ अर्जुनो भीमसेनश्च मर्दाद्रुजो च पाण्डवो ।
 घृष्टघ्नमन्त्र पाञ्चादयः शिष्यण्डो चापरजित ॥ ५१ ॥ उच्चमौजा युधामन्यु सात्य

वह जल को स्मरकरके सोता है जिसके लिये अप दुख मानने हो । ४३ । हे
 राजा वह कुन्तीका पुत्र अजातशत्रु युधिष्ठिर भीमसेन के उस प्रियवचनको सुनकर
 सगे भद्रों समेत बहुत प्रसन्नहुआ । ४४ । हृदके जलमें प्रवेप करनेवालेवड़े
 अनुपकारी उस दुर्वोधन को सुनकर श्रीकृष्णजी को आगे करके शीघ्रता से वहाँ
 पहुँचे । ४५ । और अत्यन्त प्रसन्न सय पाण्डव और पांचालों के कलकला
 शब्द मकतहुए । ४६ । हे भद्रतर्पण इसकेपीछे सिंहनाद और शब्दोंको भी किया
 हे राजा शीघ्रता करनेवाले क्षत्री व्यासजी के हृदको गये । ४७ । वहाँ अत्यन्त
 प्रसन्नमूर्ति सोमकाल से वारम्बार पुकारे कि पापी दुर्वोधनको
 जानालिया और देखाहे । ४८ । हे पृथ्वीनाथ वहाँ उन शिष्ट चलनेवाले बेगवान
 रथियोंके कठिन शब्द स्वर्गको स्पर्श करतेवालेहुये । ४९ । वह यकी सभारोबाले
 दुर्वोधनके चाहेनेवाले वडी शीघ्रता करनेवाले क्षत्रा जहाँतहाँ राजा युधिष्ठिर पीछे चले
 । ५० । अर्जुन, भीमसेन, पाण्डव नकुल, सहदेव, पांचालदेशका राजा घृष्टघ्नम्
 अजेय शिष्युडी । ५१ । उच्चमौजा, युधाम यु, महारथी सात्यकी और जो पांचालों

Yudhishtir and his brothers had brought him news of Duryodhan,
 and that latter, the cause of so much anxiety, was sleeping under
 water which he had made motionless. Yudhishtir and his brothers
 were much pleased to hear the cherished news brought by Bhishma
 Hearing that Duryodhan had entered the lake, the Pandavas led by
 Shri Krishna, hastened to the place and a great noise was heard of the
 Pandavas and Panchals near the lake of Vyas (as they approached
 it. 47 The fierceful Somak raised war cries saying, " We have found
 out sinful Duryodhan The noise from the car-warriors rang in
 the air The kalстрыas, with tired beasts desirous of seeing Duryo-
 dhan followed Yudhishtir in haste 50 Arjun, Bhim, Nakul,
 Sahadev, Dhristadyumn the prince of Panchals, arrived to Shikhandi

द्विष्य महाराजः । पाण्डवाणाञ्च वे त्रिष्टा द्वीपदेवाश्च मारुत । दशान्व सौ नानाश्च
 अतस्तस्य पदास्य ॥ ५२ ॥ ततः प्रसीतो महाराज धर्मराजः प्रतापवान् । द्वैतावनहृद
 वशात् यत्र दुर्योधनोऽभवत् । शीतामलजल हृद्य द्वितीयमिव सागरम् ॥ ५३ ॥ मायया
 सलिलं लम्प्य यत्राभूते स्थितः सुतः । नतपङ्कने विविता देवयोगे । मारुत ॥ ५४ ॥
 सलिलागतं शोते दुर्धरः कस्मिन्न प्रभो । मानुषस्य मनुष्येन्द्र गदाहस्तो जनाविपः
 ॥ ५५ ॥ तनो दुर्योधनो राजा सलिलान्तर्गतो वसन् । शुश्रुवे तुमुल शब्द जलेदोष
 मनिस्वनम् ॥ ५६ ॥ युधिष्ठिरस्तु राजेन्द्र त हृदं सद्दं सोदरे । आजगाम महाराज
 तत्र पुत्रवधार्थं वै ॥ ५७ ॥ महता शोकनदिन रथनेमिस्वनेन च । ऊहा धृ-
 वन्महोरकुं कम्पयन्नापि मेदिनीम् ॥ ५८ ॥ यधिष्ठिरस्य ते-
 यस्य शब्द महारथाः । कृत
 वमी कृपो द्रोणी राजानामिदममुत्रम् ॥ ६९ ॥ इमे ह्यायाहृष्टा पाण्डवा जितका

के दोष रथी ये वह और द्रौपदी के पुत्र सब घोड़े हाथी और सैकड़ों पदाती
 पीछे चले । ५९ । हे महाराज इसके पीछे प्रतापवान् धर्मराज वंशासजिके उस
 घोरहृदपर पहुँचे जिसमें कि दुर्योधनया और जो कि शीतलना युक्त निर्मल जलसे
 पूर्ण बड़ा विष हृद कूनरे मागरके समान था । ५३ । जिसमें आपका पुत्र मायासे
 जलका रोककर नियन्त्रया हे भरतवंशी वह बड़ी अपूर्व बुद्धिवाला और देवयोगसे
 । ५४ । जलके मध्यमें वर्त्तमान शूरीरोंका मारगेवालाथा हे प्रभु महाराज धृतराष्ट्र
 वह गदाधारी राजा दुर्योधन किसी मनुष्याकोभी मिलेना अतिभवथा । ५५ । उस
 के पीछे जलके मध्य में वर्त्तमान राजा दुर्योधनने वादलोंकी गर्जनके समान कठिन
 शब्दको सुना । ५६ हे राजेन्द्र महाराज फिर राजा युधिष्ठिर अपने सगे भाइयों
 समेत आपके पुत्र को मारने के लिये उस हृदपर आये । ५७ । शोक और
 रथनेमियों के बड़े शब्द समेत बड़ीधूल को उठाते और पृथ्वी को भी कंपायमान
 करते आपहुँचे । ५८ महारथी कृतवर्मा, कृपाचार्य्य और अश्वत्थामा युधिष्ठिरकी
 सेनाको देखकर राजासे यह वचन बोले । ५९ कि अत्यन्त प्रसन्नचित्त दिनपसे शोभा
 पानेवाले यह सब पाण्डवप्रतिह तत्रतक हमको अप भ्राज्जादे कि हम यदसि इठजायावे ।

Uttamaurya, Yudhamanyu, brave Satyaki and the rest of the Panchal
 warriors, with the sons of Draupadi and elephants, horses and
 foot, by thousands, followed them Glorious Yudhishtir thus approach-
 ed the lake of Vyas in which Duryodhan lay hidden and which
 was full of clear and cold water like a second ocean. 53. Your son
 had made its waters motionless by his art and crept within That
 destroyer of foes, of extraordinary wisdom, armed with mace, Duryo-
 dhan had made himself invisible to all men 55 Hidden within the
 waters of the lake Duryodhan heard the thundering noise of the
 warriors of Yudhishtir, with his brothers d srous of slaying your

शिन । अपयास्यामहे तावद्भुजानानु नोमधाम् ६० ॥ दुर्योधनस्तु तत्र श्रुत्वा तेषां तत्र
तरस्विनाम् । तथेत्युक्त्वा हृदं तं वै माययास्तम्भयत् प्रभो ॥ ६१ ॥ ते त्वनुज्ञाप्य राजानं
भृशं शोकपरायणम् । जग्मुर्भूरं महाराजं कृपप्रभृतयो रथाः ॥ ६२ ॥ ते गत्वा दूरम्
ध्यानं न्यमोघं प्रेक्ष्य मारिष । न्यविशन्त भृशं ध्रान्ता चिन्तयन्तो नृपे प्रति ॥ ६३ ॥
विष्टस्य सलिलं सुप्तो घात्तराष्ट्रो महाघलः । पाण्डवाश्चापि संप्राप्तास्तं देशं युद्ध
भीत्सवः ॥ ६४ ॥ कथं नु युद्ध मविज्ञा कथं राजा मविष्यति । कथं नु पाण्डवा राजम्
प्रतिपत्स्यन्ति कौरवम् ॥ ६५ ॥ इत्येवं चिन्तयानास्तु रथेभ्योऽध्वान् विस्मय्य ते । तथा
साञ्चक्रिरे राजम् कृपप्रभृतयो रथाः ॥ ६६ ॥

इति भी शल्यपर्वणि द्रुपदवेषोपनिषिद्धं दुर्योधनान्वेषणे त्रिंशोऽध्यायः ॥ ३० ॥

हे प्रभु तब उस दुर्योधनने उन बेगवानों के उस वचनको सुनकर और बहुत
अच्छा कहकर माया से उस जलको रोकदिया । ६१ । हे महाराज फिर शोक
से पूर्ण कृपाचार्य आदिक रथी राजाको पू कर दूर चलेगये । ६२ । हे भद्र वर
हीनों दूर मार्गपर जाकर एक वटके वृक्षको देखकर अत्यंत धकेहुये राजाके विषय
में शीघ्रते निवासीहुये । ६३ । बड़ा घबरावन दुर्योधन जलको रोककर सोचा और
शुद्धके अभिलाषी पाण्डव भी उस स्थानपर पहुँचे । ६४ । किस प्रकारसे युद्धहोगा
और कैसे राजाहोगा और कैसे पाण्डवलोग उस कौरव दुर्योधनको पावेंगे । ६५ ।
हे राजा इसप्रकार चिन्ता करते उन कृपाचार्य आदिक रथियोंने रथोंसे घोड़ोंको
छोडकर वहाँ निवास किया ६६ ॥

ison, came upon the brink of the lake, raising a storm of dust, making
a tremendous noise with their conchs and car wheels and shaking the
earth. Brave Kritvarma, Kripacharya and Ashwathama, seeing the
army of Yudhishtir coming towards them, said to the prince, "The
victorious Pandavas are coming cheerfully this way. Give us there-
fore permission to retire to some other place." Duryodhan heard their
words and replying in the affirmative, again made the waters motion-
less 61. Kripacharya and others, having got the king's permission,
removed themselves far from the place and sat under the shade of a
banyan tree, dejected and careworn on account of Duryodhan. The
litter lay under the motionless water, while the Pandavas reached
there. Kripacharya and others rested under the tree, thinking about
the war, the state of the king and the possibility of the Pandavas find-
ing him." 66.

सञ्जय उवाच । ततस्तेष्वपवातेषु रथेषु त्रिषु पाण्डवाः । तं हृद् प्रत्यपद्यन्त यत्र
 बुध्वाँचनोऽभवत् ॥ १ ॥ आसाद्य च क्षुरधेष्टं तदा द्रुपद्यनं हृदम् । स्तम्भितं चान्न
 राष्ट्रेण हृष्ट्वा तं सलिलानामम् । वासुदेवमिदं वाङ्मयमब्रवीत् कुरुनन्दनः ॥ २ ॥ पश्येमां
 चान्तराष्ट्रेण मायामप्सु प्रयोजिताम् । विष्टस्य सलिलं वेतेः नास्य मानुषतो भयम्
 ॥ ३ ॥ देवीं मायाभिमां कृत्वा सललात्तर्गतो ह्ययम् । निहृत्वा निहृतिप्रज्ञो न मे जीवन्
 विमोक्षयेत् ॥ ४ ॥ यद्यस्य समरे सद्यं कुर्वते यज्जभृत् स्वयम् । तथा प्वेनं हतं युद्धे
 लोका द्रव्यगित्मावच ॥ ५ ॥ वासुदेव उवाच । मायायिन इमां मायां माधवा । जहि
 भारत । मायावी मायया । यध्यः सत्यमेतद्युधिष्ठिर ॥ ६ ॥ क्रियाभ्युपायैर्वहुभिर्मायाम्
 प्युप्रयोद्ध च । जहि त्वं भरतश्रेष्ठ मायात्मानं सुयोजनम् ॥ ७ ॥ क्रियाभ्युपायैर्वहुभिर्मायाम्
 निहता वैरवदानवाः । क्रियाभ्युपायैर्वहुभिर्बालिर्षखो महारमना ॥ ८ ॥ क्रियाभ्युपायैर्व
 हुभिर्दिरव्याहो महासुरः । दिरव्यकशिपुश्चैव क्रिययैव निस्वृतिः । इत्यथ निहतो

अध्याय ३२ ॥

संजय बोले कि इसके उन तीनों राथियों के दूर चलेजाने पर उन पांडवोंने
 वस हृदको पाया जिसमें कि दुर्योधनया ॥ १ ॥ कौरवों में अष्ट तंत्र दुर्योधनसे
 अचल कियेहुये उस व्यामहृदको और जलमें सोनेवाले राजाको देखकर कौरव
 मन्दन युधिष्ठिर वासुदेवजीसे यहवचन बोले ॥ २ ॥ कि दुर्योधनकी जलमें संयुक्तकी
 हुई इस मायाको देखो कि जलको रोककर सोताहै इसको मनुष्य से भयनहीं है
 ॥ ३ ॥ इस देवीमाया को मकट करके इसके मध्य में वर्तमान छल संयुक्त बुद्धि
 का रखनेवाला यह दुर्योधन मेरेहाथस अब जीवताहुआ नहीं वचसक्ता ॥ ४ ॥ जो
 भाव ब्रजधारी युद्धमें इन्द्रभी इसकी सहायता करे ताभी है माधवजी युद्धमें इसको
 सबलगत मराहुआ देखेगे ॥ ५ ॥ वासुदेवजी बोले कि हे भरतवंशी माया करनेवालेकी
 इस माया की मायाकेरी द्वारा नाशकरो ॥ ६ ॥ आमावी पुरुष मायाइके द्वारा भारतके
 के योग्य है हे युधिष्ठिर यह सत्य है कि यह राजादुर्योधन बहुत उपाय और कर्मों
 के द्वारा जलमें मामाको संयुक्त करके सोताहै ॥ ७ ॥ हे भरतर्षभ तुम इस मायात्मा
 अर्थात् छलासोमारो इन्द्रने भी कर्म और उपायोंके द्वारा देख और दानवोंके

CHAPTER. XXXI

Sanjaya said, "When the three warriors had removed themselves far away, the Pandavas came upon the lake in which Duryodhan lay hidden. Finding the water motionless and Duryodhan lying down under it, Yudhishtir said to Vasudev, "Look at the water made motionless by the art of Duryodhan, who is sleeping within free from all danger of human beings. Deceitful Duryodhan hiding within that water cannot escape death. People will see him dead even if Indra the wielder of vajra come to his help." Vasudev replied,

राजन् क्रिययैष न संशयः ॥ ९ ॥ तथा पुलस्त्यपत्न्यो रावणो नाम राक्षसः । रामेण
निहतो, राजन् सानुवन्ध, सहानुगः । क्रियायां भांगमास्याय तथा स्वम, वि० विक्रम ॥ १० ॥
क्रियायुपायैर्निहतौ पुरा राजन्, वृत्तान्तौ । तारकश्च महादैत्यो विप्रचित्तिश्च शीर्य
षान् ॥ ११ ॥ वानागिरिल्लुञ्जैव त्रिशिराश्च तथा विभोः । मुन्दोपमुन्दावसुरौ क्रिययैष
निस्तृप्तौ ॥ १२ ॥ क्रियायुपायैरिन्द्रेण त्रिदिवं मुज्यते विभोः । क्रिया बलवता राज
भाष्यतु क्रियायुधिष्ठिर ॥ १३ ॥ देवराजः हनवाञ्छेव राक्षसाः पाधिवास्तया । क्रिया
युपायैर्निहताः क्रिया तस्मात् समाचर ॥ १४ ॥ संजय उवाच । इत्युक्तो बाणुदे
वेन वाग्देवः संशिनत्राः । जलस्थं न महाराज तत्र पुत्रं महाबलम्, । अश्वभाषत
कोत्सेवः ॥ हसतिश्च भारत ॥ १५ ॥ सुवोधनं किमर्थोऽपमारम्भोऽस्तु कृतश्रेयसा । सर्व

मारो हे १८ मशतो इन्द्रो हाथ से बहुत कर्म और उपायो केही द्वारा राजावकि
बांभागया और बड़े कर्म और उद्योगों के द्वारा मशःअमुर हिरण्यपक्ष और हिरण्य
केशपुत्रोंभाइ मरिगये, हेराजा वृत्रासुरभी, कर्मोंकेहीद्वारा निस्तन्देह, मारागया
। ९ । हे राजा इसीप्रकार पुलस्त्यका पुत्र रावण नाम राक्षस अपने सब भाई
साथियों समेत श्रीरामचन्द्रजी के हाथसे मारागया । १० । इसीप्रकार तुम भी
कर्म करने में निश्चय होकर पराक्रमकरो हे समर्थ राजायुधिष्ठिर उमी प्रकार कर्म
और उपायों के द्वारा दोनों प्राचीन राक्षस मेरे हाथ से मरिगये बड़ा दैत्य
वारक और पराक्रमी विप्रचित्ति वानापी इत्यल और त्रिशिरा भी, मरिगये इसी
प्रकार मुन्द उपमुन्द असुरभी कर्मोंही मरिगये हे समर्थ इन्द्रभी कर्म और उपायों
के द्वारा शर्मको भोगना है हे राजा युधिष्ठिर, कर्म प्रबल है दूसरा कुछ श्रवण
नहीं है । १३ । देवदानर राक्षस उमीप्रकार, राजालोग कर्म और उपायोंकेही
द्वारा मरिगये इस हेतुसे कर्मको अच्छीरौतिने करो । १४ । संजयबोले हेमहाराज

"Destroy by art the cunning of that deceitful man; It is good to slay
the deceitful by deceit. It is true that Duryodhan has made him-
self secure under water by his artfulness. Destroy him with your
skill as Indra had done the Daityas and Danavas. King Bali was
killed by Indra's cunningness and the two powerful brothers, Hiran-
yaka and Hiranyakashipu, were slain with great exertion and skill.
Vritrasuroo was slain no doubt with great difficulty. Similarly, Ravan
the son of Pulastya, with his brothers and kinsmen was slain by Ram
Chandra. 10, Act bravely therefore, Yudhishthir, I myself slew the two
powerful rakshases of old. The great Daityas Tarak, Vitrachitti,
Vatapi, Ilwail and Trishira were slain and likewise Sund and Upund
were slain by brave deeds. Indra enjoys the kingdom of heaven as a

इमे घातयित्वा स्वकुलम्बु विशास्यते ॥ १६ ॥ जलाशये प्रविष्टाय मांछन् आवृत
 मात्मनः । उत्तिष्ठ राजन् युध्यस्व सहाहमात्मः सुधाधन ० १७ ॥ स ते दुषो मरश्च
 स्व च मानः क्व ते गतः । परंरं तस्मिन् सलिले मीता राजन् उपस्थितः ॥ १८ ॥
 खर्वे रवां शूर इत्येव जना जल्पन्ति समदिशिपथे तद्भवतो मय्य शौ र्ये [सलिलशासनः
] १९ ॥ उत्तिष्ठ राजन् युध्यस्व क्षत्रियोसि कुलोद्भवः । कै र्वेषो घिशोणेन कुले अत्र
 न संस्मर ॥ २० ॥ स कथं कौरवे वंशे प्रशांरं जन्म खरंभनः । युद्धाद्भितस्तत्सतोय
 प्राविष्ट्वं प्रतिष्ठसि ॥ २१ ॥ अयुद्धमय्यवस्थाने नैव धर्मो सनातनः । अमार्युद्ध
 मन्वये रणे राजन् पलायनेद्ये ॥ २२ ॥ कथं पारमरीषा हि युद्धे र्वं ये जिष्ठोतिपुः ।
 इनाक्षिपतितान् रष्ट्वा पुत्रान् आतुन् गित्तुलया ॥ २३ ॥ सम्बन्धिनो वपंवाधि मातु
 कान् वाग्धवालेया । घातयित्वा कथं तात हवे तिष्ठसि स मृतम् ॥ २४ ॥ शूरमानी

भरतवंशी धृतराष्ट्र बामुदेवजी से सम्बन्धित हुए तेजव्रत हंसतेहुये कुन्ती के पुत्र
 पावहन युधिष्ठिरने उस जलमें निपन बड़े बर्त्मानः आपके पुत्र से यह कहा कि
 १६ । हे दुर्षोभिन तुमने जलके मध्य में यह प्रारम्भ कर्म किस निमित्त किया हे
 राजा सब क्षत्रियोंके कुलों को और अपने कुलको मरवाकर । १७ । अब अपने
 जीवन को चाहताहुआ हूँ मैं घृताहुआ बड़ा हे दुर्षोभन उठो और हमारेसाथ
 युद्धकरो । १८ । हे मंगोत्तम वह तेरा अभिमान और अहम्भाव कहागया जो मर
 भीत होकर तुम जलको रोककर नियत हुयेहो । १९ । सब लोग तुम्हको सभा में
 शूर कहते हैं जलमें सोनेवासे आपकी उस कूरताको निरर्थक मानताहूँ । २० । हे राजा
 उठो युद्धकरो कलीन क्षत्रियों और अधिकतर कुलवंशी हो अपने कुल और
 जन्मको यादकरो । २१ । सो कौरव कुलमें अपने जन्मको कहताहुआ कैसे युद्ध
 से मरभीत होके जलमें प्रवेश करके नियत है । २२ । युद्धका और राज्यका त्याग
 अथवा स्वर्ग के निमित्त उपाय न करना यह माचीन धर्म नहीं है हे राजा युद्ध
 से भागना जीवों का कर्महे स्वर्गका देनेवाला नहीं है । २३ । निश्चय करके युद्ध
 में पारको न पाकर कियरीसे तुम जीवन के अभिजापी हो इन पड़ेहुये पुत्र भाइ
 और बहदुर्षो को देखकर । २४ । नानेदार समानवय माया और वान्वशोंका

result of his exertions and schemes. Action is all-powerful, Yudhisht-
 hair. Daityas, Danavas as well as kings were slain by action; there-
 fore act well, Yudhishtair." Sanjaya said, " Thus advised by Vasudev,
 Yudhishtair the son of Kunti, with a smile, said to your son who was
 hiding within the lake. 15. " Why have you hid yourself within
 the lake? After bringing about the death of your kinsmen and war-
 riors come out and fight with us. Where is your pride gone? Why
 are you staying under water? You are famous for your bravery, but you
 are making yourself infamous by your cowardice. You are lotn

न शूरस्य मृषा वृत्तिरिति शूरैर्दमितुं कुर्वन्ने सर्वलोकरय मृषवत् ॥ २५ ॥
 न हि शूराः पलायन्ते शत्रुं दृष्ट्वा कथञ्चन ब्रूहि वा इवैवया शूरस्य क्वि
 लङ्कारः ॥ २६ ॥ स एवमुच्छिष्टं युद्धस्य विभीषणं अथमारमनः । धातयिष्या सचंसेवै
 भ्रातृभ्यैव सुयोधन ॥ २७ ॥ नेदानीं जीविते बुद्धिः कार्वाणं प्रमथि कीरिया । अत्रार्थं
 मयाधि य एवमिष्येन सुयोधन । २८ ॥ वयु कर्णमपाधिरय शकुनिश्चापि सौमित्रः ।
 अमर्षं इव सम्मोहात्स्वमात्मानं न बुद्धवान् । २९ ॥ तत् पापमुमहत् कृत्वा प्रति
 युद्धस्य भारत । कथं हि तत्रिषो माहात् रोषयेन पलायनम् ॥ ३० ॥ क्व ते तत्र
 वैश्व तत क्व च मानं सुपोधन । क्व च विक्रान्ता वाता क्व च विश्रुतैर्जितै
 महत् ॥ ३१ ॥ क्व ते कृतस्वना वाता किञ्च शोभे जडानाम् । स एवमुच्छिष्टं युद्धस्य
 अत्रार्थं न भारत ॥ ३२ ॥ अस्मात्स्व वा पराजित्य प्रशाधि युधिभीमिमात्र । अथका

भरनाकर।भव कैसे दूद में निपत है । २५ । अपने को शूर मानता है परन्तु शूर
 नहीं है हे भरतवंशी दुर्बुद्धि सब लोगों के समक्ष में तुम पिथ्या कहतेहो कि मैं
 शूर हूँ । २६ । शत्रुओंको देखकर शूरवीर कितीमकार से भी नहीं भागेन हैं तुम
 त्रिभ वृत्ति से युद्ध को त्याग करतेहो । २७ । उसको कहो अब मुम उठो युद्धकरो
 और अपने भयको दूरकरो हे दुर्योधन सब भाई और सेना को बरबाकर युद्ध
 करो । २८ । और त्रीधर्म में निपत होकर धर्म करनेभी इच्छासे तुझमरीतिराधा
 को अब जीवनेमें बुद्धि न करनी चाहिये । २९ । कर्ण और सौवलके पुत्र शकुनी
 के आश्रम होकर अपनेको सदैव जीवनेवाला माना इस भूलमें जो तुमने अपने
 को नहीं जाना हे भरतवंशी शूर पाप बड़ा दुःखरूप है सम्मुख होकर युद्ध करो
 तुझसा राजाहोकर मोहसे कितीमकार भागने को अङ्गीकार करे । ३० । हे सुयो
 धन तेरी वह शीरता और प्रहंकार कहांगये और वह पराक्रम और बड़ी गर्वक
 कहांगी । ३१ । तेरी अज्ञता कहांगई तहाग में क्यों सोना है हे भरतवंशी
 इस से तुम उठकर त्रीधर्म से युद्धकरो । ३२ । इसको विजय करके इस दृष्टीर

among kings specially Kaurav king. Remember your lineage, so
 born among Kauravas why are you hiding under water? It is not
 compatible with old customs to give up fighting or kingdom and the
 deed itself does not lead one to heaven. How do you wish to live with
 out making an end of fighting? How are you hiding in the lake, when
 so many of your kinsmen lie plain. You call yourself brave, but you
 are not so and your saying so is a lie. 25. Brave men do not run away
 from enemies, why have you adopted this course? Rise up and fight
 fearlessly. Fight when all your men are no more. A king like you should
 no more wish to live. You always relied on Karna and Bakasana. This
 was a mistake. You are committing a sin. Fight. Why should a
 king be foolish enough to desert the field of battle? 30. Where are

॥ इति श्रीमद्भगवद्गीतायाः अष्टमोऽध्यायः ॥ ३३ ॥ एष ते परमो धर्मः सृष्टो वाजा महात्मना ।
 कृष्व यथा तथ्यं राजा अथ महारथ ॥ ३४ ॥ सञ्जय उवाच । एषमुक्तो महाराज
 युजेन धीमता । सलिलतल्लव सुत इदं वचनमप्रधीत् ॥ ३५ ॥ दुर्योधनो उवाच ।
 उच्चरं महाराज यद्गी. प्राणिनमा विशत् । न च प्राणभयाद्गीतो
 ग्यातोऽस्मि भारत ॥ ३६ ॥ सरथश्चानिवक्त्रोच निहतः पार्ष्णि सारथिः
 राथः । एकश्चाप्यगणः संख्ये प्रत्याश्वासमरोचयत् ॥ ३७ ॥ न प्राणहेतोर्न भयात्
 पादाद्विश्रामपते । इदमग्मः प्रविष्टोऽस्मि अमास्विदमनुष्ठितम् ॥ ३८ ॥ त्वञ्चाभ
 हि कौन्तेय ये चाप्यनुगतास्तव । महमुत्थाप यः सर्वान् मतिथोत्स्यामि संयुगे ॥ ३९ ॥
 विष्टि उवाच । आभस्ता एष सर्वं स्म खिर त्वां मृगयामहे । तदिदानीं समुत्तिष्ठ
 श्वस्वेह सुयोधन ॥ ४० ॥ इत्वा वा समरे पार्थान् स्फीतं राज्यमवाप्नुहि । निःस्तो

ज्यकरो अथवा हमारे हाथसे मराहुआ होकर पृथ्वीपर सोवेगा । ३३ । हेमहाराधी
 दात्या ईश्वर ने यह तेरा उत्तम धर्म बतपन्न किया है इसको विधिपूर्वक करो
 और राजा होनाओ । ३४ । संजय बोले हे महाराज जलमें नियत और बुद्धिमान
 धर्मराजके इसप्रकार के वचनों को सुनकर आपका पुत्र यह वचन बोला । ३५ ।
 हे महाबाहु यह अपूर्व बात नहीं है जो जीवधारी में भय प्रवेश होय हे भरतवंशी
 मैं जीव के भय से डरा हुआ नहीं बैठा हूं । ३६ । रथ और तूखीरसे रहित मृतक
 सारथी और सायबाबा होकर अपने समूह से पृथक् होकर युद्धमें भकेला होकर
 मैंने इस विश्राम को अज्ञोकार किया । ३७ । हे राजा पाण्डोंके कारण भय से
 और क्पाकुलतामें मैं इस जनमें नहीं घुसत हूं मैंने केवल थकावट से यह कर्म
 किया है । ३८ । हे कुन्तीके पुत्र तुम विश्रामकरो और जो तेरे ओर पास वालेहैं
 वह भी विश्रामकरो मैं इस जलसे निकलकर युद्धमें तुम सबसे लहूंगा । ३९ । युधि
 श्ठिर बोले कि हम विश्राम करचुके हैं और विलम्बसे तुम्हको अन्वेषण करते हैं
 हे सुयोधन इस हेतुने अब उठो और यहां युद्धकरो । ४० । युद्ध में पांडवों को

your bravery and pride gone, Suyodhan; where are thy prowess and waggery? Where is thy knowledge of weapons? Why are you sleeping in the tank? Come out and fight. You will rule the kingdom if you win us or shall lie dead on earth and be slain by us. Do your duty for which you are created by God and be a king." Sanjaya said, "Having heard the words of Yudhishtir from water your son said, 35. "It is no wonder if one be affected by fear, yet I am not afraid for my life. Deprived of ear, quiver, driver, attendants and warriors, I stood in need of some rest 37. I have not entered water for fear of life, it was only exhaustion that prompted me to do so. You and your followers must rest awhile and then I shall come out of the lake to fight." Yudhishtir said, "We have taken rest and

या रणस्माभिर्घोरलाकमधाप्स्यसि ॥ ४१ ॥ दुर्योधन उवाच । यदर्थं राज्यमिच्छामि
 कुरूणा कुरुनन्दन । त इमे निहता सर्वे भ्रातरौ मे जनदधर ॥ ४२ ॥ क्षीणरत्नाञ्च
 पृथिवीं हतक्षत्रियपुङ्गवाम् । नाभ्युत्सदाभ्यह भाल्क विघ्नमिध योषितम् ॥ ४३ ॥
 अद्यापि त्वहमाशासे त्वा विजेतु युधिष्ठिरा मफत्रा पञ्चालपाण्डुनामुत्साह भरतर्षभ
 ॥ ४४ ॥ न त्विदानीमहं मये कार्यं युजेन कश्चित् । द्रोणे कर्णे च सशान्ते निहते
 च पितामहे ॥ ४५ ॥ अस्त्रिदानीमिध राजन् केवला पृथिवी तव । असहायो हि को
 राजा राज्यमिच्छेत् प्रशासितुम् । ४६ ॥ सुहृदस्तादृशान् हत्वा पुत्रान् भ्रातॄन् पितॄन्पि
 भवद्भिश्च हुते राज्ये को नु जीयेत् मादृश ॥ ४७ ॥ अह धन गमिष्यामि ह्यजिनै प्रति
 वासितः । रतिर्हि नास्ति मे राज्ये हतपक्षस्य भार ॥ ४८ ॥ हतवान्धवभूयिष्ठा हताम्बा

मारकर वृद्धियुक्त राज्यको पाओ अथवा युद्ध में हमारे हाथ से मरकर
 को पाओगे । ४१ । दुर्योधन बोले हे कौरव नन्दन राजायुधिष्ठिर मैं जिन कौरवों
 के लिये राज्यको चाहताथा वह सब मेरे भाई मारे गये । ४२ । मैं इस रत्नोंसे
 रहित मृतक उत्तम क्षत्रियोंवाली विश्ववास्तीके समान पृथ्वी के भोगनेको उत्साह
 नहीं करताहूँ । ४३ । हे भरतर्षभ युधिष्ठिर मैं अबभी पांडवों संमत पाचालोंके
 बत्साहों को तोडकर/तेरे विजय करनेको आशाकरताहूँ । ४४ । अब मैं द्रोणाचार्य
 कर्ण और भीष्मपितामह के मरनेपर किंसीसमय भी युद्धसे अपने कार्यको नहीं
 मानताहूँ । ४५ । हे राजा अब यहसब पृथ्वी तेरीहो अपने साथियोंसे रहित होकर
 कौनसा राजा राज्यपर राज्यशासन करनेकी इच्छाकरेगा । ४६ । उसप्रकारके मित्र
 पुत्र भाइयों ओर वृद्धोंके भी मारकर और आपसोंगों से राज्यहरण होनेपर मुझसा
 कौन मनुष्य जीवतारहेगा । ४७ । हे भरतर्षभ मैं मृगचर्म को धारण करने
 वाला होकर उनको जाऊंगा जिसके पत्तवाले लोग मारेगये उस राज्य में मेरी
 प्रीति नहीं है । ४८ । हे राजा जिसमें बहुत वान्धव घोडे और हाथी आदिक मारे

have been seeking/long for you So you must rise up and fight 40
 Slay the Pandavas and gain kingdom or be slain by us ' Duryodhan
 said, ' All my brothers and Kaurivas for whom I wished to secure
 the kingdom, are slain and I dare not enjoy the earth widowed of
 those jewels of warriors I shall yet crush the pride of the Pandavas
 and Panchals and hope to win . My mind is never vacant of war
 after the death of Droopa, Karan and Bhishm. Let this earth be yours.
 What king deprived of his companions shall wish to reign 46, What
 person like me shall wish to live after the death of friends, sons, brothers
 and elders and the deprivation of kingdom by you? I shall put on deer
 skins and shall go into forests for I have no hope for the kingdom whose
 allies are no more 48 The earth deprived of kinsmen, horsemen
 and elephant men shall be yours and you will enjoy it without
 anxiety. I shall go in to exile with deer skins on, for being deprived

हस्तकुञ्जरा । एषा ते पृथिवी राजन् भृशवेना विगतज्वरः ॥ ४९ ॥ घनमेव गमिष्यामि
 वसानो मृगचर्मणी । न हि मे निज्जनस्यास्तिजीवितेषु स्पृहा धिमो ॥ ५० ॥ गच्छ रथं
 भृशस्व राजेन्द्र पृथिवी निहतेश्वराम् । हनयोर्धा नष्टरत्ना क्षीणवर्मा यथासुखम् ॥ ५१ ॥
 संजय उवाच । तुर्योधन तव सुत सलिलस्य महावशा । भ्रुत्वा तु कदण वाक्यम
 भावत युधिष्ठिरः ॥ ५२ ॥ युधिष्ठिर उवाच । आर्तप्रलापना तात सलिलस्य प्रभा
 विधा । नैतन्मनसि मे राजन् धाशितं शकुनेरिय ॥ ५३ ॥ यदि वापि समर्थ स्यास्व
 दानाय सुयोधन । नाहमिच्छेयमधनि त्वया दत्ता प्रशासितुम् ॥ ५४ ॥ अधर्मेणन
 गृह्णत्या त्वया दत्तां महीमिमाम् । नहि धर्मं स्मृतो राजन् क्षत्रियस्य प्रतिग्रह ॥ ५५ ॥
 त्वया दत्ता न चेच्छेयं पृथिवीमभिलामहम् । त्वान्तु युद्धे विानर्जित्य भोक्तास्मि वसु
 धामिमाम् ॥ ५६ ॥ अनाश्वरश्च पृथिवी कथं त्व दानुमिच्छसि । त्वयेयं पृथिवी राजन्
 किञ्च दत्ता तदैव हि । धर्मतो याचमानाना शमार्थञ्च कुलस्य नः । ५७ ॥ धार्मिकं

गये वहसव पृथ्वी तेरी है इसको तुम विगतज्वरहोकर भोगो । ४९। मैं मृगचर्मको
 धारण करके वनको जाऊंगा हे समर्थ अब जीवनमें मुझ भाई पुत्रों ने जुद्धहोनेवाले
 की इच्छानहीं है । ५०। हे राजेन्द्र तुमनाभो और इन पृथ्वीको जिसके स्वामी
 और शूरीर मारोगये और जिसमें रत्नोंका नाशहुआ और गड़े प्रकोष्ठादिक
 जीर्णहोगये सुखपूर्वक भोगो । ५१। संजय बोले कि वड़ा यशस्वी युधिष्ठिर ऐसे
 दीन बचनों को सुनकर उस जल में निवास करनेवाले आपके पुत्र सुयोधन से
 बोला । ५२। हे भाई जलमें निपत तुम पीड़ा के प्रलापों को मत कहो हे राजा
 पराधीके समान निवासकरना मेरे चिन्तमें नहीं है । ५३। हे सुयोधन जो तुम देनेके
 निमित्त भी समर्थ हो तभी मैं तेरी दीहुई पृथ्वीपर राज्यशासन करनेकी इच्छा
 नहीं करताहूँ । ५४। तेरी दीहुई इस पृथ्वीको अधर्म से नहीं लूनादानलेना
 क्षत्रीका धर्मनहीं कहागया है । ५५। मैं तेरी दीहुईस सम्पूर्ण पृथ्वीको नहीं चाहता
 तुझको युद्धमें विजय करके इस पृथ्वी को भोगूंगा । ५६। हे राजा तुम स्वामी
 न होकर पृथ्वीको कैसे देनाचाहतेहो तुमनेयह पृथ्वी उत्तममय पर कुलकी शान्ति
 के लिये धर्मसे मांगनेवाले हमलोगों को क्यों नहीं दी । ५७। प्रथम, नदेवलवान

of brothers and sons, I have no desire to live 'any' longer 50 Go
 away, Prince, and rule over the land 'whose lords and warriors are
 slain, jewels destroyed and fortifications become weak and old' San
 jaya said that having heard those 'humble words, Yudhishtir said
 to him, 'Donot mourn from the midst of water, I donot wish to
 lead the life of a bird, I would not take the land from you, even if
 you had the power to give it me. I shall not take the land improper-
 ly from you. Kshatryas donot receive charity. 55 I donot like to
 receive the whole earth from your hands, I shall win it. Not being
 the master of it how do you promise to give it away. 57 by did you

प्रथमं राजन् ब्रह्मास्त्राय महाबलम् । किमिदानीं द्वासासिधं कौहिते चित्राबध्नम् ।
 ५८ ॥ अभियुक्तस्तु को राजा दातु मिच्छोऽस्मि मेदिनीम् । न स्वमय महीं दातुभीशः
 कौरवनन्दन ॥ ५९ ॥ आच्छेत्तु वा यलाद्राजन् स कथं दातुमिच्छसि । मां तु निर्जित्य
 संप्राप्ते पालये मां वसुन्धराम ॥ ६० ॥ सूच्यप्रेणापि यद्भूमिरपिघीघेत भारत । तस्मा
 त्रपि चैस्मह्यं न ददाति पुरा भवान् ॥ ६१ ॥ स सथं पृथिवीमेतां प्रददासि विशाम्पते
 सूच्यग्रं गात्रयज्ञः पूर्वं ससथं त्यजसि क्षितिम् ॥ ६२ ॥ एवमेहवर्ष्यमासाद्य पशास्य पृथिवी
 मिमाम् । को हि मूढो व्यवस्येत शत्रोर्दातुं वसुन्धराम् ॥ ६३ ॥ त्वन्तु केवलमौक्ष्येन
 विसूढो नावबुध्यसे । पृथिवीं दातुकामोपि जीघितेन विमोक्ष्यसे ॥ ६४ ॥ अस्मान् वा
 त्वं पगाजित्य प्रशाधि पृथिवीमिमाम् । अथवा निहतोस्माभिर्ब्रजलोकानुत्तमान् ॥ ६५ ॥
 आवयोर्जीघतो राजन् मयि च रघाय च ध्रुवम् । संशयः सर्वभूतानां विजये नो भवि

श्रीकृष्णजी को उत्तरदेकर अब तुम क्योंदेतेहो । ५८ । तेरे चित्तकी भ्रान्तिक्या
 हे कौन पराजयहोनेवाला राजा पृथ्वीको देनाचाहै हे कौरवनन्दन अब तुम
 पृथ्वी के देनेको स्वामी नहींहो न बलसे लेनेको समर्थहो तो कैसे देनाचाहते हो
 युद्धको युद्धमें विजयकरके इस पृथ्वीका पालनकरो । ६० । हे भरतवंशी सुईके
 अग्रभागभरभी पृथ्वी जो तुमने हमका पूर्वसमय में नहींदी अब उस सब पृथ्वीको
 कैसे देतेहो । ६१ । प्रथम तो सुईके अग्रभागके भी समान पृथ्वीको नहींदिया
 अब उस पृथ्वीको कैसे त्यागकरते हो । ६२ । इसप्रकारके ऐश्वर्यको पाकरऔर इस
 पृथ्वीपर राज्यकरके कौनसा अज्ञानी अपने शत्रुको उस पृथ्वीके देनेको नि
 श्चयकरेगा । ६३ । तुम महाअज्ञानीहोकर केवल अज्ञानतासेही सावधान नहींहोते
 हो पृथ्वीकेदेने का अभिलाषीभी होकर तू जीवताहुआ नहीं बचसक्ता । ६४ । तुम
 हमको विजयकरके इस पृथ्वीपर राज्यकरो अथवा हमारे हाथसे मरकर उत्तम
 लोकोंको जाओ । ६५ । हे राजा निश्चय मेरे जीवितरहनेपर हमदोनों की इच्छा

not give it us when we, having a right to it, asked it of you for the
 safety of the family? Having replied Shri Krishna in the negative, why
 do you intend to give it now? What nonsense you are talking? What
 conquered Prince can give away kingdom? You have now no power
 to give it, nor keep it by force, how do you talk of giving it. You
 can rule the earth after conquering it from me. 60. You did not like
 to give us land equal to needle point; how do you talk of giving us
 the entire land now. How do you wish to leave the land of which
 you did not like to part with even equal to the point of a needle?
 Who will be so foolish as to give his kingdom to his enemy. You
 have not even now given up your foolishness. You cannot escape death
 even if you relinquish your claim to the kingdom. Either rule the

भवति ॥ ६६ ॥ जीवितं तद्य बुद्धय मयि सम्प्रति वर्तते । जीवयेयं स्वहं काम न तु एवं
जीवितुं क्षमः ॥ ६७ ॥ दहने हि कृनो यत्नस्त्वयास्मासु विशेषतः आसीद्विद्विषयेषु पि जे
वापि प्रवेशनेः ॥ ६८ ॥ स्वया विमिहता राजन् राज्यस्य हरणेन च । अप्रियाणाश्च
बन्धनैर्द्रौपद्याः कर्णेन च ॥ ६९ ॥ एनस्मात् कारणात् पापं जीवितं तेन विद्यते । उस्ति
होस्तिष्ठ सुखदश्च तसे धेयो भविष्यति ॥ ७० ॥ एवन्तु विविधा धावो अथयुक्तः पुनः
पुनः । कर्त्तव्यमित्थं वम ते धीरास्तत्र तत्र अनाधिप ॥ ७१ ॥

इति शल्पपर्वाणि हृदयवेशपर्वाणि वृद्धयोधनभर्तृनेपकांशोऽध्यायः ३१ समाप्तं हृदयपर्व

नुभार सब जीवधारियोंको सन्देह होगा । ६६ । हे दुर्बुद्धि तेरा जीवन मुझमें वर्तमान
हे मैं जीवता रहूंगा परन्तु तुम जीविते रहनेको समर्थ नहीं हो । ६७ । हे राजा
तुमने हमारे नाश करने में बड़े बड़े उपायकिये अर्थात् तुमने हमलोगों को विष
धर सर्पोंके विषसे जलके डूबनेसे और राज्यके छीनलेने निरादर किया
अयोग्य आभिय वचन और द्रौपदी के खंचने से पीड़ाभार किया । ६९ । हे
पापी इस कारण से तू जीवताहुआ नहीं बचसक्ता उठ उठ युद्धकर इसीसे कल्याण
होगा । ७० । हे राजा उनवरिोंने वहाँ इसमकार विजय से युक्त नानामकार के
वचनों को बारम्बार कहा ७१ ॥

kingdom after slaying us or be slain by us and go to the region of the
good. The world can not be free from anxiety as long as both of
us live. 66. Your life depends on me. I shall outlive you. You
tried your best to destroy us. You tried to kill us by snake-bite,
drowning and deprivation of kingdom. You insulted us by dragging
Draupadi. You cannot therefore scape with your life. Rise, rise
and fight. Your good lies in this. They talked thus again and
again. " 71.



धृतराष्ट्र उवाच । एवं सन्तज्ज्यमानस्तु मम पुत्रो महीपति । प्रकृत्या मन्युमान्
 वीरः कथमासति परन्तप ॥ १ ॥ न हि सन्तर्जना तेन श्रुतपूर्वा कथञ्चन । राजमा
 चिन मन्यिश्च सर्वलोकस्य भोऽभवत् ॥ २ ॥ यस्यातपत्रच्छायापि स्वका मानोस्तथा प्रभा ।
 खेदायैषामिमानित्वात् सहेतु सैव कथं गिर ॥ ३ ॥ इयञ्च पृथिवी सर्वा मम्लेच्छाट
 विका मृशाम् । प्रसादाद्वियतेयस्य प्रत्यक्षं तव सऽजय ॥ ४ ॥ स तथा तज्ज्यमानस्तु
 पाण्डुपुत्रविशेषतः । विहीनश्च स्वकैर्भृत्यैर्निर्जने चाश्रुतो मृशाम् ॥ ५ ॥ स श्रुत्वा
 हृत्केका वाचो जिययुक्ता पुन पुन । किमप्रवात् पाण्डवेपांस्तम्ममाचक्ष्व सजस ॥ ६ ॥
 सजय उवाच । तज्ज्यमानस्तथा राजन्तुवकस्थस्तवात्मजः युधिष्ठिरेण राजेन्द्र
 भ्रातृभिः सहितेन ह ॥ स श्रुत्वा कटुका वाचो विपमस्यो जनाधिपः । क्षीणमुष्णञ्च
 निम्बस्य सलिलस्थ पुन पुन ॥ ८ ॥ सलिलान्तर्गतो राजा ध्रुवन् हस्तो पुन पुनः

॥ अथ गदायुद्धपर्व अध्याय ३२ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि शत्रुओंका तपानेवाला स्वभावसे क्रोधयुक्त वह मेरा पुत्र वीर
 राजादुर्योधन इसप्रकार के कठोर वचनोंको सुनकर केशी दशावाला हुआ । १ ।
 उसने पूर्व में कभीभी निन्दित और अप्रतिपत्त वचन नहीं सुने वह राजाहोने
 से सबलोकका माननीय हुआ । २ । जिसके अभिमानसे छत्रकी छाया भी सूर्यके
 ताप से रक्षाकरनेके कारण दुःखके निमित्त होतीथी वह ऐमेप्रकार के वचनों को
 कैसे सहसक्ता है । ३ । हे संजय तेरे नेत्रके समन्तमें यह सम्पूर्ण पृथ्वी म्लेच्छ और
 आटविकाओं समेत जिसकी प्रसन्नता से सर्जावरहतीथी वह अधिकतर पाण्डवों
 से घुड़काहुआ निर्जनवनमें अपने नौकरों से रहित और शत्रुओंसे घिराहुआ
 था । ४ । उसने विजय से संयुक्त कटुवचनों को वारम्बार सुनकर पाण्डवों से
 क्याकहा हे संजय वह मुझसे कहो । ५ । संजयबोले हे राजेन्द्र तव भाइयों समेत
 युधिष्ठिरसे घुड़केद्वये जलमें नियत आपके पुत्र आपत्ति में नियत राजादुर्योधन
 ने । ६ । कटुवचनोंको सुना तव वह वारम्बार लम्बी उष्याश्वास लेकर वारम्बार
 हाथोंको भी रूपाताहुआ जलसे बाहर निकला और युद्धक निमित्त चित्तको

CHAPTER XXXII

Dhrishthi said, "What was the condition of my son who is naturally of a rash temper, when he heard those harsh words? He had never heard such disrespectful language when he was the lord of the land and was respected by the subjects. He who in his pride felt uneasy at the heat of the sun under the shade of an umbrella, could not bear such language. He on whose pleasure depended the life of the world of Allecchas and Atavikas, was insulted in that lonely place by the Pandavas, when he was destitute of servants and surrounded by enemies. What did he say on hearing the bitter words of the Pandavas? Tell me all this, Sanjaya." Sanjaya

मनश्चकार युद्धाय राजानश्चाप्यमापत ॥ ९ ॥ दुर्व्योघन उवाच । धृपं ससुहृदः पार्थः
सथै सरथवाहनाः । अहमेकः परियूनो विरथो रथवाहनः ॥ १० ॥ आत्तशस्त्रे रथोपेत
र्षदुभिः परिवारितः । कथमेक पदाति सन्नशस्त्रो योद्धुमुत्सहे ॥ ११ ॥ एकैरेन तु मा
युधं योधयध्वं युधिष्ठिर । न ह्येको बहुमिर्घोरैर्नाथ्यो योधयितु युधि ॥ १२ ॥ विदेशतो
विक्रवचः भ्रान्तश्चापत्सभाश्रितः । भृशं विक्षतगात्रश्च भ्रान्तवाहनसैनिक ॥ १३ ॥ न
मे रथसो भयं राजत्र च पार्थाद्बुद्धोदरात् । फाल्गुनाढासुदेवाद्वा पाबलेभ्योप वा
पुनः । १४ ॥ यमाभ्यां युधुधानाद्वा ये चाप्ये तव सैनिकाः । एक सर्वानहं क्रुद्धो धार
विय्ये युधि स्थित ॥ १५ ॥ धर्ममला सता कीर्त्तिर्मनुष्याणां जनाधिप । धम्मश्चेहे
कीर्त्तिश्च पालयन् प्रवधीम्वहमे ॥ १६ ॥ अहमुत्थायवः सर्वान् प्रतियोत्स्यामि

करके राजा युधिष्ठिर से बोला । ९ । हे पाण्डव लोगों तुम सब रथ घोड़े और
मित्रों समेत हो और मैं अकेला यकाहुआ विरथ और मृतक सवारीवाला । १० ।
अकेला अशस्त्र होकर शस्त्रउत्तनेवाले बहुतसे रथसवार शूरीरों से संयुक्त आप
लोगोंसे कैसे लड़नेका उत्साह करसक्ता हूँ । ११ । हे युधिष्ठिर तुम एक एक होकर
मेरेसाथ युद्धकरो युद्धने एक पनुष्य बहुतोंके साथ न्याय से लड़नेको योग्यनहीं
है । १२ । अधिकतर कवच से रहित थका हुआ आपत्ति में फँसा हुआ और
अत्यन्त घायल अंग मृतक सवारी सेनावाला । १३ । हेराजा मुझको तुझमे भयं
नहीं है पाण्डव भीमसेन अर्जुन वासुदेवगी और पांचालोंसे भी भयनहीं । १४ ।
नकुल सहदेव सात्यकि से और जो अन्य अन्य आप की सेना के लोग हैं उन
से भी भय नहीं है युद्ध में क्रोधयुक्त होकर मैं अकेलाही तुम सब को रोकूंगा
। १५ । हे युधिष्ठिर अच्छे लोगों की शुभ कीर्त्ति धर्म का मूल रखनेवाली है मैं
यहाँ धर्म और कीर्त्तिको पालन करताहुआ यह कहताहूँ । १६ । कि मैं उठकर तुम

said, "Daunted by Yudhishtir and his brothers, staying undere
water and fallen in misery, Prince Duryodhan heard the bitter words
and heaving deep sighs and with shaking hands, he came out of water
and said to Yndhishtir. "Pandavas I you have cars, horses and
friends with you, while I am alone, carless and my horses are dead. 10
How I can fight without weapons with you who possess weapons.
You must fight with me one by one, it is unjust if many warriors
fight with one. Destitute of armour, tired, fallen in trouble, wound
ed and destitute of carriage, I am not afraid of you nor have I any
fear of Bhim, Arjun, Vasudev and the Panchals. I am not afraid
of Nakul, Sahadev, Satyaki and other allies of yours. Enraged in
battle I shall check you alone 15. The fame of good men has vir
tue for its root and I rely on dharm when I say that I shall fight
with all of you Destitute of car and weapons I shall destroy you

संयुगे । अनुगत्यागतान् सर्वानृन्मून् संवत्सरो यथा ॥ १७ ॥ अथः व सरथान् साइवा
 नशस्त्रो विरघोपि सन् । नक्षत्राणोव सर्वाणि सविता रात्रिसंक्षये । तेजसा नाशयि
 ष्यामि स्थिरीभवत् पाण्डवाः ॥ १८ ॥ अद्यानृण्यं गमिष्यामि क्षत्रियाणां यशस्विनाम् ।
 बाह्लीकद्रोणेभीष्मणां कर्णस्य च महात्मनः ॥ १९ ॥ जयद्रथस्य शूरस्य भगदत्तस्य
 चोन्नयोः । मद्रराजस्य भाल्यस्य भूरिश्रवस एव च ॥ २० ॥ पुत्राणां भरतश्रेष्ठ
 शकुनेः सौबलस्य च । मित्राणां सुहृदोवैव घान्धवानां तथैव च ॥ २१ ॥ आनृण्य
 मथ गन्धानि हत्वा त्वां भ्रातृभिः सह । एतायदुक्त्वा वचनं विरराम जनाधिप ॥ २२ ॥
 युधिष्ठिर उवाच । दिष्ट्या त्वमपि जानीसे क्षत्रधर्मं सुयोधन । दिष्ट्या ते वर्तते बुद्धि
 युञ्जयैव महाभुज ॥ २३ ॥ दिष्ट्या शूरोसि कौरव्य दिष्ट्या जानासि सङ्करन ।
 यस्त्यमेको हि तः सर्वान् संयगे योद्धुर्मच्छसि ॥ २४ ॥ एक एकेन सङ्गम्य यत्ने सम्म

सर्वके सम्मुख जाकर युद्धमें ऐसे लड़गा जैसे कि वर्षकी समाप्ति में सब ऋतुओं
 के सम्मुख होकर वर्षका युद्धहोता है । १७ । अब शस्त्रों से रहित विरयहोकरभी
 रथ छोड़े रखनेवाले तुम सबको ऐसे नाशकरंगा जैसे कि रात्रिके समाप्त होनेपर
 सब नक्षत्रोंको सूर्य नष्टकर देता है हे पाण्डव लोगो नियत होजाओ मैं तुम सब
 को अपने तेजसे नाशकरंगा । १८ । अब मैं यशवान क्षत्रियोंकी अश्रुताको पाऊं
 गा हे भरतर्षभ अब तुझ को तेरे सब भाइयों समेत मारकर बाह्लीक द्रोणाचार्य
 भीष्म महात्माकर्ण शूरजयद्रथ मद्रका राजा शल्य भूरिश्रवा । २० । अपने
 पुत्र सौबलके पुत्रशकुनी मित्र शुभ चिन्तरु और बान्धवों की अश्रुणताको पाऊंगा
 । २१ । वह राजा इतना वचन कहकर मौन होगया । २२ । युधिष्ठिर बोले
 हे सुयोधन तुमभी मारव्यसे क्षत्रियधर्मको जानतेहो हे महाबाहु मारव्यही से
 तेरीघुद्ध युद्धकालये वर्तमानहै । २३ । हे कौरव मारव्यसेही शूरहोकर तू युद्ध
 को जानताहै जो अलेलाही होकर तू हम सबसे लड़ना चाहता है । २४ । जो शस्त्र
 तुम्हको अंगीकृत है उसको लेकर चाहै जिस अकेसेही भिड़कर युद्धकर हमवस

as the sun does the stars at day break. I shall be thus free from
 the debt of warriors. Having slain you and your brothers, I shall
 avenge the death of Vablik, Drona, Bhishm, Karan, Jayadrath,
 Shalya, Bhurishrava, my son, Shakuni, friends, well wishers and
 kinsmen." 21. Having said this, the king became silent. Then
 Yudhishtir said, "It is fortunate that you know the duties of
 kshatryas and are firm on it. Fortunately, you know how to fight
 and are ready for it. You may select any weapon you like and
 may fight with any warrior you choose and we shall look on your
 fighting 25. I give you the desire of your heart. You may reign
 after slaying any one of us five or yourself go to heaven." Duryodhan
 said, "If you are willing to give me a warrior to fight with, I

तमायुधम् । तस्मादाय युद्धेष्वेककाले वधं सिधता ॥ २५ ॥ अथमिष्टस्य ते कामं
 धीर भूयो वदाम्यहम् । हस्वक भव नो राजा हतो वा स्वर्गमवाप्नुहि ॥ २६ ॥ दुर्योधन
 उवाच । एकश्रेष्ठोऽनुमाक्रान्धे शूरोऽपि मम दीपताम । आयुष्मानामिष्यच्छापि धृतात्मसंमते
 गदा ॥ २७ ॥ हस्तैर्कं भवनामैकः शक्यं मां घोमिमन्यते । पदातिर्गदया संख्ये स
 युष्पतु मया सह ॥ २८ ॥ वृत्तानि रथयुद्धं नि विचित्राणि पदे पदे इदमेकं गदायुद्धं
 नवत्सव्यं मृतं मइत् ॥ २९ ॥ अन्नानामपि पर्यार्यं कर्तुमिच्छन्ति मानवाः । युष्माना
 मापि पर्यार्यो नवत्सव्यं तव ॥ ३० ॥ गदाया र्वां महाबाहो विजेष्यामि सहानुजम् ।
 पाञ्चालान् च सृञ्जयाञ्चैव येचाप्ये तव सैनिका । न हिमे सम्भ्रमो जातु शक्रादपि युधि
 छिर ॥ ३१ ॥ युधिछिर उवाच । उत्तिष्ठोत्तिष्ठ गान्धारे मां घोषय सुयाचन । एक एकं न
 सङ्गम्य संयुगे गदया बली ॥ ३२ ॥ पुरुषोर्मैत्रेयं गन्धारे युष्मत्सु सुसमाहितः । अथ
 तेरा तमाशा देखने को नियतहै । २५ । हे वीर भव फिर मैं तेरे इसअभीष्ट को
 देताहूँ हम पाँचों में एकको मारकर तेरा राजपहोय अथवा मरकर तू स्वर्गको
 पाते । २६ । दुर्योधन बोला कि जो अब युद्धमें लड़ने को एकशूर मुझे देतेहो तो
 आपके मतसे शस्त्रों में से यह गदाभी चाहिए । २७ । एकको मारकरही जोराव्य
 के मिलने न मिलने की प्रतिज्ञा है तो हममें एकशूर जो तुम्हके योग्य मानता
 है वह पदाती होकर गदाके द्वारा युद्धमें मुझमें युद्धकरे । २८ । मयम स्थान २पर
 रथोंके विचित्र युद्ध जारीहूये अब यहाँ गदाका युद्ध अपूर्व और बड़ा होय । २९ ।
 मनुष्य शस्त्रोंकी भी रचना को करना चाहते हैं अब तेरी बुद्धिम युद्धों कीभी
 रचना होय । ३० । हे महाबाहु भव मैं गदासे तुझको तेरे छोटे भाइयों समेत विजय
 करूंगा पांचाल सृञ्जीमादि जो अन्य २ तेरी सेनाके लोगहैं उनको भी विजय
 करूंगा हे युधिछिर कभी इन्द्रसेभी मुझको भय नहीं है । ३१ । युधिछिर बोले हे
 गान्धारी के पुत्र सुयोधन उठ और मुझमें युद्धकर बलवान और अकेला युद्धमें
 गदाकेद्वारा एकके साथ भिड़कर । ३२ । शूरहोना और हे गान्धारी के पुत्र अर्जुन

shall select this mace alone as my weapon 27. As for your promise
 to give the kingdom after slaying only one, let one of you
 fight with mace on foot. There have been many wonderful encounters
 of car-warriors, let us fight a wonderful battle with the mace. Let
 the fighting and weapon be regulated according to your direction.
 30. With my mace I shall conquer you and your younger brothers as
 well as the Panchals, the Srinjayas and other warriors of your army.
 I am not afraid even of Indra." "Suyodhan, son of Gandhari,"
 said Yudhishtir, "rise up and fight with me. Be brave and fight
 with one with your mace. Fight carefully and you cannot escape
 death even if Indra were to help you." Sanjaya said, "Your son,
 standing in the midst of water and sighing like a huge snake, could

ते जीवितं नास्ति यदीन्द्रोऽपि तथाश्रय ॥ ३३ ॥ संजय उवाच । एतत् स नरशाहूलो
नामृष्यत तथा मेज्जं सलिलान्तर्गतं दशभ्रे महानाग इव दशसन् ॥ ३४ ॥ तथासौ
वाक्प्रतोदेन तुग्मानः पुनः पुनः । धञ्जो न ममृषे राजन्नुत्तमाश्रयः कशामिव ॥ ३५ ॥
सञ्जोऽयं सलिलं वेगाद्गदामादाय वीर्यवान् । अद्रिसारमयीं गुर्वी काञ्चनाद्भ्रूव
णाम् । अन्तर्जलान् समुत्सृज्यो नागेन्द्र इव निदधसन् ॥ ३६ ॥ स मिरवा स्तम्भितं
तोयं स्कन्धे कृत्वा रथीं गदाम् । उदतिष्ठन् पुत्रस्ते प्रतपन्नदिग्गयानिव ॥ ३७ ॥ ततः
शैक्यायसीं गुर्वी जातुरूपपरिष्कृताम् । गदां पराम्पूर्यमान् धार्तराष्ट्रो महाबल
॥ ३८ ॥ गदाहस्त-तु ते हृष्ट्वा सशृङ्गमिव पर्वतम् । प्रजानामिव संकुद्रे शूलपाणि
मिषस्थितम् ॥ ३९ ॥ स गदीं भारत। भानि प्रतपन् भास्करो यथा ॥ ४० ॥ तमुत्तार्ण
महाबाहुं गदाहस्तपरिन्दमम् । मेनिरे सर्वभूतानि दण्डपाणिमिवा-तकम् ॥ ४१ ॥ धञ्ज
हस्तं यथा शक शूलहस्ते यथा हरम् । ददशु सर्वपाञ्चाल-पुत्र-तव जनाधिपम्

भावधानी से युद्ध करे अब जो इन्द्रभी तेरी सहायता करे तोभी तेरा जीवन नहीं
है । ३३ । संजय बोले कि उसनरोत्तम जलके मध्यवर्ती सर्पके समान महाश्वाम
लेते आपके पुत्रने इस बातको नहींसहा । ३४ । हे राजा उसप्रकारके वचनरूपी
कोड़ों से घायल उस दुर्योधन ने उन वचनों को ऐसे नहींसहा जैसे कि उत्तम घाड़ा
बाबुकुको नहीं सहता है । ३५ । वह पराक्रमी वेगसे जलको छिन्नभिन्न करके
सुनहरी बाजूबंदोंने अलंकृत लोहेकी गदाको लेकर सर्पराज के समान श्वास लेता
जलके मध्य में से उठा । ३६ । अर्थात् वह आपका पुत्र उस रोकेदुपे जलको हटा
कर लोहेकी गदा को कन्धेपर रखकर सूर्यके समान तपाता हुआ जलमें बाहर
निकला । ३७ । उसके पाँछ शैक्य में रहनेवाली लोहेकी भारी सुवर्ण जटित गदा
को बुद्धिमत् बड़े पराक्रमी दुर्योधनने अपने हाथमें लिया । ३८ । शिवर रखनेवाले
पर्वतकेसमान गदा हाथमें रखनेवाले उम दुर्योधनको देखकर उसको क्रोध युक्त
नियत होनेवाले शिवजी के समान माना । ३९ । वह भरतवंशी सूर्य के समान
तपाता हुआ शोभायमानथा । ४० । सब जीवोंने उम जलमें बाहर आयेदृये महाबाहु
गदा हाथमें लिये शत्रुविजयी दुर्योधन को दण्डधारी यमराज के समान माना । ४१ ।

not bear this language Wounded by the whips of words, Duryodhan
could not bear them as a noble steed cannot bear whip He soon
dispersed the water and came out from it sighing like a prince of
snakes He came out of water with his iron mace on his shoulder
glorious like the Sun. 37. Then he took up his noble mace made in
Shaikya, in his hand Seeing Duryodhan rise up like a mountain
peak, they found him like enraged Rudra and glorious like the Sun,
40. They took him for Yam the bear of staff All the people
were much pleased to see him and the Pandavas and Panchals clap-

॥ ४२ ॥ तमुत्तीर्णस्तु संनिक्ष्य समदृष्यन्त सर्वश । पाञ्चालाः पाण्डवेषुश्च तेऽन्यो
 न्यस्य तस्माद्दुः ॥ ४३ ॥ अथहासस्तु तं मत्वा पुत्रो दुर्योधनस्तथ । उद्धृत्य नयनं
 क्रुद्धो दिग्धुरिष पाण्डवान् । ४४ ॥ त्रिशिखां भ्रुकुटीं कृत्वा समदृष्टदशनच्छदा ।
 प्रयुवाच ततस्तान् धै पाण्डवान् सहकेशवान् ॥ ४५ ॥ दुर्योधन उवाच । अस्वायहा
 शस्य फले प्रतिशोक्षय पाण्डवाः । गमिष्यथ हताः सद्यः सपाञ्चाला यमक्षयम् ॥ ४६ ॥
 संजय उवाच । उद्यतश्च जलास्तस्मात् पुत्रो दुर्योधनस्तथ । अतिष्ठत गदापाणी
 रुधिराण समुक्षितः ॥ ४७ ॥ तस्य शोणितोद्वेषस्य सलिलेन समुक्षितम् । शरीरं स्म
 तदा जाति अथन्निघ महीधर ॥ ४८ ॥ तमुद्यतगद् धीरं मेनिरं तत्र पाण्डवा । वैवस्वन्
 मिघ क्रुद्धं किङ्करोद्यतपाणिगम् ॥ ४९ ॥ स मेघनिन्दो हर्षाप्रहर्षिष्व च गोवृष । आज
 हाव तत पार्यान् गदया युधि धीर्यघान् ॥ ५० ॥ दुर्योधन उवाच । एकैकेन च मं

सव पांचालो ने आपके पुत्र राजा दुर्योधन को उमरका का देखा जैसे कि
 बज्रधारी इन्द्र और शूलधारी रुद्रजीको देखने है । ४२ । सबलोग जलसे बहर
 निकलनेवाले उसदुर्योधनको देखकर बहुत प्रसन्नहुये औरउन पाञ्चाल और पांडवों
 ने ताली बजई । ४३ । फिर आपकापुत्र दुर्योधन उनकी ताली बजने को
 अपनाहास्य मानकर दोनों नेत्रोंको खोलके क्रोधयुक्त पांडवों को भस्म करता
 हुआसा । ४४ । भ्रुकुटीको तीन शिखावाली करके दांतोंकी पीत्तकी काटता केश
 बनी समेत पांडवोंसे यह उत्तर बचन बोला । ४५ । कि हे पांडवलोगों, तुम इस
 हास्यके फलको पाओगे और पांचालों समेत मुझने मरकर शीघ्रही यमलोक को
 जाओगे । ४६ । संजय बोले कि वह जलसे निकलाहुआ आपका, पुत्र दुर्योधन
 रुधिर से युक्त गदा हाथमें लेकर नियत हुआ । ४७ । तब उस रुधिर से युक्त
 शरीर जलसे आर्द्र उसमरकारका विदित होताथा जैसे कि क्रान्नाओं से युक्त पर्वत
 होताहै । ४८ । वहां पांडवोंने उस गदाऊंची करनेवाले धीरको क्रोधयुक्त दंडधारी
 यमराज के समान माना । ४९ । उसके पीछे प्रसन्नतासे दृषयके समान गर्जनेवाले
 वादन के समान शब्दायमान पराक्रमी उस दुर्योधन ने गद के द्वारा युद्धमें
 पांडवों को बुलाया । ५० । दुर्योधन बोला हे युधिष्ठिर तुम युद्धमें एक २ मेरे

ped their hands Duryodhan was offended at this and, with brows
 contracted in rage gnawing his teeth, thus addressed Keshav and
 the Pandavas — (45, " You will reap the reward of it, Pandavas
 and will soon go to the region of Yam together with the Panchals. "
 Sanjaya said, " Your son, Duryodhan coming out of the lake with
 bleeding body, looked like a hill with waterfalls The Pandavas
 looked upon him and his mace as Yam the bearer of staff. Then
 bellowing like a bull and thundering like a cloud, brave Duryodhan
 challenged the Pandavas to fight 50. Duryodhan said, " Come to

बधमासीकृत युधिष्ठिर । न हाको बहुभिर्भ्रातृभ्यो वीरो योजयितुं युधि ॥ ५१ ॥ एष स
 र्वां विशेषेण ध्यातव्यान्सु परिप्लुत मूर्धो विभ्रतगात्रश्च इव श्वनसैनिक ॥ ५२ ॥
 अवश्यमेव योजय्य सर्वैरव मया सत्र । युक्त न युक्तमित्येतन्नृषिः स्वयमेव सर्वदा
 ॥ ५३ ॥ युधिष्ठिर उवाच । मा मूढिय तव प्रज्ञा कथमेव सुयोधन । बधामिमन्यु बधयो
 अपरयुधि महारथा ॥ ५४ ॥ अत्रधर्मं मया कुर निरपेक्षं सुनिर्घणम् । अ-यथा तु कथ
 इत्युभिमन्यु तयागतम् ॥ ५५ ॥ सर्वे भवन्ती धर्मज्ञाः सर्वे दूराक्षव्राज । स्वायेन
 युष्यता प्रोक्ता शकलोपगतिः परा ॥ ५६ ॥ यद्येकस्तु न इत्यथो बहुभिर्धर्मं एव च ।
 तदाभिमन्यु बहवो निजघ्नुरुत्त्वग्मते कथम् ॥ ५७ ॥ सर्वो विवृणुते जन्तुः कृच्छुरयो
 धर्मदर्शनम् । पश्यथ पिहित इ र परलोकस्य पदपथि ॥ ५८ ॥ आमुष्य कथं वीर

सम्मत्प्रयाओ अकेला वीर बहुनों के साथ युद्धमें लड़नेको न्याय के अनुसार योग्य
 नहीं है । ५२ । अधिकतर कवचःवागधकाहुआ जलसे आर्द्रशरीर अत्यन्त घायक
 अंग मृतक सवारी और सेनाके लोगशाला । ५२ । सबको घेरे साप अकृष्यही
 लड़ना चाहिये तुम सर्वेव योग्य और अयोग्य बातों को जानतेहो । ५३ । युधिष्ठिर
 बोले हे सुयोधन यह तेरी बुद्धि नहीं हुई यह बात तब कैसी हुईथी जब कि बहुत
 से महारथियों ने युद्धमें अकेले अभिमन्युको मारा । ५४ । सत्रियधर्म अत्यन्त
 निर्दय और असंभ्रमिहै उससमय उस दशावाले अभिमन्युको विपरीत रीति से
 कैत मरा । ५५ । साप सब धर्मों के जानेनेवाके शूर और शरीरकी प्रति के
 त्यागनेवाले थे न्यायसे उच्च राशिके युद्ध करनेवालोंकी इन्द्रलोकमें उच्चगति
 कही है । ५६ । जो अतेजा बहुनों के हाथसे मारनेके योग्य नहीं यही धर्महै जो
 उससमय तेरी बुद्धिसे बहुतसे शूरवीरों ने मिलकर अकेले वालक अभिमन्युको
 कैसेमारा । ५७ । दुःस्र में पड़ेहुये सबजीव धर्मदर्शन को विचारते हैं और अपने
 स्थानपर नियत परलोककेद्वारको बन्दमानते हैं । ५८ । हे वीर कवचको धारणकरो

me one by one, Pandavas, for the fighting of one with many is unla-
 wful, specially when I am destitute of armour, tired, wet, without car
 and army. All men must fight with me. You know what is proper
 and improper. Yudhishtira said, "Your policy was not this before
 when many warriors slew Abhimanyu. The works of Khatryas are
 very cruel. How were you so cruel to Abhimanyu. 55 You know
 all dharmas, were Brava and not caring for life. Those who fight in
 a just cause, go to the region of Yama. If you think it unjust for a
 single man to be slain by many, how it was that many warriors slew
 Abhimanyu. People fallen in misery talk of virtue and think that
 the door of the next world is closed for them. Put on your armour,
 brave man and tie up your ear. You may take any other thing that
 you stand in need of. I give you a boon you will yet be king if you

सूत्रेणात् वनपथे च । यद्यथायद्यपि ते नालि तदप्यादरस्व भारते ॥५८॥ इयमेकदश
 ते चामि वरि भूषो वदाम्यहम् । पञ्चालानां पाण्डवेषां यो न युद्धमिदं वृत्तसि ॥ ६० ॥
 तं हत्वा वै अचात्राजा हतो वा स्वर्गमाप्नुहि । श्रुते च जीविताक्षीर युद्धे किं कुर्म मे
 प्रियम् ॥ ६१ ॥ सञ्जय उवाच । ततस्तव सुतो राजन् धर्म अप्राह काञ्चनम् । विधि
 कञ्च शिरस्त्राणे काञ्चनदण्डरिक्तम् ॥ ६२ ॥ सोऽथवक्षशिरस्त्राण शुभकाञ्चनधर्म
 भूत् । रराज राजन् पुत्रसि काञ्चन शैलराज्ये ॥ ६३ ॥ सभश्च स गङ्गी राजन् सखः
 कथाममर्द्धनि । अमवीत् पाण्डवात् सर्वात् पुत्रो युर्व्योधनस्तव ॥ ६४ ॥ स्यात्पूर्णा अब
 ताभेको युध्यतां गद्या मया । सहदेवेन वा योस्ये भूमिेन नकुलेन वा । ६५ ॥ अथवा
 काञ्चशुभेनाथ स्वया वा मरतर्षभ । योस्येहं सङ्करं प्राप्य विजेष्ये च रणाजिरं ॥ ६६ ॥
 अहमथ गमिष्यामि वैरस्यान्तं सुदुर्गमम् । गद्या पुरुषव्याप्तं प्रेमपट्टनिषङ्गया ॥ ६७ ॥
 गदायुद्धे न मे कश्चित् सदसोऽस्तीति चिन्तये । गद्या वो हनिष्यामि सर्वानेव समा

और शिरके वालोंको बांधो हे भरतवंशी जो दूसरी और कोई वस्तु तेरे पास न
 होवे उसको भी लो । ५९ । और हे वीर फिर मैं तेरे इस एकमनोरथको देताहूँ
 कि पाँचों पांडवों में से जिसकेसाथ तुम लड़ना चाहतेहो । ६० । निश्चय उसको धार
 कर आप राजाहोगे अथवा मरकर स्वर्गको जाओगे हे वीर युद्धमें जीवन के
 सिवाय तेरी कौनसी शिष्टाचारीको करें । ६१ । सञ्जयबोले हे राजा इसकेपीछेआप
 के पुत्रने सुनशिरकवच और जांबूनद सुवर्ण से जटित शिरस्त्राणको लिया । ६२ ।
 तब वह आपकापुत्र शिरस्त्राणको बांधने वाला उज्ज्वल स्वर्णमयी कवच धारण
 करनेवाला सुवर्ण के पर्वतके समान शोभायमानहुआ । ६३ । हे राजा कवचधारी
 महा बलंकुत गदाधारी आपकापुत्र दुर्वोधन युद्धके मुत्तपर खड़ा होकर सब
 पांडवोंसे बोला । ६४ । कि आप सब भाइयों में से एकभाई गदालेकर मेरेसाथ युद्ध
 करे सहदेव भीमसेन अथवा नकुलके साथ युद्धकरुंगा । ६५ । हे भरतर्षभ अथवा
 अब मैं युद्धको पाकर अर्जुनके साथ वा तेरेसाथ लडूंगा और रणभूमि में तुमको
 विजय करुंगा । ६६ । हे पुरुषोत्तम अब मैं स्वर्णवस्त्रों से मड़ीहुई गदाकेद्वारा बड़े
 दुःखसे मिलनेके योग्य शत्रुताके अन्तको पाऊंगा । ६७ । गदायुद्ध में मेरे समान
 कोई नहीं है वही अपने चित्तमें विचारताहूँ सम्मुख आनेवाले तुम सबकोगदा

can slay one of the Pandavas or shall go to heaven after being slain.
 What can I do more for you ?" 61. Sanjaya said, ' Then your son,
 O king, put on golden armour and head-protector adorned with gold,
 and looked glorious like a mountain of gold. Then standing ready to
 fight, your son said to the Pandavas, " Let one of your or thers come
 to fight with me with a mace I shall fight with you or Arjun and
 hope to win you I shall make an end to the enemy by means of
 my mace I have no equal in fighting with the mace and shall
 slay any one of you coming before me. You are not just to fight

गताम् ॥ ६८ ॥ नम समर्था सर्वे वै योजु-वापत केचन । न युक्तमात्मना वक्तव्यं
गर्वोद्धतवच । अथ वा सफलं होतुं करिष्ये भवता पुरः ॥ ६९ ॥ अस्मिन् गृह्ये
सत्यं वा मिथ्या वैतद्भविष्यति । गृह्णातु च गर्वां यो वै धोत्स्यतेद्य मया सह ॥ ७० ॥

इति शल्यपर्वणि गदायुद्धपर्वणि युधिष्ठिर दुर्योधन सवादे द्वाविंशोऽध्यायः ३२ ॥

सञ्जय उवाच । एव दुर्योधने राजन् गज्जमाने गृह्ये ॥ युधिष्ठिरस्य संशुद्धो
वासुदेवोऽत्रवादिदम् ॥ १ ॥ यदि नाम ह्यय युद्धे धार्येथा युधिष्ठिर । अर्जुन नकुलश्रेव
सहदेवमथापि धा । २ ॥ किमिदं साहसं राजस्त्वया व्याहृतमोदरात् ॥ ए । मेव सिद्ध
त्वाजो भव गजा कुरु भिति । ३ ॥ एतेन हि कृता योग्या धर्माणीह प्रयोदश । भावयन्

सेही मारुगा । ६८ । तुमसब न्यायसे मेरेसाथ लड़नेको समर्थ नहीं हो इसप्रकार
अहंकारसे प्रेरितवचन अपनी ओरसे कहने के योग्य नहीं हूँ । ६९ । अथवा आप
लोगोंके भागे इस वचनको सफल करूंगा इम मुहूर्त्त में यह बात सत्यहोए वा
असत्यहोए तुमसे से वह मनुष्य गदाको हाथमें ले जो कि अब मेरे साथ में
लड़ता चाहता है ७० ॥

अध्याय ३३ ॥

सञ्जय बोले कि हे राजा इसप्रकार बारंबार दुर्योधनके गर्जनेपर युधिष्ठिरके
ऊपर क्रोधित होकर वासुदेवजी यह वचन बोले । १ । कि हे युधिष्ठिरजी यह युद्ध
में तुम्हको अर्जुनको नकुलको सहदेवको भी बुलावे । २ । तो क्याहोगा हे राजा
तुमने विनाविचारके यह ऐमावचन क्योंकहाकि रखभूमिमें एककोही मरकर कौरवों
together with me I should not talk of my own praise- I shall prove
my words in your presence So let him who wishes to fight with me
come before me with his mace 70.

CHAPTER XXXIII

Sanjaya said, 'When Duryodhan was thus roaring again and
again, Vasudev said in anger to Yudhishtira, "What will you do
if he challenges you or Arjuna, Nakul and Sahadev? Why did you
say that he might become king after slaying one of the Pandavas?
He has practised on an iron statue for thirteen years in order to slay

पुरु मे राजन् ममसेनाजिघांनया । ४ ॥ कथं नाम मवेत् कार्यमस्माभिर्मरतर्षभ ।
 साहसं कृतवांसवन्तु हानुक्रोधाभ्यनुपोत्सव ॥ ५ ॥ ताप्यमद्यानुपश्यामि प्रतियोद्धारमा
 हवे । श्रुते वृकोदरात् पार्थात् स च मातिहृतप्रमः ॥ ६ ॥ तद्विद् घृतमात्स्य
 पुनरेव यथा पुरा । धिपमं शकुन्तेशैव तव चैव - पिशाभपते ॥ ७ ॥ वली
 भीमः समर्थश्च कृती राजा सुयोधनः । बलवान् वा कृती घेति कृतीराजन् पिशिशपते
 ॥ ८ ॥ सोऽऽ राजेस्त्वया शत्रुः समं पथि निवेशितः । श्वस्तश्चात्मा
 सुविषये कृच्छ्रामापादिता ययम् ॥ ९ ॥ को नु सर्वान् विनिर्जित्वा शत्रूणेकेन वैरिणा ।
 कृच्छ्रप्रसिन्नच तथा हारयेद्वाज्यमागतम् ॥ १० ॥ नहि पश्यामि तंलाके योऽद्य दुर्योधने रणे
 गदा हस्तं विञ्जेतु य दाक्तः सर द्मरतेवि द्विः ॥ ११ ॥ स कथं यदस्ते शत्रुं युष्यस्य गदयेति

में राजाहोय । ३ । यों इमने तोह वर्षतक भीमसेनके मारनेकी इच्छासे लोहेकी
 भूतिपर कृत्यासिद्धकरी है । ४ । हे भरतर्षभ हमलोगोंकी भोग्से अब कैसे कार्यहो
 सक्ताहै हे राजेन्द्र तुमने दयाकरके विनाविचारे यह कर्मकिया । ५ । मैं युद्धमें उसके
 सम्मुख लड़नेवाला राजाभोंसे किसी राजाको भी नहीं देखता हूँ सिवाय
 पांडव भीमसेन के कि वहभी अर न्त अभ्यास करनेवाला नहीं है । ६ । यह घृण
 फिन्धी घापने मारम्भकिया जैसा कि पूर्वमे कियाथा हे राजा शकुनिकी और तेरी
 विषमता है । ७ । भीमसेन बलवान् और समर्थ है राजा दुर्योधन कर्मकर्त्ता है
 बलवान् और कर्मकर्त्ता अधिक है । ८ । हे राजा इम शत्रुको तुमने सत्य मार्ग में
 प्रवृत्त किया और अपने को बड़ी आपात्ति में डालकर हम को भी दुःख में
 संयुक्त किया । ९ । कौन मनुष्य सब शत्रुओंको विजय करके दुःखमें पड़ेहूये
 अकेले शत्रुकेसाथ प्राप्तोनेवाले राज्यको हाताई । १० । मैं लोकमें अब उत्पुङ्गु
 को नहीं देखताई जोकि युद्धमें गदाहाथमें रखनेवाले दुर्योधनके विजय कर ने को
 समर्थहो । ११ । भरतवंशी सो तुम किमप्रकार शत्रु से कहेते हो कि और हमारे
 मध्य मेंसे एकको मारकर राजाहो ३ भीमसेनको पाकर न्यायसे युद्ध करनेवाले हम

Bhim, You have made a mistake in making this promise so rashly.
 I see no king capable of fighting with him with the exception of
 Bhim, who is out of practice. You are again gambling like before
 You are like Shakuni a gambler. Bhim-seen is strong and powerful,
 while Duryodhan is a practical man and therefore the better of the
 two. You have given advantage to the enemy and thrown yourself
 and us into difficulty. Who else will give away his kingdom to a
 helpless enemy after having conquered all his foes? I see none
 that may be able to slay Duryodhan while he is armed with me.
 Why do you urge the enemy to fight with me and to become
 king after slaying one of us. It is doubtful for even Bhim is not
 Duryodhan. You have said that he may become king after slaying

द्वि । एकश्च नो निहत्याजो भव राजेति भारत । १३ ॥ इकोदरं समासाद्य संशयो
 विश्वे हि नः न्यायतो युद्धमानानां कृती ह्येष महाबलः ॥ १४ ॥ एकं वास्मान्निहत्य
 त्वं भव राजेति मे पुनः । नूनं न राज्यभागेषा पाण्डोः कुन्त्याश्च स्मृततिः । भवन्त
 वनवासाय सृष्टा मैक्षाय वा पुनः ॥ १५ ॥ भीमसेन उवाच । मधुसूदन मा कार्षीर्षि
 वाद् यदुनन्दन । अद्य पार गमिष्यामि वैरस्य भृशदुर्गमम् ॥ १६ ॥ अयं सुयोधनं
 कश्ये हनिष्यामि न सशयः । विजयो वै शुषः कृष्ण धर्मगजस्यः हृद्यते ॥ १७ ॥
 अयद्येन गुणेनेयं गदां गुरुतरो तम । न तथा चासंराष्ट्रस्य मा कार्षीर्माषव न्ययाम
 ॥ १८ ॥ अहमेन हि गद्या संयुगे योज्जुमुत्सहे । भवन्तः प्रेक्षकाः सर्वे मम सन्तु जना
 र्दन ॥ १९ ॥ सामरामपि ठोकास्त्रीभानाशस्त्रचरान् पुषि । योषयेयं रजे कृष्ण, किमु
 ताद्य सुयोधनम् ॥ २० ॥ सत्रय उवाच । तेषां, सम्भाषमाणान्तु वासुदेवो इकोदरम् ।

सोर्गों की विजय में सन्देह है क्योंकि यह दुर्धवावलवान दुर्गोधन कर्मकर्ता है । १४।
 फिर तुमने यही कहा है कि हमसे एक को मारकर राजाहोमै निश्चय करके
 पाण्डु और कुन्तीकी सन्तान राज्य भोगनेवाली नहीं है केवल बड़े वनवास
 और धारम्भार भिक्षा मांगने के अर्थ उत्पन्न करिगई । १५ । भीमसेन बोले है
 मधुदैत्यके मारनेवाले यदुनन्दन जी व्याकुलता मतकरो अब उसी कठिन और
 दुष्प्राप्य शत्रुताके अन्दको पाऊंगा । १६ । अब मैं युद्ध में दुर्गोधन को मारूंगा
 इस में कुछ सन्देह नहीं है हे श्रीकृष्ण जी धर्मराजकी पूर्ण और अवल विजय
 दिखाई देती है । १७ । यह मेरी गदा अर्द्धभागमें बहुत भारी है ऐसी दुर्धम
 की नहीं है हे माधवजी पीड़ामतकरो । १८ । मैं युद्धमें गदासे इसके साथ लड़नेको
 उत्साह करता हूँ हे जार्दनजी आप सब लोग मेरे युद्धके देखनेवाले रहो । १९ ।
 हे श्रीकृष्ण जी मैं युद्धमें नानामकार के शस्त्रधारी देवताओं समेत शानों कोकोसे
 भी युद्ध करपक्ता हूँ तो अब दुर्गोधनसे क्यों नहीं करूंगा । २० । फिर भस्त्रविष्य वासुदेव

one of us. Surely Kunt's sons are not born to rue. They are
 made to live in exile and to beg their food." Bhim said, " Slayer
 of Mathu! Yadu Nandan, be not confused. I shall make an end of
 the enmity. 16. I shall slay Duryodhan in battle without doubt
 and Yudhishtbir's victory is secure. My mace is very heavy in
 the middle. Duryodhan has no such mace. Be not anxious, Madhav
 I dare fight with Duryodhan; you must all witness our fight. I can
 fight against the three worlds including gods, why should I not be
 able to overcome Duryodhan. " 20. At this Sri Kishn praised
 Bhim and said, you will no doubt slay Yudhishtbir's enemy and will

दृष्ट मपूजयामास यचनचेद्ममवर्त ॥२॥ धर्माश्रित्य महाप्राणी धर्मराजा युधिष्ठिर
 निहतारि स्वका दीप्ताश्रिः प्राप्ता न संशय ॥ २१ ॥ स्वया विनिहता सर्वे धृतराष्ट्रे
 सुता रणे । राजाना राजपुत्राश्च नागाश्च विनिपानिता ॥ २२ ॥ कलिंगा मगधा प्राच्या
 गान्धारा कुरुवल्गवा । स्वानांलाघ मशयुद्ध निहत प्राङ्मुखा ॥ २३ ॥ हस्वा दुर्गो
 घनश्चापि प्रयच्छोर्षा ससागराम् । धर्मराजाय कौभेय यथा विष्णु शचीपते ॥ २४ ॥
 स्वाश्व प्राप्य रणे पापी धर्मराष्ट्रे विनश्यति । रथमस्य सन्निधौ भङ्गवा प्रातश्चा
 पालविष्यासि ॥ २५ ॥ यत्नेन तु सदा पाप योद्धव्यो धृतराष्ट्रज । वृत्तौ च यलवाश्चैव
 युद्धशोण्डध निष्यदा ॥ २६ ॥ तस्तु सत्यकी राजन् पूजयामास पाण्डवम् ॥ २७ ॥
 पाण्डवाला पाण्डवेयाश्च धर्मराजपुरोगमा । तत्र चो भीमसेनस्य सर्व एवाभ्यपूजयन्
 ॥ २८ ॥ ततो भीमवल्लो भीमो युधिष्ठिरगथावर्जित् । सुजयै सदा तिष्ठन्त तपन्तमिध
 भारहरम् ॥ २९ ॥ अहमेतेन सङ्गम सयुगे योद्धुमुत्सहे । न हि शक्तो रणे जन्तुं मामिध
 जी ने उपपकार वार्त्ता कलेशले भीमसेनकी प्रशंसा करी और यह वचन बोल
 ॥ २१ ॥ हे महाबाहु यह धर्मराज युधिष्ठिर हमारे अभिनेता कर निस्संदेह मुनके
 शत्रुवाला और अपनी प्रकाशमान लक्ष्मीकी प्राप्त है । २२ । युद्धमें धृतराष्ट्र के
 सब पुत्र तेरेही हाथों मारेगये राजा राजकुमार और हाथीभी गिरायेगये । २३ । हे
 पाण्डुनन्दन कलिंग मगधपूर्विय और गान्धारदेशियों समेत कौरवसोम तुम्हकी वडे
 युद्धमें पीकर मारेगये । २४ । हे कृष्णके पुत्र अब तू दुर्योधन को भी मारकर इस
 सागरम्बरा पृथ्वीको धर्मराज के एने सुधैरुके जेभे कि विष्णुने इन्द्रको सिद्ध
 करीया । २५ । पापी दुर्योधन युद्धमें मुझको मारकर नाशको पावेगा तम इसकी
 जय को तोड़कर अपनी भतिजा का पालन करोगे । २६ । हे भीमसेन यह दुर्योधन
 सदैव उपाय दुर्बक लिहनेके योग्य है यह सदैव कर्म कर्त्ता बलवान और युद्धमें
 कुशल है । २७ । हे राजा इसके पीछे सात्यकी पांचाल और धर्मराज समेत सब
 पाण्डवों ने उस भीमसेन की प्रशंसा करी अर्थात् सबनेही भीमसेनके उस वचनकी
 प्रशंसा करी । २८ । उसके पीछे भयानक पराक्रमी भीमसेन उस सृजियों समेत
 नियत मूर्त्यके समान मंत्र करनेवाले युधिष्ठिर से बोले । २९ । कि मैं युद्ध में

give in his kingdom. The sons of Dhritrashtra were slain by you along with other princes and elephants. Kalingas, Magadhas and Gandharas, with the Kauravas, were slain by you. Having slain Duryodhan, you will give the sagre land to Yudhishtira as Vishu had done with Indra. 25. Sautul Duryodhan will meet his death in battle and you will fulfil your promise by breaking his thigh. Duryodhan should be fought with carefully, Bhim, for he is powerful and clever in fighting. Then Satyaki with the Panchals and Yudhishtira with the Pandavas praised Bhim. All the people praised him. Then Bhim of dreadful prowess said to Yudhishtira who was glorious

पुत्रराजमः ॥ ३१ ॥ अथ क्रोधं विमोक्षयामि निहितं हृदये मृगम् । सुयोधने चाक्षराक्ष्णे
 स्नाग्दधेऽग्निमिषादीन् ॥ ३२ ॥ शस्त्रमद्योर्ध्वारयामि तत्र पाण्डव वृकच्छयम् । निहत्य
 गद्वा पापमद्य राजन् सुखी भव ॥ ३३ ॥ अथ कीर्त्तिमयीं मालां प्रतिमोक्ष्ये तवानध ।
 प्राणाद् धियश्च राज्यश्च मोक्षयतेऽद्य सुयोधनः ॥ ३४ ॥ राजा च धृतराष्ट्रोऽद्य क्षुरवा
 पुत्रं मया हतम् । स्मरित्यशुभं कर्म यत्तच्छकुनिबुद्धिजम् ॥ ३५ ॥ इत्युक्त्वा भरतभृष्टो
 गद्गामुद्यम्य धारयवान् । उद्धतिष्ठत युद्धाय शक्रो वृत्रमिवाह्वयन् ॥ ३६ ॥ तंकाङ्क्षान
 मन्मथ्यन् धै तद्युजांतिवीर्यवान् । प्रत्युद्यमित एवामो मत्तमिष जिपम् ॥ ३७ ॥
 गदाहस्तं तव स्तं युद्धाय समुपस्थितम् । दृष्टुः पाण्डवाः सर्वे कैलासमिव भ्राङ्गिणम्
 ॥ ३८ ॥ तमेकाकिनवासाद्य चाक्षराक्ष्णं मंदाफलम् । विपुषीमिव मातंगं संमहयन्त
 पाण्डवाः ॥ ३९ ॥ न सम्भ्रमो न च मयं मद्य इत्यर्नि च र्यथा । आसीद्दुष्टयोधन

इसके सम्मुख होकर लड़ने को उन्हाह करताहूँ यह नीच पुरुष युद्धमें मेरे बिजय
 करने को समर्थ नहीं है । ३१ । अब मैं हृदय में रखेहुये कठिन क्रोधको धृतराष्ट्रके
 पुत्र दुर्योधन पर ऐसे छोडूंगा जैसे कि स्नाग्दधन में अर्जुनने छोडाया । ३२ ।
 हे पाण्डव अब मैं गदामे पापीको मारकर आपके हृदय में रहनेवाले भरतको
 उखाडूंगा हे राजा अब प्रसन्न होजाओ । ३३ । हे निष्पाप अब मैं कीर्त्तिरूपी
 मालाको आपके कंठमें हालूंगा अब यह सुयोधन राज्यलक्ष्मी समेत अपने माणोंको
 त्यागेगा । ३४ । और राजा धृतराष्ट्र मेरे हाथसे मारेहुये पुत्रको छनकर उस दुष्ट
 कर्मको स्मरण करेगा जो कि शकुनी की बुद्धिसे उत्पन्नहुआ । ३५ । हे भेष्ट
 भरतर्षभ यह कहकर भीमसेन गदाको उठाकर खडाहुआ और युद्धके निमित्त
 उसको ऐसे बुलाया जैसे कि इन्द्रने वृत्रासुरको बुलायायाथा । ३६ । आपका बडा
 पराक्रमी पुत्र उसके बुलानेका न सहता हुआ क्षिप्रता से ऐसे सम्मुखहुआ जैसे
 कि मतवाला हाथी मतवाले हाथीके सम्मुख जाताहै । ३७ । सबपाण्डवों ने गदा
 हाथ में रखनेवाले और सम्मुखनियत आपके पुत्रको शिखर रखनेवाले कैलासके

like the Sun, " I dare fight against him, for he cannot conquer me 31:
 I shall discharge my anger at Duryodhan as Arjun had done in the
 Khāṇḍav forest. Having slain that sinner with my mace, I shall
 remove the dirt from your breast Be cheerful, king I shall wear
 the garland of fame round my neck. Duryodhan will give up his
 wealth and kingdom along with his life and Dhritrashtra will remem-
 ber the cruel deeds done by the advice of Shakuni when he heard of
 his son's death at my hands." Having said this, Bhishm stood up with
 his mace and challenged him to fight as Indra had done Vritrasur (36)
 Not bearing the challenge of Bhishm, your son faced him as one mad
 elephant faces another The Pandavas looked on him as on a peak
 of Kailas The Pandavas were much pleased to see Duryodhan

स्वापि स्थित सिंह इवाहवे । ४० ॥ तमुद्यतगदं दृष्ट्वा कैलासमिष भृगिणम् । जाम
 क्षेत्रलदा राजन् दुर्व्योधनमयाप्रघात ॥ ४१ ॥ रात्रापि धृतराष्ट्रेण स्वया चाहमासु यत्
 कृतम् । स्मर तद्दुष्कृतं कर्म यद्ब्रह्म घारणाघते ॥ ४२ ॥ द्रौपदीव परिक्रिष्टा सभा
 मध्ये रजस्वला । घृते यत्क्रिजितो राजा शकुनेयं द्विनिश्चयत् ॥ ४३ ॥ यानि चाम्यानि
 दुष्टारमन् पापानि कृतवानसि । जनागः सु ख पापेषु तस्य पश्य महत् फलम् ॥ ४४ ॥
 रशकते निहतः शोते शरतद्वये महायशा गांगेयो भरतधेष्टः सर्वेषां न पितामहः ॥ ४५ ॥
 हतो द्रोणश्च कर्णश्च हत शल्यः प्रतापवान् । धैरस्य चादिकर्तासौ शकुनिर्निहतो
 युधि ॥ ४६ ॥ ज्ञातरहने हताः शूराः पुत्राश्चै सहस्रैः शक्रैः । राजानश्च हता शूरा स्मरे
 स्वनिवसिनः ॥ ४७ ॥ एते चान्येच निहता बहवः क्षत्रियर्षभा । प्रातिकामी तथा पापो
 द्रौपद्याः क्लेशकृत् ॥ ४८ ॥ अशिशिष्टः स्वभेद्यकः कुलघ्नोऽयमपूरुषः । स्वामध्वष्ट

समानदेखा । ३८ । अपने घूँसे जुदा हाथीके समान अकेले बड़े बलवान्
 दुर्व्योधनको पाकर सवपाण्डव अत्यन्तप्रपन्नरूपे ३९ । दुर्व्योधनको व्याकुलतामय
 ग्लानि और पीड़ा नहीं हुई और युद्धमें सिंहकेसमान नियतहुआ । ४० । हे राजा
 तब भीषमेनने उसगदा उठानेवाले शिवरथारी कैलासके समान दुर्व्योधनको देखकर
 यहबचनकहा । ४१ । कि राजाघृतराष्ट्रन और तुमने जो हमारे साथकिया व जो
 वारणावतनगर में किया उसपापकर्म को स्मरणकरो । ४२ । और जो रजस्वला
 द्रौपदीको सभामें दुःखी किया और जो शकुनिकी बुद्धिके निक्षयमें राजापुषिष्ठर
 को घूँसे छलमें विजयकिया और हे दुर्वुद्धी इनके सिवाय जो २ तुमने अन्य
 पापोंको निरपराधी पाण्डवों के साथकियाहै उसके बड़ेफलको देखो ४३ । तेरेकाणसे
 मृतक बड़ेयशवान् गांगेय हमसबके पितामह भरतर्षभ भीष्मजी शरशय्यापर सोते हैं
 । ४४ । प्रतापवान् शल्य कर्ण और द्रोणाचार्यजी मारेगये और शत्रुताका प्रादि
 कारण वह शकुनि भी युद्धमें मारागया ४५ । और सेनाके लोगों समेत तेरे शूरभाई
 पुत्रादिक भी मारेगये और युद्धमें परांगुल न होनेवाले शूरवीर राजालोग मारे
 गये । ४७ । इनकेसिवाय अन्य हजारों उत्तमक्षत्रिय मारेगये उसमकार द्रौपदी
 केदुःख का उत्पन्न करनेवाला पापी प्रातकामी मारागया । ४८ । कुलका नाशकरने

standing like an elephant separated from its companions Duryodhan
 was neither afraid nor troubled 40 Then Bhishm seeing that mace
 bearer stand like a hill, said, " Remember what Dhritrashtra and you
 did to us at Barnavat. Remember the wrongs done to Draupadi and
 your wrongful deprivation of our kingdom by the help of Shakuni
 and other wrongs done to the Pandava; for you will reap the reward
 of those acts to day. Bhishm the grandfather of great prowess sleeps
 on the bed of arrows on account of you 45. Glorious Shalya, Karan
 and Dronacharya, are slain as well as Shakunt the root of all enmity.

हनिष्यामि गद्यानां सशय ॥ ४९ ॥ अद्य तेऽहं षोऽर्षं सर्वं नाशयिता वृष ।
 राजवासा विपुला राजन् पाण्डवेषु च दुष्कृतम् ५० ॥ दुर्योधन उवाच । किं कथितेन
 बहूना युधामन्युः सह । अद्य तेऽहं विनेष्यामि युद्धशस्त्रा वृकोदरं ॥ ५१ ॥ किं न
 पश्यसि मां पाप गद्यायुद्धे इत्यस्ति शतमी । ह मवाच्छिखराकारा प्रगृह्य गतौ गदाम् ५२ ॥
 गद्विन कोच मां पाप जेतुमुन्महने रिपु । न्यायतो बुधमानस्य देवेष्वपि पुंरुम्बरं
 ॥ ५३ ॥ मा वृषा गर्जे क्रोशत्य शारदाभ्रमिवाजलम् दशयस्व घल युद्धे पावत्तसेद्य
 विद्यते ॥ ५४ ॥ नश्यं तद्वचन धृत्वा पाण्डवा सहस्रजया ! नर्धे समूजवामासुत्त
 द्वयो विजिगायत ॥ ५५ ॥ त मत्तमिव मातङ्ग तलशब्देन मानवा । भूयः सहर्षयामान्

शाला नीचपुरुष अकेला तूही शो रहगयाहै अर तुझ तो गदासे निस्संदेह मोंरंगा
 । ४९ । हेराजा अरे मै युद्धमें तेरे सर्वशस्त्रों का नाशकरंगा और विनयकी
 बड़ी आशासिमेत पांडवोंके साथ तेरे दुर्भिक्षकी भी वूरकरंगा । ५० । दुर्योधन
 ने कहा हे भीमसेन अधिक बर्तालाप करनेसे क्या लाभ है अबतू मेरेसाथ युद्ध
 कर मै तेरे युद्ध करने के उत्साह को दूरकरंगा । ५१ । हे पापी हिमाचल के शिखर
 के समान बड़ी गदाको लेकर गद्यायुद्ध में नियत होनेवाले युद्धको क्या नहीं देखता
 है । ५२ । हेदुष्टात्मा अब कौन शत्रु अथवा देवताओंमें इन्द्रभी त्वायसे युद्धकरनेवाले
 मुझ गद्याधारी के मारने को उत्साह करता है । ५३ । हे कुन्तीके बेटे जलसे खाली
 शारद्वृत्तु के घादल के समान निरपेक्ष क्यों गर्जता है युद्धमें अपने बलको दिखे
 लाओ जहांतक तुझमें पराक्रम होसके उससबको दिखलाव । ५४ । विजयाथिलापी
 सब पांडवों ने मूर्खों समेत उसके उत्सवचनको सुनकर उसवचनकी प्रशंसा करी
 । ५५ । हेराजा मनुष्यों ने उन हाथी के समान मन्वाले राजा दुर्योधनको प्रत्येक

Your brother and sons are slain with your army and unflinching war
 more by thousands like Pratikama who was the source of so much
 trouble to Draupadi. You alone, the curse of the family, remain and
 I shall surely slay you with my mace. I shall crush your pride and
 hope of victory as well as your misdeeds done to the Pandavas. 50.
 Duryodhan said, 'What is the use of talking so much? fight with me
 and I shall remove your desire for fight. Do you not see me stand-
 ing with my mace like a peak of the Himalayas? What enemy,
 including Indra himself, can fight with me? Why do you roar like a
 waterless cloud of winter. Show your prowess as far as you can.'
 The Pandavas and Sanjaya's desirous of victory praised his words and
 pleased Prince Duryodhan with the sounds of their bowstring. The

राजन् दुर्योधनं नृपम् ॥ ५३ ॥ बृहति कुञ्जरास्तत्र हया ह्येवमिवासञ्जत् । शस्त्राणि
सर्वदीपयते पाण्डवानां जयैषिणाम् ॥ ५७ ॥

इति शरपर्वणि गदायुद्धपर्वणि भीमदुर्योधनवाक्ये त्रयत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३३ ॥

सञ्जय उवाच । तस्मिन् युद्धे महाराज सुसहृते तुदारुणे । उपविष्टेषु सर्वेषु
पाण्डवेषु महात्मसु ॥ १ ॥ ततस्तालध्वजा रामस्तयोर्युद्धे उपस्थितो ध्रुवातन्निष्ठस्यैव राजन्ना
जगाम हलायुधे । २ ॥ तदृष्ट्या परमप्रीता पाण्डवा सहकेशया । उपगम्य पस्युद्य विधि
वत् प्रवपूजयन् ॥ ३ ॥ पूजयित्वा तत पश्चाद्दिद घञ्चनमयुवन् । शिष्ययो कौशलपुत्रे
के शब्दो मे फिर प्रमन्नक्रिया । ५६ । वहां हाथी विग्याडे घोडे सारम्बार हीसे
और विजयके इच्छावान् पांडवों के शस्त्रमकाशितद्वये ५७ ॥

— ❁ —

अध्याय ३४

संजय बोले हे महाराज उस बड़े भयकारी युद्धके वर्धमान होने और सब
महात्मा पाण्डवोंके बैठवाने । १ ॥ और उनदोनों शिष्यों के युद्ध नियत होनेपर
ताल ध्वजाधारी हलधर बलदेवजी भी उसयुद्धको सुनकर आएँके । २ । उनको
देखकर केशवजी समेत सब पाण्डव लोग अत्यन्त प्रसन्न हुये उनके ममीपजाकर
बड़े आदर मानसमेत लाकर विधिपूर्वक पूजन किया । ३ । हे राजा पूजन करनेके
पीछे सबलोग यहवचन बोले कि हेबलदेवजी युद्धमें दोनों शिष्योंकी सावधानीकी

elephants granted the horses neighed and the weapons of the Pandavas
shone bright ' 57

— ❁ —

CHAPTER XXXIV

Sanjaya said, " When the battle was raging fiercely the Pan-
davas sat down and the two warriors stood ready to fight. Hearing
of that battle Baldev the bearer of Palm standard came there. The
Pandavas with Keshav were much pleased to see him and welcomed
him with great respect and said ' See the fight of your two
disciples Baladev. Looking at the Pandavas Sir ' him and

जनमेजय उवाच । सुप्रसिद्धायां रामुक्तैः सुमन् युद्ध उपास्यते । आमन्त्र्य केशव
 पातो वृष्णिभिः सहितुः प्रभु ॥ १ ॥ सोहाय्य धार्तराष्ट्रस्य न च कृत्वास्मि केशव ।
 मन्त्रिषु पाण्डु त्रिणां गमिष्यामि यथागतम् ॥ २ ॥ एवंमुक्त्वा तदा रामो यात शत्रु
 नियर्हण' । तस्यं चागमन भूयो ब्रह्मन् शंसितुमर्हसि ॥ ३ ॥ आख्याहि मे विलरत
 कथं राम उपस्थित । कथञ्च दृष्ट्वात् युद्ध कुशलो हासि मे मत' ॥ ४ ॥ वैशम्पायन
 उवाच । उपपन्ननिविष्टेषु पाण्डवेषु महात्मसु । प्रेषितो धृतराष्ट्रस्य समीपं मधुसू
 दनः । शममिति ब्रह्मवाही हितार्थं सर्वदेहिनाम् ॥ ५ ॥ स तदा बालिनपुरं धृतः स
 समीप्य च । उक्तवान् वचन तस्य दिनश्चैव विशेषतः ॥ ६ ॥ न च तत् कृतवाज्राजा
 यथावयात इति ते पुनः । ७ ॥ अन्वाप्य शम तत्र वृष्णं पुरुषसत्तम । आगच्छतु महा
 वक्रोत्पलः जनधियः ॥ ८ ॥ ततः प्रत्यागत कृष्णो जातः शत्रुविसर्जित । स केशव

अ पाप ३१ ॥

संजय बोले मथमी उम युद्धके रत्नवात हनिपर जर प्रभु बलदेवजी केशव
 जीसे पूछकर वृष्णिगणों के साथ यह कह कर गये । १ । कि हे केशवजी मैं पाण्डवों
 की और द्रोण की सहायता नहीं करूंगा जैने आयाहूँ वैसेही चलाजाऊंगा । २ ।
 तब शत्रुओं के मारनेवाले बल देवजी ऐसा बहकर चलेगये फिर जनमेजय ने
 कहा कि हे ब्रह्मन् प्राप फिर उनके आगमनके वृत्तांत को मूल समेत बर्णन करने
 को योग्यहो कैसे मन्मथ वचनान हुये और कैसे युद्धको देखो हे भेड बाप
 वणत करनेमें समर्थहो । ४ । वंशपायन बोले कि उपपत्ती स्थानपर महात्मा पाण्डवों
 के निवास करने पर सब शरीरधारियों के आनन्द के अर्थ सन्धिके निमित्त
 मधुसूदनजी धृतरष्ट्र के सम्मुख भेजगये हे महाराज श्रीकृष्णजी ने इतिहासपुर में
 पहुँच धृतराष्ट्र से मिलकर सत्यर सक्ती वृद्धिग करने वाला बचन कहा । २ ।
 परन्तु बहुतमा कहेपर धृतराष्ट्रने उमको नहीं किया । ७ । तब यहाँ पुरुषोत्तम
 श्रीकृष्णजी सन्निहो न पाकर उपपत्ती स्थानको आये । ८ । मधुसूदनजी कृष्ण
 से विदाहोकर उपपत्ती स्थानपर आकर सन्धिके नहोने ने पाण्डवों में यह
 बचन बोले । ९ । कि कान से प्रेरितहोकर कैरवयोग भेरे बचनको नहीं करते है

CHAPTER XXXV

Sanjaya said, 'Janmejaya asked of Vasishthi why the reason of
 Bhishma's coming back for his help goes away in the beginning of
 the war and said that he would neither help the Kauravas nor the
 Pandavas. To Janmejaya's question Vasishthi made the follow-
 ing reply—From Uppalyana where the Pandavas were staying, Shri
 Krishna went first to Hishimapur to negotiate peace with Dhritashtra.
 Shree Krishna met Dhritashtra at the latter's own house and
 the former came to Uppalyana and called the Pandavas. The

नरेश्वर पाण्डवादिदमप्रधीत् ॥ १० ॥ न कुर्वन्ति यन्त्रे गतं दूरं कालं नः ।
 मितकुरुष्व पाण्डवेषाः सभ्यं सहिता मया ॥ १० ॥ ततो मयुपनिताया
 वर । पाषाणं चातरे कृष्ण रोहिण्यो महामनाः ॥ ११ ॥ मयि गतं दूरं कालं नः
 मयुपनिताया । कियतामिति तत्र कृष्णो नास्य चक्रे वचस्तदा ॥ १२ ॥ ततो मयुपनिताया
 जगाम मधुसूदनः । तीर्थयात्री हृलधरः सरस्वतीं महायशाः ॥ १३ ॥ मैत्रनक्षत्रयोगेण
 सहितः सर्वपाद्वैः । भाभयभास भोजस्तु दुर्योधनमन्दिन्मम । पुण्यान्तेन सहितः
 वासुदेवस्तु पाण्डवात् ॥ १४ ॥ रोहिण्यै गते शरं पुष्येण मघसदन्तः । पाण्डवेषां
 पुरस्कारय यथाचक्षिमुक्तः कुबर् ॥ १५ ॥ गच्छन्नेव पथिस्थस्तु नामः प्रप्यानुभाच ह ।
 सः शरैस्तीर्थयात्रायः सर्वोपकरणानि च । आनयन्त्वांश्चार्त्तव्यामगताद् वै श्रीजका
 लथा ॥ १६ ॥ स्वयं व्रजतः स्वैव जेनुवांसानि घाजिनः । कुञ्जराश्च रथाश्चैव शरैश्च
 बाह्वानि च ॥ १७ ॥ क्षिप्रमानीयतां सः तीर्थं हता पाण्डवम् । प्रतिश्रुतः सरस्वती

हे श्रीहवा तुम मेरे साथ पुष्यनक्षत्र में यात्रा करो । १० । उसके पीछे सेनाओं के
 विभक्त होने पर बलवानों में भद्र बड़े साहसा बलदेवजी अपन भाई श्रीकृष्णजीस
 बाके । ११ । हे महाबाहु मधुसूदनजी, उन्हांकी भी सहायताकरा परन्तु श्रीकृष्णजी
 ने उनके डम इन्दुनकी नहीं किया । १२ । हमके पीछे क्रोधसे पूर्ण चित्त बड़े यश
 बान् मधुसूदन बलदेवजी सरस्वती तीर्थकी यात्राकरगया । १३ । अर्थात् अनुराधाक्षत्र
 के प्रारम्भमें यादवोंसमेत चलगये फिर शत्रु विजया कृतवमा द्योघ्नम् आकर
 मिला और सात्यकी समेत वासुदेवजी पाण्डवों में मधुक्तहुय । १४ । शर बलदेवजी
 के जानेपर मधुसूदनजी पुष्य नक्षत्रमें परदवा को आगे कर क करवा कसम्मूल
 गये । १५ । फिर चलते हुये मार्गमें नियम बलदेवजी ने सबको की आज्ञा करीकि
 तीर्थयात्रा में सब सामान और शस्त्रादिको को लाभा और धारकासे अगिनया
 सपर यहकरानेवाला को भी लाओ । १६ । सोना चाँदी गो बछ हाथी रथ
 चक्र चरु कट आदि सवारियां । १७ । और सबकार के सामान को तीर्थयात्राके

Balarvas urged by Fate donot hear me. You should advance with
 me in Paushya nakshtra. 10. Then when the armies were
 being formed into parties, Baldev spoke to Sari Krishn and asked
 him to help both sides,
 was enraged at this and
 taking the Yadavas, w
 foer sided with Duryod
 the Pr... A
 Baldevias t... B... on his
 way... spons
 and... II... it fir

(७०५८)

पश्य रामेति पार्थिव ॥ ४ ॥ अत्रवीर्यं तदा रामो द्रष्टुं कृष्णं सपाण्डवम् । दुर्योध-
 नस्य कौरव्यं गदापानिमास्थितम् ॥ ५ ॥ चत्वारिंशद्दहाप्यथ द्वे च मे निखनस्व
 धे । पुण्येण संप्रयातोऽस्मि अरण्ये पुनरागतः । शिष्ययोर्वै गदायुद्धं द्रष्टुकामोस्मि
 माश्रय ॥ ६ ॥ ततस्तदा गदाहस्तौ दुर्योधनवृकोदगौ । युद्धभूमिगतौ धीराबुभुक्षेव
 किराजुः ॥ ७ ॥ ततो युधिष्ठिरो राजा परिपश्यन् हलायुधम् । स्वागन् कुशलञ्चास्मै
 पश्यन्पृच्छयथातमम् ॥ ८ ॥ कृष्णो चापि महेश्वासाधमिवाद्य हलामुघम् । सस्यजाते
 परिप्रीतो प्रायमाणौ यशस्विनौ ॥ ९ ॥ माद्रीपुत्रौ तथा शूरो चापचाः पञ्च चात्मजा
 नमिवाप्य स्थिता राजप्राहिणेयं महाबलम् ॥ १० ॥ भीमसेनोय बलवान् पुत्रस्तव जना
 श्रिय । तथैव चोद्यतगदौ पूजयामासतुर्बलम् ॥ ११ ॥ स्वागतेन च तं तत्र प्रतिपूज्य
 वराधिपाः । पश्य युद्धं महाबाहो इति ते राममब्रुवन् । पश्यूचमहात्मानं रौद्रिणेयं मह-

देखो । ४ । तब बलदेवजी पाण्डवों समेत श्रीकृष्णजी को और हाथमें गदापान्य
 सम्मुख नियत दुर्योधनको देखकर बोले । ५ । कि अब मुझ तीर्थयात्रा करनेवाले
 के बयालीस दिन व्यतीतहुये पुण्यनक्षत्रमें गदाधू और पितृलोक संवन्धी भ्रवण
 नक्षत्रमें फिरलौट आयाहूं हेमाश्रय निश्चय करकेमैं अपने शिष्यके गदायुद्धके देखने
 का अभिलाषी हूं । ६ । इसके पीछे गदा हाथमें रखनेवाले रणभूमि में वर्तमान
 दोनों वीर दुर्योधन और भीमसेन अत्यन्त शोभायमान हुये । ७ । तदनन्तर राजा
 युधिष्ठिर ने हलधारी बलदेवजी से तिलकर बुद्धिके अनुसार स्वागतपूर्वक उनकी
 कुशलसेमको पूछा । ८ । बड़े धनुषधारी अत्यन्त प्रसन्न प्रीतिमान् श्रीकृष्ण जी
 और अर्जुनभी नमस्कार कर के मिले । ९ । हेराजा उसीप्रकार शूर नकुल सह
 देव और द्रौपदी के पाचों पुत्र बड़े बलवान बलदेवजीको नमस्कार कर के नियत
 हुये । १० । हेराजा इसके पीछे बलवान भीमसेन और आपके पुत्र गदा उठाने
 वालों ने बलदेवजी का पूजन किया । ११ ॥ वहाँपर सब लोग चारोंओर से
 स्वागत पूर्वक प्रतिष्ठा करके बलदेवजी से बोले कि हे महाबाहु युद्धको देखो इस
 प्रकार से सब राजाओंने बलदेवजी से कहा । १२ । तब बड़े तेजस्वी बलदेवजीने

the warriors armed with mace, Baldev said, "I have been visiting
 the holy places for forty two days and have returned at this holy
 time. Surely, O Madhav, I am desirous of looking at the battle of
 my two disciples" Then both Duryodhan and Bhim, armed with
 maces, looked glorious. Yudhishter met Baldev and inquired about
 his health, while Arjun and Sani Krishn bowed down to him. Nakul,
 Sahadev and the five sons of Draupadi too, saluted brave Baladev. 10,
 Then brave Bhim and your son, armed with maces saluted Baladev.
 All men paid their respects to him and said "Look at the battle.
 Baldev met the Pandav and Srinjaya warriors and inquired about
 their health and prosperity and having exchanged greetings with

महाराजा ॥ १३ ॥ परिस्वये तदा राम पाण्डवान् सुहेजयानपि । अपृच्छत् कुशल
 स्वान्दुर्पाधिर्वाग्मिताजस । तथैव ते समासाद्य पप्रच्छुस्ततमनामयम् ॥ १४ ॥ प्रव
 १५ ॥ अत्र ह्येन सात्त्विकेभ्य प्रेम्ना स परिवस्यजे ॥ १६ ॥ मूर्ध्नि चैनाहुपा
 ग्राय कुशल पठ्ये पृच्छत । तौ चैनं विधिबद्राजन् पूजयामासतुमुद्यम ॥ १७ ॥ प्रह्ला
 णमिथ देवेशमिन्द्रोपेन्द्रौ मुदापुतौ । ततोऽप्रवीक्ष्मसुतो रौद्रियमरिन्दमम् ॥ १८ ॥
 इह भ्रात्रोर्महायुद्ध पश्य रामेति भारत ॥ १९ ॥ तेषां मध्ये महाबाहु श्रीमान् केशव
 पूर्वज । स्वविश्व परममैत पूजयमानो महारथे ॥ २० ॥ स यमौ राजमन्वस्यो नील
 वासा सितप्रभ । दिवीष तक्षत्रगणैः परिकीर्णो निशाकर ॥ २१ ॥ ठगस्यो सजि
 पातस्तमुलो लं महर्षण । आसीदन्तकरो राजन् वैरस्य तथ पुत्रयो ॥ २२ ॥

इति शस्यपर्वणि गदायुद्धपर्वणि बलदेवागमने चत्वारिंशोऽध्यायः ३४ ॥

पाण्डव सृष्टी आदि सब महारथा राजाओंसे मिलकर उनकी कुशलक्षेम पूछी इस
 प्रकार उन सयने मिलकर बलदेवजीसे चित्त के आनन्दको पूछा । १४ । फिर
 बलदेवजीने सब महारथा सत्रियों को नमस्कारादिक करके और भद्रस्था के अनु
 सार कुशलक्षेमके शब्दों से युक्त वात्सल्य कर के बड़ी प्रीतिपूर्वक श्रीकृष्ण और
 सात्यकिसे मिलाय किया । १५ । और उन दोनों को मस्तकपर झुंझकर कुशल
 भंगलको पूछा हेराजा उन दोनोंने भी उन गुरुजीका विधिपूर्वक ऐसे पूजन किया
 । १७ । जैसे कि मत्स्यविष इन्द्र और उपेन्द्र ब्रह्माजी का पूजन करते हैं इस के
 पीछे धर्म के पुत्र युधिष्ठिर उन शत्रुविजयी बलदेवजी से बोले । १८ । कि हे
 बलदेवजी दोनों भाइयों के इस युद्धको देखो । १९ । यह धुनकर हे भगवन्ती उन
 महाराथियों से प्रतीक्षापूर्वक पूजित अत्यन्त मत्स्य महाबाहु श्रीमान् बलदेवजी
 उन के मन में बैठगये । २० । नीलान्तर गौरवर्ण बलदेवजी राजाओं के मन में
 नियत होकर ऐसे शोभायमान हुये जैसे कि स्वर्ग में नक्षत्रोंके समूहों से घिरा हुआ
 चन्द्रमा शोभित होता है । २१ । हे राजा इस के पीछे आप के उन दोनों पुत्रोंका
 युद्ध बड़ा कठिन और रोमरुपक करनेवाला शत्रुताका भन्त करनेवाला हुआ । २२ ।

them, affectionately embraced Krishna and Satyaki, he smelled their
 foreheads and inquired about their health. They too, in their turn
 respected him like a preceptor and worshipped him as Indra and his
 younger brother worship Brahma. Then Yudhishthir spoke to
 Baldev, saying, 'Look at the battle of the two cousins' At this,
 Baldev sat down in the midst of the Pandavas and looked glorious
 like the moon surrounded by stars. The battle of the two warriors
 was dreadful and awe inspiring" 22.

जनमेजय उवाच ॥ १ ॥ तत्र युद्धे उपस्थिते केशवजी
 यानो वृष्णिभिः सह ॥ २ ॥ मया पण्डितैः कृतं कथं
 निवेद्य पाण्डु प्रणि ॥ ३ ॥ तत्र युद्धे उपस्थिते केशवजी
 निवेद्य ॥ तस्य चाप्युवाच ॥ ४ ॥ केशवजी ॥ विलसतः
 कृपे राम उपस्थितः ॥ कथञ्च दृष्ट्वात् युद्धं कुशली ह्यसि मे मतः ॥ ५ ॥ वेश्यापयन
 उवाच ॥ उपप्लव्यनिविष्टेषु पाण्डवेषु महात्मसु ॥ प्रेषितो धृतराष्ट्रश्च समीपे सधुम्ब
 वनः ॥ शमन्ति रुद्रावाशि हिनार्ये सर्वदेहिनाम् ॥ ६ ॥ स तारवा बालिनपुरे यत्सु
 समीपे च ॥ उक्तवान् वचनं तस्यं दिनञ्चैव विशेषतः ॥ ७ ॥ न च तत् कृतवाङ्मया
 वधारयति हि ते पुत्रा ॥ ८ ॥ अन्वाप्य शमं तत्र कृष्णः पुरुषसत्तमः ॥ आगच्छतु महा
 वीरुपप्लव्य जनाधिप ॥ ९ ॥ तत् प्रयागतः कृष्णो जस्यैः प्रविशति जितः ॥ स कथाय

अध्याय ३५

संजय बोले मथुरा में उस युद्ध के वर्चमान होने पर जनमेजय बलदेवजी, केशव
 जी, पृथ्वीराज, दृष्टिगणके साथ यह कह कर गये । १ । कि हे केशवजी मैं पाण्डवों
 की और दुरोधन की सहायता नहीं करूंगा जैसे आयाहूँ वैसेही चला जाऊंगा । २ ।
 तब शकुनके मारनेमाले बलदेवजी ऐसा कहकर चलेगये फिर जनमेजय ने
 कही कि हे ब्रह्मरुद्र प्रायः फिर उनके आगमनके वृत्तान्त को मूल समेत वर्णन करने
 को योग्यहो कैसे सम्भव वचनान हुये और कैसे युद्धको देखा हे भव काय
 बणन करनेमें समर्थहो । ४ । वेश्यापयन बोले कि उपप्लवी स्थानपर महात्मा धृतराज
 के निवास करने पर सब शरीरधारियों के आनन्द के अर्थ सन्धिके भिन्न
 मधुमदनजी धृतराज के सम्मुख भोगगये हे महाराज श्रीकृष्णजी ने इन्द्रियधुर में
 पट्टे धृतराष्ट्र से मित्रकर सत्य संवकी दृष्टिवा करने वाला बचन कया ।
 परन्तु बहुतमा कश्मिपर धृतराष्ट्रने उसको नहीं किया । ७ । तब यहाँ युद्ध करने
 श्रीकृष्णजी सन्धिको न पाकर उपप्लवी स्थानको प्राये । ८ । मधुमदनजी इन्द्रियधुर
 से विदाहोकर उपप्लवी स्थानपर आकर सन्धिके न होने से पाण्डवों से यह
 बचन बोले । ९ । तब काल से मरिचकोकर कारवलयो भरे बचनको नहीं करते हे

CHAPTER XXXV

Sanjaya said, 'Janmejaya asked of Vaishampyayan the reason of
 Baldeva's coming back, for he had gone away in the beginning of
 the war and said that he would neither help the Kauravas nor the
 Pandavas.' To Janmejaya's question Vaishampyayan made the follow-
 ing reply:—From Uplavaya, where the Pandavas were staying, Shri
 Krishna was sent to Hastinapur to negotiate peace with Dhritrashtra.
 Shree Krishna met Dhritrashtra but the latter gave no ear to him and
 the former came back to Uplavaya and told the Pandavas, "The

अथवा पाण्डवानिदमब्रवीत् ॥ १० ॥ न कुर्वन्नि-यत्सो महा-कुरुव-कालचादिना ।
 किंगुत्तरेषु पाण्डवेषु । पुष्येन सहिता मथा ॥ १० ॥ ततो विभ्रज्यमानेषु बलेषु बलिना
 अरु । भीष्माय आतरे कृष्ण रोहिणि गे महामना ॥ ११ ॥ तेषामपि महावारो आहार्य
 अमुस्यन । कियतामिति तत्र कृष्णो नास्य लके वचसदा ॥ १२ ॥ ततो मयुष्यतिशयो
 अनाम ययुमेन्दन । तीर्थयात्रां हलधर । सारथ्यां महावेशा ॥ १३ ॥ मैत्रनक्षत्रयोगेण
 अहित सर्वयादवे । आश्रय प्राप्त भोजस्तु युष्योद्यतमरिन्दमम् । युयुधानेन सहिष्ठा
 भीष्मदेवस्तु पाण्डवाद् ॥ १४ ॥ रोहिणिवे गते शूरे पुष्येन मधुसूदनः । पाण्डवेयाद्
 पुरस्कृत्य ययावामिमुक्त-कुड्क ॥ १५ ॥ गच्छन्निव पथिस्थस्तु रामः प्रेष्यानुमाच ह ।
 सञ्जारांसीर्थयात्राय सर्वोपकरणानि च । मानयस्व द्वाट् विमानान् च । शोभका
 सन्धा ॥ १६ ॥ स्वर्णं रजतञ्चैव जेनुर्धासांसि योजित- कुड्जराज्य रथाश्चैव क्षरोष्ण
 बाहवामि च ॥ १७ ॥ क्षिप्रमानीयता सर्व तीर्थहेतो-परिच्छदम् । प्रतिक्षोत् सारथ्यया

हे पांडवों तुम मेरे साथ पुष्यनक्षत्रमें यात्रा करो । १० । उसके पीछे सेनाओं के
 विभक्त होनेपर बलवानों में भेद, बड़े-साहसी बलद्वजी, अपने भाई श्रीकृष्णकीस
 बोके । ११ । हे महाबाहु मधुसूदनजी, उन्हींकी भी सहायताकरो परन्तु श्रीकृष्णजी
 ने उनके डम दचनको नहीं किया । १२ । इसके पीछे क्रोधसे पूर्ण, चित्त, बड़े यश
 बाहू पट्टन दन, बलदेवजी सारथी तीर्थकी यात्राकरगया । १३ । अर्थात् भनुराधाक्षत्र
 के शारथ्यमें पाण्डवोंसमेत चलगये किं शत्रु विजयी कनवर्मा द्योपुनमें आका
 मिला और सात्यकी समेत वासुदेवजी पांडवों में मधुसूदने । १४ । शूर बलदेवजी
 के जानेपर मधुसूदनजी पुष्य नक्षत्रमें पण्डवों को आगे भर के शौर्यों केसम्मुख
 गये । १५ । अगर चलते-दूरे मार्गमें नियत बलदेवजी ने सेवकों को आज्ञा करीकि
 तीर्थयात्रा में सब सामान और शस्त्रादिकों को लाभो और बारकामे अग्निियों
 समेत बंधकरानेवालों को भी लाओ । १६ । सोना चांदी गौ बख्श हाथों रथ
 सङ्घर ऊट आदि सवारियां । १७ । और सबकार के सामान को तीर्थयात्राके

Kaushya urged by Fate donot hear me. You should advance with
 me in Paushya nakshtra " 10 Then when the armies were
 being formed, into parties, Baldev spoke to Sri Krishn and asked
 him to help both sides, but Shri Krishn did not hear him - Baldev
 was enraged at this and went away on a pilgrimage to the Saraswati,
 taking the Yadavas with him. Then krittvarma the destroyer of
 the Pandavas sided with Duryodhan and Vasudev with Satyaki sided with
 the Pandavas. At the departure of Baldev, Shri Krishn led the
 Pandavas to fight in Pushya nakshatra. 15. Then Baldev on his
 way ordered his servants to bring all the requisites, with weapons
 and sacrificial fires from Dwarka to the holy places. He sent for

गण्डर्व्यं शीघ्रगामिनः । १८ ॥ ऋतिवज्रानवपर्वं वै शतशब्दद्विजनेनाम् । एवं स्तिवृद्ध
 तु प्रेष्यात् नलदेवो महाबलः ॥ १९ ॥ तीर्थयात्रां यथो राजन् कुटुम्बा देशसे तथा ।
 सरस्वतीं प्रतिश्रितं समस्तं दमिजगिष्याम् ॥ २० ॥ ऋतिवज्रं च सुद्विजं च तथा
 द्विजसत्तमः । रथैर्गजेस्तथाश्वाश्च प्रेष्यात् भरतवंश । गावोऽप्युक्तेषु च पानेषु च
 वृत्तः ॥ २१ ॥ आताता कलस्तवपुषां शिशूना विपुलायुषाम् । देशे देशे तु वेदानि
 दानानि विधिमानि च । अथवापि चापि राजन् कलसानि बहुदासना ॥ २२ ॥ यो
 यो वन्न द्विजो भोजयं भोजुं कावयो तथा । तस्य तस्य तु तत्रैवमुपाजह्लवा नृपाः २३ ॥
 तत्र स्थिता मग राक्षसैर्हिणे यस्य शासनात् । अथवेवहः कुर्षुगि राशिलि च समस्तत
 ॥ २४ ॥ वासांसि च महार्हाणि चर्व्यह्लासैरेणानि च । पूजयेत्तत्र कलसानि विमानां
 सुखमिच्छताम् ॥ २५ ॥ यत्र य इवदन्ति विप्र इन्द्रियो चापि न रतः । तत्र तत्र तु
 तस्यैव सर्वं कलसमदृश्यत २६ ॥ यथासुखं जन सुखं यानि तिष्ठति वै तदाः वातुकामस्य
 निमित्तं शीघ्रलाभो अंर तुम वधिता से चसकर सरस्वती के तटपर भागो । १८।
 और सैकड़ों उत्तम वेदपाठी ब्राह्मिक ब्राह्मणों को भी साम्रो तत्र कौरवों के नाश
 होनेपर वह बड़े बलवान् बलदेवजी इस प्रकारकी आज्ञा अपने नौकरों को देकर
 तीर्थयात्राको गये और चारोंओरके सरस्वती तीर्थोंकी यात्राकी । २० । ऋतिवज्र
 मित्रवर्ग अन्य भेद व्र ह्मण, रथ, हाथी, घोड़े, नौकर, चाकर वैल खच्चर और
 ऊंटोंसे युक्त बहुतरी सवारियों समेत यके थकावटसे पीड़ावान् शरीर वालक,
 वृद्ध और आकांक्षा करनेवालों के पूजनकेलिये दानके योग्य नानाप्रकार की
 अनेक वस्तुओंको प्रत्येक स्थानपर वर्त्तमान किया । २२ । हे राजा तत्र जो जो
 ब्राह्मण जहां जहां भोजन करनेकी इच्छा करताथा वहां वहां उसके अभीष्ट
 भोजन को वर्त्तमान किया । २३ । हे राजा वहां बलदेवजीकी आज्ञासे जहांतहां
 सेवक अहंकार लोग चारोंओर को खानपान के पदार्थोंको करतेथे । २४ वहांसुख
 चाहनेवाले वेदपाठी ब्राह्मणों के पूजनकेलिये बहुमूल्य वस्त्र पलंग और उनके वस्त्र
 तैयार किये । २५ । हे भरतवंशी जहांपर जो ब्र ह्मण भयवा सत्रियभी जिसवस्तु

gold, silver, cows, elephants, cars, mules and camels at the
 bank of the Saraswati. Thousands of the Ved knowing Brahmans
 came there. At the destruction of the Kauravas, Bhishma went to visit
 holy places all round the Saraswati. 20 Sacrificers, friend Brahmans
 cars, elephants, horses, servants, oxen, mules and camels, with the old
 and young came there. The Brahmans everywhere were given
 whatever they desired. Raldev's servants and attendants supplied
 articles of food and drink. They furnished the Brahmans with pre-
 cious beds and clothes. 25 The Brahmans and Kshatryas were sup-
 plied with every thing they desired. All the people were happy as

वानानि वानानि सुवितस्यच ॥२७॥ पुमुक्षितस्य चान्तानि स्वाग्नि भरतर्षभ ॥ उपाज्जुने
 राक्षत्र वत्सावयाभरणानि च ॥ २८ ॥ स प यः प्रबभौ राजन् स्वर्देव सुवावह ।
 स्वर्गोपमन्वा वां नरानां तत्र गच्छताम् ॥ २९ ॥ नित्यप्रमुक्षितोपत स्वामक्ष्यशु
 भावित । विपत्पापणपण्यां नानाजनशनेभूत् । नानाप्रमलतोपतो नानाग्नविभ
 वित ॥ ३० ॥ ततो मह इमा नियमे स्वितात्मा पुण्येषु त्रिषु चरति राजन् । ददौ
 द्विजेभ्य कतुदक्षिणाञ्च यदुपचारो हस्तभूत् प्रतीत ॥ ३१ ॥ दाग्वीर्ष्यं घनञ्च सहस्रशो
 वे कृवांसस काञ्चनवस्त्रभूगो । ह्योञ्च नानाविधेदशजाताद् वानानि दासाञ्च
 शुभाद् द्विजेभ्य ॥ ३२ ॥ रत्नानि मुक्तामणिविदुमञ्च भूगं सुवर्णं रजतं सुश्रेष्ठम् । मय
 स्मय ताभ्रमण्डलकाचं ददौ द्विजातिप्रधरेषु राम । ३३ ॥ पयः स विषं अददौ महाराम
 सरस्वतीतीर्थधरेषु चरेषु भरि । यथै क्रमेणाभितिमप्रभावलत कुलश्रेष्ठमुदारवृत्

को पाहताया वहापर उसकी अभीष्टवस्तु तैयारहूँ दिखाई पड़ी । २६। हेभरतर्षभ
 उस समय सब लोग बड़े आनन्द और सुखपूर्वक जतिथे और उत्तम उत्तम स्थानों
 पर निवास करते जातिथे वहाँ मनुष्यों ने चलनेवाले की सवारियों को और प्यासों
 की पान करनेवाली वस्तुओंको और धुधायुक्तों के स्वादिष्ट भोजन वस्त्र और
 भूषणों को बर्तमान किया । २८ । हेवीर राजा जनमेजय अब चलनेवाले मनुष्यों
 का वह मार्ग मक्का मुखदायी होकर स्वर्ग के समान शोभायमान हुआ । २९ ।
 सदैव प्रसन्न लोगों से संयुक्त स्वादिष्ट भोजन रखनेवाली मंगलकारी मार्ग में
 बर्तमान दुकानोंसे और बेचने के योग्य वस्तु रखनेवाले नाना प्रकार के सैकड़ों
 मनुष्यों से व्याप्त अनेक प्रकारके वस्त्र वस्त्रियों से युक्त भातिभाति ग्लों से
 अलंकृत था । ३० । हेराजा उसके पीछे महात्मा नियम में नियत चित्त यादवों
 में बड़े वीर ममञ्च चित्त बलदेवजी ने घर्म की टाटके कारण तीर्थों पर ब्राह्मणों
 के निमित्त धन और यज्ञकी दक्षिणाको दिया । ३१ । वृष देनेवाली सुन्दर
 पोशाक युक्त सुवर्णशृंगी गौवें और नानाप्रकार के देशोंमें उत्पन्न होनेवाले उत्तम
 धोटे सवारियों और शुभ दासोंको ब्राह्मणों के अर्थदान किया । ३२ । बलदेव
 जीने रत्न माले में ती मृगा, अष्ट सुवर्ण, शुद्ध चाँदी और लोहे तारि के पात्रभी
 बड़े बड़े उत्तम ब्राह्मणों को दान किये । ३३ । इसप्रकार उस महाराम ने सरस्वती

they went on in ease and staid at good places: The beasts were provided
 with fodder and drink and the hungry people were provided with
 wholesome food and ornaments: 28. The path of those pilgrims was
 like another paradise. Shopkeepers sold delicious food under the shade
 of trees. Then brave Baldev gave wealth to Brahmans. He gave
 them milch cows adorned with golden horns and clothes, horses of
 different countries and slaves, jewels and utensils of silver and gold.
 Thus he distributed much wealth among the Brahmans living on the

॥ ३४ ॥ जनमेजय उवाच । सारस्वतीनां तीर्थानां गुणोत्पत्तिं यद्दृशं मे । कस्यच
 द्विपदां श्रेष्ठं कर्मोत्तमं त्रिभेषु च ॥ ३५ ॥ यथा क्रमेण भगवन् तीर्थानामानुपूर्वशः ।
 मन्वानं ब्रह्मविदो श्रेष्ठं परं कौतूहलं हि मे ॥ ३६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तीर्थानां विस्तारं
 राजन् गुणोत्पत्तिश्च सर्वशः मयोच्यमानं वै पुण्यं धर्मं राजेन्द्र कृतं नशः ॥ ३७ ॥ पूर्वं महा-
 राजं चतुर्भूषीं ऋत्विजं सुहृद्विभ्रं गणेशं स्यादंभः । पुण्यं प्रभासं समुद्राभगमं यथोक्तं
 राहोः क्षमणा किञ्चनमानं ॥ ३८ ॥ विभ्रकशापं पुराण्यतेजं सर्वं जगज्जासयते नरेन्द्रो
 यत्रन्तु तीर्थप्रवरं पूषितं वै प्रभासनात्तस्य ततः प्रभासः ॥ ३९ ॥ जनमेजय उवाच ।
 किमर्थं भगवान् सोमो यक्ष्मणां समगृह्यत । कथञ्च तीर्थप्रवरे तीर्थैर्मन्त्रैः प्रमेजयत ॥
 ४० ॥ कथमाप्लुत्य तस्मिंस्तु पुनर्गर्वायित् शशीः । एतन्मे सर्वं भाषस्व विस्तरेण

के उत्तम तीर्थों पर बहुतसा धनदिया वह अनुपम प्रभाववाले उत्तम इत्थीवाले बल
 देवजी क्रमपूर्वक कुरुक्षेत्रको गये । ३४ । जनमेजयवाले हे द्विपदों में श्रेष्ठ वैशम्पा-
 यनजी सरस्वती के तीर्थोंके गुण उत्पत्तिफल और यात्राकी विधिकोभी मुझसे कहो
 । ३५ । हे बदतावर ब्रह्मज्ञानी समर्थ वैशम्पायनजी मुझको बडाही उत्साह है आप
 तीर्थोंको क्रमपूर्वक वर्णन कीजिये ।-३६ । वैशम्पायनवाले हे राजेन्द्र राजा जनमे-
 जय तीर्थों के क्रम सर्वगुण और उत्पत्ति कोमै सम्पूर्णताके साथ तुझको सुनाताहू
 तू उस धर्मकी वृद्धि करनेवाले माहात्म्यको मनसे सुन । ३७ । हे महाराज मयम पह-
 लादनों में बडे वीर बलदेवजी ऋत्विज मित्र और ब्राह्मणों समेत, उस प्रभासक्षेत्र
 नाम उत्तम और पवित्र तीर्थको गये जिसपर कि चन्द्रमा यक्ष्मणामगमसे दुःखी
 होकर गयाथा । ३८ । और-शापसे-निवृत्त होकर तृतीयाके दिनसे सब जगत्को
 प्रकाशित करताहै इस रीति से उस चन्द्रमाकी अत्यन्त प्रकाशित किरणों से उत्पन्न
 हुआ वह अत्यन्त उत्तम तीर्थ है और इन्ही हेतुसे उसकानाम प्रभासक्षेत्र हागेया
 । ३९ । जनमेजय ने पछा कि भगवान् चन्द्रमाजीको कैसे यक्षमारोग उत्पन्न हुआ
 और कैसे बहरोग उस अत्यन्त उत्तमतीर्थ के प्रभावसे नष्टहुआ । ४० । वर चन्द्रमा

banks of the Saraswati till he came back to Kurukshetra." Then
 Janmejaya asked of Vaishampayan " Pray tell me the origin and
 greatness of the holy places at the Saraswati-35---I am very anxious
 to hear about them." Vaishampayan said, " I shall tell you all about
 those holy places. Hear it attentively. First of all, "Baldev went
 to Prabhas where the moon was freed of his illness and curse and now
 illumines the world. The good and holy place was the outcome of
 the bright rays of the moon, and was therefore named "Prabhas".
 Jaamejaya asked, " What was the cause of the moon's disease and
 how was he cured by Prabhas? 40 How was the moon cured by
 bathing at Prabhas? Pray tell me this in detail," Vaishampayan

यश्चैव बीजानि विविधानि च ॥ ६५ ॥ तेषां क्षये क्लेशो माकं विनास्माभिर्जगत्तत्र
 किम । इति श्रुत्वा लोकगुरोः प्रसादं कलमर्हसि ॥ ६६ ॥ एतद्रुक्स्ततो देवान् प्राह
 सावधं प्रजापिता । नैतच्छुभं मम वधो व्यावर्तीयतुमन्मथा । ६७ ॥ एतुना तु मथा
 भागा निव सिन्धुति काञ्चिद् । समं वर्तुतु सदासः शशी । आर्षाणः विष्णुः । ६८ ॥
 सरस्वत्या वरे तीर्थ उत्तमं जन्म शशलक्षणः । पुनर्यज्ञिभ्यते देवास्तत्रै संतपं वधो मम
 ॥ ६९ ॥ मासांश्चैव क्षयं सोमो मित्यमेव गमिष्यति । मासांश्चैव सदा शक्तिं सत्यमे
 तन्नमो मम ॥ ७० ॥ समुद्रं पश्चिमं गत्वा सरस्वत्याविसङ्गं म । आराधयतु देवता

तव देवता चन्द्रपाके घृत्तान्त को घुनकर दन्तके पास जाकर बोले कि । भगवन्
 आप चन्द्रपाके ऊपर मसकृतानिय और अपने क्षापको लौटाइये । ६४ । यह चन्द्रमा
 नाशवान् होकर कुछ शोष बाकीरहा दीखता है हे देवताओं के ईश्वर इसके विनाशा
 वान् होने से सृष्टि भी नाशयुक्त होगई है धीरुप भीषणी और नाना प्रकार के बीजा
 ने विनाशको पाया । ६५ । उनके नाशसे हमारा नाश है और हमारे विनाश
 कैसा होगा हे लोकगुरु इस बात को जानकर आप कृपा करने के पोरवतु । ६६ ।
 इस प्रकार के देवताओं के वचनों को सुनकर प्रजापतिजी ने देवताओं से प्रह
 वचन कहा कि मेरा वचन विपरीत करता उचित नहीं है ॥ ६७ ॥ हे महामायो
 मेरा शोष इसीवहाने से सोटेगा कि चन्द्रमा सदैव सब शिष्यों में श्रावण वर्त्तावकर
 ॥ ६८ ॥ हे देवता लोगो सरस्वती के उत्तम तीर्थ में प्रीति पर्यन्त जलमें गोते
 अगनिवाला होकर फिर श्राद्धयुक्त होगा यह मेरा वचन सत्य है ॥ ६९ ॥ चन्द्रमा
 सदैव अधमास तक सीखताको पावेगा और आधमहीने श्रद्धिको पावेगा वह
 मेरा वचन भी सत्य है ॥ ७० ॥ पश्चिमीय समुद्र के जिस स्थानपर कि सरस्वती
 समुद्रको मिलावई वहापर जाकर देवताओं के ईश्वरका आराधन करके लक्षकों
 पावेगा ॥ ७१ ॥ इसकपीछे वह चन्द्रमा ऋषिकी आज्ञानुसार सरस्वती तीर्थको

longer, may tell us the dreadful cause of all this and we shall try to
 cure your malady." Then he told them how he was ravaged and
 became sick. The gods went to Daksh and said, "Be kind to
 Chandra and revoke your curse. He is decaying, and a very small
 portion of him is left. All beings perish on account of him; medicines
 and seeds have perished. We also decay for that reason. How can
 the world exist without us. Be kind to us, venerable one." 66
 Having heard the words of the gods he said, "It is not well to
 revoke my word. He may be cured of his malady if he behaves
 with all his wives alike. He must plunge in the waters of the Sar-
 wati in order to be cured of his disease. I tell you the truth. He
 will decrease for half a month and will increase during the next

ततः कान्तिमवाप्स्यति ॥ ७१ ॥ सरस्वती ततः सोमः स जगामाशेषासनात् । प्रभासं
 प्रथमं तीर्थं सरस्वत्या जगाम ॥ ७२ ॥ अमावास्या महापिशाचस्योपवृज्जन् महाद्युनिः ।
 लोकात् प्रमासुथामास शीतांशुस्वमथाप च ॥ ७३ ॥ देवान् तु सर्वे राजेन्द्र प्रभासं
 प्राप्य पुष्कलम् । सोमस सहितः भूत्वा दक्षस्य प्रमुञ्चेऽभवन् ॥ ७४ ॥ ततः प्रजापतिः
 तत्रा विश्वसूक्तं देवताः । सोमं च भगवान् प्रीतो भूयो वचनमप्रवीत् ॥ ७५ ॥ माघ
 मस्याः शिवः पुत्र मा च विप्रान्, वदाचन । गच्छयुक्तः सदा भूत्वा कुत वै शासनं
 मम ॥ ७६ ॥ स विश्वे महाराज जगामाथ स्वमालयम् । प्रजास्य मुदिता
 भूत्वा पुनः सत्सुर्यया -पुनः, ॥ ७७ ॥ पथं ते सर्वमास्यातं यथा शतो
 निशाकतः । प्रमासश्च यथातीर्थं तीर्थानां प्रथमं ह्यभूत् ॥ ७८ ॥ अमा
 वास्यां महाराज निवेशः, शशलक्षणः । स्नात्वा ह्याप्यायने श्रीमान् प्रभासे तीर्थं
 उत्तमं ॥ ७९ ॥ अतश्चैते प्रजानन्ति-प्रभासमिति भूमिं प्रभां हि परमां लेने

गये प्रथम सरस्वती तीर्थको जाकर फिर प्रभाम क्षेत्रको गये ॥ ७१ ॥ अमावास्याके
 दिन उत्तम स्नान करके वह तेजस्वी और उत्तम कान्तवाले आँकों को प्रकाशित
 किया और किरणोंकी शीतलताको पाया ॥ ७२ ॥ हे राजेन्द्र फिर सब देवता
 प्रभास क्षेत्रनाम उत्तम तीर्थको पाकर, चन्द्रमा-समेत दक्षजिके सम्मुख हूये
 इसके पीछे प्रजापतिजीने, सब देवताओंको विदाकिया फिर प्रमत्तचित्त भगवान्
 प्रजापति श्रापि चन्द्रपामे यह वचनबोले ७३ । कि हे पुत्र शिवों का अपमान
 और ब्राह्मणों का अपमान तू कभी मतकर भवजाओं और सदैव प्रवृत्त होकर
 मेरी आज्ञाको करे ॥ ७४ ॥ हे महाराज फिर वनेमे विदाहोकर वह चन्द्रमा अपने
 लोकको गया और सब सृष्टिभी प्रमत्त होकर पूर्वकेही समान फिर नियतहुँ ॥ ७५ ॥
 यह सब चन्द्रमाके शापका और शापमे निवृत्त होनेका वृत्तान्त और प्रभास तीर्थ
 का सब तीर्थोमे अत्यन्त भेदतर होनेका भी उत्तम वृत्तान्त येने, तन्मते कदा ७६ ।
 हे महाराज श्रीमान् चन्द्रमा सदैव अमावास्या के दिन प्रभासनाम उत्तम, तीर्थमे
 स्नानकरके वृद्धिको पाता है । ७७ ॥ हे राजा इसहेतुते इमतीर्थको प्रभासक्षेत्र

half, 70. He will regain his glory by worshipping the Lord of gods at the place where the Saraswati meets the Western sea." Then Chandra went to the Saraswati by the order of the rishi and then went to Prabhas, and having bathed there on Amavasya he regained his glory and his rays became cool again. Having got the holy place of Prabhas all the gods again went to Daksh. He dismissed the gods and again turning to Chandra said 75 Never insult women and brahmins. You must obey me in future. Now you may go." Then Chandra came back to his own region and all the world grew like before. I have given you an account of the curse of the moon and the origin of Prabhas. Chandra bathes every amavasya at

शशिनोऽभितकम् । सततवार्हयति स्वर्गान् चन्द्रमा मम शासनात् ॥ ५० ॥ विशुद्धात्मा
 सया जग्मुः शीतानुभवम् तदा । तथापि सोमो भगवान् पुनरेव महीपते । रोहिणी
 निवसत्येव मीयमणी सुहृमुहु ॥ ५१ ॥ ततस्ताः सहिता सया भूयः पितरमुब्रुवन् । तत्र
 शुश्रूषण युक्ता वार्यामो हि तथाश्रम । सोमो वसति नास्मान् नाकराह्वयम् तत्र ॥ ५२ ॥
 तासां तद्वचनं श्रुत्वा दक्षः सोममयाग्रवीत् । समं वसस्व गोप्यासु मां त्वा शक्ये
 विधिष्वन ॥ ५३ ॥ अनादर्य तु तद्वाक्यं दक्षस्य भगवान् शशा । रोहिण्या साङ्गमेव
 ससतस्ताः कुपिताः पुनः ॥ ५४ ॥ गत्वा च पितरं प्राहुः प्रणम्य शिरसा तदा । सोमो
 वसति नास्मान् तस्मात्तः शरणं भव ॥ ५५ ॥ रोहिण्यामेव भगवन् सदा वसति
 चन्द्रमाः । न तद्वद्वा गणयति न स्मासु स्नेहमिच्छति । तस्मात्तस्माद्दिव्यं सया देव्या
 नः सोमं प्राविशेत् ॥ ५६ ॥ तद्वदुवा भगवन् कुर्वी वरं मां पृथिवीपते । ससज्ज

सससे बालि ; कि- चन्द्रमा के पासजाओ, चन्द्रमा मेरी भाइसासे सबके पास बराबर
 निर्वास करेगा ॥५०॥ तब उस प्रकारसे विदा की हुई वह, सब स्त्रियां शीतानु
 चन्द्रमाके भवनको गई हे राजा इसपर भी भगवान् चन्द्रमा उसी प्रकार बारम्बार
 प्रीति करनेवाले होकर रोहिणीके ही पास रहते थे । ५१ । इसके अनन्तर, उन सबों
 ने फिर अपने पितासे कहा कि हम सब आपकी सयामें मधुसूदरकर आपके ही पास
 निवास करेंगे क्योंकि चन्द्रमा हमारे पास निवास नहीं करता है उसने आपके भी
 वचनको नहीं किया । ५२ । दक्षजीने उन सबके उस वचन को सुनकर फिर
 चन्द्रमासे कहा कि हे अत्यन्त प्रकाशमान तुम स्त्रियों में बराबर बर्ताव करो जो
 मेरा कहना न करोगे, तो मैं तुमको शापदूंगा । ५३ । फिर भगवान् चन्द्रमा दक्षके
 वचनको अनादर करके रोहिणीके ही पास निवासी हुये इस हेतुसे वह स्त्रियां फिर
 क्रोधयुक्त हुई । ५४ । तब उन्होंने जाकर शिर से प्रणाम करके पिता से कहा कि
 चन्द्रमा हमारे पास निवास नहीं करता है अब आपही हमारे रक्षकाजये । ५५ ।
 भगवान् चन्द्रमा सदैव रोहिणी के पास ही निवास करते हैं आपके वचनको कुछ
 नहीं गिनते हैं, और हमपर प्रीतिकरना नहीं चाहते हैं इसकारण से हम सब की
 ऐसी रक्षाकरो जिसके भय से चन्द्रमा हमको अपने पास डर्रावे । ५६ । हे राजा

he might not be accused of injustice, Daksh then ordered his daughters
 to go to their husband. 50. Thus ordered they all went to the palace
 of their lord, but again found that he spent much of his time with
 Rohini. They again went to their father and said, "We shall live
 with you, for Chandra does not live with us. He does not care to
 obey your orders." At this Daksh again said to Chandra, "You must
 believe with all your wives alike. I shall curse you, if you do not
 obey me." But Chandra paid no heed to the words of Daksh and
 lived with Rohini. The other wives were again enraged and bowing

रोषात् सोमाय स ओषधित्वादिदान ॥ ५७ ॥ स यद्मजाभिभूतारमा क्षीयताहरहः
 शरी । वायुश्चाप्यकरोद्ग्राजम् मोक्षार्थं तस्य यद्मजः ॥ ५८ ॥ इन्द्रोऽपि महेन्द्राज
 विदिधाभिनिशाकरः । न चामुपयत शापाद्दे क्षयश्चेवाऽयमज्जत ॥ ५९ ॥ क्षीयमाणे
 ततो सोमे ओषधी न प्रजाहरे । गिरास्वावरसाः सर्वा इतवीर्याश्च सर्वतः ॥ ६० ॥
 ओषधीनां हवे जाते प्रजितामपि संक्षयः । कृशाश्चासन् प्रजाः सर्वा क्षीयमाणे निशा
 करे ॥ ६१ ॥ ततो देवाः समागम्य सोमसूक्ष्मदीपते । किमिदं भवतो रूपमीदृशं न
 प्रकाशते न कारणं हृदि नः सर्वं येनेदं ते महद्भयम् ॥ ६२ ॥ अथा स वचनं । वस्तौ
 विधात्वामस्ततोभयम् । एवमुक्तः प्रयुषाच्च । सर्वास्तान् शशलक्षणः । शापस्य कार
 णश्चेत्क्षयमाणाश्च तपारममः । ६३ ॥ देवास्तथा यच्चः श्रुत्वा गर्वा दक्षमयाद्भवन् ।
 प्रीतिं मनवद् सोमे शापोऽयं विनिवसताम् ॥ ६४ ॥ अतो हि चन्द्रमाः क्षीणः
 किञ्चिच्छेषो हि लक्षयेत् । क्षयात्क्षेत्रास्य देवेश प्रजाश्चापि गताः क्षयम् । वाहवोपच

क्रोधयुक्त भगवान् दक्षप्रजापति ने उसका सुनकर क्रोधित यक्ष्मरोगको चन्द्रमा
 के ऊपर छोड़ा तब वह चन्द्रमा में प्रवेश करगया । ५७। फिर यक्ष्म रोगसे ग्रसित
 शरीर होकर वह चन्द्रमा पाते दिन क्षीणतासे युक्तहुये । ५८ । हे महाराज जनमे
 जय चन्द्रमाने नानाप्रकार के यज्ञोसे पूजनकरके उस यक्ष्मारोगके दूरकरनेके अनक
 उपायभी किये परन्तु शाप से निवृत्त नहीं हुआ और सदैव क्षीणताको ही पाया
 तब चन्द्रमाके क्षीणतायुक्त होनेपर औषधियां पृथ्वीपर उत्पन्न नहीं हुई सब प्रकारसे
 सब रस स्वादुओं से रहित और निर्वल हुये और औषधियों का विनाश होनेपर
 जीवोंका भी नाशहुआ चन्द्रमाके विनाश युक्त होनेपर सब सृष्टिके जीव दुर्बल
 शरीर हुये । ६१ । इसकेपीछे सब देवताओंने मिलकर चन्द्रमासे कहा कि आपका
 यह ऐसा रूप कैसे होगया है कि प्रजाश नहीं करता अब जिनसे तुमका बहाभय
 है उन सब कारणोंको आप हमसे कहो । ६२ । जब हमसे सब वृत्तान्त कहोगे
 तब हम सब देवता उनका उपाय करोगे देवताओं के इन वचनों को सुनकर
 चन्द्रमाने उनसे अपने शापका कारण और यक्ष्मारोग होनेका सब वृत्तान्त कहा

down to their father, they said, "Chandria does not live with us and therefore we seek your protection. 55. He disregards your words and lives with Rohini. He bears no love towards us. Help us and make him keep us with him." Thus enraged, Daksh sent the disease which entered the body of the moon and he became day. He tried to remove the malady by : : day; the curse was irrevocable and he became lean and leaner. Medicines did not grow on earth and the sap in plants became tasteless and weak. At the decay of medicinal herbs people began to perish and their bodies were lean; 61. Then all the gods coming together said to Chandria, "Why is your appearance changed? It shied light to"

तस्मिन्नुशा उपचन्द्रमा ८० ततस्तु चमस्तोद्देदमच्युगस्थगमद्वला। चमस्तोद्देद इत्येव
 य जना कथयन्त्युन ॥ ८१ ॥ तत्र दृष्ट्वा च दानानि विशिष्टानि हलायुध । उपित्वा
 रजनिका स्नात्वा च विधिवत्तदा ॥ ८२ ॥ उदपानमथागच्छत् स्वरावात् केशवा
 प्रज । आद्य सरस्वतयनञ्चैव पत्रावाप्य महत् फलम् ॥ ८३ ॥ स्निग्धत्वादीषधीनाञ्च
 मूनेश्च जनमेजय । जानन्नि सिद्धा राजेन्द्र तष्टामपि सरस्वतीम् ॥ ८४ ॥

इति शल्पपर्वणी गदायुद्धपर्वणी बलदेवार्थयात्रायां पञ्चत्रिंशोऽध्यायः ३५ ।

जानते है चन्द्रमाने उसमे गोते लगाकर बड़े प्रकाश को पाया । ८० । इसके पीछे
 बलवान और अजेय बलदेवजी उस चमस्तोद्देद [तीर्थको गये जिसको लोग
 चमस्तोद्देद तीर्थ कहते है । ८१ । फिर हलायुध बलदेवजी वह उत्तम दानोंको देकर एक
 रात्रि निवास कर विधिपूर्वक स्नानकरके । ८२ । अर्थात् प्रता करनेवाले केशवजीके बड़े भाई
 उस उदपाननाम तीर्थको गये जहापर कि बड़े माचीन और बर्याणकारी उत्तम
 फलको पाया । ८३ । हे राजेन्द्र जनमेजय आपणियों से और पृथ्वी के स्वच्छता
 युक्त सचिकण होनेमे सिद्धलोग गुप्तहानेवाली सरस्वतीको भी जानते है ८४ ॥

Prabhas and grow: That holy place is so named because the moon
 regains his glory by bathing there 80 Then valiant Baldev went to
 Chamastodhed or Chamastodhed and having bathed there and stay
 ed there for one night he gave donations Then the elder brother of
 krishn went to Upadan and gained great merit Thus the sidhas
 know the Saraswati which is holy and over grown with med cines. " 84



वैशम्पायन उवाच । तस्मान्नाद्वागतश्चापि ह्यद्यपानं यशस्विनः । त्रितस्य च
 महाराज जगामाथ हंलाघुधः । १ ॥ तत्र दत्त्वा बहुद्वयं पूजयित्वा तथा द्विजान् ।
 उपस्पृश्य च तत्रैव प्रहृष्टो मुखलाघुधः ॥ २ ॥ तत्र धर्मपते ह्यासीन्नितः स मुमहातपाः ।
 कृपेण वसता तेन सोमः पीनो मदात्मना ॥ ३ ॥ तत्र चैनं समुत्सृज्य भ्रातरो जग्मतुर्गृ-
 हान् । ततस्ते शशापाय त्रितो ब्राह्मणसत्तमः ॥ ४ ॥ जनमेजय उवाच । उद्गानं कथं
 ब्रह्मन् कथञ्च सुमहातपाः । पतितः किञ्च स त्यक्तो भ्रातृभ्यां द्विजसत्तमः ॥ ५ ॥
 कृपे कथञ्च हिस्वेन भ्रातरो जग्मतुर्गृहान् । कथञ्च याजयामास पपो सोमञ्च च
 कथम् । पतदाचक्षुः मे ब्रह्मन् भ्रातृभ्यं यदि न्यसे ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । आसन्
 पूर्वयुगे राजन् मुनयो भ्रातरस्त्रयः । एकतश्च द्वितश्चैव त्रिनभ्रादित्यसन्निभाः ॥ ७ ॥
 सर्वे प्रजापति समाः प्रजावन्तन्मयेव च । ब्रह्मलोकजितः सर्वे तेषां ब्रह्मवादिनः ॥ ८ ॥

अध्याय ३६ ।

वैशम्पायन बोले है महाराज इस कारण से बलदेवजी यशवान त्रितमी के
 उदपान तीर्थको जो कि नदी में बर्त्तमान था गये । १ । वहाँ बहुतसा धन दानपुण्य
 कर ब्राह्मणों को पूज और उसी तीर्थ में स्नानकरके बलदेवजी अत्यन्त प्रसन्न
 हुये । २ । वहाँपर वह बड़ा तपस्वी त्रित धर्मका करनेवाला बड़ा पूर्ण सिद्धहोना
 जिस महात्माने कृपमें निवासकरके अमृतको पान किया । ३ । वहाँ इसको उमके
 दोनों भाई कृपमें छोड़कर अपने घरोंको चलेगये इसके पीछे ब्राह्मणों में श्रेष्ठ
 त्रितने उन दोनोंको शापादिया । ४ । जनमेजय बोला है ब्रह्मन् किस प्रकारका कृप
 था और वह बड़ा तेजस्वी उस कृपमें किसरीतिते गिरा और ब्राह्मणों में श्रेष्ठ
 दोनों भाइयों ने उसको क्या त्याग किया और दोनों भाई उसको किस प्रकार
 कृपमेंही छोड़कर घरोंको चलेगये और कृप अमृत को पान किया है ब्रह्मन् जो
 उमको आप मेरे सुननेके योग्य मानते हो तो मुझमें बर्णन करो । ६ । वैशम्पायन
 बोले है राजा सतयुगमें तीन भाई मुनिहुये जो कि एक द्वित और त्रितनाम से
 विख्यात सूर्य के समान तेजस्वीय । ७ । सब प्रजापति के समान सन्तानवाले

CHAPTER XXXVI

Vaishampayan said, "Then Baldev went to Upadan, a holy place of the Tritasi. There he gave large donations after bathing in it. There had been a famous rishi who drank nectar in the well. His two brothers had left him in the well and Trit had cursed them both." Janmejaya asked, "What sort of a well it was, how the rishi fell in it, why he was deserted by his brothers and how he drank nectar. Tell me all this great brahman, if it be worth my hearing." 6. Vaishampayan said, "There were three brothers in Satyug, known as Ek, Dwit and Trit and glorious like the Sun. They were all possessed of progeny like Prajapati and had conquered the region of Brahm by their

तेषाम् तु तपसा प्रीतो नियमेन क्षेमतश्च । जमघ्नो तमो निर्यं पिता चर्मरत सदा ॥ ९ ॥
 स तु क्षीयं कालेन तेषां प्रीतिमवाप्स्यथ । अंगामि भगवानस्थानमनुरूपमिवात्मनः
 ॥ १० ॥ राज तपस्वरथे ह्यस्मिन् वशिषा राजस्य ह्यरमनः । ते सर्वे स्वर्गत तस्मिन्स्तस्व
 पुत्रानपुत्रयम् ॥ ११ ॥ तेषाम् तु कर्षणा राज्ञस्तथा चाप्यपनेन च । त्रिन स भ्रष्टानां
 प्राप यथेवाद्यः पिता तथा । १२ ॥ तथा सर्वे महाभाग मुनयः पृथ्वलक्षणाः । अपूज
 यमहाभागं यथास्य पित्रे पुरा ॥ १३ ॥ कश्चिच्छिष्टे तमो राजन् भ्रातरश्चैव त्रितो ।
 पश्चात् अक्रुनुद्धिम्ना तथा विलास्यमेव च ॥ १४ ॥ तयोर्बुद्धिं सममवत् त्रिन गृह्यं परं
 तप । वाद्ययान् सर्वानुवादाय पतिगृह्यं पशुंस्ततः ॥ १५ ॥ सोमं पाश्यामहे ह्यथाः प्राप्य
 चक्रं महाकायम् अकर्मैव तथा राजन् भ्रातरश्चैव यत्र च ॥ १६ ॥ तथा तु ते परि
 क्रम्य यावदात् सर्वान्पुत्रान् प्रतिधातुं विरथा नतो पाश्यात् लक्ष्मणां तु मुवह्वन्पुत्रान् ॥ १७ ॥
 यावन्न कर्षणा तैव प्रतिगृह्य विद्यान । प्राचीं दिशु महारमान आजगमुस्ते महर्षयः
 ॥ १८ ॥ त्रितलेषां महाराज पुरस्तादाणि हृद्यवत् । एकतस्य दिनश्चैव पृथग कालयत्
 तेष्यप्येके द्वारा ब्रह्मर्षीकौ विजय करिष्वाले श्रीर ब्रह्मवादीये । ८ ॥ धर्ममे प्रीति

रत्नेवात्मा उनेका पिता गौतम उन्होके तप, नियम और जिनोन्द्रयपने से सदैव
 प्रमत्त रहत थी । ९ । फिर वह भगवान गौतमश्रुपि बहुतकाल पीछे उन्होकी प्रीति
 को पाकर अपने योग्य स्थानको गये । १० । हे जनेमैजय जो जो राजा उस
 महाभागके पत्रमानये उनपत्र ने उन गौतमजी के स्वर्ग जानेपर उनके पुत्रों को
 पूजा । ११ । फिर उन्मेंमे उस त्रितने अपने कर्म और वेदपाठ आदिक आचरणों
 से बेसीसे प्रेताको पाया जैसी कि उसके पिताने पार्थी । १२ । उसीप्रकार चित्र
 लज्जगवाके महाभाग तत्र मुनिपोंने भी उन महाभाग को ऐसा पूजा जैस कि
 पूर्वमयमें उसके पिताको पूजतेथे । १३ । हेरामा इसके अनंतर किसीसमय एक
 और दिननाम उसके दोनों भाइयोंने यह के और उनके निमित्त इच्छाकरी । १४ ।
 हे शत्रुके तपानेवाले उन दोनोंका यह विचारहुआ कि त्रितको लेकर सब यज्ञ
 यज्ञोंको इच्छाकर दक्षिणा में गौतमकर । १५ । वड़े फलवाले यहको पाकर प्रमत्त
 तामे अपुत्रको पानकरगे हे राजा तीनों भाइयों ने बेमहीकिया । १६ । फिर वह
 गोरूप दक्षिणाके निमित्त मन्वपत्रयनों क पान उसीप्रकार पूषकर यनयनों को
 यहकराके । १७ । उमयज्ञरुमे के द्वारा त्रिपिपूर्वीक बहुत में पत्र और पशुओंको

asceticism. Their father Gautam was much pleased with their acce-
 licium, vows and control. In due time Gautam died 10. His sons
 were made priests after him. Tris was the most respected and was
 like his father in learning and deeds. Other rishis respected him as
 they did his father. After some time his brothers wished to amass
 wealth by providing at sacrifices. They took Tris with them to the
 King's sacrifices in order to get wealth and cows. They went
 to the East to get wealth. Tris led the way and they went on.

पशु ॥ १९ ॥ लैबीश्विस्ता संममवर्षहृष्टवा पशुगण महत् । कथ नु स्युतिमा गाव
 आवाश्यां द्वि विना त्रितम् ॥ २० ॥ तावन्पेन्ये समामाश्यां पशुतश्च द्वितश्च ह । यत्प
 तुर्मिय पापी तत्रिंशोर्ष जनेश्वर ॥ २१ ॥ त्रितो यज्ञेषु कुशलोत्थितो धेदेषु निष्ठित ।
 अग्यास्तु बहुला गावश्चिन समुपलेश्यते ॥ २२ ॥ तदाधी साहितौ सूत्रा गा प्रकाश्य
 प्रजावहे । त्रितोऽपि गच्छतीं काममावाश्यां धै विनाहृण ॥ २३ ॥ तेषामागच्छती राश्री
 पयि स्थाने वृकोमवत् । तत्र कूपोऽविद्वरेभंत् सरस्वत्यास्तटे महान् ॥ २४ ॥ अथ त्रितो
 वृकं हृष्ट्वा पथितष्ठ तमप्रत । तद्गयादपसेपेन धै तस्मिन् कूपे पथित ह ॥ २५ ॥
 अगाधे सुमहापोरे सधंभनमयदुरे । त्रितस्ततो महाराज कूपस्यो मुनिसत्तम । आर्ष
 नाद् ततश्चक्रौ तौतु शुभ्रवतुर्गुनी ॥ २६ ॥ एतथा पतितं कूपे स्र्गतराधेकतद्वितौ । वृक
 आसाद्य लोमाकच समुत्सृज्यधंजयतु ॥ २७ ॥ स्र्गत्सृषी पशुलवाश्यामुत्सृष्ट स
 लेकर बह सत्रं महर्षिं पूर्वदिशाको गये । १८ ॥ हे महाराज प्रसन्निहित त्रित उन्हांके
 आगेजाताया और पीछे एक और द्विन यहदोनों पशुओंको हांकतेहुये जाँसिये
 । १९ ॥ उस पशुओंके बड़े समूहको देखकर उनदोनोंको चिन्ताहुई कि इस त्रित
 के विनाधै गौ किस प्रकारसे हमारी होसकी है । २० ॥ हे राजा यह विचारकर
 एक और द्वितदोनों पापी भाइयोंने परस्पर भिन्नकर यह वचन कहा उसकोसमगो
 कि त्रिन यज्ञमें सावधानीहै और वेदोंकाभी पूर्णज्ञाता है इससे वह त्रित बहुसती
 अन्य गौओं की प्राप्त करलेगा । २१ ॥ इसहेतुसे हमदोनों सायदोकर गौआ को
 हांकतेहुये चलें और हम दोनोंसे पृथक् हांकर त्रितभी स्वेच्छापूर्वक जाय । २२ ॥
 रात्रि में चलनेवासे धर्ममें नियत उनके भागे एक भौदिया बर्तमान हुआ और
 बहाड़ी सरस्वती के किनारेपर एक बड़ा कूपथा । २४ ॥ इसके अनन्तर त्रित मार्ग
 में नियत भाइये को देखकर बड़ा भयभीतहोकर हटा और उस कूप में गिरपरा
 । २५ ॥ जोकि बड़ा अगाध घोर और सब जीवोंके भयका उत्पन्न करनेवांन
 था हे महाराज तब मुनियों में श्रेष्ठ कूप में नियत त्रिनने पीढा के शब्द किये
 और उन दोनों भाई मुनियोंने भी सुने । २६ ॥ तब एक और द्वित दोनोंभाई उस
 कूपमें पड़ेहुये त्रितको जानकर भाइये के भयसे और लोपसे उसको उती कूप में
 पड़ाहुआ छोड़कर चलेगये । २७ ॥ पशुओं को पानेवाजे और दोनों भाइयों से

driving the cows which they had got. Being in possession of a large
 herd of cattle, they thought of depriving Trit of his share of them. 20.
 They said among themselves 'Trit is very learned and clever at
 presiding sacrifices. He will amass much wealth. Let us drive away
 this herd of cattle and leave him behind.' Going at night they were
 met by a wolf in the way where there was a deep well at the bank
 of the Saraswati. Seeing the wolf in his way, Trit moved aside in
 fear and fell down in the well. The well was very deep and
 dreadful. Trit cried for help from under the well. The two brothers,

मवातपाः । उदपानं तदा राजन् निज्जने पाशुसंघे ॥ २८ ॥ श्रित आत्मानमालक्ष्य कूप
 विचक्षणान् । निमग्नं भरतभेष्ट नरकं बुद्धुनी यथा ॥ २९ ॥ स बुद्धयोगेण परं प्राज्ञो
 सूर्योभांतिं हासोपयः । सोमः कथं नु पातस्य इत्येधेन मया भवेत् ॥ ३० ॥ स पशुम
 भिनिश्चित्य तस्मिन् कूपे महातपाः । ददर्श वीरुधं तत्र लम्बमामां यहच्छया ॥ ३१ ॥
 पाशुप्रसूते ततः कूपे विचिन्त्य सलिलं मुनिः । अग्नौ न सङ्कल्पायामास हात्र च तमान
 मेव च ॥ ३२ ॥ ततस्तां वीरुधं सोमं सङ्कल्प्य सुमहातपाः । श्रुत्वा यजुषि सामानि
 मनसा चिन्तयन्मुनिः ॥ ३३ ॥ प्रावाणः शकटाः कृत्वा प्रवक्रैर्मिश्रं नृप । आल्पश्च
 सलिलश्चक्रे भागांश्च त्रिदिवीकसाम ॥ ३४ ॥ सोमस्याभिषव कृत्वा चकार तुमुलं
 ध्वनिम् । स चाविशदिवं राजन् स्वान शैशालितस्य वै । समवाप च तं यज्ञं यथाकं
 प्रक्षयादिभिः ॥ ३५ ॥ वत्तमानं तथा यज्ञे श्रितस्य सुमहात्मनः । आविगने त्रिदिवं सर्वं

त्यागेदृश्ये उसः वदेतपस्वी श्रितने उसः निज्जल धूलसेयुक्त तृणो से आच्छादित
 कूपमें अपनेको इसप्रकार दूबादेसकर जैसे कि पापी नरकमें दूबाहाय । २९ । तब
 उस ज्ञानी-मृत्युसे भयभीत और अमृतपान न करनेवाल ने बुद्धि से विचार किया
 कि यहां पर नियतहीकर मैं कैसे अमृतका पानकरसक्त हूँ । ३० । हे भरतपशु
 राजा जनमेजय उस वदेतपस्वी ने उसरूपकेभीतर इसप्रकार निश्चय करके वहां
 देवयोगसे लटकती हुई एकलताको देखा । ३१ । उसके पीछे धूलसे आच्छादित
 कूप में मुनिने जलको ध्यान करके आगियों को कल्पना करके अपने को हाता
 कल्पना किया । ३२ । तब उस वदे तपस्वी मुनिने उस वीरुधको अमृत कल्पना
 करके यजुर्वेद और सामवेदकी ऋचाओं को चित्त से ध्यान किया । ३३ । हे राजा
 उसने कङ्कड़ाको खाइवनाकर चूर्णकिया और जलका घृतवनकर देवताओं के
 भागों को विचार किया । ३४ । और अमृतक पत्रको करके बड़ी ध्वनिकरी

Ek and Dwit, heard his cries, but being afraid of the wolf as well as
 under the influence of avarice, they drove their cattle away and left
 Trit within the well. Deserted by his brothers, Trit found himself
 within that waterless well, full of dust and weed, as one fallen in
 hell. Then he bethought of how he could drink nectar while within
 that deep well. 30. Having come to this resolution, he saw a creep-
 er hanging within the well
 the well full of dust was full
 over imaginary fire. Then
 be full of nectar and recalled to his mind the hymns of Yaju and
 Samved. He powdered small stones for sugar and poured water in
 honour of the gods. He began performing sacrifice of nectar with a

कारणञ्च न बुध्यत । तत सुतुमुल शम्भु शुभावाप वृहस्पति । ३६ ॥ श्रुत्वा खिन्न
 ब्रवीत् सवाम् देवान् देवपुरोहित । त्रितस्य वर्त्तते यज्ञस्तत्र गच्छामहे सुरा ॥ ३७ ॥
 स हि कुम्भं सृजेद्देवान् दवानपि महातपा । ३८ । तच्छ्रुत्वा वचन तस्य सहित
 संबन्धता । प्रययुस्तत्र यत्रासौ त्रिनयज्ञ मयर्त्तत ॥ ३९ ॥ ते तत्र गत्वा विद्युद्यात्
 कूप यत्र स त्रित । इदंश्रुत् महात्मान र्षिक्षित यज्ञकर्त्तसु । ४० । इन्द्रो वा चैन महात्
 मान भ्रिया परतया युतम् । ऊचुश्चाय महाभासा प्राप्तायागाधेनोवयम् ॥ ४१ ॥ अथात्र बर्हि
 विर्देवान् पदयोर्धं मां दिवोकस । अस्मिन् प्रतिभये कूपे निगमन मष्टचेतसम् । ४२ ॥
 ततस्त्रितो महागज भागालिषां यथाविधि । गन्त्रयुक्तान् समददत्ते च प्रीतास्तदाभवन्
 ॥ ४३ ॥ ततो यथाविधि प्राप्तान् मागान् प्राप्य दिवोकस । प्रीतात्मानो इदुस्तस्मै
 वरान् यान् मनसेच्छानि ॥ ४४ ॥ स तु वरं वर-देवात्प्रतुमर्हत ममित ॥ ४५ ॥
 हे राजा फिर उस त्रितका यह शब्द स्वर्गमें ऐसे पहुंचा जैसा कि ब्रह्मवादीयों से
 किया हुआ पहुंचता है । १५ । इसरीति से उस यज्ञको प्राप्त होनेवाले महात्मा त्रित
 के यज्ञके वर्त्तमान होनेपर सब स्वर्ग व्याकुल होगया परन्तु कोई कारण नहीं
 जानागया उसके पीछे, देवताओं के पुरोहित वृहस्पतिजी ने भी उस वृहे शब्दको
 सुनकर । ३६ । सब देवताओं से कहा कि हे देवताओं त्रिनकायज्ञ वर्त्तमान
 उसमेंचलो । ३७ । वह वृह तपस्वी को युक्त होकर दूसरे देवताओंको भी उत्पन्न करसक्ता
 है । ३८ । उनके उस वचनको सुनकर सब देवता वहां गये जहां त्रितका वह
 यज्ञ वर्त्तमानथा । ३९ । उन देवताओं ने उस कूपमें जाकर जहां वह यज्ञकर्मों
 में दीक्षित त्रित वर्त्तमानथा उस महात्मा को देखा । ४० । बड़ी शौभासे युक्त उस
 महात्माको देखकर देवतालोग उस महाभाग से बोले कि नाग के चाहनेवाले हम
 सब देवता वर्त्तमान है ४१ । इसके पीछे वह ऋषि देवताओं से बोला कि हे
 देवताओ इम भयकारी कूप में डूबाहुआ बुद्धिसे हीन मुझको देना । ४२ । हे महा
 राज इसके अनन्तर त्रितने मंत्रों से युक्त भागोंको विारपूर्वक उनके अर्थ दिया
 तब वह प्रसन्न हुये । ४३ । उसके पीछे विधिपूर्वक मिलेहुये भागों को पाकर प्रसन्न
 चित्त देवताओंने उसको वह वरदिये त्रितको कि वह मनसे चाहताथा । ४४ । तब
 उसने इन वरोंको मांगा कि हे देवताओं प्रथम तो मुझको इस कूप से निकाल

loud sound which reached heaven 35 Trit disturbed heaven with
 sacrifice but the gods did not know the reason of the disturbance
 Then Vrihaspati the priest of the gods said, 'Trit is performing sacri-
 fice let us go there' That sage can create other gods in his rage " At
 this all the gods went to Trit's sacrifice and saw him within the well
 Then they said to him, 'We are all present here to receive our shares'
 41 The next then said to the gods 'Look at me within the
 well' Then he gave the gods their due shares and they were gratified
 and gave him the boons which he desired He asked them of the

मद्येहोपशुशेत् कूपे स सोममगतिं लभेत् । ४६ ॥ ततश्चोर्विमत्के राजसूत्यपात् सर
 स्वती । तथा क्षिप्तः समुत्तस्यो पञ्चयज्ञिदिवीकसः ॥ ४७ ॥ अथेति चोक्त्वा विपुषा जम्भू
 राजम् पथागताः । श्रितश्चाप्यगमत् क्षिप्तः स्वमेव जिह्वं तदा ॥ ४८ ॥ दुष्टः स तु क्षमा
 साथ तावुपी श्रातरी तदा । उवाच परुषं वाक्यं शाशय च महातपाः ॥ ४९ ॥ पशु
 लुब्धो युषा यद्गन्धामुत्सृज्य प्रचामितो । तस्माद्भुकाकृती रोद्री श्रिष्टिणावभित्थरी
 ॥ ५० ॥ भवितारी मया शस्ती पापेनानेन कर्मणा । प्रसवञ्चैव युष्योर्गोलागच्छंवा
 नराः ॥ ५१ ॥ इत्युक्तं तु तदा तेन क्षणादेव विशोस्पते । तथाभूतावदृश्येतां चक्षसात्
 सत्यवादिनः ॥ ५३ ॥ तन्नामभितविक्रानः स्फुट्वा तोयीं हलायुधः । इवा च विवि

कर रक्षाकरो । ४६ । फिर यह वरदानकरो कि जो इस कूप में स्नान आश्रमनकरे
 वह अमृतपान करनेवाले की गतिको पावे । ४६ । हे राजा उस कूपमें तरङ्गोंकी
 रखनेवाली सरस्वती ऊपर आई उनसे उछलाहुआ वह ऋषि देवताओं को पूजता
 हुआ ऊपर नियतहुआ । ४७ । हे राजा फिर देवता इसप्रकार से कहकर अपनेलोकों
 को गये तब प्रमत्तचित्त जित भी अपने स्थानको आया । ४८ । क्रोधयुक्त वह
 तपस्वी जितने उन दोनों ऋषि भाइयों को पाकर कठोर बचनकहे और शापादेवा
 । ४९ । कि जो तुम पशुओं के लोभमें युक्तहोकर मुझको छोड़कर भागआये उस
 हेतुसे वगले के समान भयानकरूप चारोंभोर को घूमनेवाले और दाह रखनेवाले
 होंगे । ५० । मेरे शापकेद्वारा इसपापकर्म के कारण से तुम ऐसी दशावाञ्छेहोगे
 और तुम दोनों की सन्तान गोलार्गुल रीछ और वन्दर होंगी । ५१ । हे राजा तब
 उसके इसप्रकार कहनेपर उस सत्पवक्ता के करतेही वह दोनों इसीक्षण में उस
 रूपवाले दिखाईपड़े । ५२ । बहुपराक्रमी बलदेवजाने वहाँभी आश्रमन और स्नान
 पूजक नानामकार के दान देकर ब्राह्मणोंको पूजकर और नदी में बर्जमान उस

the following boons :— " Take me out of this well. 45. His second
 boon was that the water of the well should have the effect of nectar."
 The ways of the Saraswati entered the well and tossed by them the
 rishi came up glorifying the gods. The gods went to their own
 regions, while he took his way home and finding his two brothers, there
 he was very angry and said, " Because you left me for the sake of
 cattle you will roam everywhere like greedy birds and will be fur-
 nished with fangs. 50. You will thus be transformed by my curse
 and your progeny will be monkeys and bears. " At this both the
 brothers were transformed as he had predicted. Baldev sipped water
 of the well and having bathed in its waters gave the Brahmans large

वान् वावान् पूजयिषा च वै द्विजान् ॥ ११ ॥ उदपानञ्च त विहय प्रशस्व च पुन
पुन । नदीगतमर्दीनात्मा प्राप्ते विनशन तदा ॥ ५४ ॥

इति शरपपर्वाख्ये गदापुद्गर्वाख्ये बलदेवतीर्थयात्रायां षड्विंशोऽध्याय १६ ॥

वैशम्पायन उवाच । ततो विनशनं राजन् जगामाय हलायुध । शुद्धामीरान् प्रति
द्वेषाद्यत्र महा सरस्वती ॥ १ ॥ परमात् सा भरतभेष्ट द्वेषाज्जा सरस्वती । तस्मात्तद
वयो नित्यं प्रादुर्बिनशनेति ह ॥ २ ॥ तत्राप्युपस्पृश्य बल सरस्वत्या महाबल । सुम
मिबं ततोऽगच्छत् सरस्वत्यास्तटे वरे ॥ ३ ॥ तत्र चाप्सरस शुभ्रा नित्यकालमत
त्रिता । क्रीडामिर्दिमलाभिश्च क्रीडन्ति विमलानना ॥ ४ ॥ तत्र देवा सगन्धर्वा
कपको देवकर वारम्भार प्रशंसा करके विनशन तीर्थ को प्राप्तिकया ५४ ॥

अध्याय ३७ ॥

वैशम्पायन बोले हे राजा इसके अनन्तर बलदेवजी उस विनशन तीर्थ को
गये जहाँ पर कि शूद्रभीभीरों की शत्रुता से सरस्वती गुप्त होगई । १ । इसदेतुसे
ऋषियोंने सदैव से उसको विनशन कहा है वहे बलवान बलदेवजी वहाँभी सर
स्वती में स्नान आचमन करके । २ । फिर सरस्वती के उत्तम किनांगपर उस
सुरभूषिक तीर्थकोगये जहाँ कि निर्मलमुख निरालस्य अप्सरागण सदैव स्वच्छ
क्रियाओं से क्रीडा करती हैं । ४ । हे राजा वहाँपर द्रवता गन्धर्व हरमहीने में उस

donations. Then he went on towards Binashan " 54.

CHAPTER XXXVII

Vaishampayan said, 'Baldev then went to Binashan where the
Saraswati had disappeared on account of the enmity of Abhirs and
the holy place was so named by the rishis. He sipped water there
and having bathed in it, he went on to Subhoomak, situated on the
bank of the Saraswati where aparas of beautiful faces always played
Gods and gandharvas go there every month and were seen in large
numbers. 5 The gods and p iars amuse themselves there with flow

मासि मासि जनेश्वर । अमिगच्छन्ति तत्तीर्थं पुण्यं ब्राह्मणसेवितम् । ५ ॥ तत्राहृदयगत
 गन्धर्वास्तथैवाप्सरसागणा । सुमेत्य सहिता राजन् यथाप्राप्त यथासुखम् ॥ ६ ॥ तत्र
 मादन्ति देवाश्च पितरश्च सधीरुच । पुण्यै पुण्यै सदा दिद्वै कीर्तव्यमाणा पुन पुन
 ॥ ७ ॥ शार्ङ्गीरुमि सा राजन् तासामप्सरसा शुभा सुभूमिकीत विख्याता सरस्व
 त्यास्तदे घरे ॥ ८ ॥ तत्र स्नात्वा च दत्त्वा च वसु विपाय माधव । श्रुत्वा गीतञ्च
 षड्विधं षादिब्राह्मणञ्च निश्चयम् ॥ ९ ॥ छायाश्च विपुला दृष्ट्वा देवगन्धर्वरक्षसाम्
 गन्धर्वाणां ततस्तीर्थमगच्छद्द्रुहिणीसुत ॥ १० ॥ विश्वावसुमुखास्तत्र गन्धर्वास्तपसा
 निवृता । नृत्यवादित्रगीतञ्च कुर्वन्ति सुमनोरमम् ॥ ११ ॥ तत्र दत्त्वा हलधरो विप्रेभ्यो
 विधिषु वसु । अजाधिक गाक्षराष्ट सुवर्णं रजतं तथा ॥ १२ ॥ भोजयित्वा द्विजान्
 कामैः सन्तप्य च महाधनैः । प्रपथौ सहितो विप्रैस्तूपमानश्च माधव ॥ १३ ॥ तस्मा
 द्गन्धर्वतीर्थञ्च महाबाहुरिन्दुम । गर्गञ्चोतो महातीर्थमाजगामैककुण्डली । १४ ॥
 तत्र गर्गेण वृद्धेन तपसा भावितात्मना । कालज्ञानगतिश्चैव ज्योतिषाश्च व्यतिक्रम
 ॥ १५ ॥ उत्पत्ता क्षरुणाश्चैव शुभाश्च जनमेजय । सरस्वत्यां शुभे तीर्थे विदिता वै

ब्राह्मणोंसे सेवित पवित्र तीर्थको जातेहै उस स्थानपर अप्सरा और गन्धर्वों के
 समूह दिखाईपडे । ५ । हे राजेन्द्र वहाँपर देवता और पितर साथ मिलकर समय
 पूर्वक सुखको पाकर वीरुणियों समेत सदैव । ६ । पवित्र दिव्य पुण्योंसे वाञ्छार
 युक्तहोकर क्रीडा करते हैं उन अप्सराओं की वह शुभभूमि है और सरस्वती
 के उत्तम तटपर सुभूमिका नामसे प्रसिद्ध है । ८ । बलदेवजी वहाँ स्नान
 करके ब्राह्मणों को धनदेकर उस गीत वाद्योंके शब्दोंको सुनकर । ९ । गन्धर्व राक्षसों
 की वडी २ छायाओंको देखतेहुये गन्धर्वों के तीर्थको गये । १० । वहाँ प्रीति से
 युक्त विश्वावसु नाम गन्धर्व वडे चित्तरोचक गात वाद्यों को करते है । ११ । हल
 धर भी वहाँ बहुत से ब्राह्मणों को नानाप्रकार के धनों ५० देकर भेड बकरी
 गौ खच्चर ऊट और सुवर्ण चाँदी आदि को दानकरके वडी प्रसन्नता से उत्तम
 पदार्थों के द्वारा ब्राह्मणों को भोजन कराके वडी दण्डिणाओं से तृप्तकर
 ब्राह्मणों से स्तूपमान गन्धर्व तीर्थसे चले उसके पीछे बलदेवजी गर्गञ्चोत
 तीर्थको गये । १४ । हे जनमेजय वहाँपर तपसे शुद्ध अन्तःकरण पृद्ध महात्मा
 गर्गजीने त्रिकाल ज्ञानकी गति के द्वारा नक्षत्रोंका व्यतिक्रम और अशुभ भय

ers The holy place of apsaras on the Saraswati is named Subhoomi. Baldev bathed there and gave wealth to Brahmans. He heard the songs of dancing of apsaras there and then went on to the holy place of gandharvas. There Vishwavasuu was singing his cheerful songs. Baldev gave to brahmans many sheep, goats, cows, mules and camels and much gold and silver. He then went to Gargottá where Gárg had explained the movement of stars and the appearance of bad omens. 16 That holy place is so named after him. Kishis of

महाभना ॥ १६ ॥ तस्य नाम्ना च तस्तीर्थं गर्गस्रोत इति स्मृतम् । तत्र गर्गं महाभाग
मृषय सुवता नृप । उपासाञ्ज्विरे नित्य कालज्ञान प्रति प्रभा ॥ १७ ॥ तत्र गत्वा महा
राज बल दशैतानुलेपन । विंशत्योश्च घन दत्त्वा मुनीनां भाषितारमनाम् ॥ १८ ॥
उपवायचालाया मक्ष्यान् विभेद्यो द्विप्रदाय स । नीलायामानतोऽगच्छच्छतीर्थे महा
पशा । १९ ॥ तत्रापश्यन्महाशख भहामेरुमिधीच्छ्रुतम् दशैतपयतसङ्काशमुषि
सर्घनिषेधितम् । सरस्वत्यास्तटे जात नग तालध्वजो बली ॥ २० ॥ यथा विद्याधर
श्वेव राक्षसाध्यामितौजस । पिनाचाध्यामितवला यत्र सिद्धा सदृशम् ॥ २१ ॥ ते
सर्वे घसन त्यक्त्वा फल तस्य घनस्पते ब्रह्मैव नियमैश्च काले कालेऽस्यमुञ्चने ॥ २२ ॥
प्राप्तैश्च नियमैस्तैश्चिचरन्त पृथक् पृथक् । अहदगमात् गमुजैर्ष्यन्तश्च पृथक्पृथक् ॥
एव यथाता नरपते लोकेऽस्मिन् स घनस्पति ॥ २३ ॥ ततस्तीर्थं सरस्वत्या याघन
लोकाविधुतम् । तस्मिन् यद्दुशार्दूलो दत्त्वा तार्थं पयस्विनी । त घ्रायसानि भाषणानि

कोरी उत्पातोंको सरस्वतीके शुभ तीर्थपर विदित किया । १६ । उर्दूके नामसे वह
तीर्थ गर्गस्रोतनामसे विख्यात है हे मधु राजा जन्मभोज्य वहांपर सुन्दर वृक्षको
ऋषियोग सदैवकाल ज्ञान के निमित्त महात्मा गर्गऋषि के पास ब्रतमान
रहते थे । १७ । हे राजा ज्येष्ठचन्दन लगानेवाले बलदेवजी वहां जाकर और
शुद्ध भन्त करणवाले मुनियोंको धनदेकर । १८ । नानामकार के भोजन के
पदार्थ ब्राह्मणों को भोजन कराके बड़े यशवान् नीलाम्बरधारी होकर शङ्खतीर्थ
को गये । १९ । वहांपर महामेरुपर्वातके समान ऊंचे श्वेतपर्बत की समान ऋषियों
के समूहों से सेवित महाशङ्खनाम वृक्षको उस ताल वजाधारी बलवान् बलदेव
ज्ञानि देखा जो कि सरस्वतीके किनारेपर था । २० । जहांपर हजारों सिद्ध ऋषि
विद्याधर और बड़े तेजस्वी गहम और बड़े बलवान् पिशाङ्गादिकों ने, उस, वृक्ष
के फलोंको अन्न और निम्नमों समेत समय २ पर भोजन किया । २१ । और जिन
प्राप्त होनेवाले नियमों से पृथक् विचरनेवाले हुये, हे पुरुषोत्तम बड़े सब मनुष्यों
की दृष्टि से श्रेष्ठ भ्रमण करनेवाले हुये हे नरोत्तम इस प्रकार से वह वृक्ष इस
लोक में विख्यात हुआ । २३ । इसके पीछे वह पाद्यों में भेष्ट सरस्वती

excellent vows lived with¹Garg to learn the knowledge of the Bal
dev gave great wealth to the brahmans there and having fed them
well, he went to the holy place knowr, as Shankh There he saw
Shankh, a tree huge as a mountain attend d by large numbers of
rishis It was situated on the bank of the Saraswati 20 /Thousands
of Siddas yakshes vidyadhars, glorious rakshases and powerful
psiacles fed on the fruits of that tree and lived there out of the sight
of men Thus the tree is known throughout the world, The best
of adavas gave there many cows and being praised by brahmans

वस्त्राणि विविधानि च ॥ २४ ॥ पूजयित्वा द्विजाश्वेन पूजितश्चनपोधनेः ॥ पुण्यं द्वैतवर्नं रासजा
 जगाम ह्यलपुत्रः ॥ २५ ॥ तत्र गत्वा मुनीन् दृष्ट्वा नानावेशधराद् बलः । आप्तुर्य कश्चिदे
 वापि पूजयामास वै द्विजान् ॥ २६ ॥ तथैव कृत्वा विभेदः परिभोगान्मुपकलान् । ततः
 प्रायाइत्यो गजम् दक्षिणेन सरस्वतीम् ॥ २७ ॥ गत्वा श्वेन महाबाहुनांतिव्रं महा
 वशाः । चर्मात्मा नागधन्वानं तीर्थमागमद्वयुनः ॥ २८ ॥ यत्र पद्मगणजस्य वासुकेः
 सन्निवेशनम् । महाद्युतेर्महाराज बहुभिः पन्नगैर्बृंहितम् । ऋशिणा द्वि सहस्राणि तत्र
 निर्यं चतुर्दश ॥ २९ ॥ तत्र देवासमागम्य वासुकिं पन्नग समम् । सर्वपन्नगराजान
 मध्यविभक्त्यन्व यथाशिक्षिः । पन्नगैः शोभ्यं तत्र विद्यतं न स्व कौरव ॥ ३० ॥ तत्रापि
 विविधवृत्ता विभेदयो रत्नसम्पन्नाम् । प्रायात् प्रार्थीं दिशं तत्र तथा तीर्थान्यनेकदाः ।
 सहस्रशतसंख्यानि प्रथितानि पद्मे पदे ॥ ३१ ॥ आप्तुर्य तेषु तीर्थेषु बभूवुक तत्र
 वर्षभिः । कृत्वा पवासानियमं हर-ा दानानि भूरिशः ॥ ३२ ॥ अन्निषाद्य मुनींस्तान्स्तु

के उन विद्वान् त पात्रेन ताथ का जाकर ताथपर गाँगा को दानकरके तबि
 छोड़े के वर्त्तमान और नानाप्रकार के वस्त्रों समेत ब्राह्मणों को पूजकर और आप
 भी ब्राह्मणों से स्तुतिमान बलदेवजी द्वैतवन में गये । २५ । वहाँ जाकर बलदेवजी
 ने नानाप्रकारकी पोषाकधारी मुनियोंको देखकर जलमें स्नानकर ब्राह्मणों को
 पूज उन ब्राह्मणोंके अर्थ वड़े २ अभीष्ट पदार्थों को दिया फिर बलदेवजी सर
 स्वती के दक्षिणभोर चले । २७ । और थोड़ी दूरजाकर चर्मात्मा अविनाशी ने
 उस नागधन्वानाम तीर्थकोपावा जहाँ कि सर्पोंके राजा महातेजस्वी राजावासुकी
 का स्थान बहुतसे सर्पोंसे व्याप्तथा वहाँही चौदरहजार ऋषियोंनेभी निवास
 कियाथा । २९ । जहाँ देवताओंने इकट्ठेहोकर सर्पोंमें उत्तम सर्पों के राजा वासुकि
 को विधिपूर्वक अभिषेक कराया हे कौरव वहाँ उनको सर्पों से भय नहीं हुआ
 । ३० । वहाँभी ब्राह्मणों के अर्थ रत्नसंपूहों का विधिपूर्वक देकर पूर्व दिशा
 को गये वहाँ पदपदपर लाखों तीर्थोंको देखा । ३१ । और जैसे जैसे ऋषियोंने कहा
 उसी उपाधिकारसे उन तीर्थों में स्नानकर उपवास नियमादिक करके सब प्रकार
 के दानोंको देके । ३२ । उन तीर्थवासी मुनियोंको दण्डवद करके मार्गपूछकर वहाँ

went to Dwait forest. There he saw many munis and gave them
 the objects of their desire. Then he went to the south of the Saras-
 wati and roached the holy place known as Nag-dhanwa, the seat of
 glorious Vasuki the prince of snakes, where fourteen thousand munis
 dwelt and where that prince of snakes was anointed by gods. There
 they had no fear from snakes 30. Having given large donations to
 brahmans, they went towards the East. On their way they found
 numerous holy p'aces at every step He observed vows and bathed
 at the places pointed out by rishis, still going on eastward on the

तत्र तीर्थनिवासिनः । उद्दिष्टानां प्रपयौ यत्र भूवः सरस्वती ॥ ३३ ॥ प्रांमुष्ठी वै
 निवृत्ते वृष्टिर्घातहता यथा । ऋषीणां नैमिषेयाणामथे क्षायं महारजनाम् ॥ ३४ ॥ निवृ
 त्तान्ता सरिरेष्टां तत्र दृष्ट्वा तु लांगली । वभूव विस्मितो राजन् बलः श्वेताकुले
 पतः ॥ ३५ ॥ जनमेजय उवाच । क्वमात् सरस्वती प्रहरन् निवृत्ता प्रांमुष्ठी ततः ।
 एवाक्शानुमेतद्विच्छामि सर्वमप्यव्युत्सत्तम् ॥ ३६ ॥ कस्मिंश्चित् कारणे तत्र विस्मितो
 यदुनन्दन । निवृत्ता हेतुना केन कथमेव सरिहरा ॥ ३७ ॥ वैशम्पायन उवाच । पूर्वं कृत
 युगे राजन् नैमिषेयास्तपस्विनः । वर्त्तमाने सुविपुले सत्रे द्वादश वार्षिके ॥ ३८ ॥
 ऋषयो बहवो राजंस्तत् सत्रमभिषेधेरे । उपिरथा च महाभागान्स्मिन् सत्रे बधा
 विधिः ॥ ३९ ॥ निवृत्ते नैमिषीषे वै सत्रे द्वादशवार्षिके । आजन्मुञ्चयस्व न बहवस्तीर्थ
 कारणात् ॥ ४० ॥ ऋषीणां बहुलावाप्तु सरस्वत्या विशाम्पने । तीर्थानि नगरावन्ते
 कुले वै दक्षिणं तदा ॥ ४१ ॥ समस्तपञ्चकं वावस्तावत्ते द्विजसत्तमाः । तीर्थलोमान्तर

से सरस्वतीके पूर्वमुख होकर । ३३ । फिर ऐसे सौदे जैसे कि वायु से प्रेरितबादक
 अर्थात् नैमिषवासी महारजा ऋषियों के दर्शनोके निमित्तलौटे हे राजा
 श्वेतचन्दन से लित शरीर इसापुध बलदेवजी वहापर उस नदियोंमें शेष्ट सौटी
 हुई सरस्वतीको देखकर अत्यन्त आश्चर्ययुक्त हुये । ३५ । जनमेजय ने पूछा
 कि हे ब्राह्मण सरस्वती किसहेतुसे पूर्वाभिमुख सौटी हे ऋषियों में भेजमें इस
 सब वर्त्तन का मुना चाहताहूं । ३६ । वहापर यदुनन्दन बलदेवजी किमकारण से
 आश्चर्ययुक्त हुये और वह उत्तमनदी किसहेतुसे और किसकार इसरीति से
 लौटी । ३७ । वैशम्पायन बोले कि हे राजा पूर्व सतयुग में नैमिषवासी बहुतसेतपस्वी
 ऋषि बारहवर्षके बड़े यज्ञके वर्त्तमानहोनेपर । ३८ । उस यज्ञमें आये वह महाभाग
 उस यज्ञमें विधिपूर्वक निवासकरके । ३९ । नैमिषारण्यमें बारहवर्ष के यज्ञ समाप्त
 होनेपर तीर्थ के कारण से वहागये । ४० । हे राजा तत्र ऋषियों की अधिकपतामे
 सरस्वती के दक्षिण तटके तीर्थों कीसंख्या र होसकी । ४१ । हे नरोत्तम प्रहाणक

bank of the Saraswati. Then they turned, as clouds pushed by the
 wind, to see the rishis of Naimish. He was much astonished to see
 the turnings of the Saraswati." 35. Janmeyaya said, "Why did
 the Saraswati turn Eastwards? I wish to hear from you, best of
 brahmana. What caused the wonder of Baldev at the turning of
 the Saraswat?" Vaishampayan said, "In Satyug, many rishis of
 Naimish attended a twelve-year sacrifice which was then being per-
 formed. They staid there for twelve years and went away at the
 close of the sacrifice to the holy place there. 40. There was no
 count of holy places on the right bank of the Saraswati. As far as
 Samant panchak the rishis gathered on the bank of the Saraswati
 and filled the directions with the sounds of the Vedic hymns. The

व्याघ्र नद्यास्तीर समाश्रिता ॥ ४२ ॥ कुह्यता तत्र तेषान्तु मृनीनां भावितात्मनाम् ।
 स्वाध्यायेनातिमहता यम्यु पुरिता दिश ॥ ४३ ॥ अग्निहोत्रैस्ततस्तेषा ह्ययमौर्महात्म
 नाम । अशोभन सरित्श्रेष्ठा दाप्यमाने समन्तत ॥ ४४ ॥ घालिखिल्ला महाराज अस्म
 कुट्टाश्च तापसा । दन्तोलूखलिनश्चान्ये संप्रत्यानास्तथापरे ॥ ४५ ॥ वायुभक्ष्या जला
 हारा पर्णमहयाश्च तापसा । नानानियमयुक्ताश्च तथा स्थण्डिलशापिन ॥ ४६ ॥
 मामन् वै मुनयस्तत्र सरस्वत्या समीपत । शोभयन्त सरिच्छ्रेष्ठा गङ्गामिव दिवौ
 कस ॥ ४७ ॥ शतशश्च समापितुं श्रद्धयस्तत्र याजिन । तेऽवकाश न ददन् सुसंख्येया
 महाव्रता ॥ ४८ ॥ तता यज्ञोपवीतैस्ते तर्तीयं निर्मिमाय वै । जहुस्त्वचमग्निहोत्रोद्व
 चक्रुश्च विविधा क्रिया ॥ ४९ ॥ ततस्तमृपिसघात निगश चिन्तयाम्बितम् । दशया
 मास गजेन्द्र तपामर्थं सरस्वती । ५० ॥ तत कुञ्जान् घृह्णन् कृष्ट्वा सञ्जिवृत्ता सरि
 त्तरा । श्रुत्वाणी पुण्यतपसां कारुण्याञ्जनमेजय ॥ ५१ ॥ ततो निवृत्त राजेन्द्र तेषामर्थं
 सरस्वती । भूय प्रतीक्ष्यामिमुखी प्रसुसाध सरित्तरा । ५२ ॥ अयोध्यागमन कृत्वा तेषां

समन्तपक्क हे वशीतक न्ह उत्तम ब्राह्मण तीर्थ के लोभमे नदी के किनारे पर
 निवासिहूये । ४२ । वहापर उन इवनकरनेवाले शुद्ध अन्तःकरणवाले मुनियोंके बडे
 वेदपाठ से दिशा पुर्णहोगई । ४३ । वडापर उन महाव्रताओं केकियहूये प्रकाशित
 अग्निहोत्रों से वह उत्तमनदी चारोंओर से शोभायमान हुई । ४४ । हे महाराज
 वालाखल्य अस्मकुट दन्तोलूखली पसरूपान । ४५ । वापुभक्षी जलाहारीभौरवृक्षों
 के पत्ते खानेवाले नानाप्रकार के नियमों से यक्त मैदान में सोनेवाळे तपस्वी
 । ४६ । मुनिसरस्वती के सम्मुख ऐसे ठहरेहुये थ जैसे कि नादियों में भेष्ट ओगगा
 जो को शोभायमान करने देताहोते हैं । ४७ । यक्ष से पूजन करनेवाले सैकड़ों
 ऋषिप्राये उन बडेव्रतवालों ने सरस्वती के अवकाशको नहीं देखा । ४८ । इसके
 पाँछे उन ऋषियोंने यज्ञोपवीतों से तीर्थ को रूदकर अग्निहोत्रादिक अनेक
 प्रकारकी क्रियाओं को किया । ४९ । हे राजेन्द्र इसके पाँछे सरस्वतीने उन्हीं की
 प्रसन्नताके लिये उस निराश चिन्तामे युक्त ऋषि समूहको अपना दर्शन दिया
 । ५० । हे जनमेजय इसके पाँछे वह भेष्ट नदी पवित्र तपकरनेवाले ऋषियोंकीदया
 से बहुत कुञ्जोंको करके लाँटी । ५१ । हे राजेन्द्र इसीहेतुमे वह भेष्ट सरस्वतीउनके

tanks were illum ned by sacrifice Balkhilyas, Asmkoot Dantolukh
 als Piasanlihyans living on air, water and leaves of plant's, vow
 obse ving munis, slept on open ground at the bank of the Saraswati
 as gods embellish the banks of the Ganges, 47, Thousands of rishis,
 'who had come to the sacrifice, did not see the Saraswati They
 poured libations over the fire here and there Then Saraswati appear
 ed to them 50. The Saraswati turned to them in many winding
 corners and flowed towards the west for their sake, saying, 'I go back

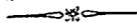
भूयो प्रजास्यं हम् । इत्यद्भुतं महत्कथं तदा राजनमहानदी ॥ ५३ ॥ एवं स कुञ्जो राजन्
 वै नैमिषीय इति श्रुतः । कुरुक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे महतीं क्रियाम् ॥ ५४ ॥ तत्र कुञ्जान्
 बहून् दृष्ट्वा निवृत्ताञ्च सरिद्धराम । वभूव विस्मयस्तत्र रामस्याथ महात्मनः ॥ ५५ ॥
 उपस्पृश्य तु तत्रापि विधिवद्यदुनम्यन् । वस्वा द्वापान् द्विजानिभ्यो भाण्डानि विधि
 धानि च ॥ ५६ ॥ मह्य भोज्यं च विविधं ब्राह्मणभ्य प्रदाय च । ततः प्रायाद्दलो
 राजन् पूज्यमानो द्विजातिभिः ॥ ५७ ॥ सरस्वतीतीर्थपरं नानाद्विजगणायुतम् । वदं गु
 वकादमर्ष्यं प्लक्ष्माभ्यविभीतकैः ॥ ५८ ॥ कफकीलैश्च पलाशैश्च करीरैः पालुभि
 स्तथा । सरस्वतीतीर्थरुद्रेस्तु र्भिविधैस्तथा । ५९ ॥ करुपकधनैश्चैव धिल्लैश्च
 तैस्तथा । अतिमुक्तरुपैश्च गेरिजातैश्च शोभितम् ॥ ६० ॥ कदलीवनभूयिष्ठं
 दृष्टिकान्तं मनोहरम् । वाग्म्यफलपर्णादैर्दन्तोल्लखलिकैरपि ॥ ६१ ॥ तथा दमकुट्टै
 र्वाभिर्यैर्मुनिभिर्यहुर्भिवृतम् । स्वाध्यायघोषसुष्ठु मृगयुधशताकुलम् ॥ ६२ ॥ अहिर्बुध्न्यं

लिये लौटकर फिर पश्चिमाभिमुख जारी हुई । ५३ । और कहा कि मैं तुम्हारे आने
 को सफल करके फिर जागी हूँ यह उस महानदी ने बड़ा अपूर्व कर्मक्रिया । ५४ । हे
 राजा इस प्रकार से वह कुंज नैमिषी नामसे प्रसिद्ध है हे कौरवात्तन पुम इस कुरु
 क्षेत्रमें बड़ी क्रियाको करो । ५४ । वहाँ बहुत कुंजा समेत लौटी हुई सरस्वती को
 देखकर उन महात्मा बलदेवजी को बड़ा आश्चर्य हुआ । ५५ । उस तीर्थमेंभी यदु
 नन्दन बलदेवजी विधिपरक स्नानकर ब्राह्मणों को नाना प्रकारके दान देकर
 नानाभक्ष्य भोज्य पदार्थों से ब्राह्मणोंको तृप्त करके और ब्राह्मणोंकोसे पूजितहोक
 चके । ५७ । फिर हलगारी बलदेवजी उस सप्तनारसत तीर्थ को गये जोकि
 सरस्वती के तीर्थमें श्रेष्ठ नानाप्रकारके पत्तीगणों से युक्त बदरी, इंगुद, काश्याय
 मन्त पीपल, विभक्तिक, कंकाल, पलाश, करील, पोलू और सरस्वती के तीर्थपर
 उत्पन्न होनेवाले नानाप्रकार के वृक्षों से शोभित । ६० । करुपवर, विल्व ब्राह्म
 तक, अतिमुक्तन, भलपड और पारिजातकों से शोभित केलोंके बहुतवन रखने
 वाला मिय देखने के योग्य चित्तरोचक वायु जन फल और पत्तों के खानेवाले
 दासों के उल्लखल रखनेवाले । ६१ । पापाणपर कूटनेवाले वनवासी बहुतसे मुनियों
 से युक्त वेदध्वानि से श्रद्धाप्रमान मृगों के, अनेक यूथों से व्याकुल । ६२ । हिंसा

after making your coming fruitful." The river thus did a wonderful deed. Its turning is known as Naimishi, and you will do a great deed in Kurukshetra. Baldev was much astonished to see those windings of the Saraswati, 55. There too, he gave large donations, and food to brahmins who blessed him. There he went to Sapt-sar-swat, the best of the holy places on the Saraswati, abounding in buds and over grown with large trees bearing fruits and flowers, 60. There is a large forest of trees, with good air and water, where many sages,

परमेर्नृभिरवयंसेवितम् । सप्तसारस्वतं मीर्यमाजगाम हलायुधः । यत्र मङ्गलकः
सिद्धस्तपस्तेषु महामुनिः ॥ ६३ ॥

इतिगदायुद्धपूर्वाणि बलदेवतीर्थयात्रयां नारस्वततीर्थोपाख्यानं सप्तत्रिंशोऽध्यायः ॥ ३७ ॥



जनमेजय उवाच । सप्तसारस्वतं कस्मात् कश्च मङ्गलकमिति । कथं सास्त्रि
भगवान् कश्चास्य नियमोऽभवत् । १ । कस्य चो समुत्पन्नः किञ्चासीत् द्विको
त्तमः । एतद्विच्छाम्यहं भ्रातु विविधद्विजसत्तम ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । राजन् सात
सरस्वत्यो यामिष्योत्तमिदं जगत् । आहूता बलपद्भिर्दि तत्र तत्र सरस्वती ॥ ३ ॥

रहित और धर्मकी उत्तम जानेनेवाले मनुष्यों से सेवितया और जहाँपर महामुनि
सिद्ध मङ्गलक ने तवस्था करीथी ६३ ॥



अध्याय ३८।

जनमेजय बोले कि सप्तसारस्वत नाम किसहेतुसे हुआ और मङ्गलक नाम
मु'ने कौनथा और वह समर्थ और सिद्ध कैसेहुआ उसका नियम क्याथा । १ । हे
ब्राह्मणोत्तम वह किसके कुल में उत्पन्न होकर क्या क्या पढ़ा था इसको आप
वीर्यपूर्वक मुझसे वर्णन कीजिये । २ । वैशम्पायन बोले हे राजा सात सरस्वती है
जिनसे कि यह जगत् व्याप्त है बलवानों से बुलाईहुई सरस्वती जहाँ तहाँ प्रकट
हुई । ३ । उनके नाम यह हैं सुप्रभा, कांचनाक्षी, विशाला मनोरमा, ओषवती,

living on fruits and roots, live. It rings with Vedic hymns and
abounds in deer and harmless men, where the sage Mankanak perform-
ed his penance." 63.

CHAPTER XXXVIII

Janmejaya said, " Why was Sapt-Saraswat so named, who was
Mankanak, how did he become great and what was his rule of conduct?
What family did he belong to and what were his acquirements? Pray
tell me all this in detail." Vaishampayan said, " There are seven
Saraswatis in the world invoked here and there by great men. They
are known as Suprabha, Kanchanakshi, Vishala, Manorama, Oshwati
/Suru and Vinordaka. 4. During the great sacrifice of Brahmas

सुप्रभा काऽवनाक्षी च विशाला च मनोरमा । सरस्वती चौघवती सुगेणुर्विमलोद्का
 ॥ ४ ॥ पितामहस्य महतो वर्त्तमाने महामजे । चिन्तिते यज्ञघाटे वै संसिद्धेषु द्विजानिषु
 ॥ ५ ॥ पुण्याहघोषैर्विमलैर्वह्ना निन्दैस्तथा । देवेषु चैव स्वभेषु तस्मिन् यज्ञविधौ
 तदा ॥ ६ ॥ तत्र चैव महाराज दीक्षिते प्रपितामहे । यज्ञतलस्य सभ्रेण सर्वकामसम्प
 दिना ॥ ७ ॥ मनसा चिन्तितता ह्यय धर्मार्थकुशलैस्तदा । उपतिष्ठन्ति राजेन्द्र द्विजाती
 स्तत्र तत्र ह ॥ ८ ॥ जगुश्च तत्र गन्धर्वा नृतुश्चाप्सरोगणाः । वादित्राणि च विठयानि
 वाद्ययामासुरज्जसा ॥ ९ ॥ तस्य यज्ञस्य सम्पत्या तुतुयुर्द्वेषता अपि । विस्मय परमं
 जग्मुः किमु मानुषयोनयः ॥ १० ॥ वर्त्तमाने तथा यज्ञे पुष्करस्ये पितामहे । अद्भुतं नृ
 ष्यो राजभायं पशौ महाशुणः ॥ ११ ॥ न हृदयमे सरिश्रेष्ठा यस्मादिह सरस्वती ।
 तच्छ्रुत्वा भगवान् प्रीतः सस्माराय सरस्वतीम् ॥ १२ ॥ पितामहेन यज्ञता बाह्ना पुष्क
 रेषु वै । सुप्रभा नाम राजेन्द्र नाम्ना तत्र सरस्वती ॥ १३ ॥ तां दृष्ट्वा मुनयस्तुष्टाश्च
 रायुकां सरस्वतीम् । पितामहं मानयन्तीं क्रतुगते बहु मेनिरे ॥ १४ ॥ पथमेवा सरिद

सुरेश, विमोलुदका । ४ । ब्रह्माजीका बड़ा यज्ञ वर्त्तमान होने और यज्ञके विस्तृत
 बाड़ेमें निर्मल पुण्याहवाचन के शब्द वेदध्वनियों समेत ब्राह्मणोंके सिद्धहोने
 और यज्ञ विधिमें देवताओंके सावधान होने । ६ । और वहां ब्रह्माजी के दीक्षित
 होनेपर सब अभीष्ट वस्तुओं से घृदियुक्त यज्ञकेद्वारा उन ब्रह्माजीको पूजन करते
 । ७ । धर्म अर्थमें कुशल पुरुषोंके मनमें विचारेहुये । अर्थ जहां तहां ब्राह्मणोंके
 पास नियतहुये हे राजेन्द्र तब वहां गन्धर्वों ने गाया अप्सरागणों ने नृत्य किया
 और बेगसेसे दिव्य वाजों को बजाया । ९ । उन यज्ञकी ध्वनि आदिकसे देवता
 दिकभी प्रसन्नहुये तो मनुष्य कैसे न प्रसन्न होगा । १० । हे राजा इसीप्रकार पुष्कर
 जीमें ब्रह्माजी के नियत होने और यज्ञके वर्त्तमान होनेपर ऋषि बोले कि यह यज्ञ
 बड़े विशेषवाली नहीं है । ११ । इसहेतुसे कि यहाँनदियों में श्रेष्ठनदी सरस्वती
 दिखाई नहीं देती तब भगवान् ब्रह्माजीने उनके वचनको सुनकर सरस्वतीको
 स्मरण किया । १२ । हे राजेन्द्र वहां पुष्करों में यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजीजीबुझाई
 हुई सरस्वती सुमभानाम प्रकट हुई । १३ । मुनिलोग उस श्रिता से युक्त ब्रह्माजी
 की प्रतिष्ठा करनेवाली सरस्वतीको देखकर प्रसन्नहुये और उस यज्ञको भी बड़ा
 माना । १४ । इस प्रकार यह नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती ब्रह्माजीकी और बुद्धिमान

when the Vedic hymns were sung by brahmans and the gods partook of Brahma's sacrifice and paid their respect to him, the gandharvas sang and apsaras danced and played musical instruments. Gods and men were pleased with those sounds. 10. When Brahma was performing sacrifice at Pushkar the rishis said, "This sacrifice of yours is not a wonder, because we do not see Saraswati here." At this Brahma invoked Saraswati and she came there under the name of Suprabha

श्रेष्ठा पुष्करेणुं सरस्वती । पितामहार्थं सम्भूता तुष्ट्यर्थञ्च मनीषिणाम् ॥ १५ ॥ नैमिषे
 मुनयो राजन् समागम्य क्षमासते । तत्र चित्रा कथा ह्यासन् धेदु प्रति जनेश्वर ॥ १६ ॥
 यत्नते मुनयो ह्यासन् नानास्वाध्यायवेदिन । ते समागम्य मुनयः सस्मरुर्व सरस्वतीम्
 ॥ १७ ॥ सा तु ध्याता महाराज ऋषाभिः सत्रवाजिभिः । समागतानां राजेन्द्र सहायार्थं
 महात्मनाम् ॥ १८ ॥ आजगाम महाभाग तत्रपुण्या सरस्वती । नैमिषे काञ्चनाक्षी तु
 मुनीनां सत्रवाजिनाम् ॥ १९ ॥ आगता सरिता श्रेष्ठा तत्र भारत पूजिता । गयस्य
 यजमानस्य गयेष्वेव महाक्रतुम् ॥ २० ॥ आहूता सरिता श्रेष्ठा गयस्यै सरस्वती ।
 विशाला ता गयेष्वाहुर्क्रुण्वथ सशितप्रता ॥ २१ ॥ सरिता हिमवत्पाद्वात् प्रसुता
 शीघ्रगामिनी । औदालके तथा यत्ने यजतस्तस्य भारत ॥ २२ ॥ समेते सर्वत स्फुटि
 मुनीनां मण्डले तदा । उत्तरे कोशलभागे पुण्ये राज-महात्मन ॥ २३ ॥ उदालकेन
 यजता पूर्वं ध्याता सरस्वती । आजगाम सरिश्रेष्ठा त देशमृषिकारणात् ॥ २४ ॥ पूज्य

ऋषियोंकी प्रसन्नताके लिये प्रकटहुई तब सब मुनिलोग नैमिषमें इकट्ठेहोकर, बैठगये
 और वेदके विषयमें अपूर्वकथाहोनेनगी १ दिहेराना जहापर अनेक प्रकार की ऋचा
 जाननेवाले वह मुनि बैठेथे उन मुनिपोंन मिलकर सरस्वतीको स्मरण किया । १७ ।
 तब यज्ञोत्ति पूजन करनेवाले ऋषियों से ध्यानकी हुई धर्मकी शक्तिका हेतु वह महा
 भाग कांचनाक्षी नाम सरस्वती इकठे होनेवाले महात्मा ऋषियों की सहायता के
 निमित्त वहां नैमिष में आपहुंची और यज्ञसे पूजन करनेवाली मुनियों के प्रागे
 प्रकटहुई । १८ । अर्थात् वह नदियोंमें श्रेष्ठ महापूजित नदी वहापर आई इसके
 पीछ वह श्रेष्ठ नदी गयदेशमें बंड यज्ञों से पूजन करनेवाले राजा गयकी बुलाई
 हुई गयके यज्ञ में प्रकट हुई तेजप्रत ऋषियों ने उस गयकी बुलाईहुई सरस्वती को
 विशाला कहा । २१ । वह शीघ्र चलनेवाली नदी हिमचलकी कुक्षसे उत्पन्न
 हुई हे भारतवशी इसीप्रकार उस पूजन करनेवाले औदालक के यज्ञ में । २२ ।
 सब ओरसे बृद्धिपुक्त इकट्ठे होनेवाके मुनियों के मण्डल में काशलदेश के पवित्र
 भागपर महाराज । २३ । पूजन करनेवाले औदालकसे ध्यान की, हुई सरस्वती
 उस ऋषि के निमित्त से उसदेशमें आपहुची । २४ । जो कि केवल मृगचर्मधारी

The Munis were much pleased at the sight of her and eulogised the sacrifice. Thus Saraswati, the best of rivers appeared there to please the wise sage who sat in Naimish and told many things about the Vedas. The great rishis, learned in the Vedas, sitting there, invoked the Saraswati and she came to their help by the name of Kanchanakshi 19. She was invoked by Prince Gaya at this sacrifice and was called Vishala. This rapid river came out of the Himalayas. Similarly, in the sacrifice of Auddalak the rishis invoked her in the land of Kosal and she came there. 24 It was attended by munis wearing

माना मुनिगणैर्वल्कलाजिनसंयुतैः । मनोरमेति विष्णोर्दी सा हि तैर्मनसा
 कृता ॥ २५ ॥ सुरेणुश्रुत्वा मे द्वीपे पुण्ये राजपिसेविते ॥ २६ ॥ कुरोश्च
 यज्ञमानस्य कुरुक्षेत्र महात्मनः । आजगाम महामागा सरिश्रष्टा सरस्वती
 ॥ २७ ॥ ओघवत्यपि राजन्द्रे वशिष्ठेन मयात्मना । समाहृता कुरुक्षेत्रे दिव्यतोया सर
 स्वती । २८ ॥ दक्षेण यज्ञता चापि गङ्गाद्वारे सरस्वती । सुगुणरिनि विख्याता प्रसृता
 शीघ्रगामिनी ॥ २९ ॥ विमलोदा भगवती ब्रह्मणा यज्ञता पुनः । समाहृता यथा तत्र
 पुण्ये हेमघते गिरौ ॥ ३० ॥ एकीभूतास्ततस्तास्तु तस्मिंस्तीर्थे समागताः । समसार
 स्वर्त तीर्थे ततस्तत्र प्रथितं मुवि ॥ ३१ ॥ इति सप्त सरस्वतो नामतः परिकीर्तिताः ।
 सप्तसारस्वतश्चैव तीर्थे पुण्ये तथा स्मृतम् ॥ ३२ ॥ ध्रुणु मद्गुणकस्यापि कौमारब्रह्मचा
 रिणः । आपगामवगादस्य राजन् प्रकीर्तितं महत् ॥ ३३ ॥ दृष्ट्वा पदच्छया तत्र स्त्रिय
 मम्मसि भारत । स्नायन्ती रुचिरापाङ्गी दिग्वाससमतिन्द्रिताम् । सरस्वत्या महाराज
 चस्कन्दे वीजमम्मसि ॥ ३४ ॥ तद्व्रतः स तु जगद् कलसे वै महातपाः । सतथा प्रथि

मुनियों के समूहों से पूजित थी उनके मनसे प्रकटकी हुई वह सरस्वती मनोरमा
 नाम से प्रसिद्ध हुई । २५ । यज्ञ करनेवाले महात्मा कुरुके इस कुरुक्षेत्र में जो कि
 राजाश्रुपियों से सेवितः पवित्र और उत्तम द्वीपमें वर्तमान है वहाँ श्रेणु नाम महा
 भाग सरस्वती आई । २७ । हे राजा महात्मा वशिष्ठजी से बुलाई हुई दिव्य जल
 रखनेवाली ओघवती नाम सरस्वती कुरुक्षेत्र में प्रकट हुई । २८ । और गंगाद्वारपर
 यज्ञ करनेवाले दक्षसे बुलाई हुई शीघ्रगामी सरस्वती सुरेणु नाम से प्रसिद्ध हुई
 । २९ । फिर यज्ञ करनेवाले ब्रह्माजीसे बुलाई हुई विमलोदानाम भगवती सरस्वती पवित्र
 हिमाञ्चल पर्वतपर गई । ३० । फिर सब एतद्ब्रह्मोकर उत्त तीर्थपर आई इसीसे
 वह तीर्थ इस पृथ्वीपर सप्त सारस्वत नाम से विख्यात हुआ । ३१ । यह सातों
 सरस्वती नामों समेत वर्णन करी इस प्रकारसे वह पवित्र तीर्थ सप्त सारस्वत नामसे
 विख्यात किया गया है । ३२ । हे राजा वास्यावस्था से ब्रह्मचारी नदी के जल
 में स्नान करनेवाले ऋणकनाम ऋषिके भी उत्तम चरित्रको सुनो । ३३ । हे भरत
 वंशी महाराण किसीसमय वहाँ देवदूत छांसे जलमें स्नान करनेवाली एक आति
 मनोहर श्रेष्ठ नत्रवाली निहाय नगीछीको देखकर सरस्वती के जलमें इनका वीथि

deer skins, and invoked by them she was called Manorama. In the
 sacrifice of Kuru at Kurukshetra, attended by royal sages, holy and
 good, Saraswati appeared under the name of Sirenu. Invoked by
 Vashisth the Saraswati came under the name of Oghwati. Invoked
 by Daksh at Gangadwar, Saraswati was known as Sirenu. Invoked
 by Brahma Saraswati appeared as Bimaloda on the Himalayas. 30.
 They all came together at that holy place and therefore it was known
 as Sapt-Saraswati. The seven saraswatis and their names are men-

मागन्तु कलसस्य जगाम ह ॥ ३५ ॥ तत्रययः सप्त जाता जङ्गिरे मरुता गणाः । वीथु
वेगो वायुबला वायुहा वायुमण्डलः । ३६ ॥ वायुज्ज्वलो वायुरेता वायुचक्रश्च वीर्यं
वान् । एष मेते समुत्पन्ना मरुतां जन्मविधायः ॥ ३७ ॥ इदमत्यद्भुतं राजन् श्रुत्वाश्चर्यं
तरं भुवि । महर्षेभ्यस्ति यादृक् त्रिषु लोकेषु विभुतम् ॥ ३८ ॥ पुरा मङ्कणकः सिद्धः
कुशाग्नेति विभुतम् । क्षनः किल करे राजस्य शाकरसोऽस्रवत् ॥ ३९ ॥ स वै शाक
रसं दृष्ट्वा हर्षाविष्टः प्रवृत्तवान् । तनस्तास्मिन् प्रवृत्ते वै श्याधरं जङ्गमन्वपत् । प्रवृ
त्तमुभयं वीरं तेजसा तस्य मोहितम् ॥ ४० ॥ ब्रह्मादिभिः सुरै राजन्प्रापिभिश्च तपोधनैः
विब्रह्मो वै महादेव ऋषेरथे नगधिप । नायं नृत्ये घथा देव तथा त्वं कर्त्तमहासि ॥ ४१ ॥
तपो देवो मुनि दृष्ट्वा हर्षाविष्टमतीव ह । सुराणां हितकामार्थं महादेवोऽप्यभाषत

गिरपदा । ४४ । फिर उस बड़े तपस्वीने, उस वीर्य को कलशमें रखदिया फिर
कलशमें नियत उस वीर्य ने सातभागों को पाया । ३५ । अर्थात् उसमें वह सात
ऋषि उत्पन्नहुये जिन्हांने मरुतों में अवतार लिपाथा उनके नाम यह हैं वायुवेग,
वायुबल, वायुहा, वायुमण्डल । ३६ । वायुज्ज्वल, वायुरेता और पराक्रमी वायु
चक्र इसप्रकार मरुतोंके यह ऋषि उत्पन्नहुये । ३७ । हे राजेन्द्र पृथ्वीपा बड़े आश्चर्य
कारी उस महर्षिके चरित्रको सुनो जो कि तीनलोकों में विरुगत है । ३८ ।
हे राजा निश्चय करके पूर्व समय में मङ्कणक नाम सिद्ध कुशाग्रों की नोकसे
घायल हुआ था तब उसके हाथसे शाकरश टपकाथा यह सुनागथा ३९ । वह ऋषि
अपने हाथसे टपकेहुये शाकरस को देखकर प्रसन्नता से नृत्य करनेलगा हे वीर
फिर उसऋषिके नृत्य करनेपर सब संसारके जड़ चैतन्यजीव उसके तेजसे नृत्य
करनेलगे । ४० । हे राजा तब ब्रह्मादिक देवता और तपोधन ऋषियोंने महादेव
जीसे प्रार्थनाकी कि हेदेवताओंके हेदेवता जैसे यह ऋषि नृत्यकोंन करे वही आप
उपाय करनेको योग्यहो । ४१ । इसके पीछे देवता महादेवजी मुनिको अत्यन्त

tioned here and the holy place is known as Bapat sarasvat on account
of them. Now hear the exploits of Mankanak : seeing a naked woman
of charming appearance and beautiful eye, his semen dropped down
in water. The rishi kept it in a vessel and it was divided into seven
portions. 35. The seven rishis who were born among Marutas
were the issue and are known as Vayuveg, Vayuval, Vayuha Vayumandal,
Vayujwal, Vayureta and Vayuchakra. Now hear more of that rishi's deeds
which are known throughout the three worlds. The sage Mankanak
pricked his hand with the point of kusha grass and vegetable
juice dropped out of the wound. Seeing that sap comes out of it, the
rishi danced with rapture and all the the movables and immovables
of the world did the same. 40. Brahma and other rishis begged
Mahadev to stop his dance. For the good of the gods, Mahadev

॥ ४२ ॥ इहो ब्राह्मण धर्मज्ञ किमर्थं नृत्यते । भवान् । हर्षस्थानं किमर्थं च तवेदमधिकं
 मुने । तपस्विनो चर्तपथे स्थितस्य द्विजसत्तम ॥ ४३ ॥ ऋषिब्रवाच । किमप्यहं स
 मे ब्रह्मन् करावच्छाकरसं स्रुतम् । यं हृद्वाहं प्रनृत्तो वै हर्षेण महता विभो ॥ ४४ ॥ तं
 प्रहस्याब्रवीद्देवो मुनिं रागेण मोहितम् । अहं न विस्मयं विप्रं गच्छामीति प्रपद्य माम्
 ॥ ४५ ॥ ब्रह्मयुक्त्वा मुनिश्रेष्ठं महादेवेन धामता । अंगुल्यग्रं राजेन्द्र स्वांगुल्लाडितो
 भवत् ॥ ४६ ॥ ततो भस्म क्षनाद्राजभिर्गतं हिमसान्निभम् । तद्दृष्ट्वा प्रसिद्धा राजश्च
 स मुनिः वाद्योगतः ॥ ४७ ॥ मेने देवं महादेवमिच्छोवाच विस्मितः । नान्यं देवा
 इह मन्ये रुद्रात् परतरं महत् ॥ ४८ ॥ सुरामुरस्य जगतो गतिसर्वमसि शूलधृक् ।
 त्वया सृष्टमिदं विश्वं वदन्तोह मनीषिणः ॥ ४९ ॥ स्वामिष सर्वं विशति पुनरेव युगक्षये

प्रसन्नता में पूर्ण देखकर देवताओं के भिषकारी हितके लिये यह वचन बोले
 । ४२ । हे धर्मज्ञ ब्राह्मण आप किस निमित्त नृत्य करतेहो हे मुनि आपको इतनी
 प्रसन्नता किसहेतुमे हुई है हे श्रेष्ठ ब्राह्मण धर्ममार्ग में तपस्वीकी प्रसन्नताका कारण
 क्या है । ४३ ऋषिबोला हे ब्रह्मन् मेरे हाथसे टपकेहुये इस शाकरस को क्या तुम
 नहीं देखतेहो हे समर्थ मैं इसी शाकरस को देखकर बड़े आनन्द युक्त होकर
 नाचताहूँ । ४४ । तब देवता शिवजी उस रागेसे मोहित मुनि से अच्छे प्रकार
 हँसकर बोले कि हे वेदपाठी मुझको आश्चर्य नहीं होता है तुम मुझको देखो
 । ४५ । हे राजेन्द्र उस श्रेष्ठ मुनि से इसप्रकार कहकर बुद्धिमान महादेवजी ने
 अंगुली की नोकसे अपने अंगूठे को ताड़ित किया । ४६ । हे राजाउससे वर्षों
 के समान श्वेत भस्म निलली उसको देखकर बड़ी लज्जापाकर वह मुनि उनके
 दोनों चरणोंपर गिरपड़ा । ४७ । उसमे उसको देवताओंका भी देवता महादेव
 माना और आश्चर्य होकर यह वचन बोला कि मैं रुद्रदेवता से उच्चम और बड़ा
 बूरे किसी देवताको नहीं मानताहूँ । ४८ । हे शूलधारी तुम देवता असुर आदिक

seeing the rishi dance in glee, asked of him the reason of his so doing
 saying, " Why do you dance so joyfully, sage ? A rishi, walking in
 the path of virtue has no cause to indulge in this manner. " " Do you
 not see this vegetable sap dropping from my hand ? I am dancing for
 this very reason. " said the rishi Mahadev laughed at this and said,
 " I see no cause of wonder in this, learned man. " Having said this,
 Mahadev beat his thumb with the end of his fore-finger and a dust
 white as snow came out of it. The muni much ashamed, fell down at
 his feet and he knew the god of gods. Then he thus addressed him,
 saying " I see that no god is greater than you You are the refuge
 of all the world, bearer of tribute Wise men say that all the world
 was create] by you and it will unite in you again after p alaya. You

देवैरपि न शक्यस्त्वं परिज्ञातुं कुतो मया ॥ ५० ॥ त्वयि सर्वे स्म हृद्यन्ते प्राधा ये
जगतीस्थिता । त्वामुपासन्त धरवं देवा ब्रह्मादयोनय ॥ ५१ ॥ सर्वस्वमासि देवानां
कर्त्ता कारयिता च ह । इत्प्रसादात् सुराः सर्वे मोदन्तीहाकुतो मया । एवं स्तुत्वा
महादेवं स ऋषिः प्रणतो भवत् ॥ ५२ ॥ यदिदञ्चापलं देव कृतमेतत् स्मयादिकम् ।
अतः प्रसादयामि त्वां तपो मे न क्षरेदिति ॥ ५३ ॥ ततो देवः प्रीतमनास्तृषि पुनरब्र-
वीत् । तपस्ते धर्मेतां विप्र मत्प्रसादात् सहस्रधा । आश्रमे खेह वरस्यामि त्वया साह-
स्रं सदा ॥ ५४ ॥ सप्तसारं वते चास्मिन् यो मामर्चिष्यते नरः । न तस्य कुल्लभं

समेत सब जगत्की गतिहो तुम से सब जगत् उत्पन्न हुआ है ऐसा इस लोकमें
पण्डित लोग कहते हैं । ४९ । मलय कालके पीछे फिर यह सब जगत् तुमही लय
होता है तुम देवताओंसेही जाननेको योग्य नहीं हो तो मुझ अल्पबुद्धि से कैसे
जाननेके योग्यहोगे । ५० । जो प्रकाश रूपभाव जगत्में नियत है वह सब आपके
रूपमें दिखाई पड़ते हैं हे निष्पाप ब्रह्मादिक देवताओंने भी तुझी वरदाता
की उपासना करी है । ५१ । देवताओं के उत्पन्न करनेवाले और सबको
कर्मों में प्रवृत्त करनेवाले आपही को इसलोक में सब देवता आपकी ही
कृपासे निर्भयहाकर आनन्द करते हैं वह ऋषि महादेवजी की इस प्रकार स्तुति
करके नम्रहोगया । ५२ । और कहनेलगा कि हे देवता मैंने जो अहंकारादिक
चपलताकरी है इसलिये आपको प्रसन्नकरताहूँ और यह चाहताहूँ कि मेरा तप
नाशको न पावे । ५३ । इसके पीछे प्रसन्नचित्त शिवजी उम ऋषि से बोले हे
ब्राह्मण मेरी कृपासे तेरा तप हजार प्रकार से वृद्धियुक्त होय और मैं इस आश्रम में
सदैव तेरे साथ निवास करूंगा । ५४ । जो मनुष्य इस सप्त सारस्वत तीर्थ में मुझको
पूजेगा उसको इसलोक और परलोक में कोई दुष्पाप वस्तु नहीं है और निस्सन्देह

are unknowable even by gods, how can a person of small understand-
ing know you? 50. You are the seat of all glory and are praised by
Brahma and other gods. You are the creator of gods and you engage
all beings in action. All the gods enjoy the world fearlessly by your
grace alone. "The rishi thus humiliated himself before Mahadev and
said, "I have been rash enough before you and therefore I request
your pleasure so that the merit of my asceticism may not be destroyed."
Shiv was pleased with the rishi and said, "Your asceticism will
bear fruit a thousandfold by my grace and I shall live with you.
Whoever will worship me at Sapt-saraswat will find nothing difficult
to attain and will surely go to the region of Saraswat." This is the

किञ्चिद्विद्वेह परत्र वा । सारस्वतश्च ते लोकं गमिष्यन्ति न संशयः ॥ ५५ ॥ एतन्
मङ्गलकस्यापि चरितं भूरितेजसः । स हि पुत्रः सुकन्यायामुत्पन्नो मातरिद्वना ॥ ५६ ॥
इति गदापुद्गलपर्वोऽथ बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्यानं अष्टत्रिंशोऽध्यायः ॥ ६ ॥

वैशम्पायन उवाच । उपस्था तत्र रामस्तु संपूज्याभ्रमयासिनः । तथा मङ्गलके
प्रीतिं शुभाग्रचक्रे हलायुधः ॥ १ ॥ दत्त्वा दानं द्विजातिभ्यो रजनीं तामुपोष्य च ।
पूजितो मुनिसंघश्च प्रातःन्यायं लाङ्गली ॥ २ ॥ अनुज्ञाप्य मुनीन् स्वान् स्पृष्ट्वा
तोयश्च भारत । प्रययौ त्वरितो रामस्तीर्थहेतोर्महाबलः ॥ ३ ॥ ततः आशिनसे तीर्थमा

बह सारस्वत लोक में जायागा- ५५ ॥ यह वडे तेजस्वी मंकरणकनाम ऋषिका
चरित्र है वह वैदा हुआ इसी सुकन्यामें उत्पन्न हुआ है- ५६ ॥

अध्याय ३९ ॥

वैशम्पायन बोले कि हलायारी बलदेवजाने वहाँ निवासकरके और आथम
वासियों को अच्छीरिति से पूजकर मंकरणकऋषि में शुभं प्रीतिकरी ॥ १ ॥ हे भरत
वशी वडे बलवान् हलायुध बलदेवजी ब्राह्मणों को दानदेक उत्स्रात्रि वहाँ नि
वासकर वडे प्रातः काल उठकर मुनियोंके समूहमें पूजित होकर ॥ २ ॥ और आपभी
सब मुनियों को पूजकर स्नान आचमनकर तीर्थ कोनिमित्त शीघ्र चलदिये ॥ ३ ॥

account of the sage Mankanak who was an offspring of Suk-
alya." 56.

CHAPTER XXXIX

Vaishampayan said, "Having staid there, Baldev paid respect to the people of the hermitage and fixed his mind in Mankanak rishi. He gave donations to brahmans and after staying there a night, he greeted the munis and was greeted by them in return. He then sipped water and went on to the visit other holy places. He next visited Kapal-mochan dedicated to Shukra, where Mahodar the muni was freed from the head of the raksbas cut off and flung by Ram and where Shukra had performed puances in the days of yore.

जगाम हलायुधः । कपालमोचनं नाम यत्र मुक्तो महामुनिः ॥ ४ ॥ महाता शिरसा
 राजन् प्रलज्जयो महोदरः । राक्षसस्य महाराज रामक्षिप्तस्य वै पुरा । तत्र पूर्वं तप
 सप्तं काश्यपेन सुमहात्मना ॥ ५ ॥ यत्रास्य नीतिरखिला पादुर्भूता महात्मनः । यत्रस्य
 श्रिन्तपामास वैत्यदानवधिप्रहम् ॥ ६ ॥ तत् प्राप्य च बलो राजंतीर्यप्रथममुत्तमम् ।
 विणिवद्भै वदौ विस्र प्राक्षणां महात्मनाम् ॥ ७ ॥ जनमेजय उवाच । कपालमोचनं
 ब्रह्मन् कथं यत्र महामुनिः । मुक्तः कथञ्चास्य शिरो लग्ने केन च हेतुना ॥ ८ ॥
 वैशम्पायन उवाच । पुरा वै दण्डकारण्ये राघवेन महात्मना । वसता राजशार्दूलं राक्ष
 सान् शमयिष्यता ॥ ९ ॥ जनस्त्रेणैव शिरस्त्रिभ्रं राक्षसस्य, बुरात्मनः । धुरेण शितघो
 रेण तत् पपात महावने ॥ १० ॥ महोदरस्य तल्लग्नं जघामा वै, यहच्छ्रया । वने विच
 रतो राजन्नसिध भित्वाऽङ्कुरत्तदा ॥ ११ ॥ स तेन लग्नेन तदा द्विजातिनै राशाक ह ।

इसके पीछे वनदेवजी शुक्रजी के कपालमोचननाम तीर्थ को गये हे महाराज
 राजा जनमेजय जहापर पूर्वसमयमें रामचन्द्रजीके फेंकेहुये राक्षसके बड़े शिरसे
 निगलीहुई जंघ वाले महोदरनाम महामुनि मुक्तहुये वहापूर्वकालमें बड़े महात्माशुक्रजीने
 तपकिया । ५ । जहापर उस महात्माकी सम्पूर्ण नीति प्रकटहुई वहाही निषत
 होकर शुक्रजी ने दैत्य और दानवों के परस्पर विरोधको शोचा । ६ । हे राजा
 राजावलिने उस अत्यन्त श्रेष्ठ तीर्थको पाकर विधिपूर्वक महात्मा ब्राह्मणों को बन
 दिया । ७ । जनमेजय ने कहा हे द्विजवर्य्य इस तीर्थका कपालमोचन नाम कैसे
 हुआ उसमें मह.मुनि कैसे छूटे उस राक्षसका शिर किसहेतुने उनकी जघामोचपटा
 । ८ । वैशम्पायन बोले हे राजेन्द्र पूर्वसमय में दण्डक वनमें निवास करनेवाले
 राक्षसोंके मारने के अभिलाषी महात्मा रामचन्द्रजीने । ९ । जिन स्थान में बुरात्मा
 राक्षसका शिरकाटा वहां उमवन में तेजधार धुरसे काटाहुआ वह शिर उछला
 । १० । निद्रवप करके देवयोग से वह शिर महोदर की जघामपर चिपटगया
 अर्थात् यह शिर वनमें घूमनेवाले महोदरके हाइको छेदकर कुछ बेष्टा करनेलगा

5. There Śukra had expounded his Politics and thought of the war between the gods and Danavas. King Bali had given them immense wealth to Brahmans. Janmejaya said, "Why was that holy place called Kapalmochan." Why did the rakshas' head cling to the muni's thigh? Vaishampayan said, "Staying in Dandak forest in the days of yore, with a desire to extirpate the rakshasos magnanimous Ram Chandra cut off the head of a rakshas with a sharp weapon. The head thus cut asunder went up and clung to the thigh of the muni, piercing through his bone and moving the while. 11. With that head clung to his body the muni was unable to visit holy places; but we hear that he moved on though in great

अभिगतु महाप्राज्ञस्तीर्थान्यायतनानि च ॥ १२ ॥ स पूतिता विस्त्रयता घेदनासौ महा
मुनिः । जगाम सर्वतीर्थानि पृथिव्याश्चेति न श्रुतम् । १३ ॥ स गत्वा सरित सर्वा
समुद्राश्च महातपा । कथयामास तत् सर्वमृषीणा भावितात्मनाम् ॥ १४ ॥ वाप्युत
सर्वतीर्थेषु न च माहमघातवान् । स तु शुश्राव विभ्रन्द्रो मुनीना वचनं महत् ॥ १५ ॥
सरस्वत्यास्तीर्थं चरत्यातमौशनस तदा । सर्वपापप्रशमन सिद्धक्षेत्रमनुत्तमम् ॥ १६ ॥
स तु गत्वा ततस्तत्र तीर्थमौशनस द्विज । तत औशनसे तीर्थे तस्योपस्पृशत्तदा ।
तच्छिरश्चरणं मुपत्वा पपातान्तर्जले तदा ॥ १७ ॥ विमुक्तस्तेन शिरसा पर सुखम
वापह । स घाप्यन्तर्जले मूर्च्छा जगामादर्शन तदा ॥ १८ ॥ तत स विशिरा राजन्
पूतात्मा घातकलमप । आजगामाश्रमं प्रीत वृत्तं यो महोदर ॥ १९ ॥ सोऽथ गत्वा
श्रमं पुण्य विभ्रमुक्तो महातपा । कथयामास तत्सर्वमृषीणा भावितात्मनाम् ॥ २० ॥

। १० । तब वह बड़ाहानी घ्राहण उस चिपटे हूये शिरके कारण से तीर्थ और
देवालयों के जाने को सर्वथ नहीं हुआ । १२ । उस चिपटेहूये दुर्गन्धित शिरके
कारण दुखसे ये डरमानभी वह महामुनि पृथ्वी के सब तीर्थोंको गया यह हमने
सुना है । १३ । उस बड़े तपस्वी ने सब नदियों पर और समुद्रोंपर जाकर वह सन
वृत्तान्त शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों के सम्मुख जाकर वर्णन किया । १४ । स
तीर्थोंमें स्नान करनेवाले उन शिरसे पृथक्ता को नहीं पाया तब फिर उस
ऋषिने मुनिशों के बड़े इन वचनों को सुना । १५ । कि सरस्वतीका एकउत्तम तीर्थ
औशनस नामसे विख्यात सब पापोंका दूर करनेवाला सिद्धीका क्षेत्र और श्रेष्ठ
तरहै । १६ । उसके पीछे उन घ्राहणने उस औशनस तीर्थ में जाकर स्नान किया
तब औशनस तीर्थमें स्नान करनेवाले उन ऋषिके चरणको छोडकर वह शिर
जलके मध्य में गिरपडा । १७ । उस शिरसे छूटेहूये ने बड़े आनन्द को पाया
और उन शिरनेभी जलके मध्य में गुप्तताको पाया । १८ । हेराजा उसके पीछे उस
शिर से पृथक् परित्र शीर पापोंका लिप्ततासे रहित सुखी और कृतरुपी होकर
वह महोदरऋषि अपने आश्रमका आया वहाँ उस शिरसे छूटे उस बड़े तपस्वी
ने पवित्र आश्रमको जाकर उस सन वृत्तान्तको शुद्ध अन्तःकरणवाले ऋषियों

He told of his calamity to the ascetics whom he met at the
banks of holy rivers and seas, but the head still clung to his thigh
He heard from munis that a holy place on the bank of the Saraswati
known as Anshanas was the remover of sins and giver of perfection
16. Then he bathed at Anshanas and the head lost his hold and
dropped in water. The rishi was pleased at being rid of the head
which disappeared in water. Being thus freed from the head as
well as his sins, the rishi went to his own hermitage and told other
ascetics of his good luck 20. The assembled rishis then gave the

ते श्रुत्वा वचनं तस्य ततस्तीर्थस्य मानद । कपालमोचनमिति नामचक्रुः समागताः ॥ २१ ॥ स चापि तीर्थप्रवरं पुनर्गत्वा महानृषि । पीत्वा पयः सुविपदं सिद्धिमावा
 सदा मुनिः ॥ २२ ॥ तत्र दत्त्वा बहुद दायान् विभ्रान् संपूज्य माधवः । जगाम बृष्णि
 प्रवरो रुद्रोराश्रमग्नदा ॥ २३ ॥ तत्र ततं तपो घोरमाष्टिपेण नारत । ब्राह्मण्यं लब्ध
 वास्तत्र विश्वामित्रा महामुनिः ॥ २४ ॥ सर्वकामसमुत्तं वै तत्राश्रमपदं महत् । मुनि
 भिर्ब्राह्मणैश्चैव सेवित सर्वदा विभो ॥ २५ ॥ ततो हलधरः श्रीमान् ब्राह्मणं परिवा
 रितः । जगाम यत्र राजेन्द्र रुद्रगुरुरतनुमत्यजत ॥ २६ ॥ रुद्रगुर्ब्राह्मणो बृद्धस्तपोनित्यञ्च
 भारत । देवस्यासे कृतमना विचिन्त्य धडुधा तदा ॥ २७ ॥ तत सर्वानुपादाव तनयाश्च
 वै महातपा । रुद्रगुरुवर्षात्तत्र नयध्वं मा पृथुदकम् ॥ २८ ॥ विज्ञायतीतद्यसं रुद्रगुं
 से तपोधना । ते वै तीर्थमुपानिग्युः सरस्वत्यास्तपोधनम् ॥ २९ ॥ स तै पुत्रैस्तदा

से वर्णन किया । २० । हे बड़ाई देनेवाले इसके पीछे इकट्ठे होनेवाले उन ऋषियों
 ने उसके वचनको सुनकर उस तीर्थका नाम कपालमोचन रखवा । २१ । तब उस
 महापिनेभी उस अत्यन्त उत्तम तीर्थको जाकर जलको पान करके बहुत बड़ी सिद्धी
 को पाया । २२ । वहांभी छापिगयोमें भ्रष्ट हलधर बलदेवजी बहुत दानोंकोदेखकर
 ब्राह्मणोंको पूजकर उस रुद्रगो के आश्रम को गये जहापर आष्टिपेण ने बड़ी घोर
 तपस्याकरी थी वहांही महामुनि विश्वामित्रने ब्राह्मण वर्णको पाया । २३ । वः बड़ा
 स्थान सब अधीष्टोंसे बुद्धियुक्त और सदैव मुनि ब्राह्मणों से सेवित है । २४ । हे
 समर्थ राजेन्द्र इसके पीछे ब्राह्मणों समेत श्री बलदेवजी वहांगये जहां कि रुद्रगोने
 अपने शरीरोंको त्यागा । २५ । हे भरतवंशी सदैव तप करनेवाले वृद्ध ब्राह्मण
 शरीरके त्यागने में प्रद्यत चित्त रुद्रगने बहुत प्रकारकी चिन्ता करके अपने सब
 पुत्रोंको बुलाकर सबमे कहा कि मुझको पृथुदक तीर्थको लेचलो । २६ । उन
 तपोधन ऋषिगुमारोंने उस तपोधन रुद्रगको वृद्ध जानकर सरस्वती के उस तीर्थ
 पर पहुंचाया जोकि धर्मकी बुद्धिका कारण सैठो तीर्थों से युक्त और वेद
 पादियों से सेवितथा । २७ । हे राजा वह बड़ा तपस्वी ऋषियों में भ्रष्ट रुद्रगवहां
 विधि पूर्वक स्नान करके तीर्थ के गुणों को जानकर अत्यन्त प्रसन्न होकर समीप

name of Kopal-mochan to the holy place. The rishis went to that
 holy place and gained great perfection. Having visited that holy
 place and sipped of its water, Baldev gave large donations to Brah-
 mans and proceeded to the hermitage of Rushange where Arshisen had
 performed a severe asceticism and Vishwamitra became a Brahman.
 That holy place is the giver of all desires and is visited by Brahman and
 munis. 25. Then he, with Brahmans, went to the place where Rushang
 had died. The elder Rusanang, before dying, had asked his sons to take
 him to Prathoodak. The rishi's sons obeyed their old father and took

महातेजा जगाम त्रिदिवं मुनिः । एव सिद्धः स भगवानार्ष्टिणेनः प्रतापवान् ॥ ९ ॥
 तस्मिन्नेव तद्रा तीर्थं सिन्धुद्वीपः प्रतापवान् । देवापिञ्च महाराज ब्राह्मण्यं प्रापनुर्म
 हत् ॥ १० ॥ तथा च कौशिकस्तात तपोनिन्यो जितेन्द्रियः । तपसा चै सुनतेन ब्राह्म
 णत्वमवाप्तवान् ॥ ११ ॥ गाधिनाम महानासीत् क्षत्रियः प्रथितो भुवि । तस्य पुत्रोऽम
 वद्राजन् विश्वामित्रः प्रतापवान् ॥ १२ ॥ स राजा कौशिकस्तात महायोग्यमभवत्
 किल । स पुत्रमपि विद्याय विश्वामित्रं महातपा ॥ १३ ॥ वेहन्यासे मनश्चक्रे तमूचु
 प्रणताः प्रजाः । न गन्तव्य महाप्रातः ब्राह्मि चास्मान्महाभयात् ॥ १४ ॥ एवमुक्त्वः प्रायु
 वाच ततो गाधिः प्रजास्ततः । विश्वस्य जगतो गोपा मविष्यनि स्तो मम ॥ १५ ॥
 इत्युक्त्वा तु ततो गाधिविश्वामित्रं निवेद्य च । जगाम त्रिदिव राजन् विश्वामित्रो
 भवन्नुपः । न भक्तोति पृथिवी यत्नवानपि रक्षितुम् ॥ १६ ॥ ततः शुभाव राजा
 स राक्षसेभ्यो महाभयम् । निर्ययौ नगगच्छापि चतुरङ्गवलाग्धितः ॥ १७ ॥ स यात्वा
 भगवान् प्रतापवान् आर्ष्टिण्य इत् प्रकार से सिद्ध हुये ११ । हे महाराज तव उस तीर्थ में
 प्रतापवान् सिन्धुद्वीप और देवापीने वड़े ब्राह्मण भावको पाया । १० । हेनात उसी
 प्रकार सदैव तप करनेवाले जितेन्द्री विश्वामित्रने अच्छे प्रकार से तपहुये तपकेद्वारा
 ब्राह्मण वर्णको पाया । ११ । एकगाधिनाम क्षत्री इस पृथ्वीपर वड़ा विख्यात
 हुआ उसका पुत्र विश्वामित्रभी वड़ा प्रतापवान हुआ । १२ । हे तात निश्चयकरके
 वड़े राजा कौशिक वड़ा बुद्धिमान और प्रज्ञहुया उस वड़े तपस्वाने विश्वामित्र
 न म पुत्रको राज्य पर अभिषेक कराके । १३ । शरीर त्यागमें चित्तको प्रवृत्त किया
 तव हाथजोड़कर प्रजालोगोंने उससे कहा कि हे वड़े हानी आपको वन में न जा
 चाहिये हमको आप वड़े भयसे रक्षाकरो । १४ । इसके पीछे इस प्रकार से प्रजा
 के बचनके सुनकर गाधिने प्रजालोगों को उत्तर दिया कि मेरा पुत्र संसार
 भरेका रक्षकहोगा । १५ । हे राजा राजागाधि ऐसा बचन कहकर और विश्वामित्र
 को राज्याभिषेकपर बैठाकर स्वर्गको गया और विश्वामित्र राजा हुये विश्वा
 मित्र भी अनेक उपायों से पृथ्वी की रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुआ । १६ । इम

of their work in a very short time. Having said this, the glorious
 muni went to heaven. Then glorious Sindh dwip and Devapi became
 Brahmans 10. Similarly, Vishwamitra who had control over his
 organs became a Brahman by means of asceticism. He was the son
 of a famous kshatrya named Gadhi, who was very wise and learned.
 He installed his son Vishwamitra on his throne and intended to leave
 the world. The subjects humbly asked him not to go to forests, but
 to remain there to protect them from danger. But Gadhi said that
 his son Vishwamitra would be their refuge 15. Having said this,
 Gadhi left the kingdom to his son and went to heaven. Vishwamitra

जनमेजय उवाच । कथमाष्टिषेणो भगवान् विपुलं तप्तधौतपः । सिन्धुद्वीपः कथं
 चापि ब्राह्मणं लब्धवान्वा ॥ १ ॥ देवापिश्च कथं ब्रह्मन् विश्वामित्रश्च सत्तम ।
 तन्ममाचक्ष्व भगवन् परं कौतूहलं हि मे ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । पुरा कृतयुगे
 राज्ञाः आष्टिषेणो द्विजोत्तमः । वसन् गुरुकुले नित्यं नित्यमध्ययने रतः ॥ ३ ॥ तस्य
 राजन् गुरुकुले वसतो नित्यमेव ह । समाप्तिं नागमाद्विद्या न पि वेदा विशाम्पते ॥ ४ ॥
 स निर्विघ्नस्ततो राजंस्तपस्त्रये महातया । ततो वै तपसा तेन प्राप्त वेदानुत्तमान् ॥ ५ ॥
 स विद्वान् वेदयुक्तश्च सिद्धश्चाप्यपिसत्तमः । तत्र तीर्थं वरान् प्रादात्प्रानेव
 सुमहातया ॥ ६ ॥ अग्निंस्तीर्थं महानद्या अद्य प्रभृति मानवः । आश्रुतो
 वाजिमेषस्य फलं प्राप्स्यति पुष्कलम् ॥ ७ ॥ अद्यप्रभृति नैवात्र मयं
 व्यालान्द्रुचिष्यति । अग्निं चाल्पेन यस्त्रेण फलं प्राप्स्यति पुष्कलम् ॥ ८ ॥ एवमुक्त्वा

अध्याय ४० ॥

जनमेजयने पूजा किं भगवान् आष्टिषेण ने किस प्रकारसे बड़ी तपस्याको
 किया और सिन्धुद्वीप देवापी और विश्वामित्र ने किस प्रकार ब्राह्मण वर्ण को
 पाया हे भगवन वह सम मुझसे कहो क्योंकि मुझको सुननेका बड़ा उत्साह है
 । २ । वैशम्पायन बोले हे राजा पूर्व सतयुग में द्विजों में भ्रष्ट आष्टिषेण सदैव
 वेदपाठ में प्रीति रखनेवाले सदा गुरुकुलमें ही निवास करते रहे । ३ । सदैव गुरु
 कुलमें निवास करने परभी उस राजकापि की विद्या और वेदोंने सम्पूर्णताकी
 नहीं पाया । ४ । उसके पीछे उस व्याकुल चित्त तपस्वी ने बड़े तप को तपा तब
 उस तपकेद्वारायदों को पाकर । ५ । उस बुद्धिमान वेदज्ञ सिद्ध ऋषियों में भ्रष्ट
 बड़े तपस्वीने उस तीर्थ के अर्थ यह तीन बरदिये । ६ । अर्थात् अश्वसुं लेकर इस
 महानदीके तीर्थ में स्नान करनेवाला मनुष्य अश्वमेधके बड़े फलको पावेगा । ७ ।
 और भवसे लेकर यहां सर्प से किसीको भय नहींहीगा और थोड़ेही समय में
 उत्तम फलको पावेगा । ८ । बड़े तेजस्वी मुनि इस प्रकार कहकर स्वर्गकोगये वह

CHAPTER XL

Janamejaya asked, "How'd Arishtison perform a severe asceticism and how were Sindhu-dwip, Devapi and Vishwamitra turned into Brahmans? Pray tell me all this Brhman, for I am very anxious to hear it." Vaishampayan said, "In the days of Satyug, Arishtison passed his whole life at Gurukul in reading the Vedas, but his course was not complete. Then he performed a severe asceticism and acquired a knowledge of the Vedas. That great and learned ascetic granted three boons to the holy place, namely: he who bathes in the holy Mahanadi, will gain the merit of performing Ashwamedh sacrifice; people visiting it will have no fear from snakes and will gain the fruit

महातेजा जगाम त्रिदिव मुनि । १५ सिद्ध. स भगवानार्ष्टिपेण प्रतापवान् ॥ १ ॥
 तस्मिन्नेव तद्गा तीर्थे सिन्धुद्वीप प्रतापवान् । देवापिश्च महाराज ब्राह्मण्यं प्रागतुर्म
 इत् ॥ १० ॥ तथा च कौशिकस्नात तपोनिन्यो जितेन्द्रिय । तपसा ये सुनतन ब्राह्म
 णत्वमवाप्तवान् । ११ । गाधिर्नाम महानासीत् क्षत्रिय प्रथितो मुचि । तस्य पुत्रोऽम
 वद्राजन् विश्वामित्र प्रतापवान् ॥ १२ ॥ स राजा कौशिकस्नात महायोग्यभवत्
 क्लि । स पुत्रमपि विद्याय विश्वामित्र महातपा ॥ १३ ॥ वेहन्यासे मनश्चक्रे तमूचु
 प्रणता प्रजा । न गन्तव्य महाप्राज्ञ ब्रह्मि चास्मान् महाभयात् ॥ १४ ॥ एवमुक्त्व. प्र-यु
 वाच ततो गाधि प्रजास्तत । विश्वस्य जगतो गोपा भविष्यति स्तो मम ॥ १५ ॥
 इत्युक्त्वा तु ततो गाधिविश्वामित्र निवेश्य च । जगाम त्रिदिव राजन् विश्वामित्रो
 भवन्तुप । न भक्तोति पृथिवी यत्नवानपि रक्षितुम ॥ १६ ॥ तत शुश्राव राजा
 स राक्षसेभ्यो महाभयम् । निययौ नगराञ्चापि क्षतुर्द्वचलान्वित ॥ १७ ॥ स यात्वा
 भगवान् प्रतापवान् आर्ष्टिपेण इत प्रकार से सिद्ध हुये । १५ । महाराज तब उस तीर्थ में
 प्रतापवान् सिन्धुद्वीप और देवापीने बड़े ब्राह्मण भावको पाया । १० । हेनात उसी
 प्रकार सदैव तप करनेवाले जितेन्द्री विश्वामित्रने अच्छे प्रकार से तपहुये तपकेद्वारा
 ब्राह्मण वर्णको पाया । ११ । एकगाधिनाम क्षत्री इत पृथ्वापर बड़ा विश्र्वात
 हुआ उसका पुत्र विश्वामित्रभी बड़ा प्रतापवान् हुआ । १२ । हे तात निश्चयकरके
 वह राजा कौशिक बड़ा बुद्धिमान और प्रज्ञहुया उस बड़े तपस्वाने विश्वामित्र
 न म पुत्रको राज्य पर अभिपेश कराके । १३ । शरीर त्यागमें चित्तको मृत्त कि १४
 तब हाथजोड़कर प्रजालोगोंने उससे कहा कि हे बड़े ज्ञानी आपको वन म न ज ना
 चाहिये हमको आप बड़े भयसे रक्षाकरो । १४ । इसके पीछे इत प्रकार से प्रजा
 के वचनके सुनकर गाधिने प्रजालोगों को उत्तर दिया कि मेरा पुत्र संसार
 भरेका रक्षकहोगा । १५ । हेराजा राजागाधि ऐसा वचन कहकर और विश्वामित्र
 को राज्यसिंहासन पर बैठाकर स्वर्गको गया और विश्वामित्र राजा हुये विश्व
 मित्र भी अनेक उपायों से पृथ्वी की रक्षाकरनेको समर्थ नहीं हुआ । १६ । इम

of their work in a very short time. Having said this the glorious
 man went to heaven. Then glorious Sindh dwip and Devapi became
 Brahmana. 10 Similarly, Vishwamitra who had control over his
 organs became a Brahman by means of asceticism. He was the son
 of a famous kshatrya named Gadhi, who was very wise and learned.
 He installed his son Vishwamitra on his throne and intended to leave
 the world. The subjects humbly asked him not to go to forests, but
 to remain there to protect them from danger. But Gadhi said that
 his son Vishwamitra would be their refuge. 15 Having said this,
 Gadhi left the kingdom to his son and went to heaven. Vishwamitra

तपसा तु तथा युक्त विश्वामित्रं पितामहः । अमन्यत महाजोषा धरदो धरमस्य तत् ॥ २७ ॥ स तु वने वरं राजन् स्यान्नहं ब्राह्मणस्त्विति । तद्यति चाश्रयीदब्रह्मा सर्वतोऽपितामह । २८ ॥ स लब्ध्वा तपसोऽग्रं ब्राह्मणत्वं महापथः । विचचार महीं इतरा कृतकाम सुगोपसः ॥ २९ ॥ नस्मिन्मर्त्याय वरे राम प्रदाय धिषिषे धम् । पचस्विनीस्तथा धेनुयानानि शयनानि च ॥ ३० ॥ अथ ब्रह्माण्डलङ्कार भक्ष्य पेयञ्च शोभनम् । अद् दन्मुद्रितो राजन् पूजयित्वा द्विजोत्तमान् ॥ ३१ ॥ यथै राजस्ततो रामो वक्रस्याथममृतिकात् । यत्र तैरे तपस्वीत्र वृक्षयो षक इति श्रुत । ३२ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि मारस्वततीर्थोपाख्याने चत्वारिंशोऽध्यायः ॥ ४८ ॥



तेजसे सूर्यके समान हुआ । २६ । तब बड़े बरदाता ब्रह्माजीने इस प्रकार तपमें प्रवृत्त विश्वामित्र को और उसके उत्तम तपको स्वीकार किया । २७ । और मांगनेकी आज्ञाकरी तब उसने यह बरमागा कि मैं ब्राह्मण होजाऊँ उस समय सब लेकों के पितामह ब्रह्माजी बोले कि ऐसाही होय । २८ । वह बड़ा यशवान बड़ी तपस्यासे ब्राह्मण वर्ण को पाकर अभीष्ट सिद्ध करनेवाला देवताओंके समान होकर सब पृथ्वीपर घूमा । २९ । बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर बहुत प्रकारका धनदेकर दुग्धवती गौ सवारी बल्ल भूषण भक्ष्य भोज्य और पानकी वस्तु यह सब दान की है राजा इस प्रकार से बलदेवजी उन उत्तम ब्राह्मणा को पूजकर समीपही उस वक्रके आश्रमको गये जहां पर दालभोवकने कठिन तपस्याको कियाथा यह सुना जाता है ३२ ॥



Brahmavata and lives on water, air and leaves of plants and slept in open air. He observed severe vows. The gods stood in his way but could not succeed and Vishwamitra became glorious like the sun. Brahma approved his asceticism and ordered him to ask boons. He asked the rank of Brahmanhood and Brahma granted his request. He became a Brahman by his asceticism and roamed on earth like a god. Baldev gave there cows, conveyances, clothes, ornaments and food and proceeded to the neighbouring hermitage of Vash, where we hear that Dalbhovak had performed a severe asceticism." 32.

दूमध्वाने वशिष्ठाश्रममभ्ययात् । तस्य ते त्रैलोक्ये राज्ञश्चकुस्तत्रानयान् धहून् । १८ ॥
 तनस्तु भगवान् निप्रो वशिष्ठाश्रममभ्ययात् । दृश्येद्यतत सर्वे भज्यमाने महाबनम् ॥ १९ ॥ तस्य कुक्षो महाराज वशिष्ठो मुनिसत्तमः । सृजस्व शश्वरान् घोरानिति स्त्रीं
 गामुवाच ह ॥ २० ॥ तथोक्ता सासृजअनुः पुरुगान् घोरदर्शनान् । ते च तद्वनमासाद्य
 धमञ्जु सर्वनोदिशम् ॥ २१ ॥ तच्छ्रुत्वा विद्रुत सैन्यं विद्वामित्रस्तु गाधिजः । तपः
 परमन्यमानस्तपस्तेषु मनो दधे ॥ २२ ॥ सोऽस्मिन्तीर्थधरे राजन् सरस्वत्याः समा
 हित । नियमैश्चोपवासैश्च कर्षयन् देहमात्मनः ॥ २३ ॥ जलाहारो वायुभक्ष्यः पर्णाहारश्च
 सोऽभवत् । तथा स्य डलशायी च मे चान्द्रे नियमाः पृथक् ॥ २४ ॥ असकृत्तस्य
 देवास्तु ब्रह्मविष्णुं प्रचक्रिरे । न चास्य निषमाद्बुद्धिरपयाति कदाचन ॥ २५ ॥ ततः
 परेण यत्नेन तपसा घर्षुष्वच तप । तेजसा भास्वगे गाधिजः समपद्यत ॥ २६ ॥

के पीछे उम राजाने राक्षसोंसे बड़े भयको सुना आर चतुरंगिणी सेना समेत नगर
 से निकला । १७ । और बहुत दूर मार्ग चलकर वशिष्ठजी के आश्रमको गया हे
 राजा वहाँ उरही सेनाके लोगों ने बड़े अन्वाय किये । १८ । तब प्रह्लाजकेपुत्र
 भगवान् ब्राह्मण वशिष्ठजीने मत्र महाबनको टूटा और बिगड़ा देखा । १९ । तब
 उसपर क्रोधयुक्त होकर मुनियों में श्रेष्ठ वशिष्ठजीने अपनी गोते कहा कि घोर
 शत्रुओं को उत्पन्नकर । २० । उनकी आज्ञाने उमगाने घोर दर्शन वाले मनुष्योंको
 उत्पन्न किया उन्होंने विश्वामित्रकी सेनाको पाकर सब दिशाओं में छिन्न भिन्न
 किया । २१ । गाधि के पुत्र विश्वामित्रने उस अपनी भागीहुई सेनाको भागा
 हुआ सुनकर तपको श्रेष्ठ माननेवाले ने तपही में धित्त किया । २२ । हेराजाउस
 सावधानी वश्यापत्र ने सरस्वती के उत्तम तीर्थपर नियम और व्रतकद्वारा अपने
 शरीरको दुर्बल और कृशांग किया । २३ । और जल वायु और पर्वोंका आहार
 करनेवाला हुआ और स्थंडिलशायी अर्थात् मैदान में शयन करनेवाला हुआ
 । २४ । और बहुतसे अनेक पृथक् २ नियमोंको भी वारम्बार किया फिर देवताओं
 ने उसके व्रतका विघ्नकिया परन्तु इस महात्माकी बुद्धि नियम से पृथक्
 नहीं हुई फिर उत्तम उपायों से बहुत प्रकार के तपको करके वह गाधिका पुत्र

was unable to protect his subjects. He heard that the rakshases were making a great havoc and came out of the city with a large army. He went to the hermitage of Vashisth where his soldiers were very unjust. Vashisth the son of Brahma saw his forest destroyed and in anger ordered his cow to produce Shawars. 20 By his order the cow gave birth to dreadful men who dispersed Vishwamitra's army. Vishwamitra saw that his army was routed by the power of asceticism and thinking that it was the best thing, made up his mind to engage in asceticism. He made his body lean in penances at the bank of the

तपसा तु तथा युक्तं विश्वामित्रं पितामहः : कर्मण्यत महोज्ञा धरदो धरमस्य तत्
 ॥ २७ ॥ स तु धर्मो धरं राजन् स्यामहं ब्राह्मणस्त्विदं । नर्धति चाश्रयीदब्रह्मा सर्वलो-
 पितामह । २८ ॥ स लब्ध्वा तपसांश्रेण ब्राह्मणत्वं महायशः । विचचार महीं वृत्तता
 कृतकाम सुगोपमः ॥ २९ ॥ अस्मिन् र्हायिं वरे राम प्रदाय धिर्विधं वसु । पवस्विर्नास्तथा
 धेनुयानानि शयनानि च ॥ ३० ॥ अथ ब्रह्माण्डलङ्कारं भक्ष्य पेयञ्च शोभनम् । अद्
 वग्नुदितो राजन् पूजयित्वा द्विजोत्तमान् ॥ ३१ ॥ ययौ राजंस्ततो रामा वक्रस्याधन
 मण्डिकात् । पत्र ते तपस्वीन्न वक्ष्यो वक्र इति श्रुतः ॥ ३२ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि मारस्वतनीर्योपाख्याने चत्वारिंशोऽध्यायः ॥



तेजसे मूर्पके समान हुआ । २९। तब बड़े बरदाना ब्रह्माजीने इस प्रकार तपमें मत्त
 विश्वामित्र को और उमके उधम तपको स्वीकार किया । २७। और मांगनेकी
 आज्ञाकरी तब उसने यह बरपागा कि मैं ब्राह्मण होजाऊ उस समय सब लोकों
 के पितामह ब्रह्माजी बोले कि ऐसाही होय । २८। वह वड़ा यशवान बड़ी तपस्यासे
 ब्राह्मण वर्ण को पाकर अभीष्ट सिद्धि करनेवाला देवताओंके समान होकर सब
 पृथ्वीपर घूमा । २९। बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर बहुत प्रकारका धनदेकर
 दुग्धवती गौ सवारी वस्त्र भूषण भक्ष्य भोज्य और पानकी वस्तु यह सब दान
 कीं हे राजा इन प्रकार से बलदेवजी उन उत्तम ब्राह्मणा की पूजकर समीपही
 उस वक्रके आश्रमको गये जहाँ पर दाल्भोवकने कठिन तपस्याको कियाथा यह
 सुना जाता है ३२ ॥

Brahmawati and lived on water, air and leaves of plants and slept in open air. He observed severe vows. The gods stood in his way but could not succeed and Vishwamitra became glorious like the sun. Brahma approved his asceticism and ordered him to ask boons. He asked the rank of Brahmanhood and Brahma granted his request. He became a Brahman by his asceticism and roamed on earth like a god. Baldev gave there cows, conveyances, clothes, ornaments and food and proceeded to the neighbouring hermitage of Vakra, where we hear that Dalbhovak had performed a severe asceticism." 32.

वैशम्पायन उवाच । ब्रह्मघोषैर्घातार्कणं जगत्तमं यदुनन्दन । यत्र दाल्भ्यो वक्रो
 राजनाथमस्थो महातपा ॥ १ ॥ जुहाप धृतराष्ट्रस्य राष्ट्रं वैचित्रवीर्यिण ॥ तपसा
 घोररूपेण कर्षयत् देहमात्मनः । ऋषेण महताष्टिं घर्मात्मा वै प्रतापवान् ॥ २ ॥
 पुरा हि नैमिषीयाणां सत्रे द्वादशवार्षिके । वृत्ते विदर्भाजितोत्ते वै पाञ्चालानृपयोगमन्
 । ३ ॥ तत्र प्रहरमया च त दक्षिणार्थं मनीषिणः । चलान्वितान् घत्सतराष्ट्रिभ्योऽपिनेक
 विंशतिम् ॥ ४ ॥ तानब्रवीद्वक्रो दाल्भ्यो विभज्य पशुनिति । पशुनेतानह त्यक्त्वा
 निक्षिप्ये राजसत्तमम् ॥ ५ ॥ एवमुक्त्वा ततो राज-नृपान् सर्वान् प्रतापवान् । जगाम
 धूमराष्टस्य भवनं ब्राह्मणोत्तमम् ॥ ६ ॥ स समीपगतो भूत्वा धृतराष्ट्रं जनेश्वरम् । अया
 चत पशून् दाल्भ्य स जैन रुषितो ब्रवीत् ॥ ७ ॥ यदृच्छया मृतान् दृष्ट्वा गाहस्तदान्
 पसत्तम । एतान् पशून्तय क्षिप्रं ब्रह्मघोषो यकीच्छसि ॥ ८ ॥ श्रुत्वा पश्येत्स यश्च यत्त्वा

अध्याय ४१ ॥

वैशम्पायनजी बोले कि यदुनन्दन बलदेवजी उस ब्रह्मयोनि तीर्थ से संयुक्त
 तीर्थको गये जहापर अपने आश्रममें नियत बड़े तपस्वी दाल्भोवकने विचित्र
 वीर्यके पत्र धृतराष्ट्र के देशको इवन किया और घोररूप तपसे अपने शरीरको
 दुर्बल करता धर्मात्मा प्रतापवान् बड़े क्रोधसे पूर्ण हुआ । २ । पूर्वसमय में नैमिष
 निवासियों का बारहवर्ष का यज्ञ समाप्त होनेपर विश्वाचिते यज्ञ के अन्त में ऋषि
 लोग पांचाल देशों में गये । ३ । उन ज्ञानी ऋषियों ने वहापर दक्षिणके निमित्त
 राजासे याचना करी उस राजा केवलवान् न्यून अवस्था और नरोग इक्कीस
 गौओं को दिया । ४ । दाल्भोवक उनमें बोले कि पशुओं को विभाग करो
 मैं इन पशुओं को छोड़कर उस उत्तम राजा से भिक्षा मांगूंगा । ५ । हे शजाम्राज्यों
 मैं श्रेष्ठ प्रतापवान् दाल्भोवक सब ऋषियों से इस प्रकार कहकर धृतराष्ट्र के
 भवनको गये । ६ । और राजा धृतराष्ट्रके सम्मुख जाकर उससे पशुओंको मांगा । ७ ।
 तब उस श्रेष्ठ राजाने दैवयोगमें गौ बैलों को मृतक देखकर बड़े क्रोधपूर्वक उन

CHAPTER XII

Vaishampayan said, "From Balmicyan Baldev went to Samyukt where the great ascetic Dalbhovak had given libations of the country of Dhritrashtra and made his body an anager. At the close of the twenty years' sacrifice, the ascetics of Naimish went to the country of the Panchala. There they asked of the king for some donation. He gave them twentyone young, strong and healthy cows Dalbhovak left his share of the cows to be distributed among his companions and intended to ask for himself of some other king. O Glorious Dalbhovak then went to the palace of Dhritrashtra and begged for some beasts. The king, as Fate would have it was chagrined at the death of some

विश्राममास धर्मवित् । अहो वत नृशस त्रै वाङ्मयमुक्तोऽस्मि ससदि ॥ ९ ॥ चिन्त
 त्रित्वा मुहूर्त्त-तु रोषाविष्टो द्विजोत्तम । मतिश्चक्रे विनाशाय घृतराष्ट्रस्य भूपत
 ॥ १० ॥ स तूक्तय मृतानां वै मासानि मुनिसत्तम । जुहाव घृतराष्ट्रस्य राष्ट्र नरपते,
 पुरा । अवकीर्णं सरस्वत्यास्तीर्थं प्रज्वाल्य पावकम् ॥ ११ ॥ वदत दास्यो महाराज
 निग्रम परमास्थित । स तैरेव जुहावास्य राष्ट्र मासैर्महातपा ॥ १२ ॥ तस्मिंस्तु विधि
 बहू लभे सप्रवृत्ते सुदाकेण । अक्षीयत ततो राष्ट्र घृतराष्ट्रस्य पापिव ॥ १३ ॥ तत्
 प्रक्षीयमाणान्तराष्ट्र-स्य महीपते । छिद्यमान यथान्त वत् परधुना चिनो । वभूवा
 पद्गत तद्वच व्यपकीर्णमवेततम् । १४ । दृष्टा तपावकीर्ण-तु राष्ट्र स प्रजुञ्जविप्र ।
 वसूव दुर्मना राजवि-तयामास च प्रभु ॥ १५ ॥ मोक्षार्थमकटादृयज्ज ब्राह्मणे, सहित,
 पुरा । तत्र श्रेयोऽप्यगुरु स क्षीयते राष्ट्रमेव च ॥ १६ ॥ यदा स पापिव क्षिण्यते

से कहा है ब्रह्मवन्धो जो तू चाइताई तो इनपशुओंको शीघ्र लेनाओ ८। तव धर्मज्ञ
 ऋषिने उस प्रकार के वचनको धुनकर बड़ी चिन्ताकरी कि वड़े इज्जती बात है
 कि इसने मुझको सभा में ऐसे निर्दय और अनादरता के वचन कहे । १। तव क्रोध
 से पूर्ण उस श्रेष्ठ ब्राह्मणने एक मुहूर्त्तभर चिन्ता करके राजा घृतराष्ट्रके नाश
 करनेका विचार किया । २० । पूर्वसमय में उस श्रेष्ठ मुनिने मृतक पशुओं के
 मासको काटकर राजाघृतराष्ट्रके देशको इवन करादिया सरस्वती के अवकीर्ण
 तीर्थ में अग्निको प्रज्वालित करके । ११ । वह बड़ा तपस्वी दास्योवक्त्रु
 निग्रम में नियत हुआ और उन पापखण्डों से उसके देशको होमा । १२ । हे
 राजा इसके पीछे विधिके अनुसार उस भयानक यज्ञके जारी होनेपर घृतराष्ट्रका
 देश नाशको प्राप्त हुआ । १३ । और राजाका वह राज्य ऐसा अत्यन्त नाश हुआ
 जैसे कि फरसेसे कटा हुआ बढावन होता है वह सब देश सदा आपात्ति में
 नाशयुक्त होकर अचेत होगया । १४ । हे राजा वह राजा-अपने देशको इस प्रकार
 नाशयुक्त देकर महाबु ली चित्त हुआ और बड़ी चिन्ता से युक्त होकर । १५ । ब्रह्म
 ने ब्राह्मणों समेत राज्य के आपत्तिसे वचनके अनेक उपायकिये परन्तु-कन्याण

of his cattle and in his rage offered the fish, their dead bodies. The
 good rishi was for some time lost in meditation and was disgusted at
 the cruel insult of the king. Then he thought of ruining the kingdom
 of Dhritrashtra. He cut off the bodies of those dead beasts and pour
 ed libations of them over fire to ruin the country. He kept his fire
 burning at Arka on the bank of the Saraswati and fed it with the
 pieces of flesh. At the commencement of that dreadful sacrifice, the
 country was destroyed like a forest cut down by an axe. The people
 lost their senses at that great calamity. The king was much distressed
 at the devastation of his country and contrived many plans to save
 it from ruin, but his attempts all failed. He inquired of the learned

च विप्रास्तदानत्र । यदा चापि न शक्येति राष्ट्रं मोक्षयितुं नृपः ॥१७॥ मय वै प्राधि-
 कास्तत्र पप्रच्छ जनमेजय । ततो यः प्राश्निकाः प्राहुः पशुभिर्मकृतस्त्वया - १८ ॥ मासै-
 रभिक्षुहोतीनि तव राष्ट्रं मुनिर्धकः । तेन ते ह्ययमानस्य राष्ट्रस्यारय स्यात् महान् ॥१९॥
 तस्यैतत्तपसः कर्म येन ते ह्यनयो महान् । भपाकुंजे सरस्वत्यास्तु प्रसाद्य पाथिब
 ॥ २० ॥ सः स्यती ततो गत्वा स राजा षकमग्रधीत् । निपत्य शिरसाः भूमौ प्राञ्जलि-
 म्भरतर्षभ । प्रसाद्ये त्वां भगवन्नपराधं क्षमस्व मे २१ ॥ मदीनस्य लुब्धस्य मौर्वरेण
 इतच्छेतसः । त्वं गतिस्त्वञ्च मे नायः पसाहं कर्तुमर्हसि ॥ २२ ॥ तन्तथाबलः ॥ २३ ॥
 शोकोपहतचेतसम् । हृष्ट्वा तस्य कृपाजरे रष्ट्रं तच्च स्वभो व ॥ २३ ॥ ऋषिः
 प्रसन्नस्तस्यामूर्त्तं सत्समञ्च विहाय सः । मोक्षार्थं तस्य राष्ट्रस्य जुहाय पुनरुदितिम्
 ॥ २४ ॥ मोक्षयित्वा ततो राष्ट्रं प्रतिशूय पशून् बहून् । हृष्टात्मा नैः पारण्यं जगाम
 पतरेव च ॥ २५ ॥ पृ। राष्ट्रोऽपि धर्मात्मा सुस्यवेता महामनाः । स्वमेव तुगतं राजा

को नहीं पाया प्रवीत् देशका नाशहोना वन्द नहीं हुआ । १७। हे निष्पाप जनमेजय
 जब वह राजा समेत सब ब्राह्मण वः (वीहुये तब सवने प्रश्नोके, वतनिर्वालो से
 पूछा उन लोगोंने कहा कि पशुओंके विषयमें तुमसे बनादर किया हुआ । १८। एक
 मुनि गौनों के गाँवों से तेरे देशको होमता है उससे होमैहुये इम, तेरे देश को
 बहानाश होरहा है । १९। यह उसीके तपका बड़ा कर्म है जिससे कि तेरा बड़ा
 नाश है हे राजा सरस्वती के जलकुञ्जमें उमको प्रसन्न करो २०। हे भरतर्षभ इसके
 पीछे उस राजा ने सरस्वती को जाकर हाथने इ शिर से पृथ्वीपर गिरकर उस
 बकमुनि से कहा हे भगवन मैं आपको प्रसन्न करता हूँ परे अपाप को क्षमा
 करो । २१। मुझ दुःखी लोभी और अज्ञानतामे निर्बुद्धीकी तुम गतिशो तुम मेरे
 नाथशो मुझपर कृपाकरने के योग्यशो । २२। इस प्रकार विलाप करनेवाले शोकसे
 निर्बुद्धि उस राजाको देखकर उमके दया उत्पन्न हुई और उम देशके नाश न होने
 के लिये फिर अग्निमें आहुतिदी । २४। इसके पीछे देशको निर्बुद्धनकर बहते पशुओं
 को लेकर प्रसन्न होकर फिर नौमिपारण्यको गये । २५। पार धर्मात्मा सावधान

when the cause of that calamity and was told that the brahman whom
 he had insulted with regard to beasts, was feeding fire with pieces
 of flesh to ruin the country. The king was then advised to please the
 muni who was performing the sacrifice at the bank of the Saraswati.
 20. The king went there and with joined palms falling at the feet of
 the ascetic said, "I beseech you, Bhagwan, pardon my fault commit-
 ted through avarice and ignorance. Have mercy on me, my lord. 22.
 The ruler set money at the whipping of the king and poured more
 libations to save the country from ruin. Having made the country
 free from all calamity, he was gratified with a present of many cattle
 and returned to Naimish. 25. Glorious king Diritrashtro too

मनिपेदे महर्द्धिमत् ॥ २६ ॥ तत्र तीर्थे महाराज बृहस्पतिरुदारधीः । असुराणाममा
 धाय सवाध च द्वितीकसाम् ॥ २७ ॥ मासैरभिजुहावेष्टिमक्षोयन्त तनो सुराः । देवते
 रपि संभगा जितकाशिनिराहव ॥ २८ ॥ तत्राग्निं विधिबद्धत्वा प्राङ्मण्डयो महापथा ।
 धाजिनः कुञ्जरान्श्वेष रथान्श्चाद्वतरीपुनान् ॥ २९ ॥ रत्नानि च महार्हाणि धनं धान्यं च
 पुष्कलम् । यद्यौ तीर्थे महाबाहुर्वायात पृथिवीपते ॥ ३० ॥ यत्र यज्ञं ययातस्तु महाराज
 सरस्वती । सर्पिः पयश्च सुधाव नाहुवस्य महात्मनः ॥ ३१ ॥ तत्रेष्ट्वा पुरुषव्याधौ
 ययातिः पृथिवीपतिः । आक्रामर्द्धं मुदितो लंभे लोकाश्च पुष्कलान् ॥ ३२ ॥ पुनस्तत्र
 च रात्रस्तु ययातिर्यजत प्रभो । अश्वं परमं बद्ध्वा भक्तिञ्चात्मानि शाश्वतीम्
 ददौ कामान् ब्राह्मणेभ्यो यान् यान् यो मनसेच्छति ॥ ३३ ॥ योयत्र स्थित एवेह आहुने
 यज्ञसंस्तरे । तस्य तस्य सरिच्छ्रेष्ठा गृह्णाद्विशयनादिकम् । पशून् भोजनञ्चैव दान
 मानं विधिं तथा ॥ ३४ ॥ ते मन्यमाना रात्रस्तु सम्प्रदानमनन्तम् । राजानं तुष्टुवुः

बड़े माहसी भी बड़े वृद्धिवाले राजाभूतर घने भी अपने नगरको मात्ताकिया २६ हे
 महाराज उमी तीर्थपर बड़े बुद्धिमान बृहस्पतिजी ने अपुरों के नाश और देवताओं
 की वृद्धिके निमित्त मानोंसे यज्ञमें इवनकिया इन्हेतुसे असुरों के नाश और
 देवताओंकी वृद्धिके निमित्त मानोंसे यज्ञमें इवनकिया इन्हेतुसे असुरोंने बिनाशको
 पाया और युद्ध में विजय से शोभायमान देवताओं के हाथ से राक्षस नाशको
 मात्तहुये । २८ । बड़े यशस्वी बलदेवजी वहांभी ब्रह्मणों के अर्थ विधिपूर्वक
 छोटे हाथों और खच्चरों से युक्त रथ बहुमूल्य रत्न और बहुतसे धनधान्यकोदेकर
 फिर महाबाहु बलदेवजी गयाति तीर्थ को गये । २९ । हे पृथ्वी नाथ महाराज वहां
 नहुषके पुत्र महात्मा ययाति के यज्ञ में सरस्वती ने घृत और बृषका बहाया । ३० ।
 सब पृथ्वीका स्वामी पुरुषोत्तम ययाति वहां यज्ञको बरके प्रसन्नता से ऊपर के
 उत्तमलोकोंकोगया और भेष्टलोकों को पाया । ३१ । इसके अनन्तर महाप्रभु राजा
 ययाति के यज्ञ करतेहुये बड़ी उदारता और सनातन भक्तिकी चित्तमें धारण करके
 ब्राह्मणोंको उन उन अभीष्ट वस्तुओंका दानकिया जो २ इच्छाके समान जैसी २
 वस्तुको चाहता था । ३३ । यज्ञरचना में बुलाया हुआ जो २पुरुष वहां निवासीया
 ३४ । पुरुषको उत्त उत्तम नदीने गृहोंसेमेत उत्तम यपनों को दिया पदरम भोजन

returned to his own country. At the same place, Vrihaspati too, had
 fed fire with flesh in order to bring about the ruin of Asura and the
 advancement of gods. Then the asurs were ruined and slain by the
 victorious gods. Baldev gave beasts and jewels at this holy place
 and proceeded to the holy place of Yayati. 30 There Yayati the
 son of Nahush had at his sacrifice poured butter and milk in the Saras
 wati. He ascended to heaven after performing that sacrifice. Yayati
 gave desired objects and wealth to the Brahmans whom he had
 summoned to assist at his sacrifice and gave the people of the lo-

प्रीता इदुश्चैवाशिपुः शुभाः ॥ ३५ ॥ तत्र देवाः सगन्धर्वाः प्रीता यज्ञस्य सम्पदा ।
विस्मिता मानुषाश्चासन् दृष्ट्वा तां यज्ञसम्पदम् ॥ ३६ ॥ ततस्तालोकतुमहाधर्मकमु
महात्मा कृतात्मा महादाननित्यः । वसिष्ठापवाह महाभीमवेगं धृतात्मा जियतात्मा
समभ्याजगाम ॥ ३७ ॥

इति गदापुद्गपर्वणि सारस्वतीपारुष्याने एकवत्सार्शिशिष्यायः ४१ ।

पूर्वक अनेक प्रकार के दानदिने । ३४ । राजाके उत्तमयानकी स्वीकार करनेवाले
उन प्रसन्न-ब्राह्मणाने शुभ-आशीर्वादों को देकर राजाको प्रसन्न किया । ३५ । वहाँ
गंधर्वाँ समेत सब देवता यज्ञके सामानों से प्रसन्नहुये और सन मनुष्य यज्ञकी उस
सामग्री आदिको देखकर आश्चर्यितहुये । ३६ । इसके पीछे तालध्वजापारी बड़े
धर्मध्वज महात्मा शूद्र अन्तःकरण सदैव बड़े दानी साहसी और धैर्यमान बलदेव
जी वसिष्ठजी के उस भयानक वेगवाले तीर्थ को गये ३७ ॥

cality good houses on the bank of the Saraswati and fed them with
delicacies. The Brahmins blessed the king after receiving donations.
The gods and gandharvas were gratified with libations and the
lookerson were amazed at the grand preparations. Then Bildev
virtuous, p'remies', magnanimous and charitable
of the palm, proceeded to visit



अतमेजय उवाच । वशिष्ठस्वापवाहौसौ मीनवेगः कथं नु सः । किमर्थं च सरि
 १ ॥ कथमस्यामवधैर कारण किञ्चत् प्रभो । शंस
 पूषो महाप्राज्ञः न हि तृप्यामि कथयति ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । विश्वामित्रस्य
 वैश्वेर्वशिष्ठस्य च भारत । मृतं वैरमसूद्रार्जं तपस्पर्जाकृतं महत् ॥ ३ ॥ आश्रमो वै
 वशिष्ठस्य स्थाणुतीर्थे भवन्महान् । पूर्वतः पादधृतस्त्वासीद्विश्वामित्रस्य धीमतः ॥ ४ ॥
 वैश्वे स्थाणुमहाराज तप्तवान् सुमहत्तपः । पत्रास्य कर्म तद्घोरं प्रवृद्धं त्रिभुविष
 ॥ ५ ॥ यत्रेष्टुषा भगवान् स्थाणुं पूजयित्वा सरस्वतीयः । स्थापयायास तत्तीर्थं स्थाणु
 तीर्थमिति प्रभो ॥ ६ ॥ तत्र तीर्थे सुराः स्कन्दमय्यपिञ्जनराशिषः । सेनापत्येण महता
 सुरारिधिनिघहणम् ॥ ७ ॥ तस्मिन् सारस्वते तीर्थे विश्वामित्रो महाभुवि । वशिष्ठ
 आश्रमात्स तपस्येण तच्छणुः ॥ ८ ॥ विश्वामित्रवशिष्ठौ तावद्वन्द्वनि भारत । स्वर्जा

अध्याय ४२ ॥

जनमेजय बोले कि यह वशिष्ठजीका अश्रवाह नाम तीर्थ जो भयानक वेग
 वाला है वह कैसे हुआ और उस उत्तम नदीने उसको कैसे बहाया । १ । उसकी शत्रुता
 कैसे हुई हे प्रभु उसका क्या हेतु है हे बड़े ज्ञानी आप मुझसे वर्णन कीजिये मैं उसके
 सुननेसे तृप्त नहीं होता हूँ । २ । वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी राजा जनमेजय
 ब्रह्मर्षि वशिष्ठ और विश्वामित्र के तपकी ईर्ष्या से उत्पन्न होनेवाली बड़ी शत्रुता
 हुई । ३ । शिवजी के तीर्थ पर वशिष्ठजी का बड़ा आश्रम हुआ और पूर्वी पक्ष
 में बुद्धिमान विश्वामित्रका आश्रम हुआ । ४ । हे महाराज जहाँपर शिवजीने उत्तम
 तपको तपाया वहाँही ज्ञानीलोग इसके घोर कर्मको कहते हैं । ५ । हे प्रभु
 जहाँपर प्रभु शिवजीने यज्ञ करके सरस्वतीका पूजन कर स्थाणुनाम से मातृ
 उस तीर्थको नियत किया । ६ । हे राजा देवताओंने जिस तीर्थपर अशुरोंके मारने
 वाले स्वामिकार्तिकजी को देवताओं के सेनापति के अधिकारपर अभिरुक्त कराया
 । ७ । इस सारस्वतीतीर्थ में विश्वामित्र पशुमानि ने उग्रतप के द्वारा वामेष्ठजी को

CHAPTER XLII

Janmejaya said, "How Aprvah of great velocity became the holy place of Vashishth? How did the river carry him? What was the cause of his enmity? Pray tell me all this, I am not yet satisfied with hearing it." Vaishampayan said, "The enmity between Vashishth and Vishwamitra arose out of their envy of each other's asceticism. Vashishth's hermitage was Shiva's holy place, while that of Vishwamitra was on the eastern wing. The dreadful deed took place where Shiv had performed asceticism 5. It was the place called Sthanu on account of the sacrifice of Shiv and where the god had made Kartik their leader Vishwamitra brought his rival Vashishth there by

तपः कृतां तीप्तो चक्रनुत्तौ तपोधनौ । १९ ॥ तत्राप्यधिकं सन्तप्तो विश्वामित्रो महामुनिः ।
 इष्ट्वा तेजो वाशष्ठस्व'चिन्तामभिजगाम ह ॥ २० ॥ तस्य बुद्धिरियं ह्यासीद्भर्मनिःस्पृह
 भारत । इष'सरस्वती नृप्यं मरुत्तमीपं तपोधनम् ॥ ११ ॥ आनयिष्यति वनेन वशिष्ठं
 जपताम्बरम् । इहागतं द्विजश्रेष्ठं ह्यनिष्यामि न सशयम् । १२ ॥ एवं निश्चित्य मगधान्
 विश्वामित्रो महामुनिः । सस्मार सरितां श्रेष्ठां क्रोधमाकूलोचनः ॥ १३ ॥ सा इयाता
 मुनिना तेन व्याकुलत्वा जगाम ह । जज्ञे चैनं महाधीर्यं महाकोपञ्च भाविनी ॥ १४ ॥
 नत एन वेपमाणा विवर्णा प्राञ्जलिलिङ्गा । उपनश्ये मुनिपदं विश्वामित्रं सारस्वती
 ॥ १५ ॥ हनवीरा यथा नारी सामघद्वृत्ता मृक्षम् । ब्रूहि किं करधानीति प्रोवाच
 मुनिसत्तम ॥ १६ ॥ तामुवाच मुनि कुञ्जो वशिष्ठं शीघ्रमानय । यावदेतं निहस्यथ
 तच्छू वा व्यथिता नदी ॥ १७ ॥ साञ्जलिन्तु तत कृत्वा पुण्डरीकनिभेक्षणम् । प्राकम्पत

चक्षायमानं क्रिया । ८ । हे भरतवंशी उन तपोधन वसिष्ठजी और विश्वामित्र
 जीने तपके कारण से उत्पन्न होनेवाली कठिन ईर्ष्याको प्रतिदिन किया । ९ । वहाँ
 भी अत्यन्त दुःखी महामुनि विश्वामित्रने वशिष्ठजी के तेजको देखकर बड़ी चिन्ता
 को पाया । १० । हे भरतवंशी तब सदैव धर्मपर चलनेवाले उस विश्वामित्र की
 यह मति हुई कि यह सरस्वती शीघ्रही उस तपोधन । ११ । और जपकरनेवालोंमें
 श्रेष्ठ वसिष्ठजीको मेरे सम्मुख लावेगी यहाँ जब आयेगे तब उस आयेहुये उत्तम
 ब्राह्मण को निस्सन्देह मारूंगा । १२ । इस प्रकार उस महामुने क्रोध से रक्तनेत्र
 विश्वामित्रने निश्चय करके नदियों में श्रेष्ठ सरस्वती को स्मरण किया । १३ । उस
 मुनिके आन करतेही उस प्रकाशमान सरस्वती ने बड़ी व्याकुलता को पाया
 और डबावड़े पाकामा, विश्वामित्रको बड़ा क्रोधयुक्त जाना । १४ । तब इसकेपीछे
 कम्पापमान रूपान्तर्पुत्र हाथजोड़कर सरस्वती इस मुनियों में श्रेष्ठ विश्वामित्रके
 सम्मुख खड़ी हुई । १५ । और और जैसे कि मृगक वीरोंवाली स्त्री होती है वसी
 प्रकार वह सरस्वतीभी अत्यन्त दुःखीहुई और उस श्रेष्ठ मुनिसे बोली कि कहोवया
 आश है । १६ । तब क्रोधयुक्त मुनि उससे बोले कि मैं वसिष्ठजी को मारूंगाइससे

means of the Saraswati, for Vishwamitra was much careworn on
 account of the envy which he felt on account of the greatness of
 Vashishth 10. Vishwamitra desired that Saraswati should bring
 Vashishth and then he intended to slay him. Thus with red eyes,
 Vishwamitra invoked Saraswati. She was much distressed in her
 mind on account of Vishwamitra's anger. But she came before him
 with joined hands 15 She came to him like the widow of a warrior
 slain and said, " What is your wish? " The enraged muni told her
 that he intended to slay Vashishth and that she should bring him.
 At this she shook with fear like a creeper shaken by the wind, but
 the muni ordered her to do his bidding without hesitation 16 She was

भूश भिता वायुनेवाहता लता । १८ । तथा कृपान्तु तां हृष्ट्वा मुनिराह महानदीम्
 भविष्याः वशिष्ठश्चमानयस्वान्तिकं मय । १९ । सा तस्य वचनं धृष्ट्या ज्ञात्वा पापं शि-
 र्षितम् । वशिष्ठस्य प्रभाषच्च जानन्त्यप्रतिमं मुनि । २० ॥ साशिम्य वशिष्ठन्तमि-
 र्धमचोदयत् ययुक्ता सरिताश्रया विद्वामिनेषु धीमता ॥ २१ ॥ उभयाः शापयो-
 भितां वेपमाना पुनः पुनः । चिन्तयित्वा महाशापमृषिविप्रासिता भूशम् । २२ । तां
 कृशाच्च विद्वान्पुत्रं हृष्ट्वा चिन्तासर्जिताम् । उवाच राजन् धर्मात्मा वशिष्ठो
 द्विपदांश्चरः । २३ ॥ वशिष्ठ उवाच । पाह्यारमान सगिच्छेष्टे दह गं शीघ्रगामिनी ।
 विद्वामित्रः शपोऽत्रैवा मा कृपास्व चिन्ता रणाम् । २४ । तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कृपा-
 त्कलस्य सा स्मरित् । चिन्तयामास कौरव्य किं कृत्वा सुकृतं भवेत् ॥ २५ ॥ तस्या-
 शिन्ता समुत्पन्ना वशिष्ठो मयप्रतीवहि । वृत्तवान् हि दया नित्यं तस्य कार्थ्यं हित-
 मया ॥ २६ ॥ मय कृते स्वके राजन् जपन्तमृषिसत्तम जहृषान कौशिक प्रेक्ष्य सरस्वत्य-
 तुष शीघ्र उनको लाओ यह वचन सुनकर वह नदी बड़ी पीड़ामान हुई । २७ । वह
 कपललोचन अत्यन्त भयभीत हाथजोड़कर ऐसे कम्पानहुई जैसे कि वायु से
 ताड़ित सता होती है । २८ । तब वह मुनि उस प्रकारके रूपवाली नदीमें बोले
 कि तुम बिना विचार के वशिष्ठजी को भरे पाग लाओ २९ । वह उनके वचनको
 सुनकर और पप करनेकी इच्छा जानकर पृथ्वीपर वशिष्ठजी के अतुल प्रभार
 को जनतीहुई । ३० । उस सरस्वतीन वशिष्ठजी के पास जाकर इननातको कह
 दिया नदियों में भेष्ट सरस्वती से बुद्धिमान विश्वामित्रन जा कहाथा । ३१ । उसमें
 और वशिष्ठजीके शपथमें भयभीत और वारम्बार कम्पायमान महाशाप को निचर
 कर श्रुति से अत्यन्त भयभीतथी । ३२ । हेराजा द्विपादोंमेंश्रेष्ठ धर्मात्मा वशिष्ठजी
 उस दुबल विपरीत रूपांतर किसे चिन्तासे युक्त सरस्वतीको देखकर यहवचनबोले
 कि हे नदियों में भेष्ट शीघ्रगामिनी तू अपनी रक्षाकर और मुझको शीघ्रबेचल नहीं
 तो विद्वामित्र तुझको शापदेगा इतम तू विचार मनकर । ३३ । हे कौरवन्वतो
 उम नदीने इनकरुणाध्याती वशिष्ठजी के वचनोंको सुनकर चिन्ता करी कि
 कौनसी शक्ति और उपाय से भूभक्तमहोय । ३४ । उसको यह चिन्ता उत्पन्नहुई कि
 वशिष्ठजीने मुझपर सदैव दयाकरी है मुझको इनका हितरुग्ना योग्य है । ३५ । हे

much afraid of Va-jishth because she knew his greatness 20 She went to him and told him all that she was required to do She was much afraid of the curse of both the rishis. Seeing her shake with fear, Vashissth said, "Think of your own safety and take me to Vishwamitra or he will curse you" At this she thought how to accomplish the deed in the best way. 25 She was all the while thinking of how to requite Vashissth's former kindness to her Yet she was afraid of Vishwamitra's anger Then she broke the bank by

व्यचिन्तयत् । २७ । इदमन्तरमित्येव ततः सा सरिताम्बरा । कुलापहारमकरोत् स्वैमु
 वेगेन सा सरित् ॥ २८ ॥ तेन कूलापहारेण मैत्रावशणिरीह्यत । उह्यमानः स तुष्टाष्ट
 तया राजन् सरस्वतीम् ॥ २९ ॥ पितामहस्य सरसः प्रवृत्तासि सरस्वती । न्यातश्चन्द्र
 जगत् सर्वं यथैषान्मेभिरुत्तमैः ॥ ३० ॥ त्वमेपाकाशुगा देवी मेघेषुत्सृजसे पयः । सर्वो
 भ्यासस्त्रमेवेति त्वसो वयमधीमहि ॥ ३१ ॥ पुष्टिर्द्युतिस्तथाकीर्त्तिः । सिद्धिर्बुद्धिर्दया तथा
 ऋषेव सर्वभूतेषु बलसीद चतुर्विधा ॥ ३२ ॥ पयं सरस्वती राजंस्त्यमाना; महर्षिणा ।
 वेगेनोवाह तं पित्रं दिश्वामित्राश्रमं प्रति । न्यवेदयत् चामोक्षणं चिद्वामित्राय तं मुनिम्
 ॥ ३३ ॥ तथानीतं सरस्वत्या हृष्ट्वा कोपसमन्वितः । कथाश्रैपत्प्रहरणं वशिष्ठान्तकं
 तदा ॥ ३४ ॥ तन्तु बुद्धमभिप्रेक्ष्य ब्रह्मवध्याभयाज्जदी । अपोवाह वशिष्ठं तं प्राचीं दिश्व
 मसन्निवत् । उभयोः कुर्वती वाक्यं यच्चयित्वा तु गधिजम् ॥ ३५ ॥ ततोऽपवाहितं हृष्ट्वा

राजा तब सरस्वती ने अपने तटपर जपशोमादिक करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठ
 विश्वामित्र हो देखकर चिन्ताकरी । २७ । कि यह समय है इसके पीछे उस नदियों
 में श्रेष्ठ सरस्वतीने अपने वेगसे किनारेको टटाया । २८ । वशिष्ठजी उसकिनारेके
 टटानेके सवार किंगपे हेराजा तबउस राजपर सवार ऋषिने सरस्वतीकी भर्त्साकरी
 । २९ । कि हे सरस्वती तुम ब्रह्माजीकी नदी सेजारीहुई हो और यह सचसंसार तेरेही
 उत्तम जलोंसे व्याप्त है । ३० । हेदेवी आकाशमें वर्त्तमान होकर तुम्हीं बादलों में
 अमृतको छोड़ती हो और सबजन्मी तुम्हीं हो हम तुमसे वेदोंको पढ़ते हैं । ३१ ।
 तुम्हीं पुष्टि धृतिर्कीर्ति सिद्धि बुद्धि उमा और वाणी होकर तुम्हीं स्वाहाहो यजगत्
 तुम्हारे आधीन है तुम्हीं इन चारों प्रकारके जीवोंमें वासकरती हो । ३२ । हे राजा
 हम प्रकार महर्षि से स्तुत्यमान सरस्वती ने उस ब्राह्मण को वेगसे दिश्वामित्रके
 आश्रम में पहुंचाया और लेजाकर विश्वामित्रसे उनका आना बारम्बार श्योन
 किया । ३३ । तब सरस्वती के लायेहुये उसऋषिको देखकर क्रोधयुक्त विश्वामित्र
 ने वशिष्ठजी के नाश करनेवाले शस्त्रको चाहा । ३४ । सावधान नदीने उस क्रोध

her velocity and carried the piece of land along with Vashisth, who
 much praised her skill, saying "You are born of Brahman's river and
 all the world exists in your waters. 30 You pour forth
 nectar into clouds from heaven and we learn the Vedas
 from you. You are Pushti, Dyuti, Kirti, Sidhi, Budhi, Uma, Vani
 and Swaha and all the world depends upon you. You live in the
 midst of all creatures." Thus praised by him, she took him to the
 hermitage of Vishwamitra and informed him of his coming. Then he
 wished for a weapon to slay him. Afraid of the sin of Brahmicide
 Saraswati carried him further east and thus deceived Vishwamitra of
 his prey. 35. Then Vishwamitra in anger said, "Because you

वशिष्ठमृषिसप्तमन् । अग्रवीरवध सकुटुबो विश्वामित्रो ह्यमर्षण ॥ ३६ ॥ यस्मान्मां त्वं
 सरिच्छ्रेष्ठ वञ्चयित्वा पुनर्गता । शोणित वह कल्पाणि रक्षामासु सम्प्रतम् ॥ ३७ ॥
 ततः सरस्वती शशा विश्वामित्रेण धीमता । अवहच्छोणितोन्मिभ तीर्थ सधन्सर तदा
 ॥ ३८ ॥ अथर्ववज्र देवाश्च गन्धर्वात्सरसस्तथा । सरस्वती तथा वृष्ट्वा बभूवुर्भृंगदु-
 क्षिताः ॥ ३९ ॥ एवं वशिष्ठापवाहो लोके स्यातो जनाधिप । भागच्छक्य पुनर्मां
 स्वमेव सतितां वरा ॥ ४० ॥

इतिगदापुद्गपर्वणि वन्देवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने द्विचत्वारिंशोऽध्याय ४२ ॥

युक्त विश्वामित्रको देखकर ब्रह्महत्या के भय में वशिष्ठजीको पूवादिश की ओर
 बहाया दोनोंके बचनको करनेवाली सरस्वतीने विश्वामित्र को छलकर ऐसा कर्म
 किया ३५। तबअत्यन्त अशान्तचित्त क्रोधयुक्त विश्वामित्रबोले किहे उत्तमनदी
 जैसे तुम मुझको छलकर चलीगई हो इम हेतुमें हे कल्याणिन तम राक्षस
 गणों के स्वीकृत रुधिरको धारणकर। ३७। इसके पीछे बुद्धिमान विश्वामित्रसे
 शायित सरस्वती ने एक वर्षतक रुधिरयुक्त जलका बहाया। ३८। इसके अनन्तर
 ऋषिदेवता अप्सरा और गन्धर्व उतमकारकी सरस्वतीको देखकर अत्यन्त दुःखी
 हुये। ३९। हे राजा इसप्रकार वशिष्ठजीका अपवाह लोकमें मसिद्ध हुआ तब वह
 भेष्ट नदी फिर अपने मार्गको आई ४० ॥

have deceived me, you will have blood for your water." Thus
 blood flowed in her bed for a year, to the great grief of Gandharvas
 and apsaras. Thus the flow of Vishusti was known throughout the
 world and the noble river flowed in her course. 40.



वैशम्पायन उवाच । सा शता तेन क्रुद्धेन विश्वामित्रेण धीमता । तस्मिन्तीर्थे बरे
 शुभ्रे शोणितं समुपावहत् ॥ १ ॥ अयाजमुल्लतोः राजप्राक्षसास्तत्र भारत । तत्र ते
 शोणितं सर्वं पिबन्तः सुखमासते ॥ २ ॥ तृताञ्च सुभृशं तेन सुखिता विगतज्वराः ।
 नृत्यन्तश्च हसन्तश्च यथा स्वर्गजिनस्तथा ॥ ३ ॥ कस्य विश्वस्य कालस्य श्रुण्वः सुतपो
 घनाः । तीर्थयात्रां समाजग्मुः सरस्वतीं महापते ॥ ४ ॥ तेषु सर्वेषु तीर्थेषु स्थाप्लुतव
 मुनिपुङ्गवाः । प्रपूज्य प्रीतिं पराञ्चामि तपो लुब्धा विशारदाः ॥ ५ ॥ प्रययुर्हि ततो
 राजन् न्येन तीर्थतस्तु बहव । अयागम्य महाभागस्ततीर्थे दारुणं तदा ॥ ६ ॥ दृष्ट्वा
 तोयं सरस्वत्याः शोणितेन परिप्लुतम् । पीयमानञ्च रक्षामिव द्रुमिन्पसत्सम् ॥ ७ ॥
 तान् दृष्ट्वा राक्षसान् राजग्मुनयः संसिप्रताः परित्राणे सरस्यत्याः परंयत्नं प्रचक्रिरे ॥ ८ ॥
 ते तु सर्वे महाभागाः समागम्य महाप्रताः । आहूय सरितां श्रेष्ठामिदं बचनममुष्वज
 ॥ ९ ॥ कारणं ब्रूहि कल्याणि किमर्थं ते इदं दृश्यम् । एवमाकुलतां पातः भूत्वा इवासा
 महे बयम् ॥ १० ॥ ततः सा सर्वमाचष्ट यथावृत्तं प्रवेपती । बुद्धितामयः तां दृष्ट्वा

अध्याय ४३ ॥

वैशम्पायन बोले कि क्रोधयुक्त बुद्धिमान् विश्वामित्रसे, शापित सरस्वती, ने
 उस उत्तम-घोर-उज्ज्वल तीर्थपर, रुधिर को बहाया । १ । हेभरतवंशी राजा जनमे
 जय इसके पीछे वहाँ राक्षसआपि और, बह, सब, रुधिरको, पानकरतेहुये, सुखपूर्वक
 रहनेलगे । २ । उस रुधिपानकरनेसे वह राक्षस स्वर्गके विजय करनेवाले, पुरुषोंके
 समान, अत्यन्त तुष्ट, सुखी और ज्वरों से रहित हर्षयुक्तहुये । ३ । इसके पीछे तपोधन
 ऋषि किसीसमय सरस्वती के तीर्थपर तीर्थयात्राको गये । ४ । वह, तपके लोभी
 पंडित और श्रेष्ठमुनि उनसब तीर्थोंमें स्नानकर श्रेष्ठ प्रीतिको प्राप्तकरके । ५ । वहाँसे
 चलेगये और जिसमार्ग से रुधिरका बहानेशला, तीर्थथा उस भयानक तीर्थ पर
 भी वह महाभाग सब ऋषि गये वहाँ रुधिरसे युक्त, सरस्वती के जलको बहुत
 राक्षसों से पान कियाहुआ देखकर और उन राक्षसोंको भी देखकर उन तेजप्रत
 मुनियों ने सरस्वतीकी रक्षा में बहुत उपाय किया । ६ । अर्थात् वह एक
 महाभाग बड़े व्रतवाले ऋषि नदियोंमें श्रेष्ठ सरस्वती को पुलाकर यह पचन बोले
 । ७ । हे कल्याणिनि इस तरे इदने किसहेतुसे इस महाव्याकुलताको पाया है
 इसका सब वृत्तान्त वर्णनकरो हम सुनकर इसका निश्चय करेंगे । १० । इसके

CHAPTER XLIII

Vaishampayan said, "Cursed by enraged Vishwamitra, Saraswati
 flowed blood in her good and pure stream. Rakshases came and
 drank of the blood. They were happy like those who have conquer-
 ed paradise and were full of joy. After sometime rishis went to the
 bank of the Saraswati. The ascetics, desirous of bathing came there
 and seeing the river full of blood and the rakshases drinking at it,
 they made many plans to purge the river. 8. They invoked Saras-

ऊचुले वै तपोवना ॥ ११ ॥ कारण भूत मस्मानि, शापश्चैव भूतोन्म कश्चिप्यामो वय
 यान सर्व एव तपोवना ॥ १२ ॥ एवमुक्त्वा सारिकुण्ड्रेष्वाञ्जुस्तेष परस्परम् । विमोक्ष
 यामहे सर्वे शापान्तेता सरस्वतीम् ॥ १३ ॥ ते सर्वे ब्राह्मणा राजसुतोभिर्निर्मैस्तथा ।
 उपधासैश्च विविधैर्यमैः कष्टन्नैस्तथा ॥ १४ ॥ आराध्य पशुपत्तारं महादेव जगत्प
 तिम । अमोक्षयन्त तां देवीं सारिकुण्ड्रेष्वां सरस्वतीम् ॥ १५ ॥ तेषान्तु सा प्रभाषेत् प्रक
 तिस्था सरस्वती । प्रसन्नसलिला जले यथापूर्वं, तथैव ह । विमुक्ता च सारिकुण्ड्रेष्वा
 विवर्षी सा यथा पुरा ॥ १६ ॥ इष्ट्वा तोय सरस्वत्या मुनिभिलैस्तथाकृतम् । तानेव
 कारणे जग्म गक्षसा सुधितालदा ॥ १७ ॥ विष्वाऽर्जलि तनो राजब्राह्मसा, इत्यथा
 दिता । ऊचुस्तान् वै मुनेन् सर्वान् कृपायुक्तान् पुन पुन, ॥ १८ ॥ वय हि सुधिता
 श्वेव धर्मोऽस्मान् शाश्वतान् । न च न, कामकारोऽऽ तत्रयं पापकारिणः ॥ १९ ॥

पीछे उम कम्पित, सरस्वती ने सब बृत्त न्त वर्णन किया वह, तपोवन कापि बस
 दुःखी को देखकर कहने लगे । १ । कि हे निष्पाप हमने हेतु और शाप दोनोंमुने
 हम सब तपोवन ऋषि इसके उपायका विचारकरने । १२ । उस भेष्ट नदीसेपेमा
 कहकर फिर ऋषि परस्पर बोले कि हम सब इस सरस्वती को निष्पाप करें । १३
 हेराजा तब उन सब ब्राह्मणों ने, तप नियम और नानाकठिन व्रत और जितोन्द्र्य
 पने से । १४ । पशुओं के स्वामी जगत्पति महादेवजी को आराधनकरके इस
 नदियों में, भेष्ट देवी सरस्वतीको पाप अंशमे मुक्तिहिया १५ । वह सरस्वती जहाँ
 के प्रभावमे बसीपकारके मुख्यरूप और स्वभाववाली हुई जैसी कि पूर्वमें थी शाप
 से मुक्त वह भेष्ट नदी पूर्वकेही समान शोभापमान हुई । १६ । उन मुनियों से
 गुड कीहुई उम, सरस्वतीको देखकर लुपार्च राक्षस उनकी शरण में गये । १७ । हे
 राजा वह क्षुधासे पीड़ित, राक्षस हाथ जोड़कर उन दयावान् मुनियों से बारम्बार
 यह वचन बोले कि हम लुपार्च दुःखी होकर सनातन धर्म से रहित हैं यह इच्छा

wati and said, " Why are your waters so dirty? pray tell us all about it." 10. Terrified Saraswati told them all that had happened. To this the rishis replied, " We have heard about the curse and its cause and a lot of us will try to remedy the evil "—Having said this to her they consulted among themselves to purge Saraswati of her sins. The great ascetics prayed Mahadev for this purpose and got that best of rivers purged 15 The Saraswati became as pure as she was before and was quite rid of the effect of the curse. At this the hungry rakshases sought the protection of the munis and with joined hands said, to them again and again, " Being afflicted with hunger, we can not perform our duties and we have no desire to commit sins. Let us be freed from the effects of our sins. The reasons why we are so

युष्माकञ्चाप्रमादेन दुष्कृतेन च कर्मणा यत् पापं घञ्जेतस्माकं यतः स्मो ब्रह्मराक्षसाः
 ॥२०॥ योषिताञ्चैव पपिनं यानिदीपकतेन च । एवं हि वैदयशूद्राणां छत्रियाणां तथैव
 च । ये ब्राह्मणान् पद्विपतिते भवन्तीह राक्षसाः ॥ २१ ॥ आचार्यं च त्विजस्यैव गुरुं वृद्ध
 जनें तथा । प्राहिणो येऽप्यन्यन्ते ते भवन्तीह राक्षसाः ॥ २२ ॥ तत् कुरुष्वमिहास्माकं
 तारणं द्विजसत्तमाः । शका भवन्तः सर्वे लोफानामपि तारणे ॥ २३ ॥ तेषाम्नु मुनयः
 श्रुत्वा तुष्टुयुलां महानदीम् । मोक्षार्थं रक्षसां तेषाम्नुः प्रयतमानसाः ॥ २४ ॥ श्रुतं
 कीटावपन्नञ्च यश्चोच्छिष्टेष्विविते भवेत् । सकेशमधधूयञ्च शक्तिपहतस्यच यत् । एभि
 संसृष्टमाणञ्च भागोऽसौ रक्षसामिह । २५ ॥ तस्माज्जात्वा सदा विद्वानिताद् बन्नादि
 षजयेत् । राक्षसाश्मसौ भुङ्क्ते यो भुङ्क्ते छत्रगिरेशम् ॥ २६ ॥ शोषयित्वा ततस्तीये
 मृपयस्ते तपोधना । मोक्षार्थं राक्षसानाञ्च नदीं तां प्रत्यचोदयत् ॥ २७ ॥ महर्षीणां

के अनुसार प्रवृत्ति नदी है जो हम पापों को करती है । १९ । अब आपकी
 कृपासे पाप-कर्म से छूटनेके वह हमारे पाप जिनसे कि हम ब्रह्मराक्षस है । २० ।
 और बढ़तेजाते हैं उन सब पापों को मुनी स्त्रियों के उस पापसे जोकि उत्पत्ति
 स्थान योनिदोषसे सम्बन्ध रखनेवाला है हम ब्रह्मराक्षस होते हैं इस प्रकार वैश्य
 शूद्र और स्त्रियोंमें से जो लोग ब्राह्मणों से शत्रुता रखते हैं वह इसलोक में
 राक्षस होते हैं । २१ । जो लोग गुरु ऋत्विज आचार्य और वृद्ध मनुष्यों समान
 सब जीवधारियोंका अपमान करते हैं वह इसलोकमें राक्षस होते हैं । २२ । डेवसम
 ब्राह्मणलोगों आप हमारी रक्षाकरो आप सबलोकोंके भी तारनेमें समर्थ हैं । २३ ।
 मुनियोंने ज्यों के बचनोंकी सुनकर महानदी की स्तुतिकरी और बड़े सावधान
 उन मुनियोंने उन राक्षसों की मोक्षके निमित्त उससे कहा । २४ । श्रुत कीटयुक्त
 उच्छिष्टममृत केश रखनेवाला त्यागाहुआ नेत्रोंके अश्रुओं से युक्त जो अन्नही
 इन काम्यों से इसलोकमें त्यागकिया हुआ अन्न राक्षसों का भाग है । २५ । इस
 हेतुसे बुद्धिमान मनुष्य अच्छेप्रकार जानकर सदैव ऐसे अन्नों को उपाय पूर्वक
 त्यागकर जो ऐसेअन्नको खाता है वह राक्षसों के अन्नको खाता है । २६ । इसके
 पीछे उन तपोधन ऋषियोंने उस तीर्थको पवित्र करके राक्षसों का मोक्षके लिये उस

and why we increase are:— It is mostly due to the defects of child
 birth in women. The enemies of Brahmans are also turned into rak-
 shases, likewise those who insult their preceptors and elders. 22.
 Protect us, Brahmans, you have power to purify all the world. "At
 this the munis begged Mahanadi to become the means of their salvation.
 From that time, impure food as well as its remains are set apart for rak-
 shases. A wise man, knowing this, should always shun from such food,
 for he who eats it eats the food of raksuases. Then those ascetics made the
 river pure for the salvation of raksuases. Knowing the desire of the munis

मत्तं ज्ञात्वा ततः सा सरिताम्बरा । अरुणामानयामास स्वर्गं तनुं । पुरुषर्षभ ॥२८॥ तस्यां
 ते राक्षसाः स्नानार्थात्तु तस्य कथा दिवं गताः । अरुणायां महाराज ब्रह्मवध्यापहा हि
 सा ॥ २९ ॥ एतमर्थमभिज्ञाय देवराजः शतक्रतुः । तस्मिंस्तीर्थवरे स्नात्वा विमुक्तः
 पाप्मना क्लृप्त ॥ ३० ॥ जनमेजय उवाच । किमर्थं भगवान् शक्रो ब्रह्मवध्यामवाप्तवाक्
 कथमस्मिंश्च तीर्थे वै आप्नुत्याकृतमयोऽभवत् ॥ ३१ ॥ वैशम्पायन उवाच । ध्रुवश्चै
 तदुपावधानं यथावृत्तं जनेश्वर । यथा विभेद् समयं नमुचेर्वासवः पुरा ॥ ३२ ॥ नमु
 चिर्वासवान्नीत सूर्यरारिं समाविशत् । तेनेन्द्रः सत्यमकरोत् समयञ्चेद्वनव्रवीत्
 ॥ ३३ ॥ न चाङ्गैर्न शुक्रेण न शत्रौ नापि चाहर्तुम् । घडिष्याम्यसुरश्रेष्ठ सखे सत्येन
 ते शपे ॥ ३४ ॥ एतं स समयं कृत्वा हृष्ट्वा नीहारमीश्वर । चिच्छेदास्य शिरो राज
 ऋषां फेनेन वासवः ॥ ३५ ॥ तच्चिउरो नमुचेदिच्छन्नं पृष्ठतः शकमभ्यधात् । सो मित्रहर
 नदीको वचापमानं क्रिया । २० । हे पुरुषोत्तम फिर उस उत्तम नदीने महापियोंका
 विचार जानकर अपने अरुण नाम शरीरको वहाँ वर्त्तमान किया । २८ । वह
 राक्षस उस अरुणामें स्नानकर अपने शरीरको छोड़कर स्वर्गको गये हे महा राज
 वह तीर्थ ब्रह्मवध्याका दूर करनेवाला है । २९ । निश्चय सौपन्न कानेवाला देव-
 ताओंका इन्द्र इस बातको जानकर उस उत्तम तीर्थ में स्नानकर पापों से निवृत्त
 हुआ । ३० । जनमेजयने कहा कि हे भगवान् इन्द्रने कैसे ब्रह्मवध्याको पाया और
 कैसे इसतीर्थमें स्नानकरके पापों से छूटा । ३१ । वैशम्पायन बोले हे राजा इस
 वृत्तान्तको सुनो यह वृत्तान्त जैसा है और जिस प्रकार इन्द्रने पूर्वसमय में नमुचि
 की प्रतिज्ञाको भंगकिया । ३२ । अर्थात् इन्द्रसे भपनीत होकर नमुचि सूर्य की
 किरणोंमें प्रवेशकरगया इन्द्रने उससे मित्रताकरी और यह वचन पूर्वक प्रतिज्ञाकरी
 कि हे अमुरोंमें भेष में जल थल और रात्रि दिनमें भी तुझको कभी न मासंगा
 हे मित्र मैं सत्यतासे तुझने शपथ खाताहूँ । ३४ । हे राजा उस ईश्वर इन्द्रने
 वचन प्रतिज्ञा करके नीहारको देखकर जनके फेनसे उसके शिरको काटा । ३५ ।

the river assumed a red colour and the rakshases bathing in the waters
 of Aruna went to paradise. That holy river, O king, removes the
 sin of Brahmicide and Indra the performer of a hundred sacrifices,
 knowing this fact, purified himself by bathing there." 30. Janmejaya
 said, "How was Indra guilty of slaying a Brahman and how was he
 purged from sin by bathing there?" Vaishampayan said, "Hear this
 account as it happened: in former days Indra broke his promise with
 Namuchi. Afraid of Indra, he enticed the rays of the Sun. At this
 Indra contracted with him a friendship and promised that, he would
 not slay him during day and night nor on land or water. But Indra
 broke his promise and cut off Namuchi's head by water from the th;

पापेति मुवाण शकमन्तिक्रात् ॥ ३६ ॥ एवं स शिरसा तेन चोद्यमान. पुनः पुनः।
 पितामहाय सन्तत एतमर्थं न्यधेदधत् ॥ ३७ ॥ तमप्रवीक्षुं कगुठगरुणायां यथाशिवि ।
 इष्टुषोपस्पृश देवेन्द्र तीर्थं पापमयापहे ॥ ३८ ॥ एषा पुण्वजला शक कृता मुनिमिरेष
 च । निगूढमस्यागमनमिहासीत् पुर्वमेव तु ॥ ३९ ॥ ततोऽभ्यरेयावतां देवीं ग्लाव्यमामास
 वरिणा । सरस्वत्यावतावाम् पुण्योयं सङ्गमो महान् ॥ ४० ॥ इह त यज देवेन्द्र दद
 दानान्यनेकशः । मन्त्राप्लुत्य सुघोरास्वे पातकारिभ्योदधसे ॥ ४१ ॥ इत्युक्त. स सर
 स्वत्या कुञ्जे धै जनमेजय । ब्रह्मणो वचनाच्छक्रे, यज्ञदयश्चैरनेकशः । ४२ । इह
 दानान्यनेकानि स्नात्वा तीर्थं शतकृतु । इष्ट्वा यथावच्छलमिदरुणायासुपास्पृशत्
 ॥ ४३ ॥ स मुक्त पाप्मना तेन ब्रह्मवध्याकृतेन ह । जगाम सहृष्टमनाश्रिदिषे त्रिदिवे
 श्वरः ॥ ४४ ॥ शिरस्तच्छ्वापि नमुचेत्प्रेषाप्लुत्य भारत । लीकाभ्र कामबुधान् प्राप्तमक्ष
 वात्माजसत्तम ॥ ४५ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत्राप्युपस्पृश्य धरो महाराम इत्था च
 क्षानानि पूयंगुविधानि । अवाप्य धर्मं परमाव्यर्कमा जगाम सोमस्य महत् सुतीर्थम

तव वहं कटाहुआ नमुचैका शिर समीपमे यह वचन कहता हुआ इन्द्रके पीछे
 चला कि हे मित्रके मारनेवाले पापी कहां जाता है इस प्रकार उस शिरसे
 बारम्बार कहेहुये महादुःखी इन्द्रने उस दृत्तान्तको ब्रह्माभीते निवेदनकिया । ३७
 तव लोकेके गुरु ब्रह्माजी ने उससे कहा कि हे देवेन्द्र तुम विधिपूर्वक पापों के
 भयके दूर करनेवाले अरुणा तीर्थपर यज्ञकरके स्नानकरो । ३८ । हेन्द्र मुनिपोंसे
 रचाहुआ पवित्र जनवाला यह तीर्थ है प्रथम भी इसलोकमें उस तीर्थ की यात्रा
 सुसरोती थी । ३९ । इसकेपीछे इन्द्र ने अरुणादेवीके पास जाकर जलसे अपनेको
 पवित्राकिया सरस्वती और अरुणा देवीका यह बड़ा पवित्र संगम है । ४० । हे
 देवेन्द्र यहां तुम यज्ञकरो और बहुत प्रकारके दानोंको दो तुम इस तीर्थ में स्नान
 करके बड़े घोर पापों से छुटोगे । ४१ । हे जनमेजय ब्रह्माजी के इस वचनको सुन
 कर इन्द्रने सरस्वतीके कुञ्जमें यज्ञकरके ब्रह्मणमें स्नान किया । ४२ । ब्रह्मणसेके उस
 पापसे छुटाहुआ वह मत्तचित्त इन्द्र स्वर्गकी गया । ४३ । हे रामाजी मैं श्रेष्ठ
 भरतवंशी नमुचि के उस शिाने भी इसी तीर्थ में स्नानकरके अभीष्टोंके प्राप्तकरने
 वाले अविनाशी लोकों को पाया । ४४ । वैशम्पायन बोले कि महाराम और बड़े

time of evening. 35 The severed head accused Indra of killing a
 friend and the latter complained of it before Brahma who advised him
 to bathe in the Aruna in order to purify himself of the sin. That holy
 place was so made by him. Before that time too the holy place was
 secretly visited. Indra went to Aruna and purified himself at the
 junction of the Saraswati and Aruna. 40. Indra performed sacrifice
 there and gave large dantora to get rid of them. He obeyed
 Brahma's command and bathed at the junction of the Saraswati and
 Aruna. Pleased of this, Indra went to paradise well pleased in his

॥४६॥ वज्रायकमुनेन सोम साक्षात्पुरा विविधम् पार्थिवन्द्रान्त्रिर्घोमान्त्रिप्रमख्योवभूव
 होता वस्मिन् क्रतुमुख्ये महात्मा ॥ ४७ ॥ यस्यान्तेभूत् सुमहात्मानवानां देवतानां राक्ष
 सानाञ्च देवैः । वस्मिन् युद्धे तारकाख्य सुतीक्ष्णं यत्र स्कन्दस्तारकं वै जघात् ॥ ४८ ॥
 सेनापत्यं लघ्ववान् देवतानां महासेनो यत्र देवतान्तकर्त्ता । साक्षात्चापि न्यवसत्
 कार्तिकेव सदा कुमारो यत्र न लक्षराज ॥ ४९ ॥

इतिगदायुद्धपर्वाधि बलदेवतीर्थयात्रायां त्रिचत्वारिंशोऽध्यायः ४३ ॥

कर्म करनेवाले बलदेवजी उस तीर्थ में भी स्नानकरके अनेक प्रकार के दानोंके
 देनेसे धर्मके प्राप्तिके चन्द्रमाके उस बड़े तीर्थको गये । ४६ । हे महाराज जहाँ
 पर साक्षात् चन्द्रमाने पूर्व समय में विधिपूर्वक राजसूययज्ञ कियाया उसउत्तमयज्ञ
 में बुद्धिमान् ब्राह्मणों में श्रेष्ठ महात्मा अत्रिजी होताहुये । ४७ । जिसतीर्थ के पास
 दानवदैत्य और राक्षसोंका महायुद्ध देवताओंके साथ हुआ था और जहाँ तारक
 नाम कठिन युद्धहुआ जिसमें स्वामिकार्तिकजीने तारक असुरको मारा । ४८ ।
 और जहाँपर महासेननाम दैत्यों के नाशकरनेवाले स्वामिकार्तिकजीने देवताओं
 की सेनापतीको पाया और साक्षात् कुमार कार्तिकेयजी स्थितहुये यहाँपर वह
 उत्तनाम राजतीर्थ था ४९ ॥

mind ' Namuchi's head also bathed in that stream and gained good
 regions. 45 Vanshampayan said " Having bathed at that holy
 place and gave donations. Baldev proceeded to the holy place where
 Chandra had performed Rajsuya sacrifice which was presided by Attri.
 The great war of the Daityas and gods, known as Tarak, took place
 there and Tarak was slain by Kartik the commander in chief of the
 army of gods. That holy place was known as Laksh ' 49



जनमेजय उवाच । सरस्वत्याः प्रभाषीयमुक्त्वा द्विजसत्तम । कुमारस्याभिषेकस्तु
 प्रह्वन् व्याचक्षते महांसि । यस्मिन् काले च देशे च यथा च वदताम्बर । वैश्वामिषिको
 भगवान् विधिना येन च प्रभुः ॥ २ ॥ स्कन्दो यथा च दैत्यानामकरोत् कर्तुं महत्
 तथा मे सर्वमाचक्ष्व पर कौतूहलं हि मे ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । कुहवशस्य सद्यः
 कौतूहलमिदं तव । ह्यमृताद्यद्येष बच्चो मे जनमेजय ॥ ४ ॥ ह्यत ले कथाविश्वामि
 षुप्तानस्य जनाधिप । अभिषेकं कुत्रापस्य प्रभावञ्च महारमनः ॥ ५ ॥ तेजो मोहेभ्यं
 स्कन्धमनौ प्रपतितं पुरा । तत् सर्वमदौ भगवान्नाशकहृद्युमक्षयम् ॥ ६ ॥ तेनासीदिते
 जग्धी दीप्तिमान् हृद्यवाहनः । न चैष धारयामास गर्भं तेजोमयं तथा ॥ ७ ॥ स
 गङ्गामभिषङ्गम्य नियोगाद्ब्रह्मणः प्रभुः । गर्भमाहितवान् दिव्यं भास्करोपमतेजसम् ॥ ८ ॥
 अथ गगापि सं गर्भमलहन्ती विचारणे । उत्ससज्जं गिरौ रम्ये हिमवतस्यमरुषिष्ठते

अध्याय ४४ ॥

जनमेजय बोले हेवाङ्गणों में श्रेष्ठ सुमने यह सरस्वती का प्रभाव कहा है कि
 वर्यं कुमार के अभिषेक को भी आप कहने को योग्य हो । १ । हे वदताम्बर यह
 प्रभु भगवान् स्वामिकार्तिकजी जिसदेश में जिससमय जिसविधि से उत्पन्नहुये
 और जिन २ देवताओंने इन कुमारजी को अभिषेक किया । २ । और उन्होंने
 जैसे दैत्योंके बड़े नाशको किया यह सब वृत्तान्त मुझसे कहिये क्योंकि मुझको उस
 के सुनने की बड़ी उत्कण्ठा है । ३ । वैशम्पायन बोले हे जनमेजय यह तेरा सुनने
 का उत्साह कौरववंश के योग्य है यह वचन मेरी प्रसन्नता को उत्पन्न करता है
 । ४ । हे राजा बहुत अच्छा मैं कुमारजी के अभिषेक और प्रभाव को तुझ से
 कहता हूँ । ५ । पूर्वसमय में शिवजी का तेजरूप बीर्य अग्नि में गिरा सब के भस्म
 करनेवाले भगवान् अग्नि उस अविनाशी के भस्म करनेको समर्थ नहीं हुये । ६ ।
 उस के कारण वह प्रकाशित अग्नि अत्यन्त तेजस्वी हुये परन्तु उस तेजरूप गर्भ
 को धारण नहीं करसके । ७ । उस प्रभु अग्निने ब्रह्माजीकी आज्ञा से गंगाजी में
 जाकर उस सूर्य के समान महातेजस्वी दिव्य गर्भको नियतकिया तदनन्तर उस

CHAPTER XLIV

Janmejaia said, " You have informed me with the greatness of
 Saraswati, now tell me of the installation of the Kumar. Tell me,
 best of speakers, when and where Kartik was born, who anointed him
 and how he destroyed the Daityas; for I am very anxious to hear it. "
 Vaishampayan said, " Your desire to hear this account is worthy
 of the family of the Kauravas, and it pleases me. I at all tell you of
 the installation and greatness of the Kumar. 5. The glorious ascen
 of Shiv dropped into fire, but the latter was unable to burn it. Agni be
 came more glorious but could not keep it with him. By Brahma's

॥ ९ ॥ स तत्र बभूधे लोकानावृत्त्य ज्वलनात्मजः । ददशुर्ज्वलनाकारं तं गर्भस्य
 कालिकाः ॥ १० ॥ शरत्सम्भवे महात्मानमनलात्मजमग्निधरम् । ममायमिति ताः सखाः
 पुत्रार्थिन्योमिच्छक्रमुः ॥ ११ ॥ तासां विदित्वा भाव्यं तं मातृणां भगवान् प्रभुः । प्रसू-
 तानां पश्यद्भिवेदनेरपि वत्तदा ॥ १२ ॥ तं प्रमाद्यं समालस्य तस्य बालस्य कृत्तिकाः ।
 परं विस्मयमापन्ना देव्यो दिव्यवपुर्देवाः ॥ १३ ॥ यत्तोत्सृष्टः स भगवान् गंगायां गिरि-
 मूर्धनि । स शैलः काञ्चनः सर्वैः सखी कुरुनन्दन ॥ १४ ॥ बधेता श्वेध गर्भेण
 पृथिवी तेन रञ्जिता । यतश्च सर्वे संवृत्ताः गिरियः काञ्चनाकराः ॥ १५ ॥ कुमारः
 सुमहादीर्घवैः काञ्चिकेय इति स्मृतः । गांगेयः पूर्वमभवन्महायोगबलनिवृतः ॥ १६ ॥
 शमनं तपसा श्वेध वीर्येण च समन्वितः । बभूधेऽतीव राजेन्द्र चन्द्रवत् प्रियदर्शनः
 ॥ १७ ॥ स तस्मिन् काञ्चने दिव्ये शरत्सम्भवे श्रिया वृतः । स्तुत्यमानः सदा शैते गन्धर्व-
 मुनिभिस्तथा ॥ १८ ॥ तपेन मन्वन्त्यन्त देवकन्याः सहस्रशः । दिव्यव्याधिप्रनुत्पन्नाः
 स्तुवन्त्यध्यारुदयोनाः ॥ १९ ॥ भन्वास्ते च नदी देव्यं गंगा वै स्तुतिस्मरणात् । दधार

गर्भकेधारण करनेको अक्षय भीगंगाजी नेभी देवताओंसे पुजित सुन्दर हिमालय पर्वत
 पर उसको छोड़ा । १९ । वह अग्नि का पुत्र बर्हावर अपने तेज से लोकोंको व्याप्त
 करके बड़ा हुआ इस के पीछे कृत्तिकाओंने उस अग्निरूप गर्भको देखा । १७ ।
 पुत्रकी अनिच्छासे वह सब उस अग्निके पुत्र महात्मा ईश्वर को शरत्सम्भवर देख
 कर यह हमारा है ऐसा कहकर पुकारा । ११ । तब भगवान् मन्त्रे उन दुग्धप्राप्त
 कराने की उत्सुक माताओं के उस भावको जानकर छः मुलों से उन के दूधको
 पान किया । १२ । दिव्य दुग्धधारी कृत्तिकाओंने उस बालक के अनुल मभावको
 जानकर बड़ा आश्चर्यमाना । १३ । हे कौरव्य जहाँ कि उस पर्वत के मस्तक
 पर वह कुमार गंगाजी के हाथसे छोड़ा गया था वह सब पर्वत सुवर्ण का होकर
 शोभायमान हुआ । १४ । उस बढनेवाले बालक से पृथ्वीभी रंगोसे युक्त होगई
 इस हेतु से सब पर्वत सुवर्ण की खानेहा गये । १५ । बड़ा पराक्रमी कुमार काञ्चि-
 केय अर्थात् कृत्तिकाओं का पुत्र कहा गया वह कुमार बड़े योगबलसे युक्त प्रथम
 गंगाजी के पुत्रहूये । १६ । हे राजेन्द्र अन्तःकरण से जितेन्द्रिय तप पराक्रमसेत
 चन्द्रमा के समान अपूर्व दर्शनवाला वह कुमार बहुत बड़ा हुआ । १७ । वह शोभा
 से युक्त गन्धर्व और मुनियोंसे स्तुत्यमानहोकर उसदिव्य सुवर्णके शरत्सम्भवर सदैव
 शयन करताथा । १८ । उतीनकार दिव्यराय ओन्तुर्पोंकेब्राना प्रशंसा करनेवाली सुन्दर

order he put it in Ganga, who being unable to keep it left it on the
 Himalayas. There that child of Agni grew up, filling the world with
 his glory. The Kritikas saw the glorious child - 15. Each of them
 cried out that the child was here. Finding them desirous of feeding
 him on their milk, he assumed a form with six faces and the Kritikas
 were amazed at his greatness and gave him milk. The child thus
 left by Ganga on the Himalayas made the mountain golden. The

पृथिवी चैन विभ्रती रूपमुत्तमम् ॥ २० ॥ जातकर्मोद्दिक्कालत्र क्रियाश्रमे वृद्धाति ।
 वेदश्चैतश्चतुर्मुर्तिरुपतस्थे कृताञ्जलि ॥ २१ ॥ घनुर्बेदश्चतुष्पाद् शस्त्रग्राम. ससमह ।
 तत्रैन समुपनिष्ठत् साक्षाद्वाणौ च केवला ॥ २२ ॥ स ददर्श महावीर्यो देवदेवमुप
 पतिम् । शैल, इवा सहासीन भूवस्य तैश्चितम् ॥ २३ ॥ निकाया भूवसधानो परमाद्भु
 तदर्शना. । विकृता विकृताकारा विकृताभरणधवा. ॥ २४ ॥ वषाप्रसिंहदक्षवदना विडा
 लमकरानना । वृषदशमुखाश्चान्धे गजाष्टवदनास्तथा उलूकधवना कश्चित् गृध्रगो
 मायुदर्शना ॥ २५ ॥ क्रौञ्चपारावतनिभैर्वदनेगङ्गुयेरवि । इवाधिल्लल्लकगोधानामजैश्च
 कगवान्त्वया । सदशानि वपुष्यये यत्र तत्र व्यधारयत् ॥ २६ ॥ केचिच्छेताम्बुदप्रया
 श्चक्रोद्यतगदायुधाः । केचिद्वज्रजपुञ्जाभा. केचिच्छेताखलप्रभा । सप्त मातृगणांश्च

दर्शनवाली इजारों देवकन्या इसके पास आकर नृत्यकरने लगीं । १९ । नदियोंमें श्रेष्ठ
 श्रीगंगाजीउसके पास नियतहुई और उत्तमरूप को धारण करके पृथ्वीने उसको.
 धारणकिया । २० । वहां वृहस्पतिजीने उसकेजातकर्म आदिक क्रियाओंको कियाऔर
 चारमूर्ति धारण करनेवाला वेदभी हाथजोडकर इसकेसमुग्व वर्त्तमानहुआ । २१ । चार
 चरण रखनेवाला घनुर्बेद और सग्र्यों समेत अस्त्रों के समूह भी इसकेपास आकर
 वर्त्तमानहुये और वहां साक्षात् केवल वाणी भी उसकेपास वर्त्तमानहुई । २२ । उसने
 पार्वतीजी समेत पुत्र और जीवधारियोंके अनेक समूहों सहित बड़े पराक्रमी देवताओं
 के भी देवता शिवजी महाराजको देखा । २३ । अत्यन्त सुन्दर और अपूर्व
 दर्शनरूप और भूषण रखनेवाले २४ । व्याघ्र, सिंह, रीछ, विडाल, मकर, विलाषहाथी
 और ऊटके समान मुखरखनेवाले । २५ । कोई उलूक, गिद्ध, शृगाल, कौब कपोत
 और रांकनाम मृगोंके समान मुख रखनेवाले इनाहित, शलुक, गोधा, बकरी,
 भेड़ और बैलोंके समान शरीरों को दूसरे पार्वदोंने जहां तहां धारण किया । २६ ।
 कितनेही पर्वत और बादलके रूप चक्र गदाधारी कितनेही कज्जल समूह के

earth was covered with colours and the mountains had mines of gold
 within them The child glorious like the moon soon grew up and
 lived on the golden mountain, praised by gandharvas and muses
 Thousands of divine girls danced and sang before him. Ganga the
 boat of rivers stood before him and the earth bore him in a beautiful
 form. 20. Vrihaspati performed his birth and other ceremonies. The
 quadruple Vedas too, stood before him with joined hands. The
 Dhanurved, with four feet, Singrahas and weapons stood near as
 well as language. He saw Parvati with son and valiant Shiv the
 god of gods with his multitudes, who bore the likenesses of tigers,
 lions, bears, cats, crocodiles, elephants, camels, 25. owls, vultures,
 jackals, Kraunches, deer, porcupines, goats, sheep and kind. 26. Some

समाजगुर्बिशाम्पने २७। साध्या विद्वेष मरुते वसव पितरस्तथा। रुद्रादित्यास्तथा
 सिद्धाभुजगा दानवा उगा २८॥ब्रह्मा स्वयम्भुर्भगवान् सपुत्र सह विष्णुना। शक्रस्त
 याऽपश्चन्द्रपु कुमारवरमध्युतम् ॥ २९ ॥ नारदप्रमुखाश्चापि दशगन्धर्वसप्तमाः। देव
 र्पयश्चासि द्वाक्ष वृहस्पतिपुरोगमा ॥ ३० ॥ पितरो जगत श्रुत्वा देवानामपि देवता ।
 तेषि तत्र समाजगुर्धामा धामाश्च सर्वश ॥ ३१ ॥ स तु बालापि बलवान् महायोगव
 लान्वित । अश्याजगाम दशशूलहस्त पिनाकिनम् ॥३२ ॥ तमाजगत्तमालक्ष्य शिव
 धस्यासीन्मनोगतम् । युगपच्छूलपुत्र्याश्च गगाया पावकस्य च ॥ ३३ ॥ क तु पूर्व
 मय बालो गौरवाद्भ्युपैष्यति । अपि मागिति सर्वथा तेषामासीन्मनोगतम् ॥ ३४ ॥
 तेषामेतद्भिर्प्राय चतुर्णां सुपलक्ष्यसे । युगपद्योगमास्थाय ससर्ज विविधास्तनु ३५।
 ततोऽभवत्तनुर्मुक्ति क्षणेन भगवान् प्रभू । तस्य शाखो विशाम्यश्च नैगमेपद्य पृष्ठतः

समान और कोई श्वेत पर्वताकारथे हे राजा सप्तमाताओं समेत साध्य विश्वे
 देवा, मरुद्गण, अष्टवसु, सव पितर एकादशरुद्र, द्वादशसूर्य, सिद्ध, सर्प दानव,
 गरुडादिकपक्षी । २८ । और विष्णुजी समेत अपने आप प्रकट होनेवाले भगवान
 ब्रह्माजी इमीप्रकार इन्द्रभी उस अजेय उत्तम कुमारके देखने को पास आये
 । २९ । नारदादिक ऋषि, देवता, गन्धर्व देवऋषि सिद्ध जिनके अप्रवर्त्ती
 ब्रह्मपतिजी थे और देवताओं के भी देवता जगत् में भेष्ट पितृगण सव याम
 और धाम यह सबभी आये । ३१ । फिर बड़े योगधत्से युक्त वह बालक भी शूल
 और पिनाक धनुषहाथमें रखनेवाले देवताओं के ईश्वर शिवजीके पास गया । ३२।
 उस आतेहुयें कुमारको देखकर शिवजीके चित्तमें यह विचार हुआ कि यह बालक
 एकवारही पावर्त्ती गगा और अग्नि इन तीनों में से किस के महत्व और गौरव
 से प्रथम किस के पास जायगा और मेरे पास भी आवेगा या नहीं । ३४ ।
 उन शिवजीके चित्तमें यह ध्यानहुआ उस कुमार ने उन सबके इस अभिषायको
 जानकर एक साथही योगमें नियत होकर नानाप्रकार के शरीरों को उत्पन्न
 किया । ३५ । इसके पीछे वह भगवान् प्रभु क्षणपरमेंही चारमुक्तिवाला हुआ

were of the shape of clouds, with descues and maees, others like a mass
 of soot or white hill, The Sadhyas, with the seven mothers, Vishw-
 dovas, Marutas, Vasus, Pitars, Rudras, Suryas, serpents, Danavas
 garurs, Brabhma the self create, with Vishnu, Indra and others came
 to see the prince. Narad and other rishis, gods, gandharvas, divine
 rishis, sidhas led by Vishaspati the god of gods, the p tris, Yam and
 Dharm came there 30 The child then came to Shiv the bearer of
 Pinak. When he was thus coming, Shiv thought within himself
 whether the child would go to Ganga, Agni or himself. 34 As
 soon as this thought occurred in Shiva's mind, the Kumar knew it
 and with the power of yug assumed different shapes. He split

॥ ३६ ॥ एष स कृत्वा ह्यात्मानं चतुर्धा भगवान् प्रभुः । यतो रुद्रस्ततः, स्कन्दो जगामा
 ज्ञतदर्शन ॥ ३७ ॥ विशाखस्तु ययो येन दधी गिरिवरारमजा । शाखा, ययो च भ्रा
 त्वा वायुमूर्त्तिर्विभावसम् । नैगमयाऽगमद्रुद्धा युमारः प्रावकप्रभः ॥ ३७ ॥ सर्वे भास्व
 रदेहास्ते चत्वारः समरुगिणः । सात्र समर्थयुरव्यग्रास्तद्वृत्तमिधामधत् ॥ ४१ ॥ हृदि
 कारा महानासीद्देवदानवरक्षसाम् । तद्दृष्ट्वा मद्वाद्यर्थमद्मुत लोमहर्षणम् ॥ ४२ ॥
 ततो रुद्रश्च देवी च पावकश्च पितामहम् । मद्रया सहिता सर्वे प्रणिपेतुः प्रंगपतिम्
 ॥ ४३ ॥ प्राणपत्यं ततस्ते तु विधिवद्राजपुंगव । इदमूर्ध्वरो राजन् कार्तिकेयप्रिये
 पत्या ॥ ४४ ॥ अस्य बालस्य भगवन्नाधिपत्यं पथेत्सितम् । अस्मत् पियार्थं हेतु
 सदृशं दातुं शसि ॥ ४५ ॥ ततः स भगवान् धीमान् सर्वलोकपितामहः । मनसा चित्त
 यमास किमयं लभतामिति ॥ ४६ ॥ ऐश्वर्य्यगि हि सर्वाणि देवगन्धर्वरक्षसाम् । भूत
 यन्त्रविहगानां पन्नगानाञ्च सर्वशः ॥ ४७ ॥ पूर्वमेवादिदेशासौ निकषेषु महारमनाम् ।
 समर्थञ्च तमेश्वर्यं महामतिरमन्यत ॥ ४८ ॥ ततो मुहुर्ते स ध्यात्वा देवानां श्रेयसि
 स्थितः । सैनापत्यं ददौ तस्मै सर्वभूतेषु भारत ॥ ४८ ॥ सर्वदेवनिकायानां ये राजान

। ३७ । शाख, विशाख और नैगमेय नाम मूर्त्तियां उसके पृष्ठभाग से प्रकट हुईं इस
 प्रकार उस भगवान् प्रभुने अपने को चार रूपवाला करके । ३८ जिधर रुद्रजीधे
 उधाही वह अपूर्वदर्शन स्वामिकाार्त्तिकजी गये और जिधर देवी पार्वती थीं उधर
 विशाखगया और वायुरूप भगवान् शाख अग्निके पासगये और अग्नि के
 के समान प्रकाशित कुमार नैगमेय गंगाजी के पासगये । ४० । वह चारों सूर्य
 के समान शरीर रखनेवाले सब एकरूप सावधान उनके पासगये यह आश्चर्यसा
 हुआ । ४१ । प्रपूर्व और शरीरके रोमांच खड़े करनेवाले उस बड़े आश्चर्यको
 देखकर देव, दानव और राक्षसोंका बड़ा हाहाकार हुआ । ४२ । उसके पीछे रुद्र देवी
 अग्नि और गंगाजी इन सबने जगत्पति ब्रह्माजी को दण्डवत् करी । ४३ । और
 त्रिधिपूर्वक दण्डवत् करके स्वामिकाार्त्तिकजी को पसन्नता के अर्थ यह वचन
 कहा । ४४ । कि हे देवताओं के ईश्वर भगवान् इतारे हित के लिये, इस बालकको
 इसके योग्य अधिकार देनेको योग्यहा । ४५ । इसके पीछे लोकों के पितामह
 बुद्धिमान् ब्रह्माजी ने विष्णु से विचार किया कि इसको कौनसा अधिकार दिया

himself into four bodies, the three forms known as Shakh, Vishakh
 and Naigameya coming out of his back. Having done this, he pro-
 ceeded towards Shiv. Shakh went towards Agni, Vishakh towards
 Parvati and glorious Naigameya towards Ganga. 40. The four
 bodies glorious like the sun went in four direct ones to the amaze-
 ment of all, who cried in wonder. Then Rudra, Parvati, Agni and Ganga
 bowed down to Brahma and said for the good of Kartik, "For our
 sake, give this child a good post." 41. At this Brahma thought
 about the matter, for the glorious one was already a preceptor of all.

परिहृताः । तान् सर्वान् व्यादिदेशस्मै सर्वभूतपितामहः । ५० ॥ ततः कुमारवा-
 वाय देवा ब्रह्मपुत्रो गमा । अस्मिन्कार्यमाजग्मु इत्येन्द्र सहितास्ततः ॥ ५१ ॥ पुत्र्या
 हेमवतीं देवीं सरिच्छ्रेया समस्वतीम् । समन्तपञ्चके या वै त्रिषु लोकेषु विभुता
 ॥ ५२ ॥ तत्र तीरे सरस्वत्याः पुण्ये सर्वगुणान्विते । निपेदुर्द्वेगन्धर्वा सर्वे सम्पूर्ण-
 मानसाः ॥ ५३ ॥

इति गद्रा (बुधपरायणे) युगिनिपुरबुधयोधनसंवादे चतुस्तरारिंशोऽध्यायः ४४ ॥

प्रायः । ४४ । मथमही इस तेजस्वीने देवता गन्धर्व राजस भूत यत्न परी और सर्व
 इन सबके देवदर्याको । ४७ । महात्माओं के समूहों में उपदेश किपहि इसीभि नडे
 बुद्धिमानों ने उसको सब देवदर्यों में समर्थ मानाहै । ४८ । इसके पीछे देवताओंकी
 बुद्धि में नियत देवताओं में श्रेष्ठ ब्रह्माजीने एक मुहूर्त्त ध्यानकरके उस कुमारको
 सब जीवधारियों का सेनापति किया । ४९ । और उन सब जीवोंको उनकीप्राज्ञा
 करी होनेकी आज्ञादी जो कि सब देवसमूहोंके राजा प्रसिद्धये । ५० । इसकेपीछे
 ब्रह्मादिक सब देवता मिलकर कुमारको लेकर अभिषेक के लिये गिरिराजके
 समीप । ५१ । धर्मकी दृष्टिके हेतु नदियों में श्रेष्ठ उस हिमाचलको पुत्री देवीसर-
 स्वती के पास गये जो कि तीनों लोकों में प्रसिद्ध समन्तपंचक देश में है । ५२ ।
 वडे मसप्रविष्ट सब देवता गन्धर्वस सरस्वती के पवित्र पुण्यकारी किनारेपर
 जाकर बैठगये ५३ ॥

being and could do all. For the good of gods, Brahma thought for
 a while and appointed him commander of all and ordered them to obey
 him. Then all the gods coming together took him to the prince of
 mountains to instal him as commander. They went to goddess Saras-
 wati in the famous country of Bramant panchak and sat on its banks 53.



वैशम्पायन उवाच । ततोऽभिपेकसम्भारान् सर्वान् समृत्य शास्त्रतः । बृहस्पतिः
 समिद्धेऽग्नी जुहावाग्निं यथाविधि ॥ १ ॥ ततो हिमवता दत्ते मणिप्रवरशोभिते । दिव्य
 रत्नाचिते पुण्ड्रे निषण परमासने ॥ २ ॥ सर्वमगलसम्भारैर्विधिमन्त्रपुरस्कृतम् । आभि-
 पेचानिकं द्रव्यं गृहीत्वा देवता गणा ॥ ३ ॥ इन्द्रविष्णु महावीर्याँः सूर्याँश्चन्द्रमसौ
 तथा । धाता चैव विधाता च तथा वैवानिलानिलौ ॥ ४ ॥ पूषा भगेनाय्यंश्ना च
 अश्विनश्च विवस्वता । रुद्रश्च सहितो धीमान् मित्रेण वरुणेन च ॥ ५ ॥ रुद्रैर्वसुभिरा
 त्रियैरस्मिभ्याश्च वृत् प्रभुः । विश्वेदेवेर्मरुद्भिश्च साध्यैश्च पितृभि सह ॥ ६ ॥ गन्ध
 र्वैरसगोभिश्च यक्षराक्षसपन्नगैः । देवर्षिभिरसस्यैयस्तथा ब्रह्मर्षिभिर्धरैः ॥ ७ ॥ वैश्वान
 रैर्बालिखिलैर्वायवाहारैर्मरीचिषेः । धृगुभिश्चागिरोभिश्च यतिभिश्च महारिमिभिः ८ ॥
 सर्वैर्विद्याधरैः पुण्ड्रैर्योगिसिद्धैस्तथा । वृत् । पितामहः पुलस्त्यश्च पुलहश्च महातपाः
 ९ ॥ अगिराः कस्यपोत्रश्च मरीचिर्भृगुरेव च । क्रतुर्हर प्रचेताश्च मनुर्दक्षस्तथैव

अध्याय ४५ ॥

वैशम्पायन बोल इसकेपीछे बृहस्पतिनीने शास्त्रोक्तरीतिसे अभिपेककी सब
 सामाग्रियों को इकट्ठा करके दृढियुक्त अग्नि में विधिपूर्वक अग्नि देवताकी
 आहुतिदी । १ । इसके पीछे देवगणों ने हिमाचल के दिये हुये अत्यन्त उत्तम
 मणियों से शोभित दिव्य रत्नों से जटित धर्मकी दृढिके हेतुरूप उत्तम आसनपर
 विराजमान की । २ । सब मगलरूप सामाग्रियों समेत विधिपूर्वक मन्त्रों के द्वारा
 अभिपेककी वस्तुओं से अभिपेक कराया । ३ । बड़े पराक्रमी विष्णुजी इन्द्र, सूर्य,
 चन्द्रमा, धाता, विधाता, अग्नि, वायु । ४ । पूषा, भग, अर्यमा, अश, विवस्वत
 और मित्र, वरुण समेत रुद्र । ५ । अष्टवसु सूर्य, दोनों अश्विनी-कुमार विश्वे
 देवा, मरुद्गण, पितृ, साध्यगण । ६ । गन्धर्व, अप्तरा, यक्ष, राक्षस, सर्प
 असंख्य ब्रह्मसृष्टि, देवऋषि, ७। वायुभल्ली, सूर्याशुको पान करनेवाले वैश्वानस
 वालीखिल्य ऋषिभृगुवंशी अगिरावशी महात्मा यती । ८ । सब विद्याधर औरपवित्र
 योगवाले सिद्ध पुरुषों समेत ब्रह्मानी पुलस्त्य पुलह बड़ेतपस्वी अजिरा । ९ ।

CHAPTER XLV

Vaishampayan said, " Vrihaspati collected all the materials for
 installation and poured libations on fire. He was seated on a seat
 studded with jewels and was sprinkled over with auspicious things
 and hymns. Vishnu, Indra, Surya, Chandra, Dhata, Vidhata,
 Agni, Vayu, Poocha, Bhag, Aryama, Ansh, Vivasvati, Maatra, Varun
 Rudra 5 Vayu, Surya, Ashwinikumars Vishwedevaa, Maruttas,
 Pitris, Siddhas, Gandharvas, ap-araa, yakshes, rakshasas, serpsats,
 numerous Bahurishis, god rishis, Vaikhanaa and Valkhilya rishis
 living on air and the rays of the sun, of the families of Bhrigu and
 Auzira, Vidyadharas sidhas, Brahma, Pulastya, Pulah, Anzira,

॥ १० ॥ ऋतवश्च प्रहाश्च ज्योतीषि च विशाम्पते । सृष्टिमस्य सरितो वेदाश्चैव
सनातना ॥ ११ ॥ समुद्राश्च इन्द्राश्चैव तीर्याणि विविधानि च । पूर्वाणी दौर्दंशाश्चैव
पार्व्याश्च जगद्विष ॥ १२ ॥ अदितिर्देवमाता च ह्रीं श्रीं । स्वाहा सरस्वती । उमा शची
शिनीवाली तथा चानुमति कुहू ॥ १३ ॥ राका च भूषणा चैव पर्यञ्जान्या दिवोक
साम् । हिमवाश्चैव विन्ध्यश्च मेरुश्च निकृन्नगवान् ॥ १४ ॥ ऐरावत सानुचर कला
काष्ठास्तथैव च । मातार्जुनाश्च ऋतवस्तथा राऽपह्नी नृप ॥ १५ ॥ उच्चैश्च वा
ह्वश्रेष्ठो नागराजश्च वासुकि । भरुणो गदइश्चैव वृक्षाधैवधिभिः सह ॥ १६ ॥
धर्मश्च भगवान् देव समाजमुर्दि सगता । कालोऽयश्च मृत्युश्च यमस्यानुचराश्च ये
॥ १७ ॥ बहुलश्चाश्च नोक्ता ये विविधा देवतागणा । ते कुमाराम्भियेकार्थं समाजमु
हृतहृततः ॥ १८ ॥ जगदुस्ते तथा राजन् सर्व एव दिवोकस । अभिषेचनिक भाव
मण्डलानि च सर्वशः ॥ १९ ॥ विषयसम्भारस्तयुक्तै कलसैः काञ्चनैर्नृप । सरस्वतीभि
पुष्पामिर्द्वेषतोऽयामिरेव च ॥ २० ॥ अश्वविच्चन्द्र कुमार वै सप्रहृष्टा दिवोकस ।

कश्यप; अत्रि, मरीचि, भृगु, क्रतुहर, मचेता, मनुदक्ष । १० । सब ऋतु, उचमग्रह
नक्षत्रादिक प्रकाशित शरीरवाली मूर्त्तिमान नदिषां, सनातेन वेद इन्द्र, नानामकार
के तीर्थ, पृथ्वी, स्वर्ग दिशा, वृक्ष देवताओंकीमाता, अदिति, ही, श्री, स्वाहा,
सरस्वती, उमा, शची, शिनीवाली, अनुमति, कुहू । ११ । राका, धिपखा
और देवताओंकी अन्यअन्य स्त्रिया हिमाचल विंध्याचल और अनेक शिखरधारी
भेरुपर्णत । १२ । सायियों समेत ऐरावतहाथी, कलाकाष्ठा, मास, पक्ष, ऋतु, दिन
रात । १३ । घोड़ों में श्रेष्ठ उच्चैश्चवा सर्पाकाराजा वासुकी भरुण गदइ
औरपयियों समेत वृत्त । १४ । भगवान् धर्म देवता, काल, यम, मृत्यु और जो रयम
राज के आंग पीछे चलनेवाले हैं वह सब मिलेहुये वहांआये । १७ । और जोनाना
प्रकारके देवगण इन्द्रिता से नहीं कडेगये वह कुमारके अभिषेकके लिये जहां तहां
से आये । १८ । हेराजा इसकेपीछे उन सब देवताओंने अभिषेककेपात्र और सब
माङ्गलिकवस्तुओं को लिया । १९ । हेराजा अत्यन्त प्रसन्नचित्त देवताओंने दिव्य

Kashyap, Atri, Marichi, Bhrgu, Kratar, Pracheta, Manu, Daksh
10 seasons, constellations, stars, rivers, eterral Vedas, lakes, tirthas
Earth, heaven, directions, trees, Aditi the mother of gods, Hri, Shri,
Swaha, Saraswati, Uma, Shachi Sainiwali, Anurmati, Kubu, Raka
Dhishana, and other goddesses, Himachal, Vindhya and other moun
tains, Airavat and his companions, divisions of time, month, fortnight-
season, day and night. 15, Uchaishrava the beat of horses, Vasuki,
the prince of snakes, garur, trees with medicinal herbs, Dharm Kal,
Yam, Mrityu and his companions and other gods came at the installation
of the Kumar. They took vessels and other auspicious articles and with
gold vessels and holy waters sprinkled the kumar who was the terror

सेनापति महात्मानमसुराणां भयङ्करम् ॥ २० ॥ पुरा यथा महाराज ब्रह्मणो वै जलेश्वरश्च
 तथाऽपि च जगवान् ब्रह्मा लोकपितामहः ॥ २१ ॥ कश्यपश्च महातेजा मे चास्ते
 नानुकीर्त्तिताः । तस्मै ब्रह्मा ददौ पीतो वलिनो वातरहसः । कामवर्षिर्वधरात् सिञ्चात् ब्रह्मा
 पांसुपदानं प्रभुः ॥ २२ ॥ तन्दिसेनं लोहिताक्षं घटाकर्णश्च सम्मतम् । ऋतुधर्मकर्मणो
 चरं श्यातं कुमुदमालिनम् ॥ २३ ॥ ततः स्थानुर्महापतेः महापारिवर्तं प्रभुः । त्रासा
 घतप्रदं कामं कामवर्षिर्वयलाश्रितम् । ददौ स्कन्दाय राजेन्द्र सुरारिविबर्हणम् ॥ २४ ॥
 स हि देवासुऽयुद्धं दैत्यानां भीमकर्मणाम् । जघान दोष्योऽसुदः प्रयुतातिः ऋतुदंश्च
 सामग्रियो से युक्त और सरस्वती के पवित्ररूप दिव्यजलों से पूर्ण सुवर्णकेकलशों
 से । २० ॥ उस कुमारकी अभिषेक कराया जोकि असुरोंके भयका उत्पन्न करनेवाला
 महात्मा सेनापति था । २१ ॥ हे महाराज पूर्वसमय में जैसे कि जलके स्वामी ब्रह्म
 को अभिषेक कराया था उसीप्रकार सब लोकके पितामह ब्रह्माजी । २२ ॥
 और बड़े तेजस्वी कश्यपादिक ऋषि जो लोकमें विख्यात हैं उन सबने मिश्रकर
 अभिषेक कराया मत्स्य प्रभु ब्रह्माजीने इस कुमारके निमित्त बज्रात् और वायु
 के समान शीघ्रगामी इच्छानुसार पराक्रमी सिद्ध महापारिवर्तको दिया । २३ ॥ उन
 के नाम नन्दिसेन, लोहिताक्ष, घटाकर्ण इतका चौथा अनुचर कुमुदमाली नाम
 से प्रसिद्ध । २४ ॥ हे राजेन्द्र उसकेपीछे बड़ेतेजस्वी प्रभु शिवजीने तेकदों मायापात्री
 इच्छानुसार बल पराक्रमी असुरों के नाश करनेवाले महापारिवर्त कावनाम को
 स्वामिकात्तिक को दिया । २५ ॥ उस क्रोधयुक्तने देवासुर नामयुद्धमें दोनों हाथों
 से भूकारी कर्म करनेवाले चोदह प्रयुक्त दैत्योंको मारा । २६ ॥ इसीप्रकार देवता
 और असुरोंकी करनेवाली अजेय और नैर्ऋत असुरोंसे युक्त विष्णुरूप सेना को
 उसके निमित्त दिया । २७ ॥ तब इन्द्र समेत सब देवता, गन्धर्व, यक्ष, राक्षस,
 मुनि और पितरों ने विजय का शब्द किया । २८ ॥ उनके पीछे यमराजने दो
 अनुचर दिये वह दोनों कालरूप बड़े पराक्रमी और तेजस्वी उन्माथ और प्रमाथ

of asura. He was anointed like Varun the lord of waters by Brahma the grandfather of all and glorious rishis like Kashyap and others. Brahma gave him powerful companions, named Nandisen, Lohitaksh Ghanta Karan and Kumud mali; lord Shiva gave him hundreds of powerful, asur-destroying attendants with Kam at their head. 25. That dreadful one had slain fourteen powerful rakshases, known as Prayats, in the war of gods and danavas. Similarly the gods gave him Vaishnavi army capable of destroying asurs. Then the gods with Indra, ghandharvas, yakshev, rakshases, munis and pitars cried out "Victory." Then Yam presented him two attendants of great prowess known as Unmath and Pramath. Surya gave him Subhraj and

॥ २६ ॥ तथा देवा ददुस्तस्मै सेनां ऋतेसकुलाम् । दशशत्रुक्षयकरिभ्यश्चां विष्णु
रूपिणीम् ॥ २७ ॥ जयशब्दं तथा चक्रुर्द्वाः सर्वे सवासवाः । गन्धर्वयशरक्षांसि
मुनयः पितरस्तथा ॥ २८ ॥ ततः प्रादादनुचरौ यमः कालोऽमावुभौ । उन्माथञ्च प्रमा
थञ्च महाधीर्यौ महाघृती ॥ २९ ॥ सुभ्राजा भास्करश्चैव यौ तौ सूर्यानुयायिनौ ।
तौ सूर्यः कार्तिकेयाय ददौ प्रीतः प्रतापवान् ॥ ३० ॥ कैलासश्चङ्गसङ्काशौ श्वेतमाल्या
नलेपनौ । सोमोऽप्यनुचरौ प्रादान्मणिस्वमणिमवच ॥ ३१ ॥ ज्वालानिह्वं तथा ज्योतिरात्म
जाय हुताशनः । ददाधनुचरौ शूरो परसेन्यप्रमायिनौ ॥ ३२ ॥ परिघञ्च घटञ्चैव
भूमिञ्च भ्रमहाचलम् । दहति दहनञ्चैव पंचण्डो धीर्यसम्पत्तौ । अशोऽप्यनुचरान्
पञ्च ददौ स्कन्दाय धीमते ॥ ३३ ॥ उत्क्रोशं पञ्चकञ्चैव वज्रदण्डवरावुभौ । ददाध
नलपुत्राय वासवः वरवीरहा । तौ हि शत्रुन्महेन्द्रस्य जघनतुः समरे बहून् ॥ ३४ ॥
चक्रञ्च विक्रमञ्चैव संक्रमञ्च महायलम् । स्कन्दाय श्राननुचरान् ददौ विष्णुर्भद्रा
यशा ॥ ३५ ॥ वर्द्धनं नन्दनञ्चैव सर्वविद्याविभारदौ । स्कन्दाय ददतुः प्रीताघशिनौ

नाम थे । २९ । प्रसन्नचित्त प्रतापवान् सूर्यने सुभ्राज और भास्करनाम उन दोनों
अनुचरों को स्वामिकार्तिक के निमित्त दिया जोकि दोनों सूर्य के पीछे चल
नेवाले थे । ३० । चन्द्रमाने भी मणि और सुमणिनाम उन दो अनुचरोंको दिया
जोकि कैलासके शिखररूप श्वेतमाला और चन्दनधारी थे । ३१ । उन्मी प्रकार
भ्रमिने भी अपने पुत्रके लिये ज्वालानिह्वं और ज्योति नाम दोनों अनुचर
जो कि शूर और शत्रुकी सेनाके नाशकारी थे उनको दिया । ३२ । अश देवता
ने भी बुद्धिमान स्वामिकार्तिक के अर्थ पांच भ्रनुचर दिये उनके नाम परिघ, घट
बलवान भीम, दहति, दहन यह पांचों अत्यन्त शीघ्रगामी और अंगीकृत पराक्रमी
थे । ३३ । शत्रुविजयी इन्द्रने उस अरिनेके पुत्रकेलिये उत्क्रोश, पंचक, वज्र
धारी, दण्डधारी इन चारों भ्रनुचरोंको दिया उन दोनों वज्रधारी और दण्डधारी
ने युद्धमें महाइन्द्रके बहुत शत्रुओं को माराथा । ३४ । बड़े यशवान् विष्णुने
ने कुमारको बड़ा बलवान् चक्र, विक्रमक और संक्रम यह तीन अनुचर दिये । ३५ ।
वेद्योंमें श्रेष्ठ प्रसन्न चित्त भ्रान्तिकुमारों ने वर्द्धन और नन्दननाम दो भ्रनुचर

Bhaskar. Chandra gave him two attendants huge like hills and adorned with white sandal and garlands. They are known as Mani and Sumani. 31. Agni gave him two powerful attendants, known as Jwala jivha and Jyoti. Parigh, Vat, Bhim, Dahati and Daban were presented by Ansh. Vitkrosh, Panchak, Vajradhari and Dandadhari were given him by Indra. The two last named slew many enemies of Indra. Vishnu gave him Chakra, Vikramak and Sangram. The two Ashwinikumars gave him Bardhan and Naudan who know all branches of knowledge. 36. Dhata gave him Kund, Kusum, Kumad,

भरतर्षभ ॥ ३६ ॥ कुन्दश्च कुसुमश्चैव कुमुदश्च महायशाः । इम्बराडम्बरो वैष
 ददौ धाता महात्मने ॥ ३७ ॥ चक्रानुचक्रौ धलिनौ मेघचक्रौ बलोत्कटौ । ददौ स्वष्टा
 महामायी स्कन्दायानुचरानुभौ ॥ ३८ ॥ सुव्रतं सत्यसन्धश्च ददौ मित्रो महात्मने ।
 कुमाराय महात्मानौ तपोविद्याधरौ प्रभुः । सुदर्शनौ धरदौ त्रिपु लोकेषु विभ्रुतौ
 ॥ ३९ ॥ सुप्रभश्च महात्मानं शुभकर्मणमेव च । कार्तिकेयाय सप्रादाद्विधाता लोके
 विभ्रुतौ ॥ ४० ॥ पाणित्रक कालिकश्च महामायाधिनायुभौ । पूषा च पार्षदी प्रादात्
 कार्तिकेयाय भारत ॥ ४१ ॥ धलश्चातिधलश्चैव महायक्त्रौ महाबलौ । प्रददौ कार्ति
 केयाय वायुर्भरतसत्तम ॥ ४२ ॥ यसञ्जितिधसर्चश्च तिमिवक्त्रौ महाबलौ । प्रददौ कार्ति
 केयाय वरुणः सत्यसद्गरः ॥ ४३ ॥ सुवर्चस महात्मानं तथैवाप्यतिधवर्चसम् ।
 हिमवान् प्रददौ राजन् हुताशनस्तुताय वै ॥ ४४ ॥ काञ्चनश्च महात्मानं मेघमालिन
 मेव च । ददाधनुचरौ मेरुःग्निपुत्राय भारत ॥ ४५ ॥ स्थिरश्चास्थिरश्चैव मेरुःवा

स्वामिकार्त्तिक को दिये वह दोनों भी सब विद्याओं में कुशलये । ३९ । बड़े यज्ञ
 वान धाताने उस महात्मा के लिये नीचेलिखेहुये अनुचरदिये कुन्द, कुसुम, कुमुद
 हंवर, अडम्बर । ३७ । त्वष्टाने स्वामिकार्त्तिक को चक्र, अनुचक्र यह दोनों अनु
 चर दिये वह दोनों बड़ेमायायी बलमें मतवाले बड़े बलवान मेघोंकी सेना रखनेवाले
 थे । ३८ । मधुमित्रने महात्माकुमारकेनिमित्त सुव्रत और सत्यसन्ध यहदोनोंअनु
 चरदिये जो कि तर और विद्याके धारण करनेवाले महात्माये । ३९ । विधाताने
 महात्मा सुव्रत और शुभकर्म को स्वामिकार्त्तिक के निमित्तदिया जोकि प्रसन्न
 मूर्त्तिवरदाता तीनोंलोकमें विख्यातथे । ४० । हेभरतवंशी पूषाने बड़ेमायायी पानीतक
 और कालिकनाम पार्षदों को स्वामिकार्त्तिकके अर्पणदिया । ४१ । हेभरतर्षभ वायुने
 बड़े बलवान और मुखवाने बल और अतिबलनामको स्वामिकार्त्तिक के लिये
 दिया । ४२ । सत्यमङ्कुर्य वरुणने निभि मत्स्यके समान मुखरखनेवाले बड़ेबलवान
 यम और अतियम नाम अनुचरोंको स्वामिकार्त्तिक के लिये दिया । ४३ । हे
 राजा हिमाचलने सुवर्चस और अतिवर्चस नाम अनुचरोंको अग्निके पुत्र
 के लिये दिया । ४४ । येरुपर्वत ने महात्मा काञ्चन और मेघमाली नाम उन अनुचरों
 को अग्निके पुत्रकोदिया जोकि बड़ेबल पराक्रम रखनेवालेथे । ४५ । विन्ध्याचलने

Dambar and Adambar Twashta gave him Chakra and Anuchakra of great prowess and leaders of the armies of clouds. Mitra gave him two attendants named Subrat and Satyasandh the seat of asceticism and learning. Vidhata gave him Subrat and Shubhkarm 40 Poosha gave him Paritak and Kalik. Vayu gave him powerful attendants named Val and Atival. Varun of true vows gave him Yam and Atyam Himachal gave him Suvarchas and Ativarchas. Meru gave him. Kanchan and Meghmalt. Vindhya gave him Uchring and

परो ददौ । महात्मनेग्निपुत्रीर्यै महावलपराक्रमौ ॥ ४६ ॥ उच्छ्रितञ्चाग्निधृंगं च महा
पापाणपोधिनौ । प्रददावग्निपुत्राय पि ऋच्यः पारिष्दाबुभौ ॥ ४७ ॥ संग्रहं विप्रहंचैव
समुद्रापि गदाधरो । प्रददावग्निपुत्राय महापाग्निवाबुभौ ॥ ४८ ॥ उन्मादं पुष्पदन्तञ्च
शं कुकर्णं तथैव च । प्रददावग्निपुत्राय पार्वती शुभदर्शनौ ॥ ४९ ॥ जयं महाजयचैव
नामौ ज्वलनस्मृतये । प्रददौ पुरुषव्याघ्र वामुकिः पद्मगोभरः ॥ ५० ॥ एवं साध्याश्च
रुद्राश्च घसवः पितरस्तथा । सागराः सरितश्चैव गिर्यश्च महावलाः ॥ ५१ ॥ ददुः
सेनागणाध्यक्षान् शूलपाट्टिशधारिणः । दिव्यप्रहरणोपेतानान वेशविभूषितान् ॥ ५२ ॥
शृणु नामानि चाप्येषां येन्येः स्कन्दस्य सेनिकाः । विविधायुधसम्पन्नश्चात्राभर्षव
र्मिणः ॥ ५३ ॥ शंकुकर्णो निकुम्भश्च पद्मं कुमुद एव च । अनन्तो ह्रदशभुजस्तथा
कृष्णोपकृष्णकौ ॥ ५४ ॥ घ्राणश्रवाः कपिरस्कन्धः काञ्चनाक्षो जलन्धमः । अक्षसन्तर्जनों
राजन् कुन दीक स्तोमभृत् ॥ ५५ ॥ एकाक्षो द्वादशाक्षश्च तथैवैकजटाः प्रभुः । सहस्र
बाहुर्विकटो व्याघ्राक्षः क्षितिकम्पनः ॥ ५६ ॥ पुण्य नामा मुनामा च सुवक्रः प्रियदर्
शनः । परिश्रुतः कोकनदः प्रियमाढ्यानुलेपनः ॥ ५७ ॥ अजोदरो गजार्शराः स्कन्धाक्ष
शतलोचनः । ज्वालजिह्वः करालश्च शिउकेशो जटी हरिः ॥ ५८ ॥ परिश्रुतः कोक

उच्छ्रित्- अतिमृद्ग नाम वड़े पापाणोंसे लड़नेवाले दोपार्षदोंको अग्निके पुत्रकोदिया
४७- समुद्रेनेभी गदाधारी संग्रह और विग्रहनामदोमहापार्षदों को दिया इभीप्रकार
उन्मादं पुष्पदन्त और शंकुकर्ण पार्षदोंको शुभ दर्शन पार्वती जाने दिया ४९- हे
पुरुषोत्तम सर्पोंके राजा वामुकी ने जय और महाजय नाम सर्पोंकोदिया ५०- इत
प्रकार साध्य रुद्र वसु पितृ सागर नदिपां और वड़े २ बलवान् पर्वतों ने सेना
के अस्त्रोंकोदिया जो कि शूल पाट्टिश धारण करनेवाले दिव्य अस्त्र शस्त्रों से
युक्त और नानाप्रकार की पोशाकों से अलंकृत थे । ५२ । उन्हों के नामोंकोभी
सुनों और स्वामिकारिणिके अन्य २ सेनाके लोग नाना शस्त्रधारी अपूर्व भूषणों
से अलंकृत थे उनकेनाम यह है । ५३ । शंकुकर्ण, निकुम्भ, पद्म, कुमुद अनन्त,
द्वादश भुज, कृष्ण उपकृष्णक, घ्राणश्रवा, कपिरस्कन्ध, काञ्चनाक्ष, जलन्धम अक्षशतर्जन
कुनदीक, तमोभ्रकृत, एकाक्ष, द्वादशाक्ष, प्रभु एकजटा सहस्राबाहु, विकट,
व्याघ्राक्ष, क्षितिकम्पन पुण्यनामा, मुनामा, सुवक्र, प्रियदर्शन परिश्रुत कोकनद,

Atishring who fought with stones. Samudra gave him Sangrah
and Vighrah and Parvati gave him Unmad, Pushpdant and Shanku
karn. The Prince of Snakes gave him Jaya and Mahajaya. 50.
Similarly, Sagar, Rudra, Vashu, Pitris, mountains and rivers gave
him powerful attendants armed with various weapons and adorned
with various dresses. Their names are as follows:—Shankukarn,
Nikumbh, Padm, Kumud Anant, Daadushibhuj, Krishn, Uprishn,
Ghranshrava, Kapiskandh, Kanchanaksh, Jalandham, Akshsantarjan,
Kundik, Tamobhrakrit, Ekaksh, Dvadashaksh, Ekjata, Sahasravahu,

नद कृष्णकेशो जटाधर । चतुर्दंष्ट्रेष्ट्रजिह्वश्च मेघनद पृथुश्रवा ॥५९॥ विद्युताक्षो
धनुर्वक्त्रो जाठरो मरुताशन । उदराक्षो रथाक्षश्च वज्रनाभा वसुप्रद ॥ ६० ॥ समुद्र
वेगो राजेन्द्र शैलकम्पी तथैव च । वृषोपप्रवाहदश्च तथा नन्दोपनन्दकौ ॥ ६१ ॥ धूम्र
श्वेत कलिङ्गदश्च सिद्धार्थो वरदस्तथा । प्रियकदचैक नन्दश्च गोमन्दश्च प्रतापवान्
॥ ६२ ॥ आनन्दश्च प्रमोदश्च स्वस्तिको ध्रुवकस्तथा । क्षेमबाहुः सुबाहुश्च सिद्धपत्रश्च
भारत ॥ ६३ ॥ गोव्रज कनकापिंडो महापारिषद्वेदश्च । गायनो हसनदश्चैव वाणः
खड्गश्च वीर्यवान् ॥ ६४ ॥ वैताली चतिताली च तथा कथकवार्तिको ।
हंसज पञ्चदिग्भाङ्ग समुद्रोन्मादनश्च ह । ६५ ॥ रणोत्कट प्रहासश्च
श्वेतसिद्धश्च नन्दक । कालकण्ठः प्रभासश्च तथा कुम्भाण्डको परः ॥ ६६ ॥
कालकाक्ष शितशैव भूतलोन्मथनस्तथा । यज्ञबाहु प्रवाहश्च देव्याङ्गो च
सोपमः ६७ ॥ मज्जालश्च महानेजा कथक्राथो च भारत । तुहरदश्च तुहाश्च चित्रदण्डश्च
वीर्यवान् । ६८ ॥ मधुर सुप्रसादश्च किरीटी च महाबल । वन्सलो मधुवर्णश्च

प्रियमाल्यानुत्तेजन, अजोदर, गजशिरा, स्कंदोक्ष, शनोजोचन अजाजिह्व करालोक्ष
शितिकेशी, जटी, हरी, परिश्रुत, कौकनद, कृष्णकेश जटाधर चतुर्दंष्ट्र उष्ट्रजिह्व, मेघ
नद पृथुश्रव विद्युताक्ष धनुर्वक्त्र जाठर मरुताशन उदराक्ष रथाक्ष वज्रनाभ वसुप्रद
॥ ६० ॥ समुद्रवेग शैलकम्पी वृष मेघ प्रवाह नन्द उपनन्दक धूम्र श्वेत कलिन्द
सिद्धार्थ वरद प्रियक एकनन्द प्रतापवान् गोमन्द आनन्द प्रमोद स्वस्तिक ध्रुवक
क्षेमबाहु सुबाहु सिद्धपत्र गोव्रज कनका पिंडनाभ महापारिषदोका ईश्वर गायन हसन
वाण पराक्रमी खड्ग वैताली अनिताली कथक वार्तिक हंसज पञ्चदिग्भाङ्ग समुद्रो
मादन । ६५ । रणोत्कट, प्रहास, श्वेतसिद्ध नन्दक कालकण्ठ, प्रभास इसीप्रकार
दूसरा कुम्भाण्डक कालकाक्ष, इसी प्रकार जीवोको मथन करनेवाला शित यज्ञबाहु

Vikat Vyaghra'sh, Kshitikampan, Punyanama, Sakhakra, Pryadar-
shan, Parishrut, Koknad, Pryamalya nul pan, Ajod r, Gajshur, Skand
aksh, Shatalochan, Jwalajivha Karalaksh, Sutilashi Ja i Hari, Pari-
shrut, Koknad Krishnke-sh Jabdhar, Chatuidanshtra, Ushtrajivha,
Meghnad, Prath ishrav, Vidyutaksh, Dhanurvaktra, Jathar, Maruta-
shan, 'Udaraksh, Rathaksh, Vajranabh, Vasuprad, 60 Samudraveg,
Shailkampi, Vrish, Mesh, Pravah, Nand, Upnanda, Dhurma, Shwet
Kalnd, Sidharth Barad, Pryak, Eknand, Gonand, Anand, Pramod,
Swastik, Dhruvak, kshemvahu, Suvahu, Sidhpatra, Govray, Kanaka,
Pidnam, Gayan the lord of Parsnada Hiran, Var, karg, Vaitali,
Atitali, Kathal, Vartik, Hansaj, Pank digdhang, Samudronmadan,
65 Rinothkat, Prahas, Shwet sidh, Nandak Kalkant, Prabhas,
Rubhandak, Kalakash, Yagyavab, Pravah, Devyaji, Somap, glorious
Majjal, Kra'h Tuha, Chitradev, Madhur, Suprasad valiant Kirti,

कलसोदर एव च ॥६९॥ धर्मदोमनमथकर नृचीवक्त्रश्च धार्यघान् । श्वेतवक्त्रश्च
 चारुवक्त्रश्च पाण्डुर । ७० ॥ दण्डबाहुः सुबाहुश्च रजः कोकिलकस्तथा । अचलः
 कनकाक्षश्च घालानामपि यः प्रभु ॥ ७१ ॥ सचारकः कोकिलो गृध्रपत्रश्च जम्बुक
 लोहाजवक्त्रो ज्वनः कुम्भवक्त्रश्च कुम्भकः ॥ ७२ ॥ स्वर्णश्रीवश्च कृष्णो जाह्नवश्च
 वक्त्रश्च चन्द्रमः । पाणिकूर्चा च शम्बुक पञ्चवक्त्रश्च शिक्षक । चापवक्त्रश्च
 जाम्बुक खरवक्त्रश्च कुंचक ॥ ७३ ॥ योगयुक्ता महात्मानः सततं ब्राह्मणप्रिया ।
 पैतामहा महात्मानो महापारिवदाश्च ह ॥ ७४ ॥ यौवनस्थाश्च वृद्धाश्च घालाश्च
 जनमेजय । सङ्कष्य पारिवदाः कुमारगवतस्थिरो ७५ ॥ वक्त्रैर्नाभिर्विधैर् तु श्रुणु नान्
 जनमेजया कूर्मकुपकटवक्त्राश्च दीर्घवक्त्राश्च भारता ॥ ७६ ॥ भवगो मायुमुखाश्चैव शशो
 लूकमुखाश्चैव खरोपूवदनाश्चान्यथा वराहवदनास्तथा ॥ ७७ ॥ माज्जोत्प्रेक्ष्य वक्त्रश्च दीर्घ
 वक्त्राश्च भारतानुनः प्रहरजाश्रेयां कीर्त्तमानानामिन्द्रेणाश्रेयै कृतः पारिवदेरायुवानां परि
 प्रसाह, देवपात्री, सोमप, वडा तेजस्वी मज्जाल, क्रथ क्रथ तुहर, तुहार, पराक्रमी
 चित्रद्वय मधुः, सुमनाद वनवान् किरीटी वतनल, मधुर्गण कलसोदर धर्मद, मन्म
 थकर पराक्रमी नृचीवक्त्र श्वेतवक्त्र, सुवक्त्र चारुवक्त्र पांडुर ७० ॥ दंडबाहु, सुबाहु, रज,
 कोकिलक अचल कनकाक्ष जोकि घालकोकाभी प्रभु हे संचारक कोकिल गृध्रपत्र
 जम्बुक लोहाजवक्त्र, ज्वनः, कुम्भवक्त्र कुम्भक स्वर्णश्रीव कृष्णो जाह्नववक्त्र चन्द्रम
 पाणिकूर्चा जम्बुक पञ्चवक्त्र शिक्षक चापवक्त्र जाम्बुक खरवक्त्र कुंचक यह सब योग
 से संयुक्त मदैव महात्मा ब्रह्मगोके परे वडे साहसी ब्रह्माजी के पुत्र पारिपदै
 हे जनमेजय हजारों तहभ वालक और कुमार के पास आकर नियतहुये ७५ ॥ और
 जोपारिपट नानापकारके मुखरखनेवाले उनकोभी सुनो कच्छप और कुपकटके समान
 मुख वाले शशलूकके समानमुख रखनेवाले गर्दभ, ऊट, शूकर, मार्जार और शशवक्त्रके
 समान दीर्घमुख रखनेवाले ७६ ॥ अबमें इन सबके शस्त्रों का वर्णन करता हूँ उनको तुमसुनो

Vatsal, Madhuvarn, Kalasodar, Dharmad, Manmathkar, Shrivakt a,
 Shwetvaktra, Charuvaktra, Pancur, Dandavahu, Sivalu, Raj,
 Kokilak, Achal, Kannaksh, Sancharak, Gridhripatia Jamvuk, Loha-
 vaktra, Javan, Kumbhvaktra, Kumbhak, Swarniv, Krishnauja,
 Hansvaktra, Chandrabh. Pankurcha, Shambuk, Pancivaktra,
 Shikshak, Chashvaktra, Jamvook, Kharvaktra, Kunchak, dear to
 gods and attendants of Brahma's son, young and old, came by
 thousands and stood near the Kumar. 75 The Parshals were of
 various shapes and bore the resemblance of tortoises, cocks, hares,
 owls, asses, camels, dogs, cats and others. Now hear an account of
 the weapons which they bore. They were armed with noses, with
 wide open mouths, faces like donkeys, eyes on their backs, blue necks
 and arms like e'ub. Others were armed with Satag'ins, d's'...

मह. १८० ॥ पाशोद्यतकरा. केचित् व्यादितास्याः सरानना । पृष्ठाक्षा नीलकण्ठाश्च
 तथा परिघवाहवः ॥ ८१ ॥ शतधनी च क्रहस्ताश्च तथा सुपलपाणय । असिमुद्गरहस्ताश्च
 दण्डहस्ताश्च भारत ॥ ८२ ॥ शूलसिहस्ताश्च तथा महाकाया महाबलाः । गदाभुषण्डि
 हस्ताश्च तथा तोमरपाणयः ॥ ८३ ॥ आयुधैर्विधैर्घैर्घ्नोर्महात्मानो महाजवाः । महाबलो
 महावेगा महापारिपदास्तथा ॥ ८४ ॥ अभिषेकं कुमारस्य दृष्ट्वा हृष्टा रणप्रियाः ।
 घण्टाज्जालपिनद्धांगानृतुस्ते महैजस ॥ ८५ ॥ एते चान्ये च वधवो महापारिपदा
 नृप । उपतस्थुर्महात्मानं काश्चिदयं यशस्विनम् ॥ ८६ ॥ दिव्याश्चाप्यन्तरोक्षाश्च पार्थि
 वाश्चानिलोपमाः । व्यादिष्टा देवतैः शूरा. स्कन्दस्यानुचराश्चन ॥ ८७ ॥ तादृशानां
 सहस्राणि प्रयुतान्यर्धुदानि च । अभिषेक्तुं महात्मानं परिवार्योपतस्थिरे ॥ ८८ ॥

इतिगदायुद्धपर्वाणि बलदेवतीर्थयात्रायां स्कन्धाभिषेके पंचचत्वारिंशोऽध्यायः ४५ ॥

१८०। कोई हाथोंसे पाश उठानेवाले, फेलेमुख, गर्भवके समान मुख पृष्ठपर नेत्ररखनेवाले
 नीलकण्ठ और परिघ शस्त्रकीसमान भुजारखनेवालेथो ८१। कोई शतधनीचक्रकी हाथमें
 धारण करनेवाले, मूशळ हाथमें रखनेवाले खड्ग मुद्गर और दण्डधारण करने
 वाले गदा भुशुंडी और तोमर हाथमें रखनेवाले नानाप्रकार के घोर शस्त्रों से युक्त
 बड़े साहसी और शीघ्रगामी बड़े बलवान बेगवान युद्ध को प्रिय माननेवाले महा
 पार्षद यह सब कुमार के अभिषेक को देखकर प्रसन्नहुये घण्टा जालसे झलकते
 शरीर बड़ेतेजस्वी वह सब पार्षद नृत्य करनेलगे । ८५ । और अन्य २ बहुतसे
 महापार्षदभी यशवान् कीर्तिमान प्रतापी महात्मा स्वामिकार्त्तिकके पास आकर बर्त्त
 मानहुये स्वर्ग आकाश और पृथ्वी से सम्बन्ध रखनेवाले वायु के समान यह सब
 शूरवीर देवताओं के आज्ञावर्त्ती होकर कुमार स्वामिकार्त्तिकजीके अनुचरहुये ८७।
 उस प्रकारके हजारों करोड़ों किन्तु अर्बुदों पार्षद उस अभिषेक किये हुये महात्मा
 कुमारके चारोंओरसे परिघ रूप होकर उसके समीप वर्त्तमान हुये ८८ ॥

club, swords, staves, maces, bhushunds, tomars and other dreadful
 weapons, They loved fighting and were pleased to witness the instal-
 lation of the Kumar. They danced in glee and rang bell's Other
 attendants too, came to him and stood by. They came from heaven,
 air and earth. They obeyed the commands of gods and followed
 Kartib. They numbered hundreds and thousands of millions and
 formed a circle round him. " 88

वैशम्पायन उवाच । शृणु मातृगणाम्राजद्रुमातुचरानिमात्र । कार्श्यमाताम्रमय
वीर सपप्रगणसूदानान् ॥ १ ॥ यशस्विनीनामातृणां शृणु नामानि भारत । यामिर्व्याता
स्त्रपोलकाः कल्याणिभिश्चराचरा ॥ २ ॥ प्रभावती विशालाक्षी पालिता गोस्तनीतया ।
श्रीमती बहुला चैव तथैव बहुपुत्रिका ॥ ३ ॥ अप्सुजाता च गोपाली बहदाम्बालिका
तथा । जयावती मालतिका ध्रुवरत्ना भयङ्करी ॥ ४ ॥ वसुदामा सुदामा च विशाका
नन्दिनी तथा । एकचूडा महाचूडा चक्रनेमिश्च भारत ॥ ५ ॥ उत्तेजना जयत्सेनी कम
लाक्ष्यशोभना । शत्रुञ्जया तथा चैव क्रोधना शलमोक्षरी ॥ ६ ॥ मागधी शुभवक्त्रा
च तीर्थसेनिश्च भारत । गीतप्रिया च कल्याणी कद्रोमिताशना ॥ ७ ॥ मेघस्वना भोगवती
सुभ्रुश्च कनकावती । अलाताक्षी वीर्यवती विद्युज्जिह्वा च भारत ॥ ८ ॥ पद्मावती
सुनक्षत्रा कन्दरा बहुयोजना । सन्तानिका च कौरव्य कमला च महाबला ॥ ९ ॥ सुदामा
बहुदामाश्च सुप्रभा च यशस्विनी । नृत्प्रिया च राजेन्द्र शतोलूषल मेखला ॥ १० ॥

अध्याय ४६ ॥

वैशम्पायन बोले हे वीर राजा जनमेजय अब मुझसे इन माताओं के समूहों
को सुनो जोकि शत्रु समूहों को मारनेवाले और कुमारके पीछे चलनेवाले हैं । १ ।
हे भरतवंशी इन यशवान् माताओं के नामों को सुनो जिन कल्याण रूप नामों
से तीनोंलोक विभाग पूर्वक व्याप्त हैं । २ । प्रभावती, विशालाक्षी, पालिता, गो-
स्तनी, श्रीमती, बहुला, बहुपुत्रिका । ३ । अप्सुजाता, गोपाली, बहदा, अम्बालिका
जयावती, मालतिका, ध्रुवरत्ना, भयङ्करा । ४ । वसुदामा सुदामा, विशाका, नन्दिनी,
एकचूडा, महाचूडा, चक्रनेमि । ५ ॥ उत्तेजना, जयत्सेना, कमलाक्षी, शोभना
शत्रुञ्जया, क्रोधना, शलभी, खरी । ६ । मागधी, शुभवक्त्रा, तीर्थसेनी, गीतप्रिया,
कल्याणी कद्रोमा भिताशना । ७ । मेघस्वना भोगवती सुभ्रु कनकावती अना
ताक्षी वीर्यवती विद्युज्जिह्वा । ८ । पद्मावती सुनक्षत्रा कन्दरा बहुयोजना संता
निका कमला महाबला । ९ । सुदामा बहुदाना सुप्रभा यशस्विनी नृत्प्रिया शतो

CHAPTER XLVI

Vaishampayan said, " Hear from me of the groups of mothers, destroyers of foes, who followed Kartik and are spread throughout, the three worlds. Their names are - Prabhavati, Vishalakshi, Palita, Gostani, Shreemati, Vahu a, Vahuputraka, Apsujata, Gopali, Vrahada, Amvalka, Jayavati, Malatika, Dhruvratna Abhayanakari, Vasudama, Sudama, Vishoka, Nandini, Ekchura, Mahachura, Chakranemi, Utejana, Jayatsena, Kamalaksi, Shobhana, Sastrunjaya, Krodhana Shalabhi, Khari, Madhavi, Shubhvaktra, Tirthsani, Gitprya, Kalyani, Kadruroma Amitashana, Meghswana, Bhogwati, Sibhru, Kanakavat Alataksi Viryavati Vidyujivha Padmavati Sankshatra Kundara Bahuyojana Santanika Kamala Mahabala Sudama Vahudama

शतघण्टा शतानन्दा भगन्दा भाविनी । वपुष्मती चन्द्रशीता भद्रकाली च
 भारग ॥ ११ ॥ शृङ्गािका निष्कुटिका वामा चत्वरवासिनी । सुमङ्गला स्वस्तिमती
 वृद्धिकामा जयप्रिया ॥ १२ ॥ धनदा सुप्रसादा भवदा एही भेडी समेडी
 खमेडीच वेता लजनी तथा ॥ १३ ॥ कण्डूतिः कालिका चैव देवमित्राच भारत ।
 जम्बुतो केतकी चैव चित्रसेना तथाचला ॥ १४ ॥ कुवकुटिका शंखलिका तथा शकु
 निका नृा । कुडोरिका कौकुलिका कुम्भिकाथ शतोदरी ॥ १५ ॥ उत्क्राथिनी जलेला
 च महावेगाथ कंकणा । मनोजया कण्टकिनी परिघा पूतना तथा ॥ १६ ॥ केशयन्त्री
 टिवाभा कौशलाय तडित्प्रभा । मन्दोदरी तुहुडी च कोटरा मेघवाहिनी ॥ १७ ॥
 सुमंगलमिनी लम्बा वसुचूडाविक्रिथिनी । ऊर्ध्ववेणीधरा चैव पिगाक्षी लोहमेखला
 ॥ १८ ॥ पृथुवन्त्रा मधुनिका मधुकुम्भा तथैव च । दक्षालिका माकुनिका जरायुर्ज
 जंगमना ॥ १९ ॥ ख्याता दहदहा चैव तथा धूमधमा नृप । खण्ड खण्डा च राजेन्द्र
 पूषणा मणिकुटिका । २० ॥ अमोघा चैव पौरव्य तथा लम्बपयोधरा । वेशुवीणा

लूखलमेखला । १० ॥ शतघण्टा शतानन्दा भगन्दा भाविनी वपुष्मती चन्द्रशीता
 भद्रकाली शंकरिका निष्कुटिका वामा चत्वरवासिनी सुमङ्गला स्वस्तिमती वृद्धिकामा
 जयप्रिया । १२ ॥ धनदा सुप्रसादा भवदा एही भेडी समेडी वेतालजननी कण्डूती
 कालिका देवमित्रा तंयुसी केतकी चित्रसेना अवला । १४ ॥ कुवकुटिका शंखलिका
 शकुनिका कुडारिका कौकुलिका कुम्भिका शतोदरी । १५ ॥ उत्क्राथिनी जलेला
 महावेगा कंकणा मनोजया वंटकिनी परिघा पूतना । १६ ॥ केशयन्त्री टुटि कौशला
 तडित्प्रभा मन्दोदरी तुहुडी कोटरा मेघवाहिनी । १७ ॥ सुमंगलमिनी लम्बा वसु
 चूडा विक्रिथिनी ऊर्ध्ववेणी धरा पिगाक्षी लोहमेखला । १८ ॥ पृथुवन्त्रा मधुनिका
 मधुकुम्भा यत्नालिका मन्कुणिका जरायुर्जंगमना । १९ ॥ ख्याता दहदहा धम
 धमा खण्डखण्डा पूषणा मणिकुटिका । २० ॥ अमोघा लम्बपयोधरा वेशुवीणा

Suprabha Nityaprya Shatolukhalmekhala Shatghanta Shatananda
 Bhagnanda Blawini Vapushwati Chandrasbita Bhadrakali Jhankari
 ka Nishkutika Vama Twarvasini Sumangala Swastimati Vridhikama
 Jaysprya, 12. Dhanada Suprasada Bhavada Eri Bheri Sameri Betal
 janani Kanduti Kalika Devamitra Janvasi Ketki Chitrasena Avala
 Kukkutika Shankalika Shakunika Kunderika Kankulika Kumbhika
 Shatodari, 15. Utkrathini, Jalela, Mahavega, Kankana, Manojaya,
 Kantakini Paigha Portna Kesbhantri, Ghati, Kraushna Taritprabha
 Mandojari Tuhundi Kotara, Meghvahini Subhaga Lambini Lamba Urdh
 veni Dhara, Pingakshi, Lohamekhle, Prti uvaktra, Madharika, Madhu
 kumbha, Yakkulika, Matkunka, Jarayu, Jarjaranana, Khyati Dah
 daha, Dhomidama, Khandhanda, Poesbna, Marikutka, Amogha,
 20, Lompyedhara, Venuvinadhara, Pingakshi, Lohamekhala,

शशोलूकमुखी कुण्डा, खरज्या महाजवा शिशुभारमुखी श्वेता लोहिताक्षी विभीषणा ॥ २२ ॥ जटालिका कामचरी दीर्घजिह्वा वलोत्कटा कालोहिक्का वामनिका मुकुटा ॥ २३ ॥ लोहिताक्षी महाकाया हरिपिण्डा च भूमिप । एकत्वचा मुकुमुमा कुण्डकर्णी च भारत ॥ २४ ॥ खरकर्णी चतुष्कर्णी कर्णभावर्णा तथा चतुष्पथनिकेता च गोकर्णी महिषानना ॥ २५ ॥ खरकर्णी महाकर्णी भेरीस्वना महास्वना शङ्ख कुम्भभवा भगदा च महाबला ॥ २६ ॥ गणा च सुगणा चैव तथा अस्थिय कामदा चतुष्पथरता चैव भूतितीर्थान्यगोचरा ॥ २७ ॥ पशुदा विचदा चैव सुखदा च महा वशा पयोदा गोमहिषदा सुविशाला च भारत ॥ २८ ॥ प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठा च रोचमाना सुरोचना । नौकर्णी मुखकर्णी च विशरा मीयनी तथा । एकवक्त्रा मेघरवा मेघमाला विरोचना । २९ ॥ पताभ्याम्बाश्च वदधो मातरो भरतर्षभ । कार्तिकेयानुर्या

विगादी लोहमेखला । २७ । शशोलूकमुखी कुण्डा खरज्या महाजवा शिशुभारमुखी श्वेता लोहिताक्षी विभीषणा । २८ । जटालिका कामचरी दीर्घजिह्वा वलोत्कटा कालोहिक्का वामनिका मुकुटा । २९ । लोहिताक्षी महाकाया हरिपिण्डा एकत्वचा मुकुमुमा कुण्डकर्णी । ३० । खरकर्णी चतुष्कर्णी कर्णभावर्णा चतुष्पथनिकेता गोकर्णी महिषानना । ३१ । खरकर्णी महाकर्णी भेरीस्वना महास्वना शङ्ख कुम्भभवा भगदा, महाबला । ३२ । गणा सुगणा भीति, कामदा चतुष्पथरता, भूति-तीर्था, अन्यगोचरा, पशुदा, विचदा, सुखदा, महावशा, पयोदा गोमहिषदा, सुविशाला । ३३ । प्रतिष्ठा सुप्रतिष्ठा रोचमाना सुरोचना नौकर्णी मुखकर्णी विशरामं पिनी एकवक्त्रा मेघरवा मेघमाला विरोचना । ३४ । हे भरतर्षभ यह सप्त औं अन्वयवद्भुतसीमात्वा स्वामिकात्तर्कके पाठ चलनेवाली नानारूपवाली हजारोंधी । ३५ । लंबेनेल लम्बेदांत लम्बाः ख रवनेवाली बलवान् मधुरवचनतरुणअच्छे

Shasholukmukhi, Kishika, Kharjenghi, Mahajava Shshumarmukhi Shweta, Lohitakshi, Vivishana Jatalika Kamcha, Dirghjivha, Va'otkata, Kalohika, Vamanika, Mukuta, Lohitaksi, Mahayala, Haripanda, Eltwacha, Sulusuma, Krishukarni, Kshurkarni Chatushkarni Karnp ravarini Chatushpath, Nike a Gokarni, Mahishanana 20. Khar karni, Mahakarni Bheriswana Mahaswana Shankh Kumbhshrava, Bhagada, Mahavala, Gana Sagana Bhu Kamada Chatushpathrata Bhutitirtha, Anyagochara Pashuda Vittada Sukhda Mahayasha Payoda Gomahishda Suvishala Pratishta Supratishta Rochmana Surochana Naukarni Mukhkarini Visharamanthini Ekvaktra Meghra va Meghmala, Vishochana all these and other mothers followed Kartik by thousands. 30. They had long nails, long teeth, and long mouths

पिन्यो नानारूपाः सहस्रशः ॥ ३१ ॥ दीर्घनयवो दीर्घदन्ववो दीर्घतुण्डवश्च भारत-
सरला मधुराक्षेध यौवनस्थाः स्वलंकृताः ॥ ३२ ॥ माहात्म्येन च संयुक्ताः कामरूप-
धरास्तथा । निर्मासगात्राः श्वेताश्च तथा काञ्चनसन्निभाः । कृष्णा भेदत्रिमासभ्यान्ना-
धुञ्जाश्च भरतर्षभ । अरुणाभा महाभागा दीर्घकेदयः सिताम्बराः ॥ ३३ ॥ उर्ध्वमेणी-
धराश्चैव पिगाक्ष्यो लक्ष्मिखलाः । लम्बोदर्या लम्बकर्णस्तथा लम्बपक्षोधराः ॥ ३४ ॥
ताम्राक्षयस्ताम्रधर्णाश्च हृष्यक्षयस्तथापराः । धरताः कामधारिणो नित्यं प्रमुक्ता-
स्तथा ॥ ३५ ॥ याम्या यौद्रास्तथा सोम्याः कौशेय्याश्च महावलाः । वाक्पथोश्च च माहे-
न्द्रयस्तथाग्नेय्यः परम्तप ॥ ३६ ॥ वायव्यश्चाय कौमार्यो ब्राह्मणश्च भरतर्षभ । वैष्ण-
वश्च तथा सौर्यो वाराहश्च महावलाः ॥ ३७ ॥ रुपेणात्सरस्तानुक्त्वा मनोहाय्यो मनो-
रमाः । वरपुष्टोपमा वाक्य तपस्व्या घनदोषमाः ॥ ३८ ॥ शक्रवर्षोपमा कुक्षे दीप्या-
वह्निसमास्तथा । शत्रूणां विग्रहे नित्यं भयदास्ताः भवत्युत ॥ ३९ ॥ कामरूपधरा

अलंकृत । ३१ । महात्वतासे युक्त स्वेच्छाचारी रूप धारण करनेवाली मातसे रहित
धारीर द्वैतवर्ण और काञ्चनरूपधी । ३२ । हे भरतर्षभ इसीप्रकार दूसरीदेवी कृष्ण
मेघकी मूरत धूमवर्ण अरुणवर्ण महाभाग लम्बेकेश रखनेवाली कोई लम्बी नेत्रला
रखनेवाली लम्बा उदर कान और स्तन रखनेवाली । ३३ । उत्तीप्रकार वसुरी
देवी रक्तनेत्र लालवर्ण पिगलाक्षी वरदाता इच्छानुसार कर्म कर्ता सदैव प्रसन्न
। ३४ । यमराज रुद्र और चन्द्रमा समेत कुबेर से सम्बन्ध रखनेवाले बड़े बलवान
जोग वरुण महाइन्द्र अग्नि । ३५ । वायुकुमार और ब्रह्माजी से सम्बन्ध रखनेवाली
देवियां; उत्तीप्रकार विश्णु सूर्य और वाराहजी से सम्बन्ध रखनेवाली बड़ी
बलवान स्वरूपमें अप्सरोर्षो के समान चित्तरोचक मनको प्रसन्न करने वाली
वात्सीर्षो में कोशिलार्षो के समान धनमें कुबेरकी तुल्य । ३६ । युद्धमें रुद्र इन्द्रके
समतुल्य और तेजमें अग्निके सदृशधी वह सदैव शत्रुओं के युद्धमें भयकी देनेवाली
होती है । ३७-३८ । उत्तीप्रकार इच्छानुसार रूपधारण करनेवाली वेगमें वायुके समान
ध्यान से बाहर बल पराक्रम रखनेवाली । ४० । वृक्ष यत्वर और निर्जत वनमें

and were powerful, sweet-voiced, young, well-decid, roaming at will
fleshless, white and gold coloured or of the colour of clouds smoke and
red. They had long hair long belly ear and breasts. Others were of red
eyes, givers of boons powerful and cheerful. 35 They had connection
with Yam, Rudra, Chandra, and Kuber, very powerful, connected with
Indra, Vayu, Brahma, Vishnu, Surya and Barah and were beautiful

केषु जवेचायुसमास्तथा । अचिन्त्यवलंबीयथाश्च तथाचिन्त्यपराक्रमा ॥ ४२ ॥ वृक्षच
 त्वरहासि-यज्ञतु-पपनिकेतना । गुहाश्मशानवासि-य. शैलप्रखण्डालया ॥ ४१ ॥
 नानाप्रकार-परिचर्यो नानामालयाम्बरास्तथा । नाताविचित्रवेशाश्च नानामावास्तथैवच
 ॥ ४२ ॥ पते चान्वे च वहसो गणा शत्रुसमूहया । अनुजगमुर्महात्मान् त्रिदशेन्द्रस्य
 सस्रमते ॥ ४३ ॥ ततः शक्यस्त्वमदवृज्जगवाद्, पाकशासन । गुहाय एज्जहार्ल विना
 शाय सुरद्विषाय ॥ ४४ ॥ महास्त्रता महाघण्टा घोतमाना लितमभाम् । तुष्णादि-
 णांश्च पताका भरतर्षभ ॥ ४५ ॥ वदो पशुपतिस्तस्यै स्वभूतसहाचमस । उमा नाना
 महारणा तुपोवीर्यवहान्विताम् ॥ ४६ ॥ अजेया स्वगुणैर्युक्ता नाम्ना सेना धनञ्जयाम्
 रुद्रतुल्यबलैर्गुणाधोधानामयुतैश्चभि । न सा विजानाति रणात् क्वाचिर्दिनिर्वात्त
 तम् ॥ ४७ ॥ विष्णुर्हृदो वैजयन्ती माला वलविवर्दिनीम् । उमा वदो विरजसी
 वाससी सूर्यसंनिभि ॥ ४८ ॥ गगा कमण्डलु दिव्यममृतोन्नमसुखायम् । ददौ भीत्या

निवास करनेवाली, गुफा और श्मशानवासिनी पर्वतों के भित्तियों में निवास कर
 वाली । ४१) नानाप्रकार के भूषण और माला रखनेवाली नानाप्रकार के विचित्र
 वेश रखनेवाली वह और अन्य २ बहुत-से शत्रुसमूहों को भय उत्पन्न करने वाली
 उस देवराज की आज्ञा से महात्मा कुमार के पीछे चली । ४२) इन् के पीछे
 मयवान इन्द्रने शक्ति सख अमुरों के नाशके लिये स्वामिकारिक को दिये । ४३)
 हे अतर्षभ कृद्राप्रमान और वडे यन्त्रेवाली प्रकाशित श्वेतमभा रखनेवाली, सूर्यके
 तर्ष अरुण पताकाको भी दिया । ४४) पशुपतिजी ने सब जीवोंकी उस वही
 सेनाको उन्न के भिजिजदी जो कि महाउग्र नानाप्रकार के शस्त्रों को धारण करते
 वाली तुष वल पुत्राकण से युक्त अजेय उत्तम गुणवाली धनञ्जय नाम से विख्यात
 और रुद्रजी के समान तीन अयुत शूरवीरों से सयुक्त थी वह सेना कभी युद्ध में
 हार फेरना नहीं जानती थी । ४५) और विष्णुजी ने वलको बढ़ाने वाली
 वैजयन्तीमालाको उमादेवी ने सूर्य के समान प्रकाशमान दो दिव्य - वस्त्र दिये
 भी गगाजी ने ब्रह्मी भीति से दिव्य और अमृतका उत्पन्न करनेवाला उत्तम

burial grounds and hill water falls. 41. They were adorned with
 garlands and other ornaments and were the terror of foes. They
 followed the Kumar by the order of the prince of gods. Then Indra
 gave him weapons to destroy the foes. He also gave the Kumar red
 banner with bells jingling from it. 45. Shiv gave him a large arm
 which was dreadful possessed of the power of asceticism unconquerable
 and well qualified known as Dhananjaya composed of thirty thousand
 of warriors brave like Rudra and unflinching. Vishnu gave him
 the garland known as Vijayanti which increased his power and
 Uma gave him a pitcher of ne tar, while Vrihaspati gave him a staff

कुमाराय दण्डस्त्रेण वृहस्पतिः ॥ ४७ ॥ गहरो दयितं पत्रं मयूरं विष्वद्विणिम् ॥ ४८ ॥
 अरुणसामुद्रकं प्रददौ चरणायुधम् । नागन्तु वरुणो राजा बलवर्धनसमन्वितम् ॥ ४९ ॥
 कृष्णाजिनं ततो ब्रह्मा ब्रह्मण्याय वदौ प्रभुः । समरेषु जयस्त्रेण प्रददौ लोकनाथनः ॥ ५० ॥
 सनापत्यमनुपाद्य स्फुन्दा देवगणभ्य इ । शुशुभे ज्वलितोच्छ्वसमान् द्वितीय इव पावकः ॥ ५१ ॥
 ततः पारिषदेभ्यश्च मातृभिश्च समन्वितः । यया दैत्यविनाशाच्च ह्लादयन् सुरपुंगवान् ॥ ५२ ॥
 सा मेना मेरुना श्रीमा सघण्टोच्छ्वसकतना । मन्वरी शस्त्ररजा सायुधा सपताकनी । शारदा घोरिधामामि ज्योतिर्मारुष शोभिता ॥ ५३ ॥
 ततो दूषतिकायान् नानामृतगणालया । वादयामासुरद्वयप्रामण शशाङ्क पुष्कलात् ॥ ५४ ॥
 तुष्टुबुल कुमारन्तु सयं देवाः सवासवाः । जगुश्च देवगणेषु मनुजेष्वप्यस्य रोगिणाः ॥ ५५ ॥
 ततः पितो महामन्त्रिद्वयो वरं ददौ । त्रिपुत्रं हस्तास्मि, समरे

कमण्डलु दिया आर वृहस्पतिजी ने कुमारके अर्थ दण्ड दिया । ४७ । मरुजान विचित्र पुच्छवाला सुन्दर मोरादिया । ४८ । अरुणने चरणायुधवाला ताम्रवृह दिया । फिर राजा वरुणने बल पराक्रमसे युक्त नागदिया । ४९ । इसके अनन्तर मधु ब्रह्माजी ने उस बदवाष्पणाके रक्षक कुमारको कृष्ण मृगदिया आर सुदा में विनय को भी दिया । ५० । तब स्वामिकात्तिकजी सब देवगणों के सनापिपद को पाकर दमर प्रज्वलित अग्नि के समान प्रकाशित होकर शोभायमान हुए । ५१ । फिर पापदा आर मातामा से युक्त स्वामिकात्तिकजी उत्तम देवताआका ममत्र काके दया के नाश करनेके लियेबले । ५२ । आर रात्रदाकाभावह भयानक रूप सनाघटे ऊंचे ध्वजा भरो शङ्ख मुरजा शस्त्र आर पताका रखनेवाला प्रकाशित शरीरों में शोभायमान शरदक्षुद्र के आकाशका समान प्रकाशमानया । ५३ । इसके पाछे देवताआके समूह आर सावधान नानाप्रकारके जीवसङ्घान उत्तम भरी आर शङ्खोंको बजाया । ५४ । फिर इन्द्रमतेत सब देवताओं ने कुमार स्वामिकात्तिककी स्तुतिको देवगणोंने गाया आर अप्सराओं के गणों ने नृत्याकिया । ५५ । नदनन्तर अत्यन्त प्रसन्नरूप स्वामिकात्तिकजी ने वरताओं के निामत्र यह वरदान दिया कि मैं उन शत्रुओंको मार्गा जा तुम्हारे मारनेके अभिलाषो

Garur gave him a wonderful peacock of beautiful tail. 50. Arun gave him a Tamrachur having feet for weapons. Varun gave him a powerful Nag and Brahma gave him a black deer as well as victory in war. Then Kartik went on with that large army and was glorious like fire. With Parshada and mother he went on to slay rakshases whose army was dreadful with glorious bodies shining like the stars of heaven and armed with weapons of sorts. 55. Then the groups of gods and other beings blew conchs and drums. Indra and other gods praised Kartik, the gandha-vas sang and apsaras danced. Then

ये वो ब्रह्मचिकीषवः ॥ १८ ॥ प्रतिगृह्य वरं देवास्तस्माद्विबुधसप्तमात् । प्रीतात्मानो
 महारामानो मेनिरे निहतान् रिपून् ॥ १९ ॥ सर्वेषां भूतसंघानां हर्षान्नादः समुत्थिता ।
 अपगतलोकांश्चापि वरे वृत्ते महात्माना ॥ २० ॥ स निदधौ महासेनो महत्या सेनया
 वृतः । वधाय युधि दैत्यानां रक्षार्थं च दिवोकसाम ॥ २१ ॥ व्यवसायो जयो धर्मः
 सिद्धिलक्ष्मीधृतिः स्मृतिः । महासेनस्य सेनानामग्रं जग्मुर्नगाधिप ॥ २२ ॥ स तथा
 भामया देवः शयमुद्धर हस्तया ॥ उच्चलितालातधारिण्या चित्राभरणवमेषा ॥ २३ ॥
 गदामुचल नाराचशक्तिनोमर हस्तया । हस्तसिंहनिनादिन्या विनष्ट प्रवधौ गदः ॥ २४ ॥
 तं हृष्टवा सर्वदेवैर्नाराक्षसादानवास्तथा । व्यद्रुच्यतः दिशः सर्वा भयोद्भिन्नाः समं
 ततः ॥ २५ ॥ अम्बुद्वयत देवास्तान् विधिघातुषपावयः । हृष्टवा च स ततः क्रुद्धः
 स्कन्दस्तजाबलान्वितः ॥ २६ ॥ शक्यस्य भगवान् श्रीमं पतः पुनरवास्तुजन् । अद्य
 उच्चार्यमन्त्रेण हृषिकेश इवानलः ॥ २७ ॥ ऊच्यमानं शक्यस्य स्कन्दनामिततजसा
 ॥ २८ ॥ तत्र प्रसन्नचित्तं महात्मा देवताभानि उत श्रेष्ठ देवतासे वरमदानलेकर
 शत्रुभोको मराह आ माना ॥ २९ ॥ महात्माको श्रीरसे वरके देनेपर स्वजीव सम्यो
 के प्रसन्नता के ऐसे शब्द उत्पन्नहुये जिनकेपारे तीनलोक पृथगोगये ॥ ३० ॥ वही
 सेनासमेत वह स्वामिकाशिकजी पुद्गे देवों के मारनेको और देवताओं के
 सेनाके निन्दभावात्कान्ना भहुये ॥ ३१ ॥ हे राजा निश्चय करके धर्मसद्धी लक्ष्मी
 भूत रक्षण यह मंत्र स्वामिकाशिकजी ॥ सेनाके आगे चली ॥ ३२ ॥ वह स्वामि
 काशिक देवता भयानक शूल मुद्गर हाथमें रखनेवाले उच्चलित शक्यपारी अहाऊ
 भूषण और कवच धारणकरनेवाले ॥ ३३ ॥ गदा मुझ नाराच शक्ति और तोमर
 धारी उन्मत्त सिंहके समान गजनेवाले सेनाके साथ गजतेहुयेवले ॥ ३४ ॥ भयसे
 महात्माकुल सर्वदेव दानव और राक्षस चारोंपार सब दिशाओं में भागे ॥ ३५ ॥
 नानामकारके शत्रुओं को हाथमें रखनेवाले देवताओं के सम्मुख गये तब तेज
 वरसे युक्त भगवान् स्वामिकाशिकजी ने उस सेना को देख बारम्बार क्रोधयुक्त
 होकर भयानकरूप शक्तिको उठा और अपने तेजको ऐसे धारण किया जैसे
 कि इन्पमें हाथेयुक्त अग्नि तेजको धारण करता है ॥ ३७ ॥ हे महाराज बड़े

cheerful Kartik gave the gods a boon, saying, " I shall slay your ene-
 mies." At this the gods believed their armies as already slain and
 cried for joy. Kartik then marched to slay the Daityas and to protect
 the gods. 61. Dharm, Sidhi, Lakshmi, Dhriti and Smriti followed
 Kartik, while he marched armed with various weapons and roaring
 like a lion. The Daityas and Danavas ran for fear. They faced the
 gods with weapons and Kartik hurled his spear again and again in
 anger and looked glorious like fire. Sparks of fire fell down with
 his spear and the wind blow as if it were the time of pralaya.

उल्कावाला मूँह राज पपात समुधानल ॥ ६८ ॥ सहृदय-तश्च तपो निर्घाताश्चाप
 तत्क्षितौ । यथात्क लसमये सुयोग्य स्युस्तथा नृप ॥ ६९ ॥ क्षिप्ता श्रेष्ठा यदा शार्क
 सुवारातलसन्नुना । ततः क्रोद्धो त्रिनिष्येतु शर्कानां, सुरतश्च ॥ ७० ॥ ततः प्रोन्नो
 महासेनो जघान भगवात् प्रभुः । वैद्येन्द्र तारक नाम महाबलपराक्रमम् । वृत् दया
 युनेर्वारैर्बलिभिर्दशानृप ७१ ॥ महिषश्चाष्टभि पशैर्हतं सख्ये निजघ्नितवान् । त्रिपा
 दन्वायुधशतैर्जघन दशभिर्भृत ॥ ७२ ॥ ह्रदोदरं निखर्वंश्च वृत् दशभिराश्वरं ।
 जघानानुचरैसाश्च विविधायुधगणिभि ॥ ७३ ॥ तत्राकुर्वन्त विपुलं नादं पश्यन्तु
 शत्रुषु । कुमारानुचरान् प्रत्यतो द्रिशो ददा । ननुतश्च प्रवल्गुश्च जहसुश्च मुदा
 ग्निता । ७४ ॥ शक्राख्यस्तु राजेन्द्र ततोर्ध्वभिः समन्तत । दग्धाः सहस्रशो
 दैत्या नादे स्फुन्दस्य चापरे ॥ ७५ ॥ शैलोक्य प्रासित सर्वे जम्भमाणाभिरैव च ।
 दग्धामहार्ध्विणार्ध्वभिः सगताद्वर्षता पुरो ॥ ७६ ॥ पृथकयावधृताश्च हताः केचित् सुर

तेजस्वी स्वामिकात्तिक, से शक्ति, अस्र, के, छोड़नेपर उल्का की उजलित अग्नि
 पृथ्वीपरीगरी । ६८, इमीप्रकार वायु से व युके सघटनों के शब्द शब्दको उत्पन्न
 करते ऐसे पृथ्वीपर गिरे जैम कि प्रलयकाल में बड़े घोरशब्द होतेहैं । ६९ । हेभर
 तर्षभ जब अग्निके पुत्रके हाथसे यह बड़ी घोर शक्ति छोड़ीगई । ७० । उस शक्ति
 से करोड़ों शक्तियां उत्पन्नहोगई । ७० । उसकेपीछे प्रसन्नचित्त भगवान् स्वामिका
 त्तिकजीने बड़े बल पराक्रमवाले तारक असुर को मारा ७१ । हेरज बलवान् आठ
 पक्ष एकबाल शस्त्रों देत्योंसे युक्त महिषासुरको भी कुमारने युद्धमें मारा । ७२ ।
 फिर उस ईश्वर ने एक करोड़ दैत्यों समेत त्रिपादको और नानाप्रकार के शस्त्रों
 को हाथमें रखनेवाले दश निखर्व दैत्यों समेत ह्रदोदरको मारा । ७३ । इसप्रकारसे
 शत्रुओं के मरनेपर दशोदिशाओं को पूरणकरते कुमारके साथियोंने बड़े शब्दकिये
 और प्रसन्नहोकर नृत्यकरतेहुये चेष्टाओंको करते प्रसन्नहुये । ७४ । हे राजेन्द्र
 इसकेपीछे शक्ति अस्र के चारोंओर को प्रउड़लत होनेसे तीनोंलोक सब ओरसे
 भयभीतहुये । ७५ । बहुत से शस्त्रोंसमेत हजारों दैत्य स्वामिकात्तिकजी के शब्दों
 सेही भ्रमहोगये और कितनेही असुर पताकासे घायल होकर मरगये कितनेही

Millions of spears came out from the spear hurled by Kartik 70
 Then Kartikeya slew Tarak of great prowess. He slew also Mahisha
 sur, and his large and powerful army of asura. He slew Tripad with
 a crop of daityas armed with various weapons and slew Hrid and
 his great army of rakshases. Thus, at the fall of those enemies, the
 companions of the Kumar, filling all the directions made a great noise
 and danced with glee. 75 The three worlds were terrified with
 the blaze of the spear, and hundreds and thousands of asurs died with
 the roar of Lord Kartik. Others fell down wounded by the canner or

द्विषः । कश्चिद्दृष्ट्वाऽथ व्रता निषेधुर्वसुधातले । कश्चिन्न प्रहरणाद्दृष्ट्वा विानपेतुर्गना
युषः ॥ ७८ ॥ एवं सुरद्विषोनेकान् बलवानाततायिनः । जघानु समरे धारः क्राचि
कथो महाबलः ॥ ७९ ॥ बाणो नामाथ दैतेषां बले पुत्रो महाबलः । क्रौंचपर्वतमा
श्रित्य देवस्यवानघावतः ॥ ८० ॥ तमश्रययान्महासेनः सुरदात्रमुदारधीः । स क्राचि

वचनादिनि

लस्कन्धरा

गोलागूल

॥ विनिष्प

॥ ८५ ॥

रवाकतः

र. अस्त्रां से

खण्डिते अग मरकर गिरपट्टे ॥ ७८ ॥ इस मकार बलवान धारपराक्रमी स्वामि
कात्तिकजीन उन मारनेके अभिलषी असंख्य दैत्य सप्तसादिकोंको मारा ॥ ७९ ॥
इसकेपीछे बलिके पुत्र महाबली बाणनाम दैत्यने क्रौंचपर्वत में आश्रित होकर
देवताओंके समूहोंको पीढामान किया ॥ ८० ॥ तब बड़े बुद्धिमान स्वामिकात्तिकजी
उस देवताओंके शत्रु बाणके समुत्सर्गसे लसने स्वामिकात्तिकजीके भयसे क्रौंच
पर्वत की शरणली ॥ ८१ ॥ इसकेपीछे बड़े क्रोधयुक्त भगवान स्वामिकात्तिक ने
क्रौंचपर्वतके समान गजनेवाले उस क्रौंचपर्वतको अग्निकी दीर्घ शक्तिसे पायल
किया ॥ ८२ ॥ जो कि शालहस्तके युद्धमें सबलवर्ण भयानक वानर और
हाथीवाला और बहुत उदनेवाले व्याकुल प्रतियोवाला बिलसे बाहर दौड़नेवाले
सर्पवाला ॥ ८३ ॥ गोलागूलभाग शीलाके समूहोंसे और कुरंगोंके शङ्खोंसे
शब्दायमान पृथ्वी और वन रखनेवालाथा ॥ ८४ ॥ अकस्मात् दौड़नेवाले और
भागनेवाले शरभ और सिंहोंसे शोचग्रतदशाको प्राप्तहोनेवाला वह पर्वत भी
शोभायमान हुआ ॥ ८५ ॥ उस पर्वतके शिखरपर रहनेवाले विद्याधर उल्लेख और

fell down helpless at the sound of bells, while some died of the wounds
of weapons. Thus brave Kartik slew an immense army of rakshasas.
Then Van, the son of Vali hid himself within Kraunch mountain and
from there harassed the army of gods, 80. Wise Kartik faced Van
the enemy of gods. He hid himself within Kraunch hill but Kartik
pierced through the hill with the spear presented to him by Agar.
The mountain was full of sal trees, dreadful vanars, elephants, birds,
snakes, bears, charabhas and lions, 85. The vidyadhars lying on
that hill sprang up and humans were disturbed by the fall of the
spear. Then, thousands of Dattys, with wonderful ornaments

॥८१॥ ततो दैव्य विनिष्पेतु शतशोप सहस्रशः । मदीसात् पर्वतभेष्टाङ्घ्रिभान्मरणकञ्जः ।
 तानिजघ्नुस्तिरुम्य कुमायुधरायुधे ॥ ८७ ॥ स खेच भगवान्कुञ्जो देवैर्भ्रष्टश्च सुतं
 सदा । सहानुजं जघानानु वृषं देवपतिर्यथा ॥८८॥ विभेद् शक्रया क्रौञ्चश्च पावकः
 परबीरहा । वडुया केकवा खेव कृशरामान महाबलः ॥ ८९ ॥ शक्तिः क्षिता रणे तस्य
 पाजिमेति पुनः पुनः । एतं प्रमाथेभग गल्लतो भूयश्च पावाकिः ॥९०॥ दौर्ध्याङ्घ्रिगुणयोगेन
 तेजसा चशशा भिया । क्रौञ्चस्तेन विनिर्मितो देव्याश्च शतशो हताः ॥ ९१ ॥ तत
 स्त भगवान् देवो निहत्य विभुधक्षिणः । सभाउपमानो विभुधैः परं हर्षमवाप ह ॥ ९२ ॥
 निभे क्रौञ्चे गिरिवरे चण्डपुत्रे च पातिने । ततो बु-भुमयोराजन् नेतुः शलाञ्च मात्त
 ॥ ९३ ॥ मुमुकुर्द्वैबयोवाश्च पृष्यवर्षमनुत्तमम् । योगिनामोश्चर देवं शतशोप सहस्रशः
 ॥ ९४ ॥ गन्धमुपादाय चवौ पुष्यश्च भारत । गन्धर्वास्तुष्टुमुञ्च्येन यञ्जानश्च महर्षेव
 ॥ ९५ ॥ केचिदेनं दृश्वस्यसिप पितामहकुतं प्रसुम् । सनरकुमारं सर्वेषां प्रसवोमि, तम
 प्रजम् ॥ ९६ ॥ केचिन्महेभ्यस्तुनं केचित् पुत्रं विभावसोः । उमायाः कृत्तिकायाश्च
 शक्तिके संपात शब्दमे प्रायञ्च किमरसोग न्याकुलदुये । ८६ । इसकेपीछे विचित्र
 भूषण रखनेवाले हजारों दैत्य, अत्यन्त, इबलितरूप उस उत्तम, पहाड़ से बाहर
 को दौड़े । ८७ । कुमारके पीछे चसनेवालोंने युद्धमें उनको पराजयकरके मारातब
 उमक्रोधपुत्र भगवाननेभी दैत्यराजके पुत्रको उसके भाईसमेत ऐसेमारा, जैसे कि
 देवराजने हजामुरको माराथा । ८८ । शत्रुके बीरों के मारनेवाले महाबली अग्निके
 पुत्रने बहुत रूपवाला और एक रूपवालाकरके शक्तिके क्रौंच पर्वतको घाबल
 किया युद्ध में फेंकी हुई शक्ति वारम्बार उसके हाथ में आतीथी इस के अनन्तर
 ऐसे प्रभाववाले मनवान् स्वामिकार्त्तिकजी शूरता द्विगुणित योग तेज यज्ञ और
 शोभासे महाप्रभाववाले हुये उनके हाथसे क्रौंच पर्वत टूटा और हजारों दैत्य
 लोग मारेगये । ९१ । उत भगवान् देवता ने असुरों को मारकर सुरों से सेवित
 होकर बड़े आनन्द को पाया । ९२ । हे भरतवंशी राजा जनमेजय फिर
 देवताओं के दून्दुभी और शाल वने और देवताओं की हजारों स्त्रियों ने उस
 योनियों के ईश्वर देवता कुमारके ऊपर, पुण्यों की वर्षाको किया । ९४ । और

came out of the hill, but the followers of the kumar vanquished and
 slew them. "The Kumar slew him and his brother as India had slain
 Vritrasur. He broke the Kraunch hill into pieces. The spear kurl'd
 by him came again and again back into his hand. Lord Kartik's
 bravery, glory, fame and prowess became double. The Kraunch moun-
 tain was broken and the Daityas were slain. 91. Having slain the
 asura the Kumar and his army were much pleased. The gods blow
 their conchs and drums and thousands of goddesses sprinkled flowers
 over him. The wind blew a fragrant breeze and the gandharvas and

गङ्गायाश्च वदन्त्युत ॥ ९७ ॥ एकधा च द्विधा चैव चतुर्धा च महाबलम् । योगीश्वर
महेश्वर देव शतशोऽसहस्रशः ॥ ९८ ॥ एतस्य कथित राजर्षिः कार्तिकेयमभिषेकतम् ।
भूपुत्रैव सरस्वत्यास्तीर्थवर्त्यश्च पुण्यताम् ॥ ९९ ॥ धूम्र तीर्थप्रवर इत्येषु सुरशत्रुषु
कुमारेण महाराजे त्रिभिष्टपमिवापरम् ॥ १०० ॥ वैश्वानराणि च तत्रस्थो ददावीशः
पृथक् पृथक् । तदा तैश्च नमुखोऽभ्युल्लेख्य पाषाणात्मजः ॥ १०१ ॥ एव स भगवांस्त
विमलीर्षे देयकुलान्तकः । अभिषिक्तो महाराज देवसेनापतिः सुरैः ॥ १०२ ॥ तैजस नाम
तत्तीर्थं वन्न पूर्वमपास्पतिः । अभिषिक्तः सुरगणैर्वरुणो भरतर्षभ ॥ १०३ ॥ तस्मिन्तीर्थे
वरे स्नात्वा स्कन्धश्चाभ्युच्यते लाङ्गली । ब्राह्मणेभ्यो ददौ दक्षम्, वासास्थामरणानि च
॥ १०४ ॥ उविश्व रजनी तत्र माघवः परवीरहा । पूज्यतीर्थवर तच्च स्पृष्ट्वा तोयञ्च

सुन्दर - दिव्य गन्धियोंको लेकर पवित्र वायुचली गन्धों समेत प्रह्व करनेवाले
महर्षियों ने स्तुतिकरी । ९९ । कोई इस प्रभुको ब्रह्माजीका वह पुत्र । निश्चय
करते हैं कि ब्रह्माजी से प्रकट होनेवाले सब के आदिभूत सनत्कुमार नाम हैं
। ९९ । कोई महेश्वरजीका पुत्र कोई उमा गंगा अग्नि और कृत्तिकाओंका पुत्र
कहते हैं । ९७ । उस योगेश्वर महाबली देवता को एक रूप दो रूप चाररूप और
हजारों लाखों रूपराला कहनेहैं । ९८ । हे राजा कार्तिकेयजी का यह अभिषेक
मैंने तुमसे कहा अब सरस्वती के उत्तम तीर्थ के मूल हेतुरूप वह धर्म की हृदि
को सुनो । १०१ । हे महाराज कुमारके हाथसे असुरों के मरनेपर वह अत्यन्त उत्तम
तीर्थ ब्रह्मे स्वर्ग के समानहुआ । १०० । वहाँपर नियत होनेवाले ईश्वर कुमार ने
पृथक् २, राज्य भासनों समेत तीनोंलोकों को देवताओं को दिया । १०१ । इस
प्रकार उस तीर्थपर दैत्योंके डुलके नाश करनेवाले वह भगवान् देव सेनापति
देवताओंकी ओरसे अभिषेक कियेगये । १०२ । हे भरतर्षभ वह तीर्थ तैजस नामसे
प्रसिद्ध है जिस तीर्थपर जलके स्वामी वरुण देवता देवसमूहों से अभिषेक किये
गये । १०३ । बलदेवजी ने उस उत्तम तीर्थपर स्नान करके स्वामिकार्तिकेयजी को
पूजकर सुवर्ण वस्त्र और भूषणादिक वस्तुओं को दान किये । १०४ । शत्रुके वीरों

rishis praised him 99 Some say that he is Sanatkumar the son of
Brahma, some call him the son of Ganga some of Agni and others of
Kritikas. They attribute to him one, two, four and million shapes.
I have told you the installation of Kartik, now hear of the holy Saras
wati. At the fall of the asurs by Kartik the holy place became like
another paradise. 100 The Kumar distributed the world among
gods for the sake of management. The Kumar was anointed command
er of the divine armies at the bank of the Saraswati. The holy place
is known as Taijas where Varun the lord of waters was anointed by
gods. Baldev bathed there and having worshipped Kartik gave

लांगली । इन्द्रः शितमनाश्चैव ह्यमघन्माध्वोत्तमः ॥ १०१ ॥ एतत्ते सर्वमाख्यातं ब्रह्मा-
 स्थं परिपूर्वकम् । यथाभिषिक्तो भगवान्स्कन्धो देवैः समागतैः ॥ १०२ ॥

इतिगदापुद्गपवाण्य वरुदेवतीथयात्रायां सारस्वतोपाख्यानं षट्त्वारिंशोऽध्यायः ॥ १०३ ॥

अतमेवमथ उवाच । अत्यद्भुतमिदं ब्रह्मन् ध्रुतवानस्मि तद्वतः । अभिषेकं कुमारस्य
 विस्तरेण वधा विधिः ॥ १ ॥ पश्यन्त्वा पृतमामानं विजानामि तपोधन । प्रवृत्तानि च
 रोमाणि प्रसन्नान्प्रसन्नोत्तम ॥ २ ॥ अभिषेकं कुमारस्य दैत्यानां च वदन्तथा । आथा मे
 परमा प्रीतिर्भूयः कौतूहलं हि मे ॥ ३ ॥ अपाम्पतिः कथं ह्यस्मिन्नाभिषिक्तः पुरा सुरैः ।

के मारनेवाले आपन इलधारी बलदेवजी वहा, एकरात्रि निवास करके उस तीर्थ
 राज महाएज्य तीर्थ को और उसके जल को स्पर्श करके । १०५ । बड़े प्रसन्नचित्त
 वये देखा जो तुमने पूछा कि कैसे स्वामिकार्तिकजीका अभिषेक हुआ वह सब
 मैंने तुमसे कहा । १०६ ।

अनपेजय-ब्रह्मो किं हे विजवर्य्य मेने कुमाके इत् अत्यन्न अपूर्व अभिषेक
 को विधिपूर्वक मूळ समेत सुना ॥ १ ॥ हे तपोधन मैं जिसको सुनकर अपने
 को पावित्र्य जालताहूँ मेरे शरीरके रोमांच प्रसन्नता से पूर्ण है और चित्तभी मेरा
 अत्यन्त प्रसन्न है । २ ॥ कुमारके अभिषेक और दैत्यों के नाशको सुनकर मुझ को
 बड़ा आनन्द हुआ । ३ ॥ हे बड़े ज्ञानी श्रेष्ठ वैशम्पायनजी इस तीर्थपर प्राचीन

ornaments to Brahmans. He stayed there one night and having
 touched of its holy water felt great joy. I have told you, king, all
 about the installation of Lord Kartik. 106.

CHAPTER XLVII

Janmejaya said, "I have heard thoroughly of the installation of
 Kumar and I think myself to be the better for it. The hair of my
 body stand with exultation and my mind is full of glee. I am exceed-
 ingly pleased to hear of the Kumar's installation and of the destruct-
 ion of Daityas. Pray let me know, wise Brahman, how Varun was

तन्मे ब्रूहि महाप्राज्ञः कुरालो ह्यसि सत्तन. ४ । वैशम्पायन उवाच । शृणु राजभिर्दु-
 चित्रं पूर्वकल्पेययातथम । आदौ कृतयुगे राजन् वत्तमाने यथाविधि ॥ ५ ॥ वरुण-
 देवता, स्वर्गः समेत्येवमथाभवत् । यथास्मान् सुरदाहृ शुको मवेभ्यः पाति सर्वदा
 ॥ ५ ॥ तथा स्वमपि सर्वासां सरितां च प्रतिभेषु । वास्तव्यं ते सदा देव । सागरे मकरा-
 ऋये ॥ ७ ॥ समुद्राय तव वशे अभिव्यति नदीपतिः । सोमेन साज्जुञ्च तव हानिबुद्धी-
 मविष्यतः ॥ ८ ॥ पयसिस्त्विति तान् देवान् वरुणो वाक्यमप्रवीत् । क्षणमास्य ततः-
 सर्वे वरुणं भाग्यराज्यम् ॥ ९ ॥ जर्षापतिं प्रबभूवि विविधद्वेषं कर्मणा । अभिविषय
 ततो देवा यत्नं यादसां पतिम् ॥ १० ॥ जम्बु, स्थानेषु, स्थानानि ब्रूजित्वा जलेषु
 रम् । अभिविषित्ततो देवैर्वरुणोपि महायशाः ॥ ११ ॥ सरितः, सामराज्येय महाभ्यापि
 सरासि ॥ । पालशामास विधिना यथा देवान् शतकतुः ॥ १२ ॥ ततस्तत्राप्युपहृष्टुद-
 यत्वा च विविध-वस्तु । अग्नितीर्थे महाप्राज्ञो जगामाय प्रलम्बदा । १३ ॥ नद्यो न-

समयमें वरुण देवता कैसे देवताओं से अनिपेक्ष करायगे उसको आप कहिये
 क्योंकि आप संपूर्ण हैं । ४ । वैशम्पायन बोले हे राजा इस अपूर्ण बुद्धान्तको जमे
 कि पूर्ण कल्पमें हुआ है उन सबको यथाशक्तीस मुझों कि सत्युक्त के मारम्भमें । ५ ।
 सब देवता वरुण से मिलकर यह वचन बोले कि, जैसे देवराज इंद्र हमको सदैव
 भयों से रक्षित करतारे । ६ । उसीप्रकार तुम भी, सब नदियों के स्वामीहो इंदेवता
 आपका निवास नकराके विवासस्थान, सागरमें, होव - यह नदियोंका स्वामी, समुद्र
 आपके आधीन, लोग और आपके ब्रुद्धि संयं चन्द्रमाके साथहोम । ७ । तब
 वरुण देवता उन देवताओंसे यह वचन बोले कि ऐसाही होव - इसकेपीछे सब
 देवताओं ने समुद्रमें विश्वास करनेवाले वरुण से मिलकर । ८ । वेदोक्त कर्मके द्वारा
 वरुणको जनोंका स्वामी किया फिर देवता सोच जलों के स्वामी वरुणको अभि-
 नेक्ष कराले । ९ । और पूजनादिक करके अपने श्लोकोंको गये तब देवताओं
 से अनिपेक्ष कियेहुये बड़े यत्नवान् वरुण ने थी । १० । नदी सागर नद और सरो-
 वरों को भी विषिते ऐसे पोषणकिया जैसे इन्द्रदेवताओं को पोषण करता है
 । ११ । इसकेपीछे प्रलम्ब के मारनेवाले बड़ेझानी बलदेवजी उन तीर्थ मेंभी स्नान

appointed by gods in the days of yore." Vaishampayan said, "Hear
 carefully what happened in former days : in the beginning of Sat-yug
 all the gods came to Varun and said, " You are lord of waters and
 you should save us from all fear as Indra does. Let your abode be
 among aquatic animals. The Ocean which is lord of all rivers, will
 obey your commands, and your rise and fall will depend on the moon."
 Varun consented and the gods coming together at once appointed
 him lord of waters. 10. Then they went to their own houses
 and Varun ruled over the ocean and rivers as Indra does over gods.
 Baldev bathed at that holy place and having given junctions to

हृद्यते यत्र शमीगर्भे हुनाशन । लोकालोकविनाशो च प्राबुभूते तदानघ । उपतस्थ
 सुरा यत्र सर्वे लोकपितामहम् ॥ १४ ॥ अग्निः प्रनष्टो भगवान् कारणञ्च न विप्रहे ।
 सर्वभूतक्षयो मा भूत् सम्पाद्य विमानिलम् ॥ १५ ॥ जनमेजय उवाच । किमर्थं भगवा
 नग्निं प्रनष्टो लोकभावनः । विहातश्च कथं देवैस्तन्ममाश्वश्व तस्वत ॥ १६ ॥ वैशम्पा
 यन उवाच । भृगुः शपाद्भृश भीतो जातबेदा प्रतापवान् शमीगर्भमथासाद्य ननाश
 भगवास्ततः ॥ १७ ॥ प्रनष्टे तु तदा घृणो देवा सर्वे सवासवा । अत्यन्तं ब्रह्म नष्टं
 उच्यते भृशं तु खिता ॥ १८ ॥ ततोऽग्नितीर्थमासाद्य शमीगर्भेऽथमेव हि । बृहशुर्ज्वलन्
 तत्र वसमानं यथाविधि ॥ १९ ॥ देवा सर्वे नरोऽप्यथ बृहस्पतिपुरोगमाः । उच्यन्त त समा
 साद्य प्रतापवान् सवासवाः ॥ २० ॥ पुनर्वथागतं जम्बु खर्वमदधश्च सोमवत् । भृगो
 शपावन्महीपाल बहुक ब्रह्मवादिना ॥ २१ ॥ तथाऽप्याप्लुत्य मतिमान् ब्रह्मयोनिं जगाम

आचमन करके नानाप्रकार के घनका दानदेकर उस अग्नितीर्थ को गये । १३ ।
 अर्थात् कि देवतालोग सबलोकों के पितामह ब्रह्माजीके समीप नियत हुये और
 कहने लगे हे भगवन वहाँ अग्नि गुप्तहोगये परन्तु इसका हेतु हमनहीं जानते हैं
 । १४ । शमीगर्भ में वह गुप्तहोनेवाले दिखाई नहीं पड़ते हैं सो हे निष्पाय सब
 गुप्त प्रकट संसार के नाश प्रकटहोने में सब जीवोंका नाश न होय है । समर्थ इस
 में आप अग्नि को उत्पन्न करो । १५ । जनमेजय बोले कि लोकभावन भगवान्
 अग्नि किस निमित्त गुप्तहुये और किस रीतसे उनको देवताओं ने जाना यह
 सबबृहस्पति आप मुझसे कहिये । १६ । वैशम्पायन बोले कि भृगुजीके शाप
 से अत्यन्त भयभीत प्रतापवान भगवान् अग्नि जब शमीगर्भ को पाकर अहङ्क
 हुये । १७ । तब इन्द्र समेत सब देवता अग्नि के गुप्तहोनेपर अत्यन्त दुःखी हुये
 और उस गुप्त होनेवाले अग्नि को अन्वेषण किया । १८ । फिर अग्नि तीर्थ को
 पाकर शमीगर्भ में नियत होनेवाले अग्नि को विधिपूर्वक पूजन करके शमीमें ही
 देखा । १९ । हे नरोत्तम इन्द्रसमेत वह सब देवता जिनके अग्रवर्ती बृहस्पतिजी
 थे उस अग्नि को पाकर बहुत प्रसन्न हुये । २० । तदनन्तर अपने लोकों को गये

Brahmans, proceeded to the place consecrated to Agni, where the
 gods complained before Brahma of the disappearance of Agni and
 asked him to discover Agni to save the world from ruin.
 15. Janmejaya said, 'I pray tell me the cause of the
 disappearance of Agni and also how the gods discovered him.'
 Vaishampayan said, "Afraid of the curse of Bhṛigu, Agni disappeared
 and Indra and other gods were much distressed and made a search
 for him. They came to Agni-tīrth and discovered him hidden in
 Shami. Indra and other gods led by Vrihaspati were much pleased
 to find out Agni. They went back to their own places and again

ह । ससर्जं भगवान् यत्र सर्वलोकपितामहः ॥२२॥ तत्राप्स्यत्य ततो ब्रह्मा सह देवेः प्रभुः
पुरा । ससर्जं तीर्थानि तथा देवतानां यथाविधि ॥ २३ ॥ तत्र स्नान्वा च वृत्वा च
वसूनि विविधानि च । कौबेर प्रथमो तीर्थं यत्र तपसा महत्तपः घनाधिपत्यं
समाप्तो राजकैवल्यः प्रभुः । २५ ॥ तत्रस्थमेव तं राजन्धनानि निवयत्तथा ।
उपतप्युर्नरभेष्ट तर्षीर्षं लालसी ततः ॥ २६ ॥ गत्वा स्नात्वा च धिक्
वृषाणोऽथो धनं ददौ । ददौ तत्र तत् स्थानं कौबेरं कामनोरुमे । पुरा यत्र
तपस्तप विपुलं सुमाहमना । वक्षराणां कुबेरं वरा लक्ष्माश्च पुष्कलाः ॥ २८ ॥ घना
धिपत्यं सवञ्च दरेष्वामितेजसा । सुरत्व लोकपालत्वं पुत्रञ्च नलकूवरम् ॥ २९ ॥
यत्र लभे महाबाहो घनाधिपतिरञ्जसा । अभिपिपत्तवञ्च तत्रैव समागतञ्च महद्गुणैः

हे राजा वह अग्नि भृगुजी के शापम सर्वभक्षी हुये उस तीर्थ में भी ब्रह्मनादियों
के कहने से वह ज्ञानी बलदेवजी स्नान करके ब्रह्मयोनिये नाम तीर्थको गये जहाँ
पर किं सब लोकों के पितामह प्रभु भगवान् ब्रह्मजी ने । २२ । संसारकी पूर्वे
मूर्ष्टिमें देवताओं समेत उस तीर्थ में स्नान करके । २३ । विभि के अनुसार देवताओं
के तीर्थको उत्पन्न किया । २४ । बलदेवजी वहाँपर स्नानकर अनेक प्रकार के
धनोंका दानकरके कुबेर तीर्थको गये वड़े तपस्वी प्रभु कुबेरजीने वहाँ बड़ी तपस्या
करके धनोंकी ईश्वरता को पाया । २५ । हे राजा सब धन और रत्नोंकी स्नाने उस
तीर्थपर निवत होनेवाले कुबेरजीके पास आकर वर्तमान हुई हे नरोत्तम इलधारी
बलदेवजीने उस तीर्थपर जाकर । २६ । विधिपूर्वक स्नान करके ब्राह्मणों के
अर्थ धनदिया वहाँ उन्होंने कुबेरजी के उत्तम वन में उस स्थान को भी देखा
जहाँपर चक्षुराद् महात्मा कुबेरजी ने बड़ी तपस्यां करके भेष्ट वरों को प्राप्त किया
था । २८ । सब धनों की ईश्वरता वड़े तेजस्वी रुद्रजी के साथ मित्रता देवभान
लोकपाल का अधिकार और नलकूवर नाम पुत्रको पाया । २९ । हे महा
राज वहाँही कुबेरजी ने ऊपर सिलेहुये अभीष्टोंको पाकर उसी स्थान में महद्गुणों

became all-devouring by the curse of Bhṛigu. Baldev bathed there
and then proceeded to Brahm-yoni where Brahma had bathed in
former days and created a holy place for gods. Having bathed
there and given donations, Baldev went to the holy place of Kuber
where the latter had performed asceticism and become the lord of
wealth 25. The mines of all wealth and jewels came there to Kuber.
Baldev bathed at that holy place and gave donations to Brahmans.
He saw there the holy place in the forest where Kuber had perform-
ed asceticism and got boons of becoming lord of wealth, friendship
with Rudra, godhood, the post of a lokpal and a son named Nalukwar.
There Kuber got the above boons and was accouted by Marutas 30.

॥ ३० ॥ वाहनान्नास्ति तद्वत् सुसंयुक्तमनोजवम् । विमानं पुष्पकं दिव्यं नैश्वर्यैश्वर्यं
 मेव च ॥ ३१ ॥ तत्राप्लुत्य यत्ना राजन् दत्त्वा दायान्श्च पुष्कलान् । जगाम स्वरितो राम
 स्तीर्थं द्वेदानुलेपनः ॥ ३२ ॥ नियतितं सधसत्वेनाग्ना घदरपाचनम् । नानपुष्पकफलो
 पतं सदा पुष्पकं शुभम् ॥ ३३ ॥

इति महाभारतपर्वणिः बलदेवतीर्थयात्रायां समवेत्वाशिष्यायः ३४७ ॥

समेत अभिषेककोपी प्राप्तकिया ॥ ३० ॥ और उनको नैश्वर्यनाम, राजमाँका
 राज्य और वह दिव्य सवारों दी गई जो कि इसी से सेवित मनके समान शीघ्र
 गामी पुष्पक विमान है । ३१ । बलदेवजी वहाँ स्नान करके उचमदानोंको देकर
 शीघ्रही उसद्वेदानुलेपन नाम तीर्थको गये । ३२ । जो कि सधमकार के जीवाँसे
 सेवित अत्यन्त शुभ और सदैव फलफूल रखनेवाला बदरपाचन नाम है ३३ ॥

He was made the ruler of rakshases and got a divine car drawn by swans swift like the mind. Budev bathed there and having given donations, proceeded to Shwetanu-lepan-tirth which abounds in all sorts of benigs as well as fruits and flowers and is known as Bidarpa-chau ॥ 33 ॥



वनेऽवतः । १० ॥ इत्युक्तो भगवान् देवः स्मयन्निव निगिद्य ताम् । उवाच नियमं
 धारता साम्बन्धिविभ भारत् ॥ ११ ॥ उग्रं तपश्चरसि वै विदिता मेसि सुव्रते । यद्युग्रं
 यमारुहस्तस्य कन्याणि हृद्गतः ॥ १२ ॥ तद्वच सर्वं यथाभूतं अविद्यति वरानमे तपसा
 लभ्यते सर्वं सर्वं तपसितिष्ठति ॥ १३ ॥ यानि स्थानानि विद्यानि विदुश्चानां शुभानि
 तपसा तानि प्राप्याणि तपोमूलं महत् सुखम् ॥ १४ ॥ इह कृत्वा तपो घोरं देहं संपश्य
 मानवाः । इवत्वे यानि कन्याणि भ्रूणं चैव यथा मम ॥ १५ ॥ पश्य चैतानि शुभानि
 च्छराणि शुभानि । पश्यत्युक्त्वा तु भगवाद् अगाम बलसूदनः ॥ १६ ॥ आमःप्य तां
 कन्याणीं ततो जप्यं जजाप स । अविदुरे ततस्तस्माद्वाभमात्पीथं मुत्समम् । इन्द्रतीर्थं
 तिष्ठिष्याते त्रिषु लोकेषु मानव ॥ १७ ॥ तस्य जिज्ञासनायै स भगवाद् पाकशासनः ॥

युक्तोका ईश्वर इन्द्र व्रत नियम और तपस्या के द्वारा मुक्त सत्सन् करने के योग्य है । १० । भरतवेशी इस प्रकार के वचन सुनकर भगवान् देवता मन्दमुस कान करताउसको देखकर और उसके नियमको जानकर बड़े मधुरवाणीसे यह वचन बोला ११ । हे सुंदरतवाली कल्याणिनि मुक्तोको वह सब विदित है जिस प्रयोजन के निमित्त यह कर्मका प्रारम्भ तरे विषयमें वर्तमान हुआ है और उग्रतप को करती है । १२ । हे सुन्दरमुखी जैसा तरे विषयमें विचार हुआ है वह सहीना और जैसा तैने विचार किया है वह तपस्या के ही द्वारा प्राप्त होता है हे सुभमुखी जैसे कि देवताको के दिव्य लोक हैं वह तपसे प्राप्त होनेके योग्य हैं वडे सुखका मूल तप है । १४ । हे कल्याणिनी इस प्रकार मनुष्य घोर तपस्या करके अपने शरीरको त्याग कर देवभाव को पाते हैं अब तू मेरे वचन को सुन हे सुन्दरव्रत और देवत्ववाली सुभ-इन पांच बदरीफलों को पकाको भगवान् इन्द्र इतना करकर बलेगये । १६ । और उस ने भी उस कल्याणी से पूछकर वहां जपको जपा इस के पीछे उस आश्रम से थोड़ी दूरपर वह उत्तम तीर्थ तीनो लोकों में इन्द्रतीर्थनाम से प्रसिद्ध हुआ

thing you desire with the exception of my hand. I am pleasing Indra with my devotion. 10. Indra was pleased with her conduct and with a smile he said to her, "I know all that passes within thy heart and the purpose for which you are performing asceticism. The desire of your heart will be accomplished. Such things are obtainable through asceticism alone. The divine regions are obtainable through asceticism which is the root of all happiness. Through it people become gods when they leave their bodies. Give your mind to what I say and cook these five jujube fruit which I give you." Having said this, Indra went away. 16. He too, performed asceticism in the vicinity and the place was known as Indra-tirth. To test her steadiness he stopped

वदराणांमपचन खकारविवुधाइपि ॥ १८ ॥ ततः प्रतप्ता सा राजन् चाग्यता विगत
 क्लमा । तत्परा शुचिसम्बिता पावके समाधिभयत् ॥ १९ ॥ अपचद्राज्यादूल वद
 राणि महाप्रता । तस्या पचन्याः सुनहान् कालोगात् पुरुषर्षभा ॥ च स्मृताग्य पच्यंत
 दिनश्च क्षयमभ्यगात् ॥ २१ ॥ हुताशनेन दग्धश्च यस्तस्याः काण्डसम्भवः । अकृष्ट
 मग्निं सा इष्ट्वा स्वशरीरमघादइत् ॥ २२ ॥ पादौ प्राक्षय्य सा पूर्वं पावके चारुदर्शनाः
 दग्धौ दग्धौ पुनः पादाभुपावर्त्तयतामवा ॥ २३ ॥ चरणौ दृष्टमानौ च नाबिन्तयदग्निं
 दिताः । कुर्वाणा दुष्कं कर्म महर्षिम्रियकाम्यया ॥ २४ ॥ न वैमनस्यं तस्यास्तु मुखं
 दोषवासवत् ॥ हातोरमाग्निनादृष्य जलमध्येऽ हर्षिता ॥ २५ ॥ तच्छास्या घचन नित्यमथ
 संकृदि भारत । सर्वथा वदराभ्येव पक्कन्यानीनि करयका ॥ २६ ॥ सा तन्ननसि कृत्वा वै
 महर्षिबन्धनं शुभा । अपचद्राज्याभ्येव न चापच्यन्त भारत ॥ २७ ॥ तस्यास्तु चरणौ

। १७। हे बड़ाई देनेवाले उस देवराज भगवान् इन्द्रने उसकी परीक्षाकालिये वदरफलों
 का परिपाकहोना बन्द करादिया १८ हेराजा तब वह बड़ीतपस्विनी वार्त्तालाप में
 चतुर बकापदसे रहित उसमेंही प्रवृत्त पवित्र शरीरवालीने अग्निमें लकड़ीरक्खी १९
 हे राधास्यो मैं अष्ट उमवड़े व्रतवाली ने उन वदरफलोंको पकाया । २० । और
 परिपक्व करतेहुये उस पकानेवालीका बहुत समय व्यतीतहुआ पर वह फल नहीं
 पके और दिन समाप्तहोमवा । २१ । इसका जितना इंधनका देखा वह सब अग्नि
 में भस्महोगया फिर उसने अग्निको इंधनसे खाली देखकर अपने शरीको भी
 भस्म करदिया । २२ । प्रथम अपने दोनों चरणोंको अग्निमें डालकर फिर उस
 निष्पाप ने जलेहुये चरणोंको आगेआगे बदाना प्रारम्भ किया । महर्षिकी इच्छा
 से कठिन कर्म करनेवाली निर्दोषने जलतेहुये चरणों से कुछभी दुःख से दिग्ता
 नहीं की । २३। पैरोंके जलने परभी उसके चित्तमें उदासीनता और रूपान्तरता
 नहींहुई शरीरको अग्निसे प्रज्वालित करके जलमें वर्त्तमान होनेके समान प्रसन्न थी
 । २४। हे परतपशी उसका वह वचन । बारम्बार हृदयमें वर्त्तमान हुआ कि सब
 दशा में वदरफल पकाने के योग्य हैं उस शुभकन्याने । २५। महर्षिके उस वचनको
 चित्तमें नियत करके वदरफलों को पकाया परन्तु वह नहींपके । २७। भगवान्

the cooking of those fruits She continued to put one stick after another into fire to cook them. 20. Much time was lost but the fruits were not cooked till it was sunset. All her store of fuel was exhausted and then she began to burn her own body. She put her legs within fire and they burnt gradually, yet she was careless of the pangs. Her features did not alter under the trial and she was cheerful as if her body was within water. 25. She remembered Indra's words, to the effect that she should cook them under all conditions. She cooked them on but to no purpose Fire burnt her

बहिनर्हदाह भगवान् स्वयम् । न च तस्या मनो बुद्धे स्वल्पमप्यभक्षत्वा ॥ २८ ॥ अथ
 तत् कर्म दृष्ट्वास्याः प्रीतस्त्रिभुनेभ्यः । ततः सव्यश्यामास कन्यायै रूपमारमनः ॥ २९ ॥
 उवाच च सुरभेद्रतां कन्यां सुतृडमताम् । प्रीतोस्मि ते शुभं भक्त्या तपसा नियमेन
 च ॥ ३० ॥ तस्माद्योगिमत्त कामः स ते सम्पत्स्यते शुभे । देहं त्यक्त्वा महाभागे त्रिदिवे
 मयि वरस्यसि ॥ ३१ ॥ इच्छन्ते ते तीर्थधरं स्थितं लोके भक्तिर्वात । सर्वं पाप्मपाहं
 सुभ्रु नाम्ना वदस्वात्मनाम् । विस्वातं त्रिभु लोकेषु ब्रह्मर्षिभिरभिष्टुतम् ॥ ३२ ॥ अस्मिन्
 काले महाभाग शुभे तीर्थधरे । त्यक्त्वा सतर्पयौ अमुर्षिभ्यस्तत्र कुरुष्वतीम् ॥ ३३ ॥
 ततस्तं वै महाभाग गत्वा तत्र सुशंसिताः । दूरयथे फलशूलानि तस्माद्दुःखयुः किल
 ॥ ३४ ॥ तेषां वृषधिमं तत्र वसती दिग्बलने । गनाहृष्टिरपुमाता तवा द्वावशाबाधिका
 ॥ ३५ ॥ ते कृत्वा आश्रम तत्र त्वयसत्त तस्त्रिभुः । अहन्वरेण्यि कन्द्याणी तप्रेणिरया
 भवत्त्वा ॥ ३६ ॥ अहन्वरी ततो दृष्ट्वा तीः निवमभिरिपताम् । दयादभिरिपयनः

अग्निने आप उतके पर्योक्तो जलाया तपनी उतके पित्तमे द्विसी मुकारके दुःख
 का लवलेश नर्हदुष्मा । ३८ । इतके पीठे तीनों भुवनका ईश्वर इन्द्र तसके द्रुपको
 देवकर प्रसन्नदुष्मा और अपना मुख्यरूप कन्द्याको दिखलाया । २९ । और : इसरह
 मतवाली कन्यासे बोले कि हे शुभे मैं तेरे नियम भक्ति और तपस्या ते प्रसन्न
 हूँ । ३० । हे शुभदर्शन अद तेरे अभीष्ट सिद्धहोगा हे महाभाग तू इस शरीर को
 त्यागकरके स्वर्ग में मेरेसाथ मुत्तपूर्वक निवासकरेगी । ३१ । हे सुन्दर भृजुटीवाली
 यह तेरा वदस्वात्मनाम् उपाय तीर्थ सवपापोंका हरकरनेवाला लोकमें विस्वात
 होकर नियतहोगा जो कि तीनोंलोकों में विख्यात और ब्रह्मर्षियों से स्तुत-
 मानर्ह । ३२ । हे महाभाग निष्पाप निन्द्य करके इस शुभ और उत्तम तीर्थपर
 सप्तर्षि अहन्वरीको त्यागकरके दिमासय पर्वतपरगये । ३३ । इतके पति पक्षुडे महा-
 भाग तेजवतपारी वहाँ जाकर आजीविका के निम्न तप्य फलमूर्तों के
 लेनेको वहाँ उठे । ३४ । सब उतहिमालयके वनमें उनजीपिष्ठासे प्रभितापी ऋषियों
 के निवास करनेपर दाहवर्षला दुर्भिक्ष वर्त्तमानहुआ । ३५ । तब वह सातोपस्त्री
 वहाँ आश्रम को बनाकर उठे उस समय ६३ कन्याणिनी दाहन्वती भी संईव

feet but she did not give up her object. Indra was pleased with her devotion and showed himself in his true form, saying, "I am well pleased with thy devotion. 30. Thy desire will be accomplished. After leaving your body you will live happily with me in heaven. This holy place will be respected by all the world as Badarpahan. Here the seven rishis left Arundhati and went up the Himalayas, to perform asceticism and lived there, eating fruits. While they were living there, a twelve years severe famine took place, 35. The seven ascetics continued to live there in a hermitage, while Arundhati was

सुप्रीतो वरदस्तदा ॥ ३७ ॥ ब्राह्मं रूपं ततः कृत्वा महादेवो वहापराः । तामप्येत्यात्र
 विदितो भिक्षामिच्छाम्यहं शुभे ॥ ३८ ॥ प्रत्युपाच ततः सा तं ब्राह्मणञ्चाकरोत् ।
 क्षीणोऽन्नसन्धयो धिप्र वदराणीह मस्य ॥ ३९ ॥ ततोऽब्रवीन्महादेवः पञ्चस्यैमानि
 भ्रूयते । इत्युक्त्वा सापचक्षति ब्राह्मणमियक म्या ॥ ४० ॥ अघिभित्त्य समिद्धेनौघद
 राणि पशस्विनी । दिव्या मनोरमाः पुण्याः कथाः शुभाश्च सा तदा । अतीता सा स्वना
 वृद्धिर्वैरा द्वादशवार्षिकी ॥ ४१ ॥ जनदनगत्या पञ्चस्याञ्च श्रुयन्त्याञ्च कथा शुभा
 दिनेपमः स तस्याञ्च कालोतीतः सुवार्दणः ॥ ४२ ॥ ततस्ते मुनयः प्राप्ता फलान्यार्षिश्च
 पर्वतात् । ततः स भगवान् प्रीतः प्राञ्चान्वादन्यती तदा ॥ ४३ ॥ उपसर्पञ्च धर्मज्ञे यथा

तपस्याके करने में प्रवृत्त हुई । ३७ । फिर अरुन्धती को तीव्र नियम में नियतवत्स
 कर अत्यन्त प्रसन्नमूर्ति सवरो के देनेवाले शिवजी महाराज आपहुँचे । ३७ ।
 अर्थात् वह पशवान् देवता महादेवजी ब्राह्मणका रूप धारण करके उसके पृष्ठ
 भाग में जाकर बोले कि कि हे शुभस्त्री मैं भिक्षा को चाहता हूँ । ३८ । तबवत्समुन्दर
 दर्शनने उस ब्राह्मणको उत्तरदिया कि हे वेदपाठी अनानकादेर नाशहृन्ना यहाँ
 आप वदरफलों को भक्षणकरो । ३९ । यद्वात सुनकर महादेवजी ने कहा कि हे
 मुन्दरवत्स तुम इनवदरफलों को पकाओ इस प्रकार शिवजी के वचन को सुन
 कर उस पशस्विनी ने ब्राह्मण के हितके लिये उन वदरफलों को प्रकाशित
 अग्नि पर चढ़ाकर पकाया और चित्तगत धर्मकी छद्म के हेतुरूप दिव्य
 कथाओं को भी सुनाया उतने अन्तर में वह बारहवर्ष का दुर्भिक्ष समाप्त हुआ । ४० ।
 उस भोजन न करनेवाली और शुभकथा सुननेवाली अरुन्धती का वह वहा
 भयानक समय एक दिनके समान व्यतीत हुआ । ४१ । इससे पीछे मुनिछोग
 पर्वतके फलोंको लेकर आगये इसहेतुसे वह प्रसन्नचित्त भगवान् शिवजी अरुन्धती
 से बोले । ४२ । कि हे धर्मज्ञी जाननेवाली मैं तेरे धर्मरूपी तप और नियम से
 प्रसन्न हूँ अब तुम प्रथमके समान इस ऋषियोंके पासजाओ । ४३ । तदनन्तर

engaged in performing asceticism. Shiv was pleased with her devo-
 tion and himself came to her in the form of a Brahman. He came to
 her from behind her back and begged alms. 38. The beautiful
 woman said to him, "Our store of grain is exhausted, you may take
 plums to eat." At this Mahadev asked her to cook them and she
 put them on fire. While the plums were thus being cooked, she
 entertained the guest with religious stories till the twelve years
 famine had disappeared. 42. She passed the dreadfully long time
 like a day. Then the munis came down from the hills with fruits
 and Shiv, much pleased, said to Arundhati, "I am well pleased with
 thy asceticism." He mentioned the deed to the rishis, saying, "Your

पूर्वमिमानुषीन् । प्रोतोस्मि तव धर्मज्ञे तपसा नियमेन च ॥४५॥ ततः सन्दर्शयामास
 स्वं रूपं भगवान् दुरः । प्रोतोऽग्र्योऽसदा तेऽपस्तस्याश्च खरितं महत् ॥ ४६ ॥ भवन्निहि
 मवापुष्टे बुक्ष्य सभुपाञ्जितम् । अस्याश्च पत्तपो विमान समं तन्मतं मम ॥ ४७ ॥
 अनयः हि तपस्विन्या तद्वृत्तं सुदुभ्रमम् । मनश्मत्या पचन्त्याश्च च समा द्वादश
 परिनाः ॥४८॥ ततः प्रोवाच भगवांस्ताभिधाकन्धती पुन । वरं वृणोष्वै । कल्याणि
 यक्षेभिलपितं हृदि ॥ ४९ ॥ साध्वीत् पृथुताप्राची देवं सप्तर्षिं ससदि । भगवन् शक्तिमे
 प्रात्रलीधे स्याद्विदमुत्तमम् । ५० ॥ सिद्ध देवर्षिर्दत्तिते नाम्ना । वदरपाचनम् । तथा
 सिद्धेभ्यश्च देवेश त्रिगुणमुषितः शुचिः । प्राप्नुवाद्दुपवासेन फले द्वादशवर्षांशिकम् ॥ ५१ ॥
 एवमस्त्विति तां देवः प्रत्युवाच तपस्विनीम् । सप्तर्षिभिरुतो देवस्ततो नाक ययौ
 नदा ॥ ५२ ॥ श्रुत्यो विस्मयं जग्मुस्तं हृत्वा चाप्यकन्धतम् । अश्रान्तश्चाविषणो ब
 क्षात्पवासासदांसरीम् ॥ ५३ ॥ एवं सिद्धिः परा प्राप्ता अकन्धरया विशुद्धया । यथा

भगवान् हरने अपने रूपका अठ्ठे प्रकारसे दर्शन दिया और उसके बड़े कर्मको
 श्रुतियोंके आगे बगुने किया । ४६। कि आप लोगों ने हिमवान पर्वत पर जो तप
 पात्रकिया और इमकाभी जो तप है हे ब्राह्मणों वह तुम्हारा तप इनके तपकी समान
 मेरी बुद्धि से नहीं है । ४७। इस तपस्विनी ने बड़ी कठिनतासे करनेके योग्य
 तपको तपा है इस भोजन न करनेवाली और वदा पकानेवाली ने बारहवर्ष व्यतीत
 किये । ४८। इनके पीछे शिानी अकन्धती से फिर बोले कि हे कल्याणिनि
 जो तेरे हृदय में इच्छा होय उगवरकी मांगो । ४९। तब वह रक्त और दीर्घ
 नेत्र रखनेवाली अकन्धती सप्तर्षियोंकी सभा में देवता शिवजी से बोली कि हे भग
 वान् जो आप मुझपर प्रसन्न हो तो यह तीर्थ अपूर्व होजाय । ५०। अर्थात् सिद्ध
 देवर्षियोंका प्यारा वदरपाचन नामने विरुपाक्ष होय हे देवेश इस प्रकार से इस
 तीर्थपर तीनरात्रि निवास करनेवाला पवित्र मनुष्य व्रतके द्वारा बारह वर्षके व्रतके
 फल को पावे । ५१। तब देवता ने उस तपस्विनी अकन्धतीसे कहा कि ऐतद्दि
 होय तदनन्तर सप्तर्षियों से स्तूपयान होकर देना शिवजी स्वर्ग को गये । ५२।
 श्रुतियों ने भी उस अकन्धती को देखकर बड़े आश्चर्य को पाया जो कि यका
 वट से रहित विररीत रूप और लुधा पिपासासे बुक्षयी । ५३। इसरीति ने, उस

asceticism on the back of the Himalayas was not equal to that of this woman. 47. She has performed a severe asceticism and passed twelve years in cooking the plums." Then turning again to Arundhati, Shiv said, "Ask any boon you desire." Then she of large and red eyes asked Shiv in the midst of the seven rishis, "If you are kind to me, let this holy place become matchless. Let this place be known as Badaripatan the favourite resort of siddhas and sages and one residing here three nights, get the merit of observing a twelve years vow."

त्वया महामार्गं मर्त्यं शस्त्रिणव्रते ॥ ५५ ॥ विशयो हि त्वया भूदे प्रने श्वास्मिन्। समर्षि
तः। तथा वेद-ददास्यद्य नियमं सुतोषितः ॥ ५६ ॥ अरुन्धत्या वरस्तस्या यो वृत्ता
हे महारमना। तस्य चाह प्रभावेन तव कल्याणि तेजसा। प्रवक्ष्याम्यपर भूयो वरमत्र
वधाविधि ॥ ५७ ॥ यस्त्वेकां रजनीं तांषु वरस्पते सुसमाहितः। स स्तारवा प्राप्स्यते
सोकान् देहग्यासात् सुबुद्धिभान् ॥ ५८ ॥ इत्युक्त्वा भगवान् देव- सहस्राक्षः प्रताप
वान्। श्रुत्वावती तन पुण्यां जगाम त्रिदिवं पुनः ॥ ५९ ॥ गते वज्रधरे राजंस्तत्र धरे
पयात ह। वृषाणां मरुतश्रेष्ठ दिव्यानां। पुण्यगन्धिनाम् ॥ ६० ॥ देवपुत्रमुदयश्चापि
नेदुस्तत्र महारथनाः। मासुनश्च वर्षो पुण्यः पुण्यगन्धौ विशाम्पते ॥ ६१ ॥ उत्तुर्वेत्तु
शुभा देह जगामेन्द्रस्य मारुतनाम्। तपसोप्रेण सं कथय्या तेन रते सहस्रवृत्ता ॥ ६२ ॥
जनमेजय उवाच। का तस्या भगवामाता वयं संभुजा च शोभना। श्रोतुमिच्छाम्यहं

अत्यन्त पवित्र अरुन्धती ने बड़ी मिद्धि की पाया हे स्तुतिमान् व्रतबुद्ध महाभाग
करवापनि जिस प्रकारसे कि तुमने मेरे निमित्त इतव्रत में अधिकता करी। (५५)।
हे श्रेष्ठ करवापनि इतप्रकारके तरे नियमसे अत्यन्त व्रतज्ञ होकर मैं यह मुहं
वर तुम्हको देताहूँ ५६। महारथ शिवजी ने जो वर उत्त भरुन्धती को दिया हे
करवापनि मैं उसके प्रभाव और तरे तेजने यहां विधिपूर्वक श्रेष्ठ वरको फिर
कहताहूँ। ५७। अर्थात् जो अत्यन्त सावधान मनुष्य एकरात्रि इमतीर्थ में निवास
करेगा वह स्वानके फलसे अपने शरीरको त्यागकर बड़े दुष्पाप्य लोकों को पावेगा
। ५८। प्रतापवान भगवान् इन्द्रदेवता श्रुत्वावती को यह वचन कहकर अपने पवित्र
स्वर्गको बधे। ५९। हे भरतर्षभ राजा जननेजय वज्रधारी इन्द्रके जाने पर उत्त
स्याम में पवित्र सुगंधित दिव्य पुष्पोंकी वर्षाहुई। ६०। और बड़े शब्दों से देवता
ओंने बुन्दुयो बनाई और पवित्र सुगन्धवामी शीतल मन्दवापु चली। ६१। और
उत्त सुयज्ञीने इन्द्रका स्त्रीभावको पाया हे भजेय बहूनी उग्रतपके ट त उत्तको
पाकर उसकेसाथ क्रीडा करनेवाली हुई। ६२। जनमेजय बोला हे भगवन् उत्तली

Shiv granted her the boon and being praised by the seven rishis went
to heaven. The rishis were astonished at the conduct of Arundhati
who was afflicted with hunger and thirst. Thus Arundhati got a
great perfection and observed a vow like you. 55. Being pleased
with thy asceticism I give you again the boon which Shiv had granted
before. "He who will stay here for one night, will gain regions
difficult to attain by others." Having said this to Shrutvati, Indra
went to heaven. At the departure of Indra a fragrant breeze blew,
the gods beat celestial drums and the air was cold and fragrant. 61.
The woman became Indra's wife and lived happily with him. "Jana
mejaya said, "I wish to know the name of her mother and by whom

विप्र परं कौतूहल हि मे ॥ ६३ ॥ वैशम्पायन उवाच । भरद्वाजस्य विप्रस्य एकस्य रेतो
महारामन । हृत्वाप्सरसमापान्ती घृताचीं पृथुशोचनाम् ॥ ६४ ॥ स तु भ्रमाह तत्रेतः
करेण जपताम्बर । तदापतत् पणपुटे तत्र सा त्वमत्रत् सुता ॥ ६५ ॥ तस्यास्तु जात
कर्मादि कृत्वा सर्वं तपोधन । नामवाक्या स कृतवान् भरद्वाजो महामुनि ॥ ६६ ॥
भ्रुभाषतीति धर्मात्मा देवविगणसत्सवि । स्वे च तामाश्रमे न्वस्वः जगाम हिमवदनग
॥ ६७ ॥ तत्राप्युपबृष्य महानुभावो वसूनि द्रवा च महाद्विजस्य । जगाम तीर्थं
सुसमाहितारया शक्रस्य वृष्णिप्रवरस्तदात्तम् ॥ ६८ ॥
इतिगदायुद्धपर्वाणि बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने अष्टवत्सरिशोष्याव ४८ ।

की माता कौनथी और उसने कहा पोषणपाया हे द्विजवर्य्य मुझको घुनने का
बड़ा उत्साह है इस छंये उसको आप वर्णन कीजिये । ६३ । वैशम्पायन बोले कि
वटे दिव्यनेत्रवाली एकसमय भ्रातीहुई घृताची अप्सराको देखकर महात्मा ब्रह्मर्षि
भारद्वाजजी का वीर्य पतन हुआ । ६४ । और उसजापको मैं बड़े भ्रष्टने अपने
गिरेहुये वीर्यको हाथमेंलिया तब एक दोनो में गिरपड़ा उस में वह कन्या उत्पन्नहुई
। ६५ । उस महामुनि तपोधन भारद्वाज मुनि ने जातकर्मादिक सब क्रियाओं को कर
के उसका नामकरणकिया । ६६ । धर्मात्माने देवर्षियों के समूहों की सभामें श्रुता
वती उसका नाम रदवा गसको अपने आश्रम में छोड़कर हिमालय के बनको गये
। ६७ । तब वह महानुभाव बलदेवजी वहां भी स्नान आचमन करके बहुतसे उच्च
ब्राह्मणों को धनोंका दान देकर चित्त से बड़े सावधान होकर इन्द्रके पामतये। ६८ ।

she was brought up.' Vaishampayan said, " At the sight of beautiful
Ghritachi the apsara, the semen of Brahmishi Bharadwaj fell down
He took it up and kept it in a vessel made of leaves where the girl
was born. The muni performed her ceremonies of birth and naming
He named her Shrutavati and went to the Himalayas to perform
asceticism, leaving the girl in the hermitage. Baldev bathed at the place
and sipped of its water He gave there large donations and then went to
Indra tirth " 68.

वैशम्पायन उवाच । इन्द्रतीर्थे ततो गत्वा यदूर्ना प्रवरोवली । विमेष्यो धनरत्ना
 मिवोऽन्ताशा यथाविधि ॥ १ ॥ तत्र ह्यमरराजोऽसावीजे क्रतुशेनेन च । पुष्टस्पतेश्च
 देवेशः प्रददौ विपुलधनम् ॥ २ ॥ निरगोष्ठान् सर्वरथान् सर्वान् विविधवृक्षिणान्-
 भास्वहारं कर्तुं यद्योक्तान् देवपारगैः ॥ ३ ॥ तात्र कर्तृ भरतभेष्ट शतकृत्वो महा-
 पुतिः । प्रहामास विधिबन्धतः यथातः शतक्रतुः ॥ ४ ॥ तस्य नाम्ना च तत्तीर्थं शिषं
 पुष्यसनातनम् । इन्द्रतीर्थमिति यथातं सर्वं पापप्रमोचनम् ॥ ५ ॥ उपसृज्य च तत्रापि
 विविधमुपलापुषः । ब्राह्मणान् पूजापर्यायं च सवाञ्छादनमोजनैः । शुभं तीर्थवदं
 तस्माद्ब्रह्मतीर्थं जगाम ह ॥ ६ ॥ यत्र रामो महाभागोः भार्गवः सुमहातपाः । असकृत्
 पृथिवीं जित्वा हतशत्रिषु पुङ्गवाय ॥ ७ ॥ उपाध्यायं पुष्टकृत्व कश्यपं मुनिसत्तमम् ।
 मन्वजाजनेन सोऽभ्यमेव शतं च । प्रददौ वृक्षिणाञ्चैव पृथिवीं वै ससागराम् ॥ ९ ॥

अध्याय ४९ ॥

वैशम्पायन ने कहा कि धरत के पीछे यादवों में अत्यन्त भेष्ट बलदेवजी ने
 इन्द्रतीर्थमें जाके उस में विधिपूर्वक स्नानकरके ब्राह्मणों निमित्त धन रत्नादिकका
 दानकिया । १ । वहाँ पर उस देवनेत्रने सौ बह से पूजन किया था । तब उस ने
 इन्द्रस्यतित्रों को बहुतसा धनदिया था । २ । अर्थात् वहाँ इन्द्रने अर्गला रहित
 कषादों के रखनेवाले नानाप्रकार के धन और दक्षिणा रखनेवाले यज्ञों की बैसी
 ही तैयारी करी जैसी कि वेदों के पूर्णज्ञाता ऋषियों ने कहीथी । ३ । हेभरतर्षभ
 बड़े तेजस्वी इन्द्रने उन यज्ञों को सौवार विधिपूर्वक पूर्ण किया इधीहेतुसे उसका
 नाम शतक्रतु मसिद्ध हुआ । ४ । उस के नाथ से बह तीर्थ जो कि कश्यपाणरूप
 धर्मकी इच्छिडा हेतु सब पापोंसे छुटानेवाला और माचीन है इन्द्रतीर्थ नाम से
 बिलपातपुत्रा । ५ । मुशलधारी बलदेवजी वहाँथी विधिपूर्वक स्नान आचमन कर
 के उपम भोजन वस्त्रादि से ब्राह्मणोंको पूजकर १६। वहाँसे उस रामतीर्थको गये
 जो कि तीर्थोंमें उपम और शुभहै और जहाँपर महाभाग भार्गवपरशुरामजीने वारम्बार

CHAPTER XLIX

Vaishampayan said, " Then Baldev the best of Yadavas went to the holy place of Indra and having bathed there, gave donations to Brahmins. There Indra had performed a hundred sacrifices and given great wealth to Vrihaspati. His sacrifices were performed in accordance with the dictates of the rishis who know the Vedas. He performed a hundred sacrifices and was therefore known as Shata-krtu. The holy place where he performed those sacrifices was known as Indra-tirth. 5. Baldev bathed and Sipped water there and having given food and raiments to Brahmins, proceeded to Ram-tirth, the best of holy places where Parashuram performed a hundred Ashwamedhs and gave the whole land, which he had conquered

दृष्ट्वा च दानं विविधं नैर्निरस्तसमन्वितम् । ससौहासिकदासीकं सञ्जाविगतवार
 वनम् ॥ १० ॥ पुण्य तीर्थवरे तत्र देवमहापिसेधिते । मुनीश्वरामिवाद्याथ यमुनातीर्थे
 मागतम् ॥ ११ ॥ यवानयामास तदा राजसूयं मधीपते । पुत्रोदितमहामागो बहवो वै
 सितममः ॥ १२ ॥ अत्र निर्दिश्य संप्राप्ते, मानुषान् देवतास्तथा । गन्धर्वान् राक्षसं
 श्वेत् बहवः पूयिधीपते ॥ १३ ॥ बरं कृतं समाह्वये बरुणः परषरिहा । तस्मिन् क्रतुवरे
 वृत्ते संप्राम, समजायत् । देवानां दानवानाञ्च त्रिलोक्यस्य मयापहः ॥ १४ ॥ राज
 सूये क्रतुभेदे निवृत्ते जननेजय । आयते सुमहाघोरः संप्राम क्षत्रियान् प्रति ॥ १५ ॥
 तत्रापि लांगली देव ऋषीन्पुण्यं पूजया । इतरेभ्योप्यवादानमधिभ्य कामहो विभुः
 ॥ १६ ॥ वनमार्गां ततो ह्युद स्तूयमानो महर्षिभि । तस्मादादित्यतीर्थेऽत्र, समाह्वयं
 लेहयत् ॥ १७ ॥ यज्ञेऽथा भगवान् ज्योतिर्भास्करो राजसन्म । ज्योतिषामाधिपत्स्य
 उस पृथ्वीको जिसमें कि उत्तम २ क्षत्री मारेगये विजय करके । ७। मुनियों में श्रेष्ठ
 उपाध्याय कश्यपजीको आगेकरके सौ अश्वमेधों से पूजनकिया और समुद्रोत्तमत
 सब पृथ्वी को दाक्षिणा में दिया । ९। नानामकारके रत्न गौ हाथी-घोड़े, दास
 दासी और भेड़ बकरियों से युक्त बहुत प्रकारके दानोंको देकर वनकागये । १०।
 वहाँ पवित्र और श्रेष्ठ देवर्षियोंके गणोंसे सेवित तीर्थपर मुनियोंको दृष्टव्य करके
 यमुना तीर्थपर गये । ११। हे राजा जहाँ पर आदिति के पुत्र मदाभास श्वेतवर्ण
 बरुणने राजसूय यज्ञको प्राप्त किया । १२। वहाँ शत्रुओं के वीरों के मारनेवाके
 बरुणने राजसूय यज्ञको प्राप्त । १३। वहाँ शत्रुओं के वीरों के मारनेवाके बरुणने
 युद्धमें नरलोकावासी जाँव और देवताओं को भी विजय करके उत्तम बहका तैयारी
 की । १४। उस उत्तम यज्ञके जारी होनेपर देवता और दानवों का बह बुझकारी
 हुआ जो कि तीनोंलोकके भयको उत्पन्न करनेवाला था । १५। हे जनमेजय
 यज्ञों में श्रेष्ठ राजसूय के समाप्त होनेपर, सत्रियों में बड़ा घोरयुद्ध जारीहुआ वहाँ
 भी अभी वस्तुओंके देने में सपर्य बलदेवजी महर्षियों से स्तुतिमान् शोकर, वहाँ

after slaying the kshatryas, to Kashyap and other Brahmins. With it he gave away jewels, cows, elephants, horses, slaves, sheep, goats and other things and then went to forest 10 Having bowed down to the monks of the place he proceeded to Yamuna-tirth where Aditi's son Varun had performed a Rajsuya sacrifice after conquering human beings and gods. At the commencement of that sacrifice there ensued a war between the gods and Danavas which was the terror of the three worlds. At the end of that sacrifice there was a dreadful war of kshatryas. Badesv gave donations there and being praised by great rishis proceeded to Aditya-tirth where Surya had performed asceticism and become the chief of luminous bodies. Indra and other gods. as, Marutas, gandharvas, apsaras Vya, Shukdev,

प्रभाषश्चाप्यपद्यत ॥ १८ ॥ तस्यां नद्यास्तु तीरे वै-सर्षे देवाः सधोसवाः । विद्भवे देवाः
समरुताः गन्धर्वाप्सरसश्च ॥ १९ ॥ द्वैपायनः शुकश्च कृष्णश्च । मधुसूदनः । यक्षाश्च
शंखसांभवे विशाखाश्च विशाम्पते ॥ २० ॥ एते-चान्ये च वदन्तो योगसिद्धाः सह
कथाः । तस्मिंस्तीर्थे सरस्वत्याः शिवे पुण्ये परन्तप ॥ २१ ॥ तत्र हत्वा पुरा विष्णुरसुरी
मधुकैटभौ । आप्नुत्य भरतधेष्टु-तीर्थप्रवर उच्यते ॥ २२ ॥ द्वैपायनश्च परमात्मा तत्र
वाप्युत्स्य भारति । संप्राप्य परमं योगं सिद्धश्च परमांगताः ॥ २३ ॥ असितो देवक
श्च तस्मिन्नेव महातपाः । परमं योगमास्थाय ऋषिर्धोगमवाप्तवान् ॥ २४ ॥
इति ब्रह्मविद्यायां श्रीकृष्णार्जवियोगो नाम त्रयोविंशोऽध्यायः ॥ २३ ॥

से उस आदित्य तीर्थको गये । १७ । हे राजर्षभ जहांपर ज्योतिरूप भगवान्
मूर्धने ने वृजन करके प्रकाशित पदार्थों के राज्य और भावको पाया । १८ । हे
शशुसंवापी राजा जनमेजय उस नदी के तटपर इन्द्रादिक सब देवता विश्वे देवा
मरुद्गण गन्धर्व अप्सरा । १९ । व्यासजी, शुकदेवजी, मधुदेवसंहारी श्रीकृष्ण
जी पक्ष-राक्षस और पिशाचभी निवासी हुये । २० । यह आर अन्य पवित्र तीर्थ
सरस्वती के उस कल्पाक्षरूप पवित्र तीर्थपर योग भिद्ध हुये । २१ । हे भरतर्षभ पूर्व
समयमें विष्णुजीने मधुकैटभनाम दैत्यको मारकर उस अत्यन्त पवित्र तीर्थ में स्नान
करके । २२ । और व्यासजी ने भी वही स्नान करके परम योगको पाकर सिद्धी
को पाया । २३ । वडे तपस्वी असित और देवलने भी उस तीर्थपर परम योगमें
नियत होकर ऋषि योगको पाया २४ ॥

Shri Krishna the destroyer of Madhu, yakshas, rakshases and pishaches
had lived 20. There had been thousands of holy ascetics at the
bank of the Saraswati. In the days of yore Vishnu, slew Madhu-kaitabh
and then bathed in the holy waters of the Saraswati. Vyas too,
bathed there and got perfection. Asit and Deval, the two great
ascetics, bathed there and accomplished asceticism." 24.

वैशम्पायन उवाच । तस्मिन्नेव तु धर्मात्मा वसति स्म तपोवनः । गार्हस्थ्यं धर्ममा
 कथाय शसितो देवल पुरा ॥ १ ॥ धर्मानिरयः शुक्तिर्हान्तो म्यस्तद्वशो महातपाः ।
 कर्मणा मनसा वाचा समः सर्वेषु जन्तुषु ॥ १ ॥ अशोभनो महाराज तुम्बकित्वात्
 खस्तुतिः । प्रियानिभे तुष्यवृत्तिर्यमवत् समदर्शनः । काञ्चने लोभुमारिण समवृत्ती
 महातपा । देवानामुजयीकृत्यमातधीश्च द्विजैः सह प्रह्वयवर्ततो नित्ये सदा धर्मपरा
 यण ॥ ४ ॥ ततोऽप्येव महाराज योगमास्थाय भिक्षुकः । जगीष्यो मुनिर्धोमाकाशे
 र्शोभे समाहितः ॥ ५ ॥ देवलस्याश्रमे प्राञ्जलं प्रदत्त स महापुतिः । योगनिर्षो मुनि
 राज सिद्धिं प्राप्नो महातपा ॥ ६ ॥ तं तत्र बलमानम् जगीष्ये महामुनिष । देवलो
 दर्शयन्नेव नैवानुत्तत प्रभैः ॥ ७ ॥ एवं तपोतहाराज दिविकाशोऽप्यमात् पुरा । जगीष्यं
 मुनिवत् न वदथाय देवलः । ८ ॥ जादारकाले प्रतिमानं परिप्राञ्जलमेव । उपासि

अध्याय २० ॥

वैशम्पायनश्लोके कि पूर्वसर्षमें असिध और देवलद्वारे जो कि धर्मात्मा और
 तपस्व धनरखनेवाले सुदृश धर्म से नियतकर उसी तीर्थपर निवास करनेवाले
 हुये । १ । यह दोनाश्रुपि सदैवधर्मकरनेवाले पवित्र जितेद्री दृष्टके स्थायी महातपस्वी
 मन बाखी और शरीरसे सबजीवों में समान रहती । २ । जोधरहिण निन्दास्तुति
 कोसमान जाननेवाले प्रिय अभियम समान बुद्धिवाले यवराजसे समान समदर्शी । ३ ।
 दुर्वर्ण लोहको दुरूप जानने और देखनेवाले महातपस्वी और देवताओं समेत
 आसण और प्रतिधियोंको सदैव पूजेन सदाहलचर्य्य में प्रवृत्त और सदैव धर्म
 कोही भेष्य माननेवालेथे । ४ । हे राजा इसकेपीछे महाभाग बुद्धिमान सावधान महा
 तेजस्वी जगीष्यनाम मुनि संन्यासी वसतीर्थपर आके योगमें नियतकर देवल
 के आश्रममें वसे हे महाराज वह महातपस्वी सदैव योगमें नियत और सिद्ध या
 । ६ । देवलने वहां निवास करनेवाले उस महामुनि जगीष्यको देखतेही अति
 धिधर्म से मुक्त किया हे महाराज इधीरिति से उन दोनों का बहुतसा समय
 व्यतीतहुआ देवल ने मुनियों में भेष्य जगीष्य को नहीं देसा । ८ । हे जनमेजय

CHAPTER I.

Vaishampayan said, "Asit and Deval, virtuous rishis kept house
 there. They had control over their organs, were great ascetics and
 looked equally at all things in mind, speech and body. Free from
 anger, they were indifferent to praise and dispraise, friend and foe,
 and were just like Yama. They regarded gold like dross and
 worshipped guests like gods, observing vow of celibacy and regarding
 dharma to be the best of all things. Some time after, Jaigishavya, a
 sanyasi muni, came and settled there to perform asceticism. He was
 a great ascetic entirely given up to yog. 5 Deval worshipped him
 as a guest for a long time. Deval did not see him except at the time

इत चर्महो देहकाले स देवलम् ॥ ८ ॥ स हृष्ट्वा भिक्षुरूपेण प्राप्त तत्र महामुनिम् ।
 मूर्ध्नि परमं चक्रे प्रीतिव विद्वलाभया ॥ १० ॥ देवलस्तु यथाशक्ति पूजयामास भारत
 ऋषिद्वयेन विविता समावहवीः समाहितः ॥ ११ ॥ कदाचित्तस्य नृपेः देवलस्य महा
 रमणः । चिन्तां सुमहतीं जाता मुनि हृष्ट्वा महायुनिम् ॥ १२ ॥ 'समास्तु' समतिक्रान्ता
 वेदव्यः पूजयतो मम । न चावमलसो भिक्षुरभ्यसताती किम्वचन ॥ १३ ॥ एवं विगम
 यन्नेव स जगाम महादक्षिण । अन्तरीक्षवरः श्रीमान् कलशं गृह्य देवलः ॥ १४ ॥
 गच्छन्नेव स चर्मामा सज्जं सरितास्पतिम् । जगामप्ययं ततोपश्यन्ते प्रागंभ भारत
 ॥ १५ ॥ ततः स विह्वलचिन्तो जगामाधासितः प्रभुः । कथं चिन्नरयं प्राप्तः समुद्रे
 स्नात एवञ्च ॥ १६ ॥ इत्येवं चिन्तयामास महादिगसिन्धुः । स्मरन्तं समुद्रे विधिबन्ध
 नुविउत्तैर्ष्यं जगाम ह ॥ १७ ॥ कृतजप्याहितः श्रीमानाश्रयञ्च जगाम ह । कलशं
 जलपूर्णे वै गृहीत्वा जनमेजय ॥ १८ ॥ ततः स प्रविशन्नेव स्वमाश्रयणं मुनिः ।

तत्र वहः बुद्धिमान् धम्मं संन्यासी आहार और भिक्षा के समयपर देवल के
 पापभोकर निरन्तर हुआ । ११ तब देवलश्रीपने उस भिक्षुरूपसे आनेवाले महाकुनि
 को देखकर बड़ी प्रतीष्टापूर्वक अत्यन्त प्रीति प्रकटकी । १२ हे भातेवंशी ! तावधान
 देवलश्रीप ने ऋषियोंकी बनाई विधिसे तामर्ष्य के अनुसार बहुत वर्षोंतक उस
 का पूजितकिया देवयोगेने । एकसमयपर देवलश्रीपिका उस महातेजस्वी मुनिके
 देखनेसे यह बड़ी चिन्ता हुई । १३ कि मुझको इस मुनिका पूजन करतेहुये
 बहुतवर्ष म्यतीत हुये परन्तु आजतक इस उदासीनकर्मी भिक्षुक ने कभी कोईवात
 नहीं कही । १४ इस प्रकार विचारकरते वह अन्तरिक्षवासी श्रीमान् देवलश्रीपि
 कलश को लेकर महासमुद्र को गये हे भरतवंशी । एककीछे जदियों के स्वामी
 समुद्रको अविद्युये उस धर्मात्माने प्रथम गयेहुये जगामिजय को देला । १५ । उस
 को वहाँ देखकर उस बड़े तेजस्वीने आश्चर्य करके चिन्ताकरा कि यह भिक्षुक
 कैसे समुद्रको आया । १६ और कैसे इमने स्नान किया तब उस महादिने ऐत
 चिन्ताकरी और विधिबद्ध समुद्र में स्नानकरके उस पवित्रने जपको जपा । १७ ।
 जप और स्तुत्या करनेवासे श्रीमान् देवलश्रीपि । जलसे पूर्ण कलशको लेकर । १८ ।
 अपने आश्रयको आये हे जनमेजय फिर अपने आश्रम स्थान में प्रवेश करतेहुये

of taking food and then he would always treat him with profound respect and love. 10. He served him in this way for many years. One day he thought within himself, "I have been serving the rishi for many years, but he has never said anything." With this thought in his mind, he went with a vessel to the sea and there he saw Jaigishavya arrived before him. 15. He wondered at his arrival there. He bathed in the sea and said his prayers. When Deval came back with his vessel full of water, he saw Jaigishavya in his own hermitage. But the latter did not speak to him even then and con-

आसीनमाश्रमे तत्र जैगीषव्यमपश्यन् ॥ १९ ॥ न व्याहरति चैवेन जैगीषव्य कथञ्चन
 काष्ठमृतोश्रमपदे वसति स्म महातपा ॥ २० ॥ तं दृष्ट्वा चाप्लुतं तोषे सागरे, साग
 रोपमम् । प्रविष्टमाश्रमञ्चापि पूर्वमेव दृशंस ॥ २१ ॥ असितो देवलो राजञ्छिन्तया
 मास बुद्धिमान् । दृष्ट्वा प्रभावन्तपसो जैगीषव्यस्य योगजम् ॥ २२ ॥ चिन्तयामास
 राजेन्द्र तदा स मुनिसत्तमः ममा दृष्ट समुद्रे, च आश्रमे च कथं स्वयम् ॥ २३ ॥ एवं
 विगम्य-नेत्र स मुनिर्मन्त्रपारगः । उत्पपाताश्रमात्तस्मादन्तरिक्षं विशास्पते, जिह्वासायै
 तदा भिक्षोर्जैगीषव्यस्य देवलः ॥ २४ ॥ सोऽन्तरिक्षचरान् विद्वान् समपश्यत् समाहि
 तान् । जैगीषव्यञ्च ते सिद्धैः पूज्यमानमपश्यत् ॥ २५ ॥ ततोऽसितः सुसंरब्धो वयस
 सायी द्रवतः । अपश्यद्द दिवं यान्तं जैगीषव्यस्य देवलः ॥ २६ ॥ तस्माच्च पितृलोक
 तं ब्रजन्तं सोऽपश्यत् । पितृलोकश्च तं यान्तं याम्य लोकमपश्यत्
 ॥ २७ ॥ तस्मादपि समुत्पश्यः सोमलोकमभिप्लुतम् । ब्रजन्तमन्वपश्यत् स

उस मुनिने वहाँ आश्रममें बैठे हुए, जैगीषव्यको देखा । १९ । और उस समय
 परभी जैगीषव्यने किसी प्रकार से कुछ नहीं कहा, फिर वह महातपस्वी काट रूप
 आश्रम स्थानमें निवासी हुआ । २० । उस देवलश्रुति ने उसको समुद्रके समान
 समुद्रके जलमें स्नान किया हुआ देखकर प्रथमही आश्रम में बैठा हुआ देखा । २१ ।
 हे राजा तव बुद्धिमान् असित देवलने चिन्ता करी अर्थात् उस मुनिपौ में
 श्रेष्ठने जैगीषव्य के यागसे उत्पन्न होनेवाले । तपको देखकर तदी चिन्ता करी
 कि भैंसे तो इसको समुद्रपर देखा था अब यह मुझसे प्रथमही इस आश्रममें कैसे
 आगया । २२ । हे राजा तव वह मन्त्र विद्या में पूर्ण देवलमुनि इस प्रकार विचार
 करते जैगीषव्य संन्यासीकी परीक्षाके अर्थ उस आश्रमसे ऊपर आकाशकी ओर
 उछले । २४ । अन्तरिक्षचारी और सावधान सिद्धोंको देखते उस देवलश्रुतिने
 जैगीषव्य को उन सिद्धोंसे पूजित और शोभावाँ देखा । २५ । तदनन्तर उस
 को प्रपुक्त दृष्ट प्रताले असित देवलने वहाँसे चलनेवाले जैगीषव्यको देखा । २६ । उस
 ने वहाँसे उसको पितृलोकमें जानेवाला देखा और पितृलोकमें यमलोकमें भी जाने
 वाला उसको देखा । २७ । और उन लोकों से भी उछलकर चन्द्रलोकमें जाने
 वाला उस महामुनि जैगीषव्यको देखा फिर अरुंठे यह करनेवालों के शुभलोकोंमें

continued to live there like a wooden statue. 20. Deval saw him pro-
 foundly like the ocean after bathing in its waters. As Deval was
 amazed at the great power of his asceticism; for he had left him on
 the sea-shore, but on coming home found him already returned. To
 test Jaigishavya the Saayan, Deval sprang up into air to the region
 of Suddha, but saw Jaigishavya there also worshipped by the siddha. 25.
 As Deval visited the region of pitra, Indra, Yama, Chandra and the
 holy regions of sacrifice, but found Jaigishavya everywhere. Then
 he sprang up to the region of Agastya where they pour libations

जैगीषव्यं महासुनिम् । लोकाहः समुत्पत्तन्तु शुभानेकान्तयाजिनाम् ॥ २८ ॥
 अतोग्निहोत्रिणाः । लोकास्तथाप्युत्पपात् ॥ २९ ॥ इति च । पूर्णमासकः । ये
 यजन्ति तपोधनाः ॥ २९ ॥ तेषुः ससदशो धीमान् लोकेभ्यः पशुयाजिनाम् । ब्रजस्य
 लोकममलमपश्यदेवपूजिताम् ॥ ३० ॥ चातुर्मास्यैर्बहुविधैर्यजन्ते य तपोधनाः । तेषां
 स्थानं ततो । आन्त तपोग्निष्टोमयाजिनाम् ॥ ३१ ॥ अग्निष्टुतेन च तथा ये यजन्ति तपो
 धनाः । तद्वृषाममनसमाप्तमश्नन्पश्यत देवलः ॥ ३२ ॥ वाजपेयं क्रतुवरं तथा बहुसु
 धनं कम् । आहरन्ति महाप्रज्ञालोकाश्चपश्यत ॥ ३३ ॥ यजन्ते राजसूयतः पुण्डरी
 केन चैव वे । तेषां लोकश्चपश्यच्च जैगीषव्यस्य देवलः ॥ ३४ ॥ अश्वमेधं क्रतुवरं नरमेधं
 तथैव वे । आहरन्ति नरधृष्टालोकाश्चपश्यत ॥ ३५ ॥ सर्वमेधश्च दुःश्रापं । तथा
 सोऽश्वामिच्छुः । तेषां लोकश्चपश्यच्च जैगीषव्यं स देवलः ॥ ३६ ॥ द्वादशाहश्च

भी उसको उछलकर जानेवाला देखा । २८ । और वहाँसे भी अग्निहोत्रियोंके लोक
 को उछले जो तपोधनरूपि अभावसु और पूर्णमासके दिन यज्ञोंसे पूजन करते
 हैं । २९ । अथवा पशुओंके यज्ञ करनेवालोंके लोकोंसे निर्मल और देवपूजितलोक
 को जानेवाले मुनिको उस बुद्धिमान देवलने देखा जो तपोधन किं चातुर्मास्य नाम
 नानाप्रकार के यज्ञोंसे पूजन करते हैं, वहाँसे उनके लोकों में और अग्निष्टोम
 यज्ञकरनेवालोंके लोकोंको जानेवाले मुनिको देखा । ३१ । जो तपोधन अग्नि
 ष्टुतयज्ञसे पूजन करते हैं उनके जो लोक हैं उस लोकमें भी जातेहुये मुनि
 को देवल आपने देखा । ३२ । इसीप्रकार बहुत सुवर्णवाले यज्ञोंमें श्रेष्ठ वाजपेय
 यज्ञको जो बड़े ज्ञानी करते हैं उनके भी लोकोंमें जातेहुये मुनिको देखा । ३३ । जोलौम
 राजसूय और पुण्डरीक यज्ञोंसे पूजन करते हैं उनके लोकोंमें भी उस जैगीषव्यको
 देवलने देखा । ३४ । इसीप्रकार जो नरोत्तमपुरुष यज्ञोंमें श्रेष्ठ अश्वमेध और नर
 मेधको करते हैं उनके भी लोकोंमें उसको देखा । ३५ । जो लोग बटिनतासे मास
 जानेवाले सर्वमेध और सूत्राणि यज्ञको करते हैं उनके लोकोंमें भी देवलने उस
 जैगीषव्यको देखा । ३६ । हे राजा जो लोग द्वादशाह नाम नानाप्रकार के यज्ञोंसे
 पूजनको करते हैं उस देवलने उस जैगीषव्यको उनके भी लोकोंमें देखा । ३७ । इस

on the days of full-moon and no-moon 29. He saw Jaigishavya in the
 region of sacrificers, attended by god and holy, men who worship with
 four-monthly sacrifices and others. He saw him in many other regions
 as well as among the performers of Agnishtom sacrifice. He saw him
 also among the performers of Vajpeya sacrifices as well as those who
 perform Rajsuya, Pandarik, Ashvamedh, Narmedh and Sarvamedh.
 36. He saw him among the performers of Dwadasah sacrifices in
 the region of Vyahspati, in Golok, in Brahmsacrifice and other re
 gions. After that Jaigishavya disappeared from his sight. Then Devul

सभ्ये यजन्ते विविधैर्नृप । तेषां लोकेष्वपश्यन्त्य जैगीषव्यं स देवता ॥ ३७ ॥ भिक्षा
 वरुणशैलौके चार्धित्यानां तथैव च । सलोकनापनुमाप्नमपश्यन् ततोसितः ॥ ३८ ॥
 वद्राणाञ्च घसनाञ्च स्थानं यच्च बृहस्पतेः । तानि सर्वाण्यतीतानि समपश्यतोसितः
 ॥ ३९ ॥ आरुह्य च गर्वां लोके प्रयातो ब्रह्मसन्निभाम् । लोकानपश्यन् ब्रह्मसन्तं जैगीषव्यं
 ततोसितः ॥ ४० ॥ श्रीलोकानपरान् विप्रमुत्पतन्तं स्वतेजसा । पतिव्रतानां लोकाञ्च
 ब्रजन्तं सोमपश्यत् ॥ ४१ ॥ ततो मुनिवरं भयो जैगीषव्यमपासितः । ताम्बपश्यत्
 योगस्थमभार्हितमरिन्दम ॥ ४२ ॥ सोसिन्तयस्महागं जैगीषव्यस्य देवतः । पत्राञ्च
 शुभ्रतत्त्वञ्च सिद्धिं योगस्य चातुलाम् ॥ ४३ ॥ असितानुपृच्छन् तदा सिद्धान् लोकेषु
 सप्तमान् । ब्रजतः प्राञ्जलिभूत्वा धीरस्तान् ब्रह्मसन्निभः ॥ ४४ ॥ जैगीषव्ये न पश्यामि
 तं शशध्वं महोजसम् । पतद्विच्छाम्यहं धीर्षु परं चोत्तमं हि मे ॥ ४५ ॥ सिद्धा
 ऊचुः । धृणु देवल भूतार्थं शसतां नो हृदयत । जैगीषव्यः स वै लोकं शश्वत् ब्रह्मणो
 गतः ॥ ४६ ॥ वैशम्पायन उवाच । स भूत्वा वचनं तेषां सिद्धानां ब्रह्मसन्निभाम् ।

क पीछे असित देवलने अर्धितके पुत्र भिक्षावरुण और सूर्यादिक की सासोकपता
 पानेवाले जैगीषव्यको देखा । ३८ । रुद्रों वसुओं और बृहस्पतिजीका जो
 स्थान है आसित देवलने उन सब लोकोंको जैगीषव्य से उल्लस्यन किया हुआ देखा
 । ३९ । इसके पीछे गोलोकको चढ़कर ब्रह्मपद्म करनेवालोंके लोकोंको गया फिर
 असित देवलने अपने तेजसे तीनोंलोकोंको त्यागकर अन्यलोकों के जाने वाले
 जैगीषव्यको देखा और पतिव्रताओं के भी लोकों में जानेवाले उस मुनिको
 देखा । ४१ । तब असित देवलने उस मुनियों में श्रेष्ठ योगमें निपतः अमृतदान
 होनेवाले जैगीषव्यको नहीं देखा । ४२ । हे जशुविप्रजी जनमेजय उस महाभाग
 देवलने जैगीषव्यके मभाव व्रतकी उत्तमता और योगकी बड़ी सिद्धी को विचार
 किया । ४३ । तब असित देवलने लोकों में श्रेष्ठ सिद्धीसे पूछा उस पतिव्रत
 देवलने हाथ जोड़कर उन ब्रह्मपद्म करनेवालों से कहा कि मैं अब उस जैगीषव्य
 को नहीं देखताहूँ उस बड़े तेजस्वी का सबवृत्तान्त वर्णन कीजिये मुझको इनके
 वृत्तान्त सुननेकी बड़ी उत्कण्ठा है । ४५ । सिद्ध वाले कि हे हृदयतवाले देवल
 हम तुमसे इसका वृत्तान्त कहते हैं तुम यनसगाकर सुनो निश्चय करके वह
 जैगीषव्य सनातन ब्रह्मलोकको गया । ४६ । वैशम्पायन बोले । कि वह असित
 देवल उन ब्रह्मपद्म करनेवाले सिद्धों के वचन को सुनकर शीघ्र ऊपर को चला

thought of the great yog power and inquired about him of the siddhas who performed Brahmynajya, with joined hand, "I donot see Jaigishavya. Tell me all about him, for I am very anxious to know." The siddhas said, "Jaigishavya has gone to the region of Brahm." At this Deval began to ascend higher up but could go no further. Then the siddhas said, "You cannot go to the region of Brahm where Jaigish

स्मितो देवलस्तूर्णमुत्पपात पपात ॥४७॥ ततः सिद्धस्तमूर्ध्वं देवलं पुनरेव ह । न
 देवल गतित्तम तव गन्तुं तपोधन । ब्रह्मणः सत्त्वं विप्र जैगीषव्यो यदात्तवान् ॥४८॥
 नैशस्यायन उवाच । तेषां तद्वचनं श्रुत्वा सिद्धानां देवल । पुनः । ज्ञानुपूर्व्येण लोकां
 यसाह सर्वानवततार ह ॥ ४९ ॥ स्वभाभ्रमपई पुण्यमाजगाम पतञ्जवत्
 प्रक्रिशुचेत् ऋषिभ्योजैगीषव्य स देवल ॥ ५० ॥ ततो बुद्ध्या जगाम
 पदेवलो धर्मयुक्तया । दृष्ट्वा प्रभाव तपसो जैगीषव्यस्य योगजम् ॥ ५१ ॥ ततोऽपि
 किन्महात्मानं जैगीषव्यं स देवल । विनयाद्यनतो राजन्पुत्रस्य महामुनिम् । मोक्षधर्म
 समास्थात्तुमिच्छेयं भावयन्नुत् ॥ ५२ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा उपदेशं चकार स ।
 विधिश्च योगस्य परं कार्याकार्येषु शास्त्रत ॥ ५३ ॥ सन्त्यासकृतबुद्धिस्ततो दृष्ट्वा
 महानयाः । सर्वाश्चास्य क्रियाश्रमे विधिदृष्टेन कर्मणा ॥ ५४ ॥ सन्त्यासकृतबुद्धिस्त
 सूतानि पितृभिः सह । ततो दृष्ट्वा प्रकृष्टुकोस्मान् सविभक्तिः ॥ ५५ ॥ देवलस्तु

परन्तु गिरपदा । ४७ । इसके पीछे वह सब सिद्धलोग देवलसे बोले कि हे तपोधन
 बरखानेवाले देवल उम ब्रह्मलोकमें जानेको तेरीगति नहीं है हे वेदपाठी जिसको
 कि जैगीषव्यने पाया । ४८ । वैशस्यायनने कहा कि फिर वह देवल उनसिद्धों
 के वचन को सुनकर ऋषपूर्वक अपने लोकों को उतरे । ४९ । और पक्षी के
 समान अपने परिव्र स्थान आश्रमको भाये आश्रम में प्रवेश करने वाले उस
 देवलने जैगीषव्य को देला । ५० । फिर देवलने जैगीषव्य के योगसे उत्पन्न होने
 वाले तपके प्रभावको देखकर धर्मयुक्त बुद्धिके द्वारा विचार किया । ५१ । और
 नम्रता से स्नेहपूर्वक उस देवलने महात्मा महामुनि जैगीषव्य क पास जाकर यह
 वचन कहा हे भगवन् मैं मोक्षधर्म में नियत होना चाहता हूँ । ५२ । तब जैगीषव्यने
 उस के उस वचनको सुनकर उपदेश किया अर्थात् शास्त्र के द्वारा याग और
 कार्याकार की परम विधि को उपदेश किया । ५३ । इसके पीछे बड़े तपस्वी ने
 संन्यासमें प्रवृत्त विद्य उसदेवलको देखकर वेदोक्त कर्मों के द्वारा उसकी सब
 क्रियाओं को किया । ५४ । इसके पीछे विप्र लोगोंसमेत सब जीवधारी उस
 संन्यासमें बुद्धि सगानेवाले देवलको देखकर अत्यन्त रोदन करके कहनेलगे कि
 हमको कौन अब भागदेता । ५५ । इसप्रकार दशोदिशाआ में वचन कहनेवाले

avya has gone." Then Deval descended lower and lower like a bird
 till he came down to his down hermitage and on entering it he saw
 Jaigishavya again. 50. Then Deval knew the greatness of Jaigishavya
 and humbly said, "I wish to tread the path of salvation." Jaigishavya
 then taught him about what was to be done and shunned. He taught him
 the Vedic ways. The pitars and other beings seeing him engaged in
 Sanyas wept aloud saying, "Who will give,

वचः श्रुत्वा मृतानां कृष्णं तथा । दिशो दश व्याहरतां मोक्षं त्यक्तुं मनोद्वेषः ॥५६॥
 ततस्तु फलमूलानि पवित्राणि च भारत । पुष्पाण्योषधयश्चैव/रोरुष्वन्ते सहस्रशः ॥५७॥
 पुनर्नो देवलः क्षुब्धो नूनं छेदस्यति दुर्मतिः । अभयं सर्वभुतेषु चो/दत्त्वा नाकमुच्यते
 ॥ ५८ ॥ ततो मृतोः व्यगणयत् स्वबुध्या मुनिसत्तमः । मोक्षे/गाहस्थ्यधर्मे वा किञ्चु
 अपहर्करभवेत् ॥ ५९ ॥ इति निश्चित्य मनसा देवलो राजसत्तम । स्वकत्वा/गाहस्थ्य
 धर्मे स मोक्षधर्ममशुचयत् ॥ ६० ॥ एवमादीनि सञ्चित्वा देवलो निश्चयाचरतः । आस
 वात् परमां सिद्धिं परं योगञ्च भारत ॥ ६१ ॥ ततो देवाः समागन्व दृढस्वतिपो
 गमाः । जैगीषव्यं तपस्यास्य प्रशंसन्ति तपस्विनः ॥ ६२ ॥ अथाप्रबोधिबरो देवाद्
 वै नारदस्तथा । जैगीषव्ये तपो नास्ति विस्मापयति योसितम् ॥ ६३ ॥ तमेव वाचि
 घोरं प्रत्यक्षुस्तोदिवोक्तसः । मैवमित्येव शंसन्तो जैगीषव्यं मदानुविभ ॥ ६४ ॥ नातः
 परतरं किञ्चतुल्यमस्ति प्रभाषतः । तेजसस्तपस्यास्य योगस्य च महात्मनः ॥ ६५ ॥

दुःखित वचनोंको सुनकर देवलने मोक्षके त्याग करनेको विचार किया । ५६ ।
 भरतवंशी फिर पवित्र फलमूल और हजारों औषधियां श्रीरोदन करनेलगी । ५७ ।
 कि निश्चयकरके वह नीच और दुर्बुद्धी देवल फिर हमको कठिना जोकि सब
 जीवोंको निभयता देकर सावधान नहीं होताहै । ५८ । इसके पीछे जिनको ने भ्रष्ट
 देवलने अपनी बुद्धि से फिर विचार किया कि मोक्ष और दृढस्व धर्म इन
 दोनों में से कौनसा धर्म कल्याणका करनेवाला है । ५९ । हेराजा आपने भ्रष्टतपस्य
 छने चित्तसे निश्चय करके दृढस्य धर्मको त्यागकर मोक्ष धर्म को स्वीकार
 किया । ६० । फिर देवलने निश्चयसे उनको और अन्यरसव बातोंको विचारकर
 परमासिद्धी समेत परमयोग को पाया । ६१ । इसके पीछे उन देवताओं ने जिनमें
 कि अप्रबुद्धी दृढरपतिजीये आकर जैगीषव्यकी और इस तपस्वीके तपकी प्रशंसा
 करी । ६२ । इसके अनन्तर ऋषियों में श्रेष्ठ नारदजी देवताओं से बोले कि
 जैगीषव्यमें तप नहींहै जोकि असित को आश्चर्यपुक्त करता है । ६३ । इस प्रकारसे
 कहनेवाले वह देवता उसवीर से बोले कि ऐसा नहीं है फिर महामुनि जैगीषव्य
 की प्रशंसा करतेहुये बोले । ६४ । कि प्रभाव में इससे बड़ा और समान भी कोई नहीं

us our share. " Hearing such words on all sides Deval thought of forsaking the way to salvation. Flowers and medicinal herbs also wept and said, "Despicable Deval will again cut us down, for he is not careful in saving life. " Deval thought again whether to choose Salvation or the life of a householder, but at last he decided to renounce the latter and was engaged in ascoticism. 61. Then the gods led by Vrihaspati came and praised Jaigishavya and Deval. Narad said to gods, "Asit is wrongly astonished at the ascoticism of Jaigishavya. But the gods would not bear him and praised Jaigishavya, saying, "We see none better than or equal to both." Baldev bathed there

एवं प्रभातो जगतीमा जैगीष्यस्यस्यसितः । तयोर्दि ईशानवर तीर्थेऽथ महात्मनोः
 ॥ ६६ ॥ तथाप्युपस्पृश्य ततो महात्मा वरुवा च विस हकमृहजेऽत्र । जवाप्यवर्षे वरु
 माप्येकमा जगाम कोमन्व महत् सुतीर्थेन ॥ ६७ ॥

इति महापर्वः पञ्चमोऽध्यायः ॥ ५० ॥

वैशम्पायन उवाच । पञ्चजवानुदुपती राजसूयेन जारत । तस्मिन्तीर्थे महात्मासीत्
 जगामकारकामयः ॥ १ ॥ तथाप्युपस्पृश्य ततो वरुवा दानानि चारमवान् । सारस्वतत्वं
 मार्गि । कुमेतीर्थे जगाम ह ॥ २ ॥ तत्र ह्यारुतवार्षिकवामनादुपुर्वा द्विजोत्तमान् ।

हे इस महात्मा के तेज सप और योग, के समान कोई नहीं है। ६६, १। प्रमात्मा
 जैगीष्य और असित देवकी भी ऐतही प्रभाववाले हैं इन दोनों उत्तम महात्माओं
 का यह भेद आश्रम और तीर्थ है। ६६। इसके पीछे वह परमार्थिकभी महात्मा
 बसदेवजी इस तीर्थपर भी स्नान आचमन कर मांसखा को बहुत धन देकर अर्घ्य
 को बाकर चन्द्रमा के तीर्थको गये ६७ ॥

अध्याय ६१ ॥

वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी जहापर, चन्द्रमाने राजसूययज्ञ से पूजनिकया
 वस तीर्थपर सारकासुर से सम्बन्ध रखनेवाला बड़ा युद्ध हुआ। १। ज्ञानी, प्रमात्मा
 बसदेवजी वहाँ भी स्नान आचमन करके दानों को देकर सारस्वतमनि के तीर्थ
 को गये। २। वहाँ पूर्वकालमें सारस्वतमुनि ने बारहवर्षके दुर्भिक्षमें उत्तमब्राह्मणों
 को वेदपढ़ाया। जनमेजयने कहा कि बारहवर्षकी अनाद्यष्टमें सारस्वतमुनिने

and having sipped water and given donations to brahmins, proceeded to the holy place of Chandra. "67.

CHAPTER LI

Yashampayan said, "The war of Tarak had taken place where Chandra performed Rajsuya sacrifice, Balder bathed there and having sipped water and given donations, proceeded to the holy place of Saraswat, who taught the Vedas to Brahmins during a twelve years

वेदानध्यापयामास पुरा, सारस्वती मुनिः ॥ ३ ॥ जनमेजय उवाच । कथं द्वादशवापिषथा
 मनाद्दृष्ट्वा तपोवन । ऋषीन्ध्यापयामास पुरा सारस्वती मुनिः ॥ ४ ॥ वैशम्पायन
 उवाच । आसीत् पूर्वं महाराज, मुनिवीमानमहातपाः । दधीच इति विख्याता ब्रह्म
 चारी जितेन्द्रिय ॥ ५ ॥ तस्यासितपसः शक्रो विधेत् सततं विभो । न स लोमायितु
 शक्यः फलेषुद्विविधेऽपि ॥ ६ ॥ प्रलोमनार्थतस्याय प्राहितोत् पाकशासनः । विख्यात
 सरसा पुष्पां दर्शनीयामलम्बुवाम् ॥ ७ ॥ तस्यां तर्पयतो देवान् सरस्वत्यां महात्
 मनः । समीपतो महाराज सोपसितप्रत भाविनी ॥ ८ ॥ तां द्रुपदपुत्रे हृष्ट्वा तस्यैवमा
 धितामनः । रेतः स्तुतं सरस्वत्यां तत् सा जग्राह निम्नगा ॥ ९ ॥ कुक्षौ स्थाप्यद्वय
 युषो तद्रेतः पुनर्वचस । सा दक्षः कंठे गमे पुनर्हेतोर्महानदी ॥ १० ॥ सुबुधे स्थापि
 समये पुत्रं सा सरिताम्बरा । जगाम पुत्रमावाय तदुपि प्राति च प्रभो ॥ ११ ॥ ऋषि
 संसदि-तं हृष्ट्वा सा जवी मुनिसंभयम् । ततः प्रोवाच रानेन्द्र ददती- पुत्रमस्वतम्

ऋषियों को पश्यापारा वैशम्पायनवाले हे महाराज पूर्वसमयमें बुद्धिमान् ब्रह्मचारी
 जितेन्द्रिक दधीचि नामसे विख्यात मुनि थे । ५ ॥ हे समर्थ उत्तको तपस्या से
 इन्द्र सदैव भयभीत रहताथा और उत्तको जानामकार के फलों से लभता था
 परन्तु वह किसी फलसेभी नहीं लोमित हुये । ६ ॥ इसके पीछे इन्द्रे उत्तको लुम्बा
 ने के लिये दिव्य पावित्र और दर्शनीय अनूपनाम अप्सराको उनके पासभेजा
 । ७ ॥ हे महाराज वह भकाक्षमान अप्सरा सरस्वतीपर देवताओंका तर्पण करनेवाले
 उस महात्माके सम्मुखहुई । ८ ॥ उस दिव्यशीरवाली अप्सराको देखकर उस युद्ध
 अन्त-करणवासे ऋषिकावीर्य स्तुतिहाकर सरस्वती में गिरा उस नदीने उत्तको
 धारणकिया । ९ ॥ हे एहोचम उत्तनदीने ऋषिकेवीर्यको अपनी कुक्षि में धारण
 किया अर्थात् उस नदीने अपने पुत्रार्थ उस गर्भको अपने उदर में धारण किया
 । १० ॥ हे मधु फिद्र कुछ समयमें पीछे उस जेष्ठ नदीने पुत्रको भी उत्पन्न किया
 और पुत्रकोलेकर बसुकिके पासगई । ११ ॥ हे रानेन्द्र तब नदी ऋषियों कीसभा
 में उत्त ऋषि मुनिको देखकर उनके उस पुत्रको उत्तको देती हुई यह वचन बोली

famine. "Janamejaya said, " How did Saraswat teach them during
 famine ? " Vaishampayan said, " In former days there was a wise
 rishi of great fame and sanctity, named Dadhichi. Indra was afraid
 of his asceticism and induced him with various good things. He sent
 to him a beautiful apsara named "Amvusha. She came before him
 when he was worshipping gods on the bank of the Saraswati. His
 women dropped down in the river as he saw her. Saraswati kept it in
 her womb for the sake of the muni. 10. After some time she
 brought forth a son and came to the rishi with him. While presenting
 the son to the muni before the assembly of ascetics, she said, " This is

॥ १२ ॥ ब्रह्मर्षे तव पुत्रोऽयं त्वद्भक्त्या चागितो मया । इष्ट्वा तेष्वरसं रेतोऽयं स्वक
 प्रागल्भ्युपाम ॥ १३ ॥ तत् कुक्षिणा वै ब्रह्मर्षे त्वद्भक्त्या धृतवाऽवहम् । न विनाशामि
 गच्छन्वसेज इति निश्चयात् ॥ १४ ॥ प्रतिगृह्णांश्च पुत्रं स्व मया वृत्तमनिन्दितम् ।
 इत्युक्तः प्रतिजगाह प्रीतिश्चावाप पुष्कलाम् ॥ १५ ॥ स्वमुत्स्वाप्यजिघ्रसं मुद्दिन
 प्रम्ना द्विजात्मनः । परिष्वज्य चिर कालं तदा मरुतससम् ॥ १६ ॥ सरस्वत्ये वर
 प्रादात् प्रायमाणो महाभुनि । विश्वे देवाः सपितरा गन्धर्वाप्सरसां गणा । तास
 यास्यन्ति समेगे तेष्यमाणालवाश्चा ॥ १७ ॥ इत्युक्त्वा स तु तुष्टाव घञ्जामिषं महा
 नदीम् । मात परमहृष्टात्मा यथावत् अणु पाथिष ॥ १८ ॥ प्रसतासि महाभाग सरसा
 ब्रह्मण पुत्रा जानन्ति त्वां सारस्वत्ये भुजयः शिशुव्रजनाः ॥ १९ ॥ सप्त प्रियकरी चापि
 सततप्रियः इशान । तस्मात् सारस्वत पुत्रो महासि वरवर्णिनि ॥ २० ॥ तवैव नामनाः

। १२ । हे ब्रह्मर्षि यह तेरा पुत्र है मेने तेरी भक्तिसे अपने में इसको धारण किया
 पूर्वकाल में अलक्षणा अप्सराको देखकर जो तेरा वीर्य पतन हागया था । १३ उस
 को हे ब्रह्मर्षि मेने भक्तिसे और इस निश्चयसे कि तेरा यह तेज नाशको न पावे इस
 हेतुसे उस गर्भको अपनी कोलमें धारण किया । १४ । मर दियेहुय इस निदोष
 अपने पुत्रको जो इस प्रकार के सरस्वती के बचन को सुनकर आपने उस पुत्रको
 लेकर बड़ा आनन्द माना । १५ । तब उस अष्ट ब्राह्मणने वहे प्रमसे अपने पुत्र
 के मस्तक को मूया और वड़ी विलम्बतक उस अष्ट मानिने अपने पुत्रको गोदी
 में लेकर । १६ । सरस्वती को यह वर दिया कि हे सुन्दरी एष्यदेवानः पितरा
 समेत विश्वदेवा गन्धर्व अप्सराओ के गण तो जलसे तुमहोकर आनन्द को
 पावेंगे । १७ । यह कहकर वचनों से भी उस महानदीको प्रसन्न किया हे
 राजा उस प्रसन्न और अत्यन्त आह्लादाचित्त ने जैसे प्रकारसे प्रसन्न किया उस
 कह सुनो । १८ । हे महाभाग अष्ट तुम ब्रह्माजी के सरोवर से निकली हो हे उत्तम
 नदी तुमको प्रशंसनीय ब्रतवाले मुनिको जानते हैं । १९ । हे मियदशत तुम सदैव मेरा
 प्रियकर जेवाली भी हो हे सुन्दरी इसी हेतु से तेरा पुत्र बड़ा पुत्र सारस्वत नाम
 होगा । २० ॥ और तेरा पुत्र लोकभावन होकर तेरे ही नाम से विख्यात होगा

your son, 'holy' man. 'For your sake, I kept him within my womb.
 Your semen fell down at the sight of Alamvusha and I preserved it for
 your sake.' Receive your innocent child. 'The rishi was much pleas
 ed at the sight of his son.' 15. He gave a boon to Saraswari, saying
 'Pitars, Vishwedevas, gandharvas and apsaras will be gratified by your
 waters.' He pleased her by these words and praised her as follows:--
 You have come out of Brahma's lake and glorious rishis know you.
 You have pleased me with your devotion and therefore I shall name
 your son as Sarasvat. 20. This son of thine will make your name

प्रथित पुत्रले लोकमावत' । सारस्वत इतिवधातो भविष्यति महातया ॥ २१ ॥ एव
 द्वादश वाषिष्ठ्यामनादृष्ट्या द्विजवर्षान् । सारस्वतो महाभागो वेदान्वापविष्यति
 ॥ २२ ॥ पुत्रपापवञ्च परिज्जपस्व सदा पुत्रवत्तमा शुभे । भविष्यसि महाभागो मत्प्रसा
 दात् सारस्वति ॥ २३ ॥ एव सा संस्तुगतेन वट लम्बा महानदी । पुत्रमादाव मुदिता
 जगाम भरतर्षभ ॥ २४ ॥ इतस्मिन्नेव काले तु विरोधे देवदानवै । शक्रः प्रहरणात्पेरी
 लोकास्त्रिं विषयात् ॥ २५ ॥ न सोपडेभे भगवान् शक्रः प्रहरणं तदा । यद्देवता
 भवेच्छांशु ववाव विदुःश्रियात् ॥ २६ ॥ ततोऽब्रवीत् सुगन् शक्रो न मे शक्यता महा
 जुरा । श्रुतेरिषिभिर्दधीचस्य निहन्तु भिदशश्रियः ॥ २७ ॥ तस्याघात्वा
 श्रुतिभेदो वाच्यतां कुरसत्तमाः । दधीचास्थानि देहीति तैर्बलिष्यामहे दिव्य
 ॥ २८ ॥ स च तैर्बाहिनोऽस्थानि यत्माविवरस्तदा । प्राणत्यागं कुर्वन्नेह शकारेवाधि
 चारवत् । स लाकानक्षयान् प्राप्नो देवप्रियकरस्तदा ॥ २९ ॥ तस्यादिभिरयो शक्रः

अर्थात् यह महातपस्वी सारस्वत नामसे बसिद्धहोगा । २१ । यह महाभाग सारस्वत
 पारह वर्षके दुर्भिक्ष में उद्यम ब्राह्मणों को वेदपढ़ावेना २२ । हेधुभ महाभाग सारस्वती
 तुम मेरी कृपा से सदैव पवित्र नदियों से भी महापवित्र नदी होगी । २३ । हे भरतर्षभ
 इस प्रकार उस ऋषि से स्तुयमान वह महानदी बरको पाकर बड़े जानम्ह
 पूर्वक अपने पुत्रको लेकर चलीगई । २४ । उसी समय में देवता और दानवों में
 परस्पर विरोध हुआ इस हेतुसे इन्द्र ने उनके मारनेवाला आज्ञा बहुत दूदा चान्तु
 ऐसा आज्ञा कोई न मिला जोकि असुरों के मारनेको समर्थ होय । २५ । तब इन्द्र
 ने देवताओंसे कहा कि दधीचिऋषि के अस्थिके बिना किसी आज्ञा से भी देव
 ताओं क शत्रु महाअसुरों के मारनेको मैं समर्थ नहीं होसका २७ इस कारण से हे
 उद्यम देवता लोगो उस उद्यम ऋषि से प्रार्थना पूर्वक यह वाचना करो कि हे
 दधीचि आप हमपर कृपाकरके अपने हाडोंको दो । २८ । उन आपके हाडों
 से हम अपने शत्रुओं को मारेंगे हे कारुण्य तब उत्सीहकार से उन देवताओं ने
 वाचना किये हुये उस महाभेष्ट ऋषि ने अचेष्टीति से विचार किये पिनाही

famous, for he will be called Sarasvat. He will teach the Vedas to
 brahmans during the twelve year's sacrifice and you will be reckoned
 the holiest among rivers. " Thus praised by the rshi, Sarasvat was
 much pleased and took her son with her. 24. In the meantime there
 happened to be a great war between Daityas and gods. Indra search-
 ed for a weapon to slay Daityas, but could find none. Then he said to
 gods, " I can not slay your enemies without making weapons out of the
 bones of Dadhichi and you must beg of him the favour of granting
 you his bones to slay your enemies. The gods did as they were direct-
 ed to do and Dadhichi dying without any hesitation, ascended to the

संयुक्तमनासदा । कार्यमास विभ्रानि नानामहत्तयाप्युत ॥ ३१ ॥ वज्राणि चक्राणि
 महा मुह्यन् दण्डांश्च पुष्कलान् । स हि तीक्ष्ण तपसा समृतः परमर्षिणा ॥ ३२ ॥ वजा
 वतिसुतेनाथ सुगुणा लोकनाशनः । अतिक्रायः स तेजस्वी लोकसारो विनिर्मितः ॥ ३३ ॥
 अरे कैलनुवः प्राशुर्भद्रिस्ता प्रवितः प्रभुः । नित्यमुद्भिज्जतेवास्व तजसः पाकशासनः
 ॥ ३४ ॥ तेव वनेन भगवान्मन्त्रयुकेन भारतः । विशुकोश विशुधेन ब्रह्मतेजोमयेनच
 ॥ ३५ ॥ वैश्वानरधवोराजा जघान नवतीर्थेव । अथ काले ध्यतिक्रांते महत्कथितमथ
 सुते । वनाद्द्विष्टुमाता राजन् द्राक्षोवीर्विकी ॥ ३६ ॥ तस्या द्राक्षवाचार्थिकशामना
 सुपुत्रा महर्षेव ॥ इत्यथे प्राश्रवमाजन् सुवासाः सधैतोदिशम् ॥ ३७ ॥ विश्वयुक्ताह
 मनुवाह वृक्षावा मुनिः सास्वतस्तदा । गनमाव मतिःशुके तं शोवाच सरस्वतीः ॥ ३८ ॥
 न मन्तव्यमितः पुत्रं गवाहारमहं सदा । वास्यामि मास्यमवराजुष्यतामिह भारत ॥ ३९ ॥
 इत्युक्त्वर्षेवासास स पितुन् देवतास्वथा । आहारमकरोन्मिदं प्राजाह वदंश्च वास्वह

अपने माँको स्थान किया और अविनाशी लोकको पाया । ३० । उसके माँ
 स्थानके पीछे अत्यन्त असह्य इन्द्रने उनके हाँसे नानामकार के दिग्ब ब्रह्म
 शक्तों को पैवार करवाया । ३१ । अर्थात् वज्र, चक्र, गदा और द्भे मारी दण्डों
 को जोकि अथर्व वर्ण और श्रेष्ठ ये ब्रह्माजी के पुत्र संसारके प्यारे श्रृगुणारि से
 निर्मित बड़े तेजस्वी और धारण करनेवासे संसारमें अद्वितीय पर्वताकार हुए पुष्ट
 और बड़े कर्म बदान्ना से युक्त भरतवंशी भगवान् इन्द्र ने वत ब्रह्मतेज से
 इत्यथ होनेवासे तेज संयुक्त शब्दावधान छोड़हुये वजसे । ३५ । वैश्य दानकों
 के बड़े पीरों को मारा हे रामा इसके पीछे अत्यन्त भयकारी बड़े समय के अन्त
 शोषार वारहर्ष का दुर्बिन्न वर्तमान हुआ । ३६ । उस वारहर्ष के दुर्बिन्न
 में मर्षीलोच कुशासे व्याकुल आशीषका के निमित्त दशों दिशाओं को चले
 गये । ३७ । अथ सास्वत मुनि ने दिशाओं में भागेनवासे उन ऋषियोंको देख कर
 चकनेका विचार किया वत समय सरस्वती उनसे बोली । ३८ । हे पुत्र
 वहाँ से तुम्हको जाना योग्य नहीं हे मैं सदैव तरे आहारके निमित्त अत्यन्त
 कष्टम नक्षत्रों को हूँगी । ३९ । हे भरतवंशी हेमे माताके वचन सुनकर

regions of the good, 30. At his death Indra prepared from his bones
 various sorts of weapons, such as vajra, discus, mace and staves, and
 with those huge weapons, slew the enemies of gods. At the close of
 that war there was a twelve years famine. 35. The rishis left their
 abodes for want of food. Sarawat too, intended to follow their exam-
 ple, but he was stopped by Saraswati, who said, "You need not go
 anywhere, my son, for I shall always supply you good fish for food.
 Sarawat obeyed his mother's orders and gratified gods and pitris with
 that food and kept reading the Vedas and Puran- 40. He was always

॥ ४० ॥ अथ तस्यामनावाट्यामतीतायां महर्षयः । ज्ञान्योन्यं परिप्रच्छन्तः पूतः स्वाध्यायकारणात् ॥ ४१ ॥ तेषां भ्रुवापरीतानां नष्टां वदामिधावताम् । सर्वेषामेव राजेन्द्र न कश्चित् प्रतिमानवान् ॥ ४२ ॥ अथ कश्चिद्विस्तेषां सारस्वतमुपेयिवान् । कुर्वाणं सवतारमानं स्वाध्यायमृषिसत्तमम् ॥ ४३ ॥ स गत्वाचष्ट तेष्यश्च सारस्वतमीतप्रभम् । स्वाध्यायामरप्रस्थं कुर्वाणं विजने वने ॥ ४४ ॥ ततः सर्वे समाजग्मुस्तत्र राजेन्द्रमहर्षेण सारस्वतं मुनिधेष्टमिदमूचुः समागताः ॥ ४५ ॥ अस्मानध्यापयस्वेति तानुवाच ततो मुनिः । शिष्यावमुपगच्छुध्वं विधिवश्चि ममस्युत ॥ ४६ ॥ तत्राद्यन्मुनिगणा बालस्वमसि पुत्रक । स तानाह न मे धर्मो नश्येदिति पुनमुनीन् ॥ ४७ ॥ यो ह्यधमो वै प्रया इगृहणीयाद्वाप्यधमतः । शिष्यां तानुमौ क्षिप्रं स्यातां वा धेरिणाबुमौ ॥ ४८ ॥ न हाव

उस ऋषि ने उधीपकार से देवता और पितरोंको तृप्तकिया प्राण और वेदोंको धारण करत । ४० । उन ऋषिने सदैव आहारकिया फिर उस दुर्भिक्षके समाप्त होने पर महापियों ने वेदज्ञता के कारण परस्पर पूछा । ४१ । हे राजेन्द्र तुभ्रांत और चारों ओरको दौड़नेवाले उन सब ऋषियों के वेद विस्मरण होगये और किसीने नहीं जाना । ४२ । इसके अनन्तर उनमेंसे किसी ऋषिने उससारस्वत ऋषिको पाया जोके तीक्ष्ण बुद्धि और वेदपाठ करनेवाले ऋषियों में श्रेष्ठय । ४३ । उसने जाकर उसबड़े तेजस्वी देवताके समान निर्जन वनमें वेदपाठ करने वाल सारस्वत ऋषि को उन अपने साथी ऋषियों से बखन किया । ४४ । तब वह सबऋषि मिलकर बहंगये और मिलहुओं ने मुनियों में श्रेष्ठ सारस्वत मुनिसे यह बचनकरा । ४५ । कि हे मुनि आप हम सब मुनियोंको वेद पढ़ावो तब उस मुनिने उन ऋषियों से कहा कि तुम विधिपूर्वक मरी शिष्यताको प्राप्तकरो । ४६ । तब वह महापुनियों के समूह यहबचन बालु कि हे पुत्र तुम बालकहो तब वह सारस्वत मुनियों के बोले कि मेराधर्म नाशहोगा । ४७ । निश्चय करके जो अधमसे कहें और अधमही से लवे उन दोनोंका शीघ्रही नाशहोगा हे अधम वह दोनों परस्पर शत्रु राजाते हैं । ४८ । यह सुनकर ऋषियोंने वरों की आधिपत्या प्रकृतवाला मन और

supplied with food, and at the end of the famine the rishis were in search of one who knew the Vedas, for being in an unsettled state during the long period, they had all forgotten the Vedas. Some one of them found learned Saraswat and spoke of him to his companions. Then all the rishis came together and asked him to teach Vedas. He promised to teach them the Vedas on condition that they became his disciples. 40. But they said that he was yet a child and he said, "He who practices deception and cheats another is soon destroyed or makes the other his enemy. But I shall deal with you according to

नन्वै पलितैर्न विसेन न वन्द्यमि ऋषयश्चक्रिरे धर्मं यो नृचात, स नो महान् ॥ ४९ ॥
 एतद्भुत्वा पचस्तस्य मुनयस्ते विधानत । तस्माद्देवानु प्राप्य पुनर्धर्मं प्रज्ञाक्रिरे ॥ ५० ॥
 षष्टिमुनिसहस्राणि, शिष्यस्व प्रतिपदिरे । सारस्वतस्य विप्रवेदेत्स्वाध्यायकारणात्
 ॥ ५१ ॥ मुष्टिं मुष्टित त सखे, दर्भाणा ते ह्यपाहरन् । तस्यासनाय विप्रपंचालस्वापि,
 बशोऽव्यता ॥ ५२ ॥ सत्रापि दत्त्वा वसु रोहिणेयो महाबल कनकपुत्रोऽथ । जगाम
 तीर्थे मुदित क्रमेण खपात, महद्वृद्धकन्यां स्मि यत्र ॥ ५३ ॥

इति गदापुद्गलवर्णनेवलदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतोपाख्याने एकपञ्चाशोऽध्यायः ५३ ॥

बालवर्षों के कारण से उत्पन्न होनेवाले धर्मको नहीं किया और कहा कि जो शिक्षा
 अतिदूर-छाओं आगे समेत, वेदोंका पढ़नेवाला है, वही हममें बड़ा है । ४९ । ऐसा
 त्रिचारुकर मुनियों ने विधिके अनुसार वसु, सारस्वत मुनि से वेदोंको पाकर, फिर
 धर्मोंको किया । ५० । साठ, हजार, मुनियों ने वेद पढ़नेके कारण में उस परम
 ऋषि, सारस्वत, की शिष्यता को पाया । ५१ । तदनन्तर वह सब उस परमऋषि
 के आसन के लिए एक मुट्ठी कुशालाय और उस वाजक के अधीनता में नियत
 हुए । ५२ । इसके पीछे केशवर्ती, कण्व भाई, महाबली, वलदेवजी, बहाम्नी,
 षनोंको दान कर के क्रमपूर्वक उस प्रसिद्ध तीर्थपर गये जहाँपर कि एक बहुत
 बड़ कन्या, बहरी थी । ५३ ।

dharm " Then the rishis knew that superiority lay in knowledge and
 not in years or wealth Thus they learnt the Vedas from him and
 were again established on the right path " 60 Sixty thousands of
 rishis became his disciples. Each of them brought a handful of kusha
 grass for his seat and obeyed his orders. Baldy gave charity at
 that holy place and proceeded to the place where a very old maiden
 had her obode. " 53



जनमेजय उवाच । कथं कुमारी भगवत्पौत्रिका, ह्यमृतपुरा । किमर्थेण तप
 इत्ये को वास्या नियमोऽभवत् ॥ १ ॥ सुदुष्करमिदं ब्रह्मस्त्वस्वस्य कृतमनुचमम् ।
 आस्थादि तस्वमकिलं यथा तद्वैसि सा स्थिता ॥ २ ॥ वैशम्पायन उवाच । कुशिराक्षी
 महावीर्यः कुणिर्गो महायथाः । स तस्या विपुलं राजंस्तपो वै तपसां वरः ॥ ३ ॥
 मनसाय सुता सुभ्रू सनुत्पादितवान् विभुः । ताञ्च दृष्ट्वा मुनिः शिवाः कुनिर्गो
 महायथाः । जगतं त्रिदशं राजन् सत्यज्जेश कलेवरम् ॥ ४ ॥ सुभ्रूः स्वः स्व कन्वावी
 पुत्रद्वाराकमिच्छणा । महता तपसोभेण, कृत्वा भ्रममनिग्दिता । उवाचैः पूजयन्ती
 पितृदेवांश्च सा पुरा ॥ ६ ॥ तस्यास्तु तपसोभेण महाद् काकोरवगाम्भृत् । सा विवा
 दीवन्तापि तत्र नैकद्वनिग्दिता । आरमन् सद्यं सा तु जर्षादे मात्स्यपरपत् ॥ ७ ॥
 ततः सा तपसोभेण पीडयित्वाऽरमन्सनुम् । पितृदेवाकृषेनरता बभूव विश्वेन वने ॥ ८ ॥

अध्याय २९ ॥

जनमेजय बोले कि हे भगवान् पूर्व समयमें वह कुमारी कैसे तपमें मग्न
 हुई, किस निमित्त तपस्याकरी और उसका क्या नियम था । ? हे माझ्जय वैदिक
 से यह महा भेड और बड़े कष्टसे करने के योग्य तप छुना अब उसका वह तप
 मूल समेत वृत्तान्तकहो जैसे कि वह तपमें मग्न हुई । २ । वैशम्पायन बोले कि हे
 राजा बड़े पराक्रमी और यशमान् एक कुनिर्गनाम ऋषिद्वये पत्र था। उसकी मे
 बड़ी तपस्या करके । ३ । मनसे सुन्दरी पेट्रीको उत्पन्नकिया। तप यन्त्री कुशि-
 गर्गनामि उस कन्वा को देल और बहुत प्रसन्नहोकर इसलोक में शरीको त्यागकर
 स्वर्गको गये । ४ । इसके पीछे वह सुन्दर भूकुटी 'कमल सोचना करवाणो'
 निर्दोष बड़े बारी उग्रतप के द्वारा परिश्रम करके जनों समेत देवता और पितरों
 की पूजन करनेवाली ईई । ६ । हे राजा उस उग्रतपमें ही उसका बड़ा समय
 व्यतीत हुआ और उस पितासे दीहुई निर्दोष ने भी कभी पतिकी इच्छा नहींकी

CHAPTER LII

Janmejaya said, " How was the maiden engaged in asceticism; for what purpose and with what vows? I wish to know how she was engaged in severe asceticism." Vaishampayan said, " There was a glorious rishi, named Kunigarg. By the power of asceticism he gave birth to a beautiful girl. He was much pleased with her and left the world for heaven. The beautiful maiden worshipped the gods and pitris. 6. She was engaged all her life in performing asceticism and never wished to marry. She dried her body with penances and passed her time in devotion in a wilderness. She thought that with the leanness of her body she had acquired her object of desire. She was ready to die when she was so feeble that she could no longer

आमानं मन्वमानापि कृतकृत्यं भ्रमन्विता । धार्ष्ट्येन च राजेन्द्रतथा सोऽपि कथिता ॥ ९ ॥ सा नाशकघ्ना, मन्तु पदात् पदमपि स्वयम् ॥ चकार प्रमनेः बुद्धि परलोक्याय वै तदा ॥ १० ॥ लोककागन्तु तं दृष्ट्वा शरीरं नारदोऽब्रवीत् ॥ असंस्कृताया कन्यायाः कुतो लोकास्तवान्धे ॥ ११ ॥ परवन्तु श्रुतमस्माभिर्देवलोके महाव्रते ॥ तपःपरमकं प्राप्तं मन्तु लोकास्त्वया जिता ॥ १२ ॥ तुम्हारद्वयजः श्रुत्वा सामधीरपिसंसदि । तपसोऽहं प्रयच्छामि पाणिप्राद्वस्य संसतम् ॥ १३ ॥ इत्युक्ते चास्था अप्राह पाणि गावलसम्भवः ॥ ऋषिः प्राकृभृङ्गवान्नामः स्वयं यज्ञेदमब्रवीत् ॥ १४ ॥ सवेन तवाचार्य पाणि स्वस्वामिः शोभने । यद्येकरात्रेः बन्तस्यै त्वया सह मधेति वै । तथेति सा प्रातश्चर्य तस्मै पाणिद्वी तदा ॥ १५ ॥ यथाहृदयं विधिना

इस हेतुसे कि उसने अपने योग्य पतिको नहीं पाया तब वह बड़े उग्रतप से अपने शरीरको पीड़ितकरके निर्जन जंगलमें देवता और पितरों के पूजन में प्रवृत्त हुई । ८ । हे राजेन्द्र परिभ्रम से रहित अपने को अभीष्ट प्राप्त करनेवालीमानकर वह कन्या बड़ी तपस्यासे जीये शरीररुहे । ९ । जब कि वह अपने चरणों से कहीं बढेनेके लिये को भी समर्थ नहीं हुई तब परलोकके जान में विधिपत्रक बुद्धि की । १० । फिर नारदजी उस शरीर त्यागनेकी इच्छावान कुमारीसे बोले हे निष्पाप तुष्ट संस्कारसे रहित कन्याके लोक कैसे हासक है । ११ । हे महाव्रत हम ने देवलोक में ऐसा सुनाई तुमने बड़ी तपस्याकरी परन्तु लोकों का विजय नहीं किया । १२ । तबही वह कुमारी नारदजी के इन वचनोंको सुनकर ऋषियों की सभामें वाली है उत्तम ऋषि में आधे तपकाफल अपने पतिको देगी । १३ । ऐसा कहनेपर इसके हाथको गालवके पुत्र गृह्णवान् ऋषि ने पकड़ा और इस नियमको करा । १४ । कि हे शोभायमान अब मैं तेरे पाणिका इस प्रतिज्ञा के साथ ग्रहण करताई कि जो तूकरात्रि मेरे साथ निवासकरे तब उसने कहातयास्तु ऐसी प्रतिज्ञाकरके उसने अपना पाणि उसके हाथमें दिया । १५ । गालवके पुत्र गृह्णवाने बुद्धि विधिसं भ्रमिमें हवनकरके उसका पाणिग्रहण करके विवाह किया । १६ । हे राजा वह स्त्री रात्रि में तर्हण दिव्य भूषण और वस्त्रों से अल-

walk. 10. Seeing her ready to die, Narad said, "How can you enter heaven without Sanskars. I have heard it said among gods that you have performed asceticism but won no regions." At this, she said in the assembly of munis, "I shall give half the merit of my asceticism to my husband." At this, Shringvan the son of Galav took hold of her hand and promised to marry her on condition that she stayed a night with him. She consented and he married her according to the Vedic rite and poured libations to fire. 17. During that night she became young, adorned with ornaments and dress,

दुःखा चार्तिविधानतः । चक्रं च पाणिग्रहणं तस्योद्गाहञ्च गालधिः ॥ १७ ॥ सा
 रात्रावभवद्राजस्तुणी धरवर्णिनी । दिव्याभरणवस्त्रा च दिव्यस्त्रगनुलेपनाः ॥ १८ ॥
 तां दृष्ट्वा गालधिः प्रीतो दीपयन्तीभिर्भ्रियाः । उवाच च क्षपामेकां प्रभोति सा प्रधी
 क्वचतम् ॥ १९ ॥ यस्त्वया समयो मित्रः कृतो मे । तपताम्बर । तेनोषितास्मि भवन्ते
 ष्वस्ति तेस्तु ब्रजाम्यहम् ॥ २० ॥ सानुहाताग्रधीन्द्रयोः पौर्णिमस्तीर्थेः समाहितः । वरस्यते
 रजनीमेकां तर्पयित्वा विधौकसः ॥ २१ ॥ चत्वारिंशत्तमष्टौ च द्वौ वांष्टौ सस्यगाचरेत्
 यो ब्रह्मचर्ये वर्षाणि फलं तस्य लभते सः ॥ २२ ॥ एवमुक्त्वा ततः साध्वी वैश्वं त्यक्त्वा
 दिवं गवाः । ऋषिरप्यभवहीनस्तस्याः रूपं विचिन्तयन् ॥ २३ ॥ समयेन तपोद्गाहञ्च
 कुरुष्वत्पतिशुद्धीतवान् । साधीयित्वा तदारगाने तस्याः स गतिमाश्वियात् ॥ २४ ॥ दुःखितो

वरित्तमहत् । तपेव
 व इत शल्य हला
 सभामे निहत पाण्ड
 वान् उत लक्ष्मीके
 किंसाध निवासीदुये
 मे श्रेष्ठवाह्यण तमने
 और शुभाय अव

मे जाताहू । २० । तब वहा स । नकलकर वह खा । फर वाला जो सावधान परुप
 इस तीर्थमे देवताओं को नमस्करके एकरात्रि निवासकरे । २१ । वह उस फलको
 पावे जो कि अठ्ठावन वर्षतक श्रेष्ठ रीति से ब्रह्मचर्यको करे । २२ । इसके पीछे
 वह पतिव्रता एमा कहकर शरीरको त्यागकर स्वर्गको गई और वह ऋषि भी उस
 के रूपको शोचताहुआ महा दुःखीहुआ । २३ । नियम के कारण से उसका आधा
 तप बड़ी कठिनता से लिया और उसने आत्माको साधन करके उस की गतिको
 पाया । २४ । हे भरतर्षभ उसके रूप और तजवल से महा दुःखीने ऐसा किया
 इसप्रकार से उसने उस दृढकन्या के शुभचरित्र मक्षचर्य और शुभाति को उससे
 कहा । २५ । उस स्थानपर निपत होनेवाले बलदेवजी ने शल्य को मृतक हुआ
 सुना शत्रुओं के तपनिवाले बलदेवजी ने वहाँ भी ब्राह्मणा को दान देकर शल्य

with body having divine fragrance. Gala va' son, Shringwan lived
 with that beautiful woman for a night. In the morning she said to
 him, " I have done my part of the contract and lived with you one
 night. I am now going away. " 20. Having come out in the open
 air, she said, " He who lives here one night, will gain the merit of
 remaining in celibacy for fifty eight years. " Having said this, the
 chaste woman left for heaven. The rishi was much grieved for her.
 He was loath to retain half the merit of her asceticism and made
 himself worthy of her by purifying his soul. Much grieved at the

ब्रह्मदा ॥ २७ ॥ समन्तपञ्चकद्वारास्ततो निष्कस्य माधव । पप्रच्छयिगणाग्राम कुरुक्षेत्रे
 तदुप यत् कलम ॥ २८ ॥ तेषुपुष्टा यदुसिद्धेन कुरुक्षेत्रकल विभो । समाचक्षुर्महामा
 लस्यै सर्वे ययातयम् ॥ २९ ॥

गदापुष्टयणीये बलदेवतीर्थयात्रायां सारस्तोपाख्यानं द्विपञ्चाशोऽध्याय ५३ ॥

को मुनकडुभा मुना । २७ । इसके पीछे माधव बलदेवजी ने सुमन्तपञ्चकके
 द्वारसे निकल कर कुरुक्षेत्रके कलको अपिप्रासे पूछा । २८ । हे समर्थ उन यादवों
 में श्रेष्ठ बलदेवके इन वचनको सुनकर उन महात्माओं ने उस कुरुक्षेत्रका ठीकर
 कल वर्णन किया । २९ ।

loss, he related all about the old maid. While there, Baldev heard
 of the death of Shalya. He gave charity to Brahmins. Then he
 asked the rishis about the merits of Kurukshetra as he came out of
 Sumant panchak, "That best of Yadavas was then informed about
 the merits of Kurukshetra." 29.



शुभयः ऊचुः । प्रजापतेरुत्तरवेदिव्यथे सनातनो रामः समस्तपञ्चकम् । समीजिदे
 यत्र पुरा दिवोकसो वरेणसत्रेण महावत्पदा ॥ १ ॥ पुराराजर्षिं वरेण
 सोमता वद्विनि यथावैयामतिने तेजसा । प्रकृष्टमेतत् कुरुणा महारमना ततः
 कुनक्षेत्रे निरीद पश्ये ॥ २ ॥ राम उवाच । किमर्थं कुरुणाकृष्टं क्षेत्रमे
 नमस्कारवहनाः । एतद्विद्वान्महद् भ्रूतु कथ्यमानं तपोधनाः ॥ ३ ॥ शुभय ऊचुः । पुरा
 किल कुरुं राम कथेन्नं सततोत्थितम् । अथेयं शक्रस्त्रिदिव्यात् पत्यपृच्छत कारणम्
 ॥ ४ ॥ इन्द्र उवाच । किमिदं वधते राजन् प्रयत्नेन वरेण च । राजर्षे किमभिप्रेक्षं
 वनेन कुरुते क्षितिः ॥ ५ ॥ कुरु उवाच । इह ये पुरुषाः क्षेत्रे मरिच्यन्ति शतक्रतो । ते
 गमिष्यन्ति सङ्क्रान्तं लोकान् पापविभ्रंजितात् । ६ ॥ अथ हस्य ततः शक्रो ब्रह्म
 त्रिदिवं प्रभुः । राजर्षिपत्यनिर्दिशः कथेत्सव वसुधराम ॥ ७ ॥ आगच्छयामस्य क्षेत्रेनं

अथैव ॥ ६ ॥

शुभयबोले हे बलदेवजी यह समस्तपञ्चक ब्रह्माजी की सनातन उत्तरवेदी कही
 जाती है जहाँपर कि बड़े दाता-देवताओंने वरम यज्ञकेद्वारा अक्षेपकार से पूजन
 किया ॥ १ ॥ पूर्वसमय में राजर्षियों में भेष्ट बड़े बुद्धिमान और तेजस्वी महात्मा
 कुरुने इसक्षेत्र को जोताया इस हेतु से इसकानाम लोकमें कुरुक्षेत्र प्रसिद्ध हुआ
 वसुदेवजी बोले हे तपोधन शुभयों कुरुमेः इसक्षेत्रको किसहेतुमे जोता मैं इसका
 सब वृत्तान्त सुना चाहताहूँ । २ । शुभय बोले हे वसुदेवजी निश्चय करके
 पूर्वसमय में इन्द्रे स्वर्गसे यहाँ आकर उस सदैव सन्नद्ध और जोतनेमें प्रवृत्त विश्व
 राजा कुरु से इसका हेतु पूछा इन्द्रेने कहा कि हे राजेन्द्र उहे उवाच समेत आप
 यह वषाकाम करते हैं हे राजर्षि आपकी इष्ट में वषा करनेकी इच्छाई इसके
 कारण यह पृथ्वी आप जोतते हैं । ५ । कुरुबोले हे इन्द्र जो पुरुष इस क्षेत्रमें
 शरीरको त्यागकरगे वह अपने पुण्यसे निष्पापलोकों को जायेंगे । ६ । इसके
 पीछे इन्द्र इसकर अपने स्वर्ग को चलेगये इसी प्रकार यह राजर्षि दुस्ती होकर

CHAPTER LIII

The rishis said, "Samastpanchak is called the eternal altar of Brahma, where the gods had performed sacrifices and given donations. Glorious Prince Kuru had tilled the ground in former days and therefore the place was called Kurukshetra." Baldev said, "Why did Kuru plough it? I wish to hear all about it." The rishis said, "Indra came from heaven and asked Kuru the reason of his so doing. He said, "What are you doing, Prince; what is your aim, and why do you till the ground?" Kuru replied, "People dying here will be cleansed of their sins and will go to heaven." Indra laughed at this and returned to paradise. The Prince returned to hear with the

भूयो भूयोऽवहस्य च । शतक्रतुरनिर्विघ्नं पृष्ट्वा पृष्ट्वा अगाम ह ॥ ८ ॥ यदीं तु तप
 स्वाग्नेयं चकार्षं वसुधा नृप तत शक्रोऽबोधेवाप्राजपेयं विष्णुकीर्षितम् ॥९॥ एतत् श्रुत्वा
 हृदयेषाः सद्दस्त्राक्षमिदं वच । धरेण उच्यता शक्रराजार्षिर्वादि शक्यते ॥ १० ॥ यदि
 क्वच प्रसीता वै स्वर्गो गच्छन्नि मानय । अस्माननिष्पृथा क्रतुमिर्भागो मोन भविष्यति
 ॥ ११ ॥ आगम्य च तत शक्रस्तदा राजर्षिमब्रवीत् । जलं खेदेन भवत कियतां वचनं
 मम ॥ १२ ॥ मानवा ये निराहारा वेदन्यपश्यन्त्यतश्चिता । युधि वा निहता सम्पगपि
 तिर्य्यगता नृप ॥ १३ ॥ ते स्वर्गमाजो राजेन्द्र भविष्यति महामते ॥ तयोस्तिवति
 सतो राजा कुव शक्रमुवाच ह ॥ १४ ॥ ततस्तमश्रुत्वाप्य प्रकृष्टेनास्तेराभवा । अगाम
 त्रिदिश नृप क्षिम बलनिसूदन ॥ १५ ॥ एवमेतद्यदुभेष्टं कष्टं राजर्षिणापुग । शक्ये
 चाश्रुत्वाते पुण्ये प्राणात् विमुञ्चताम् ॥ १६ ॥ ब्रह्माचैश्च सुरसेष्टे पुण्ये राजर्षिभि
 उपसेवको ओताकरतावा और इन्द्र वारम्वार इती प्रकार मे पूछ २ और हँस २
 कर चलेजातेवे । ८ । जब राजनि उग्रतप से पृथ्वीको जोता तब उस राजर्षि के
 मनकी इच्छाकी इन्द्रे देवताओं से कहा । ९ । देवता यह सुनकर इन्द्रेसे यह
 वचन बोले कि हे इन्द्र जो, वनमके तो हम राजर्षि को वर से लुभाना योग्य है
 १० । जो इस लोकमें मनुष्य यज्ञों से हमको न पूजकर इस क्षेत्र में, बरकर
 स्वर्गको जायेंगे उस दशामें हमारे भागोंकी नष्टता होगी । ११ । इसके पीछे इन्द्र
 ने आकर तप राजर्षि से कहा-आपको कष्ट करना योग्य नहीं है मैं कहूँ सो
 कीजिये । १२ । हे राजा जोसावधान मनुष्य यहाँ निराहार होकर अथवा युद्ध में
 अच्छीरौति से मरणको पाकर शरीरको त्यागकरगे वद्यपि तिर्य्यक् योनि में भी
 उनका जन्म होजाय तौभी । १३ । हेवदे बुद्धिमान् राजेन्द्र वह स्वर्गभागी होंगेइन्द्र
 केइसु वचन को सुनकर राजाकुव ने इन्द्र से कहा कि ऐसाही होय । १४ । तब तो
 इन्द्र अत्यन्त प्रसन्न चित्त से उससे पूछ बीघ्रही स्वर्गको गये । १५ । हे गार्वो में
 भेष्य इस प्रकारसे पूर्वसमय में यह क्षेत्र राजर्षि कुरुते जोतागयाई और उसीप्रकार
 plough- Indra came to him, put the same question again and again
 and would return with a laugh. Still the king continued to labour
 at the field Then Indra informed the gods with the king's desire
 and they said, " You should tempt him with a boon if you can. 10.
 For we shall lose our shares of the sacrifices, if people will die there to
 go to heaven without performing them." Indra came to the king
 and said, " You need take so much trouble no longer, if you do what
 I say. Those wise men who die here fasting in a good cause, shall
 proceed to heaven. " The king consented to Indra's proposal.
 Indra bade him farewell and returned to heaven. 15. Thus the
 field was ploughed by Royal Kura and harvest was reaped by Brahma
 and other gods through Indra. There is 10 letter's part in the face

स्तथा । नातः परतरं पुण्य भूमेः स्थानं भविष्यति ॥ १७ ॥ इहतप्यन्ति ये केचित्तपः
 परमकं नराः । देहत्यागं ते सर्वे वास्यन्ति ब्रह्मण क्षयम् ॥ १८ ॥ ये पुनः पुण्यसाग्रे
 वे दानं दास्यन्ति मात्रवाः । तेषां सहस्रगणितं भविष्यत्यचिरेण वै ॥ १९ ॥ वे चो ह
 नित्यं मनुजा निवतस्यन्ति शुभैविणः । यमस्य विषयं ते तु न द्रक्ष्यन्ति कदाचन ॥ २० ॥
 यदयन्ति ये च क्रतुभिर्महद्भिर्मुनेषु वराः । तेषां त्रिपिण्डे वासो यावद्भिर्भिरभ्यति
 ॥ २१ ॥ अपि चात्र स्वयं शक्रोजीता गाथां सुराधिपः । कुरुक्षेत्रे निवदां वि तां भुण्क्ते
 हृत्वा युधः ॥ २२ ॥ पांशवोपि कुरुक्षेत्राद्वायुना समुदीरताः । अपि दुःश्रुतकर्मणं
 न्यति परमां गतिम् ॥ २३ ॥ सुर्येभा ब्राह्मणसत्तमाश्च तथा नृगाद्याः नरदेवमुखाः ॥
 हृत्वा महादः क्रतुभिर्मुनिहाः सन्त्यज्य वेदान् सुगतिं प्रपन्नाः ॥ २४ ॥ तस्मिन्कु
 रन्तुकुर्याद्यदमन्तरं रामहृदनाञ्च मचक्रकस्य च । एतत् कुरुक्षेत्रसमन्तपञ्चकं ब्रह्मण्य

देवताओं ने और ब्रह्मा ने इन्द्रको आज्ञाकरी इससे अष्टतर धर्म की दृष्टिको
 हेत पृथ्वीपर कोई स्थान नहीं होगा । १७- जो कोई मनुष्य यहां उत्तम तपस्या
 करेमे वह सब शरीर को त्यागकर ब्रह्मलोक को जायग । १८ । और जो पुण्या
 त्मालोग यहां धनाधिकका दान करेगे उन्होका वह दान थोड़ेही समयमें सहस्रगुना
 होगा । १९ । और जो भलाचाहनेवाले मनुष्य सदैव यहां निवास करेगे वह कभी
 यमराजके देशको नहीं देखेगे । २० । और जो राजालोग यहां बड़े यज्ञों से पूजन
 करेगे उन्होका निवास स्वर्गमें तबतक होगा जबतक कि यह पृथ्वी नियत है । २१
 यहां देवताओं के राजा इन्द्रनेभी आप उस गाथाको गाया है जोकि कुरुक्षेत्र से
 सम्बन्ध रखनेवाली है हे बलदेवजी उसको आप सुनिये । २२ । कि इस कुरुक्षेत्रमें
 वायु से उड़ाई हुई धूल भी पापी मनुष्य को परमगति देती है । २३ । हे नरोत्तपयहां
 उत्तम देवता ब्राह्मण और नृगआदिक अष्ट राजाओंनेभी बड़े पूजित यज्ञों से
 पूजनकरके अपने अपने शरीरोंको त्यागकर उत्तम गतिको पाया । २४ । तस्मिन्कु
 और आरन्तुक, परशुरामजी के हृद् और मचक्रकका जो अन्तर है यह कुरुक्षेत्र

of earth for the propagation of dharm than Kuruksheetra. Those
 who perform asceticism there, will go to the region of Brahm. A
 charity given there will multiply a thousand fold in a very short
 time and the good people living there will never have to see the
 region of Yam. 20. The kings who perform sacrifices there, will
 live in paradise as long as the earth lasts. Indra the Prince of gods
 said a verse about this very place, which runs thus—"The dust of
 Kuruksheetra, blown by the wind, falling on a sinful man, will lead
 him to salvation. Here gods, brahman, and royal sages like Nrg
 performed sacrifices and obtained good regions after death. The place
 bounded by Tarantuk, Arantuk, Parashuram's lake and Machakral

तद्वत्सर्वेदिकुच्यते ॥ २५ ॥ शिवं महत् पुण्यमिदं दिवोकसाः सुसम्मतं सर्वगुणैः
 समन्वितम् । अतश्च सर्वत्र नृपा हता रणे यास्यन्ति पुण्यां गतिमक्षयाः सदा ॥ २६ ॥
 इत्युवाच स्वयं शक्रः कुरुक्षेत्रमहोदयम् । तच्छानुमोदितं सर्वं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरैः ॥२७॥
 इति गदायुद्धपूर्वनिबलेदेववीर्यायात्रायां सारस्वतोपाख्यानं त्रिपञ्चाशोऽध्यायः ५३ ॥

समन्तपंचक नाम ब्रह्माजीकी उत्तरवेदी कहीजाती है । २५ । यह कल्पयाणूप और
 धर्मकी बड़ी बुद्धिका कारण देवताओंका ब्रह्मीकृत और सब गुणों से युक्त है इस
 हेतुसे यहाँ सदैव युद्धमें मरेहुए राजालोग पवित्र और अविनाशी गतिको पावेंगे
 । २६ । तबब्रह्माजीसमेत इन्द्रेण आप अपने मुखसे यह वर्णन किया और ब्रह्मा विष्णु
 महेश्वर इनतीनोंने उस सबको अङ्गीकार किया २७ ॥

is called Kurukshetra, Samantpanchak and the altar of Brahma. 25.
 It is a holy place of great merit and the heroes dying here in battle
 will attain indestructible state. Brahma and Indra himself said
 this and Brahma, Vishnu and Mahesh ratified the prediction. 27.



वैशम्पायन उवाच कुतश्च ततो दृष्ट्वा दत्त्वा दायाश्च सात्त्वतः । आश्रमं सुमह
 दिव्यमगमन्नमेव ॥ १ ॥ मधुकामप्रवर्णोपेतं तुल्यमशोकसंकुलम् । विरिचिभृत्युतं
 पुष्पं पतञ्जलिफलम् ॥ २ ॥ तं दृष्ट्वा वादवभ्रेष्टः प्रवरे पुण्यलक्षणम् । पञ्चकृतान्
 विदुः सर्वान् कस्याश्रमवरसूचकम् ॥ ३ ॥ ते तु सर्वे महात्मान ऊचुः राजन् । इत्यायुधम्
 शृणु विस्तरशो राम बस्यायं पूर्वजाधमः ॥ ४ ॥ अत्र विष्णुः पुरा देवस्तप्तवास्तव इष्ट
 मम् । अत्रास्य विधिबधश्चाः सर्वे वृत्ताः सनातनः ॥ ५ ॥ अत्रैव ब्राह्मणी सिद्धा कौमारव्रत
 चारिणी योगयुक्तविद्ययाता तपसिद्धा तपस्विनी ॥ ६ ॥ अत्रैव श्रीमती राजन् शान्तिव्रतस्य
 महात्मनाः सुताभूतव्रताः सार्वर्षी निवृत्ताः ब्राह्मचारिणी ॥ ७ ॥ सानुतप्यातपोघोरं दुर्लभं स्त्रीज
 नेव ह । गतास्यमोः महाभाग देवब्राह्मणपूजिताः । भूत्वा ऋषीणां वचनमाश्रिते । तज्जगाम
 ह ॥ ८ ॥ ऋषीणां निवापाय पात्रैः हिमवतोऽभ्युतः । सन्ध्याकार्थीनि सर्वाणि दिव

अध्याय ५४ ॥

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय इसके पीछे वादव वलदेवजी कुल्लेन को देस
 दानादि देकर उस बड़े दिव्य आश्रमको गये ॥ १ ॥ जो कि मधुक और आशोकवनों
 से संयुक्त पुष्प और पतञ्जल नाम वृक्षोंसे व्याप्त विरिचिवृक्ष वृक्षों से संयुक्त पुष्पयुक्त
 पतस और अत्रेन नाम वृक्षोंसे संकुलया ॥ २ ॥ वादवों में अष्ट पवित्र लक्षणवाले
 बलदेवजीने उस आश्रमको देखकर उन सब ऋषियों से पूछा कि यह अति उत्तम
 किसका आश्रम है ॥ ३ ॥ हे राजा फिर उन सब महात्माओंने बलदेवजी से कहा कि
 हे बलदेवजी यह जग प्रथम जिसका आश्रम है उसका मूलतपेत्त सब वृक्षांत सुनो ॥ ४ ॥
 यहाँ पूर्वसमयमें विष्णु देवताने उत्तमतपको तथा है और यहाँ ही उनके सब सनातन
 ब्रह्मणी विधिपूर्वक पूर्णहुये ॥ ५ ॥ इस स्थानमें कौमार व्रतचारिणी ब्राह्मणी
 सिद्ध हुई वह तपसे सिद्ध योगसे संयुक्त तपस्विनी स्वर्गकी गई ॥ ६ ॥ हे राजा
 महात्मा शान्तिव्रत ऋषिकी पुत्री श्रीमती व्रतचारिणी पतिव्रता व चारिणी हुई
 ॥ ७ ॥ ब्रह्मचारिणी होकर वह महाभाग देवता ब्राह्मणोंसे पूजित स्त्रियोंके साथ
 काठिन्या से करनेके योग्य घोर तपको तपकर स्वर्गकी गई इसके पीछे महा भजेव
 बलदेवजी ऋषियोंके वचनको सुनकर उस आश्रमको गये ॥ ८ ॥ और उन ऋषियों

CHAPTER LIV

Vaishampayan said to Janamejaya, " Having seen Kurukshetra and given donations there, Baldev went to a hermitage surrounded by various trees. He asked of the rishis about its history and they said, " Here Vishnu had performed asceticism and completed his sacrifices. 5. Here a Brahman maiden got perfection and went to paradise. She was the daughter of Shandliya rishi and observed the vow of celibacy. She performed penances hard to be done even by men, and being respected by gods and Brahmins, went to paradise." Having heard the talk of those rishis, Baldev went to the hermitage.

स्वाकृष्टोऽप्यलम् ॥९॥ नतिदूरं ततो गत्वा नगतालध्वजो बली । पुण्य तीर्थधरं दृष्ट्वा
 विश्रम्य परमं गतः ॥ १० ॥ प्रभावश्च सरस्वात्याः प्रुक्षप्रक्षयणं बलः । क्षिप्रान् कारव
 पनं प्रवर्त्तयामुत्तमम् ॥ ११ ॥ इलायुधसूत्रं चापि दत्त्वा दानं महाबलः ॥ १२ ॥
 आश्रितः कलिलं पुण्ये मुशीते विमले शुषी । अन्तर्धामास पितृन् देवाञ्च रणदु
 म्बः ॥ १३ ॥ तत्राभ्येकान्पु रजनीं घतिमिमांशुषीः सह । मित्रावरुणयोः पुण्ये जगामा
 भ्रममक्युतः । १४ ॥ इन्द्रेगिरिस्थेमां चैव यत्र प्राक् । प्रीतिमाप्नुवन् । तं देशं
 कारवपनाद्यनुयायां जगाम ह ॥ १५ ॥ स्नात्वा तत्रापि धर्मात्मा परां प्रीति
 मवाप्स्य ॥ इषीजश्चैव सिद्धेश्च सहिनी वैमहाबलः । उपविष्टः कथाः श्रुत्वाः शुभाश
 यदुपवृत्तः ॥ १६ ॥ तथा तु तिष्ठतां तेषां मारुतां मगवानृषिः । आजगामाय तं देशं यत्र
 रामोऽववस्थितः ॥ १७ ॥ जटामण्डलसंधीतः स्वर्णवरीं महातपसाः । हेमवण्डधरो राजन्
 कमण्डलुधरस्तथा ॥ १८ ॥ कच्छपीं मुखशब्दांतीं पृथ्वा धीणां । मनोरमां । नृत्वेगोत

को दृष्ट्वात् करके हिमवान् पर्वतके पाश्र्वमे सन्ध्याके सवकर्मको करके उत्सर्पतपर
 वदे ॥ १ ॥ इसकी बलि तालध्वजाधारी पराक्रमी बलदेवजी ने थोड़ी दूर पर्वतपर
 जाकर रमकी बुद्धिके हेतुरूप उत्तम तीर्थको सरस्वती के और प्रुक्षनाम क्षिप्रानेको
 देखकर आश्रयको पाया और वहाँने चलकर कारवपन नाम अत्यन्त उत्तम तीर्थको
 पाया ॥ ११ ॥ महाबली बलदेवजी वहाँ भी दानको देकर ॥ १२ ॥ पत्रित्र शीतल
 निर्मल और धर्म की बुद्धिके कारणरूप जल में स्नान करनेवाले युद्धदुर्मने देवता
 और पितरोंको अच्छीरितीसे दृष्टिकिया ॥ १३ ॥ फिर वह अजेय यती और
 बाह्यणों समेत वहाँ एकरात्रि निवासकरके मित्रावरुणके पवित्र आश्रमको गये
 । १४ ॥ इसी ठिके कारवपनने उस यमुना देशकोगये जहाँपर कि पूर्व समयमें
 इन्द्र अग्नि और अर्षमानाम देवताओंने परम प्रीतिको पायायां । १५ ॥ उस
 तीर्थमें भी स्नानकर धर्मात्मा बलदेवजी ने परमप्रीतिको पाया ऋषि सिद्धों समेत बैठे
 हुये महाबली बलदेवजीने उन्नत कथाओंको सुना उत्सप्रकार उन लोगोंके ठोपर
 भंगवान् मारुदक्षुपि उसस्थानपर आये जहाँपर बलदेवजी थे । १७ ॥ हे राजा वह
 जटामण्डल समेत स्वर्णमयी बलध्वजा महातपस्वी स्वर्णदण्ड धारी कमण्डल हाथमें
 लिबे नृत्यगानमें साधवान् देवता ब्राह्मणोंके पूजित । १८ ॥ कलहोंके करनेवाले

He bowed down to the rishis, and having performed evening service
 there, he ascended the hill. A little higher up he saw the holy place
 and was astonished at the greatness of the Saraswati and the water-
 falls. Further on, he visited the holy place, known as Karapvan.
 Having given charity and bathed in the pure, cold and holy water,
 he gratified the pitris. Having stayed there one night, he proceeded
 to the hermitage of Mitravauun. From Karapvan he went to the
 place at the Yamuna, where the gods Indra, Agni and Aryama had
 met in friendship in former days. Baldev was much pleased with

च कुशलो देवप्राण्यपजितः ॥ १९ ॥ प्रकृती कलहाताञ्च निरपञ्च कलहप्रियः । त
 वशमगमयन्न धीमाप्रामो म्यधस्थितः ॥ २० ॥ मृत्युत्याय तु तं सम्यक् पूजयित्वा यत्
 व्रतम् । देवादि पर्यैपुच्छत् स यथावृत्तं कुरुन् प्रति ॥ २१ ॥ ततोऽप्याकण्व्यद्राजकारणः
 सर्ववर्तिषत् । सर्वमेतदप्यावृत्तमतीव कुशलक्षयम् ॥ २२ ॥ ततोऽप्रधीद्रोहिणेवा नारदं
 दीनपा गिरा । किल म्यधस्तु तस्त्रेवै च तत्राभवन्नुयाः । २३ ॥ श्रुतमेतन्मया पूर्वं
 सर्वमेव तपोधन । गिस्तथ्रवणे जाते कीर्तुहलमतीव मे ॥ २४ ॥ नारद उवाच । पूर्वं
 मेव इतो भीष्मो द्रोणः लिख्युपतिस्तथा । इतो वैकसैनः कर्जः पुत्राभायः ब्रह्मरथाः
 ॥ २५ ॥ भूरिश्रवा रोहिणेश्च मद्रराजश्च धीरर्देवाश्च । इने चाप्येव बहुवस्तत्र तत्र महा
 बलाः ॥ २६ ॥ प्रियान् ब्रजान् परिवर्षन् जवायै कौरवस्य वै । राजानो राजपुत्राश्च

सदेव कलहप्रियः नारदजी उक्त विचरोचक शब्दवासी अपनी कच्छपी नाव बणिा
 को लेकर उस देशको गये जहापर कि धीमान बलदेवजी नियतये ॥ २० ॥ बलदे
 वजीने अभ्युत्थान पूर्वक उस सावधानप्रत देवादि नारदजीको सुन्दर रीतसे बतकर
 कौरवोंको वृत्तान्त पूछा । २१ ॥ सर्वपमज्ञ नारदजीने बलदेवजी से कौरवों के
 वडे कठिन नाशको वर्णन किया । २२ ॥ तब बलदेवजीने भी लदकुके हाकर
 नारदजीसे कहा कि जो राजासोम वहां वत्तपानये वह सब क्षत्रियों को समूह
 कैसा है । २३ ॥ हे तपोधन इसको मैंने पूर्व सुनाई परन्तु अब उपारे समेत सब
 पुरारे वृत्तान्त आपसे सुनना चाहताहूँ । २४ ॥ नारदजी बोले कि भीष्मजी तो
 मथमर्ही मारगये उतीमकार द्रोणचार्य और जयद्रथ और पुत्र सहित कर्ज मारे
 गये । २५ ॥ हे बलदेवजी भूरिश्रवा और पराक्रमी राजामद्र मारगये इनके विशेष
 अन्यर बहुत सारे स बलवान लोगी । २६ ॥ कौरवोंकी विजय के निमित्त अपने
 प्यारे प्राणोंको त्यागकर मारगये, जो कि युद्धमें सुख न फनेबाले राजा और

bathing them and then sat down to hear religious discourses. When they were thus seated together, Narad the rishi came to them, 17. He wore long locks, golden clothes and had gold staff and ewer in hand. He was skillful in dancing and singing, was respected by gods and brahmins and loved dissensions. He came playing on his lute. Baldev stood up at his sight and having given proper respect to the divine sage, asked of him about the Kauravas. 21. Narad informed him of the great destruction of the Kauravas. Baldev was much grieved to hear the sad news and inquired about the other kings assembled there. Narad said, "Bhisim was the first to fall and then Drona, Jaya Prath, Kacan and his son were slain. 25. Bhurishrava and the prince of Mudra are slain like other powerful allies of the Kauravas and the princes who were unflinching in fight. Only three persons are alive on the side of Duryodhan. They are Kripacharya

सपरेष्वनिर्वाचिनः ॥ २७ ॥ अहंतांश्च महाबाहो शृणु मे तत्र माधव । घातंराष्ट्रचले
 शेषांस्त्रयः समितिमहंताः ॥ २८ ॥ कृपश्च कृतवर्मा च शोणपुत्रश्च वीर्यवान् । तेषु वि
 विद्वता राम दिशोदश भूयात्तदा ॥ २९ ॥ दुर्योधनो हते शल्ये प्रदनेषु कृपादिषु ।
 इदं कृपायनम् नाम विवेका भूयदुत्थितः ॥ ३० ॥ शयानं घातंराष्ट्रम् स्मरन्मते
 सलिले तदा । पाण्डवा सह कृष्णेन वामिक्रमाभिराहंयन् ॥ ३१ ॥ स तु यमानो बल
 बान् वाग्मी राम समस्ततः । उत्थितः स हृदाशिरः प्रगुह्य महतीं गदाम् ॥ ३२ ॥
 स चाण्डूपागतो योद्धुं भूमितः सह साम्प्रतम् । भविष्यति तपोरथ युद्धं राम सुदार
 षम् ॥ ३३ ॥ यदि कौतुहले तेन तत्र माधव मा चिरम् । पश्य युद्धं महाघोरं शिष्य
 योर्दिदं मन्यसे ॥ ३४ ॥ वैशम्पायन उवाच । नारदस्य वचः श्रुत्वा तानश्रयकथ्यं द्विज
 वंमान् । सत्रो विस्मयं प्रामास येतनाभ्यागताः सह ॥ ३५ ॥ गच्छतां द्वाका च नि म्बान्व

राजकुमारये । २७ हे महाभाग माधवजी वहां जोर जावते वचनें उनको भां मुझे
 सुनां युद्धमें मर्दन करनेवाले तीनपुरुष तो दुर्योधनकी सेनामें बचे हैं । २८ ।
 अर्थात् कृपाचार्य, कृतवर्मा और पराक्रमी अश्वत्थामा हे बलदेवजी वह तीनोंभी
 भयभीतहोकर दशों दिशाओं का भाग । २९ । शल्यके मरने और कृपाचार्यादिक
 तीनों बचेहुये शूराओं के भागजान पर अत्यन्त दुखी दुर्योधन व्यासजीके द्वेपा
 यननाम हृदमें प्रवेश करगया । ३० । वहां श्रीकृष्णजी समेत पाण्डवोंने उसजलमें
 नियत और शयन करनेवाले दुर्योधन को उग्र वचनोंसे पीड़ावान किया । ३१ ।
 हे भगवान बलदेवजी तब वह धीर चारों ओर के दुर्बचनों से पीड़ावान होकर उस
 हृद से गदाको लेकर उठा । ३२ । सो वह भीमसेनसे सम्मुख लड़नेको गया अथ
 दोनोंका भी मराबयानक युद्धहोता ३३ । हेमाधवजी जो आपको उसयुद्धके देखनेको
 बरसाहै तो शीघ्रजाओ देर मतकरो आप अपने दोनों शिष्यों के घोरयुद्ध का
 देखिये । ३४ । वैशम्पायन बोलिक बलदेवजीने नारदजीके वचनको सुनकर उन्
 उत्तम ब्राह्मणों को अच्छी रीतसे पूजकर विदाकिया जो उनके साथमें आयेये
 । ३५ । और बड़े प्रसन्नाचेव महाभोजय बलदेवजी ने साथियोंको आज्ञाकरी कि

Kritvarma and Ashwathama, but they too, ran away for fear. At the fall of his warriors and the rout of Kripacharya and others, Duryodhan, much grieved, hid himself in the lake of Vyas. 30. There Shri Krishna and the Pandavas wounded Duryodhan with their harsh words and he came out of the lake with his mace to fight with Bhim. The two warriors will now fight a dreadful battle. You must hasten to go to the place if you have a mind to witness the battle of your two disciples." Vashampayan said that Baldev on hearing the words of Narad sent away the Brahmans who were with him. 35. He ordered his attendants to go to Dwarka and coming down from the hill and

श्रीशुक्राचार्यः । सोमनीर्यां च लघेष्ठात् शुभमभ्रवणात् शुभात् ॥ ३६ ॥ ततः प्रीतिप्रता
 राम. शुभं तीर्थफलं महत् । विपरीतां सन्निधौ ह्यलोकमगापदिममरुयुतः ॥ ३७ ॥ सर
 स्वतीवाससमा कुतोरतिः सरस्वतीवाससमा. कुतो गणाः । सरस्वतीं प्राप्य दिवं गता
 जना. सदा स्मरिष्यन्ति नदीं सरस्वतीम् ॥ ३८ ॥ सरस्वती सर्वतदोषु पुण्या सरस्वती
 लोकमुच्चावहायदा । सरस्वतीं प्राप्य जनाः सुदुष्कृतं सदा न शोचन्ति परत्र बहूना
 ॥ ३९ ॥ ततो मुहुर्महु प्रीत्या मेघमाणः सरस्वतीम् । ह्येयुर्कृतं यत् शुभमिति श्रुतं परं
 तपः ॥ ४० ॥ स शौचगामिना तेन रथेन बहुपुङ्गवः । दिदसुरभिसमाप्तः शिष्ययुद्ध
 मुपास्थितम् ॥ ४१ ॥

गदाबुद्धपत्रोणे व बदेवतीर्थयात्रायां सारस्वतीपाठयाने चतुर्पञ्चाशोऽर्थायः ५४ ॥

सुमदारका को नामो पर्वतोप महाशेष्ठ पुत्रनाम शुभे वर्तने उबरकर । ३६ ।
 और तीर्थके बड़े बहूको सुनकर ब्राह्मणोंके सम्मुख इसशोक को कहाकि । ३७।
 सरस्वतीपर निवास करनेके विवाग कोई ऊर्ही उत्तमगुण नहीं है मव मनुष्य इस
 सरस्वतीको पाकर स्वर्गकागम और वहसदेव सरस्वती नदीको स्मरणकरेगे । ३८।
 सबनदियों में सरस्वती नदीबड़े धर्मका कारणहै सरस्वती. मदेव लोकका भंडा
 करनेवाली है मनुष्य इस सरस्वती को पाकर सदेवइस लोक और परलोक में
 पापको नहीं शोचते हैं । ३९। इसके पीछे शत्रुसंभाषी बलदेवजी श्रीविसे नारम्बस
 सरस्वती को देखते। सुन्दर चौड़ेवाले उज्ज्वल रथपर सवारहुये । ४० । शिष्यों का
 बतलात युद्ध देखने के अभिकापी बहू बलदेवजी उस शौचगामी रथकी सवारिसि
 उनके सम्मुख जा पहुँचे । ४१ ।

having heard the merit of the holy place, he recited the following
 verse— " There is nothing better than a residence on the bank of the
 Saraswati who has led many to heaven and they will always remem-
 ber her. Saraswati is the best of rivers and does good to the world.
 Having got at Saraswati, people would never think of committing
 sins. " Then looking again and again towards Saraswati, Baldev
 mounted his good car and proceeded to witness the fight of his two
 disciples " 41.

वैशम्पायन उवाच । एव तदभवद्युद्धं तुमुल जनमेजय । यत्र दुष्कान्बन्धो राज्ञा
 वृत्रराष्ट्रोऽर्षवीविदेम् ॥ १ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । रामं सन्निहित इन्द्रा गदायुद्ध उप
 स्थिते । मम पुत्रः कथं मीमे प्रत्ययुष्यत संजय ॥ २ ॥ संजय उवाच । रामसाभिष्य
 प्राचाय्य पुत्रोऽदुष्योऽधनसव । युद्धकामो महाबाहु समदृश्यतचार्यवान् ॥ ३ ॥ इन्द्रा
 काकृद्भितं राजा प्रत्युत्थाप च भारत । प्रीत्या परमया युक्तः समश्यच्छर्ममपावित्रि ।
 आस्वत्थव द्यो तंमै पर्यप्रच्छदनामघम् ॥ ४ ॥ ततो युधिष्ठिर रामो प्राक्यमतेदुवाच ।
 ह । मधुर धर्मसंयुक्तं शूराणां हितमेव च ॥ ५ ॥ मया श्रुतं कथयतामृषोणा राजससमो
 कुरुक्षेत्रं पर प्रथमं पावन स्वर्गमेव च । द्वैधतैश्रुषिभिरुष्टं प्राह्वयिष्य महात्मभि ॥ ७ ॥ तत्र
 वै योऽस्वयमाना ये ह ह स्वस्थान्ति मानवाः । तेषां स्वर्गं ध्रुवो वास शक्येण सह मीत्ये
 ॥ ८ ॥ तस्मात् समन्तपञ्चकमितो याम् । दत्त नृप । प्रीयतोत्तरदेवी सा देवलोकं प्रजा
 श्रेते ॥ ९ ॥ नस्मिन्महापुण्यतम त्रैलोक्ये सनातने । सप्रामे निधन मोक्षं पुत्रं स्वर्गो

अध्याय । ५५ ।

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय जिस स्थान पर दुर्लभ राजा धृतराष्ट्र ने युद्ध
 करने कहा कि । १ । हे संजय मेरा पुत्र गदायुद्धक पक्षमात्र होनेपर बलदेवजीको
 सम्पूर्ण देखकर कैसे युद्धमें मटतहुआ और किस प्रकारसे धर्मका शूद्रहुआ संजयबोले
 कि आपका पुत्र महाबाहु युद्धाभिषापी दुर्गंधन बलदेवजी की बर्चमानता देखकर
 बहुत मत्स्र हुआ । २ । और हे भरतवंशी बड़ी भीति से युद्ध राजा युधिष्ठिर
 ने हलधारी बलदेवजीको आयाहुआ देखकर बड़े सत्कार पुष्पक जनेको उत्तम
 आसन दिया और उनके कुशल मङ्गलको पूछा । ४ । तब बलदेवजी ने युधिष्ठिर
 से बड़ा मधुर धर्म से युक्त और शूरोंका हितकारी यह बर्चन कहा कि कि । ५ । हे
 राजाओंमें श्रेष्ठ मैंने श्रुषियोंके मुखसे सुनने कुरुक्षेत्र धर्मकी टाड़िका बड़ा कारण
 रूप महापावित्र स्वर्ग का देनेवाला होकर देवता त्वापि और महात्मा ब्राह्मणों से
 प्रीति है । ७ । वहां पर जो युद्ध करनेवाले मनुष्य अपने शरीरको त्याग करेंगे
 उनका निवास निश्चय करके स्वर्ग में इन्द्रके साथ होगा । ८ । हे राजा इस
 हेतुसे शीघ्रही यहां से समन्तपंचक को चले वह देवलोक में प्रह्लादी की उत्तर

CHAPTER LV

Vaishampayana said that king Dhritrashtra in great grief asked of
 Sanjaya to describe the attitude of his son in battle in the presence
 of Baldev, and how he fought with Bhishm. Sanjaya said, " Duryo-
 dhan was much pleased at the sight of Baldev. Yudhishtir welcomed
 him with greetings. Then Baldev said to Yudhishtir these sweet
 and true words. - " I have heard that Kurukshetra is a very holy place
 and resort of gods, rishis and brahmanas. 7. Those who die there
 fighting will live with Indra in paradise. Let us therefore go to
 Sewart,anchak the star of Bhishma, for he who dies there will surely

अभिष्यति ॥ १० ॥ तथेत्युक्त्वा महाराज कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । समन्तपञ्चकं वीर-
 प्रायादधिमुखं प्रभुः ॥ ११ ॥ ततो दुर्योधनो राजा प्रगृह्य महतीं गदाम् । पद्मपाम-
 र्णां द्युतिमानगच्छत् पाण्डवे सह ॥ १२ ॥ तथा घातं गदाहस्तं धर्मणा चापि क्षीयतम् ।
 अन्तरीक्षगता देवा साधुसाधित्यपूजयन् । घातिकाधारणा ये तुदम्बुषा तेहर्षमागता
 ॥ १३ ॥ स पाण्डवै परिवृतं कुरुराजस्तघातमज । मत्तस्येव गजेन्द्रभ्य गतिमास्थाय
 सोमञ्जत् ॥ १४ ॥ ततः शक्यनिनादेन भेरीणाञ्च महास्थनैः । सिंहनादञ्च शूराणां
 विशः सर्वाः प्रपूरिताः ॥ १५ ॥ प्रतीच्यभिमुखं देशं यथोद्दिष्टं सुतेन ते । गत्वा तु ते
 परिक्षितं समन्तात् सर्वतो दिशः ॥ १७ ॥ दक्षिणेन सरस्वत्याध्यापरं तीर्थमुत्तमम्
 तस्मिन् देशे त्वानिरीणे ते तु युद्धमरोचयन् ॥ १८ ॥ ततो भीमो महाकोटीं गदां गृह्णाथ
 वर्मभूत् । विस्रष्टुपं महाराज सहस्रं हि गच्छतः ॥ १९ ॥ अथवज्रशिरस्त्राणं सर्वैः

वेदी प्रसिद्ध है उस अत्यन्त पवित्र तीनों लोकके सनातन तीर्थ पर युद्धमें मग्न
 को पाकर निश्चय स्वर्ग होगा । १० । हे महाराज कुन्ती का पुत्र प्रभु वीर
 युधिष्ठिर बहुत अच्छा कहकर समन्तपंचक के सम्मुख गया ११ । इसके पीछे तेजस्वी
 राजा दुर्योधन क्रोधसे बड़ी गदाको लेकर पांडवों के साथ पदानीही चला
 । १२ । अन्तरिक्षचारी देवताओं ने उस गदा और कवचधारी दुर्योधनको देखकर
 धन्यकरके बड़ी प्रशंसा करी और जो वायुके साथ बलवाने भिद्ध चरण थे वह
 भी उसको देखकर प्रसन्न हुये । १३ । वह आपका पुत्र कौरवराज दुर्योधन पांडवोंसे
 विराडुआ मतवाले गजराजकीसी चालमें निपत होकर चला । १४ । फिर शह
 भेरियोंके बडेशब्द और शूरीके सिंहनादोंसे सब दिशा पूर्ण हुई । १५ । और थोड़ेही
 समयमें वह नरोत्तम कुरुक्षेत्र में पहुँचे वहाँ जेने आपके पुत्रने बतलाया उसी
 प्रकार जाकर वह पांडव औरता देश चारों ओर सब दिशाओं में युक्त होकर
 परिपेरुपहुआ । १७ । जोकि सरस्वती के दक्षिण ओरसे दूमरा उत्तमतीर्थ है वहाँ
 हरित भूमियुक्त देशमें युद्ध करना स्वीकार करके नियत किया । १८ । इसके पीछे
 कवचधारी भीमसेन ने बड़ी कोटीवाली गदाको लेकर गरुड़के समान रूपको
 धारण किया । १९ । युद्धमें शिरस्त्र और सुवर्णका कवचधारी आपका पुत्र

go to heaven " 10 Yudhishtir consented to this proposal and went
 towards Samantpanchak Duryodhan followed the Pandavas on foot,
 engaged and armed with his mace The gods in the air praised him
 and the sidhas and charans were well pleased. Surrounded
 by the Pandavas, your son Duryodhan went on like a prince
 of elephants, and the directions were filled with the sounds of conchs
 and drums 15. In a short time they entered Kurukshetra led by
 your son to the west of the country bounded by the Saraswati and
 selected a green spot. Bhimsen armed with mace and armour looked
 like garur, while your son protected by helmet and mail looked like

काचन बभूवुः । रराज राजन् पुत्रस्ते काञ्चन शैलराडिष ॥ २० ॥ ततो दुर्योधनो
 राजा गदाम्नादाय धीर्यवान् । भीमसेनमीमघेदय गजागजमियाह्वयत् ॥ २१ ॥ अद्रि
 सारथी भीमस्तथैवादाय धीर्यवान् । आह्वयामास नृपतिं सिंहं सिंहं यथावने ॥ २२ ॥
 तादृशतगदापाणी दुर्योधनबुकोदरी । सयुगे प्रथकारते गिरीं सुशिक्षिताविष ॥ २३ ॥
 साबुमौ समातिकुड्माबुमौ भीमपराक्रमौ । उभौ शिष्यौ गदायुजे रौहिण्यस्य धीमत
 ॥ २४ ॥ उभौ सदृशकर्माणौ मयवासवधारिव । तथा सदृशकर्माणौ वरुणस्य महाबली
 ॥ २५ ॥ वासुदेवस्य रामस्य तथा वधरैणस्य च । सदृशौ तौ महाराज मधुकैटभयो
 युधि ॥ २६ ॥ उभौ सदृशकर्माणौ तथा सुन्दोषसु दया । रामरावणयोश्चैव बालिसु
 भीमयोस्तथा २७ तथैव कालस्य समौ मृत्योर्भेव परन्तपै । जघो-न्यमभिघाथन्तौ मत्ता
 विभ्र महाद्विषा ॥ २८ ॥ वसिषासङ्गमे हतौ शरदीष मद्योक्तौ । उभौ भ्रोधावप
 वीत वमन्तावुरगाविष ॥ २९ ॥ ज-यो-न्यमभिसरद्वौ प्रेक्षमाणान्विन्दिमौ । उभौ मरत
 भरतशार्दूलौ विक्रमेण समन्वितौ ॥ ३० ॥ सिंहाविधं दुराधर्यौ गदायुजे परन्तपौ ।

सुवर्णके गिरिराजके समान शोभायमान हुआ । २० । तदनन्तर पराक्रमी दुर्योधन
 ने गदाको लेकर भीमसेन को देखकर बुलाया जैसे हाथीहाथी को बुलाता है
 । २१ । उसीप्रकार पराक्रमी भीमसेनने गदाको लेकर राधा को ऐसे बुलाया जैसे
 कि वनमें सिंहको भिड़बुलाताहै । २२ । वह हाथ में गदा उठानेवाले दुर्योधन और
 और भीमसेन युद्ध में ऐसे दिखाई पड़े जैसे कि दो शिखरधारी पर्वत होते हैं
 । २३ । वह दोनों मया औरगुरुस भयाङ्क पराक्रम गदापद्ध में वह कुशल
 बलदेवी के शिष्यव । २४ । परराज और इन्द्रकी समान कम्प करनेवाले दोनों
 महाबली वरुणके समान वमन्तर्षी थे । २५ । हे महाराज इसीप्रकार वह दोनों वासु
 देवकी परशुरामज कुरे देवता और मधुकैटभ दत्तोंके समान होकर । २६ । दोनों
 सुद, उपसुद, राम रावण और बालि, सुग्रीव के समान कर्म करनेवाले थे । २७ । जैसेही
 शत्रुओंके तपानेवाले वह दोनों कालमृत्युकी समान मतवाले बड़े हाथियोंके
 समान परस्पर सम्मुख दौड़नेवाले थे । २८ । वह मरतवीशियों में श्रेष्ठ शरदृष्टतुके
 म-व में हथिनिके मिलापमें मत्त अहकारी मतवाले विजयाभिलाषी हाथियोंके समान
 थे । २९ । फिर वह दोनों शत्रुमतापी परस्पर क्रोधयुक्त देखनेवाले और सर्पोंके
 ममान क्रोधके प्रकाशित विषोंके उगलनेवाले थे । ३० । दोनों भरतर्षम पराक्रमी

a mountain of gold 20 Valant Duryodhan challenged Bhim like
 an elephant and the latter challenged the former like a lion The
 two warriors armed with maces looked like peaked mountains They
 were both disciples of Baldev in mace fighting and were brave like
 Yam, Indra or Varun 25 They were brave like Vasudev, Parasu-
 ram, auser Madhu-katabh, Sund and Upsund, Ram and Ravan,
 Vali and Sugrove or Death They fought like two mad elephants.
 They looked at each other in anger like serpents vomiting venom 30.

मत्तायिषु अग्निपस्तो मातंगी भरतपथ ॥ ३१ ॥ नखदंष्ट्रायुधो वीर्यं व्याघ्रायिषु दुष्ट
सहो । प्रजासहरणं सुधौ समुद्रायिषु दुस्तरौ ॥ ३२ ॥ लोहितांगायिषु क्रुद्धो प्रतर्पतो
महारथो । पूर्वपश्चिमजो गेधो वायुना धुम्कतो यथा ॥ ३३ ॥ गजजंतायो सुविबन्ध
क्षरन्तो प्रावृषाव ॥ ३४ ॥ गदमयुक्तौ महात्मानो दीप्तिमन्तौ महादलौ ॥ ३५ ॥ दहशाले
कुशभ्रयो कालमर्यादिवोदितौ । इयाम्नायिषु सुसंरम्भौ गजजंतायिषु तोषणौ ॥ ३६ ॥
जहवाल महाबाहु सिद्धो कशरिणारिषु । गजायिषु सुसंरम्भौ ज्वलितायिषु पाषाणौ
॥ ३७ ॥ दहशाले महात्मानो सभ्रकायिषु ययौ । रोषात् प्रस्फुरमाणोऽहो निरोक्ष्यतो
परस्परम् ॥ ३८ ॥ तौ क्रुमन्तौ महात्मानो ग्वाहस्तौ नरोत्तमौ । उभौ परमसङ्घर्षाजो
परमसम्मतौ ॥ ३९ ॥ सयश्वायिषु द्वेषन्तौ वृहन्तायिषु क्रुद्धरौ । द्युमायिषु गजजंता
दुर्व्योधनवृकोदरौ ॥ ४० ॥ दत्यायिषु वल्लोभस्यौ रेजतुस्ती नरोत्तमौ । ततो दुर्व्योधनौ

से भरे सिद्धों के समान अजेय और गदायुद्ध में कुशलथे । ३२ । दोनों नख दंष्ट्र
रूप शास्त्र रखनेवाले वीर व्याघ्रों के समान दुःखपी उत्सववाले सुक नाशमें
क्रोधभरे दो समुद्रों के समतुल्यथे । ३३ । जैसे पूर्व पश्चिमकी वायुमें उत्पन्न होने
वाली वायु में चलायमान दोवादल होते हैं उसीप्रकार वह दोनों महारथी भी
क्रोधयुक्त होकर दौड़नेवालेथे । ३४ । वर्षाऋतु में कठिन गर्जनाकरते किरणों से
युक्त दोवादलके समान तेजस्वी पराक्रमीहोकर महाताइसी । ३५ । क्रौरवोंमें भेष्ट
वह दोनों उदयहुय, दोकालरूपी सूर्यके समान अत्यन्त क्रोधी व्याघ्रोंके समान
गजनेवाले दोवादलके रूप दिखाईपड़े । ३६ । केसरी सिद्धोंके समान महाक्रोधी हा
थियों के समान और ज्वलितअग्नि के समान दोनों महाबाहु ने आनन्द को
पाया । ३७ । क्रोधसे चलायमान दोनोंहोठ परस्पर देखनेवाले दोनोंपहात्मा
शिखरधारी पर्वतोंके समान दृष्टिगोचरहुये । ३८ वर दोनोंमहात्मा नरोत्तम महाबा
हो का हाथमें लकर सम्मुख हुये दोनों अत्यन्त प्रसन्नचित्त होकर परस्पर अङ्गीकृत
थे । ३९ । वह दुर्वोधम और भीमसेन दिसनेवाले उत्तमघोड़े चिग्याइनेवालेहाथी
और इकारनेवाले वल्लोक समान दिखाई दिये । ४० । वह पराक्रमसे भूतवाले
दोनों नरोत्तम दंत्यों के समान शोपायमान हुये हे राजा इसके पछि दुर्वोधन ने

They were brave like lions and were skillful in fighting with the
mace. Like lions having teeth and nails, they were angry like two
seas. They ran like two clouds coming from opposite directions.
They were like the two suns of pralaya or like two engaged lions or
fire. Biting their lips in anger, they looked like two bills. They
faced each other with maces and roared like horses, elephants and
bulls. They looked like two daityas. Duryodhan said to Yudhis-
hir, Kishin and Baldev, "The pride of Panchala, Srinjayas and
Kaikeya is ready to fight. You may look on at our fight." Yudhis-

राजसिंहमाह युधिष्ठिरम् । ४० ॥ घ्रातुमि सहितश्चैव कृष्णेतच्च महारथना । रामेण
 मितधीर्बल वाक्यं शीटीर्यसम्मतम् ॥ ४१ ॥ कैकेये सुहृजयैर्गुप्त पाण्डालेभ्य महार
 मभिः । इत्थं स्ववदित्थं युद्धं मम भीमश्च शोमथो । ४२ ॥ उपोपविष्टा पश्य च सदे
 भिरुपगुम्बे । भ्रुत्वा दुर्योधनश्च प्रत्यगद्यन्त तत्तथा ॥ ४३ ॥ ततः मनुपविष्टतत्
 कुम्भद्राक्षमण्डलम् । विराजमानं दृश्ये दिवीवादिश्यमण्डलम् ॥ ४४ ॥ तेषां मध्ये महा
 बाहुः श्रीमाद् गुहाशपूर्वजः । उपविष्टो महाराज पूज्यमानः समन्ततः ॥ ४५ ॥ केशुज
 राजप्रपद्यशो नीलबासाः सितप्रजः । नक्षत्रैरिव सन्दीप्यो बृहो निशि निशाकर ॥ ४६ ॥
 तौ तथा तु महाराज गवाक्ष्वी सुबुःसहो । मध्येभ्यं चाग्निमदप्राभिस्तभ्रभाणो व्यथ
 रित्तौ ॥ ४७ ॥ अभियानि ततोभ्योन्ममुक्त्वासी कुदसत्तमो । उदीक्षन्तौ स्थितौ वीरो
 वृजसन्तो वयाहवे ॥ ४८ ॥

इति महापुरुषपर्वो गदापुत्रे पञ्चपञ्चाशोऽध्याय ६६ ॥

महाराज भीष्म और बड़े पराक्रमी बलदेवजी और भाइयोंसमेत निबत युधिष्ठिरसे
 बड़े सहकारियों के समान यह वचन कहा । ४१ । कि जो बड़ेमाहमी
 पाण्डवाठ नृजनी और कैकयपदेशियों से अपने को बड़ा अहंकारी मानता था उस
 भीसते से मेरा युद्ध निश्चयहुआ । ४२ । हे युधिष्ठिर तुम इन उत्तम राजाओं
 सभे इत घेरे और भीमसेन के युद्ध को देखो तब युधिष्ठिरने दुर्योधन के वचन
 को सुकर बैसाहीकिया । ४३ । इसके अनन्तर वह सब राजमण्डल वहाँ वैठगया
 और बैठकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि आकाशमें सूर्यमण्डल शोभित
 होसाहे । ४४ । हे महाराज उन सबके बीच में केशवजी के बड़े भाई महाबाहु
 भीबाह बलदेवजी भी वैठगये । ४५ । उज्ज्वल बर्ण नीलाम्बरधारी बलदेवजी सब
 राजाओं के मध्यमें ऐसे शोभायमानहुये जैसे कि रात्रि में नक्षत्रों से संसुक्त पूर्ण
 चन्द्रमा होताहे । ४६ । हे महाराज उत्तीकार वह दोनों गदा हाथमें लिये कठिनता
 से लड़ने के योग्य परस्पर ब्रह्मचर्यों से घायल करते निपतहुये । ४७ । अर्थात्
 वह कौरवों में भेष्ट वहाँ अयोग्य अभिय वचनों को परस्पर कहकर ऊपर को
 देखते ऐसे निपत हुये जैसे कि युद्धमें इन्द्र और वृत्रासुर निपत हुये थे ४८ ॥

They complied with Duryodhan's request. The kings' circle, sitting there, looked glorious like the orb of the Sun. Keshava's elder brother, Baldev sat in their midst and looked like the moon in the midst of stars. The two warriors, armed with maces, wounded each other with harsh words, and stood in the field of battle like Indra and Vritraasur, " 48.

वैशम्पायन उवाच । ततो वायुद्वन्द्वमथस्तुमुलं जनगे-य । यत्र दुःश्याम्बि-गो राजा
धृतराष्ट्रोऽवधीद्विभु ॥ १ ॥ विमस्तु खलु मालुभ्यं यस्य निष्टेय-वीर्यशी । पकादशचम
भर्त्ता यत्र पुत्रो ममानय ॥ २ ॥ आराध्य सर्वान्द्रुगतीन् सुक्त्वा चेमा वसुधवाम् । तदा
मादाय भ्रमन पशतिः प्रक्षियमो रणे ॥ ३ ॥ भूत्वा हि जगतो नाथो ह्यनाथ इव मे-स्ततः
गदायुधम्य यो याति किमन्यद्भागधेयतः ॥ ४ ॥ जहो दुःखं, मद्भव मातं पुत्रेण मम
सञ्जय । एवमुक्त्वा सुदुःखात्तो पिरराम जनावपः ॥ ५ ॥ सञ्जय उवाच । स मेघ
निन्दो हर्षान्निभश्चिन्मथ गोक्षुरः । आजह्राव तदा पार्थ युद्धाय युधि वीर्यवान् ॥ ६ ॥
भीममाह्वयतां तु कुरुराजे महात्मनि । पादुरासत् सुघोराणि रूपाणि पविचान्युत ॥ ७ ॥
चक्रुर्वाताः सुनिघाताः पाशुवदं पदमा च । वभ्रुव्यं दिशः सर्वास्तिभिरेण समाहृताः
॥ ८ ॥ महास्त्रनास्तिघातास्तुमुखा लोमहर्षणाः । पेतुस्तथोल्का-शतशः स्फोटयन्त्यो वभ्रुवन्

अध्याय ५६ ॥

वैशम्पायन बोले हे जनमेजय इसके पीछे प्रथम तो वात्सनापकाक्षी कंठिन युद्ध हुआ उससमय वहाँ दुःखिन होकर राजा धृतराष्ट्र ने यह वचन कहा । १। कि निश्चय करके त्रस मनुष्य शरीर को धिक्कार है जिसकी कि ऐसी दशा है हे निष्पाप जिस स्थानपर ग्यारह अश्विनी का स्वामी मेरा पुत्र । २। सब राजाओंपर शासन करके इस पृथ्वीको भोगकर गदाको लेकर षड्डी तीव्रतासे युद्धमें पैदलचला जो मेरा पुत्र जगरत्ता स्वामीहोकर अनाथकेनमान गदाको उठाकर चला इसमें मारक्य से बूसरी बात क्या है । ४। हे संजय मेरे पुत्रने बड़े दुःखकोपाया दुःखित पीड़ित राजा धृतराष्ट्र इन प्रकार कहकर मौनहोगया । ५। संजय बोले कि तब मसलचित्त बलके समान गर्जते उन पराक्रमी बादल के समान अन्दाधमान 'दुर्योधनने पार्थ भीमसेन की युद्धके निमित्त बुझाया हे महात्मा कौरवराज दुर्योधनकी औरसे भीमसेन के बुझाने पर नानामकार के बोररूप उत्पात जारीहुये । ७। परस्पर आघातित शब्दों समेत वायुचर्छी धूलकी वर्षाहुई सर दिशा अन्धकार से पूर्ण हुई । ८।

CHAPTER LVI

Vaishampayan said, "The two heroes first fought a hard contested battle of words. Then Dhritrashtra remarked, "Fie on Manhood, for my son, the lord of eleven akshaubinis, laying ruled over all the worldly kings as well as all the land, had to run on foot with mace. His going thus armed cannot but be ascribed to fate. Surely he was in sore trouble." Having said this, Dhritrashtra became silent. 5! Sanjaya continued, "then bellowing like a bull or 'thundering like a cloud, Duryodhan challenged Bhim' to fight and then various bad omens occurred. The wind blew with a loud roar and a storm of dust darkened the face of the earth, making the hair of the body stand on end, Thousands of meteors fell down from the sky with a crash.

कात् ॥ १ ॥ राहुश्चाप्रसूद्वित्यपराणि विशामपते । अक्षय्ये च मृदायस्यं पृथिवी सक्
 कृत्वा ॥ १७ ॥ द्रोणात्तथा वाताः प्रववुर्नाचैः शर्करावर्षिणः । गिरिजां शिखरापथेव न्यय
 कन्तमहीतले ॥ १६ ॥ मृगा बहुविधाकारा लंपनानि द्विती दश । द्रोणा शिवाश्याप्य
 तद्वत् प्रोररूपाः सुदाहणाः ॥ १२ ॥ निघोताश्च महाघोरा यभ्युत्तौनवर्षिणाः । द्रोणायां
 विश्व राज्ञस्त्व मृगाश्चाशुनवेदिन ॥ १३ ॥ उदपानगत श्यापो व्यथयन्त समन्त- ।
 अशरीरा महावादाः श्रयन्ते स्म तवा-नुप ॥ १४ ॥ एवमाहुनि हृष्टाःप निमिशानि
 वृत्तोदरः । उवाच सातरं ज्येष्ठ धर्मराजं युधिष्ठिरम् ॥ १५ ॥ नैव शक्तो रणे जेतुं
 मन्दात्मो मा सुधोद्यत । अयं क्वाय पि-भोक्ष्याति तिस्रः हृदये पिभन् ॥ १६ ॥ स्रवो
 धने कौरुः मन्दात्मोऽप्ययं पाशकः पया । सुतंमद्योऽरिभ्यानि तत्र पाशकः हृत्कथयन्
 ॥ १७ ॥ निश्चयं गदवा पापमिषं क्रुद्धक्रुद्ध धमम् । अथ श्रित्स्त्रिन्धवीं माहां प्रतिमोक्षया

शरीरके रोगाचोकी सहीकरनेवाली वायुघों के कठिन प्राचात् बड़े शब्दों के
 करनेवाले ऐसे प्रध्वीपर बड़ी शब्दात्मान सैकड़ों उरका आकाशस गिरि । १ ।
 हे राजा पर्वतके बिनाही राहुने सूर्यके प्रमा अर्थात् बिनापर्वके प्रदण्य पड़ा और
 पृथ्वी वनके सब वृत्तांसमेत केगायमानहुई । १० । नीचे मे, केकड़ पत्थर खंचनेवाली
 बड़ी घोर और प्रहाशित वायुचली और पर्वतों के शिखर पृथ्वीपर गिरे । ११ ।
 अनेकरूपवाळे मृग दशोंदिशाओंको दाड़े और घोररूप ज्वालित भयानक शृगल
 भी शब्द करनेलगे । १२ । यह घोर निघातिभी शरीरके रोमांच खड़े करनेवाळे
 हुके हे राजा ज्वलितरूप दिशाओं मे अशुभसूचक मृग महाघोर अशुभ के मकड़
 करनेवाले हुये । १३ । उस समय कूपों के जलभी चारों ओरको भरपन्त हादियुक्त
 हुये आकाशवाणी भी सुनीगई । १४ । भूमिमेनेने इसप्रकार के उत्पातोंको देखकर
 अपने बड़ेभाई धर्मराज युधिष्ठिरसे यह बचनकहा । १५ । कि यह अभागा दुर्वाधन
 युद्धमें मेरे विजयकरनेको समर्थ नहीं है अब मैं अपने बहुताकाल के सींचत क्रोध
 को । १६ । कौरवराजा युयोधन पर ऐसे छोड़ूंगा जैसे की क्षाण्डप वनमें अग्नि
 को छोड़ाथा हे पाण्डव अशुभ मेरे हृदय के बड़े शूलको उखाड़ूंगा । १७ ।

There was an untimely solar eclipse and the earth with her forests
 shook. 10. The storm of wind brought pieces of stone with it and
 the peaks of mountains fell down on earth. Quadrupeds scampered
 in all directions and jackals howled. Dreadful sounds were heard
 and animals cried out ominously. Wells oozed out and heavenly
 voices were heard. Having seen such bad omens, Bhishma said to Yu-
 dhishthira. 15. "Wretched Duryodhan cannot overpower me. I
 shall discharge my long pent up fury over him as Agni did in the
 Khandava forest. I shall now remove your anxiety. I shall secure
 the guardian of fame for you by slaying Duryodhan with my mace

उपहृत्स्विति १८॥ हृत्वेम पापकर्माण गद्या रणमूर्धनि । अथास्य शनवा द्वेद जिनिजि
 गद्यामया ॥ १८ ॥ नाय प्रवेष्टा नगरं पुनर्धारणसाह्वयम् ॥ २० ॥ सप्तोत्सर्गस्य शपथे
 विषदातस्य भोजने । प्रमाणकोट्यापातस्य दाहस्य जतुवेदमनि ॥ २१ ॥ समापामथ
 दासस्य सर्वस्वहरणस्य च । वर्षभङ्गातवासस्य घनवापस्य चानथ ॥ २२ ॥ अथागत
 मेषां दुःखाना गमताह भरतर्षभ । एकाग्ना विनिहृत्येमं भविष्यात्प्रातमनोनुजः ॥ २३ ॥
 अथायुर्धार्तराष्ट्रस्य दुर्मतेरकृतात्मनः । समाप्त भरतश्रेष्ठ मातापित्रोश्च दर्शनम् ॥ २४ ॥
 पञ्च सौम्यस्तु राजन्द्र कुहराजस्य दुर्मते । समाप्तञ्च महाराज नारीणां दर्शनं पुन
 ॥ २५ ॥ अथायं कुहराजस्य शाश्वतो कुलह्वयणः । प्राणान् धियस्य राज्यञ्च त्यक्त्वा
 शेष्यति भूतले ॥ २६ ॥ राजा च धृतराष्ट्रोऽपि भूत्वा पुत्रं निपातितम् । स्मरिष्यत्य
 शुभं कर्म बभूवुकुनिहुञ्जिजम् ॥ २७ ॥ इत्युक्त्वा राजशाङ्कं गवामादाय बीर्ष्ववान्

अर्थात् मैं गदासे इनकोरसोंके कुलमें महानीच पापीको मारकर कैतिरूप मालाको
 आपके शरीरमें धा ख करूंगा १८ । अब मैं युद्धमें इस पापकर्मीको मारकर इसके
 शरीरको इसगदासे लहर करूंगा । १९ । यह अब दुवारा इस्तिनापुर नगरमें
 प्रवेश न करेगा । २० । हे भरतर्षभ अब मैं उनसय आगोलखे दुःखोंके अन्तको
 प्राप्तहूंगा जैसे की शपथपर सर्पका छोड़ना, भोजनमें विषदेना, प्रयास कोशों में
 गिराना, लासा गृहमें अलाना, सभामें हास्यकरना सर्वस्वहरण एकवर्ष अज्ञात
 होकर बनमेंवास । २१ । इन सबदुखरूपी ऋणोंसे एकहीदिनमें इसको मारकर
 मञ्जुहूंगा । २२ । हे भरतर्षभ अब दुर्बुद्धी म्लान अन्तःकरणवाके दुर्बोधन की
 आयुर्ही पूर्णहुई माता पिताका दर्शनभी समाप्तहुआ । २३ । हे महाराजेन्द्र अब दुर्बुद्धी
 कौरवराजका मुल और सिपोंका दर्शनभी सम्पूर्णहुआ । २४ । अब वह अन्ननु क
 कुलको अन्नक अगानेवाळा बुयाँधन लक्ष्मी, राज्य और प्राणोंको त्यागकर पृथ्वी
 पर सोवेगा । २५ । अब राजाधृतराष्ट्रके मरेहुषे अपने पुत्रको लुनकर । २६ । अपनेउस
 वृष्टकर्मको बादफरेगा जो कि शकुनीकी बुद्धि से उत्पन्नहुआ हे राजाओं में
 भेष्य पराक्षवी भीमसेन एसीवातों कहकर गदाको हाथमें लेकर युद्धके निमित्त
 दुर्बोधन को ऐसे बुलाताहुआ सम्मुख निपतहुआ जैसे की इन्द्र हजानुरको बुलाता

I shall break his body into peeces and he will see Hasthinapur no
 more 20. I shall avenge my former wrongs—Sick bite, poison
 in, throwing in the water, burning of the house, mocking in the court,
 deprivation of our all, exile and living incognito—all shall be
 avenged in a single day. His days are numbered. He shall see his
 parents no more and shall no longer enjoy luxury and the society of
 women. 25. Duryodhan the curse of Shantanu's family

व्यातिष्ठत्त बुद्धाय शक्रो वृत्रमिघादपयत् ॥ १८ ॥ तमुच्यतगर्वं दृष्ट्वा कैलाशमिष
 कुलिषम् ॥ भीमसेनः पुनः कुरुदो दुर्व्योचनमुवाच ह ॥ २१ ॥ राज्ञश्च धृतराष्ट्रस्य तथा
 रथमपि चारमनः । स्मरत्तदुत्कृतं कर्म यद्वृत्तं वरिणावते ॥ ३० ॥ द्रौपदी च परि
 किञ्चिद्वा कृत्यामन्वे रजस्वला । पृतेन धिक्चित्तो राजा यद्वया सौवदेभ च ॥ ३१ ॥ वने
 पुः ॥ ३२ ॥ अश्वत्थमसिम्भरवत्कृतं महत् । विराटनगरे खेच योऽन्यन्तरगतेरिष । तद्
 धर्मं श्रावयाम्यथ दिष्ट्या दृष्टोसि युमते ॥ ३२ ॥ रघत्कृतेसौ इतः श्येते शरतद्वये प्रता
 पबाह् । भीमो रथिनां धृष्टो निहतो वाहसेनिना ॥ ३३ ॥ हतो द्रुपिश्च कर्णश्च तथा
 शरवः प्रतापबाह् । वैराघ्येरादिकर्षां शकुनिः सीवलो इतः । ३४ ॥ प्रातिकामी तथा
 जपो द्रौपद्याः बलेशकृत् । भ्रातरस्ते इताः सर्वे शूरा विक्रान्तधोलिपः ॥ ३५ ॥ यत्ते

दुःखा निवत्त बुद्धाया । २८ शिखरधारी कैलासके समान उस गदाउजानेवाले दुर्यो
 धन को देखकर मोषयुक्त भीमसेनने फिर कहा कि हे दुर्योधन राजाधृतराष्ट्रसमेत
 तुम अपने वन बापकर्मों को स्मरचक्रों जो कि धारणावतनगरमें हुये और सभा
 में रजस्वला द्रौपदीको दुःख दिया और जो तैने और शकुनीने राजाधृषीधरको
 वृन में डरा और हममत्र ने महावनों में जिस तेरे कारण से बड़े दुःखों को पाव
 और योऽन्यन्तरके सनान होकर हमलोगोंने जिस दुःखको विराटनगर में पाया अब
 मैं उन उन दुःखों के कारण रूपको मारता हूँ । ३२ । हे कुरुदो तुम्हको मारण्य से
 देखा है और तेरेही कारण से शिलगदी के हाथसे मारेहुये यह शपथों में भेड
 भीमसेनकी के पुत्र प्रतापवान् औरवों के पितामह भीष्मजी शरशय्यापर सोतेहैं ३३ ।
 होवाचार्य कर्ण और प्रतापवान् शरपमारगया और शत्रुताकी अग्निका उत्पन्न
 करनेवाला सीवकका पुत्र शकुनी मारागया । ३४ । फिर द्रौपदीका क्लेश दत्त
 करनेवाला बापी प्रातिकामी मारागया ।सिंहके समान युद्धकरनेवाले शूभीर तेरे
 हवमाई मारेगये । ३५ । तेरेही कारण से यहसव और अन्य बहुतसे राजा मारेगये

shall sleep on earth after losing his wealth, kingdom and life. Hear-
 ing of his son's death, Dhritrashtra will remember the misdeeds
 done by the advice of Shakuni." Having said such words, Bhim
 took the mace in hand and challenged Duryodhan to fight as Indra
 did Vritrasur. Seeing him with upraised mace, enraged Bhim
 again said, "You and Dhritrashtra should remember your wicked
 deeds done at Barnavat 30. You dragged Draupadi into court.
 You and Shakuni cheated Yudhishtir in gambling and we suffered
 much hardship of exile for your sake. We lived incognito at
 Viratnagar; but I shall avenge all wrongs to day. It is by good
 luck that I have found you. Bhishm sleeps on the bed of arrows
 slain by Shikhandi on your account. Drona, Karan and glorious

चान्धेच घटघो निहतास्त्वत् कृते सुयोः । त्वामथ निहनिष्यामि गदया जात्र सशकः ॥ ३६ ॥ इत्येवमुच्य राजेन्द्र भावमाणं युकोदरम् । उवाच धीतमो राजन् पुत्रभूः सत्त्व
 गि क्रम ॥ ३७ ॥ किं कथितेन घटुना युष्यस्व रथं युक्रदिर । नय तेषहं विनष्यामि
 रथं प्रसीं कुलाघमम् ॥ ३८ ॥ नैव दुर्योधनः क्षात्रेणोत्थिद्येन वै । शक्यं गतासोपितु
 धीना यथास्यः प्राकृतो नरः ॥ ३९ ॥ चिरकालोप्सितं विष्टया हृदयस्य भिदं मम
 रथसां सद्गदायुद्धं विदेष रूपपादितम् ॥ ४० ॥ किंवाचा घटुनाकेन कथितेन च
 बुभुते । वाणी सम्पाद्यतामेषा कर्मणा मा चिरं कृयाः ॥ ४१ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा
 सर्वे पृथाप्युपप्रयत् । राधानः सोमकाक्षेय ये तत्रासन् समागताः ॥ ४२ ॥ ततः सस्यु
 जितः सर्वैः सत्त्वहृदयननुवहः । भूयो धीरा मतिश्चक्र युद्धायां कुवनन्दन ॥ ४३ ॥ त
 म्प्राप्तमिष मातङ्ग तलशब्देनराधिपः । भूयः सहर्यपाञ्चकुंभुर्धोपतसमवेणाम् ॥ ४४ ॥

अब मैं तुम्हको निस्सन्देह गदासे मारुंगा । ३६ । हे राजेन्द्र सत्यपरीक्षणी धीर
 निर्भय आपकापुत्र इसप्रकार बड़ेउच्चस्वरसे वाधांलाप करनेवाले भगितेनसे बोला
 । ३७ । किं हे कुलमें महानीच भीमसेन बहुत बातों से क्यामपोजननेहें तुम बुद्धकरो
 अब मैं तेरे युद्धके उत्साहको भंगकरुंगा । ३८ । हे नीच'मै दुर्योधन तुह सरासि
 हिंसीमनुष्य के वचन से डरनेके योग्य नहीं हूं बहुतकाल से चाहता हृदयमें नियत
 तेरे साथ मेरा यह गदायुद्ध प्रारम्भकेही द्वारा देवताओं से प्राप्तहुआ है । ४० ।
 हे द्रुपदी बहुत वाधांलाप और शपथी प्रशंसाकरने से क्यालाभ है यह वचन
 कर्मकेही द्वारा प्राप्तकरना योग्यहै त्रिलम्ब मतकरो । ४१ । उसके उस वचनकोसुन
 कर उन राजालोगोंने और सोमकों ने जो वहां इकट्ठे थे उसकी प्रशंसाकी । ४२ ।
 इसकेपीछे वह शरीरके रोमशसे प्रसन्न सयते स्तूपमान वः कौरवन्दन दुर्योधन
 युद्धके लिये बुद्धिसेद्वारा फिर धैर्यमें प्रवृत्तहुआ । ४३ । राजाओंने क्रोधयुक्त
 उस दुर्योधन को जो किं मतवालेदाधीके समानथा तलकेशब्दों से फिर प्रसन्न

Shalya are no more as well as Shikuni the root of all evil, Pratikami
 the distresser of Draupadi and all your brothers, brave as lions. 35.
 All these and other kings were slain for your sake and I shall avrally
 slay you with my mace," Having heard this, your son of true
 prowess replied, " Despicable Rhim! what is the use of so much
 nonsense talk. Fight and I shall satisfy your desire, I cannot
 possibly fear you. I have long sought an opportunity to fight with
 you and my long cherished desire is fulfilled by the favour of gods. 40.
 You can derive no benefit from vaggary, and self prase. Act without
 further delay " All the kings and Somaks praised Duryodhan's
 words. Then Duryodhan praised by all, stood calmly and the lungs

त महात्मा महात्मान गदासुग्रय पापद्वय । अभिदुद्राव वेगेन धार्तराष्ट्रं वृकोदर
 ॥ ४५ ॥ वृहन्ति कुञ्जरास्तत्र हया इवन्ति चासकृत् । शस्त्राणि चाप्यदीप्यन्त पांड-
 वार्षां चयैदिताम् ॥ ४६ ॥

इति गदासुद्धपर्वणि गदापुट्टेः पंद्रपञ्चाशोऽध्यायः ५१-॥

क्रियां । ४४ । महात्मा पांडव भीमसेन अपनी गदाको लेकरतीव्रता से उस बड़े
 साहसी दुर्योधन के सम्मुख गया । ४५ । उसके जातेही वहाँ हाथी चिंगोडे साहसी
 दुर्योधन के सम्मुख गया । ४६ । उसके जातेही वहाँ हाथी चिंगोडे वारम्बार घोडे
 हीसे और विजयाभिलाषी पादवों के शस्त्रभी प्रकाशित हुये ४६ ॥

cheered him again with a beat of palms. Bhim soon opposed him
 with his mace. At his arrival the horses neighed, the elephants
 grunted and the weapons of the Pandavas became brilliant' 46



सम्पद्य लबाच । ततो बुधो धनो हृष्ट्वा भीमसेनं तथा गहम । मत्सुखाय वीरिणात्मी-
 वेगेन महता नदत् ॥ १ ॥ समापेततरन्याऽन्वं वृद्धिणो गोवृषाविष । महानिर्घातघोस-
 ष्य महा गणामजायत ॥ २ ॥ भ्रमवच्च तयोऽप्युज्ज तुमुले लोमहर्षण्य । क्षिपीवतो
 युष्माभ्योऽन्व मिन्द्रप्रन्दाद्योरिव ॥ ३ ॥ दधिरोक्षितसर्वाङ्गो गवाहको जमस्त्रिणी ।
 दृढघाते महात्मानो पुष्पिताविष किंशुकौ ॥ ४ ॥ तथा तस्मिन्महाबुधे बन्धमाने सुदा-
 वणे । बधोतसकृद्यरिव अं दर्शनियं व्यरोचत ॥ ५ ॥ तथा तस्मिन् बर्षमाये संकुले
 तुमुके वृक्ष । उभावपि परिभ्राता युष्पमानामस्त्रिन्दौ ॥ ६ ॥ तौ मुहुर्त्त समाभ्यास्य
 पुनरेव परत्तपौ । अङ्गवाहाह्वताभ्योन्व्यं संप्रगृह्य गदेषुभे ॥ ७ ॥ तौ तु हृष्ट्वा महा-
 धीर्षो जमास्त्रिणी वरपंभौ । बलिनो वारणौ यद्गद्वास्तितार्थे मन्त्रात्कौ ॥ ८ ॥ सन्तोष-
 धीर्षो संश्रुष्य प्रपरीतगदाबुधौ । विस्मयं परमं जग्मुर्दशगन्धर्वे मानवाः ॥ ९ ॥ अस्मिन्

अध्याय ५७ ॥

संनवबोले कि इसके पीछे बड़ा साहसी बुर्वाधन बड़ी तीव्रता से मुर्खता संस-
 नकार से आतेहुये भीमसेन ओ देखकर सम्मुख गया । १ । गौर एवंकारी बैलों
 के समान परस्पर में दोनों दौड़े और गदाके महारोंके बड़े शब्द उत्पन्न हुये । २ ।
 उन दोनों विजयपभिलाषियों का बुद्ध महाकठोर और रोमहर्षण्य करनेवाला ऐसा
 हुआ जैसे कि युद्धमें परस्पर विजयाभिलाषी इन्द्र और महाबाहका युद्ध था । ३ ।
 कभिरसे जिह्न सब शरीर गदा हाथों में छिये बड़े साहसी दोनों महात्मा बड़ेहुये
 किंशुक वृक्षके समान दिखाई पड़े । ४ । इसप्रकार उस बड़े भवानक घोर बुद्धके
 वर्षमान होनेपर आकाश दर्शनिय होकर ऐसा शोभायमान हुआ जैसे कि वट
 बीजनों के समूहों से होता है । ५ । इस प्रकार उस कठिनतर संकुल नाम बुद्ध
 के वर्षमान होनेपर वह शत्रुओं के विजय करनेवाले दोनों शरपीर बरभण्य । ६ ।
 शत्रुसन्तापी उनदोनों ने एक मुहुर्त्त समावशासित होकर शुभगदाघो को बँकड़
 कर परस्पर चिभ्राम किया । ७ । फिर उन महापराक्रमी विभ्राम कियेहुये वरोचणों
 को हथिनीके लिये मतदाने बलवान हाथियोंके समान । ८ । एकदशपराक्रमी गदा
 एकदशेवाले दोनोंको मन्त्रीरति से देखकर देवता मनुष्य और मन्ववनि बड़े

CHAPTER LVII .

Sanjaya said, " At the advance of Bhim with a loud roar courageous Duryodhan faced him. They attacked each other like two horned bulls and the sounds from the blows of their maces were tremendous. Their battle was severe and dreadful like that between Indra and Prahlad. With bleeding bodies, armed with maces, the two brave warriors looked like kashuk trees in bloom. During that dreadful battle the sky looked glorious as if full of glow-worms till the two heroes were tired. They rested themselves for some time to take

तगदाधुरी । विस्मय परम कमुर्देदग-धर्ममामथा । ९ ॥ प्रपृहातगदो हृत्वा धुर्यो
 वनपुकोदरी । सहाय-सर्वभूतानां विजये समपद्यत ॥ १० ॥ समानप तता भूयो
 ज्ञातरौ बलिमाश्वरी । अभ्योभ्यस्यान्तरं प्रेक्ष प्रचक्रानेतरं प्रति ॥ ११ ॥ यमदृष्टो
 यमो सुधीमिन्द्राक्रानिमिषोद्यताम् । ददन् प्रेक्षा राजन् रीक्षी विशमसौ गदाम् ॥ १२ ॥
 जनिष्यतो गर्वा तदप भीमसेनश्च संयुगे । शब्द सुतुमुलो घारो मुहूर्त्त समपद्यत
 ॥ १३ ॥ जाविष्यन्तमरिं प्रेक्ष्य चासैराश्वीय पाण्डवश्च । गदामतुल्यवेगां तौ विस्मिताः
 सचक्षुः ह ॥ १४ ॥ चरन्त्र विविधान्मार्गांश्मण्डलानि च भारत । अशोभत तदा घोरौ
 भूव द्युकोदर ॥ १५ ॥ तौ परस्परमासाद्य वसाधस्योत्प्रेरतयो । माउर्जौराविध
 अस्त्राकै ततस्त्राते मुहुर्मुहुः ॥ १६ ॥ जज्वरन्भीमसेनस्तु मार्गान् वहुविधांस्तथा । मण्ड
 कानि विविधानि गतप्रत्यागतानि च ॥ १७ ॥ अस्त्रदम्भानि चित्राणि, स्थानानि विधि
 आश्वर्य को वाषा । ९ । गदा पकड़नेवाले, उन घुर्योधन और भीमसेन को देखकर
 विस्मय होनेमें सब जीवोंको संदेह प्राप्तहुया । १० । इसके पीछे बलवानों में भेद
 परस्पर अंतर चाहनेवाले दोनोंभाई भिदकर परस्पर के समान धमक करनेलगे
 । ११ । हे राजा अबसोकन करनेवालोंने उसरीक्षी मारनेवाली धारी और इन्द्रवज्र
 के समान उर्ध्वार्धुई घराभाके दृष्टकी समान गदाको देखा । १२ । बुद्धय भीम
 सेनके हाथसे वारतीहुई गदाका एकमुहूर्त्त बड़ाकठिन और घोरशब्द वर्तमानहुया
 । १३ । इसके अनन्तर वह घुर्योधन उस कठिन तीव्रता रत्नेवाली, गदाके मारने
 वाले अपने शत्रु भीमसेन को देखकर आश्चर्ययुक्तहुया । १४ । हेभरतवंशी उस
 तबध भीमसेन नानामकार के मार्ग और मण्डलोंको घुसतःघुआ शोभायमान हुया
 । १५ । परस्पर अर्धनीर रक्षामें सावधान उन दोनोंने अ-योग्य सम्मुखहोकर
 वारम्बार जैसे महाराकिये जैसे खानेकी बस्तुकालये दोविचार परस्पर मारकरते हैं
 । १६ । भीमसेन इकमकार के बहुत से मार्गोंको घुसा फिर सम्मुख तिर्यक
 विविधमण्डल । १७ । अपूर्व अस्त्रान्तर बहुत प्रकारके दाहिने बायें महारस्थानोंका

breath. Men, gods and Gandharvas wondered to see them fighting
 like two mad elephants for the sake of a female they were
 doubtful about the victory of one over the other. 10. Again the
 two host of warriors roamed about wading each other's blows. The
 lookers on beheld the heavy masses, like the vajra of Indra and the
 staff of Yam. There was an awful noise from the blows of Bhim's
 mace for some time and Duryodhan wondered at the velocity of his
 adversary's blows. Bhim, roaming in various ways and circles, looked
 glorious. 15. Desirous of protecting themselves, each of them hit
 his adversary, and they fought like two tom cats for the sake of food.
 Bhim walked right and left, straight and crooked, rushing, dashing
 down and standing still. He stood up at once whenever he fell down

प्राणि ज्ञे । प रिभाक्ष प्रहाग ॥ यज्जनं पृथिवी जगत् ॥ १८ ॥ भनिद्रवणमकिमवदन्म
 सन्निप्रदम वरा, सनसवत्सवप्लुतमुपप्लुतम ॥ १९ ॥ उपप्लुतमपप्लुतं गदायुद्धविशारदो
 पथे तो विचरन्तो तु न्यघ्नतां वै परस्परम् ॥ २० ॥ ॥ ७३ ॥ युवा नो युवक्षेव वरतु ॥ २१ ॥
 सत्तमो । विक्रीडन्तो भगवन्तो मण्डलानि विचरतुः ॥ २१ ॥ तो वृक्षेवन्तो समरे युद्ध
 क्रीडां समन्ततः । गदायुद्धां सवन्त्यायमाजघ्नतुरारिवन्मो ॥ २२ ॥ तो परस्परमा
 साय इष्ट्यां विष्ट्यां यथा । अशोभेता महाराज घोषितेन परिप्लुता ॥ २३ ॥ एवं
 तदतपयुद्धं वोरुपमम् ॥ २४ ॥ परिवृतेऽपि क्व वृत्रवासवयोऽपि गदावृत्तौ सततौ
 तु मण्डलावस्थितौ यत्नौ ॥ २५ ॥ दक्षिणं मण्डलं राज्ञः पार्श्वं पार्श्वं यत्नतः । सम्भ्रान्त
 मण्डलं तत्र भीमसेनो वचसतः ॥ २६ ॥ तथा तु । अतस्तस्य भीमसेनः रणमञ्जलि
 दुर्योधनो महाराज पादपदोऽप्यताडयत् ॥ २६ ॥ आहतस्तु तदा भीमः वचनं तत्र

छेड़ना बचाना दांने बाये करना । १८ । तत्रिता । त सम्मुखाना गिराना और
 अचल होना शत्रुके उठनेपर फिर युद्धकरना शत्रुके मारनको चारोघोर जाना शत्रु
 के हटनानेका स्थानरीकना प्रहार बचानेकीलये झककर हटमाना मध्यगति । १९ ।
 समीप जाकर शत्रुका शराना चारोओरों धाकर पीछेकी ओर बचवाना होके हाथ
 से शत्रुका क्षापन करना इन मार्गों में वृत्त उन गदायुद्ध में कुशल दोनों ने अनेक
 प्रकार से परस्पर घायल किया ॥ २० ॥ फिर घोषादानवाले होकर यह कोरवोत्तम
 दोनों भ्रमण करनसंग और क्रीडा करनशाल यह दोनों पराक्रमी मण्डलोंको घेरे
 । २१ । युद्धमें आगेओरमें युद्धकी क्रीडाको दिखलाते उन दोनों शत्रुमन्तापिपाने
 गदाओं से अकस्मात् एसे घायल किया २० । जसकि दांतासेदो हाथी परस्पर
 घायल करते हैं हे महाराज बड़ देनां रुधिर से लिप्त शरीर परस्पर सम्मुखहोकर
 घोभायमानहय । २१ । हाथकार दिवत के अन्तपर यह घोरेष्य युद्ध तपके समत
 में एमाहमा जेने कि वृत्रासुर और इन्द्रता हुआथा । २२ । फिर यह दोनों
 महाबली गदा हाथोंमें लेके मण्डलों में मद्धतहये रमसपय दुर्योधन पाहिने मण्डल
 में वचमानहुआ और भीमसेन बाये मण्डल में वचमान हुआ । २५ । हे महा
 राज इस प्रकारसे उस युद्धके सुखपर भीमसेनको वृत्त दुर्योधन ने कृत्ति में
 घायल किया । २६ । हे भरतर्षभ फिर आपके पुत्रसे घायल और उसमहको

and checked his enemy's course or bent low to ward off his opponent's
 blows. He sent forth blows from before and behind, all round; and
 the two clever warriors wounded each other. - 20. Then the two
 best of Kauravas sought to deceive one another as it in play. - Show-
 ing their skill in fighting they wounded, each other like two-tusked
 elephants. Their bodies ran out blood. At the close of the day the
 battle was like that between Indra and Vritrasur. Then the two
 warriors roamed in circles with their blades. Duryodhan was in the

भादि । आदिप्य गदां गुरीं महात्मानां चतुर्वद ॥ २७ ॥ इन्द्राणिसमाः शोभं यम
 इन्द्रमिवाद्यनाम् । इन्द्रोस्तेमहाराज भूमिसेनस्य ना । गदाम् ॥ २८ ॥ आदिप्यनां गदा
 इन्द्रा आदिसेनं तवारमज- समुद्यम्य गदां गुरीं प्रदधिष्यत् परतपः ॥ २९ ॥ गदा
 माकुलयोगेन तत्र पुत्रस्य आगत शब्द आसीत् सुतुमुल्लोचन समजायत ॥ ३० ॥ स
 खरद्विषयिभ्यः आगतः मण्डलानि च भागशः । समशाम तजश्वी भूयो भीमात्
 सुवाचतः ॥ ३१ ॥ आदिप्यः सर्वयोगेन भीमेन महती गदा । रूपं सादृशं सार्धिन
 म्मोलाप्रया महाश्वना ॥ ३२ ॥ आदिप्यः भीसेनेन गद इच्छा सधोचतः । आदिप्य
 रमर्षी गुणोपनिष्य बहुशोभत ॥ ३३ ॥ गदाभाकृतवर्गः । इन्द्रोऽस्य महात्
 मनः । सपे विवेश पाण्डुः । सर्वानेव समोमकान् ॥ ३४ ॥ तो वडायतीः समरेः युध
 कोडाः खमलनः । गदाभ्यां सहस्राण्यन्यमाः प्रतुरित्वभी ॥ ३५ ॥ तो परस्परमासाहः

विचार व कति भीमेनेन भारी गदाको घाया ॥ ३१ ॥ इन्द्राणिसमाः शोभं यम
 वम के ममान घोर ममान के दयदहानमान उडाइइ ॥ २८ ॥ भीमेनेन की उतः
 गदा का दला तव आपके पुत्रन गदाउठानेवाले भीमेनेन तो देख कर उडाइइ
 उस घोरगदाको आदितकिया ॥ २९ ॥ इन्द्राणिसमाः शोभं यम आपके पुत्रकी गदारूप
 बायुकी तीव्रता से कठोर शब्द होकर आगि उत्पन्न हुई ॥ ३० ॥ फिर भीमेनेने भी
 अपना गदा से दूषाधनकी गदाको ताड़िन किया उस समय वह दोनों समान
 बलवाच भीमेनेन और दूषाधन नाना प्रकार के मारी और मण्डलोंको घुमेदुय
 महाडानोयमान हुए ॥ ३१ ॥ फिर एकदम भीमेनेने ताड़िन वडा गदाने उस समे
 अगिनकी मकट करके बड़ा उवालाको मुकाशित किया ॥ ३२ ॥ तब भीमेनेन
 से कस्यायमान अपना गदाको देखकर लाहमयी बडी भारी गदाको घुमाता महा
 शोभायमान हुआ ॥ ३३ ॥ उस महात्मा की गदारूपी बायुकी तीव्रता को देखकर
 सोमका समेत सब पाण्डवों को भय उत्पन्न हुआ ॥ ३४ ॥ युध में चारों ओर से युद्ध
 कीडा को दिखवाने वह शत्रुमन्तापी गदाओं में मरणागत परस्पर घात

right circle and Bhim in the left. 25. Duryodhan then wounded
 Bhim in the side. Not caring of the wound, Bhim swung his heavy
 mace. The people saw the mace of Bhim upraised like the vajra of
 Indra, and Duryodhan hit it with his own. The mace of Duryodhan
 met with a crash with the velocity of the wind and fire came out of
 it. 30. Bhim too struck a blow on the mace of Duryodhan. Turn-
 ing in circles they looked glorious. Fire and smoke
 came out of Bhim's mace struck with great force. See-
 ing his mace shaken by Bhim, Duryodhan swung his iron
 one and looked gleious. The Somaks and the Pandavas were
 afraid of the velocity of Duryodhan's maces. They dealt blows with
 their maces and showed their skill in fighting. 35. Fighting like

वृद्धाश्रयां द्विरदौ यथा । अशोभेतां महाराज शोणितेन परिप्लुता ॥ ३६ ॥ एवं तदा
 वपुर्जं घोररूपमसम्भृतम् । परिवृत्तहृदि क्रूर वृत्रघासवयोत्थि ॥ ३७ ॥ इत्यथा वचनप्रियते
 भीम तत्र पुत्रो महाबलः । अरिञ्चिवतरान् मार्गान् कौन्तेयमग्निबुद्धये ॥ ३८ ॥ तस्य
 भीमो महावेगाज्जम्बूदिपारकृताम् । अभिकुदस्य क्रुद्धस्तु ताडयामास तां गदात्
 ॥ ३९ ॥ सधिस्रुत्कृत्तु निह्रादलयोस्तत्रामिवातज । प्रादुरासीन् महाराज सुहृदोर्ध
 जपेरिव ॥ ४० ॥ वेगवस्था तथा तत्र भीमसेनेन युक्तया । निपतन्नां महाराज पूर्णवी
 समकस्पत ॥ ४१ ॥ ताजामृष्यन् घोररथो गदां प्रतिहताम्रणे । मत्तो ह्य क्रुद्धः प्रति
 क्रुद्धरदशनात् ॥ ४२ ॥ स सम्य मषडलं राजम्बुद्धास्य कृतनिश्चय । आश्रयेन्मूर्च्छित
 कौन्तेये गदया भीमवेगया ॥ ४३ ॥ तथा रथमिहतो भीमः पुनश्च तत्र पापदधः ।
 नाकजातमहाराज तद् कृतामिवाभवत् ॥ ४४ ॥ आश्रय्येत्थपितृप्रान्मूर्च्छितस्यान्मृष्यन्वच

करनेलगे । ३६ । हे महाराज जैसे कि दो हाथी दाँवों से युद्ध करत हैं वसी प्रकार
 वह दोनों परस्पर पाकर रुधिरसे लिप्त होकर शोभायमान हुये । ३७ । इस प्रकार दिन
 समाप्त होनेपर वह घोररूप और महा कठिन ऐसा युद्ध हुआ जैसे कि इन्द्र और
 वृक/सुर का हुआ था । ३७ । आपका महाबली पुत्र अपने सम्मुख भीमसेन को
 देखकर अपूर्वतर मार्गों को घूमता कुन्ती के पुत्रके सम्मुख गया । ३८ । तब
 क्रोधयुक्त भीमसेनने उस क्रोधयुक्त दुर्योधनकी चर्च जटित रत्नोंसे अलंकृत गदा
 कोताड़ित किया । ३९ । उससमय उन दोनों के संघट्टन से उत्पन्न होनेवाला शब्द
 स्फुलिंगों समेत ऐसा शकटहुआ जैसे कि छोड़ेहुये दो बजों के संघट्टन
 से होता है । ४० । हे महाराज वहाँ भीमसेनकी गिरतीहुई उस वेगवान् गदासे पृथ्वी
 अत्यन्त कम्पायमान हुई । ४१ । दुर्योधन ने भी ताड़ित उस गदाको देखे नहीं
 सहा जैसे कि क्रोधयुक्त भतवाला हाथी सम्मुख जानेवाले हाथी को नहीं सहता
 है । ४२ । हेमे निश्चय करनेवाले राजा ने बायें मंडल को घूबकर भीमसेन को
 अपनी भयानक वेगवाली गदा से मस्तकपर घायल किया । ४३ । हे महाराज आप
 को पुत्रकी उस गदा से घायल पाएइव भीमसेन कम्पायमान नहीं हुआ वह आश्चर्य
 सा हुआ । ४४ । हे राजा सर मेना के लोगोंने उसके उस अपूर्व शैत्य की गदी

two tusked elephants, their bodies were covered with blood. The
 battle at the close of the day was like that between Indra and
 Vritrasur. Your son moved in stranger circle at the sight of Bhim.
 The latter struck a blow at the jewelled mace of the former. The
 noise from the two maces was like the meeting of two vajras. 40:-
 The earth shook with the fall of Bhim's mace. Duryodhan did not
 bear it as one mad elephant does not bear the onslaught of another.
 Moving in a left circle, he wounded Bhim on the forehead with his
 mace of dreadful velocity. The latter did not shake with the blow

पगडाभिहो नीनो भाकपत पवात् पश्य ॥ ४५ ॥ ततो गुदनरि बीतो गदा हेमवारे
 पृथगात् । दुर्योधनात् स्वस्त्यत् भीमो भीमपराक्रमः ॥ ४६ ॥ त प्रहारमखं प्रति
 काशयेत् महापुङ्गवः । मोर्ध दुर्योधनस्य क्रो तत्रासृष्टिस्मयो प्रहात् ॥ ४७ ॥ सा तु मोघा
 गर्दा रावत् पत्नी भीमचोदिता । चालयामास पृथिवीं महाविद्योतितिरुषता ॥ ४८ ॥
 भाव्यात् खीलिकाग्रामोद्भवतश्च स पुनः पुनः । गदानिपात प्रहात् भीमकेवलय
 वधिषतम् ॥ ४९ ॥ बभूवविरावा तथा भीम गद्वा कुदसत्तम् । ताडयामास सकृद्वी
 वक्षोर्धेयो महापुङ्गवः ॥ ५० ॥ गद्वा निहतो भीमो मुह्यमानो महापुङ्गवः । भाङ्गमन्वत्
 खर्कंके पुणेनाम्बाहतकम् ॥ ५१ ॥ तस्मिन्तथा वर्तमाने राजह सोमकपाण्डवाः ।
 कुभोपहतकपुत्रा न इहमनसो भवन् ॥ ५२ ॥ स तु तेन प्रहारेण मातङ्गं हृष रोषित
 हस्तिवकारितसङ्काशमभिपुङ्गव से सुतम् ॥ ५३ ॥ तवस्तु तरसा भीमो गद्वा तनव

महासाकरी भी गदासे मद्भकपर पायल होकर भी भीमसेन चरखों से एक
 बंदर की कम्पावमान नर्ही हुआ ॥ ४५ ॥ तत्र भयानक पराक्रमी और भीमसेनने बहुत
 भारी प्रकाशित स्वर्णालङ्कार गदाको दुर्योधन के निमित्त छोड़ा ॥ ४६ ॥ प्रथमनिष्ठ
 व्याकुलतासे रहित बड़े बलवान दुर्योधनने अपनी हस्तलाघवता से उक्त प्रहार
 को निष्फल किया वह भी महाभाङ्गचर्या हुआ ॥ ४७ ॥ हे राजा फिर भीमसेन
 से चुर्चार्द्धि बर नेषके समाप्त शब्दायमान गदा पृथ्वी को कंपित करके कौशिक
 नाम नामों से निषव होकर चारम्बार उछड़ी गदा के गिरने को और भीमसेन
 को बनापुत्रा बालकर अत्यन्त क्रोधयुक्त महावली कौरवोत्तम दुर्योधन ने उत्तमकार
 गदा के भीमसेनको छठकर छातीपर धावक किया ॥ ५० ॥ तत्र बड़े बुद्धिमान
 के पुत्रही गदा से भावस और अवेत भीमसेन ने करनेके योग्य कर्मको नहीं
 जाना ॥ ५१ ॥ हे राजा इस प्रकार उत्सुद्धके वर्धमान होनेपर सोमक और
 पाण्डव अत्यन्त हतसकरप होकर चित्तसे दुःखी हुए ॥ ५२ ॥ फिर प्रहार से हाथी
 के समान क्रोधयुक्त हाथी के समान भीमसेन उस हाथीही के समान भाषके
 पुत्र के सम्मुख गया ॥ ५३ ॥ अर्थात् फिर भीमसेन बड़ी तीव्रता से गदा सेवे

to the amazement of all, and they praised his patience as he did not
 move an inch by the blow. 45. Bhim then hurled his gold-decked
 mace at Duryodhan, but the latter fearlessly warded off the blow
 and the people wondered at his agility. The thundering mace of
 Bhim pitched again and again on the ground. Seeing his adversary
 thus disarmed, Duryodhan deceitfully wounded Bhim on the
 breast. 50) Then wounded by your son's mace and insensible,
 Bhim did not know what to do. The Sonak and the Pandavae were
 much-grieved at this state of things. Bhim again encountered your
 son as one elephant does another and hurled his mace at him and
 wounded him on this side. Wounded by the blow Duryodhan fell

तव । अभिदुद्राय वीर्यं तिहा वनगज यथा ॥ ५४ ॥ उपसृप्य तु राजानं महाबाहो
 त्रिगिरद । जीविष्यत गदा राजत समुद्दिश्य सुततः ॥ ५५ ॥ अताडयद्भीमसेन पार्श्व
 तनुं तदा । स विह्वलः प्रहारेण जानुभ्यामगममहीम ॥ ५६ ॥ तस्मिन् कुक्कुल
 भ्रंशानुभ्यामवनीगते । उदतिष्ठन्तो नादः सृजयानां अगपते ॥ ५७ ॥ तेषाम्बु
 नितम्भं च । सृजयानां नरपथं । अमर्षोद्भरतश्चेष्ट पुत्रसेनं समकुण्ठत ॥ ५८ ॥ वरुणाव
 तु महाबाहुमहानाग इव इवसन् । विवक्षन्निव नेत्राभ्या भीमसेनमवेक्षत ॥ ५९ ॥
 ततः स भरतश्चेष्टो गदागणिरधाद्रवत् । प्रमथिष्यान्नैव शिरो भीमसेनस्य सयुगे
 ॥ ६० ॥ स महात्मा महारथान भीम भीमपराक्रम । अगडयत् शश्वदेन न चञ्चाला
 कलोपमं ॥ ६१ ॥ स भूय शुभ्रमेवायस्ताडिनो गदयारणे । उज्जिगृह्णन् शिरो राजस्य
 प्रथित इव कुञ्जरः ॥ ६२ ॥ ततो गदा वारहणीमयोमयीं प्रगृह्य । वज्रात् स व-
 त्तवनि-

आपके पुत्र के सम्मुख ऐसे गग जैमे कि सिंह बडी तीव्रता से जगडके हाथीके
 सम्मुख जाता है । ५४ । हे राजा गदा छोड़ने में सावधान धीमसेनने राजाके
 पास जाकर उस आपके पुत्रको कक्ष्य बनाकर गदाको घुमाया । ५५ । और वल
 गदा से भीमसेन दुर्वाधनको पार्श्व अर्थात् कुलिस्थान में घायल किया उस महार
 से व्याकुल वह दुर्वाधन जघाकेवल पृथ्वीपर गिरपडा । ५६ । उस कारव कुलम अथवा
 दुर्वाधनको जघा के बलमे पृथ्वीपट गिरनेपर मृजियोंके उदेशवद् प्रकटवने हे राजा
 वह अगपति भाषका पुत्र उन मृजियों की गर्जनाओंको सुनकर अशांती से क्रोध
 पुक्त बड़े सर्फ के समान शत्रोम सते नेत्रों से स्मर रते महाबाहु दुर्वाधन के बडकर
 भीमसेनको देखा । ५९ । और गदा हाथमे लेकर भीमसेन के सम्मुख गया बुद्धिमे
 भीमसेन के शिरको महत्त कग्ना चाहते उडे साहमी और भयानक पराक्रमी राजा
 दुर्वाधनने महात्मा भीमसेनको शिख स्थान में घायल किया पगन्तु वह पर्वता
 कार कंपायमान नर्शा हुआ । ६० । हे राजा युद्ध में गदा से घायल और शिख
 से लिस वह भीमसेन मद झाड़नेवाले हाथी के समान फिर शोभायमान हुआ
 । ६१ । इसके पीछे शत्रुमतापी अर्जुन के बड़े भाई भीमसेन ने शिरो की धारने
 वाली वज्रविजली के समान शब्दायमान लोहेकी गदाको पकड़ कर बड़ेबल और

down on the ground. The Sanjaya cried at his fall. On hearing
 their cries your son stood up sighing like a serpent and faced Bhim.
 Wishing to hit at the head of Bhim, brava 'Duryodhan' of dreadful
 prowess wounded him on the forehead, but could not shake him.
 Bhim bleeding and wounded looked like an elephant with juice drop-
 ping from; 62 Then, Bhim wounded him with iron mace with a
 crash like thunder Wounded by the blow, your son fell down like a

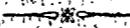
रथनाम । मनाशयच्छुभुमिप्ररथेणो वलेन विक्रम्य पुनश्चापमत्रः ॥ ६३ ॥ तं मो-
 लेनाभिरहतधारास्रजः पपात सङ्कुचितदेहवधनः । सुसुष्वितो माकतवंगतादिभिर्युधै-
 महाशाल इवावधुषितः ॥ ६४ ॥ ततः प्रवेदुर्जङ्घपुष्प पाण्डवा समीक्ष्य पुत्रं पतितं
 क्षितौ तथ । ततः भूतस्ते प्रतिलक्ष्य श्वेतर्षा समुपपात क्षिरको यथो ज्वात् ॥ ६५ ॥ स
 पाण्डवो निरवममार्थे तल्लतया महारथ्यः शिक्षितयत् परिभ्रमन् । अताडयत् पाण्डवम-
 प्रतः द्रिष्यतम् स दिग्बन्धुकी जगतीमुपास्पृशत् ॥ ६६ ॥ स सिद्धान्दं वितनाद् कौट्यो-
 निवारह धूमो युधि भीमभोजसा । धिम्बद् धंधाशनिमुद्यतजस्ता मदानिपतिले शरीरक-
 म् ॥ ६७ ॥ जगतीसीसे नित्यो महाममूर्द्धैवैकसम्पत्सरसाश्च जेदुवाम् । पपात
 कोकनेटवत्प्रवेरितं विभिन्नवृष्योक्तरत्नमुत्तमम् ॥ ६८ ॥ ततः परानाविशवुत्तमे भये
 लक्ष्मीवत् कृती रणितं शोचमम् । महयिमानश्च गलेन कौरवै निशंस्य भवे सुखदुःख

पराक्रमे शत्रुना पयसः क्रिया ॥ ६३ ॥ भीमसेनके हाथ से पाण्डव होकर
 बरपन्न केपावमान शरीरमें जोड़ासा मापका पुत्र पेट भिरपुत्रा जैत कि चनेम
 बरका बुधिन शालका वृत्त वायु से ताड़िन घमताहुआ गिस्ता ॥ ६४ ॥ इसके
 पीछे भापके बन्धके पृथ्वी पर गिराहुआ देखकर सब पाण्डव लोग गर्जे और
 मत्स्यपुत्र फिर भापका पुत्र संचित होकर एमे उछला जैसे कि कि इदताम तदा म
 ले हाथी उछ बहः ॥ ६५ ॥ तदा तदेव कौवयुक्त शिक्षा पायेहुये के समान त्वारा
 और को बभते राम महारथी राजाने भाग नियत इनेवाले पाण्डव का वायल
 शिखर पत्त ध्याकलनेनी पृथ्वी को स्पर्शकिया ॥ ६६ ॥ वह कौरव बलसे भीमसेन
 का पृथ्वीपर गिराकर सिद्धान्द को गर्जी और वज्रके समान वही तेजस्वी मदा के
 बहारसे इसके कंदको तोड़ा ॥ ६७ ॥ इसके पीछे आकाश से गेजेनेवाले देवता और
 जगत्प्राणके वज्र शब्दहुये और देवताओं ने उत्तम पुण्यो कीभी वर्षा करी ॥ ६८ ॥
 इसके पीछे पृथ्वीपर पड़ेहुये नराशम का दखकर भातेपक्षिया ये वदाभय उत्पन्न
 हुआ कौरवको पपात पूण और भीमसेन के अरथन्त इद कवचके टूटनका देख
 कर सब अरथन्त भयभीत हुये ॥ ६९ ॥ इसके पीछे भीमसेन एक मुहूर्त्त में संचितता

... a tree struck down by the wind. The Pandavas roared at the fall
 of your son, but he sprang up in an instant as an elephant does from
 a lake. 65. He again wounded his adversary with great skill
 and made him touch the ground. He raised a loud roar as
 Bulbo fell down on the ground and broke through his armour
 with the mace. The gods and apsaras cried out from the air and
 showered flowers. The people of the opposite party were much
 terrified at the breakage of Bhim's armour. Bhim came to him.

अथवा ॥ १० ॥ ततो महावीर्युपलम्ब्य चेतनां कुरुक्षेत्रेणैव विचारात्प्रजापतेः । ॥ १० ॥
अथवा ॥ १० ॥ ततो महावीर्युपलम्ब्य चेतनां कुरुक्षेत्रेणैव विचारात्प्रजापतेः । ॥ १० ॥

इति गदायुद्धपर्वणि गदायुद्धे सप्तमोऽध्यायः ६७ ॥



समस्तमं यथा ॥ समुदीर्णं ततो हृष्ट्वा संश्रामं कुरुक्षेत्रेणैव ॥ अथवा ॥ १० ॥ ततो महावीर्युपलम्ब्य
प्राप्तुर्वेन यथासित्तमम् ॥ १ ॥ अथवा ॥ १० ॥ ततो महावीर्युपलम्ब्य चेतनां कुरुक्षेत्रेणैव विचारात्प्रजापतेः । ॥ १० ॥
पुणो भूया नेतव्यं जनाह्वयम् ॥ २ ॥ वासुदेव उवाच ॥ उपवेशीमनो बोधस्त्वयोर्जीर्णवत्पुत्रक
वत्पुत्रः । कृती अत्मपरस्परवे चान्तराष्ट्रो बुधो वरात् ॥ ३ ॥ श्रीमत्सेवक्यु-वर्णनं-सुख
नामो न ज्ञेयः । अन्वयाय नु युष्मन्त्वे हन्त्यादेव सुवाक्यम् ॥ ४ ॥ मायया विद्विज्यते
को वाकर प्राचिसे भूरेहमे अपने मुक्तको साफ करके देख्ये को वाक्कर दोनो
नेमो से प्रसन्नोहनकर अपने को बड़े प्रसन्नै धामकर नियम हुआ ७७ ॥

अध्याय ६८ ॥

संनय बोले कि इसके पीछे अर्जुन उन कौरवों में भेष्ट कौमसेक वीरपुत्रों
जनके युद्ध का देखकर यशमान प्राणदेवजी से यह बचन बोला । १ । हे जनार्दन
श्री इन दोनों वीरोंके युद्धमें आपके विचारसे कौन विशेषई अपना किससे शीतला
अधिक युद्धे उसको आप कहिये । २ । वासुदेवजी ने कहा दोनो की शिखा
बराबरी और शीमसेन अधिक बलवान् है परन्तु यह दुर्योधन भीमसेनसे अधिक
अभ्यासी और उपाय करनेवाला है । ३ । भीमसेन धम्म से युद्ध करके इसको
विजय नहीं करसक्ता और जो अन्यायसे लड़ेगा तो अवश्य दुर्योधन को विजय
करेगा । ४ । और यहाँ हमने सुना है कि असुरसोमों को देवताओं ने उससेसही
self in an instant and clearing his face of blood stood up with great
fortitude." 70.

CHAPTER LVIII.

Sanjaya said, " Then Arjun, seeing the battle of Bhim and Duryodhan, said to Vasudev, " Whom do you think the better of the two warriors, Vasudev? What quality is greater in each of them? " Vasudev said, " They are equal in training. Bhim is more powerful, but Duryodhan has better practice. Bhim cannot conque

विरोधः इति नः सुखम् । विरोधमस्तु शक्येण साधया । निर्दिष्टतः स वे ॥ ५ ॥ साधया
 साक्षिण्येनो वृत्रश्च बलमूढनः । तस्मात्साधयामर्षे जीवे । कानिहस्तु पराक्रमम् ॥ ६ ॥
 प्रतिज्ञातस्तु भूमिने । पृतकाले धनञ्जयः । ऊढमेऽस्यामि ते सैष्ये गदवति युवाधनम् ॥ ७ ॥
 सोमे प्रतिज्ञां तास्त्र्यापि पालयस्वपरिकल्पणः । साधयिष्ये राजानं साधयैव निहन्तस्तु
 ॥ ८ ॥ यद्येव बलमास्थाय स्यादेव महारिष्यति । विषमस्थस्ततो राजाः । भविष्यति युधि
 श्चिरः ॥ ९ ॥ पुनरेव तु वक्ष्यामि वाक्यद्वयं निवाचयम् । धर्मराजापराजित् । नर्षे नः । पृतक
 गतम् ॥ १० ॥ कृत्वा हि सुमहत् कर्म इत्था साधयामुक्त्वा । कुर्वन् विजयः प्रातो यथाशा
 म्रवेरिष्ये प्रतिष्ठासितम् ॥ ११ ॥ तदर्थे विजयः प्राप्तः पुनः संशयितः कृतः । अर्जुन
 रथा महती चक्रवाक्यवत्वाक्यम् ॥ १२ ॥ यद्येकविजये युद्धं पणितं धारमादृशम् । सुतो
 वनः कृतो विरिचकारवगत्तलया ॥ १३ ॥ अपि चाशनला गीतः भूयतेषु पुरातनः ।
 एवोक्तस्त्वाद्यैसहितसामेनिगदतः भुञ्जु ॥ १४ ॥ पुनरावर्षमानानां ज्ञानानां जीविते

विजय किया है निश्चय करके उस विरोधनको छसही से इन्द्रने विजय कियाया
 ॥ ५ ॥ और छसही से इन्द्र ने वृत्रासुर को भी विजय किया इसकारण भूमिसेन
 वाचाक्य पराक्रम में नियत होकर लड़े ॥ ६ ॥ हे अर्जुन भूमिसेन ने घृतके समय उस
 युवाधन से प्रतिज्ञा करीथी कि युद्धमें तेरी जयाओं को गदामे तोड़ंगा ॥ ७ ॥ सो
 वह कथसन्तुषी भूमिसेन उस प्रतिज्ञा कोभी पूराकरे छससंधी छली राजा को मारे
 ॥ ८ ॥ जो वह लड़ में नियत होकर न्यायपूर्वक प्रहार करेगा तो राजा युधिष्ठिर
 अवश्य आपाधि में फंसगा ॥ ९ ॥ हे पाण्डव जो मैं कहताहूँ उसको सुनो कि धर्म
 शास्त्र के अपराधसे हमको फिर भय मातहूआ ॥ १० ॥ बहुत बड़े कस्मोंको करके
 और सीध्याएक बड़े फौरवों को भी मारकर विजय पूर्वक अत्यन्त उत्तमपश और
 वृद्धता के बदलका मातक्रिया ॥ ११ ॥ इम प्रकार की मातहोनेवाली विजय को फिर
 लदेइसे युक्त क्रिया है अर्जुन धर्मराजको यह बड़ी निर्बुद्धिता है ॥ १२ ॥ जो विजय
 ने इस प्रकार के एककेही साथ धोरयुद्धकी प्रतिज्ञाकरे दुर्बोधन अभ्यासी वीर
 और बकते चिचदाला है ॥ १३ ॥ और शुक्रजीका कहाहूआ यह माचीन औरमुख्य
 प्रयोजनसे युक्त श्लोकभी सुना जाता है उसको तुम मुझसेसुनो ॥ १४ ॥ कि छोटकर
 ज्ञानिवाले पराजित जीवनकी इच्छा करनेवाले और एकाकीपनेमें बंधेहुये मनुष्यों

him but with unfair fighting. We hear that the gods, conquered asurs with deception. Let Bhim fight artfully. He promised at the time of gambling to break Duryodhan's thigh. He should fulfil his promise. Yudhishtir will fall into difficulty, if Bhim fights fairly. We are again in danger by the fault of Yudhishtir. 10. Having slain Bhishm and other great Kauray warriors we have made an end of the enmity; but he has again endangered victory through

विनाम् । भेदक्षयमिच्छेयानमेकायनगता हि ते ॥ १५ ॥ सहस्रोपतितामाश्व निराशा
नाश्व जीयते । न शक्यमप्रतः स्थानुं शक्रेणापि घनञ्जय ॥ १६ ॥ सुयोधनामि
भृग्न इतमेभ्य ब्रह्म गतम् । पराजितं वनमस्तु निराशा राज्यलम्बने । कोऽप्येव स्रुवुः
प्राज्ञः पुनर्द्वन्द्वे सम इत्येत ॥ १७ ॥ अपिना विजितं राज्यं न हरेत् सुयोधनः । यत्प्रवे
दशयथाणि गदया कृतनिश्चयः । अस्त्युद्धञ्च तिर्यकं च भीमसेनजिघांशवा ॥ १९ ॥
एतञ्चेव महाबाहुरभ्यायेन हनिष्यति । एष वः कौरवो राजा धारैराभ्यु अविष्मति
॥ २० ॥ घनञ्जयस्तु अर्धततु केशवस्यमहारमनः । प्रेक्षतो भीमसेनस्य सख्यंमृदुमता
इयत् ॥ २१ ॥ गृहसमं ततो भीमो गदया प्यच्छात्रजे । मण्डलानि विचित्राणि यम
का नितराणि च ॥ २२ ॥ दक्षिणे मण्डलं, सम्य गोमूत्रमथापि च । व्यचरत् पाण्डवो
राजचारिं समोदयन्निव ॥ २३ ॥ तथैव तव पुत्रोऽपि गदामार्गीषशास्त्रः । व्यचरत्सु

से मयकरना चाहिये क्योंकि वह एकसे चित्तवाले है । १५ । हे अर्जुन भक्तस्पात
चढ़ाई करनेवाले जीवनेसे निराश शूरवीरोंके आगे इन्द्रसेभी नियतहोना सम्भव
नहीं है ॥ १६ ॥ इस पराजित मृतक सेनावाके हृदमें वर्त्तमान दुर्योधनको कौनसा बुद्धि
मान फिर इन्द्र युद्धमें बुझावे । १७ । दुर्योधन हमारे विजय कियेहुये राज्यको नहीं
करसक्ता जो निश्चय करनेवाला दुर्योधन भीमसेनके मारनेकी इच्छासे तरहवपसे
गदा के द्वारा ऊंची नीची और तरछी गतिकरता है । १९। जो महाबाहु भीमसेन
इस प्रकार इसको अन्यायेसे नहीं भरेगा तो यह कौरव दुर्योधन तुम्हाग राजाहोगा
। २० फिर अर्जुनने महात्मा केशवजोके इस वचनको सुनकर भीमसेनके देखेहुये
बाई जेवा को ठोका । २१ इसके पीछे भीमसेन उस संकेत को पाकर युद्धमें गदाके
द्वारा मक आदिक वदतमे विचित्र मण्डलोंको घूमा । २२। हेराजा पाण्डव भीमसेन
शत्रुको अचेत और मोहित करता गोमूत्रकर्नाम मण्डलों को घूमा । २३ । उसी
प्रकार गदामार्ग में मार्गधान आपका पुत्रभी भीमसेनके मारनेकी इच्छासे तीव्रत

his folly He made a promise to Duryodhan, who is so practiced in
the fighting. We hear a famous verse of Shukra: we should fear
those whom we have conquered, for they are bent on revenge 15. In-
dranil is unable to oppose those who are hopeless of their lives. What
wise man would have challenged vanquished Duryodhan? Duryodhan
cannot recover the kingdom conquered by us. Surely he has been prac-
tising mace for twelve years, and cannot be slain by Bhim but with un-
fair means, Duryodhan will be your king if he is not slain unfairly. 20.
At this Arjun looked at Bhim and tapped his left thigh. Bhim under-
stood the sign and turned round in strange circles 22. He
ran in zigzag circles, making his opponent insensible; and your
son too, clever in the marches of mace fighting, ran in strange ways.

चिन्मयीमखेनजिघांसया ॥ २५ ॥ आधुवन्ती गदे घोरं चन्दनागुरुकणिते वैरस्य
 न्तं परस्परंती रणे कुञ्जाविवान्तको ॥ २५ ॥ अन्योन्यं ती जिघांसन्ती प्रघोरं पुरुषर्ष
 भौ । युयुचाते मरुमन्ती यथानागमिवैपिणौ ॥ २६ ॥ मण्डलानि विचित्राणि चरन्तौ
 नृपजीमवौ । गदासम्पातजालत्र पञ्चमुः पावकार्षिणः ॥ २७ ॥ समं प्रहरन्तीस्तत्र
 शरयोर्बालितोमुखे ध्रुवयोर्बायुना राजन् हयोरिव समुद्रयोः ॥ २८ ॥ तयोः प्रहरतो
 स्तुन्यं मत्तकुञ्जरयोरिव । गदानिघातसंहादः प्रहागतं समजायत ॥ २९ ॥ तस्मिन्तदा
 संप्रहारं वाक्ये सङ्कुले मृशम् । उभावपि परिधान्तौ युध्यमानाव्यरिन्द्वौ ॥ ३० ॥
 तौ मुहुर्षं समाश्रवस्य पुनरेव परमृशौ । मध्यहारयतां कुञ्जां पशुह्यं महतीं गदाम्
 ॥ ३१ ॥ तयोः समभवद्युद्धं घोररूपमसंभ्रमम् । गदानिघाते राजेन्द्रं तक्षतीर्षं पश्यन्म
 ॥ ३२ ॥ अजरोरुहसर्वाङ्गौ कश्चिरेणामि सन्तुनी । ददशाने तिमिर्बति पुष्पिताविषं
 से अपूर्वं मार्गोको घृमा । ३४ । चन्दन अगारसे युक्त घोर गदाओं को चलायमान
 करनेवाले, शत्रुताका मन्त चाहते । २५ । परस्पर, मारनेके अभिलाषी श्रेवीर
 पुरुषोत्तम वह दोनों ऐसे युद्धकरनेवालेदूरे जने कि सपोंका मांस चाहनेवाले दो
 मुहुर युद्ध करतेहूँ । २६ । वहाँ विचित्र मण्डलोंके घूमनेवाले राजा-दुर्वाधन और
 शिपुसेन-की गदाओंके प्रहार से उत्पन्न होनेवाली अग्निकी ज्वाला प्रकटहूँ । २७ ।
 हे राजा वहाँ बराबर प्रहार करनेवाले उन पराक्रमी शूरोका घोरशब्द ऐसा उत्पन्न
 हुआ जैसेकि बायुपे जोगयुक्त दोसमुद्रोंका घोरशब्द होताहै । २८ । मन्तवालेहाथीके समान
 बरम्भार प्रहार करनेवाले उन दोनोंके प्रहार करनेसे परस्पर गदाओंके संघटनसे
 बड़ा शब्द उत्पन्न हुआ । २९ । तब उस भयानक भार-स्पाकुल युद्धमें लड़नेवाले वह
 दोनों शत्रुसन्तापी भङ्गये । ३० । अर्थात् अश्रुओंके तपानेवाले क्रोधयुक्त वरदोनों
 एकमुहुर समाश्रवासितहाके दोनों गदाओंको पकड़कर फिर विधान युक्तहुये । ३१ ।
 हे राजेन्द्र गदाओंके प्रहारसे परस्पर प्रहार करनेवाले दोनोंका घोररूप युद्ध सबके
 देखते हुये हुआ । ३२ । फिर युद्धमें चलायमान उन दोनों अष्ट नेशत्राल वीरों
 ने परस्पर ऐसे पायक किया जैसे कि हिमालय पर्वतपर फूलेहुये दो किशुक्के हस्त
 होते हैं । ३३ । भीमसेन से कुछ छिद्र दिखानेपर थोडासा मसन्न विच दुर्वाधन

Using their maces, adorned with sandal and agar, and wishing to
 make an end of enmity, the two heroes fought like two garuṣṭh
 desirous of eating serpents. 26. Sparks of fire came out of their
 maces. The noise of their fighting was like that of two stormy
 seas. They fought like mad elephants and made a tremendous noise
 with their maces. At last they were tired of dreadful fighting. They
 wounded each other with their maces and looked like two flower
 ing kinshuk trees on the back of the Himalayas. Finding out some
 weakness in Bhim, Duryodhan rushed at him in great fury, but the

किशुको ॥ ३३ ॥ दुर्योधनस्तु पापेन विचरे सप्रवृत्तिते । ईषदुस्मद्यमानस्तु सहसा प्रससारत् ॥ ३४ ॥ तमश्चक्ष्वागम प्राहो रणे प्रेक्ष्य वृकोदर' । अपाक्षिपद्गदा तस्मै वेगेन महता बली ॥ ३५ ॥ अयाक्षितान्तु तादृष्ट्वापुत्रलक्ष विशास्ते । अवासर्पस्तत स्थानात् सा मोघा न्यपतद्गु वि ॥ ३६ ॥ मोक्षयित्वा प्रहार त सुतलक्ष ससम्भ्रमात् । भीमसेनश्च गदया पाहरत् कुकमस्तम' । ३७ ॥ तस्य विस्थन्दमानेन रुधिराणामितोजसः । प्रहार गुरुपाताञ्च मूकुञ्च क्षमजापन ॥ ३८ ॥ दुर्योधनो न तं वेद् पीडित पाण्डव रथ । धारवामास भीमोपि शरीरमनिपीडितम् ॥ ३९ ॥ अमप्यत स्थिरं ह्येन प्रहरिष्वस्त- माह्वे । ततो न प्राहरत्तस्मै पुनरेव तवात्मज ॥ ४० ॥ ततो मुहूर्तेमाद्वस्यौ दुर्योधन मुपास्थितम् । वेगेनाश्रयतद्ग्राज्ज् भीमसेन प्रतापवान् ॥ ४१ ॥ तन्नापतस्त सप्रव्य सरश्चमामतोजसम् । मोघमस्य प्रहार त विकीर्णुर्भरतर्षभ ॥ ४२ ॥ अवस्थाने मति

अकस्मात् दौडा । ३४ । बुद्धिमान बलवान भीमसेनने युद्धमें उस सपीप बर्षवान् दुर्योधन को देखकर बड़ी तीव्रतासे उसके ऊपर गदाको मारा । ३५ । हे राजा आप का पुत्र उस गदा चलनेवालेको देखकर उम स्थानसे हट गया वह गदा निष्कल होकर पृथ्वीपर गिर पड़ी । ३६ । हे कौरवोत्तम तब आपके पुत्रने बड़ी व्याकुलता समत उस महारथो विचारकर भीमसेनको गदा से घायल किया । ३७ । रुधिरक चलायमान होने और बड़े महार के गिरनेसे उस बड़े तेजस्वी का मुँहा हो गई । ३८ । दुर्योधन ने उस युद्ध में पीडावान् भीमसेन को नहीं जाना और भीमसेन ने अत्यन्त पीडित शरीरको धारण किया । ३९ । आपके पुत्र ने युद्धमें उसको निबल और महार करने का इच्छावान माना इसहेतु से फिर उसपर महार नहीं किया । ४० । हे राजा इसके पीछे प्रतापवान भीमसेन एक मुहूर्त विधाम करके तीव्रता से सम्मुख बर्षवान दुर्योधन के समक्ष में दाडा । ४१ । हे भरतर्षभ इस क्रोधयुक्त बड़े तेजस्वी आतेहुये को देखकर उसके उस महारको निष्कल करनेकी इच्छासे ॥ ४२ ॥ बड़े साहसी भीमसेनको छलना चाहते आपके पुत्रने अवस्थान नर्वात् ठहरने में मति करके उछलना चाहा । ४३ ॥ परन्तु भीमसेनने उस राजाके कर्मकरों की इच्छाको जानलिया और सम्मुख जाकर सिंहके समान गर्जना करके । ४४ ।

former dealt the latter a heavy blow with his mace. 35. Seeing the mace approach him, your son stepped aside and the mace fell down on earth. Then your son wounded his opponent, who became insensible with the heavy blow and lacs of blood, but he managed to hide his pain from your son. Seeing him ready to fight, your son did not repeat the blow 40 Having rested awhile, Bhim rushed at your son who wishing to avert his blow thought of springing up. Bhim

अथ पुत्रक्षय महामना । इयेषोत्पतितु राजेश्छलविष्यद् वृकोदरम् ॥ ४३ ॥ बभूव
 श्रीमकेनस्तद्राश्रयस्य शिकीर्षितम् । अथास्य सममिदुख समुत्क्रुश्य च सिंहवत्
 ४४ ॥ मृशु बभूवयतो राजन् पुनरेषोत्पतिष्यन् ऊरुधरां प्राहिषोद्राजन् गदां वेगेन
 गच्छन् ॥ ४५ ॥ सा वज्रनिष्पेषसमां प्रहिता भीमकर्मजा । ऊरु वुर्योवनस्वाय
 वज्रञ्च शिकीर्षिनी ॥ ४६ ॥ स पयात मरुदात्रा समुवामनुनाद्वत् । अग्नीकर्मि
 केनेन पुनस्तप मूर्ध्निपदे ॥ ४७ ॥ वज्रुर्वा । सन्निर्वाता । वाजुर्वर्षे पयान्च । अवाल
 श्चिषी चापि सहस्रशुष्यवर्षता ॥ ४८ ॥ तरिप्रक्षिपतिने बोटे । परयो स ईदृशिनाय ।
 महावचना वृन्वामा सानिर्वाता भयङ्करी । पयात पोरिका महती वनिते पृथिवीगतौ
 ॥ ४९ ॥ तथा क्षोभितवर्षेण्य पाशुवर्षेण्य भारत । वयर्षेण्यशास्त्रं तत्र पुनै निपातिते
 ॥ ५० ॥ वक्राणां राक्षसानाञ्च विशाचानां तथैव च । अतरोक्षे महाजाद् भयते मर
 तर्षम् ॥ ५१ ॥ तत्र शब्देन घोरेण मृगाधामय पक्षिनाम् । अत्र चोरनर- शम्भो बहूनां

भीमसेन ने मद्राको बड़ी सीजनासे उन काँठरूपके ठगनेवाले और फिर उछलने
 के आभिप्रायी की जवाओं पर चलाया । ४३ । भयदारी, कर्मकक्षा भीमसेनसे
 चलाई हुई और वज्रके समान विभाबटवाली उस मद्राने दुर्योधन की दर्शनीय
 जवाओं को तोड़ा । ४४ । हे राजा भीमसेनके हाथसे दूटी जवाबाला वह आपका
 नरोत्तम पुत्र पृथ्वीको शब्दायमान करताहुआ गिरपड़ा । ४५ । उमसमय परस्पर
 संघर्ष करती वाजुचली धूनकी वर्षाहुई और वृक्ष वन पर्वतोंसमेत पृथ्वी कंपाय
 नामहुई । ४६ । सब राजाओंके स्वामी और सब पृथ्वीके आधिपति उस दुर्योधन
 के गिरने पर पड़ी शब्दायमान प्रकाशित और परस्पर संघट्टनवाली वाजुसमेत
 बहूनी उरकाधियाँ । ४७ । और इतिरसमेत छूळकीभी वर्षाहुई हे भरतर्षभ वहाँ
 दुर्योधन के गिरनेपर इन्द्रे वर्षाकरी । ५० । इसी प्रकार बल रावण और विशाचों
 के भी बड़े शब्द अन्तरिक्ष में सुनाई पड़े । ५१ । उस घोर शब्द से बहुत से
 पशु पक्षियों के भी बड़े घोसशब्द सब दिशाओंमें उतराहुए । ५१ । और जो
 वहाँ पशुपत्तोंसमेत घांटे हाथी आदिकथे उ-हाँभी दुर्योधनके गिरनेपर बड़ेशब्द किये

knew his intention, and with a leonine roar, dealt a blow at his thigh
 while he was in the act of springing up 43. The heavy mass broke
 Duryodhan's thigh and he fell down on earth with a crash. Then
 a storm of wind blew, dust fell down and the earth with her moun-
 tains and trees shook. At the fall of prince Duryodhan, meteors
 fell down with a crash and blood stained dust fell. Indra lowered
 rain at the fall of Duryodhan, 50. The cries of yaksas, pishachas
 and rakshases were to be heard in the air and the beasts and birds
 cried out in all directions. The sounds of men and beasts were followed
 by those of conchs and drums at the fall of Duryodhan. Submarine
 noises were heard and dreadful trunks, arms and feet danced all

सर्वतोदिशम् । ५२ ॥ ये तत्र धाजिन शेषा गजाश्च मनुजैः सह । सुसुख्यस्ते मङ्गलात्
 तव पुत्रे निपातिते । भेरी वासुसुङ्गानामभवच्च स्वनो महान् ॥ ५३ ॥ अन्तर्भूमिगत
 शेष तव पुत्रे निपातिते । बहुपादैर्बहुभुजैः कथ-धैर्यैरदर्शनैः । नृत्यज्जिर्भयवैभ्यांश्चा
 दिगन्तत्रामव-नृप ॥ ५४ ॥ षडजघ-लोकध-तश्च शक्रधन्तस्तथैव च । प्राकम्पन्त ततो
 राजस्तथ पुत्रे निपातिते ॥ ५५ ॥ इवा कृपाश्च रुधिरमुद्वेगमुत्पसत्तम । तद्यत्तं कृतम
 हविष्या प्रतिश्रोतोब्रह्मभवन् ॥ ५६ ॥ सुंलिगा इव नाभ्यंस्तु स्त्रीलिङ्गा बुद्ध्यामप्यहम् ।
 दुर्योधने तदा राजन् पतितं तनये तव ॥ ७७ ॥ इष्ट्वा तान्द्रुतोत्पाताद् वाङ्मवा
 पाण्डवे सह । आविग्नमनसैः सर्वे धर्मसुभ्रुर्भरतर्षभ ॥ ५८ ॥ ययुर्धवा अधाकाम गन्धर्वा
 प्सरसस्तथा । कथयन्तोद्भुत युद्धं सुतबोस्तव भारत ॥ ५९ ॥ तथैव सिद्धा राजेन्द्र
 तथा धातिकचारणा । नरासिद्धौ प्रशसन्ती धिमज्जमुद्यथागतम् ॥ ६० ॥

इति गदाधुद्धपर्वाणि तदायुद्धे दुर्योधनरुभो अष्टपञ्चाशोऽध्यायः ५८ ॥



भेरी शङ्ख और मृदङ्गों के बड़े शब्द हुये । ५१ । आपके पुत्र दुर्योधनके गिरने पर
 पृथ्वीके भी शब्द हुये सब दिशा बहुतसे चरण भुजाओंस और घोर दर्शन नृत्य
 करनेवाले भयकारी रुढ़ोंसे पूर्ण होगये । ५४ । ध्वजासमेत शस्त्रधारी वीर, भो
 कम्पायमान हुये । ५५ । हे भरतर्षभ राजा धृतराष्ट्र आपके पुत्र दुर्योधन के
 गिरनेपर तदाग और कूपोंनेभी ऊपरको रुधिरवाया वही शीघ्रगामी
 नदियां उल्टीवही । ५६ । स्त्रियां पुरुषोंके समान और पुरुष स्त्रियोंके समान होगये हे
 राजा आपके पुत्र दुर्योधन क गिरने पर । ५७ । पांचालों समेत सब पाण्डव उन
 अपूर्व उत्पातों को देखकर चित्तसे व्याकुल हुये । ५८ । इसीप्रकार देवता मृत्युर्ष्वे, अर्जुन
 अप्सरा आपके पुत्रोंके अपूर्व युद्धको वर्णन करते हुये इच्छानुसार चलेगये । ५९ ।
 और हे राजेन्द्र इसीप्रकार शुद्धवायु के साथ चलनेवाले चाण्ड सोम भी, बत
 दोनों नरोत्तमोंकी प्रशंसा करने अपने-२ स्थानोंको चलेगये ६० ॥

round. The banners of the warriors shob 55 Lakes and wells
 gave up blood at the fall of your son and rivers changed their course
 Women were turned into men and men into women The Pandavas
 and Panchals were terrified at the sight of those phenomena Gods,
 ghandharvas and apsaras went away talking of your son's wonderful
 fight. The charans too flew into air and praised the fighting of
 the two heroes " 60.

सन्जय उवाच । त पतित ततो दम्भवाः महाशालमिवाभूतम् । प्रहृष्टमनस सर्वे
 वदन्तुस्तत्र पाण्डवा ॥ १ ॥ त मसमिषा मातङ्ग सिद्धेन विनिपातितम् । वदन्तुदृष्टरो
 माण सर्वे ते षापि सोमकाः ॥ २ ॥ ततो दुर्योधन इत्वा भीमसेन प्रतापवान् ।
 पतित क्षीरवेश्म तमुपागम्येदमब्रवीत् ॥ ३ ॥ गौरीरिति पुरा मन्द द्रौपदीमकवासमा
 यत् समायां हसन्नस्मांस्तवा यदसि दुर्मते ॥ ४ ॥ तस्यावहासस्य फलमथ तव सम
 वाप्नुहि । एवमुक्त्वा स वामेन पदा मौलिमुपास्पृशत् ॥ ५ ॥ तत्रैव क्रोधसरको
 भीम परकृत्वाह्न । पुनरेवाप्रवीक्षापय यस्तव धृणु नराधिप ॥ ६ ॥ येस्मान् पुरा मन्
 द्यगित मूर्खा गौरिति गौरिति । तान् वय प्रतिनृत्याम' पुनर्गौरिति गौरिति ॥ ७ ॥
 तास्माकं निकृतिर्धीहर्नाक्षयते न वञ्चना । इवधादुघलमाभित्य प्रवाचामो वय रिपून्

अध्याय ५२ ॥ -

संजय बोलें कि इसके अनन्तर शाल वृक्षके समान ऊंचे गिरायेहुये उस
 दुर्योधनको अत्यन्त प्रसन्न चिन्त सब पांडवोंने देखा । १ । और रोमरसे प्रसन्नउने
 सब सोमकोंने भी भिदके, हाथसे गिरायेहुये मतवाले हाथी के समान दुर्योधनको
 देखा । २ । इस रीति से प्रतापवान् भीमसेन ने दुर्योधनको मारकर उस गिरायेहुये
 मृतक प्राद कोरवेश्म के पास जाकर यह कहा । ३ । कि हे दुर्मति अभागे जो पूर्व
 काष्ठमें तुमने सभाके मध्य में हमारा हास्यकरके एकबत्ता द्रौपदी से जो हे गा हे
 गौ कहा । ४ । उत हास्य के फलको अब तुमने पाया यह कहकर उसने अपने वाम
 पादसे उसके मुकुट को स्पर्शकिया । ५ । इसीप्रकार शत्रुकी सेनाके पीडाषान करने
 वाले क्रोधसे रक्तवर्णी भीमसेन ने इसके पीछे भी जोर वचन कहे उनको भी सुनों
 । २ । जो अज्ञानी पूर्व कालमें हेगौर ऐसा कहतेहुये हमारे सम्मुख नृत्य करनेवाले
 हुये उनके मर्ममुख अब हम नाचते हैं कि हेगौर । ७ । इस रीति से कहे हमारा
 उदना अग्निका लगाना घृतरु पांशा झार उगता नहीं है हम अपने भुजवलके
 आश्रित होकर शत्रुओंको पीडा देते हैं । ८ । वह भीमसेन उस बड़ी शत्रुताके

CHAPTER LIX

Sanjaya said ' The Pandavas looked with pleasure at Duryo
 dhan who had fallen like a sal tree and the Somaks were overj yed
 to see him fallen down like a mad elephant struck by a lion Having
 struck down Duryodhan, Bhim went to him and said, ' Foolish
 wretch! you mooked us in the court by saying 'cow cow' to Draupdi
 and this is the fruit of that mockery of yours.' Having said this,
 he touched his diadem with his left foot and again said to him these
 words in anger ' You danced before us, saying cow, cow, and we
 shall now do the same. We are now avenged for you deceiving us;
 putting us on fire, gambling and cheating.' Having made an end
 of the enmity, he said to Yudhishtir keshav, Arjun, Nakul, Saha

॥ ८ ॥ सोवाप्य वैरस्य परस्य पादं हृकोदरं प्राह शनैः प्रहस्य । युधिष्ठिरं केशवपुत्रं
 यज्ञं जनकजय माद्रवभीसुतो ह ॥ ९ ॥ रजस्वलां द्रौपदीं मानध्वं वै रये वाप्यङ्ग
 र्भक्तं सहस्रवक्रान् । तान्पृथक्पृथक् पाण्डवैर्घातैराष्टात्रणे हतान्पसा वाहसेम्बा ॥ १० ॥
 ये न पुरा बभूवुकानधोचक्रुः क्रूरा राशो धृतराष्ट्रस्य पुत्राः । ते नो हता जघन्वा
 स्मानुवन्वा काम एवमं नरकं वा पताम ॥ ११ ॥ पुनश्चराह पतितस्य नूनो ह तं
 गवाहं शक्यमगतां प्रगृह्य । वामिन पादेन शिरः प्रभृथं कुम्भोत्थनं नैकसिद्धं न्यस्योत्पत्
 ॥ १२ ॥ हृद्येन राजन् कुम्भसत्तमस्य ध्रुव्रात्मना भीमसेनेन पादम् । हृद्युषा कृतं कूर्कोनि
 नाश्वनन्दन् धर्मोत्तमान् सोमकानां प्रघर्षां ॥ १३ ॥ तव पुत्रे तया हृद्याः कल्पमानं
 हृकोदरम् । नृपमानस्य बहुशो धर्मराजोऽप्रधीदियम् ॥ १४ ॥ गतोऽसि-तेरस्वाङ्गव
 प्रतिष्ठा परितारथया । शुभेनैवाशुभेनाय कर्मणा विदमाचुता ॥ १५ ॥ मा क्लिप्तस्य वया

अन्तर्को पाकर हँमकर बड़े धीरपने से युधिष्ठिर, केशवजी, अश्रुमुक्त, बभ्रुवृक्ष, बहदेव
 और सृजिनियों में यह बचन बोले । ९ । किं जोपुरुष रजस्वला द्रौपदीको काये
 और लाकर जिगोपे सभामें नर्मी करनाचाहा उन धृतराष्ट्रके पुत्रों को बुद्ध में
 द्रौपदीके पेटमें और पाण्डवोंके धराक्रमसे हतकहुमा देखा । १० । पूर्वतमप में
 राजा धृतराष्ट्रके अग्नि निर्दय पुत्रोंने हमको नंपुसक कहाया वह अजयं सब
 समुहों और सहायकों समेत हमारे हावसे मारोगय हम हमको स्वर्ग होव अर्थात्
 नरकहोय । ११ । फिर उसने पृथ्वीपर गिभेतुये राजाके क-वेपर बंधवान् नृपा
 को मदनकर धानपादसे शिरको अच्छे प्रकारसे मल हतकसी बुधोक्च से कहा
 । १२ । हे राजा सोमकों समेत अष्ट महात्माओंने राजा द्योधिष के मस्तक पर हत
 प्रसन्नविच नीचात्मा भीमसेन के चरणको रवस्ताडुमा देसकर अच्छा रहीं माना
 । १३ । उसप्रकार आप के पुत्रओं मारकर वार्तालाप करनेवाले और बहुर, शीत
 से माचनेवाले भीमसेनसे धर्मराज ने यह बचन कहा । १४ । कि तुमने शत्रुवाकी
 अश्रुणतको प्राप्तकिया और अपनी प्रतिष्ठा की प्राकिया अब शुभाशुभ कर्षोस

dev and he Drinjayas, "Look at the death of those who brought Draupid
 into court and wiled to deprive her of her dress. 10. The sons of
 Dhritrashtra who had called us unmanly before, are now lying dead
 along with their allies and friends. We care not if we go to heaven
 or hell." Then he trampled down the head and mace of Dur-
 yodhan with his left foot. The good warriors among Somake and
 others did not like to see him touch Duryodhan's head with his foot.
 Then Yudhishtir said to Bhism who was thus exulting at the death
 of Duryodhan, " You have pwas an end of the enmity and fulfilled
 your promise. Do not now touch his head with your foot. Do not
 forego dharm. The prince who has fallen down was a brother
 of ours. You should not thus behave with him. 16. Dya

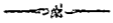
महींमां धर्मसेऽतिगा भवेत् । राजा ज्ञातिहंतश्चायं नैतन्नयायं तथानघ ॥१६॥ एवाद्वा
 चमृतायं कुहणामाधिप तथा । मा स्पर्शाभीम पादेन राजानं ज्ञातिमेव च ॥ १७॥ इत
 वासुदेतामायो सुसुसंगो इतो मृधे । सर्वाकारण शोक्योऽय नाघहास्योऽवमीश्वर.
 ॥ १८॥ विष्वक्तोऽय इतामायो इतज्ञाता इतमजा । उत्सन्नविष्टा ज्ञाता च मैतजा
 कृतं तवया ॥ १९॥ कर्मिका भीमसेनोऽसावित्याहस्तां पुग जना । सकस्मान्निमसेन
 त्वं राजानमचितिष्ठसि ॥ २०॥ इत्युक्त्वा भीमसेनस्तुसशुककटा युधिष्ठिरः । वपस्-
 त्वाग्निहीनो दुर्योधनमारब्धमम् ॥ २१॥ तात मय्युंते कार्यो नात्मा शोक्यस्त्वया
 जया । नूनं पूर्वकृतं कर्म सुखारमनुभूयते ॥ २२॥ चात्रोपदिष्टे विषमं नूनं फलमसंस्क-

पूवक होकर । १५ । चरणसे इसके शिरको मर्दन मतकर धर्म तुझको उल्लंघन
 करनेवाला न होय हे निष्पाप यह राजा और अपना भाई मारागया यह तेरी बात
 न्यायके योग्य नहीं है । १६ । हेभीमसेन ग्यारह अक्षौहिणी सेनाके स्वामी
 कौरवों के राजा अपने भाईको चरणसे मत टुकराओ । १७। मृतक भाई मन्त्रीऔर
 माधवक सेनावाला यह राजादुर्योधन युद्धमें मारागया यह सत्र प्रकार से शोचने
 के योग्य है हास्यके योग्य नहीं है । १८ । यह मृतक मन्त्री भाई सन्तान और
 पिण्डवाला और आपसी नाशको प्राप्तहुआ भाई है तुमने यह न्याय के योग्य
 नहीं किया । १९। पूर्व समय में लोगोंने कहाहै कि यह भीमसेन धर्मका अभ्यासी
 है हे भीमसेन तुम धर्मह्न होकर इस राजाको किस निमित्त चरणों से टुकराते
 हो । २०। फिर अश्रुओं से पूरे राजा युधिष्ठिर भीमसेन से ऐसे वचन कहकर महा
 दुःखी होकर उम शत्रुविजयी दुर्योधन के पास जाकर यह वचन बोले । २१। कि
 हे तात तुझको क्रोध न करना चाहिये और अपना भी शोच न करना चाहिये
 निश्चय करके ईद्वरसेविपरीत अशुभ और अपवित्र फलवाला कर्म उपदेश किया
 गया है जो तुमहमको और हमतुमको मारते हैं । २२ । हे भरतवंशी निश्चयही

touch with your foot the head of your brother who was the lord
 of eleven akshauhinis. Being deprived of brothers, ministers and
 army, Duryodhan has been slain in battle. He is worthy of being
 grieved at and not of mockery. He himself as well as his ministers
 brothers and sons are slain. You have acted unjustly. People
 say that Bhim is just, why then have you kicked his head? " Hav-
 ing said this to Bhim, Yudhishtir with eyes full of tears turned to
 Duryodhan and said, " You need not be grieved, brother. You should
 not feel sorrow for yourself, for it is the fruit of your own former
 misdeeds. It was a quite unholy deed that you and we have fought
 together. You have brought on this misery by your avarice, pride
 and folly. You have brought about the death of our brothes, friends

तप ॥ यद्वय त्वां जिघांसामस्तवस्वस्वस्मान् कुतस्तप ॥ २३ ॥ आत्मनो ह्यपराधेन महद्दयमनमीदृशम् । प्राप्तवानसि यत्कौभान्मदाद्वाक्याच्च भारत ॥ २४ ॥ प्रातयि-वा वयस्याश्च स्नातनयधितुस्तथा । पुत्रान् पौत्रास्तथा चाभ्यस्ततोसि निधन नत ॥ २५ ॥ तथापराधाद्दस्मानिस्नानरस्ने महारथाः । निहता स्नातवन्नाभ्ये दिष्ट मन्थे दुरत्ययम् । २६ ॥ नास्मान्शोकनीम् स्ते श्लाघ्यो मृत्युलवानसः । वयमेवाधुना शोथ्या सर्ववस्वस्तु कौरव । कृपण वसंविषयामस्तैर्होना व-धुभिः प्रिये ॥ २७ ॥ स्नातुनाभ्येव पुत्रान्वा नत्नपाशोकादिह्वला । कथं द्रुष्यामि विधवा वधु शोकपरिप्लुताः ॥ २८ ॥ स्वभक्तः प्रमथितो राजन् स्वर्गे त नितये ध्रुव । वय नाराकसिद्धा वै दुःख मोहवभ्र दारुणम् । २९ ॥ स्नुषाश्च प्रस्तुताश्चैव धृतराष्ट्रस्य विह्वलाः । गर्हविष्यन्ति नो नूने विधवाः शोककण्ठिनः ॥ ३० ॥ एवमुक्त्वा सुतु आसौ निशब्दात् स पार्थिवः । निललाप चिरञ्जवि धर्मपुत्रा युधिष्ठिर ॥ ३१ ॥

इति मदाद्दुर्बलेण धृतिगण्डरविनापि एकोनपठितमोऽध्यायः ६२ ॥



अपने अपराध मे उय प्रकार के बड़े दुःखको प्राप्त कियाई जोकि लोभ अदङ्कार और अज्ञानभसे प्राप्त हुआ है २४ । हमारे भाई मर्मानवय पिता पुत्रपौत्र आर अन्यश्लाघ्यो को मरनकर आपसी नाशहुआ । २५ । तेरेही अपराधमे तेरे सव भाई हमारे हाथसे मरिगये आर जातज्ञाने भी मारे इससे मैं प्रारब्धकोही कठिनता से पारहानेके योग्य मानता हूं । २६ । हे निष्पाप तेरा आत्मा शोकके योग्यनहीं है तेरी मृत्यु प्रसोता के योग्यहै परन्तु हे कौरव अब हम सव दशा मे शोकके योग्य हैं । २७ । उन माइयों मे रहित होकर हम दुःखमे अपना जीवन करिगे और भाई पुत्रादिकों के शोकमे व्याकुल होंगे । २८ । शोकमे पुण विधवा वधुओं को किस प्रकारमे देखंगा हे राजा तम अकेलेनसे निश्चय तुमको स्वर्गोगा हमलोग अर्वाश्य नरकगामी है और बड़े कठिन दुःखोंको पावेगे । २९ । धृतराष्ट्रके पुत्रपौत्रों की स्त्रिया व्याकुल शोकसे पीडित और विधवाहोकर हमारी निन्दाकरेगी । ३० । दुःखसे पीडावान वह धर्मका पुत्र राजा युधिष्ठिर इस प्रकार कहकर और आमी को लेकर अत्यन्त पीडावान हुआ ३१ ।

fathers, sons, grandsons, others and yourself. 25, All your brothers were slain by us by your own fault. I see that Fate is supreme. You are not worthy of regret innocent one, thy death is praiseworthy, but we are undone. Deprived of our cousins we shall pass our life in misery and shall mourn their death. How shall I be able to look at the widowed women. You alone have earned heaven, while we shall fall to hell and misery. The wives of the sons and grandsons of Dhritrashtra will blame us for their widowhood. Having said this Yudhishthira the just was much grieved and bewail long night. 31:

धृतराष्ट्र उवाच । भवमेण हत इन्द्रा राजान माघनोत्तम । किमप्रवीक्षदा स
 वलदेवो महाबल ॥ १ ॥ गदायुद्धविशेषो गदायुद्धविशेषः । वृत्तवाचीहिषया
 यत्समाचक्ष्व सञ्जय ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । ऊर्ध्वमिहत इन्द्रा भीमसेनते
 सुतम् । राम प्रहरता श्रेष्ठयुक्क्रोधबलवद्वली ॥ ३ ॥ ततो तस्ये नरन्द्रेणासूधंधावुहल
 युध । कुर्वन्निद्वर घोर धिगिधर्माणि युधात् ॥ ४ ॥ अहो शिष्यद्वो नामे प्रहृ
 तमविप्रह । नतदष्ट गदायुद्धे क्रतवान् यन्वृकोदर ॥ ५ ॥ अहो माध्या न ह-तम्यामिदि
 शास्त्रेण निश्चय । अय त्वशास्त्रविभूद्ध स्वच्छन्दान् समधर्त्तते ॥ ६ ॥ तस्य तस्य
 प्रवाणस्य तोय समभव-महात् । ततो लाङ्गलमुद्यम्य भीमभयद्रवद्वली ॥ ७ ॥ तस्यो
 ध्ववाहो सदश रूपमाली-महा मन । वधुनात्वावचिन्द्रस्य भवेत्स्येव महागिरे ॥ ८ ॥

अध्याय ६० ॥

धृतराष्ट्र बोले हे मां तुव माधवों में श्रेष्ठ वडे बलवान् वलदेवजी ने अर्धने
 पारद्वये राजाको देखकर क्या कहा । १ गदा युद्धमें कुशल माधव वलदेवजी ने
 जो किया वह सब मुझसे कहे । २ सजयगले कि प्रहारकत्ताओंमें श्रेष्ठ बलवान्
 वलदेवजी भीमसेनके चरणों स घातन आपक पुत्रको देखकर वडे क्रोधयुक्तद्वये
 । ३ । इसके पीछे राजाओं के पध्य में ऊची भुजा करनेवाले वलदेवजी पीड़ित
 शब्दोंमें यह वचन बोल कि हेभीमसेन विकारहे विकारहे विकार हे राजोयुद्धमें
 तैने नाभि के नीके धमके विरुद्ध प्रहारकिया यह गदायुद्ध में कभी नहीं देखाथा
 निमक। कि हे भीमसेन तुमन किया । ५ । नामे के नीचे प्रहारकरना अर्धमें हे
 यह शास्त्रको न जाननेवाला अज्ञान भीमसेन अपनी इच्छामे कर्म करत है । ६ ऐसे
 अनेक बातों को कहकर उन वलदेवजी का वडाक्रोध प्रकट हुआ इसकेपीछे वह
 महाबली अपने हलको उठाकर भीमसेनके सम्मुखगय । ७ । उस समय उस ऊची
 भुजा करनेवाले महात्माकारूप बहुत धातुयुक्त श्वेत पर्वतके समान हुआ । ८ ।
 तब नश्रनासे युक्त पराक्रमी केशवजीने वडे उपापकेद्वारा इष्ट तुष्ट लम्बी भुजाओं

CHAPTER LX

Dhritrashtra said, ' What did Baldev the best of Madhavas do on seeing that the prince was unjustly slain I say tell me all that he said and did ' Sanjaya said, " Baldev the best of warriors seeing that your son was killed by Bhim, was much enraged With upraised hands and voice choked with anger, he said, ' Fie on Bhim You have acted against rule in striking below the naval You have done an act which is never done by those who fight with the mace 5. It was unjust to do so He has acted wilfully ' Having said this, he showed his anger by rushing at Bhim to strike him with his weapon, and

तमुत्पतन्तं जग्राह केशवो विनयानतः । बाहूभ्यां पीनवृक्षाभ्यां प्रपत्नाहलवह्वली ॥ १० ॥
 सितसितौ यदुधरो शुश्रुमातेधिकं तदा । नभोगतौ यथा राजंश्चन्द्रसूर्यौ दिनक्षये
 ॥ १० ॥ उवाच चैनं संरक्ष्यं शमयन्निघ केशवः । आत्मवृद्धिमिभ्रवृद्धिमिभ्रमिभ्रोदय
 स्यात् । निपरीतं द्विपस्वधेतत् षड्विधा वृद्धिरात्मनः ॥ ११ ॥ अस्मन्मथि च मिभ्रो
 विपरीते यदा भवेत् । तदा विद्ध्यात्मनो ग्लानिमानु शान्तिकरो भवेत् ॥ १२ ॥
 अस्माकं सहज मित्रं पाण्डवः शुद्धपौरुषः । स्वकाः पितृस्वसुः पुत्रान्ते परैर्निहताश्च
 शम् ॥ १३ ॥ प्रतिज्ञापालनधर्मः क्षत्रियस्येति वेत्यथ । सुयोग्यस्य गदया मङ्गलास्वक
 महाहवे । इति पूर्व प्रतिज्ञातं भूमिने हि समातले ॥ १५ ॥ मैत्रेयेणामिशतश्च पूर्वमेव
 महाविषा । ऊरु भरस्पति ते भीमो गदधेति परत्तप ॥ १६ ॥ अतो द्योषं न पश्यामि मा
 कुघस्त्वं प्रलम्बहन् । योनौ सौ सुखहावर्धं सम्बन्धः सह पाण्डवैः ॥ १७ ॥ तेषां वृद्धयः

से उछलनेवासे बलदेवजीको बड़े बलसे पकड़ लिया । ९ । तब मृदुस्वभाववासोंमें
 श्रेष्ठ गौर और इषाम वर्ण वाले वह दानों महात्मा ऐसे अधिक शोभायमान हुए
 हेराजा जैसे कि दिनके अन्त में वर्तमान होनेवाले चन्द्रमा और सूर्य क्षोभित होते
 हैं । १० । केशवजी उन क्रोधयुक्त बलदेवजीको शान्त करके यह वचन बोले कि
 अपनी वृद्धि, शत्रुकानाश, अपने मित्रकी वृद्धि, शत्रुके मित्रका नाश और अपने
 मित्रके मित्रकी वृद्धि और शत्रुके मित्रके मित्रका नाश यह छ प्रकारकी अपनी
 वृद्धि है । ११ । जब अपने में और मित्रोंमें अन्तरहोगा तब चित्तग्लानिको पावेगा
 उससमय कोई अशुभ न होगा पवित्र वीरतावाले पांडव हमारे भाई और मित्र हैं
 अपनी फूफकी पुत्र हैं उनका शत्रुओं ने अनादर कियाया । १२ । हम इसलोकमें
 प्रतिज्ञाके पूर्ण करनेको क्षत्रीका धर्म जानते हैं पूर्व समय में भीमसेन ने समाके
 मध्य में प्रतिज्ञाकराथी कि मैं बड़े युद्धमें दुर्योधनकी जघाको अपनी गदा से तोड़ूंगा
 । १५ । हे शत्रुसंतापी पूर्व में मैत्रेय महावि ने इसको शाप दियाथा कि युद्धमें
 भीमसेन गदा से तेरी जघाओं को तोड़ेगा । १६ । इस कारणमें दोषको नहीं देखता हूँ
 हे बलदेवजी आप क्रोध न करो पांडवों से हमारी नातेदारी है और मित्रताभी है

in his rage looked like a white hill. Valiant Keshav seized him within
 his powerful arms. The two great men, black and white, looked like the
 sun and moon at evening. 10. Having pacified his brother, Krishna
 said, - Success lies in six things - success of self, fall of foe, friend's suc-
 cess, fall of friend's enemy, success of friend's friend and fall of enemy's fri-
 ends. One making a distinction between friends and self, comes to grief. The
 Pandavas are your friends and kinsmen; they were insulted by the enemy
 and a kshatriya likes to accomplish his vows. Bhim had made a vow
 to break Duryodhan's thigh. 15. He was formerly cursed by Maitreya
 to the effect that his thigh would be broken by Bhim. I see there-

हि नो हृदिर्मा कुचः पुत्रवर्षम । वामुदेवपचः धृत्वा सीरमृतं प्राह धर्मयित् ॥१८॥ धर्मः
 सचरितः सार्धः स च द्वाभ्यां निवच्छति । अर्थध्यानवर्षसुखस्य कामध्यातिप्रसङ्गिनः
 ॥१९॥ धर्मायो धर्मकामौ च कामायौ चाप्यपीडयन् । धर्मार्थकामान् योश्चेति सोऽत्यन्त
 सुखमश्नुते ॥ २० ॥ तदिदं व्याकुल सर्वं कृतं भर्मस्य पीडनात् । भीमसेनेन गोविन्द
 कामं त्वम्नु यथात्पमाम् ॥ २१ ॥ कृष्ण उवाच । अरोपणो हि धर्मात्मा स्वतनं धर्मयत्
 सतः । यवान् प्रस्थापते लोके तस्मात् संशाम्य माक्रुचः ॥ २२ ॥ प्रातः कल्पियुगं विदि
 प्रतिज्ञां पाण्डवस्य च । आनृण्य यानु धैरस्य प्रतिज्ञायाश्च पाण्डव ॥ २३ ॥ सप्रजय
 उवाच । धर्मच्छलमपि धृत्वा केशवात् स विशाम्यते । मैव प्रीतिमन-रा रामो वचनं
 प्राह संसदि ॥ २४ ॥ हृत्वा भोजेन राजानं धर्मात्मानं सुयोधनस्य । जिह्वयोधीति श्लोकं

। १७ । इन्डोंकीही दृष्टि से हमारी दृष्टि है हे पुरुषोत्तम क्रोध न करो धर्मज्ञ
 बलदेवजी ने वामुदेवजी के वचनको सुनकर कहा । १८ । कि छ'गुणों मे
 अच्छीरीति करके अभाग किगहुआ धर्मरहाई और दो गुणोंमे हानिको पाताहै
 वह दोगुण यह है कि बड़े लोभीका अर्थ और भाति प्रसगीकां काम । १९ ।
 जो पुरुष कामसे धर्म अर्थको अर्थ से धर्म कामको और धर्मसे काम अर्थको पीडा
 वान न करता धर्म अर्थ कामको प्राप्त होताहै वह बड़े सुखको पाता है । २० ।
 सो धर्मके पीडावान करने से भीमसेन ने यह सब व्याकुलतासे किया हे गोविन्द
 जी तुमने मुझसे अपनी इच्छानुसार कहा है धर्म के अनुसार नहीं कहा है । २१ ।
 श्रीकृष्ण जी बोले कि आप इस लोक में क्रोधरहित धर्मात्मा और सदैव धर्म
 वरसल विरूपानहो इस हेतुसे आप ज्ञान हृजिये क्रोध न करिये । २२ । अब
 आप कल्पियुगको वर्त्तमान हुआ जानिये और पाण्डवोंकी प्रतिज्ञा को समझो
 पाण्डवलोभ शत्रुता और प्रतिज्ञा की अमृणताको पाये । २३ । भंजयबोले
 हे राजा उन अपसन्नपन बलदेवजी ने केशवजी से इस छलसंपुक्त धर्मको भी
 सुनकर सबके समक्ष में इस वचन को कहा । २४ । कि पाण्डव भीमसेन धर्मात्मा

fore no fault. You should not be angry with the Pandavas who are our kinsmen and friends. Our greatness goes hand in hand with theirs." On hearing the words of Vasudev, he said, "Six virtues are the sign of Dharm. The two things deprecatory to it are excess of avarice and lust. He who practises dharm, arth and kam, without clashing them together, gets happiness. 20 Bhim forsook dharm in his confusion and joy and you also are saying this against the dictates." Shri Krishn said, "You are known through out the world as virtuous, without anger and friend to the virtuous. curb your anger and be pacified. Think of the kali age, the vow of the Pandavas and the end of

स्मिन् उपान यास्यति पाण्डवे ॥ २५ ॥ दुर्योधनोपि धर्मरत्ना गतिं यास्यति शशाङ्क
 ताम् । श्रुजयाभी हनो राजा धातराष्ट्रो नगाधिपः ॥ २६ ॥ युद्धशोभां प्रविश्याजौ रण
 यद्गतिं नरय च । हुवागानममित्राग्नीं प्राप चावभय यशः ॥ २७ ॥ इत्युक्त्वा रथमा
 ह । य रोहिणेयः प्रतापवान् । श्वनाध्रशिखराकाः प्रययौ द्वारकाप्रति ॥ २८ ॥ पात्वा
 लम्बु सवाण्यया पाण्डवाश्च विशासपते । रामे द्वारवर्ती यति नतिप्रमत्तोऽमवन्
 ॥ २९ ॥ ततो युधिष्ठिर दीन चिन्तापरमघोमुखम् । शंकोपहतमङ्गुल्य चासदेवात्रभी
 दिदम् ॥ ३० ॥ वासुदेव उवाच । धर्मराज् कितर्धे त्वमधमं मनुमन्प्रस । हतघ्नो यदे
 तस्य पतितस्य विचिंतसः ॥ ३१ ॥ दुर्योधनस्य भोगेन मृद्यमान शिरः पदाः उपे
 क्षति कस्मात्तु धर्मज्ञ सन्नराधिप ३२ ॥ युधिष्ठिर उवाच । न ममैतत् मियं कृष्ण
 यद्राजान वृकादृरः । पदा मूर्द्धन्यदपुत्र्यत् क्रोधात् न च हृष्ये कुलक्षये ॥ ३३ ॥ निकृत्वा
 राजादुर्योधन को अर्थ से मारकर इस लोक में अधर्मपुद्गल करनेवाला ममिद्ध होगा
 । २५ । धर्मात्मा दुर्योधन भी सनातन गति को पावेगा कपाकि सदा युद्ध करने
 वाला राजादुर्योधन मारा गया । २६ । युद्धदीक्षा को प्राप्त कर और युद्धभूमि में
 युद्धरूपी यज्ञही रचना करके अपनेको शत्रुही अभिनेता होकर शुभतीर्तिकरूपी
 यज्ञस्नान को करने पाया । २७ । श्वेतशिखर और सचूत वादल रूप बलदेव
 जा यह कहकर रथपर सवार होकर द्वारका को चले गये । २८ । हे राजा बलदेवजी
 के द्वारकाजानेपर पांडवोंसे मत गर पांचान अत्यन्त प्रमत्त नहीं हूये । २९ । इस
 के पीछे वासुदेवजी उन दुःखी शोचग्रस्त नीचाशिर करनेवाले शोक से हतमं कल्प
 युधिष्ठिरसे यह वचन बोले । ३० । कि हे धर्मराज तुम किम निमित्त अधर्म को
 स्वीकार करते हो हे राजा तुम धर्मज्ञ होकर जो इस मृतक भाईराजे अचेत गिरेहुये
 दुर्योधन के शिरो भीषेन के पैरोंसे मर्दन किया हुआ 'देखकर निषेध' नहीं
 करते हो इसका क्या हेतु है । ३१ । युधिष्ठिरशोके हे श्रीकृष्णजी यह मैं नहीं
 चाहता हूँ जो भीषेनने क्रोधसे माराके शिरको चरणोत्सृष्टा इस कुलके नाश में
 मैं प्रयत्न नहीं होता हूँ । ३३ । इसलोग धृतराष्ट्र के पुत्रों के छत्रों से उने गये इन

enemity." Sanjaya said that having heard the poetry of Shree Krishna
 Balder could not help remarking, " Having slain virtuous, Duryodhan
 unjustly, Bhim's name will be remembered with justice. Virtuous
 Duryodhan will attain the eternal regions because he fought justly
 and sacrificed his own body on the altar of war." Having said this,
 he mounted his car and went away to Dwarka. The Pandavas and
 Pañdhava were not happy after his departure. Then addressing Yud-
 hishthira who was pained in the sea of sorrow, Vasudeva said 20,
 " Why did you for all your virtue, allow Bhim to take the head of
 fallen Duryodhan? Why do you not strike him?" Yudhishtira,

निवृत्ता मित्य पत्नराष्ट्रसुतैर्धर्मयते । धर्मान् परयाण्युक्ता वने, प्रस्थापितास्म ह ॥ ३४ ॥
 भाग्यसन्तस्य तद्दुःखमतीव दुःखि पत्तं । इति सञ्चिन्त्य बाष्पैश्च मयैतत् समुपेक्षितम् ॥ ३५ ॥ नस्माद्धर्मा कृतप्रवृत्तं लुब्धं कामधनानुगम । लभता पाण्डव, कामं धर्मं धर्मिणि
 वा कृते ॥ ३६ ॥ सञ्जय उवाच । इत्युक्तं धर्मराजेन वामुदेधोत्रवीरिदिदम् । काममस्त्ये
 तादिति वै कृष्णानुबुक्लुलाह ॥ ३७ ॥ इत्युक्तो वामुदेधेन अभिप्रियद्वितीयिणा । अन्व
 मोदत तत्सर्वं यस्मिन् कृत युधि ॥ ३८ ॥ भीमसेनोपि एत्याजौ तत्र पुत्रमभरण ।
 अभिवासाप्रत, स्थित्वा सहृष्ट, म कृताञ्जलि ॥ ३९ ॥ प्रोवाच सुमहातेजा धर्मराजं
 युधिष्ठिरम् । तर्षाङ्कुल्लनपतो जिमकाशो विशाम्पते ॥ ४० ॥ तवाद्य पृथिवी राजन्
 क्षेमा निह्नकण्टका । तां प्रशाधि महाराज स्वधर्ममनुपालय ॥ ४१ ॥ यस्तु कर्त्तास्य
 पैरस्य निहृत्वा निहृतिप्रियः । सोयं वै निहत शोभ पृथिव्या पृथिवीपते ॥ ४२ ॥ वु श्वा

योगीने बड़े कठोर और अतृप्त वचन कहकर हम मंत्रको वनमें भेजाथा । ३४ ।
 वह कठिन दुःख भीमसेन के हृदय में वर्त्तमान है हे श्रीकृष्णजी मैंने यह विचार
 कर तरहदी है । ३५ । इमहेतुसे पांडव भीमसेन उस निवृद्धि लोभी और कामकी
 आधीनताम वर्त्तमान दुर्पोषण को । ररर धर्म वा अधम करके भी मयेजन को
 निद्ध करसक्ता है । ३६ । संजयबाले कि धर्मराज के इस प्रकार कहनेपर वामुदे
 जी इस वचन को दुःखसे बोले कि यह इच्छाकेनुमार होय । ३७ । भीमसेन का
 प्रिय और हित चाहनेवाल वामुदेवजी के इस प्रगर कहेंद्वये वचन को सुनकर
 धर्मराज ने उस सब अपराधको क्षमाकिया जोकि युद्धमें भीमसेन से क्रियागया
 था । ३८ । हेराजा युद्धभूमि में आपके पुत्रको मारकर क्रोध से रहित अत्यन्त प्रसन्न
 हाथ जोड़ेद्वये ममन्तता म प्रकाशितनेत्र विचयमे श्राभायमान महातेजसीभीमसेनसे
 भी दण्डवत्करके आगे नियतहोकर धर्मराज युधिष्ठिरमे कता । ४० । कि हे राजा
 अर निष्कण्टक और क्षेमकारी यद तत्र पृथ्वी गरी दे हे महाराज इमपरराज्यकमे
 ओर आने म्मा को पालनकरो ४१ । जो छर्ना उलसे ही इम शत्रुता का
 पालन करेनवाला था हे राजा वह मरानुआ इस पृथ्वीपर पड़ाहुमा सोताई । ४२ ।

had no hand in it nor am I pleased with this destruction of the family
 We were deceived by the sons of Dhritrashtra and they had sent us
 into exile with very harsh words. The dart of those wrongs rankled
 in the breast of Bhim and therefore I overlooked the matter. 37 He
 could slay foolish, avaricious and covetuous Duryodhan justly or
 unjustly. Having heard Yudhishtira's words, Vasudeva said in grief
 "Let it be as you say." Hearing the words of Vasudev the well-
 wisher of Bhim, Yudhishtira forgave his fault in breaking the rule
 of war. Thus pardoned, cheerful and with eyes dilated for joy,
 glorious Bhim respectfully said to Yudhishtira. 40. "The earth,
 without a thorn, belongs to thee, king, ruler over it justly. The deceit,

सनप्रभृतय स्वै ते चोमशदिन । राधेय. शकुनिश्चापि निहतास्तव शत्रवः ॥ ४३ ॥
 संथ रतनसमार्कीर्णा मही सपनपर्वता । उपावृत्ता महाराज त्वानय निहताद्विषमः ४४ ॥
 युधिष्ठिर उवाच । गोत्रैरस्य निघ्न हतो राजा सुपांघन । कृष्णस्य मतवादायाव
 विजितेय वसुन्धरा ॥ ४५ ॥ दिष्ट्या गतस्त्वमानुष्ये मातु कौपस्य चोदयोः ।
 दिष्ट्या जयसि दुर्ध्वीदृष्ट्याशत्रुनिपातितः ॥ ४६ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि बभ्रुदेवसन्त्वनार्यां पण्डितमोऽध्याय ॥ ६० ॥

पालन करेनेवालाया हे राजा वह-नराडुभा इस पृथ्वीपर पडाडुभा सोताहे । ४३ ।
 और तुमही कठोरवचन कहनेवाले आपके शत्रु कर्ण शकुनि और दुश्शासनादिक
 सब भाईभी मारेगये । ४१ । हे महाराज यह रत्नोंसेपूर्ण मृतक शत्रुवाली पृथ्वी
 वन पर्वता समेत सब आपको प्राप्तहुई । ४४ । युधिष्ठिरबोले कि राजामाग इमम्
 दुपांघनको अब शत्रुताका अन्तप्राप्तहुआ और श्रीकृष्णजीके विचारमें नियतहोकर
 हम सबलोगों ने इम पृथ्वीको विजय किया । ४५ । आपने मारव्यसे ही दोनों
 माताओं के क्रोधकी उच्छृण्णताको पाया हे अजेय आप मारव्यसेही विजय करतहो
 और मारव्यही से यहसब शत्रुमारेगये ४६ ॥

ful enemy lies dead on earth The enemies who spoke harsh words
 to you—Karan, Shakuni, Dushasan and his brothers—are all extirpa-
 ted. You are now the master of all this land together with her for-
 ests, hills and mines of jewels and your enemies are no more. "Yu-
 dhishthir replied, 'You have made an end of enmity by slaying Dur-
 yodhan, and we have conquered the land by the advice of Shri
 Krishna. The two mothers will no longer be angry. It is by good
 fortune alone that you have conquered and slain the enemies.' 46. '



धृतराष्ट्र उवाच । इत दुष्योधिं दृष्ट्वा भीमसेनेन सयुगे । पाण्डवा सुहृत्र्याश्चैव
 किमकुर्वत सञ्जय ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । इत दुष्योधिं भीमसेनेन सयुगे । सिंहे
 नेव महाराज मत्त वनगर्जं वधा ॥ २ ॥ प्रहृष्टमनसस्तत्र दृश्यं सह पाण्डवा । पाण्डवा
 सुहृत्र्याश्चैव निहते कुशमन्वने ॥ ३ ॥ माधिष्यन्सुरीय णि सिंहनादाश्च मेदिरे ।
 नैतान् हर्षसमाधिष्यन्ति सेहे वसुधरा ॥ ४ ॥ धनुष्यये व्याधिपस्त उवाचाप्यये
 व्याधिपत् । दधुरस्ये महाशलास्ये जघनुश्च दुन्दुभी ॥ ५ ॥ विक्रीडुश्च तथैवाप्ये
 जहसुश्च तथैव हिवा । अशुवभ्यासकृद्भीरा भीमसेनमिदं वच ॥ ६ ॥ पुष्कर भवता कर्म
 रजसु सुमहत् कृतम् । कौरवेन्द्र रण इत्था गद्यतिकृतभ्रमम् ॥ ७ ॥ इन्द्रेणैव हि
 वृषस्य वध परमसयुगे । तथा कृतममस्मत् शत्रोर्बन्धमिमं जना ॥ ७ ॥ अस्त विधि
 धाम्नाग्ं प्रहृष्टानि च सर्वश । दुष्योधिनामिं शूर कोऽप्यो हन्वाह कोदरात् । ० ।

अध्याय ॥ ११

धृतराष्ट्रकोहे हे सञ्जय युद्धमें भीमसेन के हाथसे मृतक देखकर पांडव और
 मृजियों ने क्या किया । १ । सञ्जय बोले हे महाराज जिनमकार सिंहके हाथसे
 परेहुये मतवाले जङ्गली हाथीको देखते हैं उभीमकार युद्धमें भीमसेन के हथ से
 दुष्योधिंको मराहुआ देखकर । २ । श्रीकृष्णजी समेत प्रभन्नचित पाण्डवपांवाल
 और मृजियों ने कौरवन्दन के मरनेपर । ३ । दुष्टों को घुमा घुमाकर सिंहन द
 किये परंतु पृथ्वीने इनममसतासे पूर्ण बरिंको तर्हीसका । ४ । किसी किसीने
 धनुषोंको टङ्कारा किमाने व्वाका शब्दायमान किया बहुतां ने बड़े शस्त्रोंको
 बजाया कितनोनें दुन्दुभियोंको बजाया । ५ । इसीमकार बहुतेरे क्रीडा करनेवाले
 हुये और आपके बहुत से शत्रु पसन्नमनुष्ये यद् सत्रीर वारम्बार भीमसेन से यह
 वचन बोले । ६ । कि अब युद्धमें तुमने कौरवराजको अपनागदासे मारकर बड़ा
 काठिन कर्मकिया । ७ । मनुष्यों ने आपक हाथसे युद्धमें उस शत्रुके मरनेका
 इमकार का माना जैसे कि इन्द्रके हाथसे वृत्रासुर का मरण हुआ था । ८ ।
 भीमसेन के सिवाय कौनसा मनुष्य उस उत्तमकार के मार्गों समत घुमने वाले

CHAPTER LXI

Dhritrashtra said, "What did the Pandavas and Sanjaya do at the fall of Duryodhan?" Sanjaya replied, "Saw Duryodhan slain by Bhim, like a mad elephant slain by a lion, the Pandavas and the Panchals, with Shri Krishna, roared for joy and fluttered their clothes their shouts rang through the air. Some twanged their bowstrings, while others sounded their conchs and drums. Many of your enemies played and were cheerful. They said again to Bhim, "You have done a famous deed in slaying the Kaurava prince with your mace, you have destroyed him as Indra did Vritrasura. Who else except Bhim could slay valiant Duryodhan? You

धैर्यं च गतः परं स्वामहात्म्यैः सुगुणैश्च । अशक्यमेतद्वन्द्येन संपदं विदुषीदृशयः ॥
 कुञ्जोपेक्ष मत्सेन वीर संप्राप्तमूर्धनि । दुर्योधनाशरो दिष्ट्वा पादेन मूर्ध्नि त्वय ॥ ११ ॥ सिद्धेन महिषेरे । कृता सङ्गरमङ्गलम् । पुशासनस्य कश्चिदं दिष्ट्वापादे
 वयानय ॥ १२ ॥ ये विप्रश्चक्रु राजान वमारेमान युधिष्ठिरम् । मूर्ध्नि तेषा कृतः पादो
 दिष्ट्वा ते स्तेन कर्मणा ॥ १३ ॥ अमित्र पाण्डिष्ठाताऽथ्यादुष्ट्योऽथनस्य च । अमि
 दिष्ट्वा पृथिव्याम्ने प्रथित सुमहद्यथाः ॥ १४ ॥ एवं नूनं हते वृत्रं शक्रं मन्वितं वैश्वं
 यथ रथा निहता मित्रं धव्यं नन्द्याग आरत ॥ १५ ॥ दुष्टघोषतक्षणे यत्नि रोमाणि हृदि
 तानि नः । अघातिप न हि हृत् । न्ति तानि महिषि आरत । इत्यत्र न् आभेनेन वसिष्ठेन
 सत्र सङ्गताः । १६ ॥ ताव हृष्टान् गुरुष्व्याग्रान् पाञ्चालान् पाण्डुरैः सह । इत्यनेन
 इतो तत्र प्रोवाच मधुसूदनः ॥ १७ ॥ न स्थ द्य निहतं शत्रुं मूषो ह्यपुं नराधिपः ।

शरैर दुर्योधनको मारसक्ता था । २ । तुमने यही शत्रुताके अन्तको पापा वष
 प्रायका कम दूमरों से बड़ी कठिनता से भी करने के योग्य न था । १० ॥ वही तुमने
 युद्धभूमि में प्रारम्भवे मतवालेदायी के समान दुर्योधन के शिरको अपने चरणों से
 मदनकिया हे निष्ठाप तुमने उनम युद्धकरके मारव्येही दुःशासन के रुधिर को
 पंसे पानकिया जो कि भेसेके रुधिरको सिद्ध पान करता हे । १२ । इन्हीं ने
 धर्मत्या राजा युधिष्ठिरका अपमान कियाथा उनके शिरपर तुमने अपने कर्मके
 द्वारा अपा चरण रखवा । १३ । हे भीमसेन मारव्यमर्शो तुम शत्रुप्राके ऊपर
 विराजमान हो भीम दुर्गोधनके मारने से तेरी बड़ी कीर्ति पृथ्वीपर हुई । १४ ।
 निश्चय करते ह्यथवाक मरनेपर वन्दीजनों ने जैसे इन्द्रको प्रसन्न कियाथा हे
 भरतवैशी उमीप्रकार हम सबभी निश्चयहोकर तुमको प्रसन्न करते हैं । १५ ।
 दुर्योधनके मरनेसे जो हमारे सोमहृदितदुये वर अथवा शरिरपर उठेहुये नहीं
 बैठनेहे हे भारतवैशी इरको मर्य सरवही गानो हमपकारसे भीमसेनकी प्रशंसाकरते
 ही ये वर स्थान पर वार्तिकजन इकट्ठहुये । १६ । पाण्डवों समेत एकही व.र्ता
 करनेवाले उन पुरुषोत्तम पांचालों को देवहर मधुसूदनजी वंसे १७ करआओ

have made an end of the assembly; no other man could do a deed like
 you. 10. You trampled down the head of Duryodhan who was like
 a mad elephant. You drank Duryodhan's blood as a lion does that of
 a buffalo. You put your brave foot on the heads of those who insulted
 Yudhishtira. You have conquered your foes by good luck and heroism
 and have become famous by slaying Duryodhan. We adore you as
 the birds do I do on slaying Vulture. Truly our hearts are glad
 for joy. 17. To insult fallen foes is unlawful. The fool was again and again
 hit by hero's words. He did not heed the advice of his foes. We should
 not wait before him. In spite of the repeated warnings of Vulture

असंख्यग्निरग्निभिर्निहतो ह्येष इन्द्रधीः । १८ । तर्द्धय हत पाणिर्नैव निराश्रय
 सुखः वाप रुहाञ्छ सहदा शम्भनातिगः १९ । बहुशा निद्रद्राण कृत्याङ्गयुरुञ्जये
 वाङ्मयङ्गवः वाच्यमानोऽपि विद्यमसन्न वक्षवान् ॥ २० ॥ तैः शोभ्याद्य मित्रवा शत्रु
 पृथक्वाचम । किपने नातितुम्भन वाग्भिः काष्ठमधर्मणा ॥ २१ ॥ रथेष्वारोहत भिष्य
 गच्छामो बभूव्याधवाः । दिग्भृदा इतोय पापाः समागत्यहातिवामध्वजः ॥ २२ ॥ इति
 भुःत्रा रथिभ्योप कृष्णादुदुयोधना नृपः । अमर्षवशमापन्न उद्वान्पुंठशाम्पने २३ ॥
 स्किप्येशोपेपिष्टः स दोः ॥ विपुत्र्य मेदिगाम । हर्षिं प्रमदुष्टो कृत्या वासुदेवस्यागत
 पव ॥ २४ ॥ अशोभतशरीरस्य रूपमासीन्नृपस्य तु । कुक्षस्याशीविगस्येव छिन्नपु
 क्तस्य भारत ॥ २५ ॥ प्राणान्तकर्णी य रा वदनामप्यौच तन् । दुर्गोचनो वासुदेव
 वाग्निदग्माभिराहयत् ॥ २६ ॥ कस्तदासस्य दापाद् न ते लज्जासयनेनैव । अथगण

मृगशत्रुहो क्रिः मारना नीतिके विपरीतहै यह निर्द्धो कठोर वचनोंमे वाग्भ्यार
 वापलुभा । १८ । पड पाणि इती हेतुमे मारागया जब कि इसने निर्द्धजे लोभो
 और पापियोंका साथी होकर गमचिन्तकों की आज्ञाओं के बिना कर्मोंको किया
 । १९ । इन वदु त्माे बहुधा निद्रु , द्रेणाचार्य, कृष्णाचार्य, भीष्मपितामह, मृजी
 और पाण्डवों के साथेना करनेपा की पिताके विभागको नहीं दिया । २० । यद्यपे
 यह नीचपुरुष मित्र अथवा शत्रुनी था तौभी इसका हायकरना योग्यनहीं है
 वचनों से घायन काष्ठके समान इसदुयोधनेसे हमारा क्या प्रयोजनहै । २१ । हे
 राज ओ शीत्र रथपर सवारहोजाओ अथ यहाँमे चलेंग यह पपात्या मंत्री भई
 और ज्ञातिशलों समेत मारव्य से ही मारागया । २२ । राजादुयोधन श्रीकृष्णजी
 मे ऐसे निन्दाके वचनोंको सुनकर और क्रोधके आधीन होके दे नों हाथोंमे पृथ्वी
 को आश्रितहोकर स्किगनाम अंगके महारे से बैठगया और अपनी हाट्टिकों और
 भ्रुकुटोंको टेढ़ीकरके वासुदेवजी के ऊपर फेंका । २५ । हे भरतवशी अर्द्धशरीर
 ऊंचा करनेवाल राजाक रूप दवेहुये क्रोधयुक्त विपैले सर्प के समानहुआ । २५ ।
 प्राणों के नाश करनेवाली महाघोर पीडाकोकुछ ध्यान नकरते उस दुयोधन ने
 कठोर वचनोंसे वासुदेवजी को अत्यन्त पीडावान किया । २६ । कि

Dronacharya, Kripacharya, Bhishm, Sanjayas and Pandavas, he 'did not give the latter their patrimony 20 But, whether friend or foe, he should not be laughed at now. What shall we gain by insulting him who is already like a block of wood? As we have slain him and his friends and allies, let us depart from this place.' Having heard the words of Krishna, Duryodhan rose upon his hands in anger and looked at him with angry eyes 24. With his body half raised high, he looked like a venomous snake trodden under foot. In regarding the agencies of death, he spoke harsh words to him, saying "Sin of

गदायुद्धे वदन् विनिर्वाणितः । ऊच भिष्मिनि भीमस्य स्मूर्तिं विदनाप्रवक्ष्यामि ॥ २८ ॥
 किञ्च धिक्वाते तस्मै यदुत्तमश्रेयिण्या ॥ २८ ॥ घातीवत्वा महीपाकानुत्तुयुञ्जान् सद्य
 अग्रः । जिह्वैरुपायैर्बहुभिर्न ते लज्जा न ते घृणा ॥ २९ ॥ महोपह्वानि शूराणां कुर्वाणः
 कर्तुं महत् । शिखागिह्न पुरस्कृत्य घातितस्ते गितामहः ॥ ३० ॥ अश्वत्थाम्नः सना
 मामं हत्वा नाम सुदुर्मते आचार्योऽप्यसित अस्त्र तत् किं न त्तिदिन मत्र ॥ ३१ ॥
 स ज्ञानेन नृपेनेन धृष्टद्युम्नेन चर्ष्यमान् । पारथमानम्बुषा ह्यसौ न जैनं त्वमधारवः
 ॥ ३२ ॥ अचार्ये पादद्वयप्रसव यस्वित्ता शक्तिमव च । घटोत्कचे श्वंसवत कस्तवचः
 पादकृतम् ॥ ३३ ॥ धिग्महस्तः प्रायगतस्तथा भूरिधवा बली । त्वया निरुद्धेन हतः
 श्रेष्ठेन महात्मना ॥ ३४ ॥ कुर्वाणस्त्रोलमं कर्म कर्णः पार्थजिगीषया । उषसनेनाश्वसे
 नस्य पत्रगोश्रमुत्स्य वै ॥ ३५ ॥ पुनश्च पतित अस्त्रे व्यसनासः पराजितः । पतितः
 हे केशजे दासके पुत्र तुष्टको निश्चय कर के इस से लज्जा नहीं जाती है
 जो ये गदायुद्ध में भीमसेन के हाथ से अघर्म से गिराया गया । २७ । अर्थात्
 मैंने यह स्मरण कराया कि इसकी जंघाओं को तोड़ो । २८ । सत्ययुद्ध से
 हजारों राजाओं को मरवा कर यह दृष्टको क्यों नहीं मतमाया जो अर्जुनको
 बनाया बहुत से विपत्ति ऊप कर्मों से तुष्टको न लज्जा है न हया है । २९ ।
 पतिदिन शूरोंके बड़े नाशके करनेवाले भीष्मपितामह को तुम ने शिखरी
 को भागे करके मराया । ३० । हे बुद्धी अदात्याया के सनाम हाथी को
 मारकर आचार्यजी को शस्त्रों से रहित किया गया वह मैंने नहीं जाना । ३१ ।
 वह पराक्रमी तेरेही कारण से इस निर्दयी धृष्टद्युम्न के हाथसे गिराया गया तुमने
 उसको देखकर निवेन नहीं किया । ३२ । पादच अर्जुन के मारनेवाली चारि हुई
 शक्तिको घटे लक के ऊपर फेंककर निष्फल किया तुम्हें अघिक पाप करने
 वाला कौन है । ३३ । इसी प्रकार हाथट्टाहुआ शरीर त्याग नेकर्मिय नियम करने
 वाला पराक्रमी भूरिधवा तेरीही आज्ञापाकर महात्मा सात्विक के हाथ से मारा
 गया । ३४ । अर्जुनके विजय करने की इच्छाने कर्ण उचम कर्म का करनेवाला

Kans' slave! you are certainly not ashamed for your share in my unjust fall by Bhim. Having caused the slaughter of thousands of warriors in the war, you did not say to me what you did to Arjun. You are not ashamed of your many wicked deeds. You caused the death of Bhishma by putting Shikhandi forward. You caused the acharya to give up arms by slaying an elephant of the name of Ashvathama. You did not prevent cruel Dhrishtadyumna from slaying him. The spear that should have slain Arjun was made futile, because you contrived to have it discharged on Ghatotkach. Who is more sinful than you? 33. Brave Bhurishrava, with broken arms, was slain by Satyaki through your instigation. Kans would have slain Arjun by the help of Ashvama the son of the prince of snakes

समरे कर्णश्चक्रवर्णोऽन्नतो नृणां च ॥ ३६ ॥ यदि नाञ्जलिः कर्णश्च भीष्मद्रोणौ च
 संगुणे । अन्तुना प्रतिपुत्रया न ते स्वर्गिजयो पुत्रम् ॥ ३७ ॥ स्वया पुनरमाद्यैश्च जिह्म
 मार्गेण पार्थिवः । स्वर्गमनुनिष्ठो वयस्त्वान्ने च घातताः ॥ ३८ ॥ वासुदेव उवाच
 ह्रीश्चमसि गन्धारे सन्न पुमुनवान्वचः । सगणः सपुत्रुर्नैव पापमार्गमनुष्ठितः
 ॥ ३९ ॥ तत्रैव दृष्टते वीरौ मीमांशोणौ निपतितौ । कर्मक्षान्तिवत् संगये तपशांतामुषसकः
 । ४० ॥ यावद्यमाना मया मुदोऽयमक्षं न दित्ससि । पाण्डवेश्यः स्वराज्यञ्च लोभा
 कउकुनिष्ठयात् ॥ ४१ ॥ यियं ते भीमसेनाय दत्तं सर्वं च पाण्डवाः । प्रदीपिता अतु
 यो मात्रा सह सुपुत्रे ॥ ४२ ॥ सजाया पाण्डसेनो च शिलघा घृने रजस्वला । तदेव
 तावदनुपात्मन् वषस्त्वं निरपन्नः ॥ ४३ ॥ अतस्तद्वचः धर्मज्ञः सौवलेनाक्षवेदिना ।

हुआ सर्पराज के पुत्र अशमेन के दुःख से और फिर रथके चक्के पृथ्वी में
 धसजाने की आपत्ति में फंसा हुआ पराजय किया अर्थात् मनुष्यों में श्रेष्ठ
 रथचक्के घुमजानेसे व्याकुल चित्त कर्ण युद्धमें गिरायागया ॥ ३६ ॥ जोमिनेद्रूपे द्रोणा
 चार्थ, भीष्म, कर्ण और मुक्त्ने भी सत्त्व २ युद्धकरते तो तुम्हारी विजय कभी
 नहीं होसक्यायी । ३७ । और तुम्ही निर्गुण और कुमार्गी के कारण से अपने
 धर्मपर आरुढ़ होनेवाले राजा लोग और बहुत से अन्य २ लोग वह सबभी मारे
 गये । ३८ । वासुदेवजी बोले हैं गान्धारी के पुत्र पापमार्ग में चलनेवाले तुम अपने
 भई पुत्र बान्धव और मित्रोंके समूहों समेत मारगये हो । ३९ । तेरेही दृष्टकर्मोंने
 शूरावीर भीष्म और द्रोणाचार्य गिरायेगये और तेरा साथी कर्म कर्षा कर्णभी
 युद्धमें मारागया । ४० । हे अज्ञानी तुमने लोभ और शकुनी के वचन के निष्प
 से मेरे बहुत कहनेपर भी पाण्डवों के बाप दादोंके राज्य के भगको नहीं
 दिया । ४१ । तुमने भीमसेन को विषादिया और माता समेत सब बावड़ोंको । ४२ ॥
 लालच युद्धमें भस्म किया और सभामें घूतके मध्य रजस्वलास्त्रा द्रौपदीको दुःखी
 किया हेकठोराचित्त उत्तीसमय तुम मारहालनेके योग्यये । ४३ । जब कि पत्नीध्या
 के छलके जाननेवाले शकुनी के द्वारा घूतकर्ममें अकुशल धर्मज्ञ पुषिष्ठिर को

but he was conquered when his car wheel stuck in mud. It was
 impossible for you to gain victory, over Drona, Bhishm, K'ran and too
 in fair way. You caused the death of so many kings and warriors."
 Vasudev said, "You and your kinsmen and friends have been slain by
 your evil policy. It was through your misdeeds that brave Drona
 and K'ran were slain like your accomplice K'ran, 40. You did not
 give the Pandavas their patrimony in spite of my repeated warnings
 on account of avarice and the ill advice of Shakuni. You poisoned
 Bhim and would have burnt the Pandavas, with their mother, in the
 house of lac. You insulted Draupadi in the court. You deserved

निकृष्या यत् पराजयस्तिस्माद्मि इतो रणे ॥ ४४ ॥ जयद्रथेन पापेन यत् कृष्णा वलं विना
 घने । यानेषु मृगपाशैश्च तृणविन्दोरथाश्रमम् ॥ ४५ ॥ अभिमन्युश्च पशाल एको द्रु
 मिगश्च । त्वद्दोषैर्निहतः पापस्तस्मादासि इतो रणे ॥ ४६ ॥ याः शक्याः प्याणि च स्माकं
 कृत्वातीति प्रमादसे । धेगुण्येन तव्वात्यर्थं सर्वं हि तदनुष्ठितम् ॥ ४७ ॥ वृहस्पतेकशमशो
 नाप्यश भृतः श्रवणा । वृक्षा नोपासिताः शैव इति वाक्यं न ते श्रमम् ॥ ४८ ॥ लोभेऽपि
 घलेन स्वं तृणया च घशीकृत । कृतघानस्य काप्याणि विपाकस्तेषु मुञ्चयताम् ॥ ४९ ॥
 दुर्योधन उवाच । गर्वितं विधिर्वदत भूः प्रशाभा ससागरा । मूर्खिरघतमिमिनि
 प्राणां कोऽनुस्वन्ततो मया ॥ ५० ॥ यद्विष्टं क्षत्रघ्नैः शूद्रैर्ममनपश्यताम् । तद्विष्टं
 निघ्नं प्राप्तं कोऽनुस्वन्ततो मया ॥ ५१ ॥ देवाहां मानुषा भोगाः प्राप्ता भसुलमा नृपैः
 वैश्वर्यैश्चोत्तमं प्राप्तं कोऽनुस्वन्ततो मया ॥ ५२ ॥ ससृहसानुजश्चैव स्वर्गं गता

उलसे विजय किया था इन सब कारणों से तू युद्धमें मारा गया है । ४४ । आखेटमें
 पाण्डवके जानेपर तृणविन्दुके आश्रमके सर्पाप वनमें द्रौपदी को पापी जयद्रथ ने
 जो दुः खोदिया और जो अकेला अभिमन्यु तेरे दोषोंसे युद्धमें द्रुतसे शू रों
 के हाथने मारा गया है पापी तू इन कारणों से युद्धमें मारा गया है । ४५ ।
 और हमारे कियेहुए जिन करनेके प्रयोग्य कर्मोंको करता है वह सब भी
 तेरेही वुरानारमे कियेगये हैं । ४७ । तुमने वृहस्पतिजी और शुक्रजीकी कित्वाकों
 नहींसुना वृद्धोंका सत्सङ्ग नहीं किया । ४८ । तुमने क्षेमकारक वचनों को नहीं सुना
 तुम ईर्ष्या और लोभके आधीनहये इन सब दृष्ट कर्मोंको जो तुमने किया है उस
 के फलको भोगो । ४९ । दुर्योधन ने कहा कि बेटोंको पत्रा विधि पूर्वक दानादिके
 सागरों मंत्र सत्र पृथीपर राज्य किया और शत्रुओं के मस्त्रोंपर निरत
 हुआ मुझने अधिक मफल शभकर्मों कौन है । ५० । अपने धर्मके देखनेवाले साधियों
 का जो हितकारी और मित्र है बहो भ्रम होने पाया है मुझने अधिक शुभकर्मों
 कौन है । ५१ । मैंने राजाओं से दुष्प्राप्य शीरके योग्य ममारी सुख पेशवोंको प्राप्त
 किया और उत्तम राज्यकाप या मुझने अधिक सृष्टीकौन है । ५२ । हे भविष्यत्संभ

death when, by the help of deceitful Shakuni, you created Yudhishtir
 who was a novice in gambling. You are justly slain in battle. 44.
 You are slain in battle for fault for the Jayadrath, who
 insulted Draupadi during his hunting expedition near the term tige
 of Trivindu, and for your share in securing by the help of many
 warriors the death of Abhimanyu who was alone. - The shortcomings
 ascribed to us were the result of your own wickedness. You disre-
 garded the advice of Vrishapati and Shukra and gave a deaf ear to the
 advice of old men. You did not hear salutary advice on account of
 avarice and you are reaping the fruit of your misdeeds." 49. Nar-
 yodhan said, "I have read the Vedas, given, in charity, full over
 E ith and set my foot at the head of enemies; who can be happier

हमस्वयम् । एवं विद्वत्पुत्राणां शोचन्तीं वृत्तियप्यथ ॥ ५३ ॥ सञ्जय उवाच । अभ्य-
 थ कथस्य निवने कुराजस्य धीमतः । अपतत् सुमहद्वैद्यं पुष्पाणां पुष्पगन्धिगन्धमा ॥ ५४ ॥
 अवाक्यन्त गन्धर्वा धिद्विप्र सुमनो हरम् । जगुश्च धरतो राज्ञो यथाः सम्बद्धमेव च
 ॥ ५५ ॥ सिस्रदाश्च मुमुक्षुर्वाचः साधु सावित्री पापिव । द्रवी च सुरमिर्वायु पुष्पगन्धो
 मृदु सुभ्र । वाराजस्य दिशः सर्वाभ्यो वैदूर्यसामिमम् ॥ ५६ ॥ अत्यङ्गुतिनि ते
 इष्ट ॥ वासुदेव पुरोगमाः । दुर्योधनस्य पूजन्तु इष्टथा मीनामुपागमन् ॥ ५७ ॥
 इतीध्याधर्मत अत्वा शोकाधीः । शुशुचुर्हित । भीष्म द्रोण तथा कर्ण भूरिध्रवसमेव च
 ॥ ५८ ॥ तास्तु वि-तापरात्र इष्टथा पावड्यान् वीनचेतसः । प्रोवाचेद् ध्वज कृष्णो
 मेघयुद्धमिनिहरन ॥ ५९ ॥ नैव शक्यतिशीघ्रास्त्रले च सर्वे महारथाः । श्रुजुयुद्धेन
 विभ्रंता इन्तु युष्मानिरादये ॥ ६० ॥ नैव शक्यं कदाचिज्जुहन्तु धर्मेण पापिव । ते

भैं अपने मित्रगर्भ और सब छेदे भाइयों समेत स्वर्गको आजगा तुम नष्ट संवत्प
 होकर अपना जीवन करोगे । ५३ । सञ्जयबोले कि उस वृद्धिमत् कौरवराजके
 इस वचन के ममाप्त होनेपर पवित्र सुगन्धत पुष्पों की बड़ी वर्षा हुई । ५४ । और
 गंधर्वोंने बड़े चित्तरोचक वाजोंका बजावा अप्सराओं ने राजाकी शुभकीर्ति
 सम्बन्धी गानोंको गाया । ५५ । और सिद्धोंने धन्य शब्द किया शीतल मन्द
 सुगन्धित वायुचर्छी सब आकाश दिशाओं समेत वैदूर्य मणिके रंगके समान शोभ य
 मान हुआ । ५६ । वासुदेवती नितमें मुद्रा दे वह सब पांडवादेक उन अपूर्वता
 और दुर्योधनकी पूजाकी देखकर छिज्जतहुये । ५७ । भीष्म द्रोणाचार्य कर्ण और
 भूरिध्रवा को अधर्म से माराहुआ सुनकर शोक से पीड़ित
 होकर उनवीरोने शोककिया । ५८ । बादल और पुन्दरी के समान शब्दबोले
 श्रीकृष्णजी उन पांडवोंको चिन्तायुक्त और दुःखीचिच देखकरयह वचन बोले ॥ ६० ॥
 कि बहुतशीघ्र अस्त्रचलनेवाला यह दुर्योधन औरतहमव पराक्रमी महारथा युद्धमें सत्य
 युद्धके द्वारा तुम्हारे हाथमे मारनेके योग्य नहीं थे । ६१ । यह राजा दुर्योधन

than I? What death can be better to a kshatriya than mine? I lived a
 a life of ease, difficult for other kings to obtain, and ruled a vast king-
 dom. My younger brothers and I will go to heaven, while you will
 lead a life of misery." Snyaya said that at the close of Duryodhan's
 speech there was a shower of holy and fragrant flowers, gandharvas
 beat musical instruments and aparas sang songs in praise of the
 Prince. 55 Sidhas said, "Well done, a cold and fragrant breeze
 blew and the sky shone like lapis lazuli. The Pandavas, headed by
 Vasudev, were ashamed at the wonderful respect shown to Duryo-
 dhan, and were full of sorrow to hear that Bhishma, Drona, Katan
 and Bhurisbrava were unjustly slain by them. Seeing the Panda

वा भीष्मभ्यां सर्वे महेश्वासा महारथाः ॥ ६२ ॥ मयानेकेष्वप्येस्तु मायायोगेन वास
 कुते । इनासं सर्वं पथाजौ भवतां हितमिच्छता ॥ ६३ ॥ यत्रि नैवं विंश जातु कुशुभो
 सिद्धा गहं रणं । कुतो वो विजयो मयः कुतो राज्यं कुतो धनम् ॥ ६४ ॥ तदि सर्वे
 महात्मानश्चत्वारोतिरथा भुवि । न शक्या धर्मतो हन्तुं लोकपालैरपि स्वधर्मम् ॥ ६५ ॥
 तथैवायं गदापाणिघातैराभूो गतकलमः । न शक्यो धर्मतो हन्तुं कानेनापीर दधिहता
 ॥ ६६ ॥ न च वो वृषि फलैश्च यदुषं चानितो रिपुः । मिथ्या बध्यास्तयोपायैर्वहयः शत्रु
 बोधिका ॥ ६७ ॥ पूर्वन्नुगतो मार्गो वैश्वरसुरघातिभिः । सङ्ग्रिह्याद्भुगतः पथ्याः स
 सर्वैरनुगम्यते ॥ ६८ ॥ कनकुरयाः स्म सायाहो निवासं रोचयामहे । साभ्यनागरथाः
 सर्वे विभ्रतानो नराधिपा ॥ ६९ ॥ चासुदेव बन्धः श्रुत्वा तदानीं पाण्डवैः सह । पांचाला

भयवा भीष्मादक पीर बडे धनुषधारी महारथी कभी धर्मसे कितीसे भी मारनेके
 योग्य न थे । ६२ । आपन्नोगोंके भले चाहनेवाले मैंने बहुतसे उपाय और माया योग्य
 के द्वारा रणभूमि में वह सब चारम्बार मारे । ६३ । जो मैं कदाचित् ऐभीहमाया
 को न करता वो तुम्हारी विजय और राज्य धन नहीं प्राप्तहोतेकि वह चारोंमहा
 रथा अतिरथी हम पृथ्वीपर साक्षात् लोकपालोंसेभी धर्मकेद्वारा मारनेके योग्य
 नथे । ६४ । इसी प्रकार यह गदा हाथमेंलिये अश्रमित दुर्बोधन दण्डधारी कालसे
 भी धर्मके द्वारा मारनेके योग्य तथा तुमको विचित्र है इस शत्रुके मारनेका कोई
 विचार नकरना चाहिये उभी प्रकार बहुतसे शत्रु उठके द्वारा आपसे मारने के
 योग्य हैं । ६५ । प्राचीन दृढयोग और असुओं के मारनेवाले देवना आदि सत्पुरुषों
 से चलाया हुआ मार्ग है इसी हेतुसे वह सबसे चलाया जाता है । ६६ । तात्पर्य
 यह है कि हम सायकाल के समय निवासस्थानों में निश्राम किया चाहते हैं हे
 राजालोगो हम सब घोड़े हाथी और रथोंसमेत निश्रामकरें । ६७ । तब अत्यन्त
 प्रसन्नचित्त पाण्डवों सहित पांचाल वासुदेवजी के वचन को सुनकर सिंहीं के

was in a dejected mood, Shri Krishna said in a voice of thunder, 60.

" You could not by fair means slay Duryodhan and his brave warriors.

Prince Duryodhan as well as Bhishma and other warriors could not be slain by fair means. I your well wisher, slew them in the war by various contrivances. You could not win the kingdom and wealth without my doing so. The four famous warriors were invulnerable even by lokpals in a fair way. 65. Similarly, Duryodhan, armed with mace and untired was unapproachable by the god of death himself. You should not be sorry for his death as well as the death of others whom you slew by unfair means. This is the way that gods, the slayers of usurs, have trodden before this, and others but follow their example. We as well as our beasts stand in need of rest for the night." The Panchala and the Paadavae roared like lions on hearing the words of Shri Krishna. The kings blew their conchs and Madhav

मशसंहृष्टा विनेदु- सिंहसद्यत् ॥ ७० ॥ तत्र प्रभापयन् जेलात् पाञ्चजन्यञ्च
माधवः । हृष्टा दुर्योधने दृष्ट्वा निहतं पुरुषव्रम ॥ ७१ ॥

इति महाभारते गदापर्वणि कृष्णपाण्डवसंवादे ऐकषट्ठितमोघ्यायः ७१ ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते पश्यु सर्वे निधासाय महीक्षितः । शंषान् प्रभापयन्तो
वे हृष्टा परिघवाहवः ॥ १ ॥ पाण्डवान् गच्छतश्चापि शिबिरं नो विशाम्पते । महेष्वा
सोम्वगात् पश्चात् युयुत्सः सात्यकिस्तथा ॥ २ ॥ धृष्टद्युम्न शिखण्डी च द्रौपदीयाञ्च
सर्धशः । सर्वे चान्ये महेष्वासाः प्रययु शिबिरायुत ॥ ३ ॥ ततस्ते प्रविशन् पार्थः
हृत्विहङ्गं हतेद्वरम् । दुर्योधनस्य शिबिरं रङ्गवगिसृते जने ॥ ४ ॥ गतोत्सवं पुरमिध
व्रतनागमिध व्रवम् । स्त्रीर्धर्षवरभुविष्ठ वृजामारयैरविष्टोम् ॥ ५ ॥ तत्रैतान् पट्युपाति
समूहो के समान गर्जे । ७० । हे पुरुषोत्तम इसके पीछे राजालोग सङ्घों को और
माधवभी पांचजन्य सङ्घोंको बजाते दुर्योधन को मृतक देखकर मत्सङ्घये ७१ ॥

अध्याय ६२

सञ्जय बोले इति इसके पीछे परिघके समान भुजारखनेवाले बड़े मत्सङ्घचित
सङ्घोंको बजातेहुये वह सब राजालोग विभ्राम करनेके निमित्तचले ॥ १ ॥ हेराजा
हमारे डेरेको जानेवाले पाँडवों के पीछे बड़े धनुषधारी युयुत्सु और सात्यकि
चले । २ । धृष्टद्युम्न शिखण्डी और द्रौपदीके संवेपुत्र आर अन्य २ सब धनुषधारी
अपने डेरेको गये । ३ । इसक पीछे मनुष्यों के भागजाने पर वह सब पाण्डव
दुर्योधनके उस डेरे में जो कि मकाश रहित और मृतक राजावाला था उम में
इसगीति से प्रवेशित हुये जैसे कि युद्धभूमि में प्रवेश करते हैं वह स्थान उत्सव
से रहित पुरके समान और जिसका नाग मारा गया उस हृदके मधुसूक्तपाप और
के बड़े समूहों से और वृद्ध मनुष्यों से पर्याप्त ।
Sanjaya conch, and all were pleased
sent forth a blarneyodhan. " 71.

CHAPTER LXII

Sanjaya said, " Then the great warriors proceeded to take rest for the night, blowing their conchs. Yuyutu and Satyaki followed them to our camp. Dhrishtadyumn, Shikhandi and the sons of Drupadi, with other warriors moved towards their own tents. Then the Pandavas entered the tent of Duryodhan, which was destitute of light and owner, as if entering a field of battle. They found the place like a gloomy city or like a lake destitute of its elephants. It was full of women and old officers. 5. Duryodhan's servants, in dirty rags,

पुत्रं पुत्र्योश्चनपुरं सुराः । कृताञ्जलिपुत्रा राजन् काश्यामलितान्धरा ॥ ६ ॥ शिविर्दं
सगन्धर्वाय कुरुराजस्य पाण्डवाः । अश्वेकमेहाराजं ग्येक्ष्यो रथसत्तमा ॥ ७ ॥ ततो
गाण्डीववज्रानमश्रयन्नाश्रुत केशवः । स्थितः प्रियदहिते नित्यमतीव भरतर्षभ ॥ ८ ॥ जव
रोपय गण्डैः वनशुच्यै च महैपुत्री । अथाहमजरोक्ष्यामि पञ्चाङ्गरतसत्तम ॥ ९ ॥ इत्य
श्चेकशशोर्ह स्वमेतत् श्रेयस्तवानय । तच्चाकरोत्तथा वीरः पाण्डुपुत्रो धनञ्जयः ॥ १० ॥
अथ पश्चात्ततः कृष्णो रश्मीनुत्सृज्य बाजिनाम् । अवारोहत मेघावी रथाद्गाण्डीव
जम्बवतः ॥ ११ ॥ तथावर्णितं भूतानामिदं चरे सुमहात्मनि । कपित्थद्वेषे दिव्यो वज्रो
गाण्डीवध्वजः ॥ १२ ॥ स द्रव्यो द्रोणकर्णोन्वा दिव्यैरस्त्रैर्महारायः । अनदीताग्निना
ह्लाशु प्रज्ज्वल मदीपते ॥ १३ ॥ सोपासङ्गः सरविमश्व सश्वः सयुवबन्धुरः । अस्मी
भूतोपाहूमा रथो गाण्डीवजम्बवतः ॥ १४ ॥ तथाभस्मभूतस्तु ह्यष्टवा पाण्डुसुता
प्रभो । समवर्तन् विस्मिता राजभर्तुनभेदमग्रधीत् ॥ १५ ॥ कृताञ्जलि सप्रणयं प्रणि
मलिन बल्लो के धारण करनेवाले दुर्धौधिन के लोगपरस्पर हाथ जोड़कर उनके
पास आकर वक्तमान हुये । ६ । हे महाराज रथियों में अश्व पाण्डवलों को कौरव
राज के डेको पाकर रथों से उतरे । ७ । हे भरतर्षभ इसके पीछे केशवजी जोकि
सर्वत्र पांडवों की शुभचिन्तकता में नियत थे गाण्डीव धनुषधारी से बोले । ८ ।
हे भरतर्षभ इन गाण्डीव धनुषकों और दोनों अक्षय नूछीरों उतारो पीछे से
पैयी उनहूँता । ९ । तुम आय उतरो हे निष्पाप इसमें मेरा कल्याण है वह मुन
कर उा वीर अर्जुन ने बोड़ी किया । १० । इसके अनंतर पूर्ण बुद्धिमान
शः कृष्णी य हों की बागडोरों को छोड़कर अर्जुन के रथसे उतरे । ११ । फिर सब
जोरों के ईश्वर परमात्मा के उत्तरे र अर्जुन की दिव्यध्वजा और हनुमान्नी
अ तर्दान होगये । १२ । हे महाराज कर्ण और द्रोणाचार्य के दिव्य अस्त्रों से
भस्माभूत वह महान रथभी शीघ्ररी विना अग्निके प्रज्वलित अग्निरूप होगया । १३ ।
पर गिरपेड़ी । म्भू. उपामङ्ग बागडोर घंटे और युगान्धुर समेत भस्म होकर पृथ्वी
होनेवाले उन अर्जुन के रथका दक्षदक्षिण पाण्डव जाग उस प्रकार से भस्म
प्रचन बोला । १५ । हाथ जोड़कर वही नम्रता से अर्जुनने कहा नरे अर्जुन यह

came to them in humble attitude. The Pandav warriors dismounted their cars at the tent of the Kaurav Prince. Vasudev, who was always a well wisher of the Pandavas, said to the wielder of Gandiv, "Remove Gandiv bow and the inexhaustible quivers from the car. Your good lies in your coming down first." Arjun did as he was directed to do. 10. Then with Shri Krishna, leaving the reins of the horses, came down from the car. At the coming down of the lord of all creatures Arjun's celestial banner with the ape disappeared, and hit by the celestial weapons of Karan and Dronacharya, the great car to, began to burn without a sting fire. Arjun's car, with its appar-

महाबाहो सर्वोत्थापतिस्विति प्रभो । २९ ॥ तथैवैवमुवाणस्य तथेतेवाहममुब्रुव । स
सव्यसाथी गतस्ते विजयो च जनेश्वर । ३० ॥ भ्रातृभिः सह राजेन्द्र शूरः सव्यपरा
क्रम । मुक्ती वीरक्षयात्स्मात् संप्राप्त्येव हर्षणात् ॥ ३१ ॥ एवमुक्तस्तु कृष्णेन धर्म
राजो युधिष्ठिरः । पृष्टुरीमा महाराज प्रयुधाच जनाईनम् ॥ ३२ ॥ युधिष्ठिर उवाच ।
प्रमुक्तं द्रोणकर्णाभ्या प्रहास्यमरिगहनं कस्तदव्य सदेव साक्षाद्विजयो पुरन्दरः
॥ ३३ ॥ भवतस्तु प्रसादेन संदातकृष्णा जिताः । महारणगतः पार्थो धन्व नासीत्
परामुखः ॥ ३४ ॥ तथैव च महाबाहो पर्यायैर्बहुमिमंषा । कर्मणामनुत्पन्नानं तेजसश्च
गतिशुभाम् ॥ ३५ ॥ उपप्लुष्ये महर्षिर्मे कृष्णो ह्येवापनामसीत् । यतो धर्मतः कृष्णो
यतः कृष्णस्ततो जयः । ३६ ॥ इत्येवमुक्ते ते वीराः शिविरं तत्र मारुत । प्रविश्य ताव
पद्यन्त कौपयन्तार्दिसव्यान् ॥ ३७ ॥ रजतं जातरूपञ्च मणीनय च मौक्तिकात् । सूच

के कहनेका मैंने अङ्गीकार किया था हे राजा वह सत्यपराक्रमी मेरा भाई शूर
अर्जुन भाइयों समेत विजयी और रक्षित वीरोंके नाशकारी रोमडर्षण करनेवाले
इन महावीर युद्धो निरुद्धथा । २७ । हे महाराज श्रीकृष्णजी के इस वचनको
सुनकर रोमर से हर्षित युधिष्ठिरने जनाईनजी को उत्तर दिया । २८ । कि हे
शत्रुओं के विजय करनेवाले द्रोणाचार्य और कर्णके छोड़ेहुये ब्रह्मास्त्रको आप के
सिवाय माझात् वज्रधारी इन्द्रभी सहने को योग्य नहीं । २९ । आपकीही कृपासे
संसप्तकों के समूह विजयीकिये जो उस बड़ेभारी युद्धमें अर्जुन कभी परासुख नहीं
हुमा । ३० । हे महाबाहु मभु इसीप्रकार मैंने अनेकप्रकार से कर्मोंके विस्तार को
और तेजकी गतिको जाना । ३१ । उपप्लुषी स्थानपर क्यास महर्षिने मुझकेकहाया
कि जिधर धर्महै उधरही श्रीकृष्णजी हैं और जिधर श्रीकृष्ण जी हैं उधरही विजय
है । ३२ । हे भरतवशी इसप्रकार कहने पर उन वीरोंने आप के डेरमें प्रवेश करके

Upaplavya you entered
and friend Arjun, and you must protect him. Here is your brother
I accepted the charge and Arjun, with all his brothers, has come
out safe and victorious from the dreadful war so destructive to war-
riors." 27. Having heard the words of Shri Krishna, Yudhishtir
replied, "Conquerer of foes! None, except you—even Indra the
wielder of vajra—could tear the Bhārmāstrāṅdi-charged by Karan
and Drona. The Saṅgāpāls (were overcome by your grace, and
Arjun (ever suffered defeat) throughout the great war. 3). I have
seen much of your greatness and glory. Vyas said to me at Upaplays
"Krishna goes hand in hand with dharma, and victory follows the
footsteps of Krishna." At this, they entered your tent and found heaps
of jewels and wealth—silver, gold, precious stones, strings of pearls

जायथ मुखायानि कम्बलान्यजिनानि च ॥ ३५ ॥ दासीवासमसंख्येयं राज्योपकरणानि च । ते शल्य धनमर्जयेत्यदोयं मत्तर्षम । उदक्रोशान महाभाना तस्मै विजितारयः ॥ ३५ ॥ ते तु वीराः समाश्रय्य वाहनान्येवमुद्युधम् ॥ अतिष्ठन्त मुहुर्लये पाण्डवा सात्यकिस्तथा ॥ ३६ ॥ अथाग्रधीन् महाराज वासुदेधो महायथाः । यस्याभिमङ्गला द्यौव वस्तव्यं शिबिराद्बहिः ३७ ॥ तथेत्युक्त्वा हि ते सर्वे पाण्डवा सात्यकिस्तथा । वासुदेवेन सहिता मंगलाद्यं च द्विधंयुः ॥ ३८ ॥ ते समासाद्य सरितं पुण्ड्रानमोघवतीं वृष । न्ववस्रथ तां रात्रिं पाण्डवा हर शश्रवः ॥ ३९ ॥ ततः संप्रपयामासुर्याद्वयं नागं साहययम् । स च प्राय उक्त्ववेनाशु वासुदेधः प्रतापवान् । दारुकं रथमारोप्य येन राजा शिबिकासुतः ॥ ४० ॥ तमूचः संप्रयास्यन्तं दैव्यसुग्रीववाहनम् । प्रयाश्वासा गाथारीं हतपुत्रां तपस्विनीम् ॥ ४१ ॥ अत्र प्रायात्पाण्डवैरुक्त्वस्तपुरं सारथताम्बरः । भास्व साद् ततः क्षिप्रं गाथारीं निहतात्मजाम् ॥ ४२ ॥

इति गदायुद्धपर्वणि कृष्णस्य हस्तिनापुरगमने द्विपद्योऽध्यायः ६२ ॥

बुशाले, मृगचर्म, आंख पापीदास और राज्य के बहुत से सामानों को पाया है भरतर्षम महाराज वह मदाभाग शशुर्भों के रिजगी आपके अंतर्गत बनने पाकर बड़े अक्षय्यार में पुकार । ३५ । वह वीरपाण्डव और सात्यकी सजायको छोड़ कर वासुदेव विश्वासित होकर डेरों निगतहुये । ३६ । हेमहाराज इसके पीछे बड़े बशस्त्रे वासुदेवजी बोले कि हम लोगों को नजलके निमित्त डेरोंसे बाहर निवाम करना चाहिये । ३७ । यह सुनकर वह पाण्डव और सात्यक उनकी आज्ञा को मानकर वासुदेवजी के साथ मङ्गल के लिये डेरोंसे बाहरगये । ३८ । हेराजा फिर वह सब पाण्डव और सात्यकी धर्मकी दृष्टिको हेरुप ओघवती नदीको पाकर वहीं उस रात्रिको बसे । ३९ । इसके पीछे यादव श्रीकृष्णजीको हस्तिनापुर भेजा तब मत्तापवान् वासुदेवजी श्रीग्रही तीव्रतासे दारुक के रथपरचैठकर वहाँ को चले जहाँ पर राजा धृतराष्ट्रये । ४० । उससमय पाण्डवजोग उस यात्रा करनेके मृतपुत्रा सुश्रीव नाम घोड़े रखनेवाले श्रीकृष्णजी से गाथारी नाम सप्तज्ञ ये हुये श्रीकृष्णजी उस पुरको गान्धारी की पुत्री और श्रीग्रही उस मृतपुत्रा गान्धारी को पाया ४२ ॥

ornaments, shawls, deer-skins, male and female slaves and other things. They cried out for joy at the sight of so much wealth. The brave Pandavas and Satyaki stayed in the tents without any fear. Then glorious Vasudev said, " Our safety lies in staying out of these tents. " The Pandavas with Satyaki, obeyed his orders and came out. They stayed for that night at the bank of the Oghwati. Then Vasudev was de-pioned to Hastinapur and he was taken to Dhritrastra on the car driven by Daruk. While ready to go on the car drawn by Shavya and Sugrova horses, the Pandaves said to him, " You must comfort Gandhari whose sons are slain " Thus dis-comforted by them, he went to the city and soon saw Gandhari whose name was dead. " 42. "

जनमेजय उवाच । किमर्थं राजशार्ङ्गल धर्मराजो युधिष्ठिरः । गान्धार्यां प्रेषयामास
 वासुदेव परन्तपम् ॥ १ ॥ यदा पूर्वं गतं कृष्ण शनार्थं कारिवान्प्रति । नच तं लब्ध
 चान् कामं ततो युद्धमभूद्विभ्रम् ॥ २ ॥ निहतैषु च योषेपु हने पृथ्योधने तदा ।
 पृथिव्या पाण्डवेयस्य नि सपत्ने कृते युधि ॥ ३ ॥ विदुत शिषेर शून्ने प्राप्तं यशसि
 फोत्तमे । किन्तु तत् कारणं ब्रह्मसूयेन कृणो गतं पुनः ॥ ४ ॥ मत्स्यै
 तत्कारणं ब्रह्मसूयं वैप्रतिभाति मे । यत्रागमदमेयात्मा स्वयमेव जगार्हन्
 ॥ ५ ॥ तत्सतो वै समावृक्ष्व सर्वमध्वर्युंसप्तम् । यच्चान्नं कारणं ब्रह्मन् कारयं
 स्यास्य विनिश्चये ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । त्वद्युक्तोयममुप्रदने यन्मापृच्छसि पायिष्व ।
 तत्सेहं सप्रवक्ष्यामि यथाबद्धरतर्पणम् ॥ ७ ॥ इतः पृथ्योधनं हृत्वा । अभिसेनेग संयुते

अध्याय ६१ ॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मर्षी मैं श्रेष्ठ धर्मराज युधिष्ठिरने किसहेतुसे शत्रुओं के
 विजयकरनेवाले वासुदेवजीको गान्धारीके पास भेजा । १ । जब मथम श्रीकृष्णजी
 सन्धिके निमित्त कौरवों के पास गये और अपने अभीष्टको नहीं पाया इसीकारण
 से यह महायुद्ध हुआ । २ । अब शूरवीरोंके मरने और राजा दुर्योधन के घायल
 होने और इस पृथ्वीपर पांडवों को रणभूमि में निश्चिन्तु करने । ३ । मनुष्यों के
 भागने डेरोंके खालीहाने और उत्तम शुभकीर्तिके प्राप्तहोगानेपर ऐसा कौनसा
 कारण है जिसके हेतुने श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरकोगये । ४ । हे बड़े ज्ञानी ब्राह्मण
 मुझको यह अल्पकारण नहीं मालूम होता है जब कि बड़े ज्ञानी श्रीकृष्णजी
 आपगये । ५ । हे अध्वर्यों मैं श्रेष्ठ इस सब वृत्तान्त को मूलसमेत बखान करो
 । ६ । वैशम्पायन बोले कि हे भरतवशी जो तूने मुझसे पूछा है यह प्रश्न तेरे
 पृथ्वीकेही योग्य है हे भरतर्पण मैंभी उसको यथार्थही कहताहूँ । ७ । हे राजा युद्ध
 में भूमिसिंहक बड़े शूरवीर धृतराष्ट्र के पुत्र दुर्योधन को

CHAPTER LXIII

Janmejaya said, "Why did Yudhishtir send Vasudev, the des-
 troyer of foes, to Gandhari? Shri Krishna's former mission to the
 Kauravas for peace was a failure, and the result was the great war.
 Why did he go again after the slaughter of so many warriors, the fall
 of Duryodhan, the annihilation of all the enemies of the Pandavas,
 the evacuation of tents by the rest and the attainment of great fame?
 I think the reason of his going there this time must be not a trifling
 one. Pray explain to me all this at length." Vaishampayan said,
 "The question that thou hast asked, is worth putting, and I shall
 tell it to you: seeing the brave son of Dhritrashtra unjustly hit by

युद्धस्य समये राजद्वारं राष्ट्रं महापल्लवम् ॥ ८ ॥ अन्यायेन इतं हृष्ट्वा गदायुद्धेन
 भारत । युधिष्ठिरं महाराजं महद्भयमया विशत ॥ ९ ॥ चिन्तयानं महाभारतं
 गान्धारीं तपसा तपसा युक्ता त्रैलोक्यमपि सा ददत् ॥
 १० ॥ तस्य चिन्तयमानस्य बुद्धिः समभवत्तदा । गान्धार्या क्रोधदीप्ता वा-
 पूर्वं प्रशमनं भवेत् ॥ ११ ॥ सा हि पुत्रवधं श्रुत्वा क्रुतमस्माभि रीदृशाम् । मानसेनाग्निना
 क्रुद्धा भस्मसात्रः कारिष्यति ॥ १२ ॥ एवं विचिन्त्य बहुधा मयशोकसमन्वितः । बासु-
 द्विभन्दि वाक् । धर्मगजोऽभयभाषत ॥ १३ ॥ तव प्रसादोऽपि न्द राज्यं निहतकंटकम् ।
 कथाप्य मनसापीदं प्राप्तमस्माभिरव्युत् ॥ १४ ॥ पूत्यक्ष मे महाबाहो संप्रामे क्रोध-
 पणे । विमहं सुमहान् प्राप्तस्त्वया यादवतन्वन ॥ १५ ॥ त्वया देव सुरे युद्धे बधार्थं मम

न्याय से विक्रुद्ध गदायुद्ध में मराहुआ देखकर युधिष्ठिरको बड़ा भय उत्पन्न हुआ
 । ८ । तपसे युक्त महाभाग गान्धारी से भयभीत और चिन्ताकरता हुआ
 भय से उद्बिग्नचित्त हुआ कि वह धीरतपस्वानी गान्धारी अपने कोपसे तीनों लोकों
 को भी भस्मकर सकती है । १० । इनहेतुने उम चिन्ताकरनेवाले युधिष्ठिरका
 विचार हुआ कि पथम क्रोधसे प्रज्वलित गान्धारी के क्रोधकी शान्ती करनी योग्य
 है । ११ । क्योंकि वह हमारे हाथने इस प्रकार अपने पुत्रका मरणतनकर क्रोध
 से पूर्ण अपने अग्निरूप मनसे इपको भस्मकरेगी । १२ । भय और शोक से
 युक्त धर्मराजने इस प्रकार की बहुतसी चिन्ता करके वासुदेवजी से यह वचन
 कहा । १३ । हे अविनाशी गोविन्दजी आपकी कृपासे यह भक्तपटक राज्य हमको
 प्राप्त हुआ जोकि मनसे भी महादुःखाप्य था । १४ । हेयादवनन्दन महाबाहु रोमहर्षण
 करनेवाले युद्ध में मैंने देखा है कि तुमने बड़े युद्धका प्राप्त किया । १५ । तुमने
 पूर्वसमय के देवाओंके युद्ध में असुरोंके मारनेके निमित्त देवताओंकी जिसप्रकार
 सहायताकी और देवताओंके शत्रुमारनेके निमित्त सहायता करी है और अपने रथवाणी
 श्रोकृष्णजी उभीप्रकार से

Yudhishtir's mace, Yudhishtir was in great fear at the thought that with
 her great atotic powers Gandhari could burn the three worlds in
 anger. 10 She thought of first allaying her anger so that she
 might not burn them down on hearing of the death of her son. Full
 of grief and tear, Yudhishtir said to Vasudev, " We have cleared
 our way to the throne by your grace and achieved a task difficult to
 be attained by others. I have seen your great prowess in the war.
 15 You have helped us as you did the gods in former days and have
 slain our foes as you did theirs, How could we cross the great ocean
 of war without your helping Arjun. You suffered for our sake the

रक्षियाम । यथा सहा पुरादक्ष हताश्राद्धिबुधधियः ॥ १६ ॥ रुह्य तथा महाबाहो दक्ष
 मरुमाकमच्युत । सारथ्येन च वर्ष्येयं भवताहि घृतावयम् ॥ १७ ॥ यदि न च भवे
 प्रायः कालगुणस्य महारणे । कथं शक्यो रणे जेतु भवद्वय वलाणिव ॥ १८ ॥ महाप्रहारा
 विपुला इरिषैश्च पि ताडनम् । शक्तिमिन्दिपालेश्च तोमरैः सुपरदक्षैः ॥ १९ ॥ अस्मत्
 कृतेस्त्वया कृष्ण बाधं सुपरुषा धृताः । शस्त्राणाञ्च निपाता वै वज्रस्पर्शोपमा रणे
 ॥ २० ॥ ते च ते सफला याता इते दुर्योधनेच्युत । तत्र नर्ये न यथा नश्येत् पुनः
 कृष्ण तथा कुव ॥ २१ ॥ सन्देह दोला प्राप्त नश्येत् कृष्ण जये सति । गान्धार्थ्याहि
 महाबाहो क्राध बुधस्य माधव ॥ २२ ॥ सा हि निर्यं महाभाग तपसो प्रण वार्षिता
 पुत्रपौत्रवधं धृत्वा धुव नः सम्पद्यति ॥ २३ ॥ तस्याः पुरादन धीर पूतवालं मत्
 मम ॥ २४ ॥ कथंता फोचताम्राक्षो पुत्रयत्नफरिताम् । वीक्षितुं पुरुषः रुक्मस्त्वा

करनेसे हमारी रक्षा करी । १७ । जो तुम दहे युद्धमें अर्जुन के स्वामी न होते तो
 इस सेनारूपी समुद्रको कैसे पार होकर विजय करते । १८ । हे श्रीकृष्णजी तुममें
 हमारे कारण से गदा, परिघ, शक्ति, भिन्दिपाल तोमर और फरसोंके बड़े प्रहार
 । १९ । कठोरवचन और युद्धमें वज्रदृष्टी के समान शस्त्रोंके गिरनेको भी सहा
 । २० । हे अधिनाशी दुर्योधन के मरनेपर आपके कठिन दुख सफलद्वय हे
 श्रीकृष्णजी अब जिस प्रकार से वह सब आप के उपकार नाश न होयें वही
 आपको करना उचित है । २१ । हे माधवजी विजयी होनेपर भी हमारा चिन्त
 संदेशों में हीटोले के सपान झूठता है हे महाबाहु आप गान्धारी के क्रोधको जानिये
 । २२ । वह महाभाग यशस्विनी सदैव बड़े तापों से बड़ी पीडवान है वह अपने
 पुत्र पौत्रादिकों के नाशको दृष्टकर अत्यन्त हयलेगोंको भस्म करेगी । २३ । हे धीर
 मेरे विचारमें उसका भस्मकरण सम्पन्न करने अनुत्तर है । २४ । हे पुरुषोत्तम आपके
 सिवाय कौन पुरुष उस क्रोधमें रक्तनेत्र और पुत्रोंके शोकसे पीडावान के देखने
 ॥ २५ ॥ हे शत्रुओं के विजय करनेवाले माधवजी क्रोधसे ज्वलितरूप
 गान्धारी के क्रोधक दूर करेगा या ॥ २५ ॥

गन्धारी स्वीकार है क्योंकि

strokes of various weapons whose touch was hard like that of vajra.
 20. All your labour has borne fruit at the death of Duryodhan.
 Now you must do something more so that your former kindness may
 not become useless. Our minds are in a state of suspense even after
 gaining victory, for you too, are yet ignorant of the rage of Gandhari.
 She is a powerful ascetic and may burn us down for the death of her
 sons and grandsons. To cool her anger should be our foremost care in
 my opinion. Who else, except you, can look at the red angry
 eyes of Gandhari least with the grief of her sons? 25. I request

मृने पुरुषात्तम ॥ २५ ॥ तत्र मे गमने प्राप्तं रोचते तव माधव । गान्धार्थ्याः क्रोधात् ।
 साधः प्रशमार्थं मरिन्दम । अर्थाह कर्त्ता विकर्त्ता च लोकानां प्रमथाप्ययः ॥ २७ ॥ हेतु
 कारणसंयुक्तैर्वाक्यैः कालं समीरितैः । क्षिप्रमेव महाप्राज्ञं गान्धारीं शमयिष्यति ॥ २८ ॥
 पितामहश्च भगवान् कृष्णस्तत्र भविष्यति । सर्वथा ते महाबाहो गान्धार्थ्याः क्रोचना
 शनम् । कर्त्तव्यं सात्वतां धेष्टं पाण्डवानां हितार्थिना ॥ २९ ॥ धर्मराजस्य वचनं
 श्रुत्वा यदुकुलोद्भवः । आमन्वय दासकं प्राह रथः सज्जो विधीयताम् ॥ ३० ॥ केशवस्य
 वचनं श्रुत्वा त्वरमाणोऽयं दासकः । स्ववेद्यद्रयं सज्जं केशवाय महात्मने ॥ ३१ ॥
 तं रथं यादवधेष्टः समारुह्य परुत्तपः जगाम हस्तिनपुरं त्वरितः केशवो विभुः ॥ ३२ ॥
 ततः प्रायान्महाराज माधवो भगवाप्रथी । नागसाहचर्यमासाद्य प्रविवेश च धीर्यवान्
 ॥ ३३ ॥ प्रविश्य नगरीं धीरो रथोत्थेन नादयत् । विदितो धृतराष्ट्रस्य सोवतीस्य
 रथोत्तमात् ॥ ३४ ॥ कश्यपश्च ददौ नामा घृतराष्ट्रनिवेशनम् ॥ ३५ ॥ पूर्वोऽद्याभिगतं

तुम्हीं सबमृष्टि के कर्त्ता नाशकर्त्ता और उत्पत्ति के हेतुरूपहोकर भविनाशीहो । २७
 हे महाबाहु तुमकार्यकारण से युक्त समयके अनुसार वचनों से शीघ्रही गान्धारीको
 शान्तकरोगे । २८ । वहाँ हमारे पितामह भगवान् व्यासजीभीहोंगे हे यादवेन्द्र
 पांडवों के हितकी बात तुमको करनी योग्य है यादवेन्द्रजोने धर्मराजके वचनको
 सुनकर दासकको बुलाकर कहा कि रथ तैयारकरो । ३० । इसके पछि केशव^{वत्स}
 के वचनको सुनकर शीघ्रता करनेवाले दासकने रथको तैयार करके महात्मा के^{हवों}
 जीके पास वर्त्तमान किया । ३१ । फिर यादवेन्द्र शशुसंतापी केशवजी उसरथ^{रथ}
 सवारहोकर शीघ्रही हस्तिनापुरकोगये । ३२ । और बड़े पराक्रमी और साहसी^{के}
 श्रीकृष्णजी हस्तिनापुरमें पहुँचे और रथकेशब्दों से शब्दको उत्पन्नकर वह वीर
 श्रीकृष्णजी नगर में प्रवेश करके धृतराष्ट्रके जानेहुये उत्तम रथसे उतरकर धृतराष्ट्र
 के महल में पहुँचे । ३५ । उन जनार्दन केशवजीने वहाँ पूर्वसे गयेहुये और बैठेहुये
 ऋषियों में धेष्ट व्यास महर्षिजी को देखा व्यासजीके और राजाके भी चरण

you to go there to appease Gandhar's anger; for you are the creator
 and destroyer of the world. You are the indestructible cause of
 creation. You will soon appease her anger by your argument. You
 will find our grandfather Vyas there and may do what is proper.
 On hearing the words of Yudhishthir, the lord of the Yadavas order-
 ed Daruk to make his car ready. Daruk prepared the car and inform-
 ed Keshav that it was ready. He mounted it and hastened to
 Hasthinapur. He soon reached there, making a noise with the ramb-
 ling of his wheels as he entered the city. Then he came down from
 the car and entered the palace of Dhritrashtra. There he saw Vyas
 the best of maharshis already come there. Keshav touched the feet

तत्र सौपश्यदपिसत्तमम् । पादौ प्रपीड्य कृष्णस्य राज्ञश्चापि जनार्दनः ॥ ३६ ॥ अथ
 पादयंदशपद्मो गान्धारीश्चापि केशवः । ततस्तु पादवधेष्टो धृतराष्ट्रमधोस्रजः ॥ ३७ ॥
 पाणिमालम्य राजेन्द्र सुशर्ष प्रकरोदह । स मुहुर्त्तदिव्योत्सृज्य वास्यं शोकसमुज्ज्वलम्
 ॥ ३८ ॥ प्रक्षाल्य धारिणा नेत्रे श्यामस्य च यथावधि । उवाच प्रवृत्तं वाक्यं धृतराष्ट्र
 मरिन्दमः ॥ ३९ ॥ त तेऽस्यविदितं किञ्चिद्भूतमव्यस्य भारत । कालस्य च यथानुत्तं
 तच्छे सुविदितं प्रभो ॥ ४० ॥ पतितं पाण्डवैः सर्वेभ्यः चिन्तानुरोधिमिः । कथं
 कुलक्षयो न स्वात्तथा क्षत्रस्य भारत ॥ ४१ ॥ स्नातुभिः समं कृत्वा क्षान्तवान् धर्म
 धरसलः । घ्नच्छलजितैः शुद्धैर्धनवासोऽप्यु पागतः ॥ ४२ ॥ भ्रातृवाससत्तर्षा च नांता
 प्रेक्षसनाश्रुतः । अथे च बहवः क्लेशस्त्वशक्तैरिय नित्यदा ॥ ४३ ॥ मयाच स्वयमा
 गम्य युद्धकाल उपस्थिते । सर्वलोकाश्च साविष्ये ग्रामास्त्रं पञ्च याचितः ॥ ४४ ॥
 स्वया कालोपसृष्टेन लोभतो न परजिताः । त्वापरावाप्रपते सर्वे क्षत्रं क्षत्रं गतम्

को स्पष्ट करके । ३६ । सावधान केशवजी ने गान्धारीको भी दूदहनतुकी हेराना
 इतके पीछे पादनेन्द्र भीकृष्णजी । ३७ । धृतराष्ट्र को हाथसे पकड़कर बड़े शब्द
 से रोदन करनेलगे और एक मुहुर्त्त तक शोकजनित अश्रुपातों को कर के । ३८
 १ । जैसे दोनों नेत्रोंको पोंकर विधिपूर्वक आचमन करके समय के अनुसार धृतराष्ट्र
 १० । त्वन कहा । ३९ । किं हे भरतवंशी तीनोंकाल के घृत्तान्तों को आप अच्छी
 १० । त्वन से जानतेही समयका जैसा जो कुछ हस्तान्तर्है वहु सब आपको विदितहै
 को ४० । हे भरतवंशी तरे चित्तके समान कर्मकर्त्ता सब पाण्डवों से जो यह कुलका
 औरसब प्रियों का नाशहुआ वह कैसे न होय अपश्यही होना उचित था क्योंकि
 धर्मवत्सल युधिष्ठिरने प्रतिज्ञा करके क्षमाकी और छलदूत से पराजित परिव्राता
 पांडवों को वनवास हुआ । ४२ । उन लोगोंने नानावेपों को धारण करके भ्रातृ
 वाधर्षा आदिच घनेक प्रकारके क्लेशोंको असमर्थों के समान पाया । ४३ । मैंने
 आपयुद्धके प्रवृत्त होनेके समय आपके पास आकर मनलोगोंके समक्षमें पाँचगोथ
 तुमसे मांगे । ४४ । परन्तु कालसे मेरित होकर तुमने लोभसे अपने पुत्रों को

of Vyasa, Dhritrashtra and Gandhari. Then holding the blind king by the hand, he wopt loud. Having wept for some time, he washed his eyes with water and having sipped water, said to Dhritrashtra, " You know well of the three divisions of time, 40. The great destruction of the warriors by the Pandavas was inevitable. Yudhishthir overlooked the wrongs and yet he was cheated at dice and sent into exile. They assumed various disguises and suffered much to live unknown. I myself came to you on the eve of battle and begged of you to give them five villages, but urged by Fate and avarice, you

॥ ४५ ॥ भीष्मेण सोमदत्तेन वाह्लीकेन द्रुपेण च । द्रोणेन च सपत्रेण विदुरेण च
 श्रीमता । याचितस्त्वं शमं नित्यं न च तत् कृतवानसि ॥ ४५ ॥ कालोपहतचित्तो हि
 सर्वो मुह्यति भारत । यथा मूढो भवान् पूर्वमस्मिन्नर्थे समुद्यत ॥ ४७ ॥ किमन्यत्
 कालयोगाद्भि विष्टमेव परायणम् । माच दोषान्महाप्राज्ञ पाण्डवेषु निवेशय ॥ ४८ ॥
 ब्रह्मोप्यनिक्रमो नास्ति पाण्डवानां महात्मनाम् । धर्मतो न्यायतश्चैव स्नेहतश्च पर
 तप ॥ ४९ ॥ पतत्र सर्वेन्तु विश्वाय ह्यात्मदोशकृते फलम् । अस्यां पाण्डुपुत्रेषु न भवान्
 कर्षुमर्हति ॥ ५० ॥ कुल वंशश्च पिण्डश्च यच्च पुत्रकृते फलम् । आन्धाभ्यांस्तव वैषाद्य
 पाण्डवेषु प्रतिष्ठितम् ॥ ५१ ॥ दग्धवैद्य कुरुशार्ङ्ग गांधारी च यशस्विनी । मा शुचो
 नरशार्ङ्ग पाण्डवाश्च प्रति किञ्चिदपि ॥ ५२ ॥ एतत् संप्रमनुजात्या आत्मनश्च व्यति
 क्रमम् । शिवेन पाण्डवाश्च ध्याह्वय नमस्ते भरतर्षभ ॥ ५३ ॥ ज्ञानसि च महाबाहो

निषेध नहीं किया हे राजा आपके अपराध से सब क्षत्रियों को समझों का नाश हुआ
 । ४५ । भीष्म, सोमदत्त, वाह्लीक, कृपाचार्य पुत्रसमेत, द्रोणाचार्य और बुद्धिमान
 विदुरजी ने सन्धिके निमित्त आपसे वारम्बार प्रार्थना करी परन्तु तुमने उनमें से
 किसीके भी वचनको नहीं किया । ४६ । हे भरतवंशी काल से घायल चित्त सब
 मनुष्य ऐसे अचेत होजाते हैं जैसे कि पूर्वमय में इस प्रयोजनके वर्चमान होनेपर
 आप अज्ञानहुये । ४७ । कालयोग से दूसरी वयावात है निश्चय प्राग्बन्धी सबसे
 मजलहै हे वडेज्ञानी आप पाण्डवों में दोषोंको न लगाओ । ४८ । महात्मा पाण्डवों
 में थोड़ीसी भी अमर्यादा नहीं है हे शत्रुसंतपी आप अपनेही अपराधसे उत्पन्न
 होनेवाली इन सब बातोंको जानकर धर्मन्याय और प्रीति से । ४९ । पाण्डवों के
 गुणोंमें दोष लगानेकेयोग्य नहीं हो । ५० । कुल वंश पिण्ड और जो पुत्रहोनेका
 धर्मफलहै वह सब आपकाऔर गांधारीका पाण्डवों में निषत है । ५१ । हे कौरव्य
 नरोत्तम आप और यशस्विनी गांधारी पाण्डवोंके अपराधों को मतविचारो । ५२ ।
 अपनी ही इससब अमर्यादगी को ध्यानकरके अपने कल्याण वचनोंसे पाण्डवोंकी
 रक्षा करो हे भरतर्षभ आपको नमस्कार है । ५३ । हे महाबाहु प्रीति और स्वभाबसे

did not put down your sons and the destruction of all the great warri
 ors was the result. 45. Bhishm, Somdat, Vahlik, Kripacharya, Drona
 and his son, and wise Vidur repeatedly asked you to contract peace,
 but you did not mind them. People become insensible like you by the
 vicissitude of Time. Surely Time and Fate are very powerful. You
 need not find fault with the Pandavas, wise Prince. They never acted
 against law. You must think of your own faults and justice and love
 before finding fault with them. 50. They are of your own blood
 and are dutiful sons to you and Gandhari. You and glorious Gandhari
 should overlook their faults. Thinking of your own transgressions,

धर्मराजस्य या स्वयि । मक्तिर्भरतशार्दूल स्नेहश्चापि स्वभावतः ॥ ५४ ॥ एतच्च कर्त्तुं
 कृत्वा शत्रूणामुपकारिणाम् । दृष्टते स विद्यारात्रौ न च समोऽपि गच्छति
 ॥ ५५ ॥ त्वाञ्चैव न शार्दूल गान्धारीञ्च यशस्विनीम् । स शोचन्
 न शार्दूलो न शान्तिमधिगच्छति ॥ ५६ ॥ द्विया परमया विष्टो भवन्ते नाधिगच्छति
 पुत्रशोकमिसन्तप्तं बुद्धिव्याकुलितेन्द्रियम् ॥ ५७ ॥ एवमुक्त्वा महाराज धृतराष्ट्रं
 यदुत्तमः । उवाच । परमं वाक्यं गान्धारीं शोककरीयताम् ॥ ५८ ॥ सोऽलंघ्य विषोऽद्य
 रत्नं यस्त्वां वक्ष्यामि सुश्रुते । त्वत्समा नास्ति लोकोऽस्मिन्नद्य सीमन्तिनो शुभे ॥ ५९ ॥
 जानासि च यथा रात्रि सभायां मम सन्निधौ । धर्मोऽसहितं वाक्यमुभयोः पक्षयोर्हि
 त्प ॥ ६० ॥ उक्तवत्यसि कल्याणि न च ते तनयैः कृतम् ॥ ६१ ॥ दुःखोऽधनस्त्वया चोक्तो
 जयायोः परुषं वचः । शृणु मूढ वचोऽपहा पतो धर्मस्ततो जयः ॥ ६२ ॥ तद्विदं समजुप्राप्तं

धर्मराजकी जो आपमें भक्ति है उसको आप जानतेहो । ५४ । वह युधिष्ठिर अवज्ञा
 करनेवाले क्षत्रियोंका नाशकरके अहर्निश जलताह और कल्याणको नहीं पाता है
 । ५५ । हे नरोत्तम वह पुरुषोत्तम तुमको और यशस्विनी गान्धारीको शोचताहूँशा
 शान्तिको नहीं पाता है । ५६ । और बड़ी लज्जामेयुक्त वह युधिष्ठिर तुम्हारेपास
 भी नहीं आताहै जोकि पुत्रशोक से दुःखी व्याकुलबुद्धि और इन्द्रियभालेहो
 । ५७ । हे महाराज इस प्रकारसे श्रीकृष्णजी राजा धृतराष्ट्र से कहकर शोक से
 महापीड़ित गान्धारी से यह वचन बोले । ५८ । कि हे मौवलकी पुत्री जोभव मेंतुम
 से कहूँ उसको सुनकर चित्तसे समझो हे श्रेष्ठ भव इसलोक में तेरे समान कोई
 स्त्री नहीं है । ५९ । हे रानी मैं जानताहूँ जैसे कि सभाके मध्य मेरेसमक्ष में तुमने
 धर्मार्थ से युक्त दोनों ओरका हितकारी वचन कहाथा हे कल्याणी तेरे पुत्रोंने
 उसको नहीं किया । ६१ । औरतुमने दुर्षोधन से भी यह कठोरवचन कहे कि हे
 अज्ञानी मेरे वचनको सुन जिधर धर्म है वधरही विजयहै । ६२ । सो हे राजपुत्री

you should protect them by your good words; I bow to you. You know the love and devotion of Yudhishtir towards you. Having destroyed the Kshatryas, he does not find rest night and day. He is always sorrowful for your sake and that of Gandhari. He does not come to you for shame, for you are distressed with the grief of your sons." Having said this to Dhritrashtra, Krishna turned towards Gandhari, who was in great grief, and said, "Hear my words, daughter of Saval, and ponder them well. I remember how you gave salutary advice to your sons, but they did not hear you. 61. You said to Duryodhan those harsh words, "Hear me fool: victory accompanies dharm." Your words have come out true and therefore you should

तव वाक्यं नृपारमजे । एवं विदित्वाकल्याणि मारमशोकं मनः कृथाः ॥ १३ ॥
 पाण्डवानां विनाशाय मा ते बुद्धि कदाचन । राज्ञा चासि महाभागे पृथिवीं सचरा
 चरम् । चक्षुसा क्रोधदीप्तेन निर्दग्धुं तपसो यत्नात् ॥ १४ ॥ वासुदेववचः श्रुत्वा गांधा-
 रिवाक्यमब्रवीत् । एवमंतमहाबाहो यथा वदसि केशव ॥ १५ ॥ माधिमदंष्ट्रामानाया
 मतिः सञ्चलिता मम । सा मे व्यवस्थिता श्रुत्वा तव वाक्यं जनार्दन ॥ १६ ॥ राज्ञ
 स्वधस्य वृद्धस्य हतपुत्रस्य केशव । त्वं गतिः साहतेर्भीतिः पाण्डवैर्द्विपदांबर ॥ १७ ॥
 एनाथदुःखधा बन्धनं गुणं प्रच्छाद्य वाससा । पुत्रशोकानि सन्तप्ता गान्धारी प्ररुोदह
 ॥ १८ ॥ तत् एतां महाबाहुः केशवः शोककार्यताम् । हेतुकारणसंयुक्तैर्वाक्यैराश्वत्थामस्य
 प्रभुः ॥ १९ ॥ समाश्रित्यैव गांधारी धृतराष्ट्रं माधवः । द्रोणिसङ्कुलितं जवमनु
 बुध्यत केशवः ॥ २० ॥ ततस्त्वरितं उवाच पादौ मूर्ध्नां प्रणम्य च । द्वेषाय

वह तेरा कहाहुआ वचन वर्त्तमानहुआ है कल्याणी इस प्रकारमे जानकर शोकमें
 चित्त पतकरो । १३ । पाण्डवों के नाशके लिये तेरी बुद्धि कभी मतहोव हेमहाभाग
 तुम क्रोधसे ज्वलित नेत्रोंकी आग्नि और तपके बलसे इस सब जड़ चीतनों समेत
 पृथ्वीको मस्य करनेके समर्थ हो । १४ । गान्धारी वासुदेवजी के वचनको सुनकर
 बोली कि हे महाबाहु केशवजी वह ऐतेही है जैसे कि आप कहते हो । १५ ।
 परन्तु चित्तके अनेक दुःखोंसे मुझ जलनेवाली की बुद्धि चलायमान हुई है हे
 जनार्दन केशवजी आपके वचनों को सुनकर अब वह मेरी बुद्धि स्थिरहुई । १६ ।
 हे द्विपादोंमें भ्रष्ट तुम भीर पाण्डवोंके साथ इस अन्धे वृद्ध और असन्तान राजा
 की गतिहो । १७ । वह गांधारी इतना कहके अपने मुखको बन्धते ढककर पुनः
 शोक से दुःखी होकर बहुत रोदन करनेलगी । १८ । इस के पीछे महाबाहु केशव
 ने उस शोकपीड़ित गांधारीको हेतुकारण संयुक्त वचनों के द्वारा विश्वास कराया
 । १९ । नाथजी ने उस धृतराष्ट्र और गांधारीको विश्वास देकर अश्वत्थामा
 के हृदय के विचारको जाना । २० । तबही केशवजी शोषही मस्तक से न्यासजी

not give yourself up to grief. Let your mind never think of the destruc-
 tion of the Pandavas though you can destroy the three worlds by your
 angry eyes. "64 Having heard the words of Vasudev Gandhari said,
 You are right, Vasudev, My mind wavered with the excess of grief; but
 your words have set it at rest. You and the Pandavas are the refuge
 of this blind old king." Having said this, she covered her face with
 cloth and wept long and bitterly. Krishna consoled her again with his
 arguments. Having consoled the royal pair, he knew what was
 passing in the mind of Ashwathama. He soon touched the feet of
 Vyas with his forehead and again said to Dhritrashtra, "I bow to

नस्य राजेन्द्र तत कौरवमग्रवीत ॥ ७१ ॥ आपृच्छेत्वा कुशुश्रेष्ठ मा च शोकं मन,
 कृथा । द्रौणिः पापोस्त्वभिप्रयस्तनास्मि सहसोरियत ॥ ७२ ॥ पाण्डवानावचे रात्रौ
 बुद्धिस्तेन प्रदर्शिता । एतत् धृत्वा तु वचन गान्धार्या सहितोऽग्रवीत् ॥ ७३ ॥ धृतराष्ट्रो
 महाबाहु केशव केशिसूदनम् । शीघ्र गच्छ महाबाहो पाण्डवान् परिपालय ॥ ७४ ॥
 भूयस्त्वया समेष्यामि क्षिणमेव जनार्दन । प्रायात्ततस्तु त्वरितो दारुकेण सहाह्वयुत
 ॥ ७५ ॥ वासुदेवे गते राजन् धृतराष्ट्रे जनेश्वरम् । आशपासयदतेपात्मा व्यासो षोक
 तमस्कृत ॥ ७६ ॥ वासुदेवोपि धर्मात्मा कृतकृत्यो जगाम ह । शिविरं हास्तिनपुराई
 दक्ष्ण, पाण्डवान् नृप ॥ ७७ ॥ आगम्य शिविर रात्रौ सोऽप्यगच्छत पाण्डवान् । तच्च
 तेषु । समाख्याय सहितस्तै समाहितः ॥ ७८ ॥

इति मदापर्वणि धृतराष्ट्रान्धार्यभिवोधने त्रिपष्टोऽध्यायः ६३ ॥

के चरणों को दसडगत् करके फिर कौरवराज धृतराष्ट्रमे बोले ७१ कि हे कौरवों में
 श्रेष्ठ तुम को मैं नमस्कार करता हूँ आप शोकमें चिचु मत करो अव्यत्यामा का पाप
 रूप चिचु हुआ है इहेतुसे मैं शोभना से उठा हूँ ७२ । उसने रात्रिके समय पाण्डवोंके
 मारने का विचार पक्का प्रकट किया है महाबाहु धृतराष्ट्र गंधारी समेत इस वचन
 को सुनकर केशी दैत्य के मारनेवाले केशवजी से बोले । ७३ । हे महाबाहु आप
 शीघ्रजाओ और पाण्डवों की रक्षाकरो । ७४ । हे जनार्दनजी मैं फिर आप से श्रीम
 भिल्लंगा इसके पीछे अभिनाशी केशवजी शीघ्रही दारुक समेतगये । ७५ । हे राजा
 वासुदेवजी के जानेपर बड़े बुद्धिमान् और लोकमान्य व्यासजी ने राजा धृतराष्ट्र
 को श्वास कराया । ७६ । धर्मात्मा वासुदेवजी भी समाप्तमनोरथ होकर पाण्डवों
 के देखनेकी इच्छासे हास्तिनापुर से डेरेको गये । ७७ । और रात्रि के समस डेरे
 को पाकर पाण्डवों के पासगये और बह सब वृत्तान्त उनसे कहकर उन समेत
 सावधान हुये ७८ ॥

you best of Kauravas, don't indulge in grief Ashwathama is bent
 on mischief and therefore I am in a hurry He intends slaying the
 Pandavas at night " To this Dhritrathtra and Gandhari replied,
 " Make haste, brave man, and protect the Pandavas. We shall soon
 see you again " Then Krishna went away with Draui At his depart-
 ure Vyasa too, consoled the king Being successful in his mission,
 Vasudev hastened to the camp and reaching there at nightfall went
 directly to the Pandavas and told them what had happened " 78.

धृतराष्ट्र उवाच । आदिष्टितः पदा मूर्च्छितमग्नसकथो महीगनः । शौटिर्यमानो
 पुत्रो मे किमभाषत सञ्जया ॥ १ ॥ मतवर्षे कोपनो राजा जातवैरस्य पाण्डुपु
 व्यसनं परमं
 प्राप्तः किमाह परमाहवे ॥ २ ॥ सञ्जय उवाच । भृशं राजन् प्रवक्ष्यामि यथा वृत्तं
 नरादिप । रात्रा यद्युक्तं मग्नेन तस्मिन् व्यसनं जागते ॥ ३ ॥ मग्नसकथो नृपो राजन्
 पाण्डुना सोवगुण्डितः । यमपक्व मूर्च्छं ज्ञातश्च धीह्य चैव दिशो दश ॥ ४ ॥ केशा भ्रियम्य
 यत्नेन निश्चसन्बुधो यथाक्षरन्वाश्रु रीताश्रया नैराश्वामभिवीक्ष्यमाणा ॥ ५ ॥ वाहूद्वरण्यां
 त्रिभिरुच्च मुहुर्वाच इति प्रियः । प्रकीर्णान्मूर्च्छजान् धुन्वद्गृह्णतानुपस्पृशन्नागर्हयन्
 बाण्डवः षष्ठं निदधस्संदमयामधीत ॥ ६ ॥ भीष्मे शासनये नाथे कणं चास्त्रभृताम्बरे गौतमे
 शकुनौ चापि द्रोणे चास्त्रभृताम्बरे ॥ ७ ॥ मद्बवाद्याग्नि तथा शवये शूरे च कृतवर्माणि
 इमामवस्थां प्राप्सोस्मि कालो वै दुरतिक्रमः ॥ ८ ॥ एकादशचमूभक्तौ सोहमेतां दशां

अध्याय ॥ ६४ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय परिवर्तित मस्तकपर दवायेहुये दृष्टी जंघा पृथ्वीपर गिरे हुये
 नेरे बहङ्करी पुत्रने क्या कहा । ? । अत्यन्त क्रोधयुक्त और पाण्डवों के
 साथ झपुता करनेवाले बड़े संकटको प्राप्त राजाने बड़े युद्ध में क्या किया । २ ।
 सञ्जय बोले हे राजा जैसा वृत्तान्तही उमसव वृत्तान्त को मैं कहताहूँ भर्षात् उस
 दुःखके प्राप्तहोनेपर दृष्टेजंगवाले राजाने जो कहाहै उसको आप सुनिये । ३ । हे
 राजा दृष्टीनेवा धूलसे लित शिरके केश बाँधनेवाले उस राजाने वहाँ दशों दिशाओं
 को देखकर । ४ । सर्पही सपान श्वासलेतेहुये ने उपायमे वालोंको बाँधकर क्रोध
 और अश्रुओंसे पूर्णनेत्रोंसे मुझको देखकर । ५ । मतवाले हाथोंके समान अपनी
 भुजाओंकी बारम्बार मलकर बिस्त्रेहुये वालोंको कँपाते दाँतों से दाँतोंको दबते
 और बुधिधिरकी निन्दाकरते दुर्योधनने श्वासलेकर यह कहा । ६ । कि शतनुके
 पुत्र भीष्मजी, शङ्खधारियों में श्रेष्ठ कर्ण, कृपाचर्य, शकुनि, महाभङ्ग द्रोणा
 चार्थ, अश्वत्थामा, शल्य और शूर कृतवर्मा के नाशहोनेपर मैंने इस दशाको
 पाया निष्कपकरके काल बड़ेदुःखसे उल्लंघनकेयोग्यहै । ८ । जो कि ग्यारह अर्जुन

CHAPTER LXIV

Dhritishtra said, " What did my proud son, with broken thigh, say when he was kicked on the head ? What did he do at that insult ? " Sanjaya said, " Hear, O king, what he said : with broken thigh and besmeared with dust he tied the hair of his head and looked in all directions. Hissing like a serpent and adjusting his hair, with eyes full of tears, he looked towards me, 5. Rubbing his arms, shaking his dishevelled hair, gnashing his teeth and blaming Yudhishtir, he sighed and said, " I have been reduced to this condition at the fall of Bhishm, Karan, Kripa, Shakuni, Drona, Ashwatthama, Shalya and

गतः । कालं प्राप्य महाबाहो न कश्चिदस्ति बन्धते । १८ ॥ आख्यातस्य मन्त्रीषाणां भेदिमन्
 जीवन्ति संयुगे । यथाहं भीमसेनेन द्युत्कृत्य समर्थ इतः ॥ १९ ॥ बहुनि मुनूनां सानि
 कृतानि खलु पाण्डवैः । भूरिभद्रश्चि कर्णे च भीष्मे द्रोणे च भीमति ॥ २१ ॥ इदञ्चा
 सिञ्जं कर्म नृशैलः पाण्डवः कृतम् । येन ते सत्सु निर्वेदं गमिष्यन्ति हि मे मतिः ॥ २२ ॥
 का भीतिः सत्सु युक्तस्य इत्येवाधिष्ठितं अर्थः । को वा समर्थ भेत्तारं युधः सम्मन्तुर्भवेत्
 ॥ २३ ॥ अथर्षेण जयं लब्ध्वा कोनुद्वयेत पण्डितः । यथा संदृश्यते- पापः पाण्डुपुत्रो
 वृकोदरः ॥ २४ ॥ किन्तु विजयतस्त्वय्य मग्नसकथस्य यममम । क्रुद्धेन भीमसेनेन पापेन
 मृदितं शिरः । २५ ॥ प्रतपन्तं श्रिया जुष्टं वर्त्तमानस्य वायुवु । एवं कुर्वाणरोषो हि
 स वै सत्त्वय पूजितः ॥ २६ ॥ अमिहो युद्धधर्मस्य मम माता पिता च मे । शौ हि
 सत्त्वय दुःसाहो विद्राघो बन्धनामम ॥ २७ ॥ इष्टं मत्वा मृताः चरन्तु प्रशास्ता

हिमी सनोके मुझ स्वामी मे भी इसदवाकी बाधा हे महाबाहु कोई मनुष्य
 कालको उल्लंघन नहीं करसक्ताई । १८ । अब तुव हन मेरे शूरवीरों का वर्णन करो
 जो इस युद्धमें जीवते हैं जिस प्रकार नियमको उल्लंघनकर भीमसेनके हाथमे मारा
 गयाहूँ । १९ । इससे विदितहोताई कि पांडवोंकी ओरसे बहुतनिरर्थकर्म, क्रोधमे
 हैं निरर्थ पांडवोंकी ओरसे अपकीर्तिसे उत्पन्न होनेवाला यह कर्म भूरिभद्रा, कर्म,
 भीष्म और भीमान द्रोणाचार्य के भी साथमें कियानचा । २१ । इमहेतुसे यह सब
 पाण्डव बेरीहृदिते सत्पुरुषोंमें अपमानको पावने छलसे प्राप्तहोनेवाली विजय
 को करके पराक्रमी पुरुषकी कौनसी मस्तमताई ? २२ कौन बुद्धिमान् समयके शर्माकी
 अपराध करनेको योग्य है और कौनसा पंडित अवर्मसे विजयको पाकर
 ऐसे मस्तमहोना । २३ । जैसेकि पापी भीमसेन बसज होताई । २४ । अत्रहससे अपूर्वक्या
 है जो मुझ दृष्टींजबापालेके शिरको क्रोमयुक्त भीमसेनने चरणों से मर्दनकिया । २५ ।
 सन्तप्तकरनेवाले सन्धी से सेवित बान्धवोंके मध्य में वर्त्तमान पुरुषको जो मनुष्य
 वेसीदशावाला करे हे संजय वही पूजित है । २६ । मेरे माता पिताभी धर्मयुद्ध

Kritvarma Surely Time is hard to surpass, when the lord of eleven
 akshauhinis has come to this state. None can overstep Time. Pray
 tell me of my warriors who are living. From the just treatment of
 me by Bhim, I am sure that the Pandavas have done many cruel
 deeds, They were unjust to Bhurisbrava, Karan, Bhisim and Drona.
 11. They will be surely looked down by good people. What
 pleasure can come out of unfair victory! What wise man will thus
 insult a king and exult at his own wickedness as Bhim has done?
 What can be more strange than his crushing down my head after
 breaking my thigh? 15. He who punishes him in the midst of his
 brothers is worthy of respect. My parents know justice in war and

ससागरा । मूर्च्छिस्थितमभिप्राणा जीवतामेव सञ्जय ॥ १८ ॥ दत्ता दायया यथाशक्ति
मित्राणाञ्च प्रिये कृतम् । अभिप्रा घाचिताः सर्वे कोनु स्वन्ततरो मया ॥ १९ ॥ मानिता
वान्धवाः सर्वे पश्यः सम्पूजितोऽजनाः । श्रितयं सेवितं सर्वं कोनु स्वन्ततरो मया ॥ २० ॥
आज्ञप्तं नृपमुख्येषु मानः प्रसःसुतुल्लभाभाजानेयैस्तथा पातं कोऽनुस्वन्ततरो मया ॥ २१ ॥
जन्भीतं विधिवद्भूतं प्राप्तमायुर्निर्गमयम् । स्वधर्मेण जितां लोकाः कोनुस्वन्ततरो मया
॥ २२ ॥ दिष्ट्यानाहं जितः सख्यं परान् प्रेष्यवदाश्रितः । दिष्ट्या मे विपुला लक्ष्मी
भूते स्वम्भं गता विभो ॥ २३ ॥ यदिष्टं क्षत्रघन्यूनानां स्वधर्ममनुतिष्ठताम् । निघनं तन्मया
प्राप्तं कोनुस्वन्ततरो मया ॥ २४ ॥ दिष्ट्या नाहं परावृत्तो धैरात् प्राकृतवर्जितः ।
दिष्ट्या नाविमर्ति काञ्चिच्चञ्जित्वा तु पराजितः ॥ २५ ॥ सुप्तं घाय प्रमत्तं वा यथा
हन्याद्विषेण वा । एवं व्युत्क्रान्तधर्मेण व्युत्क्रम्य समयं हतः ॥ २६ ॥ अश्वत्थामा महा
भागः कृतवर्मांश्च सार्वतः । रूपः शारद्वतश्चैव चक्रव्याघचनान्मम ॥ २७ ॥ अधर्मेण
को अच्छीरीरितसे जानतेहै हे संजय वहदोनो दुःखीमेरे वचनसे नतलानेके योग्यहै

। १७ । अच्छे प्रकार यज्ञादिककिये प्रजापालनकिया और समुद्रों समेत सब
पृथ्वीपर राज्यकिया हे संजय जीवने शत्रुओं के मस्तकपर नियतहुआ । १८।सामर्थ्य
के अनुसार दानकिये मित्रोंका हितकिया सबशत्रु पीड़ामान् किये मुझ से अधिक
सुकर्मी कौनहै? १९ । सबवान्धवोंकी प्रतिष्ठाकरी और अपने आश्रितकार्यक
र्त्ताओंको प्रसन्नकिया धर्म धर्म कामादिक सब सेवनकिये मुझ से अधिक सुकर्मी
सकृती कौनहै । २० । उत्तम २ राजाओंपर आज्ञाकरी बड़े दुःखसे प्राप्तहोनेवाली
आज्ञा से उत्पन्नहोनेवाली प्रतिष्ठाको पाया आजानेय प्रकारवाले घोड़ों के द्वारा
सवारीकी मुझे अधिक सुफलवाला कौनहै । २१ । वेदपढकर विधिपूर्वक दान
किया नीरोग आयुर्वापाई अपने धर्मसे लोक प्राप्तकिये मुझसे अधिक सुकर्मी
कौनहै । २२। मैं प्रारब्ध से युद्ध में विजयवाला नहीं हुआ औरहे प्रभु प्रारब्धसे ही
जो मेरी बड़ी लक्ष्मीथी वह मेरे मरनेपर दूसरे को प्राप्तहुई । २३ । अपने धर्मपर
चलनेवाले सत्रियोंका जो हित और प्रिय है वह मरण होने पाया मुझसे विशेष
शुभकर्मी कौनहै । २४ । मैं प्रारब्धहैसे साधारण मनुष्यकी शत्रुता से नहीं हटा
और प्रारब्धसेही किसी अपमानको पाकर पराजय नहींहुआ । २५ । जैसे कि
सोतेहुये को नशसे अचेतको अथवा विषपान कियेहुयेको कोई मारताहै इसीप्रकार
धर्म के त्यागनेवालेने नियमको त्यागकर मारा । २६ । महाभाग अश्वत्थामा पादव

must be informed. I performed sacrifices ruled over a vast kingdom,
crushed my enemies, gave charity, did good to friends and punished
foes, who can be happier than I ? I respected my kinsmen, pleased
my ministers and passed a happy life, who can be more fortunate than
I ? 20. I ruled over great kings, gained respect and rode over horses
of Ajneya breed; who can be luckier than I ? I read the Vedas, gave
charity; lived a healthy life and secured good regions by dharm; who

प्रवृत्तामां पाण्डवानामनेकशः। विंशत्यसं समयघ्नानां ययं न गन्तुमर्हथ ॥ २८ ॥ घाति
 काश्चाप्रवीदाका पुत्रले सत्यविक्रमः। अधर्माज्ञीमसेनेन निहतोयं यथा रणे ॥ २९ ॥
 सोहं द्रोणं स्वगंगं कर्णशरपावुमी तथा। पुत्रसेनें महावीर्यं शकुनिष्वापि सौषलम्
 ॥ ३० ॥ जलसन्धे महावीर्यं भगदत्तश्च पथेयम्। सौमदासं महेश्वासं सैन्धवश्च
 जयद्रथम् ॥ ३१ ॥ दुःशासनपुत्रोऽपि भ्रातृनात्मसमांस्तथा;। दोःशासनिश्च विक्रांतं
 लक्ष्मणश्चात्मजावुमी ॥ ३२ ॥ एतांश्चान्पांश्च सुवहून् मदीयांश्च सहस्रशः। पृथतोनुग
 क्रिष्यामि सायंहीनश्चाध्वजः ॥ ३३ ॥ कथं भ्रातृन् हतान् यत्वा भर्तार्य स्वसा मम।
 रोक्ष्यमाणा दुःशार्चा दुःशलासा भविष्यति ॥ ३४ ॥ स्तुयामि, प्रस्तुयामिश्च वृद्धो
 राजा पितामम। गान्धारीसहितश्चैव कां गतिं प्रतिपत्स्यते ॥ ३५ ॥ नूनं लक्ष्मणमा
 तापि हतपुत्रा हतेश्चरा। विनाशं यास्यति क्षिप्रं कलयाणी पृथुलोचना ॥ ३६ ॥ यदि
 कृतवर्मा, शारदूत, कुराचार्य मेरे वचन से कहने के योग्य हैं। २७। कि अनेक प्रकार
 के अधर्म के कर्त्ता निमर्षोंके त्यागनेवाले पांडवों का विश्वास आपको करना
 उचित नहीं है। २८। आपका पुत्र सत्यपराक्रमी राजादुर्योधन पातिक नाम मिट्टों
 से बोला कि जैसे मैं अधर्मकी रीतसे भीमसेन के हाथ से मारा गया। २९। सो मैं
 स्वर्गवासी द्रोणाचार्य, कर्ण, शरप, महात्मा द्रुपदेन, सौपलका पुत्र शकुनि महा
 पराक्रमी जलसिन्ध, राजाभगदत्त, बड़े धनुर्धारी सोमदत्त, सिन्धका राजा जय
 द्रथ, उसीमकार आत्मा के समान दुःशासनादिक भाई, पराक्रमी दुःशासनका
 पुत्र और लक्ष्मण इन दोनों पुत्रों के और अन्य २ हजारों अपने शूरवीरों के
 पीछे ऐसे जाऊंगा जैसे कि अपने साथी समूह से पृथक् विदेही जाता है। ३३।
 मेरी वाहन दशला भाइयों समेत अपने पतिको मरा हुआ सुनकर रोती हुई
 कैयी मग दुःखी होगी। ३४। मेरा बृद्ध पिता राजाधृतराष्ट्र पुत्र पौत्रोंकी क्षियों
 और गान्धारी मयेत किमगति को पारेगा। ३५। निश्चय करके मृतक पुत्र और

can be more virtuous than myself? It was Fate that did not give me
 success in battle and would give my great wealth to another at my
 death; but I have recured the death of a kshatrya; who can be more
 virtuous than me? It was by Fate that I did not give up enmity:
 but I suffered no dishonourable defeat and received the death blow
 like one who is in a state of unconsciousness or has been poisoned. I was
 hit against rule. 26. Ashwathama, Kritvarma and Kripacharya
 must know this. They should never trust the Pandavas who have
 forsaken dharm." Then turning towards the sidhas who live upon air
 your son Duryodhan said, "Slain unjustly by Bhim, I shall follow
 Drona, Karan, Balya, Vrishasen, Shikuni the son of Surab, bravo
 Jalsandh, king Durgadatta, Soudatta, Jayadrath the king of Sindhu
 Dushasan and other brothers, Dushasan's son, Lakshman and thou-
 sands of my warriors to heaven like a stranger who is left behind by

जानाति चाष्ठांकः परिभ्राडुवाग्विशारदः । करिष्यति महाभागो ध्रुवं सायाञ्छिति मम
 ॥ ३७ ॥ समन्तपथके पुण्ये त्रिपु लोकेषु विभ्रुते । अह निधनमासाद्य लोकाद् प्राप्
 स्याभि शाश्वतान् ॥ ३८ ॥ ततो जनसहस्राणि धारूपपूर्णानि मारिष । प्रलापे नृपतेः
 भ्रुत्वा व्यद्रघ्नन्त दिशो दश ॥ ३९ ॥ सस्रामरघना घोरा पृथिवीसचराचरा । चचा
 ङ्गाथ सनिर्द्वादा दिशश्चैवाविलाभयन् ॥ ४० ॥ ते द्रोणपुत्रमासाद्य यथावृत्तं न्यवेदयन्
 भ्यबहारं गदायुजे पाधिबस्य च पातनम् ॥ ४१ ॥ तदाख्याय ततः सर्वे द्रोणपुत्रस्य
 भारत । ध्यात्वाद्य सुचिरं कालं जग्मुरार्त्ता यथागतम् ॥ ४२ ॥

इति गदापर्वणि दुर्योधनविलापे चतुः षष्टोऽध्यायः ६४ ॥

पतिवाली लक्ष्मण की माता जोकि कल्याणी और बड़े नेत्रवाली है वहभी शीघ्रही
 नाश को पावेगी । ३६ । जो ब्राह्मणरूपधारी संन्यासी चार्त्तालाप में सावधान
 चार्त्तिकनाम राक्षस इसवात को जानेगा तो वह महाभाग अवश्य मेरा बदला
 पांडवों से लेगा । ३७ । मैं इस पावित्र और तीनोंलोकों में विख्यात स्पमन्तपंचकमें
 मृत्युको पाकर गाचीन लोकोंको पाऊंगा । ३८ । हे श्रेष्ठ इस के अन-तर अश्रुओं
 से पूर्णनेत्र हजारों मनुष्य राजाके उस विलापको सुनकर दशों दिशाओं को भागे
 । ३९ । पृथ्वी समुद्र वन और जड़चैतन्य जीवोंसमेत घोररूप शब्दायमान होकर
 ऊपनेलगी और दिशा सबप्रभासे रहितहुई । ४० । उन्होंने अश्वत्थामा को पाकर
 जैसा वृत्तान्तथा सब वर्णनकिया है भरतवंशी वह सब गदाशुद्धके व्यवहारको और
 दुर्योधन के गिराने को अश्वत्थामाजी के समुख वर्णन करके बड़ी देरतक ध्यान
 करके पीढ़ावान होकर अपने २ स्थानोंको चलेगये ४२ ।

his countrymen. 33. My sister Dushala must be lamenting the
 death of her brothers and husband. To what state my old father
 Dhritrashtra, his sons' wives and Gandhari will be reduced? 36.
 Surely, Lakshman's mother of large eyes, whose husband and son
 are dead, will soon die. The rakesha Charvak, living in the disguise
 of a Sanyasi Brahman, will surely avenge my death. Having died
 at holy Samantpanchak, I am sure to get the ancient regions." Then
 thousands of people with tears in their eyes, ran away in all directions
 on hearing the lamentations of the prince. The earth with her trees
 and movable and immovable creation, shook with a rumbling noise
 and the directions became destitute of light. They informed Ashwa-
 thma with what had happened. Having informed Ashwathma with
 the events of the mace fighting, they stood long in meditation and
 then wended their ways." 42.

सञ्जय उवाच । चातिकानां सकाशात्तु ध्रुवाद्युद्योधनं हतम् । हतशिष्टास्ततो राजन् कौरवाणां महारथाः ॥ १ ॥ विनिभिक्षा शिवाजैर्गदातोमरशक्तिभिः । अश्वत्थामा कृपश्चैव कृगधर्मा च सात्त्वत ॥ २ ॥ स्वरिता जवनेरश्वैराधोधनमुपांगमन् । तथा पश्यन्महात्मानं घातेराष्ट्रं निपातितम् ॥ ३ ॥ प्रभग्नं वायुधेगेन महाशालं यथा वने । मग्नं विचेष्टमानं तं रुधिरेण समुक्षितम् ॥ ४ ॥ महागजमिवारण्ये व्याधेन विनिपातितम् । विवस्त्रमानं बहुशो रुधिरौघपरिप्लुतम् ॥ ५ ॥ यदच्छ्रया निपतितं शकमादिषु गोचरम् । महाघातसमुत्थेन संशुष्कमिव सागरम् ॥ ६ ॥ पूर्णचन्द्रमिव व्योम्निं तुषारावृतमण्डलम् । रेणुध्वस्तं दीर्घभुजं मातङ्गसमविक्रमम् ॥ ७ ॥ घृतं भूतगणेशैरेः क्रव्यादैश्च समन्ततः । यथा घनं लिप्समानैर्मृत्यैर्नृपतिसत्तमम् ॥ ८ ॥ भृकुटीकृतवक्त्रातं क्रोधाद्बहुवृत्तचक्षुषम् । सामर्थ्यं ते नरव्याघ्रं व्याघ्रं निपतितं यथा ॥ ९ ॥ ते तं दृष्ट्वा महेश्वासा भूतले पातितं नृपम् । मोहमध्यागमन् सर्वे कृपप्रभृतयो रथाः ॥ १० ॥ अथ

अध्याय १५ ।

संजय बोले हे राजा मरनेसे शेषवचे कौरवोंके तीनों महारथी अश्वत्थामा, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा दूर्तो के मुखसे राजा दुर्योधन को मरा, हुआ सुनकर शीघ्रगामी घोड़ोंकी मवार्रीसे बड़े शीघ्रही रणभूमि में आये वहाँ आकर गदा, तोमर, शक्ति और तेजवाणों से अत्यन्त घायल गिरायेहुये महात्मा दुर्योधनको ऐसे देखा जैसे कि बड़े वनमें वायु के वेगसे गिरेहुये बड़े शालके वृक्ष को देखते हैं उसको पृथ्वीपर तड़फता रुधिरसे लिप्त ऐसा देखा । ४ । जैसे कि वनमें व्याघ्रके हाथसे गिरायेहुये बड़े हाथीको देखते हैं बहुतमकार से रूपान्तर रुधिरसमूह से लिप्त । ५ देव इच्छासे गिरेहुये सूर्यकी किरणों में घूमनेवाले चक्र की समान बड़े वायु के वेगसे उठेहुये घोर समुद्रके तुल्य । ६ । आकाश में क्षीत युक्त मंडलवाले पूर्णचन्द्रमा के सदृश धूलसे लिप्त लम्बी भुजावाले हाथी के तुर्य पराक्रमी । ७ । चारों ओर भूत प्रेतों से व्याप्त और मतिभक्षी जीवसमूहों सेपसे संयुक्त देखा जैसे कि धनेके अभिलाषी सेचकों से घिरेहुये उत्तम राजाको देखते हैं । ८ । टेढ़ी भृकुटीवाले क्रोधसे फैले नेत्र क्रोधमें पूर्ण नरोत्तमको ऐसे देखा जैसे कि गिरेहुये व्याघ्रको देखते हैं । ९ । उन कृपाचार्यादिक सब रथियोंने उस बड़े धनुषधारी पृथ्वीपर गिरेहुये राजाको देखकर बड़े मोहको पाया । १० । रथोंसे

CHAPTER LXV

Banjaya said, " The three remaining warriors of the Pandavas, Ashwathama, Kripacharya and Kritvarma the Yadav, having heard from the people about the fall of Duryodhan, came on swift horses in the field of battle. There they saw Duryodhan wounded by mace, tomar, spear and swift arrows, like a huge sal tree struck down by the wind in a large forest. They saw him blood stained and smarting with pain, like a large elephant destroyed by hunters. With altered

तीर्थ्य रथेभ्यश्च प्राद्वव्राजसन्निधौ । दुर्योधनश्च समक्ष्य सर्वे भूमाधुपाविशन् ॥११॥
 ततो द्रौणिर्महायाम वासुपुर्णेक्षणं भवसन् । उवाच भरतश्रेष्ठ सर्वं लोकेभ्वरेदधरम्
 ॥ १२ ॥ न नूनं विद्यते सत्यं मानुषं किञ्चिद्वदेव हि । यत्र त्वं पुरुषव्यात्र शेषे पाशुपु
 रुषित ॥ १३ ॥ भूत्वा हि नृपतिः पूर्वं समाश्रयः च मेदिनीम् । कथमेकीऽद्य राजेन्द्र
 तिष्ठसे निज्जने धने ॥ १४ ॥ दुःशासनं न पश्यामि नापि कर्म महारथम् । नापि तान्
 सुहृदः सर्वान् किमिदं पुरुषपथम् ॥ १५ ॥ दुःश नूनं कृता तस्य गतिं ज्ञातुं कथञ्चन ।
 लोकानाञ्च भवान् यत्र शंते पाशुपुः रुषिव ॥ १६ ॥ एव मूढाम्बिकानामग्रगतत्वा
 परन्तप । स मूढा व्रसते पाशुपुपश्य कायविपर्ययम् ॥१७॥ यत्र तत्तदमलं छत्रं व्यजन
 क्व च पार्थिव । सा च ते मदती सेना क्व गता पार्थिवोत्तम ॥ १८ ॥ दुर्बिहया गनि
 नूनं कार्याणां कारणान्तरे । यद्वै लोकगुरुर्भूत्वा मघानेता दशां गत ॥ १९ ॥ अन्धुवा

उत्तरकर राजाके सम्मुखगये और दुर्योधनको देखकर सब पृथ्वीपर बैठगये । ११
 हे महाराज इनके पीछे अश्रुओंसे पूर्ण नेत्र श्वासाओंको लेतेहुये अश्वत्थामानी उस
 सब राजाओंके महाराज भगतर्पभ दुर्योधनसे बोल । १२ । हेपुरुषोत्तम निश्चयकरके
 इस नरलोक में कोई सत्यवात वृत्तमान नहीं है जहाँकि आप सरीके लोग धूलमें
 लिप्त होकर सोतेहैं । १३ । हे राजेन्द्र तुम पूर्वकाल में राजा होकर पृथ्वीपर राज्य
 शासनकरके अब कैसे निर्जन वनमें नियतहो । १४ । मैं दुःशासन महारथी कर्ण
 और उन सब सुहृदों को भी नहीं देखताहूँ हेभरतर्पभ यह क्या बातहै । १५ ।
 निश्चय करके किसी दशामें भी काल और लोकों की गति जाननी कठिनहै जहाँ
 कि धूलसे लिप्त आप सोतेहो । १६ । यह शत्रुओंका तपानेवाला राजाओंके आगे
 चलकर धूलको कठिनता से स्पर्श करताहै इस विपरीत समय को देखो । १७ । हे
 राजा वह तेरा निर्मलउत्र व्यजन और तेरी बड़ी भारी सेना कहाँगई । १८ । निश्चय
 करके गुप्तरूप होने पर परिणाम दुःख से जाननेके योग्यहै जो लोकगुरु होकर
 आपने इस दशाको पाया । १९ । सबइन्द्रसे ईर्ष्याकरनेवाले आपके कठिन दुःखको

appearance and blood stained body, he was like a wheel rolling in the rays of the sun, or like the ocean agitated by the wind, or like the cool full moon, dust-stained, with long arms, of the prowess of an elephant, surrounded by spirits, goblins and flesh-eating animals, like a king surrounded by avaricious attendants. 8 With contracted brow, and eyes dilated in anger, they found the prince like a fallen tiger. Kripacharya and other warriors were stupefied at the sight of the king 10 They came down from their cars and sat down beside him. Then with tears in his eyes Ashwathama thus addressed him 'Surely there are no respectable people left on the face of the earth when people like you lie in dust. Having ruled over a vast kingdom how is it that you are here in a desolate wood. I donot see Dushasan, Karan and other friends of yours. 13 It is always difficult to know the course of Time, when we see you lying on dust. This destroyer

सर्वमत्स्येषु ध्रुवे श्रीरूपलक्ष्यते । मन्वो ग्यमनं दृष्ट्वा शक्रश्चिद्विनो भूतम् ॥ २० ॥
 तस्त तद्रथनं श्रुत्वा दुःखितस्य विशेषतः । उवाच । राजन् पुत्रस्ते प्राप्तकालमिदं वचः
 ॥ २१ ॥ विभूज्य नेत्रे पाणिभ्यां शोकजं वासामुत्सृजन् । कृपादीन स तदा वीरान् सर्वा
 नेव नरावपि ॥ २२ ॥ ईदृशी मन्वेष्वर्षोऽप्यं धाम्नः निर्दिष्ट उच्यते । विनाशः सर्वभूतानां
 कालपर्ययमागतः ॥ २३ ॥ सोमं मां समनुवाप्तः प्रत्यक्षं भवतां हि यः । पृथिवीं पाञ्च
 विवाहभेतां निटामुपागत ॥ २४ ॥ दिष्ट्या नाहं परादृत्तो युद्धे कस्याश्चिद्वादि ।
 दिष्ट्याहं निहतः पापैश्छलेनेव विशेषतः ॥ २५ ॥ उन्साहश्च कृतो निरयं मया दिष्ट्या
 युयुत्सना । दिष्ट्या चास्मि हतो युद्धे निहतप्रतिवाञ्छरः ॥ २६ ॥ दिष्ट्या च वीहं
 पश्यामि मुक्तानस्माज्जन्तव्यात् । स्थलियुक्ताश्च कल्प्याश्च तन्मे प्रियमनुत्तमम् ॥ २७ ॥
 मा गवन्तो नुतप्यन्तां सांद्दृशानिधनेन मे । यदि वेदाः प्रमाणं वो जिता लोका मयाक्षया
 देखकर सब मनुष्यों में लक्ष्मी का रूप विनाशवान् दिखाई देता है । २०। संजय ने
 कहा है राजा आपका पुत्र दुर्योधन उस महासेनधरे अश्वत्थामाके उस बचनको
 सुनकर हाथों से अपने दोनों नेत्रोंको साफकरके शोकके आग्निप्रोंको छोड़ता
 उन सब कृपाचार्यादिक वीर से समयके अनुसार यह बचन बोला । २२ । कि
 यह ऐगालोक ईश्वरसे उपदेश कियाहुआ धर्म कहा जाता है सब जीवोंके नाश
 ने विपरीतही विपरीत समयको मात्तकिया । २३ । वही अब मुक्तकोभी भक्तहुआ है
 जोकि आपलोगों के समक्षमें वर्त्तमान है मैंने पृथ्वीका पोषणकरके इस दशाको
 पाया । २४ । मैं मारव्यसे किसी आपत्ति में भी रणत पराङ्मुख नहीं हुआ हेभेष्टो
 मैं मारव्यसे मुरुग करके पापियों के छलसे मारागया हूँ । २५ । युद्धका अभिलाषी
 होकर मैंने मारव्य से उन्साह किया और ज्ञाते बान्धवों समेत युद्ध में मारामया
 । २६ । मैं मारव्यसे ही इस मनुष्यों के नाशमें भेदित कस्याण्युक्त आपलोगों
 को देखता हूँ यह मरण मेरा बड़ा प्रियतम अभीष्ट है । २७ । जो आपको वेदमया

of form and leader of kings, could not bear the touch of dust; look at
 the vicissitude of Time. Where are your umbrella and large army gone
 Prince? Surely the end is always hidden; for being respected by the
 world you are reduced to this state. Being a rival to Indra, you have
 fallen in great trouble and from this we conclude that the prosperity
 of all men is transitory." Sanjaya said, "Having heard the pitiful
 words of Ashwathama, Duryodhan cleared his eyes of the tears of
 grief and thus addressed Kripacharya and others:—"The worldly
 books and the Vedas say that the times are changed at the destruction
 of creatures. The same is the case with me, as you see. Having
 ruled over the earth, I am reduced to this strait. I never turned face
 in any battle, yet I was hit by deceit. 25. Being desirous of fight-
 ing, I dared do the deed and was slain along with my warriors and

॥ २८ ॥ मन्यमानः प्रभाषञ्च कृष्णस्यामिततेजोसः । तेन न व्याधितश्चाहं क्षप्रधर्मात्
 स्वनुष्ठितात् ॥ २९ ॥ स मया समनुमातो नास्मि शोच्यः कथञ्चन । कृतं मघङ्गिः
 सद्यश्मनुकूपमिधात्मनः । वतितं विजये नित्यं देवन्तु वुरतिक्रमम् ॥ ३० ॥ एतावदुक्त्वा
 वचनं वाह्यपञ्चाकुललोचनः । तूष्णींमूव राजेन्द्र वनासौ विह्वलोमृशम् ॥ ३१ ॥ तथा
 हृष्ट्या राजानं धास्पशोकसमन्वितः । द्रौणिः क्रोधेन जज्जाल यथा बन्धिर्जगत्क्षये
 ॥ ३२ ॥ स तु क्रोवसमाविष्टः पाणौ पाणिं प्रपीड्य ह । धास्पविह्वलया वाचा राजान
 भिदमब्रवीत् ॥ ३३ ॥ पितरामे निहत युद्धैः सुनृशतेन कर्मणा । न तथा तेन तप्यामि
 तथा राजंस्त्वयाद्य वै ॥ ३४ ॥ श्रुणु चेदं वचो मह्यं सत्येन वदतः प्रभो । इष्टापूर्त्तेन
 वानेन चर्मण सुकृतेन च ॥ ३५ ॥ अथाहं सर्वपाञ्चालात् धासुदेवस्य पश्यतः । सर्वो
 पावैर्हि नेष्यामि प्रेतराजनिवेशमम् । अनुह्वान्तु महाराज, भवाग्नोदातुमर्हति ॥ ३७ ॥
 इति श्रुत्वा तु वचनं द्रौणपुत्रस्य, कौरवः । मनसः प्रीतिजननं कृपं वचनमब्रवीत् ॥ ३८ ॥

हे तो वहाँपर आपलोग मित्रतासे मेरे मरनेमें दुःखीमतहो क्योंकि मैंने अविनाशी
 शोक विजय किये । २८ । मैं वड़े तेजस्वी श्रीकृष्णजी के प्रभाव को माननेवाला
 हुआ इस हेतुसे मैं अच्छी रीतिसं कियेहुये क्षत्रियधर्म से नहीं गिराया गया हूँ
 । २९ । वह मैंने अच्छी रीतिसं प्राप्तकिया मैं कभी शोचकं योग्य नहीं हूँ आप
 लोगों ने अपने योग्य कर्म किये और सदैव विजय में उपाय किये परन्तु देव
 दुःस्वले उल्लंघनके योग्य है । ३० । हे राजेन्द्र इतना वचन कहकर आशुओं से
 व्याकुलनेप्र आत्यन्त खेदयुक्त वह राजा दुर्बोधन मान होगया । ३१ । फिर अश्व-
 त्यामाजी वसप्रकार राजाको शोक और अश्रुओं से संयुक्त देखकर क्रोधमे ऐसे
 प्रवृत्त हुए जैसे कि प्रलयकाल में मृष्टि के नाश करने की अग्नि प्रज्वलित
 होती है । ३२ । वसक्रोध भरने हाथों का पीटकर अश्रुओं ने नेत्रोंको भरकरबड़े
 आकुलित वचनोंके द्वारा राजा से यह वचन कहा । ३३ । कि नीचोंके अत्यन्त
 निर्दयकर्म से बेरिपिता मारागया उससे ऐसा दुख नहीं पाताहूँ जैसे कि अब इस
 तेरी दशाको देखकर क्लेशित होताहूँ हे प्रभु मुझ स्वप्ना पूर्वक कहनेवाले और
 कृष वापी तद्भाग यह दान धर्म और अपने पुण्यकी अपथखाने वाले के इस
 वचन को सुनों कि भव मैं सब उपायों से सब पांचालों को वासुदेवजी के
 देखते हुये यमलोक में पहुंचाऊंगा हे महाराज आप मुझे आज्ञा देने को योग्यहो

friends. It is fortunate that I see you alive and am happy at my death bed. You shou'd not feel sorrow for me, if you believe the Vedas, for I have won the eternal regions." On account of glorious Krishna, I was unfairly hit I am well satisfied and am not worthy of being sorry for. You have done your part well and tried to conquer, Fate is insurpassable." 30. Having said this, with eyes full of tears in the excess of grief, he became silent. Seeing him so moved with grief, Ashwathama was enraged like the fire of pralaya. He rubbed his hands and with eyes full of tears, said to the King, " My father was killed by the cruel deeds of those wretches, but I felt no grief, for, him as I do at the sight of your distress I swear by my good deeds,

भाचार्य शीघ्र कलसे जलपूर्ण समानय । स तत्रचनमाज्ञाय राज्ञो ब्राह्मणस
 चमः । कलसेपूर्णमादाय राज्ञोस्तिकमुपागमत् ॥ ३९ ॥ तमब्रवीन्महाराज पुत्रस्तवविशाम्पते
 ममाज्ञया द्विजश्रेष्ठ द्रोणपुत्रोभिषिष्यताम् । सैन्यापत्येन मद्रते मम वेदिच्छसि प्रियम्
 ४० ॥ राज्ञो नियोगाद्योऽव्य ब्राह्मणेन विशेषनः । वसन्तः क्षत्रधर्मेण होव चर्मविदो
 विदुः ॥ ४१ ॥ राहस्तु वचन श्रुत्वा कृपः शारद्वतस्तनः । द्रौणि राज्ञो नियोगेन सेना
 पत्येषचयत् ॥ ४२ ॥ सोभिषिको महाराज परिष्वज्य द्रुपेत्तमम् । प्रथमो सिंहनादेन
 दिशः सर्षो निनादयन् ॥ ४३ ॥ दुर्योधनोऽप राजेन्द्र शोणितौघपरिप्लुतः । तां
 निशां प्रतिपेदेय सर्वभूतभयावहाम् ॥ ४४ ॥ अपकम्प्य तु नेत्रैर्नृणां तस्मादायोधनान्पृथु ।
 शोकसंविग्नमनसश्चिन्ताध्यानपराभवन् ॥ ४५ ॥ समासे गदायुद्धपूर्वोऽसमाप्तश्च शक्यपर्वः ।

। ३७ । कौरवराज दुर्योधन अश्वत्थामा के इस वचनको जो कि मन के हर्षका
 बढ़ाने वाला था सुनकर कृपाचार्य से यह बोला हे आचार्य जो शीघ्रही
 जलपूर्ण कलश को लाओ । ३८ । वह ब्राह्मणों में श्रेष्ठ आचार्यजी राजा के उस
 वचनको जानकर पूर्ण कलश को लेकर राजा के पासगये । ३९ । तब हेमहाराज
 राजा धृतराष्ट्र आपका पुत्र आचार्यजी से बोला कि हे ब्राह्मण श्रेष्ठ आपका
 कल्याण होय जो आप मेरा हित चाहतेहो तो मेरी आज्ञा से अश्वत्थामा को
 सेनापति के अधिकार पर अभिषेक कराओ । ४० । मुखपकर क्षत्रियधर्म पर
 कर्म करनेवाले ब्राह्मण को राजाकी आज्ञा से लड़ना चाहिये यह धर्मज्ञ लोगोंका
 कहाहुआ और जानाहुआ है । ४१ । इस के पीछे शारद्वत कृपाचार्य ने
 राजा के वचन को सुनकर उसकी आज्ञा से अश्वत्थामा को सेनापति के अधि
 कारपर अभिषेक कराया । ४२ । हे महाराज वह अभिषेक कियाहुआ अश्वत्थामा
 उस श्रेष्ठ राजा से मिलकर सब दिशामों को सिंहनाद से शब्दापमान करता
 चला । ४३ । इसके अनन्तर कथिरसे लिप्त दुर्योधनने भी उस सब जीवोंकी भय
 कारिणी रात्रिको प्राप्तिकिया । ४४ । और वह तीनों महारथी भी रणभूमिसे हटकर
 शोकसे व्याकुलचित्त चिन्तायुक्त होकर ध्यान में डूबगये ४५ ॥

that I shall slay the Panchals in the presence of Vasudev, and I ask

"Hearing the cheerful words of Ashwa-
 Kripacharya, "Bring a pitcher full of
 the king and brought water near him.

Then your son ordered him to install Ashwathama on the post of the
 commander in chief, with a sprinkling of water 40 "For" said he; "A
 brahman in particular should fight by the order of the king. This is
 the opinion of wise men." Then Kripacharya installed Ashwathama
 on the post of the commander as the king had directed, Thus installed
 Ashwathama embraced the king and went on filling the
 dissections with his war cry, Duryodhan, stained in blood, remained
 there during that night, while the three warriors were plunged in
 grief and bewok themselves rather away from the field of battle." 45.

महाभारत

ॐ का ॐ

→ ॐ सौप्तिक पर्व ॐ ←

श्रीवेदव्यास रचित संस्कृतमूल

॥ हिन्दी और अंग्रेजी अनुवादसहित ॥

THE MAHABHARAT
SAUPTIKPARV

The Sanskrit text of Maharshi Vyas
with complete English and Hindi translations



जिसको

रामकृष्ण कम्पनी मुरादाबाद ने



“तन्त्रप्रभाकर प्रेस में” छपकर प्रकाशित किया ।

Published by

Ram Krishna & Co. of Moradabad

पुस्तक मिलने का पता—
रामकृष्ण कम्पनी
मुरादाबाद.

To be had of the publisher
Ram Krishna & Co.
Moradabad.

सूचीपत्र शल्य व गदा पर्व

Index to Shalya and Gada Parv

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter contents	Page
१	धृतराष्ट्र का शोक	६८३१	1. Dhritrashtra's grief	6831
२	धृतराष्ट्र का रुदन	३७	2. His lamentations	37
३	तथा	४५	3. Do	45
४	कृपाचार्य का वाक्य	५२	4. Kripa charya's speech	52
५	दुर्योधनका वाक्य	५९	5. Duryodhan's speech	59
६	तथा	६५	6. Do Do	65
७	शल्यका सेनापति होना	६९	7. Shalya made commander	69
८	श्लोक रचना	७४	8. Arrangement of forcea	74
९	संकुल युद्ध	८०	9. General fighting	80
१०	तथा	८५	10. Do Do	85
११	तथा	९३	11. Do Do	93
१२	शल्य व युधिष्ठिर	६९००	12. Shalya and Yudhishtir	6900
१३	संकुल युद्ध	७	13. General fighting	7
१४	तथा	१३	14. Do Do	13
१५	तथा	१८	15. Do Do	18
१६	शल्य व युधिष्ठिर	२२	16. Shalya and Yudhishtir	22
१७	शल्यवध	३०	17. Shalya's death	30
१८	दुर्योधनकी पराजय	४२	18. Duryodhan's army routed	42
१९	संकुल युद्ध	४७	19. General fighting	47
२०	शल्य वध	५६	20. Shalya slain	56
२१	संकुल युद्ध	६०	21. General fighting	60
२२	तथा	६४	22. Do Do	64
२३	तथा	६९	23. Do Do	69
२४	अर्जुनका पराक्रम	८०	24. Arjun's bravery	80
२५	संकुल युद्ध	८८	25. General fighting	88
२६	दुर्मर्शापादि का वध	९५	26. Durmarshan and others slain	95
२७	संकुल युद्ध	७०००	27. General fighting	7000
२८	शकुनि और उलूक वध	६	28. Shakuni and Uluk slain	6
२९	हृद प्रवेश	१४	29. Entry in the lake	14
३०	गदा पर्व प्रारंभ	२५	30. Gada Parva.	25
३१	दुर्योधनकी तलाश	३३	31 Search for Duryodhan	33
३२	युधिष्ठिर दुर्योधन संवाद	४२	32 Yudhishtir and Duryodhan	42
३३	भीम व दुर्योधन संवाद	५०	33 Bhim and duryodhan	50
३४	वलदेव आगमन	५७	34 Baldeva's arrival	57
३५	वलदेवजी की तीर्थ यात्रा	६०	35 Baldeva's pilgr mage	60

वर्षाय	विषय	पृष्ठ	Chapter contents	Page
३६	वल्लदेवजीकीतीर्थयात्रा	७१	36 Baldeva's pilgrimage	71
३७	तथा	७७	37 do do	77
३८	तथा	८४	38 do do	84
३९	तथा	९१	39 do do	91
४०	तथा	९६	40 do do	96
४१	तथा	७१००	41 do do	7100
४२	तथा	५	42 do do	5
४३	तथा	१०	43 do do	10
४४	युधिष्ठिर दुःशोचन सेवाद	१६	44 Yudhishtir and Duryodhan	16
४५	स्कंधो पास्यान	२२	45 The history of Saa dh	22
४६	सारस्वतोपाख्या	३१	46. D., Siraswat	31
४७	तथा	४२	47. Baldeva's pilgrimage	42
४८	तथा	४७	48. Do Do	47
४९	तथा	५५	49 do do	55
५०	तथा	५८	50 do do	58
५१	तथा	६५	51 do do	65
५२	तथा	७२	52 do do	72
५३	तथा	७६	53 do do	76
५४	तथा	८०	54. do do	80
५५	मदायुध	८५	55 fighting with the mace	85
५६	तथा	९०	56. do do	90
५७	तथा	९६	57. do do	96
५८	तथा	७२०५	58. do do	7205
५९	युधिष्ठिर का खेद	११	59 Yudhishtir's grief	11
६०	वल्लदेवजी का क्रोध	१५	60 Baldeva's anger	15
६१	श्रीराम पाण्डव सबद्ध	२१	61. Krishna and the Pandavas	21
६२	शक्तिना पुरकोजाना	२०	62. Krishna goes to Hasthnapur	29
६३	गान्धारी से बातकरना	३४	63 A talk with Gandhari	34
६४	दुःशोचन का क्रोध	४३	64 Duryodhan's grief	43
६५	अश्वत्थामा का अभियेक	४८	65. Ashwatthama depu ed	48

ॐ कर्णपर्व का सूचीपत्र ॐ

Index to Karas Parv

अध्याय विषय पृष्ठ	Chapter Contents	Page
१ कर्ण का सेना पति होना	1 Karan made commander	6207
२ धृतराष्ट्र वनजय	2 Dhritrashtra and Sanjaya	10
३ तथा	3 Do Do	11
४ धृतराष्ट्र का विलाप	4 Dhritrashtra's grief	16
५ सजय वचन	5 Sanjaya's talk	19
६ तथा	6 Do	26
७ तथा	7 Do	31
८ तथा	8 Do	35
९ धृतराष्ट्र का विलाप	9 Dhritrashtra's grief	39
१० कर्ण का सेना पति होना	10 Karan's installation	50
११ सेना का रचना	11 Formation of army	57
१२ श्रेम धूम्र पथ	12 Kshetudhruata slain	63
१३ विन्दा नुविन्द वध	13 Vind and Anuvind slain	69
१४ चित्र वध	14 Chitra slain	73
१५ अश्वत्थामा का युद्ध	15 Ashwathama fights	78
१६ अश्वत्थामा व अर्जुन	16 Ashwathama and Arjun	83
१७ अश्वत्थामा की पराजय	17 Ashwathama defeated	90
१८ दंडधर वध	18 Dandidhar slain	95
१९ सकुल युद्ध	19 General fighting	99
२० पाण्ड्य वध	20 Pandya slain	6307
२१ सकुल युद्ध	21 General fighting	14
२२ तथा	22 Do Do	19
२३ सहदेव दुशासन युद्ध	23 Sahadev and Dushasan	23
२४ कर्ण का पराक्रम	24 Karan's bravery	26
२५ सुतसोम सौवल युद्ध	25 Sutsum and Sauval	35
२६ शिखंडी व कृतवर्मा	26 Shikhandi and Kritvarma	41
२७ अर्जुन की विजय	27 Arjun's victory	45
२८ सकुल युद्ध	28 General fighting	50
२९ तथा	29 Do Do	56
३० पृथम दिन का युद्ध	30 First day's fighting	60
३१ कर्ण व दुर्योधन	31 Karan and Duryodhan	67
३२ शल्य सारथी	32 Shalya as driver	76
३३ त्रिपुर का आख्यान	33 History of Tripur	84
३४ तथा	34 Do Do	91
३५ शल्य सारथी	35 Shalya as driver	6410
३६ त्रिपुर का आख्यान	36 History of Tripur	16

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter contents	Page
३७ तथा		२०	37. Do Do	20
३८ तथा		२७	38. Do Do	२7
३९ शल्य सारथी		३१	39. Shalya as driver	३1
४० कर्ण व शल्य संवाद		३६	40. Karan and Shalya	36
४१ हंस और काक		४३	41 Swan and Jackdaw	43
४२ कर्ण व शल्य		५०	42. Karan and Shalya	50
४३ तथा		५७	43. Do Do	57
४४ तथा		५९	44. Do Do	59
४५ तथा		६१	45. Do Do	1
४६ संकुल युद्ध		७२	46 General fighting	72
४७ तथा		७५	47. Do Do	75
४८-९ तथा		८३	48-9 Do Do	84
५० कर्ण का युद्ध		९४	50. Karan's fighting	94
५१ संकुल युद्ध	६१००		51. Genral fighting	6500
५२ तथा	९		52. Do Do	9
५३ तथा	१४		53. Do Do	14
५४ संसप्तक	१९		54. The Sansaptaks	19
५५ युधिष्ठिर पराजय	२४		55. Yudhishtir's def-at	24
५६ संकुल युद्ध	२८		56. General fighting	29
५७ अश्वत्थामा का प्रण	४५		57. Ashwathama's vow	45
५८ कृष्ण संवाद	४७		58. Krishna's talk	47
५९ अश्वत्थामा संवाद	५३		59. Ashwathama's talk	53
६० संकुल युद्ध	६१		60. General fighting	61
६१ तथा	७१		6 Do Do	71
६२ युधिष्ठिर पराजय	७९		62. Yudhishtir's defeat	79
६३ नकुल सहदेव	८२		63 Nakul and Sahadev	82
६४ संकुल युद्ध	८७		64. General fighting	87
६५ अर्जुन का युधिष्ठिर के पास जाना	९५		65. Arjun goes to Yudhishtir	95
६६ युधिष्ठिर संवाद	९८		66. Yudhishtir's talk	98
६७ अर्जुन का प्रण	६६०४		67. Arjun's vow.	6604
६८ युधिष्ठिर संवाद	८		86. Yudhishtir's talk	8
६९ कृष्ण अर्जुन संवाद	१२		69. Krishna and Arjun,	12
७० युधिष्ठिर का अपमान	२४		70. Yudhishtir insulted	24
७१ युधिष्ठिर अर्जुन संवाद	३३		71 Yudhishtir ana Arjun	33
७२ कृष्णार्जुन संवाद	३८		72 Krishna and Arjun	38
७३ तथा	४३		73 Krishna and Arjun	43
७४ अर्जुन की आत्मश्लाघा	५६		74 Arjun's self-praise	56

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter contents	Page
७५	संकुलयुद्ध	६२	75 General fighting	62
१६	विशोक संवाद	६६	76 Vishoka's talk	66
७७	शाकुनि पराजय	७२	77 Shakuni's defeat	72
७८	संकुलयुद्ध	८२	78 General fighting	82
७९	तथा	८९	79 Do Do	89
८०	तथा	६७०१	80 Do Do	6701
८१	तथा	५	81 Do Do	5
८२	भीमसुशासन	११	82 Bhim and Dushasan	11
८३	सुशासन बध	१७	83 Dushasan slain	17
८४	नकुल पराजय	२३	84 Nakul defeated.	23
८५	वृषसेन बध	२९	85 Vrishasen slain	29
८६	श्रीकृष्ण संवाद	३५	86 Shri Krishn's speech	35
८७	कर्म और अर्जुन	३८	87 Karan and Arjun.	38
८८	अश्वत्थामा संवाद	५१	88 Ashwathama's speech	51
८९	कर्म अर्जुन	५७	89 Karan and Arjun	57
९०	रथ चक्रका फंसना	७२	90 The car wheel grounded	72
९१	कर्म की शुरु	८६	91 Karan's death	86
९२	शल्य की वचन	९८	92 Shalya's speech	98
९३	कौरवों की पराजय	६८०१	93 The Kauravas routed	6801
९४	शिबिर को जाना	८	94 Retreat to camp	8
९५	कौरवों का जागना	१८	95 The Kauravas routed	18
९६	युधिष्ठिर का हर्ष	२०	96 Yuhishthir's joy	20





महाभारत

सौप्तिक पर्व

नारायणं नमस्कृत्य नरैश्चैव नरोत्तमम् ।

देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

सञ्जय उवाच । ततस्ते साहिता वीरा प्रयाता दक्षिणामुक्ता । उपास्यमानवेलायां
शिविराङ्गयास्तमागता ॥ १ ॥ त्रिमुष्पवाहांस्वर्षिणी भीता समभवस्तदा । गहनं देशमां
साद्य प्रचुञ्चनाभ्यविशन्त ते ॥ २ ॥ सेनानिवेशनभितो नातिवृत्तमवस्थिताः । विहृष्टा
निश्चितैः शस्त्रैः समन्तात् सूनविक्षता । दीर्घमुष्णञ्च तिद्वस्वपाण्डवानेव चिन्तयन्
॥ ३ ॥ श्रुत्वा च नितदं घोरं पाण्डवानां जयैषिणाम् अनुसारमवाङ्गीताः प्रामुखाः
माद्रवन् पुन ॥ ४ ॥ ते मुहूर्त्तं ततो गत्वा भ्रातृवादाः पिपासिताः । नामृष्यन्त महे

अध्याय १ ॥

श्रीनारायण नरोत्तम नरको और सरस्वती देवीको नमस्कार करके जय
नाम महाभारत इतिहासको वर्णन करताहूँ सञ्जयनालेइसके पीछे बहवीर एकसाथही
दक्षिण ओरको चले और मूर्यास्तके समय डेरोंके पास आये । १। तब वह शीघ्रही
रथोंको छोड़ कर भयभीत हुये और घनदेशको याकर युद्ध निवासी हुये । २। अपनी सेना
के निवासस्थान से कुछ थोड़ेही अन्तरपर निपत हुये तेजशस्त्रोंसे छुट्टेअंग चारोंओर
से घायल उन वीरोंने लम्बी और उष्णश्वासा लेकर पांडवोंकी चिन्ताकरी । ३।
फिर विजयाभिलाषी पांडवों के घोर शब्दको सुनकरपीछा करनेके भयसे भयभीत
होकर पीछेकी ओरको चलादिये । ४। वह सब एकमुहूर्त्त चलकर नृपाल और
थकीसवारी वाले सह न सके वह बड़े धनुषधारी शीघ्र और अशान्तताके आधीन

SAUPTIK PARV II,

CHAPTER I.

Having bowed down to Narayan, to the best of males and to
Saraswati, let us speak of the history of the Victory. Sanjaya said:
"Then the warriors went together southwards and approached the
camp at sunset. They came down from their cars in terror and en-
tered a dense forest a short distance from their camp. With wounded
bodies and deep sighs, they thought of the Pandavae. Then hearing
the dreadful uproar of the victorious Pandavae, they receded further

स्वासा. क्रीडाधर्मवशात्कृताः । राक्षो घघेन सन्तप्ता मुहूर्त्तं समधीस्थिताः ॥५॥ घृतराष्ट्र
 उयाच । अधोद्रे यमिदं कर्म कृतं भीमेन सञ्जय । यत् स नागायुतमाणः पुत्रो मम
 निपातितः ॥ ६ ॥ अधोऽध्याः सर्धभूतानां वज्रं हननो युवा । पाण्डवै. समरे पुत्रो निहतो
 मम सञ्जय ॥ ७ ॥ न दिष्टमभ्यतिक्रान्तुं शक्यं गावल्गणे नरैः । यत् समेत्य रणे
 पार्थः पुत्रो मम निपातितः ॥ ८ ॥ अद्रिसारमयं नूनं हृदय मम सञ्जय । हतं पुत्रशत
 श्रुत्वा यत्र क्षीणं सहस्रबा ॥ ९ ॥ कथं हि वृद्धमिद्युते हहपुत्रं भविष्यति । न ह्यहं
 पाण्डवेषस्य विषये घस्तुमुत्सहे ॥१०॥ कथं राज्ञः पिता भूत्वा स्वयं राजाच्च सञ्जय
 प्रेष्यभूत. प्रवर्त्तय पाण्डवेषस्य शासनात् ॥११॥ आज्ञाप्य पृथिवीं सर्वो स्थित्वा भूर्देनि
 सञ्जय । कथमद्य भविष्यामि मेष्यभूतो दुरन्तकृत् ॥ १२ ॥ कथं भीमस्य बाक्यानि
 श्रोतुं शक्यामि सञ्जय । येन पुत्रशत पूर्णमैकेन निहतं मम ॥ १३ ॥ कृतं सत्यं घष

और राजा के मारे जाने से दुःखी चित्त होकर एक मुहूर्त्तक नियत हुये । ५ ।
 घृतराष्ट्र बोले ह संजय भीमसेनेने यह कर्म श्रद्धाके अयोग्य किया जो उसदश
 हजार हाथीके समान मेरे पुत्रको मारा । ६ । हे संजय वह मेरापुत्र जो १के सब
 जीवोंसे अवध्य वज्रके समान हृद शरीरवालाया युद्धमें पांडवोंके हाथसे मारागया । ७
 हे गोलगणके पुत्र संजय मनुष्यों से प्रारब्ध उल्लंघन करनेके योग्य नहीं है जो
 मेरा पुत्र पांडवों के सम्मुख होकर मारागया । ८ । हे संजय निश्चय करके मेरा
 हृदय पत्थर है जो सौपुत्रों को मृतक सुनकर भी विदीर्ण नहीं होता । ९ । मृतक
 पुत्रवाला वृद्धों का मिथुन किसप्रकार से रहैगा मैं पांडवों के देश में निराम करने
 को विचार नहीं करनाहूँ । १० । हे संजय मैं राजाका पिता आप राजा होकर
 पांडवोंका आज्ञावर्ती होकर सेवकके समान कैसे कर्मकरूंगा । ११ । हे संजय पृथ्वी
 पर राज्यशासन करके और सब राजाओं के मस्तकपर नियतहोकर कैसे उसकी
 आज्ञाका पालनकरूंगा जिसने कि मेरे पुत्रोंका एक पूरा सैकड़ा मारडाला । १२ ।
 हे संजय वचन को न करनेवाले उस मेरे पुत्रने महात्मा विदुरजी के वचनको
 सत्याक्रिया हे संजय कठिन नाश करनेवालेका मैं कैसे आज्ञावर्तीहूंगा और किस

for fear of chase. But they could not go very far with their feeble
 bodies and (at least, and had to stop again. The great warriors, enrag-
 ed, disheartened and sorrowful at the fall of their prince, stood there for
 a while." Dhritishashtra said, "It grieves me to hear that Bhishma slew
 my son who was like a myriad of elephants. 6 He was unslayable
 by others, with body hard as vajra, yet he was slain by the Pandavas.
 Fate is surely insurmountable, for my son fell down before the Pan-
 davas. Surely my heart is hard as it does not break on hearing the
 news of the death of my hundred sons. How can an old man live
 without sons? I do not think that I shall live with the Pandavas. Be-
 ing a king and father of a king, how can I obey the Pandavas? 11.
 Having ruled over kings and kingdom, I cannot obey him who des-
 troyed my hundred sons. My son has proved the prediction of Vidur

लक्ष्य विदुरस्य महात्मनः । अकुर्वता घञ्जलेन मम पुत्रेण सञ्जय ॥ १४ ॥ अघर्मण हते
 तात पुत्रे दुर्योधने मम । कृतवर्मा कृपो द्रौणि- किमकुर्वत सञ्जय ॥ १५ ॥ सञ्जय-
 उवाच । गत्वा तु तावका राजभ्रातिदूरमवाश्रिताः । अपस्यन्त घनं घोरं नानादुमलता
 वृतम् ॥ १६ ॥ ते मुहूर्त्तं तु विश्रम्य लब्धतोयैर्हयोत्तमैः । सूर्यास्तमवेलायां समासे
 दुर्महद्वनम् ॥ १७ ॥ नानामृगगणैर्जुष्टं नानापक्षिगणावृतम् । नानादुमलताञ्जलं नाना
 व्यालनिषेवितम् ॥ १८ ॥ नानातोयै- समाकीर्णं नानापुष्पोपशोभितम् । पश्चिनीशत-
 संछन्नं नीलोत्पल समायुतम् ॥ १९ ॥ प्रविश्य तद्वनं घोरं वीक्षन्नाणाः समन्ततः ।
 शाखासहस्रसंछन्नं न्यग्रोधं दृश्यन्ततः ॥ २० ॥ उपेत्य तु तदा राजन् न्यग्रोधं ते महा-
 रथाः । दूरशुर्षिपदां धेया भेद्यं ते वै वनस्पतिम् ॥ २१ ॥ तेवतीर्य रथेषु च विप्रमुष्य
 च धाजिनः । उपस्पृश्य यथान्यायं सन्ध्यामन्वासत प्रभो ॥ २२ ॥ ततोऽं पर्वतश्रेष्ठ

मकार से भीमनेके वचन सुननेको समर्थहूंगा । १४ । हे संतप आर्य से मेरे
 पुत्र दुर्योधनके मनेपर कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्रयथामाने क्या किया । १५ ।
 सञ्जय बोले हे राजा आपके वीर घोड़ादूर जाकर नियतहुये और नाशकार के
 वृक्ष लताओंसे संयुक्त घोरवनको देखा । १६ । उन्होंने जल पीनेवाके उत्तम घोड़ों
 समेत एक मुहूर्त्त विश्रामकरके सूर्यास्तके समय एक ऐसे वनको पाया । १७ । जो
 कि नानामकार के मृगसमूहोंसे सेवित प्रांतिप्रांतिके पक्षीगणोंसे व्याप्त और बहुत
 मकारके वृक्ष लतादिकोंसे भराआहु बहुत प्रांतिके मर्षोंसे सेवित । १८ । नानामकार
 के जलों से युक्त बहुत भेदके पुष्पोंसे शोभित सैकड़ों कपलनिगों से पूर्ण और
 नीले कमलों से संयुक्तथा । १९ । इसकेपीछे चारोंओरको देखते उन वीरोंने उस
 तव वनमें प्रवेश करके हजारों शाखाओं से युक्त बटके वृक्षको देखा । २० । हे राजा
 घोर उन नरोत्तम महारथियों ने बटवृक्षको पाकर उस उत्तम वृक्ष के नीचे जाक
 अपनेर रथों से उतरकर घोड़ोंको छोड़ा और न्यायके अनुसार स्नानादिक कर्के
 बहसव अपनी २ संध्याबंदन में प्रवृत्तहुये । २२ । इसके पीछे पर्वतों में उत्तम

by his waywardness. How can I obey that great destroyer? How shall I be able to hear Bhim's voice? What did Kritvarma Kripacharya and Ashwathama do, when my son was unjustly slain!" 15 Sanjaya said, "Your warriors stood at a short distance and saw the forest of large trees and creepers. They watered their horses and having rested themselves for a while, they found the evening come upon them in a part of the forest abounding in deer, birds, trees, creepers, serpents, water, flowers and lotus lakes. Wandering in various directions they came under a large banyan tree. 20. They came down from their cars and left their horses. They made ablutions and performed evening service. In the meantime the sun disappeared and the night, nourisher of all beings, prevailed. It was a star i

मन्त्रात् दिवाकरे । सर्वस्य जगतो धात्री शर्वरी समपद्यत ॥ २३ ॥ प्रहृन्स्रतरारामिः
 प्रकीर्णाभिरलंकृतम् । नभोशुकगिवाभाति प्रेक्षनीयं समन्ततः ॥ २४ ॥ इच्छया ते प्रथ
 जगन्ति ये सदा रात्रिचारिणः । दिवाचराश्च ये सदास्ते निद्रावशमागताः ॥ २५ ॥
 रात्रिञ्चराणां सत्त्वानां निर्घोषोभूत् सुदारुणः । क्रव्यादाश्च प्रमुदिता घोराः प्राप्ता च
 शर्वरी ॥ २६ ॥ तस्मिन्प्राप्तिमुखे घोरे दुःखशोकसमन्विताः । कृतवर्मा कृपो द्रोणिकर्पो
 पवित्रिशुः समम् ॥ २७ ॥ तत्रोपविष्टाः शोचन्तो न्यग्रोधस्य समीपतः । तमेवार्थमपि
 क्रान्तं कुरुपाण्डवयो क्षयम् ॥ २८ ॥ निद्रया च परीताङ्गा निषेधुधरणीतले । अग्नेन
 सुदृढं युक्ता विक्षता विविधैः शरैः ॥ २९ ॥ ततो निद्रावशं प्राप्ता कृपभोजौ महारथौ ।
 सुषोचितावदुःखाहौ निषण्णौ धरणीतले ॥ ३० ॥ तौ तु सुप्तौ महाराज अमशोकसम
 न्वितौ । महोदशयनोपेतौ भृगोरेव ह्यनाद्यवत् ॥ ३१ ॥ क्रोधान्बन्धुशं प्राप्तो द्रोणपुत्रस्तु
 भारत । नैव स्म स अगमाद्य निद्रा सर्प इव इवसन् ॥ ३२ ॥ न लेभे स तु निद्रां वै

अस्ताचल में सूर्य के पहुंचने पर सब जगत् की धात्री रात्रि वर्तमान हुई पूर्ण
 प्रद नक्षत्र और ताराओं अलंकृत चारोंओर से दर्शनीय आकाश स्वर्ण बिन्दुओं
 से जटित वस्तुके समान शोभायमान हुआ । २४ । जो रात्रि में घूमनेवाले
 जीवहैं वहसब नींद के स्वाधीन वर्तमान हुये फिर रात्रि में घूमनेवाले जीवों के
 शब्द भयानकहुये मांसभक्षी राक्षस अत्यन्त प्रसन्न हुये और घोररात्रि वर्तमानहुई
 । २६ । रात्रिके उसघोर मुखमें दुःखशोकसे संयुक्त कृतवर्मा कृपाचार्य और अश्व-
 त्यामा बराबर समीप बैठे उस वटक सम्मुख कौरव और पाण्डवोंके होनेवाले नाश
 को शोचते । २८ । नींदसे पूर्णशरीर और परिभ्रमसे अत्यन्त संयुक्त नानाप्रकारके
 बाणों से घायल पृथ्वीपर बैठ गये । २९ । इसवर्षाछे दुःखके अयोग्य और सुखके
 योग्य पृथ्वीपर बैठेहुये महारथी कृतवर्मा और कृपाचार्य नींदके वशीभूतहुये । ३० ।
 हे महाराज थकावट और शोकसेयुक्त पूर्वसमयमें बहुमूल्य शयनोंपर सोनेवाले वह
 दोनों अनाथोंके समान पृथ्वीपर सोगये । ३१ । हे भरतवंशी क्रोध और अज्ञान्ती
 में वर्तमान और तर्पिके समान आसलेते अश्वत्थामाजी ने निद्राको नहींपाया ३२
 शोकसे ज्वलितरूप उस वीरने निद्राको नहींपाया तबउस महाबाहुने उस घोरदर्शन

night and the sky looked as if spangled with gold dots. Sleep prevail-
 ed over creatures and the night rovers made a hideous noise. Car-
 nivorious rakshases were glad at the prospect of that dreadful dark
 night. 26. Merged in grief and sorrow, Kritvarma Kripacharya
 and Ashwathama sat together. Thinking of the great destruction of
 the Kauravas and Pandavas, tired and sleepy, they sat wounded with
 arrows. Kritvaama and Kripacharya, unaccustomed to bear such
 hardships, lay on the ground 30. Full of grief and tired, the two great
 warriors, accustomed to sleep on precious beds, slept on bare earth
 like helpless ones. Enraged and dissatisfied, sighing like serpents,

दृष्टमानो हि मन्थुना । श्रीक्षाञ्चकं महाबाहुस्तद्वनं घोरं दर्शयत् ॥ ३३ ॥ घोरः मानो
 बनोद्देशं नानासत्त्वैर्धिविवितम् । अपदयत महाबाहुन्यमोघं वायसैर्भृतम् ॥ ३४ ॥ तत्र
 काकसहस्राणि तां निशा पश्यन्नामयन् । सुप्तं स्वपन्ति कौरव्य पृथक् पृथुग्राभयः
 ॥ ३५ ॥ सुप्तेषु तेषु काकेषु विश्रब्धेषु समन्ततः । सोऽपश्यत् सहसायान्तमुलूकघोर
 दर्शनम् ॥ ३६ ॥ महास्वभं महाकायं धृष्यक्षं भ्रुषिगलम् । सुदीर्घघंनोत्तरं सुगर्भं
 मिव वेगितम् ॥ ३७ ॥ सोऽथ शब्दं मृदुं कृत्वा लीयमान इवाण्डजः । न्यमोघस्य
 ततः शाखां प्रार्थयामास भारतं ॥ ३८ ॥ सन्निपत्य तु शाखायां न्यमोघस्य विद्मगमः ।
 सुप्तान् जघात सुषट्कं वायसान्तकः ॥ ३९ ॥ केषाञ्चिद्दृच्छन्तु पक्षान् शिरांसि च
 चर्कत ह । चरणांश्चैव केषाञ्चिद्भञ्ज चरणायुधः । क्षणेनाहत्य बलघातु येऽथ
 दृष्टिपथे ह्यिता ॥ ४० ॥ तेषां शरीरावयवैः शरीरैश्च विशाम्पते* । न्यमोघमण्डल सर्वं

बनकोदेला । ३३ । कि नानाप्रकार के जीवों से संवित बनके घोरको देखते
 महाबाहुने बटके वृक्षको काकों से संयुक्त देखा । ३४ । हे कौरव उस वृक्षपर
 हजारों काकोंने रात्रिमें निवास किया और मयकूर निवासी होकर सुख से निद्रा
 युक्तहुये । ३५ । चारोंओरमे उन विश्रब्ध काकोंके सोजानेपर उन अश्वरथाभाजी
 ने अरुस्माद् आनेवाले घोरदर्शन उलूकको देखा । ३६ । जो कि बड़ाशब्द बड़ा
 शरीर पीतनेत्र पिङ्गलवर्ण बहुत लम्बे नख और ऊंची नाक रखनेवाला गरुड़ के
 समान तीव्रगामी था । ३७ । हे भरतवंशी उस गुप्त आनेवाले के समान पक्षी ने
 मृदुशब्द करके बटकी शाखाको चाहा । ३८ । काकोंके कालरूप उसपक्षीने बट
 वृक्षकी शाखापर गिरकर मिलनेवाले बहुत से काकोंको मारा । ३९ । चरणरूपी
 शस्त्रधारिने किननोंही के पक्षसमेत शिरांकोकाटा और कितनोंहीके चरणोंको काटा
 उस बलघातने अपने सम्मुख देखनेवाले अनेक काकों को एक क्षणमात्र में काटा
 । ४० । हे राजा उनके शरीरों के अंग और शरीरों से बटके वृक्षका मंडल सब
 ओरसे ढरुगया । ४१ । इसके पीछे वह उलूक उनकाकोंको मारकर प्रसन्नहुआ
 वह शत्रुओंका पारनेवाला इच्छाके समान शत्रुओं को मारकर प्रसन्नहुआ । ४२ ।

Ashwathama could find no sleep That brave warrior did not sleep
 for grief and looked on at the dreadful forest. Looking at the various
 creatures of the forest, he saw a great number of crows on the banyan
 tree sleeping soundly and composedly in their nests. 35, While the
 crows were thus sleeping, Ashwathama saw an ill omened owl creep-
 ing towards them, With ominous sound, large, yellow body, yellow
 eyes, long claws and hooked beak, it flew fast like a garur. It flew
 softly and stealthily to a branch of the banyan tree and killed many
 crows. Having claws for weapons, it cut off the heads and wings of
 some and feet of others. It destroyed many of the crows in a moment.
 40. The parts of their bodies covered the circular ground beneath

संछन्न सप्ततमत्र ॥ ४१ ॥ तास्तु हत्वा तत काकान् कौशिको मुदितोऽप्रवत् ।
प्रतिक्रुय यथाकाशं शत्रूणां शत्रुसूत । ४२ ॥ तद्दृष्ट्वा सोपव कर्म कौशिकेन
कृत निशि । तद्भाष कृतसकलपो द्रौणिरकोऽन्वचिन्तयत् । ४३ ॥ उपदेश, कृतोत्तम
पक्षिणा मम सयुगे । शत्रूणां क्षययेयुःक, प्राप्तकालश्च मे मतः ॥ ४४ ॥ नाथ शक्यता
मया हन्तुं पाण्डवा जितक दिन । बलवन् कनोरमाहा लब्धलक्ष्याः प्रहारिण ॥ ४५ ॥
राक्ष सकाशास्त्रेण तु प्रीक्षितो वधो मया । पतमानिसमा वृत्तिमाथापारमर्षिनाशि
गिम ॥ ४६ ॥ न्यायतो युध्यमानाय प्राणत्यागा न सशयः । छत्रना तु भवेत्सिद्धिः
शत्रूणाञ्च क्षये महान् ४७ ॥ तत्र सशयितादर्थं घोषो निःसशया भवेत् । त जना बहु
म शन्ते ये च शास्त्रविशारदा ॥ ४८ ॥ पक्ष्याप्यत्र भवेद्भाष्य गार्हित लोकनिन्दित
तम् । वर्त्तन् नानभ्येण शत्रुघ्नेण वर्त्तन् ॥ ४९ ॥ निदितानि च

रात्रिप उल्लूके क्रियेत्युपे उत छलयुक्त काका देखकर उस छलमें सकल्पकरनेवाले
अकेले भ्रष्टरथामार्जुने विचारकिया । ४३ । कि इस पक्षीने युद्धमें मुझको उपदेश
क्रियाई मेरे मतसे शत्रुओंका नाशकारी समय वर्त्तमानहुआ । ४४ । अब विजयसे
शोभारानेवाले पराक्रमी कृतात्माह लक्ष्यके प्राप्त करनेवाले और प्रहारकरनेवाले
पाण्डव मेरे हाथ से मारने के योग्य नहीं हैं । ४५ । और मैं राजाके सम्मुख उन
सबके मारनेकी प्रतिज्ञाकराई पतंग और अग्निकेसमान अपने नाशकरनेवाली वृत्ति
में मटतहोकर मुझ न्याय से लड़ने वालेका निश्चय प्राणत्यागहोगा और छलकरके
बड़ी सिद्धिसेत शत्रुओं का बदानाशहोगा । ४७ । इसहेतुसेजो संशयात्मक अर्थके
निरसशयात्मक अर्थहीना योग्यहैं जो विद्यावान् मनुष्यहैं वह इसको बहुत मानते हैं
। ४८ । ऐसे स्थानपर जो वचनचाहें गार्हित और लोकनिन्दितभी होंयें वह त्रिप
धर्ममें मनुष्यहेतुनेवाले मनुष्यको भ्रष्टकरणना योग्यहैं ४९ । अशुद्ध अन्तःकरणवाले
पाण्डवोंने ऐसे छत्रसे भरेहुये कर्मकिये जोकि गार्हित और पदपदपर निन्दित हैं इस
विषय में पूर्व समयमें न्यायके देखनेवाले धर्मका विचारकरनेवाले मुख्यकाके ज्ञाता
लोगोंके कहेहुये मुख्य प्रयोजन करनेवाले लोक सनेजाते हैं । ५१ । शत्रुओं के
धक्काने पृथक् होने और भोजनकरने चक्रेजाने और प्रवेशोंनेपर शत्रुकी सेनाको
मारना चाहिये । ५२ । जो सेना आभीरात्रिकी निद्राकेसमय निद्रासे पीड़ित और

the tree. The owl was much pleased at the destruction of its enemies,
the crows. Seeing the deceitful work of the owl at night, Ashwattha
ma thought within himself " The bird has taught me. I think the
death of the enemies is not far off. The victorious Pandavas cannot
be slain by open warfare and I have made a vow to the king to slay
them. My case will surely be like that of an insect falling in fire, if
I fight honestly with them I can destroy them in great numbers by deceit
and wise men will not find fault with me. I must act upon pernicious
proverbs. The deceitful Pandavas have performed various wicked deeds
and we have many verses to the effect that we should slay enemies
and their warriors when they are tired, dazed and engaged in eating

सर्वाणि क्वास्तिताभि पदे । सोपधानि कृतायेत पाण्डवेरकृताः। ५० अस्मिन्नये
पुरा गीता भ्रूयन्ते धर्मचिन्तकैः । श्लोका न्यायमवेक्ष्यस्मिन्त्वार्यास्तत्त्वदर्शिभिः ॥५१॥
परिभ्रान्ते विदीर्णेषु वा मुञ्जानि वापि शत्रुभिः । प्रस्थाने वा प्रवेशे वा प्रहर्षव्यं रिपो
बलम् ॥ ५२ ॥ निद्रासंभ्रंशे च तथा नष्टप्रणायकम् । भिन्नयोध बलं यच्च द्विधा
युक्तम् बद्धवेत् ॥ ५३ ॥ श्येव निश्चवं चके सुप्ताना निशि मारणे । पाण्डूना सह
वाञ्छासैदौणपुत्रः प्रतापवान् ॥ ५४ ॥ स क्रूरं मतिमारुधाय विनिश्चत्य मुहुर्मुहुः ।
सुप्तौ प्रावोचयत्तो तु मातुलं भोजनमेव च ॥ ५५ ॥ तौ प्रयुद्धौ महात्मानौ रूपभोजौ महा
बलौ । नोत्तरं प्रतिपद्येता तत्र युक्त द्विया वृत्तौ ॥ ५६ ॥ स मुहूर्त्तमिव ध्यात्वा वास्य
विह्वलाप्रवीत् । इतो दुर्योधनो राजा एकवीरो महाबलः । यस्यायै वैरमस्माभिरा
सकं पाण्डवै सह ॥ ५७ ॥ एकाकी बहुभिः क्षुद्रैः राहवे शुखविक्रमः । पार्थितो भीम
सेनेन एकाद्यश्चमपतिः ॥ ५८ ॥ वृकोदरेण क्षुद्रेण सुश्रीशसिमाद कृतम् । मुञ्जाभिषि
कस्य शिरः पादेन परिमृज्जता ॥ ५९ ॥ वितद्वन्ति च पाञ्चालाः स्वैरुन्ति च हसन्ति

नाश युक्त प्रधान पृथक् २ शूरोवाली और दोभाग होनेवाली होय । ५१ । उसपर
प्रहार करना चाहिये प्रतापवान् अश्वत्थामाने इसप्रकार पांचालों समेत रात्रिके
समय सोतेहुये पांडवों के मारने का निश्चय किया । ५४ । उसने निर्दयी बुद्धि में
नियतहोकर वारम्बार निश्चयकरके अपने मामा और और भोजनवंशी कृतवर्मा इन
दोनों सोनेवालोंको जगाया । ५५ । तब उनजगनेवाने महात्मापहावली लज्जयुक्त
कृपाचार्य और कृतवर्माने एकमुहूर्त्तपर ध्यानकरके आंध्रुओंसे व्याकुल नेत्रहोकर
यह बचत्रकहा कि बहवड़ा बलवान् एकवीर राजा दुर्योधन मारागया जिसके
हेतुसे हमारी शत्रुता पाण्डवों के साथ हुई । ५७ । युद्धमें बहुत नीचों समेत ग्यारह
अशौहिणी सेनाका स्वामी बड़े पवित्र पराक्रम वाला अकेला दुर्योधन भीमसेनके
हाथ मारागया । ५८ । महाराजाधिराजका शिर जो पैरों से मर्दनकिया यह
नीच नीमसेनने बड़ा निर्दय कर्मकिया । ५९ । पांचाल देशी गर्जने हैं क्रीड़ा
करते हैं हंसते हैं सैकड़ों शह्रों को वनाते हैं और मसन्निचित दुन्दभियों को भी

and walking or otherwise at a disadvantage. One may attack an enemy at midnight or when they are divided "Thus glorious Ashvathama thought of slaying the Pandavas and with this view awakened his uncle and Kritvarma. 55. The two heroes on awakening shed tears and said after meditation - " Brave Duryodhan for whom we made the Pandavas our enemy, is slain The lord of eleven akshauhinis has fallen in fighting with Bhim He did a wicked deed in touching the king's head with his feet. The Panchals are exulting, laughing and sounding their conchs and drums The sounds of their musical instruments fill the air. We hear the neighing of their horses, the grunt of their elephants and the leonine roars of

च । धमन्ति शङ्कान् शतशो हृष्टा घ्नन्ति च दुन्दुभीन् ॥ ६० ॥ वादित्रघावस्तुमुला
 धीमश्च शखनिस्वैः । आनिलेनेरिनो घोरो दिशः पूर्यतीव ह ॥ ६१ ॥ अश्वाना ज्ञेय
 माणानां गजानाञ्चैव वृहताम् । सिद्धनादश्च शूराणां श्रूयते सुमहानयम् ॥ ६२ ॥ दिशो
 प्राचीं समश्चित्य हृष्टाना गच्छता भूशम् । रथनेमिस्वनाञ्चैव श्रूयन्ते लोमहर्षणा
 ॥ ६३ ॥ पाण्डवैर्घातैरश्वभूषणा यदिदं कदनं कृतम् । अयमेव प्रयः शिष्टा अस्मिन्महति
 वैशस ॥ ६४ ॥ केचित्प्रामशतप्राणाः केचित् सूर्योत्थकोषिदाः । निहताः पाण्डवपैस्ते
 मन्दे कालस्य पर्ययम् ॥ ६५ ॥ एवमेतेन भाव्यं हि नूनं कार्येण तत्पतः । यथा ह्यस्ये
 रशी निष्ठा कृते कार्येषुपि कुम्भरे ॥ ६६ ॥ भवतोस्तु यदि प्रज्ञा न मोहा दपनीयते ।
 शपन्नेऽस्मिन्महापर्ये यन्तः श्रेयस्तदुच्यताम् । ६७ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणिमन्त्रणायाम् प्रथमोध्यायः १ ॥

बजाते हैं । ६० । शङ्को के शब्दोत्पुक्त वायुसे चलायमान बाजों के घोरशब्द
 दिशाओंको पूर्णकरते हैं । ६१ । हींमते घोड़े और चिहाडते हाथियोंके वदेशब्द
 और शूरीरोंकेभी यह सिंहनाद सुनेजाते हैं । ६२ । पूर्वादिशामें नियत होकरअत्यन्त
 प्रमत्तचित्त जानेवालों के रथ नेमियोंके शब्द जो कि रोमांचके सड़े करनेवाले हैं
 वहभी सुनेजाते हैं । ६३ । पाण्डव लोगोंमें धृतराष्ट्रके पुत्रोंका जो यह नाशकिया
 है इतवेड़भारी नाशमें हम तीनशेष हैं । ६४ । कितनेही सौ हाथोंके समान पराक्रमी
 और कितनेही सबशस्त्र विद्याओं में कुशल थे वह पाण्डवों के हाथसे बारम्बरे में
 समयकी विपरीयता को माननाहूँ । ६५ । निश्चय करके इस प्रकारके इनही कर्म
 मूत्रमयेत विचार करनेत योग्यहैं जैसे कि कठिन कर्मकं करनेपर भी ऐसीदशा है
 । ६६ । भारकी बुद्धि बादि मोहने दूर नहो तो इसरड़े प्रयाजनके वर्चमान होनेपर
 जो हयारा द्विवकारी और भन्नाहें उसको कहो ६७ ।

their warriors. 62. We hear the rumbling of their car wheels. The
 Pandavas have destroyed all our warriors except us three. Some of
 them had the strenght of a hundred elephants and clover in fighting.
 The times are changed no doubt. 65. Surely we must give our
 thought to all these things; for we are reduced to this condition in
 spite of our great efforts. Let us know please, what is best to be done
 under the circumstances, if your intellect be not confounded with
 distress." 67.

रूप उवाच । श्रुतन्ते वचन सर्वं यद्यदुक्तं त्वयाविभो । ममापि तु वचः किञ्चिच्च
 ळ्लुणुष्वद्य महाभुज ॥ १ ॥ आध-धा-मानया सर्वे निबद्धा कर्मणोर्द्वयोः । दैवे पुरुष
 कारश्च प्रर ताभ्या न विद्यते । २ ॥ न हि दैवेन सिध्यन्ति कार्याण्येकेन सत्तम । न
 चापि कर्मणैकेन द्वाभ्या सिद्धिस्तु योगत ॥ ३ ॥ ताभ्यामुभाभ्यां सर्वार्था निबद्धा
 ह्यवनोत्तमा । प्रवृत्ताश्चैव हृदयन्त निवृत्ताश्चैव सर्वथा ॥ ४ ॥ पर्जन्य पवते वर्षन्
 किन्तु साधयते फलम् । वृष्टक्षेत्रे तथा वर्षन् किं न साधयते फलम् ॥ ५ ॥ उत्थानञ्चा
 प्यदैवस्य ह्यनुत्थानश्च दैवतम् । स्वर्धं भवति सर्वप्र पूर्वकस्तत्र निश्चय । ६ ॥ सुपृष्टे
 तु यथा दैवे सम्यक् क्षेत्रेच कर्षित । घञि महागुण सूयात्तथा सिद्धिर्हि मानुषी ॥ ७ ॥
 तपोदैव विनिश्चित्य स्वयमेव प्रवर्षत । प्राज्ञा पुरुषकारेणु वचन्ते दाक्ष्यमास्थिता ॥ ८ ॥

अध्याय २ ॥

कृपाचार्य्य बोले हे समर्थ जो तुमनेकहा वह तुम्हारा सबवचन सुना हे महा
 वाहु अब मेरे कुछ वचनकोभी सुन । १ । कि मारव्य और उद्योग इन दोनोंक
 कर्मों में सब बंधेहुये हैं इनदोषातों से कुछ अधिक वर्तमान नहीं है । २ । हे श्रेष्ठ
 अकेले दैव सेही समारके कार्य्य पूरेनी होते और न केवल उद्योगही से सिद्ध
 होते है इसदशामें दोनों के मिलनेसेही कार्य्यकी पूर्णता होती है । ३ । सबछोटे बड़े
 प्रयोजनइ-ही दोनों बातोंसे बंधेहुये है और सब कार्य्यजारी होकर पूर्णहोते दिखाई
 पडते है । ४ । पर्जन्यपर वर्षा करनेवाला पर्जन्य किस फलको सिद्ध नहीं करता
 है उसीप्रकार जोतेहुये खेतमें भी किसफलको प्राप्त नहीं करता है । ५ । मारव्य
 को श्रेष्ठ माननेवाले उद्योग और उद्योगसे रहित मारव्य भी निष्फल होता है इन
 दोनोंको सर्वत्र निश्चय करते हैं । ६ । जैसे कि अच्छंप्रकार दैवकेवर्षने और खेतके
 जोतनेपर बीज बड़े गुणवाला होता है उसीप्रकार मनुष्यों का भी अभीष्ट सिद्धकरना
 है । ७ । इनदोनोंमें दैव बलवान् है कि वह आपही बिना उपायके फलदेनेको
 प्रवृत्तहोता है इसीप्रकार सावधान और ज्ञानी मनुष्य अच्छा निश्चयकरके उपाय में
 प्रवृत्तहोत है । ८ । हे नरोत्तम मनुष्यके सबकर्म उन दोनोंसेही जारी और पूरेहोते

CHAPTER II

Kripacharya said ' I have heard all that you said, now hear me
 all men are bound by Fate and prowess, and by nothing more. All
 works are neither performed by Fate alone nor by prowess both must
 be united to accomplish deeds. All small and large works depend
 upon those two things and we see their continuation and end. The
 rain falls on mountains and fields and gives fruits at both places. 5
 Fate and prowess are fruitless without each other, this is an admitted
 fact. Human enterprises depend upon fate as the hopes of a cultivator
 do on rain. Fate, however, is more powerful as it can give fruit
 without toil. Wise men engage in doing things after deep thought.

ताभ्यां सर्वे हि कापार्या मनुष्याणां न रथं विचेष्टतस्मद्दृश्यते निवृत्तास्तु तथैव च ॥ ९ ॥ कृतः
 पुण्यकारश्च सोपि देवेन सिन्धति। तथास्य कर्मणः कर्तुरभिनर्तते फलम् ॥ १० ॥ उत्था
 मन्तु मनुष्याणां दृष्टाणां देववर्जितम्। अफलं दृश्यते लोके सस्यगन्धुपपादितम् ॥ ११ ॥
 तत्रालसा मनुष्याणां ये भवन्त्यमनस्विनः। उरथानन्ते विगर्हन्ति प्राणानास्तत्र रोचते
 ॥ १२ ॥ प्रायशो हि कृतं कर्म नाफला दृश्यते मुनि। अकृत्वा च पनर्दुर्लभं कर्म दृश्येन्महा
 कलम् ॥ १३ ॥ चेष्टाम कुर्वन्नुभते यदि किञ्चिच्च हच्छया। यो वा न लभतकृत्वा दुर्गो
 तांशुभापि ॥ १४ ॥ शक्नोति जीषितुं दक्षो नालम्ः सुकमेधते। दृश्यन्ते जीवलोक
 स्मिन् दक्षाः प्रायो हितेषणः ॥ १५ ॥ यदि दत्तः समारम्भात् कर्मणां नाश्रुते फलम्।
 नास्य चाख्यं भवेत् किञ्चिच्चलच्छस्यं चाधिगच्छति ॥ १६ ॥ अकृत्वा कर्म यो लोके फलं
 त्रिन्दति क्षिप्रितः। स तु वक्ष्यतां याति द्वेषो भवति प्रायशः ॥ १७ ॥ एवमतदनादस्य

देखनेमें आते हैं। ८। जो सपाय किया है वह भी देवसे ही सिद्ध होता है इसी प्रकार
 इन कर्मवालोंका कर्म सफल होता है। १०। सावधान चतुर मनुष्योंका अच्छे
 प्रकार से किया हुआ भी उद्योग जो देवसे रहित है वह लोकमें निष्फल दिखाई
 देता है। ११। मनुष्यों में जो लोग आलसी और असाहसी होगें वह उद्योगको
 बुरा कहते हैं उसको बुद्धिमान लोग अच्छा नहीं मानते। १२। बहुधा किया हुआ
 कर्म इस पृथ्वीपर निष्फल दिखाई देता है फिर दुःख होता है और कर्मको न करके
 वही फलको देखता है। १३। कर्मको न करके देवयोगसे जो कुछ पाता है और जो
 कर्म करके भी फलको नहीं पाता है वह दोनों दुर्लभ हैं। १४। सावधान और
 निरालस्य मनुष्य जीवता रहनेको समर्थ होता है और आलस्य युक्त मनुष्य सुखसे
 दृष्टि नहीं पाता है इस जीवलोक में कर्म करनेमें सावधान लोग बहुधा बुद्धिके
 चाहनेवाले दिखाई देते हैं। १५। जो कर्ममें सावधान मनुष्य प्रारम्भ कर्म से कर्म
 फलको नहीं भोगता है उसकी कुछ निन्दा नहीं होती है जो प्रायः होनेके योग्य अभीष्ट
 को नहीं पाता है। १६। और जो कर्म को न करके लोक में फलको पाता है वह
 निन्दित होता है और बहुधा शत्रु होता है। १७। जो मनुष्य इस प्रकार से इसको

The works of men are accomplished by both. Enterprises become successful by the help of providence. 10. The work of wise men when well performed can bear no fruit without God's blessing. The lazy and unenterprising speak ill of work and are therefore deposed by the wise. A work done often bears no fruit and the mind is thereby afflicted. The fruit of work, by providence alone or by prowess alone is difficult to attain. A careful and earnest worker is able to live, while a lazy person finds life a difficulty. 15. He who does not get the fruit of actions by Fate, is not to be blamed; but he who gets the fruit without work, creates enemies. He who works contrary to this principle creates difficulties: this is the opinion of wise men. A work becomes fruit

वर्तते यस्त्वतोऽप्यथा । स करोत्यारमनोऽनर्थानिव बुद्धिर्मानवः ॥ १८ ॥ हिन पुत्र-
कारेण वद्वि देवेन वा पुन । कारणाभ्यामपैताभ्यामुत्थानमफलं भवेत् । १९ ॥ हिन
पुत्रकारेण कर्म त्विह न सिध्यति । देवतेऽथो नमस्कृत्य यस्त्वर्षान् सम्परीहते । दक्षो
वाक्षिण्यसम्भो न स मोक्षे विहन्यते ॥ २० ॥ सुम्यगीहा पुनरिय नो ब्रह्मानुपसेवते ।
आपृच्छति च य भय करोति च हित वचः । २१ ॥ उत्सयोत्थाय हि सदा प्रहृष्या
ब्रह्मसम्पत्ता । ते स्म योगे पर सूक्त तन्मूला सिद्धिरुच्यते ॥ २२ ॥ ब्रह्मानां वचन
भूत्वा योऽयुत्थान प्रयोजयेत् । उत्थानस्य फल सम्पत् तदा स लभतेऽचिरात् । २३ ॥
शगात् क्रोधाद्ब्रह्मालोभात् योऽर्थानोहेत मानव । जनांशुश्चावमानो च स शीघ्रं भ्रष्टयेत्
भिय । २४ ॥ साय दुर्व्योघनेनार्थो लुब्धेनादीर्घवर्शिता अस म ज्य समारम्भो मूढ
त्वावधिचिन्तितः ॥ २५ ॥ हितबुद्धौ ननाहत्य समन्यासाद्युमि सह । धार्यमाणोऽक

निगादर करके इसके विपरीत कर्म करता है वह अपने अनर्थोंको उत्पन्न करता है
यह बुद्धिमानों की नीति है । १८ । फिर जब उद्योग अथवा देवसे रहित हो तब इन
दोनों इतुमोंसे उपाय निष्फल होता है । १९ । इसलोक में उपायमे रहित किया
हुआ कर्म सिद्ध नहीं होता है जो मनुष्य देवताओंको नमस्कार करके भ्रष्टरीति
से मयोजनों को चाहता है वह आलस्यसे रहित और सावधानी से सयुक्त है कर्म
की निष्फलता से नाशकां नहीं पाता है । २० । फिर अच्छेकर्मकी इच्छा यह है जो
दुर्दाका सेवनकरता है जो अपने कल्याणको पूछता है और उनके हितकारी वचनों
को करता है सदैव उठ कर वृद्धों के भ्रष्टीकृत पुरुष पूछने के योग्य है
वह पुरुष अभीष्ट सिद्ध करने में बड़े तेज है और मूल रखनेवाली सिद्धी कहेजात है । २१ ।
जो मनुष्य वृद्धों के वचनों को सुनकर उपाय में प्रहृष्ट होता है वह थोड़ेही समय
में उपायके फलको अच्छीगति से पाता है जो मनुष्य रागक्रोध भय और लोभ
से अभीष्टों को चाहता है वह अजितेन्द्रिय और अपमान करने वाला
भीषही लक्ष्मीसे रहित होकर नाश होता है । २४ । सो इसलोक में और भ्रष्टदर्शी दुर्गो
पनने भ्रष्टावृत्तसे यह विना विचारादुष्मा असर्पे कर्म प्रारम्भ किया और निषेध
करनेवाले शुभाचिन्तकों को अनादर करके नीचाँकी सखाइ से बड़े धृष्टवान

less without the help of providence or prowess. One cannot accomplish
work without earnestness and the blessing of heaven 20 One doing
work successfully, should ask the opinion of old men. The advice
of old men lays a safe foundation for work One doing a work with
the advice of old men, accomplishes it with but little trouble. He
who, being avaricious and resentful, wishes to accomplish his work,
soon becomes despised and loses wealth. The avaricious and careless
Duryodhan began his work foolishly and gave no heed to the advice
of old men. He made the Pandavas his enemies. An ill natured
man cannot be patient and gets into trouble by the ill success of

द्वैतं पाण्डुधैर्यवत्तरे ॥ २६ ॥ पूर्वमप्यतिदुःशीलो न धैर्यं कर्तुमर्हति । तपस्यर्थे विप
 शं हि मित्राणां न कुर्याच्च ॥ २७ ॥ अनुवर्त्तमानो यस्तु धैर्यं तं पापपूरणम् । अस्मानाप्य
 नग्नस्मात्प्रातोयं दाकणो मदान् ॥ २८ ॥ अनेन तु ममाद्यापि व्यसनेनोपतापिता ।
 बुद्धिश्चिन्तयत किञ्चित् स्वं श्रेयो नावबुध्यते ॥ २९ ॥ सुहृता तु मनुष्येण प्रष्टव्या सुहृदो
 जना । तत्रास्य बुद्धिर्दिनयन्तत्र धैर्यश्च पश्यति ॥ ३० ॥ ततोस्य मूल कार्यणां
 बुद्ध्या निश्चित्य वै बुधा । तेन पृष्टा यथा ब्रूयुस्तत्कृतव्य तथा भवेत् ॥ ३१ ॥ ते वय
 धृतराष्ट्रश्च गान्धारीश्च समेत्यह । उपपृच्छामहे गरवा विदुरश्च नह्यमतिम् ॥ ३२ ॥ ते
 पृष्टास्तु वदंयुयुत् श्रेयो न सग्न-तरम् । तदस्माभि पुन कार्यमिति मे नैष्टिकी मतिः
 अनारम्भास्तु कार्यणां नार्थं सम्पद्यते फलवत् ॥ ३३ ॥ कृते पुरुषकारे च येषां कार्यं
 न सिध्यति । देवेनोपहृतास्त तु तत्र कार्यं विचारणा ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्वाविंशतिं कृपपंचादे द्वितीयाध्यायः ॥१॥

पांडवों में शत्रुता करी । २६ । वड़ा दुःस्वभाव मनुष्य प्रथमही धैर्यकरनेके योग्य
 नहीं है और अभीष्ट के पूरे न होनेपर दुःखी होताहै कि मैंने अपने मित्रोंका वचन
 नहीं किया । २७ । हमलोग उत्तपापी पुरुषके पीछे चलते हैं इसहेतु से हमको भी
 यह भयकारी अनीति प्राप्त हुई । २८ । अबतक इसदुःखसे तपायेडुये सुम्नचिन्ता करने
 गलेकी बुद्धि अपने कुछ कल्याणका नहीं जानती है । २९ । और अचेत मनुष्य
 से सुहृज्जनापूछनेके योग्यहैं उसमें उसकी बुद्धि और नम्रताहै और उसीमें कल्याणको
 देख । ३० । इसस्थानपर पूछहुये यह ज्ञानीलोग इसके कार्योंके मूलोंको बुद्धिसे
 निश्चयकरके जैसे रुहें वैसा करना चाहिये और वह उसीमकार से होगा । ३१ ।
 हम सत्यलोग जाकर धृतराष्ट्र गान्धारी और बड़ेज्ञानी विदुरजीसे मिल करके पूछे
 रह हमारे पूछने पर जो कई वह निस्मन्देह हमारा कल्याण है । ३२ । बड़ीउपकां
 फिर करना चाहिये यह मेरा दृढ़मत है कार्यों के मारम्भकिये बिना कोई मयोजन
 सिद्ध नहीं होताहै । ३३ । फिर उपाय करनेपर भी जिनका रूपपूरा नहीं होताहै
 रह निस्मन्देह देवके मारेहुये हैं ३४ ॥

his enterprise by not hearing to friends. We have fallen in this dis-
 tress by following that sinful man. I do not know yet how to secure
 our safety. An unwise man's good and safety lies in seeking the
 advice of his friends. 30. He should act upon the advice of wise
 men. We should seek the advice of Dhritrashtra and Gandhari. We
 should go to wise Vidura also. These persons will show us the way
 how to proceed. Our safety lies in doing this and I am resolved to
 do so. Nothing is gained without it pains and surely they who fail are
 adict. I by fate " 31

सत्र उवाच । कृपस्य वचन श्रुत्वा धर्मार्थसहितं शुभम् । अभ्यत्यामा महाराज
 दुःप्रशोकसपनिवत ॥ १ ॥ इह्यमानस्तु शोकं प्रदीप्तनाग्निना यथा । कृत् मनन्त
 कृत्वा ताभौ प्रत्यभापत ॥ २ ॥ पुरुषे पुरुषे बुद्धिर्था या भवति शोभना । तुष्यति च
 पूयकृ सर्थे प्रज्ञवा ते स्वया स्वया ॥ ३ ॥ सर्वो हि मम्यते लोक आत्मानं बुद्धिमत्तरम्
 सर्वस्यात्मा बहुमत सर्वाः मानः प्रशसति । ४ ॥ सर्वस्य हि स्वका प्रज्ञा साधुवादे प्रति
 स्थिता । परबुद्धिषु नि दति स्या प्रशसन्ति चासकृत् ॥ ५ ॥ वारणांतरयोगेन योगे
 येषा समा मति । ज्ञयोऽन्येन च तुष्यन्ति बहुषु यति चासकृत् । ६ ॥ तस्यैव तु मनु
 ष्यसा सा बुद्धिस्तदा तदा । कालायामे विषय्यांस प्राप्याऽन्य विपद्यते ॥ ७ ॥
 विचित्रागतु विद्वानां मनुष्याणां विशपत । चित्तप्रेक्ष्यन्वयमामास सा बुद्धि
 प्रजापते ॥ ८ ॥ यथा हि वैद्य कुशलो क्षात्राभ्याधि यथाधि । भैषज कुशले यागात्

अध्याय ३ ॥

सञ्जय बोले हे महाराज तर अश्रुत्यामागी कृपाचार्य क उम वचनको जो
 कि अत्यन्त शुभ और धर्म प्रथमे सयुक्तवा सुनकर दुःख शोकसे सयुक्त । १ ।
 ज्वलित अग्निरूप के समान शोकसे प्रज्वलित होकर चित्तको निर्दय करके उन
 दोनोंसे बोले । २ । कि पुरुष पुरुषमें जोर बुद्धि होना है वही भेट्टे वह सब मथक
 मथक अपना २ बुद्धिमें प्रमन्न रहते हैं । ३ । और सब लोकके तनुष्य अपने २
 को बड़ा बुद्धिमान मानते हैं सबकी बुद्धि बहुत अङ्गीकृत है और सब अपनी २
 प्रशंसा करते हैं । ४ । सबकी निजबुद्धि अपनी उत्तमताके वर्णनमें निपटते दूसरेकी
 बुद्धिकी निन्दा करते हैं और अपनी बुद्धिकी वारम्बार प्रशंसा करते हैं । ५ । समा
 में अन्य २ कारणों के वर्तमान होने से जिनलागों की बुद्धि एकती है वह परस्पर
 प्रमन्नहोते हैं और वारम्बार अपने को बहुत मानते हैं । ६ । उसी उसी मनुष्यकी
 वह वह बुद्धि जब समयके योगसे विपरीतता को पाती है वे परस्पर विनाशको पाते
 हैं । ७ । मुख्यकर मनुष्यों के चित्तकी विचित्रता से चित्त की अकृलता को
 पाकर वह बुद्धि उत्पन्न हाती है । ८ । हे मनु इमीप्रकार बड़ा सावधान वैद्य
 बुद्धिके अनुरार रोगको जानकर औषधी देनेक द्वारा रोगकी निवृत्ती के लिये

CHAPTER III

Sanjaya said, 'Hearing the salutary advice of Kripacharya, Ashwatthama, in excess of grief said to the two warriors "Every man thinks himself wiser than others and prouder than different from others. All men do what pleases them and praise their own wisdom. These praise themselves and blame others. 5 Those who are of the same opinion in an assembly live happily, but when they are disunited they meet their destruction. A difference of opinion issues out of the fickleness of mind. A wise physician cures diseases by useful medicine. Men try to accomplish their work by their own wisdom and

प्रशामार्थमिति प्रभो । ९ ॥ एवं कार्यस्य योगार्थं बुद्धिं कुर्वन्ति मानवाः, प्रवृत्त्या हि स्वया युक्तास्ताव निन्दन्ति मानवाः ॥ १० ॥ अथवा यौवनेप्रवृत्तयो बुद्ध्या भवति मोहितः । मध्येऽन्यथा जरायान्तु से न्यां राक्षयते मतिम् । ११ । एवं स वा महावीर्ये समुद्रं वापिनाहसीम् । अवाप्य पुरुषो भोजं कुर्वते बुद्धिवैकृतिम् ॥ १२ । एकस्मिन्नेव पुरुषे सा सा बुद्धिस्तदा । अथत्यक्तप्रवृत्त्यात् सा तस्यैव न रोत्ते ॥ १३ ॥ मिथित्व तु यथाप्रज्ञ या मति साधुरदयति । तथा प्रकुरुत भावं सा तस्योद्योगकारिका ॥ १४ ॥ सर्वो हि पुरुषो भोज साध्येतादिति निश्चितः । कर्तुमारभते प्रीतो ज्ञाण्यादिवु कर्मणः ॥ १५ ॥ सर्वे हि युक्तिमास्थाय प्रज्ञाचापि स्वका नराः । जेहन्ते विविधां चेष्टां हितमित्ये जानते । १६ ॥ उपजाता व्यसनजा येयमद्य मतिरितम् । युष्योस्तां प्रदहयामि मम शोकविनाशनाम् ॥ १७ ॥ प्रज्ञं पतिः प्रजाः सृष्ट्वा कर्म तासु विधाय च । वर्णे

चिकित्सा करता है । ९ । इसी प्रकार मनुष्य भी अपने काम पूरे करने के लिये बुद्धि को करते हैं और अपनी बुद्धिसे युक्त मनुष्य उत्तरीनिन्दा करते हैं । १० । मनुष्य तरुणाईमें एक अन्य बुद्धिसे और सम्पूर्ण अवस्थाके मध्यमें अन्य बुद्धिसे मोहित होता है वह हृद्भावस्थामे भी अन्यही बुद्धिको स्वीकार करता है । ११ । हे कृपवर्मा मनुष्य वह घोर दुःखको अथवा उसी प्रकारके ऐश्वर्यको भी पाकर बुद्धिको विपरीत करता है । १२ । एकही मनुष्य में वह बुद्धिसमय पर उत्पन्न होती है और समय न होनेपर उसको नहीं अच्छी लगती है । १३ । और बुद्धिके अनुसार निश्चय करके जिस विचारको अच्छी गति से देखता है उसी प्रकार का उत्साह करता है वह बुद्धि उसके उपायकी करनेवाली है । १४ । हे भोजवर्मा कतबर्मा तबके मनुष्य यह निश्चय करनेवाला है कि मेरा विचार अच्छा है और प्रसन्नोचित होकर मारने आदिक में कर्म करना शारम्य करता है । १५ । सब मनुष्य अपने और चतुरताको ही जानकर नाना प्रकारके कर्म करते हैं और यही जानते हैं कि यह मेरा हितकारी कर्म है । १६ । अब मेरे दुःखसे उत्पन्न होनेवाला जो वहा विचार पैदा हुआ है उस अपने शोक दूर करनेवाले विचार को मैं तुम दोनों से कहता हूँ । १७ । ब्रह्माजी ने सृष्टिको उत्पन्न करके और उनमें कर्मको नियत करके हर

blame the wisdom of others, 10 Man's wisdom is of one sort in youth and of another in middle or old age. His intellect deteriorates in distress and excess of joy. One's own opinion is not always the same. It alters at times. He sets his mind to do the work he thinks best. Every man thinks his own opinion to be the best and engages him in actions. 15. People do work according to their own wisdom. Now hear my opinion which I have formed in my distress. Brahma created the world and made various attributes prominent in various orders. For instance, the tendency to read the Vedas among brahmins, prowess among kshatriyas, trade among Vaishyas and service

वहै समाचल होकेके गुणमागुणम् ॥ १८ ॥ ब्राह्मणे वेदमप्रयन्तु क्षत्रिये तेज उद्यमम्
 वाक्च वैश्ये च शूद्रश्च सर्ववर्णानुकूलताम् ॥ १९ ॥ अदान्ते ब्राह्मणोऽसाधुर्नित्तजः
 साधिवोचमः । अदसो निघृते वैश्याः शूद्रश्च प्रतिकूलवान् ॥ २० ॥ सोस्मिजातः कुल
 भेदे ब्राह्मणायां सुपूजिते । मन्वनाग्यतयास्मेतं क्षत्रजर्ममनुष्ठितं ॥ क्षत्रधर्मे विदित्वाहं
 बहिःप्रापय संभितः । प्रकुर्यां सुमहत् कर्म न मे तत् खाधुसम्मतम् ॥ २२ ॥
 चारदंश्च धनुर्विद्यं विद्याभ्यस्तानि काश्च पि । र निहतं दृष्ट्वा किं नु वक्ष्यामि संस
 दि ॥ २३ ॥ सोऽस्य यथाकामं क्षत्रधम मु पश्य तथ । गन्तास्मि पदधी राक्षः पितुश्चा
 दिमहात्मनः ॥ २४ ॥ अथ स्वप्यान्त पाञ्चाला विश्वस्ता जितकाशिनः । विमुक्त युग्य
 दयसा एषेण च समन्विताः जय मत्वात्मनश्चैव भ्रान्ता व्यायामकर्षिता ॥ २५ ॥
 तेषां विद्यां प्रसूतानां सुरधानां शिबिरे स्वके । अवस्कन्दं करिष्यामि शिबिरेस्याद्य
 पुंकरम् ॥ २६ ॥ दानावस्कन्द्य शिबिरे मेतभूतान् विचिंतसः । मूर्ध्निष्यामि विकल्प
 एक वर्णमे पिशोपय रत्नेवाला एक २ गुणधारण किया । १८ । ब्राह्मणमें भेष्ट
 वेद क्षत्रियमें भेष्ट पराक्रम वैश्यमें भेष्ट सावधानी कर्म और शूद्रमें भेष्ट सब वर्णों
 का पादाकारी होना कहा है । १९ । अजितेन्द्रिय ब्राह्मण निकृष्ट पराक्रमसे रहित
 क्षत्रिय-निकृष्टकायमें ममसादत्तान वैश्य निकृष्ट और सब वर्णों की आज्ञाका न
 करने वाला शूद्र निकृष्ट होकर निन्दाक्षिया जाता है । २० । सो मैं ब्राह्मणों के
 बहिष्कृत उपमकुलमें उत्पन्न हुआ हूँ और प्रभाग्यतासे क्षत्रियधर्मका कर्मकर्ता हुआ
 हूँ । २१ । जो मैं रात्रियधर्म को जानकर और ब्राह्मणोंके शमदमादिगुणोंमें नियत होकर
 भेदे कर्मदो कदं वह मेरा कर्म साधुओं से अंगिकृत नहीं २२ मैं युद्धमें दिव्यधनुष
 और अश्वोंको धारण करवा पिताको मृतक देखकर सभामें वषा कहूंगा । २३ ।
 अब मैं अपनी इच्छा से अनुसार उस क्षत्रिय धर्म की उपासना करके राजा
 दुर्योधन और महात्मा पिताके भी मार्ग को पाऊंगा । २४ । अत्र पांचाल देशी
 विजयसे सोनित पदे विश्वस्त सवारी और कबचोंसे जुदे होकर प्रसन्नतायुक्त
 सोते हैं वह धकेरुये परिश्रम से पीदावान् अपनी विजयको मानकर शयन करेंगे
 । २५ । अपने देरों में सुखसे नियत और सोनेवाले उन पांचालदेशियों के देरों
 के उस नाशको रुकूंगा जोकि कठिनतासे करने के योग्य है । २६ । अबउन अंचत

among shudras. A brahman having no control over senses, a kshatrya destitute of prowess, a vaishya without trade and a disobedient shudra are despised. 20, I am born in a noble brahman family and have been doing the work of a kshatrya. I shall not now be respected among brahmanas, if I do their work. I shall not be able to show my face in court without avenging the death of my father. I shall tread the path of Duryodhan and my father and do the work proper to a kshatrya. The Panchals and their beasts are now sleeping soundly after their great victory. They are destitute of armours and are

मघवानि३ दानवान् ॥ २७ ॥ अथ त न सहितान् सर्वान् घृष्टुम्नपुरोगमान् । सूद
 विष्यामि विक्रम्य कर्षं दीप्त इवानल । निहत्य शैव पांचालान्वाग्निहोत्राग्नि
 सत्तन ॥ २९ ॥ पांचालेषु चारथेषाम सूदयद्यसयुगे । पिनाकपाणिः संकुक्ष्ण स्वयं
 वद् पशुष्विव ॥ ३० ॥ अथाहं सर्षपांचालान्निहत्य च तिहत्स्वामिहोत्रपाणिसंहोत्रोत्तरे
 पाण्डुसुतास्यता ॥ ३१ ॥ अथाऽहं सर्वपांचालान् कृन्वा भूमिं शरीरिणीम् । प्रहृत्यैकैक
 शस्त्रेषु मघिष्याम्यनृण-पितु ॥ ३२ ॥ दुर्व्योघमस्य कर्णस्य भीष्मसैन्यवधोरपि ।
 गमविष्यामि पांचालान् पदवीमथ दुर्गभाम ॥ ३३ ॥ अथ पांचालराजस्य घृष्ट
 घृम्नस्य वै निशि । तच्चितात् प्रमविष्यामि पशोरिव शिरो घलात् ॥ ३४ ॥ अथ पांचा
 लपाण्डूना शतितानामजाश्रिति । लङ्गेन निशिते राजौ प्रमविष्यामि गौतम ॥ ३५ ॥
 अथ पांचालसेनां तां निहत्य निशि सौप्तको कृतकृत्य सुखीयेधमविष्यामितहामते ३६
 इतिथी सौप्तिरुपर्वणि द्रौण्येयन्त्रणायां तृतीयोऽध्याय ॥ ४ ॥

मृगरूप पांचाल देशियोंको डरे में बराजयकरके और पराक्रम करके ऐसे माकंगा
 जैसे दानवों को इन्द्र मारताहै । २७ । अब उन घृष्टुम्न आदिक सब पांचालों
 को एक साथही ऐसे माकंगा जैसे कि ज्वलित अग्नि मूखे वनको हे श्रेष्ठ मैं युद्धमें
 पांचालों को मारकर शान्तीको पाऊंगा । २९ । अबमैं युद्धमें पांचालों को मारता
 पांचालोंको के बीच में पेनाडुंगा जैसे कि पशुओंको मारते पशुओं के मध्य
 में क्रोधयुक्त पिनाक धनुषवारी आप रुद्रजीहोते हैं । ३० । अब अत्यन्त प्रसन्न
 सब पांचालोंको मारकाटकर वतीभकार से युद्धमें पांडवोंकोभी पीड़ावान कंकगा
 । ३१ । अब मैं पृथ्वीको सब पांचालोंके शरीरोंसे पूर्णकरके मत्येकको मारकर
 पित्तके शृणसे अश्रुणहूंगा । ३२ । अब मैं पांचालोंको दुर्बोधन कर्म भीष्म और
 जयद्रथ के कठिन मार्ग में पहुँचाऊंगा । ३३ । अब मैं रात्रिके समय थोड़ीदूर में
 पांचालोंके राजाघृष्टुम्न के शिरको ऐसेपधुंगा जैसे कि पशुकेशिरको मर्दन करते
 हैं । ३४ । हे कृपाचार्य जी अब मैं पांचाल देशियों के और पाण्डवों के सोतेहुये
 पुत्रोंको रात्रिकेसमय युद्धभूमिमें तेजखड्गसे मधुंगा । ३५ । हे वड़े युद्धिमान अब
 मैं रात्रिके युद्धमें उस पांचालको सेनाको मारकर कृतकृत्य होकर सुखीहूंगा । ३६ ।

lying within their tents. I shall destroy them in their camp and shall do a difficult deed. I shall now slay them as Indra does the danavas. I shall destroy them as fire does dry forest. I shall roam among them as Shiv the wielder of Pinak roams among animals. 30. Having slain the Panchals, I shall destroy the Pandavas. Having destroyed the Panchals, I shall be free from the debt of my father. I shall cut off the head of Dhrishtadyumn of Panchal like that of a beast. I shall cut off the sleeping tents of the Panchals and Pandavas with my sharp sword. I shall satisfy my rage by slaying the army of Panchal at night." 36.

कृप उवाच । दिष्ट्या ते प्रतिकर्त्तव्ये मतिर्योतेयमच्युत । ने रथा धारयितुं शक्तो
घञ्जपाणिगपि स्वयम् ॥ १ ॥ अनुयास्वावहेतान्तु प्रभाते सहितायुधौ । अथ रात्रौ
विधमस्व विमुक्तपञ्चध्वज ॥ २ ॥ न ह त्वामनुयास्यामि कृतपर्माण्वा सात्त्वतः । परा
नमिभूय वान्ते रथापास्थाव दृशितौ १ ३ ॥ आवाश्यां अहितं शत्रून् श्वो निहन्ता
समागमे । विक्रम्य रथिणां पृष्ठं पाञ्चालात् सपदानुगात् ॥ ४ ॥ शकस्त्वमसि विक्रम्य
विभगस्व निशामिमाम् ॥ चिरं न आग्रस्तात स्वप तावज्जिशामिमाम् ॥ ५ ॥ विधान्त
अधिनिद्रश्च नुस्यच्चिद्यश्च मान्द । समत्वं समरे शत्रून् षधिष्यसि न सद्य ॥ ६ ॥
न हि र्वां रथिना श्रेष्ठं प्रगृहीतयत्पानुधम । जेतुमुत्सहते कश्चिदपि देवेषु वासव ॥ ७ ॥
कृपेण सहितं वान्तं गुप्तञ्च कृतैर्मणा । को द्रोणिं युधि सरत्वं योषयेदपि देवराट्
॥ ८ ॥ ते षय मिश्रे विधान्ता धिन्द्रा विगतज्वरा । प्रभातायां रजन्वा वै निहन्ति

अध्याय ॥ ४ ॥

कृपाचार्य्य बोले कि मारवचसे बदलाछेने में तेरी अविनाशी बुद्धि उत्पन्न हुई
है आप इन्द्रभी तेरे रोकनेको समर्थ नहीं है । १ । हमदोनों एकसाथ ही प्रातःकाल
के समय तेरेपीछे चलेंगे अब रात्रिमें कवच और ध्वजासे पृथक् होकर विश्राय
करो । २ । मैं और पादश कृतवर्मा अलंछित रथोंपर सवार होकर तुझ शत्रुओंके
सम्मुख जानेवाले के पीछे चलेंगे । ३ । हे रथियों में श्रेष्ठ प्रातःकाल के समय तुम
हम दोनों केसाथ सम्मुखतामें पराक्रम करके शत्रु पाञ्चालों को उनके साथियों
समेत मारोगे । ४ । तुम पराक्रम करके मारने को समर्थ हो इतरात्रिमें विश्रामकरो
हे तात तुझको जागतेहुये बहुत विलम्ब हुई तब तक इतरात्रि में शयनकरो । ५ ।
विश्रामयुक्त शयन से सावधान चित्त तुम युद्ध में शत्रुओं को पाकर मारोगे हे
वडाई देनेवाले इसमें संशय नहीं है । ६ । देवताओं के मध्य में इन्द्रभीतुम्ह रथियों
में श्रेष्ठ वचाम शस्त्रपारी के विजय करने को उत्पाह नहीं करता है । ७ । कृतवर्मा
मे रक्षित और कृपाचार्य्य के साथ जानेवाले युद्धमें क्रोधयुक्त धश्रत्यामा से इन्द्र
भी युद्धनहीं करसक्ता । ८ । हम रात्रिमें विश्रामयुक्त शयन करनेवाले तापसे

CHAPTER IV

Kripacharya said, ' It is by Fate that you are resolved to take
revenge, even Indra can not deter you from your purpose. Both of us
together, will follow you in the morning, let us set aside our armour
and banner and take rest for the night. Kritvarma, the Yadav, and
I will follow you, destroyer of foes. Tomorrow you, accompanied by
us, will destroy your Kanchal foes. You have the power to slay
Take rest during the night, for you have not slept yet. 5. With
your mind fresh after repose, you will slay the foes without doubt.
Even surrounded by gods, Indra cannot conquer you, brave warriors !
protected by Kritvarma and followed by Kripacharya enraged Ashwa

प्राप्त शाप्रधान् ॥ ९ ॥ तव ह्यस्त्राणि दिव्यानि मम चैव न संशयः । सात्वतोपि मह्यं
 स्वासो नित्यं युद्धेषु कोविदः ॥ १० ॥ ते वयं सहितास्तासु सर्वान् शत्रून् समागताम् ।
 प्रसह्य समरे हृत्वा प्रीतिं प्राप्स्याम पुष्कलाम् । विश्रमश्च त्वमव्यग्रः स्वपत्न्यां निशां
 सुखम् ॥ ११ ॥ अहश्च कृतवर्मा च त्वां प्रयान्तं नरोत्तमम् । जनुयास्याच सहितौ
 घन्विनौ परतापनौ । रथिनं त्वरयापान्तं रथमास्थाय दंशितौ ॥ १२ ॥ स गत्वा शिविरं
 तेषां नाम विधास्य चाहवे । ततः कर्त्तासि शत्रूनां युध्यानां कदनं महत् ॥ १३ ॥ हृत्वाच
 कदनं तेषां प्रनाते विगलेहनि । विहरस्व यथा शकः सुददित्वा महासुरान् ॥ १५ ॥
 त्वं हि शक्यो रणे जेतुं पाञ्चालानां वक्रुधिनीम । दैत्यसेनामिव क्रुद्धः सर्वदानवसूयुन
 ॥ १६ ॥ मया त्वां साहितं संश्ये गुप्तञ्च कृतवर्मणा । न सहेत विभुः साक्षाद्भ्रपाणि
 पि स्वयम् ॥ १७ ॥ न चाहं समरे तात कृतवर्मा न चैव ह । आनिर्जित्त्वरणे पाण्डून्
 व्यपयास्याम कर्हिचिद् ॥ १८ ॥ हृत्वा च समरे क्रुद्धान् पाञ्चान् पाण्डुभिः सह ।

रक्षितं प्रातःकालं शत्रुओं के लोगोंको मारेंगे । ९ । तेरे और मेरे दिव्यअस्त्र हैं और
 यद्वा धनुषधारी यादव कृतवर्मा भी युद्धोंमें निस्त-देह सावधान है । १० । हेतात
 हम तीनों एकसाथ मिलेहुये सब शत्रुओं को दृढसे युद्ध में मारकर उत्तम आनन्द
 को पावेंगे तुम सावधान होकर विश्रामकरो और इस रात्रिमें सुखपूर्वक शयनकरो
 । ११ । मैं और कृतवर्मा धनुषधारी शत्रुओं के तपानेवाले कवचधारी दोनों एक
 साथ रथपर सवार होकर तुझ शीघ्र चलनेवाले नरोत्तम रथी के पीछे चलेंगे । १२ ।
 इसके पीछे बुध उन्होंके डेरोंमें जाकर युद्ध में नामको - सुनाकर युद्ध करनेवाले
 शत्रुओं का बड़ाभारी नाश करोगे । १३ । मातः काल के समय उनका नाशकर
 के ऐसे विहारकरो जैसे कि महा असुरों को मारकर इन्द्र विहार करता है । १५ ।
 तुम युद्धमें पाञ्चालों की सेनाके विजय करनेको ऐसे समर्थहो जैसे कि सब दानवों
 का मारनेवाला क्रोधयुक्त इन्द्र दैत्योंकी सेनाको मारकर विहार करता है । १६ ।
 वज्रधारी समर्थ साक्षात् इन्द्रभी तुझ मेरेसाथी कृतवर्मा से रक्षित को युद्धमें नहीं
 सहसकाहं । १७ । हे तात मैं और कृतवर्मा युद्धमें पाण्डवों को विजय किये बिना
 कभी लौटकर नहीं आयेगे । १८ । हम सब युद्धमें क्रोधयुक्त पाञ्चालों समेत पाण्डवों

thara is irresistible in battle even by Indra. We shall slay our foes
 in the morning when our fever has abated after repose at night. You
 and I possess divine weapons and Kritvarma, the great Yadav archer,
 is clever in fighting. We three, united together, are sure to destroy
 our foes. Take care to sleep for the night. Kritvarma and I, clad
 in armour, will follow your car. You will slay them tomorrow as
 Indra does the asurs, 15, You can slay the Panchal warriors as Indra
 does the asurs. Even Indra cannot resist you protected and accom-
 panied by me and Kritvarma as you shall be in fight. Kritvarma
 and I will never return without conquering the Pandavas in battle,

निर्वृत्तिभ्यामहे सर्वं हता वा स्वर्गमावयम् ॥ १९ ॥ सर्वोपायैः सहायास्ते प्रभृते ष्य
माह्वये । सत्यमेतन्महाबाहो प्रवर्षामि तवामघ ॥ २० ॥ एव मुक्कलतो द्रोणिर्मातुलेन
हितं वचः । अन्नवीन्मातुल राजन् क्रोधस्त्रक्लोचनः ॥ २१ ॥ धातुरस्य कुतो निद्रा
नरस्याभिवित्तस्य च । अर्थाश्चिन्तयतश्चापि कामयानस्य वा पुनः ॥ २२ ॥ तदिवं सम
नुगातं पश्य मेघ चतुष्टयम् । यस्य भागश्चतुर्थो मे स्वप्नमहताय नाशयेत् ॥ २३ ॥ किं
नाम दुःखं लोकेस्मिन् पितुर्वैधमनुस्मरन् । हृदयं निहृहंमेघ राजपदानि न शाम्यति
॥ २४ ॥ यथा घ निहतः पापैः पिता मम विशेषतः । भव्यक्षमपि ते सर्वे तन्मै मर्माणि
हृन्वति ॥ २५ ॥ कथं हि मादृशालोके मुहूर्त्तमपि जीवति । द्रोणो हनेति तद्वाचः
पाञ्चालानां शृणोम्यहम् ॥ २६ ॥ धृष्टद्युम्नमहत्वाजो नाहं जीवितुमुत्सहे । स मे पितु
र्वैधाहृद्यो पाञ्चाला ये च सङ्गताः ॥ २७ ॥ विलापो भग्नसकथस्य यस्तु राज्ञो मया

को मारकर लौटें अथवा मरकर स्वर्गको जायेंगे । १९ । हे निष्याप हम प्रातः-
काल युद्धमें सब उपायों से तेरे सहायक हूँ हे महाबाहु मैं यह तुझसे सत्य ही
कहता हूँ । २० । हे राजा मामाजी के ऐसे हितकारी वचनोंको सुनकर क्रोधसे
रक्तनेत्र अश्वत्थामाने मामाजीको उत्तरदिया । २१ । किरोगी क्रोधयुक्त पनादैकके
शोचकरनेवाल और कामी इनजोगोंको निद्रा कहाँसे होसकतीहै । २२ । अब पहले
क्रोध चौथाई उत्पन्न हुआहै वह चौथाई क्रोध दिनके अर्थ शयनका नाशकरताहं
। २३ । इसलोकमें क्या दुःखहै कि पिता के मरण को स्मरणकरता और जलता
हुआ मेरा हृदय अब दिन रात्रि शान्तिको नहीं पाताहै । २४ । मुख्य करके जैसे
प्रकारसे मेरा पिता पापियों के हाथसे मारागया, वहसब आपके नेत्र गोचर है वह
मेरे मर्मों को काटताहै । २५ । लोकमें मुझसा मनुष्य एकमुहूर्त्त भी कैसेजीसक्ता
है जोमें पाञ्चालोंका वचन सुनताहूँ कि द्रोणाचार्य मारेगये । २६ । मैं धृष्टद्युम्न
को न मारकर जीवते रहनेको उत्साह नहींकरसक्ताहूँ वहमेरे पिताके मारनेसे काटने
के योग्यहै और जो पांचालदेशी इकट्ठे हैं वह सबभी वध्यहैं । २७ । इसकीविशेष

We shall return after slaying the Pandavas and the Panchals or shall
go to paradise. Believe me, brave man, we shall help you in tomorrow's
battle. "Hearing the good advice of his uncle, Ashwathama replied in
anger, "How can one find sleep over anger, loss of wealth and love
sickness ! It is only a fourth part of my rage developed; but it is enough
to destroy my sleep at night. It is a small thing that I find no
rest by night or day as I remember the death of my father. You
have seen how my father was slain by those sinful men and it cuts
me to the quick. 25. One like me cannot live in the world when
one hears from the Panchals that Dronacharya is slain. I cannot
live without slaying Dhrishtadyumna. He and his followers deserve
death by taking part in the slaughter of my father. Besides, whose
heart will not burn at Duryodhan's lamentations that I have heard ?

श्रुतः । स पुनर्हृदयं कस्य ह्रूरस्यापि न निर्देहेत् ॥ २८ ॥ कस्य ह्यक्षरुणस्यापि नेत्राभ्या
मक्षु नाग्रजेत् । नृपतेभ्यस्तस्यस्य श्रुत्वा तादृग्वचः पुनः ॥ २९ ॥ यस्माप्ये मित्रपक्षो
मे मयि जीवति निर्जिततः । शोकमे वर्जयत्येव धारिवेग इवार्णवम् । एकाग्रमनसो मेघ
दुतो निद्रा कृतः सुखम् ॥ ३० ॥ वासुदेवाजुनाश्रयां हि तानह परिरेक्षितान् । अविषह्य
-मन्मन्ये महेन्द्रेणापि मातुल ॥ ३१ ॥ न घातिम शक्तः त्वयन्तु कोपमेत समुत्थितम् ।
न त पश्यामि न्यासेस्मिन् यो मां कोपाप्रवर्त्तयेत् । इति मे निश्चिता बुधिरया साधु
मताच मे ॥ ३३ ॥ धार्मिकैः कथयन्नातस्तु मित्राणां मे पराभव । पाण्डवानाञ्च विजयो
हृदयं दहेताये मे ॥ ३४ ॥ अहन्तु कदनं कृत्वा शत्रूणामय सौप्तिक । ततो निभागेता
चेव स्वप्ना च विगतज्वरा ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि पात्रिणायां चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

जो मैंने दूटी जंघावाले राजाका विलापश्रुना वह किस निर्दयके भी चित्तको
नहीं भस्म करेगा । २८ । फिर दूटी जंघावाले राजाके उत्सप्रकारके वचनों को
सुनकर कौनसे निर्दय मनुष्य के अश्रुपात नहीं होंगे । २९ । मेरेजीवतेहूये जो यह
मेरायित्र पक्ष मित्रपक्षियो यह मेरे शोकको ऐसे बढ़ाताहै जैसे जलकावेग समुद्रको
बढ़ाताहै अब मेराचित्त एकाग्रहै निद्रा और मुख कहां है । ३० । हे श्रेष्ठ मैं वासु
देवजी और अर्जुनसे रहित उनयोगों को महाइन्द्रसे भी सहने के योग्य नहीं जान
ताहूँ । ३१ । और इस उद्वेगपे क्रोधकेभी रोकनेको समर्थ नहींहूँ मैं इसलोकमें ऐसा
किसीकाभी नहीं देखताहूँ जो मुझको मेरेक्रोधसे रहित करसके इसीप्रकार साधुओं
की अंगांकुत इसमेरी बुद्धिकाभी कोईनहीं लौटासक्ता । ३३ । मेरे मित्रोंकीपराजय
और पाण्डवोंकी विजय जो दूतोंने वर्णनकारी वह मेरे हृदयको भस्मकर रही है । ३४ ।
अब मैं रात्रिके युद्धमें शत्रुओंका नाशकरके फिर तापमे रहितहोकर विश्राम करके
शयन करूंगा । ३५ ॥

Who will not shed tears-after hearing that prince with the broken
thigh. The defeat of my friends during my life time increases my
grief like a surge's swell My mind is made up and I can have no
repose 30 Protected by Vasudev and Arjun they are irresistible
even by Indra. I cannot check my rising anger. None can check
my anger or turn me from my purpose The news of my friend's feat
and enemies' victory burns my breast. I shall be able to find rest after
slaying my enemy at night. " 35

कृप उवाच । सुभूरपि दुर्मेधाः पुरुषोर्नियतोन्द्रियः । नालं वेदायितुं कृत्स्नो धर्मार्थो
 धिति मे मतिः ॥ १ ॥ तथैव तावन्मेधावी धिनयं यो न सिद्धते । न च । कञ्चन जानाति
 सोपि धर्मार्थं निश्चयम् ॥ २ ॥ चिरं ह्यपि जडः शूरः पाण्डितं पर्युपास्यह । न स धर्मान्
 बिजानाति दधौ सुपरसानिव ॥ ३ ॥ मुहुर्त्तमपि तं ब्राह्मणपाण्डितं पर्युपास्यह । क्षिप्रं
 धर्माद् विजानाति जिह्वा स्फुरसानिव । शूद्रपुत्रस्येव मेधावी पुरुषो नियतेन्द्रियः ।
 जानीयादागमान् सधोन् ब्राह्मणञ्च न विरोधयेत् ॥ ५ ॥ अनेपश्चवमानी थोदुरात्मा
 पापप्रब । दिष्टमृत्युञ्जयकृत्वाणं करोति बहु पापकम् ॥ ६ ॥ नाथवन्तान्तु सुहृदः प्रति
 येचन्ति पापकान् । निवर्त्तन्तु लक्ष्मीवाग्निाळक्ष्मीवाग्निप्रसंते ॥ ७ ॥ यथा ह्यचवायचे
 र्वापनेः क्षिप्रचिह्नो नियम्बते । तथैव सुहृदां शपथो न शपस्त्ववसीदति ॥ ८ ॥ तथैव

अध्याय ५ ॥

कृपाचार्य बोलते कि दुर्बुद्धी और अजितेन्द्रिय मनुष्य सुननेका अभिलाषी भी
 सम्पूर्ण धर्म अर्थ के जाननेको समर्थ नहीं है यमैरागण है । १ । इसीप्रकार शास्त्रों
 के स्मरण रखनेवाली बुद्धिकास्वाधी पुरुष जबतक नीतिको नहीं सीखताहै तबतक
 वहभी धर्म अर्थके निश्चयको नहीं जानताहै । २ । अत्यन्त ब्रह्मज्ञान शूरवीर मनुष्य
 बहुत कालतक भी पाण्डित के पास वर्त्तमान सेवाकरके धर्मोंको ऐसेनहीं जानताहै
 जेधे कि ष्यञ्जनके स्वादुको चम्पच नहीं जानताहै । ३ । ज्ञानी पुरुष एक मुहुर्त्तभी
 बसपंडितके पास बैठकर शास्त्रों ऐसे धर्मोंको जानताहै जैसे कि दाल आदिके
 स्वादुको जिह्वा घानलेती है । ४ । बुद्धिमान जितेन्द्रिय और सेवाकरने वाला
 पुरुष सब शास्त्रोंको जानताहै और ब्राह्मण वल्लुओं से विरोध नहीं करताहै । ५ ।
 जो दुर्बुद्धी और पापी पुरुष है वह सच्चेपार्म्य न पहुँचाने के योग्य नहीं है वह
 उपदेश कियेहुये कर्वाणको त्वागकरके बहुतसे पापों को करता है । ६ । फिर
 शुभचिन्तक लोग सनाथ पुरुषको पापसे निषेध करतेहैं और धनकास्वाधी उसपाप
 से लौटताहै परन्तु धनरहित पुरुष नहीं लौटताहै । ७ । जैसेकि विषयोंमें प्रवृत्तचित्त
 पुरुष नानाप्रकारके वचनोंसे भाषीन किया जाताहै उभीप्रकार शुभचिन्तक मित्रसे
 समझाने के योग्यहै और जो योग्य नहीं है वह पीड़ापाताहै । ८ । इसी प्रकार

CHAPTER V.

Kritvarma said, ' I think that one having no control over passions cannot be benefited by advice even if one be willing to hear, and the same is the case with one who has read the shastras but no Politics. A foolish warrior cannot learn his duties in the society of learned men as the spoon does not know the flavour of things, but a wise man learns it in an instant as the tongue does the flavour. A wise and obedient pupil having control over passions learns all the books and is willing to acquire useful things. 5. An unwise and sinful man cannot go in the right path and commits many sins by disregarding the

सुहृद् प्राज्ञं कुवाणं कर्म पापकम् । प्राज्ञाः समातिवेषन्ति यथा शक्तिं पुनः पुनः ॥ ९ ॥
 स कल्याण मनःकुशानिधय्यात्मानमात्मनाः कुरु मेघचनेतात येनपश्चान्न तत्स्यसे ॥ १० ॥
 न वध पश्यतं लोके सुसतानामिह धर्मतः । तथैवापास्तशस्त्राणां विमुक्तस्यवाञ्छिताम्
 ॥ ११ ॥ ये च द्युन्मत्तवर्माणि ये च स्युः शरणागताः । विमुक्तमूर्खं जाये' च मे चापि
 इतथाहनाः ॥ १२ ॥ अद्य स्वप्नयन्ति पाञ्चाला विमुक्त कवचा विभो । विश्वस्तो
 रजनीं सर्वे प्रेता इव विचिंतसः ॥ १३ ॥ यस्तेषां तदवस्थानं दुह्येत' पुरुषोऽनुजः । व्यक्त
 स नाके मज्जेद्गणं विपुलेद्वये ॥ १४ ॥ सर्वाङ्गविदुषां लोके भ्रष्टस्त्वमसि विभुत ।
 न च ते ज्ञातुं लोकंस्मिन् सुसूदमपि किंस्वियम ॥ १५ ॥ त्वं पुनः सूर्यसङ्काशः इवोभूत
 उरिधने रथो । प्रकाशो सर्वभूतानां विजेनायुधि शास्त्रात् ॥ १६ ॥ असेम्भावितरूपं हि
 त्वयि कर्म विगर्हितम् । शुक्ले रक्तमिव भ्यस्तं भवेदिति मतिर्मम ॥ १७ ॥

ज्ञानीलोग पापकर्म करनेवाले बुद्धिमान् मित्रको सामर्थ्य के अनुसार बारम्बार
 निषेध करते हैं । ९ । कल्याण में चित्त करके और मनसे बुद्धिको आधीनता
 में करके मेरे वचनको कर जितके कारणमे पीछे दुःखी नहो । १० । इस लोकमें
 सोनेवाले मनुष्यों का मारना और इसीप्रकार भ्रष्टस्त्रय और घांटों से रहित
 मनुष्योंका मारना धर्मसे प्रशंसा नहींकिया जाताहै । ११ । जो कहें कि मैं तेरा हूँ
 जो शरणागत होय जो खुलेद्वये केश होय और जो मृतक सवारी कलाहै । १२ ।
 हे समर्थ इन सबका मारना भी निषेध है कवच से रहित मृतकके समान अचेत
 विश्वास युक्त सब पाञ्चाल लोग सोतेहैं । १३ । जो कुटिलपुरुष उसदहावाले उन
 पांचाल देशियोंसे शत्रुाकरेगा वह अथाह विना नौकावाले नरकरूपी समुद्र में
 डूबेगा । १४ । तुम लोकके सब अस्त्रों में श्रेष्ठ विख्यातहो इतल्लेकमें कभी तुझसे
 छोटाना भी पाप नहीं हुआ । १५ । फिर सूर्यके समान तेजस्वी तुम ज्ञात काल
 के समय स्योदय होने और सब जीवोंके मरुट होनेपर युद्धमें शत्रुओं के लोगोंको
 विजय करोगे । १६ । मेरे मतसे तुझमें ऐसा निकृष्ट और निषिद्ध कर्म ऐसा
 असम्भवहै जैमेकि श्वेतरङ्गवालापत्न रक्तवर्ण-हाना असम्भवहै । १७ । अस्वत्यामा

lessons taught to him. Well wishers turn a man from sin, but it is
 the fortunate who follows their advice. It is the duty of faithful friends
 to offer advice, but he who does not hear it falls into difficulty. .
 Similarly, wise men hinder a wise friend from falling into evil ways.
 You should carefully listen to my advice so that you may not fall
 into difficulty. To slay a sleeping, unarmed and careless man is not
 commendable like that of a refugee or of one with dishevelled hair or
 of one whose beast is dead. The Panchals are sleeping without armour
 like dead men. He who slays them in that state, will fall into bottom
 less perdition. You are a famous warrior of the world and have
 never committed a sin. 15. You can slay your foes in day light

अश्वत्थामोवाच । एवमेव तथाप्यथ मातुलेह न संशयः तस्तु एवमथ सेतुः शतधा
 विदलीकृतः ॥ १८ ॥ प्रत्यक्ष भूमिपालानां भयताञ्छापि सञ्चिद्यौ । न्यस्तशस्त्रौ मम
 पिता धृष्टद्युम्नेन पातितः ॥ १९ ॥ कर्णञ्च पतिते चक्रं रथस्य रथिनां वरः । उत्तमे
 व्यसने सन्तो हतो गाण्डोषधन्वना ॥ २० ॥ तथा शान्तमघो भीष्मो न्यस्तशस्त्रां निरा
 युधः । शिखण्डिनं पुराकृत्य हतो गाण्डोषधन्विना ॥ २१ ॥ मूरिधवा महेंद्र्यासस्तथा
 प्रावगतो रथे । क्रोशतां भूमिपालानां युयुधानेन पातितः ॥ २२ ॥ दुर्योधनञ्च भीमेन
 समेत्य गवम्भारथे । पश्यतां भूमिपालानामधर्मेण निपातितः ॥ २३ ॥ एकको वहुभि
 स्तथ परिवार्य महारथैः । अर्जुनेण नरव्याघ्रो भीमसेनेन पातितः ॥ २४ ॥ विलापो
 मग्नसन्धस्य यो रात्रः पश्यतः । धार्तिकानां कथयतां च मे मर्माणि क्लृन्तति ॥ २५ ॥
 दृशन्त्यापार्मिकाः पापाः पाञ्चाला भिन्नसेतयः । तानेधं भिन्नमर्यादान् किं भवात्

बोले हे यावाभी जेमा आप कहते हैं वह निस्तन्देह वैसाही है परन्तु प्रथम उन
 पावकबानेही इत धर्मरूपी पुलको तोड़दैं । १८ । शत्रु त्यागनेवाला मेरापिता
 राजाओं के समक्षमें आपसोतों के मी देखतेहुये धृष्टद्युम्न के हाथसे गिरायागया
 । १९ । रथियोंमें सेपु करै रथ चक्रके पृथ्वीमें घुसजानेपर वड़े दुःखमें दूराहुआ
 उस धनुनके हाथसे मारागया । २० । इसीप्रकार शत्रु त्यागनेवाले धनुष आदिकसे
 रहित शन्तनुके पुत्र भीष्मजी मी शिखंडीको आगेकरके धनुनके हाथमें मारेगये
 । २१ । इसीप्रकार पुलमें करीर त्यागने के निमित्त बैठाहुआ मूरिधवा राजाओं
 के पुकारतेहुये सात्पाकीके हाथसे मारागया । २२ । दुर्योधन गदासमेत भीमसेनके
 सम्मुख ढोकर राजाओंके देखते अधर्मसे मारागया । २३ । वहाँ अकेला नरोत्तम
 बहुत रथियोंसे बिरुद्ध अधर्म युक्त भीमसेनके हाथसे गिरायागया । २४ । मैंने
 हतोके मुखने दूटी जवाबसे राजाका जो विलाप सुना वह मेरे मर्मस्थलों को काट
 ताई । २५ । उस प्रकारसे पांचालदेशी लोग अधर्मी और पापी हैं जिनका कि
 धर्मका पुच्छट्ट नपाई भाव इसप्रकारसे उन से मर्यादवालोंकी निन्दा नहीं करतेहो

You should keep aloof from such a heinous sin as the white is from the red." To this Ashwathama replied, " You speak the truth un-
 der. But the Pandavas have already broken the bridge of virtue. My
 father, who had laid aside his weapons, was slain by Dhrishtadyumn
 in your own presence. Karan the bravest of warriors was slain by
 Arjun when the wheel of his car was stuck in mud. 20. Similarly
 Bhishm the son of Shantanu, without arms and weapons, was slain by
 Arjun led by Shikhandi. In the same manner, Bhurishrava, who
 had exposed himself to death in the field of battle, was slain by
 Satyaki in spite of the remonstrations of all the warriors. Duryodhan
 was unjustly hit by Bhim in the presence of all the kings. He
 received an unfair blow when he was alone and the enemy surround

धिगर्हति ॥२६॥ पितृहन्तुनह हत्वा पाञ्चालाक्षीं सौप्तिके । काम कटि पतंगो वा
जन्म प्राप्य भवामि वै ॥ २७ ॥ त्वरे चाहसनेनाप- परिद्ध मे चिकीर्षितम् । तस्य मे
स्वर्गगणस्य कुतो निद्रा कुत सुखम् ॥ २८ ॥ न स जात पुमांश्लोकै कश्चिन्न स
भविष्यति । या मे न्पावर्त्तयेदता वचे तेषां हतः मतिश्च ॥ २९ ॥ सञ्जय उवाच । एष
मुक्त्वामह, राज द्रोणपुत्र' प्रतापवाद् । एकास्ते योजयित्वाभ्याद् प्राबादजिमुक्त्वाः परान्
॥ ३० ॥ तमञ्जया महाम्नानो भोजयारुद्रगादुभौ । किमर्ष स्वन्दभो ह्युक्तः । किञ्च
कार्यं चिकीर्षितम् ॥ ३१ ॥ कपलायमयातौ स्वल्पवया इदं नरपथ । समदुःखसुखौ
खापि नावां शङ्कितुमर्हसि ॥ ३२ ॥ अदधत्यागा जुह्वन्कृन्द्- पितृयन्त्रमनुस्मरन् । ताभ्यां
उदाचस्यौ यदस्वात्माचिकीर्षितम् ॥ ३३ ॥ हत्वा क्षत्रसद्व्याकी बोधानां निहितैः शौ-
न्यस्तशस्त्रो मम पिता अहङ्गुणैर्न पातित ॥ ३४ ॥ तेषां हनिष्यामि यदस्यवर्माण

। २६ । मैं रात्रिके समयनिद्रा मुझमें अपने पिताके मारनेवाले पांचालोंको मारकर
जन्मपाकर चाड़े कीट पतङ्गनी होजाऊँ । २७ । और मैं इमीहेतुसे शीघ्रता करताहूँ
कि जो यह मेरे कर्मकरने ली इच्छाहै उतमुझ शीघ्रता करनेवालेको कदां निद्रा
और सुखहै । २८ । यह पुरुष कोऊमें न पैदा हुआहै न होगा जो कि हम पांचाल
देशियोंके मारनेमें यह मति देकर मुझको कांशये । २९ । संजय बोले हे महागज
प्रतापवान् अहद्वत्तामाजी इयन्कार कहकर और एकास्ते में बाँटोंको बाँटकर
शत्रुओं के सम्मुखगये । ३० । यहे साहसी कृतकर्मा और छपाचार्यनी दोषों वससे
कहनेलगे कि कितानिमित्त रथको जोड़ाहै और क्या कर्मकरणा चारहे हो । ३१ ।
हे नरोत्तम तेरे साथ हम दोनों चलेगें एकसा सुखदुःखवाके हमदोनोंपर तुमको
सन्देहकरना उचित नहीं है । ३२ । पिताके मरणको स्मरणकरते अत्यन्त क्रोधयुक्त
अश्वत्थामाजी ने अपने मनका यह सत्त्व सत्त्व विचार वनसे वर्णन किया जो उसके
चित्तमें करनेकी इच्छाथी । ३३ । तेजवालोंसे लालों; शूरीरोंको मारकर शस्त्रोंका
त्यागनेवाला मेरा पिता युद्धमें घृष्टमुन्न के हाथमे मारागया । ३४ । निश्चय करके

ed him in large numbers. The lamentations of the king, with broken
thigh, reported to me by the informers, break my heart ! Why do
you not blame the Panchals who are so lawless and unafal ! I shall
avenge my father's death by slaying the Panchals at night, though
I have to be born among reptiles. I am therefore in a hurry to work
and can find no rest No earthborn man can turn me from my reso-
lution of slaying the Panchals." Sanjaya continued, " Having said
this, Ashwathama began putting his horses to the car, 30. Brave
Kritvarma and Kripacharya said to him, " Why have you prepared
your car and what will will you do? We must go along with you.
Have no suspicion of us who are your partners in weal and woe."

मय वै । पुत्रं पाञ्चालराजस्य पापं पापेन कर्मणा ॥ ३५ ॥ कथञ्च निहतः पापः
पाञ्चाल्यः पशुवन्मया । शस्त्रेण विजितांल्लोकाप्राप्तुयादिति मे मतिः ॥ ३६ ॥ क्षिप्रं
स्वन्दकवधौ सखद्गगाबासकामुंको । मामास्थाय प्रतीक्षेतां रथवर्ष्यो परन्तपौ
॥ ३७ ॥ इत्युक्त्वा रथमास्थाय प्रायाद्भिमुखः पश्चात् । तमन्वगात् कृपो राज्ञ् कृत
धर्माच्च सात्त्वतः ॥ ३८ ॥ ते प्रवता व्यरोचन्त परानभिमुञ्जास्त्रयः । ह्यमाना यथा
पक्षे समिद्धा हृत्पवाहनाः ॥ ३९ ॥ ययुध्व शिबिरं तेषां संप्रमुत्तजनं विभो । द्वारवे
शन्तु संप्राप्य द्रौणिल्लस्यो महः रथः ॥ ४० ॥

इति सौप्तिकपर्वः द्रौणिपुत्रवशिबिरगमेन पञ्चमोऽध्यायः ५ ॥

मैं इसी प्रकार इस पापी धर्मके त्यागनेवाले राजा पांचाल के पुत्र धृष्टद्युम्नको
पापकर्म से मारुंगा । ३५ । मेरे हाथसे पशुके समान मारा हुआ धृष्टद्युम्न
कि सीपकार से भी शस्त्रोंसे विजय किए हुये लोको को नहीं पावेगा यह मेरा मत है
। ३६ । कवचधारी खड्ग और धनुषके उठानेवाले शत्रुविजयी उत्तम रथ
रखनेवाले तुम दोनों सवार होकर मेरा मार्ग देखो । ३७ । हे राजा वह अश्वत्यामा
वह कहकर रथपर सवार होकर शत्रुओंके सम्मुख गये कृपाचार्य्य और यादवकृतवर्मा
उत्तके पीछे चले । ३८ । शत्रुओं के सम्मुख जानेवाले वह तीनों ऐसे शोभायमान हुये
जैसे कि यज्ञमें भावाहनकी हुई टट्टिपुक्त अग्नि होती है । ३९ । हे समर्थ फिर वह उनके
उनेदरोंमें गये जिसके मनुष्य अच्छी रीतिसे सोरहे थे और महारथी अश्वत्यामा द्वार
स्थानको पाकर निपत हुये ४० ॥

Remembering his father's death, Ashwathama, much enraged, dis-
closed to them the scheme that he had formed in his mind, saying,
" Having slain millions of warriors with his sharp arrows, my father
laid as de his weapons and was slain by Dhrishtadyumn; I shall
therefore slay the sinful son of the king of Panchal, Dhrishtadyumn,
with unfair means. 35. Slain by me like a beast, he will no longer
attain the regions open to those who do fighting. This is my
opinion. Cased in armour and armed with swords and bows, you
will wait for my return, destroyers of foes! " Having said this,
Ashwathama mounted his car and proceeded to face the enemies.
Kripacharya and Kritvarma the Yadav followed him. The three
warriors going towards the enemies, looked glorious like fire. They
went to the camp of the sleeping warriors and Ashwathama stopped
at the entrance. " 40.

धृतराष्ट्र उवाच । द्वारदेशे ततो द्रौणिमवस्थितमवक्ष्यते । अकुर्वतां भोजकृपौ
 किं सञ्जय घटस्व मे ॥ १ ॥ सञ्जय उवाच । कृतवर्माणसामन्वय कृपञ्च स महारथः ।
 द्रौणिर्मयुपरीतात्मा शिषिरश्चारमासद्वत् ॥ २ ॥ तत्र भूते महाकायं चन्द्राकंसद्वयं
 तिम । सोऽपश्यत् तारमाधित्य तिष्ठन्ते लामहर्षणम् ॥ ३ ॥ वसानवर्मे वेयाधं महा
 रुधिरविभ्रवम् । कृष्णाजिनोत्तरसङ्गं नागपक्षोपधीतनम् ॥ ४ ॥ वाहुभिः स्वायतेः
 पीनेनानामहरणोद्यते । वज्रागदमहासर्पं ज्वालामालाकुलाननम् ॥ ५ ॥ दंष्ट्राकराल
 वदनं श्वादितास्यं भयानकम् । तयनानां सहस्रैश्च विचित्रैरभिभूयितम् ॥ ६ ॥ तेष
 तस्य वपुः शक्यं प्रवक्तुं येष एव च । सर्वथा तु तदालस्य स्फुटयुरपि पर्वता ॥ ७ ॥
 तस्यास्यनासिकाभ्यान्तु श्रवणाभ्याञ्च सर्वशः । तेषमध्याक्षिसहस्रेभ्यः प्रादुरासीम
 हार्दिव्यः ॥ ८ ॥ तथा तेजोमरीचिभ्यः शंखचक्रमदाधराः । प्रादुरासन् हृषीकेशाः

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे सञ्जय इसकेपीछे उनदोनों कृतवर्मा और कृपाचार्य ने द्वार
 स्थानपर अश्वत्थामाको नियत देखकर क्या क्रिया उसको मुझने वर्णनकरो । १ ।
 सञ्जयबोले कि वह महारथी अश्वत्थामा कृतवर्मा और कृपाचार्य को पूछकर क्रोध
 से पूर्णशरीर डरे के द्वारपरगया । २ । उसने वहां जाकर एक त्रीशको देखा जो
 कि बड़े शरीर वाला चन्द्रमा और सूर्य के समान प्रकाशमान द्वारपर नियत रोम
 हर्षण करनेवाला । ३ । व्याघ्र चर्मधारी बड़े रुधिरको गिरानेवाले कृष्ण मृगचर्म
 का ओदनेवाला नागोंका यज्ञोपवीत रखनेवाला । ४ । बहुतलम्बी स्थूल और
 नानाप्रकारके शस्त्रों के धारण करनेवाले भुजाओं से बड़े सर्पका बाजूबन्द बांधने
 वाला उवाल समूहों से व्याप्त मुख । ५ । दंष्ट्राओं से भयानक महा भयकारी फेले
 हुयेहजारों विचित्र नयनोंसे शोभायमानथा । ६ । उसका शरीर और पोशाकबर्णन
 के योग्य नहीं जिसको कि देखकर सब दृशमें पर्वतभी फूटजायें । ७ । उसके मुख
 नाक कान और हजारों नेत्रोंसे बड़ी २ ज्वाला निकलतीथीं । ८ । उन ज्वालाओं

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, "What did Kripacharya and Krtvarma do on seeing Ashwathama stand at the entrance?" Sanjaya said, "Having talked with them he went at the entrance of the camp and saw there a being glorious like the sun and the moon. He was dreadful to look at, with a tiger's hide, blood thirsty, clothed with the skin of a black antelope, serpents for sacred thread, with long and muscular arms, with a huge serpent tied at his arm, attended by luminous bodies, with dreadful mouth and teeth and thousands of dreadful and wonderful eyes. His body and attire were dreadful beyond the power of speech. Sparks of fire came out from his mouth, nose, ears and thousands of his eyes and thousands of Janardans, adorned with conch discus and mace, were to be seen amid those sparks. Seeing that dreadful being thus stationed, Ashwathama fearlessly hid him with

शतशोष तद्दशः ॥ ९ ॥ तत्त्वद्भ्रतमालोपय भूतं लोकमयङ्कुरम् । द्रौणिर्व्यथितो
त्रिधैरखवर्षैरवाकिरत् । द्रौणिमुक्ताञ्छरास्तास्तु तन्नूत महद्प्रसव ॥ १० ॥ उद्वेरेषि
षार्थोघान् पावको वड्ढवामुखः । अमसत्तांसादा भूतं द्रौणिना प्रदिताञ्छरान् ॥ ११ ॥
अश्वत्थामातु संप्रत्य शरीरांसाधिरेर्यकान् । रथशक्तिं भुमोचार्थं दीप्तमग्निशिखा
मिव ॥ १२ ॥ सा तमाहृत्य द्रोणाग्रा रथशक्तिरदीर्यते । युगान्ते सूर्यमाहृत्य महो
वकेव दिवश्च्युता ॥ १३ ॥ अथ हेमत्सरं दिश्यं स्वर्गमाकाशवन्ध्वसम् । कोपात् समु
द्रवर्हाशु पिलादीप्तमिधोरगम् ॥ १४ ॥ ततः स्वर्गोपेरे धामान् भूताय प्राहिणोत्तदा ।
स तदासाद्य भूतं वै वित नकुलवचसो ॥ १५ ॥ ततः स कुपितो द्रौणिर्द्रुक्तेतुनिभां
गदाम् । पथलन्तीं प्राहिणोत्तस्मै भूतं तामपि चाप्रसव ॥ १६ ॥ ततः सर्वायुषामाधे
वीक्ष्यमाणस्ततस्ततः । अपदपत् कृतमाकाशमनाकाशं जनादेनैः ॥ १७ ॥ तद्भ्रुततमं

के प्रकाश से शङ्ख चक्र गदाचारी हजारों श्रीकृष्ण प्रकट थे । ९ । उसबड़े अपूर्व
सद्य मृष्टिके भयंकारीको देखकर पीड़ासे रहित अश्वत्थामाने उसको दिव्य अस्त्रों
की वर्षासे दकदिया उस बड़े तेजरूपने अश्वत्थामाके छोड़हुये बाणोंको निगला
। १० । जैसे कि वड्ढवामुखनाम अग्नि समुद्रके जलसमूहोंको निगलनाहै उसी प्रकार
उस तेजरूपने अश्वत्थामाके चलायेहुये बाणोंको निगला । ११ । फिर अश्वत्थामा
ने उन अपने पाणसमूहोंको निष्फल देखकर ज्वलित अग्निके समान प्रकाशित
शक्तिको छोड़ा । १२ । वह प्रकाशमान रथ शक्ती उसको घायल करके ऐसे फट
गई जैसे कि मलय के समय आकाश से गिरीहुई बड़ी उल्का सूर्यको घायलकरके
फटजाती है । १३ । इसके पीछे सुवर्णकी मूठ आकाशवर्ण दिव्य स्वर्ग
को ऐतेशीघ्रतापूर्वक गियानसे निकाला जैसे कि विलसे प्रकाशित सर्पकोनिकालतेहै
। १४ । इसके पीछे बुद्धिमानने उत्तम स्वर्गको उस तेजरूपके ऊपर चलाया वह
उस तेजरूपको पाकर उसके शरीरमें ऐसे चलागया जैसेकि नौला विवरमें घुसजाता
है । १५ । इसके पीछे उस क्रीधयुक्त अश्वत्थामाने इन्द्रध्वजाके समान उसज्योतिषं
रूप गदाको ऊपर चलाया उस तेजरूपने उमको भी निगला । १६ । इसके पीछे

his celestial weapons, but he swallowed all his arrows. 10. He received
all the arrows within himself as the ocean fire soaks the waters of the
ocean. Seeing his arrows fruitless, Ashwathama discharged at him
a Javelin bright as fire. But the Javelin broke upon him like the
meteor of pralaya after striking the sun. Then he drew out his gold-
handled sword from the scabbard, like a serpent from its hole. He
throw the sword at the wonderful being and it entered his body like
a mungoose in a hole. 15. Then Ashwathama hurled at him his
mace, but that too, disappeared. When all his weapons were thus
exhausted, he looked all round and saw the whole sky full of Shri-
Krishn. Destitute of arms, Ashwathama, seeing that miracle;

इन्द्रा द्रोणपुत्रो निरायुधः । भद्रवीदतिस्ततः कृपावाक्यमनुस्मरन् ॥ १८ ॥ मुक्ता
 मयि पथं पथं सुहृद् न धुपोति यः । स शोचत्यापदं प्राप्य यथाहमातवस्यै तो ॥ १९ ॥
 शास्त्रहृद्यानविद्वान् यः समतीत्य जिघांसति । स पथः प्रच्युतो घर्मात् कुपथे प्रतिहन्त्यते
 ॥ २० ॥ गोब्राह्मणनृपस्त्रीषु सख्युर्मातुर्गुरोस्तथा । हीनपाणजडान्त्रेषु सुप्तभीतोत्थि
 तेषु च ॥ २१ ॥ मत्सोमस्यप्रमत्तेषु न शास्त्राणि निपातयेत् । इत्येवं गुरुभिः पूर्वमुपादिष्टं
 नृणां सदा ॥ २२ ॥ सोहसुक्कम्य पन्थानं शास्त्रहृष्टं सनातनम् । भ्रमार्गेणैवमारुध्य
 घोरामापदमागतः ॥ २३ ॥ तावापदं घोरतरां प्रवदन्ति मनीषिणः । यदुद्यम्य महत्
 कृत्यं अयावपि निवर्त्तते ॥ २४ ॥ अशक्यञ्चैव तत्र कर्तुं कर्म शक्तिबलादिह । न हि
 वैबाहुरीयो वै मानुषं कर्म कथ्यते ॥ २५ ॥ मानुष्ये कुर्वतः कर्म यदि देवाश्च सिध्यति ।
 स पथः प्रच्युतो घर्माद्विपथं प्रतिपद्यते । प्रतिघातं ह्यविद्वानं प्रवदन्ति मनीषिणः । यदा
 रक्ष्य क्रिया काञ्चिद्भयादिह निवर्त्तते ॥ २७ ॥ तद्विद्वं दुष्प्रणीतेन भयं मां समुपादिष्य

सब शस्त्रोंके नाशवान होने पर जहाँ तहाँ देखनेवाले अश्वत्थामाने आकाशको भी-
 कृष्णसे पूछादेखा । १७ । शस्त्रोंसे रहित अश्वत्थामा उम बड़े चमत्कारको देखकर
 अत्यन्त दुःखी और कृपाचार्य के वचन को स्मरण करते बोले । १८ । कि जो
 पुरुष अभय और परिणाम में शुभदायक मित्रोंके वचनोंको नहीं सुनताहै वह आप
 त्तिको पाकर ऐसे शोचता है जैसे कि मैं दोनोंको उल्लंघनकर अर्थात् उनके विरुद्ध
 कर्म करके जो भ्रष्टानी शास्त्रों को उल्लंघन करके मारना चाहताहै वह धर्म से
 च्युत होनेवाला है इसहेतुसे कुमारमें माराजाता है । २० । गौ ब्राह्मण राजा स्त्री
 मित्र माता गुरु निर्व्वल विचित्र ग्रन्थे सोनेवाले भयभीत उठेहुये मदमें उन्मत्त रों
 गादिकों से अचेत और भ्रूनादिकके आवेशसे मनवाले मनुष्यपर शस्त्र नहीं चलावे
 । २२ । इसप्रकार पूर्वमें बड़े २ लोगोंके उपदेश होतेथे सो मैंने शास्त्रके बतायेहुये
 सनातन मार्गको उल्लंघन करके कुमार से कर्मका प्रारम्भ करके घोर आपत्तिको
 पाया । २३ बुद्धिमान् लोग उस आप त्तिको धोक्कहतेहैं-जोबड़े कर्मको प्रारम्भकरके
 भयसे मुलको फेरताहै । २४ । यहाँ वह कर्म सामर्थ्य और बलसे करने के योग्य
 नहीं मनुष्य का कर्म देवसे बड़ा नहीं कहाजाताहै । २५ । कर्म करनेवालेका जो

remembered the words of Kripacharya and said to himself, " He who does not give ear to the unpleasant but salutary advice of his friends, falls into misery and feels remorse like myself and is destroyed by falling into bad ways. Let no one lay hand on the cow, brahman, king, woman, friend, mother, preceptor, feeble, mad, blind, sleep, intoxicated sick and ghost-riden. 22. Thus I have set at nought the precepts of old men and have fallen into difficulty by acting against the teachings of scriptures. A calamity is termed the worst by wise men, where one beginning a great work has to recede from it. Here the work I have to do is not to be accomplished by physical power, for human

तत्र । न हि द्रोणमृतः संख्ये निवर्त्तत कथयत ॥ २८ ॥ इदं च समद्वन्द्वं देवदण्डमि
 बोधयत । न वैतस्मिन्नानामि चित्तयन्नि सर्वथा ॥ २९ ॥ पुत्र घयमघमेण प्रवृत्ता
 कल्पयामतिः । तस्याः फलमिदं घोरं प्रतिघातावदृश्यते ॥ ३० ॥ तद्विदं देवविहितं मम
 संख्ये निवर्त्तनम् । नाग्यत्र देवानुद्यन्तुमिह शक्यं कथयत ॥ ३१ ॥ सोऽहमघ महदेवे
 मपये शरणं प्रभुम् । देवदण्डमिदं घोरं स हि मे नाशयिष्यति । ३२ ॥ कपादिन देव
 देवमुमापातितनावयम् । कपालमालिनं रुद्रं भगनेत्रहरं हरम् ॥ ३३ ॥ स हि देवोऽत्य
 गाहं वास्तपला विक्रमेण च । तस्माच्छरणगम्येमि गिरिशं शूलपाणिनम् ॥ ३४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि महाभूतदर्शने द्वैतिकाचिन्तायां षष्ठोऽध्यायः ६ ॥

मनुष्य कर्म देवसे सिद्ध नहीं होता है वह धर्ममार्ग से रूपत होकर आपाति को
 प्राप्त होता है । २६ । ज्ञानी पुरुष प्रातिज्ञानको अविज्ञान कहते हैं जो इसलोक में
 किसीकार्यको प्रारम्भ करके फिर भयसे छोड़ देता है सो अन्यायसे यह भय मेरे
 समक्षमें नियत हुआ द्रोणाचार्यका पुत्र युद्धमें किसी दशार्भभी मुख फेरनेवाला
 नहीं हुआ । २८ । और वह बड़ा तेजस्व उत्पन्न देवदण्डके समान सन्नद्ध है मैं सब
 प्रकारसे विचारता हुआभी इसको नहीं जानता २९ । निश्चयकरके जो मेरी यह पाप
 बुद्धि अथर्वमें प्रकृत है उसका यह महाभयकारी फल मारकेलिये प्रकट है । ३० । वह
 मेरा युद्ध में मुझका फेना देवका रचा हुआ है यहाँ किसी दशार्भभी की कोई बात
 उपाय करने के योग्य नहीं । ३१ । सो मैं अवसमर्थ और शरणकेयोग्य महादेवजी
 की शरणागत होता हूँ वही मेरे इस घोर देव दण्डका नाश करेगा । ३२ । जो कि
 कपादि, देवताओं केभी देवता, उमापाति, उपाधि से रहित कपासों की माला रस-
 नेवाले रुद्र, भगनेत्र के मारनेवाले हर । ३३ । उस देवताने तप और पराक्रम से
 देवताओं को उरखेवन किया इसीसे मैं उस गिरिश और शूल चारी को शरणा
 गत होता हूँ ॥ ३४ ॥

work cannot supersede a divine one 25 He whose work is not blessed
 by God, falls from the path of virtue into misery. It is a folly in the
 opinion of wise men. I am now in the danger of giving up my enter-
 prise. Dronacharya's son never turned flee in any battle. This glo-
 rious form is standing before me an embodiment of divine wrath, and
 I cannot gauge it in spite of my efforts. Surely this is the fruit of
 my own evil intention. 30. This defeat is ordained by god for me,
 and I can devise no remedy for it. I shall now seek refuge of almighty
 Mahadev and he will remove this divine chastisement. He is the
 god of gods and Har, who surpassed all the gods in asceticism and
 prowess. I shall therefore seek refuge of Girish the bearer of
 trident. 34

सर्वे उवाच । परं स चिन्तयित्वा तु प्रीणयन्प्रो विशाम्पते । अश्वतीर्थे स्थापयत्वा
 द्वेषेण प्रणतः स्थित ॥ १ ॥ प्रीणित्वाद्य । उग्रं स्थाणुं शिव रुद्रं सर्वमोक्षानमीश्वरम् ।
 गिरीशं वरदं देवं भवभावनमीश्वरम् ॥ २ ॥ शितिकण्ठं मजं शक्रं दक्षकृतुहटं हरम् ।
 विश्वरूपं विरूपक्षं बहुरूपमुमापातिम् ॥ ३ ॥ इमं शानवासिनं हतं महागणपतिं विभुम् ।
 खट्वागधारिणं रुद्रं जटिलं ब्रह्मचारिणम् ॥ ४ ॥ स्तुतं स्तुत्यं स्तुयमानममोक्षं कृत्स्निना
 ससम् । विलोहितं नीलकण्ठमसह्यं दुर्निवारणम् ॥ ५ ॥ शुभ्रं ब्रह्मसूत्रं ब्रह्म ब्रह्मचारि
 णमेव च । व्रतवन्तं तपोनिष्ठमनन्तं तपतांगतिम् ॥ ६ ॥ बहुरूपं गणाध्यक्षं स्वयं परिपश्य
 प्रियम् । घनाध्यक्षेक्षितमुखं गौरीहृदयवस्त्रभम् ॥ ७ ॥ कुमारवितरं विंगं गोबृहोत्सवभा
 हनम् । तनुवाससमस्तुप्रमुखाभूषणतम्परम् ॥ ८ ॥ परं परेश्वरं परमं परं यस्मान्मविद्यते
 इत्यहोत्समभर्तारं दिगन्तं देशरक्षणम् ॥ ९ ॥ क्षिप्र्यकवचं देवं खड्गमौलि

अध्याय ७ ॥

संजय बोले हे राजा वह अश्वत्यामा इस प्रकार अस्त्रेभकार विचार काके रथ
 के बैठनेके स्थानमें उतरकर नम्रता पूर्वक देवेशके सम्मुख निपत हुआ । १ ।
 अश्वत्यामा बोले कि मैं अत्यन्त शुद्धचित्त से अज्ञानियों के कठिन कर्म्मों में
 शिवजीको पूजन करता हूँ जोकि उग्र, स्थाणु, शिव, रुद्र, सर्व, ईशान, ईश्वर,
 गिरीश, वरद, देवभवावन, ईश्वर । २ । शितिकण्ठ, अज, मुक्त, दक्ष कृतुहट,
 हर विश्वरूप, विलोहित, बहुरूप, उमापाति । ३ । इमं शानवासी, हत, महागणपति,
 विभु खट्वाङ्गारी, रुद्र, जटिल, ब्रह्मचारी । ४ । स्तुतं स्तुत्यं स्तुयमान, प्रमोक्ष,
 कृत्स्निवास, विलोहित, नीलकण्ठ, असह्य, दुर्निवारण । ५ । शुभ्र, ब्रह्मसूत्र, ब्रह्म,
 ब्रह्मचारी, व्रतवन्त, तपोनिष्ठ, अनन्त, तपतांगति । ६ । बहुरूप, गणाध्यक्ष, भिन्न,
 परिपश्य, घनाध्यक्ष, क्षितिमुख, गौरीहृदयवस्त्रभ । ७ । कुमारवितर, विंग
 नन्दासाहन, तनुवासस, शस्तुप्र, उभाभूषणतम्पर । ८ । परसेपरे भितसे कि उच्यते
 भेष्ट नहीं है उत्तमवाण अस्त्रोंके स्वामी दिगन्त देशरक्षण । ९ ।

CHAPTER VII

Sanjaya said, " Having reflected well, Ashwathama came down
 from his car and stood humbly before the god of gods. He said,
 "With a pure and concentrated mind, with a work difficult to be done
 by the ignorant, I worship the great Shhanu, Shiv, Rudra, Sharv,
 Ishau, Ishwar, Girish, Buad, Devbhav-bhavan, Ishwar, Smitikanth,
 Aj, Shakra, Dakshkrituhar, Har, Vishwarup Virupaksh, Umapati,
 Shmashanvati, Dript, Mahaganapati, Vibhu, Khatwangdhari, Rudra;
 Jati, Brahmehari, Stut, Stutya, Stooyaman, Amogh, Krativasas,
 Bilohit, Nilkanth, Asahya, Durnavaran, Indra, Brahmu, Bratvanti,
 Taponikth, Anant, Taptargit, Vahurup, Ganadhyaksh, Trinstra,
 Perishad-priya, Dharadhyakah, Kshitimukh, Gauri-hridayavallabh,
 Knaputar, Ping, Na divahan, Tanuvasas, Atyugra, Umabhochau.

विभूषणम् । प्रपद्ये चारुं देव परमेण समाधिना ॥ ११ ॥ इमांवेदापदं घोरा तवमाद्य
 सुसुखराह । सर्वभूतोपहारंय यस्मैदे शुक्तिना शुचिम् ॥ १२ ॥ इतिस्य भवसिर्त
 ज्ञातयोयोगात् श्वकर्मणः । पुरस्तात् काञ्चनी वेदी प्रादुरासीमहात्मनः ॥ १३ ॥
 यश्चान्योत्तारात् शिवात्मनश्चक्रात्सद्विशो विद्विष्य श्वकर्मणालानिरभिपूषद् ॥ ४ ॥
 हीमतास्पवनाभात्र नैकपादशिरोभुजा । रत्नचित्रागदधरा । समुद्यतफलास्तया ॥ १५ ॥
 द्विपौलमतिकाशाः प्राशुशासम्महागणाः । इववराहोद्भूयन्प्राभ इयमोमायुगोमुखा
 ॥ १६ ॥ मामावादिप्रहसिनश्चेदितोत्कृष्टगाक्षिते । सत्राद्यन्तस्ते विद्वयवद्वेषामान
 जशयुः ॥ १८ ॥ संस्तुष्यन्तो महादेवं मा, कुशोणा सुवचंससः । विवर्धयिष्या प्रौणि
 स्मैद्विमातं हृदात्मनः । जिह्वात्मनांस्तत्तजः संतिष्ठन् च विदक्षथ ॥ १८ ॥ यमोप्र
 परिचाकृत शूलपीडुषापण्य । चोररुपा समाजमुभूतसद्या समन्तत ॥ १९ ॥ जन

द्विरुपकृष्य, गुंष्टिरत्तक, देव चन्द्रपौत्रे विभूषण एने देवताके उत्तम समाधि से
 शरणागत होताहूँ । ११ । अब जो इमयोर कठिन आपात्तमे उर्ध्वोद्गोत्राञ्ज उस
 दक्षिणे वन शिवजी का मैं सर्वभूतं वाली मे पूजत करुंगा । १२ । उस शुभकर्मों
 महात्मा के निम्नको योगसे जानकर भगि से स्वर्णमयी वेदी-मकटदूर्ई । १३ । हे
 राजा तब उस वेदी में अग्नि देवता मकट, हुए उतने दिशा विशाओं को और
 आकाशको अपनी ज्वालाओंसे पूर्णकिया उस स्थानपर प्रकाशित मुख और नेत्र
 रत्नवशलि बहुवसे चरण शिर और भूजावले रत्नजदित वाज्रन्दधारी ऊंचा हाथ
 करनेवाले । १५ । द्वीप और पर्वतकेस्वरूप बहंगण मकटदुपे जाति कुचा वाराह
 और ऊंटकी सूत घोड़े बैल और शृगाल के समान, मुख रखनेवाले । १६ । सब
 साक्षिकी भयभीत करने बड़े प्रकाशकी उत्पन्नकरते महादेवजी की स्तुति करते बड़े
 तेजस्वी उस अवस्थायाके सम्मुखगये । १७ । महात्मा अवस्थायाकी महिमा के
 बचानेके अभिजापी और उसके तेजको मानना चाहते राजपुत्र देखनेके उत्कण्ठित
 । १८ । ऐसे भवानक और उत्र प्रभाववाले शूल पटिश शस्त्रोंको हाथमें रखनेवाले
 चोररूप भूतगण चारोंओरसे आपहुँचे । १९ । जोकि अपने दर्शनसे तीनों लोकोंके

tatpar, above all and best fav), possessor of good weapons, Dignit,
 Deshikashin, 10. Hiranyakavach, Brishhi-cskahak, Dev, Chundea-
 maah, I bow to you with all my heart. I shall worship Shy with
 the offering of my whole body, to get rid of this trouble." With
 these thought in the mind of that virtuous man, a gold altar stood
 before him. Then god Agni, appearing on that altar, illumined the
 sky and the directions. There also appeared glorious faces and eyes,
 with many feet, heads, jewelled arms upraised, 15 huge bodies like
 hills and isles, having the appearances of dogs, hogs, camels, horses,
 oxen and jackals, terrifying all the world, d flusing light and praising
 Mahadev. They all came before Ashwathama, to glorify him as well
 as to know his strength and desirous of seeing the battle at night

मयुर्मं ये क्षम्ये देव इत्यादि वचनम् । तत्र पक्षमा पापे प्रथमं न अकार महाबल
 । २० ॥ तत्र सोम्येन सम्पन्न द्वेणुम् । प्रतापवान् । उपहार महाभयुरवात्मानतपुत्रा
 इत्य ॥ २१ ॥ तं कद्रु गीद्रु कर्मण रौद्रै कर्मजितकुत । अग्निष्पुत्र महात्मानमित्युवाच ।
 कृताञ्जलि ॥ २२ ॥ श्रौणिकवाच । इममात्म समघाह जानमगिास कुले । अग्नी
 मगधन् प्रसृष्टोऽथ म वाजेम् ॥ २३ ॥ ७७ मकरा महात्सव परमेज समाधिना
 अश्वामावादि विश्वात्म-मुप-कुर्मि तवाप्रतः ॥ १४ ॥ त्वयि सर्वाणि भूतानि सर्वभूतेषु
 चासि धे । गुणाना हि प्रभानानामकश्च त्वयि तिष्ठति ॥ २५ ॥ सर्वमूलाध्ययि त्रिभो
 हविर्मतावस्थितम् । त्रितियुहाण मां देव यद्यथाकथाः परे मया ॥ २६ ॥ इत्युक्त्वा त्रिभि
 राश्वथै तां चैर्षीं द्वापतावकाम । सर्वजवात्मानमाह्वय कृत्वा चर्मभ्युपाविशत् ॥ २७ ॥

भयको उत्पन्नहर्षे उनको देखकर महावनी अश्वत्थामाजी ने भी पीडा नहीं की
 । २० । इसके पाँछे बड़े क्रोधपुक्त प्रतापवान् अश्वत्थामाने सोमदेवता से सम्पन्न
 रखनेवाले मन्त्रके द्वारा शरीररूप भेदको अर्पण किया । २१ । हाथ जोड़ेहुये
 अश्वत्थामा उभय रुद्र कर्मवाने अजेय महात्मा रुद्रजी को उनके रुद्रकर्मों से स्तुति
 करके यह बचन बोले । २२ । हे भगवन् अत्र मैं अगिरावंश में उत्पन्न होनेवाले
 इस शरीरको आत्म रूपी अग्निमें इवन कराता हूँ मुझ बलिरूप को आप अर्गाकार
 करिये । २३ । हे विश्वात्मन महादेवजी मैं इस आपत्तिमें आप की भक्ति और
 परब समाधि से आपके आगे अर्पण करता हूँ । २४ । सबजीव आप में हैं और
 निश्चय करके सबजीवों में आपही हैं और आप में प्रधान गुणों को ऐश्वर्यानी
 नियत है । २५ । हे सब जीवोंके रक्षास्थान समर्थ देवता मुझ नियत इत्य
 रूपको स्वीकारकरो जो शत्रु मुझसे अजेय हैं । २६ । अश्वत्थामाजी यह कहकर
 और शरीरकी शीतिको त्याग करके उन वेदीपर जिसपर अग्नि प्रकाशितथी जुटकर
 अग्निमें प्रवेश करगये । २७ । साक्षात् भगवान् महादेवजी हुंतातेहुये बस ऊँचे हाथ

They bore dreadful arms and weapons and gathered there from all sides. They could truly the three worlds with their appearances but Ashwathama remained firm there. Then glorious Ashwathama in great rage, with incantations of hymns relating to Siva, offered his own body. 21 Having praised Rudra of dreadful prowess, with clasped hands, he said, "I, born in the family of Angira, offer a sacrifice of my own body. Pray accept me as such. I offer, myself, with full devotion, at this time of distress. All beings live in you and you are surely within all beings. You are the seat of all virtue. 25. Refuge of all beings, accept me as a victim of sacrifice, if I cannot conquer my foes." Having said this, Ashwathama gave up all love for his own body and ascended the altar of burning fire. Seeing him thus enter fire with upraised arms, Siva said to him with a smile, "I

समूहं प्राहुः निवेष्टुं हृष्ट्या हृषिकपिच्छिनम् । अन्नबीजगन्धान् साक्षात्प्रहृष्टयो हसन्निव
 ॥ २८ ॥ सत्यशौचाङ्गवस्त्रागौलपसा नियमेन च । क्षान्त्या गच्छत्या च सुतया च
 कुश्या च वचसा तथा ॥ २९ ॥ यथावद्भरमारुह्य हृष्टोनाकिलदुर्कमेणा । तस्मादिष्ट
 तमः कृष्णाद्यन्धो मम न विद्यते । ३० ॥ कुर्यता तस्य सम्मानं स्वाब्धुः प्रिहासना
 मथा । पाञ्चालाः सहसा गुप्त मन्वाश्च बहुसः कृताः ॥ ३१ ॥ कृतवन्तस्यैव सम्मान-
 पाञ्चालाः प्रसूता मया । अभिभूतास्तु कालेन नैवामयापि जीवितम् ॥ ३२ ॥ परशुमेधा
 महात्मान मगवान्मम हस्तमूमे । आदिवेश दूरी चास्त्रे विमले बहगनुत्तमम् ॥ ३३ ॥
 जयविद्यो मगवता भूयो अज्वाल तजसा । घलवांश्चामयद्रुहे देवसुप्रेत तेजसा ॥ ३४ ॥
 तमहृष्ट्यादि सूतानि रक्षांसि च समाद्रुचत् । अभितः शत्रुशिष्टिद यागं साक्षा
 द्विवेश्वरम् ॥ ३५ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि द्रौणि शिबिरप्रवेशे अष्टमा अध्यायः ॥

पेण्डारहित हृष्य रूपाको नियत देवकर बोले । २८ । मैं जिगमकार पुगमकर्मा
 श्रीकृष्णजी की सत्यता-पवित्रता सरलता त्याग तप नियम ज्ञान्ति भक्ति धैर्य
 युद्धि और यचन से आराधन कियागया और उस श्रीकृष्ण से अधिकतम मेरा
 कोई प्रिय नहीं है । ३० । हे ताव तुतको जाननेके अभिन्नापी श्रीकृष्णजी
 का मान करनेवाले मैंने प्रकस्याट पांचालदेशियों की रक्षाकरी और बहुतसी
 माया प्रकटकीं । ३१ । पांचालदेशियों के रक्षाकरनेवाले मैंने उन श्रीकृष्णजी का
 माननेक्या परन्तु अब यह पांचालदेशी काल से पराजय हुये हैं इससे अब इन का
 जीवन नहीं है । ३२ । मगवाने उस महात्मा से ऐसा कहकर अपने शरीरको उससे
 प्रवेश किया और उसको बहुत निर्मूल और उच्चम सद्ग दिया । ३३ । फिर भगवान्के
 प्रवेशित शरीरसे अश्वत्थामाजी तेजसे ज्वलित अग्निरूप हुये और देवताके दिपहुये
 तेजसे युद्धमें वेगवानहुषे ३४ साक्षात् ईशकरामान शत्रुके डरे में जाननेवाले उन
 अश्वत्थामाजीके पीछे दृष्टिमे गुप्त जीव और राक्षस चारों ओरसे चले ॥ ३५ ॥

was worshipped with t o truth, holiness, straight forwardness, resig-
 nation, tap, vows, devotion, patience and wisdom of Shri Krishn, who
 does things with the greatest ease, and surely I hold none dearer than
 him Desirous of knowing these and wishing to keep the prestige
 of Shri Krishn, I protected the Panchals and produced many illusion,
 I had regard to the prestige of Shri Kri-hn in protecting the Pan-
 chala. But the Panchals are conquered by Time and their days are
 numbered. " Having said thus, Bhagwan entered his body and made
 him the present of a good sword. Then Ashwathama became
 glorious like fire and endued with divine energy was ready to fight.
 Going like Ishwar himself into the enemy's camp, Ashwathama was
 followed by invisible beings and rakshasesa. " 35.

धृतराष्ट्र उवाच । तथा प्रयाते शिविर द्रोणपुत्रे महारथे । कच्चिद् कृपश्चमाजी
मयात्तो न पवत्तेनाम् ॥ १ ॥ कश्चिन्न यारितौ शुद्धैरक्षीभनोपलक्षितौ । असहामिति
मन्वानौ न निवृत्तौमहारथौ ॥ २ ॥ कच्चिदुन्मथ्य शिविर हत्वा सोमकपाण्डवाद्
दुष्योधनस्य पदवीं गतौ परमिकारणे ॥ ३ ॥ पाण्डवलैर्निहतौ वीरौ कश्चिन्न स्वपत्
क्षितौ । कश्चिन्नाभ्या कृप रथे तन्ममाचक्ष्व सञ्जय ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच तस्मिन्
प्रयाते शिविर द्रोणपुत्रे महात्मनि । कृपश्च कृतमौ च शिविरद्वार्यंतिष्ठताम् ॥ ५ ॥
अश्वरथामातु तौ हृष्ट्वा पत्न्यवन्तौ महारथौ । प्रहृष्ट शनैः राजविद् वचनमग्रणीत्
॥ ६ ॥ यत्तौ संवन्तौ पथ्यात्तौ सर्वशत्रस्य नाग्ने । किं पुनर्योधशेषस्य प्रसुप्तस्य विश
पत् ॥ ७ ॥ अह प्रवेशे शिविरं चरिष्यामि च कालम् । यथान काश्चिदपि वा
जीवन्मुच्येत मानव । तथा मवदभ्य कार्यं स्यादिति मे निश्चिता मति । ८ ॥ इत्युक्त्वा

अध्याय ८ ॥

धृतराष्ट्र बोले डरे में महारथी अश्वत्थामा के जानेपर भयसे पीड़ामान् कृपा-
चार्य और कृतवर्मा तो लोटकर नहीं चलेभाये । १ । इहीं नीच रत्नों से तो
नहीं रोकोगे और क्या उन लोगों ने उनको नहीं देखा दोनों महारथी रात्रिके पुरु-
को असह जानकर तो नहीं लोटे २ डरेको मथकर और शुद्धमें सोमक पाण्डवों
को मारकर दुष्योधन की उच्चम पदवीको प्राप्त किया । ३ । क्या वह दोनों वीर
पाँचाळ देशियों के हाथ से मृतक होकर पृथ्वीपर शयन करनेवाले तो नहीं हुने
अथवा कोई उन दोनों ने कर्म भी किया हे सजय वह सब मुझसे कहौ । ४ । सजय
बोले कि डरे में उस महात्मा अश्वत्थामा के जानेपर कृपाचार्य और कृतवर्मा डरे
के द्वारपर नियतरहे । ५ । हे राजा फिर अश्वत्थामाजी उन दोनों महारथियों को
उपाय करनेवाला देखकर बड़े प्रसन्न होकरयह वचन बोले । ६ । उपाय करनेवाले
आप सब शत्रियों के नाश करने को समर्थ है मुख्यकर शेष वचे और सोतेहुये
शूरवीरों के मारनेको फिर क्यों नहीं सपर्यहोगे । ७ । मैं डरेमें प्रवेश करूगा और
कालकेसमान घूमगा इस द्वारपर भानेवाला कोईमनुष्य भी जैसे प्रकार जीवता न
जानेपावे वैसाही आपको करना योग्यहै यह मेरा हृद विचारहै । ८ । अश्वत्थामा

CHAPTER VIII

Dhrtrashtra said, " Did Kripacharya and Kritvarma turn back out of fear, when Ashwathama had entered the camp? Were they afraid of the night attack and so turned back? Did they obey Duryodhan by destroying the Somats and the Pandavas in their camp? Were the two warriors slain by the Panchals? Did they perform any thing? If so tell it to me, Sanjaya " 4 Sanjaya said, " Kripacharya and Kritvarma kept standing at the entrance, while Ashwathama entered the camp. Seeing them thus standing, Ashwathama was much pleased and said ' I will slay all the warriors by your prowess

प्राविशत् द्रोणि पार्थानां शिविरे महत् । अद्वारणाऽवस्कन्ध निहाय भवमात्मनः ॥१३॥
 स प्रविश्य महाबाहुर्दृष्टश्च तस्य ह । धृष्टद्युम्नस्य निलयं शनकैरभ्युपागमन् ॥१०॥
 ते तु कृत्वा महत् कर्म श्रान्ताश्च बलप्रद्वणे । प्रसुप्ताश्चैव विभ्रस्ता समेत्य परिवारिताः
 ॥ ११ ॥ अथ प्रविश्य तद्वेश्म धृष्टद्युम्नस्य भारत । पाञ्चालिप शयने द्रौणिपरपश्यत्
 सुप्तमैन्तिकान्त ॥ १२ ॥ क्षामावदति महति स्पर्शं गाल्तरणसेवृत । मक्षियभवरसैयुक्त
 घृषैश्चूर्णैश्च शसिते ॥ १३ ॥ त शयान महाज्ञान विभ्रस्यन्नुताभयम् । प्राबोध्यत्
 पादेऽक्षी शयनस्य महीपते ॥ १४ ॥ रुबुध्य चरणस्पर्शमुत्थाय रणदुर्मद । अश्रयजानय
 मेवात्मा द्रोणपुत्र महारथम् ॥ १५ ॥ तमुत्पतन् शयनाद्दृष्टवामा महाबलः । केशेष्वाल
 लम्य पाणिभ्या निष्पिपेय महीनते ॥ १६ ॥ स बलात्तेन निष्पिष्ट साध्वसेन च
 भारत निद्रया चैव पाञ्चालियो नाशकञ्चेष्टितु तदा ॥ १७ ॥ तमाक्रम्य पदा राजन्

गी शरीरके भयको त्यगर अश्रयजानमे घुसकर पायडवोंके वड़े डेरे में पहुँचे । १३ ।
 उसके स्थानोंके जाननेवाले ने सुगमता से धृष्टद्युम्नके डेरेको पाया । १० । वह
 लौट सम्मुख हाँकर युद्धमें चारोंओर, दौड़नेवाले युद्धमें महाकाठन, कर्म्मों को करके
 बहत् श्रमित होकर सोमये थे हे भरतवशी इसके पीछे अश्रयत्थामानी ने उस धृष्ट
 द्युम्न के उस स्थान में प्रवेशकरके शयनपर सोतेहुये धृष्टद्युम्न को समीपसे देखा
 । ११ । हे राजा स्वच्छ अत्यन्त अज्ञाती से तैयार बहुमूल्य विस्तराँसे युक्त बड़ी
 उत्तम मालाओं से अलंकृतधूप चन्दन चूरेआदिसे सुगन्धित बड़े शयनर सोनेवाले
 विदवासी और निर्भय उस महात्मा धृष्टद्युम्न को चरणघात से जगाया । १४ ।
 युद्धमें दुर्मद धृष्टद्युम्न ने चरणके घातसे जागकर बड़े बुद्धिमानने महारथी अश्र
 यत्थामा को पहचाना । १५ । बड़े पराक्रमी अश्रयत्थामाने उस शयनसे उछलनेवाले
 धृष्टद्युम्न को हाथोंसे वालों के द्वारा पकड़ कर पृथ्वी पर रगड़ा । १६ । हेभरत
 वधा त्वं बल से उम धृष्टद्युम्नका रगड़ाहुआ वह धृष्टद्युम्न भय और निद्रासे चेष्टा
 करने को समर्थ नहीं हुआ । १७ । हे राजा पैरोंसे उसका कण्ठ और छातीपर

why shall you be not able to slay these retaining few who are sleep-
 ing. I am about to enter the camp and to roam there like Death
 and I charge you not to let any one pass a ivg out of this entrance. "
 Ashwathama fearlessly entered the camp by another way, and well
 acquainted with all its parts, he easily found the tent of Dhrishtady-
 umna. 10. All the warriors were asleep after the toils of the day
 Ashwathama entered the tent of Dhrishtadyumna and viewed him
 from a short distance. With a kick he awakened Dhrishtadyumna
 who was sleeping a blurd and fearless sleep on a capacious bed, soft
 and precious, well-decked with garlands and sandal powder. Aypk-
 eeing at the blow of the kick, wise and valiant Dhrishtadyumna
 recognised Ashwathama. Ho jumped up from his bed and Ashwa-

काठे चोरासि चोमयो । नदन्ते विश्फुरन् १५ञ्च पशुमारममारवत् ॥ १८ ॥ तुश्नकेषु
 स द्रौणि मतिश्चकमुदाहरत् । आचार्यपुत्र शक्रेण जहि मां मा चिरं कृपा । स्व
 कृते मुकुनोलोकान् गच्छेय द्विपदाश्चर ॥ १९ ॥ एवमुक्त्वा तु वचन विरराम परत्प
 सुन पाञ्चालराजस्य आकांक्षो बलिना शशम् ॥ २० ॥ तस्याश्चकान्तुं तां वाचं
 सभूय द्रौणिरप्रवीत् । अन्ध्याप्येधातिना लोकान् सन्ति कुलपासन । तस्माच्छक्रेण
 निघन न स्वमर्हसि दुर्मते ॥ २१ ॥ पर्यं भुवाणस्त्रीं सिंहो मत्तमिष द्विपम् । नर्म
 स्वभ्यवधीत् क्रुद्धः पादाघ्निते मुदादणै ॥ २२ ॥ तस्य वीरस्य शब्देन माय्यमाणस्य
 वेदमनि । मृतमेवाप्यवश्यमन्तो न स्म प्रस्थाहरन् भवात् ॥ २३ ॥ तस्तु तेनाभ्युपायेन
 गतयित्वा यमक्षयम् । अप्यतिष्ठत तेजस्वी रथ प्राप्य सुदृशानम् ॥ २४ ॥ स तस्य
 मधमाद्राजन् निष्कम्प नादयन्दिश । रथेन सिधिर प्रायाजिज्ज्वांसुद्विपतो धली ॥ २५ ॥

दवाकर पुकारते और चेष्टा करने को पशुकी भांति मारा । १८ । फिर नलों से
 पीड़वान् करते उस घृष्टमुन्ने धारें अशक्त्यामसे कहा हे आचार्य के पुत्र मुझसे
 बल्लसे पारो विलम्ब मत करो हे द्विपादों में श्रेष्ठ मैं आपके कारक से पवित्र लोकों
 को पाऊं । १९ । शत्रुमोंको तपानेवाला बलवान् से कठिन दवावाहुआ राजा
 पाञ्चलका पुत्र इस प्रकार के वचन को कहकर मँनहो गया । २० । इम के पीछे
 अशक्त्यामा उनके उस धीरे से कहेहुये वचन को सुनकर बोले हे कुनकलंकी गुफके
 मारनेवाले के नांकनहीं है इतदेतुसे तुम शत्रुने मरने के योग्य नहींहि हेदुर्बुद्धी । २१ ।
 जैसे कि सिंह मनुवाले हाथी की ओरको गर्जता है उभीपकार उस वीरसे इसप्रकार
 करतेहुये कोभयुक्त अशक्त्यामाने कठिन पडिथोंसे मर्मस्थलोंपर घापल किया । २२ ।
 उम मरनेवाले वीरके शब्दों से महलमें वह भियां भूतको निश्चय करनेवाली होकर
 भयमे नहीं डाली । २३ । वह तेजस्वी उन उपायसे उस वीरको यमलोकमें पहुँचा
 कर और सुन्दर दर्शन रथता पाकर नियतहुआ । २४ । हे राजा वह समर्थ और
 बलवान् अशक्त्य पा उनके डेरसे निकलकर दिशाओं को शब्दायमान करते शत्रुमों
 के मरने के अभिनेत्री रथतां सवारके द्वारा डेरको गये । २५ । इसके पीछे उस

tham caught him by the hair of his head and brought him down on
 the ground. Dashed to the ground Dhrishtadyumna was unable to
 move out of fear and sleep. He crushed the neck and breast of the
 struggling and crying prince with his feet and wanted him to kill
 like a beast. Scratching with his nails, Dhrishtadyumna said to him
 gently, "kill me with a weapon, son of acarya, and make no delay
 so that I may attain good regions by your grace beat of me!" Hard
 pressed by the enemy, the valiant Panchal prince became silent. 20.
 Having heard the slowly uttered words of the prince, he said, "There
 are no good regions for despicable preceptoricides and the fore you
 do not deserve to die with a weapon." Having said with a leonine

अपक्रान्तेन तनूत्तदिनन् द्राणानुक्रमहारये सहितेः रक्षिभिः सर्वैः प्रणेदुर्योषितलदा २६ ॥
 राजानं निहतं दृष्ट्वा भृशं शोकपरायणाः । श्याक्रोशान् क्षत्रियाः सर्वां धृष्टद्युम्नस्य
 भरतः ॥ १७ ॥ तासांस्तु तेन शशने समीपे क्षत्रियर्षभाः । क्षिप्रञ्च समनह्यन्त किम
 तांति चाब्रुवन् ॥ २८ ॥ क्षियन्तु राजन् विजला मारदाके निरीक्ष्यताः । अनुवन् दीन
 कण्ठेन क्षिप्रमाब्रुवतेति धै ॥ २९ ॥ राजसो धा मनुष्यो वा नैनं जानमिहे वियम् । ह्रवा
 पञ्चालराजानं रथवाद्यं तिष्ठति ॥ ३० ॥ ततले योधमुषवाञ्च सहसा पर्यवारयन्
 स तानागततः सर्वान् रुद्रः क्रोधा व्यपीडयत् ॥ ३१ ॥ धृष्टद्युम्नञ्च ह्रवास तस्त्रिबास्य
 पद्मानुगाञ्च । अपश्यच्छिष्येने सुप्तमुत्तमोजसमन्तिके ॥ ३२ ॥ तमप्याक्रम्य पादौ कण्ठे
 चारानि तेजसा । तथैव मारयामास । वनईग्लमरिन्दमम् ॥ ३३ ॥ युधामन्युञ्च संप्राप्तो

महाराथी अश्वत्थामाके हटजानेपर सब स्त्रियां अपने रसकों समेत पुकाराई हे भरत-
 वंशी राजाको मराहुआ देखकर अत्यन्त दुःखी सब क्षत्रिय जोकि धृष्टद्युम्नेक नाकरये
 पुकारे । २७ । फिर उन्हीं के शब्दों से सम्मुखी उत्तम क्षत्रिय तैयारहुये और
 बोके कि यह क्या बात है । २८ । हे राजा यह मयभीतस्त्रियां अश्वत्थामा को
 देखकर दुःखी कंठ से बोलीं कि क्षिप्रजावो । २९ । यह राजसहोय अथवा मनुष्य
 हीसह्य इसको नहीं जानती है वह राजा पंचाल को मारकर रथपर नियत है
 । ३० । उसके पीछे उन उत्तम शूरोंने अकस्मात् चागैओरसे घेरलिया उसने उन
 सब चढाई करनेवालों को रुद्र भस्म से मारा । ३१ । फिर उसने सब साविधों
 समेत धृष्टद्युम्नको मारकर समीपरी शसनपर सोनेवाले उत्तमोजसको देखा । ३२ ।
 इनको भी पराक्रमते कण्ठ और छाती को दबाकर उस पुकारनेवाले शत्रु
 विनयी को उनी प्रकार से मारा । ३३ । और युधामन्यु उसको

rose, enraged Ashwathama wounded his vital parts with his hard
 feet. The women of the household heard the cries of the prince, but
 kept quiet for fear of a goblin. Having slain the brave prince he
 approached his car and drove in it to slay the other men of the camp.
 25. At the departure of Ashwathama the women and the attendants
 saw Dhrishtadyumna slain and cried out for grief. The warriors
 awoke at their cries and asked the reason of it. The terrified women
 who had seen Ashwathama, said in grief, "We donot know whether
 he was a rakshas or man, but surely he has slain the Panchal prince
 and got upon his car. Make haste to slay him." Then the warri-
 ors surrounded Ashwathama on all sides and he slew them all with
 the weapon of Rudra. 31. Having slain Dhrishtadyumna and his
 followers he saw Uttamaujas sleeping hard by and slew him in the
 sameway by his foot, Thinking that he was slais by a rakshas, Yudha-
 manyu came there and wounded Ashwathama on the breast with

मत्वा त रक्षसा हतम् । गदासुद्यम्ययोगेन हृदि द्रौणिमतादधत् ॥ ३५ ॥ तस्यभिदुष्य
जग्राह क्षिप्रौ चतस्रताडयत् । विस्फुरन्तश्च पशुधसैधैवतमसारयत् ॥ ३५ ॥ तथा स
घोरौ हस्वा त ततोऽन्यान् समुग्रादधत् । सपुष्पानेव राजे द्र तत्र तत्र सहरयान् ॥ ३६ ॥
स्फुरतो वेपमानांश्च शमितेध पशुगमस्य । ततो मुनिस्त्रिमादाय जघानाऽथान् पृथग्जगान्
॥ ३७ ॥ भागमो विचरन्मार्गानसिधद्विशारदः । तथैव गुरुने समेका शेषान्मभ्यथौहिम
कान् । धाऽन्तान्पस्तायुवान् सर्वान् क्षणेनैव व्यथोद्ययत् ॥ ३८ ॥ बोध तन्भान् द्विगान्धैव
प्राञ्छन्तन् सषणसिना । रुधिरैश्चिनसर्वांग कालसूत्र रथान्तक ॥ ३९ ॥ विस्फुरन्निष्क
तेर्द्रौणिनिस्त्रिंशस्योद्यमेन च । आक्षेपेणन चैवासेस्त्रिधा रक्तोक्षितोभक्तयः ॥ ४० ॥ तस्य
लोहितनिकस्य दीप्यलङ्घस्य युष्यत अमानुष इवाकारोपमौ परमभीषण ॥ ४१ ॥

राक्षस के हाथमे मृतक म नकर आया और वेगसे गदा को उठाकर
अश्वत्थामा को हृदय पर धायल किया । ३५ । गदाके आघात से घायल होकर
भी अश्वत्थामा युद्धमें कम्पायमान नहीं हुआ और उस के सम्मुख जाकर उसको
भी पशुके समान मारा । ३५ । वह वीर उसको उसप्रकार से मारकर जहाँ तहाँ
सोनेवाले दूसरे मदानुधिये की ओर गया । ३६ । क्रोधयुक्त ने समोपही पांचाल
देशी वीरोंको दवाकर फडकने और कापनेद्वारा को एतेमारा जते कि यज्ञमैयारने
शान्ना पशुमोंको मारताहै । ३७ । इसके पीछे भागक्रमसे मार्गोंको घूमते खड्ग युद्धमें
कुशल अश्वत्थामाने खड्गमहो लेकर पृथक् अन्य लोगों को मारा इस प्रकार गुल्म
नाम सेनाके भागमें सोनेवाले अशस्त्र और धकेहुये उन सब गुल्ममें बर्चमान लोगों
को एक क्षण भरमें मारा । ३८ । रुधिर से लित तत्र शरीर काल मृष्टि में अन्तक
के समान अश्वत्थामा ने शूरवीर घोडे और हाथियों को मारा वह अश्वत्थामा
वीनप्रकार से रुधिर में लित हुए उन चेष्टा करनेवालों से खड्ग चलातेवालों से
और खड्ग के कम्पायमान होनेसे । ४० । उस रुधिर से रक्त वर्ण प्रकाशित खड्ग
भारी युद्ध करनेवाले वडे भयके उत्पन्न करनेवाले अश्वत्थामा का रूप अमानुष
दिखाई पडा । ४१ । हे कौरव जो जग उठे वह भी शब्द से अचेतहुये और

his mace. The latter did not shake with the blow of the mace and
slew his adversary like a brant 37 Having slain him in this
manner he proceeded to slay other warriors who were sleeping He
slew the sleeping Panchal like hosts at a sacrifice Then he enter
ed other divisions and slew the warriors with his sword He extirpat
ed the armless and sleeping warriors in an instant With his body
drenched in blood and looking dreadful like death himself, he slew
horses and elephants also Bleeding from head to foot with the
blood of the slain, his own wounds and the droppings of his sword,
he was dreadful to behold with his drawn sword and was superhuman
in appearance. Those who awoke with the noise, became insensible
at the dreadful sight. Thinking him to be a rakshas, the warriors

ये स्वजायत कांश्यते तेषु शब्देन मोहिनाः । निरीक्ष्यमाणा अभ्यो-य द्रौपि दृष्ट्वा प्र वि
 ध्यधुः ॥ ४२ ॥ तदयं तस्य ते दृष्ट्वा क्षत्रिया शत्रुवर्षिण । राक्षसं ननामानास्तं नय-
 नानि न्यभीक्ष्णयन् ॥ ४३ ॥ स घोररूपो व्यचरत् कालघातच्छविदे तत । अयं द्रौपदी
 पुत्रानवशिष्टांश्च सोमकाय ॥ ४४ ॥ तेन शब्देन विव्रता धनुर्दत्ता महारथाः । धृष्टद्युम्नं
 हतं श्रुत्वा द्रौपदेया विशाभरते । भगवतिरुत्तरायौ भावद्वाजः भवितुम् ॥ ४५ ॥ ततस्तन्
 निनादेन सप्रबुद्धः प्रमदका । शिलोमुपैः शिखण्डौ च द्रोणपुत्रे मेमाह्वयत् ॥ ४६ ॥
 भारद्वाजः स तत्तदृष्ट्वा शरवर्षाणिवर्षत । ननाद् उल्लसन्त जिनान्मुहना-महारथ न
 ॥ ४७ ॥ ततः परमन्कुद्रं शिबुं वानुससत् । भवेद्युः श्योपस्यत्समाणा निमुद्वेभ्यः
 खड्गचन्द्रं विमलं शृणित्वा धर्मं संयुगे । स्वहृदय विपुत्रे दिव्यं जानकपारिष्टतम् ।
 द्रौपदेयानभिदुःखं च द्वाजेन व्यधमदला । ५० ॥ ततः स नरशार्ङ्ग प्रविशन्ध-महाहवे ।

एक दूसरे को देखकर पीड़ावान् हुये । ४२ । उस शत्रु भिजयी के उस रूपको
 देखकर - उस को शतत मानते उन क्षत्रियों ने अपने नेत्रों को बन्द कर लिया
 । ४३ । इसके पीछे डरेसे कालके समान घूमते हुये उस घोररूपने शेष वचे हुये
 द्रौपदी के पुत्र और सोमकों को देखा । ४४ । हे राजा उम शब्दने भयभीत धनुष
 हाथमें लिये द्रौपदीके पुत्रों ने धृष्टद्युम्नको मराहुआ सुनकर निर्भय के समान
 बाणोंके समूहोंसे अश्वत्थामाको ढक दिया । ४५ । इसके पीछे उस शब्दसे प्रभटक
 नाम क्षत्रिय जागठठे शिखण्डीने शिलीमुख बाणोंसे अश्वत्थामाको पीडावान किया
 । ४६ । वह अश्वत्थामा बाणोंकी वर्षा करनेवाले उनवारों को देखकर उन
 महारथियों को मारनेका अभिलाषी बड़ा बलवान् शब्दको गर्जा फिर पिताके मन्थ
 को स्मरणकरता अत्यन्त क्रोधयुक्त रथमें उत्रर कर शीघ्रही सम्मुखगया । ४७
 और युद्धमें हजार चन्द्रमाओं के चित्रोंसे चित्रित निर्मल दाहको लकर सुवर्ण से
 निर्मित दिव्यखड्गको पकड़कर द्रौपदी के पुत्रोंके सम्मुख जाकर बलवान्ने सबको
 खड्गसे श्रापल किया । ५० । हे राजा इसके पीछे उस नरोत्तमने बड़ेयुद्धमें प्रात

about their eyes. Roaming in the camp, he saw the sons of Draupadi
 and the Samaks. Terrified at the osteny and hearing that Dhanish-
 tadyumn was slain, the sons of Draupadi came out with their weapons
 and fearlessly covered Ashwatthama with their arrows. 46. Thus
 the Ptabbadraks awoke at the noise and Sukhandi wounded Ashwa-
 thama with his sharp arrows. Seeing those warriors slaver their
 arrows and desirous of slaying them, he reared with all his might,
 and remembering the death of his father, he at once came down
 from his car and faced them. He took up his many-jointed shield
 and bright gold-handled sword and wounded all the sons of
 Draupadi. 50. Then the best of men wounded Prativindhya on
 the side and he fell down dead on the ground. G'mous Sitem

कुक्षिदेशेऽथ धोराप्रद स ह्ये मृदुपनकुवि ॥ ५१ ॥ अस्तेन विषम द्रौणिमु
 मतापवान् । पुनश्चासि समुद्यम्यः द्वाजपुत्रमुपाह्वयत् ॥ ५२ ॥ अतकोमन्व
 बाहुं छिद्रेत् नरपथम् । पुनःऽपवाहनत् पाद्वं स निबद्धबन्धोऽपतत् ॥ ५३ ॥ नाकुमि
 शतानीको रथचक्रेण वीर्यवान् । दोऽर्वांशुरिक्ष्ण्य वेगेन बद्धस्त्वमताह्वयत् ॥ ५४ ॥
 अताह्वयच्छतानीक मुक्तचक्रद्विजम्बुजः । न विद्व । नो बभौ । स्मिं ततोऽपवाहराह्वयत्
 ॥ ५५ ॥ अतकर्मात्तु परिष्य द्युष्टिथा समताह्वयत् । अग्निद्वय पथी द्रौणि कथ्ये सप्तकके
 भूशम् ॥ ५६ ॥ स तु न अतकर्माण्यमास्ते जज्ञे परासिमा । स ह्ये मृदुपनकुमी विद्वो
 विद्वानामतः ॥ ५७ ॥ तेन शस्त्रेण वीरस्तु अतकोर्मिं महारथ । अश्वाधामानमासाक
 शरचर्पयत्काकिरत् ॥ ५८ ॥ तन्वापि शरचर्पयत् समंया प्रतिवार्यत् । स कुण्डल शिर
 कावाहूजमानमपाह्वयत् ॥ ५९ ॥ ततो गोपमनिहन्तारं स ह्यत्वे पमत्रके । अततत्पथेती

विन्दपको कुलि स्वात्पर पाः ल क्रिया वह मरकर पृथ्वी पर गिरपदा । ५१ ।
 मतापवान् मृतसोम प्राप्ते अश्वत्यामाको छेदकर स्वर्गको घाते अश्वत्यामा के
 सम्मुख गया ॥ ५२ ॥ नरोत्तम अश्वत्यामाने मृतसोम को अनाको शस्त्र समेत काट
 कर कुक्षिपर घायन किया वही दूराहृदय होकर पृथ्वीपर गिरपदा । ५३ । फिर
 नकुक्के पुत्र पराक्रमी शतानीकने रथ चक्रको दोनों सुमाओं से घुमाकर वेगने
 उसको छातीपर घायलकिया । ५४ । फिर उस मात्स्यने चक्र काटने वाले शतानीक
 का घायल किया वह स्वाकुल इके पृथ्वीपर गिरपदा इसके पीछे उस के शिर
 को काटा । ५५ । फिर अतकर्मा परिषको लेकर और दौडकर अश्वत्यामा के
 सम्मुख गया और दारसे अतकवाम कुक्षिपर कटिन घायलकिया । ५६ । फिर उस
 अश्वत्यामाने उचम लहने से उस अतकर्माको मुखपर घायलकिया वह कृपान्त
 और अचेत होकर पृथ्वीपर गिरपदा । ५७ । फिर उसकद्वये महारथी अतकीर्षि
 ने अश्वत्यामा को पाकर बाणोंकी वर्षसे टकादिया । ५८ । उस अश्वत्यामाने उस
 की धाँववृष्टीको डालपर रोककर कुण्डलधारी मकाशत शिरको शरीरसे छेदा

pierced Ashwathama with a prass and fa ed him with the drawn
 sword. But he cut down his sword or arm and wounded him on the
 rib, making him fall down with the wound. Then Nakul's son,
 glorious Shatanik, hurled a car wheel with both hands and hit him on
 the breast, but the brahman slew Shatanik also. 55. Then Bhair
 karma faced him with a club and hit him hard on the left side. Ashwa
 thama wounded him on the face and he fell down on earth d sightless
 and senseless. Sarutharma then sent forth a shower of arrows at
 Ashwathama; but the latter took it on the shield and pierced his
 adversary's glorious loard, docted with ear-rings, from the body.
 Then with various weapons he wounded Sarthandi and the Prabha lias
 and pierced the former between the two eye brows with sharp arrow

शिरानानाप्रहरणैर्वली शिलीमुखेन चाप्यन भ्रुवोर्मध्ये समापयत् ॥ ६० ॥ स तु क्राव
 स्वभविष्यो द्रोणपुत्रो महाबलः । शिखण्डिनं समासाद्य द्विधा विच्छेद्व सोऽसिना
 ॥ ६१ ॥ शिखण्डिनं ततो हत्वा प्राधापिष्ट परन्तप । प्रमद्वकगणान् सर्वानमिदुदा
 बवेगवान् । यच्चोशिष्ट विराटस्य चक्र तुभृशमादधत् ॥ ६२ ॥ द्रुपदस्य च पुत्रार्णा
 पौत्राणां सुहृदामपि । अकार कर्द्व धार हृष्ट्वा हृष्ट्या महाबल ॥ ६३ ॥ अन्यान्
 न्याश्च पुरुषानभिष्टुपामिष्टुय च । न्यह्नन् दसिना द्रौणिरसिमागेविशारद ॥ ६४ ॥
 कालीं रक्तास्पनयना रक्तमादयानुलपनाम् । रक्ताम्बरधरामेका पाशहस्ताकुटुम्बिनीम्
 ॥ ६५ ॥ ददशु कालरात्रिते गायमानामघस्थिताम् । नराश्वकुञ्जराद् पार्श्वेष्वाघोरे
 प्रतस्थुषीम् ॥ ६६ ॥ हरन्तींशिविघ्नाम् प्रेताद् पाशवसान् विमूर्द्धजान् । तथैव च तदा
 राजन्यस्त्रशस्त्रं मदारयान् ॥ ६७ ॥ स्वप्ने सुताम्रयन्तीं ता रात्रिद्वन्वासु मारिय ।

। ५९ । उसके पीछे उस पराक्रमीने सब ओरसे नानाप्रकार के शस्त्रों के द्वारा वीर
 भिल्लण्डीको सब मभद्रकों समेत घायल किया उस शिखण्डी ने दूमरे शिलीमुखसे
 दोनों अशुद्धियों क मध्यमें घायलीकिया । ६० । फिर क्राधसेपूर्ण उस बड़ेबलवान्
 अभत्य मा ने शिखण्डी को पाकर स्वर्गसे दोलण्ड करदिया । ६१ । फिर क्रोधसे
 पूर्ण शत्रुओंका तरानेवाला उग बड़े वेगवान शिखण्डी का मारकर मभद्रकों के
 सब भूषों के सन्नुबास और राजा विराटकी शो सेना शेष थी उसपर भी
 त्रुदाई करेवाला हुआ । ६२ । बड़े बलवान् ने देख देव्यकर द्रुपदके पुत्र पौत्र
 और पित्रों काभी गेर नाशकिया । ६३ । खड्ग मार्ग में कुशल अश्वत्थामाने
 अन्य लोगों केभी सम्मुख जाजाकर उनको खड्ग से काटा । ६४ । उनलोगों ने
 रक्तनेत्र रक्तमाला चन्द्रनसे अलकृत लाठ पोशाकधारी पाशदाहमें लडके आदिक
 रखनेवाली अंकुषीकात्री । ६५ । गातीर्द्ध नियत कान्तरात्रिको देखा हे राजा
 मनुष्य घोडे और हाथियोंको पार्श्वसे सरहर जानेके अभिन्नापी घोररुा । ६६ ।
 बालों के पृथक् पार्श्वों में बंधेहुये बहुतप्रकारके मृत्कों के लेजानेवाले और इसी
 प्रकार अन्य रात्रियों में । ६७ । स्वप्नावस्था में सदैव जेतथाइ सोतेहुये महारथियों

60. Then in his rage he cut Shilank into two with his sword. Having slain him, he faced the Prabhadraks and attacked the remnant of the Panchal warriors. He selected the sons and grand sons of Drupad from among them and destroyed them with great force. Clever in swordsmanship he cut them down with his sword. They saw the black Death with red eyes, red garlands adorned with sandal and red deer, nose in hand and accompanied by her offspring, stinging sons. The warriors had often seen her in their dreams, carrying the dead warriors and beasts in her nose and accompanied by Ashwatama. They had from the beginning of the war seen her accompanied by Ashwatama in their dreams. With terrific roars

दृश्योपधमुखास्ते प्रन्तं द्राणिश्च सर्वदा ॥ ६८ ॥ यतः प्रभृति संप्रामः कुहपाण्डव
 सेनयोः । ततः प्रभृति तां कन्वामपश्यन् द्रौणिमेव च ॥ ६९ ॥ तांस्तु देवहतान् पूर्वं
 पश्चाद्द्रौणिर्न्यापातयत् । त्रासयन् सर्वभूतानि विनश्य भैरवानुशान् ॥ ७० ॥ तद्द-
 स्मृत्य ते धीरा दशेन पूर्वकालिकम् । इदं तदित्यमन्यन्त देवेनोपनिपीडिताः ॥ ७१ ॥
 ततस्त्वन निनादेन प्रत्यबुध्यन्त चञ्चिनः । शिविरे पाण्डवेषानां शतशोऽप्यसहस्रशः
 ॥ ७२ ॥ सोऽच्छिन्नन् कस्यचित् पादौ जघनञ्चैव कस्यचित् । काञ्चिद्विभेद प्राद्वेषु
 कालसह इवान्तकः ॥ ७३ ॥ नृत्युमप्रातिपिष्टैश्च नर्दान्श्च भृशानुरैः । गजाश्वमार्षित-
 श्चान्यैर्मही कर्णामवत् प्रभो ॥ ७४ ॥ क्रोशतां किमिदं कोऽप्ये कश्चन् किन्नु किं
 कृतम् । एवं तेषां तदा द्रौणिरन्तकः समपद्यत् ॥ ७५ ॥ भपेतश्चक्रशशाहान् सभञ्जान्
 पाण्डुसूत्रवान् । प्राहिणोन्मृत्युदोकायद्रौणिः प्रहरतास्वरः ॥ ७६ ॥ ततस्तच्छुःशुवित्रलो
 उत्पतन्तो भयातुगाः । निदान्वा नष्टसंज्ञाश्च तत्र तत्र निलिखिरे ॥ ७७ ॥

लेजानेवाली उस काळीकी और उस मारनेवाले अश्वत्यामाको उत्तम शूरवीरो ने
 सदैव देखा ॥ ६८ ॥ जैसे कि कौरवीय और पाण्डवीय सेनाका युद्ध जारीहुआ
 तबसे लेकर हम कन्याको और अश्वत्यामा को स्वप्न में देखा । ६९ । युद्धमें सब
 जीवधारियों को डराने और भयानक शब्दोंको गर्जते अश्वत्यामा ने प्रथम देव
 से हतेहुये उन लोगोंको पीछेमे गिराया । ७० । देवसे पीडित उन वीरोंने उसपूर्व
 समयके देखेहुये स्वप्नको मरणकरके माना कि यह वही बातही । ७१ । इसके
 पीछे पाण्डवोंके डरेमें वह सैकड़ों और हजारों धनुषधारी उस शब्दसे जागउठे ७२
 काळसे प्रवृत्त मृत्युके समान उस अश्वत्यामाने किसीके पैरोंको काटा किसी के
 जघन को और कितने ही को कक्षिपर छेदा । ७३ । हे मनु कठिन मर्दन क्रियहुये
 शब्द करनेवाले मतवाले हाथी और हाथी घोड़ों से मयेहुये अन्व मनुष्यों से वह
 पृथ्वी भ्राज्जादित होगई । ७४ । जो लोग कि इसप्रकार से पुकारते थे कि यह
 क्याई कौनई कैसाशब्द होरहाई उन सब लोगोंको प्रहार करनेवालों में भेष्ट
 अश्वत्यामाने पाण्डवोंके नातेदार और संजीलोग जो कि शस्त्र और कवचों से
 रहित थे उनकोभी यमलोकमें भेजा । ७५ । इस के पीछे उस शस्त्र से भयभीत
 उछलते और भयसे पीडावान् निद्रासे अंधे अचेतहोकर बरलोग जहां तहां गुप्त
 होगये । ७६ । और ऊरुस्तम्भ मूर्तसे निर्वल भयभीत कठोर शब्द करते

Ashwathama slew the warriors whose days were numbered. 70. The
 warriors, afflicted by Fate, remembered their dreams and realised
 them. Then hundreds and thousands of archers awoke in the
 Pandav camp with that noise, but Ashwathama, like an embodiment
 of Death, cut their feet, thighs and ribs. The ground was covered
 with the shrieking mad elephants and corpses of men crushed by
 elephants and horses. Ashwathama slew the Simjis and other allies
 of the Pandavas who were asking in wonder, "Who is it! What is
 this noise to!" Then afraid of the weapons and blind with sleep,

ऊहत्तमम गृहोनाथ कस्मला भित्तौजसः । विन्दन्तो भृशं त्रस्ताः समासीदन् परस्परम् ॥ ७८ ॥ ततो रथं पुनर्द्राणि रास्थितो भ्रामनिस्वनम् । धनुष्पाणिः शरैरन्यान् प्रैषवञ्चै
धमक्षयम् ॥ ७९ ॥ पुनश्चत्पततश्चापि ह्रादपि नरोत्तमान् । शूराश्च संपततश्चान्यान्
कालरात्र्यै स्यधेदप्यत् ॥ ८० ॥ तथैव स्यन्दनाग्नेण प्रमथन् स विधावति । शरवर्षेण
विविधैरवर्षेण कञ्चाप्रवांसतत ॥ ८१ ॥ पुनश्च सुविचित्रेण शतचन्द्रेण चर्मणा । तेन
आकाशवर्षेण तदाशरत् सोसिता ॥ ८२ ॥ तथा स शिविरं तेषां द्रौणिराहवदुर्मदः ।
व्यक्षोभयत राजेन्द्र महाहृदिभवद्विषः ॥ ८३ ॥ उत्पेतुस्तेन शब्देन घोषां राजन् विष
तसः । विद्रास्ताश्च भयार्ताश्च श्यधावन्त ततस्ततः ॥ ८४ ॥ विश्वरं सुक्रुशुष्मान्ये
षु ह्युत्सं तथावचन् । न च स्म प्रत्यपद्यन्त शस्त्राणि घसनानि च ॥ ८५ ॥ विमुक्तकेश
श्चाप्यन्ये नाम्यजानन् परस्परम् । उत्पन्नन्तोपतच्छ्रान्ताः केचित्तत्रास्रमस्तथा ॥ ८६ ॥

इम पीढ़ावान हुये । ७८ । इस के पीछे धनुष हाथमें लिये अश्वत्थामा ने भयकारी
रथपर सवार हो कर बाणोंसे अन्य मनुष्यों को भी यमलोक में पहुंचाया । ७९ ।
फिर दूर से उछलते नरोत्तम आतेहुये दूसरे शूरोंकोभी कालरात्रि के आधीनकिया
उसी प्रकार रथकी नोकसे मथता हुआ वह दौड़ताथा इस के पीछे बहुत प्रकार
की वाणदृष्टियों से शत्रुओं के मनुष्योंपर वर्षा करने लगा । ८१ । फिर बड़ी
विचित्र मूये चंद्रमा रस्नेवाकी टाल और उस आकाशवर्षण खड्ग के द्वारा
भ्रमण करनेलगा । ८२ । हे राजेन्द्र उस युद्धमें दुर्मद अश्वत्थामाने उन्हीं के डरेको
भी ऐसे छिन्न विषय किया जैसे कि हाथी बड़े हृदको करदेता है । ८३ । हेराजा
उस शब्दसे अचेत शूरवीर उठे और निद्रा और भयसे पीढ़ावान होकर इधरउधर
को दौड़े । ८४ । इसीप्रकार असभ्य बचन करतेहुये अन्गलोग बड़े शब्दसे पुकारे
और शस्त्र और वस्त्रोंको नहीं पाया । ८५ । बहुत से सुलेहुये बालवाले मनुष्योंने
परपर नहीं पहचाना तब वहां उछलतेहुये कितनेही मनुष्य यहकर गिरपड़े
को और कितनेही भ्रमण करनेलगे । ८६ । कितनही लोगोंने विष्टाकोछोड़ा

people hid themselves here and there. We too, were terrified and riveted to the spot where we stood. Then Ashwathama slew other warriors with the arrows shot from his car. He slew those whom he saw coming near. 80. He ran his car among them, showering arrows and crushing them under wheels. Then he roamed with his shield studded with suns and moons, carrying the bright sword in his hand. He upset their camp as an elephant does a hive. The warriors awoke with the noise and ran away here and there in their sleep and fear. Others uttered obscene words, but could not get their arms and armour in the hurry of the moment. 85. Others with disbevelled hair did not know one another. Some fell down with exhaustion, while others ran here and there. Some dropped urina. Elephants

पुरीपवसृजन् केचित् केचिन्मूत्र प्रमुद्यु । वन्धनानि च राजेन्द्र सञ्छिद्य तुरगा
द्विपाः ॥ ८७ ॥ समं पर्यपतन्ध्वान्ये कुर्वतो मद्भद्राकुलम् । तत्र केचिद्वरा भीता व्यली
यन्त महीतले । तथैव तान्निपतितान्पिपन् गजवाजिन ॥ ८८ ॥ तस्मिन्सन्ध्या वसन्तानि
रक्षांसि पुरुषर्षभ । हृष्टानि वपनदन्तुषेमुदा भरतसत्तम ॥ ८९ ॥ स शब्दः पुरितो राजन्
भूतसंघेमुदायुतेः । अपूरयद्दिश सर्वा दिव्यातिमहास्वनः ॥ ९० ॥ तेषामान्स्वरं श्रुत्वा
विभ्रस्ता गजवाजिन । मुक्ता पर्यपतन्नाजन् मृदन्ताशीघिरेजनाम् ॥ ९१ ॥ तैस्तत्र
वाधावाद्भिश्चणोदीरितं रजः । अकरोच्छिदिरेतेषां रजन्या द्विशुण तमः ॥ ९२ ॥
तस्मिन्सन्ध्या सङ्घाते प्रमुदाः शिघिरे जनाः । नाजानम् पितरः पुत्रान् भ्रातृन् भ्रातर
पवच ॥ ९३ ॥ गजा गजानतिक्रम्य निर्मेनुष्यान् हया हयान् । अताडयं स्तथाभञ्जस्त
थामृदन्श्च भारत ॥ ९४ ॥ ते भन्ताः प्रपतन्निस्सर्गिणस्तश्च परस्परम् । न्यपातयन्तथा
चान्यान् पातयिष्यात्तदपिपन् ॥ ९५ ॥ विचेतसः सन्निद्राश्च तमसा चाप्रतानरोः ।

कितनोही मूत्रकां करदिया हे राजेन्द्र हाथीघाडे वन्धनोंको तोड़कर । ८७ । चारों
ओरको दौड़े और कोई महाव्याकुलता उत्पन्न करनेवालेहुये वहांकितनेही भयभीत
भ्रादमी पृथीपर सोमये उसीप्रकार उन पड़ेहुओं को हाथी और घोडों ने मर्दन
किया । ८८ । हे भरतर्षभ पुरुषोत्तम इसप्रकार उस नाशके वसन्तान होनेपर राक्षस
लोग प्रसन्न होकर बड़े शब्दमे गये । ८९ । हे राजा ममन्नीचत् जीवोंके समूहों
से क्रिया वह शब्द सर्वत्र व्याप्त होगया उमबड़े शब्दने सवादिशा और आकाशको
पूरीकिया । ९० । उन्होंके पीड़ित शब्दोंको सुनकर भयभीत और वन्धनोंसे जुड़े
हाथीघोड़े रेमें मनुष्यों को खूदते मर्दन करते चारोंओर को दौड़े । ९१ । वहांउन
चारोंओर दौड़नेवालों के चरणों से उठीहुई धूलै रात्रिकसमय उन्होंके डेरोंमें दूने
अन्धकारको उत्पन्न किया । ९२ । उस अन्धकार के उत्पन्न होनेपर मनुष्य सब
ओरसे शजान हुये पितृभ्रोंने पुत्रोंको नहीं जाना भाइयों ने भाइयों को नहींजाना
। ९३ । हाथियों ने हाथियोंको सवारों से रहित घाड़ाने घोडोंकोदवाकर घायल
और टूटे भंगीकिया उसीप्रकार मर्दन करते परस्पर परतेहुये बहसब घायल गिर
पड़े इसीप्रकार जन्नोंको भी गिराकर मर्दन किया । ९५ । अचेत निद्रासे युक्त

and horses broke their ropes and ran in all directions. Some men
lay on earth out of fear and were crushed down by elephants and
horses. During that destruction the rakshases roared dreadfully.
There was a hubbub all round and the noise spread through all
directions. 90. At the sounds of their wailings, elephants and horses
broke their ropes and ran away crushing and trampling the men in
their way. The dust raised by their feet made the night doubly
dark. People lost their way in that darkness fathers did not know
their sons and brothers did not recognise brothers. Elephants
wounded elephants and the riders horses wounded and crushed
horses. 95. Insensible with sleep and darkness, they slew one

अधनुः स्वानेव तत्राय कालेनाभिप्रचोदिताः ॥ ९६ ॥ त्यक्तवाङ्माराणि च द्वास्थास्त्रधा
 गुल्मानि गौडिमकाः । प्राद्रघन्त यथाशक्तं काग्निशीफा विचेतसः ॥ ९७ ॥ विप्रनष्टा
 बतनेगोन्यं नाजानन्तो तथा विभो । क्रोशन्तस्नात पुत्रेति दैवोपहनचेतसः ॥ ९८ ॥ पला
 यतां दिशस्तेषां तानप्युत्सृज्य घान्धवान् । गोभ्रनामभिरन्योन्यमाक्रन्दन्त तनो जनाः
 ॥ ९९ ॥ हाहाकारश्च कुर्वाणाः पृथिव्यां शेरने परे । तान्बुध्वा रणमध्येसौ द्रोणपुत्रो
 न्यपातयत् ॥ १०० ॥ तत्रापरे धृष्यमाना मुहुर्मुहुश्चेतसः । शिबिरानिष्पतन्ति स्म
 क्षत्रिया भयपीडिताः ॥ १०१ ॥ तांश्च निष्पततस्त्रस्तान्निःशिराञ्जीविनैषिणः । कृतवर्मा
 कृपश्चैव द्वारद्वेगे निजघ्नतुः ॥ १०२ ॥ विशस्त्रयन्त्रकवचान्मुक्तकेशान् कृताञ्जलीन् ।
 वेपमानान् क्षितौ भीतश्चैव काञ्चिदमुच्यतान् । १०३ ॥ नामुच्यत तयोः कश्चिच्चि
 प्रातः शिबिराग्निः । कृपस्य च महाराज हार्दिकस्य च तुमंतः ॥ १०४ ॥ भृशश्चैव

अन्वकारसे धिरे और कालमे मेरित लोगोंने वहां उनको मारा । ९६ । इसी प्रकार
 द्वारपाल द्वारोंको और गुल्मबाले लोग गुल्मोंको त्यागकर के भयभीत और अचेत
 होकर सामर्थ्य के अनुसार भागे । ९७ और परस्पर नाश होगये इसी प्रकार एक
 ने दूसरोंको नहीं पहुँचाना अपने बान्धवों को छोड़कर दिशाओं को भागते उन
 लोगों के मध्यमें से दैवने व्यथित चित्त मनुष्य पुकारे हे पिता हे पुत्र इसके पीछे
 लोगोंने गोत्र और नामोंसे परस्पर पुकारा । ९९ और कितने ही हाहाकार कर
 के पृथ्वीपर गिरपड़े इस अश्रुस्थामाने बुद्धमें उनको जानकर रांका । १०० ।
 और बहुत से क्षत्रिय बरंवार घायल और अचेत और भयसे पीड़वान् होकर डरे
 बाहरगये । १०१ । उन भयभीत जीवन के इच्छावान् डरे से निकलने वालों को
 कृतवर्मा कृपाचार्य ने द्वारस्थानपर मारा - । १०२ । जिनके यन्त्र और कवच गिर
 पड़े वह खुदके हथे वान् हाथ जोड़े वृक्षीपर कम्पायमान और भयभीत थे । १०३ ।
 उनमेंसे किसीकोभी नहीं छोड़ा डरेसे बाहरनिकलनेवाला कोईभी मनुष्य उन दोनोंके
 हाथमे बचकर नहीं गया हे महाराज अश्रुस्थापा मिय करने के आभिलाषी उन

another. The door keepers and camp soldiers deserted their posts
 and ran away with all their might. They destroyed one another
 without seeing. Leaving their kinsmen, they dispersed in all directions
 and called out for fathers and sons in confusion. They announced
 their clans and names. Some fall down on earth with cries of dismay
 and Ashwathama checked them in their flight. 100. Many
 warriors, wounded and insensible with fear tried to go out of the
 camp to save their lives; but they were slain by Kritvarma and
 Kripacharya who were stationed at the entrance. The warriors,
 destitute of arms and armour, with dishevelled hair and clasped hands,
 lay on earth, trembling with fear. None of those who tried to escape
 from the camp for their lives, were able to scape from Kripacharya
 and Kritvarma. To please Ashwathama, they set fire to camp from

चिकापन्ता द्रोणपुत्रस्तः नाम प्रभू । अत्रुदेवगु दंतुः शिविरस्य हुताशाम् ॥ १०५ ॥
 ततः प्रकाशे शिविरे जडगेन पितृतन्दनः । भद्रवधामाः हागज व्यकरत्कृतमभवत्
 । १०६ ॥ कादिचदापततो धारानपर श्रेष्ठ छाद्यत । व्यथं कर्तुं सङ्गमं प्राणैश्चिञ्च
 रोत्तम ॥ १०७ ॥ कादिचदापतु स अङ्गुणेन मध्ये संछिद्य धीर्येषान् ।
 अपातयद्रोण पुत्रः संख्यास्तिलकाण्डवत् ॥ १०८ ॥ विन दग्निभुंशापस्तौ
 नैराभ्याङ्गैरदांसमैः । पतितैरभवत् कीर्णां मेदिनी भरतपुत्र ॥ १०९ ॥
 मानुषाणां सहस्रेषु हतेषु पतितेषु च । उदातिष्ठन् कवचाणि बहुभ्यांघ्राप व्यापतन्
 ॥ ११० ॥ सायुधाद् साङ्गदान् घाहन्निवकस्त शिगांशिव । हस्तिहस्तौ पमान्कृद्
 हस्ताद् पादाश्च भारत ॥ १११ ॥ पृष्ठाक्षिप्तान् शिरिदिद्युक्त्वाद् पादवीर्येषांलया परान्
 स महात्माकराद्राणः काश्चिन्वापि परांमुत्रात् ॥ ११२ ॥ मध्यदेशे नरानप्यांश्चिञ्च

कृपाचार्य्य और दुर्बुद्धी कुतवर्माने डेरोंके तीनोंओर अग्निसगदी । १०५ । फिर
 डेरों के प्रजालिन और प्रकाशित होनेपर पिताको प्रन्न करनेवाला, अश्वत्याम
 हस्तलाघवीक समान खड्गको लेकर घूमनेलगा । १०६ । किंगनेही आनेवाले और
 दौड़नेवाले धीरोंको खड्गकंद्वारा प्रणोंसे रहितकिया और बाकपोंमें भ्रष्ट परा-
 कपी आश्वत्याम ने कितनेही शूरवीरों को खड्गके द्वारा मध्यसे काटकर क्रोध
 युक्ते तिलकाण्ड के समान गिराया । १०८ । हे भरतपुत्र अत्यन्त घायल बर्जते
 गिरते मनुष्य घड़े और हाथियों से पृथ्वी आच्छ दितहुँ । १०९ । हजारों मनुष्यों
 के मरने और गिरने पर बहुत खड उठे और उठकर गिरपड़े । ११० । शङ्ख
 और वाजुन्द रत्ननेवाली भुजाओं समेत शिरको काय और हाथीकी मूँडके
 समान जंघाओं को और हाथ पैरों को काटा । १११ । हे भरतपुत्री दूरी पीठकुक्षि
 और शिरवाले अन्य लोगों को गिराया उस महात्मा अश्वत्यामा ने कितने ही
 मनुष्यों को मुखफेरनेवाला किया । ११२ । किरिंको कान से स्थानपर औरकिसी
 को कटिस्थानपर काटा किसी को कन्धे के स्थान पर घायल करके शिरको शरीर
 में प्रवेश किया । ११३ । इसप्रकार उम के घूमते और बहुत आदियों को मारते

allies. 105 When the camp was thus illurined, Ashwathama the
 joy of his father roamed dexterously with his sword. He killed the
 coming and running warriors with his sword. He cut some in the
 middle and others into piecemeal. The ground was covered with
 men and beasts, wounded, crying and falling down. At the fall of
 thousands of men, headless bodies rose and fell down again. 110.
 He cut down the jewelled hands and heads as well as thighs like the
 trunks of elephants and hands and feet. He cut asunder the backs,
 sides and heads of others. Many warriors turned back from Ashwa-
 thama. He cut the ears and trunks of some and wounded others on
 the shoulders making their heads enter their bodies. While he was
 thus roaming and killing, the night became dreadful to behold. The

वास्यांश्च कर्णतः । अथदेशे नि ह्यवस्थान कायेप्रावेशयच्छिटः ॥ ११३ ॥ एव विष्वस्तस्य
 निष्पत्ताः सुवह्वराश्च । तमसा रजनी घोरा वभौ दाहणदशोमा ॥ ११४ ॥ किञ्चित्
 प्राणेषु पुढवोहंतैश्चास्यैः सहस्रशः । बहुन च गजाद्वेन मुरः स्त्री मदशोमा ॥ ११५ ॥
 बलरथः स्वम कीर्णं रथाश्वद्विपदावणे । क्रुद्धेन श्रेणपुत्रेण सच्छिन्नाः प्रापन् भुवि
 ॥ ११६ ॥ प्रातृमन्त्रे पितृमन्त्रे पुत्रानमन्त्रे ऋषिः क्रुद्धः । वसिष्ठं च तत् क्रुद्धे धर्तृगर्भैः
 कृतं रणे ॥ ११७ ॥ यत्कृतं न प्रसूतानां रक्षांश्च क्रूरकर्माभि असाक्षिभ्याश्चि पाथानामिदं न वदन्
 कृतम् ॥ ११८ ॥ न देवास्तुत्यान्ववेर्नयश्चैर्न च राजानैः । शशो विभेत्तु कौन्तेयो गंसा
 वस्य जगार्हेनः ॥ ११९ ॥ अक्षयः सत्यवाग्दंतः सर्वे भूतानुक्कमकः । न न सुतं प्रमत्तं
 वा न्यस्तशकं कृताञ्जलिम् । धावन्त मुच्ये शम्या दृग्नि पाथो धनस्य ॥ १२० ॥ तद्विदं
 नः कृतं चोद रक्षामिः क्रूरकर्मिभिः । इति जालव्यमानाः स्म शरते वहवो जनाः ॥ १२१ ॥
 स्तनताञ्च मनुष्याणामपरेषाञ्च कृजताम् । ततो महत्तार प्राशम्यास शब्दस्तुमुलो

हुये अन्दकार से वह रात्रि घोर रूप महाभयानक दशन देखनेम आई । ११४ ।
 कुछ क्रुद्धगव प्राणवासे कुछ दंतक हजारों मनुष्य हाथी और घोड़ोंसे पृथ्वी भया
 नकरूप देखनेमें आई । ११५ । वक्ष राक्षसों से संयुक्त रथ घोड़े और हाथियोंसे
 भयानक रूप पृथ्वीके होनेपर क्रोधयुक्त अश्वत्यामांक हाथसे घायलोंके पृथ्यापर
 गिरपड़े । ११६ । कोई माइयोंको कोई पिताओं को और पुत्रोंको पुकारते या
 और किवंत हां वाले एक यज्ञ क्रोधयुक्त धतराष्ट्रके पुत्रोंने भी वह कर्म कियाथ
 जो की निर्दोष राक्षसोंने हम तोनेवालों के साथ कियाई पांडवों के वर्तमान न
 होने से यह हमारा माथाकिया । ११८ । वह अर्जुन असुर गन्धर्व यज्ञ और राक्षस
 से भी विजय करेगके योग्य नहीं है जिसके कि रक्षक श्रीकृष्णजीहै । ११९ । वह
 अर्जुन वेद ब्राह्मणों का रक्षक जितेन्द्रिय और सब जीवधारियोंपर कृपाकरनेवाला
 है वह पाण्डव अर्जुन सोनेवाले मतवाले अशस्त्र हाथ जोड़नेवाले खुले केश और
 नागनेवाके मनुष्योंको नहीं मारताहै । १२० । निर्दोषी राक्षसों ने हमारा यह
 नाशकिया इसप्रकार विज्ञाप करतेहुये बहुतसे मनुष्य पृथ्वीपर सोगये । १२ ।

ground looked dreadful with the dying and dead men and beasts. 115
 Full of yakshes, rakshases, cars, horses and elephants, cut down by
 Ashwathama the ground was dreadful to behold. Some called out
 their brothers, fathers and sons, while others said, "The rakshases
 have done the same with the sleepers as the sons of Dhritrashtra
 did in daylight in the presence of the Pandavas. Having Shri
 Krishna for his protector, Arjun is invincible by asurs, gandharvas,
 yakshes and rakshases. Arjun is the protector of the Vedas and
 brahmins has control over his organs and is merciful to all beings.
 He does not slay the sleeping mad and weaponless, nor those who
 seek refuge with diebevelled hair and joined hands. 120. The cruel

महान् । १२२ ॥ शोणितवृत्तिकाया वसुधायाश्च भूमिषु । तद्वजस्तुमुर्लुं घोरं कृष्ये
नातरधीयत ॥ १२३ ॥ सवेष्टमानानुद्विग्नानिभिरुत्साहान्महदशसः । नृपातयुजरात्र
क्रुद्धः पशून् पशुपतिर्षथा ॥ १२४ ॥ मन्वोन्मं संपरिष्वज्य शयानान् । द्रवतोऽपरान् ।
संलीनान् सुधरमानाश्च सर्वान् द्रौणिशोपेव च । १२५ ॥ दृष्टवानात् इत्याशेन वध
मानाश्च तन ने । परस्परं तदा योऽपनयत्तमसाधनम् ॥ १२६ ॥ तस्यां जन्मास्त्वर्जेन
पाण्डवानो महद्वलम् । गमयामास राजेन्द्र द्रौणिर्यमनिनेशनम् ॥ १२७ ॥ निशाच
राणा सत्त्वानां रात्रि सा एर्धरांभी । नासीन्नरगजाश्वानां राश्री क्षयकैचि भूषम्
॥ १२८ ॥ तत्रादृश्यन्त रक्षांसि पिशाचाश्च पृथग्विधाः । त्यादन्तो नरमांसानि निरल्प
शोणितानि च ॥ १२९ ॥ कराला पिङ्गला रोद्रा शैलदग्ता रजस्यला । अटिल कीर्ति
सकृदाश्च पञ्चपादा महादरा । १३० ॥ पद्भ्याद्गुणवो रक्षा विक्रया जैरपस्वना ।

इनके पीछे एक सुहृत्पंथी पकारते और गर्जोदुधे अन्य मनुष्यों का वह बहुत बड़ा
शब्द बन्दहोगया । १२२ । हे रागा रुधिरसे पृथ्वीके भच्छेकार तरहोनेहर वह
घोर और कठिनधूल एकक्षणमेंही दूहो गई । १२३ । उमक्रोधपुक्तने चेष्टाकरनेवाले
व्याकुल और उत्साहेन रहित हजारों मनुष्योंको ऐसे गिराया जैसे कि पशुओं को
रुद्रजी गिराते हैं । १२४ । उस अश्वत्थामाने पृथ्वीपर गिरोदुधे मनुष्योंको परस्पर
भिन्नकर भागनेवालों को घोर कितनेही घुस पुच्छकरनेवालों को अत्यन्त मारहाला
। १२५ । तब अग्निसे जलनेवाले और उस अश्वत्थामाके हाथसे घायल उन
शूरवीरों ने परस्पर यमलोत्थं महँवाया । १२६ । हे राजा अश्वत्थामाने बसरात्रि के
मद्दभागमें पाण्डवा की बड़ी सेनाका यमलोक में पहुँचाया । १२७ । वह रात्रि
राक्षसों की प्रसन्नता बढ़ानेवाली मनुष्य घोड़े और हाथियों का भय उत्पन्नकरने
वालाहीकर महाकठिन नाशकारी हुई । १२८ । वहाँ पृच्छ २ प्रकार के पिशाच
गन्तस मनुष्यों के मांसको खाते और रुधिर को पीतेहुये दिखाई पड़े । १२९ ।
जोकि कराल पिङ्गल वर्ण पर्वताकार दांत रखनेवाले बूलसे लिप्त जटाधारी लम्बे
शङ्ख पाँच पैर और बड़ा उदर रखनेवाले । १३० । पीछकी और उँगलियाँ रखने

rakshases have destroyed us." Thus crying and lamenting, many warriors lay on earth. After some time, the noise of men and beasts subsided and the ground being well drenched with blood, the storm of dust had disappeared. Enraged Ashwathama had slain thousands of warriors as Rudra does beasts. He extirpated the men fallen on the ground as well as those who were running away or fighting from a hiding place. 125. Mangled by fire and wounded by Ashwathaman, the brave warriors slew one another. Ashwathama destroyed the great Pandav army during that midnight which gave pleasure to rakshases and fear and destruction to men and beasts. Pishaches and rakshases were seen eating the flesh of men and drink-

घण्टाजासायवक्राथ मीलकण्ठा विभोग्णा ॥ १३१ ॥ सपुत्रदारा"सक्रा सुदुर्दशा
 मुनिश्रेणा । विविधानि च रूपाण तदादभ्यन्त रक्षसाम् ॥ १३२ ॥ पीत्वा च शोणितं
 कृषा प्रानुरयद् गणशा परे । इदं पर्वतम् मेधमिद स्थानिदिति चासुवन् ॥ १३३ ॥ मेदो
 मज्जस्तिरक्तानां वसानाश्च भृशानिना । परमासानि खाद्यतः कव्यादा मांसजीविन
 ॥ १३४ ॥ घसाश्लेषापरे पीत्वा पर्वपायन् विकुक्षिकाः । नानापद्भ्यास्तथा रौद्रा
 कव्यादा पिशिताशिनः । १३५ ॥ अयुतानि च तत्रासन्प्रयुतान्यर्बुदानि च । रक्षसा
 धोररूपाणां महती क्रूरकमणाम् ॥ १३६ ॥ मुद्रितानां विगुप्तानां तस्मिन्महानि वैशले ।
 क्षमेतानि बहुन्यासन् सूनानि च जनाविप ॥ १३७ ॥ प्रत्यूकाले शिविरार प्रतिभन्तु
 मिदेष स ॥ १३८ ॥ नृशोणितावसिकस्य द्रौणिरासीदितिस्तस्य । पाणिना सह सीदितष्ट
 पकीरुत इय प्रभो ॥ १३९ ॥ युगमां पद्वीं गत्वा विरराप्रजतक्ष्ये । युगान्ते सर्वसूतानि
 शस्त्रे क्वे कुरुष भयानक शब्दनाले घण्टागाल ते पुक्त नीलकण्ठ भयउत्पन्न कर
 नेवाले पुत्र स्त्रियोंको साथ रखनेवाले निर्दयी दुर्दर्शन और दया स रहित ये वह
 राजसों के रूपभी अनेक प्रकारके देखनेमें आये । १३२ । कोई हरिको पान
 करके मसन्न चित्त होकर नृत्ता करने लगे और कहते थे कि यह उत्तमैश्वर्यहोविश्वै
 यद् स्याद्वै । १३३ । भेजा मज्जा अस्थि और हडिरवां अच्छीरीतिसे भक्षण करने
 वाले हडिरसे अच्छे प्रकार तृप्तहुये मांससे जीवनेव ले वह राजस अन्यलोगोंके मांस
 खानेसे तृप्तहुये । ३४ । इक्षीप्रकार नानानकारके मुखरखनेव ले कोई रुद्ररूप मांसपत्री
 बड़ा उदर रखनेवाले राक्षस मज्जा को पान करके चारोंओर को दांड़े । १३५ ।
 बर्हा निर्दय कर्षी भयानकरूप बड़े राक्षसोंकी संख्या हजारों किरोंहों और अर्बुदों
 थीं । १३६ । हे राजा अवज्ञेताश मत्रन्न चित्त अत्यन्त तृप्त राक्षसोंकी पासंख्या
 थी और बहुतो भूगण भी इन्द्रदेवहुये । १३७ । उनसे प्रातःकालके समय उसदेरे
 से निकलनाचाहा । १३८ । मनुष्यों के हडिरों से लिय अश्रुत्वामा का खड्ग
 हाथसे चिपटाहुआ एकलप होगया हे मनु वह अश्रुत्वामा दुःखसे भिन्ननेवाले मार्गमें
 जाकर मनुष्योंके नाशमें येना शोनायमानहुआ जैसे कि प्रलयकाल में सबजीवों को

ing their blood They had dreadful forms, yellow colour, huge teeth
 dust stained hair, long conchs five fee, large belly, t e s turned
 backward, dreadful visage, with bell's an : nat, blue th oats, dreadful
 women, accompanied by women and sons, cruel, bad looking unmerciful
 and of various fims. 132 Some felt joy at drinking blood and
 danced, saying, " It is good, loly and delicious " They ate flesh,
 fat and bones and were satisfied with eating ^{the} blood " Some dreadful
 cannibals, with large bellies, fed on fat and ^{the} blood with rants either
 135 The cruel and dreadful raksasas were millions in number,
 which was augmented by g blins With his arm and sword of the
 same hue, Ashwathama wished to go out of the camp in the morning and l

मरुम कृष्येण पायकः ॥ १४० ॥ यथाप्रतिज्ञं तत्कर्म कृत्वा द्रौण्यनिः प्रभो । पुगेमो
 पद्वीं गच्छन् पितुरासीद्गतञ्चरः ॥ १४१ ॥ यथैव संसृप्तजने शिविरे प्राविशन्निधि
 तथैव हत्वा निःशब्दे निष्प्रकाम नर्यभ ॥ १४२ ॥ निष्कम्य शिविरात्प्रासादाभ्यां
 सङ्गम्य धार्ययान् । आचरन् कर्म तत् सर्वं दृष्टः संदर्श्यन् विभो ॥ १४३ ॥ तावत्प्रा
 चरपतुस्तस्मै प्रियं प्रियकरौ तदा । पाश्वालान् सुञ्जयाञ्चैव विनिकृत्वा सहरतः ।
 शिरसा बोधैरुदक्रोशस्तथैवास्फोटयत्तडात् ॥ १४४ ॥ एवं विधा हि सा रात्रि सीम
 कानां जनक्षये । प्रसृप्तानां प्रमत्तानामासीत् सुभ्रयदादृशा ॥ १४५ ॥ असंशयं हि कालस्य
 पर्यायो दुरतिक्रमः । तादृशा निहता यत्र कृत्वास्माकं जनक्षयम् ॥ १४६ ॥ ह्यनराष्ट्र
 उवाच । प्रागेव सुमहत्कर्म द्रौणिरेतन्महात्सवः जाकरोदीदृशं कस्माम्पुत्रविजयेभूतः
 ॥ १४७ ॥ अथ कस्माद्धते क्षेपे कर्मदे कृतवानसी । द्रोणपुत्रो महेश्वासत्तमे संशितु
 मर्हसि ॥ १४८ ॥ सञ्जय उवाच । तेषां नूनं भयाभासां कृतवान् कदनन्दन । कस्तात्रि

भस्मकरके अग्नि शोभायमानहोताहै । १४० । हे मभुवर्ष अश्वत्थामा प्रतिज्ञा के
 अनुसार उस कर्मको करके पिताके दुष्प्राप्य मार्गको प्राप्तकरता तापसे रहितहुआ
 । १४१ । वह नरोत्तम जैसे किराजिमें सोनेवाले लोगोंके समान ढेरमें पहुँचा उत्तीमकार
 मारकर ढेरके निश्शब्द होनेपर ढेरसे बाह्यनिकला । १४२ । उस ढेरसे निकल उनदोनों
 से मिलकर मसन्न और प्रसन्न करते उस पराक्रमीने उनसब कर्मको वर्णन किया हे
 सपर्ये तबउन विजय करनेवालों ने उस प्रिय वचनको इससे वर्णन किया कि हमने
 ढेरसे निकलनेवाले हजारोंपांचाल और सञ्जयोंको याता वह मसन्नता समेत बड़े
 उच्चस्वरसे पुकार और हाथकी तालियोंको बजाया । १४४ । सोवे और अचेन
 सोमकों के नाशमें बहरात्रि इमपकारकी कठिन और भयकारी हुई । १४५ ।
 निश्चन्देह सपथकी लोट पौट बुझने उल्लंघनकरनेके योग्यहै जहाँ कि उस प्रकार
 के बीर हमारे मनुष्योंका नाश करके मारगये । १४६ । हृतराष्ट्र बोले कि मेरे
 पुत्रकी विनयमें मनुचचित्त महारथी अश्वत्थामाने प्रथमही इस प्रकारके कठिन कर्म
 को कैंत नहीं किया । १४७ । उमनीच दुष्टोंधनके मग्नेपर उसमहात्मा अश्वत्थामा
 ने किसहुँसे उस कर्मको किया वह सब मुझसे कहने को योग्यहो । १४८ । संपन्न

looked glorious like the fire of pralya. 140. Having done the deed
 to avenge his father's death, he felt cheerful. He left the camp as
 noiseless as it was when he entered it at midnight. He met his two
 friends and cheered them by relating his exploits. They also told
 him the cherished news of their own victory and slaughter of thou-
 sands of Panchals and Srinjays. They shouted for joy and clapped
 their hands. The sleeping Somaka had been slaughtered during that
 dreadful night. 145. Surely the changes of Time are hard to be
 passed over; for those who had slain our men were themselves slain."
 Dhritrashtra said, "Why did Ashwathama not do a deed like this
 though he was so intent on my son's victory? Why did he do it at the

ध्याये पाशांतां केशवस्य च धीमतः । सात्यकेणापि कर्मदे द्रोणपुत्रेण साक्षितम् ॥ १४९ ॥ को हि तेषां समक्षं तान् हयात्रापि मरुतपतिः । एतकीदृशक वृत्तं राजन् सुप्त जने विभो ॥ १५० ॥ ततो जनस्यं कृत्वा पाण्डवामां महापयसम् । दिष्ट्या दिष्ट्येति चाप्योभ्यं समेत्योष्मंहारयाः ॥ १५१ ॥ पर्येष्वजत तौ द्रौणिस्ताड्यां समतिगन्धितः । इदं हवांकु सुमहदाददे चाकयमुत्तमम् ॥ १५२ ॥ पाञ्चाला निहताः सर्वे द्रौपद्रुपाश्च सर्वशः । सोमका मरुत्यशेषाश्च सर्वे विनिहता मया ॥ १५३ ॥ इदानीं कृतकृत्याः स्मयाम तत्रैव मा चिरम् । यदि जीवति नो राजा तस्मै संशामहे विश्वम् ॥ १५४ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि पांचालादिबधेऽष्टमोऽध्यायः ८॥



बोले हे कुरुनन्दन निस्संदेह उस अश्वत्थामाने उन पाण्डवों के भयसे इस कर्मको नहीं किया पाण्डव केशवजी और सात्याके के वर्चमान नहानेपर अश्वत्थामाने इस कर्म का साधन किया । १४९ । उन्हीं के समक्षमें कोई मनुष्य तो क्या इन्द्रभी नहीं मारसकाथा हे राजा राजिके समय मनुष्यों के सोने पर ऐसा वृत्तान्त हुआ । १५० । फिर पाण्डवों के लोगोंका काठन नाश करके वह मशरयी पररपर मिलकर बोले कि दिष्ट्या दिष्ट्या अर्थात् मुवारक मुवारकहोय । १५१ । इसके पीछे प्रसन्न कियाहुआ अश्वत्थामा उन दोनोंसे स्नेह पूर्वक मिला और मसन्नतासे इस उत्तम और बड़े बचनको बोला कि सब पाञ्चाल और द्रौपदी के पांचो पुत्र मारेगये शेष बचेहुये सब सोमक और मत्स्य देशभी मेरे हाथसे मारेगये । १५१ । अबहम कृत्य कृत्य हैं बर्हाई चले बिलम्ब मतकरो जो हमारा राजा जीवताई हम उससे बचकर बर्णन करें । १५४ ।



fall of Duryodhan Pra7 tell me n'l this. " Sanjaya said, " Surely, he did not do it before for fear of the Pandavas. He was able to perform it in the absence of the Pandavas, Keshav and Satyaki. Not even Indra can cope with those personages. He did it when the warriors were asleep. 150. Having destroyed the Pandav warriors, the three heroes congratulated one another. Ashwathama embraced the two men joyfully and said, " The Panchals and the five sons of Draupdi are slain like the Scmaks and Matsyas. We are now happy. Let us go and inform the king without delay, if he be yet alive. "154.

सञ्जय उवाच । ते हत्वा सर्वपाञ्चालान् द्रौपदेयाश्च सर्वशः । आगच्छन् सहि
 नात्तत्र यत्र दुर्योधनो हतः ॥ १ ॥ गत्वा चैनमपश्यन्त चिञ्चिवाप्राणं जनाधिपम् ।
 ततो रवेऽप्य प्रस्कन्ध परिववृत्तवामजम् ॥ २ ॥ त भग्नसदृशं राजेन्द्र कुरुक्षुप्राणम्
 चेतनम् । घमन्तं रुधिरं वक्ष्त्रादादयन् वसुधातले ॥ ३ ॥ शूनं समस्ताङ्गदुःखिः श्वापदै
 र्घोर्दशैः । शालावृकाणैश्चैव मक्षशिष्पद्भिर्निभ्रकात् ॥ ४ ॥ निघारयन्तं कुरुक्षुप्राण
 श्वापदाश्च चिञ्चिदिपून् । विक्षेपमान मद्यान्व सुसूत्रं गाढवदनम् ॥ ५ ॥ त शयान तथा
 तथा दृष्ट्वा भूमौ स्वरुधिराक्षितम् । हनशिष्टास्त्रया वीराः द्वाकात्ता पर्यवारयन् ।
 अश्वत्थामा कृपश्चैव वृत्तवर्मा च सास्वतः ॥ ६ ॥ तोस्त्रिभि र्गोणितदिग्भ्यैर्निह्यसाद्भि
 र्महार्थैः । शुशुभे शश्वतो राजा वेदी विभिरिव ज्मनिः ॥ ७ ॥ ते तं शयानं संप्रेक्ष्य
 राजानमनथोचितम् । अविपक्ष्यन् दुःखेन ततस्ते वक्रबुद्धयः ॥ ८ ॥ नतस्तु रुधिरं हस्ते

अ-पाप ९ ॥

संगठ बोड़े कि वह तीनों मय पञ्चाल और पांचो द्रौपदी के पुत्रों कोमार
 क्रूर एरुनाथी वहाँ गये जाँ कि घायल दुर्योधन था । १ । और जाकर कुछ
 स्रेप मागवाले राजाको देखा इनके पीछे रथोंमे उतरकर आपके पुत्रको मध्यवर्ती
 किया । २ । हे राजेन्द्र उर्दोंने उन टूठी जंघ और माणों से पीड़ावान भवत और
 सुवभे रुधिर ढालेनवाले राजाका पृथ्वीपर देखा । ३ । भयानक दर्शनवाने बहुतसे
 हिंस्रजीवोंने युक्त और समीप से भक्षण करने के अभिनावी शृगा आदिकके समूहोंसे
 घिरदुये । ४ । खानेके अभिलाषी भेड़िया आदिकको दुःख से राकनेवाले पृथ्वी
 पर चेटा, करनेवाले कठिन पीड़ावान । ५ । रुधिर से लिप्त उम प्रकार पृथ्वीपर
 सोनवाले राजादुर्योधनको देखकर मरनेमे शेषरवे शोकसे पीड़ावान तीनोंवीसों ने
 चारोंसे उतको व्याप्तकिया भर्षात् अश्वत्थाम, कृपाचार्य और यादव कृतवर्मा
 । ६ । रुधिरसे लिप्त आसलेनवाले तीनों पहाराथियों मे संयुक्त वह राजा ऐसे
 शोभायमान हुआ जैसेकि तीनों आग्निमेंमे वेदी शोभायमान होताहै । ७ । इस के
 पीछे वहतीनों उमदर्शाके अयोग्य पृथ्वीपर पड़ेदुये राजाको देखकर अमहा दुःख
 समेत रोदन करनेलगे । ८ । फिर युद्धभूमि में सोनेवाले उम राजाके मुखसे रुधिर

CHAPTER IX

Sanjaya said, " Having slain the five sons of Draupadi, the three warriors went to the place where Duryodhan was lying wounded. They saw him at the point of death and went to him from their cars. They found him lying on earth, with his thigh broken, inaccessible in the agonies of death and blood coming out from his mouth many a drop of prey and jaetel, wishing to devour his body, surrounded in. Seeing Duryodhan incapable of keeping wolves and other animals at a distance, the three warriors, Ashvathama, Kripaharya and Kriyayama came round him. Accompanied by the three bloody

मंस्त्रादिमृत्युं सद्यः हि । रणे शय्य शयानस्य कृपण पश्यद्देवयन् । १ ॥ कृप उवाच । न
 देवस्यातिभारोऽस्ति यद्य रधिगोक्षिन । एकादशचमूहर्षा शने दुःखोऽधनोऽहत् ॥ १० ॥
 पश्य चाभीरासस्य चासीकरधिभूयिताम् । गद् मद्मिष्यस्येर्षा समीपे पतिता भुधि
 ॥ ११ ॥ इत्यनेन गदा शूर न जहाति रणे रणे । स्वगोषापि प्रजन्नाह न जहाति यथा
 स्निग्धम् ॥ १२ ॥ पश्येमां सह धारणे जायूनवाधिभूयिताम् । शयाना शयने हृष्ये आर्या
 प्रीतिमधीमिष ॥ १३ ॥ योय मुर्धाभिषिक्तानामभ्रेयात् । धारणतप । इा हतो प्रसवे पाशान्
 पश्य कालस्य पश्येयम् ॥ १४ ॥ येनाशौ निहतो मृताधशेरत हतद्विप । स मूमौ निहतः
 शोते कुर्वीज परैरयम् ॥ १५ ॥ श्याम्नमन्ति राजानो यस्य स्म शतसघश । सवीरश
 यने दोने क्रम्याङ्गि परिवारितः ॥ १६ ॥ उपासन्त द्विजाः पूजयन्तेऽतोऽपि मीद्वरम् । उपा
 सते च तं ह्यद्य क्रव्यादांमासदेवत ॥ १७ ॥ सञ्जय उवाच । त शयानं कुप्येष्टततो

को अपने हाथों से सफाकरके करुणापूर्वक विनाप किया । ९ कृपाचार्य बोले
 कि देवको बड़ा भार नहीं है जो यह ग्यारह भस्मीद्विणी सेनाका स्वामी राजा
 दुर्गोवन रुधिर से लित घायल हुआ पृथ्वीपर सोता है । १० । इस सुवर्णके समान
 मकाशमान सुवर्ण जडित राजाकी गदाको पृथ्वीपर सम्भुल पड़ी हुई देखो । ११ ।
 यह गदा प्रत्येक युद्धमें इस शूरको त्याग नहीं करती अर्थात् स्वर्ग जानेवाला यश
 मानको नहीं त्यागकरती । १२ । सुवर्ण से अलंकृत वीरके साथ सोनेवाली इस
 गदाको ऐसे देखो जैसे कि महलमें सोनेवाली प्रीतिमान् भार्याको देखते हैं । १३ ।
 जो यह शत्रुका तपानेवाला मुर्धाभिषिक्तों के आगे मथानहुआ वह घायल होकर
 पृथ्वी ही धूलिको स्पर्श करता है समझी विपरीतता को देतो । १४ । जिसके
 हाथसे युद्धभूमिमें मारेहुये शत्रु पृथ्वीपर सोनेवाले हुये वह मृतकशत्रुवाला यह
 कौरवराज शत्रुओं के हाथसे माराहुआ सोता है । १५ । इनारों राजाओं के समूह
 जिसके भयमें झुकने थे वड गांसभवी जीवों से पिराहुआ वीर पृथ्वीपर सोता है
 । १६ । ब्राह्मणों ने धनकेनिमित्त जिन ईश्वरकी उपासनाकी अत्र उनको मांसभली
 मांसखानेकीलिये प्रशंसाकरते हैं । १७ । सञ्जयबोले कि हे भरतर्षभ उसकेपीछे

war: ors, the king look'd like an altar over which the three fires prewde ?
 They wept to see the king lying in that deplorable condition. They wiped
 blood from his mouth with their hands and wept. Kripacharya said,
 " We have not much to thank Fate for Prince Duryodhan, the lord
 of eleven akshauhines of army lies bleeding here on earth. 10 Here
 lies his golden mace which never left the dying prince. It is lying
 with him like an affectionate wife. This leader of kings lies here on
 earth. Look at the changes of Time ! Having slain his foes the Kau
 rav Prince lies here struck by the enemy. 15, He to whom thou
 sands of the kings bowed, sleeps on earth surrounded by beasts of prey
 He who was praised by Brahmans for the sake of his wealth is
 now attended by flesh eating animals for the sake of his flesh " -17:

भरतसत्तम । सद्ब्रथामा समालोक्य कठणं पर्यवेनयत् ॥ १८ ॥ आहुःस्वा राज्ञा
 वल्लमुष्यं सर्वधनुःताम् । धत्ताःशोषं दुःखं शिष्यं रुद्रं जयत् ॥ १९ ॥ कथं
 विश्वमद्राक्षीमसेनसत्तमघ । बलिन कृतितं नित्यं स च पापाःप्रवाङ्मुप ॥ २० ॥
 कालो नूनं महाराज कोलेस्मिन् बलवत्तरः । पद्यामो निहतं त्वाऽथ भीमसेनेन संयुगे
 ॥ २१ ॥ कथं त्वां सर्वधर्मं धुद्रः पापो वृकोदरः । निकृत्या हतवाङ् मग्धो नूनं कालो
 पुरस्थयः ॥ २२ ॥ धर्मयुगे ह्यत्र जल समाह्वयौजसा मृधे । गदया भीमसेनेन निभेने
 सकिपनी तव ॥ २३ ॥ जघर्षेण हतस्त्राजौ मृगमानं पदा शिरः । च उपेक्षितवाङ् धुद्रं
 विकृतमस्तु पुंशिविरम् ॥ २४ ॥ युद्धेष्वपवद्विष्यन्ति योधा नूनं वृकोदरम् । यावत्
 द्यास्त्वन्ति सूपानि निकृत्या ह्यसि पतितः ॥ २५ ॥ मनु रामाऽऽर्षीद्राजस्यो सदा बहु
 मग्धः । युद्धेष्वनन्वमो तास्ति गदया इति वीर्यवान् ॥ २६ ॥ इलाघते त्वां हि धार्षणेयो

अश्वरथामाने उस कार्यों में भेष्ट सोतेहुये दुर्घोषन को देखकर द्वासे कबना
 बिलाप किया । १८ । हे राजाओं में भेष्ट तुमको सब धनुषधारियों में मयम बल-
 देवकीका शिष्य और युद्धमें कुबेरकेसमान वर्णन कियाहे । १९ । हे पापोंसे रहित
 भीमसेनेने कैसे तेरे छिद्रको देखा हे राजा उस पापात्माने तुझ बलवान् और सदैव
 कर्मकरनेवासे को मारा । २० । हे महाराज निश्चय करके इस लोकमें काल बढ़ा
 पराक्रमी है कि हम तुमको युद्धमें भीमसेनके हाथ से मराहुआ देखते हैं । २१ ।
 क्रोधयुक्त अज्ञानी पापी भीमसेनने किसमकार से तुझ सबधर्मों के ज्ञाताको उल्लेख
 मारा निश्चय काल दुःखते उल्लंघनके योग्य है । २२ । धर्मयुद्ध में बुझकर फिर
 युद्धमें अथर्वमे साथ भीमसेनकीगदा और पराक्रम से तेरी दोनों जंघाटूटीं । २३ ।
 जसने युद्धभूमि में अथर्व से घायल शिरपात्र से नरन बुक्तकी देखकर
 स्वान नहीं किया उस क्रोधयुक्त सुशिविरकी धिक्कारहे । २४ । निश्चयकरके तुर
 धीरलोग युद्धोंमें जवतक वृषी वर्तमानहै तब तक भीमसेन की निन्दाकरेमे क्योंकि
 तुम छलसे मारेगयेहो । २५ । हे राजा निश्चयकरके यवुनन्दन पराक्रमी बलदेवजी
 ने सदैव तुझसे कहाके गदायुद्धकी विद्यामें दुर्घोषनके समान कोई नहींहै । २६ ।

Sanjaya continued, "Ashwathama felt pity on the Kaurav prince and wept for grief, saying, " You were the foremost of Baldeva's disciples and were a famous warrior like Kuber. How was Bhim able to discern a weakness in you ? How did he slay you ? Surely Time is very powerful in this world as we see you slain by Bhim. How did enraged, foolish and sinful Bhim slay you by deceit ? Surely Time is hard to be over-topped. 22. Challenged to a fair fight, he unfairly broke your thigh. Fie on Yudhishtbir, who saw you unjustly struck down and looked on the indignity when your head was being touched by foot. Surely brave men will always speak ill of Bhim for slaying you unjustly. 25, Baldev always spoke of you that you had no

राजसु ख्यातु मारत। सुशिक्षो मम कीरत्यो गदायुद्ध इति प्रभो ॥ २७ ॥ या गतिं
 क्षत्रियस्यायुः प्रशस्तां पदर्थवः । इतस्वामिमुक्त्वास्वामी प्राप्नस्वमसि तां गतिम् ॥ २८ ॥
 दुर्योधन न शोचामि त्वामहं पृथुपर्षभ । इतपुत्रो तु शोचामि गांधारा विनर्तक ते
 ॥ २९ ॥ भिक्षुकी विचरिष्येते शोचन्तीः पृथिवीमिमाम् । भिगस्तु कृष्णं चाश्वमेधम्
 लब्ध्वापि दुर्मतिम् ॥ ३० ॥ धर्मज्ञमानिनो यो त्वां वक्ष्यमानमुपश्रयाम् । पाण्डवाभ्यापि
 ते सर्वे किं वक्ष्यन्ति तराधिप । कथं दुर्योधनोस्वामिर्देव इरवनपत्न्याः ॥ ३१ ॥ धन्य
 स्वमसि गांधारे वक्ष्यमायोधने इतः । प्रपातोऽभिमुखः शत्रुं धर्मेण पृथुपर्षभ ३२ ॥
 इतपुत्रादिगांधारी निहतकानिधान्धवा । प्रजाचक्षुश्च दुर्धरैः को गतिं प्रतिपास्यते
 ॥ ३३ ॥ भिगस्तु कृतवर्माणं मां कृपयन्महावपयम् । ये वधे न गताः स्वर्गं त्वां परस्वयं
 पार्थिवम् ॥ ३४ ॥ हातारं सर्वकामानां रक्षितारं प्रजाहितम् । यद्यप्ये नानुगच्छामस्वर्वा

हे महा मरतवंशी राजादुर्योधन वह बलदेवजी लभामां में तुम्हांगी प्रशंसा करते हैं
 कि वह कीरव गदायुद्ध में मरा शिवदहे । २७ । महर्षियों में युद्धभूमि में सम्मुख
 करनेवाले सत्रीकी भिसगतिको उचम कहा तुम उचीगतिको प्राप्तो । २८ हे
 पुरुषोत्तम दुर्योधन में तुझको नहीं शोचताहूं तोपिताको और गान्धारीको शोचता
 हूं जिनके किं सत्रपुत्र मरिगये । २९ । इन पथीको शोचने वह भिक्षु रूप होकर
 इस पृथ्वीपर विचरेंगे यादव भीकृष्णजी को और दुर्धरी अजुनकोभी धिकारहोय
 । ३० । आपको धर्मज्ञ जानते जिनदोनों ने तेरे घायल होनेको ध्यान नहींकिया
 हे राजा वह लज्जाराहित और सब पाण्डवनी करेंगे कि हमारे हाथ से
 दुर्योधन क्रिपप्रकार से मारागया । ३१ । हे पुरुषोत्तम दुर्योधन
 तुम धन्यनाद के योग जो तुम बहुधा धर्म से शत्रुओं के सम्मुख होकर युद्धभूमि
 में मरिगये । ३२ । नितके जाति बान्धव और पुत्र मरिगये वह
 गांधारी और ज्ञानघनु रखनेवाला अजय धृतराष्ट्र दोनों किस गतिको पावेंगे
 । ३३ । कृतवर्मा को मुझको और महारथी कृपाचार्य को धिकारहोय जो हम तुम्ह
 राजा को आनेकर के स्वर्गको नहीं गये । ३४ । जो हम तुझ सब अभीष्ट के देने

equal in mace fighting. He praised you in courts and was proud of having you for his disciple. You have died fighting and this sort of death is recondemned by wise men for a kshatrya. I donot regret your death, Duryodhan, but I mourn for your father and Gandhari who have lost all their kingdom and will roam like beggars. Fie on Krishn and Arjun who call themselves virtuous and yet disregarded the injury done to you. How can the shameless Pandavas boast of slaying you? I congratulate you, Duryodhan for your securing a warrior's end. 33. To what state will Gandhari and blind Dhritraashtra be reduced who have lost all their kinemen! Fie on Kritvarma, on me and on Kripacharya, for we did not follow you to

यिगमात्तरावमा ॥ ३६ ॥ क्रास्य नव गीर्वाण मम चैव पितुश्च मे । सम्भवानां नर
 नाभ्याश्च रत्नवन्ति गृहाणि च ॥ ३७ ॥ भवत्यसादादस्माभिः समिधे सह वाग्ध्वजेः ।
 अगत्या कृतवो मुख्या धृष्टो भूरिदक्षिणा ॥ ३८ ॥ कुन्धापीडय पाप प्रवीक्ष्यामहे
 धयम् । यादृशन परस्वल्पे गत मयैर्गर्धिषा ॥ ३९ ॥ धयमेव प्रयो राज्ञं गच्छ तं
 परमा गतिम् । धृष्टे र्नां नानुगच्छामस्तेन पश्यामहे धयम् ॥ ४० ॥ त्यत्सगहीनाः हीनार्थो
 स्मरन् नुक्नुवत्येते । किञ्चाम तद्भव कर्तव्येन त्थान् ग्रजामपै ॥ ४१ ॥ मनुकं नृपं
 कुहग्रथं चरिष्याम तद्वाहिनाम् । हीनानां नरेशशरात् कुतः शान्तिं कुतः सुधम्
 ॥ ४२ ॥ गच्छेत्स्तु महाराज भवेत्तु मत्प्राधान्यं । तथाभ्येष्ट यथाजयं पूजयेत्सन्नाम्
 मम् ॥ ४३ ॥ आचार्य्यं पूज्यायवाच केतु सर्वधनुष्मनाम् । हन मयाद्य शसेत्वा शृष्टुष्म
 नराधिपः ॥ ४४ ॥ परिपश्यया राजानं बाह्येकं सुमहाराथम् । मेधव सोमरत्नञ्च

बाणै रक्षुर्न और संभारके धियकर्त्ता के पीछे नहीं जाते है हम नीच मनुष्योंको
 धिक्कार है । ३९ हे नरोत्तम नीकरों समेत कृपाचार्य के भरे और भरे पिताके
 रराजदित् स्मान आपही के पराक्रमी हुये है । ३७ । मित्र और वान्धवों समेत
 हम लोगों ने आपकी कृपामें बहुत दक्षिणावाले अतिउत्तम बहुत यज्ञमांसकिये ३८
 इष्ट पापी कहीं से देने मार्गपर कर्मकर्त्ता हांगे निग मार्गमें कि तुम सब जीवों को
 आगेकरके गये । ३९ । हे राजा जोहमतीनों तुझ परमगति पानेवाले के पीछे नहीं
 जातेहैं उस हेतुने हम भक्ष्य होते है । ४० । स्वर्ग और अभीष्टोंमें रहिव हमन्तोग
 उन राजाओंको और तेरे धूमकर्म को स्मरण करते जिसहेतुसे आपक पीछे नहीं
 जावे है वह हमारा केन रम्भशोग । ४१ । हे कौरवों में श्रेष्ठ राजा दुर्जयन निश्चय
 करके हम सब महादुषी होकर इन पृथीपर विचरेंगे तुम्हमें पृथक् हांकर हमझोंगों
 को कहीं सान्त्वी और सुख प्राप्त होमक्ता है । ४२ । हे महाराज तुम जाकर और
 महाराथियों से मिलकर भरे वनसे वृद्धता और उत्तमताके विचारसे पूजन करना
 । ४३ । हे राजा सब धनुषधारीयों के ध्वजारूप आचार्य जी को पूज कर अब
 भरे हाथसे भरे हुये शृष्टुष्मको वर्जन करना । ४४ । और बड़े महारथी राजा

heaven. Fie on us who do not accompany you, our benefactor and
 protector! My father, Kripacharya and I owe our greatness to you
 We and our friends were able to perform rich sacrifices by your grace
 How can sinful men like us follow the path that you have trodden!
 We burn with grief because we do not follow you to heaven. 40. De-
 stitute of heaven and cherished desires, we are undone because we
 do not follow you Duryodhan, best of Kauravas! surely we are
 reserved to lead a life of misery and can have no peace without you
 Pay my respect to the departed warriors when you meet them, King
 Inform Dronacharya the host of archers that I have slain Dronacharya
 dyumn Convey my greetings to Valiik Jayadrath, Sandatta, Bauri-

अथसमेव च ॥ ४१ ॥ तथा पूर्वगतान्पारस्वर्गं पार्थिवसत्त्वमात् । अस्मद्वाक्यात्
 ४२ ॥ पृच्छेद्योःस्वमनामयम् । ४३ ॥ सप्रय उवाच । इत्येवमुक्त्वा राजान मग्न
 ४४ ॥ अदवत्यामा समुद्राय पुनरवचनमब्रवीत् । ४५ ॥ दुर्योधन जीवति
 वाक्य क्रोशन्नुत्थुण । सप्त पाण्डवत शेषघातंरामूख्यो वयम् ॥ ४६ ॥ ते
 ४७ ॥ अतएव पप धामुदेषोष सारगिः । अह्व कृतवर्माच रूप शारद्वतस्तय ४८ ॥
 ४९ ॥ पदेवा हता सर्व घृष्टद्युम्नस्य, खात्मजा । पाञ्चाला निहता सर्वे मत्स्वशेषश्च
 ५० ॥ कृते प्रा कृत पश्य हतपुत्रा हि पाण्डवा । सौप्तिके शिविर तेषा हत
 ५१ ॥ मया च पापकर्मासी घृष्टद्युम्नो महीपते । प्रविश्य शिविर रात्रौ
 ५२ ॥ दुर्योधनस्तु तां वाच निशम्य मनस प्रियाम् । प्रतिलभ्य
 ५३ ॥ न मेऽकराचद्रागोयो न कर्णा न च ते पिता । यस्वया

बाहलीक, जयद्रथ, सोमदत्त और भूरिश्रवासे मिलना । ४५ । उसी प्रकार स्वर्ग
 में प्रथम जानेवाले अग्य २ उत्तम राजाओं को मेरे वचनसे मिलकर कुशल मङ्गल
 को पूछना । ४६ । सजग बोले कि अदवत्यामाजी उत्त भवेत और दूरी जघानाले,
 राजाको इसप्रकार कहकर और सम्मुख देखकर फिर वचन को बोले । ४७ ।
 हे दुर्योधन तू म जीवतेहो कानोंके सुखदायी वचनोंको सुनो कि पाण्डवोंके सात
 और दुर्योधनके हमतीन जेववचेहैं । ४८ । वह पांचोंमें ई केशवजी और सात्यकि
 हैं उसीप्रकार मैं कृतवर्मा और तीमर शारद्वत कृपाचार्यजी शेषहैं । ४९ । हे भरत
 वशी द्रौपदीके सब पुत्र घृष्टद्युम्नके सब पुत्र पांचाल और शेष वचेहूय सब मरस्य
 देशी मारगये । ५० । बदलेके कर्म को देखो और पाण्डव असन्तान हैं रात्रि के
 युद्धमें मैंने उन्हींका डेरा सब मनुष्योंसमत नाश करदिवा । ५१ । हे राजा मैंने
 रात्रि में डेरेंमे प्रवेश करके यह पापकृत्ता घृष्टद्युम्न पशुके समान मारा । ५२ ।
 दुर्योधन उन चित्ते भिराचरको पुन हर आर सतेतहो हर यहवचन बोला ५३

shrava and other warriors when you met them in heaven' 46 S n
 jaya continued, ' Having thus talked with the wounded king in this
 strain, Ashwathama again said, ' Hear what is pleasing to the ear O
 king, if you are yet alive seven on the side of the Pandavas and three
 of us are the only men alive—the five brothers, Keshava and Sityala
 on their side, and Kritvarma, Arpaclarya and I on yours. 'Altho
 wons of Draupdi, with Dhrishtadyumna and his sons, all the Pandavs
 and the rest of the Matsyas are slain 50 See the work of revenge
 The Pandavas are chided for letting all their camp sit night
 I entered the camp t r ght id slw sinful Dhrishtdyumna like a
 beast " Having heard this cherished news and coming to conscious
 ness, Duryodhan said, " Neither Bhishm nor Kuran nor your father
 did for me the thing which was done by you with the help of Krpa
 charya and Kritvarma. The dependable general and Saklandi havej

कृपभोज्ञाभ्यां सहितेनाय ते हृतम् ॥ ५४ ॥ स च सेनापतिः धृष्टो हतःसार्धं शिष्य
 पिडता । तेन मन्थे मयवता समगारमानमद्यये ॥ ५५ ॥ स्वस्ति प्राप्नुवत मद्रं वः स्वर्गे
 न. समः पुनः । इत्येवमुक्त्वा तूर्णान् कुन्ताजोमहामनाः ॥ ५६ ॥ प्राणान्वसुञ्जरीरः
 सुहृदाद् यमुत्सृजत् । आनामत दिवं पुण्यां शरीरं क्षितिमाविशत् ॥ ५७ ॥ एवं ते
 निघने यातः पुत्रो दुःखोघनो नृप । अग्रं यात्या रणं शूर. पञ्चाङ्गिनिहतः परे. । ५८ ॥
 तथैव ते परिपक्त्वा परिपश्यच्च तेनृपम्पुन. पुन प्रेक्षमाणाःस्फफानसहस्र रथात् ॥ ५९ ॥
 इत्यहं द्रोणपुत्रस्य निशङ्ग कुरुणा गिरम् । प्रत्यूकाले शोकार्त्तः प्राद्रवन्नरं प्रति
 ॥ ६० ॥ एतेमेव क्षयो वृतः कुत्वाण्डवसत्याः । धीरो विशमनो रीत्रो गजन् पुमे
 म्त्रिने तव ॥ ६१ ॥ तव पुत्र मते स्वर्गे शोकार्त्तस्य ममानघ. ऋषिदत्तं प्रतष्ट तद्विम्बम्
 शिष्यमद्य वै ॥ ६२ ॥ वैशम्पायन उवाच । इति धृत्या स नृपतिः पुत्रस्य. निघने त्वदा
 निदग्धस्य दीघिसुण्णञ्च तनश्चिन्तापरोभवत् ॥ ६३ ॥ त्रिं तुष्ट्योघनप्राणत्यागेनवभोर्ष्यायः
 कि मेरावहकर्म न भीष्यन्ती ते न कर्ष्यने और न आपके पिताने. क्रिया, जा अब
 कृपाचार्य और कृपनासभेग तुमने क्रिया । ५४ । वहीच सेनापति, शिखण्डी
 समेत मारागया उनहेतु से मरनें आपकी इन्द्रके समान मानताहूं । ५५ । कल्याण
 को पाओ तुम्हाग भलाहोय अःस्वर्ग में हमारा तुम्हारा फिर मिलापहोगा बहबडा
 साहसी कौरवराज इसप्रकार कहकर मौनहुगा । ५६ । और मित्रोंकेदुःखको उत्पन्न
 करते उसपीर ने अपने माणोंका त्यागकर पवित्र स्वर्गको गया और शरीरपृथ्वीपर
 रहा । ५७ । हेराजा इसप्रकार आपकेपुत्र दुःखोघनने मरणको पाया बहशूर बुद्धमें
 प्रथमज्ञाकर फिर शत्रुओं के हाथमें मारागया । ५८ । उसीप्रकार उनसेमिलेहुये वह
 लोग फिर भिलकर राजाको वास्वन्तर देग्यते मपनेअपने रथोंपर सवारहुये । ५९ ।
 इसप्रकार अवस्थामाके करुणारूप शयनोंको सुनकर शोकसेपीडित बहतीनों प्रातः
 कालके समय नगरकी ओर भीघ्रातंग चले । ६० । हेराजा आपके कुम्बहं नेपर
 इसप्रकार कौरव और पांडवोंका यद्गौर और भयकारी मारनेवाला नाश वर्षमान
 हुआ । ६१ । हेनिष्पाप जोरुनेपीडित आपके पुत्रकेस्वर्गप्रानेपर अत्रव्यासऋषिका
 दियाहुआ वह दिव्यदर्शन और दिव्यनेत्र विनाशमान हुये । ६२ । वैशम्पायनबोले
 कि तबवह राजापुत्रराष्ट्र पुत्रके मरनेको सुनकरलम्बी और उच्च वरासाओंकोलेकर
 महाचिंतायुक्तहुआ ६३ ॥

been slain and therefore I am as happy as Indra. May you be blessed
 we shall meet again in heaven " Having said this the brave Kaurav
 prince resumed silence. 56 Causing grief to his friends, he left this
 world for heaven and left his body lying there. Thus your son died
 O king The three warriors left him there and took their care, Hav-
 ing heard the p. table talk of Ashwathama, they rode towards the
 city at day break. 60 All things at destruction was brought about
 by your own evil policy, sug. At the death of your son, the divine
 eyes, given me by Vyasa, and their power disappeared " Vansham-
 payan said that on hearing of his son's death, king Dhrishashtra
 heaved long and hot sighs and was plauged in the ocean of grief, 63.

॥ अथ ऐपिकपर्वारम्भः ॥

वैशम्पायन उवाच । तस्यां रात्र्यां व्यतीतायां धृष्टद्युम्नस्य साराधिः । शशंस धर्मं
 राजाय सौप्तिके कथनं कृतम् ॥ १ ॥ स्त उवाच । द्रौपदेया हता राजन् द्रुपदस्यात्मजैः
 सह । प्रमत्ता निशि विश्वताः स्वपन्तः शिबिरं स्वके ॥ २ ॥ कृतवर्मणा गृध्रीसुत गौत
 मेन क्रुयेण च । अश्वत्थाम्ना च पापेन हनं व शिबिरं निशि ॥ ३ ॥ एतेनैरगजाश्वानां
 प्रासशक्तिपरश्वधैः । सहस्राणि निद्रस्तद्भिर्निःशेषं ते बलं कृतम् ॥ ४ ॥ छिद्यमानस्य
 महतां वनस्यैव परश्वधैः । शुश्रुवे स्व महान् शशो बलस्य तत्र भारत ॥ ५ ॥ अहमेको
 षशिष्टस्तु तस्मान् सैन्यान्महोपते । मुक्तः कथञ्चिद्धर्मात्मन् इयमस्थ कृतवर्मणः ॥ ६ ॥
 तच्छ्रुत्वा वाक्यमशिवे कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः । पपात मह्यो दुर्धरैः पुत्रशोकसमन्वितः
 ॥ ७ ॥ तं वनस्तमभिष्टमः पारिजग्राह सातथीतः । भीमसेनोर्जुनश्चैव मारीचपुत्रौ च
 पाण्डवौ ॥ ८ ॥ लब्धभेत स्तु कौन्तेयः शोकविह्वलया गिरा । जित्वा शत्रून् जितः

अध्याय ॥ १० ॥

वैशम्पायनबोले कि उस रात्रिके व्यतीत होनेपर धृष्टद्युम्नके सारथीने युद्धमें
 होनेवाले नाशको धर्मगानक सम्मुख यज्ञोर्नाक्या । १ । सारथी बोला हे राजारात्रि
 के समय अपने ठेरे में सोनेवाले विश्वास युक्त अचन सोतेहुये द्रौपदी के पुत्र द्रुपद
 के पुत्रों समेत मारेगये । २ । निर्दयी कृतवर्मा गौतम कृपाचार्य और पापी
 अश्वत्थामाके हाथने रात्रिके समय आपका डेरा नाशहुआ । ३ । मास शक्ति और
 फरमोंसे हजारों मनुष्य घोड़े और हाथियों को मारनेवाले इन तीनों से आपकी
 सेना मारीगई । ४ । हे भरतपरी फारसोंके कटोदुये बड़ेवनकी समान आपकी सेना
 के बड़ेशत्रु सुतेगये । ५ । हे बड़ेज्ञानी केवल मैंभी जकेला उस सेनामेंसे बचा
 हूं हे धर्मात्मा मैं उस दृष्ट कृतवर्मा से किसीप्रकार करके बचगया । ६ । कुन्तीका
 पुत्र अजय युधिष्ठिर उस दुलशोक के वचनको सुनकर पुत्रशोक से युक्त होकर
 पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ । स त्यकी भीमसेन अर्जुन नकुल औरसहदेव ने उस गिरने
 हुये राजाको पकड़ लिया । ८ । फिर सचेत होकर शत्रुओंका विजय करनेवाला

CHAPTER X

Vaishampayan said, " At the close of that night, Dhrishtadyumna's
 car driver brought the news of the great destruction to Yudhishtir.
 He said, " Sleeping soundly in their tents last night, the sons of
 Drupad and Draupadi were all slain by cruel Kripacharya and Kritvar
 ma, who destroyed your camp by night. The three warriors slew
 your men and horses with their weapons, Your army was cut with
 battle axes like a large forest. 5. I managed somehow to escape from
 Kritvarma and am the only man alive out of that great force." Yud
 hishtir the son of Kunti became insensible with grief on hearing
 that sad news, Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev saved the king from

पश्चात् पर्यदेवयदात्तं वत् ॥ ९ ॥ दुर्धिता मस्तिर्यानागपि ये विज्यन्तुषुः । जीयमाना जयन्त्ये जयमाना घये जिताः ॥ १० ॥ हत्वा द्वातृन् दयन्त्यांश्च पितृन् पुत्रान् सुहृत्तान् । चन्धन्मातृन् पौत्रांश्च जित्वा सर्वान् जिता वयम् ॥ ११ ॥ अनर्थो ह्यर्थसङ्कुशास्तघानयोऽर्थदर्शनः । जयोऽयमजयकारो जयन्तस्मात् पराजयः ॥ १२ ॥ यद्विज्रया तस्येत पश्चादापघ्न इव दुर्मणि । कथं मन्येत विजयं नतो जिततरः परैः ॥ १३ ॥ वेपामर्याप पापं स्वाराज्यस्य सुहृद्भवेः । निजितैरममर्षैर्हि विजिता जितकाशिनः ॥ १४ ॥ कर्मिनालीकदंष्ट्रस्य सङ्गाजह्वस्य संयुगे । चापश्यासायसौद्रस्य ज्यातस्यवनदिनः ॥ १५ ॥ क्रुधस्य नगसिंहस्य संग्रामेष्वपलायिनः । ये व्यमुञ्चन् कर्णस्य प्रमादश इमे हताः ॥ १६ ॥ रथहृद् शरवर्षोर्मिमन्तं रतनाशितं वाहनवाग्भियुक्तम् । सङ्घिर्ममानश्च जनागनकं शरासनावर्षमहेयुकेनम् ॥ १७ ॥ संग्रामचन्द्रोदयधेगवलं द्राणाभवं उयातलने युधिष्ठिर शोकसे व्याकुल दुःखसे पीडयान् के समः । विलाप करने लगा । २ । अर्थों की भाँति दुःखसे जानने के योग्य है जो दिव्यशुद्ध रत्नवाला है इनको भी अल्पलोग पराजित होकर विजय करते हैं विजय करनेवाले हमलोग विजय किये बचे । ३ । भाई समान भवस्थानाले पिता पुत्र मित्रवर्ग बान्धव मन्त्री और पौतों समेत सबको मारकर भी हम दूसरों से विजय कियेगये । ४ । निश्चयकरके अनर्थ अर्थरूप है उसीप्रकार अनर्थ अर्थको दिखलाने वाला है यहविजय पराजयरूप है इससेतु से विजयही पराजय है । ५ । जो दुर्बुद्धों विजयकरके पीछे आपत्तिमें बँधे हुये के समान दुःखी होता है वह किम प्रकार विजय को माने उम हेतु से शत्रु के हाथसे अल्पन्त पराजित है । ६ । मित्रोंके नाशमे विजयका पाप जिनके निमित्त होय पराजितहुये चतुर मानघान मनुष्योंकरके विजयसे शोभायमान आरमी विजय कियेगये । ७ । युद्धमें कर्मिनालीक नाम वाण के समान दाढ़ रत्नवाले खड्गकी समान जिह्वा धनुषके समान चौड़ामुख बद्धरूप मत्त उच्चा और तलके समान शब्दवाले । ८ । क्रोधयुक्त युद्धों में शत्रु न फेरनेवाले नरोत्तम वशके हाथसे जो बचे वहभव शूरावीर अचेनतासे मारंगये । ९ । 'रथरूप' इद वाण शृष्टिरूप तरङ्ग बाले वृत्तोंसे पूर्ण छोड़े और सवारियों से युक्त शक्ति वा दुधारे खड्गरूप बल्लही ध्वजा रूप मर्ष और नक्र धनुषरूप भँवर बड़े वाणरूपी फण रत्नवाले । १० । युद्धरूप

falling down. He began to lament the great loss coming to himself
 "The ways of the world are difficult to understand: the conquerors
 are conquered by the conquered. 10 Having slain our kinsmen, friends,
 and advisers, we are at last conquered by the enemy. Surely our
 success is false and victory is turned in to defeat. The foolish con-
 queror who mourns like a miserable man, is really not a conqueror but
 one conquered by the enemy. The wise conquered the conquerors
 who had sinned in slaying their friends. The warriors having hard
 arrows for tongues, swords for tongues, bows for wide mouths, 'sounds of

मिधोपय । ये तेरुक्त्वावचशस्त्रनौगिले राजपुत्रा निहताः प्रमादात् ॥ १८ ॥ नहि प्रमा
दात् परमोक्ति कश्चिदघो नराणामिह जाघलोकैः । प्रमत्तमर्था हि तं समन्तात् त्वज्ज
न्यनर्थाश्च समाविशन्ति ॥ १९ ॥ इवजे समामोक्तित्तुधुम्भकेतुं शरास्त्रिवयं कोपमहास
मीरम । महाधनुर्ज्यानलनेमिधोपं तनुजनानाविधशस्त्रहामम् ॥ २० ॥ महाचमूकस्रद्धा
भिपन्न महाहवे भीष्मभयान्निद्राभ्यां ये सेतुरायुतानतोक्षणभेगं तेराजपुत्रा निहताः प्रमा
दात् ॥ २१ ॥ नहि प्रमत्तेन नरेण शक्यं विद्य' तप धीर्द्विपुल यशो वा । पश्यात्प्रमादेन
निहत्य शत्रून् सर्धान्मयेन्द्रं सुखमेधमानम् ॥ २२ ॥ इन्द्रोप ॥ इदं पार्थिवपुत्रपौत्रान् पश्या
रिशेषेण हतान् प्रमादात् । तीर्त्वा समुद्रं वणिजः समुद्राः सजा कुनद्यामिव हेलमानाः
॥ २३ ॥ इति तैत्तिरीयैः निहताः शधाना निःसंशयं तेषु दिने प्रपन्नाः । कृष्णान्तु सोषाम्
कथं तु साध्या शौकाणवं साद्य विशदश्यतीति ॥ २४ ॥ अतुंश्च पुत्रांश्च इतामिराम्य

चन्द्रोदय तीव्रता रूप किनोरवाले ज्यातल और नेमियोंके शस्त्रवाले द्रोणाचार्यरूपी
समुद्रको जिनराजकुमारों ने नानाप्रकारके शस्त्ररूपी नौकाओंके द्वारातरा वह प्रमाद
से मारगये । १८ । इस जीवलोक में मनुष्यों के मरखका कारण प्रमत्ततासे अधिक
कोई नहीं है प्रमत्त मनुष्य को धनादिक चारोंओर से त्याग करतें हैं और निर्धनता
रूप अनर्थ प्रवेश हाते हैं । १९ । उत्तमधजाकी नोकमूरत वैचाई रखनेवाली वाणरूप
झालावाली क्रोधरूप वायुकी तीव्रता रखनेवाली बड़े धनुषकी ज्यातल और नेमी
के शब्द से युक्त कवच और नानाप्रकार के शस्त्ररूप इवन रखनेवाली धड़ी सेना
रूप दावानल से संयुक्त सड़े हुए शस्त्ररूप कठिन तीव्रतावाली
भीष्मरूप आगिकी भस्मताको जिन राजकुमारोंने बड़े युद्धमें तथा वह सब अचेत
तासे मारेगये । २१ । प्रमत्त मनुष्यको विद्या तप धन और उत्तमकीर्ति नहीं प्राप्त
होसक्ती है साधुधानी से सब शत्रुओं को मारकर सुखमे हृद्धि पानेवाले महाइन्द्रको
देखो । २२ । इन्द्रके समान राजाओंके पुत्र पौत्रादिकों को अत्यन्त अचेततासे ऐसे
मराहुष्ठा देखो जेने कि धनकी हृद्धिवाला व्यापारी समुद्र को तरकर छोटी नदी में
दूबजाय । २३ क्रोधयुक्त पुरुषों ने जो सोते वीरोंको मारा वह निसन्देहे स्वर्गको गये

bowstrings and claps of hands for noise, when a warrior's back is on a battle
and who escaped death from Karas' and have been destroyed, want of
wealthfulness. Having ears for arrows, showers of arrows, waves, horses for
trees, javelins and wooden fish, banners for arrows, and crocodiles, bows
for oddies, arrows for hods, battle field for moonshine, dexterity for
banks and loud sounding with claps and bowstrings, the warriors who
crossed the ocean of Drona with the boats of their weapons, have been
slain by want of wakefulness. Insensibility kills most of the people
in this world. Wealth leaves an insensible man and poverty overtakes
him. Having tall standards, arrows like flames, dexterous like a storm
of wind, noisy with the sounds of bowstrings, armed with

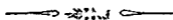
पुत्रवा अराज पितृन्व वृद्धम् । धुर्व्रियशा पतिता पृथिव्या सा शंखेन शोककृशान्ग
 यष्टिः ॥ २५ ॥ तच्छोकजं दुःखमपारयन्तां कथं न विप्रियायुचिता सुखानाम् । पुत्रक्षय
 स्नातृवप्रणुलाप्रदक्ष्णानेव मुताशनेन । २६ ॥ इत्येवमार्तं परिदेयन् स राजा कुरुणां
 नकुलं वमये । गच्छानैयनाम्निह मन्दतार्यी समात्पक्षामिनि राजपुत्रीम् ॥ २७ ॥ माद्री
 दुःखस्तत् परिशृङ्खलाकण धर्मो न धर्मं प्रतिमस्य राज्ञः । यदा रथेवालयमस्तु देव्याः
 पाञ्चालराजस्य च यत्र दारः ॥ २८ ॥ प्रस्थाप्य माद्रीसुतमाजग्निहः शोकार्दिनस्तेः
 सहितः सुहृद्भिः । रोरुमानः प्रययौ मुतानामायोधन भूतगामुक्तिर्णम् ॥ २९ ॥ स तत्
 प्रविश्याश्विमुग्ररूपदशं पुत्रान् सुहृन् सखीन् । स्मो सवानाम्भिराद्रंगानाम्

मैं द्रौपदी को शोचता हूँ भव रुद्र पतिव्रता निर्भयहोकर किस प्रकार से शोचरूपी
 ममद्रमें दूरी गई । २४ । भाई बेटे और वृद्ध पिता राजा पांचाल को मृतक मुनकर
 निश्चय करके वगामोहित हाकर पृथ्वीपर गिरेगी शोकसे कृशान्ग यष्टीशरीर वह
 द्रौपदी शुष्क होनी है । २५ । सुखोंके योग्य वह द्रौपदी पुत्र और भाइयोंके मरनेसे
 वनाकुल अग्निसं जलती हुईके समान उस शोकजन्य दुःखसमुद्र से पारन होकर कैसी
 दशावाली होगी । २६ । इसप्रकार विलाप करता वह कौरवराज युधिष्ठिर नकुल
 सं बोला जाओ उन मन्दभागिनी राजपुत्री को उसके मातृपत्नियों समेत वहाँ
 लाओ । २७ । नकुल धर्मरूप राजाके वचनको धर्ममें अङ्गीकार करके स्वकी
 सवारी से देवी द्रौपदी के उस स्थान को गया जहाँपर राजा पांचाल कीभी स्त्रियाँ
 थीं । २८ । नकुलका भेजकर शोकसे पीड़ावान् रोदन करते युधिष्ठिर उन सुहृदोंसमेत
 पुत्रोंकी युद्ध भूमिको गया जाकि भूतानोंसे युक्तथा । २९ । उसने उम कल्याण

a m sul ar m ur an : killing enemies as fire does a forest, the warriors
 who escaped death f on Bhishm have been destroyed by shep. 21.
 A se se oss man can't acq ure knowledg, asceticism, wealth and fame.
 Look at Indra who destroyed all his foes by his carefulness. India
 like princes and warriors have been destroyed by want of vigilance like
 an avaricious merchant who crosses the ocean but sin's own in a small
 river. The sleeping warriors slain by angry men have su.oly gone to
 heaven; but I am anxious for Draupadi who has fallen into the ocean
 of grief. She will lose her senses on hearing of the d at's of her bro-
 thers and sons. Her body al eady lein with grief will become dry. 25.
 Unworthy of bearing sorrow, she will burn with the fire of grief on
 hearing of the death of ner brothers and sons " Thus lamenting, Yu-
 dhishtir ordered Nakul to fetch hapless Draupadi and the women
 of her m ther's house' all. Nakul rode a car and went to the place
 where Draupadi and the women of Panchal were. Having sent Nakul
 that way, Yudhishtir with tears in his eyes, went to visit the place

विभिन्नदेहान् प्रहृष्टोत्तमागान् । ३० ॥ स तान् तु दृष्ट्वा भृशमात्तकः । युधिष्ठिरा धर्म
मतां वरिष्ठः । उच्चैः प्रचुकास च कीट्वापय पपात चोर्षी सगणो विनश ॥ ३१ ॥

इति सौमित्रपर्वणि षोडशोऽध्याये युधिष्ठिरानुनापेदशोऽध्यायः १० ॥



वैशम्पायन उवाच । स दृष्ट्वा गिहितान् मध्ये पुत्रानां गैत्रात् सखीं लया । महादुः
खपेरितात्मा वभूव जनमेजय ॥ १ ॥ ततस्तस्य महान् शोकः प्रादुरासन्निहातमनः ।
स्मरतः पुत्रौघानां स्यात्पूर्णा स्वजनस्य च । २ ॥ तमत्र परुणांश्च पराजितवचनम् ।
सुहृदो भृशसन्निभान् सारथ्याञ्चकिरे तदा । ३ ॥ ततस्तस्मिन् क्षमे कलगे रथेनदि
श्ववर्चसा । नकुलः कृष्णपासाङ्गमुपायात् वरमात्तय । ४ ॥ उपपन्नम्यं गता सा तु
रुह्यौ च उग्रह्वय बुद्धभूमि में वनेशकरके पुत्र मुद्गु और मित्रोंको पृथिवीपर सोते
वधिरसे लिप्त भग टूटे शरीर और टूटे शिर देखा । १ । वह धर्मधारियों में गौर
कीरवोंमें श्रेष्ठ युधिष्ठिर वनको देखकर अत्यन्त पीड़ावान् मूरत उच्चस्वरसे पुकार
और साधियों समेत अघ्न होकर पृथिवीपर गरपडा । ३१ ॥



अ. नाय ११ ॥

वैशम्पायन बोले हे राजा जनमेजय यह युधिष्ठिर युद्धमें मरेहुये उन पुत्रपौत्र
और मित्रों को देखकर बड़े दुःखने पूजाचित्त हुआ । इसके पीछे बेटे पातेम ई
और अने मनुष्योंका स्मरण करतेहुये वनमहात्मा को बड़ाशाक उत्पन्न हुआ । २ ।
तब अत्यन्त खाकुल सुहृदोंने उन अश्रुओंमें पूर्ण कम्पायमान और अचेत राजा
को विश्वास कराया । ३ । उसके पीछे समर्थ नकुल बड़ी पीड़ावान् द्रौपदी समेत
सूर्यके समान प्रकाशमान रथकी सधारीसे एकदृष्टामें सम्मुख आया । ४ । तब
where his sons and kinsmen lay dead. He found them sleeping on
earth with bodies and heads wounded and bleeding Yudhishtir
the best of Kauravas and righteous men gave a loud cry and fell
down senseless with his companions " 31

CHAPTER XI

Vaishampayan said to Janamejaya, "Seeing the sons, grandsons
and friends slain in battle, Yudhishtira felt much grief. He was im-
bored the departed ones, grandsons' cousins and other people and his
mind was full of sorrow. His sorrowful friends consoled him. Nakul

श्रुत्वा सुहृदप्रियम् । तदा विनार्कं पुत्रानां शर्वेणा व्यथिता भवत् ॥ ५ ॥ कल्पमानेष
 फदली बालेनामिनविरिता । कृष्णाराजातमासाद्य शोकार्तां न्यपद्भुधि ॥ ६ ॥ वभूव
 यदने तस्य : सहसा शोककर्षितम् । फूलपद्मप्रकाशाक्षयास्तगोप्रसत एवांशमान् ॥ ७ ॥
 ततस्तां पतितां हृष्ट्वा स्वस्मी सत्यविक्रमः । बाहुभ्यां परित्रयाद् नमुत्पत्य वृको
 दर ॥ ८ ॥ सा समाश्रयासिता तेन भीमसेनेन भावित्वा । रुदती पाण्डवं कृष्णा सहस्रा
 तस्मदधीत् ॥ ९ ॥ दिष्ट्या राजप्रदाप्येमासखिलां भोक्ष्यसे महाम् । आत्मजान् क्षत्र
 धर्मेण श्रुत्वा शूराग्निपातितान् ॥ १० ॥ दिष्ट्या एव पार्थे कुशली मत्तमातङ्गगामिनम् ।
 अवाप्य पृथिवीं कृत्स्ना सौमग्रे न स्मरिष्यसि ॥ ११ ॥ आत्मजान् क्षत्रधर्मेण श्रुत्वा
 शूराग्निपातितान् । उगच्छस्य मया सर्वं दिष्ट्या त्वं न स्मरिष्यसि । १२ ॥ प्रसूतासां
 वध श्रुत्वा द्रौणिना पा । कर्मणा । शो क्त्वापति मा पा । हुन शन इव श्रवम् । १३ ॥

उपप्लुती स्थानपर बलवान् वद द्रौपदी सत्र पुत्रों के अभियन शक्तो मुनकर वड़ी
 पीड़ावानहुई । ५ । इसीमे चक्रापमान केले के समान कृपापमान वद द्रौपदी राजा
 को पाकर शोकमें शोकों पीड़ा हाकर पृथीपर गिरपड़ी । ६ । उस प्रफुल्लित
 पद्म पनाश के समान नेत्रमाली द्रौपदीका मुख अहस्तात् शोक में ऐसे पीड़ावान
 हुआ जैसे कि अरे से दहाडूभा मूर्ख होताई । ७ । इसके पीछे क्रोधयुक्त सत्य
 पराक्रमी भीमसेनने दौड़कर उस गिरीहुई द्रौपदीको पकड़लिया । ८ । भीमसेन
 से विश्वशिव उभ रात्री तेजस्वनी द्रौपदीने भार्यों मये । युधिष्ठि से यह वचन कहा
 । ९ । हे राजा तुम निश्चयकरके क्षत्रीधर्म मे मरने पुत्रोंको यपराजके लिये देकर
 मारवसे इम सम्पूर्ण पृथीको भोगोगे । १० । हे राजा तुम मारवसे कुशलहो
 श्रीर सत्र पृथीको पाकर पतनाले हाथीके समान चलनेवाले अभिनम्बु को स्मरण
 नहीं करोगे । ११ । तुम क्षत्रीधर्मे गिरायेहुये शूरपुत्रों को मुनकर मारवसे मुझ
 समेत तुम उनको उपप्लुती स्थानपर स्मरण नहीं करोगे । १२ । हे राजा पापकर्म
 भवत्यापाके हाथे मोनात्रों के मारने से शोक मुझको ऐसे तपाताई जैसे कि
 स्थानको अग्नि संतप्त करनई । १३ । भव जो पृथ्वी तेरे हाथो उस पापकर्म

brought sorrowful Draupadi in the air. She was in great distress on hearing of the death of her sons. 5. Sinking like a p'antain tree moved by the wind, she fell down on earth and was menseible with grief. Her lotus like face became suddenly changed like the sun covered with darkness. Enraged Bhimsen at once ran and took up fallen Draupadi. Consoled by him, she said to Yudhishthir and his brothers, "Having caused your sons to be slain in battle, you are sure to rule the kingdom. 10 It is by good luck that you are safe. Will you not remember Abhimanyu, who used to walk like an elephant, when you will rule over the world? Will you not remember the fall of your brave sons at Upashyva Ashwathama's destruction of the sleepers burns me like fire. I shall sit on this very place and

तस्य पापकृती द्रौणिर्न चेदद्य स्वयामृषे । ह्रियते सानुकावस्य युधि विक्रम्य जीवितम् ॥ १४ ॥ इहेव धायमाशिष्ये ठाम्नोषत पाण्डवाः । व चेत् फलमवाप्नोति द्रौणि पापस्य कर्मणः ॥ १५ ॥ एवमुक्त्वा ततः कृष्णा पाण्डवं प्रत्युपाविशत् । युधिष्ठिरं यावत्सेनो धर्मराजं तपस्विनी १६ ॥ इष्टवोषिष्ठां राजर्षिः पाण्डवां महिषीप्रियाम् प्रत्युवाच स धर्मरामा द्रौणदीप्याददर्शनात् ॥ १७ ॥ धर्म्ये धर्मेण धर्मे प्राप्तात्ते निघने शुभे । पुत्रास्ते भ्रातर्यैव तान्न शोचितु मर्हसि ॥ १८ ॥ स कल्पानि वने दुर्गे हरे द्रौणिरितो गतः । तस्य स्वं पातनं स्वयमे कथं शक्यसि सोमने ॥ १९ ॥ द्रौपद्युवाच । द्रौणपुत्रस्य सहजो मणिः शिरसि मे श्रुतः । निहत्य संचये तं पापं पश्येवं मणिमाहृतम् । राजन् शिरसि ते कृत्वा क्षीयेयमिति मे मतिः ॥ २० ॥ इत्युक्त्वा पाण्डवं कृष्णा राजानं आदृजता । श्रीमत्सेनमपाश्रयेत् परमं वाक्यमब्रवीत् ॥ २१ ॥ त्रातुमर्हसि मां श्रीम

अश्वत्थामा का उसके साथियों समेत जीवन हरण नहीं किया जाता है तो इसी स्थानपर शरीर त्यागने के निमित्त आसन विछाकर बैठुंगी हेपाण्डव जो अश्वत्थामा इस दुष्टकर्म के फलको नहीं पाता है तो निश्चय इसी मेरुत्वाल को जानों । १५ । इसके पीछे वह द्रुपदकी पुत्री यशवन्ती कृष्णा धर्मराज युधिष्ठिर से ऐसा कहकर आसन पर बैठ गई । १६ । उस धर्मात्मा राजर्षि पाण्डवने उस सुन्दर दर्शन प्यारी पटरानी द्रौपदी को शरीर त्यागने के निमित्त आसन पर बैठा हुआ देखकर वह उत्तर दिया । १७ । कि धर्मोंकी जाननेवाली शुभ द्रौपदी वह तेरे पुत्र और माई परमरूप मरणको प्राप्तहये उनका शोचकाना तुमको योग्य नहीं है । १८ । हे कल्याणी वह अश्वत्थामा वहाँसे दुर्गम्य दूर बनको गया हे शोभायमान तुम युद्ध में उस के मरने को कैसे जानोगी । १९ । द्रौपदी बोली कि मैंने शरीर के साथ उत्पन्न होनेवाला माये अश्वत्थामा के शिर पर सुनाई युद्धमें उस पापाको मारकर लायेहुये उस मणिको देवूगी । २० । हे राजा उसको आपके शिर पर चारण कर के जीऊंगी यह मेरा मत है वह सुन्दर दर्शन द्रौपदी राजा से इसप्रकार कह कर । २१ । फिर भीमसेन के पास आकर उत्तम वचनको बोली हे समर्थ तुमत्तरी

d o, if sinful Ashwat ama and his accomplices are not in I shall prove my words true, if Ashwathama is not punished. 15. Having said this to Yudhishtir, Draupadi took her seat there. Seeing his beautiful and dearest queen ready to give up her life, he said, "Your sons and brothers have died a glorious death and you must not deplore their loss. Ashwathama has entered far away into an impregnable forest: how will you know that he is dead." Draupadi said, "I hear there is a gem on Ashwathama's head, born with his body and I wish to see it as a proof of his death. I shall live to see it put on your head." Having said this to the king, she turned towards Bhim and asked his help in her emergency, saying, "You must slay

क्षत्रधर्ममनुस्मरणम् । जहित पापकर्माणं शम्बरं तद्यथा निध २२ ॥ न हि ते विक्रमे तुल्य
 पुमानस्तीह कश्चन । श्रुतं तत् सर्वलोकेषु परमव्यसने यथा ॥ २३ ॥ श्रीयोऽम्बुस्वंहि
 पार्थानां नगरे वारणावतमर्हि हिम्बुदशनिचैव तथा त्वमभवे गतिः ॥ २४ ॥ तथा विराटनगरे
 कीचकेन भृशार्हितम् । प्राप्युद्धृतवान् कुरुक्ष्त्रात्पौलोमीं मय बानिध ॥ २५ ॥ यथेताम्बु कृपाः
 पार्थः महाकर्माणि धैपुरा । तथा द्रौणिममिष्यन्न विनिवृत्त्य सुखी भव ॥ २६ ॥ तथा वदुषिषं
 दुःखं निराश्रयं परिविहितम् । न चानर्पत कौन्तेयो भीमसेनो महाबलः ॥ २७ ॥ स कां
 नविकिञ्चाक्रमाकरोह महारथम् । आश्रयं कश्चिदं चित्रं समागमशुणं धनुः ॥ २८ ॥
 नकुलं सारथिं कृत्वा द्रोणपुत्रवधेधृतः । विस्कार्य सशरश्चापं तूर्णमभ्याप्तो वद
 ॥ २९ ॥ हे इयाः पुरुषव्याघ्र चोदिता धातरं हसः । धेगत त्वरिता जम्बुद्वारवः
 शीघ्रगामिनः ॥ ३० ॥ शिविरात् स्वादृष्ट्वा हृत्वा स रथस्य पद्ममयुतः । द्रोणपुत्रस्य स्वाशु
 ययौ धेगत वीर्यधाम् ॥ ३१ ॥ ऐविकपर्वणि द्रौणिवन्नार्थं भीमगमने एकादशोऽश्वः

धर्मको स्मरणं करते हुये मेरी रत्नाकरने के योग्य हो । २२ । उस पापकर्मि को ऐसे
 मारो जैसे कि इन्द्रने शम्बर को माराथा यहाँ कोई दूसरा पुरुष भापके पराक्रमके
 समान नहीं है । २३ । सब लोगों में सुना गया है कि जिसप्रकार वारणावत नगरके
 मध्यमें महाभापाचि में तुम पाण्डवोंके रक्षक हुये । २४ । उसीप्रकार हिम्बु राक्षस
 के देखने में तुम गतिरूपे इसीप्रकार विराटनगर में कीचक के भयसे पीड़ावान् हुए
 कोभी तुमने दुःखसे ऐसे छुड़ाया । २५ । जैसे कि पुलोमकीपुत्री इन्द्राणी को दुःख
 से छुड़ायाथा हे पाण्डव जैसेकि पूर्वसमयमें तुमने इनकर्मोंको किया है । २६ । उसी
 प्रकार उस मारनेवाले अपने शत्रु अश्वत्थामाको मारकर सुखीहो उसके विनाश
 कियेहुये बहुत प्रकारके दुःखको मुक्तकर । २७ । बड़े बलवान् पाण्डव भीमसेन ने
 नहीं सहा और स्वर्णमयी बड़े उत्तम रथपर सवारहुआ । २८ । बाण प्रत येचासमेव
 सुन्दर भद्राङ्क धनुषको लेकर नकुलको सारथीकरके अश्वत्थामाके मारने में प्रवृत्त
 होनेवालेने । २९ । बाणसमेव धनुषको टकारकरशीघ्रही घोड़ोंको चलायमान किया
 है पुरुषोत्तम वह संधेहुये वापके समान वेगवान् । ३० । शीघ्रगामी हरिजावके घोड़े
 तीव्रतासे जल्द चलदिये वह भयेव महापराक्रमी भीमसेन अपने से रथके बिह्नको
 लेकर तीव्रतासे अश्वत्थामाके रथकी ओर शीघ्रचला ३१ ॥

the great sinner as Indra had done Shambhar. There is no man equal
 to you in prowess. I have heard how you protected all the Pandavas
 at Barnavat. You protected them from Himb. You relieved me
 from the fear of Kichak at Barunvat. 25. Slay Ashwathama as
 you have done to others and make me happy like the queen of Indra." Bhishm
 "I cannot bear to hear her lamentations and rode his gold car. He
 armed himself with jewelled bow and arrows and having made Nakul
 the driver of his car, he proceeded to slay Ashwathama. The swift
 horses of Hari breed drew his car as fast as wind and Bhishma follow-
 ed the marks made by Ashwathama's car." 31.

वैशम्पायन उवाच । तस्मिन् प्रयाते दुर्धरे वधूनाम् नलनः । जन्मवात् पुण्डरीकाक्षः
कुन्तीपुत्रं युधिष्ठिरम् ॥ १ ॥ एष पाण्डव ते भ्राता पुत्रशोकपरायणः । जिघांसुर्दौण
माक्रन्दे एक एवाभिवाचति ॥ २ ॥ भीमः प्रियस्ते सर्वेऽथो भ्रातृभ्या भरतर्षभ । त
क्लृण्णातमद्य त्वं कस्मान्नाश्रुपयसे ॥ ३ ॥ यत्तदाचष्ट पुत्राय द्रोणः परपुरञ्जयः । अस्त्र
ब्रह्मशिरो नाम दहेत पृथिवीमपि ॥ ४ ॥ तन्महात्मा महाभागः केतुः सर्वधनुष्मताम्
अत्रपाद्वशाचार्यं प्रीयमाणो घनञ्जयम् ॥ ५ ॥ तं पुत्रोऽप्येक एवैनमन्वपादमर्षणः ।
ततः प्रोवाच पुत्राय नातिवृष्टमना इव ॥ ६ ॥ विदितं चापलं ह्यासीदात्मजस्व महामनः ।
सर्वबन्धुवदाचार्यं सोम्वशात् स्वसुतं ततः ॥ ७ ॥ परमापहृतेनापि न स्म तात त्वया
हणे । इदमस्त्र मयोक्तव्यं मानुषेषु विशेषतः ॥ ८ ॥ इत्युक्तवान् गुरुः । पुत्र द्रोणो पञ्च
द्वयोक्तवात् । न त्वं जातु सतां मार्गं स्थातेति पुरुषर्षभ ॥ ९ ॥ स तदाहाय दुष्टरत्ना

अध्याय १२ ॥

वैशम्पायन बोले कि उस अजेय भीमसेनके प्रस्थान करनेपर यादवों में श्रेष्ठ
भीमपुत्री कुन्तीपुत्र युधिष्ठिर से बोले । हे पांडव पुत्रको शोकसे पूर्ण यह तेरा
माई बुद्धमें अस्वस्थाया के मारनेका अभिलाषी अकेलाही दौड़ताहै । हे भरतर्षभ
यह भीमसेन सबभाइयों से अधिक तुमको प्याराहै अतुम उस आपाची में फँसेहुये
की क्यों नहीं रक्षाकरतेहो । हे भ्रतृभ्रातृ के पुरके विजय करनेवाले दोषाचार्य
ने ब्रह्मशर अस्त्रका पुत्रको उपदेश किया जो पृथ्वीको भी भस्मकरसक्ता
है । सब धनुषधारियोंके ध्वजा रूप महात्मा महाभाग प्रसन्नचित्त आचा-
र्यजी ने यह अस्त्र अर्जुनको बतलाया कोऽयुक्त अकेले पुत्रने भी इसअस्त्र
को चाहा जो कि उससे अत्यन्त प्रसन्नचित्त नहीं थे इतहेतु से उन्होंने उस
दुर्बुद्धी पुत्रकी चपलता जानकर निखलातो दिया परन्तु सर्व धर्मज्ञ आचार्य जी
ने उस पुत्र को शिक्षापूर्वक आज्ञादी । ७ । कि हे पुत्र युद्ध में वही आपाची में
फँसने परभी तुझको भी यह अस्त्र छोड़ने के योग्यनहीं हे प्यार विशेषकर मनुष्यों
के ऊपर तो कभी नखोड़ना । ८ । यह कहकर फिर पुत्रने यह वचन कहा कितुम
अभी सत्पुरुषों के मार्ग में नियत नहीं हंगे । ९ । हे पुरुषोत्तम युधिष्ठिर तब दुष्ट

CHAPTER XII

Vaishampayan said " At the departure of invincible Bhim, Shree
Krishn the best of Yudavas said to Yudhishtirn, " Full of grief to
his son's death, your brother is going alone to slay Ashwathama.
Why do you not protect Bhim who is dearer to you than all other
brothers? Ashwathama has learnt from his father Dronacharya the
use of Brahmshar weapon which is capable of destroying all the
world. When the acharya taught that weapon to Arjun, Ashwa-
thama the only son of the acharya, was much enraged, and wished
to learn it. He was not pleased with this conduct of his son. He

पितुर्वचनमप्रियम् । निराशः सर्वकल्पाजैः शोकात् पर्यवर्तमानमहम् ॥ १० ॥ ततस्तदा
 कुक्षेत्रे वनस्थे त्वयि भारत । अवसन्नारण्येऽस्य वृष्णिनिः परमार्थिमत ॥ ११ ॥ स
 कदाचित् समुद्रान्ते वसन् द्वारवतीमनु । एकं चर्कं समागत्य मामुवाच हस्त्रिभुवः ॥ १२ ॥
 पञ्चदशं तपः कृष्ण चक्रुः सत्यपराक्रमः । भगस्तथाङ्गारताचार्यं प्रत्यपद्यते मे विनाः
 ॥ १३ ॥ भस्त्रं ब्रह्मशिरो नाम देवगन्धर्वपूजितम् । तत्र च भविं, दाशाहं यथा पितरि मे
 तथा ॥ १४ ॥ अस्मत्सन्तनुपांश्चैव दिव्यमर्षं यदुत्तम । स चाप्यस्त्रं प्रयच्छत्वं चर्कं रिपु
 हर्षं रणे ॥ १५ ॥ स राजन् प्रियमाणेन मयाप्युक्तः कृताञ्जलि । याचमानः प्रयत्नेन
 मत्तोऽहं भरतर्षभ ॥ १६ ॥ देवदानवगन्धर्व मनुष्यपतंगोरगाः । न समा मम वीर्यव्य
 शतांशेनापि पिच्छिन्नाः ॥ १७ ॥ इदं धनुरियं शक्तिरिदं चक्रमियं गदा । अथदिच्छालि
 वेदं मत्तत्तद्ददानि ते ॥ १८ ॥ अस्त्रमोषि समुद्यन्तुं प्रयोक्ष्यमपि वारणे तद्गृ
 ध्नतः करणवाला पिनाके अपिय मधन को जानकर सब कल्याणों से निराश
 होकर शोकसे पृथ्वीपर घुमा । १० । द्वारका में आकर बादशे से परमपूजित
 होकर वसा वह एकसमय द्वारकाके सम्मुख समुद्रके पार निवास करताहुआ अकेला
 ही हँसकर मुझ से बोला । ११ । कि हे श्रीकृष्णजी वह तपको करते भरतवंशिणों
 के आचार्य सत्यपराक्रमी मेरे पिताने जो उम ब्रह्मशरनाम अस्त्रको जो कि देवता
 और गन्धर्वों से पूजित है भगवत्पूजिते पाया हे श्रीकृष्णजी अब वह बैसिही मेरे
 भी पासहैं जैसे कि पिताके पासहै । १४ । हे यादवों में भेषु तुम उस दिव्य अस्त्र
 को मुझे लेकर मुझको भी वह चक्रअस्त्रको जो कि युद्धमें अशुभों का मारनेवाला
 है । १५ । हे भरतर्षभ राजा युधिष्ठिर वह हाथ जोड़कर वड़े उपाय पूर्वक मुझ से
 अस्त्र पांगेनाला हुआतब मुझ प्रमत्तचित्त ने उससे कहा कि देवता दानव, गन्धर्व
 मनुष्य, पत्नी, सर्प यह सब मिलकर भी मेरे पराक्रम के सालहवें भाग के समान
 नहीं हैं । १७ । यह धनुष है यह शक्ति है यह चक्र है यह गदा है इनमें से जिस
 अस्त्र को तुम मुझ से चाहत हो उसको मैं तुमको देताहूँ । १८ । जिसको तुमठरा

taught him the use of it, but warned him never to use it, specially against human beings, even at the time of great emergency. He also foretold at the same time that his son would never be firm on the path of the righteous. Ill-natured Ashvathama, finding that his father was not well-disposed towards him, roamed restlessly through out the world. 10. He staid at Dwarka and was respected by the Yadava. One day he met me alone near the sea shore in the vicinity of Dwarka and said to me with a smile " My glorious father learnt from Agastya the use of Brahmsbar which is respected by gods and gandharvas, and I have shared the knowledge of it with my father. I shall teach you all about it, if you will give me your foe-destroying discus. " 15. With joined palms he asked me to

हाण विनास्त्रेण मग्ने हातुमभीप्ससि ॥ १९ ॥ स सुनामं सहस्रार यज्ञनामयमस्मयम् ।
 चक्रे चक्र महाभागो मत्तः स्वर्णमया सह ॥ २० ॥ गृहाण चक्रमित्युक्तो मया तु तद्
 नस्तदम् । अत्राहोत्पत्य सहसा चक्रं सन्वेन पाणिना ॥ २१ ॥ नचैनमश्नक्तुं स्थानात्
 सञ्चालयितुमप्यत । अथैनं वृक्षिणनापि गृहीतुमुपचक्रमे ॥ २२ ॥ सर्वपत्नेन तेनावि
 गृह्यन्नेवमिदं ततः । ततः सर्वबलमापि यदेनं न शशाक ह ॥ २३ ॥ उद्यन्तु वा चाक
 विन्तु द्रौणिः परमपुर्णतः । कृत्वा यानं परिभ्रातः संस्यरक्षत भारत ॥ २४ ॥ निवृत्तम
 नसं तस्मात्प्रियायाश्चित्तसम् । नहमामश्व सन्धिगन्तुभ्यर्पानानमवयम् ॥ २५ ॥ वः
 सदेवैर्मिथ्येषु प्रमाणं परमं मतः । गाण्डीवजम्वा इवताहः । वपिप्रवरकेतनाः ॥ २६ ॥
 व साक्षाद्देवदेवशं शितकण्ठमुमापतिम् । द्रव्ययुद्धं पराजिप्तुस्तोषयामास शङ्करम्
 । २७ ॥ यस्मात् प्रियतरो नालि ममान्ध पृथो भुवि । नादेयं यस्य मे किञ्चिदपि

सक्ते हो और बुद्ध में चलाभी सक्ते हो आप जिस अस्त्रको मुझ देना चाहते हो
 उसके बिना दियेशी इनमें से जो चाहो सो लो । १९ तब मुझ से ईर्ष्या करनेवाले
 उम महाभाग ने सुन्दर नामे और हजार आरा रखने वाले यज्ञनाम लोहमयी
 चक्र को मुझ में मांगा । २० । तब मैंने भी उमी समय कह दिया कि चक्रको
 लो तब उस ने उठकर अकस्मात् वायें हाथ से चक्र को पकड़ लिया । २१ ।
 परन्तु उसको स्थानपर से हटाने को समर्थ नहीं हुआ फिर दक्षिण हाथ से
 भी उस को पकड़ना प्रारम्भ किया । २२ । इसके पीछे अनेक उपायोंसे भीउसको
 उठा न सका । २३ । फिर बड़ा दुःखीचित्त अन्वत्यामा जब कि सब पराक्रम
 करने से भी उसके उठाने और हटानेको भी समर्थ नहीं हुआ और वह उपायोंको
 कान्के यत्नकर भ्रम्य होगया तब मैंने उस अभिजाप से चित्त उठानेवाले विमन
 और व्याकुल अन्वत्यामासे यह वचन कहा । २४ । कि जिस गांडीव धनुष
 ज्वेन घोड़े और हनुमान्जीकी ध्वजा रखनेवाले अर्जुनने देवता और मनुष्यों के
 मध्यमें बड़े प्रमाणको पाया और अज्ञाने पूर्वमयमें सान्नाद प्रथान देवताओं के

give him my weapon, I was pleased with him and said, "Gods, gandharvas, men, birds and serpents, all put together, are not equal to even the sixteenth part of my prowess. Here are my bow, Shakti discus and mace. Select whichever of those you like and I shall give it to you. Take whichever of these you can bear and wield, without giving me anything in return." Hearing malice against me, he asked of me my discus with a good nave and a thousand spokes, entirely made of iron, which I call my vajra. 20. Of course I at once gave him permission to take it away. He held it by the his left hand, but could not move it from its place. Then he used his right hand also but for all his efforts could not lift it up. He was much troubled in his mind when he could not lift and move it. Being tired, he stood aloof. Seeing that he was hopeless, heartless and

द्वारा सुनामया ॥ २८ ॥ तेनापि सुहृदा ब्रह्मन् पाथेनाकिलष्टकर्मणा । भोक्तृपूर्वमिदं
 वाक्यं वरुने मायमिभायसे ॥ २९ ॥ ब्रह्मचर्यं महद्घोरं कीर्त्याद्वाद्वावार्थिकम् । हिम
 वत् पाद्ममङ्गरेण यो मया तपसार्जित ॥ ३० ॥ सभान्वनचार्थिणां कथितमया
 योऽन्वजायत । सनत्कुमारलेजस्वी प्रद्युम्नो नाम मे सुतः ॥ ३१ ॥ तेनाप्यतन्महिद्विष्यं
 चक्रमप्रतिममम । नप्राथितमभून्मूढयादिर् प्राथितं त्वया ॥ ३२ ॥ रामेणातिबलं नतको
 कर्तुं कदाचन । न गदं न शम्भेन यदिदं प्रथितं त्वया । ३३ ॥ द्वारकावासिभिश्चा
 म्यैर्बुधैश्चकमहाशयैः । भोक्तृपूर्वमिदं ज्ञातुं यदिदं प्रथितं त्वया । ३४ ॥ आरतावाच्य
 पुत्रस्यै प्रतिनितं । सर्वथादथैः । सक्रेण रथिना श्रेष्ठकन्तुनात युयुत्ससे ॥ ३५ ॥ एष
 मुक्तो मया द्रोणिर्मांमिदं प्रत्युवाच ह । प्रद्युम्नपुत्रो म्ता मात्स्वरुप्य त्वयेपुत्रः ॥ ३६ ॥

ईश्वर शक्तिकण्ठ उभापाते शंकरजी को हुन्दनाम युद्ध में प्रमत्त किया जिससे
 अधिक इसपृथ्वीपर मेरा दूसरा कोई मित्र नहीं है। ३०। और पुत्रादिकभी उसको
 देनेके अर्थ। नहीं है हे ब्राह्मण उस सुगमकर्म मेरेभिन्न अजेन मेरी प्रथम मुष्से
 यह वचन नहीं कहा जां तुमने मुष्से कहा है । ३२ । मैंने हिमालयकी कुक्षिमें नियत
 होकर वारहवर्ष बड़े घोर ब्रह्मचर्यको करते तपकेद्वारा जिसको मासकिया ३०।
 और जो सदैव वनकरनेवाली शक्तिणी में उत्पन्नहुआ तेजस्वी सनत्कुमार प्रद्युम्न
 नाम मेरेपुत्र नेभी इस बड़े दिव्य और युद्धमें अनुपम चक्रकी इच्छा नहींकी है
 अज्ञान, जिसको मैंने मांगा है । ३१ । उसको कभी हमारे बड़े बलदेवजी ने भी नहीं
 मांगाया जो मैंने मांगा है वह गद और साम्ब ने भी नहीं मांगा
 और अन्य बृष्णी अन्तरवती द्वारकावासी मशरथियोंने भी पूरे में इस
 को कभी नहीं मांगा । ३४ । तुम भरतवंशियों के आचार्य के पुत्रों और
 सब गार्हो से प्रेममनीयहो हे रथियों में श्रेष्ठ तात तुम चकते किसके साथ युद्ध
 करोगे । ३५ । मेरे इस वचनको सुनकर अश्रुत्यामा ने मुष्से यह उत्तरदियाके
 हे भीष्मकभी मैं आपका पूजनकरके आपही के साथ लडूंगा । ३६ । मैंने देवता

discerned, I said to him 27 The wielder of Gandir bow and possessor of white horses and ape banner, Arjun, who is of well tried prowess among gods and men, he who pleased S under the Lusland of U and god of gods himself in a duel, than whom I hold none dearer in the world and whom I would give away my wife and son, even that once-working Arjun never told me the thing that you have. He whom I got after a severe workout in a Himalayan cave, and who is born of ever vow observing Rukmini, even that glorious son of mine, Pradyumna never had any desire to possess the matchless dewan which you were foolish enough to ask of me. 32 I was never requested to part with it by Balder, Uda, Samir or any other warriors of Dwaraka. You, the son of the acharya respected by

प्राथिते ते मया चक्र देवदानवपूजितम् । अजेय स्वाभिति विमो सत्यमेतद्ब्रवीमि ते
 ॥ ३७ ॥ स्वस्तीहं दुर्लभं काममनवाप्यैव केशव । प्रतिगास्यामि गोविन्दु शिवेनाभि
 वदस्वमाम् ॥ ३८ ॥ एतत् स्मीम स्मीनात् सुपणेन त्वया धृतम् । अग्रमप्रतिचक्रण
 भुविनान्योभिपद्यते ३९ ॥ एतावदुक्त्वा प्रीणिमो युष्माकश्चान्घन नि शशादायोपयथा
 काले रत्नानि विविधाणि च । ४० ॥ स सरस्मी उरात्मा च अपल हूर एव च ।
 वेद चास्त्र ब्रह्मशिरस्तस्माद्ब्रह्मो वृषोदर ॥ ४१ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि शेषोक्तवाच कृष्णार्थिष्टरसंवादे ६१, श्लोक १२ ।



और दानवोंने पूजित प्राप्त चक्रकी याचनाकरी है और हेतुमर्थ में आपसे सत्य २
 कहता हूँ कि मैं अनेपहू ॥ ३७ ॥ हे केशवजी आपसे दुष्पाण मनोरथको न पाकर चला
 नाऊंगा हे गोविंदजी आपमुझको कल्याण के साथ नमस्कारकरा ॥ ३८ ॥ मुझउत्तम
 और अनुपम चक्रवाले ने यह भयनक स्पर्शा भी भयानक चक्रधारणा किया है पृ
 ध्वीपर दूसराइसको नहीं पासकरा है ॥ ३९ ॥ अश्वत्थामा इमकार मुझसे कहकर और
 समक्षपर मुझसे घोड़ेघन और अनेकप्रकार के रत्नोंको लेकर इस्तिनापुरको चला-
 गया ४० ॥ वह क्रोधयुक्त दुष्टुदी चालाक और निर्दयी है और ब्रह्मशरअस्त्रको जान
 ता है भीमसेने इसी रक्षाके योग्य है ॥ ४१ ॥



all the Yadavas, whom would you use the weapon to fight with? " 35
 To this question of mine he made the following reply, " I would war-
 ship and fight with you, Krishna. It was therefore that I asked of
 you the weapon. I say truly that I am invincible. I came to you on
 a bootless mission. Bless me Govind, and bid me good bye. You
 possess a dreadful and matchless weapon such as none else in the
 world has." Having said this to me, Ashwathama accepted from me
 a present of horses and wealth in precious stones and went away to
 Hasthinapora. He is rash, ill natured, revengeful and cruel and
 knows the use of Brahmashar, and therefore Bhuma is worthy of being
 protected from him. " 41.

वैशम्पायन उवाच । पथमुक्त्वा युधो संष्टु सर्वबाह्वनम् । सर्वोत्तमवरोपेनमा
 दरोह रथोत्तमम् ॥ १ ॥ युक्तं परमकाश्याञ्जैस्तुरगैर्ह्यममालिमिः । भाद्रिशोर्ध्ववर्षस्य
 पुरे रथवरस्य तु ॥ २ ॥ दक्षिणामहच्छ्रेयः शमीवः सद्यतेऽमवत् । पार्श्विवाह तु
 तस्यत्ता मेघ, पयसाहको ॥ ३ ॥ विद्वत्कर्मकृता दिव्या रत्नवातुविभूषिता । उष्ण
 तेव रथे माया पञ्चवर्षिः सदृशम् ॥ ४ ॥ येनतपः स्थितस्तस्या प्रमामपहलरदिमवात् ।
 तस्य सारवतः केतुर्भुजगारिरहृद्यत ॥ ५ ॥ मन्यारोहकृषीकेशः केतुः सर्वधनुष्यताम्
 अकुतः सत्त्वकर्माश्च कुवराजो युधिष्ठिरः ॥ ६ ॥ अतोमेतं महात्मानो दाशार्हः
 मीमतः स्थितो । रथस्य शङ्खञ्जवा समदिवनाशिव वासवम् ॥ ७ ॥ ताडुपारोप्य दाशार्हः
 स्वन्दनेत्रोत्पूजितसू प्रतोदन जवापेतान् परमादवानशोदयत् ॥ ८ ॥ तेहयाः सहस्रोत्पेनुषु
 ह्यिवा सान्नततोत्तमम् । भाद्रिशतं पाण्डवेषां यदृनासुवजेव च ॥ ९ ॥ यद्गतां शार्ङ्ग

तेरहवां अध्याय ११ ॥

वैशम्पायन बोले कि सुदूरर्षी भोमै भेष्ट और सवपादबोकै मसन्न करने वाले
 श्रीकृष्णमो इसप्रकार कहकर उस उत्तम रथपर सवारहुये जोकि उत्तम बल शक्तों
 से युक्त सर्पमयीः मालवारी काम्पोअहंशी घोड़ोंसे जुड़ाहुआथा और अितके
 उत्तमधुर उदयहुये सूर्य के स्वरूपसे । १। शैव्यनाम घोड़ने दक्षिणचक्रको उठाया
 और शमीव नाम घोड़ा पार्श्व और हुआ और उस रथके पार्श्वबाहक मेघपुष्पसाहक
 नामघोड़ेहुये ३ विश्वकर्मा के चलाईहुईरत्न और धातुसे अलंकृत दिव्यऔर उन्नत
 यष्टी रथकी पञ्चापर मायाके समान दित हुयी। ४। प्रकाश मण्डकृष्णकिरण रत्न
 बेराके गरुडनी उस पञ्चापि नियतहुये उस सत्त्वकाकी पञ्चागरुडरूप दिनाईपडे
 ५ उसके पीछेसव धनुषबाँरोंकी पञ्चा केशवमो सत्त्वकर्माभेष्टुन और कौशवाभ
 युधिष्ठिररथपर सवारहुय । ६। सपीप बर्षमान दोनों महात्माओंने रथपर सवार शार्ङ्ग
 धनुषवारी श्रीकृष्णमीको ऐसे शोभायमान किया जैसे किदोनों अश्विनोकुमारोंने
 इन्द्रको शोभित किया। ७। श्रीकृष्णजीने उन दोनोंको उस पूजित रथपर बैठाकर
 श्रीमनासे संयुक्त उत्तम घोड़ोंको चामुक से वादित किया । ८। पाण्डव और पादवो

CHAPTER XII

Vaishampayana said, "Shri Krishn the best of warriors and joy
 of the Yadava, having spoken as above, rode the good car furnished
 with arms and weapons, decked with gold chaplets and drawn by
 excellent horses of Camboj breed. It shone like the rising Sun. Shaiyya,
 Sugrov, Meghraj and Valhik were the four horses that
 drove the car. The standard, made by Vishwakarma himself, was
 composed of metals and precious stones, and the figures of garud adorned
 the banner. 5. Such was the car in which sat Keshav, Yudhishtir
 and Arjun. The two horses sitting by the wielder of Bharng
 bow, looked like the Ashvinkumaras with Indra in the midst. When
 the trio were seated in the car, Shri Krishn drove the horses fast as

घन्वानमहवानां शीघ्रगामिनाम् । प्रादुरासीन्महान् शब्द, पक्षिणा पततामिव । १० ॥
 ते समाच्छन्नरथ्याम्नाः क्षणेन भरतर्षभ । भीमसर्पेण महेष्यासं समनुद्रुय वेगिता ॥ ११ ॥
 क्रोवद्भीसेन्दु कौन्तेयं द्विपदर्थे समुद्यतम् । नाशकनुषम् वारयितुं समेत्यापि महारथाः
 ॥ १२ ॥ स तेपा प्रेक्षतामेष भीमान् । दृढप्रग्विषणाम् । बधौ भागीरथीकच्छं हरिभिर्भृश
 वेगित । यद्य एव धूयते द्रौणि पश्यन्तामहात्मनाम् ॥ १३ ॥ स ददर्श महात्मानमुद
 कान्ते यशस्विनम् । कृष्णद्वैपायन व्यासमासीनमृषिभिः सह ॥ १४ ॥ तच्छैव क्रूरक
 र्माणि घृताक्त कुशाचीरिणम् । अस्ता ध्वस्तमासीनं ददर्श द्रौणिमन्तिके ॥ १५ ॥ तत्रश्य
 घ्रावत् कौन्तेय प्रगृह्य सशरं चतुः । भीमसेनो महाबाहुस्तिष्ठ तिष्ठति चात्रवीत् ॥ १६ ॥
 स दृष्ट्वा भीमघन्वानं प्रगृह्णतिशरसन्मत् । स्नातरो पृथतध्यास्य जनाईनरथंस्यितौ
 ॥ १७ ॥ च्छयितामाभघ्नौणि प्राप्नश्चेदपमन्यत । स तद्व्यमदीनात्मा परमात्मार्चि

त्तम श्रीकृष्णजी से सशरी युक्त उत्तम रथको वह घांड़लेकर अकस्मात् उठे १।
 श्रीकृष्णजीको छेचछनेवाले शीघ्रगामीघोड़ोंके ऐसे वड़ेशब्दद्वये भीमकी उठतेद्वये
 पासियोंके शब्दहोतै ॥ १० ॥ हे भरतर्षभउन वेगवान् नरोत्तमोंनेबड़े धनुषधारीभीमसेन
 की ओर चलकर क्षणभरमेंही उसकोपापा ॥ ११ ॥ वह महारथी भिलकरभी उसक्रोधसे
 मकाशितभौर शत्रुसे युद्धकरने को सन्नद्ध भीमसेनके रोकनेको समर्थनहीद्वये ॥ १२ ॥
 वह भीमसेन उन दृढधनुषधारी भीमान् भाइयों और श्रीकृष्णजी के देखतेद्वये अत्य
 न्तशीघ्रगामी घोड़ोंके द्वाराभीमगाजी के तपर गये जहाँके महात्माओंके पुत्रोंके
 मारनेवाले अश्वपामा सुनेगयेथे ॥ १३ ॥ उस भीमसेनने जलके समीप महात्या यशवान्
 व्यासजी को ऋषियों समेत बैठाहुआ देखा । ॥ १४ ॥ और उस निर्हमकर्मी धृत्से
 मारिन् शरीर वड़े चीरधारी धूलसे लित शरीर अश्वत्यामाको भी समीप बैठाहुआ
 देखा । ॥ १५ ॥ वह कुन्तीकापुत्र महाबाहु भीमसेन धनुषबाणको लेकर उसके सम्मुख
 दौड़ा और तिष्ठ र वचन कहा । ॥ १६ ॥ वह अश्वत्यामा धनुषधारी भीमसेनको देख
 कर और पीछे श्रीकृष्णजी के रथपर निगत दोनों भाइयोंको देखकर चिच से

the wind. The noise of the swift horses resembled that of a flight of
 of birds. 10 They soon overtook Bhim, but could not stop or keep
 him back from his purpose of fighting with the enemy. He continued
 moving on within sight of his glorious brothers and Sri Krishna
 till he reached near the bank of the Ganges where Ashwathama the
 slayer of the sons of the Pandavas was reported to be. Bhimsen saw
 Vyas and other rishis seated near water, Ashwathama too, with his
 body rubbed over with glue and dust, sat near them 15. Valiant
 Bhim the son of Kunti, taking up his bow and arrow ran towards
 him, saying, "Stay, stay" being Bhim armed with bow and arrow and
 followed by Sri Krishna and the two brothers, Ashwathama was much
 distressed and lost all hope for his life. The brave man rose and

तयत् १८ ॥ जगद् च स खेपी कां द्रौणिः सव्येन पाणिना । स तामांपदमासाद्य दिव्य
 मस्रमुदैरयत् ॥ १९ ॥ अमृष्य माणस्ताञ्छरान् दिव्यायुधधरान् स्थिताम् । अपाठ उवा
 चेति क्यान्यस्तुलदाहणं यचः ॥ २० ॥ इत्युक्त्वा राजशार्ङ्गं द्रौणपुत्रः प्रतापवान् ।
 सर्वलोकप्रमोहार्यं तदस्त्रं प्रमुनेषु ह ॥ २१ ॥ ततस्तस्यामिषीकायां पाषकः समजायता
 प्रधवयन्निव लोकांस्त्रीन् फाणान्तकयमोपमः ॥ २२ ॥

इति सीमिकर्षवर्णि ऐपिकर्षवर्णि ब्रह्मशिरोस्त्रत्यागे त्रयोदशोऽध्यायः १३ ॥



पीडितहुये और घृत्पुको वर्त्तमानजाना उस महासाहसीने उस दिव्य महा उषम
 अस्त्रको स्पर्श किया । १८ । और बायेंहायसे एक सींकको पकड़ा और उस
 भापीत्त को प्राप्त होकर दिव्य अस्त्रको पढ़ा । १९ । और दिव्य शस्त्रधारण करनेवाले
 वाले उन शूरो को न सहकर उस अश्वत्थामा ने क्रोधसे भयकारी बचन को कहा
 कि यह अस्त्र मैं पाण्डवोंके नाश के निमित्त छोड़ताहूँ । २० । हे राजेन्द्र प्रतापवान्
 अश्वत्थामा ने यह कहकर सब लोक के बड़े मोहके निमित्त उस अस्त्रको छोड़ा
 । २१ । इसके पीछे उस सींकमें काल और यमराजके समान तीनलोकों की
 धूमकरनेवाली अग्नि उत्पन्न हुई । २२ ॥

the divine weapon. He took up a piece of broom and pronounced over it the aphorism. Unable to bear the sight of those warriors, he uttered dreadful words in his rage, saying, "I discharge this weapon for the destruction of the Pandavas." Having said, this glorious Ashwathama discharged the weapon to stepify the world. Then dreadly sparks began to come out of that broom." 22.



वैशम्पायन उवाच । इद्वितीयेन द्वाशार्द्धस्तनमभिव्यजित् । द्रोणवृद्ध्या महाबाहुर
 अर्जुनं प्रायमाचत ॥ १ ॥ अर्जुनार्जुनं पदिव्यमस्र ते हृदिधर्षते । द्रोणोपादिष्टं तस्यापे
 ककालः संमति पाण्डव ॥ २ ॥ भ्रानृणांमामनश्चैव परित्राणाय भारत । विसृजैतस्वमप्या
 आबद्धमस्त्रनिधारणम् ॥ ३ ॥ केशवनेषमुक्तस्तु पाण्डवः परवीरहा । अवातरद्रथासूय
 प्रगृह्य सहारं धनुः । ४ ॥ पूर्वमाचार्य्यपुत्राय ततोऽनन्तरमात्माने । प्राप्तभ्यश्चैव सर्वेभ्य
 स्वस्तीत्युक्त्वा परमत्पः ॥ ५ ॥ देवताऽद्यो नमस्कृत्य गुरुभ्यश्चैव सर्वशः । उत्सस्रज्ज
 शिबं त्र्यायन्नस्त्रमस्त्रेण शाश्वताम् । ६ ॥ ततस्तदस्त्रं सद्यस्तां सृष्टं माण्डोवधन्वता ।
 प्रज्जडबलिं महाविचित्रमयुगान्तानलसस्त्रिमम् ॥ ७ ॥ तथैव द्रोणपुत्रस्य तदस्त्रं तिमिले
 जसः । प्रज्जडवात् महाज्वालं तेजोमण्डलसद्वृतम् ॥ ८ ॥ निर्घोता पशवस्त्रासन्त्रं पेतुकल्का

अध्याय १४ ॥

वैशम्पायन बोले कि महाबाहु श्रीकृष्णजी ने मथमही से उस अवस्थाभा के
 उस मनके विचारको जानकर अर्जुन से कहा । १ । कि हे पाण्डव अर्जुन जो
 द्रोणाचार्य का उपदेश किया हुआ वह दिव्य अस्त्र यत्मानेह उसका यह समय
 वर्त्तमान हुआ है । २ । हे भरतवंशी तुमभी इस युद्धभूमि में अपनी और अपने
 मादर्योंकी रक्षाके लिये अस्त्रके रोकनेवाले उस अस्त्रको छोड़ो । ३ । इसके पीछे
 शत्रुओंके वीरोंका मारनेवाला और केशवजीति इसमकार कहाहुआ पाण्डव अर्जुन
 धनुषबाण को लेकर शीघ्रही रहते उतरा । ४ । वह शत्रुओं का तपानेवाला मथम
 गुरुपुत्र के लिये फिर अपने और सब भाइयों के अर्थ भलाहोय यह कहकर । ५ ।
 देवता और सब गुरुओंके अर्थ नमस्कार करके शिवजीको ध्यान करते हुये अर्जुन
 ने उस अस्त्रको छोड़ा और कहा कि अस्त्र से अस्त्र शान्तहोय । ६ । इसके पीछे
 अकस्मात् गाँधीव धनुषपारी से छोड़ाहुआ और मलयकालकी आग्नि के समान
 बहमकाशित अस्त्र ज्वालितरूप हुआ । ७ । और उसीप्रकार बड़े तेजस्वी अश्वत्थामा
 काभी वह अस्त्र उरधित रूपहुआ जो कि तेजमण्डल से युक्त बड़ी ज्वाला रखने
 केवाला था । ८ । परस्पर बाणुके संघटनों के बड़े शब्दहुये इनारों उल्कापातहुये

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, "Knowing already the evil intentions of Ashwathama, Sri Krishna said to Arjun, " This is the time to discharge the weapon given you by Dronacharya. Discharge it to check the weapon of your adversary in order to protect yourself and your brothers. " Thus urged by Keshav, Arjun the destroyer of foes came down at once from the car with his bow and arrow. 4 Saying, " Safety to the son of acharya and the Pandav brothers," he bowed down to his preceptor and mediating on Shiv, he discharged his weapon, saying, " To mitigate the effect of the weapon, " Discharged suddenly by the wielder of Gandiv, the weapon shone like fire. Ashwa-

सहस्रशः । महद्भयञ्च भूतानां सर्वेषां समजायत ॥ ९ ॥ सशस्त्रममद्भयोम ज्वाला
मालाकुलं भृशम् । अचालं च मही कृत्स्ना सपर्वतवनदुमा । १० ॥ ते त्वस्त्रतेजसो
लोकान्तापयन्ती व्यवस्थिते । म हर्षो सद्वितौ तत्र दर्शयामासतुस्तदा ॥ ११ ॥ नारदः
सर्वभूतात्मा भारतानां पितामहः । उभौ शमयितुं वीरौ मारुताज्जगत्प्रभुधौ ॥ १२ ॥ तौ
मुनी सर्वधर्मज्ञौ सर्वभूतहिजैविणौ । दीप्तगोरस्त्रयोर्मध्ये स्थितौ परमतेजसौ ॥ १३ ॥
तदन्तरमथाधृष्यायुपागम्य पशुस्विनौ । भास्तामुपिधरोतत्र उधलिताविष पावकौ
॥ १४ ॥ प्राणधृद्भरनाधृष्यौ देवदानव सम्मतौ । मस्त्रतेजः शमयितुं लोकानां हितका
म्यया ॥ १५ ॥ ऋषि उचचतुः । नामाश्च क्वास्व पृथे येऽप्यतीता महारथाः । नैतदस्त्र
मनुष्येषु ते प्रमुक्तं कथञ्चन । किमिदं साहसं वीरौ कृतवन्तौ महात्सवम् ॥ १६ ॥
सांस्तिकपर्वणि ऐपिकपर्वणि अर्जुनास्त्रत्यागे चतुर्दशोऽध्यायः १४ ॥

और जयजीवों को बड़ा भय उत्पन्न हुआ । ९ । शब्दायमान आकाश ज्वाला
मालाओं में बहुत व्याप्त हुआ पर्वत वन और हनुओं समेत पृथ्वी कम्पायमान हुई । १० ।
इस प्रकार वज्रदानों प्रकाश लोकोको तपातेहुयेनियतहुये तबवहाँ उनदोनों महर्षियोंमें
एकमाथ दर्शनकिया । ११ । सवजीवों के आत्मारूप नारदजी और भरतवंशियोंके
पितामह व्यासजी यहदोनों महात्मा बर अश्वत्यामा और अर्जुनके शान्त करनेको
उपस्थितहुये । १२ । सवधर्मोंके ज्ञाता और सवजीवों के हितकारी बड़े तेजस्वी बह
दोनों मुनि बड़ेप्रकाशित उनदोनों अस्त्रोंके मध्यमें नियतहुये । १३ । उससमय बह
भोजा यज्ञान और आगिके समान प्रकाशित दोनों उच्चमनुष्ये वरानाकर नियत
हुये । १४ । बह जीवमात्रोंसे अनेय देवता और दानवों के अंगीकृत दोनों ऋषि
श्लोकों की टुद्धिही इच्छामे प्रलोकता तेजशान्त करतेहुये मध्यमें नियतहुये । १५ ।
और चालीस नानाप्रकार अस्त्रोंकेजाना सब महारथी जो पूर्वसमयमेंही उत्पन्नहुये
उन्हींमें भी इतनेअस्त्रोंके कभीकिसी मनुष्यपर नहीं छोड़ा हेवाँलोगो तुमने इसबड़े
बिनाशकारी नाहमको क्योंकिया १६ ॥

thama's weapon to, looked like a forest of fire. There was a
severe storm of wind and meteors fell down with a crash, causing fear
to life. The sky was covered with flames of fire and the Earth with
her trees shook. 10. Thus the two lights stood side by side
heating the world. The two great rishis Narad and Vyas came there
to appease the wrath of Ashwathama and Arjun. Knowing all dharm
and wishing good to the world, the two glorious rishis stood in the
midst of the two weapons, glorious and invincible, bright as fire. Cool
ing the fury of both the weapons, invincible by all beings, the two
rishis respected by gods and gandharvas, stood there and said, "The
former warriors who knew the use of all sorts of weapons, never dis-
charged this weapon against human beings. Why have you commit-
ted this rashness brave men?" 16.

वैशम्पायन उवाच ॥ इष्टं नरशार्ङ्गं तापग्निस्मनेजसौ । संजहार शरं दिव्यं
 खरमाणो घनञ्जयः ॥ १ ॥ उवाच भरतश्रेष्ठ सावृगी प्राञ्जलिस्नदा । प्रयुक्तमश्रमलेख
 शाम्यतामिति वै मथा ॥ २ ॥ संहते परमास्त्रेस्मिन्, सर्वानस्मानशंपनः । पापकर्मा घृवं
 द्रौणिः प्रघृह्यस्त्रजेतसा ॥ यदत्र हिममस्माकं लोकानास्त्रैव संपया । नघन्तो देवस
 कुशौ तथा सम्मन्तुः ह्यः ॥ ४ ॥ इ युक्त्वा संजहारान्नं पुनरेव घनञ्जयः । सहान्
 युष्करस्तस्य देवैरपि हि अयुमे ॥ ५ ॥ विसृष्टस्व रणतस्य परमास्त्रैव संगृहे ।
 अशक्तः पाण्डवात्म्यः साक्षादपि शतकृतुः ॥ ६ ॥ ब्रह्मतेजोद्भवं तच्च विसृष्टमकृतात्
 ममा । न शक्यमानस्यितुं ब्रह्मचारिप्रनाहते ॥ ७ ॥ अर्चीर्ब्रह्मचर्यो व सृष्ट्वावसं
 बलेषुन । दत्तं चानुवधस्य मूर्धानं तस्य कृतनि ८ ॥ ब्रह्मचारीव्रती चापि बुराचा

अध्याय १५ ॥

वैशम्पायन बोले हे नरोत्तम शीघ्रता करनेवाले अर्जुन ने अग्नि के समान
 प्रकाशित उन ऋषियों को देखकर दिव्यबाण को संहार कर लिया अर्थात् ज्ञान
 लिया । १ । हे भरतर्षभ तब वह अर्जुन हाथजोड़कर उन ऋषियों से बोला कि मैंने
 यह समझकर अश्रुको प्रकट किया है कि यह अश्रु इम अश्रु से शान्त होय । २ ।
 इस उत्तम अश्रुके लौट आनेपर निश्चय करके पापकर्मी अश्रुतयामां इसतेज अश्रुसे
 हम सबको भस्म करेगा । ३ । यदापरसदेव हमारा और ओलोंका जोहित है उसको
 देवतारूप आपलोग उसी प्रकार से अङ्गीकार करने के योग्य हो । ४ । अर्जुनने इस
 प्रकारसे फिर अश्रुको लौटाया युद्ध में देवताओंसे भी उसका फिर लौटाना कठिन
 है । ५ । पांडव अर्जुनके सिवाय युद्धमें साक्षात् इन्द्रभी उस छोड़ेहुये परम अश्रु
 के लौटानेको समर्थ नहीं है । ६ । ब्रह्मचारीका अश्रुखनेवाले पुरुषके सिवाय ब्रह्म
 तेजमें उत्पन्न छोड़ेहुआ अश्रु अग्नितेन्त्रिय में कभी लौटाने के योग्य नहीं है । ७ ।
 ब्रह्मचर्य न करनेवाला जो पुरुष अश्रुको छोड़कर फिर लौटाता है वह अश्रु
 साधियों समेत उस छोड़नेवालेके मस्तकको काटता है । ८ । ब्रह्मचारी बन करनेवाला

CHAPTER XV

Vaishampayan said, "Seeing the two rishis glorious like fire, Arjun recalled his divine arrows. And with joined palms he said to them, "I discharged my weapon to appease the other. Surely Ashwathama will burn us with his weapon, for I have recalled mine own. You will do what is good to us and to the world, divine sages." Thus Arjun recalled the weapon and did a deed which was difficult to be achieved by gods. 5. None except Arjun, not even Indra himself, could recall that weapon when once discharged. None except a Brahmachari could do the glorious deed; for the weapon kills the man who recall it, if he is not a Brahmachari. Arjun the Brahmachari recalled the weapon in spite of having so much to revenge for. For Arjun was the

रमयाप्य तत्र । परमव्यसनाञ्चोपि नाजुनोऽद्य वयमुञ्चन ॥ ९ ॥ मत्पद्मधरः शूरो
 ब्रह्मचारी च पाण्डवः । गुरुवर्ती च मेनास्त्र सत्रहागजुनः पुन ॥ १० ॥ द्रौणिरप्यथ
 संप्रदय तावुषो पुरतः स्थितः । न शशंक पुनयोरगस्त्यं सहजुमोत्रमा ॥ ११ ॥ अशक्तः
 प्रतिसेहारे परमास्त्रस्य संयुगे द्रौणिरिदमना राजन् द्वैगात्नमभापत ॥ १२ ॥ उक्तमव्य
 सनात्तेन प्राणप्राणमभीप्सुना । मर्यतदस्त्रमुत्सृष्टं भीमसेनभवान्मुने ॥ १३ ॥ अथर्मभ्य
 कृतोनेन मत्तं गच्छं जिघांसता । मिथ्याचारेण भगवन् भीमसेनेन संयुगे ॥ १४ ॥ अतः
 सुष्टमिवं ब्रह्मन् मयात्प्रकृतात्मना । तस्य भूषोऽद्य सद्दारे कर्तुं नाहमिहोत्सहे ॥ १५ ॥
 विसृष्टं हि मया दिव्यमेतदस्त्रं दुरासदम् । अपाण्डवाथेति मुने बहिनतेजोऽनुगन्धवे
 ॥ १६ ॥ तद्विदं पाण्डवैयानामन्तकायामिसंहिगम् । अथ पाण्डुसुतान् सर्वान् जीविता
 स्त्रैर्यापिष्यति । १७ ॥ कृत पापामिदं ब्रह्मप्रोवाचिष्टेन चेतसा । वधमाशास्म पाषाणां

आरबड़े दुःखमे पीड़ावान् अजुन नेभी उंस दुष्टभाचारको पाकर उस अस्त्रको नहीं
 छोड़ा । ९ । पाण्डव अजुन सच्चा मत करनेवाला शूर ब्रह्मचारी और गुरु भक्त
 या इन्हेतेमे उसने रम अस्त्रको फिर लौटा लिया । १० । इसके पीछे अशक्त्यामा
 भी अपने आगे नियतहुये दोनों ऋषियोंको देखकर अपने बलमे वसधोर अस्त्र के
 फिर लौटानको समर्थ नहीं हुआ । ११ युद्धमें उसपरमअस्त्रके लौटानेमें असमर्थ
 बड़े दुःखीचित्त अश्वरथामोन व्यासजीसे कहा । १२ । कि हेमुनि वही आपत्तिसे
 पीड़ावान् और माणोंकी रक्षाका अभिलाषी होकर मेने भीमसेनके भयसे उस अस्त्र
 को छोड़ा । १३ । हे भगवन के मारनेके अभिलाषी और दुर्गाचारी इस भीमसेनके
 युद्धमें अधर्मकिया १४ । मे ब्राह्मण इन्हेतुने मुझ ब्रह्मर्षी ने इस अस्त्रको छोड़ा
 भव फिर उसके लौटानेको उत्साह नहीं करताहूँ । १५ । हे मुनि मेने पाण्डवों के
 नाशके अर्थ ब्रह्मतेजको धारणकरके इसकठिनता से सहनेके योग्य अस्त्र को छोड़ा
 । १६ । यह अश्व पाण्डवों के नाशके लिये बहुतहै अथ यह अस्त्र सब पाण्डवों को
 जीवनमे रहित करेगा । १७ । हेव्यासग कोपसे पूर्णचित्त और युद्धमें पाण्डवों के
 मारने के अभिलाषी मुझ अस्त्र छोड़नेवाले ने यह पाप किया १८ । व्यासजी बोले

observer of true vows, brave and devoted to his preceptor, and there
 fore he could recall the weapon. 10. For the sake of those riches Ashwa-
 thama too, tried his best to recall his weapon, but was not success-
 ful in his attempt. Failing in his attempt, he said to Vyas with a
 distressed mind, "Being hard pressed and afraid of him, I discharged
 the weapon to save my life. I had sinned against Duryodhan
 and slain him unfairly. I therefore discharged the weapon, but am
 now unable to recall it. 15. I discharged it to slay all the Pandavas
 in my anger. It is sufficient to slay the Pandavas and will surely
 deprive them of life. Surely I have committed this sin to slay the
 Pandavas " Vyas said, "Arjun discharged the Brahmashar by way of
 retaliation and not to slay you. He discharged it to mitigate the effect

मयास्त्रं वृजता रणे ॥ १८ ॥ इवास उवाच । अस्त्रं ब्रह्मशिरस्तात् विद्वान् पार्थो धन
 उज्जयः । गत्सुष्टुषाञ्च रोयेण न नाशायतवाहये ॥ १९ ॥ अस्त्रमस्त्रेण तु रणे तथ संशम
 चिन्वता । विशुष्टमर्जुनेनेदं पुनश्च प्रतिसंभृतम् ॥ २० ॥ ब्रह्मास्त्रमप्यथाप्येतद्गुणदेशात् पितु
 हतव । क्षत्रघर्मान्महाबाहुनाकम्पत घनञ्जयः ॥ २१ ॥ एवं धृतिमतः साधोः सर्वोस्त्र
 विद्युपः सतः । सन्नातृवन्धोः कस्मादस्त्रं घघमस्य स्त्रिकीर्षसि ॥ २२ ॥ अस्त्रं ब्रह्मशिरो
 यत्र परमास्त्रेण वधयति । समाः ब्राह्मदश पञ्चन्यस्तद्राष्ट्रं नाभिवर्षति ॥ २३ ॥ एतद्गुण
 महाबाहुः शक्तिमानपि पाण्डवः । न चिह्नपास्तदस्त्रं तु प्रजाहितचिकीर्षया ॥ २४ ॥
 पाण्डवास्त्ववञ्च राष्ट्रञ्च सदा वेगहयमेव हि । तस्मात् सहर दिव्यं स्वगच्छमेतममहा
 मुञ्च ॥ २५ ॥ अरोपस्तव वैशस्तु पार्थाः सन्तु निरामया । न ह्यनर्मेण राजर्षिः पाण्डवो
 जेतुमिच्छति ॥ २६ ॥ मणित्रैश्च प्रपच्छैः शोषस्ते शिरसि निष्ठिति । एतमादाय ते
 प्राणान् प्रति दास्यन्ति पाण्डवाः ॥ २७ ॥ द्रौणिश्वान् । पाण्डवैर्यानि रत्नानि पश्चा

हेतात् बुद्धिमान् पाण्डव अर्जुनने युद्धमें जो ब्रह्मशरनाम अस्त्र छोड़ा वह क्रोधसे
 छोड़ा तेरे नाशकेलिये नहीं छोड़ा । १९ । युद्धमें तेरे अस्त्रको अपने अस्त्र से शान्त
 करनेके अभिलाषी अर्जुनने यह अस्त्र छोड़करभी फिर नौटालिया । २० । यह महा
 बाहु अर्जुन तेरे विताके उपदेशसे ब्रह्मअस्त्रको भी पाकर क्षत्रियधर्म से कम्पायमान
 नहीं हुआ । २१ । इस प्रकार धैर्यवान् माधु सत्र अस्त्रों के ज्ञाता सत्पुरुष इस
 अर्जुनका मारना भाई बंधुओं समेत किसलिये तुमकरना चाहते हो । २२ । जिस
 देशमें ब्रह्मशर अस्त्र परमअस्त्रके द्वारा दूंकियाजाताहै उस देशमें वाग्द्वर्षपरक इन्द्र
 जलको नहीं बरसाताहै । २३ । महायुद्ध समर्थ पांडव संसार के जीवमात्रों की
 बुद्धिको अभिलाषासे इसी निमित्त उस अस्त्रको अपने अस्त्रसे दूनहीं करता । २४ ।
 पांडव देश और तुमभी सदैव रत्ना के योग्यहो दे महाबाहु इसहेतुसे तुम इस दिव्य
 अस्त्रको सौटासो तेराक्रोध दूरहोय और पाण्डवोंकी कुशल होय यह राजप्रापि
 पांडव अधर्मसे विजयकरना नहीं चाहताहै । २५ । अबतुम उस मणिको ददो जो
 तेरे शिरपर निपवहै पांडव उसको लेकर तुझको प्राणदान देगे । २६ । अद्वयत्थामा
 बोले कि पाण्डवों ने जो रत्न और कौरवोंने जो अन्यधन इसलोक में प्राप्त किया

of your weapon and has recalled it. 20 Having got the knowledge
 of Brahmashar from your father, Arjun did not deviate from his duty.
 Why do you desire to slay him and his brothers, Indra does not
 bring forth rain for twelve years when one Brahmshar is destroyed
 by another. Valiant Arjun does not use his weapon for that pur-
 pose, though he has the power to do so, The Pandavas, the country
 and you are worthy of protection and you must recall your weapon
 15 Subdue your wrath and let the Pandavas live, They do not like to
 gain victory by unfair means. Give the Pandavas your head jewel
 and they will spare your life in return." Ashwathama said, " My

स्यत् कीरयेद्धेतम् । अथातयिह तेभ्योयं मणिर्मम धिनिष्पद्यते ॥ २८ ॥ यमावद्यमयं
 तस्मिन् शक्यस्याधिश्चक्राभयम् । देवेभ्यो दानभेभ्यो वा नागेभ्यो वा कथञ्चन ॥ २९ ॥
 न च रक्षोगणभयं न तत्रकरभयस्तथा । एवं वीरवो मणिरयं नमे त्याज्यम् । कथञ्चन ॥ ३० ॥
 भक्तु मे भगवानाह तस्मिन् कार्प्यमनन्तरम् । अयं मणिरववाहमीषकात्तु पतिष्यति
 ॥ ३१ ॥ गर्भेषु पाण्डवेयानामभोधं चैतदुच्यतम् । न च शर्षोस्मि भगवन् संहरतु पुनश्च
 घृताम् ॥ ३२ ॥ एतद्वस्त्रमतश्चैव गर्भेषु विस्तृजाम्यहम् । न च वाक्यं भगवतो न करिष्ये
 महामुने ॥ ३३ ॥ व्यास उवाच । एवं कुरु न काम्बात्तु बुद्धिः कार्या त्ययात्तव ।
 गर्भेषु पाण्डवेयानां विस्तृयेन्न दुःखारम् । ३४ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततः परममञ्जु
 द्रौणिकुचतमाहवे । द्वैपायनवचः श्रुत्वा गर्भेषु ममभोध ह ॥ ३५ ॥

इति सौक्ष्मिकपर्वणि ब्रह्मशिरस्त्रैस्त्य पाण्डवगर्भवेशोऽनुदधाऽप्यावः २५ ।

उन्हाँसे यह मेरामणि पृथक् है । २८ । जिसको पाँवकर किसी दशा में भी शस्त्ररोग
 और छुपासम्बन्धी कोई भय नहीं होता है इस पाँवनेवाले को देवता दानव और
 सर्पोंसे भी भय नहीं है । २९ । न राक्षसों के समूहों का और न चारों का भय है इस
 प्रकार से यह उत्तम मणि है और किसी दशामें भी मुक्त से त्याग करने के शोच
 नहीं है । ३० । और जो भगवान ने मुझको आज्ञा करी है वह शीघ्र ही मुझको कर्त्त
 व्ये यह मणि है यह मैं हूँ पान्तु यह सीक । ३१ । पाँडवों के गर्भोंपर गिरेगी
 वर्षाँक यह उत्तम अस्त्र सफल है हे भगवन् इस प्रकार होनेवाले अस्त्रको मैं फिर
 नहीं छोड़ा सका हूँ । ३२ । मैं इसहेतु से इस अस्त्र को पाँडवों के गर्भोंपर छोड़
 ता हूँ हे महामुनि आपके बचनों को अवश्य करूँगा । ३३ । व्यासजी बोले हे
 निष्पाप इसी प्रकार करो तुमको दूसरी बुद्धि न करना चाहिये इस अस्त्रको
 पाँडवों के गर्भोंपर छोड़कर युद्धसे निवृत्त हो । ३४ । वैशम्पायन बोले इसके
 पीछे अश्वत्थामाजी के बचन व्यासजी के बचन को सुनकर युद्धमें सज्ज परम
 अस्त्रको गर्भोंपर छोड़ा ३५ ॥

jewel forms no part of the wealth of the Kauravas and Pandavas. The possessor of it is never oppressed by weapons, sickness or hunger. He is never in fear of gods, daemons and serpents. The possessor of it has no fear of rakshases or thieves and I donot wish to part with it under any condition. 30 I am however bound to do your bidding. My jewel and myself are at your disposal. But this piece of brown shall fall on the pregnant women of the Pandavas; for this weapon can not fail to do its work nor I have power to recall it. I shall do your bidding, great rishia. My weapon shall fall on pregnant women of the Pandavas. Then Vyas said, " Do it as you have said. Let your weapon fall on the pregnant women and cease fighting. " Vaisampayan said, " Thus ordered by Vyas, Ashwathama, let his weapon fall on pregnant women " 35.

वैशम्पायन उवाच। तत्र त्राय दृष्टीकेशो विस्मृष्टं पापकर्मणा । हृष्यमाण एवं वाक्यं
 द्रौणिं प्रत्यवधीक्षदा ॥ १ ॥ विराटस्य सुतां पूर्वं स्तुतां भाण्डीवधन्वतः । उपप्लव्यगता
 हृष्ट्या ब्रजवान् ब्राह्मणोऽवर्षति ॥ २ ॥ परिक्षीणेषु कुरुषु पुत्रस्तथ भविष्यति । एतदस्य
 परिक्षिप्तं गर्भस्थस्य सविष्यति ॥ ३ ॥ तद्वयं तत्रचरन् साधोः सत्यनेतद्भविष्यति ।
 पतिक्षिप्तविता श्रेयां पुनर्बन्धकः सनेः ॥ ४ ॥ एवं ब्रुवाणं गोविन्दं सास्वतां प्रवर्ततां ।
 द्रौणिः परमसंरक्ष्यः प्रत्युवाचदधुनश्च ॥ ५ ॥ नैतदेवं यथास्य त्वं पक्षपातेन केशव ।
 वचनं पुण्डरीकाक्ष न च महाप्रयमन्यथा । ६ ॥ पतिष्यति तद्वच्छिदि गर्भे, तस्या भयो
 घनम् । विराट् बुद्धिनुः कृष्य य एवं रक्षितमिच्छसि ॥ ७ ॥ भगवानुवाच । अमोघः
 परमास्त्रेण पातस्तस्य भविष्यति । स तु गर्भोऽमृतो जातो दीर्घमायुरवाप्स्यति ॥ ८ ॥

अध्याय १६ ॥

वैशम्पायन बोले तर श्री कृष्णजी पापकर्म करनेवाले अश्वत्थामा के छोड़े
 हुये उस अस्त्रको जानकर प्रसन्नहोकर अश्वत्थामा से यह वचनबोले ? । कि
 पूर्ण समयमें निपममान ब्राह्मणने विराटकी पुत्री अर्जुनकी पुत्रवधू उत्तराको जोकि
 उपप्लवी स्थानपर वर्चमानथी उस्ते यह कहा । २ । कि कौरवों के नाशवाच होने
 पर तेरापुत्रहोगा इस गर्भस्थ बालकका इसीहेतुमें परीक्षितनाम होगा । ३ । उस
 साधु का यहवचन सत्यहोगा परीक्षितपुत्र फिर उन्हों के वंशका चलानेवाला होगा
 । ४ । तब अत्यन्त क्रोधयुक्त अश्वत्थामा ने यादवों में अत्यन्त श्रेष्ठ इमप्रकार
 कहनेवाले गोविन्दजीको यह उत्तर दिया । ५ । हेकमललोचन केशवजी यहइसप्रकार
 नहीं है जेमे कि तुमने पक्षपातीहोकर यहवचन कहाहै मेरा वचन मिथ्या नहींहोइ।
 हे श्रीकृष्णजी मेरा चलाया हुआ वह अस्त्र उस उत्तराके गर्भपर गिरेगा जिसको
 कि तुम रक्षा किया चाहतेहो । ७ । श्रीभगवान् बोले कि उस परम अस्त्रका गिरना
 सफलहोगा और भगहूमा गर्भ जीकर वही अवस्थाको पावेगा सब ऋषिलोग
 तुझको नीचपुरुष पापी और वारम्बार पापकर्मवाला और बालकके जीवन कानाश

CHAPTER XVI

Vaishampayan said, "Sri Krishna was pleased when he knew the fate of Ashwathama's weapon, and he said to him, "Formerly, a vow observing Brahman said to Uttara the wife of Ajin's son, "Thy son will be born after the destruction of the Kauravas and will be named Parikshit." The words of this age will yet be true for Parikshit will be the perpetuator of the line of the Pandavas." Ashwathama was much enraged at this remark and said "This can not be, lotus-eyed Krishna! Your words are biased. It shall be as I have predicted: my weapon shall fall on the womb of Uttara whom you wish to protect." Sri Krishna said, "It is true that the weapon shall do its work, but the dead child will be brought back to

त्वान्तु कापुरुषं पापं प्रिदुः सर्वे मनीषिणः । अलं कुर्यात्पकर्माणं वासुजीवितघातकम् ।
 तस्मात्स्वस्य पापस्य कर्मणः फलमाप्नुहि ॥ ९ ॥ त्रीणि वर्षसहस्राणि चरिष्यसि मही
 मिमाम् । अमाप्नुवत् कश्चित् । काचित् सम्प्रिदुः शान्तु केनचिद् ॥ १० ॥ निर्जनानस
 ह्यायस्त्वं देशान् प्रविचरिष्यसि । मयित्री न हि ते क्षुद्र जनमध्येषु संस्थितिः ॥ ११ ॥
 पूय शोणितगन्धी च दुर्गन्तान्तरसंश्रयः । विचिष्यसि पापात्मन् सर्वव्याधिसमन्वितः
 ॥ १२ ॥ वचः प्राप्य परिशिक्षतु वेदव्रतमवाप्य च । कृपाच्छारद्वताच्छूरः सर्वस्त्राण्यल
 ष्यते ॥ १३ ॥ विदित्वा परमात्मनि क्षुद्रधर्मव्रतेस्थितः । षष्टि वर्षाणि धर्मात्मा वनुष्ठां
 पालयिष्यति ॥ १४ ॥ इतश्चोर्द्धं महाबाहुः कुवराणां भविष्यति परिशिक्षाम नृपतिर्मिषतस्ते
 दुर्मते ॥ १५ ॥ अर्हंत जीव्यस्यामि दग्धं शस्त्रानितेजसा । पश्यमे तपसोविरुध्यं सत्यस्य च
 मराधम ॥ १६ ॥ व्यास उवाच । यस्माद्नादस्य कृतं त्वयास्मान् कर्म दाहणम् । ब्रह्म
 णस्य सतश्चैव यस्मात्ते वृत्तमीदृशम् ॥ १७ ॥ तस्माद्येद्वकीपुत्र उक्तवानुत्तम वचः ।

करनेवाला जानेंगे उम कारणों से तुम इस पापकर्म के फलको पाकर तीन हजार
 दिव्य वर्षतक इस पृथ्वीपर घूमोगे तुम एकाकी कहीं कुछ न पाते और कभी
 किसीके साथ परस्पर वात्तालाप न करते निर्जन देशों में घूमोगे हे नीच तेरा
 निवास मनुष्यों में नहीं होगा । ११ । पीप और रुधिरकी गन्धि से युक्त दुर्गन्ध
 महापत्तों में निवास करेगा हे पापात्मा सब बीमारियों से संयुक्त होकर घूमेगा
 । १२ । शूरपरीक्षित अरुस्थ और वेदव्रतको पाकर कृपाचार्य से सब अस्त्रों को
 पावेगा । १३ । फिर परमशस्त्रों को पाकर क्षत्रिय व्रतमें निपत धर्मात्मा
 साठवर्षतक मृष्टिही रक्षा करेगा । १४ । इसके पीछे वह महाबाहु कौरवराजसेगा
 हे दुर्बुद्धी तेरे देखते परीक्षितनाम राजा होगा । १५ । मैं उस शस्त्रकी अग्नि से भस्म
 हुये को अपने तेज से गिलाऊंगा हे नीच मेरे सत्य और वपके बलको देखो व्यास
 जी बोले जो तुमने इतना घनादर करके यह भयकारी कर्म किया और तुझ
 सत्पुरुष प्राणणका ऐसा चजनदुआ इनदोनो कारणों से श्रीकृष्णजी ने जो भेष

life and will live long. All the rishis will call you sinful and slayer
 of infants, and as a punishment of your wickedness you will roam for
 three thousand diemo years. You will be shunned by all men and
 will pass your days in desolat, places out of the reach of man, 11.
 Your wound will give forth a bad smell and you will be leet with
 all sorts of diseases. Valiant Paikshit will live long and will learn
 the use of weapons from Kripacharya. He will rule the earth for
 sixty years as king of the Kuravas and you will see him, 15. I
 shall re-ucitate the burnt child by my glory and you shall see
 the power of my truth and vocation." 16. Vyas said,
 "Because you did this dreadful deed in spite of us, and bore a
 conduct like this, you are reduced to the condition fore told

अर्कदाघन्ने तद्ग्रावि क्षत्रधर्मस्त्वयगमिनः ॥ १८१ ॥ अश्वत्थामावाच । सहैव ममता
 प्रष्टुम् दयांस्वानि पुरुषेष्विह । सत्यवतगस्तु भगवानपञ्च पुरुषोत्तमः ॥ १९ ॥ वैश
 म्पायन उवाच । प्राज्ञावाप मणिं द्रौणिः पाण्डवानां महात्मनाम् । जगाम विप्रतास्तेषां
 सर्वेषां पश्यतां वनम् ॥ २० ॥ पाण्डवाश्चापि गोविन्दं पुरस्करय द्रुपदियः ॥ कृष्णं द्वेषा
 यन्प्रक्षेप नारदं च महाभुनिम् ॥ २१ ॥ द्रोणपुत्रस्य सहजं मणिमाहाव साधराः ।
 द्रौपदमिष्यधायन् पायोपितां मनस्विनीम् ॥ २२ ॥ वैशम्पायन उवाच । ततस्ते पुरुष
 म्पायः । कश्चैरनिलोपमैः । अश्वयुः सहद शार्ङ्ग शिरोर पुनरेव हि ॥ २३ ॥ अद्यतोपे
 रथाश्वान्तु ररपणा महास्थाः । दहतुर्द्रीपदीं कृष्णामासौमाद्यतराः स्वयम् ॥ २४ ॥
 ताभ्युपेत्य निधानत्वां दुःखशोकसमन्विताम् । परिदार्ये व्यतिष्ठन्त पाण्डवाः सहके
 रावाः ॥ २५ ॥ ततो राजाश्वानुश्रुतो मनिसेतो महाबलः । प्रददौ ते मणिं दिव्यं वचन
 प्रवेदनप्रवीर ॥ २६ ॥ अयं भद्र तव मणि पुत्रहन्ता जितः स ते । उा सिद्ध शोकमुत्

वचन कहाई निस्तन्देह वहीदशा तेरी होनेव ली है तुम क्षत्रियधर्ममें नियतहो । १८।
 अश्वत्थामा बोले हे ब्राह्मण मैं इसलोकके मनुष्यों में आपके साथ नियत हूंगा यह
 भगवान् पुरुषोत्तम सत्यवक्राई । १९ । वैशम्पायनबोले कि फिर उदासमन होकर
 अश्वत्थामा महात्मा पाण्डवों को माण्डे देकर उन सबके देलते हुए वनको गये
 । २० । और जिनकेशत्रु मारंगये वह पाण्डव गोविन्दजी और व्यासजी महाभुनि
 नारदजीको आगे करके । २१ । और अश्वत्थामा के शरीरके साथ उत्पन्न होने
 वाली माण्डो शीघ्री उस मनस्विनी और शरीर त्यागनेके निमित्त नियम
 करनेवाली द्रौपदीही ओर दांडे । २२ । वैशम्पायन बोलेकि इसके अनन्तर वह
 पुरुषोत्तम पांडव श्रीकृष्णजी समेत शत्रुके समा । शान । उत्तम जोडोंके द्वारा फिर
 हरे को गये । २३ । आप पीडावान् और शीघ्रता करनेवाले महारथियों ने रथों
 से उतर कर ममत्त मनवाली द्रौपदीको पीडावान् देखा । २४ । वह पाण्डव केशव
 नी समेत उस अममत्त और दुःखशोकसे युक्त द्रौपदी के पान जाकर उस को
 पारकर बैठगये । २५ । इसके पीछे राजाकी आज्ञानुसार महाबली भीमसेन ने उस
 दिव्य मणिको दिया और माण्डेकर यह वचन कहा । २६ । हे कदवायी वीरह
 तेरा माण्डे और वह तेरेपुत्रों का मारनेवाला विजय किया गया शोकको छोड

by :Kriahn. You have become a Kshatriya "Ashwathama said,
 "I would stay in the world with you but Shr Krishna is truthful." Vaishampayan said that with a dejected mind, Ashwathama gave the
 Pandavas his jewel and went away to the forest in the presence of all.
 20 The Pandavas being rid of their enemies, ran towards Draupadi,
 led by Govind, Vyasa and Narad, and with the jewel got from Ashwa-
 thama. They rode their swift cars and went to their camp. They
 found Draupadi in great distress and sat round her. 25. Then by
 the permission of the King, brave Bhim returned the jewel to Draupa-

सुख्य क्षत्रधर्ममनुस्मर ॥ २७ ॥ प्रयाणे वासुदेवस्य शमायमसितेक्षणे । यान्युक्तानि
 त्वया भीरु वाक्यानि मधुघातिनि ॥ २८ ॥ नैव मे पतयः सन्ति न पुत्रा भ्रातरो न च
 नैव स्वमिति गोविन्द-शममिच्छति राजनि ॥ २९ ॥ उक्तवत्यासि त्रात्राणि वाक्यानि
 पुरुषोत्तमम् । क्षत्रधर्मानुरूपाणि तानि त्वंस्मर्तुमर्हासि ॥ ३० ॥ इतो दुर्व्योधनः पापो
 राज्यस्य परिपन्थिकः । दुःशासनस्य रुधिरं पीतं विस्फुरतो मया ॥ ३१ ॥ वैरस्य गत
 मानृष्यं न स्म वाच्या विव हताम् । अत्रिः मुक्तो द्रोणपुत्रो ब्राह्मण्यद्वैरधेणच ॥ ३२ ॥
 यशोऽस्य पातितं द्वेषि शरीरन्वयशेषितम् । धियोजितञ्च मणिना अस्सितध्यायुधं भुवि
 ॥ ३३ ॥ द्रौपद्युवाच । केवलानृप्यमाशास्मि गुरुपुत्रो गुरुर्मम । शिरस्पेतं मणिं राज्ञा
 प्रीतवधनात् भारत ॥ ३४ ॥ तं गृहीत्वा तनो राजा शिररयेवाकरोत्तदा । गुणैरुच्छिष्ट
 मिश्रेण द्रौपद्या वचनादपि ॥ ३५ ॥ तनो दिव्यं मणिवरं शिरसा धारयन् प्रभुः ।

करउठो आर त्रिभयभेको स्माणकर । २७ । हे श्यामलोचन सान्धकेअर्थ वासु-
 देवजीके यात्रा करनेपर तुमनेप्रो यहवचन उनश्रीकृष्णजीसे कहेथे किहे गोविन्दजी
 राजाका सन्धिका अभिलाषी होनेपर मेरेपति पुत्र भाई और तुम चारोंमें-से कोई
 नहींहो । २९ । तुमने त्रिभयधर्मके योग्य वीरताके वचन पुरुषोत्तमसे कहेथे उनके
 स्मरण करनेको योग्यहो । ३० । राज्यका शत्रुपापी दुर्व्योधन मारागया मैंने उस
 कटेडुये दुःशासनका रुधिर पिया । ३१ । शत्रुताकी अश्रुणताको पाया हमवार्त्ता-
 लापकरनेके अभिलाषी पुरुषोंकी निन्दाके योग्यनहींहैं अश्वत्यामा पराजितहोकर
 ब्राह्मणवर्णकी वृद्धनासे छोड़ागया । ३२ । हेदेवी उसको वह पतितहुआ शरीरशेषहै
 उसकोमणिते जुदाकिया और उसके सबशस्त्रभी पृथ्वीपर गिरपड़े । ३३ । द्रौपदी
 बोली हेनिर्दोषमैने अधृणताको पायागुरुका पुत्रमेरागुरुहै भरतवंशी राजाधुधिष्ठिर
 इस मणि को शिरपर बांधो । ३४ । तवराजा युधिष्ठिरने यह ममभकर कि गुरुपुत्र
 की धारण कीहुई यह वस्तु है और द्रौपदीका वधनहै ऐसाजानकर उसमणिको

di, saying, " This is your jewel, good woman. The slayer of your
 sons has been conquered. Give up your sorrow and rise up, remem-
 bering the kshatrya duty. When Vasudev was going to the mission
 of peace, you said, to him, " Don't make peace with them as long as
 you and my husbands, sons and brothers are alive. " You spoke then
 like a kshatrya woman, and must remember it, 30. Our enemy Dur-
 yodhan has been slain and I have drunk Dushasan's blood. We have
 made an end of the enemy and are not to blame Ashwathama has
 been defeated and is no longer a brahman. He has been excommu-
 nicated. The jewel has been taken away from his person and his wea-
 pons have fallen. " D anpadi said, " I have had my revenge. The
 guru's son is my guru Tie this jewel on your head, king. " Yud-
 hishthir, knowing that it was a thing used by his preceptor's son and

शुशुभे स गदा राजा सबन्द्र इव पर्यत ॥ ३६ ॥ उत्सथो पुत्रशोकात्तांतत कृष्णा
मनस्विनी । कृष्णञ्चापि महाबाहुं परिप्रचउधर्मराट् ॥ ३७ ॥

इति सौप्तिकपर्वणि ऐपिकपर्वणि द्रौपदी सान्त्वने शोडशोऽध्यायः १५ ॥



वैशम्पायन उवाच । इतेषु सर्वसैन्येषु सौप्तिके तै रथैस्त्रिभिः । शोचन् युधिष्ठिरो
राजा दाशार्हमिवममघीत् ॥ १ ॥ कथं नु कृष्ण पापेन क्षुद्राकृतकर्मणा । द्रौणिना
निहताः सर्वे मम पुत्रा महारथा ॥ २ ॥ तथा कृतात्मा विक्रान्तः सहस्रगतयाधिपः ।
द्रुपदस्यात्मजाश्चैव द्रोणपुत्रेण पातितः ॥ ३ ॥ यद्य द्रौणो महत्यासो न प्रादादाहवे
मुखम् । निजश्वे रथिनां श्रेष्ठं धृष्टद्युम्न रुयं नु स ॥ ४ ॥ किं नु तेन छां कर्म तथायुक्तं
लेकरशिरपर धारणक्रिया । १५ । इससे पीछे दिव्यमणिको धारण करता हुआ प्रभु
राजः युधिष्ठिर चन्द्रमासेयुक्त एवंतकेसमान शोभायमान हुआ । १६ । फिर पुत्रों के
शोकसे पीड़ित मनस्विनी द्रौपदी उठखड़ा हुई और महाराज धर्मराजनेभी श्रीकृष्ण
जीसे पूछा ३७ ॥

अध्याय ॥ १७ ॥

वैशम्पायनवाले कि जो रात्रिके युद्धमें उनकी रथियों के हाथसे सबसेना के
छोर्गों के मरने पर शोच करते द्रुपे राजा युधिष्ठिरने श्रीकृष्णजी से यह बचनकहा
। १ । कि हे श्रीकृष्णजी इनपापी नाच और निष्फल कर्मजाने अश्वत्थामा के
हाथ से मेरे सब महारथी पुत्र कैसे मारे गये । २ । उसी प्रकार असह्य महापराक्रमी
छाखों से युद्ध करनेवाले द्रुपदके पुत्र अश्वत्थामाके हाथसे गिराये गये । ३ । बड़े
धनुषधारी द्रोणाचार्य ने जिसके युद्धमें मुझ नहीं किया उस रथियों में श्रेष्ठ
धृष्टद्युम्नको उसने कैसे मारा । ४ । हे नरोत्तम उमने इसप्रकारका कानसा योग्य

that Draupadi requested him to wear it, put the jewel on his head
Having worn it on his head, Yudhishtir looked glorious like a hill
over which the moon shines. Full of sorrow for her sons' grief, Drau-
padi stood up and Yudhishtir thus addressed Shri Krishna." 37,

CHAPTER XVII

Vaishampayan said, " At the slaughter of all the warriors by the
three heroes, Prince Yudhishtir, in great grief, said to Shri Krishna,
" How were all my brave sons slain by despicable Ashwathama the
sinful wretch who did that useless deed? Similarly, the sons of Dru-

नरपतम् । यदेतन्ममरसंनयप्रोक्तो गुरोः स्तुतः ॥ ५ ॥ भगवानुवाच । नूनं स देवदे-
 धानानीश्वरेश्वरमव्ययम् । जगाम शरणं द्रौणिरेकतेनाश्वघ्नोऽसुर ॥ ६ ॥ प्रमथा हि
 महादेवो दयारमरतामपि । विद्यंश्च गिरिशो दयालुर्गन्धर्वापि शानयेत् ॥ ७ ॥ वेदाहं
 हि महद्देवं त्वरेण भरतर्षभ । यानि चास्य पुराणानि कर्माणि विधिष्वानि च ॥ ८ ॥
 माद्विरेष हि भूतानां मध्यमन्ध्र भारत । विचष्टते जगच्छब्दं सर्वमसौव कर्माणां ॥ ९ ॥
 यमं सिशुभूतानि हृदयो प्रथमं विभुः । पितामहो प्रदीक्षेम भूतानि यज मा विरम् ॥
 १० ॥ हरिकेशस्तथस्तु कृत्वा भूतानां दोषवर्धिवान् । दाघकालं तपस्तेपे ममोऽस्मत्सि
 महातपा ॥ ११ ॥ सुमहान्तं ततः कालं प्रतीक्ष्येन पितामह । सृष्टारं सर्वभूतानां ससर्ज
 मं रूपरमं ॥ १२ ॥ स्वाऽप्रवीणं गिरिरे इष्टं गिरिशो सप्तमम्भलि । यदि मे नाश्रजो

कर्म किया जो अकाले गुरुपुत्रों हमारे सब पुत्रादि होंको युद्धमें मारा ॥ ५ ॥ श्रीभगवान्
 बोले कि निश्चय करके अश्वत्थामा उस अभिनाशी शिवजी के शरण में गया
 जोकि बड़े दे ताभांके ईश्वरों काभी ईश्वरहै उन हेतुमे अहेलेने बहुतों को मारा
 । ६ । महादेवजी प्रमथहोकर देवभागहो भी देमक्ते हैं और उसपराक्रमकोभी वह
 गिरिश देमक्ताहै जिनके द्वारा इन्द्रकोभी नाशकरे । ७ । हे भरतर्षभ मैं महादेवजी
 को मूलप्रमो जानन हूँ और उनके जो नानाप्रकार के प्राचीन कर्म हैं उनको
 भी श्रद्धा रीतिसे जाननाहूँ । ८ । हे भरतवंशी यह शिव सब जीवप्राणोंका आदि
 मध्य और अन्तदे और सब संभार इमी के प्रताप से चेष्टा करता है । ९ । इस
 प्रकार सृष्टिकी उत्पत्ति करनेके अभिनापी सपर्य विगुणात्मक ईश्वरने सबके प्रादि
 तपोगुणरूप रुद्रजी को देखकर कडाकि जीवोंकी उत्पत्ति में विलम्ब न करो । १०
 तब बड़े तपस्वीजीवोंके दोष जाननेवाले शिवजीने भङ्गीकार करके जलमें डूबकर
 बहुतकालतक तपकिया इसरूपेछि ईश्वरने बहुतकाल पर्यन्त उनकी प्रतीक्षाकरके सब
 जीवोंकेस्वामी रजोगुणरूप प्रजपतिको मनस उत्पन्न किया । ११ । वह जलमें

pad who could slay hundreds of thousands, were destroyed by him
 How could he slay Dhrshtadyunn whom even Diona could not
 oppose? By what deed he had power over my sons and others,"
 Since Bhagwan (Kishn) said, "Surely, Ashwathama sought the
 protection of immortal Shiv the lord of gods, and was therefore able
 to slay so many. Mahadev, when pleased, can give godhood. He
 can give a prowess capable of destroying Indra. I know Mahadev
 and his deeds done in the days of yore. He is the beginning, the
 middle and the end of all creation. All the world lives by his glory.
 Desirous of creating the world the almighty Ishwar asked Rudra to
 create all beings without delay. 10. Shiv took the work on himself
 and remained long merged in water to perform asceticism. Ishwar
 waited long for him and then created Prajapati from his thought

स्यन्पत्ततः स्वस्वायम्ह प्रजाः ॥ १५ ॥ तमप्रधीत् पितामसि त्वद्व्यं पुत्रे प्रज ।
 स्थापुरेष जले मग्नो विश्रब्धः कुठ वैकृतम् ॥ १४ ॥ स भूनान्वसृजत् सप्त दशार्धाश्च
 प्रजापतीन् । यैरिमं व्यकरोत् सर्वं भूतप्रान चतुर्विधम् ॥ १५ ॥ ताः सृष्टमात्रा भुविता
 प्रजाः सर्वाः प्रजापतिम् । विश्रब्धयिषो राजन् सदस्ता प्राद्रथस्तदा ॥ १६ ॥ स मस्य
 माणाकाणार्थी पिनामहमुपाद्रवत् । आश्रयो मां भगवास्त्रातु वृत्तरासां विधिपताम्
 ॥ १७ ॥ ततस्ताभ्यो द्वावभ्रमोपधी स्थावराणि च । जङ्गमानि च भूतानि दुर्धलानि
 बर्हीपताम् ॥ १८ ॥ सिद्धितात्रा प्रजास्तास्तु जम्बु सृष्टा पयागतम् । ततो वृष्टिं
 राजन् प्रीतिमस्य स्वयोनित्पु ॥ १९ ॥ भूतप्राने त्रिवृजे तु वृष्टे लोकगुरावपि । उदति
 ष्टेज्ज्वाववेष्टः प्रजाभ्रमा द्वाशं स ॥ २० ॥ तद्गुणाः प्रजा सृष्टा विशृङ्गाश्च स्वते
 हूवेदुये शिवजीको देखकर अपने पितामे बालाके जा मुक्तते प्रथम उत्पन्न होने
 वाला दूसरा नहीं है इसहेतुमे मैं सृष्टिको उत्पन्न करताहूँ । १३ । ब्रह्माजीने कहा
 तेरे शिवाय दूसरा पुरुष प्रथमसृष्टि नहीं है यह शिवजी जनमे हूवेदुये है विश्वास
 करनेवालीसृष्टिको उत्पन्नकरो । १४उसने दत्तादिमात प्रजापतियोंको उत्पन्न किया
 और सबजीवोंकोभी उत्पन्नकिया जिनकेद्वारा इमचारकरीकी खानवाले जीव
 समूहोंको उत्पन्न किया । १५ । हे राजा तबवह सप्तसृष्टि उत्पन्नहोतेही धुंधसे
 महाआर्ष कोकर प्रजापति के भक्षण करनेकी इच्छामे दौड़े । १६ । वह प्रजापति
 अपनी रक्षाके निमित्त पितामह के पासगया और कहा कि हे भगवन् उनलोगोंसे
 मेरी रक्षाके लिये उनकी जीविका विचारकरो । १७ । इसकेपीछे पितामहनेउनकी
 जीविका के लिये धन्न औषधी और स्थावरजीवदिये और वनवान लोंगोंके अर्थ
 चेष्टाकरनेवाले और निर्बल जीवदिये । १८।यह उत्पन्न होनेवाली सृष्टि जिनके अर्थ
 धन्न विचार कियागयाया अपने स्थानों को गई हे राजा इसकेपीछे अपने उत्पत्ति
 स्थान माता और पिता आदिक में प्रीति करनेवाले वह प्रजापति लोग घृद्धिपुक्त
 हुये फिर जीवसमूहों के वृद्धिपाने और लोकगुरुके भी प्रसन्नहोनेपर वह महापुरुष
 जलसेठठे और उन सृष्टियों को देखा । २० । बहुत रूपवाली सृष्टिके लोग उत्पन्न

Seeing Shiv merged in water, he said to his father, "Because I am the first-created being, I shall bring forth all creatures." Brahma said, "Really there is no other being born before you, for Shiv is merged in water; you may bring forth all creatures. So he brought forth the seven Prajapatis, Daksh and others, who brought forth creatures of four sorts 15. All the creatures, as they were born, became oppressed with hunger and ran towards the Prajapati to eat him up. He sought protection of Brahma and asked him to provide them food. Then the grandfather created food, medicines and other plants as well as weaker creatures for the use of the stronger. Having got food, they went to their own places. The Prajapatis loving their parents, multiplied in

अथा । क्रुक्रोधः भगवान् प्रो लिङ्गे स्वश्चापविधत्त ॥ २१ ॥ तत प्रथितं तथा समौ
 तथैव प्रत्यतिष्ठत् । तमुच्चाध्याव्ययो ब्रह्मा वचोभिः शमयन्निव ॥ २२ ॥ किं कृतं सञ्जिह्वे
 स्रवं धिरकालभियतेन ते । किमर्थञ्चेद्मुत्पाद्य लिङ्गं भूमी प्रवेरितम् ॥ २३ ॥ सोऽत्र
 घोह्र जातसरम्भस्तथा लोकगुरुर्गुरुम् । प्रजा सृष्टाः परेणेमाः चिकरिष्याम्यनेन वै
 ॥ २४ ॥ तपसाधिगत चान्नं प्रजाय मे पिनामह । अपथ्य परिषर्त्तेरन् वथैव सततं
 प्रजा ॥ २५ ॥ एवमुक्त्वा स सक्रोधो जगाम विमना भव । गिरंमुञ्जतः पादं तप
 क्षण्णुं महातपाः ॥ २६ ॥

इति भीमोत्तमोऽध्यायः ॥ १० ॥



होकर अपने तेजसे वृद्धियुक्तथे तब भगवान् रुद्रजी क्रोधयुद्धे और अपने लिंगको
 भीकाटकर पृथ्वीपर इसनिमित्त गिराया । २१ । वह जैसेटूटा उसीप्रकार पृथ्वीपर
 निपतहुआ वचनोंसे शान्त करते आविनाशी ब्रह्माजी बोले । २२ । हे रुद्रजीबहुन
 काल पर्थ्यन्त आपने जलमें निवास करके क्याकिया और किसनिमित्त इसलिंगको
 उखाड़कर पृथ्वी में नियत कियाहै । २३ । वह लोकगुरु महाक्रोधित होकर गुरु
 से बोले कि यह सब समृष्टि उत्पन्न होगई है अब मैं इसलिंगमे क्याकरूंगा । २४ ।
 हे पितामह मेरे तपने प्रजाके निमित्त अन्न प्राप्तहुआ और आपकी सदैव अपने
 रूपान्तरको करतीरहै गी जिससे कि समृष्टि सदैव होतीरहै । २५ । वह विमन
 और क्रोधयुक्त बड़े तपस्वी रुद्रजी इसप्रकारसे कहकर मुंजवत पहाड़के समीप
 तपकरनेको गये २६ ।

large numbers. When the creatures were thus increasing and Brahma was pleased in his mind, Sh v came out of water and saw the creation
 20 He saw the world full of creatures and being much enraged cut
 asunder his male organ and dropped it on the earth. It stood up
 erect as soon as it was cut down. Then wishing to appease his wrath
 Brahma said, "What have you done by staying so long under water
 and why have you cut and erected this organ of yours?" Then Shiv
 gave him the following reply in anger, "The world has been created
 (in spite of me). What shall I do with this thing? The food has been
 created by my own asceticism and medicinal herbs will continue to change
 forms and give nourishment to the world." Having said this, the great
 ascetic, dejected in mind, went to perform asceticism near Muniyat
 hills. " 26

मगवानुवाच । ततो देवयुगेति ते देवा वि समकल्पयन् । यज्ञं वेदममाणं विधिष्व
 यष्टुमन्सवः ॥ १ ॥ कल्पयामासुरथ ते साधनानि हवीषि च । भागार्हा देवताश्चैव
 यद्वियं द्रव्यमेव च ॥ २ ॥ ता वि दद्रमजानभयो यायातथ्येन विद्यताः । नाकम्पयन्त
 देवस्य क्थाणोर्मर्गं नराविप ॥ ३ ॥ सोऽकम्पमानेभागे तु कृत्विषासा मन्वेऽमरेः ।
 ततः साधनमग्निच्छन्दं धनुरादौ ससज्जह ॥ ४ ॥ लोकयज्ञं क्रियायज्ञो गृहयज्ञ
 सनातनः पञ्चसूतमयोयज्ञो नृयज्ञश्चैव पञ्चमः ॥ ५ ॥ लोकयज्ञं नृयज्ञं च कपर्दी विद्धेधनुः ।
 धनुःस्रष्टमभूत्तस्य पञ्चकिष्कुमनागतः ॥ ६ ॥ धपटकारो भवज्जवातुधनुपस्तस्य भारतायज्ञा
 क्लानि च चरवारि तस्य सप्रहनेऽभवत् ॥ ७ ॥ ततः क्रुद्धो महादेवस्तदुपादाय कामुं
 कश्चिं भाजगामाय तत्रैव यत्र देवाः समीजिरे ॥ ८ ॥ मतात्तकामुं क इष्ट्वा ब्रह्मचा
 रिणमभ्यवत् ॥ विष्वयं पृथिवी देवी पर्वताश्च चक्रिरे ॥ ९ ॥ न वधौ पवनश्चैव नाग्नि

अध्याय १८ ॥

श्रीभगवान् बोले कि सतपुगके अन्त होनेपर विधिके पूजनकरनेके अभिलाषी
 देवताओं ने वेदके मयाणसे पञ्चको विचार किया । १ । फिर उन्होंने ने सब साधनों
 को धनेशों को भागके योग्य देवताओं को और योग्यकी द्रव्योंको कल्पना किया
 । २ । हे राजा मूलसमेत रुद्रजी को न जाननेवाले उन देवताओं ने देवता रुद्रजी
 के भागको विचार नहीं किया । ३ । यज्ञमें देवताओंसे भागका विचार न करने पर
 पञ्चके नाशको चाहनेवाले उन रुद्रजीने प्रथम धनुषको उत्पन्न किया । ४ । लोक
 यज्ञ, क्रियायज्ञ, गृहयज्ञ, पञ्चभूत नरयज्ञ, इन चारप्रकार के यज्ञों में यह सब जगत्
 नियत है । ५ । रुद्रजीने लोकयज्ञ और नरयज्ञों से धनुषको तैयार किया उनका
 उत्पन्न कियाहुआ धनुष मार्गमें पांच हाथहुआ । ६ । हे भरववंशी उसधनुष की
 प्रत्यंवा चपटकार प्रत्येक वासनारूपहुआ यज्ञोंके चारों अंग उसकी दृढतारूपहुया । ७
 उसके पीछे क्रोधयुक्त महादेवजी उसधनुषको लेकर वहां गये जहांपर कि देवता
 लोग यज्ञ कर रहेथे । ८ । उस धनुष उठानेवाले अविनाशी ब्रह्मचारी को देखकर
 पृथ्वी देवी पीड़ित हुई और पर्वत कम्पायमान हुये । ९ । वायु नहीं बली और

CHAPTER XVIII

Shree Bhagwan said, ' At the end of Satyug the gods intended to perform a sacrifice according to the Vedic rites in honour of Brahma. They collected all materials and set apart gods' portions. Not knowing Rudra well, they dedicated nothing to him. At this, Rudra created the bow to destroy the sacrifice of gods. The world exists by four sorts of Sacrifices known as lok-yagya, liya-yagya, griha-yagya and Panchbhut nar-yagya. 5. Rudra prepared the bow from lok and nar yagyas. It was five cubits in length. Its string was made of Vashatkar and was exceedingly strong. Armed with that bow Rudra went to the place of sacrifice. The earth and mountains shook at the sight of that immortal Brahmchari armed.

वर्षायाल वैभितः । व्यन्नमन्वापि सीघ्रं दिवि नक्षत्रमण्डलम् ॥१०॥ न चमौ भास्कर
 ध्यापि सोमः श्रीमुक्तमण्डलः । तिमिरे नाकुलं सर्वमाकाशञ्चामघद्वयम् ॥११॥ अग्नि
 भूतास्ततो देवा विपद्याश्च प्रजावरे । न प्रत्यमाच्च यतः स देवतास्त्रेसिरे तदा ॥१२॥
 ततः स पक्षे विपद्याश्च रौद्रेण हृदि परिणा । अग्नान्तस्ततो यज्ञो मृगो भूत्वा सवा
 वकः ॥ १३ ॥ स तु तेनैव रूपेण दिवं प्राप्य स्यराजत । अन्वियमानो रुद्रेण युधि
 थिरनमस्तले ॥ १४ ॥ अपक्रान्तेततो चतः सखा न प्रत्यमात् सुरात् ॥ नृदसेवेष्ट
 देवेषु न प्राणार्थे किञ्चन ॥ १५ ॥ अग्निः सवितुर्वाह भगव्य नयते तथा । पुण्यश्च
 दशानात् कुड्यो धनुःकोट्या ध्वशातपत् ॥ १६ ॥ प्राद्वन्त ततो देवा यज्ञागानि च
 सर्वेशः । केचित्तत्रैव घूर्गन्तो गतास्य इवामवत् ॥ १७ ॥ स तु थिद्रोव्य तत्सर्वे शिति
 कण्ठो वद्वश्य । अवद्वश्य धनुःकोटिं शरोध वितुषास्ततः ॥ १८ ॥ ततो यानमरेवका

वृद्धियुक्त अग्नि ज्वलित नहीं हुई और स्वर्गमें व्याकुल नक्षत्रमण्डल भ्रमण करने
 लगे । १०। सूर्य और शोभायमान चन्द्रमण्डल भी मकाशमान नहीं हुये तब माकाश
 अन्धकार से व्याप्त हुआ । ११। इसके पीछे आकुल देवताओंने विपथोंको नहीं
 जानां सब वह यज्ञ गुप्तहुआ और देवता भयभीत हुये । १२। इसके पीछे उन्हें ने
 यज्ञको रुद्रवापसे हृदयपर धारलीकया इसके पीछे वह यज्ञ मृगरूप शीवरअग्निसे
 भाग गया । १३। हेयुधिथिर फिर वह बहीरूपसे स्वर्गको पाकर आकाशमें शोभाय
 मान हुआ फिर कालात्मा रुद्रजीसे पीछा किया हुआ वह यज्ञ फलके भोगके पीछे
 स्वर्गसे पतित हुआ १४ इसके पीछेयज्ञके भागनेपर देवताओंका ज्ञान मकूट नहीं
 हुआ और देवताओंके अचेत होनेपर कुछनहीं जाना गया । १५ अग्नि परमेश्वरने
 सविता अर्थात् यज्ञ करनेवाले के शरीर की सुगाओंको और भगके नेत्रोंको पुषाके
 दाँतोंको पुषाके धनुषकी कोटि से गिराया । १६। इसके पीछे देवता और यज्ञोंके
 सब अङ्गभोग और कितनेही वहां घूर्णतेहुये निर्जीवके समान हुये । १७। उन रुद्रजी
 ने उस सब यज्ञको अङ्गोत्तमेत भगाकर ईसकर धनुषकी कोटिको निष्कर्म करके
 देवताओंको रोका अर्थात् लोक और शरीरकी मीतिसे मथकाडिया । १८। इसके

with bow. The wind did not blow, fire ceased to burn and stars
 began to turn round restlessly. 10. The sun and the moon lost
 their splendour and the sky became dark. The gods did not know
 what to do in their terror-stricken state and the sacrifice vanished.
 Rudra pierced the sacrifices with his arrow and it fled away with Agni
 in the likeness of a deer. It stood in the sky in that shape, chased
 by Rudra it fell down again at the lapses of its merits. The gods lost
 their senses and did not know what to do. Parameshwar cut the arms
 of Savita, the eyes of Bhag and the teeth of Poesha with the point
 of his bow. 16. The gods scampered in terror, while some became
 motionless like inanimate things, Shiva with a smile checked the gods
 and removed his bowstring. Separated from the string the bow

वर्षा तस्य धनुसंच्छिनत् । अथ तत् सहसा राजन् छिन्नज्यं व्यस्फुरत्क्षुः ॥ १९ ॥ ततो
 विचतुषे देवा द्वेषेष्टमुपागमन् । शरणं सह यज्ञेन प्रसादञ्चाकरोत्तमः ॥ २० ॥ ततः
 प्रसन्नो भगवान् स्थाप्य क्रोध जलाशये । स जलं पाथको मू वा शोषयत्यनिशं प्रभो
 ॥ २१ ॥ भगस्य नयने चैव वाहू च सधितुलया । प्रादात् पूषणश्च दशनाद् पुनर्वसोश्च
 पाण्डव ॥ २२ ॥ ततः सुरुषमिदं सर्वं यभूव पुनरेव हि । सर्वाणि च हर्षाण्यस्य देवा
 भागमकल्पयन् ॥ २३ ॥ तस्मिन् कुले मधत् सर्वमस्वस्त्वं भुवं न प्रभो । प्रसन्ने च पुनः
 स्वस्तिं प्रसन्नोस्य च धीर्यवान् ॥ २४ ॥ ततस्ते निहताः सर्वे तव पुत्रा महारथाः ।
 मन्धे च बहवः शूरः पाञ्चालाः सपदानुगाः ॥ २५ ॥ न तस्मिन्सि कर्त्तव्यं न च
 तैर्द्रीणिना कृतम् । महादेवप्रसादः स कुग कार्त्तव्यमनन्तरम् ॥ २६ ॥

इति सांक्षिप्यपर्वणि ऐषिकपर्वणि कृष्णयुधिष्ठिरसंवादे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

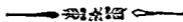
पीछे देवताओंकी कहीहुई क्षणिते उनकेधनुषकी प्रत्यञ्चाको जुदाकिया हेराजा
 फिर प्रत्यञ्चासे जुदा वह धनुष अकम्पात् कुछ चलायमानहुआ । १९ । इसके
 पीछे यज्ञसंभेव सब देवता उस देवताओं में श्रेष्ठ और धनुषसे रहित ईश्वरकीशिरण
 में गये और प्रभुने कृपाकरी । २० । इसकेपीछे भगवानक्रोध त्रिगुणरूपकी समुद्र
 प्रज्ञानचिन्तमें नियतकरके प्रसन्नहुये हेसमर्थ वहक्रोध अरुस्पात् अग्निहोकर जलको
 पान करताहै । २१ । हे पाण्डव फिर भग देवताके मन्त्रों को और सविताकी
 भुजाओं को पूषा के दातोंको और यज्ञोंको दिया अर्थात् सात्विकयज्ञ जारीहुआ
 । २२ । उसके पीछे यह सब जगत् फिर स्थिरचिच हुआ और देवताओंने सब हव्यों
 को उसका भाग नियत किया अर्थात् सब कर्म ईश्वरार्पण किये गये । २३ । हे
 प्रभु युधिष्ठिर उसके क्रोधयुक्त होनेपर सब संसार व्याकुलहुआ और प्रसन्न होनेपर
 फिर स्थिर हुआ वह पराक्रमी शिवजी उसके ऊपर प्रसन्नहुये । २४ । उस कारख
 से आपके वह सब महारथी पुत्र और धृष्टद्युम्न के पीछे चलनेवाले बहुतसे अन्य
 शूरवीर मारेगये । २५ । वह चिन्तमें नहींधारण करना चाहिये उसको अश्वत्थामाने
 नहीं किया अर्थात् सब ईश्वरके आधीनहै शोक न करना चाहिये महादेवजी की
 प्रसन्नतासे निस्सन्देह श्री धर्मपूर्वक करनेके योग्य कर्मोंको करो । २६ ॥

suddenly jumped a little Enon all the gods with the sacrifice sought
 refuge of Shiv and he was merciful. 20. Then he placed his anger in
 the ocean of ignorant minds. It eats the mind as fire does water.
 Then he restored the herbs of gods and the sacrifice began. Then the
 world became satisfied and the gods set apart his share. The world
 was agitated with his anger and was restored to equilibrium at his
 pleasure. Shiv was pleased with Ashwathama and therefore he
 could slay Dhrishtadyuma and your sons. It was not the work of
 Ashwathama but that of Shiv and therefore you should not be
 sorry." 26.



महाभारत

॥ अथ जलप्रादानिकपर्व ॥



नारायणं नमस्कृत्य नरोत्तमं नरोत्तमम्
देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत् ॥

जनमेजय उवाच इते दुर्योधने चैव इते सैन्ये च सर्वशः । धृतराष्ट्रो महाराज
शुश्रा किमकरोमुने ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मपुत्रो महामनाः । कृपमभूतपञ्चैव
किमकुर्वत ते अथ ॥ २ ॥ अश्वथाम्नः श्रुतं कर्म शापादन्योन्यकारितात् । वृत्तान्त
मुत्तरं हृदि यद्भावत सञ्जयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । इते पुत्रशते वीरिणोऽपि

अथ श्रीपर्व ।

अध्याय ॥ १ ॥

श्रीनारायण और नरोत्तम नर को आर सरस्वती देवीको नमस्कार कर के फिर जयनाम इतिहास को बर्णन करता हूँ जनमेजय बोले कि हे मुनि दुर्योधन के मरने और सब सेनाके नाश होजाने पर महाराज धृतराष्ट्र ने सुनकर क्या किया । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र राजा युधिष्ठिर ने और उन कृपाचार्यादिक तीनों ने क्या किया । २ । आपके कहने से अश्वथामा का कर्म सुना परस्पर शाप देनेसे पीठिका जो वृत्तान्त संजय ने कहाई उसको आप मुझे बर्णन कीजिये । ३ । वैशम्पायन बोले कि सौ पुत्रों के मरने पर दूटी शाखाओं के वृक्ष समान

STRIPARV

CHAPTER I

Having bowed down to Narayan, Nar the best of male beings and goddess Saraswati, let us undertake the history of the great victory. Janmejaya said, "What did Dhritrashtra do at the death of Duryodhan and the destruction of all the army? What did Yudhishtira and the three warriors, Kripacharya and others do? I have heard of the deed of Ashwatthama; what was the state of things after he was cursed?" Vaishampayan said "At the death of his hundred sons,

शास्त्रनिव दुमम । पुत्रशोकानिसम्पत्ते धृतराष्ट्रं मदीपतिम् । ध्यानमूकत्वमापन्नं
 चिन्तया साभिच्छुभम् ॥ ४ ॥ अभिगम्य महा प्राक् संकयो वाक्यम
 प्रधीत् । किं शोचसि महाराज नास्ति शोके सहायता ॥ ५ ॥ अक्षौ
 द्विषो इनाचाट्टौ वत्त चैव विशाम्पते । निजर्जनेयं यमुमनी शून्या संप्रति केवला ॥ ६ ॥
 नानादिभ्यः स सागम्य नातादेश्या नराधिपाः । साहितान्तव पुत्रेण सर्वे वै निघनेतताः
 ॥ आपितृणापुत्रगोत्राणां शतीनां सुदृशान्तयागुरु मास्त्वानुपूर्णेणभितकार्याणि कारय ॥ ८ ॥
 वैशम्पायन ववाच हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुदृज्जनः अपातभुविदुर्घर्षो वाताहतइव
 इम ॥ ९ ॥ धृतराष्ट्र उवाच हतपुत्रो हतामात्यो हतसर्वसुदृज्जनः । दुःखी नूनं मविष्यामि
 विवरत् पृथिवीमिमाम् ॥ १० ॥ किन्तु चन्द्रुपिहीनस्य जपितेन ममाद्य वै । लूनपक्षस्य
 इव मे जगज्जीर्णस्य पक्षिणः ॥ ११ ॥ हृतराज्यो हतपुत्रोऽर्तचक्षुश्च पै तदा । नृप्राजपते

दुखी और पुत्रशोक मे पीड़ावान ध्यान मौनता युक्त चिन्तामे डूबेडूबे पृथ्वी के
 स्वामी महाराज धृतराष्ट्र के पाव जाकर संजपने यह बचन कहा हे महाराज क्या
 शोचते हो शोकमे सहायता नहीं होसकती हे । ५ । हे राजा अठारह अक्षौहिणी
 सेना मारीगई अरु यह पृथ्वी सेना के लोगों से और राजाओं से रहित होकर
 पित्रों से विहीन हे । ६ । क्योंकि नानादेशके राजाओं ने बहुत दिशाओं से
 आकर सपने आपहे पुत्र के साथ नाशतो पाया । ७ । अरु आप अपने पुत्र
 पौत्र ज्ञानि सुदृढ़ और सब कौरवोंके किया कर्मको कराइये ८ वैशम्पायनबोले कि
 पुत्र पौत्राधिकों के मरने से पीड़ावान् बड़ा अनेप धृतराष्ट्र उस शोक कारी बचन
 को सुनकर पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जेहेति थासे तजिन दक्ष गिरपड़ताहे । ९ ।
 धृतराष्ट्रबोलेकि जिनके पुत्र मंत्री और सब सुदृज्जनमारोग्ये ऐसा में होकर सम्पूर्ण
 पृथ्वीपर बिचरुंता १० अठारहे पक्षयाने पक्षा के सभान मुष्कटद दशमे दुर्लभ
 बांधवोंले रहित के जीवन से क्या प्रयोजनहे हे महाभाग राज्य सुदृज्जन अरु तैयों
 से रहित मैं ऐसा शांभित नदीहंगा जेकेकि जिना किरण वाना सूर्य अशोभित

Dhritrashtra, full of grief, like a tree destitute of all branches, was sitting in deep meditation and silence. Sanjaya came to him and said, "What are you thinking about, Duperior? Grief can be of no help. 5. Eighteen akshauhins have been destroyed and the earth has become destitute of warriors, prince and friends. Princes of different lands came here and were destroyed with your son. You have now to perform the funeral rites of your sons, grandsons and other kauravas." Dhritrashtra fell down on the earth like a tree uprooted by wind and said, "I shall now roam on the earth destitute of sons, friends and advisers. 10. What is the use of living like a featherless bird in my old age? Destitute of kingdom, friends and eyes, I shall look inglorious like the sun without his rays. I did not act upon the advice

महामातृ क्षीणरादिमरिवांशुमान् ॥ १० ॥ न कर्तं सुहृदां धाक्यं जामदग्न्यस्य जल्पतः ।
 नारदस्य च देवेषुः कृष्णद्वैपायनस्य च ॥ ११ ॥ सभामाये च कृष्णेन यत् धेयोभिर्हृत्
 मम। वलं वरेण वे राजन् पुत्र संश्रुतामिति । तच्च वाक्यमकृत्वात्र भूत् तत्पर्याप्त
 दुर्मतिः ॥ १२ ॥ न हि श्रोतास्मि मांस्मस्य धर्मयुक्तं प्रभावितम् । दुर्व्योधनस्य च तथा
 वृषभस्येव तर्ह्यतः ॥ १५ ॥ दुःशासनवचं श्रुत्वा कर्णस्य च विपरीतयम् । द्राण स्वयं
 परागञ्च हृदये मे विशीर्यते ॥ १६ ॥ न स्मर म्यात्मनः किञ्चित् पुरा सञ्जय दुष्क
 तम् । वस्येद्द फलमद्यह मया मूढेन मुज्यते ॥ १७ ॥ नूनं व्यपकृतं किञ्चित्मया पूर्वेण
 जन्मसु । येन मां दुःखमागेषु घाता कर्मस युक्तवान् ॥ १८ ॥ परिगमञ्च वयसः सर्व
 यन्धुक्षयश्च मे । सुहृन्मिप्रविनाशश्च देवयोगानुपागत । कोन्वसि दुःखिततरो मत्तोभ्यो
 हि पुमाद भुवि ॥ १९ ॥ तन्मामयेन पश्यन्तु पाण्डवासंशितमतम् । विवृत्तं ब्रह्मलोकस्य
 दीर्घमज्ञानमास्थितम् ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच । तस्य लाळ्यवमातस्य बहुशाकं

होताह १२ परशुरामजी देवञ्चपिनारदजी और व्यासजी इन शुभचिन्तकोंके कहे
 हुये बचनोंको नहींकिया । १३ । सभाके मध्यमें गा कृष्णजीने मेरेकस्याणका कर
 ने आज्ञा वह बचन कहाथा कि हेराजा शत्रुताकोत्यागो और अपने पुत्रको बन्धन
 में करो उनके बचनोंको भी न करके मैं दुर्व्युद्धी भय कठिन दुःखको पाताहूँ और
 धर्मने संयुक्त भीष्मजी केभी बचनको मुझअभागे ने नहींसुना राजाओंमें दुर्व्यो
 धनका नाश दुःशासन का मरण कर्णका विपरीत मरण और द्रोणाचार्यरूप सूर्य
 के शरणको अनकर मेरा हृदय फटता है । १६ । हेसंजय पूर्वसमयके कियेहुये
 रूपनेकुछ पापों को नहींजानताहूँ निमके किफलको अग मैं दुर्भागो भोग
 रहाहूँ । १७ । निश्चय कर के मैंने पूर्व जन्मों में बड़े पाप किये हैं जिसके कारण
 से ईश्वर ने मुझको दुःख उत्पन्न करनेवाले कर्मों में मग्न किया । १८ । मेरी
 अदृष्टाकारा अन्तिम भाग पुत्र पौत्रादिकों का नाश और सुहृद धंधुओं का मरना
 देवयोगमे है धूमरी रीतिसे नहीं है हम ले कर्म मुझमे अधिक दुखी दूसरा कौन
 पुरुष है । १९ । हे तेजव्रत वह सब पाण्डव लोग मुझको उस ब्रह्मलोक के मिलने
 और बड़े मार्गमें निपन्नहुये को देखेंगे । २० । वैशम्पायन बोले सञ्जयने हम

of Parashuram, Narad and Vyas, my well wishers. Krishna told me to give up enmity and to cast my son in prison, but I did not act up on his advice and have fallen into this trouble. I did not give ear even to the advice of Bhishm. My heart breaks to hear of the death of Duryodhan, Dushasan, Karan and Drona. 16 I donot know for what sins of my previous life I am being punished, Surely I have committed grievous sins for which I have fallen into this misery. The great destruction of kinsmen and friends in my old age could not be caused but by Fate. Who can be more full of misery than me? The Pandavas will now see me preparing for the next world. " 20 Vai.

वितन्वन्तः । शोकापद् नरेन्द्रस्य सद्भवो बाह्यमहर्षीत् ॥ २१ ॥ शोकं
 राजसूयपनुद् भुतास्ते वेदनिश्चयाः । शाखागमाश्च विविधा वृद्धेभ्यः नृपसत्तम ।
 सुश्रये पुत्रशाकांतं यद्वृद्धमुत्तमः पुग ॥ २२ ॥ यथा यौवनकंदर्पमास्थिते ते सुते
 नृप । न त्वया सुहृदां वाक्यं ब्रूवताम वधारितम् । स्तार्यश्च न कृतः कश्चिल्लुब्धेन फलं
 मुञ्जिना ॥ २३ ॥ अस्मिन्वैकवार्येण स्वहृद्व्या तु विचेष्टितम् । प्रायशोऽनुत्सस्य जाः
 सततं पर्युपासिताः ॥ २४ ॥ यस्य दुःशासनो मन्त्री राधेयश्च दुरात्मवान् । शकुनि
 श्वेध दुष्टात्मा चित्रसेनश्च दुर्मतिः । कृण्वन्श्च वेन वै कथं शक्यभूतं कृतं जगत् ॥ २५ ॥
 कृष्णस्य भीष्मस्य गान्धार्वा विदुरस्य च । द्रोणस्य च महाराज कृपस्य च शरद्वतः
 ॥ २६ ॥ कृष्णश्च च महाबाहो नारदस्य च भीमलः । ऋषीणाञ्च तथाभ्येषां इयाञ्च
 स्यामिततेजसः । न कृणुतेन चञ्चनं तव पुत्रेण भारत ॥ २७ ॥ अस्मद्भ्रातृहरिकारी

विलाप करनेवाले और अनेक प्रकारसे शोकके विस्तार करनेवाले राजाधृतराष्ट्र के
 शोकका दूर करनेवाला बचन कहा कि । २१ । हेराना शोकका दूरकरो तुमने
 बहुतसे धर्मके निषय सुने हैं हे राजार्थों में श्रेष्ठ तुमने दृढ़ों से भी अनेक प्रकारके
 शास्त्र सुने हैं कि पूर्वसमयमें बुत्रके शोकसे राजासृञ्जय के पीड़ावान् होनेपर मुनि
 यौने जो कहा । २२ । और जिसप्रकार तरुणता के महंकारमें आपके पुत्रदुर्योधन
 के निपत होनेपर ऋषियोंने शोकहा उसको भी सुना । २३ । जोतुमने वाचांलाप
 करनेवाले अपने गुभचिन्तकोंके बचनोंको नहीं जगोकार किबा रोगी और हतबुद्धी
 होकर तुमनेकोई अपना प्रयोजन नहींकिया । २४ । आपने केवल एकधाररसनेवाली
 तलवार के समान अपनी ही बुद्धिसे सब कर्माकिये और बहुधा दुराचारी लोगोंको
 सलाहकार करने के निमित्त समीप बैठाया २४ दुश्शासन दुर्बुद्धी कर्ण बड़ा दुष्ट
 तथा शकुनी दुर्मति चित्रसेनऔर शक्य किसके मन्त्री हैं जिस शरद्वने सब जगत्को
 भालरूप किया । २५ । हे महाबाहू महाराज भरतवंशी धृतराष्ट्र आपके वस पुत्रने
 कौरवोंके दृढ़भीष्म पितामह, गान्धारी, विदुर, द्रोणाचार्य, कृपाचार्य, श्रीकृष्णजी
 बुद्धिमान् नारदजी और षट्तेजस्वी व्यासजी आदिअन्य २. ऋषियोंका भीवचन
 नहींकिया जोकि निबुद्धी महंकारी मदैव पुत्रको कबता निर्दयी अजेयपराक्रमी

shampayan said, that Sanjaya consoled the monarch in the following words:—" Cease your grief, king You have heard many religious precepts from old men as well as that which the munis said to Sanjaya who was oppressed with grief for his son. You also heard the talk of the sages about your son Duryodhan's pride. You did not attend to the advice of your well wishers and have therefore thrown yourself into misery. Like an edged sword you were self-willed and kept company with wicked men like Dus'hasan, Karan, Shakuni, Chittraen and Shalya the thorn of the world. Your son gave no ear to the advice of old Bhishm, Gandhari, Drona, Krija, Shri Krishr, wise Narad, glorious Vyasa and other sages. He was unwise, proud, war-

नित्यं युद्धमिति सुवम् । क्रूरो दुर्मर्षो गिरयनस्तनुष्ट्र धीर्यवान् ॥२८॥ अतुल्यबलः
 मेधावी सत्यवर्धिव निरपदा । न मुह्यन्तीदृशा खन्ती भयादृशाः ॥ २९ ॥ न धर्मं सत्
 कृतं कश्चिन्निरयं युद्धमिति सुवम् । संपिताः इमियाः सर्वे शत्रूणां बद्धितं वच ॥ ३० ॥
 मर्षहेयो हि त्वमप्यासीनेक्षमं किञ्चिदुक्तवान् । कुर्सेरेण स्वयां मारस्तुलया न समं
 धृतः ॥ ३१ ॥ आदायेष मनुष्येण कर्षितव्यं यथाक्षमम् । यथा नारीतमर्थं वै पश्चात्ता
 पेन युज्यते ॥ ३२ ॥ पुत्रपुत्रपत्न्या राशम् प्रिय तस्व चिकीर्षितम् । पश्चात्तापमिमं
 प्राप्नो न त्वं शोषितुमर्हसि ॥ ३३ ॥ मधु बः केवलं हृष्ट्या प्रपातं नानुपश्यति । स
 अष्टो मधुलोभेन शोषरथेयं यथा भवान् ॥ ३४ ॥ अर्थान्न शोचन् प्राप्नोति न शोचन्
 विन्दते फलम् । न शोचन् त्रिपमप्नोति न शोचन् विन्दते परम् ॥ ३५ ॥ स्वपशुत्पाद
 यिरवाग्निं घञ्जेण परिवेष्टयन् । दृष्टमानो मनस्तापं भजते न स पविदतः ॥ ३६ ॥ स्वयम्

और सदैव अज्ञानतासे असंतुष्टथा । २८ । तुम सदैव शास्त्रज्ञ और शास्त्रके स्मरण
 रक्षनेवालेबुद्धि के स्वामी और सत्यवक्तारो ऐसे आप सरीसे बुद्धिमान सन्तलोग
 मोहको नहीं पातेहैं । २९ । सदैव युद्धको कहनेवालेने कोई उत्तम और शुभकर्म नहीं
 किया सब क्षत्रियोंका नाशकिया और शत्रुओंका यशवहाया । ३० । तुमभी सबके
 मर्षस्वहृये परन्तु कोई उचितपात नहींकरी हेभजेय तुमने स्नेह और प्रीतिकी तुला
 कोसमान नहीं रखता । ३१ । प्रारम्भमेंही मनुष्यको उचितकर्म करना इसनिमित्त
 योग्यहै जिससे किभूतकालका प्रयोजन पश्चात्तापसे युक्त नहोय । ३२ । हेराजा
 तुमने पुत्रकी प्रीति से पुत्रका हित और प्रिय करना चाहताथा फिर पीछेसे इस
 दुःखकोपाया तुम शोचने के योग्य नहींहो । ३३ । जोपुरुष केवल शहदकरे देखकर
 अपने गिरनेको नहीं देखता है वह शहदके लोभसे निराहुभा पेंने शोचता है जैसे
 किसान शोषतेहै । ३४ । शोचताहुआ पुरुष न मनोरथको पाताहै न फलको पाता
 है न कल्याणकोपाताहै और न ब्रह्मको पाताहै । ३५ । जोपुरुष अपनेभाप अग्निको
 उत्पन्न करके बख्ते ढकता और जलता हुआ चित्त के दुःखको धारण करताहै वह
 पविदत नहींहै । ३६ पुत्रकेसाथ तुम्हारे वचनरूपशायुने प्रेरित लोभरूपी धृतसेसीचा

loving, invisable, brave and unsatisfied. You are learned, wise and
 truthful. People like you need not be fatuous. He loved fighting
 and never did any good. He caused the destruction of warriors and
 increased the fame of enemies. 30. You presided the councils, but
 never said what was proper. Your words were always biased on
 account of fondness. One should always do what is proper from the
 outset in order to avoid the pangs of remorse. You have fallen into
 misery because you were so fond of your son and are there ore not
 worth pitying. An avaricious man, who climbs up a tree for the
 sake of honey and falls down from a great height, feels remorse like
 you. Such a one reaps no secular or religious benefit. 35 He is

ससृतेनायं धाक्यषायुसर्गिरितः । खोभाष्येन च ससिको ज्वलितः । पार्थपावकः ॥ ३७ ॥
 ताहिमन् समिद्धे पतिताः । शलभा इव ते मुता । तान् वै क्षराग्निनिर्द्दिग्बाध त्व शोचि
 तुमर्हसि ॥ ३८ ॥ पञ्चाशुभानान् जलिलं वदनं गहसे नृप । अशारुद्रप्रेतद्वि न प्रमं
 सन्ति षण्डिताः ॥ ३९ ॥ विरुद्रकिष्का इव ह्येतान् ददन्ति किलमानघान् । अहीहि 'मभ्युं
 बुद्ध्या वै धारयात्मानमात्मना ॥ ४० ॥ एवमाश्वासितस्तेन सञ्जयेन महात्मना ।
 विबुरो भूय एवाह युधिष्ठिरं परन्तप ॥ ४१ ॥

इति खोपर्वीण्य जलप्रादानिकवर्षाणि धृतराष्ट्राश्वांसने प्रथमोऽध्यायः ॥ १ ॥

दुःभायह पाण्डव रूप आग्निरूप प्रज्वलित हुआ है । ३७ । उस प्रत्यन्त वृद्धियुक्त
 अग्निमें आपके पुत्र शलभनाम पक्षियोंके समानगैरे तुम बाणोंकी अग्निते भस्महो
 कर उनपुत्रोंके शोचकरनेको योग्य नहींहै । ३८ । हेपशु जोतुम अशुभावोंसे द्विस्त
 मुखको धारण करतेदे गहशास्त्रके विपरीतवैपाण्डवत्वेण इसकीप्रशंसा नहींकरतेहै । ३९ ।
 निक्षयकरके यह आँसू अग्निके स्फुल्लिङ्गोंके समान मनुष्योंको भस्मकरतेहैं वहाँतुम
 बुद्धिसे शोकको त्यागकरके अपने चित्तको स्वार्थीन करो । ४० । वैशम्पायन बोले
 किउन महात्मा संजय से इसप्रकार विश्वास दियागया इसके पीछे बुद्धिसे युक्त
 निदुरती यह वचन बोले ॥ ४१ ॥



not a wise man who himself makes fire and is burnt by it as he hides
 it with his cloth. The wind of your affectionate words to your son
 fed by the ghee of your avarice, caused the inflammation of the fire of
 Pandavas. Your sons fell down in its rising flames like moths and
 were burnt. You need not feel any sorrow for them. Your washing
 the face with tears is irreligious and unpraiseworthy. Surely these
 tears burn people like flames of fire. Curb your grief by your wisdom
 and control yourself." Vaishampayan said, "Thus consoled by San-
 jaya, the king was thus addressed by Vidur in the following words.—



वैशम्पायन उवाच ॥ ततोऽमृतमयैर्धामैर्हृत्वाद्यन् पुरुषप्रभम् । वैश्वित्रीवीर्यं
 विदुरो यदुवाच निबोध तत् ॥ १ ॥ विदुर उवाच । उत्तिष्ठ राजन् किं शोषे धारयात्मा
 ममारममा । एषा धे सर्वैश्च स्वानां लोकेश्वर परा गतिः ॥ २ ॥ सर्वैश्च यान्ता निबन्धाः
 पतन्मन्ताः समुच्छ्रयाः संयोगाविप्रये। गान्ता मरणान्तश्च जीविषम् । ३ ॥ यदा हारश्च
 भ्रौंश्च यमः कर्षति भारत । तत् किं न योः स्थितिः द्वि ते क्षयिया क्षत्रिययेभ ॥ ४ ॥
 अयुध्यमानो ध्रियने युध्वमानश्च जीवति । कालं प्राप्य महाराज न कश्चिदातवक्षते
 ॥ ५ ॥ अभावादीनि भूतानि मायमध्यानि भारत । अभावमिधनान्येष तत्र का परिदे
 वना ॥ ६ ॥ न शोचन्मृतमन्वेति न शोचन् ध्रियतं नरः । एष सांसिद्धिके लोके किमर्थे
 मनुशोचसि ॥ ७ ॥ कालः कर्षति मृतानि सर्वाणि विविधान्युत । न कालस्य प्रियः

अध्याय ॥ ३ ॥

वैशम्पायन बोले अप्रुतरूपी वचनों से पुरुषोत्तम धृतराष्ट्रको मसन्नकरके विदु
 रजी ने ओकहा उसको सुनो । १ । विदुरजीबोले हेराभा उठो क्यों सोतेहो बुद्धिसे
 मनकोआपोन करो सब जड़ चैतन्य जीवोंका यही निश्चयहै । २ । किसव मृष्टिसमूह
 अन्तमें नाशहोनेवालेहैं सब उदयहोनेवाले ऐश्वर्य अन्तमें पतनहोनेवालेहैं । मिलने
 वाले अन्तमें जुड़ेहोनेवालेहैं और जीवनभी अन्तमें मरखरखनेवालाहै । ३ । हे भरत
 वंशी जब यमराज शूरीर और भयभीतोंहो आकर्षण करताहै तो हेक्षत्रियोंमेंश्रेष्ठ
 फिर वह क्षत्रिय क्या नहींयुद्धकरतेहैं । ४ । युद्धको न करता मरताहै और लडता
 हुआ जीवता रहताहै हे महाराज कालको पाकर कोई उमको उल्लंघन नहीं करता
 । ५ । हे भरतवंशी सबजीव प्रारम्भमें ही अमररूप हैं मध्य में भावरूपहै और
 मरनेपर अभावरूप है ऐसे स्थानपर कौन विलाप है । ६ । शोचताहुआ
 मृतक के पीछे नहीं जाता है शोचताहुआ मनुष्य नहीं मरता है इस
 प्रकार लोकमें किस निमित्त शोच करतेहो । ७ । हेकौरवोंमें श्रेष्ठ यहकाल नाना
 प्रकारके सवजीवोंको आकर्षण करताहै फालका कोई प्यारहै न शत्रुहै । ८ । हे

CHAPTER II

Vaishampayan said, " Consoling Dhritrashtra with his nectar like
 words, Vidur said, " Rise up, king why do you weep ? Control your-
 self, for this is the goal of all beings. Every created being dies and
 every rise has a fall. Those who meet have to suffer separation, and
 life ends in death. Why should kshatryas shun war when death
 overtakes the bold and the coward ? A nonfighting man dies, while
 fighting man lives; who can escape death 5. When all the beings
 do not exist in the beginning and end, and only exist in the middle,
 why then should one weep for them ? Why do you lament when you
 knew that one who laments does not follow the dead. Death over-

फलिभ्रष्टेभ्यः कुरुक्षेत्रम् ॥ ८ ॥ यथा यायुस्तृणाग्निणि सवर्षयति सर्वम् । यथा
 कालवशा यान्ति भूतानि भरतर्षभ ॥ ९ ॥ एकसार्धप्रघाताना सर्वेषा तत्र गमिनाम् ।
 यस्व कालः प्रघात्यमे तत्र का परिदेवना ॥ १० ॥ न चाप्येतान् हतान् युद्धे राजन् शोषि
 तुमर्क्षसि । प्रमाणं यदि श्लाघ्नीणि गतास्ते परमां गतिम् ॥ ११ ॥ सर्वे स्वाम्यामवन्तो हि
 सर्वे च चरितव्रताः । सर्वे चाभिनुजा क्षीणास्तत्र का परिदेवना ॥ १२ ॥ अर्क्षानादा
 पतिता पुनश्चावर्शनं गताः । न ते तव न तेषां तव तत्र का परिदेवना ॥ १३ ॥ इतोपि
 बभूवो श्यां हृत्या च लभते वशः । उभय नो वदुगुण नास्ति निष्फलतारणे ॥ १४ ॥ तेषां
 कामदुःखार्थोकाग्निन्द्र सद्बुद्धयविष्यति । इन्द्रस्थातिघयो ह्येते भवन्ति पुरुषर्षभ ॥ १५ ॥
 न यदेदक्षिणावर्द्धिनं ततोभिर्न विषया । स्वर्गं यान्ति तमा मर्त्या यथा शूरा रणेहता
 ॥ १६ ॥ शरीराग्निघ्न शूराणां सुदुवुल्ले शराहुती । ह्यमाणाञ्छराश्चैव सेहस्तेऽरिष्वनो

भरतर्षभ जसेकि बाबु सवर्षकी नोकोंको उलटपलटकरता है उसी प्रकार सबजीव
 कालके आधीन होतेहैं । ९ । एकसाय आनेवाले आरं वहाँ जानेवाले सबजीवोंके
 मृत्युमें जिसके आगे कालजाताहै उसमें कौन विलाप करताहै । १० । हेराजा युद्ध
 मृतकदुःखे इनकीरोंके शोचकरनेकोभी शोर्षेनही इतमें श्लाघका प्रमाणहै किजन्होंने
 परमभक्तिकोपाया सब वेदपढ़नेवाले और सब अच्छे प्रकारसे व्रतकरनेवाले यहसब
 सम्मुखहोकर त्रिनाशवानुदुःखे इसमें किसवातका विलाप करनाहै । ११ । हायुमें कि
 आनेवाले प्रहते उत्पन्नहुवे और फिर उसी दृष्टिमें न आनेवालेको पाया यह न
 आपकेहैं न आप उनकेहैं तब कैसा त्रिनाशहै । १२ । मृतकभी स्वर्गको पाताहै और
 मरकरभी जिसको पाताहै हमलोर्गोंको यहदोनो बहुसुगुणवासेहै युद्धमें निष्फलता
 नहीं है । १४ । इन्द्र देवता उनके मनोरथों के प्राप्तकरनेवाले लोकोंको विचार करों
 गे हेपुरुषांसम यह सब शूरीर लोग इन्द्रके अतिवीदेनेहै । १५ । मनुष्य दासिया
 वाल्येयज्ञ तप और त्रिथा से उम प्रकार स्वर्गको नहीं पातेहैं जैसे कि युद्ध में मृतक
 उन शूरीर तेजस्वियों ने पायाहै जिन्होंने शरीररूपी आगियोंमें शरणरूप आहुति-

takes all. He has no friends or enemies. All beings are upset by death like the blades of grass by the wind. Why do you grieve when all men have to die? 10. You need not lament those who died in war, for according to our religious books they have gone to heaven. Those who read the Vedas and observe vows have to die, what is therefore to lament for? They came from eternity and were merged in Brahma. They and you did not belong to one another, why do you weep then? Both those who die or are slain in war are alike to us, there is nothing disadvantageous in fighting. Indra will decide the fate of the warriors, they are to be his goats. 12. Not even those who perform such a great duty, get such regions as are obtained by those who do fighting. A kshatriya has no easier way to

मिथः ॥ १७ ॥ एवं राज्ञस्तथाचक्षे स्वर्गोपस्थानमुत्तमम् । न युद्धादाधिकं क्षिप्रं क्षत्रिय
 स्वेषु विद्यते ॥ १८ ॥ क्षत्रियास्ते महात्मानः शूराः समितिशोभनाः । आशिषं परमां प्राप्ता
 न शाच्याः सर्वे एव हि ॥ १९ ॥ आरमातमात्मनाभ्वास्य माशुचः पुरुषेभ्यः । नाद्य लोका
 निमृतस्त्वं कार्थ्यसुरक्षभुमर्हसि ॥ २० ॥ माता पितृसखाणि पुत्रदारशतानि च । संसा
 रेण्यभूताति कस्य ते कस्य वा धयम् ॥ २१ ॥ शोकस्थानसहस्राणि मयस्थानशताभि
 च । दिवसे दिवसे भूदमाविशन्ति न पण्डितम् ॥ २२ ॥ न कालस्य प्रियः कश्चिन्न
 द्वेषः कुलसत्तम । न मध्यस्थः क्वचित् कालः सर्वे काल प्रकल्पति ॥ २३ ॥ कालः
 पचति मृतानि कालः संहरते प्रजाः । कालः सुप्तेषु जागर्षि कालो हि दुरतिक्रमः
 ॥ २४ ॥ अतिव्यथोन्ननं रूपं जीविनिं द्रव्यसञ्चयः । जागर्ष्यं जियसम्वासो यूष्येदेषु न
 पण्डितः ॥ २५ ॥ अत्रापदिकं दुःखमेकः शोचिषुमर्हसि । जप्यभाषेन युष्येत तच्छ्वास्य

बौको होमा और परस्पर होमेहुये वाणोंको सहा । १७ । हेराजा उा प्रकार
 से स्वर्गके उत्तम मार्गको तुमसे कहताहूँ इसलोकमें क्षत्रियका कुछ कर्म युद्धसे अधि
 क नहीं वर्त्तमानहै । १८ । युद्धमें शोभायमान उन महात्मा शूर क्षत्रियोंने वड़े अभीष्ट
 कर्त्तको प्राप्त सबही शोकके अयोग्य हैं । १९ । हेदुरूपोत्तम तुम ज्ञानसे अपनेको
 विश्वासदेकर शोचमत्तकरो शोकसे विजय कियेहुये तुम करनेके योग्यकर्मके छोड़ने
 को योग्य नहींहै । २० । हजारों माता पिता और सैकड़ोंपुत्र स्त्री संसारमें प्राप्तकिये
 मद किसके और हम किसके । २१ । प्रति दिन शोकके हजारों स्थान और
 भानन्द के सैकड़ोंस्थान अज्ञान में प्रवेश करतेहैं । २२ । हेकौरवोत्तम कालका कोई
 प्यारहै न शत्रुहै वह काल किसी स्थानपरभी मध्यस्थ नहींहै काल सबको खेंचताहै
 । २३ । काल जीवमात्रों को पकाताहै और कालही सृष्टिको मारताहै
 काळही सोभेवालोंके मध्य में जागताहै और कालही दुःखसे उल्लंघनके योग्य है
 । २४ । तरुणाईरूप वृद्धता जनसमूह और मीरोगतःपूर्वक निवास यहसब विनाश
 बानहै परिदत्त इनमें प्रवृत्त नहीं होताहै । २५ । अकेले तुम सब दुनियाभर के दुःख

heaven than dying in battle. All the warriors slain have got good
 regions and are not worth lamenting for. Do not give yourself up to
 grief, but do what is necessary. We make thousands of fathers,
 mothers, sons and wives in this world and then sever our connection
 from them. A foolish man is beset with thousands of pleasures and
 pains every day. Death observes neither friendship nor enmity, but
 overtakes all. Time makes all beings ripe and then kills them. He
 is awake when all beings are asleep and is difficult to be overcome.
 Youth, age, wealth and health are all perishable; a wise man does not
 set his mind on any one of them. You need not feel sorrow for all
 the world, for one who dies never comes back to us. We should
 not feel sorry for those who have died bravely; it is better not to

न नियन्ते ॥ २६ ॥ अशोचन् प्रतिफुर्वीत यदि पश्येत् पराक्रमम् । अपेक्ष्यमानं दुःखं स्व
 भवेत्प्रानुचिन्तयेत् ॥ २७ ॥ निश्चिन्त्यमानं हि व द्योति मयथापि प्रवर्द्धते । अनिष्टसंप्रयो
 गाल्च विप्रयागात् प्रियस्य च ॥ २८ ॥ मनुष्या मानमैतुःखैर्व्युज्यन्ते येऽल्पबुद्धयः । तयो
 न धर्मो न सुखं यद्वैतदनुशोच्यन्ति ॥ २९ ॥ न च नापेति कार्याणां कृत्रिण्युक्तैश्चैव द्विषते
 अश्यामण्यां धनापस्थां प्राप्य वैशेषिकां जराः ॥ ३० ॥ असंतुष्टाः प्रमुह्यन्ति संतोषं चाति
 परिहृताः । प्रथया मानसं दुःखं ह्यन्याच्छरीरमौषधैः । एतज्ज्ञानस्य सामर्थ्यं न बाधेः
 सपतामियात् ॥ ३१ ॥ शयानञ्चानुशंसते हि तिष्ठन्ते चानुतिष्ठति जन्मधाषि च वाचस्त कर्मपूर्व
 कृतनरम् ॥ ३२ ॥ यस्यापि स्यामवस्थाया यत्करोति शुभाशुभसात्सर्पात्स्यामवस्थावातत्फलं
 समुपाश्नुते ॥ ३३ ॥ तेन येन शरीरेण दृष्टं कर्म करोति यः । तेन तेन शरीरेण तत्तत्
 फलमुपाश्नुते ॥ ३४ ॥ आरमेव ह्यात्मनो मित्रमारमेव गिगुरारमनः । आरमेव ह्यात्मनः

के शोचनेके योग्य नहीं होंगे अभाव से मिलता है उसका वह फिर छोटकर नहीं
 आता है । २६ । जो पराक्रम से नाशकी पावे उसको शोचता हुआ मनुष्य उसको
 चिकित्साको नहीं करता है दुःखका यह इलाज है जो उसको न विचार करे । २७ ।
 चिन्ता किय हुआ दूर नहीं होता है और फिर फिर अधिक बढ़ता है अभियके मिलने
 और प्रियके विभोगे । २८ । वह आदमी बड़े २ चिच के दुःखसे संयुक्त होते हैं
 जोकि निर्बुद्धो है वह न अर्थे न धर्मके न सुखके जोतुम शोच करेता है । २९ । वह
 करनेके योग्य प्रयोजनके जुदा होता है और धर्मार्थ काम इनतीनों कर्गोंसे च्युत होता
 है मनुष्य अन्य २ मुख्य धनादिक दशाको पाकर । ३० । इस
 में असंतुष्ट लोग मोहको पाते हैं पण्डित संतोषको पाते हैं चिचके दुःखको ज्ञानसे
 और शरीरके दुःखको औषधोंसे दूरकरना चाहिये यही ज्ञानकी सामर्थ्य है और
 किसी प्रकार की कोई सामर्थ्य नहीं है । ३१ । पूर्वजन्ममें किया हुआ कर्म सोते हुये मनुष्य
 के साथ सोता है और बैजनेवालेके पामनियत वैता होता है और दौड़ते हुयेके पीछे दौड़ता
 है । ३२ । जिस जिस दशमें जिस शुभाशुभ कर्मको करता है उसी वसी दशा में उस
 फलको पाता है । ३३ । जो जीव जिस शरीर से जिस २ कर्मको करता है उसी
 शरीर से उस उस कर्मके फलको भोगता है । ३४ । आत्ममें आत्माही उसका बुधु

think of them. Grief does not abate by brooding over it; it increases if we think of our dear ones. The fool is beset with many sorrows; your sorrow is needless and irreligious. It deters us in our duties and deprives us of all ends. A dissatisfied man is avaricious, while a learned man is satisfied. We should remove mental griefs with wisdom and maladies with medicine. 31. An act done in a former life sleeps, sits and runs with the doer. We reap the fruit of our deeds in the same conditions as when we did them. We suffer the punishments of our deeds in bodies like those in which we did them.

साक्षी कृतस्वापकृतस्य च ॥ ३५ ॥ शुभेन कर्मणा सौख्यं दुःखं पापेन कर्मणा । कृतं
 कर्मणि सर्वत्र नाकृतं भुज्यते क्वचित् ॥ ३६ ॥ न हि पापविदग्ध्यु बहुपापेषु कर्मसू ।
 मूलघातिषु सपञ्चते बुद्धिसन्तो मयद्विभ्रः ॥ ३७ ॥

इति श्रीपर्वणि जलभादानिकपर्वणि धृतराष्ट्राश्वासने द्वितीयोध्यायः ॥ २ ०



धृतराष्ट्र उवाच । सुभाषितैर्महाप्राज्ञ शोकोयं विगतो मम । भुव पयतु वाक्यानि
 भ्रातृनिच्छामि तस्थत ॥ १ ॥ अविद्यानाथ संसर्गादिप्यानाच्च विदुर्जनात् । कथं हि
 मानसैर्दुःखैः प्रमुच्यतेतु पण्डिताः । २ ॥ विदुर उवाच । यतो यतो मनो दुःखात् सुखाद्वा
 विप्रमुच्यते । ततस्ततो निवर्त्येतच्छान्तिं विन्देत वै शुभः ॥ २ ॥ भशाश्चनमिदं सर्वं

है और आत्माही आत्माका शत्रुई आत्माही आत्माके शुभ शुभ कर्मोंका साक्षी है
 । ३५ । शुभकर्मसे सुखको और मशुभकर्म से दुःखको सर्वत्र पाताहै किसी स्थान
 में भी विनाशके हूये को नहीं भोगताहै । ३६ । आपकी समान बुद्धिमान मनुष्य
 बनकर्मोंमें प्रवृत्त नहीं होते हैं जोकि ज्ञानके विपरीतनहुत पाप(खेने)शले औरमोक्षके
 नाशकरनेवाले हैं ३७ ॥

अध्याय ३ ॥

धृतराष्ट्रशले हे धरे ज्ञानी बुम्हारे इन उत्तम बचनों से मेराशोक निवृत्तहुआ
 परन्तु हेनिष्पाप मैं मूलममेत इनबचनों को फिर सुना चाहताहूँ । १ । पंडितलोगसे
 मामेयके योग और प्यारोंके विपोगसे उत्पन्न होनेवाले चित्तके दुःखों से कैसे
 छूटतेहैं । २ । विदुरजी बोले कि जिस जिस उपायसे दुःख अथवा सुखसेभी निवृत्त
 होताहै बुद्धिमान मनुष्य उसीउपायसे इन चित्तके स्वाधीन करके शान्ती को पाये
 । ३ । हेतरोचन यह सब जो ध्यानमें आताहै विनाशवानहै यह संसार कैलके
 समानहै इसका सार पदार्थ बर्तमान नहींहै । ४ । जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और

The soul is its own friend, enemy and witness. 35. It gets happiness as a result of good deeds and sorrow for wicked ones. One cannot suffer without doing. Wise men like you do not engage in doing foolish, sinful and wicked deeds that debar the door from heaven. " 37.

CHAPTER III

Dhritrashtra said, " My grief is gone away by your good words, wise man. I wish to hear your words once more in detail. How can wise men get rid of the unpleasant feeling arising out of the meeting of enemies and separation of friends? " Vidur said, " A wise man should shun his mind from the things which cause pleasure or pain. The world we see round us is mortal; it has no kernel like

विद्यमानं नरपथम् । कदलीसन्निभो लोकोः सारोल्लस्य न विद्यते ॥ ४ ॥ यदा प्राक्काभ
 मूढादथ धनयन्तांथ निन्दन्ता । सर्वे प्रिवृषन् धव्य स्वपन्ति विगतज्वराः॥ निर्मासैरक्षिय
 भ्रियिष्ठैर्गात्रैः स्तायुनिवन्वतेः ॥५॥ कं विद्यते प्रपन्ति तत्र तेषां परेजना । वेत् प्रपथ
 गच्छेयुः कुलक्षयविशेषणम् । ६ समाद्वयान्ध्यामिच्छन्ति विप्रलब्ध्याधिवा नराः ॥७॥ ब्रूहा
 णीष पि मर्यातामाहुर्ब्रह्मानि पाण्डवाः । कालेन विद्वियुज्यन्ते स्वधमेकम् शुभाभतम्
 चयाजीर्णमजीर्णं वा वृक्षं स्वधत्वास्तु पूरयः । धन्वद्रोक्ष्यते प्रथमेवं वेदाः शरीरिणाक
 ॥ ९ ॥ वैश्विद्वेषीत्ये साप्यं द्वि दु खं वा यादं वा सुखम् । प्राप्नुवन्तीहि भूतानि स्वक
 तेनेव कर्मणा ॥ १० ॥ कर्मणा प्राप्यते स्वर्गः सुखं दुःखञ्च भारत । ततो बह्वति सं भार
 मवशः स्वधतोऽपि वा ॥ ११ ॥ यथा च सृष्टमयं भाण्डं अक्राव्यं विपद्यते । किञ्चिच्च
 प्रक्रियमाणं वा कृत्रमात्रमथापि वा ॥ १२ ॥ छिन्ने वाप्यवरोप्यन्तमवतीर्णमथापि वा

निन्दनी कालसे मरणको पाकर तापसे रहित सोतेहैं उन स्वानुषर दूसरे मनुष्य
 निर्माण अथवा बहुत आधिवासनेकाले भगनाडो और वन्वनेमे अधिकरित बस्तुको
 देखतेहैं जो उत्तममय कुल और रूप विशेषणको नहीं पावे बहल्ल करनेवालेमनुष्य
 किसदेतुसे परस्पर इच्छाकरते हैं ॥ ७ परिदंतोने शरीर धारियोंके देहको प्रहो क
 सपान कहाहै वहकालमे मिलनेहैं अर्थात् नाशकोपातेहैं केवलएक जीवात्माही अविना
 शीहै । ८ । जिसप्रकार मनुष्य पुराने कपड़ेको त्यागकरके नवीन कपड़ेको अङ्गी
 कार करताहै इसी प्रकार शरीरधारियोंके शरीर हैं । ९। हेभूतराष्ट्रसव मनुष्य अपने
 कियेहुये कर्मसे मिलने के योग्य दुःख अथवा सुखको पातेहैं । १०। हे भरतवंशी सब
 सुख और दुःख अपने कर्म से प्राप्त होतेहैं उसदेतुसे यह स्वतन्त्र अथवा अस्वतन्त्र
 भी उस भारको उठाताहै । ११ । और जेठमटीकापात्र रूपको पाकर दूटाहै कोई
 वस्तु कोई वनाहुआ । १२। अनेपर स्वताहुआ वा भवेते गिरकर टूटनेवाला भारी
 युष्क वा पकताहुआ । १३। अनेपर उताराहुआ उठायाहुआ वा काममे छायाहुआभी
 टूटनाताहै इसी प्रकार शरीर धारियोंके शरीरहैं । १४। गर्भमे नियत जन्म लेनेवाला

platum. When the rich and poor, wealthy and poor had rest or death, we find nothing left of them except a heap of bones. Family greatness and beauty are of no avail after death; why should people desire to gain their object by deceit. Wise men say that the bodies of men are like constellations which come together at times and then disappear; the soul alone is immortal. Bodies are like clothes which we cast off when old and and put on new ones. Our pleasures and pains are the results of our actions. 10. Man is not indepent when he has to suffer pleasure or pain as a result of his former deeds. Our bodies are like earthen pots which assume shapes and break down in the course of preparation, after preparation and at all other stages. They break down after being burnt in a kiln, in transit or in use

माहं वाप्यथ वा शुक्रं पञ्चमानमथपि वा ॥ ११ ॥ अथताप्यमाणमापाकाबुद्धतश्चापि
 भारत । अथर्षो परिभुञ्जन्तमेवं देहाः शरीरिणाम् ॥ १४ ॥ गर्भस्थो वा प्रसूतो वा प्यथ
 वा दिवसात्तरः । अर्द्धमासगतो वापि मासमात्रगतोपिवा ॥ १५ ॥ संवत्सरगतो वापि
 विसंवत्सर एव वा । वीचनस्थोऽथ मध्यस्थो वृद्धो वापि विपद्यते ॥ १६ ॥ प्राक्कर्म
 भिस्तु भूतानि भवन्ति न भवन्ति च । एवं सांख्यिके लोके किमर्थमनुत्पद्यते । १७ ॥ यथा तु
 सलिले राजन् क्रीडाद्यमनुसन्नरज्ज्जन्मज्जेष्व निमज्जेष्व किञ्चित् सरयं न राधिप ॥ १८ ॥
 एवं संसारमगहने जन्मज्जनिमज्जने । कर्म भोगेन घष्यन्ते क्लिश्यन्ते येऽप्यबुद्धयः
 ॥ १९ ॥ ये तु प्राज्ञाः स्थिताः सर्वे संसारानुगतैविणः । समागमत्रा भूतानां ते भवन्ति
 परमां गतिम् ॥ २० ॥

इति स्त्रीपर्वणि अलपादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकप्रबोधने तृतीयोध्यायः ॥ ३



वा योर्दोषवस्थावाली अर्द्धमास एकमास । १५। एकवर्ष वा दोषवर्षकी प्रवस्था रत्न
 नेत्राला तरुण मध्यस्थ और वृद्धभी नाशको - पाते हैं । १६। सबजीव अपनोपिच्छते
 जन्मोंके कर्मोंसे उत्पन्न होते हैं और नाशको पाते हैं इसगीति के स्वाभाविक धर्मरत्न
 नेत्राले लोकमें किसहेतुसे दुःखी होते हैं । १७। हेराज । जैसेकि कोई भीव क्रीडाके
 निमित्त जलमें नूपतादुआ दूवता और उछलताहै । १८। उसी प्रकार मर्षीलोग अपने
 बड़े ज्ञानकेद्वारा उत्तमकार के दुर्गम संसार से पारहुये जोकिद्वना उछलना इनदो
 गुणोंका रखनेवालाहै । १९। जीजीवोंकी उत्पत्तिक जाननेवाले संसार के अन्तके
 खोजनेवाले सब ज्ञानी नियत हैं वह परम गतिको पाते हैं ॥ २० ॥



So our bodies die in wombs, after birth, at the age of a fortnight, a month, a year, two years, in youth, middle, or old age. 16. People die and are born again as a result of their own deeds; why should we be sorry for those who are naturally mortal. Sages and rishis cross the ocean of the world like an animal which floats or sinks down in water at pleasure. Those wise men who seek to know the beginning and end of the world, reach the sublime goal. " 20.



धृतराष्ट्र उवाच । कृष्यं ससारगहनं विश्लेष्यं वदतांवर । परदिच्छाम्यहं भ्रान्तुं तत्त्वं
 माण्डवीहि पृच्छतः ॥ १ ॥ विदुर उवाच - जन्मप्रभृति भूतानां क्रियासर्वोपलक्ष्यतं ।
 पूर्वमेवेह कलते वसते किञ्चिदन्तरम् । ततः स पश्चमेसीते मासे वा समकल्पपत् ॥ २ ॥ ततः सर्वांगसंपूर्णो गर्भो वै, स तु जायते । अमेध्यमध्ये वसति मांसशोणितले
 पने ॥३॥ ततस्तु धायुषेण ऊर्ध्वापादो ह्यथ शिराः। योनिद्वारमुपागम्य वहन् क्लेशान्
 समृच्छति ॥ ४ ॥ योनिसंपीडनाच्चैव पूर्वकर्मभिरन्वितः । तस्मान्मुक्तः स ससागद्
 न्धारं पदवत्युपद्रवान् । गृहान्मुपगच्छन्ति सारमेया इवागिपम् ॥ ६ ॥ ततः प्रातोत्तरे
 काले व्याधयश्चापि तं तथा । उपसर्पन्ति जीवन्ते बध्यमानं स्वकर्मभिः ॥ ७ ॥ तं बद्ध
 म्निद्रयैः पाशैः सङ्गस्थायुभिरावृणम । व्यसनान्यपि वर्तन्ते विविधानि नराधिप ॥ ८ ॥
 पाध्यमानश्च तैर्मयो नैव ह्यपि मुपैति सः । तदा नावैति वैद्यार्थं प्रकुर्यन् साध्यसाधु वा ।

अध्याय ॥ ४ ॥

धृतराष्ट्र बोले हेवक्ताओं में श्रेष्ठ किस रीति से यह संसाररूपी वन जानने
 के योग्य है मैं इसको सुना चाहता हूँ आप मुझे वर्णन कीजिये । १ । विदुरजी
 बोले कि जन्मसे लेकर जीवधारियोंकी सब क्रिया दिखाई देतीहै इसलोक में प्रथम
 कलल अर्थात् एकरात्रि निवास करनेवाले गर्भमें जीवात्मा निवास करता है
 परन्तु कुछ अन्तर है । २ । इसके पीछे पांचवांमास व्यतीत होनेपर उस चैतन्यका
 प्रादुर्भाव विचार किया अर्थात् एकरात्रि निवासमें चैतन्यकी संज्ञामात्र होतीहै परन्तु
 पांचवें महीने में उसका पूर्ण प्रादुर्भाव होजाताहै मांस कधिरेसेलित अपवित्र स्थानमें
 निवासकरता है । ३ । फिर वह अपानरूप वायुकी तीव्रतासे ऊंचेपर नीचे शिरवाला
 योनिके द्वारको पाकर बड़े कष्टों को पाताहै । ४ । योनीकी पीड़ा और पिछलेकर्मों
 से युक्त उस द्वारसे छूटकर संसारके दूसरे उपद्रवों को देखताहै । ५ । और ग्रह
 उसके पास ऐसे आतेहैं जैसे कि मांसकेपास कुत्ते आते हैं । ६ । हेरायुसंतापी इसके
 पीछे उभीसमय रोगभी उसकेपास आतेहैं इसीसे जीवताहुआ अपनेकर्मोंसे पीडावान्
 होताहै । ७ । हेराजा इन्द्रियोंके पास बन्धनों में बंधेहुये संग और स्वादु-से
 संयुक्त उसत्रीव धारिके पास नानामकारके व्यसन अर्थात् आपात्तियां वर्ष
 मानहोतीहैं । ८ । फिर उन सबसेपीडित होकर वह जीवतृप्तिकी नहीं पावाहै इसीसे

CHAPTER IV

Dhritrashtra said, " How can we know the wilderness of the world ? Pray tell me all about it. " Vidur said, " From the beginning we discern the work of living beings. They live for sometimes in the womb and are then surrounded by impurities of flesh and blood. They live there with their heads downwards and their feet up and are in a miserable plight till they come out of the womb. Coming out of one difficulty, they have to encounter others in the world, Evils press on him as dogs do a piece of flesh. Diseases come to him during his

तथैव परिरक्षन्ति ये ध्यानपरिनिष्ठिताः ॥ ९ ॥ अथ न बुध्यन्ते तावद्यमलोकमयागतमा
यमदूतैर्विकृष्यंश्च मृत्युं कालेन गच्छति ॥ १० ॥ चाग्नीनस्य च यन्मात्रमिष्टानिष्टं कृतं
मुखे । स एवात्मनात्मानं वध्यमानमुपेतने ॥ ११ ॥ अदो विनिकृतो लोको लोभेन च
वशीकृतः । लोभक्रोधमयोन्मत्तो नात्मानमवबुध्यते ॥ १२ ॥ कुलीनत्वे च रमते दुष्कु
लीनान् विकृतसयन् । घनदण्डेण इत्तश्च दरिद्रान् परिकृतसयन् ॥ १३ ॥ मूर्खानिति परा
नादमात्मानं सववेक्षन् । द्वेषान् क्षिति चान्येषां नात्मानं शास्त्रुमिच्छति ॥ १४ ॥ यदा
प्राज्ञाश्च मूर्खाश्च घनवन्तोऽपि विद्वन्तः । कुलीनाश्चाकुलीनाश्च मानितोऽथाप्यमानिनः
॥ १५ ॥ सर्वपितृघनं प्राप्ता स्वपन्ति विगतज्वराः । निर्भ्रमसिरीस्यस्रीषेष्टांगैः प्लायु
निवन्वयैः ॥ १६ ॥ कंठस्यैव प्रपद्यन्ति तत्र तेषां परे जना । येन प्रत्यवगच्छेयुः कुलरूप
विशेषणम् ॥ १७ ॥ यदा सर्वसंमन्यस्ताः स्वपन्ति धरणीतले । कृष्णादप्यन्यमिच्छन्ति

शुभाशुभ कर्मों को करता है और उनका त्यागनेवाला नहीं होता है इसी प्रकार
जो पुरुष ईश्वरके ध्यानमें मट्छाई वह अपने को तबतक चारों ओरसे रक्षा करते हैं
जबतक यह जीव मिलनेवाले यमलोक को नहीं जानता है यमदूतों से आकर्षित
कालसे मृत्युको पाता है । १० । उस मौनका जो पाप पुण्य है वह दूसरे के
द्वारा मुखमें किया हुआ होता है फिरमा विषयोंमें आसक्त होकर अपनेको पतन हुआ
नहीं ध्यान करता है । ११ । आश्चर्य है कि गडतसार नीच लोभके आधीनतामें वचमान क्रोध
मोह और घनकोमदसे अचेत होकर आत्माको नहीं जानता है । १२ । वृष्ट कुलवालोंकी
निन्दा करता अपने कुलकी प्रशंसा करता हुआ रमता है दरिद्रियोंकी निन्दा करता
घनके गर्वसे अहंकारी है । १३ । दूनरों को मूर्ख कहता है और अपनेको अच्छीरीति
से नहीं देखता है दूसरोंको शिक्षा करता है परन्तु अपनेको शिक्षा करना नहीं चाह
ता है । १४ । जब ज्ञानी और मूर्ख धनी और निर्दनी कुलीन अकुलीन अहंकारी
और निरहंकारीभी सब पितृघन (यमलोक) में वचमान विगत ज्वर होकर सोते हैं
और वहाँपर दूसरे मनुष्य उन्होंके निर्मास बहुत से आस्थिमासे अंग और नाड़ीबन्ध
नोंसे अधिक कुछ नहीं देखते हैं और जो कुल और रूपकी मुख्यताको नहीं पाते हैं
। १७ । जब वह सभी शरीररत्याग कियेहुए पृथ्वीपर सोते हैं तब दुर्बुद्धी मनुष्य इस

lifetimes. Then he is in danger of evil desires and other calamities. Baset with so many difficulties, he is not satisfied with anything and does good and evil deeds. But those who meditate on God, protect themselves from all sides as long as they are not summoned by death. 10. One fallen low on account of evil desires, does not see his fall. It is a wonder that people forget themselves on account of avarice pride, anger and other passions. They give themselves praise and blame others, they speak ill of the poor in the pride of their wealth. They call others fools and do not look towards themselves; they preach others and themselves remain in the dark. Great and lowly, proud and humble all go to the region of Yam and nothing is left of them but a

प्रथममिह दुर्धृषाः॥१८॥प्रत्यक्षञ्च परोक्षञ्चयोनिशम्भ धृतिं त्विमाम्। अघुधे जिवित्तोके
 विमन् यो धर्ममनुपालयन्। जन्मप्रभृति धर्मेत प्राप्नुयात् परमां गतिम् ॥ १९ ॥ एवं
 सर्वं विदित्वा धै बलश्रमनुवर्तते। स प्रनाक्षयते सर्वान् पन्थानो मनुजाधिप ॥ २० ॥
 धृतराष्ट्र उवाच। यदिदं धर्मगहनं बुद्ध्या समनुगम्यते। एतद्विलस्यः सर्वं बुद्धि

इति श्रीपर्वणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रोकोपनोपने चतुर्थोऽध्यायः ॥ ४ ॥

मार्ग प्रसन्न मे ॥ १। विदुर उवाच। अत्र ते वर्तयिष्यासि ममस्फुटवा क्वयन्मुने। यथा
 संसारगहनं घट्टित परमर्षयः ॥ २ ॥ कश्चिन्महति संसारे वर्तमानो द्विजः किञ्च
 धनं दुर्गमनुगतो महरक्ष्य दृक्ष ह्यलम् ॥ ३ ॥ सिद्धवाद्यत्राकारे रनिघांटे महाश्वरः

सोक मे किस हेतु से परस्पर छलकिया चाहते है। १८। यहवात देवीभार सुनी है
 जो इस श्रुतिको सुनकर इस विनाशवान् जीवसोकमे धर्मकापालन करताहुआ जन्मेस
 छेकर मर्ग कर्म करताहै वह परमगतिको पाता है जोकिइसमकार सबकोजानस
 कर्म प्रकृती चानना करता है। २०।

अध्याय ५ ॥

धृतराष्ट्रको कजो यह दुष्पाप्य धर्मबुद्धिकद्वारा अच्छेमकाररे प्राप्त होताहै
 इमहेतुने अत्र बुद्धिमार्गको व्योरे समेत मुक्तसे कहो। १। विदुरजी कोले किइस
 स्थानपर द्रष्टाजी के अर्थरमस्कार करकेवह विषय तुमसे कहताहूँ जैसे कि महापि
 नोग इत संसाररूपी घन वनको तरते हैं। २। निश्चयकरके इम बड़े संसार में कोई
 द्विज मांसभक्षी जीवों में पूर्ण उस दुर्गम्य वनमें पहुँचाजो किबड़े शब्दवाले भयानक
 रूप मांसभक्षी महाभयकारी सिंह व्याघ्र हाथी औररीछोंकसमूहोंसे चारोंओरको व्याप्त

—❧—

heap of bones. Why should foolish men practise deceit with their fellow creatures, when they see that so many men endowed with wealth and beauty ho deal on earth. We see and hear that he who leads a virtuous life in this mortal world, gains the highest goal. He who knows all this is a worshipper of Brahm." 20.

CHAPTER V

(Purim 18 & 19), "Brahm is this difficult dharm can be known by wisdom alone, pray tell me the way to wisdom." Vidur said, "Having bowed down to Brahma, I shall tell you how great sages cross the vast forest of the world:—A man entered a forest full of the

समम्भात् संपरिक्षिप्तं च व स्म द्वा त्रसंघमः ॥ ४ ॥ तद्रूप्य हृष्ट्वा हृद्यमुद्वेगमग
 त्र परम् । आयुःकृत्पञ्च रोमा वै विक्रियाञ्च परःतप ॥ ५ ॥ स तद्रत्नं व्यजुसरन् संप्र
 भावजितस्ततः । वीक्ष्यमाणो दिशः सर्वाः शरणं क्व जवेदिति ॥ ६ ॥ स तेषां छिद्रमन्वि
 ष्यन्न प्रदतो मथपीडितः । न च निर्याति वै दूरं न च तैर्धिप्रयुज्यते ॥ ७ ॥ अथापश्य
 द्रुनं चोरं समम्भाद्वागुरावृत्तम् । बाहुभ्यां संपरिक्षिप्तं स्त्रिया परमचोरया ॥ ८ ॥ पञ्च
 कोर्बहोरजांगैः शैलेरिव कमुजतैः । नभस्प्रशैमहाचौरैः परिक्षिप्तं महाघनम् ॥ ९ ॥ घन
 मध्ये च तत्राभूदुक्पान सगावृत्तः । बह्नीभिस्तृणछन्नाभिर्दंढामिराभिसदृशतः ॥ १० ॥
 पपात क द्विजस्तत्र निगूढे सज्जिताक्षय । घिलग्नश्चासवसस्मिन् कतासन्तानसंकुले
 ॥ ११ ॥ पवनस्य वचां जातं वृत्तवञ्ज महाकलम् । स तथा लम्बते तत्र ह्यध्वंपादो
 ञ्च शिराः ॥ १२ ॥ जय तत्रात्रि चाम्बोस्व भूयो जात उपद्रव । कूपमध्ये महातागम

मत्युकाभी भयका रीधा । ४। उसको देखकर इसका हृद्य महाग्याकुल हुआकम्प्यभौर
 रोमां चोसे शरीर व्याप्त हुआ । ५ । वह उस वन में अचछेप्रकार घूमनाहुआ
 इधर उधर का दौड़ा और सब दिशाओं को देखनाया कि मेरा सरास्यान कहा
 हांगा । ६ । इसप्रकार वह भयसे पीड़ावान् छिद्रों को देखता भागावह नतो दूर
 जाता ७ । न वनसे बचता थाइसके पीछेउसनेचारों ओरको पास युक्त घोर वनको देखा
 वह पास बड़ीघोररूप स्त्रीकीसुजाओं से पकड़ा हुआया ८ । और वहवन पांच शिर
 रखनेवासे पर्वतों के समान ऊंचे सपांसे और आकाशको स्पर्श करनेवाले बदेदृष्टों
 से चारों ओरको संयुक्तया । ९ । उस वनके मध्य में एक कूप अन्धकार से पूर्ण
 हृणसे डकी हुई हृद्वलियोंसे संयुक्तया वह द्विज उस गुप्त कूपमें गिरपड़ा और
 लनाओंके फेअवसे पूर्ण उस कूपमें छिपगया । ११ जैसे किदृष्ट वंशमें उत्पन्न
 होनेवाला बड़ा फल आखा में जगाहुआ होताहै उमी प्रकार वह द्विज ऊंचेपैर नीचे
 शिरवासा होकर उतैमे लटका । १२ । फिर उमी प्रकारसे उसका दमरा उपद्रव

beasts of prey, where lions, tigers, elephants and bears were present
 in large numbers sufficient to terrify even death. His heart was much
 troubled at the sight of them and the hair of his body stood on end 5
 He ran in all directions to seek a place of refuge in the forest. He
 ran on much terrified looking for holes. He did not go far out of the
 place, for he saw a dreadful net spread all round and held by a dread-
 ful woman. The place was full of five headed serpents huge as moun-
 tains and tall trees touching the sky. There was a dark well in the
 middle of the forest covered with grass and creepers. 10. He fell
 down in that well and was hid under creepers like a fruit among the
 branches of a tree He lay suspended there head downwards. He
 met another calamity there, for at the bottom of it there was a power

पश्यत महाउलम् । कूपधीनाद्वेलायामपश्यतमहागजम् । १३ ॥ पशुवक्त्रं कृष्णव
र्णं च द्विपटुकपद्मवारिणम् । क्रमेण परिस्रपन्त वलीवृक्षसमावृतम् ॥१४॥ तस्य चापि
प्रशान्नासु वृक्षशायावलीभ्यत । तानाकृता मधुहरा घोररुपा भयावहा । आसते मधु
संवृत्य पूर्णैव केतुनिजा ॥ १५ ॥ भूयो भूय समीहन्ते मधुनि भरतर्षभ । स्वादनी
यानि भूताना यैर्नां त्रै विप्रकुप्यते । १६ ॥ तेषां मधुना बहुधा धाराः प्रसूवतांतादा ।
आलम्बमान सन्मान् धारां पिबते सदैव ॥१७॥ न चास्य तुष्णा विरता पित्रमानस्य
सङ्कटे । अमीपत्तानि तदा नित्यमन्तु ॥ स पुन पुनः ॥ १८ ॥ न चास्य जीविते राजन्
निवेद स्रपज यत । तत्रैव च मनुष्यस्य जीविताशा प्रतिष्ठिता । कृष्णा श्वेताश्च तं
वृक्ष कुट्टयन्ति च मृषिका १९ ॥ व्यालैश्च वनदुर्गान्तेलिषा च परमोग्रया । कृपाघ

भी उत्पन्नहुमा किकूपके मन्त्रम बड़ बलवान् सर्पको देखा और मुलबंधनकूप के
किनारेपर पेपेबड़े हाथीको देखा। ११ जोकिछःमुखवाना और बारह चरण सेचलने
वाला शरतशामवर्ण क्रमसेचलनेवाला सेरुडाटनऔर बलिलयोसे डकाहुआथा । १४।

इस के पीछे बड़ी शाखाओं पर लटकनेवाले नाना प्रकार का
रूपरखनेवाले श्वेतवर्ण घोर और बड़ेभयके उत्पन्न करनेवाले और
प्रथमही पवनाकर सन्तानके द्वारा वृद्धि पानेपाले भौरे शहदको इकट्ठा करके
निवास करतेहैं । १५ । हेभरतर्षभ वह भौरे बारम्बार जीवधारियों के स्वादिष्टरसों
की इच्छाकरतेहैं जिन्होंसे चानक आकर्षण कियेजातेहैं । १६ । उन रसोंकी बड़ी
धारा सदैव गिरतीहै तब लटकताहुमावह जीव सदैव धाराओं को पानकरताहै । १७
सेकटमें भी इस पानकरनेवाले की इच्छापूर्णनहींहुई वह अतृप्तहोकर सदैव बारम्बार
उपका चाहताहै । १८ । हेराजा जीवन में उसकी अप्रीति नहीं उत्पन्नहुई उसीमें
मनुष्य के जीवनकी आशा नियतहै श्वेत कृष्ण रंगवाले चूहे (रात्रि दिन)उस
वृक्षरूपी आयुर्वाको काटतेहैं । दुर्गम्य वनकेपास बहुतसे सर्प और बड़ी उग्रस्त्री
(घृदावस्था) और कूपके नीचे सर्प (मृत्यु) और कूपके मुखपर हाथी (पूर्ण-

ful serpent, while at the mouth of it he saw a huge elephant with six
in mouth, twelve feet, black and white colour and covered with trees
and creepers 14. Then he saw hanging on a large low a hive of
humming bees which gathered in large numbers and multiplied, mak-
ing honey 15. They sit on the tree things such as please children.
A stream of sweet matter dropped from the hive and the man sus-
pended there drank of it. Fallen in such trouble he remains unsatisfied.
He is not tired of life and is yet hopeful. White and
black mice, day and night, are gnawing away the roots of the tree of
his life, there are numerous serpents in the forest, with the dreadful
woman, the serpent below at the bottom of the well, and the elephant
at the mouth. 20. There is a great fear of the fall of the tree on

साच्च मागेन घेताहै कुडंजरेण च ॥ २० ॥ वृक्षप्रताताच्च राधे मूपिवेऽयञ्च पञ्च
मम् । मधुलोमान्मधुकरैः पप्रमाहुर्महद्भयम् ॥ २१ ॥ एवं स वसते तत्र क्षिप्तः सखार
सागरे । न चैव जीविताशाया निर्धेदमुपगच्छति ॥ २२ ॥

इति स्यापत्राणि जलप्रादानिकपर्वणि धृतराष्ट्रशोकापनोपने पंचमोऽध्यायः ॥ ५ ॥

धृतराष्ट्र उवाच । अहो बलु महदु खं कुरुपासञ्च तस्य ह । कथं तस्य रत्नितप्र
तुष्टिर्वा घदताम्बर ॥ १ ॥ स देश पथं नु यत्रासी वसते धर्मसङ्घटं । कथं वा स धिमु
च्येत नरस्तस्मान्महाभयात् ॥ २ ॥ एतं मे सधंमाच्छय साधु चष्टामहे तदा । कृपामे
महती जाता तस्याऽमुद्धरणेन हि ॥ ३ ॥ विदुः उवाच । उपमानमिदं राजन् मोक्षवि
ज्ञिरदाहृदम् । कुच्छतं हि वदे येन परलोकेषु मानव ॥ ४ ॥ उच्यते यत्तु क तारं महास
वर्ष) और वृक्षके गिरने से भय है और चूड़ोंसे पान्त्रवां भय है और शहरके लोभसे
छटेभयका कहा है । २१ । इसप्रकार संसार सागरमें पड़ाहुआ यह जीव वर्त्तमान
होता है और जीवनकी आशामें वैराग्यकी नहीं पाता है ॥ २२ ॥

अध्याय ६ ॥

धृतराष्ट्र बोले कि बड़ा आश्चर्य है कि निश्चय बड़ा दुःख है और उसकी स्थिति
भी दूख रूप है हेवक्ताओंमें श्रेष्ठ उसमें उसकी प्रीति और वृत्ति किसप्रकार से है ?
वह देश कहा है जिसमें यह जीव धर्मसंकटमें निवास करता है और वह मनुष्य उस
बड़े भयसे कैसे छूटेगा । २ । यह सब मुझे कहां यह बहुत अच्छा है तब हमकाम
में लावेंगे निश्चय उसमें छुटाने के लिये मेरे ऊपर बड़ी कृपा उत्पन्न हुई है । ३ ।
विदुरजी बोले हे राजा मोक्ष चाहनेवाले पुरुषों ने यह दृष्टांत वर्णन किया है जिस
से कि मनुष्य परलोक में सुन्दर गतिको पाता है । ४ । जो वह महावन कहा जाता

account of the mice and the consequent loss of the stream of honey.
Thus lies man in the ocean of the world and yet he does not sever his
mind from the hope of life ' 22.

CHAPTER VI

Dhritrashtra said, "I am much amazed to hear that man, although
he is beset with so many troubles does not like to sever his connection
from the world Pray explain this. Where is the place the soul
lives in and how can man get rid of the fear? Pray tell me all. It is

सार एव सः । बलं कुर्मि हि यं चोत्तं सस्यारगहनं हि तत्र ॥५॥ वे च ते कश्चिता श्वाला
 व्याघ्रपत्त प्रकीर्तिताः । वा सा नरि वृहत्काया बभितिद्योते तत्र वै ॥६॥ तामाहुस्तु
 जराप्राया वर्षेष्टपविनाशिनाम् । यस्तत्र कूपो नृपते स तु देवः शरीरिणाम् ॥७॥ बलत्र
 पसतेऽपलान्महाहिः काल एव सः । अन्तकः सर्वभूतानां देहिनां सर्वदात्मन्सौ ॥ ८ ॥
 क्। मध्ये तु या जाता बह्वी बभ्र य मानवः । प्रतापे लम्बते जगतां विविताशा शरीरि
 णाम् ॥९॥ स पत्न्यु कूरवीनाहे त इहं परितर्पति । पदयत्रः कुम्भरो राजन् स तु
 संवत्सरः स्मृतः ॥१०॥ बभ्रमुकाष्ट्र । यो मासाः पादा द्वावश कीर्तिताः । वे तु वृक्षे निरु
 प्तान्ति मृषिकाः पद्मगाद्याः ॥११॥ राट्पह्णि मु नात्वाहुर्मृतानां परिचिन्तकाः । ते
 ये मद्युकास्तत्र कामाक्ष्ये परिकीर्तिताः ॥१२॥ वास्तु ता बहुशो धाराः क्वचन्ति मद्युनि

है वही महा संतारहे और जो यह दुर्गम्पवन है वही संतारघन है । ५ । जो सर्प
 तुपसे वर्धरोग है वहां बड़े शरीरवाली जो स्त्री निपात करती है । ६ । इसको
 ज्ञानियोंने वर्षकूपकी नाश करनेवाली वृद्धावस्था कहा है दे राजा बड़ाजो कूपहे
 वह शरीरधारियोंका शरीरहे । ७ । और जो वडासर्प इस कूपके भीतर निपात
 करताहै वहीकाल है यह सब भूगोंका नाशकरनेवाला और बीबास्वाओंका हरने
 वालाहै । ८ । और कूपकेमध्य में जीवन्ती वत्यन्नदुई वह मनुष्य उसके विस्तार
 में सटकताहै वही शरीरधारियोंके जीवनकी आशा है । ९ । और कूपके मुखपर
 बौछः मुखवाला शभी इसकी शाखाओं के चारोंओर चेष्टा करताहै वहीपूर्ण वर्षहे
 । १० । उस के छा मुखश्चतु और बारह चरण महीने कहें उमी मछार जो चूरे
 एतको काटवें । ११ । उनको विचारवान् पुरुषों ने दिन रात्रि कहाहै इतमें जो
 यह और है वह नाना इच्छा करीहै । १२ । और जोवह शब्दकी बहुतसी धारा

good to hear and beneficial." Vidur said, "This precept is given 'by those who wish to gain salvation and a good state in the next world. The forest mentioned above is the world, 5. The serpents are diseases, the large-sized woman is the old age which removes beauty of person; the well is the body and the large serpent at the bottom is Death which destroys all. The creeper in the middle of the well, supporting the man, is the hope of life. The six-headed elephant moving round the tree is the year, 10. Its six mouths are the seasons; the twelve feet are the months; the mice which eat away the roots of the tree are days and nights and the black bees are the worldly desires. The streams of honey is the asp of desires in

स्रवम् । तांस्तुकामरसान् विद्यद्यप्र तज्जन्ति मानवा ॥ १३ ॥ एवं संसारचक्रस्य परि
वृत्तं विदुर्बुधाः । येन संसारचक्रस्य पारादिउन्दन्ति वै बुधाः ॥१४॥

इति स्त्रीपर्वणि जलपादानिरूपर्षीग धृतराष्ट्रशोकापनोपने षष्ठोऽध्यायः ॥ ६ ॥



धृतराष्ट्र उवाच । अहोऽभिहितमाख्यानं भवता तत्स्वदर्शनात् स्युः पय तु मे हर्षः
श्रुत्वा वागमृतं तव ॥१॥ विदुर उवाच धृग भूय प्रवक्ष्यामि मार्गस्थैतस्य विस्तरम् ।
पच्छ्रुत्वा त्रिप्रमुच्यन्ते संसारेभ्यो विचक्षणः । २ । यथा तु पुरुष राजन् दीर्घमध्वान
मास्थितः । क्वचित् क्वचित् च्छमाच्छान्तः कुरुते वानमेव च ॥३॥ एवं संसारपर्याये
गर्भवासेषु भारत । कुर्वन्ति बुधुषा वास मुच्यन्ते तत्र पण्डिता ॥४॥ तस्माद्भ्रान्तगोचै
गिरतीहै उनको काम रमजानो जिसमें मनुष्य डूबते हैं । १ । जिन्होंने इस प्रकार संसार
चक्रकी गतिकोजानाई निश्चय करके बहमनुष्य संसार चक्रके पाशको काटते हैं १४।

अध्याय ७ ॥

धृतराष्ट्र बोले हे महात्मा तत्स्वदर्शी आपने मोक्ष देनेवाली कथा कही उसको
आप फिर मुप्यथा समेत कहो मैं सुनना चाहता हूँ । १ । विदुरजी बोले सुनो मैं
फिर उस मार्गके क्रमको कहता हूँ जिसको सुनकर ज्ञानीलोग संसारेसे छूटते हैं । २।
हे राजा जैसे कि बड़े मार्गमें नियत मनुष्य जहां तहां थककर निरास करता है
। ३ । हे भरतवंशी इसी प्रकार अज्ञानी मनुष्य संसारमें मूढिरूप गर्भ में वारम्बार
निवास को करता है । ४ । और ज्ञानीलोग शीघ्र जाते हैं इस हेतुसे शास्त्रज्ञ लोगों



which men are drowned Those who know the course of the wheel
of the world, cut away the bonds " 14



CHAPTER VII

Dhritrashtra said, " You have pointed out the way to salvation. Pray explain it once more. I wish to hear of it." Vidur said, " Hear once more the account of the way leading to salvation. A foolish man stays in various births like one staying at different stages when tired in a journey. One endowed with gyan crosses this dense forest of the world soon er. Wise men have no desire to move with

तमाहुः शास्त्रविदो जनाः । तत्तत् संसारमहतं घनवाहुर्मनीषिणः ॥ ५ ॥ सोऽयं लोके
 समाज्जितो तत्पानां भरतर्षभ । वराणां स्याद्वरणाणाञ्च न मृदुवत्तत्र पण्डितः ॥ ६ ॥
 शरीरं मानसाद्यैव मर्मानां ये तु द्वाघवः । प्रत्यक्षाश्च परोक्षाश्च ते द्वालः
 कथितबुधैः ॥ ७ ॥ क्लिप्तमानाश्च तैर्नित्यं धार्थ्यमाणश्च भारत । स्वकर्मभि
 र्महाद्वपालैर्नोद्धिजन्त्यव्यबुधयः ॥ ८ ॥ यथापि तैर्धिमुच्येत ध्याधिभिः पुरुषोऽनुप । बाह
 षोऽप्येव तं पश्चाज्जरा रूपदिनाशिनी ॥ ९ ॥ शब्दरूपरसस्पर्शगन्धैश्च विविधरपि ।
 मञ्जमानं महापङ्क निराळभ्ये समन्ततः । १० ॥ संवत्सरर्चवो मासाः पक्षाहोरात्रपं
 कवः ऋषेणास्योपयुञ्जन्ति रूपमायुस्तथैव च ॥ ११ ॥ एते कालस्य निबन्धो नैतान्
 जानन्ति दुर्बुधाः । धात्रामील्लिखितान्याहु सर्व भूतानि कर्मणा । १२ ॥ रथः शरीरं
 भूतानां सत्त्वमाहुस्तु सारधिम् । इन्द्रियाणि हयानाहुः कर्म बुद्धिश्च रश्मयः ॥ १३ ॥

ने इसको मर्गो कहा है और जिन ज्ञानियों ने जिन संसारको घनवन कहा है हे
 पुरुषोत्तम वह इर स्थावर और जङ्गलजीवोंका चलायमान चक्र है पण्डित उसकी
 इच्छा नहीं करता है । ६ । शरीरधारियों के शरीर और चित्तसं सम्बन्ध रखने
 वाले जो रोग हैं उनको ज्ञानी लोग गुप्त और मरुत रूप सर्प कहते हैं । ७ । हे
 भरतर्षभो निर्वृद्धी मनुष्य उन्हींने दुःखरोगवाले और भायल होकरभी अपने कर्म
 रूपी सर्पोंसे व्याकुलताको नहीं पाते हैं हे राजा जब मनुष्य उन रोगोंसेभी छूटना है
 तब उस पुरुषको रूपही विनाश करनेवाली जरा मवस्था दवालेती है । ९ । जोकि
 शब्द, रूप, रस, स्पर्श और नानाप्रकार की गन्धियोंसे भी निराधार वृद्धी की चर्म
 चारोंओरसे दूनाहुआ है पूर्ण पर्य छःशत बारह महीने दोनों पक्ष दिनरात और
 उनकी सन्धियां यह सब ऋगपूर्वक उसके रूप और भवस्याको जीण करते हैं । ११ ।
 यह काळकी निधि है दुर्बुद्धी लोग उनको नहीं जानते हैं सब जीवोंको उनके कर्म
 से ईश्वरका लिखाहुआ कहा है । १२ । शरीरधारियोंका देहस्थ है चिन्ता सारथी
 है इन्द्रिय घोड़े हैं और कर्मबुद्धी उस रथकी वागडोर है । १३ । जो पुरुष उन
 कनेराल घोड़ोंके पीछे दौड़गा है वह इस संसारचकर्म चक्रके समान घूमता है । १४ ।

the wheel which moves the living and lifeless creature. The diseases which attack living beings have been called serpents by the wise. The fool, though attacked by them is not distressed in his mind, and when he is freed from such diseases, old age overtakes him. He is stuck in a deep mire, and days, nights, fortnights, seasons and years decrease the period of his life. 10. Foolish men do not know the treasure of time. It is said that God gives beings the reward of their deeds. The body of beings is a car; anxiety is its driver; organs of senses are its horses and wisdom is its trace. He who runs after the horses, turns round with the wheel. He who curls them with wis-

तेषां हयानां यो वेगं धावतामनुधावति । स तु संसारचक्रीस्मिन् चक्रवत् परिवर्तते ॥ १४ ॥ यस्मात् संयमते बुद्ध्या संयतो न निवर्तते । स तु संसारचक्रीस्मिन् चक्रवत् परिवर्तिते ॥ १५ ॥ यं तु संसारचक्रेऽस्मिन् चक्रवत् परिवर्तते । भ्रममाणा न मुह्यन्ति संसारे न भ्रनन्ति ते । संसारे भ्रमतां राजवः बुद्धि मतोऽपि जायते ॥ १६ ॥ तस्मादस्य निवृत्त्यर्थं यत्नमेव चरेद्बुधः । उपेक्षा नात्र कर्तव्य शतशब्दः प्रवर्तते ॥ १७ ॥ यतेन्द्रियो नरो राजन् क्रोधलोमनिगकृतः । सन्तुष्टः सत्यवादी यः स शान्तिमीधगच्छति ॥ १८ ॥ याम्यमाहू रथं ह्येन मुह्यन्ते येन बुबुधा अत्रुतर्षुलमेवेतदु खं भवति भारत ॥ १९ ॥ साधुः परमबुद्धानां बुद्धिभैषज्यमाचरेत् ज्ञानौषधमवाप्येह दूरपां महौषधम् ॥ २० ॥ न विक्रमो न चाप्यर्थो न मित्रं न सुहृ द्भ्राना तथोन्मोचयते दुःखाद्यथात्मा स्थिरसंयमः ॥ २१ ॥ तस्मान्मित्रं महास्थाय शील

गं जितेन्द्रिय उनको बुद्धिसे आर्पित करताहै बहचक्रके समान घूमनेवाले इस संसार चक्रमें लौटकर नहीं आताहै । १५। वह संसार में भी घूमते हैं परन्तु घूमतेहुये मोहको नहीं पाते हैं वही दु ख संसार के घूमनेवालों के लिये भी उत्पन्न होताहै । १६ । इस हेतुसे ज्ञानीको उचितहै कि इस संसार से छूटनेका उपायकरे इसमें, कर्मभूल और देर नकर नां चाहिये नहींतो सैकड़ों शाखावाला वृक्ष वृद्धिको जाताहै । १७। हे रामा जो पुरुष जितेन्द्रिय क्रोध लोभसेरहित सन्तोपी और सत्यवक्ताहै वहशांति को पाताहै । १८ । हे भरतवंशी यहभी कहाहै कि पश्चात्ताप करनेसे दुखश्रोताहै ज्ञानी बड़े दुखोंकी औषधी ज्ञानको ही समझे । १९ । इसलोकमें, जितेन्द्रिय मनुष्य बड़ी दुष्प्राप्य ज्ञानरूपी महाऔषधीको पाकर दुःखरूपी बड़ेरोगको उसमें काटे । २० । घोर दुःखसे घैसे ननो पराक्रम छुडताहै न धन मित्रऔर सुहृद्वरण छुडतेहैं जैसे कि जितेन्द्रियात्मा छुडताहै । २१ । हे भरतवंशी इसकारण से सबभावोंकी प्रीतिमें निपट होकर सुन्दर प्रकृतिको पाकर जितेन्द्रियपन, त्याग और साधधानीको प्राप्तकरे यह बीनांशकके घोड़ेहैं । २२। हेराजा जोऽरुप मृत्यु के भयको त्यागकरके

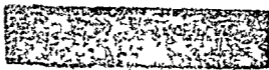
dom, does not come back. 15. He turns with the wheel, but does not lose senses with it. A wise man should try to release himself from the world without idleness and mistake or there shall be raised from it a tree having hundreds of branches. He who has control over senses, who is free from avarice, and who is satisfied and truthful, gets peace of mind. Remorse gives pain and gyan is the medicine of all pains. One having control over organs, having got the great medicine of gyan, should cut away all disease with it. 20. Neither prowess, nor wealth or friends give relief from trouble as does the control over senses. Let one therefore love all the world with control of senses, resignation and carelessness which are the horses of Balaam. He who gives up all fear

मापद्य भारत । दमस्त्यागोऽप्रमादश्च ते त्रयो ब्रह्मणो ह्यया ॥ २२ ॥ शीलराईमलमा
 युक्त स्थितो यो मानसे रथे । त्यक्त्वा मृत्युभय राजन् ब्रह्मलाक स गच्छति ॥ २३ ॥
 अमय सर्वभूतेभ्यो यो ददाति महोपते । स गच्छति पर स्थान विष्णोः पद्मनाभस्य
 ॥ २४ ॥ न तत् क्रतुसदस्रे नोपवाशैश्च नित्यश । अमयस्य हि दानेन यत् फल प्राप्नु
 पात्रम् ॥ २५ ॥ न ह्यात्मन प्रियतर किञ्चित् भूतेषु निश्चितम् । अनिष्ट सर्वभूतानां
 मरण नाम भारत । तस्मात् सर्वेषु भूतेषु दया कार्या विपश्चिता ॥ २६ ॥ नानामोहस
 मायुक्ता बुद्धिजालेन सभृता । असूक्ष्मदृष्टयो मन्दा भ्राम्यन्ते तत्र तत्र ह । सुसूक्ष्मद
 र्षयो धीरा ब्रजन्ति ब्रह्मसात्म्यताम् ॥ २७ ॥

इति स्त्रीपर्वाणि जलपादानिरुपर्वाणि घृतराष्ट्रशोकापनोदने सप्तमोऽध्यायः ॥ ७

शीतल किरणोंसे युक्त चित्तरूपी रथपर नियत है वह ब्रह्मलोकको पाता है । २३ ।
 और जो परुष सबजीवों को निर्भयता देता है वह सर्वव्यापी परमेश्वर के उस उत्तम
 स्थानको जात है जोकि मायाकी उपाधियों से रहित है । २४ । मनुष्यजो निर्भयता
 देने से कलुषपाता है वह इन्द्रारण्यज्ञ और सदैव व्रतोंके भङ्ग करने से नहीं पासक्ता है । २५ ।
 जीवोंमें आत्मा स अधिक कोई प्यारा नहीं है हे भरतवशी सबजीवोंका अप्रिय मरण
 नाम है इसहेतुसे ज्ञानीको सबजीवोंपर दयाकरना चाहिये । २६ । नाना प्रकारके मोहसे
 युक्त भ्रमज्ञान के जालसे ढकेहुये अल्पदृष्टी निबुद्धी मनुष्य जहाँतहाँ घूमते है हे राजा
 सूक्ष्मदृष्टिवाले ज्ञानी सनातनब्रह्मको पाते है ॥ २७ ।

of death and stands on the ear of mind with cold rays gets the region
 of Brahm. He who relieves others from fear, goes to the region of
 the Omnipresent who is free from all blemishes. A merit which such
 a man gets is not obtainable by thousands of sacrifices and vows.
 25 Nothing is dearer than self, and nothing is more averse than
 death therefore one should be merciful to all. Foolish men, in the
 Meshes of ignorance roam here and there, while gyans obtain the
 region of Brahm " 27



वैशम्पायन उवाच । विदुरस्य तु तद्वान्यं निश्चयं कुरुत्तमः । पुत्रशोकामिसंसन्तः
 पपात श्चाभ्य मूर्छितः ॥ १ ॥ तं तथापतितं भूमौ निःसंज्ञं प्रेक्ष्य वाग्धराः । कृष्णद्वैपाय
 नश्चैव क्षत्ता च विदुरस्तथा । सञ्जयः सुहृद्भ्यान्ये द्वा-स्था ये चास्य सम्मताः ॥ २ ॥
 जलेन सुखशोतेन तालवृन्तैश्च भारत । पस्पशुश्च करैर्गात्रं विज्यमानाश्च यत्नतः ।
 आम्बास्य तु चिरं कालं धृतराष्ट्रं तथागतम् ॥ ३ ॥ अथ दायस्य कालस्य लम्बसंज्ञो
 महीपतिः । विललाप चिरं कालं पुत्राधिभरमिच्छुनः ॥ ४ ॥ धिगस्तु खलु मानुष्यं
 मानुष्यं च परिग्रहम् । यतो मूलानि दुःखानि संभवंति मुहुर्मुहुः ॥ ५ ॥ पुत्रनाशोऽर्थ
 नाशो च ज्ञातिसम्बन्धिनामिषं । प्राप्यते सुमद्बहु क्षं विप्रमिप्रतिमं विमो ॥ ६ ॥ येन
 दहन्ति गात्राणि येन प्रज्ञा विनश्यति । येनाभिभूतं पुरुषो मरणं बहु मन्वते ॥ ७ ॥
 तद्विदं व्यसनं प्राप्तं मया भाग्यविपर्ययात् । यस्यान्तं न विगच्छामि ऋते प्राणविप

अध्याय १ ८ ।

वैशम्पायन बोले किराजाधृतराष्ट्र विदुरजी के इसवचनको सुनकर पुत्रशोकसे
 दुर्खा और मूर्छावान होकर पृथ्वीपर गिरपड़ा । १ । सब वान्धव व्यामजी विदुरजी
 सञ्जय अन्य सुहृद् द्वारपाल और जोर उसके अङ्गीकृत थे उन सबने उस प्रकार
 पृथ्वीपर पड़ेहुये अचेन उस धृतराष्ट्र को देखकर सुखदाई शीतल जलसे छिड़का
 और पंखोंसे हवाकरी और उपायों से चैतन्य करतेहुये उन लोगोंने हाथोंसे शरीर
 को स्पर्श किया इसके पीछे उसदशावाले धृतराष्ट्रको बहुत देरतक विश्वासकराय
 । ४ । फिर बहुत देरके पीछे सचेतताको पानेवाले वह पुत्रशोक से युक्त राजा
 धृतराष्ट्र बहुत देरतक विलाप करनेवाला हुआ । ५ । निश्चय करके मनुष्योंमें जन्म
 को और नरलोको में परिग्रहको धिक्कारेहै जिससे कि दुखकामूल वारम्बार उत्पन्न
 होताहै । ६ । हे सर्पध पुत्र धन ज्ञानवाले और नतिदारों का भी नाश होताहै । ७ ।
 जिससे सबभग भस्महोकर बुद्धिकाभी नाशहोताहै और जिसमे भयभीत-मनुष्य
 मरणको बहुत मानताहै । ८ । सोयह दुख मारव्यके विपरीततासे मैने पायाहै प्राण
 त्यागके सिवाय उसके अन्तको अन्य किसी प्रकारसे नहींपाताहूँ । ९ । मैं उसी
 प्रकारकरूंगा हे द्वाहायोमें श्रेष्ठ व्यासजी देखो उसधृतराष्ट्र ने बड़े ब्रह्मज्ञानी महात्मा

CHAPTER VIII

Vaishampayan said, "Having heard the words of Vidur, Dhritrashtra fell down on earth senseless for the grief of his sons. All the kinsmen with Vyas, Vidur, Sanjaya and other friends sprinkled cold water over him and fanned him. They tried their best to bring him to consciousness and touched his body with their hands, consoling him all the while. When coming to consciousness, he lamented long the death of his sons 5. "Fix on me and on my manhood," cried he, "for all this is a source of trouble. The destruction of sons, wealth and kinsmen is like poison or fire. Limbs of the body burn with

यथात् १२ ॥ तच्छेवार्हे किरिष्यामि अथै र द्वित्रनतम ॥ इत्युक्त्वा तु महात्मानं
 गिरं प्रहावित्तमम् ॥ १० ॥ धृतराष्ट्रोऽसन्तुष्टः शोकञ्च परमं गतः । अमूच तर्षणी
 राजामौ ध्यायमानो महीपते ॥ ११ ॥ तस्य तद्वचनं श्रुत्वा कृष्णोद्वापतः प्रभुः । पुत्र
 शोक्ताभसन्तस्तं पुत्रं वचनमब्रवीत् ॥ १२ ॥ व्यास उवाच । धृतराष्ट्र महाबाहो
 यत्त्वं वक्ष्यामि तच्छृणु । धृतराजास्यै मेवायं धर्मार्थकुशलः प्रभो ॥ १३ ॥ तं तैत्थयि
 दिते किञ्चिद्विदितञ्च परन्तप । अनित्यताहि मत्मानां विजानासि न संशयः ॥ १४ ॥
 अधुवे त्रिदलोकैश्च स्थानेषु चाने सति । जीविने मरणात्तेषु कल्पाच्छेषसि
 भारत ॥ १५ ॥ प्रत्यक्षं तव राजेन्द्र पैरस्यास्य स मुञ्जवः । पुत्रं ते कारणं कृत्वा काल
 योगेन कारितः ॥ १६ ॥ अवश्यं भवितव्ये च कुक्कणा वैशसे' नृप । कर्मण्य टोचसि
 तान् शूरान् गतान् परमिकां गतिम् ॥ १७ ॥ ज्ञानताञ्च महायाज्ञो विदुरेण महारमणा।

पितासे यह कहकर अचेतनाको पाकेवड़े शाकको पाया अर्थात् वह राजा तराष्ट्र
 ध्यानकरताहुआ मौनहोगया । ११ । प्रभु व्यासजी उसके उसवचनको सुनकर
 पुत्रशोकसे दुखी अपने पुत्रसे यह वचन बोले । १२ । हे महाबाहु धृतराष्ट्र जोभिकहूँ
 उसको सुनो तुम शास्त्र और शास्त्रोंके स्मरण रखनेवाले बुद्धिके स्वामी औरधर्म
 अर्थमें भी कुशलहो । १३ । हे शत्रुओंके तपानेवाले तुझमें देनाई बात अज्ञात नहीं
 है हे वड़े ज्ञानी तुम जीवधारियों की अनित्यताको जानते हो हे भरतयंजी इस
 विनाशवान् जीदलोकमें विनाशवान् निवास स्थान के होनेपर जीवन और
 मृत्युमें किस निमित्त शोचते हो । १५ । हे राजेन्द्र इस शत्रुता की मरत्यसता
 आपको दृष्टिगोचर है कालयोगसे आपके पुत्रका कारण बनाकर सध्यारेख्ये । १६।
 हे राजा कौरवोंकी भवश्य भावी नाश होनेपर उनपरमशानि पानेवाले वीरों को किस
 हेतुसे शोचतेहो । १७ । हे महाबाहु राजाधृतराष्ट्र मैंने और बुद्धिमन्त्र विदुरने भी
 सबकार से सन्धिमें उपाय किया । १८ । बहुतकाळतक उद्योग करनेवाले किसी
 जीवसेभी देवता रचाहुआ मर्ग मेरेपाने बन्दकरने के सोग्यनहीं है । १९ । मैंने
 अपने नेत्रों के समक्षमें देवताओंका प्रोक्तार्थ सुना मैं उनको उसी प्रकारसे कहताहूँ
 जिससे कि तेरी स्थिर बुद्धिहोय । २० । यज्ञावट मे रहित में एकमय वही कीर्त

grief and wisdom is destroyed, causing one to desire for death. I
 have got through all this trouble by the vicissitude of Time and see
 no relief except in death. I shall die, Vyas." 10. Having said this
 to Vyas, Dhritrashtra again fainted and became silent. Vyas was
 much affected with his sorrow and said, "Hear me, Dhritrashtra,
 for you are learned and wise and have experience of the world.
 Nothing is hidden from you, destroyer of foes. You know the
 mortal nature of beings. Why do you grieve at death? 15. You know of the
 enmity. All men were slain on account of your son. But the destruction of

वातिं संव्यसनेन शमं प्रति जनेश्वर ॥ १८ ॥ न च देवहृतो मार्गः शक्यो भूतने केन
 चिद् । अटहापि बिभ्रं कालं विचक्षुमीति मे मतिः ॥ १९ ॥ देवतमां हि यत् कार्यं
 मया प्रत्यक्षतः कृतम् । तत्रेह संभवश्यामि कथं शक्यं भवेत्तव ॥ २० ॥ पुराहं स्वर्ति
 तोवातः समाभिन्द्रीं जितपलमः । अयद्यत् तत्र च तदा समयेतान् दिव्यैस्तः २१ ॥ नारद
 प्रकृत्यापि सर्वं देवर्षद्योग्यम् । तत्र चापि मया इन्द्र्या पृथिवीं पृथिवीपते ॥ २२ ॥
 कार्पाथमुपसंभ्रष्टा देवतानां समीपतः । उपगम्य हदा प्राप्ती देवामाह समागतान्
 ॥ २३ ॥ यत् कार्पाथममुष्माभिर्द्वेषः सद्यमे तदा । प्रतिज्ञातं महाभागान्त्वेऽग्रं संविधीय
 तात् ॥ २४ ॥ तस्मात्प्रथमेन ह्युत्वायिष्णुलोकात्मरुतः । उपाय धाम्य प्रहसन् पृथिवीं
 देवसंस्तुति ॥ २५ ॥ अतस्तस्य पुत्राणां वस्तु ज्येष्ठः शतस्य वै । दुष्टर्षीयान् इतिज्यातःस
 ते कार्पाथं करिष्यति ॥ २६ ॥ तस्मात्प्रथमं मदीयालं कृतकर्या भविष्यादि । तस्वांयं पृथि

ताके इन्द्रजीमिनां में मया और सप्त इन्द्रदेवदेव देवताओंका देखा । १९ । हेराजा
 बहावर वैदिक बारदादिक सप्त देवदेवपिपों को और पृथ्वीकोमी देखा । २० । यह
 सप्त पिण्डहर धर्मकर्षके निमित्त इन्द्रादिक देवताओंके सम्मुख वर्षमानहुये तब
 पृथ्वी ने सतीपलापर इन इन्द्रदेवदेवताओंसे करा । २१ । कि हेमहाभाग देवता
 कोबो धार सोमने मत्सलोकमें गित मेरेकार्य करनेकी गतिज्ञाकी है उसको शीघ्र
 करो । २२ । जोकेपूजित विष्णुजी देवसभामें उसके सवचनको, पुनकर ईसतेहुये
 सप्त पृथ्वीसेपर बचन बोले । २३ । धृतराष्ट्र के सौ बेटोंमें बड़ा बेटादुर्षोधन नामसे
 पतिपदे परैवत कार्य करेना । २४ । हत राजादो पाकर अभीष्ट माप्तकरेगी
 उसके शिशुपुत्रसेमें इकादेहोनेपाल और हृशयसे महार करनेवाले राजाजोग पर
 हार नारैवे हे देवी इतके पीछेपुत्र में तेरे भारकानाशहोगा । २५ । हे शोभा
 वान् शीघ्र अपनेसभानको धारो और सृष्टिको धारण करो । २६ । हेराजाओंमें

the Kuravas was unavoidable; why do you grieve for those who have
 got good regions ? I as well as Vidur tried our best to make peace.
 The decrees of Fate cannot be annulled by any human effort. For
 your satisfaction I tell you what I myself saw in the assembly of
 gods. 20. Once I went to the court of Indra without being tired.
 There I saw Narad and other rishis as well as our Earth. All the
 gods were assembled there for their respective businesses. She then
 approached the gods and thus addressed them, " Make haste, O gods,
 to fulfil the promise you made regarding me in the region of, Brahm.
 Vishnu, respected by the world, said to her with a smile, " Duryo-
 dhan the eldest son of Dhritrashtra will do thy work. 26. You
 will gain your object through him : the assembled kings will fight at
 Kurukshetra and shall relieve you of your burden. Go to your place,
 and keep on supporting the world. " Your son Duryodhan was born

वीपालाः क्रुरक्षेत्रे समगतः ॥२७॥ अन्योन्येघानयिष्यान्ति दृष्टेःशस्त्रे प्रहारिणः। ततस्ते
 विदिंदे देवि भारस्वयुधि नाहानम् ॥ २८ ॥ गच्छ शीघ्रं स्वर्गं स्थानं लोकं
 धारय शोभनं ॥२९॥ य एष ते सुतो राजन लोकसदारकरणात् । कलेरंशुः समुत्पन्नो
 गान्धार्या जहरे नृप ॥ ३० ॥ अमर्षी अपलद्वेषि क्रोधनो युष्प्रसादनः । देवयोगात्
 समुत्पन्ना भ्रातरश्चास्य तादृशाः ॥ ३१ ॥ शकुनिर्मानुलश्चैव कर्णश्च परमः सखा ।
 समुत्पन्ना विनीतार्थं पृथिव्यां सहितौ नृणाः ॥ ३२ ॥ यादृजो ज्ञेयत राजा तादृशोऽस्य
 जनो भवेत् । अर्धमो धर्मतां गति स्वामी चेद्दार्मिको भवेत् ॥ ३३ ॥ स्वामिना गुणो
 दोषाभ्यां भूत्याः स्युर्नात्र संशयः । दुष्टं राजनमासाद्य गतास्ते तनया नृप ॥ ३४ ॥ एत
 मर्थं महाबाहो नारदो वेद तत्त्ववित् । आत्मापरात्मा च पुत्रास्ते चिन्मताः प्राणयोगते । मा
 तां शोचस्व राजेन्द्र न हि शोकैः क्विं कारणम् ॥ ३५ ॥ न हि ते पाण्डवाः स्वल्पम
 पराभ्यन्ति भारत । पुत्रास्तवदुरात्मानो वैरिणं घातिता मही ॥ ३६ ॥ नारदेन च मद्रस्ते

श्रेष्ठ राजा धृतराष्ट्र संसारके नाशके कारण से वह तेरापुत्र कलियुग अंश गान्धारी
 में उत्पन्न हुआ था । ३० । जोकि अशान्त चपल क्रोधका अभ्यासी और दुबसे
 पराजय होनेवाला था देवयोगने उसके भाईगी उसी प्रकारके उत्पन्न हुये । ३१ ।
 और माया शकुनी और बड़ाभिन्नकर्ण और बहुतने राजालोग संसारके नाशके नि-
 मिष उत्पन्नहुये । ३२ जैसा राजा उत्पन्न होता है उसीप्रकार के उत्पन्नआदमी भी
 उत्पन्नहोते है जाँस्वामी धर्मका अभ्यासी होता है उस दशमें अधर्म भी धर्मताको
 पाता है । ३३ । स्वामियोंके गुण दोषों से निस्तन्देह उसीप्रकार के नाँकर चाकर
 होंगे हेराजा तेरे पुत्र दुष्टराजा हो पाकर इस संसार सेगये हे महाबाहु नारदजी
 इसप्रयोजनको मुँखता समेत जानते है हेभरतवंशी तेरे पुत्र अपने अपराधसे नष्टहुए
 उनका शोचमत्कर । ३५ । पाण्डव घोड़ाभी अपराध नहींकरते जिन्होंकेहाथसेयह
 सब संसार मारागया । ३६ । तेरा भलाहोय प्रथमही राजमूढपद्ममें नारदजीने सु-
 धिष्ठिरकी सभामें वर्णन कियाथा । ३७ । कि हे कुन्तीकेपुत्र सुधिष्ठिर कुछकाल पीछे
 कौरव और पाण्डव परस्पर सम्मुख होकर नाशको पावेंगे जो तेरे करने के योग्य

of Kali and Gandhari to destroy the world. 30. He was dissatisfied, rash and invincible. His brothers too, were of his mind. His uncle Shakuni, his friend Karan and other princes too were born to destroy the world. The Subjects are like him, while, they speedily take to his bad habits. Thy sons departed from the world for the fault of thy son who was their king Narad knows this well. Thy sons were destroyed by their faults. Be not grieved for them, 35. Tho Pandavas have committed no fault in destroying the world Narad had foretold it at the Rajasuya sacrifice of Yudhishtir that the Kauravas and

पूर्वमेव न संशयः । युधिष्ठिरस्य समितौ राजसूये निवेदितम् ॥ ३७ ॥ पाण्डवाः
 कौरवाश्चैव समासाद्य परस्परम् । न भविष्यन्ति कौन्तेय यद्ये हृत्यं तदाश्चर ॥ ३८ ॥
 नारदस्य वचः श्रुत्वा तदाशोचन्त पाण्डवाः । एवं ते सर्वमाप्यायानं देवगुह्यं ज्ञानात्मनम् ॥ ३९ ॥
 कथं ते शोकनाशः स्वस्त्वात् प्राणदुःखं दया प्रभो स्नेहेदं च पाण्डुपुत्रेण ज्ञात्वा
 देवहृतं विधिम् ॥ ४० ॥ एव चापौ महाबाहो पूर्वमेव मया श्रुतः । कथितो धर्मराजस्य
 राजसूये क्रतूत्तमे ॥ ४१ ॥ यतित धर्मपुत्रेण मया गुह्ये निवेदिते । अविप्रद्वे कारवाणां
 देवन्तु बलवत्तरम् ॥ ४२ ॥ जनति क्रमजीवो द्वि विधी राजन् कथयन्त । कृतान्तस्य
 तु मूतेन ह्यशारेण प्रलेन च ॥ ४३ ॥ भवान् धर्मपरो यत्र युद्धिधेष्टश्च भारत । मुह्यते
 प्राणिनां ज्ञात्वा गतिश्चानतिमेव च ॥ ४४ ॥ त्वान्तु शोकेन सन्तप्तं मुह्यमानं मुहुर्मुहुः ।
 ज्ञात्वा युधिष्ठिरो राजा प्राणानपि परित्यजेत् ॥ ४५ ॥ कृपालुर्नित्यशो घोरस्तिर्यग्योनि
 गतेऽपि । स कथं त्वपि राजेन्द्र कृपां वै न करिष्यति ॥ ४६ ॥ मग धैर्यं नियोगेन विधे
 ज्ञाप्यनिवर्त्तनात् । पाण्डवानाश्च काश्यपात् प्राणान्धारय भारत ॥ ४७ ॥ एवं ते वर्त्तमा

हे उसको कर । ३८ । तब पांडवोंने नारदजी के बचनको सुनकर शोचि किया यह
 देवताओंकी गुप्त और सनातन बातें मैंने तुम्हसे कही । ३९ । अबतू अपने प्राणों
 पर दया और पाण्डवोंपर प्रीतिकर जिससे कि देवके कर्मको जानकर तेरा शोक
 दूरहोय । ४० । हे महाबाहु बहनात मैंने प्रथमही सुनीधी जो कि धर्मराजके उत्तम
 राजसूययज्ञ में कही गई थी । ४१ । तुम्हने गुप्त बातके कहनेपर धर्मके पुत्रने कौरवों के
 गुप्त नहाने में उपाय किये परन्तु देव बड़ा प्रबल है । ४२ । हे राजा कालकी रची
 हुई जो सनातन विधि है वह इमलोकमें किसी जीवधारी से चन्दचंदन करने के योग्य
 नहीं है । ४३ । हे भरतवंशी धर्मात्मा आप प्राणियों की गति और अगतिपोंको
 भी जानकर इनमें अचेन होतेही धर्मात्मा । ४४ । राजा युधिष्ठिर तुमको शोक
 से दुखी और वारवार अचेन होनेवाला जानकर अपने प्राणोंको भान्याग करसक्ता
 है । ४५ । वह धैर्यवान् सदैव पशु पक्षियोंपर भी दयाका करनेवाला है हे राजेन्द्र वह
 तुमपर कैसे कृपानहीं करेगा । ४६ । हे भरतवंशी मेरी आज्ञासे देवके उल्लंघन न
 होने से और पाण्डवोंका दयासे प्राणों को धारण करो । ४७ । इसप्रकार लोके में

the Pandavas would be destroyed by the hand of each other, and the Pandavas were sorry for it. I have told you that secret of gods. Now feel mercy on your own life and love the Pandavas so that your grief may abate by the knowledge that it was the work of God 40. I was already aware of the words told at the Rajsuya sacrifice of Yudhishtir. Knowing this secret from me, Yudhishtir tried to make peace, but the working of Fate is powerful. It can not be annulled by any one. You lose your senses, though you know the course of living beings. Knowing you in such distress of mind, Yudhishtir may lose his life 45. He is merciful to beasts and

नस्य शोकं कीर्तिर्भवति । घृतराजः सुमहांस्तात तप्तस्याञ्च तपश्चिरात् ॥ ४८ ॥
 पुत्रशोकं समुपगता हुताशं ज्वलितं यथा । प्रज्ञाम्भसा महाराज विधीयते सदा सदा
 ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत् श्रुत्वा तस्य वचनं व्यासस्यामिततजसः । मुहुर्त्तं
 समनुध्याय धृतराष्ट्रोऽभ्यसत ॥ ५० ॥ महता शोकजालेन प्रणुजोस्मिन् द्विलोत्तम ।
 नात्मानमवबुध्यामि सुखमातो मुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ इदन्तु वचनं श्रुत्वा तव देवविभोग
 जम् । धारयिष्याम्यहं प्राञ्चान् घटिष्ये न तु शोचितुम् ॥ ५२ ॥ एतत् श्रुत्वा च वचनं
 व्यासः सत्यवतीमुत । धृतराष्ट्रस्य राजेन्द्र तत्रैवान्तरधीयत ॥ ५३ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलमादानिर्हर्षांगि धृतराष्ट्रशोकापनेपनेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



तुल्य वचनान् रहनेवाले ही कीर्तिर्होगी और हेतात बड़ा धर्म और बहुतकालतक
 तपाहुआ तप प्राप्तहोगा । ४८ । हेमहाराज ज्वलितरूप अग्निके समान उत्पन्न होने
 वाले पुत्रशोकको ज्ञानरूपी जलसे शान्त करनेके योग्यहो । ४९ । वैशम्पायन बोले
 कि धृतराष्ट्र उन बड़ेतजस्वी वासजी के इस वचनको सुनकर एक मुहुर्त्त अच्छे
 प्रकार ध्यानरूपके कहा । ५० । किहे द्विलोत्तम मैं बड़े शोक जालसे कठिन दकाहुआ
 चारम्भार अचेत होता सचेतता में नहीं आगहूँ । ५१ । देवकी आज्ञासे उत्पन्न
 होनेवाले आपके इसवचनको सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूँगा और शोच करनेमें
 मट्ट नहीं हूँगा । ५२ । हेराजेन्द्र सत्यवती के पुत्र वासजी धृतराष्ट्रके इसवचनको
 सुनकर उसीस्थानमें अन्तर्धान होगे । ५३ ॥

birds, why should he not be kind to you? Having regard to my words, the power of Fate and pity towards the Pandavas, you should sustain your life. You will thus be famous in the world and will attain great merit. You should quench the fire of your grief by the water of wisdom." Vaishampayan said that having heard the words of glorious Vyasa, Dhritrashtra thought for some time and said, "50 " I am too much pressed by grief and again and again lose my senses, but I shall live to obey you and shall not plunge in grief." Having heard these words, Vyasa disappeared then and there. "53.



जनमेजय उवाच । गते भगवति व्यासे धृतराष्ट्रे महोपतिः । किमचेष्टत विप्रं
 तस्मै व्यथयामासुर्महसि ॥ १ ॥ तथैव औरवी राजा धर्मः । महाप्रतापः । कृपप्रसूतय
 चैव किमकुर्वत ते त्रयः ॥ २ ॥ अश्वत्थामनः श्रुतं कर्म शापद्वान्योन्यकारितः । वृक्षा
 तमुत्तरं मूर्ध्नि यद्भाषत सत्रयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते दुष्योधनेचैव हते
 सैन्ये च सर्वश । सञ्जयो विगतप्रज्ञो धृतराष्ट्रमुपस्थितः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच ।
 आगम्य नानादेशेभ्यो नानाजनपदेश्वराः । पितृलोकं गता राजन् सर्वे तव सुनैः सह
 ॥ ५ ॥ पुत्राणामय पौत्राणां पितृणाञ्च महोपते । आनुपूर्व्येण सर्वेषां प्रेतकार्याणि
 कारय ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचन घोरं सञ्जयस्य महोपतिः । गता
 सुरिय निश्चयो न्यपतत् पृथिवीतले ॥ ७ ॥ ते शयानमुपागम्य पृथिव्यां पृथिवीपतिमा
 विदुरः सर्वघर्मज्ञ इदं वचनमब्रवीत् ॥ ८ ॥ उत्तिष्ठ राजन् किं शोभे मा शुचो भगवतः ॥

अध्याय ९ ॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मर्षि भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्र ने
 क्या किया वह मुझसे कहनेको योग्यहो । १ । उत्तमचार धर्मपुत्र बड़े साहसी
 राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया शत्रुत्वत्यामा का कर्ममुना
 और परस्पर दियाहुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिससे
 सञ्जयने कहाहै । २ । वैशम्पायन बोले कि दुष्योधन के और सब सेनाके मरनेपर
 अबतः सत्रय धृतराष्ट्र केपास आये । ३ । हे राजा सब राजा नाना देशोंमें आकर
 अपनेपुत्रों समेत पितृलोकोंको गये । ४ । हेराजा पुत्र पौत्र और पिता आदिक
 जां रणभूमि में मरें उनसब के कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो । ५ । वैशम्पायन बोले
 कि राजाधृतराष्ट्र सञ्जयके उद्वेग वचनको सुनकर निर्जीवके समाननिश्चिष्टहोकर
 पृथ्वीपर गिरपड़ा । ६ । सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उम पृथ्वीपर सनेवाले राजाके
 पास आकर इस वचनको बोले । ७ । हे भरतर्षभ लोकेश्वर राजाधृतराष्ट्र उमेशोच

CHAPTER IX

Janmejaya said, " What did Dhritrashtra do at the departure of
 Vyas ! Pray tell me all that he as well as brave Yudhishtira and the
 three warriors, Kripacharya and others did. I have heard the exploits
 of Ashwathama and the mutual curses, pray tell me what happened
 next as you heard it from Sanjaya." Vaisampayan said, " At the
 destruction of Duryodhan and his army Sanjaya came to Dhritrashtra
 and said, " All the princes who had come here from various countries
 have gone to the region of Yam; perform the obsequies of your sons,
 grandsons and elders who died in the war." Vaisampayan says that
 on hearing the heart rending words of Sanjaya, Dhritrashtra fell down
 on the earth like an inanimate thing. 7. Vidur the virtuous came
 to him and said, " Rise up Dhritrashtra and be not grieved. This is the

नस्य कोकं कीर्तिर्भविष्यति । घनायः सुमहांस्तात तप्तं स्यात्तव तपश्चिरात् ॥ ४८ ॥
 पुत्रशोकं समुत्पन्नं हुताशं ज्वलितं यथा । प्रज्ञाम्भसा महाराज विधापय सदा सदा
 ॥ ४९ ॥ वैशम्पायन उवाच । तत् श्रुत्वा तस्य वचनं व्यासस्यामिततेजसः । मुहुर्त्तं
 समनुध्याय धृतराष्ट्रोऽभ्यस्य पत्र ॥ ५० ॥ महता शोकज्जालेन प्रणुजोस्मि द्विजोत्तम ।
 नात्मानमवबुध्यामि मुह्यमानो मुहुर्मुहुः ॥ ५१ ॥ इदन्तु वचनं श्रुत्वा तव दैवतियोग
 जम् । धारयिष्याम्यहं प्राघ्नं घटिष्ये न तु शोचितुम् ॥ ५२ ॥ एतत् श्रुत्वा च वचनं
 व्यासः स्तप्यवती सुत । धृतराष्ट्रस्य राजेन्द्र तत्रैवान्तरधीयत ॥ ५३ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलप्रादानिर्घर्षांग धृतराष्ट्रशोकापनेपनेअष्टमोऽध्यायः ॥ ८ ॥



तुझ वचनमान रहनेवाले ही कीर्तिर्भोगी और हेतात बड़ा धर्म और बहुतकालतक
 तपाहुआ तप प्राप्तहोगा । ४८ । हेमहाराज ज्वलितरूप अग्निके समान उत्पन्न होने
 वाले पुत्रशोकको ज्ञानरूपी जलसे शान्त करनेके योग्यहो । ४९ । वैशम्पायन बोले
 कि धृतराष्ट्र उन बड़ेतेजसी वासजी के इस वचनको सुनकर एक मुहुर्त्त अच्छे
 प्रकार ध्यानकरके कहा । ५० । किहे द्विजोत्तम मैं बड़े शोक जालसे कठिन टकाहुआ
 चारम्बार अचेत होता सचेतता में नहीं आयाहूँ । ५१ । दैवकी आज्ञासे उत्पन्न
 होनेवाले आपके इसवचनको सुनकर मैं प्राणोंको धारण करूंगा और शोच कल्पमें
 मट्टच नहीं हूंगा । ५२ । हेराजेन्द्र सत्यवती के पुत्र वासजी धृतराष्ट्र के इसवचनको
 सुनकर उसीस्थानमें अन्तर्धान होगये । ५३ ॥

birds, why should he not be kind to you ? Having regard to my words, the power of Fate and pity towards the Pandavas, you should sustain your life. You will thus be famous in the world and will attain great merit. You should quench the fire of your grief by the water of wisdom." Vaishampayan said that having heard the words of glorious Vyasa, Dhritrashtra thought for a some time and said, 50 " I am too much pressed by grief and again and again lose my senses, but I shall live to obey you and shall not plunge in grief." Having heard these words, Vyasa disappeared then and there. " 53.



जनमेजय उवाच । गते भगवति व्यासे धृतराष्ट्रो महोपतिः । किमचेष्टत विप्रं
 तन्मे व्यथयानुमर्हसि ॥ १ ॥ तथैव कौरवो राजा धर्मज्ञो महागताः । कृपप्रसूतय
 च किमकुर्वत ते त्रयः ॥ २ ॥ अद्भुतान् कर्म शापान्प्रान्योन्यकारितः । वृथा
 तमुत्तरं ब्रूहि यद्भाषत सत्रयः ॥ ३ ॥ वैशम्पायन उवाच । हते दुर्योधनेचैव हते
 सैन्ये च सर्वश । सञ्जयो विगतप्रज्ञो धृतराष्ट्रमुपस्थितः ॥ ४ ॥ सञ्जय उवाच ।
 आगम्य नानादेशेऽप्यो नानाजनपददेश्वराः । पितृलोकं गता राजन् सर्वे तव स्मृतैः सह
 ॥ ५ ॥ पुत्राणामथ पौत्राणां पितृणाञ्च महोपते । आनुपूर्व्येण सर्वेषां प्रेतकार्यणि
 कारय ॥ ६ ॥ वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वचन घोरं सञ्जयस्य महोपतिः । गता
 सुरिव निश्चष्टो न्यपतत् पृथिवीतले ॥ ७ ॥ ते शयानमुपागम्य पृथिव्यां पृथिवीपतिम्
 विदुरः सर्वधर्मज्ञ इवं वचनमब्रवीत् ॥ ८ ॥ उत्तिष्ठ राजन् किं शोष मा शुचो भरतर्षभः ।

अध्याय ९ ॥

जनमेजय बोले हे ब्रह्मर्षि भगवान् व्यासजी के जानेपर राजा धृतराष्ट्र ने
 क्या किया वह मुझने कहनेको योग्यहो । १ । उसीप्रकार धर्मपुत्र वहे साइती
 राजा युधिष्ठिर और कृपाचार्यादिक तीनोंने क्या किया रामश्चर्यामा का कर्ममुना
 और परस्पर दियाहुआ शाप सुना अब आप उस पूर्व वृत्तान्तको कहिये जिसने
 सञ्जयने कहाहै । २ । वैशम्पायन बोले कि दुर्योधन के और सब सेनाके मरनेपर
 अबत सञ्जय धृतराष्ट्र केपास आये । ३ । हे राजा सब राजा नाना देशोमे आकर
 आपके पुत्रों समेत पितृलोकको गये । ४ । हेराजा पुत्र पौत्र और पिता आदिक
 जा रणभूमि में मरेहुं उनसब के कर्मोंको क्रमपूर्वक करावो । ५ । वैशम्पायन बोले
 कि राजाधृतराष्ट्र सञ्जयके उन्धवार वचनको सुनकर निर्जिवके शयाननिश्चष्टहोकर
 पृथ्वीपर गिरपड़ा । ७ सब धर्मोंके ज्ञाता विदुरजी उन पृथ्वीपर सनेबाले राजाके
 पास आकर इस वचनको बोले । ८ । हे भरतर्षभ लोकेश्वर राजाधृतराष्ट्र उवाचोच

CHAPTER IX

Janmejaya said, "What did Dhritrashtra do at the departure of Vyasa? Pray tell me all that bears well asbrava Yudhishtira and the three warriors, Kripacharya and others did I have heard the exploits of Ashwathama and the mutual curses, pray tell me what happened next as you heard it from Sanjaya." Vaisampayan said, "At the destruction of Duryodhan and his army Sanjaya came to Dhritrashtra and said, "All the princes who had come here from various countries have gone to the region of Yam; perform the obsequies of your sons, grandsons and elders who died in the war." Vaisampayan says that on hearing the heartrending words of Sanjaya, Dhritrashtra fell down on the earth like an inanimate thing. 7 Vidur the virtuous came to him and said, "Rise up Dhritashtra and be not grieved. This is the

एषा वै सर्वसत्त्वानां लोकेश्वर परा गति ॥९॥ क्षत्रियास्ते मरुतात्मान शूराः समितिशो
मना । आशिष परमां प्राप्ता न शोच्याः सर्व एव हि ॥ १० ॥ आत्मानात्मानमाश्वास्य
मा शुचः पुष्पपत्रम् । नाद्य शोकाभिभूतस्त्वं काव्यमुत्सूष्युर्हसि ॥ ११ ॥

इति स्त्रीपर्वणि जलपादानिकपर्वणि घृतराष्ट्रशोकाप्रबोधने नवमोऽध्यायः ॥ ९

वैशम्पायन उवाच । विदुरस्य तु तत्राक्षयं श्रुत्वा तु मरुतपत्रम् । युज्यतां वानमि
त्युक्त्वा पुनर्वचनमब्रवीत् ॥ १॥ क्षिप्रमात्तय गान्धारीं सर्वोच्च भरतस्त्रियः । बधू कुन्ती
मुपादाय याश्चान्यास्तत्र पोषितः ॥ २ ॥ एवमुक्त्वा स धर्मात्मा विदुर धर्मवित्तमम् ।
शोकप्रद्वल्लानो यानमेवान्वपद्यत ॥ ३ ॥ गान्धारीं पुत्रशोकात्तां मर्षुर्वचनचोदितां
सह कुन्त्या यतो राजा सह स्त्रीभिद्यपादपद्य ॥ ४ ॥ ताः समासाद्य राजानं मृश

मन्करो सव जीवधारिणो की यही परमगतिहे । ९ । उन महात्मा शूर और युद्धको
शीमा देने वाले क्षत्रियों ने परमगति को पाया वह सब शोचके योग्य नहीं है १०
हे पुष्पपत्रम् तुझे मे वित्तको विश्वास देकर शोच मतकरो अब शोकमें डूबेहुयेतुम
कानह योग्य जलपानादिक क्रियाके त्यागनेके योग्य नहींहे । ११ ।

अध्याय १० ॥

वैशम्पायन बोले कि पुरुषोत्तम घृतराष्ट्र विदुरजी के उस वचन को सुनकर
सवारि तैयार करो यह कहकर फिर वचनको बोले । १ । बधू कुन्ती आदि अन्य
सर्वक्षत्रियोंको लेकर गान्धारी समेत सब भरतवंशीयों की स्त्रियों को शशित राजा
। २ । यह धर्मात्मा शोकेसे हतचित्त युद्धिमान घृतराष्ट्र ३ हे धर्मवान् विदुरजी से
इस प्रकार कहकर सवारिपर सवार हुये । ४ । पति के वचनम चलायमान शोकेसे
पीड़ित गान्धारी कुन्ती और अन्य सब स्त्रियों समेत जहां गयीं जहां राजाघृतराष्ट्र
। ५ । अत्यन्त शोकयुक्त वह स्त्रियां राजाको पाकर परस्पर मार्चोत्साप करके चली-

end of all the living beings. The great warriors, who have gone to
heaven, are not worth sorrow. Curb yourself with wisdom and be
not grieved. Don't leave the obligations undone on account of your
grief." 11



CHAPTER X

Vishampayana said that on hearing the words of Vidur,
Dronacharya ordered his men to make carriages ready and to bring
karts and other women with Gandhari and the women of the family.

शोककाम्बिताः । आयश्वाभ्योऽश्वमीषु. सः शशमुञ्जुकशुस्त. ॥५॥ ताः समाद्वा
 लक्ष्मणं ताश्चञ्चलतरः स्वयम् । अश्रुतण्डीः समागत्य ततोऽसौ निरप्यौ पुरात्
 ॥ १ ॥ ततः प्रणादाञ्जले सर्वेषु कुरुधेदमपु । आकुमारं पुरं सर्वममच्छोकवर्षितम्
 ॥ ७ ॥ अश्रुपूर्वां वा नार्यः पुरा देवगणरपि । पृथग्जनेन ददपन्ते तास्तवा निहनेश्वराः
 ॥ ८ ॥ प्रकीर्ये कोशान् सुमुमान् भूषणान्यदमुच्यच । एकवक्ष्यग नार्यः परिपेतुर
 न्तयत् ॥ ९ ॥ इधेतपर्वतरुपेभ्यो गुह्येभ्यस्मास्त्वपाक्रमन् । गुहाश्रय इव शैलानां
 पृथक्त्यो हतस्यपः ॥ १० ॥ तान्युदीर्णानि नारीणां तदा वृन्दान्यनेकज । शोकात्तान्धव
 प्राजम् किशोरीणामिवाङ्गरे ॥ ११ ॥ प्रगृह्य वातूरं कोशन्वः पुत्राव भ्रातूरं पितृनपि ।
 दशयतीथ ता इ स्म युगान्ते लोकसंज्ञयम् ॥ १२ ॥ विलपन्वो रुदन्त्यश्च धावमाना

और बड़े उच्चस्वर से पुकारतीं । ५। उन स्त्रियोंमें अधिक पीड़ावान् उन विदुरजी
 ने आंशुओं से पूर्ण उन स्त्रियों को भ्रष्टी रीति से विश्वास कराया और पाठकि
 यों में बैठकर बाहरचले । ६। इसके पीछे कौरवों के सब स्थानों में वडाशब्द
 उत्पन्न हुआ और सब नगर लडकों से वृद्धोत्तम शोकसे पीड़ानानुहुआ । ७। पूर्व
 समयमें जो स्त्रियां देवसमूहों से भी नहीं देखीगई थीं वह सब विधवा स्त्रीः अन्यश्
 मनुष्यों से भी देखीगई । ८। शिके वालोंको फेलाकर और सुन्दर भूषणों को
 उतार कर एक वक्ख रखनेवाली स्त्रियां अनाथ के समान बाहर निकलीं वह स्त्रियां
 श्वेत पर्वतों के समान गृहों से ऐसे निकलीं जैसे कि पहाड़ों की गुफाओंमें
 ऐसी हिरणी निकलें जिनके कि यूषप शिरण मारेगये हों । १०। हे राजा तब उन
 स्त्रियों के बड़े समूह शोकसे पीड़ानान् ऐसे चले जैसे कि घोंड़ियों के बच्चे
 मैदान में निकलते हैं । ११। भुजाओं को पकड़ कर पिता भाई और पुत्रों को
 भीपुकारती हुई प्रलयकालीन संसार के नाशकी दिखलानेवाली हुई । १२। विलाप
 करते रोते जहाँ तहाँ दौड़ते शोकसे इतज्ञान उन स्त्रियोंन करने के योग्य कर्मको

After this he mounted his car. Summoned by Dhritrashtra, Gandhari, Kunti and other women came there. The sorrowful women went on talking and crying. 5. More full of grief than those women and with tears in his eyes, he consoled them and made them ride on palanquins. There were great lamentations in the houses of the Kuravas and the city people, young and old, showed signs of grief. The women, who were not visible even to gods, came out in the presence of all men in their widows' weeds. They went on with dishelved hair, destitute of ornaments, with only one cloth on the body, like those having no guardians. They came out of their white houses like a herd of female deer whose stag is slain. 10 They went on crying like fowls. Calling out the names of fathers, brothers and sons, they made a great noise. Crying out and running hither

सतस्ततः । शौरिणाऽऽह्नयानाः कस्यचन प्रज्विते ॥२३॥ द्विडां जग्मुः पुराथाः स्म
 सखीनामपि योषित । एकपञ्चाशत्तिलिज्जा इवभूणा पुरतोऽभवन् ॥ १४ ॥ परस्परं
 सुखमेतु शोभितादत्रासयन्तद् । ता शोकीयद्गता राजघ्नैश्चन परस्परम् ॥ १५ ॥
 तामि पाश्र्वता राजा रदतीभि सहस्रश नियोगनगराहानस्तूर्णमायोधन पतिः ॥१६॥
 शिम्पिनो वमिजौ वैद्या सर्वे कर्णपजीविनः ते पार्थिव पुरुस्कृत्य निययन्गराह्वहि
 ॥ १७ ॥ तासा विक्रोशमानानावापाना कुटसक्षये । प्रादुरासीन्महान् शब्दो व्यथयन्
 भुवनान्युत । १८ ॥ युगान्तकाले तेषाम्ने भूतानां दह्यतामिव । अभावः स्यादयं प्रात
 इति भूतानि भोनेरे । १९ ॥ भृशमुद्विग्नमनसस्ते पौरा कुटसक्षये । प्राक्रान्तमहा
 राज स्वनुरक्तमदा भूताम् ॥ २० ॥

इति स्वर्वाणो जयपद निरुपाणि नक्ष्त्र कथनराष्ट्रस्य पुरान्निर्वाणेदशानोध्यायः १०



नहीं जाना । १३ । पूर्वममय में भिन स्त्रियोंने सखियों की भी लज्जाको पायाया
 वह एक वस्त्र रखनेवाली बिना परदेवाली स्त्रियां सासों के आगे चलीं । १४ ।
 हेराजा जिन्होंने वधुत थोड़े शोकों में परस्पर विश्वास कराया तब उन शोकसे
 व्याकुल स्त्रियोंने परस्परदेखा । १५ । उन रैनवालीं हजारों स्त्रियों से विगड़ुआ
 महा दुखी धृतराष्ट्र नगरसे चलकर शीघ्रही मैदानमेंगया । १६ । दिल्ली व्यापारी
 वैश्य और सब कर्मों से निर्वाह करनेवाले यह सब राजाको आगे करके नगरसे
 बाहर निकले । १७ । कौरवोंके नाशमें उन पीड़ावान् औरपुकारनेवालों के बड़ेशब्द
 सब भवनोको पीड़ावान् करते प्रकटहुये । १८ । जैसे किमलयकाल वर्तमान होनेपर
 भस्मशनेवाले जांचोंका नाशशोनाहै, उन्हीप्रकार इस ज्ञाशका भीहोना जीवोंने माना
 । १९ । हेपहाराज इस कौरवों के नाशशोनेपर अतन्त व्याकुल चित्त बड़े पीतमान्
 वह पुत्रवासी कठिनवासे पुकारे ॥ २० ॥

and thither, they did not know what to do. These women who were
 abashed even before their playmates, now went on unveiled before
 their mothers-in-law. They who were companions in their grief now
 looked at one another. 15 Surrounded by thousands of weeping
 women, Dhritrashtra went out in open air. Artisans, merchants,
 traders and others followed their king. Lamenting the destruction
 of the Kauravas, their noise was heard far and wide. They thought
 that the great destruction of the warriors had been like that of pralaya.
 The citizens lamented the great destruction of the Kauravas and cried
 with a great noise. " 20.

वैशम्पायन उवाच । कौशमाश्रं ततो गत्वा दृष्टुं महाहरान् । शारदतं कृप

द्रौणिं कृतवर्माणं मेधवः ॥१॥ ते तु दृष्ट्वेव राजानं प्रजाचक्षुरमीश्वराम् । अथ कण्ठा
विनिवृत्त्य रुन्तमिदं मुखम् ॥ २ ॥ सुतस्तत्र महाराज कृत्वा कर्म सुदुष्करम् । गत
सानुसरो राजच्छकलोकं महीपतिः ॥ ३ ॥ दुर्योधनयनामुक्ता वयमेव त्रयो रथाः ।
सर्धमन्यत् पश्चिणं सैन्यं ते मरुतर्षभ ॥ ४ ॥ इत्येवमुक्त्वा राजानं कृप सा द्रुततां ।
गान्धारीं पुत्रशोकात्सामिदं वचनमब्रवीन् ॥ ५ ॥ अमीना युध्यमानास्ते ज्वन्तः शत्रुग
भान् बहून् । वीरकर्माणि कुर्वानाः पुत्रास्ते निघ्नन् प्रताः ॥ ६ ॥ ध्रुवं संप्रप्य लोकस्ते
निर्मलान् शस्त्रनिर्दिज्जतान् । भास्वरं देहमाख्याय विचरन्त्यमरा इव ॥ ७ ॥ न हि कश्चि
द्विशूराणां युध्यमानं परां मुखः । शक्येण निघ्नन् प्राप्नो न च वञ्चित् कृणाञ्जलिः
॥ ८ ॥ एतां तं क्षत्रियस्य ॥ ९ ॥ पुराणाः परमां गतिम् । शक्येण निघ्नन् संख्ये तत्र शोचि

अध्याय ११७

वैशम्पायन बोले कि फिर एककोश जाकर उन कृपाचार्य अश्वत्थामा और
कृतवर्मा महाराथियोंको देखा । १ वह शोकके अश्रुओंमें पूछकर उस से रोदन करतेज्ञान
रूप नेत्र रखनेवाले अपनेसहयोगी राजाको देखेही बहुत श्वास लेकर यहवचन बोले
। २ । हेमहाराज राजाधृतराष्ट्र आपका पुत्र बड़े कठिन कर्मको करके साथियों
समेत इन्द्रलोकको गया । ३ । हेमरुतर्षभ दुर्योधनकी सनामें से हम तीन रथोंमेंचढ़े
शेषपुत्र आपकीसेना नाशहोगई । ४ इसके पीछे शारदत कृपाचार्य राजासे यह
कहकर पुत्र शोकेसे पीडावान् गान्धारी से यह वचन बोले कि निर्भय युद्ध करने
वाले शत्रुओं के बहुत समूहोंको मारनेवाले वीर लोगोंके कर्णों को करके ठरेपुत्रोंने
परणकोपाया। ५ निश्चय करकेवहशस्त्रोंसे विजयोंकोपहुंने निर्मल लोकोंको पाकर और
प्रकाशमान शरीरमें नियतहोकर देवताओंके समान विहारकरतेहैं भडनशूरोंके कोईशूर
वीर मुखफरनेवाला नहीं हुआ किन्तु शस्त्रों से मरणको पाया और हाथ
जोड़कर किमीने भी नाश को नहींपाया । ८ । प्राचीन युद्धों ने

CHAPTER XI

Vaishampayan said, "After going away a mile, Kripacharya, Ashwathama and Kritvarma met one another. With their voice choked with tears, they saw the blind king and said to him with sighs "Your son, O Ling, has gone to the region of Indra along with his companions. Out of that large army we three are only alive, the rest are destroyed." Then Kripacharya said to sorrowful Gandhar, "Thy sons died after doing brave deeds and slaying many foes. O, Surely they have got pure regions and roam there in luminous bodies like gods. None of them turned back from flight. They all died by weapons and none supplicated for life. Such kind of death has been called the best by the wise and therefore you should not be grieved

मुमर्हसि । ९ ॥ न चापि शत्रुवस्तेषामुपशान्ते रात्रिं वाचयथाः । शृणु बहू कृतमस्मानि
 रक्षयामासुरोत्तमैः ॥ १० ॥ अजगेण हत आशा भीमसैन्येन ते क्षणम् । मुप्यं शिबिरमा
 विषय पापं हृत् वदन् कृतम् ॥ ११ ॥ वाचयथा निहताः सर्वे पृष्टपृश्नपुरोगमाः । इष
 वस्वात्मजाश्चैव द्रौपदेयाश्च धानिता ॥ १२ ॥ तथा विहासन् कृत्वा पुत्रशङ्कगणश्च ते
 प्राद्रवाम रणे स्वपातुं न हि दक्षयामहे श्वः ॥ १३ ॥ ते हि कृपा भवेत्प्रासाः क्षिप्रमे
 वपनिं पाण्डवाः । अमर्षेयशमापन्ना धैरं प्रतिजिहीर्षवः ॥ १४ ॥ राजस्त्वमनुजानीहि
 द्वैर्धर्मतित्थं नोत्तमम् । शिष्टान्तं वदत चापि त्वं क्षात्रं वर्तमानं केवलम् ॥ १५ ॥ इत्येष
 मुक्त्वा राजानं कृत्वा चाभिप्रदक्षिणम् । कृपय कृतमर्मा च द्रौणपुत्रश्च आरतः ॥ १६ ॥
 अवेक्षमाणा राजानं दृतराष्ट्रं मनोविषमं । ज्ञानमनुमहात्मानस्तूष्णमदवागबोदयत् ॥ १७ ॥

ने इसप्रकार-युद्धमें शत्रुओं से क्षत्रिय के म शत्रुको पराजयि कहा है इत
 हेतुमें वह शोषकरके योग्य नहीं हैं १९ । हे राजा अन्तोंके शत्रु वाचदयभी दक्षिण
 नहीं हैं अश्वत्थामा आदिक हमलोनों ने जो किया उनको तुमो । १० । अधर्मके
 साथ भीमसेनके हाथ से तेरे पुत्रको पराजुमा हुनकर हमलोनों ने सोवेहुये रोगों
 से युक्त डेरेको पाकर प यदवीय शूरवीरोंका नाश किया । ११-। सब पांचाउ
 जिनका अश्रुवर्षी पृष्टपृश्नया उन सबको मारा राजाश्रुपद के और द्रौपदी के
 सब पुत्रोंको भी मारा । १२ । इसरीति से हम युद्ध में तेरेपुत्र के शत्रुमर्हों
 का नाश करके भागे हैं इम हेतुमे हथ तमिों यहां नियत होने को समर्थ नहीं है
 । १३ । वह शूरवीर पांडव महाशत्रुपथारी क्रोधके आधीन शत्रुनाका बदला लेने
 के अक्रियापी हमारी खाज में क्षीमता से आवे हैं । १४ । हे राजा तुम आज्ञादो
 और पड़े धैर्य में नियत हो शारज्व के अन्तपर होनेवाली मृत्युको और युद्ध
 क्षत्रिय धर्मको भी विचारो । १५ हे भरतवंशी कुपौंचार्प कृतवर्मा और अश्व-
 तथा इन तीनों ने इम प्रकार राजा से कहकर और बदविषा करके । १६ ।

for them. Their enemies the Pandavas too, are not increasing. Hear what we did to them. 10. Hearing that your son was unjustly slain by Bhim, we destroyed the camp of the sleepers. All the Panchals headed by Dhrishtadyama, all the sons of Drupad and Draupadi were slain by us. Having slain the enemies of your son, we have fled from before them and therefore can stay here with you no longer. The Pandavas seek revenge and are coming after us. Let us go, king. Be comforted, thinking of death and the holy duties of kshatryas " 15 Having said this, the three warriors went round the king and they moved their horses towards the Ganges, looking again and again at the king. 17. Going far away from that

अपक्रम्य तु तेराजन् सखे पय महारथाः । आमन्त्रयान्पुन्यमुद्दिग्नास्त्रिधा ते प्रययुस्तदा
 ॥ १८ ॥ अगाम हस्तिनपुरं कृपः शागद्धनस्तदा । स्वमेव राष्ट्रे हार्दिक्यो श्रौणिक्योऽसौ
 अग्रं ययौ ॥ १९ ॥ एवं ते प्रययुर्वीगं धीश्रुतानाः परस्परम् । मयाप्ताः पाण्डुपुत्राणामा
 गस्कृत्वा महात्मनाम् ॥ २० ॥ सप्तैव वीरा राजानं तदात्वनुदिने रवौ । विप्रजग्मुर्महा
 राज्ञ यथेच्छं कमारिन्दमाः ॥ २१ ॥ समास्ताय वै, श्रौणि पाण्डुपुत्रा महारथाः ।
 यजयन्त रणे राजन् विक्रयं तद्धनस्तरम् ॥ २२ ॥

इति श्रीपर्वणि जलमादानिकपर्वाणि श्री दशोध्यायाः ॥ ११ ॥

बुद्धिमाने राजाभूतराष्ट्र को देखते अपने बौद्धों को गंगाजी की ओर चलायमान
 किया । १७ । हे राजा तब वह महारथी दूर जाकर परस्पर विदाहोकर व्याकुल
 चिच तनों तीन ओरको चलादिये । १८ । उनमें से शारदत कृपाचार्य हस्तिना
 पुरकी और कृतवर्मा अपने देशकी और अत्रतथायाग्यासजी के आभय को गये
 । १९ । इसरीतिसे वह वीर उन महात्मा पांडवोंका अपराध करके भयसे पीड़ानान
 परस्पर देखने हुये चलादिये । २० । वह शत्रुविजयी महात्मा वीर सूर्योदयते
 पूर्वही इच्छानुसार चलादिये । २१ । हे राजा कृतवर्मा और कृपाचार्य से अश्व
 तथामा के जुदेहोनेपर उनमहारथी पांडवों ने शौणाचार्य के पुत्रको पाकर और
 पराक्रम करके युद्धमें विजय किया २२ ॥

place, the three warriors took leave of one another, Kripacharya going towards Hasthinapur, Kritvarma to his own country and Ashwathama to the hermitage of Vyas. Thus they went away in different directions for fear of the Pandavas whom they had so offended. They went on their way before day break. On the separation of Kripacharya and Kritvarma from Ashwathama, the Pandavas had met the son of Drona and conquered him."



वैशम्पायन उवाच । हतेषु तेषु सैन्येषु धर्मराजो युधिष्ठिरः । शुश्रुवे पितरं वृद्धं
 निर्वात्मं नागसाहसवान् ॥ १ ॥ सांशयमात् पुत्रशोकान्तिः । पुत्रशोकपरिच्छिन्नम् । शोक
 मानं महाराजं भ्रातृभिः सहितस्तदा ॥ २ ॥ अनवीयमानो वीरिणं द्वाशाह्वेण महारमणा ।
 युयुधातेन च तथा तथा चैव पुयुष्मुता ॥ ३ ॥ तमन्वयात् सुदुःखार्त्तां द्रौपदी शोकक
 पिता । सह पाण्डवालोपिन्द्रियोत्तमज्ञानं समागताः ॥ ४ ॥ स गङ्गामनुवृन्दानि स्त्रीणां
 भरतसप्तम । कुररीणाभिधासार्त्तानां क्रोशन्तीनां दृदर्शं च ॥ ५ ॥ तामिः परिवृतो राजा
 क्रोशन्दीभिः सहस्रशः । ऊर्ध्ववाङ्मुभिरार्त्ताभी रुदन्तीभिः प्रियाभियै ॥ ६ ॥ क्व नु चमं
 श्रता राजं क्व नु सरयानृशंसता । पदावधीत् पितृन् भ्रातृन् गुरुन्पुत्रान् सर्वानपि ॥ ७ ॥
 घातयिष्या कथं द्रोणं गण्डिनम् । पि पितामहम् । मनस्वेऽभूमहावाहो हत्वा चापि जय
 द्रथम् ॥ ८ ॥ किं नु राज्येन ते कार्यं पितृन् भ्रातृन् पश्यतः । यमिमरयुष्कं दुर्धरं

अध्याय १५ ॥

वैशम्पायन बोले कि सब सेनाओं के मरनेपर धर्मराज युधिष्ठिरने हस्तिना
 पुरसे निकलेहुये अपने वृद्धपिताको सुना । १ हे महाराज सब पुत्रशोकने पीड़ानात्
 वह युधिष्ठिर भाइयों समेत उन पुत्रशोक से पूर्ण बड़ी चिन्तावाले पृतराष्ट्र की
 ओरचला । २ । महात्मावीर भीष्मपुत्रो सात्यकी और युयुत्सु इनतीनों समेत
 चला । ३ और वडे दुःखोपपीड़ित शोकमें डूबीहुई द्रौपदी पांचादीलार्त्तामी उनीलियों
 समेत जो वडा आतीर्थी उनके पीछे चली । ४ । हे भरतर्षभ चमने गंगाजीके समेत
 कुररी पक्षी के समान पीडितशोक पुकारती हुई स्त्रियों के समूहों को देखा । ५ ।
 उन पुकारनेवालों ऊपरको हाथ महापीड़ित इनप्रिय अभिय बचनों समेत रोजेवाली
 हजारों स्त्रियों से बडे राजाधृतराष्ट्र पिरहुआ । या कि अय राजा युधिष्ठिरकी यह
 दया और धर्मज्ञता कहां है जो पिता भाई मित्र और गुरुओं के पुत्रोंको भविरा
 । ७ । हे महाबाहु द्रोणाचार्य गण्डिनपितामह और जयद्रथको भी मरवाकर तेराचिच
 कैसाहुआ । ८ । हे भरतवंशी पिता भाई और द्रौपदी के पुत्र और अजेय अभि-

CHAPTER XII

Vaishampayan sa d, " At the destruction of the armies Yudhishtir heard that old Dhritrashtra had come out, and himself distressed with grief, he went towards him, with Shree Krishna, Satyaki and Yuyutsu. Merged in excessive grief, Draupadi followed the Pandav women. She saw the group of women crying like a foal near the Ganga. Dhritrashtra was surrounded with the women who were thus lamenting - "Yudhishtir has slain fathers, brothers, friends and preceptor's sons, where is his justice gone? 7. How does he feel after getting Drona, Bhishma and Jayadrath killed. How will he rule when fathers, brothers, and the sons of Draupadi and Abhimanyu are to die?" Yudhishtir entered the bery of those lamenting

द्वैपदेयांश्च भारत । ९ । उत्तिय तां महाबाहु क्रोशन्ती कुशीरिव । घग्न्दे पितर
 उग्रो धर्मराजो युधिष्ठिर ॥ १० ॥ तताऽभिवाद्य पितर धर्मैणामिनकपेणा न्यवेदयत्
 नामानि पाण्डवास्तेषु सर्वेश ॥ ११ ॥ तदात्मजान्तकरण पिता पुत्रवधाहित । अग्रोय
 माण शोकात् पाण्डव परिपश्यत् ॥ १२ ॥ धर्मराज परिपश्य सात्वधित्वा च
 भारत । दुष्टात्मा भोममान्बद्धन् विधक्षुरिव पाथक ॥ १३ ॥ सखापप षकस्तस्य शो क
 वायुसमीरितः । भीमसेनमम दाव दिक्षु रिष इश्यते ॥ १४ ॥ तस्य सकल्पमात्राय भीम
 प्रयुञ्ज हरि । भीममाक्षिप्य पाणिभ्या प्रददौ भीमनायसम् ॥ १५ ॥ प्रागय तु महा
 बुद्धिर्भ्या तस्येकित हरि । स्मिन्नन महाप्रातस्तस्य चके जनाईन ॥ १६ ॥ त गृही
 त्वैव पाणिभ्या भीमसेनमयस्मयम् । वभञ्ज वलवप्राज्ञा मयमानो वृकोदरम् ॥ १७ ॥
 नागायुतवलप्राण स राजा भोमनायसम् । मन्त्वा धिर्मथितोरस्क सुञ्चाव रुधेर

मन्युको न देखनेवाले दुष्टको राज्य से कौनमयोजन है । ९ । हे महाबाहु धर्मराज
 युधिष्ठिर ने कुररी पक्षी के समान पुकारनेवालीउन स्त्रियोंको उल्लघन करके ताऊ
 जीको दण्डवत्करी । १० । इसके पीछे शत्रुओं के विजयकरने वाले ने नमस्कार
 करके अपने नामको कहा और उनसब पाण्डवोंने भी अपना नाम बर्णन किया
 । ११ । पिता और पुत्रोंके मनेसे पीडावान् और अपसन्न शोकदुःखी घृतराष्ट्र
 अपने पुत्रोंके नाश करनेवाले उग्रयुधिष्ठिर से स्नेह पूर्वक मिला । १२ । हे भारत
 वशी धर्मराजसे मिलकर और विश्वास देकर फिर जलनेवाले अग्निदे समान
 दुष्टमा ने भीमसेनको चाहा । १३ । शोकरूप बाणसे चलायमान उसके क्रोधकी
 वह आग्नि भीमसेनरूपी वनको जलाने की अभिलाषिणी दिखाई पड़ी । १४ । हे
 राजा हरिने भीमसेनके विषय में उसके अशुभ सकल्पको ज्ञानकर प्रथमही सुगमकर्मी
 श्रीकृष्णजी ने वह मूर्च्छ मँगा ली थी । १५ । वड़े बुद्धिमान श्रीकृष्णजीने प्रथमही
 उसकीचष्टासे मकटहीनेवाल वृत्तान्त को जानकर और भीमसेनको हाथोंसे रोककर
 लोहेका भीमसेन धृतराष्ट्र के हाथ में दे दिया । १६ । उस लोहेके भीमसेन को
 हाथोंसे पकड़ कर उसको भीमसेन मान कर बलवान् राजा ने तोड़ डाला । १७ ।
 साठ हजार हाथी के बल समान उस बलवान् राजान लोहे के भीमसेन को तोड़

lads and prostrated himself before Dhritrashtra. 10 He announced
 his own name and so did the other Pandavas. Grieved for the
 death of his sons unhappy Dhritrashtra received Yudhishtira the
 destroyer of his sons affectionately. After embracing him, the en-
 raged prince desired to embrace Bhim. Fanned by the wind of grief,
 the fire of his rage seemed to consume the forest of Bhim's body.
 Being aware of his evil intention, wise and easy-working Krishna had
 already sent for an iron statue. 15 knowing what was going to
 happen, wise Shri Krishna held Bhim back with his hands and gave the
 iron Bhim into the arms of Dhritrashtra. Thinking the statue to be

मुखात् ॥ १८॥ ततः पपात मेदिग्वां तथैव रुधिरोक्षितः । प्रपुष्टिपताप्रशिखरः पारिजात
 इव शुभः ॥ १९ ॥ प्रत्यगुह्लाच्च तं विद्वान् सृतो गावर्गगणिलदा । मैवमित्यब्रवीच्छ्वेने
 शमबन्धुः ॥ २० ॥ स तु शोभं समुत्सृज्य गतमन्युर्महात्मना । हा हा भीमे
 तिबुक्रोश नृपः शोभंसमन्वितः ॥ २१ ॥ तं विदित्वा गतक्रोधं भीमसेनेवर्चादितम् ।
 वासुदेवो धरः पुंस्वामिदं वचनमब्रवीत् ॥ २२ ॥ मा शुचो घृतराष्ट्रं त्वं नैष भीमस्त्वया
 हतः । भायसीप्रतिना होषा त्वया सञ्जिपातिता ॥ २३ ॥ त्वां क्रोधवशमापन्नं विदित्वा
 भरतर्षभ । मयापकृष्टः कौन्तेयो मृत्योर्द्विद्वान्तरं गतः ॥ २४ ॥ न हि ते राजशार्दूल वले
 तुत्सोऽस्ति कश्चन । कः सहेत महाबाहो पाहोर्विप्रहर्षं नरः ॥ २५ ॥ वयान्तकमद्वे
 प्राप्य जीवन् कश्चिन्न भुञ्जते । एवं घातवन्तरं प्राप्य तय जीविन्न कश्चन ॥ २६ ॥ तस्मात्
 पुत्रेण यां तैसौ प्रतिमं कारितावसी ॥ भीमस्य संप कौरव्य तथैवोपहृता मया ॥ २७ ॥

कर घायक छातीने मुख से रुधिर की गिराया । १४ । इस के पीछे इसी प्रकार
 रुधिरसे भरा हुआ पृथ्वीपर ऐसे गिरपड़ा जैसे कि मफुल्लितनोक शाखा वाला
 पारिजातनाम वृक्ष गिरता है । १९ । तब बुद्धिमान् संजय ने उसको पकड़लिया
 और शान्तपूर्ण विज्ञाप कराता हुआ उससे बोला कि इस प्रकार मत करो । २० ।
 फिर वह वडा साहसी क्रोधसे पृथक् और रहित होकर शोकसे युक्त राजा हाथ
 भीमसेन यह शब्द कहके पुकारा । २१ । उसको भीमसेनके मारनेसे पीटावान
 और क्रोधमे रहित जानकर पुरुषोत्तम वासुदेवजी इस वचनको बोले । २२ । हे
 समर्थ धृतराष्ट्र शोचमत करो यह भीमसेन तुम्हारे हाथसे नहीं मारा गया तुमने वह
 जोड़ेकी मूर्त्तिगिराई है । २३ । हे भरतर्षभ तुमको क्रोधके वशीभूत देखकर मृत्यु
 की दाह में गया हुआ भीमसेन मैंने खेचा । २४ । हे राजाओं में भेष्ट कोई तेरे
 समान बलवान् नहीं है हे महाबाहु कौन मनुष्य तेरी भुजाओं के पकड़ने को सह
 सकता है । २५ । जैम कि मृत्युको प्राप्त होकर कोई जीवता नहीं छूटता है इसी प्रकार
 मेरी भुजाओं के पकड़को पाकर कोई जीवता नहीं रहसक्ता है । २६ । हे कौरव
 जित हेतुमे आपने पुत्रने भीमसेन की जो यह लोहेकी मूर्त्ति बनवाई वही मूर्त्ति मैंने
 तेरे मांस वत्क्षण करी । २७ । हे राजेन्द्र पुत्रशोक से दुस्ती तेरा चित्तधर्म से

Bhim, the powerful king broke it into pieces, though in doing so he
 cut his breast and dropped blood from the mouth. He fell down on
 earth bleeding like a blowing tree. Wise Sanjaya held him, saying
 gently, "You should not do so." 20. The brave king, when his
 anger was gone, was filled with remorse for slaying Bhim. Seeing
 that he was no longer in an angry mood but felt grief for Bhim,
 Vasudev said, "Be not grieved, Dhritrashtra. You have not slain
 Bhim and only broken his iron status. Seeing you in angry mood, I
 dragged Bhim out of the jaws of death. You are unequalled in
 strength; how could one come out alive from the grasp of your arms 25.

पुत्रशोकामिसन्तापास्यर्मादपहृतं मनः । तद्वाराजेन्द्रं तत्र त्वं भूमिसेनं जिघांससि ॥ २८ ॥ न त्वेतत्ते क्षमं राजन् इत्यास्त्वयं यद्वृकोदरम् । न हि पुत्रा महाराज जीवियुस्ते कथञ्चन । २९ ॥ तस्माद्यत् कृतमस्मन्निर्देयमानैः शनं प्रति । अमुमयस्य तत् सर्वं मा व शोके मनः कृपाः ॥ ३० ॥

इति श्रीपर्वण्ये अत्रप्रादानिरूपवेण आयसभीमभेगेद्वादशो अध्यायः १२



वैशम्पायन उवाच । तत एवमुपातिष्ठन् शौचायं परिवारिकाः । कृतशौचं पुनश्चैतं शौचात् मधुसूदनः ॥ १ ॥ राजप्रधीता येदास्ते शास्त्राणि विविधानि च । धृतानि च पुराणानि राज्ञश्चमोक्ष केवलाः ॥ २ ॥ एवं विद्वान् महाप्राहः समर्थः सन् पलायते । आश्रमापराङ्मुखो कल्पार्चनं कृत्वा कोदरीद्वारम् ॥ ३ ॥ उक्तवाचं तदेवाह भीष्मद्रोणौ

पृथक् हुआया उस हेतुसे तुम भीमसेन को मारना चाहते थे । २८ । हे राजा यह आपके शौच नहीं है जो तुम भीमसेन को मारा चाहते हो क्योंकि आपके पुत्र आयुर्दापूर्ण होजानके कारण से किसी दशा में भी जीवते नहीं रहसके थे । २९ । इस हेतुसे सन्धिको भंगीकार करनेवाले हम लोगों ने सन्धिक के विषय में जो कर्म किया उस सबको ध्यान करो शोकमें चित्तमें मतकरो ३० ॥

अध्याय १२ ॥

वैशम्पायन बोले कि इस के अनन्तर नौकरसोग स्नान कराने के निमित्त इस के पास जाकर बर्षमान हुए मधुसूदनजी इस स्नानसे निवृत्त होनेवाले राजा से बोले कि हे राजा तुम ने वेद और नाना प्रकार के शास्त्र पड़े पुराणों समेत शुद्ध राजधर्मों को सुना । २ इस प्रकार पीडित और बड़े ज्ञानी बलाबल-में समर्थ

None can escape with life from your deadly clutches. I made use of the iron statue of Bhim made by Duryodhar. Grieved for your son you had deviated from the path of right and wished to slay Bhim. This was not worthy of you, for your son had his days numbered and could live no longer. Think of our exertions, which we did in bringing about peace, and grieve no more." 30.



CHAPTER XIII

Vaishampayan said, "Then servants came to Dhritrashtra to help him in bathing, and when he had done bathing, Shri Krishna thus addressed him, " You have learnt religious books and learnt the duties of kings

च भारत । त्रिदुरः सज्जवर्धन त्वन्तु राज्ञ तत् कृपाः ॥ ४ ॥ त्व धार्म्यमाणो नःस्मा
कमकार्षीर्वचनं तदा । पाण्डवानधिकं जानन् वले शौच्यं च कौरव ॥ ५ ॥ राजा
दि यः स्थिरप्रज्ञः स्वयं द्वापानवेक्षते । देशतलरिनागच्छ परं भयं
स विन्दति ॥ ६ ॥ उच्यमानस्तु य धेयो यदृणां न द्विधाहिते न आपद्ः समनुप्राप्य
स शोचत्यप्ये स्थिरः ॥ ७ ॥ तत्तान्प्रवृत्तपारं न समवेक्षन्व भारत । राजस्व ह्यधि
धवात्मा दुर्योधनराजे स्थः ॥ ८ ॥ आत्माप्राधादापतस्वत् किं भीमं जिघीससि ।
तस्मात् सवच्छ का । एवं समनुस्मृत्य दुर्योधनम् । ९ ॥ यस्तु तां स्वर्ज्या धुक्ः पाषा
ळीमानपत्त सभाम् स ह्यो भीमसेनत येरं प्रतिजिहीषिता । १० ॥ आरमनोऽतिक्रमं
पश्य पुत्रस्व च दुरात्मन । यदनामिनि पाण्डूनां परित्याग पर्युत्प ॥ ११ ॥ वैशम्पा
यन उवाच । एषमुक्तः स कृष्णेन सर्वे सरयेऽन धियः । उवाच देवकीपुत्रं धृतराष्ट्रो
महीपतिः ॥ १२ ॥ एगमेतन्महागहो यथा वदसि भावव । पुत्रस्तेदञ्च धर्मात्मन् धैर्याग्मा
होकर तुम अपो अपराधमे एमे क्रोधकोक्तिम निोमत्त करनेहो हे भरतवंशी तभीमैने
भीष्मने द्रोणाचार्यने और संजयने भी तुमसे कडाथा परन्तु हेराजा तुमने उस
वचनको नहीं किया । ४ । हे कौरव उससमय पांडवोंको बल और वीरतामें आधिक
ज नंत और वारम्बार निपेध कियेहुये भी तुमने इभारं वचनको नहीं किया । ५ । जो
नियत युद्धि राजा आप दोषों सभत देशकालके विभाग को विचारता है वह
परम करयाण को पाता है । ६ । हित अनहित में समझाया हुआ जो पुत्र्य करयाण
वचनको अंगीकर नहीं करता है वह अनिनिमें नियम आपत्तिका पाकर अचता
है । ७ । हे राजा इस हेतुमे विपरीत वचनवाने अपने को देखो दृष्टोंके वचनों
से विपरीत चिचवाले तुम दुर्गोधन की अधिपता में नियत हुये । ८ । और अपनेही
आराधमे आपत्ति में फने से तुम भीमसेनको क्यों मारना चाहतेहो इम, हेतुमे
तुम अपने क्रोधको दूरकरो और अपने दृष्ट कर्मोंका स्मरण करो । ९ । जिस नीच
ने ईर्ष्या से उस द्रौपदी को सभा में बुथाया वह शत्रुता का वदला लेने के अभि
लाषी भीमसेन के हाथ से मारागया । १० । अपनी और अपने दुरात्मा पुत्रकी अप
गादगी को देखो जो तुमने निरपराधी पांडवों को त्याग किया । ११ । वैशम्पा
यन बोले हेजनमेजय भीष्मणी के इमप्रकार के सत्य वचनों सुनकर उस राजा
धृतराष्ट्र ने देवकी नन्दनसे कहा । १२ । कि हे महाबाहु पाधराजी जो आप कहते हैं

Being so learned and powerful, you should not have indulged in anger. You did not act upon the advice given you by Ishama, Droona, Sanjaya and myself. You know the great strength of the Pandavas and yet you were obdurate. 5. Happy is the king who acts according to the requisition of time and place, but he who does not mind the advice of his faithful friends, falls into trouble. You acted wrongly in as much as you disregarded the counsel of old men and were controlled by Duryodhan. You brought misery on yourself. Why do you wish to

समत्रालयत् ॥ १३ ॥ दिष्ट्या तु पुरुषस्याप्रोषणान् सत्यधिमम् । त्वष्टुसो नागमत्
 कृष्ण भीमोबाहुव-तर मम ॥ १४ ॥ इदानीं स्वहमेकागो गतमनुगोतज्ज- मध्यमै
 पाण्डुरं वीर स्मष्टुमिच्छामि माधव ॥ १५ ॥ इतेषु पार्थिवेन्द्रेषु पुत्रेषु । तेषु वै । पाण्डु
 तुमेषु वै मम प्रीतिर्द्योप्यनिरुत । २६ ॥ एतं स भीमं च धनञ्जयं माद्वयाद्य पुत्रौ
 बुभुक्षुवहीरी । पश्यंशं गात्रे प्रददन् सुगघाताभ्यास्व कल्याणमुवाच सैतान् ॥ १७ ॥

इति श्रीपर्वणि नरमदानिकर्पणि ऋतगात्रकोपनिर्भोषणे त्रयादशोऽध्यायः ॥ १३ ॥



वह सब बर्षाई है परन्तु वदा बलवान् पुत्रकी प्रीति ने मुझको धर्ममे पृथक् कर
 दिया । १३ हे नीकृष्णभी मारुषकी यातई कि तुममे रक्षित बलवान् सत्य
 पराक्रमी भीमसेन ने मेरी सृजाके मध्यको नहीं आया । १४ हे माधवजी अब
 पाण्डवों के भी ते रक्षित विभक्तस्वर में मझले वीर पाण्डवको देता चाहत,हू मझा
 राजाओं के और पुत्रों क मनेष्व मेरे सुख और प्रीति पांडवों म नियत हाते है
 । १५ । इन्के कोछे बहुत रीतहुये उस राजा ने उन सुन्दर अंगवाने भीमसेन
 अर्जुन और पुरुषों में वड़ वीर नकुल और सहदेव को भी अर्गों से स्पर्श किया
 और उन्होंको विश्वास देकर कल्याण के वचन करे १७ ॥

slay Bhim ! Remove your anger and recall your wicked deeds. Bhim
 only revenged the wrong done to Drupadi in the court by that dis-
 picable son of yours. 13 Look at your transgressions and those of
 your son in ousting the Pandavas. 14 Vaishampayan says that in he-
 aring the words of Shri Krishna, Dhritrashtra is addressed him, "You
 are right, Madhav, but it was the paternal love which took away my
 constancy. It was by good luck that you guarded Bhim and saved
 him from coming within the grasp of my arms. I am now quite free
 from anger and wish to see him. At the fall of the kings and sons my
 love is concentrated in the Pandavas." Then with tears in his eyes,
 the king touched the bodies of Bhim, Arjun, Nakul and Sahadev.
 He spoke to them kindly and blessed them. 17

पैतम्पायन उवाच । भूतराष्ट्राङ्गुलीवास्तस्ये कुक्षुपुङ्गवाः । मध्ययुक्तीतरः सरे
 गान्धारा सहकेशवाः ॥ १ ॥ गतो वारवा वृतामित्र धर्मराज युधिष्ठिरम् । गान्धारी
 पुत्रशोकार्ता श तुमच्छदमिन्द्रिता ॥ २ ॥ तस्याः पापमात्रमाय विदित्वा पाण्डवाश्च
 प्रति । श्रुतिः सत्यवतीपुत्रः भगिनः स्वमनुष्य ॥ ३ ॥ स गङ्गायामुपस्थत्वा पुत्रवगाण्डिकपके
 शुचि । तं हेतुमुपलक्ष्ये पटुषि गाढ ॥ ४ ॥ विद्येन चक्षुषा चक्षुः प्रनसामुद्गते ।
 च । सर्वं प्राणभृतां भावं स तत्र सप्तमुपवत् ॥ ५ ॥ सस्तु रामप्रसीत् काजं कल्पवादी
 महावपाः । शपकात्मप्रसिष्य क्षमाकात्मदृशिवत् ॥ ६ ॥ मकोटः वरहः काट्यो
 गान्धारी शममाप्नुहि । बभौ मिदुर्जयमितत् कृन्तु चेदुः खरो मम । ७ ॥
 उकास्पष्टावशादानि पुत्रेण जयमिच्छता । शिवेजारांस ५; मातृपुत्र्यमात्मन्य शत्रुभिः

अध्याय । १४ ।

पैतम्पायन बोले कि इसके पीछे भूतराष्ट्र से आया लेहर वह कौरव पांडव
 भाई केशव नी सनेन गान्धारी के पासगये । १। इसके पीछे पुत्रोंके शोकसे पीड़ा
 वाननिर्दो गान्धारी ने उन मृतक शत्रुवाले युधिष्ठिर को पाप जाया हुआ
 जानकर श्राप देना पाहा । २। व्यासऋषि पथमही पांडवों के शिष्यमें उसके पार
 रूप चिचके विचारको जानकर सावधानहुये । ३। और चिच के समान शीघ्रगाथो
 होकर वह मर्षी श्रीनिवासी के पवित्र ओट सुगन्धिन जलमें स्नान आचमनकरके
 उस स्थानपर जा पहुंचे और दिव्य नेत्रयुक्त भगवे चिचसे देखते उस श्रुति
 ने वहाँ सब श्रीवों के चिचके वृत्तान्तको जाना । ४ । श्रापके समयको निरादर
 करके काठकी शान्तिको बर्खन करते वह महापस्वी करपवादी श्रुति पुत्रवधु
 से बोले । ५ । कि हे गान्धारी पांडव के ऊपर क्रोध न करना चाहिये अपने श्राप
 बचनको शोककर इसभेरे बचनको सुनो । ७ । अठारहदिनतक विजयके अभिलाषी
 पुत्रने कहाई कि हे माता शत्रुओं के साथ युद्ध करनेवाले को शुभ आशीर्वाद

CHAPTER XIV

Vaishampayan said, " Then by Dhritrashtra's permission the Pan-
 dar brothers, with Keshav, went to Gandhari. Distressed with grief
 for her sons, she intended to curse Yudhishtir. Knowing of her evil
 intencion towards the Pandavas, Vyas made haste, after bathing in
 and sipping the water of the Ganges, he came thors. With his divine
 eye he saw through the minds of those who were present there. 5. Speak
 ing of curses and recommending peace of mind, he said to Gandhari,
 " Do not let your anger fall on the Pandar. Do not curse him, but hear
 me; during the eighteen days of war, your son desirous of victory asked
 you to bless him, but on all occasions you said that victory should
 fall on the side of dharma. I can never think that your words to him

॥ ८ ॥ सा तथा वाच्यमाना त्वं काले काले जयैषिणा । उक्तवत्यासि गान्धारि षतो धर्मस्ततोऽजयः ॥ ९ ॥ चाप्यतीर्णा गान्धारि वाचं ते वितथामहम् । स्मरामि भाषमाणा बालया प्राणिहिता ह्यसि ॥ १० ॥ त्रिप्रदे तुमुले राज्यं गत्वा परामर्शेणयम् । त्रितं पापहु सुतेयुद्धे नूनं धर्मस्ततोऽधिक ॥ ११ ॥ क्षमाशीला पुरा भूत्वा साय न क्षमसे कथम् । भवमजहहि चर्तने यतो धर्मज्ञो जय ॥ १२ ॥ स्पृष्ट्वा धर्मं परिस्मृत्य वाचं चोक्ता मनस्विनि । कोपं संयच्छ गान्धारि मेरे मत्स्यवादिनि ॥ १३ ॥ गान्धार्युवाच । भगवन्नाश्रयस्यामि नैतन्निच्छामि नश्यतः । पुत्रशोकैर्न तु वलाग्मनो विद्वबलवीर्य मे ॥ १४ ॥ यदेव कुन्त्या कोभेया रक्षितव्यास्तथा मया । तथैव धृतराष्ट्रेण रक्षितव्या एवा मया ॥ १५ ॥ दुर्योधनापराधेन शकुने सौमलस्य च । कर्णं दुःशासनाश्रयाञ्च वृक्षोऽयं कुस्तंक्षयः ॥ १६ ॥ नापराधवति धीमत्सुर्न च पाथो वृकोदरः । नकुलः सएनेवो वा

दो । ८ । हे गान्धारी! उस विजया भिलाषी से समय २ पर प्रार्थनाकारी हुई तुमने कहा है कि जिधर धर्म है उधरही विजय है । ९ । हे गान्धारी मैं पूर्ण समय में तुम्हें दुर्योधन के शुभ आशीर्वाद से प्रसन्न करनेवाले के कहेहुये वचन को सिध्या स्मरण नहीं करताहूँ तुम वस प्रकारकी समाधि धारण करनेवाली हो । १० । इसी से राजाओं के कठिन युद्ध में पारको पाकर पांडवों ने युद्धमें निस्सन्देह विजयको पाया निश्चय करके उधरही धर्म अधिक है । ११ । पूर्णसमय में ऐसी क्षमावान होकर अब किस हेतुसे तू क्षमा नहीं करती है हे धर्मकी जाननेवाली अधर्म को त्यागो जिधर धर्म है उधरही विजय है । १२ । हे मत्स्विनी तत्पश्चात्ता गान्धारी अपने धर्मको और कहेहुये वचनको स्मरण करके कोपकोरोको और इस दशा वाली मतहो । १३ । गान्धारीने कहा हे भगवन मैं एणमें दोषनहीं लगातीहूँ और उनका नाशवान होना नहीं चाहतीहूँ । १४ । परन्तु पुत्रशोकसे मेराचित्त अरपन्त व्याकुल होताहै । १५ । जिनप्रकार पांडव कुन्तीसे रक्षा के योग्य हैं उसीप्रकार मुझ से भी हैं और जैसे मुझसे रक्षा के योग्य हैं उमीप्रकार धृतराष्ट्र से हैं । १६ । दुर्योधन शकुनी कर्ण और दुःशासन के अपराधसे पर कौरवों का नाश हुआ । १५ । सा

were wrong. 10. The Pandavas were victorious, no doubt, according to thy predictions and dharma must be on their side. Being ever merciful, why do you withhold your pardon? Give up injustice. Victory has fallen on the side of justice. Renouncing your own words, you should not behave thus, truthful Gandhari," she said, "I do not find fault, where there is none, and do not want their destruction. My mind however is distressed with grief for my sons. They deserve as much protection from me as from Kunti. The Paadavas equally deserve protection from Dhritrashtra. 15 The great destruction of the Kauravas was brought about by Duryodhan, Shakuni, Karna and Dushasan. The Pandavas have done no wrong. The Kauravas

देव जानु युधिष्ठिरः ४१.७ ५ युध्वमानादि कौरव्याः कृतमानापरस्परम् । निहताः सदि
ताश्चान्यैस्तत्र नास्यप्रिय मम ॥ १८ ॥ किन्तु कर्माकरोऽज्ञो वासुदेवस्य पश्यतः ।
दुर्व्याघ्रं सनाह्वय गदायुद्धे मयापना ॥ १२ ॥ शिक्षयाऽयधिकं ज्ञात्वा करन्तं बहुधा
रणे । जघो नाश्रया प्रहृतवान् नन्मे कोपमत्रजंयत् ॥ २० ॥ कथं तु धर्मं वर्मेहे' समु
दिष्टं महात्मनि । त्यजेतुदात्ते नृणाः प्राणहेतोः कथञ्चन ॥ २१ ॥

इति स्त्रीपार्वणि जन्मदादानिहपर्वणि गान्धर्गिसाम्ब्रनायां
चतुर्दशोऽध्यायः १४॥

में अर्जुन भीमसेन नकुन नहुदेव और युधिष्ठिरका भी कुछ अपराध नहीं है । १७।
यह परस्पर युद्ध करनेवाले अर्धकाती कारण एकसाथ अन्य, २ लोगोंके हाथ से
मारोग्ये वह मेरा अभिय नहीं है । १८ परन्तु वासुदेवजी के देखत हुये भीमसेन
ने कैसा कर्पेकरुया कि वहे साहमी ने गदायुद्धमें दुर्योधनको बुलाकरके और
शिक्षामें अधिक जानकर युद्धमें अनेक रीतसे घूमनेवाले को । २० । नाभिकेगीचे
पायल किया इन बातको सुनकर मैंने कोशको बढ़ाया । २१ । वह मूरवीर युद्धमें
मारोंके भयं कित्ती दशमें भी धर्मको नहीं त्यागवा है जाके धर्मज्ञ महात्माजों
से आदेश किया गया है ॥ २२ ॥

fell down fighting in the pride of their power. But why did Bhishm do
such a deed in the presence of Vasudev ? He challenged Duryodhan
to fight with the mace and then struck him below the navel. This
was the cause of my anger. A well-advised warrior never sets aside
justice under any circumstances." 21.



वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा पत्न्ये तस्या तीमशंगेय भीतवत् । गांधारी प्रा-
 वाचेत् बभूवः सानुनयं तदा ॥ १ ॥ अघर्षी यदि वा घर्षसासात्त्र प्रया कृतः । आरसाने
 आनुकामेन तन्ने त्वं क्षन्तुमर्हसि ॥ २ ॥ न हि वर्षेण पुत्रस्य पतितोसौ महाबलः । न
 शक्यः केतचिद्धनुमतो विषममाचार्य ॥ ३ ॥ अघर्षेण जितं पर्यं तेन चापि युधिष्ठिरः ।
 निकृताश्च सदैव स्तव ततो विषममाचार्य ॥ ४ ॥ विन्यस्तैको प्रशिष्टोयं गवायुसेन वीर्य्य
 धान् । मां हत्वा न हरेद्दोषाप्रति प तत्र कृतं मया । ५ ॥ राजपुत्रिञ्च पाञ्चालीमेक
 यत्रां रजस्वलाय । मरत्या विदिं सर्वमुक्तान् यत् सृजताम् ॥ ६ ॥ दुर्योधनमसं
 गृह्य न शक्याभूः कसागगाः । केवला सांकुनस्मागिरत अितरकसं मया ॥ ७ ॥ तयाप्य
 विषमस्माकं पुत्रस्य समुदाचरत् । द्रौपद्या यत् सनामर्ष्यं सद्यमूरुमदर्शयत् ॥ ८ ॥
 तदैव पथ्यः सोस्माकं दुःखान् वारोभ्य ते सुतः । घर्षराजाप्या वैव स्थिता स्म समयुतदा

अध्याय १५ ।

वैशम्पायन बोलीके तब भीमसेन उसके उसवचनको अनुकर भयभीतके समान
 नम्रता के साथ गांधारी से यह वचनबोला । १ । हे माता घर्षहोय वा अघर्षहोय
 अपने शरीरकी रसोके अभिलाषी मैंने भय से नहीं ऐसा किया आपउसमेरे अपराध
 को क्षमाकरने के योग्यहो । २ । यह बड़ा वलवान् आपका पुत्र धर्म युद्ध केद्वारा
 किमी के साथ लड़ने के योग्य नहींथा इस हेतुसे मैंने विपरीत कर्म किया । ३ ।
 पूर्व समयमें उस दुर्योधन ने अघर्ष के द्वारा युधिष्ठिर को विजय किया और इस
 सदैव ठगेगये इस कारण से मैंने विपरीत कर्म किया । ४ । मेना के मध्यमें एकैसा
 शेष बचाहुआ यह पराक्रमी कदाचित् गदा युद्धसे मुझको मारकर राज्यको नलेले
 इस हेतुसे मैंने यह कर्म किया । ५ । आपको सब विदित है कि आपके पुत्रने एका
 वत्सा रजस्वला राजपुत्री द्रौपदीसे जो वचन कहाथा इनमे दुर्योधनको विनामारे
 हुये सागरों समेत निष्कण्टक पृथ्वी हससे भोगने के योग्य नहींथी इस बातको
 विचार कर मैंने यह कर्म किया । ७ । उत्पीकार आपके पुत्र ने हमारे अपिपका
 भी किया जो मभाके मध्यमें द्रौपदीको वामजाया दिखलाई । ८ । तबही वर

CHAPTER XV

Vaishampayan said, that on hearing the words of Gandhari, Bhim
 humbly spoke to her, saying, "Whether it be justice or injustice, I
 did it in self-defence, and I ask your pardon, mother. Your powerful
 son could not be overcome in a just fight and therefore I did an
 unjust deed. Formerly Duryodhan conquered Yudhishtir unjustly
 and we were cheated again and again: this was the reason of my
 acting against rule, I did it lest he might slay me and take our king-
 dom, in spite of the destruction of all his army 5. You know well
 how Duryodhan dragged Draupadi and we did not think it worth
 our while to enjoy the kingdom without slaying him. He had dis-

॥ ९ ॥ वैरमुद्दीपितं राक्षि पुत्रेण तव तन्महत् । पलोशिताञ्च वने मियं तत एतत् कृतं मया ॥ १० ॥ वैरस्यास्य गतः पारं इत्वा दुःख्योद्धनं रणे । राज्यं युधिष्ठिरः प्राप्तो वधश्च मतमन्वषः ॥ ११ ॥ गान्धाप्युवाच । न तस्यैव वधस्ताव यत् प्रशंससि मे सुतम् । कृतं धाञ्चापि तत् सर्वं यदिदं भावसे मयि ॥ १२ ॥ इताश्चे नकुले पक्षद्वृषसेनेन भारत । अपिबः शोणिनं संख्यं च शासनशरीरजम् ॥ १३ ॥ सन्निविर्गदितं घोरमनाप्यजनसेवि तम् । क्रूरं कर्माकारोस्तदस्मान्मदयुक्तं नृकोदर ॥ १४ ॥ भीम उवाच । अन्वस्यापि न पानस्यं रुधिरं किं पुनः स्वकम् । यथैवात्मा तथा भ्राता विशेषे नास्ति कश्चन ॥ १५ ॥ रुधिरं व्यतिक्रामद्दन्तोष्ठादम्ब मा शुचः । वैवस्वतस्तु तत्रैव हस्तौ मे रुधिरौक्षितौ ॥ १६ ॥ इताश्च नकुलं दृष्ट्वा वृषसेनेन संयुगे । आत्मानं संप्रहृष्टानां त्रासः संजन्नि मया ॥ १७ ॥ केशाक्षपराभौ प्र । पथा घृतकारिते । क्रोधाद्यद्वृषचाहं तच्च मे

आपका दुराचारी पुत्र हमारे हाथसे मारडालने के योग्यथा परन्तु उस समय हम लोग धर्मराजकी आज्ञासे नियमसे नियत हुये । ९ । हे रानी आपके पुत्र ने भी वडी शत्रुता मकटकी मौर सदैव वनमें दुखी किये इस हेतुसे मैंने यह किया १० युद्धमें दुर्गे वन को मारकर अब उम शत्रुता के अन्तको पाया युधिष्ठिर ने ... को पग्या और क्रोधसे रहित हुये । ११ । गान्धारी बोली हे तात जो मेरेपुत्र विनयमें कइताहै यह केवल उसकोही नहीं मारा किन्तु इसकोभी किया जो सब मुझे रुइताहै । १२ । हे भरवन्शी भीमनेन हृपनेनके हाथसे नकुल के मरनेपर युद्धमें तुमने बुद्धशासन के शरीरसे उ स्पर्श होनेवाले रुधिरको पिपा । १३ । यह तुमने सत्पुरुषों से निन्दित निर्दय कर्म किया वह अयोग्यथा । १४ । सोला कि जब दृष्टरेका भी रुधिर न पीना चाहिये फिर अपना कैसे पानकरसका है जैसा आपना आत्माहै वैसाही भाई है कोई सुख्यता नहीं है । १५ । हे माता रुधिर ओठोंमें पीने नहीं गया यमराज उसको जानते हैं केवल रुधिरसे भरे दोनों हाथसे हे माता शोच मनकर । १६ । युद्धमें हृपनेनके हाथसे मृतक नकुल को देखकर मैंने प्रसन्नचित्त भाइयों का भय उत्पन्न किया । १७ । घृत

pleased us by showing us thign to Draupadi. We should slay him there and then, but we had not Yudhishtir's I did it because your son gave us much trouble by sending us ex. 10. We have made an end of the enmity by slaying Gandhni and " You have not only slay my son of whom you so much, but done more: when Nakul's horses were slain by Vi you drank Dasha an's blood, a deed of cruelty unworthy of men." Bhim said, " How can one drink his own blood, when he not that of others. A brother and a li are the same. The do not go beyond my lips, I call Yamaaj to witness. My hands

वर्षते ॥ १८ ॥ क्षत्रधर्मव्युत्पत्तौ राक्षि भवेयं शासनीः सता । परिशान्नामनिस्तीर्य
 ततस्तत् कुतवानहम् ॥ १९ ॥ न मामहंमि गान्धारि दोषेण परिशङ्कितुम् । अनिगृह्य
 पुरा पुत्रानस्मास्वनपराधियु । अधुना किं तु दोषेण परिशङ्कितुमर्हामि । २० ॥ गान्धा
 र्युवाच । वृद्धस्यास्य शर्तं पुत्राधिपते स्त्वमपराजित । कस्मान्न शेषयेः कश्चिद्येनाप्य
 मपराजितम् । सन्तानमावयोस्तात् वृद्धगोष्ठं तराज्ययोः ॥ २१ ॥ कथमन्व द्वयस्यास्य
 यष्टिरेका न वर्जिता ॥ २२ ॥ शेषे ह्यवस्थिते तात, पुत्राणामन्तके त्वयि । न मे दुःखं
 भवेदेतन् यदि त्वं धर्ममाचरेः ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्त्वा तु गान्धारी
 युधिष्ठिरमपृच्छ । क्व स राजेति सकोपा पुत्रपौत्रवधादिना ॥ २४ ॥ तामप्यगच्छ
 द्राक्षेत्रो वेपमानः कृताञ्जलिः । युधिष्ठिर इदञ्चेनां मधुर वाक्यमब्रवीत् ॥ २५ ॥ पुत्र

कारण द्रौपदी के शिरके बाल पकड़ने पर मैंने क्रोधमे जो कहा वह मेरे हृदय
 में बर्त्समान है । १८ । हे रानी मैं उम प्रतिज्ञा को पूरा न करके बराबर तर्पितक
 क्षत्रिय धर्म से च्युत होजाता इस हेतुसे मैंने उसकर्मको किया । १९ । हे गान्धारी
 पूर्व समयमें हमारे निरपराधी होनेपर पुत्रों को शासन न कर के अब मुझको दोषों
 से शंकाकरने के योग्य नहीं हो जो अब हमारे ऊपर दोषों की शंकाकरती हो
 । २० । गान्धारी बोली कि इस वृद्धके सौ पुत्रोंके मारनेवाले तुझ अजेय ने किस
 हेतुसे एक कोभी वाकी नहीं छोड़ा जिमने कि घोड़ा अपराध किया था हे वृज्जो
 कि राज्य से हीन और वृद्ध हम दोनोंकी सन्तान रूप कहलाता । २१ । इस अंधे
 की एक लाठीभी तैने कैसे नहीं छोड़ी । २२ । हे पुत्र पुत्रों में किसी के भी
 बाकी रहनेपर वृद्ध पुत्रोंके नाशकर्त्ता मैं मेरा यह दुःख नहीं होता जो तुम धर्मको
 करते । २३ । वैशम्पायन बोले क्रोधयुक्त और पुत्र पौत्रों के मारनेसे पीड़ावान्
 गान्धारी ने इस प्रकार कहकर युधिष्ठिर के विषय में पूछा कि धर्मराज कहाँ है
 । २४ । कम्पायमान हाथ जोड़कर युधिष्ठिर उसके पास गये और वहाँ इस मधुर
 वचन को बोले । २५ । हे देवी मैं युधिष्ठिर तेरे पुत्रोंका मारनेवाला और संसारके

were stained with blood and therefore you should not be angry. 19. Seeing Nakul's horses slain by Vishasen, I excited fear among brothers. I remembered the words I spoke in anger, when Draupadi was dragged by the hair of her head on account of gamb ling. With out fulfilling my vow, I should have lost my kshatryahood and therefore I did it. Not having rebuked your sons for persecuting us without fault, you should not now find fault with us." Gandhari said, " You did not leave even one son, out of a hundred, that might have been the staff of our old age and that was less sinful. We are now destitute of our kingdom and sons. I should not be so unhappy, if you had spared only one son of mine " Having said this to Bhim, Gandhari asked where Yudhishtir was. At this, Yudhishtir with

इत्या नृसतोऽहं तव देवि युधिष्ठिरः । शापाहं: पृथिवीनाम् हेतुभूतः शत्रुत्वमा
 न हि मे जीवितोऽर्थो न राज्येन वनेन वा । तादृशाद् सुहृदो एतां ह्येतास्य सुह
 द्दुहः ॥ २७ ॥ तमेव पाद्वेन भीत सत्रिकर्णगतं तदा । नो भव किञ्चिद्गान्धारी निश्वा
 सपरमममम ॥ २८ ॥ तस्यावनतदेहस्य पादयोर्विपत्तिभयतः । युधिष्ठिरस्य नृपतेर्धर्मज्ञा
 विधिर्दोषिणी ॥ २९ ॥ अंगुल्येप्रापि ददर्शो देशे पद्मान्तरेण सा । ततः स कुन्ती मृतो
 दर्शनीयमखो भूवः ॥ ३० ॥ तद्दृष्ट्वा अर्जुनोऽगच्छामुदेवस्य पृष्ठतः । एवं सञ्जेष्ट
 मानांलाभिनश्चेतश्च भारत । गान्धारी विगतक्रोचा साम्पपामास आह्वयत् ॥ ३१ ॥
 तथा ते समनुष्ठाना मातरं वीरमातरम् । मङ्गागच्छन्तं संहिताः पृथां पृथुलवक्षसः
 ॥ ३२ ॥ चिरस्य एष्ट्वा सा पुत्रान् पुत्राधिभिरभिमन्त्रुत् । चासामादारयदेवी बलेणा
 वृत्तं वै नृपम् ॥ ३३ ॥ ननो चासं समस्तुत्त स इ पुत्रो वै पृथा । मरश्चेद्विद्वान् शक्यो

नाशका मूल निर्दयी होकर शापके योग्य हूँ मुझको शाप दे । २७ । उस प्रकार
 के सुहृद्गुणों को मारकर मुझ भगवानी सुहृदों से शत्रुता करनेवाले को जीवन और
 राज्यमे कौन प्रयोजन है तब कठिन भामा लेनेवाली गान्धारी उन हम प्रकार
 बोलेने बाल भयभीत सीप पडूचनेवाले से कुछ नहीं बोली । २८ । उस धर्मज्ञ
 दूरदर्शी देवीने उन ऋते शरीर चरणों में गिरने के अभिलाषी राजा युधिष्ठिर
 की हाथ की उँगलियों की नोक को पद्मान्तर के भीतर से देखा उस से
 दर्शन के योग्य नख बाला वह राजा युधिष्ठिर कुन्ती होगया । ३० । अर्जुन
 उसको देवहार वामुदेवजी के पीछे चलागया हे भरतवंशी हम प्रकार इधर
 उधर से चेष्टा करनेवाले उन पांडवों को क्रोधसेरहित गान्धारी ने माता के समान
 विद्वान्त कराया । ३१ । उसदेवसे आज्ञा पायेहुये वह बड़े वक्षस्यसवाले पादव
 एक साथही उन वीरों को उत्पन्न करनेवाली कुन्तीमाता के पास गये । ३२ ।
 पुत्रों के विषयमें चिन्तने खेदपुक्त उन देवी ने बहुत कालके पीछे अपने पुत्रोंको
 देखकर बहने से मुक्त हो दककर अश्रुपात किये ३३ । इसकेपीछे कुन्तीने पुत्रोंसमेत

a trembling body went to her and said in a sweet voice, " Here I am, Yudhishtir the destroyer of your sons and the root of the destruction of the world. Curse me, for I deserve it. 28. Having destroyed friends, why should I live to rule the kingdom?" Heaving deep sighs, Gandhari gave no reply to Yudhishtir who had approached her in great fear. She looked from behind her veil at the finger nails of Yudhishtir, who was kneeling at her feet, and the beautiful nails were destroyed. 29. At this Arjun crept behind Shree Krishna. Gandhari curbed her anger and consoled the terrified Pandavas like a mother. They took leave of her and went to Kunti. Seeing her sons after a long time, distressed Kunti covered her face under cloth and wept. With eyes full of tears, she saw them covered with scars of

श्रीकृष्णपरिनिष्ठान् ॥ ३४ ॥ सा तानेकैकशः पुत्रान् संस्पृशन्ती पुनः पुनः । भ्रम्यशो
 क्तं तु कान्तां द्रौपदीं च हतारमञ्जाम् । रक्षन्ती मद्य पाषाणीं ददर्श पतितां मुवि ॥ ३५ ॥
 द्रौपद्युवाच । आर्य्ये पौत्राः क्व ते, सर्वे सौमद्रसहिता गताः । तेषां तेषामिगच्छन्ति
 बिंदं हृद्वा तपस्विनीम् । किन्तु राज्येन धी कार्श्ये विहिनायाः सुतेर्मम ॥ ३६ ॥ तां
 सम्राट्वासवामास वृथा वृष्टुल्लोचनाम् । उर्याव याहसमी-तु रक्षतीं शोकपरिताम्
 ॥ ३७ ॥ तथैव कहिला, चापि पुत्रैः सुगता नृप । अश्रमच्छत गान्धारी मातृमातृतरा
 स्वभम् ॥ ३८ ॥ तामुवाचाय गान्धारी सह वध्या पदाश्रिताम् । मैवं पुत्रीति दुःखात्तां
 पश्य मामपि दुःखिताम् ॥ ३९ ॥ मन्वे लोकायिताशोऽयं कालपर्यायचोदितः । अवश्य
 रमाधी संप्राप्तः स्वभावालोमहर्षणः ॥ ४० ॥ इदं तत्र समनुप्राप्तं विदुरस्य वचो महत् ।
 अस्मिन्मानये कृणोयद्वाच गंहीप नि ॥ ४१ ॥ तस्मिन्नपरिहायार्थे व्यतीतेन विशेषतः ।

अश्रुपातों को करके उनको शस्त्रनमूहा से बहुतभरकर करते घायन देखा । ३४ ।
 इन पुत्रों को पृथक् २ स्पर्शकरते दुःखने पीड़ावान उस कुन्तीने मृतक पुत्र वाली
 द्रौपदी को शोचा और पृथ्वीपर पड़ी रोवतीहुई द्रौपदीको देखा । ३५ । द्रौपदी
 बोली हे आर्य्ये तेरे सब अभिमन्यु समेत पौत्र कहांगे भव वह बहुत काल से
 तुम्ह तपस्विनीको देखकर तेरे पास नहीं आते हैं मुझ पुत्रों से रहित का राज्य
 से कौनता मयोजन है । ३६ । द्रौपदी के इस वचन को सुनकर बड़े नेत्र वाली
 कुन्ती ने इसको विश्वास कराया अर्थात् उस शोक पीड़ित रोदन करनेवाली
 द्रौपदी को उठाएर उसको और सब पुत्रों को साथलेकर बड़ी पीड़ावान कुन्ती
 गान्धारी के पास गई । ३८ । वैशम्पायन बोले कि तब गान्धारी तब वह समेत
 आनेवाली कुन्ती से बोली हे वेदी इस प्रकार न करना चाहिये तू मुझ दुखीको
 भी देख मैं जानतीहूँ कि यह संसारका नाशमयकी विपरिततासे प्रकटहुआ है
 । ४० । और रोमांच लड़ा करनेवाली अवश्य होनहार स्वभाव से वर्त्तमान हुई यह
 विदुरजी का वह बड़ा वचन सम्मुखआया । ४१ । जिसको कि उस बड़े
 बुद्धिमानने भीरूप्यकी धित्ता से निष्फल होनेपर कहाया इस अपारिहायार्थमें

wounds. She touched them one by one and was grieved for Draupadi
 -whom she saw lying on earth. 35. Draupadi said, "Where are
 Abhimanyu and other grandsons of yours? They have come to see
 you. What shall I do with the kingdom without my sons?" Having
 heard the words of Draupadi, large-eyed Kunti consoled her. She
 took her sons and Draupadi to Gandhari. Vaishempayan says that
 Gandhari thus spoke to Kunti and her daughter-in-law:—"You
 should not do so daughter. Look at me. I think this great destruction
 was brought about by the vicissitude of time. 40. All this
 was sure to happen as Vidur had foretold when he saw Sri Krishna's
 counsel go for nothing. Don't be sorry for that which was inevit-

शुचीं न हि शोच्यन्ते सप्राये निधनं गता । ४३ ॥ यथैव तथं तथैवाहं को यामाश्रया
साविभ्यति । ममैव ह्यरराक्ष्येन कुलमत्र यिनादिनाम ॥ ४३ ॥

इति स्त्रीपरोपि जलप्रादानिकपर्वीण पृथापुत्रदर्शने

पञ्चदशोऽध्यायः १५ ॥

समाप्तं च जलप्रादानिकपर्वं ॥

। अथ स्त्रीविलापपर्व ॥

वैशम्पायन उवाच । पञ्चमुक्त्वा तु गांधारी पुरुणामयकर्त्तनम् । अपश्यत्तत्र
विष्टन्तीद्रादिव्येन चक्षुषा ॥ १ । पतिव्रता महाभाग सम्राज्यतचारिणी । उभेण
तपसा युक्ता सतत सत्यवादिनी ॥ २ । वरदानेन कृष्णष्ण महये पुत्र-कर्मणः । दिव्य
ज्ञाननलोपेता भिविध पथ्यदेवपत् ॥ ३ ॥ दृश्यं सा बुद्धिमती ह्रद्वय ययान्तिके ।
अर्थात् निरुपाय, अ र व्यतीत होनेवाली बातमें शोच मत कर । ४२। युद्ध में मरने
वाले वह वीर शोचके योग्य नहीं हैं जैसी मैदू वैगीरी तूहै हमदोनोंको कौन
विदवास करावेगा मेरेही अपराध से इन उच्चम कुलका नाशहुआ ४३ ॥

— ❧ —

अध्याय १५ ॥

वैशम्पायन बांके किसप्रकार वहांपर बैठाहुई गांधारी ने दिव्यनेत्रों से कौरवों के
सब बड़े भारी नाशको देखा । १ । उसपतिव्रता महाभाग एकसा व्रत करनेवाली
बड़े तपसे सयुक्त सदैव सत्यवक्ता । २ । पतिव्रतकर्मी व्यास महर्षी के वरदान के
द्वारा दिव्य ज्ञानवाल से संयुक्तने बहुत प्रकारका यिलाप किया । ३ । उस बुद्धि-
मतीने ह्रसे ही समीपके समान नरवीरों की वसे रणशूमे को जाके शरीर केअर्ध

able. The warriors who were slain in battle are now lamentable. I
am like you Who will console both of us The great destruction
was brought about by my own fault." 43.

— ❧ —

CHAPTER XVI

Vaishampayan said, "Having said this, Gandhari saw with her
divine eyes the great destruction. She saw all by the divine wisdom
granted her by Vyas and was much grieved. She saw before her

रणाजितं नृशिराजामद्भुतं लोमहर्षणम् ॥ ४ ॥ अस्थिकेशपरिलीर्णं शोणितौघपरिप्लु-
तम् । शरीरैर्वहुसाहस्रैर्विनिकीर्णं समन्ततः ॥ ५ ॥ गजाश्चरथयोधानामावृतं रुधिरा-
बिलैः । शरीरैश्शिरस्कैश्च । ध्वजैश्च शिरोभणैः ॥ ६ ॥ गजाश्वनरनारीणां निस्वनैरनि-
सृष्टम् । भृगालपक्षकाकोलकङ्कसाकःनिवेदितम् । ७ ॥ रथसां पुरुपादानां मोदनं कुर-
राकुलम् । अपिघाभिः शिवाभिश्च नादिदं युधसेवितम् ॥ ८ ॥ ततो ध्यासाश्वनुशातो
धृतगण्ड्ये महीपतिः । पाण्डुपुत्राश्च ते सर्वे युधिष्ठिरपुरोगमाः ॥ ९ ॥ वासुदेवं पुरस्कृत्य
इतथन्धुश्च पार्थिवम् । कुरक्षियः समासाद्य जग्मुरामायोधनं प्रति ॥ १० ॥ समासाद्य
कुरुक्षेत्रं ताः स्त्रियो निहतेश्वराः । अपश्यन्त हतांतत्र ज्ञातृन् पुत्रान् पितान् पतीन्
॥ ११ ॥ कथ्याभिमर्शवमाणान् चै गोमांयुवलयधायसैः । भूतैः पिशाचै रक्षोभिर्विभिधैश्च
निशाचरैः ॥ १२ ॥ रुद्राक्लीडनिभं दृष्ट्वा तदा विशसनं स्त्रियः । महार्हेष्योय यानिष्यो

रामहर्षण करनेवाला थी देखा । ४ । अर्थात् अस्थिकेश यज्ञासे युक्त रुधिर समूहसे पूर्ण
हजारों शरीरों से चारों ओरको आच्छादित । ५ । हाथी घाँड़े रथ और सवारों के
रुधिर समूह से युक्त शरीरों से पृथक् शिरोंके समूहोंसे पूर्ण । ६ । हाथी घोड़े मनुष्य
घोर स्त्रियोंके शब्दों से व्याप्त मृगाल, बक, काकोल, कंक और कागों से सेवित
। ७ । मनुष्य के स्थानवाले राक्षसोंकी प्रसन्न करनेवाली कुररनाम पत्नियों से
सेवित मृगालों के अशुभ शब्दों से शब्दायमान और गिद्धों से सेवितथी । ८ ।
इसके पीछे व्यासजी से आज्ञा पाया हुआ राजा धृतराष्ट्र और वह सब पाण्डव
जिनका शत्रुवर्ती युधिष्ठिरथा । ९ । वासुदेवजी को और जिसके वन्द्य मारेगये उस
राजा को आगेकर सब कौरवीय स्त्रियों को साथ लेकर युद्धभूमि में गये । १० । वहाँ
विधवा स्त्रियों ने कुरुक्षेत्रको पाकर उन मृतक भाई पुत्रपिता और सुहृदोंको देखा
। ११ । जोकि कषे मान स्थानवाले शृगाल, काग भूत, पिशाच, राक्षस और
जानामकार के निशाचरों से लपेटे हुए थे । १२ । रुद्रजी के क्रीड़ास्थान के समान

mind's eye the fatal field of battle lying far from that place. Sae saw
covered with bones, hair, fat, blood and thousands of corpses, with
elephants, horses, cars and the blood of horsemen whose head were cut
asunder. Full of the cries of elephants, horses, men and women,
abounding in jackals, crows and vultures, pleasing to the munging
rakshases, resounding with the sounds of the birds of prey and jackals.
Then by the order of Vyasa, king Dhritrashtra and the Pandavas led
by Yudhishtira, with Vasudev and the women went to the field of
battle. 10. The widowed women saw there the slain brothers, sons,
fathers and friends eaten by jackals, crows, rakshases and night-rovers.
Seeing the place like the pleasure ground of Rudra, the crying women
came down from their cars. The women of the family of Bharab,

विक्रोधान्धो रिपेतिर ॥ १३ ॥ अट्टरूर्ध्वं पश्यन्त्यो दुस्त्रार्था मरतस्त्रिय । शरिरेषु
 हल्लस्यन्त्यतः प्रापराभुवि १४ । ध्यान्तानाञ्चाप्यथान्धासां नासीत् काचम
 चतना । पाप्या कदवोप ना दपज सदसू-महत् ॥ १५ ॥ दुःखोपहतचित्तानि सप्त
 न्तादनुनादिनम् । हृष्टाद्योऽजमन्त्युमर्धमद्गः सुवजात्मजा ॥ १६ ॥ तत सा पुण्डरी
 काक्षुनाम-ऽप्य सुदपाक्षमम् । हृष्टा वैशस इष्टवा दुःखाद्वचनममयीत् ॥ १७ ॥
 पश्येता पुण्डरीकाक्ष स्तुवा मे निद्वेतेदधम । प्रकीर्णकेदय क्रोशन्त्य कुर्यात् इव
 माधव ॥ १८ ॥ अमृश्यभिसमागम्य स्म । त्या मरतर्धमान् । यूयसो ह्ययथाव-त बुभान्
 प्रातुन् पितुन् पतीन् ॥ १९ ॥ वीरभूमिर्मदावाहो ह्यनुवृत्ताभिरावृतम् । कश्चिच्च वीर
 पत्नीभिर्इतधीराभिरावृतम् ॥ २० ॥ शोभित पुरुष-यात्रैर्भीष्मकर्णाभिम-युभि । प्रोणहु
 पद्मशयैश्च ज्वलद्भिर्विव पावकै ॥ २१ ॥ का-चने कवचैर्दिव्यैर्मणिभिश्च महारतनाम्ना

निवास स्थानको देखकर पुत्रास्ती हुई स्त्रियां बहुमूल्य सवारेया से उगरी । १३ ।
 भरतर्षाभियों की खिपा दुःख से पीडामान पूर्ण में कर्षी न देखेहुये उसनाशको
 देखकर कोई शरीरों पर गिरी और कोई पृथ्वीपर गिरनेवाली हुई । १४ । पांचाल
 और कौरवोंकी उन अथाह और धनीहुई स्त्रियों को कुछ चेतनहीं रहा यह वडा
 दुःख हुआ । १५ । वह धर्मज्ञ गान्धारी दुःखितचित्त स्त्रियों से चारोंओरको
 शब्दायमान षडी भयानकरूप युद्धभूमिको देखकर । १६ । फिर पुरुषोत्तम भी
 कृप्याजी को समक्ष में करके इस वचन को बोली १७ । हे कमललोचन माधव
 जी इन विधवा शिरके वालों को फैंसानवाली कुररी के समान पुकारनेवाली मेरी
 पुत्रवधुओं को देखो । १८ । यह स्त्रियां पृथक् २ पुत्र भाई पिता और सुदुर्दोको
 मिलनी पतियों के गुणोंको याद करती पृथक् २ दौडनेवाली हैं । १९ । हे
 महाराज यह मृगभूमि वीरोंके उत्पन्न करने वाली और मृतक पुत्रवाली स्त्रियों से
 सयुक्त है कहीं उनवीरों की स्त्रियों से सयुक्त है जिनके कि वीर भर्त्ता मारेगये
 । २० । कहीं ज्वलित अग्नि के समान पुरुषोत्तम कर्ण, भीष्म अभिमन्यु द्रोणा
 चार्प, द्रुपद और शल्य से शोभायमान है । २१ । महात्माआ के स्वर्णमयी
 काच निष्कमाण वाजृगन्द केयूर और माताओं से-मलकृत । २२ ।

much distressed at the unwaited scene of destruction fell down on the
 corpses or bare earth. The helpless women of the Pauchals and
 kauravas lost their senses with the excess of grief. 15. Virtuous
 Gandhari seeing the ground made dreadful by the presence of the cry-
 ing women thus addressed Shri Krishna - "Look at my widowed
 daughters-in-law crying loud with dishevelled hair. They are
 lamenting for their sons, brothers, fathers, kinsmen and husbands.
 The field of battle is full of women whose sons and husbands are dead.
 Here and there are lying glorious Karan, Bhishm, Abhimanyu, Drona,
 Drupad and Shalya. The golden armours, ornaments, diadems and

अक्रुद्धैस्तकेपूरैः स्रग्मिश्च समलंकृतम् ॥ २२ ॥ वीरवाहु निम्नप्रभिः शक्तिभिः परिवे
 रयि । सङ्गैश्च विविधैर्लाक्षणेः सशरैश्च शराम्नैः ॥ २३ ॥ क्रव्यादसंघैः सहितैस्त्रिष्टुप्ति
 विविधैः क्वचिन् । क्वचिन्दाक्रोडमानैश्च शयानैरपरैः क्वचिन् ॥ २४ ॥ एतदेवमिषं
 वीर संपदयायोधनं धिमो । पश्यमाना हि दृष्टामि शोकेनाहं जनार्दन ॥ २५ ॥ पाञ्चवा
 लानां कुरुणाश्च विनाशो मधुसूदन । पञ्चानामिव भूतानामहं वधमचिन्तयम् ॥ २६ ॥
 तान् सुपर्णाश्च वृध्नाश्च विकल्पन्त्यद्यमुक्षितान् । निशुब्ध क्वच्येपूषा भक्षयन्ति सहस्रश
 ॥ २७ ॥ जयद्रथस्य कर्णस्य तथैव द्रोणाभीष्मयोः । अभिनम्यार्विनाशश्च कश्चिन्तयि
 मुमर्हति ॥ २८ ॥ शत्रुतान्युचिताः सर्वे नृर्नि धिमत्तानि च । त्रिपञ्चास्तेष्वपसुखा विद्म
 तामचिशेरते ॥ २९ ॥ इति दृःखतरं धि नु क्त्वाव प्रतिमाति मे । नूनमाचरितं पापं मया
 पूर्वेषु जन्मसु ॥ ३० ॥ या पश्यामि हतान् पुत्रान् पात्रान् भ्रातृन् केशव । पथमार्षो
 विलपती ददशं निहतं सुखम् ॥ ३१ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि स्त्रीणाम्दुःखनिर्दिशनेषु शोधायाः १६ ॥

वीरोंकी मृजामों से छोड़ी हुई शक्ति परिय और नानामकार के
 तीक्ष्ण खड्ग बाणों समेत धनुषों से सुशोभित हैं । २१ । मसन्नचित्त कहीं साथ
 निवास करनेवाले कहींक्रीडा करनेवाले कहीं सोनेवाले और कहीं मांसभक्षी रातनों
 से संयुक्त हैं । २४ । हे समर्थ वीर श्रीकृष्णजी इसप्रकार की रणभूमि को देखोमैं
 इमको देखकर शोकमे भस्महुई जाती हूं । २५ । हे मधुसूदनजी मैंने पाञ्चाल
 और कौरवों के नाशमें पाचों तत्वोंके भी नाशको ध्यान कियाहै । २६ । रुधिरसे
 भरे गरुड़ और गिद्ध उनको खेंचने हैं और हजारों गिद्ध चरणोंसे पकड़कर उनको
 भक्षण करते हैं । २७ । कौन मनुष्य जयद्रथ, कर्ण, द्रोणाचार्य, भीष्म और
 अभिमन्यु से नाशकी चिन्ताकरने के योग्यहै । २८ । जो सब पूर्वसमय में कोमल
 श्वश्रुओं पर सोते थे अब वह मृतकहोकर इमविस्तृत भूमि पर सोते हैं । २९ ।
 इसमें अधिक कौनसा दुःख मुझको दिखाई देताहै निश्चय करके विदित होता है
 कि मैंने पूर्व जन्ममें पाप कियाथा । ३० । हे माधवजी जोमैं पुत्र भाई और पिता
 भोंको मृतक देखतीहूँ इसप्रकार पीडावान् विलाप करनेवालीने मृतकपुत्रकोदेखां ३१
 garlands of the warriors are lying pell mell with the spears, clubs,
 swords, arrows and bows. 27. Those who lived, played and slept
 together are now surrounded by birds of prey. I am burning with
 grief at the sight of this battle field. 27 I see the destruction of
 the five elements with that of the Kuravas and Panchals. Vultures
 and gauras are dragging the blood stained bodies and eating their
 flesh. Who could think of the slaughter of Jayadrath, Karna, Drona,
 Bhishma and Abhimanyu! Those who slept on soft beds are now lying
 dead on bare earth. What trouble can be greater to me than
 this! Surely I committed a sin in my former birth that I see sons,
 brothers and fathers lying dead here." Thus lamenting she saw the
 dead body of her son. 31.

वैशम्पायन उवाच । ततो दुर्योधनं दृष्ट्वा गान्धारी शोकमूर्च्छिता । सहसा न्यप-
तन्नमो लिङ्गं च कदली वने ॥ १ ॥ सा तु लब्ध्वा पुनः संज्ञां विकुम्भ्य च पुनः पुनः । दुर्यो-
धनमभिप्रेक्ष्य शयानं दविरोक्षितम् ॥ २ ॥ परिष्वज्य च गान्धारी कृपणं पर्यवेक्ष्यत ।
हा हा पुत्रेति शोकार्त्तां विललापाकुलीन्द्रया ॥ ३ ॥ वारिणा नेत्रजेनोरः सिञ्चन्ती
शोकतापिता । समीपस्थं दृष्टीकेशमिदं वचनमब्रवीत् ॥ ४ ॥ उपस्थितेऽस्मिन् संग्रामे
शक्तीनां संक्षये विभो । मामयं प्राह वार्ष्णेय प्राञ्जलिनेपसत्तमः । अस्मिन् ह्युतिसमु-
द्धये जयमग्धा वधीतु मे ॥ ५ ॥ इत्युक्ते जानती सर्वमर्थं स्वव्यसनागमयं । अश्रुं पुरुष-
भ्याश्च घतो वर्गस्ततो जयः ॥ ६ ॥ इत्येवमश्रुत्वं नैनं पूर्वं शोचाम्यइं सुतम् । धृतराष्ट्रस्तु
शोचामि कृपणं हतवान्धवम् ॥ ७ ॥ अमयणं युधां श्रेष्ठ कृताकं युद्धमुमदम् । शयानं
वीर्यावने पश्य माधव मे सुतम् ॥ ८ ॥ वाऽयं मूर्खोऽभिषिक्तानामग्रं घाति परन्तपः ।

अध्याय १७ ॥

वैशम्पायन बोले कि शोकसे पीड़ावान गांधारी दुर्योधनकोपरा हुआ देखकर
अकस्मात् ऐसे पृथ्वीपर गिरपड़ी जैसे कि वनमें टूटा हुआ केलेका वृक्षदेता है । १।
फिर जाने सधे, ताको पाकर पुकारकर और विलाप करके उस पृथ्वीपर पड़ेहुये
रुधिर से लला दुर्योधनको देखकर । २। हृदयसे लगाया और दुःखका विलाप
क्रिया शोकसे पीड़ावान महाव्याकुल चिच हायपुत्र हायपुत्र इसरीनिते विलाप कर
ने लगी । ३। अपनी छातीको नेत्रोंके जनसे सौचकी महादुःखी उस गान्धारीने
मगीप वर्तमान श्रीकृष्णजी से यह वचन कहा । ४। कि हे समर्थ इस युद्धके और
जातवालों के नाशके वर्तमान होनेपर इस हाय जोड़नेवाने महाराज दुर्योधनने
मुझसे यह कहा कि हे माता जातवालों के युद्ध में मेरी विजयको कहो । ५। हे
पुरुोत्तम उसके ऐसा कहनेपर मैं अपने सब दुःख के आगमन को जानतीहुई बोली
कि गिर धर्म हे उग्रदी विजय है । ६। हे प्रभु मैंने पूर्व समय में इस प्रकार
कहाथा मैं इसको नहीं सोचती हूं मैं धृतराष्ट्रका शोच करती हूं जो दीन और
वांधव रहित है । ७। हे माधवजी इस अशान्त और अश्रुज युद्ध दुर्पद और गूर
वीरों में श्रेष्ठ मेरे पुत्रको वीरों के शयनपर सोता देखो । ८। जो यह शत्रुघोषापी

CHAPTER XVII

Vnishaṛpāyan said, "Seeing the corpse of Duryodhan, Gandhari fell down on earth with grief like a plantain tree cut down in a forest. When she regained consciousness, she wept bitterly and embraced the blood stained corpse of Duryodhan, lying in great grief and saying "Alas soul" Washing her breast with tears of grief, she said to Krishna, "At the commencement of this great war, Duryodhan asked my blessing with joined hands to gain victory over his kinsmen. 5. I knew the great grief which was in store for me and replied that

सोयं पाशुपु शेतेऽय पश्य कालस्य पश्ययम् ॥ ९ ॥ धुरं वुशुर्धनो धीरो गतिं न सुख
 भागतः । तथा हाविमुखः शेते शयने धारसंविते ॥ १० ॥ पय शेते महाबाहुर्बलवान्
 संपयविक्रमः । सिंहनेव द्विपः संपये भूमसेनेन पातितः ॥ ११ ॥ विदुरं हावमन्यैव पित
 रन्वीय मद्भाक् । बालो बुद्ध्यावमानेन गन्दो मृत्युपशं गतः । १२ । इरं कृच्छ्रं रं पश्य
 पुत्रहृत्पापि वध मम । यदिमा. पश्युपासरी इतान् शूरान् रणे स्त्रियः ॥ १३ ॥ कथं नु
 शयन्वा नेदं हृदयं मम क्षय्यते । पश्यगत्या निहतं पुत्र पुत्रेण सार्धं रणे ॥ १४ ॥
 यदि चाप्यगमा. सगि यदि वा धुरवस्तदा । ध्रुवं कोकानशाधोऽयं नृपो बाहू
 बलार्थिभ्रतान् ॥ १५ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपार्षणि गान्धार्या दुर्योधनदर्शने

सप्तदशोऽध्यायः १७ ॥

माराणाओं के भी भयवर्षीं होकर चलताया अब वह इस पृथ्वीकी रजयें सोता
 है संपयकी धिपरीतताको देखो । ९ । निश्चय करके धीर दुर्योधनने दुष्प्राप्यगतिकी
 पाया इस प्रकार सम्पुख धीरों से सेविन शयनपर सोता है । १० । युद्धमें भीम
 सेनके हाथने निशयाहुआ यह सत्य पराक्रमी बलवान् महाबाहु ऐसे सोताहै जैसे
 कि सिंहके हाथने मागदुमा हाथी सोताहै । ११ । यह अभाग्य भ्रजान निर्वुद्धी
 विदुरजी समेत पिताकोभी अपमानकरके हृद्धोंकी भवज्ञसे मृत्युके माधनिहुआ । १२ ।
 पुत्रके मरनेसेभी अधिक इन मरे दुःखको देखो जो यह स्त्रियां युद्धभूमि चारोंधोर
 से मत्कशूरोंके पास नियत हैं । १३ । युद्धमें पौत्र समेत मरेहुये अपने पुत्रको घृम्
 देखनेवाली का यह हृदय कैसे सँदुकेडे नहीं होताहै । १४ । जो शास्त्र और
 श्रुतियां सत्य हैं तो निश्चय करके इस राजाने अपने धुनवलों से प्राप्त लोगों
 को पाया । १५ ।

victory should fall on the side of Dharma. I said this before and
 therefore I do not grieve for him. I grieve for Dhritrashtra who is
 helpless and has lost all his kinsmen. This dissatisfied prince, brave
 in war and best of warriors, my son lies here in the field of battle.
 This great destroyer of foes, who used to lead kings, now sleeps on
 dust. Look at the change of time. Surely brave Duryodhan has
 secured regions unattainable by others, and now lies here before me
 on the bed of warriors. 10. Slain by Bhim, this great warrior of
 true prowess sleeps like an elephant slain by a lion. This unfortunate
 and unwise fool disregarded the advice of Vidur and his father, and
 met his death for disobeying his elders. A grief greater than that
 of my son's death overwhelms me, when I see these women round the
 bodies of the dead warriors. Why does my heart not break into a
 hundred pieces at the sight of my son and grandson lying dead to-
 gether? Surely this prince has got good regions with the strength of
 his arms, if our religious books and the Vedas are right" 15.

गन्धारी गान्धारी । पश्य माधव पुत्रान् शतसंख्यान् जिह्वलाग्न् । गन्धारी भीमसे-
नेन भूयिष्ठं निहताद्यजे ॥ १ ॥ इदं दुःखतरं मेव यदिमां मुत्तमूर्द्धजाः । इतपुत्रारणे
धात्वाः परिघावग्नि मे स्तुतः ॥ २ ॥ प्रास्तादतलचा रिवधश्चरवैभूषणान्वितैः । भाषणा
पारस्युशनीमा रुचिराद्रौ घसुन्वररिम् ॥ ३ ॥ गृध्रातुःसारय त्यश्च तथा गोमातुवाव
सात् । शोकितार्त्ता विद्युर्गन्धी मथा इव चान्युत ॥ ४ ॥ इन्द्र्या भे पार्थिवसुगामिती
लक्ष्मणमानसम् । राजपुत्रो महाशरी । मनो न ह्युपस्तास्पति ॥ ५ ॥ अस्याश्चापहृते
कापायाकफुडलमुजसं । रास्य वन्धोः शिरः कृष्ण गृहीत्वा पश्य तिष्ठतीम् ॥ ६ ॥
पूर्वगतिकूर्त्तं पारं मन्ये नान्यमिमानव । एतमभिरतनवद्याभिर्नया चैत्रालमेजयो ॥ ७ ॥
कुललपपक्षाशानि पुण्डरीकाक्ष योषिताम् । अनयद्यानि ध्वजराणि तापयत्येव रश्मि
षात् ॥ ८ ॥ एत दुःशासतः श्रेते दूरेणामिप्रव तिनः । पीतशोणितसर्वाङ्गी भीमेन युधि
पातितः ॥ ९ ॥ गन्धारी भीमसेनेन पश्य माधव मे स्तुतम् । कृतकलेशाननुस्मृत्य प्रोपधा

अध्याय १८ ॥

गान्धारी नौली दे वारानी इद्वे ररिवाी रश्मि मेरे तौ पुत्रों को भीमसे-
नी गन्धारी कठिना यायल दूय देखो १-२ । अब यह मेरा बड़ा दुःख है जो खुले
केश मृत्क पुत्रवाली मेरी पुत्राभू चान्ना युद्ध भूमि में मेरे चारों ओर दौड़ती हैं
। २ । भूयशों से अनेकज नरगां से महलों में फिरनेवाली स्त्रियां अपनी आपास में
फँसकर इस कथिर से आर्द्र पृथ्वीको स्पर्श करती हैं यह कठिनतासे उनके ऊपर
बैठेदूरे गिद्ध शृगाल और काकोंको उड़ाती हैं और दुःखसे पीड़ावान् पगवालों के
समान घूमती हैं । ४ । हे महाबाहु इन राजपुत्री नक्षत्र की माताको देखकर मेरा
चित्त शान्तीको नहीं पाता है । ५ । हे श्रीकृष्णजी शरीर से जुड़े सुन्दर कुहल और
बेथी रखनेवाले अपने बांधवके शिरको परकड़कर निपत होनेवाली अन्य स्त्रियोंको
देखा । ६ । हे निष्पाप इन निर्दोष स्त्रियोंसे और मुझ निर्दुर्दी से पिछले जन्ममें
किया दुःभाषण छोटा नहीं है । ७ । कमललोचन स्त्रियोंके मुस जोकि कूले कमल
के समान और निर्दोष हैं उनके दुःख रूप मूर्ध संकष्ट कर रहा है । ८ । शत्रुओं
के मारनेवाले शूर भीमसेनेने हाथसे युद्धमें गिराया हुआ कथिर से लित सर्वाङ्ग

CHAPTER XVIII

Gandhari continued, "Look at my hundred sons destroyed by
Bhīm's mace O Maśhar, My youthful daughters-in-law running on
the field of battle with dishevelled-hair enhances my grief. They who
used to tread the palace ground with their orientated feet, touch the
bloody soil of the field of battle, and unable to keep away the jackals
and crows, they are running a mad race. My mind is deprived of
prount the sight of Lakshman's mother, 5. Other women are hold
ing up the jewelled heads of their kinsmen. These innocent women
and I have committed no small sin in our former life. The lotus like

बोधितेन च ॥ १० ॥ उकाहनेन पाञ्चाली सभाया द्यूतनिर्जिता । प्रियं चिन्विता
 मृतः कर्मण्य च जनार्दन ॥ ११ ॥ सदैव सहदेवेन नकुटेनाहुतेन च । दासभार्यासि
 पाञ्चालि क्षिप्रं प्रविश नो गृहम् ॥ १२ ॥ ततोऽहमग्र्य कृष्णतदा युव्याघनं नृपम् ।
 मृत्युशापपरिक्षिप्तं शकुनिं पुत्रं वर्जय ॥ १३ ॥ एव तु शासनं येन विहितं विपुलौ
 सुखौ । निहतो भीमसेनेन सिंहेन महागज ॥ १४ ॥ अत्यर्थमकराद्रौद्रं भीमसेनोऽयं
 मर्षय ॥ दुःशासनस्य पत्न्यं क्रुद्धोऽपि च्छेदितमाहधे ॥ १५ ॥

इति श्रीविष्णुपर्वणि मान्यारी विलापे अष्टादशोऽध्यायः १८ ॥

यह दुःशासन सोचाई । ९ हे माधवजी द्यूतके दुःख को स्मरण करके द्रौपदी की
 भेरयापूर्वक भीमसेन की मद से मृतक रूपे मेरे पुत्रको देखा । १० । हे जनार्दनजी
 कर्मका और भाई दुर्योधन क प्रिय करनेका अभिलार्पी इस दुःशासन ने सभाके
 मध्य में द्यूत में पराजित द्रौपदी से यह वचन कहे ११ । कि हे द्रौपदी तू सह
 देव नकुल और अर्जुन समेत दासीहुई शीघ्र हमारे घरों में प्रवेश करो । १२ । हे
 श्रीकृष्णजी उस समय मेने राजा दुर्योधन से कहा कि हे पुत्र मृत्युकी फांसी में बंध
 हुने शकुनिको निषेध करो । १३ । भैसे कि बडाशायी सिंहसे माराजताई उनी
 प्रकार भीमसेनके हाथसे मृतक यह दुःशासन धुजाओं को फैलाकर सोताई । १४ ।
 अत्यन्त क्रोधयुक्त भीमसेन ने बड़ा भयकारी कर्म किया जो कोधयुक्तने युद्धमें
 दुःशासन के शिर को पान किया १५ ।

faces and eyes of these innocent women are being burnt by the sun of
 grief. Slain by Bhim the destroyer of foes and bleeding in all the
 parts of his body, Dushasana lies here. He was killed by the mace of
 Bhim who remembered the wrongs done to Draupadi at the occasion
 of gambling. Desirous of pleasing Karan and Duryodhan he said to
 Draupadi who was won in gambling, - You as well as Sahadev, Nakul
 and Arjun are made slaves. Nakehashta to go in to our house. 12. I then
 warned Duryodhan to keep back Shakuni who was tied in death's string.
 Dushasana lies here with outstretchol arms like a huge elephant
 slain by a lion. Bhim did a very cruel deed in his anger as he drank
 Dushasana's blood in the field of battle." 15

गन्धार्दुवाथ । एत माधव पुत्रो मे विकर्णं प्राक्षममगतः । सुनो विनिहतः शत
भीमेन शतधा कृत ॥ १ ॥ गजप्रवेष्टेय सोने विकर्णो मधुसूदन । नीलमेघ परिक्षि त
शरद्विष निशाकरः ॥ १ ॥ अस्म भद्र्यामिषमेत्सुम् गृध्रानेतस्नपस्विनी । वारय्य
निशं घाला न च शकं नंगिमाभव ॥ २ ॥ युद्धा वृन्दारकः शूरो विकर्णः पुरुषवंश ।
सुखोपेत सुखाहंश्च शोते पांडुपु माभव ॥ ४ ॥ कर्णिनालीकनाधिक्लिप्तमर्मोणमाहवे ।
अपानि न जहात्येनं लक्ष्मीं रतसप्तमम् ॥ ५ ॥ पञ्च संप्राप्तशूरेण प्रतिष्ठां पालयिष्यतां
दुर्मन्त्रोमिसुखः शोते तमेरिगणशा रणे ॥ ६ ॥ दृश्याहवमुन्ने स्मोन्व स्थाना नैषोपपद्यते ।
स कथं दुर्मन्त्रोमिप्रेहते विपुबलोकजित् ॥ ७ ॥ विप्रसेनं ॥ ८ ॥ भूमौ शकानामधुसूदना
घातं चाप्यमिमं पश्य प्रतिमानं घञ्ज्यताम् ॥ ८ ॥ तस्मिन्नमान्वासरणे युवायः शोकक
र्तिनाः कथ्यादसंघे सहिता वदत्यः पश्युपासने ॥ ९ ॥ युवा वृन्दारको निरं प्रवत्

अध्याय १९ ॥

गान्धारी दोली है माधवजी यह जानियौंका अङ्गीकृत भीमसेनके हाथे सैकड़ों
खण्डकिया हुआ ऐरापुत्र विकर्ण तब पृथ्वी पर सोताहै । १ । हे मधुसूदनजी
वह विकर्ण भरेहुये शायियों के मध्य में ऐसे सोता है जैसे कि नीले बादलों से घिरा
हुआ शरदश्चक्रा चन्द्रवा होताहै । २ । हे माधवजी उसकी तपस्विनी वाला भार्या
मांसके अभिषापी गिद्ध और कागोंको हटाती है परन्तु हटाने को समर्थ नहीं होती
है । ३ । हे पुरुषोत्तम माधवजी तरुण देवतारूप शूरवीर सुखपूर्वक निवास कर ने
वाला विकर्ण पृथ्वीकी घूलपर सोताहै । ४ । युद्धमें करणी नालीक औरनाराच
नाम बाणोंसे दूरे मर्मस्थलोंवाले भरतवंश इस विकर्णको अथवा शोभानहीं छोड़तीहै
। ५ । युद्धमें दापुओंके समूहोंका मारनेवाला सम्मुख रहनेवाला वह दुर्मन्त्र इसयुद्ध
भूमिमें वीरप्रतिष्ठा पूरीकरने के अभिषापी भीमसेन के हाथसे मृतक होकरसोताहै
। ६ । हे स्वामी युद्धके सुखपर जिमकी सम्मुखता करनेवाला कोईनहीं वह देव

CHAPTER XIX

Gandhari continued, "Here lies, O Madhavy, wise Vikarna out into hundreds of parts by Bhim. He lies slain among elephants like the the winter moon surrounded by clouds. His good youthful wife is trying to keep away crows and vultures from his body, but finds it a difficult task to perform. The youthful godlike warrior Vikarna, who lived a life of ease, sleeps on dust. The wealth of beauty does not leave him, although he has received arrow wounds in all his vital parts. 5, Valiant Durnakha the destroyer of foes fell a prey to the brave bow of Bhim. How was invincible Durnakha, the winner of divine regions, slay'd by foes? Look at the dead figure of the great archer, Chitrak, lying on the ground. The lamenting woman and a troop of flesh eaters are standing by his body deck'd with garlands

स्त्रीनिषेवितः । विविशतिरसौ हेने ध्यस्तः पांशुषु माधव ॥ -१० ॥ शरसंलुप्तधर्मणं
 वीरं विशसने हतम् । परिवार्यसिते युद्धाः परिविशद्विविन्नातिम् ॥ ११ ॥ प्राविश्य
 समरे वीरः पाण्डवानामनीकिनीम् । स वीरशयने शते पुतः सत्पुरुषोचिते ॥ १२ ॥
 दुःसहस्येतवामांति शरीरं संपुनं शरीः । गिरिरात्मबहैः फुल्लैः कर्णिकार्गिवाहृतः
 ॥ १३ ॥ शतकौम्भ्या स्रजा भाति कपजेन च मास्यता । अग्निनेत्र गिरिः श्वेतो गगा
 सुरपि दुःसहः ॥ १४ ॥

इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपाणि गान्धारीविलापे

एकोनविंशोऽध्यायः १९ ॥

लोकका विजय करनेवाला दुर्मुख किसमकर शत्रुओंके हाथसे मारा गया । ७ । हे
 मधुसूदनजी इस धृतराष्ट्रके पुत्र अनुपधारी पृथ्वीपर सोनेवाले चित्रसेनकी मृतक
 मूर्त्तिको देखो । ८ । शांसे पीड़ित रानेवाली स्त्रियों मांसभक्षियों के मपूहों समेत
 वसजदाऊ माला और भूषण रखनेवाले चित्रसेनके पास नियतहैं । ९ । हेमाधवजी
 यह तरुण सदैव उत्तम स्त्रियोंसे संवित देवतारूप विविशती धूममें पड़ासोताहै । १० ।
 हे श्रीकृष्णजी देखो कि गिद्ध इस बाणों से दूरकच वीर विविशति को बड़ी
 रणभूमि में घेरकर बंटे हैं । ११ । बहशूर युद्धमें पाण्डवों की सेनामें प्रवेश कर के
 सत्पुरुषों के योग्य वीरसय्या परसोताहै । १२ । दुस्सहका यह शरीर बाणोंसेयुक्त
 ऐसा शोभायमानहै जैसे कि अपने ऊपर वर्तमान कर्णिकार के पुष्पोंसे व्याप्त पर्वत
 होताहै । १३ । यह मृतकभी दुःखसे सहने के योग्य स्वर्णमाला और प्रकाशित
 कचसमेत ऐसे प्रकाश मानहै जैसे कि अग्निते श्वेतपर्वत प्रकाशितहोता है । १४ ।



and other ornaments. The youthful Yivinshati of god like form, who
 always enjoyed the society of good women, lies here on dust. 10,
 Vultures are standing round his body of which the armour is broken
 asunder by arrows, Having entered the Pandav army, that great
 warrior lies dead on the warlike bed. The body of Dussah, pierced
 through by arrows, looks glorious like a hill overgrown with the bloom
 ing Karnikara. With his gold garland and bright armour his body
 looks glorious like a white hill illumined by fire." 14.



विनयमानं विद्वोर्विराटमसितेक्षणाः । न शक्यं अग्निं विद्वसा विधत्तं पितृमातुराः ॥ १९ ॥
इत्तं अग्निमनुज्ज्वलाम्बोज्ज्वल सुदक्षिणम् । शिशून्तेनात्तृणात् पश्य लक्ष्मणश्च
सुदक्षिणम् । साधो धनशिरोमध्ये शयानं पश्य माधव ॥ २० ॥

इति ख्रीपर्वणि ख्रीविनापपर्वणि गान्धारीवाचये विशोषध्यायः २० ॥



गान्धार्युवाच । एष वैकसंनः शोते महेष्वासो महाबलः । ज्वलितानलवत् संख्ये
संश्राव्यः पार्थतेजसा ॥ १ ॥ पश्य वैकसंनं कर्णं निहृत्पतिरग्यात् बहून् । शोणितोषण
शिराङ्गं शयानं पतितं भुवि ॥ २ ॥ अनयो दौर्घरोश्च महेष्वासो महात्थः । रणे दिनि
पायल इति विराटको देवहर पाशियो के दृष्टानको ममर्ष नहीं होती है । १
उत्तर, अभिमन्यु काभोज, सुदक्षिण और सुन्दर दर्शन लक्ष्मण इन सब मृतक
बाळकोंको देखो हे माधवजी इन सब को युद्धभूमि में सोता हुआ देखो १० ॥



अध्याय २१ ॥

गान्धारी बोली यह बड़ा धनुषधारी महारथी कर्ण सोताहै यह अर्जुन के तेज
से युद्धमें ज्वलित भागिनके समान शांत होगया । १ । बहुतते राधियोंको मारकर
पृथ्वीपर पड़ा सोताहै और रुधिररेलित शरीर सूर्यके पुत्र कर्णको देखो । २ । यह
अज्ञातचित्त महःक्रोधी बड़ा धनुषधारी शत्रुघ्नकी दूर युद्धमें अर्जुन के हाथ से मारा
हुआ सोता है । ३ । मेरे महारथी पुत्र पांडवोंके चपरो मिसको भयवर्षी करके

women try to scare them away, but their attempt is futile. Look at
Uttar, Abhimanyu, Camboj, Sudakshin and beautiful Lakshman. All
these youthful boys are lying dead, O Madhav." 19.



CHAPTER XXI

Gandhari said, "Here lies the great archer Karan, quenched like
fire, slain in battle by Arjun. Look at the blood-stained body of
Karan the son of Surya who lies dead on earth after slaying many
warriors. There lies slain by Arjun he who led the Kuravas to
fight like an elephant chief leading his herd. He was slain by Arjun

द्वतः शेते शूरो गाण्डीवधन्वना ॥३॥ यं स्म पाण्डवमन्त्रासान्मम पुत्रा महारथाः । प्रायु
 ध्यन्त पुत्रस्तुत्य मातङ्गा इव यूषमम् ॥ ४ ॥ शार्दूलामिव सिंहेन समरे सव्यसाचिनः ।
 मातङ्गमिव मत्तेन मातङ्गेन निपातितम् ॥ ५ ॥ समेताः पुरुषव्याघ्र निहतं शूरमाहवे ।
 प्रकीर्णमूर्धजाः पत्न्यो रुदभ्याः पत्युषासते ॥ ६ ॥ उद्विग्न सततं वस्मात् धर्मराजो
 युधिष्ठिरः । ययौदशसमा निद्रां चिन्तयन्नाप्यगच्छत ॥ ७ ॥ सभूवा शरणं धीरो घातं रा
 ष्ट्रस्य माघय । भूमौ विनिहवः शेते घातरुग्न इव दुमः ॥ ८ ॥ पश्य कर्णस्य पत्नीति
 वृपसेमस्य मातरम् । लालप्यमानां कर्णं रुदती पतितां सुवि ॥ ९ ॥ कात्याय्येनापोनु
 गतो ध्रुवं त्वां यद्भ्रमस्तच्छ्रमियं धरा ते । ततः शरेणापहतं शिरसे घमस्त्रयेनाहव
 शब्दमव्ये ॥ १० ॥ हा हा धिगेवा पतिता विसंज्ञा सर्वाक्ष्य जाम्बुन्दवद्वकक्षयम् । कर्ण
 महाबाहुमदीनसत्त्वं सुषेणमाता रुदती मशार्त्ता ॥ ११ ॥ सा वसन्तमाना पतिता पृथिव्या
 मुत्थाप दीना पुनरोव चैवाकर्णाय वक्त्रं परिजिघ्रमा णारो रुयते पुत्रवधाभितप्ता ॥ १२ ॥

इती स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गांधारी भावये एकविंशोऽध्यायः २१ ॥

अच्छे प्रकार ऐसे युद्ध करनेवाले हुये जैसे कि हाथी अपने प्रधान हाथी को अग्र
 वर्ती करके उत्तम युद्ध करते हैं । ४ । वह युद्ध में अर्जुन के हाथ से ऐसे
 गिराग गया जो कि सिंहे से शार्दूल और मतवाले हाथी से मतवालाहाथी गिराया
 जाता है । ५ । हे पुरुषोत्तम यह विखरेहुयेवाल रोदन करती इकट्ठी स्त्रियां इस
 युद्ध में परेहुये शूरो के चारोंओर नियत हैं । ६ । रुदैव जिससे व्याकुल भयभीत
 और चिंता करके धर्मराज युधिष्ठिरने तेरह वर्षतक निद्रा को नहीं पाया । ७ ।
 वहीर दुर्बोधनका रक्षाभवहोकर ऐसेमराहुआ पृथ्वीपरसंताहै वैमाघवजैसेकि वायुसे
 दूराहुआवृत्त होताहै । ८ । तुम कर्णकी स्त्री वृपसेनकीमाता पृथ्वीपर गिरी रोदन
 करनीहुई और शोककीवाचां करनेवाली को देखो ९ । निश्चय करके शुरुका
 श्राप तुम्हको प्राप्तहुआ जो पृथ्वी ने इस तेरे रश्चक्रको दवालिपा इससे पीछे
 युद्धका शोभा देनेवाले अर्जुन के बाण से तेराशिर काटागया । १० । हायरधिकार
 यह रोदन करती अस्पन्त पीड़ावान् शूरसेनकी माता इस सुवर्ण के वाजूबन्दसे
 अनन्कृत बड़े पराक्रमी महाबाहु कर्णको देखकर अचेत पड़ी है । ११ । यह
 पृथ्वीपर पड़ीहुई महादुःखी उठकर कर्णके श्लोकको मूंघती पुत्रके मरण शोकसे
 दुःखी रोती है १२ ॥

like a tiger slain by a lion or an elephant slain by an elephant. La-
 menting women, with dishevelled hair, surround him. 6. He by
 whose fear Yudhishtir found no repose by day or night for thirteen
 years, lies here like a tree struck down by the wind. Look at Karan's
 wife, Vrishasen's mother, lamenting, crying and lying down on earth.
 Surely it was the preceptor's curse which made the earth grasp thy
 car wheel and Arjun's arrows to cut off thy head. 10. Alas! Shursen's
 mother lies insensible at the sight of Karan. She smells Karan's
 mouth and weeps for the death of her son. 12.

गान्धारीपुत्राद्यः । आवन्त्ये भीमसेनेन भक्षयन्ति निपातितं । गृध्रगोमायवः शूरं
 बहुवधुमश्रुवत् ॥ १ ॥ तं शृगालाश्च कङ्कःश्च ऋष्यादाश्च पृथग्विधाः । तेन तेन
 विकल्पेन पश्य कालस्य पर्ययम् ॥ २ ॥ शयानं धीरशयते धीरमाक्रन्दकारिणम् ।
 आवन्त्ये सहिता नार्यो रुदन्त्यः । पर्युपासते ॥ ३ ॥ प्रातिपद्यं महेष्वासं हतं मल्लेन
 बाह्लिकम् । प्रसुप्तामिव शार्दूलं पश्य कृष्ण मनस्विनम् ॥ ४ ॥ अतीव सुखवर्णोऽस्य
 निद्रतस्यापि शोभते । सोमस्वेवाभिपूर्णस्य पूर्णमास्यां समुद्यतः ५ ॥ पुत्रशोकामि
 तप्येन प्रतिज्ञां परिरक्षता । पाकशासनिना संख्ये वार्जुनत्रिनिपातितः ॥ ६ ॥ एकादश
 च भूमिरेवा रक्षमाणं महारमना । सत्यं विकीर्षितापश्य हनमेनं जयद्रथम् ॥ ७ ॥ सिन्धु
 सौधिरमर्तारं वर्णपूर्वं मनस्विनम् । अक्षयन्यशिष्याः । गृध्रा जनार्दनं जयद्रथम् ॥ ८ ॥
 यदा कृष्णमुपाहाय प्राद्रवत् केकयैः सह । तदैव दृश्य पाण्डुनां जनार्दनं जयद्रथः

अध्याय २२ ।

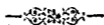
गान्धारीबोली कि गिद्ध और शृगाल भीमसेनके गिराये हुये राजा अवन्तीको
 जोकि शूरवीर और बहुत बान्धव रखनेवाले भाइयों से रहितके समान सातेई । १ ।
 शृगाल कंकड़ और काक आदिक अनेक मांसभली उसको खेचतेहै समयकी विपरीत
 ताको देखो । २ । युद्ध करनेवाले शूरवीर शय्यापर सोनेवाले राजा अवन्तीके पास
 सोनेवाली स्त्रियां नियत हैं । ३ । हे श्रीकृष्णजी इस बड़े धनुषधारी और भरल से
 मृतकपनीपवंशी बाह्लीक को शार्दूलके समान सोताहुआ देखो । ४ । इस मरेहुये
 काभी मुखका वर्ण ऐसा शोभादेताहै जैसे कि पूर्णमासीका पूर्ण चन्द्रमाहोताहै । ५ ।
 पुत्रशोकसे दुःखी और प्रतिज्ञाको पूरा करनेवाले इन्द्रके पुत्र अर्जुनसे युद्धमें जय
 द्रथ गिरायागया । ६ । प्रतिज्ञाको सत्य करनेके अभिलषी अर्जुनने ग्यारह अज्ञा-
 हिणी सेनाको हटाकर महात्मासे रक्षित हम जयद्रथको मारा । ७ । हे जनार्दनजी
 देखो इस सिन्धुसौधिर देशके स्वामी अहंकारी साहसी जयद्रथको शृगाल और
 गिद्ध खावें । ८ । हे जनार्दनजी जब यह जयद्रथ केकय देशियों समेत द्वीपदीको

CHAPTER XXII

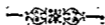
Gandhari continued, "Vultures and jackals are eating the dead body of the prince of Avanti. Jackals and birds of prey drag his body. This is the change of him! Women are weeping by the dead body of the prince. The great archer Vahlik of the family of Pratip sleeps like a tiger. His face looks like the full moon. 5. Jayadrath lies slain by Arjun, who slew him to fulfil his vow while he was protected by eleven akshauhinis. Look at Jayadrath's body which is being dragged by jackals and vultures. He deserved death at the hands of the Pandavas, when he, in company with the people of Kaikyas, seized Draupadi. They spared his life then out of their

॥ १ ॥ दुःशलां मानयद्भिस्तु तदा मुक्तो जयद्रथः । कथमयं न तां कृष्ण मानयद्भिस्तु
ने पुनः ॥ १० ॥ सेवा मम सुता बाला विलपन्ती सुदुःखिता । प्रगोषयति चामातमा
क्षीयति च पाण्डवान् ॥ ११ ॥ किं न दुःखतरं कृष्ण परं मम भविष्यति । यत् सुतः
विधवा बाला स्तुपाङ्ग निहतेश्वराः ॥ १२ ॥

इति स्त्रीपर्वस्य स्त्रीविज्ञापपर्वेण गान्धारीवाक्ये द्वाविंशोऽध्यायः २२ ॥



पकड़ कर भागाने की पाएशके हाथसे मारने के योग्यथा । १ । उस समय दुःशला
के माननेवाले पाएशों के हाथसे जयद्रथ बचाया है श्रीकृष्ण अब उन पाण्डवों ने
उस बहनोई को कत्ते नहीं माना । १० । वह मेरी पुत्री बालक दुःखी विलाप करती
और पाण्डवोंको पुकारती आग अपने शरीरको ज्वाल करती है । ११ । हे श्रीकृष्ण
जी इससे अधिक मेरा और कौनसा दुःख होना जो बालक पुत्री विधवा मृतक
पति बाली है । १२ ।



regard for Dushala [Gandhari's daughter married to Jayadrath].
Why did they not spare him this time? My young daughter is weep-
ing for him and wounding herself. What grief can be greater to me
than the sight of my widowed daughter? 12.



गान्धाट्युवाच । एष शत्रो हत शैते स क्षात्रकुलमातुल । धर्मतः सदा ताव
 धर्मराजेन संयुगे ॥ १ ॥ वस्तुवथा स्वर्जित नित्य सर्वत्र पुरुषर्षभ । स एष निहत शैते
 मद्रराजो महाराथ ॥ २ ॥ येन ससृहनता ताव रथमाधिधैर्युच्चि । जगार्थ पाण्डुपुत्राज
 तथा तेजोवध कृत ॥ ३ ॥ हा हा धिक्पश्य शत्र्यस्य पूर्णचन्द्रसुदर्शनम् । मुग्ध पद्म
 पलाशाक्ष काकैरादृष्टद्रवणम् ॥ ४ ॥ युधिष्ठिरेण निहतं शत्रुं सर्भिनशोभनम् । रुद्र-
 पर्वुपासन्ते मद्रराजकुलेक्षिय ॥ ५ ॥ एष सैलालयो राजा भगदत्तः प्रतापवान् । गजा
 कुशधरः श्रेष्ठ शैते मयि निपातित ॥ ६ ॥ एतेन किल पार्थस्य पुत्रमासीत् सुदार
 णम् । लोमहर्षणमाथर्षे शक्रस्येषादिना यथा ॥ ७ ॥ गोपयित्वा महाबाहुप गार्थ धन
 ङ्गवम् । सशय गमयित्वाच कुन्तीपुत्रेण पातित ॥ ८ ॥ यस्य मस्ति समो लाक

अन्वय २१ ॥

गान्धारी बोली है ताव युद्धमें धर्मज्ञ धर्मराजसे मारा हुआ मासात् नकुलका
 मामा यह शत्रु तोता है । १ ५ है पुरुषे चम जो कि सदैव सर्वत्र तेरे साथ ईर्ष्याकर
 ताया वह बड़ा बलवान पराक्रमी मद्रकाराजा तोता है । २ । युद्धमें कर्णके रथको
 पकड़नेवाके जिन शत्रुने पांडवोंकी विजय के निमित्त कर्णके तेजको क्षीणकिया
 । ३ । दुःबहा स्थान है और धिक्कार है कि शत्रुके मुलको काकोस काटा हुआ
 देखा जोकि पूर्ण चन्द्रमाके समान सुन्दर दर्शन कपठ पत्राम के समान नेत्रधारी
 और दरच्छया । ४ । राजा मद्रके कुलको रोदन करनेवाली जियां इस युधिष्ठिर
 के हाथसे मरे हुए बुद्धके शोभा देनेवाले शत्रुके चारोंओर निश्चत है । ५ । यह पहाड़ी
 श्रीमान प्रतापवान् भगदत्त हाथीका अकुश हाथसे रखनेवाला और पृथ्वीपर पड़ा
 हुआ सोता है । ६ । निषध करके इसके साथ पांडवोंका युद्ध बहदुआ ने किया
 भबकारी अत्यन्त फटिन रूमोंका लड़ा करने वालाया और इन्द्र और वृषामुरके
 युद्ध के समान था । ७ । यह मरावाहु पांडव अर्जुन से युद्ध कर के और
 संशयको उत्पन्न करके कुन्तीके पुत्र युधिष्ठिरसे गिराया गया । ८ । लोके जिसकी

CHAPTER XXIII

Gandhari said, " Slain by Yudhishthir, here lies Shalya the mater-
 nal uncle of Nakul. The valiant king of Matsya who always bore
 enmity towards you, is dead. He who drove Arjun's car and diminish-
 ed his glory for the sake of the Pandavas, has been slain. It is a
 matter of great grief that crows are eating away his beautiful face. The
 women of his family are lamenting his death. 5. Bhadrita the
 glorious bull king sleeps with elephant's hook in his hand. His battle
 with the Pandavas was like that of Indra and Vritrasur. Having
 fought with Arjun, he was slain by Yudhishthir. Here lies Bhishma "

शौर्यं धैर्यं च कश्चन । स एव विदितः श्रेते भीष्मो भीष्मकुराहवे ॥९०॥ पश्यन् प्राणत
 यन् कृष्ण शयानं सूर्यवदृष्यसमम् । युगान्त इव कालेन पतितं सूर्यमम्बरात् ॥ १० ॥
 एव तदवा रणे शत्रुच्छेदनापेन धैर्यवान् । नरसूर्योऽस्मि श्रेयोति सूर्योऽस्मि च केशव
 ॥ ११ ॥ शरतवपनं वीरं चर्मं देवापिना समम् । शयानं वारशयने पश्य शरनिवेदिते
 ॥ १२ ॥ अतूलपूर्णागोपस्त्रिभिर्बाणैः समन्वितम् । उरुधावोपधानाग्रं दत्तं गाण्डीव
 घन्वता ॥ १३ ॥ यत्कथानः पितुः शाक्यसूक्ष्मेता महापथाः । एव शान्ततपः श्रेते
 माधवाप्रतिभो युधि ॥ १४ ॥ अर्जुना तव अर्मकः पारावर्षेण निर्णेव । अमर्क इव
 मर्कः सत्वेव प्रभावधारवत् ॥ १५ ॥ स्वयमेतेन शूरेण पूच्छ्यमानेन पाण्डवेः । अर्मक
 नाहवे मृत्युराख्यातः सत्यवादिना ॥ १६ ॥ अर्जुन कुरुवः कं नु परिप्रश्यति माधव ।

मूर्ता धार घनपराक्रमके समान कोई नहीं है युद्धमें अयकारी कर्म करनेवाले यह
 भीष्मजी आसन्नपत्तु होकर सोतेहै । ९ । हे श्रीकृष्णजी इससूर्यके समान तेजस्वी
 सोनेवाले भीष्मजी का ऐसे देखो जैसे कि म्लयकाल में कालसे भेरित आकाश सं
 गिराहूआ सूर्य होताहै । १० । हे केशवजी यह पराक्रमी नररूप सूर्य युद्ध में
 शत्रुके तापसे शत्रुओंको सन्तुष्टकरके ऐसा अस्तगत होताहै जैसे कि अस्ताचनपर
 वर्त्तमान सूर्य होताहै । ११ । इन वीरको द्युत न करनेवाले अनेक शरशय्यापर
 वर्त्तमान शूरवीरों से सेवित वीरशय्यापर सोनेवाले भीष्म को देखो । १२ । यह
 नद्राजी के पुत्र अर्जुन रहित तीनबाणों से बने अर्जुन के दिग्दृष्टे तकियेको शिरके
 नीचे चरकर । १३ । पिताके आज्ञानुसारी अक्षयारी महातर्पणी युद्ध में अनुपम
 भीष्मजी सोते हैं । १४ । हे ताप सत्र बाणों के जाननवाके नररूप होकर इस
 धमात्याने अक्षयानक बलसे देवताओंकेसमान माणोंको धारणक्रियाई पायहवोंसे पूछे
 हुये इस शूरधर्मवान् सत्यवक्ता ने आप अपनी मृत्युको युद्धमें बतलादिया । १५ ।
 हे माधवजी इस देवताके समान नरोत्तम देवव्रत भीष्म के स्वर्गवासी होनेपर कौरव
 लोग धर्मों के विषय किससे पूछेंगे । १६ । जोकि अर्जुनका विनेता और सात्वकी

the matchless warrior of the world. He is lying here like the sun
 fallen down at Patalaya, Having slain numerous warriors, he declines
 like a setting sun. 11. He is lying on the field of battle slain
 by Arjun. He observed a row of celibacy and asceticism for his father's
 sake. This wise and virtuous being is sustaining his life by the power
 of the knowledge of Brahm, like a god. 15. Asked by the Pandavas
 this truthful man pointed them out the manner of his death. When
 will the Kauravas consult in the matter of dharm, when Dronacharya
 Bhishma is dead? Look at Dronacharya, the preceptor of Arjun, Satyaki
 and all the Kauravas, lying on earth. He was master of the knowledge

गते देवव्रते स्वर्गे देवकल्पे नरर्षभे ॥ १७ ॥ अर्जुनस्य विनेतारमाचार्ये सात्वकेस्तथा
 तेष्वप्य पतितं द्रोणं कुरूणां द्विजसप्तमम् ॥ १८ ॥ अस्तं चतुर्विधं वेदं यथैव त्रिविधो
 अक्षरः । मार्गवो वा महावीर्यस्तथा प्रोचोषि माधव ॥ १९ ॥ यं पुरोचाय कुरुव साङ्ख्य
 व्रते स्म पाण्डवाद् । सोऽयं शस्त्रज्ञानं धेयो द्रोण शस्त्रे परिश्रमः ॥ २० ॥ ननुमुष्टि-
 तीर्णं हस्तावाचम्य माधव । द्रोणस्य निहतस्यापि हृदयते जीवितो क्या ॥ २१ ॥ चेद्वा
 बभूवास्व चरवारः । स्वर्वाङ्गाभिश्च केरावा मनपेतानि वै शूराद्यथैवाद्यौ प्रजापतेः ॥ २२ ॥
 बन्धनाहोविभो तस्य बन्धिभिर्बन्धिः शुभो । सोमावधो विकर्षणित् पादौ शिष्यगणा
 र्जितौ ॥ २३ ॥ द्रोणं प्रपद्युर्मेव निहतं मधुसूदन । कृपीं प्रपन्नमन्वास्ते दुःशोपहत
 केतना ॥ २४ ॥ तां पश्य पतितामार्चो मुक्तकेशीमभोमुष्मिन् । इतं पतिमुगासन्तीं
 द्रोणिं शस्त्रमनाम्बरम् ॥ २५ ॥ अग्निमाहूय च विजिबन्धितानां प्रजापत्य सर्वशः । द्रोण

का मुल्लै उत्सकीरवों के उत्तममुक्त द्रोणाचार्य को पृथ्वीपर पड़ाहुआ देखो । १८ ।
 हे माधवजी जैसे कि देवताओं के ईश्वरइन्द्र और बड़े पराक्रमी मार्गव परशुराम
 जी चारोंप्रकारके अक्षरोंके ज्ञाताके उसीप्रकार द्रोणाचार्य भी जानतेथे । १९ । कौर-
 वोंने जिसको अग्रवर्ती करके पादों को बुलाया वह पृथ्वीपर पड़ाहुआ ऐसे सोता
 है जैसे कि निर्वर्धित अग्नि होती है । २० । हे माधवजी मृतक द्रोणाचार्य की
 अनुपकी मुष्टि और मुहके हस्तबाण बिना अद्वैतुये तरणभूमि में ऐसे दिखाई पड़ते
 जैसे कि जीवतेहुने के होते हैं । २१ । हेकेशवजी चारों वेद और सब अस्त्र जिस
 मूलसे ऐसे पृथक् नहींहुये जैसे कि आदिमें प्रजापति त्रीसे जुड़ेनहीं हुयेथे । २२ ।
 उनके उन दोनों चरणोंको शृगाल खेंचते हैं जोकि दंढवत् के योग्य और वन्दी-
 बनोसे स्तूपमान अतिशुभ होकर सैकड़ों शिष्योंसे पूजितथे । २३ । हे मधुसूदनजी
 बड़ दुःखसे घातितमुष्टि कृपी इस पृष्टपुम्नके हाथ से मृतक द्रोणाचार्य के पास
 बड़ादुखी निपट है २४ । उत्सरोदन करनेवाली पीड़ावान् मुल्लेश नीचाधिरर्किये
 अस्त्रधारियों में श्रेष्ठ अपने पति द्रोणाचार्य के समीप नियतको देखो । २५ ।
 सामय ब्राह्मण विधिपूर्वक अग्निर्षो हो धारण करके सर ओरसे चत्ताको अग्निसे
 प्रज्वलितकरके द्रोणाचार्यको उपमें रखकर मापदेदके निनमन्त्रोंको गातेहुँ २६ । मरे

of weapons like Indra or Parashuram. He, under whose leadership the
 Kauravas challenged the Pandavas, lies on earth like quenched fire.
 20. Holding his bow in his guarded hand, he looks like one living.
 The four Vedas and the weapons did not leave him as they did not
 leave Prajapati. His feet, venerated by hundreds of disciples and
 praised by bards, are being dragged by jackals. Keep, much distressed
 laments the death of Drona slain by Dhrishtadyumna. She is standing
 by him with downcast head and dishevelled hair. Having put the body
 of Dronacharya on the funeral pile, the Brahmins set fire to it with

माघापगापन्तित्रीणिसामानि सामगाः ॥२६॥ सामभिक्षिमिरन्नस्यैरनुशंसन्ति चापरो
 भग्नवन्तिभिदाबाय द्रोणं ह्रस्वा हुताशने ॥ २७ ॥ गच्छन्त्यभिमुखा गंगां द्रोणशिष्य
 द्विजातयः । अरसव्यां चित्तं कृत्वा पुरस्कृत्य कृपीं तथा ॥ २८ ॥

इतो स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि, गान्धारी वानसे जगोबिंशोध्यायः २३ ॥



गान्धार्युवाच । सोमदत्तमुने पश्य युयुधानेन पातितम् । विद्युत्मानं विह्वेगध्वं
 मिमांसमान्तिके ॥ १ ॥ पुत्रशोकामिसन्तप्तः सोमदत्तो जनार्दन । युयुधानं महेश्वासं
 गह्वर्षीयव ददृशते ॥ २ ॥ शमो हि भूरिश्रवसो माता परमदुःखिता । आश्वासयति

शिष्य आश्रिते अभिक्षो प्रारण्य करके और द्रोणाचार्यको अग्निमें हवनकरके सन्तर्पे
 नियत होकर तीन सामन्तोंको गातेहैं । २७ । द्रोणाचार्यके शिष्य यह ब्राह्मण
 चिताको दाक्षिण्य करके और कृपीको आग करके श्रीगंगाजिके सम्मुखजातेहैं २८॥



अध्याय २४ ॥

गान्धारी बोली हे माधवजी सम्मुखही सात्यकी के बाध से गिरायेहुये और
 बहुत से पक्षियों से घिरेहुये सोमदत्त के पुत्रको देखो । १ । हे जनार्दनजी पुत्रशोक
 से दुखी सोमदत्त मानों वहे धनुषधारी सात्यकी की निन्दाकरता हुआ देखताहै
 । २ । वह भूरिश्रवाकी माता निर्दोष दुःखसे पूर्ण अपने पति सोमदत्त को माने
 विश्वास कराताहै । ३ । कि हे महाराज प्रारण्य से इस भरतवंशिपों के भयानक

the hymns of the Samved. Other disciples pour libations into fire an-
 sing the three hymns of the Samved in the end. Having burnt h-
 body, his disciples follow Kṛpī to the Ganges." 28.



CHAPTER XXIV

Gandhari continued, "Yonder lies Somdatta's son slain by Satyaki
 and surrounded by numerous birds. The great archer Somdatta is
 looking as if in contempt of Satyaki. Bhurishrava's mother is
 lamenting as though she were consoling Somdatta her husband in
 these words:— "It is lucky, king, that you don't see the great dea

भर्तारं सोमवृक्षमग्निन्दिता ॥ ३ ॥ दिष्ट्या नैनं महाराज दारुणं भरतक्षयम् । कुर्व
 सकन्दनघोर युगान्तमनुपश्यसि ॥ ४ ॥ दिष्ट्या यूपध्वजं घोरं पुत्र भूरिब्रह्मद्वजम् ।
 अनेकक्रतुयज्ज्वान निहत नाद्य पश्यसि ॥ ५ ॥ दिष्ट्या स्तुगाणामाक्रन्दे घोरं विद्यापित
 बहु । न भ्रूणोपि महाराज सारश्रीनामिधार्णवे ॥ ६ ॥ शल विनिहत संख्ये भूरिभ्रम
 मेघ च । स्तुपाश्च विधवाः सर्वा दिष्ट्या नाद्यह पश्यसि ॥ ७ ॥ पता घिल्य बहुल
 अर्त्तः शोकेन कर्षिताः । प्रतन्वन्मिमुखा भूमौ कृपणं तत्र केशव ॥ ८ ॥ धीमत्सुरतिषी
 भस्त्र कर्मदमकरोत् कथम् । प्रमत्तस्य वृन्देस्त्रिधाहु गरस्य यज्वन ॥ ९ ॥ तत पापतरं
 कर्म कृतघानपि सात्याकि । यस्मात् प्रायोपविष्टस्य प्रादोशोत् सखितारमनः ॥ १० ॥
 किं नु वदसि संसत्सु कथाम् च जनार्दन । भर्जुनस्य महत् कर्म स्वयं वा स किरी
 टवान् ॥ ११ ॥ गान्धारराज शकुनिवैलवान् सत्याविक्रमः । द्वेनिहतः सहदेवेन भागिने
 येन मातुल ॥ १२ ॥ य पुरा द्वेमदण्डाश्रया व्यजनाश्रया ह्यम धाज्यते । स पप पश्चिनिः
 पश्ये शयान वपवीज्यते ॥ १३ ॥ मायया निकृतिप्रज्ञा जितवान् यो युविष्ठिरम् । सभायां

नाशको और कौरवों के घोर मनपकाल के समान रोदन करने का तुम नहीं
 देखतेहो । ४ । और भारव्यमे इस हजारों दाक्षिण्या देनेवाले बहुत यज्ञोत्तै पूजन
 करनेवाले यूप ध्वजाधारी मृतक पुत्रको नहीं देखते हो । ५ । हे महाराज भारव्यसे
 रणभूमि में इन पुत्रवधुओं के घोर विद्यापको प्रेसे नहीं देखतेहो जैसे कि समुद्रपर
 सारसियों के शब्द होते हैं । ६ । अब यहां युद्धमें मृतक भूरिभवा और शरपको
 और पुत्रवधुओं को नहीं देखतेहो । ७ । हे केशवजी दुःखकी बातहै कि पतिशोक
 मे पीड़ावान् यह स्त्रियां दुःखका विद्याप करके सम्मुख पृथ्वीपर गिरती हैं । ८ ।
 हे अर्जुन तुमने धीमत्सुनामहो यह निन्दितकर्म कैसे किया जो यज्ञकरनेवाले अचेत
 शूरकी सुभाको काटा । ९ । सात्याकिने भी उससे अधिक पापकर्म किया कि
 शरीर त्यागने के निमित्त नियम करनेवाले तीक्ष्णबुद्धिका शिरकाटा । १० । हे
 जनार्दनजी सत्पुरुषों के मध्य में और कथाओं में अर्जुन के इस बड़े कर्मको क्या
 कहोग अथवा आप अर्जुनही क्या कहेंगा । ११ । यह वलवान और सत्यपराक्रमी
 शकुनी गान्धारदेशका राजा दामा अपने भानजे सहदेव के हाथमे मारागया । १२ ।
 जोकि पूर्वज्ञमय में सर्वर्ष दण्डवाले पंखोसे वायुक्रियाजाताथा वह भव सोता

truction of the Kauravas and a weeping and crying like that of prelaya.
 It was by good luck that you did not see the death of your warrior
 son who had performed many sacrifices with large donations. 5 It
 is by good luck that you do not hear the lamentations of your daughter-in-
 law crying like cranes. You do not see the dead bodies of Bhuri-
 shtrava and Shalya and the women weeping over them. It is very
 hard to see these widowed women fall on earth with grief. Arjun is
 called Bhlatau and yet he committed the grievous sin of cutting the
 arm of an insensible and non-observing warrior, Satyaki did a greater

विपुलं राज्यं स पुनर्जीवितं जितः ॥ १४ ॥ यदेव नम पुत्राणां लोकाः शक्यजिता
विभोः एवमद्यापि दुर्मुखे लोकाः शक्येण च जिताः ॥ १५ ॥ कथञ्चनायं तत्रापि
पुत्रान्मे स्नातुभिः सह । विरोधयेद्द्वेषताननुत्तममधुसूदन ॥ १६ ॥

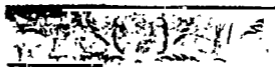
इति स्त्रीपर्वणि स्त्रीविलापपर्वणि गान्धारीवाक्ये चतुर्विंशोऽध्यायः २४ ॥



हुआ पक्षियों के पंखों से वायु किया जाता है । १३ । जिस छडीने सभा में माया
में जीवते युधिष्ठिर को और बड़े राज्यको विजय किया अन्त में वह पराजित हुआ
। १४ । हे मधु जैसे कि मेरे पुत्रों के लोकशत्रुओं से विजय हुये बसीमकार इस
दुर्बुद्धीकेभी लोकशत्रुओंमें विजय होगये । १५ । हे मधुसूदनजी यह कुटिलबुद्धी
बरा भी मेरे सत्य बुद्धिराले पुत्रोंको कहीं भाइयों समेत विरोधी न करे १६ ॥



fault in as much as he beheaded the wise warrior who had resigned himself to death. 10. What will you say, Vasudev, about this deed of Arjuna's in the assemblies of good men? This powerful Shakuni of true prowess, the king of Gandhar was slain by Sahadev the son of his sister-in-law. He who was served with gold handled fans, is now being fanned by the wings of birds. He who deceitfully won Yudhishtira and his great kingdom, was at last conquered. He won good regions by means of means like my sons. I fear he will spread quarrel among my well-meaning sons in the other world too." 61.



माग्धायुधाद्यः । काम्बोजं पश्य दुर्लभं काम्बोजालरणोचितम् । शयानमृष
भस्कन्धं हतं पांशुषु माधव ॥ १ ॥ पश्य क्षतजसन्निभो वाहूचन्दनरुगिती । अबेक्ष्य
कृपणं भाट्या बिलपत्यतिदुःखिता ॥ २ ॥ शयानमभितः शूरं कार्त्तिकं मधुसूदन । पश्य
वीर्यांगद्वयुगप्रतिषेधमहासुजम् ॥ ३ ॥ माग्धानां मञ्जिपतिं जयस्तेन जनाईन । परि
शर्म्यं प्रकाशिता माग्धवः पश्य योषितः ॥ ४ ॥ अस्य नाश्रगतान् वाणान् कार्त्तिकिणाहु
बद्धार्पितात् । उद्वेगपसुखाविष्टा मूच्छमानाः पुनः पुनः ॥ ५ ॥ आसां सर्वानवघ्ना
नामातपेन परिश्रमात् । मम्लाननलिनामानि भाग्निं वक्त्राणि माधव ॥ ६ ॥ द्रोणेन
निहताः शूरा शेरने खिरांगदा । धृष्टपुमन्सुतासर्वे शिखरो हेममालिनः ॥ ७ ॥
तत्रैव निहताः शूराः शेरने खिरांगदाः । द्रोणेनाभिमुखाः सर्वे धातरः पञ्च कैकयाः
॥ ८ ॥ द्रोणेन हृषई शेषे पश्य माधव पतिनम् । महाक्षिपमिवाशये सिंहेन महता

अध्याय २५ ॥

गान्धारी बोली है माधवजी इस मृतक और पृथ्वीकी धूलपर सोनेवाले
काम्बोज के राजा को देखो जोकि अनेक उत्तम स्तन्ययुक्त होकर काम्बोज देशी
वधम पुष्पों के योग्य है । १ । वह भाट्या जिसकी बधिर मरी चन्दन से लित
भुजा को देखकर महाकुली होकर दुःखका विलाप करती है । २ । हेमसूदनजी
इस सोनेवाले शूरीर राजा कर्त्तिक को चारोंओर से देखो जिसकी बड़ी भुजा
प्रकाशित बाजून्दों के जोड़े से अलंकृत है । ३ । हे जनार्दनजी स्त्रियां सब ओरसे
इस जयस्तेन राजा मगधको घेरकर अत्यंत रोदन करती हुई व्याकुल हैं । ४ ।
यह वारम्बार अचेत और दुःखसे पूर्ण स्त्रियां अभिमन्यु के भुजबलसे गारे और
बसके अंगों में लगेहुये वाणोंको निकालती हैं । ५ । हेमपवजी इन सब निर्दोष
स्त्रियोंके मुख धूप और परिश्रम से ऐसे दिखाई पड़ते हैं जैसे कि कुम्हलाये हुये
कमल होते हैं । ६ । धृष्टपुमन के सब पुत्र बालक सुवर्णकी माछा और सुन्दर
बाजूबन्द रखनेवाले शूरीर द्रोणाचार्य के हाथसे मरे हुये सोते हैं । ७ । उसीप्रकार
सुन्दर बाजूबन्द रखनेवाले कैकयदेशी पाचों शूर भाई सम्मुखवामें द्रोणाचार्य के
हाथसे मरेहुये सोते हैं । ८ । हे माधवजी युद्धमें द्रोणाचार्य के हाथसे गिराये हुये

CHAPTER XXV

Gandhari said, "Look at the king of Cambuj who is lying dead on dust. O Madhav. He was an excellent warriors of broad shoulders like the good soldiers of G. whuj. His wife is weeping at his bleeding arm psted with sandal. Look O Madhusudan, at the dead warrior king of Kaling whose long arms are decked with a brilliant pair of armlets. Women are weeping round Jayatsen, the king of Magadh and extract the arrows shot by the powerful arms of Abhmanyu all through his body. 5. The faces of all these women look like with-

इतम ॥ ९ ॥ पाञ्चालराज्ञो विमलं पुण्डरीकाक्ष पाण्डुरम । आतपत्रं समाभाति शरदी
 वनिशाकुर ॥ १० ॥ हतास्तु दुपदं हृजं स्तुवा भार्या सुतु खिता । दग्ध्वा गच्छन्ति
 पाट्याचार्य राजानमगस्तवतः ॥ ११ ॥ धृष्टकेतुं महेश्वासं खेदिपुंगवमंगना । द्रोणेन
 निहतं शूर हरग्नि हनचेतस ॥ १२ ॥ दाशार्हपुत्रजं धीर शयानं सत्यविक्रमम् । नरो
 प्याके रुद्रस्येनाभेदिराजं वरांगनाः ॥ १३ ॥ विन्दानुविन्दाघावन्त्यौ बलितौ पश्य
 केशव । हिमान्ने पुषिरनौ शालौ मरुता गलिनाविव ॥ १४ ॥ भवभ्याः पाण्डवाः कृष्ण
 सर्व एव स्वया सद् । ये मुक्ता द्रोणभीष्माद्यां कर्णात् वैकर्त्तनात् कृपात् ॥ १५ ॥ दुपदो
 वपात् द्रोणमुपात् सेववाचम् महारथात् । सोमदत्तदिकर्णाच्च दूराच्च कृतवर्मणः
 ॥ १६ ॥ ये हन्युः शस्त्रवेगेन देवानपि नरर्षभा । त इमे निहताः सर्वे पश्य कालेष्व पश्य
 यम् ॥ १७ ॥ तवैवनिहता कृष्ण मम पुत्रास्तरस्थिन । पश्यैवाकृतकामस्त्वपुपुण्डुरं

द्रुपद को ऐसे देखो जैसे कि वनमें वडे सिंहसे मारेहुये बड़े हाथी को देखते हैं । ९ ।
 राजा द्रुपद का श्वेन निर्मल छत्र ऐसे प्रकाशमान है जैसे कि शरदऋतुमें चन्द्रमा
 होता है । १० । यह दुःखी भार्या और पुत्रवधू पांचालके वृद्ध राजा द्रुपदको दाह
 देकर दाहिनी ओरमें जाती है । ११ । अचेत स्त्रियां द्रोणाचार्य के हाथसे मारेहुये
 इन महत्मा शूर चंद्रके राजा धृष्टपुत्रको उठाती है । १२ । हे श्रीकृष्णजी राजा
 चंदेरी को यह उत्तम स्त्रियां इन सत्य पराक्रमी वीर मैदान में सोनेवाले अपने
 पांज को घात में लेकर रानी हैं । १३ । हे श्रीकृष्णजी इन अजान्त देशके राजा
 विन्दानुविन्दको ऐसेदेखो जैसे कि हिमऋतुके अन्तपर वायुमेगिरायेहुये दोपुष्पित
 शालवृक्षोंको देखते हैं । १४ । हे श्रीकृष्णजी सब पांडव आपके साथ मारनेके
 अयोग्य है जो कि द्रोणाचार्य भीष्म, कर्ण और कृपाचार्य से भी बचेहुये हैं दुपदो
 पन अशक्त्यामा, सिंधु का राजा जपद्रथ, विकर्ण, सामदत्त और शूर कृतवर्मासे
 भी बचे । १६ । जो नरोत्तम शस्त्रों की तीक्ष्णता से देवताओंकोभी मारसक्ते थे

erod lotus flowers on account of the and the heat of the Sun. All the
 youthful sons of Dhrihtadyuan, slain by Dronacharya, are sleeping
 here on earth. Similarly, the five Karkaya brothers, slain by Drona,
 sleep in death. Drupad, slain by Drona in battle, looks like a great
 elephant slain by a lion in a forest. His white umbrella shines like
 the moon in winter. 10. His distressed wife and daughter-in-law
 have burnt Drupad the old king of Panhal and are going away. The
 sensible women lift up the king of Chanderi who was slain by Drona.
 The women of Chanderi have taken up their brave grandsire in their
 arms and are weeping over him. Look at Vind and Anuvind the two
 princes of Avant lying down like two flowering trees uprooted by
 the wind at the end of winter. The Pandavas as well as you, O Krishna,

गताः पुनः ॥ १८ ॥ शान्तनोश्चैव पुत्रेण प्रज्ञेन विदुरेण च । तद्वोकास्मि मा स्नेहं कुर्व
 स्वात्मसुतेष्विति ॥ १९ ॥ तयोर्न दर्शने तात मिथ्या भविमहेति । अग्निरेणैव पुत्रा मे
 भस्मीभूता जनार्दन ॥ २० ॥ वैशम्पायन उवाच ॥ इत्युक्त्वा न्यपतद्भूमौ गान्धारी शोक
 मूर्च्छिता । बुद्धोपहनधिज्ञाना धैर्य्यमुत्सृज्य भारत ॥ २१ ॥ ततः कोपपरीतांगी पुत्र
 शोकपरिप्लुता । जगाम वीरिं दोषेण गान्धारी व्यथितेन्द्रिया । २२ ॥ गान्धाव्युत्था च ।
 पाण्डवा प्राप्तं राष्ट्राय वधा- कृष्ण परस्परम् । उपेक्षिता विनश्यन्तस्त्वया कस्मान्न
 नार्दन ॥ २३ ॥ इच्छतीपक्षिणो दास कुरुणां मधुसूदन । यस्मान्नवया महाबाहो फले
 तस्मान्नवाप्सहि ॥ २४ ॥ गतिशुभ्रवया वग्ने तपः क्रिञ्चद्वगर्ज्जितम् । तेन त्वां दुरवां
 षह सव इत्त युद्धम मारगय इम । वपराति समयका दत्त्वा । २५ ॥ इ भ्रातृष्णजी
 मेरे वेगमानपुत्र तभी मागेने जब कि तुम अपने अभीष्ट प्राप्ती से रहित उपप्लुती
 श्वात्मको छौटकरपये । १८ । उसी समय मुक्तको भीष्म पितामह और ज्ञानी
 विदुरजी ने समझायाया कि अपने पुत्रों पर शीते मतकरो । १८ । उन दोनोंकी
 वह ब्रह्मरूपता विधवाहोनेके योगेनहीं थी इसीसे हे जनार्दनजी मेरे पुत्र थोड़ेही
 दिनोंमें नाश होगये । २० । वैशम्पायन बोले हे भरतवंशी वह गान्धारी यह सब
 कहकर शोकसे बुर्र्छाधान दुःख से वापल बुद्धि धैर्यको त्यागकर पृथीपर गिर
 पड़ी । २१ । फिर क्योसे पूर्ण शरीर पुत्रशोक में डूबी असावधान इन्द्रिय गान्धा
 रीने श्रीकृष्णजी को दोषनगाया । २२ । गान्धारी पोल्ली हे श्रीकृष्णजी पांडवों
 के और धृष्टद्युम्नके पुत्रादिक सब परस्पर भस्महुये हे जनार्दन तुमने किसइतु से
 इन विनाशहोनेवालों को त्याग किया । २३ । हे महाबाहु मधुसूदनजी जिसकारण

are indestructible as you saved death from the hands of Drona-
 charya, Bhishm, Karan, Kripicharya, Duryodhan, Jayadrath, Vikain
 Somdar and valiant K itvarma. The heroes, who could slay even
 gods with their sharp and powerful weapons, have died in this war;
 the times are so changed. 17. I hold my sons as dead from the
 time you returned from your useless mission of peace to Upap'arya.
 Bhishm the grandfather and wise Vidur told me then that I should
 love my sons no more. Their foresight could not be wrong. O
 Janardan, and therefore my sons were slain." 20 Vaishampayan
 says that having talked as above, Gandhari lost her senses and patience
 with grief and fell down on earth. Then with his body full of rage
 and her organs out of control, she blamed Shri Krishna, saying, " The
 sons of the Pandavas and Dhristadyum were all slain at once. Why
 did you leave them in the lurch? You will be punished for your
 wilfully looking at the destruction of the Kauravas By the virtue
 of the asceticism which I have performed in attending on my husband

येन शप्ते अक्रमदायः ॥ २५ ॥ यस्मात् परस्परं प्रसतो ज्ञातयः कुशपाण्डवाः । उपे
 क्षिनास्ते गोविन्द तस्माज्जातीन् परिष्यसि ॥ २६ ॥ त्वमप्युपरिच्यते यथे पर्युक्षिणे मनु
 सूदन । इतश्चातिहंतामात्रो इतपुत्रो धनेचर । कुस्तितेनाप्युपायेन तिथन सनवाप्यसि
 ॥ २७ ॥ तत्राप्येवं इतपुत्रा त्रिदशतिथिवाचवाः । श्लिषः परितपिष्यसि यथेन मरत
 क्षिर । २८ ॥ वैशम्पायन उवाच । एतच्छ्रुत्वा तु बभूवन् बान्धुदेशो महात्मनाः ।
 उवाच देवी गान्धारीजीवत्परस्मयभिष ॥ २९ ॥ संहर्षां वृत्रिजश्चक्रय मद्गयो मेह
 विद्यते । जानेहमेतदप्येवं श्योर्णं चरसि कुत्रते । ३० ॥ अथवास्ते परैरन्यैरपि वा देव

से तुल्यदृष्टायान ने जान बूझकर कौरवों का नाश होनेदिवा इतरेतुने तुमभी उसके
 फलको पाओगे । २४ । पतिकी सेवा करनेवाली मैंने जो कुछ तपपात किया उस
 दुष्पाप्य तपके द्वारा तुमचक्र गदाधारी को जापेदीहूँ । २५ । हे गोविन्दजी ओ
 कि तुमने परस्पर ज्ञातवालेको मारनेवाले कौष और पांडवोंको नहीं रोका इगरेतुसे
 तुम भी अपनी ज्ञातवालों को मारोगे । २६ । हेनमुमनजी तुमभी लक्ष्मीमवाचरपं बर्ष
 बर्षमान होनेपर परेदूपे मंत्री पुत्रह्रातिथामि बनमें किनेवाले भ्रशातक्य लोकोमेंउत्त
 अनाथ के समान निन्दित उपायसे मरणको पाओगे । २७ । इमीप्रकार तेरीश्लिषां
 भी जिनके पुत्रराधव और ज्ञातिवाले मारेगने हेने चारोंओरको दौड़ेंगी जैसे कि
 यह भरतवंशियोंकी श्लिषां दौड़ती हैं । २८ । वैशम्पायनबोले कि बड़े साहसी
 बाणदेवजी इमरोर बचनको सुन कर मंदमुपमान करतेहुये उन देवी गंधारिसि बोले
 हे शत्रिवासी मैं जानताहूँ कि तू मेरे कर्म के समान कर्मकोभी अपने तपके नाशक
 लिये करतीहै बादबलोन देवसेही नाशको पाएंगे इसमें संदेह नहींहै । ३० । हेतुम
 श्री पादवक्रांग मन्व यनुष्य देवता और दानवोंनेभी भवपहैं परस्पर विनाश को

I curse you. Because you did not stop the mutual enmity of the
 Kauravas and the Pandavas, you will destroy your own kinsmen
 too. After thirty six years your ministers, sons and kinsmen being
 slain, and you hiding in a forest will die an ignominious death. The
 women of your family will run here and there like these Kaurav
 women." Vaishampayan says that brave Vasudev smiled slowly
 at these words of Gandhari, and said, "I know, Kshatriya woman
 that you have done a deed like mine to destroy the merit of your
 accusers. The Yadavas are sure to die of God's will. They are
 indestructible by the gods and Dasyas and therefore they shall die

दुःखैः । परपरकृतं माद्यो यतः प्राप्स्यति यादवाः ॥ ३१ ॥ इत्युक्त्वाति दाशार्दि पाण्ड
वाह्वस्तच्छेतसः । वभ्रुमुपैशसं विना निराशाश्चापि जीविते ॥ ३२ ॥

इति श्रीपर्वशिखी श्रीविलासपर्वशिखी गन्धारीवाक्यं पंचविंशोऽध्यायः ३५ ॥



भगवानुवाच । उत्सृष्टोत्तिष्ठ गान्धारी मा च शोके मनःकृष्याः । तथैव ह्यपराधेन
बहवो निघने मयाः ॥ १ ॥ यत्त्वं पुत्रं दुरात्मानमीषुमस्यभतमग्निनम । दुःखोघने पुर
स्कृत्य दुःकृतं साधु मन्यसे ॥ २ ॥ निन्दुर वैरपुरुष वृद्धानां शास्त्रोत्तमम् । कथमा
रुप्रकृतं दोष मया धातुभिर्दृच्छसि ॥ ३ ॥ मृतं वा यदि वा नष्टं पातीतमनुजोचति ।
दुःखेन लभते तु खं ज्ञानार्थं प्रपद्यते ॥ ४ ॥ तयोर्धियं ब्राह्मणवत्ते गर्भं गौर्वादारं
पौत्रे ॥ ११ ॥ श्रीकृष्ण जी के इस प्रकार कहने पर पाण्डवसोम भयभीत चिच
क्षत्यन्त व्याकुल और जीवनमें निराशा युक्त हुए । ३२ ।



अध्याय २६ ॥

श्रीभगवान् बोले हे गान्धारी उठो उठो शोकमें चिचको मत रूगे तेरे अपराध
से कौरवोंने नाशको पाया । १ । जो उस दुर्बुद्धी अत्यन्त अहङ्कागी ईर्ष्या करनेवाले
दुर्योधनको भय्ररती करके अपने दुष्ट कर्मको अच्छा मानता है । २ । जो कि कठोर
वचन शत्रुताको मिय जाननेवाले मनुष्य और दृढ़ोंकी आज्ञाके विपरीत विरुद्धकर्म
करनेवाला था यहाँ तू अपने क्रियेहुये दोषको कहे मुझमें ल्याना चाहती । ३ । जो
मृतक अथवा विनाशयुक्त व्यतीत समय को शोचती है और दुःखमे दुःखकोपाती है
अर्थात् आदि अतके दोनों दुखोंको पाती है । ४ । ब्राह्मणी तपके निमित्त उत्पन्न

fighting with one another." The Pandavas were terrified at these words of Shri Krishna and lost all hope of life in their distress." 32.



CHAPTER XXVI

Shri Krishna said to Gandhari, " Rise up and do not give your self up to grief. The Kuravas were destroyed by your own fault. You made proud and furious Duryodhan headstrong and yet call your wicked deed good. He loved enmity and despised the advice of old men, and yet you wish to lay your own fault on my shoulders. You grieve at this great destruction and are doubly distressed, A Brahman

धावितारं तुरंगी । शूद्रा दासं पशुपालञ्च वैश्या घचार्यिणि त्वद्विधा राजपुत्री । ५ ।
 वैशम्पायन उवाच । तच्छ्रुत्वा वासुदेवस्य पुनरुक्तं घञ्चोभियम् । तूर्ण्यं बभूव गान्धा-
 शोकव्याकुलचेतना ॥ ६ ॥ धृतराष्ट्रस्तु राजर्विनिगृह्याबुद्धिज तमः ॥ परवंपुत्र-
 घर्मात्मा भर्माज्ञं युधिष्ठिरम् । जीवतां परिमाणन्नः सैम्यानामपि पाण्डव । इतानां वि-
 जानीयेपरिमाणं बदर्श मे ॥ ८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । दशायुतानमयुतं सहस्राणि
 विशतिः । कोट्यः षष्टिश्च पट्टचैव येसि । न राजन् मृजे हताः ॥ ९ ॥ अलक्ष्याणां
 वीराणां श्रद्धेस्त्राणि चतुर्दश । दश चान्यानि रानेन्द्र शतं षष्टिश्च पञ्च ॥ १० ॥
 धृतराष्ट्र उवाच । युधिष्ठिर गतिं क्वान्ते गताः पुरुषसत्तमाः । आचक्ष्व मे महाबाहो
 सर्वज्ञो ह्यसि मे मतः ॥ ११ ॥ युधिष्ठिर उवाच । वैर्हृतानि शरीराणि द्रष्टेः परमसंयोगो
 देवराजममालोकान् गतास्त सत्पथिकताः ॥ ११ ॥ ये त्वदृष्टेन मनसा मरुत्वाभिः

होनेवाले गर्भको धारण करती है गो भार लेजलने वालेको घोड़ी दोहानेवाले को
 शूद्रा दास को वैश्या पशुपालको राजपुत्री क्षत्रिया युद्धके श्रमिलारी गर्भको । ५ ।
 वैशम्पायन बोले कि शिशोकसे व्याकुल नेत्र गान्धारी वासुदेवजी के उस अभियोग
 द्वारा कहेहुये बचनको सुनकर मानहोगई । ६ । फिर राजश्राधि धृतराष्ट्रने अज्ञान
 से उत्पन्न होनेवाले मोहको रोककर धर्मज्ञ राजा युधिष्ठिर से पूछा । ७ । कि हे
 पांडव तुमजीवतीहुई सेनाकी संख्याके जाननेवाले हो और जोमृतक शूरवीरों की
 संख्याको जानने हो तो मुझे कहे । ८ । युधिष्ठिर बोले हे राजा इस युद्धमें दश
 करोर बीसहजार शूरवीर मारेगये । ९ । हे रामेन्द्र दृष्टि न आनेवाने वीरों कीसंख्या
 चौबीस हजार एकसौ पैसठ है । १० । धृतराष्ट्रबोले हे पुरुषोत्तम महाबाहु युधिष्ठिर
 उन्होंने किस गतिको पाया वह मुझसे कहे मेरे विचारसे तुम सब वशों के जानने
 वालेहो । ११ । युधिष्ठिर बोले जिन प्रसन्न चित्तों ने बड़े युद्धमें अपने शरीरके
 नाश किया वह सत्य पराक्रमी इन्द्रलोकके समान लोकोंको गये । १२ । हेभरतवंश
 जो अमरसन्न चित्तसे युद्धमें लड़तेहुये मारेगये वह गन्धर्व लोकको गये । १३ । और

woman produces offspring for asceticism, a cow to carry load, a man
 to produce a runner, a shudra woman produces a slave, a Vaishya
 woman produces one who rears beasts, but a kshatriya woman pro-
 duces fighting men." Vaishampayan says that on hearing the
 words of Vasudev, respected again and again and unpleasant to hear
 Gundhari distressed with grief, became silent. Then Dhritrashtra the
 royal sage, checking his passions, which were the outcome of ignorance
 asked of Yudhishtira the wise the number of the warriors slain, and
 Yudhishtira said that the dead warriors amounted to ten crores
 and twenty thousands and that twenty four thousands, one hundred
 and sixty five were invisible. Dhritrashtra then questioned about

भारत । युध्यमाना हनाः संख्ये ते गन्धर्वैः समागताः ॥ १३ ॥ ये च संप्रामुष्यिष्ठा
 शक्यमानाः परांमुखाः । अख्येण निघ्ननं प्राप्ता गतास्ते गुह्यकान्पति ॥ १४ ॥ पीड्यमाना
 रैर्वेनु द्विष्यमाना निरायुधाः । द्विनिषथा महात्मान परानभिमुखा रणे ॥ १५ ॥ द्विष्य
 शनाः शिवेः शक्यैः क्षत्रधर्मरायणः । गतास्ते ब्रह्मसद्वनं हना धीराः सुवर्चसः
 ॥ १६ ॥ ये तत्र निहता राजन्मन्तरायोघ्नं प्रति । यथाकथञ्चित्से राजन् संप्राप्तास्तु
 त्वात् कुक्कुर ॥ १७ ॥ धृतराष्ट्र उवाच । केन ज्ञातवलेनैवं पुत्र पश्यासि सिद्धवत् ।
 म्ये वद् महाबाहो धीतव्यं यदि मन्यसे ॥ १८ ॥ युधिष्ठिर उवाच । निदेशाद्भवतः
 विघ्नने विचरता मया । तीर्थयात्राप्रसङ्गेन संप्रातोऽयमनुग्रहः ॥ १९ ॥ देवर्षिर्लोमरो
 ष्टस्मृतः प्राप्नोस्म्यनुस्मृतियम् । दिव्यं चक्षुरनुमानं ज्ञानयोगेन वै पुरा ॥ २० ॥ धृत्
 उवाच । धेघनाथा जनस्यास्य सनाथा ये च भारत । कञ्चित्तेषां शरीराणि
 िरणभूमि में नियत याचना करते परांपुत्र होकर उल्लोसे मारंगये वत गुह्यकों के
 र्कोको गये । १४ । जो पात्यमान अख्ये लज्जासे युक्त और वड़े साहसी युद्धमें
 तुओं के सम्मुख शत्रुओं के हाथसे गिरते क्षत्रिय धर्मको उत्तम माननेवाले तेज
 ष्यों से मारंगये वह निस्तदेह ब्रह्मलोकको गये । १६ । हे राजा जामनुष्य यहां
 णभूमि के मध्यमें जिस किसी प्रकारसे मारंगये वह उचर कौरवदेशको गये । १७ ।
 तराष्ट्रवाले हे पुत्र तुम सिद्धोंके समान जिस ज्ञानेवल से इस प्रकार देखते हो हे
 र्शिंकाहु वह मुझसे कहे जो मेरे सुनेने के योग्यहै । १८ । युधिष्ठिर बोले कि
 र्वसमय में आपकी आज्ञानुसार वनमें घूबनेवाले मैंने तीर्थयात्रा के योगसे इस भ-
 ष्यकों प्राप्त किया । १९ । देवर्षीप लोमशश्चापि देखे उनसे इस मनुस्मृतिको
 पाया और निश्चयकरके पूर्वसमयमें ज्ञान योगसे दिव्य नेत्रों को पाया । २० ।
 तराष्ट्र बोले हे मरुतवंशी क्या तुम नाथ और सनाथ लोगों के शरीरोंको विधि
 अनुसार दाह करोगे । २१ । जिन्हों का संस्कार करने के योग्य नहीं हैं

their fate hereafter, and Yudhishtira said, " Those who died cheerfully
 have gone to the region of India; those who were cheerless, joined
 the Gandharvas; those who begged for mercy and turned back, were
 turned into Gulyaks; those who were deprived of their weapons
 and yet faced the enemy and were slain, have surely gone to the
 regions of Brahm. All these who died in this field of battle, under
 any circumstance, have gone to the country of U-tar-Kurus. "
 Dhritraashtra then asked him how he could see all that like siddha,
 and Yudhishtira said, " Roaming by your order in forests, I got this
 faculty by visiting holy places. I saw Lomsh, the divine sage and
 got from him the knowledge as well as divine sight. " 20. Dhrit-
 raashtra then said, " Will you burn these bodies which have gone to
 look after? We should save the bodies from being digged and eaten

घटयन्ति विधिपूर्वकम् ॥ २१ ॥ न येषां साति कर्तारो न च येनाहेताग्रयः । पयश्च
 कस्य कुर्याम पशुखात्तात् कर्मणः ॥ २२ ॥ याव सुपर्णाश्च यूष्माश्च विकर्षन्ति ततस्ततः
 तेषान्तु कर्मणा लोका मविष्यन्ति युधिष्ठिर ॥ २३ ॥ वैशम्पायन उवाच । एवमुक्तो
 महाप्राज्ञः कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । आदिदेश सुचर्मणं घौम्यं सूतञ्च सञ्जयम् ॥ २४ ॥
 विदुरञ्चनदाबुद्धिं युयुत्सुञ्चैव कौरवम् । इन्द्रसेनमुष्माञ्च मृग्यान् सूताञ्च सर्वेषु
 ॥ २५ ॥ सर्वन्तः कारयन्नेषां प्रेतकार्याण्यनेकशः । यथा चानाघवत् किञ्चिच्छरीरं
 न विनश्यति ॥ २६ ॥ शासनाद्धर्मराजस्य क्षत्ता सूतञ्च सञ्जयः । सुचर्मो घौम्यस
 हित इन्द्रसेनाहयस्तथा ॥ २७ ॥ चन्द्रगामुककाष्ठानि तथा कालियकाम्युतः । मृतं तिलञ्च
 गन्वाञ्च क्षौमाणि वसनानि च ॥ २८ ॥ समाहृत्य महादार्णि दास्यन्वापेक्ष सञ्जयान् ।
 रथाञ्च सूदितांस्तत्र नानामहरणानि च ॥ २९ ॥ चितां हत्वा प्रयत्नेन ययामुस्याधरा
 विप । दाहयामासुरन्वयमा विधिरष्टेन कर्मणा ३० ॥ दुर्योधनञ्च राजानं भ्रातृन्ध्यास्य
 और यहाँ जिनही अग्नि नियत नहीं है वे तत् कर्मों की अविक्रता से हम
 कित्ता क्रिया कर्मकरे जिन्होंको सुवर्ष अर्थात् गरुड और गिद्ध इधर तथा
 से लेंगे है वे युधिष्ठिर क्रियाकर्म से उन्हीं के लोकेहोंगे । २३ । वैशम्पायन
 बोले है महाराज हम पचनको सुनकर कुन्तिके पुत्र युधिष्ठिरने दुर्योधन के पुरोहित
 सुपर्णा, घौम्य, श्रापि मृत संजय, बड़े बुद्धिमान विदुरजी, कौरव युयुत्सु इन्द्रसेनादिक
 मृत्यु और सर सूत । २५ । इन सबलोगोंको आज्ञाकारी कि आप सबलोग इन्हीं
 के सब मेलकायों को करो नितसे कि कोई शरीर अनाथ के समान नाशको न
 पावे । २६ । धर्मराजकी आज्ञा से विदुर मृतसंजय सुपर्णा और घौम्य पुरोहित
 समेत इन्द्रसेन और नयन । २७ । चन्द्रन, अगुरु, काष्ठ और कालीयक मृत
 तेल, मुगान्घ्रिदा बटुमूल्य सौमवस्त्र । २८ । लकड़ियों के ढेर और बर्ष पर टूटेहु
 र्य और नानामंकार के शशोंको इकट्ठा करके । २९ । सावधानों ने बड़े उपायों
 से चिताओंको बनाकर मुख्य १ राजाओंको दास्य निहित कर्मों के द्वारा दा
 क्रिया । ३० । राजा दुर्योधन उसके भी भाई शल्य राजशुल भूरिभवा । ३१

away by the birds of prey and should burn them in accordance with
 the religious rite. 23. Vaisampayana said that on hearing
 Dhritrashtra's words, Yudhishthira asked Sidharma the priest of
 Duryodhan, Dronasya, Sanjaya, who Vidur, Yuyutu the Kaurav
 and Indrasen and other servants and drivers to perform the funeral
 rites and let to be per b; destroyed for want of care. 26. By
 Yudhishthira's order Vidur, Sanjaya, Sidharma, Chamyas (the priest
 Indrasen and Jaya collect d sandal, agar wood, ghee, oil, perfume,
 cotton, lamp fuel, broken ear and weapons. They then had
 funeral place. 30. The king of chief kings with religio
 nter. 32. P. 2. Duryodhan with his hundred brothers, Shalya

दाताधिकारम् । शक्यं शल्यश्च राजाने भूमिध्वंसमव च ॥ ३१ ॥ अयद्रवश्च राजान
 भूमिमयुञ्ज्य भारत । दौःशालनि लक्ष्मणश्च घृष्टकेतुश्च पार्थिवम् ॥ ३२ ॥ दृहन्त
 सोमदेवश्च सुवर्षाश्च दाताधिकारान् । गजानि क्षमधन्वानं विराटद्रुपदौ तथा ॥ ३३ ॥
 शिकण्डिनश्च पाशाहयं घृष्टयुञ्ज्यश्च पार्थिवम् । युधामन्युश्च विक्रांतमुलमांजसमेव च
 ॥ ३४ ॥ कौशर्यं द्रौपदेयांश्च शकुनिवैष कौवलम् । अचलं वृषकवच भगदर्शकं पार्थि
 वम् ॥ कर्णं वेकसंनखैव सहपुत्रमभरणम् । कंकयांश्च महेश्वासांस्त्रिगर्षाश्च महारथान्
 ॥ ३६ ॥ घटोत्कचं राक्षसेन्द्रं वक्रव्रानरमेव च । अजस्रुषु राक्षसेन्द्रं जलसन्धश्च पार्थि
 वम् ॥ ३७ ॥ अग्यांश्च पार्थिवान् । अकन शतशोऽप्य सहस्रशः । घृतघागदुतदीप्तः पावकै
 समदाहयत् ॥ ३८ ॥ ये चाप्यभायास्तत्रासत्रानादेशसमागतः । तांश्च सर्वान् समा
 नाय्य राशीन् कृत्वा सहस्रशः ॥ ३९ ॥ शिवा दाक्षिमिरव्यग्रे प्रभूतैः स्नेहपचितैः ।
 बाह्वधामास विदुरो घमेगजस्य शासनात् ॥ ४० ॥ कारपित्वा क्रियास्तेषां कुडराजो
 युधिष्ठिरः । धृतराष्ट्रं पुरस्कृत्य गङ्गागमिसुखोऽगमत् ॥ ४१ ॥
 इति श्रीपर्वणि श्राद्धपर्वणि युद्धवृत्तानामोर्ध्वदीर्घके षड्विंशोऽध्यायः २६ ॥

राजाभवदथ, अभिमन्यु दुःशासन के पुत्र लक्ष्मण राजा घृष्टकेतु । ३२ । दृहन्त सोम
 दच सैकहो मृजपदेशी, राजा जेमधन्वा, विराट् द्रुपद । ३३ । शिखरही घृष्टयुञ्ज
 पराक्रमी युधामन्यु उत्तमौजस कौशल्य द्रौपदीके पुत्र सावलका पुत्र शकुनी,
 अचल वृषक गजा भगदच । ३४ । क्रोधयुक्त सूर्य का पुत्र कर्क पुत्रो समेत बदे
 धनुषधारी केकयदेशी महारथी त्रिगर्षदेशी । ३५ । रासनाधिप घरोत्कच वक्रका
 भाई शत्वसोकाराजा अलम्पुप राजा जलसिन्ध इनको और अन्यहजारों राजा ३७।
 ओको घृत की धाराओं से होमीहुई प्रकाशमान अग्निपों से अच्छे प्रकारसे दाह
 किया । ३८ । धर्षपर जानामकार के देशोंसे आनेवाले जो प्रनाथ भी ये उन
 सबको इकट्ठा करके । ३९। सीधे दृढियुक्त तेज से संयुक्त लकड़ियों की चिताओं
 से विदुरमीने राजाकी आज्ञानुसार उन सबको दाह किया और राजा युधिष्ठिर
 उन्होंकी क्रियाओंको कराके धृतराष्ट्रको भागे कराके श्रीगङ्गाजी के सम्युल गये ४१

Shal, Bhurishrava, Jnyadrath, Abhimanyu, Dushasan's sons, Laksh-
 man, Dhristaketu, Virhat, Somdatta, the Srinjayas, Kshemdhara, wa,
 Virat, Drupad, Shikhandi, Dhristadyumn, valant Yudhamanya,
 Uttamauja, Kosals, the sons of Drupad, Shakuni the son Suval,
 Achak, Vrishak, king Bhagdatta, 35. rash Karan the son of Surya,
 the Kaikaya warriors and their sons the warriors of Trigart,
 Ghatotkach the prince of rakshasa, Val's brother Alamvach, Prince
 Jalsandh and other great warriors by thousands were burnt with
 libations of ghee. Other warriors from different countries, having
 no friends, were collected together and burnt with libations of oil by
 Vidur. Having performed their funeral ceremonies, Yudhishtir
 and Dhritrashtra went to the Ganges. 41.

पैश्यायन उवाच । ते स्वःसाद्य गंगान्तु शिवां पुण्यजलोचिताम् । इदिनीं च प्र
सम्पन्तां महानृपा महाबलाम् ॥ १ ॥ मूषणाप्युत्तरीयाणि वेष्टनाम्यवमुच्य च ततः
विदुषां पौत्राणां भ्रातृणां स्वजनस्य च ॥ २ ॥ पुत्राणामार्याकाणाञ्च पतीनाञ्च कुलस्य च ।
उदकञ्चक्रिरे सर्वा उदरयो भूशयु जिनः । सुहृदाञ्चापि धर्मज्ञाः प्रथमः सलिलसिन्धो
॥ ३ ॥ ततः कुन्ती महाराज सहसा लोककर्तिता । उदती मन्द्या वाचा पुत्रान् चक्षन्
ममधीत ॥ ४ ॥ यः स दूरो महेश्वासो रथयुधयुधपम् । अर्जुनेन वृतः संस्रवे वीरलक्ष
णलक्षितः । ५ ॥ यं सूतञ्च मन्थर्वं राक्षसमिति पाण्डवानः । यो पराजयज्ञेय्ये दिवा
कर इव प्रभुः ॥ ६ ॥ प्रथयुध्यत यः सर्वान् पुरा वः सपदानुमान् । दुर्योधनवधकं सर्वे
यः प्रकथन् परोचत ॥ ७ ॥ यस्य नालि समीचीय्यं पृथिव्यामपि कञ्चन । सो हृणीत
पदाः दूरः प्राणैरपि सदा मुवि ॥ ८ ॥ शतसम्भस्य शूरस्य संप्रामेष्ठपलायिनः । कुच

अध्याय १७ ।

पैश्यायन वाले कि उन्होंने करपाणरूप पवित्र जलों से पूर्ण श्रीकृष्णाजी
को और बड़ी रूपवान् स्वरूजल रखनेवाली इदिनीको पाकर । १ । उत्तरीयवस्त्र
और पगड़ी आदि को उतारकर पिता भाई पौत्र स्वजनपुत्र और नाताओं के
गलदानोंको किया । २ । अत्यन्त दुःखी होनेवाली सब कौरवीय स्त्रियोंने अपने
पतिपौकों जलदान किया । ३ । तबशोकार्त कुन्ती अकस्मात् अपने पुत्रोंसे यह वचन
बोली । ४ । किमे! वह बड़ा धनुषधारी महारथी वीरोंके चिहनों से चिह्नित युद्ध
में अर्जुनक हाथ में विभय हुआ । ५ । हे पांडव तुम जिनको सूत और रावाका
पुत्र मानो हो और जो ममर्थ सूर्य के समान सेनाके मध्य में विराजमान हुआ
प्रथम जिनने तुम सब समेत तुम्हारे साथियों से युद्ध किया और जो दुर्योधनकी
गव सेनाको खिन्ना सोभामान हुआ जिसके बलके समान सम्पूर्ण पृथ्वीपर कोई
राजा नहीं है और जिस दूरने सदैव इसपृथ्वीपर भुम कीर्ति की प्राणोंसे भी
अधिक चारा उम सत्पनिह युद्ध में पराक्रमल न होनेवाले । अगमकर्मी अपने भाई

CHAPTER XXVII

Vaishampayan said, "Going to the Ganga, the best of rivers and waters, they put off their clothes and offered water to the manes of their elders, sons, kinsmen and friends. The lamenting Kaurav women offered water to the manes of their husbands. Then Kunti, distressed with grief, said to her sons, 'The great archer defeated by Arjun, known to you as the son of Sat and Rishi, who shone like the sun in the field of battle, the greatest of your opponents, who led the Kaurav force, who was the strongest of the princes of the world, who offered some to me, was your truthful and invincible brother and therefore you must offer water to him

स्वमुदकं तस्य भ्रातुः किलेष्टकर्मणः ॥ ९ ॥ सहि व पूर्वज्ञो भ्राता भास्करान्मयजा
 यत् । कुबडली कवची भूरो दिवाकरसम्प्रभः ॥ १० ॥ धत्वा तु पाण्डवाः सर्वे मातुर्व
 चनमिप्रथम् । कर्णमेवाश्वशोचन्त-स्यञ्चार्चतरामवन् ॥ ११ ॥ ततः स पुरुषव्याघ्र
 कुन्तीपुत्रोयुधिष्ठिरः । उवाच मातरं धीरो निश्चसाश्रिव पञ्चगः ॥ १२ ॥ यस्येवुपातमासाद्य
 नान्बदितप्येद्धनत्रयात् । मवायास कथं पुत्रो देवगर्भः पुराभवत् ॥ १३ ॥ महो भवत्या
 मन्त्रस्व ग्रहणेन वयं हताः । निधनेन हि कर्णस्य पीडितास्मि सवाश्ववाः ॥ १४ ॥ अग्नि
 मःयोर्बिनोशेन प्रोपदेयवचेन च । पांचालानां च शाशेन कुरुणा पततेन च ॥ १५ ॥ ततः
 क्षातगुणं दुःखमिदं-मामस्पशद्गुहाम् । कर्णमेवानुशोचन् हि सम्बद्धेऽग्नाधिवाहित-
 ॥ १६ ॥ वयं विलस्य वहलं धर्मराजो युधिष्ठिर । विनन्दन् दुःखितो राजा चकारास्पो
 वकं प्रसः ॥ १७ ॥ तत आगाययामास कर्णस्य सपरिच्छदा । स्त्रियं कुंरुपीतर्धिमान

कर्ण का जलदान करो । ९ ॥ वह तुम्हारा बड़ा भार्गव देवता से मुझे उत्पन्न हुआ
 था वह भूर कुबडल कवचधारी और सूर्य के समान तेजसी था । १० ॥ सब
 पांडव माता के उस अभिय वचनको सुनकर कर्णको शोचतेहुये फिर पीड़ावान् हुये
 । ११ ॥ इसकेपीछे सर्प के समान आसलेता वह कुन्तीका पुत्र पुरुषोत्तन धीर
 युधिष्ठिर अपनी मातासे बोला । १२ ॥ अर्जुन के सिवाय दूसरा मनुष्य जिसकी
 बाणशुद्धी को पाकर सम्मुख नियत नहीं हुआ वह देवकुमार पूर्वसमय कैसे आपका
 पुत्र हुआ । १३ ॥ दुःखकी बात है कि आपके भेद गुप्त करने से हम वान् (वों) समेत
 कर्ण के मरनेसे हम वान् (वों) समेत कर्ण के मरने से पीड़ावान् हुये । १४ ॥ आग्नि
 मनु्य द्रापदी के पुत्र पांचालों के नाश और कौरवों के गिरने से भी हम पीड़ावान्
 हुये परन्तु उनसबसेभी सौगुने इस दुःखने अत्र मुझको दबाया है मैं कर्णकाई शोच
 ताहुआ मर्त्ये अग्नि में निगत होकर जलता हूं । १५ ॥ हे राजा इमप्रकार धर्मराज
 युधिष्ठिरने बहुत विलाप करके धीरे २ बहुतरोदन किया इसके पीछे उसमंभुने उसका
 जलदान किया । १७ ॥ इसके पीछे उस बुद्धिमान कौरवपति युधिष्ठिरने भार्गव के प्रेमसे

manes. He was the offspring of Surya and myself, born with armour and ear-rings and glorious like the Sun." 10. Hearing these unwelcome words of their mother all the brothers were much grieved for Karan. Yudhishtir then said to his mother, "How could he, whose shower of arrows none but Arjun could oppose, be your son? Alas! we are undone by your keeping the matter a secret and have to suffer the pangs of Karan's death. We are distressed for the death of Draupadi's sons and Panchals; but hundred times greater has been Karan's death. I burn for Karan's death." 19 Thus Yudhishtir wept much for Karan's death and offered water to his manes. Then for fraternal love he sent for all the women of

सातु मेग्ना सुभिक्षि । १८ ॥ स तानि सह धर्मात्मा मृतकुर्यात्ततः । कुत्सोप
 तासमाया स विद्याकुलमिदम् १९ ॥

इति श्रावणपर्वणे भाद्रपर्वस्य कर्णस्य गृहपुत्रत्वकथने सप्तविंशोऽध्यायः २० ॥

॥ समाप्तं च भाद्रपर्वं समं सञ्च इति पर्वं ।



कर्णकी सब स्त्रियों को परिवारसेत बुझानेया १८ । उमधर्मात्मा बुझिवाव
 धर्मराज युष्ठाधारे उन्हीं के साथ निरान्देह विधिपूक प्रतिक्रियाकी क्रिया । १९ ।

इति श्री पूर्व समाप्त ॥

Karna's family and joined with them in performing his funeral
 ceremonies ' 19



सौप्तिक व स्त्रीपर्वका सूचीपत्र INDEX TO STRI AND SAUPTIK PARV
 सौप्तिकपर्व Saupitik Parv

अध्याय	विषय	पृष्ठ	Chapter	Subject	Page
१	अश्वत्थामाकी मन्त्रजा	७२५३	1	Ashwathama's resolution	7253
२	कृप अश्वत्थामा सभाद्	६१	2	Krip and Ashwathama	61
३	" "	६५	3	" "	65
४	कृपाचार्ये सभाद्	६९	4	Kripachary's talk	69
५	अश्वत्थामाकापाण्डवोंकेशिविरमेंजाना	७३	5	Goes to the Pandav camp	73
६	अश्वत्थामाकी बाण वर्षा	७८	6	Showers arrows	78
७	शिवजी से ब्रह्मकी प्राप्ति	८२	7	Obtains a sword from Shiv	82
८	रातकी लड़ाई	८६	8	Night battle	86
९	दुर्योधन का प्राण त्याग	७३०४	9	Duryodhan's death	7304
१०	युधिष्ठिर का विलाप	११	10	Yudhishtir's grief	11
११	द्रोणि वधार्थे भीमका जाया	१५	11	Bhim chases Ashwathama	15
१२	युधिष्ठिर कृष्ण सभाद्	१९	12	Yudhishtir and Krishna	19
१३	ब्रह्मशिराख त्याग	२४	13	Brahmsir weapon	24
१४	अर्जुनाख त्याग	२७	14	" "	27
१५	ब्रह्मशिराखका समापन त्याग	१९	15	" "	29
१६	अश्वत्थामा की मणि	३३	16	Ashwathama's jewel	33
१७	शिव महिमा	३७	17	Shiva's greatness	37
१८	युधिष्ठिर और कृष्णका सभाद्	४१	18	Yudhishtir and Krishna	41

स्त्रीपर्व			STRI PARV		
१	भूतराष्ट्रका विलाप	७३४५	1	Dhritrashtra's grief	7345
२	" "	५१	2	" "	51
३	" "	५५	3	" "	55
४	" "	५८	4	" "	58
५	" "	६०	5	" "	60
६	" "	६३	6	" "	63
७	" "	६५	7	" "	65
८	" "	६९	8	" "	69
९	" "	७५	9	" "	75
१०	पुच्छे निकलना	७६	10	He goes out from the city	76
११	अश्वत्थामा मादि से मिलना	७९	11	Ashvathama meets him	79
१२	लोहेका मणि	८२	12	The iron Bhuri	82
१३	भूतराष्ट्र का कोप की शक्ति	८५	13	Dhritrashtra's grief	85
१४	गान्धारी क काण्ठी शक्ति	८८	14	Gandhari's grief	88
१५	गान्धारी व भीमका सभाद्	९१	15	Gandhari and Bhim	91
१६	स्त्री विलाप	९३	16	Women's lamentation	96
१७	स्त्री विलाप	७४०	17	" "	740